مختصر تفسير أحسن البيان
(باللغة الهندية)

मुख़्तसर तफ़सीर
अहसनुल बयान

तर्जमा
मौलाना मोहम्मद जूनागढ़ी

तफ़सीर
हाफ़िज़ सलाहुद्दीन यूसुफ़

हिन्दी तर्जमा व तरतीब
मोहम्मद ताहिर हनीफ़

दारुस्सलाम
प्रकाशक एवं वितरक

प्रकाशक की ओर से

पूरी इंसानियत पर अल्लाह तआला का यह सबसे बड़ा एहसान है कि उसने उनको अपने पाक कलाम क़ुरआन मजीद के ज़रिये मुख़ातब किया और इतना बड़ा इंआम उन्हें अता किया जिस पर वे जितना भी फ़ख़्र करें कम है। लेकिन अल्लाह के इस कलाम और पैग़ाम को वही समझ सकता है जो अपने रब के इस अज़ीम पैग़ाम की असल रूह को जानता हो, इसकी मिठास को महसूस करता और इसके मआनी और मक़ासिद को समझकर अपना किरदार, अख़्लाक़ और ज़िंदगी को सुधार सके।

अपने रब के सच्चे और पाक कलाम को समझने के लिये क़ुरआन को समझने का इल्म होना बहुत ज़रूरी है। इसलिए बहुत समय से यह ज़रूरत महसूस हो रही थी कि क़ुरआन मजीद की एक ऐसी मुख़्तसर तफ़सीर, हाशिया और तर्जमा तैयार किया जाये जो सलफ़ सालेहीन के क़ुरआन को समझने के आधार पर आधारित (मबनी) हो। जिस में आयात की तफ़सीर हदीस पाक और सहाबा رضي الله عنهم के विचारों के मुताबिक हो, जिसे पढ़कर पाठक तावीलात के फंदों से निकल जाये।

मज़कूरा मक़सद के लिये दारुस्सलाम ने उर्दू भाषा में **«अहसनुल बयान»** के नाम से एक तफ़सीर पेश किया जो बहुत मक़बूल साबित हुई और अब तक उस के अनेक एडीशन निकल चुके हैं। ولله الحمد والفضل على ذلك

हिन्दी भाषा में किताब व सुन्नत पर आधारित और असलाफ़ के विचार पर मबनी क़ुरआन मजीद का कोई तर्जमा और तफ़सीर मुयस्सर नहीं थी। इसलिए पाठकों की गुज़ारिश पर उस तफ़सीर **«अहसनुल बयान»** का हिन्दी तर्जमा पेश किया जो दो जिल्दों में था और उस के भी दो एडीशन अब तक प्रकाशित हो चुके हैं। फिर पाठकों ने गुज़ारिश की के इसे मुख़्तसर करके एक जिल्द में किया जाये, इसकी भाषा सरल (आसान) की जाये और इसका टीका (तफ़सीर) भी मुख़्तसर किया जाये, इसलिए अब यह मुख़्तसर तफ़सीर एक जिल्द में आप के सामने पेश है। हम शुक्रगुज़ार है जनाब मौलाना मोहम्मद ताहिर साहब के जिन्होंने रात दिन मेहनत करके इसे आप तक पहुँचाया। इसी तरह शुक्रगुज़ार हैं सैयद अली हैदर के जिन्होंने टाईप सेटिंग का भार संभाला और इसको ख़ूबसूरत बनया।

अल्लाह से हमारी दुआ है कि वह हमारी इस कोशिश और अमल को क़ुबूलियत बख़्शे और इस से लोग जहाँ ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठा सकें, वहीं उसे हम सब के आमालनामा में लिखे। आमीन

मैनेजर

अब्दुल मालिक मुजाहिद

अपनी बात

सब तारीफ़ें और शुक्र व एहसान उस अल्लाह अज़ीम के लिए है जिस ने हम सबको अपनी तमाम मख़लूक़ में सब से बेहतर बनाया और हमारी हिदायत के लिए केवल अम्बिया केराम को ही नहीं भेजा बल्कि आकाश से पाक कलाम भी नाज़िल किया ताकि इंसान उस के आधार पर अपनी ज़िन्दगी का निज़ाम बना सके। वहयी के नाज़िल होने का यह सिलसिला क़ुरआन मजीद के उतरने के बाद ख़त्म हो गया, इस तरह यह कलाम जिसकी आयतें जामे और अज़ीम हैं, क़यामत तक के लिए सभी इंसान और जिन्नात का आख़िरी दस्तूर क़रार पाया।

इस पाक कलाम के साथ जो इंसानी ज़िंदगी के हर पहलू के लिए यक्साँ रहनुमा और रहबर है, आलिमों और आम लोगों की रूचि उस के नाज़िल होने के समय से ही रही है और जितने उलूम व फ़ुनून, किताब और रिसर्च इस किताब के बारे में किये गये हैं या किये जा रहे हैं वह किसी दूसरी किताब में नहीं किये गये। चूँकि यह अध्यादेश (दस्तावेज़) अल्लाह तआला की ओर लोगों को आमन्त्रित करने और इंसानी समाज के सुधार की बुनियाद है, इसलिए दुनिया की दूसरी बहुत सी ज़ुबानों में उसका तर्जमा किया गया। बल्कि एक-एक भाषा में कई-कई सौ तर्जमें और तफ़ासीर मौजूद हैं। मुस्लिम समुदाय (उम्मह) के आलिमों ने अज्र और सवाब की नीयत से इसकी सेवा करके बाद में आने वालों के लिए एक बड़ा काम और पूँजी उपलब्ध (मुहय्या) कर दिया है।

हिन्दी भाषा चूँकि इस्लामी संस्कृति और इस्लामी उलूम से काफ़ी दूर रही इसलिए उस में इस्लाम से मुतअल्लिक किताबें बहुत कम लिखी गयीं, इस के विपरीत (ख़िलाफ़) उर्दू भाषा इस्लामी उलूम और फ़ुनून से मालामाल है।

आज के दौर में कुछ सालों में इस्लामी दावत (शुभ आमन्त्रण) का काम दुनिया की अनेक भाषाओं में बहुत हद तक फैल गया है, इंसानों का एक बड़ा समूह केवल हिन्दी भाषा प्रयोग (इस्तेमाल) करता है, बहुत से मुस्लिम नौजवान और विद्यार्थी (तलबा) हिन्दी भाषा लिखने पढ़ने पर मजबूर हो गये हैं और कुछ इलाक़ों में केवल हिन्दी बोली और पढ़ी जाती है। इसी तरह इस्लाम धर्म क़ुबूल करने वाले बहुत सारे साथी हिन्दी के अलावा दूसरी भाषा नहीं जानते, इसलिए बहुत ज़रूरत महसूस की जा रही थी कि क़ुरआन करीम का एक ऐसा तर्जमा मुख़्तसर नोट के साथ हिन्दी भाषा में पेश किया जाये, जिसकी तफ़सीर और तर्जमा सहीह अहादीस और असलाफ़ के क़ुरआन को समझने के सिद्धान्त (उसूल) पर आधारित हो। इस

जरूरत के लिए दारुस्सलाम-रियाद ने एक तर्जमा और तफ़सीर "अहसनुल बयान" के नाम से हिन्दी में पेश किया जो बड़ा मक़बूल हुआ और उस के दो एडीशन प्रकाशित हो गये। लेकिन वह दो जिल्दों में था और उसकी भाषा शुद्ध (ख़ालिस) हिन्दी पर मबनी थी। इसलिए पाठकों की गुज़ारिश थी कि इसको मुख़्तसर और आसान किया जाये। चुनांचि उनकी बार-बार गुज़ारिश को देखते हुए हम ने इस काम को शुरू किया और अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से यह मुख़्तसर तफ़सीर और तर्जमा आप के सामने है। हम ख़ास तौर से मोहतरम मौलाना अब्दुल मालिक मुजाहिद के शुक्रगुज़ार हैं जिन्होंने इस परियोजना (मशरूअ) की इजाज़त दी और दारुस्सलाम ने इसे प्रकाशित किया।

हमारी इस कोशिश में जो कुछ ख़ूबी है वह अल्लाह के करम और उसकी मेहरबानी से है और जो कमी है वह हमारी ख़ुद की कमी का नतीजा है।

यह ज़ाहिर है कि क़ुरआन मजीद के अलावा दुनिया की कोई किताब इन्सानी भूल-चूक से ख़ाली नहीं, हम ने पूरी कोशिश की है कि क़ुरआन मजीद के मआनी को हिन्दी भाषा में नक़ल करने में कोई ग़ल्ती या कमी न हो, लेकिन इन्सानी भूल-चूक और अपनी इल्मी कमी की वजह से अगर उस में कोई दोष या ग़लती रह गई हो तो पाठक महोदय (हज़रात) और उल्मा व तलबा से गुज़ारिश है कि उस से सूचित करें।

अल्लाह तआला हम सब को अपने पाक कलाम की ख़िदमत (सेवा) करने की तौफ़ीक़ अता करे, हमारी ग़ल्तियों को माफ़ करे और हमें इख़्लास (विशुद्धता) के साथ इस्लाम के पैग़ाम को आम लोगों तक पहुँचाने की सआदत अता करे। आमीन

मोहम्मद ताहिर हनीफ़
रियाद, २९-६-१४२६ हिजरी

अहसनुल बयान की अहम ख़ुसूसियात

यह क़ुरआन करीम की टीका या मुख़्तसर तफ़सीर "अहसनुल बयान" इस समय जो आप के हाथों में है। इस में अगरचे जगह की कमी के कारण ज़्यादा तफ़सील से काम नहीं लिया गया है, फिर भी यह कोशिश की गयी है कि आम लोगों को क़ुरआन समझने के लिये और इस के कठिन मक़ाम के लिये जितनी तफ़सीर की ज़रूरत है, उसे मुख़्तसर मगर पूरे मतालिब के साथ ज़रूर पेश किया जाये। इस में हमें कहाँ तक कामयाबी मिली है, पाठक और इल्म वाले लोग पढ़कर ही इसका पता कर सकते हैं। इसकी दूसरी विशेषताएँ (ख़ुसूसियात) निम्नलिखित हैं :

- इस्राईली, मनगढ़त और ज़ईफ़ रिवायतों को बयान करने से परहेज किया गया है और सिर्फ सहीह रिवायतों का ही एहतेमाम किया गया है।
- आयतों के नुज़ूल के असबाब और उनकी फ़ज़ीलत के लिए बहुत सी रिवायतें आई हैं, लेकिन उस में पूर्ण प्रमाणित (मरफ़ूअ) और सहीह रिवायतें बहुत कम हैं। इख़्तेसार की वजह से मशहूर और ज़ईफ़ रिवायतों पर कलाम मुमकिन नहीं, इसलिए यह कोशिश की गई है कि केवल सहीह तरीन रवायतों को ही बयान किया जाये। इसका मतलब यह है कि जो रिवायतें इस में बयान नहीं हुई हैं वह चाहे कितनी भी मशहूर क्यों न हों, सहीह और मुत्तसिल नहीं हैं।
- इल्मी मसायेल और बहसों से इसे कठिन नहीं बनाया गया है, क्योंकि उसका मक़ाम तफ़सीली तफ़सीर है। केवल क़ुरआन करीम के सीधे सादे मआनी और मफ़हूम को वाज़ेह किया गया है।
- कुछ जगहों के अलावा पूरी तफ़सीर में हदीसों के मुकम्मल हवालों का एहतेमाम किया गया है, ताकि तफ़सीली इल्म चाहने वाले असहाब को उसे ढूंढ़ने में आसानी हो।
- तफ़सीर इब्ने कसीर, तफ़सीर फ़तहुल क़दीर, तफ़सीर इब्ने जरीर तबरी, ऐसरूत्तफ़ासीर वग़ैरह जैसी सलफ़ी तफ़ासीर इस के माख़ज़ हैं। ज़्यादातर उन्हीं को सामने रखा गया है, दूसरी अरबी और उर्दू तफ़सीरों से बहुत कम एहतेमाम किये गये हैं।
- तशरीह और तफ़सीर में बुज़ुर्गों (नबी ﷺ के सहाबा और उन के बाद की पीढ़ी के नेक लोग) के मन्हज और उन के उसूल (सिद्धान्त) को आधार बनाया गया है। इस नज़रिये से यह सलफ़ी तफ़ासीर का इख़्तेसार, अस्लाफ़ के मनहज और उसूल का आईना और सहीह हदीसों का ख़ूबसूरत नमूना है।
- क़ुरआन करीम ने पिछली जातियों और क़ौमों का बयान किया है लेकिन तारीख़ी तौर से नहीं बल्कि नसीहत के नज़रिये से। इसलिए क़ुरआन करीम के

इस उद्देश्य (मक़सद) को सामने रख कर पिछली जातियों और सम्प्रदायों (क़ौमों) के आम लोगों के इस अख़लाक़ और आमाल के असबाब से जो उनकी तबाही का सबब बने, मुसलमान आम लोगों के किरदार और अख़लाक़ की तुलना (मुवाज़ना) की गई है ताकि इस उम्मत (सम्प्रदाय) के हर वर्ग (उलमा और आम लोग) इस गिरावट से निकलने की कोशिश करें, जिस में वह गुज़िश्ता क़ौमों और जातियों के अख़लाक़ अपनाने की वजह से फंसे हुए हैं।

अल्लाह तआला को किसी जाति या क़ौम से मुहब्बत या नफ़रत नहीं है, उसको ख़ास जाति या आदमी से मुहब्बत और नफ़रत सिर्फ़ उन के अमलों और अख़लाक़ की बुनियाद पर होती है। अगर कोई ख़ास जाति या ख़ास आदमी अच्छे काम करता है, ईमान (विश्वास) और उस के तक़ाज़ों को ठीक ढंग से पूरा करता है तो वह उसका पसंदीदा होता है और उसका सहायक (मददगार) होता है। और इस के ख़िलाफ़ विश्वास (ईमान) और उस के मुताबिक़ अमलों से नावाक़िफ़ जाति या आदमी है जो अल्लाह को नापसंद है, दुनिया और आख़िरत की बेइज़्ज़ती और रुसवाई उसका मुक़द्दर है।

यह तो मुमकिन ही नहीं कि पिछली इंसानी जातियाँ और क़ौमें अपने तकब्बुर और सच्चाई से मुख़ालफ़त के सबब अल्लाह और उस के रसूल को झुठलायें जिस के नतीजे में हलाक हों (जैसाकि क़ुरआन ने उन के बारे में बयान किया है) और मुस्लिम उम्मत वही झुठलाने और मुख़ालफ़त का ढंग अपनाये, तो उसे तरक़्क़ी, बुलन्दी और ख़ुशनसीबी हासिल हो, यह तो अल्लाह की सुन्नत के ख़िलाफ़ है।

इन बिगड़े हुए हर वर्ग (गुट) के लिए यह मुख़्तसर तफ़सीर एक आईना है जिस में वह अपने अख़लाक़ और अमल की गिरावट को और अपने इल्म को वाज़ेह तौर से अगर देखना चाहें तो देख सकते हैं। जब तक यह उम्मत क़ुरआन पर सच्चे मन से यक़ीन न करे और उसकी रौशनी में अपनी धारणाओं (अक़ीदा) और अमलों के आधार को तब्दील न करेगी, दुनिया और आख़िरत में कामयाबी हासिल नहीं कर पायगी। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस क़ौल का भी यही मतलब है, जिसमें आप ने कहा है।

«إن الله يرفع بهذا الكتاب أقواماً ويضع به آخرين» (صحيح مسلم)

"अल्लाह तआला इस किताब के ज़रिये बहुत से लोगों को तरक़्क़ी अता करता है, और इसी के सबब दूसरों को ज़वाल की तरफ़ ढकेल देता है।"

अल्लाह करे कि इस किताब का जो अहम मक़सद है वह हासिल हो, और इस के ज़रिये अक़ायद और आमाल में ऐसा सुधार हो जिस की वजह से यह समुदाय (उम्मत) अल्लाह की ख़ास रहमत और नेमत का मुस्तहक़ हो सके।

मुफ़स्सिर

سُورَةُ الفَاتِحَةِ

सूरतुल फ़ातिहा

सूर: फ़ातिहा[1] मक्का में उतरी[2] इस में सात आयतें हैं ।[3]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿1﴾

१. अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿2﴾

२. सब तारीफ़ें अल्लाह सारे जहान के रब के लिये है[4]

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿3﴾

३. बड़ा मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿4﴾

४. बदले के दिन (क़यामत) का मालिक है

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ﴿5﴾

५. हम तेरी ही इबादत[5] (उपासना) करते और तुझ ही से मदद माँगते हैं

---

[1] सूर: फ़ातिहा क़ुरआन की पहली सूर: है, जिसकी हदीसों में बड़ी अहमियत है । فاتحه (फ़ातिहा) का मतलब शुरू है, इसलिए इसे الفاتحة अलफ़ातिहा यानी फ़ातिहतुल किताब कहा जाता है, इस के दूसरे भी बहुत से नाम हदीसों से साबित हैं ।

[2] यह सूर: मक्की है, मक्की या मदनी का मतलब है जो सूरतें हिजरत (१३ नबूवत) से पहले नाज़िल हुई वह मक्की हैं चाहे उनका उतरना मक्का में हुआ या उन के आसपास । मदनी वह सूरतें हैं जो हिजरत के बाद नाज़िल हुई चाहे मदीना या उस के आसपास के इलाक़ों में नाज़िल हुई या उन से दूर, यहाँ तक कि मक्का और उस के आसपास ही क्यों न नाज़िल हुई हो ।

[3] بسم الله के बारे में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कि यह हर एक सूर: की आयत है या हर एक सूर: की आयत का हिस्सा है ।

[4] رب (रब्ब), अल्लाह के अच्छे नामों में से एक नाम है, जिसका मतलब है हर चीज़ को पैदा करके उसकी ज़रूरतों को पूरी कराने वाला और उसे पूर्ति (तकमील) तक पहुँचाने वाला ।

[5] इबादत का मतलब है किसी की ख़ुशी के लिये बहुत आजिज़ी, बेबसी और विनय का इज़हार, और इब्ने कसीर के क़ौल के ऐतबार से दीन में पूरी मुहब्बत, आजिज़ी और डर के मजमुआ का नाम है, यानी जिस के साथ प्रेम भी हो और उसकी ताक़त के आगे लाचारी और बेबसी का इज़हार भी हो, और ज़ाहिरी या बातिनी अस्बाब के ज़रिये उसकी पकड़ का डर भी हो । सीधा जुमला نعبدك ونستعينك है (हम तेरी इबादत करते हैं और तुझ से मदद माँगते हैं) लेकिन अल्लाह ने यहाँ दूसरे कारक (मफ़ऊल) को क्रिया (फ़ेल) से पहले करके ﴿اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ﴾ फ़रमाया: मक़सूद ख़ुसूसियत पैदा करना है, यानी हम तेरी ही इबादत करते और तुझ ही से मदद चाहते है, न इबादत अल्लाह के सिवा किसी और की जायेज़ है न मदद ही किसी से माँगनी जायेज़ (मान्य) है । इन लफ़्ज़ों (शब्दों) से शिर्क का दरवाज़ा बन्द कर दिया गया है ।

६. हमें सीधा (सत्य) रास्ता[1] दिखा[2]

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۙ﴿6﴾

७. उन लोगो का रास्ता जिन पर तूने इआम किया उन का नहीं जिन पर तेरा गजब[3] हुआ और न गुमराहों का।[4]

صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ۙ غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ ﴿7﴾

---

[1] هداية (हिदायत) के कई मतलब हैं। रास्ता दिखाना, रास्ता पर चला देना, मंजिल तक पहुँचा देना, इसे अरबी में इरशाद, तौफीक़, इलहाम और दलालत से तावीर किया जाता है, यानी हमें सीधा रास्ता दिखा दे, इस पर चलनें की तौफीक़ दे इस पर मजबूत कर दे ताकि हमें तेरी ख़ुशी हासिल हो जाये, यह सीधा रास्ता केवल अक़्ल से हासिल नहीं हो सकता। यह सीधा रास्ता वही "इस्लाम" है जिसे नबी ﷺ नें दुनियाँ के सामनें पेश किया और अब जो क़ुरआन और सहीह हदीस में महफ़ूज़ (सुरक्षित) है।

[2] यह صراط مستقيم (सीधा रास्ता) की तफ़सीर (व्याख्या) है कि सीधा रास्ता वह है जिस पर वह लोग चले जिन पर तेरी नेमत (अनुकम्पा) हुई। यह منعم عليه गरोह है अम्बिया, शहीदों, सिद्दीकों, और (नेक लोगों) का।

[3] कुछ हदीसों से साबित है कि مغضوب عليهم (जिन पर अल्लाह का गजब (क्रोध) उतरा) से मुराद यहूदी हैं, और ضالين (गुमराह) से मुराद नसारा (इसाई) हैं।

[4] सूरः फातिहा के आख़िर में आमीन آمين कहनें पर नबी ﷺ नें बड़ा ज़ोर दिया है और उसकी प्रतिष्ठा (फ़ज़ीलत) को बयान किया है, इसलिए इमाम और मुक्तदी दोनों को آمين (आमीन) कहना चाहिए।

सूरतुल बक़र:-२

سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ

सूर: बक़र:[1] मदीने में नाज़िल हुई इस में दो सौ छयासी आयतें और चालीस रुकुऊ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. अलिफ़. लाम. मीम.।[2]

الٓمّٓ ﴿1﴾

२. इस किताब (के अल्लाह की किताब होने) में कोई शक नही, परहेजगारों को हिदायत (मार्गदर्शन) करने वाली हैं।

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿2﴾

३. जो लोग ग़ैब (परलोक) पर ईमान लाते हैं[3] और नमाज़ को क़ायम करते हैं[4] और हमारे ज़रिये अता किये हुए (माल) में से ख़र्च करते हैं।

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿3﴾

४. और जो लोग ईमान लाते हैं उस पर जो आप की ओर उतारा गया और जो आप से पहले उतारा गया।[5] और वह आख़िरत पर भी यक़ीन रखते हैं।

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿4﴾

---

[1] इस सूर: में आगे चलकर गाय की घटना (वाक़ेआ) का बयान हुआ है, इसलिए इसे बकर: गाय की घटना वाली सूर: (अरबी में "बकर:" गाय को कहते हैं) कहा जाता है।

[2] इन्हे अरबी में हरफ़े-मुक्ता (अलग-अलग अक्षर) कहा जाता है, यानी अलग-अलग पढ़े जाने वाले अक्षर। इन के मतलब के बारे में कोई प्रमाणित कथन (क़ौल) नहीं है।

[3] ग़ैब का अर्थ (मायने) वे चीज़ें हैं जिनका हल दिमाग़ और अक़्ल के ज़रिये नहीं, जैसे अल्लाह तआला का होना, वह्यी (प्रकाशनायें) इलाही, जन्नत, जहन्नम, मलायेका (फ़रिश्ते, ईशदूत), क़ब्र का अज़ाब, हश्र का होना आदि (वग़ैरह)। इस से मालूम हुआ कि अल्लाह और रसूल की बतायी हुई ख़बरों पर अक़्ल, आभास के सिवाय पर यक़ीन करना ईमान का हिस्सा है और इनका इंकार कुफ़्र व गुमराही है।

[4] नमाज़ क़ायम करने का मतलब है कि पाबन्दी से सुन्नते नबवी के अनुसार नमाज़ पढ़ना, नहीं तो नमाज़ तो मुनाफ़िक़ (जो ऊपर से मुसलमान अन्दर से कुछ और) भी पढ़ते थे।

[5] पिछली किताबों पर ईमान लाने का मतलब यह है कि जो किताबें नबियों पर नाज़िल हुईं, वे सभी सच्ची हैं, अगरचे अब उन के अनुसार अमल नहीं किया जा सकता, अब अमल केवल क़ुरआन और नबी ﷺ की हदीस के अनुसार ही किया जाएगा।

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ (5)

५. यही लोग अपने रब की ओर से सच्चे रास्ते पर हैं और यही लोग कामयाबी (और नजात) हासिल करने वाले हैं।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ (6)

६. बेशक काफ़िरों को आप का डराना या न डराना समान है, यह लोग ईमान न लायेंगे।

خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ ۖ وَعَلَىٰ أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ (7)

७. अल्लाह तआला ने उन के दिल और कानों पर ठप्पा लगा दिया है और उनकी आँखों पर पर्दा है, और उन के लिए बड़ा अज़ाब है।[1]

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُم بِمُؤْمِنِينَ (8)

८. और लोगों में से कुछ कहते हैं, हम अल्लाह (परमेश्वर) पर और आख़िरी दिन पर ईमान लाये हैं, लेकिन हक़ीक़त में वे ईमान वाले नहीं हैं।[2]

يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ (9)

९. वह अल्लाह को और ईमान लाने वालों को धोखा दे रहे हैं, लेकिन हक़ीक़त में वह ख़ुद अपने आप को धोखा दे रहे हैं, और उन को समझ नहीं है।

فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ (10)

१०. उन के दिलों में रोग है, अल्लाह ने उनके रोग को और बढ़ा दिया और उनके झूठ बोलने के कारण उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ (11)

११. और जब उन से कहा जाता है कि धरती पर बिगाड़ मत पैदा करो, तो जवाब देते हैं कि हम तो सिर्फ़ सुधारक हैं।

أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَٰكِن لَّا يَشْعُرُونَ (12)

१२. सावधान! हक़ीक़त में यही लोग बिगाड़ पैदा करने वाले हैं,[3] लेकिन समझ (ज्ञान) नहीं रखते।

---

[1] यह उन के ईमान न लाने का सबब बताया गया है कि चूँकि कुफ़्र और गुनाह के लगातार करने के कारण उन के दिलों से सच्चाई को क़ुबूल करनें की ताक़त ख़त्म हो चुकी है तो वह ईमान किस तरह ला सकते हैं?

[2] यहाँ से तीसरे गुट मुनाफ़िक़ों का बयान होता है, जिन के दिल ईमान से ख़ाली थे लेकिन ईमानवालों को धोखा देने के लिए मुँह से ईमान का दिखावा करते थे।

[3] बिगाड़, सुधार का उल्टा है। कुफ़्र और गुनाह से धरती पर बिगाड़ फैलता है और अल्लाह के हुक्म के पालन से शांति (सुकून) मिलती है।

१३. और जब उन से कहा जाता है कि दूसरे लोगों (यानी सहाबा) की तरह तुम भी ईमान लाओ, तो जवाब देते हैं कि क्या हम ऐसा ईमान लायें जैसा मूर्ख (बेवक़ूफ़) लाये हैं। सावधान! हक़ीक़त में यही मूर्ख हैं, लेकिन यह नहीं जानते।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ السُّفَهَاءُ ۗ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَٰكِن لَّا يَعْلَمُونَ ﴿13﴾

१४. और जब ईमानवालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम भी ईमानवाले हैं, और जब अकेले में अपने बड़ों (शैतान सिफ़त लोग) के पास जाते हैं तो कहते हैं कि हम तो तुम्हारे साथ हैं, हम तो केवल उनसे मज़ाक़ करते हैं।

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شَيَاطِينِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِئُونَ ﴿14﴾

१५. अल्लाह तआला भी उन से मज़ाक़ करता है।[1] और उनको सरकशी और बहकावे में और बढ़ा देता है।

اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿15﴾

१६. यह वे लोग हैं जिन्होंने गुमराही को हिदायत के बदले में ख़रीद लिया है। लेकिन इनका व्यापार[2] न फ़ायदेमंद हुआ, न वह हिदायत हासिल कर सके।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَت تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿16﴾

१७. इन लोगों की मिसाल उस इंसान जैसी है जिस ने आग जलाई लेकिन जब आग ने उसके आसपास को रौशन कर दिया, तो अल्लाह ने उनकी रौशनी छीन ली और उन्हें अन्धेरे में छोड़ दिया, जो नहीं देखते।

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمَاتٍ لَّا يُبْصِرُونَ ﴿17﴾

१८. (ये) गूँगे, बहरे और अन्धे हैं, अब ये लौटने वाले नहीं हैं।

صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿18﴾

---

[1] "अल्लाह तआला भी उन से मज़ाक़ करता है।" इसका एक मतलब तो यह है कि जिस तरह वे मुसलमानों के साथ मज़ाक़ और बेइज़्ज़ती का मामला करते हैं, अल्लाह तआला भी उनसे ऐसा ही मामला करते हुए उन्हें बेइज़्ज़त करता है। इसको मज़ाक़ से संबोधित (मुख़ातिब) करना भाषा का नियम है, वरन् यह हक़ीक़त में मज़ाक़ नहीं है, उनके मज़ाक़ करने की सज़ा है।

[2] इस आयत में तिजारत का मतलब सच्चे रास्ते को छोड़कर गुमराही में पड़ जाना है जो सीधा-सीधा नुक़सान का सौदा है।

१९. या आकाश की वर्षा की तरह, जिस में अंधकार, गरज और बिजली हो। बिजली की गरज के कारण मौत से डरकर वे कानों में उंगलियाँ डाल लेते हैं, और अल्लाह तआला काफ़िरों को घेरने वाला है।

اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ ۚ يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ؕ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿19﴾

२०. लगता है कि बिजली उनकी आँखें झपट लेगी, जब उन के लिए उजाला करती है तो चलते हैं और जब अंधेरा करती है तो खड़े हो जाते हैं और अगर अल्लाह चाहे तो उनके कानों और आँखों को छीन ले, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ؕ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ ۙ وَاِذَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿20﴾

२१. हे लोगो! अपने उस पालनहार की इबादत करो जिस ने तुम को और तुम से पहले के लोगों को पैदा किया ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿21﴾

२२. जिस ने तुम्हारे लिए धरती को बिछावन और आकाश को छत बनाया, और आकाश से वर्षा की और उस से फल पैदा करके तुम्हें जीविका (रिज़्क़) अता की, अत: यह जानते हुए किसी को अल्लाह का शरीक न बनाओ।

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً ۠ وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿22﴾

२३. और अगर तुम्हें उस में शक हो जिसे हम ने अपने बन्दे पर नाज़िल किया है, और तुम सच्चे हो तो इसी जैसी एक सूर: बना लाओ, तुम्हें छूट है कि अल्लाह के सिवाय अपने सहयोगियों को भी बुला लो।[1]

وَاِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۠ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿23﴾

[1] तौहीद (अल्लाह को एक मानना और उसकी इबादत करना) के बाद अब रिसालत (ईशदूत) के बारे में बताया जा रहा है, हम ने अपने बन्दे पर जो किताब उतारी उसका अल्लाह की ओर से नाज़िल होने में तुम्हें अगर शक है तो तुम अपने सभी मदद करने वालों को मिला कर इस जैसी एक सूर: ही बनाकर दिखाओ और अगर तुम ऐसा नही कर सकते तो तुम्हें समझ लेना चाहिए कि हक़ीक़त में यह कलाम किसी इंसान की इजाद नहीं है बल्कि अल्लाह का ही कलाम है और हम पर और मोहम्मद ﷺ की रिसालत पर ईमान लाकर जहन्नम की आग से बचने की कोशिश करो, जहन्नम की आग जो काफ़िरों के लिए ही तैयार की गई है।

२४. फिर अगर तुम ने नहीं किया और तुम कभी भी नहीं कर सकते,[1] तो (उसे सच्चा समझ कर) उस आग से डरो, जिसका ईंधन इंसान और पत्थर हैं, जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है।

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ
الَّتِيْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۚ
أُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ (24)

२५. और ईमानवालों और नेक काम करने वालों को,[2] उन स्वर्गों की ख़ुशख़बरी दो जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जब उन्हें उन से फल खाने के लिए दिए जाएंगे तो कहेंगे कि इस से पहले हमें खाने को यही दिया गया, वह समारुपी फल होंगे और उन के लिए उस में पक़ीज़ा बीवियाँ होंगी और वे उस में हमेशा रहेंगे।

وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ أَنَّ لَهُمْ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ ۖ كُلَّمَا رُزِقُوْا
مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِيْ
رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَأُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ۖ وَلَهُمْ
فِيْهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (25)

२६. हक़ीक़त में अल्लाह तआला किसी मिसाल को बयान करने से लज्जित नहीं होता, चाहे वह मच्छर की हो या उससे भी तुच्छ चीज़ की, ईमानवाले उसे अपने रब की ओर से सच समझते हैं और काफ़िर कहते हैं कि ऐसी मिसाल देने से अल्लाह का मतलब क्या है? इसी के द्वारा बहुतों को गुमराह करता है और बहुत लोगों को सच्चे रास्ते पर लाता है। और गुमराह वह केवल अवज्ञाकारियों (फ़ासिक़ों) को ही करता है।

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْيٖۤ أَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً
فَمَا فَوْقَهَا ۖ فَأَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ أَنَّهُ
الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَأَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَا أَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ
يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّيَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا ۖ وَمَا يُضِلُّ
بِهٖۤ إِلَّا الْفٰسِقِيْنَ (26)

---

[1] यह क़ुरआन करीम की सच्चाई का एक वाज़ेह सुबूत है कि अरब व दूसरे इलाक़े के सभी काफ़िरों को ललकारा गया, लेकिन वह आज तक इसका जवाब नही दे सके और बेशक क़यामत आने तक ऐसा नहीं कर सकेंगे।

[2] क़ुरआन पाक में हर जगह ईमान के साथ नेक काम का बयान करके इस बात को वाज़ेह कर दिया गया है कि ईमान और नेक काम का चोली-दामन का साथ है। नेक काम के बिना ईमान का कोई फ़ायदा नहीं और ईमान के बिना नेक काम की अल्लाह के पास कोई क़ीमत नही और नेक काम क्या है? जो सुन्नत के अनुसार हो और सही तरीक़े से अल्लाह की ख़ुशी के लिए किया जाये। सुन्नत के ख़िलाफ़ अमल भी क़ुबूल नहीं है और दिखावे और रियाकारी के लिए किये गये काम भी बेकार और बेफ़ायदा हैं।

الَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِن بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿27﴾

२७. जो लोग अल्लाह तआला के साथ की गयी मजबूत अहद (प्रतिज्ञा) को तोड़ देते हैं, और अल्लाह तआला ने जिन चीज़ों को जोड़ने का हुक्म दिया है, उसे काटते हैं और धरती पर फ़साद फैलाते हैं, यही लोग नुकसान उठाने वाले हैं।

كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ۖ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿28﴾

२८. तुम अल्लाह को कैसे नहीं मानते, जबकि तुम बेजान थे तो उस ने तुम्हें जीवन दिया,फिर तुम्हें मौत देगा, फिर दोबारा ज़िन्दा करेगा, फिर तुम को उसी के पास जाना है।

هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿29﴾

२९. उसी ने तुम्हारे लिए, जो कुछ धरती में है सब पैदा किया, फिर आकाश का इरादा किया[1] और उस ने सात बराबर आसमान बना दिये और वह हर चीज़ का जानने वाला है।

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً ۖ قَالُوا أَتَجْعَلُ فِيهَا مَن يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۖ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿30﴾

३०. और जब तुम्हारे रब ने फरिश्तों से कहा[2] कि, मैं धरती में एक ख़लीफा[3] (ऐसा गिरोह जो एक-दूसरे के बाद आयेगा) बनाने जा रहा हूँ, तो उन्होंने कहा क्या तू उस में ऐसे लोगों को पैदा करेगा जो उसमें फ़साद और ख़ून-ख़राबा करे, और हम तेरी तारीफ़ के साथ तेरी तस्बीह करते और तेरी पाकीज़गी बयान करते हैं, उस ने कहा जो मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते।

---

[1] इस्लाम धर्म (दीन) के कुछ आलिमों ने इसका अनुवाद (तर्जुमा) :

﴿ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ﴾

"फिर आसमान की ओर चढ़ गया" किया है। (सहीह बुख़ारी)

अल्लाह तआला का आसमानों के ऊपर अर्श पर चढ़ना और ख़ास-ख़ास मौकों पर दुनिया के करीब आसमान पर उतरना अल्लाह की सिफ़ात में से है। जिस पर इसी तरह ईमान रखना ज़रूरी है, जिस तरह से क़ुरआन और हदीस में बयान किया गया है।

[2] मलायेका (फ़रिश्ते) अल्लाह के प्रकाश से पैदा की गई मख़लूक है जिनका ठिकाना आसमान पर है, जो अपने रब के हुक्म का पालन करते हैं और उसकी तारीफ़ और पाकीज़गी के बयान में व्यस्त (मशग़ूल) रहते हैं और उसके किसी हुक्म की नाफ़रमानी नही करते।

[3] ख़लीफ़ा का मतलब ऐसा प्राणी (मख़लूक) है जो एक-दूसरे के बाद आयेगा। (इब्ने कसीर)

३१. और उस (अल्लाह तआला) ने आदम को सभी नाम सिखा कर उन चीज़ों को फ़रिश्तों के सामने पेश कर दिया और फ़रमाया कि अगर तुम सच्चे हो तो इन चीज़ों के नाम बताओ।

وَعَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلَائِكَةِ فَقَالَ أَنْبِئُونِي بِأَسْمَاءِ هَٰؤُلَاءِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿31﴾

३२. उन सभी ने कहा, हे अल्लाह! तू पाक ज़ात है, हमें तो बस उतना ही इल्म है, जितना तूने हमें सिखाया है, पूरे इल्म और हिक्मत वाला तू ही है।

قَالُوا سُبْحَانَكَ لَا عِلْمَ لَنَا إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿32﴾

३३. अल्लाह तआला ने आदम (عليه السلام) से फ़रमाया, "तुम इन के नाम बता दो।" जब उन्होंने बता दिये, तो फ़रमाया क्या मैंने तुम्हें पहले नहीं कहा था कि मैं आसमानों और ज़मीन के ग़ैब को जानता हूँ और जो तुम करते एवं छुपाते हो जानता हूँ।

قَالَ يَا آدَمُ أَنْبِئْهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ فَلَمَّا أَنْبَأَهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿33﴾

३४. और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो, तो इब्लीस के सिवाय सभी ने सज्दा किया। उस ने नकारा और घमंड किया[1] और वह था ही काफ़िरों में।[2]

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿34﴾

३५. और हम ने कह दिया, हे आदम! तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो, और जहाँ से चाहो जी भरकर खाओ-पियो, लेकिन इस पेड़[3] के पास न जाना, वर्ना ज़ालिम हो जाओगे।

وَقُلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿35﴾

---

[1] इब्लीस ने सज्दा से इन्कार किया और ज़लील हुआ। क़ुरआन के अनुसार इब्लीस जिन्नातों में से था, लेकिन अल्लाह तआला ने उसे सम्मानस्वरुप (बाइज़्ज़त) फ़रिश्तों में शामिल कर लिया था, इसलिए अल्लाह के हुक्म से उसको भी सज्दा करना ज़रूरी था, लेकिन उस ने हसद और घमंड की वजह से सज्दा करने से इंकार कर दिया, यानी हसद और घमंड वह पाप है जिनको इंसानियत की दुनियाँ में सब से पहले किया गया और इसका करने वाला इब्लीस था।

[2] अर्थात (यानी) अल्लाह तआला के पहले से इल्म में था।

[3] यह पेड़ किस चीज़ का था? इसके बारे में क़ुरआन और हदीस में वाज़ेह तौर से कुछ नहीं मिलता, इस को गेहूँ का पौधा मशहूर कर दिया गया है, जो अवास्तविक है, हमें उस के नाम को मालूम करने की ज़रूरत नही है और न उसका कोई फ़ायेदा है।

فَأَزَلَّهُمَا الشَّيْطَٰنُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ ۖ وَقُلْنَا اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۖ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿36﴾

३६. लेकिन शैतान ने उन्हें भटका कर वहाँ से निकलवा ही दिया, और हम ने कह दिया कि "उतरो, तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो, और एक मुक़र्रर वक़्त तक तुम्हें धरती पर ठहरना और फ़ायेदा उठाना है।"

فَتَلَقَّىٰ آدَمُ مِن رَّبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿37﴾

३७. आदम (ﷺ) ने अपने पालनहार से कुछ बातें सीख ली (और अल्लाह से तौबा की) उस ने उनकी तौबा क़ुबूल कर ली, बेशक वही तौबा क़ुबूल करने वाला रहम करने वाला है।

قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا ۖ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّي هُدًى فَمَن تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿38﴾

३८. हम ने कहा तुम सभी यहाँ से उतरो, फिर अगर तुम्हारे पास मेरी ओर से हिदायत आये तो जो मेरे सही रास्ते को अपनायेगा उन पर कोई डर नहीं होगा न वे उदासीन होंगे।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿39﴾

३९. और जो कुफ़्र व झूठ के ज़रिये हमारी आयतों को झुठलायें, वे जहन्नम में रहने वाले हैं, और हमेशा उसी में रहेंगे।

يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوا بِعَهْدِي أُوفِ بِعَهْدِكُمْ وَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ﴿40﴾

४०. हे इस्राईल के बेटो ! मेरी उस नेमत को याद करो जो मैंने तुम पर की, और मुझ से किया वादा पूरा करो, मैं तुम से किया वादा पूरा करूँगा, और सिर्फ़ मुझ से ही डरो।

وَآمِنُوا بِمَا أَنزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُونُوا أَوَّلَ كَافِرٍ بِهِ ۖ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا وَإِيَّايَ فَاتَّقُونِ ﴿41﴾

४१. और उस (शरीअत) पर ईमान लाओ जिसे मैंने उस को साबित करने के लिए उतारा जो (तौरात) तुम्हारे साथ है और तुम इस के पहले इंकारी न बनो, और मेरी आयतों को थोड़े मूल्य पर न बेचो,[1] और सिर्फ़ मुझ से डरो।

[1] **"थोड़े मूल्य (क़ीमत) पर मत बेचो"।** इसका मतलब यह कभी नही कि ज़्यादा क़ीमत मिल जाये तो अल्लाह के हुक्म का सौदा कर लो, बल्कि इसका मतलब यह है कि अल्लाह के हुक्म के मुक़ाबले में दुनिया के फ़ायदे को अहमियत न दो। अल्लाह के हुक्म तो इतने क़ीमती हैं कि सारी दुनिया का सामान और चीज़ें उन के मुक़ाबले में हक़ीर हैं। आयत में अगरचे इस्राईल के बेटों की तरफ़ इशारा किया गया है लेकिन यह हुक्म क़यामत तक सभी इंसानों के लिए है, जो कोई भी सच को छोड़ झूठ का पक्ष करे या जिहालत (अज्ञानता) को ज़ाहिर कर सच से सिर्फ़ दुनियावी फल पाने के लिए मुँह मोड़ेगा, वह इस हुक्म में शामिल है। (फ़तहुल क़दीर)

४२. और सत्य (हक़) का असत्य (बातिल) के साथ मिलावट मत करो और न सच को छुपाओ, तुम्हें तो ख़ुद इसका इल्म है।

وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿42﴾

४३. और नमाज क़ायम करो, और ज़कात दो, और रुकुउ करने (झुकने) वालों के साथ रुकुउ करो (झुक जाओ)।

وَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَآتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرّٰكِعِينَ ﴿43﴾

४४. क्या लोगों को नेकी का हुक्म देते हो? और ख़ुद अपने आप को भूल जाते हो, जबकि तुम किताब पढ़ते हो, क्या इतनी भी तुम में अक़्ल नहीं?

أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ وَأَنْتُمْ تَتْلُونَ الْكِتٰبَ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿44﴾

४५. और सब्र व नमाज के जरिये मदद हासिल करो।[1] और यह बड़ी चीज है, लेकिन अल्लाह से डरने वालों के लिए नहीं।

وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۚ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخٰشِعِينَ ﴿45﴾

४६. जो जानते हैं कि अपने रब से मिलना है और उसकी ओर पलट कर जाने वाले हैं।

الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلٰقُوا رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رٰجِعُونَ ﴿46﴾

४७. हे (याकूब) इस्राईल की सन्तानों! मेरी उस नेमत को याद करो, जो मैंने तुम पर उपकार किया और मैंने तुम्हें सारी दुनिया पर फ़ज़ीलत दी।

يٰبَنِي إِسْرٰءِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِينَ ﴿47﴾

४८. और उस दिन से डरो जिस दिन कोई किसी के काम नहीं आएगा, न उसकी कोई सिफारिश क़ुबूल की जाएगी, न उस से कोई बदला क़ुबूल किया जाएगा और न उन्हें मदद दी जाएगी।

وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفٰعَةٌ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ﴿48﴾

४९. और जब हम ने तुम्हें फ़िरऔन के आदमियों[2] से छुटकारा दिलाया, जो तुम्हें बुरा अज़ाब देते रहे, तुम्हारे बेटों को क़त्ल करते रहे, और तुम्हारी बेटियाँ जिन्दा छोड़ते रहे, इस

وَإِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۚ وَفِي ذٰلِكُمْ بَلَاءٌ مِنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿49﴾

---

[1] सब्र और नमाज दोनों अल्लाह वालों के दो बड़े हथियार हैं। नमाज के जरिये एक मोमिन को अल्लाह से सम्बन्ध आसानी से होता है, जिससे उसे अल्लाह की मर्जी और मदद हासिल होती है, सब्र के जरिये उसके चरित्र (किरदार) में मजबूती और धर्म में इस्तिक़ामत पैदा होती है।

[2] आले फ़िरऔन से मुराद केवल फ़िरऔन और उसका परिवार ही नहीं, बल्कि फ़िरऔन के सभी साथी हैं।

से छुटकारा दिलाने में तुम्हारे रब का बड़ा उपकार था।

وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَ اَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿50﴾

५०. और जब हम ने तुम्हारे लिए सागर को फाड़ दिया[1] और उस से तुम्हें पार कर दिया और फ़िरऔन के साथियों को तुम्हारी आँखों के सामने डुबो दिया।

وَاِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰٓى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿51﴾

५१. और हम ने मूसा (عليه السلام) को चालीस रातों का वचन दिया, फिर तुम ने बछड़े को माबूद बना लिया, और ज़ालिम बन गए।

ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿52﴾

५२. लेकिन हम ने इस के बावजूद भी तुम्हें माफ़ कर दिया, ताकि तुम शुक्रगुज़ार रहो।

وَاِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ الْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿53﴾

५३. और हम ने मूसा (عليه السلام) को तुम्हारी हिदायत के लिए किताब (तौरात) और मोजिज़ा अता किये।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ ۭ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۭ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿54﴾

५४. और जब मूसा (عليه السلام) ने अपनी क़ौम वालों से कहा कि "हे मेरी क़ौम वालों! तुम ने बछड़े को (देवता) बनाकर ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया है, अब तुम अपने पैदा करने वाले की तरफ़ तवज्जोह करो, अपने आप को (अपराधी को) अपने हाथों क़त्ल करो, तुम्हारे लिए भलाई अल्लाह तआला के पास इसी में है" तो उस ने तुम्हारी तौबा (क्षमा-याचना) क़ुबूल की। बेशक वही तौबा क़ुबूल करने वाला और रहम करने वाला है।

وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿55﴾

५५. और (तुम उसे भी याद करो) जब तुम ने मूसा (عليه السلام) से कहा था कि - जब तक हम अल्लाह को सामने न देख लेंगे कभी भी ईमान न लाएंगे (जिस नाफ़रमानी के दण्डस्वरुप) तुम पर तुम्हारे देखते हुए बिजली गिर पड़ी।

[1] सागर का फाड़ना और उस में रास्ता बना देना, यह एक मोजिज़ा था, जिसका पूरा बयान सूर: "शोआरा" में किया गया है। यह समुद्र का ज्वार-भाटा नहीं था, जैसाकि सर सैय्यद अहमद ख़ाँ और दूसरे मोजिज़ा का इंकार करने वालों का विचार है।

५६. (लेकिन) फिर हम ने तुम्हें मौत के बाद ज़िंदगी इसलिए दिया ताकि तुम शुक्रिया अदा करो।

ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿56﴾

५७. और हमने तुम्हारे ऊपर बादलों की छाया की और तुम पर मन्न व सलवा उतारा[1] (और कह दिया) हमारी अता की हुई पाक चीजें खाओ, और उन्होंने हम पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि ख़ुद अपने आप पर ज़ुल्म करते थे।

وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۭ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ۭ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿57﴾

५८. और हम ने तुम से कहा कि इस बस्ती में जाओ।[2] और जो कुछ जहाँ कहीं से भी चाहो जी भर कर खाओ-पियो और दरवाज़े में से सिर झुकाए हुए दाख़िल हो[3] और मुँह से कहो कि "हम माफ़ी चाहते हैं।"[4] हम तुम्हारी ग़लतियों को माफ़ कर देंगे और भलाई करने वालों को और ज़्यादा अता करेंगे।

وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ۭ وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿58﴾

५९. फिर उन ज़ालिमों ने यह बात जो उन से कही गई, बदल डाली, हम ने भी उन ज़ालिमों पर उनकी नाफ़रमानी की वजह से आकाश से अज़ाब उतारा।[5]

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَاۗءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿59﴾

---

[1] (मन्न) कुछ के पास तुरंजबीन है, या ओस, जो पेड़ या पत्थर पर गिरती तो शहद के तरह मीठी हो जाती और सूख कर गोंद की तरह हो जाती। कुछ के नजदीक शहद की तरह मीठा पानी है। हदीस है कि :

(الكمأة نوع من المنّ)

"कुम्भी मन्न की तरह है।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

सलवा बटेर या एक तरह की चिड़िया थी जो ज़िब्ह (वध) करके खा लेते थे। (फ़तहुल क़दीर)

[2] उस बस्ती से मुराद ज़्यादातर मुफ़स्सिरों के नज़दीक बैतुल मुक़द्दस है।

[3] सज्दा से मुराद कुछ लोगों ने झुकते हुए दाख़िल होने से लिया है और कुछ ने शुक्रिया को सज्दा ही माना है। मुराद यह है कि अल्लाह के सामने शुक्रिया अदा करते हुए आजिज़ी ज़ाहिर करते हुए दाख़िल हो।

[4] حطة का मतलब है "हमारे गुनाहों को माफ़ कर दे।"

[5] ये आकाश से अज़ाब क्या था? कुछ के नज़दीक अल्लाह का गुस्सा, अधिक धुन्ध और प्लेग था, इस आख़िरी मतलब का पक्ष हदीस से हासिल होता है।

६०. और जब मूसा (अलैहि०) ने अपनी जाति के लिए पानी माँगा तो हम ने कहा कि अपनी लाठी पत्थर पर मारो, जिसे बारह चश्मे फूट पड़े, हर गिरोह ने अपना चश्मा पहचान लिया (और हम ने कह दिया कि) अल्लाह तआला का अता किया हुआ अनाज खाओ-पियो और धरती पर फ़साद फैलाते न फिरो।

وَإِذِ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا اضْرِب بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ فَانفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۖ كُلُوا وَاشْرَبُوا مِن رِّزْقِ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ (60)

६१. और जब तुम ने कहा कि "हे मूसा (अलैहि०)!" हम से एक ही तरह का खाना खाने पर सब्र नहीं हो सकेगा, इसलिए अपने रब से दुआ कीजिए कि वह हमें धरती पर पैदा साग, ककड़ी, गेहूँ, मसूर, और प्याज दे। आप ने कहा कि उम्दा चीज़ के बदले हक़ीर चीज़ क्यों माँगते हो? अच्छा शहर में जाओ और वहाँ पर तुम्हें तुम्हारी पसंद की यह सभी चीजें मिलेंगी।[1] उन पर ज़िल्लत और ग़रीबी डाल दी गई और वे अल्लाह का अज़ाब लेकर लौटे, यह इसलिए कि वे अल्लाह की आयतों को नहीं मानते थे और नबियों का नाहक क़त्ल करते थे, यह उनकी ज़्यादतियों का नतीजा है।

وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ لَن نَّصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنبِتُ الْأَرْضُ مِن بَقْلِهَا وَقِثَّائِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ۖ قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ الَّذِي هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ ۚ اهْبِطُوا مِصْرًا فَإِنَّ لَكُم مَّا سَأَلْتُمْ ۗ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ وَبَاءُوا بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ ۗ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوا وَّكَانُوا يَعْتَدُونَ (61)

६२. बेशक जो मुसलमान हो, यहूदी हो, नसारा (इसाई) हो या साबी हो,[2] जो कोई भी अल्लाह तआला और क़यामत के दिन पर ईमान लाएगा और अच्छे काम करेगा उस का बदला उस के रब के पास है, और उन को न कोई डर है और न कोई ग़म होगा।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصَارَىٰ وَالصَّابِئِينَ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (62)

---

[1] यह हादसा भी उसी तीह के मैदान का है। मिस्र से मतलब इजिप्ट देश नहीं बल्कि कोई शहर है। मतलब यह है कि यहाँ से किसी भी शहर में चले जाओ और वहाँ खेती करो। अपनी पसन्द की तरकारियाँ व दालें उगाओ और खाओ। उनकी यह माँग चूँकि इन्आम का अनादर था इसलिए फटकार के रुप में कहा गया कि "तुम्हारे लिए वहाँ तुम्हारी मन पसन्द चीजें हैं।"

[2] صابئ _ صابئين का बहुवचन (जमा) है। यह वे लोग हैं जो जरूर शुरूआती दौर में किसी सच्चे धर्म (दीन) के मानने वाले रहे होंगे (इसलिए क़ुरआन में यहूदी, इसाई धर्म के साथ बयान किया गया है) लेकिन बाद में उन के अन्दर फ़रिश्तों की पूजा का रिवाज हो गया या यह किसी भी धर्म के मानने वाले न रहे, इसी वजह से बेदीनों को साबी कहा जाने लगा।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ ۖ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ (63)

६३. और जब हम ने तुम से वचन लिया और तुम्हारे ऊपर तूर पहाड़ ला खड़ा कर दिया।[1] और कहा-जो हम ने तुम्हें दिया है, उसे मजबूती से पकड़े रहो और जो कुछ उस में है उसे याद करो, ताकि तुम बच सको।

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ ۖ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ (64)

६४. फिर तुम उस के बाद भी फिर गए, फिर अगर अल्लाह तआला का फ़ज्ल और रहमत तुम पर न होती, तो तुम नुक़सान उठाने वाले होते।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ (65)

६५. और अवश्य ही तुम्हें उन लोगों के बारे में इल्म भी है, जो तुम में से शनिवार[2] के बारे में हद से तजाउज़ कर गए और हम ने (भी) कह दिया कि तुम ज़लील बन्दर बन जाओ।

فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِلْمُتَّقِينَ (66)

६६. इसे हमने अगले-पिछलों के लिए होशियार रहने की वजह बना दिया, और डरने वालों के लिए नसीहत है।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً ۖ قَالُوا أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ۖ قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ (67)

६७. और मूसा (عليه السلام) ने जब अपनी जाति से कहा कि - अल्लाह तआला तुम्हें एक गाय[3] ज़िब्ह करने का हुक्म देता है, तो उन्होंने कहा कि "हम से क्यों मज़ाक़ करते हो?" आप ने जवाब दिया कि "मैं ऐसी बेवक़ूफ़ी से अल्लाह तआला की पनाह लेता हूँ।"

---

[1] जब तौरात के हुक्मों के लिए यहूदियों ने दुश्मनी के तौर पर कहा कि - हम से तो इन हुक्मों का पालन नहीं हो सकेगा तो अल्लाह तआला ने तूर पहाड़ को छत की तरह उन के ऊपर उठा दिया, जिससे डर कर उन्होंने पालन करने का वचन दिया।

[2] السبت (शनिवार) के दिन यहूदियों को मछली का शिकार, बल्कि कोई भी काम करने से रोका गया था, लेकिन उन्होंने एक बहाना निकाल कर अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी की। शनिवार के दिन (इम्तेहान के लिए) मछलियां ज़्यादा आतीं, उन्होंने गड्ढे खोद लिए ताकि मछलियां उस में फंसी रहें और फिर रविवार के दिन उन को पकड़ लेते।

[3] इस्राईल की औलाद में बिना किसी औलाद के एक आदमी था, उस का एक ही वारिस उस का भतीजा था, एक रात उस भतीजे ने अपने चाचा का क़त्ल करके लाश किसी दूसरे आदमी के दरवाज़े पर डाल दी, असली क़ातिल की खोज में वे एक-दूसरे को कहने लगे, आख़िर में बात मूसा عليه السلام तक पहुँची, तो उन्हें एक गाय ज़िब्ह करने का हुक्म हुआ, गाय के गोश्त का एक टुकड़ा लाश पर मारा गया, जिससे वह ज़िन्दा हो गया और क़ातिल को पहचान कराते ही मर गया। (फ़तहुल क़दीर)

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ عَوَانٌ بَيْنَ ذَٰلِكَ ۖ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ﴿68﴾

६८. उन्होंने कहा–हे मूसा! (ﷺ), अल्लाह से दुआ कीजिए की हमें उस के बारे में बता दे। आप ने फ़रमाया, सुनो! वह गाय न तो बूढ़ी हो और न बछिया, बल्कि दरमियानी उम्र की हो, अब तुम्हें जो हुक्म दिया गया है उसका पालन करो।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا لَوْنُهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَاءُ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النَّاظِرِينَ ﴿69﴾

६९. वे फिर कहने लगे कि अल्लाह से दुआ कीजिए कि वह हमें बता दे कि उसका रंग कैसा हो? फरमाया वह कहता है कि गाय सुनहरे तीखे रंग की हो, और देखने वालों को खुश कर देती हो।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَابَهَ عَلَيْنَا وَإِنَّا إِن شَاءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ﴿70﴾

७०. वे कहने लगे कि अपने रब से दुआ कीजिए कि वह हमें खोल कर बता दे कि वह कैसी हो? इस तरह की बहुत सी गायें हैं पता नहीं चलता, अगर अल्लाह ने चाहा तो हमें हिदायत हासिल हो जाएगी।

قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيهَا ۚ قَالُوا الْآنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ۚ فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ﴿71﴾

७१. उस ने कहा कि अल्लाह का हुक्म है कि वह गाय खेती वाली जमीन में हल जोतने वाली और खेतों को पानी पिलाने वाली नहीं, वह स्वस्थ और बेदाग है। उन्होंने कहा अब आप ने वाजेह कर दिया, फिर भी वह आदेशों का पालन करने वाले नहीं थे, लेकिन उसे माना और गाय की क़ुर्बानी दी।

وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادَّارَأْتُمْ فِيهَا ۖ وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿72﴾

७२. और जब तुम ने एक जान को क़त्ल कर दिया, फिर एक-दूसरे पर इल्जाम लगाने लगे, और अल्लाह को तुम्हारी छुपाई बात जाहिर करनी थी।

فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا ۚ كَذَٰلِكَ يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَىٰ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿73﴾

७३. हम ने कहा कि उस गाय का एक टुकड़ा मुर्दा के जिस्म पर मारो (वह जिन्दा हो जाएगा) उसी तरह अल्लाह तआला मुर्दा को जिन्दा करके तुम्हारी अक़्लमंदी के लिए निशानियाँ दिखाता है।

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ۭ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ۭ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاۗءُ ۭ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۭ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ (74)

७४. फिर उस के बाद तुम्हारे दिल पत्थर जैसे बल्कि उस से भी ज़्यादा मज़बूत हो गए, कुछ पत्थरों से तो नहरें बह निकलती हैं तथा कुछ फट जाते हैं और उन से पानी निकलता है, और कुछ अल्लाह तआला के डर से गिर पड़ते हैं, और तुम अल्लाह तआला को अपने अमल से अन्जान न जानो।

اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَھُمْ يَعْلَمُوْنَ (75)

७५. (हे मुसलमानों!) क्या तुम चाहते हो कि वह (यहूदी) तुम्हारा यक़ीन कर लें – जबकि उन में ऐसे भी हैं जो अल्लाह का कलाम सुनते हैं फिर उसे समझने के बाद उसे फेर-बदल कर देते हैं, और ऐसा वे जानकर करते हैं।

وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ښ وَاِذَا خَلَا بَعْضُھُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْٓا اَتُحَدِّثُوْنَھُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاۗجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (76)

७६. और जब ईमान वालों से मिलते हैं तो अपनी ईमानदारी ज़ाहिर करते हैं, और जब आपस में मिलते हैं तो कहते हैं कि मुसलमानों तक क्यों वह बातें पहुँचाते हो जो अल्लाह ने तुम्हें सिखायी हैं, क्या जानते नहीं कि ये तो अल्लाह के सामने तुम पर उनका सुबूत हो जाएगा।

اَوَلَا يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ (77)

७७. क्या ये नहीं जानते कि अल्लाह तआला उनकी छुपी और ज़ाहिर सभी बातें जानता है।

وَمِنْھُمْ اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ اِلَّآ اَمَانِىَّ وَاِنْ ھُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ (78)

७८. और उन में से कुछ अनपढ़ ऐसे भी हैं जो उम्मीदों के सिवाय किताब नहीं जानते और सिर्फ़ अटकल करते हैं।

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَيْدِيْهِمْ ۤ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ ھٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَـمَنًا قَلِيْلًا ۭ فَوَيْلٌ لَّھُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّھُمْ مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ (79)

७९. उन लोगों के लिए हलाकत है, जो ख़ुद अपने हाथों लिखी किताब को अल्लाह की किताब कहते हैं, और इस तरह दुनिया (धन) कमाते हैं, अपने हाथों लिखने की वजह से उनकी बरबादी है और अपनी इस कमाई की वजह से उनका विनाश है।

وَقَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً ۭ قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗٓ اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (80)

८०. और ये लोग कहते हैं कि हम तो कुछ ही दिन जहन्नम में रहेंगे, (उन से) कहो कि क्या तुम ने अल्लाह तआला से कोई वादा लिया है[1]? अगर है तो बेशक अल्लाह तआला अपना

[1] यहूदी कहते थे कि दुनिया का वजूद केवल सात हज़ार साल के लिए है और हम हज़ार साल के बदले एक दिन जहन्नम में रहेंगे, इस तरह सिर्फ़ सात दिन नरक में रहेंगे। कुछ कहते थे कि हम ने चालीस दिन बछड़े की इबादत की थी, चालीस दिन नरक में रहेंगे। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि

वादा तोड़ेगा नहीं, या तुम अल्लाह के ऊपर वह बातें लगाते हो जिन्हें तुम नहीं जानते ।[1]

بَلٰی مَنۡ کَسَبَ سَیِّئَۃً وَّاَحَاطَتۡ بِہٖ خَطِیۡٓئَتُہٗ فَاُولٰٓئِکَ اَصۡحٰبُ النَّارِ ۚ ہُمۡ فِیۡہَا خٰلِدُوۡنَ ﴿81﴾

८१. बेशक जिसने भी गुनाह किया और उस के गुनाह ने उसे घेर लिया वह जहन्नमी है। वह हमेशा जहन्नम में रहेगा।

وَالَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِکَ اَصۡحٰبُ الۡجَنَّۃِ ۚ ہُمۡ فِیۡہَا خٰلِدُوۡنَ ﴿82﴾

८२. और जो लोग ईमान लाये और नेक अमल किये वे जन्नती हैं, जो हमेशा जन्नत में रहेंगे।

وَاِذۡ اَخَذۡنَا مِیۡثَاقَ بَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ لَا تَعۡبُدُوۡنَ اِلَّا اللّٰہَ ۟ وَبِالۡوَالِدَیۡنِ اِحۡسَانًا وَّذِی الۡقُرۡبٰی وَالۡیَتٰمٰی وَالۡمَسٰکِیۡنِ وَقُوۡلُوۡا لِلنَّاسِ حُسۡنًا وَّاَقِیۡمُوا الصَّلٰوۃَ وَاٰتُوا الزَّکٰوۃَ ؕ ثُمَّ تَوَلَّیۡتُمۡ اِلَّا قَلِیۡلًا مِّنۡکُمۡ وَاَنۡتُمۡ مُّعۡرِضُوۡنَ ﴿83﴾

८३. और जब हम ने इसराईल के पुत्रों से वादा लिया कि-तुम अल्लाह के सिवाय किसी और की इबादत न करना और माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक करना, और उसी तरह क़रीबी रिश्तेदारों, यतीमों और ग़रीबों के साथ, और लोगों को अच्छी बातें बताना, नमाज़ क़ायम करना और ज़कात देते रहना, लेकिन थोड़े से लोगों के सिवाय तुम सभी मुकर गये और मुँह मोड़ लिये।

وَاِذۡ اَخَذۡنَا مِیۡثَاقَکُمۡ لَا تَسۡفِکُوۡنَ دِمَآءَکُمۡ وَلَا تُخۡرِجُوۡنَ اَنۡفُسَکُمۡ مِّنۡ دِیَارِکُمۡ ثُمَّ اَقۡرَرۡتُمۡ وَاَنۡتُمۡ تَشۡہَدُوۡنَ ﴿84﴾

८४. और जब हम ने तुम से वादा लिया कि आपस में ख़ून न बहाना (क़त्ल न करना) और अपनों को देश से न निकालना, तुम ने क़ुबूल किया और तुम उस के गवाह बने।

ثُمَّ اَنۡتُمۡ ہٰۤؤُلَآءِ تَقۡتُلُوۡنَ اَنۡفُسَکُمۡ وَتُخۡرِجُوۡنَ فَرِیۡقًا مِّنۡکُمۡ مِّنۡ دِیَارِہِمۡ ۫ تَظٰہَرُوۡنَ عَلَیۡہِمۡ بِالۡاِثۡمِ وَالۡعُدۡوَانِ ؕ وَاِنۡ یَّاۡتُوۡکُمۡ اُسٰرٰی تُفٰدُوۡہُمۡ وَہُوَ مُحَرَّمٌ عَلَیۡکُمۡ اِخۡرَاجُہُمۡ ؕ اَفَتُؤۡمِنُوۡنَ بِبَعۡضِ الۡکِتٰبِ وَتَکۡفُرُوۡنَ بِبَعۡضٍ ۚ فَمَا جَزَآءُ مَنۡ یَّفۡعَلُ ذٰلِکَ مِنۡکُمۡ اِلَّا خِزۡیٌ فِی الۡحَیٰوۃِ الدُّنۡیَا ۚ وَیَوۡمَ الۡقِیٰمَۃِ یُرَدُّوۡنَ اِلٰۤی اَشَدِّ الۡعَذَابِ ؕ وَمَا اللّٰہُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿85﴾

८५. फिर भी तुम ने अपनों का क़त्ल किया और अपने एक गुट को देश से निकाला और गुनाह और जलन करने के काम में उन के ख़िलाफ़ दूसरे का पक्ष लिया। हाँ जब वे बन्दी बनकर तुम्हारे पास आए तो तुम ने उन के बदले में माल दिया (जिसे फ़िदिया कहते हैं), लेकिन उनका निकालना जो तुम पर हराम था (उसकी कुछ फ़िक्र न की)। क्या तुम किताब की कुछ बातें मानते हो और कुछ को नकारते हो? तुम में से जो भी ऐसा करे उसकी सज़ा इस के सिवाय क्या हो कि दुनिया में ज़िल्लत और

[1] क्या तुम ने अल्लाह से समझौता किया है? अल्लाह तआला के साथ इस तरह का कोई वादा नहीं है। या तुम्हारा यह दावा कि अगर हम नरक में गये भी तो सिर्फ़ कुछ दिनों के लिए जाएंगे, तुम्हारे अपनी तरफ़ से है, और इस तरह तुम अल्लाह के ऊपर ऐसी बातें लगाते हो, जिनका तुम्हें ख़ुद इल्म नहीं है। आगे अल्लाह तआला अपना वह क़ानून बयान कर रहा है जिस के आधार पर क़यामत के दिन वह नेकी करने वाले और बुरों को उन की नेकी और बुरे काम की सज़ा देगा।

क़यामत के दिन कठिन सज़ाओं की मार! और अल्लाह तुम्हारे आमाल से अंजान नहीं है।

أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۫
فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿86﴾

८६. ये वे लोग हैं जिन्होंने दुनिया की ज़िंदगी को आख़िरत के बदले ख़रीद लिया है, उनकी न सज़ायें क़म होंगी न उनकी मदद की जाएगी।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ
بِالرُّسُلِ ۫ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ
وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۭ اَفَكُلَّمَا جَاۗءَكُمْ
رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ
فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ ۡ وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ﴿87﴾

८७. और हम ने मूसा (عليه السلام) को किताब अता की और उन के बाद लगातार रसूल भी भेजे और हम ने ईसा (عليه السلام) बिन मरियम को वाज़ेह निशानियाँ अता कीं और पाकीज़ा रूह (हज़रत जिब्रील) से उनकी ताईद करायी, लेकिन जब कभी भी तुम्हारे पास रसूल वह चीज़ लाए, जो तुम्हारे विचारों के ख़िलाफ़ थीं, तुम ने फ़ौरन तकब्बुर किया, फिर कुछ को तुम ने झुठला दिया और कुछ को क़त्ल कर दिया।

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ۭ بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ
فَقَلِيْلًا مَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿88﴾

८८. और उन्होंने कहा कि हमारे दिल ढंके हुए हैं, (नहीं, नहीं) बल्कि उन के कुफ़्र की वजह से उन्हें अल्लाह ने धित्कार दिया है, तो उन मे ईमान वाले सिर्फ़ थोड़े है।[1]

وَلَمَّا جَاۗءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ
لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَي
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ښ فَلَمَّا جَاۗءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا
بِهٖ ۡ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَي الْكٰفِرِيْنَ ﴿89﴾

८९. और जब उन के पास उनकी किताब (तौरात) की पुष्टि (तसदीक़) करने के लिए एक किताब (पाक क़ुरआन) आ गई, अगरचे इस से पहले ये ख़ुद इस के द्वारा काफ़िरों पर जीत चाहते थे, तो आ जाने के बावजूद और पहचान लेने के बावजूद उन्हें नकार दिया, अल्लाह (तआला) की लानत हो काफ़िरों पर।

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰي مَنْ
يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ فَبَاۗءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰي غَضَبٍ ۭ
وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿90﴾

९०. बहुत बुरी है वह चीज़ जिसके बदले उन्होंने अपने को बेच डाला, वह उनका कुफ़्र करना है अल्लाह तआला की तरफ़ से उतरी किताब को, सिर्फ़ इस बात से जल कर कि अल्लाह ने अपनी नेमत अपने जिस बन्दे पर चाहा उतारा, इस कारण वे क्रोध (ग़ज़ब) पर क्रोध के भागी हो गए[2] और उन काफ़िरों के लिये अपमानजनक

---

[1] दिलों पर सच्ची बातों का असर न पड़ना, कोई बड़प्पन की बात नहीं बल्कि यह निन्दनीय (ज़लील) होने की निशानी हैं, इसलिए उनका ईमान भी तनिक है (जो अल्लाह के यहाँ क़ुबूल नहीं है) या उन में ईमान लाने वाले भी थोड़े ही लोग होंगे।

[2] क्रोध (गुस्सा) पर क्रोध का मतलब होता है, बहुत ज़्यादा क्रोध। क्योंकि बार-बार वे क्रोध का

(रूस्वा करने वाला) अज़ाब है।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا نُؤْمِنُ بِمَا أُنزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِمَا وَرَاءَهُ وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ۗ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنبِيَاءَ اللَّهِ مِن قَبْلُ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿91﴾

९१. और जब उन से कहा गया कि उस पर ईमान लाओ जिसे अल्लाह ने उतारा है, तो उन्होंने कह दिया कि जो हम पर (तौरात) नाज़िल हुई उस पर हमारा ईमान है, और वह उस के सिवाय (पाक क़ुरआन) का इन्कार करते हैं, जब कि वह सच है, उन के पास (धर्मग्रन्थ) की तसदीक़ कर रहा है। (हे! रसूल) उन से कहो कि अगर तुम अपनी किताब पर यक़ीन रखते हो तो इस से पहले अल्लाह के रसूलों का क़त्ल क्यों किया।

وَلَقَدْ جَاءَكُم مُّوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِن بَعْدِهِ وَأَنتُمْ ظَالِمُونَ ﴿92﴾

९२. और तुम्हारे पास मूसा (ﷺ) यही निशानियाँ लेकर आए, लेकिन फिर भी तुम ने बछड़े की पूजा की, तुम हो ही ज़ालिम।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُم بِقُوَّةٍ وَاسْمَعُوا ۖ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأُشْرِبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۚ قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُم بِهِ إِيمَانُكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿93﴾

९३. और जब हम ने तुम से वादा लिया और तुम पर तूर पहाड़ खड़ा कर दिया (और कह दिया) कि हमारी अता की हुई चीज़ों को मज़बूती से पकड़ो और सुनो, तो उन्होंने कहा हम ने सुना और नाफ़रमानी की, और उन के दिलों में बछड़े का प्रेम (जैसा कि) पिला दिया गया,[1] उन के कुफ़्र की वजह से। (उनसे) कह दीजिए कि तुम्हारा ईमान तुम्हें बुरा हुक्म दे रहा है, अगर तुम ईमान वाले हो।

قُلْ إِن كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِندَ اللَّهِ خَالِصَةً مِّن دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿94﴾

९४. (आप) कह दीजिए कि अगर अल्लाह के पास आख़िरत का घर तुम्हारे ही लिए है और किसी के लिए नहीं, तो आओ अपनी सच्चाई की पुष्टि (तसदीक़) के लिए मौत माँगो।

काम करते रहे, जैसा कि तफ़सील से गुज़र चुका है और अब सिर्फ़ हसद की वजह से क़ुरआन और हज़रत मोहम्मद ﷺ का इंकार किया।

[1] एक तो प्यार ख़ुद ही ऐसा जज़्बा है कि इंसान को अंधा और बहरा बना देता है। दूसरे इसको أشربوا (पिला दी गई) से तुलना (मुआज़ना) की गई है क्योंकि पानी इंसान के नस-नस और जिस्म की आँतों में दौड़ता है जबकि खाने का सामान इस तरह नहीं होता। (फ़तहुल क़दीर)

وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿95﴾

९५. लेकिन अपने अमल को देखते हुए वे कभी भी मौत नहीं मांगेंगे और अल्लाह (तआला) ज़ालिमों को अच्छी तरह जानता है।

وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ يُّعَمَّرَ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿96﴾

९६. बल्कि सब से ज़्यादा दुनिया की ज़िन्दगी को प्यार करने वाला (ऐ नबी !) आप उन्हीं को पाएंगे, ये ज़िन्दगी की लालच में मुशरिकों (मूर्तिपूजकों) से भी ज़्यादा हैं। उन में से हर शख़्स एक-एक हज़ार साल की उम्र चाहता है, अगरचे ये उम्र दिया जाना भी उन्हें अज़ाबों से नहीं बचा सकता, अल्लाह (तआला) उन के अमल को अच्छी तरह देख रहा है।

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿97﴾

९७. (ऐ नबी!) आप कह दीजिए कि जो जिब्रील के दुश्मन हों, जिस ने आप के दिल पर अल्लाह का पैग़ाम उतारा है, जो पैग़ाम उनके पास की किताब की तसदीक़ करने वाला और ईमान वालों को हिदायत और ख़ुशख़बरी देने वाला है। (तो अल्लाह भी उनका दुश्मन है)[1]

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰىلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿98﴾

९८. जो इंसान अल्लाह का और उसके फ़रिश्तो और उसके रसूलों व जिब्रील और मीकाईल का दुश्मन हो, ऐसे काफ़िरों (अधर्मियों) का दुश्मन ख़ुद अल्लाह है।

وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿99﴾

९९. और बेशक हम ने आप की तरफ़ वाज़ेह निशानियाँ भेजी हैं, जिनको फ़ासिकों के सिवाय और कोई इन्कार नहीं करता।

اَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿100﴾

१००. ये लोग जब कभी भी वादा करते हैं तो उन का एक न एक गुट उसे तोड़ देता है। बल्कि उन में से ज़्यादातर ईमान से ख़ाली हैं।

---

[1] हदीसों में है कि यहूदियों के कुछ आलिम नबी ﷺ के पास आए और कहा कि अगर आप ﷺ ने उनका ठीक जवाब दे दिया तो हम ईमान ले आयेंगे, क्योंकि नबी के सिवा उनका जवाब कोई नहीं दे सकता। जब आप ﷺ ने उन के सवालों का जवाब ठीक-ठीक दे दिया तो उन्होंने कहा कि आप ﷺ पर प्रकाशना (वहयी) कौन लाता है? आप ﷺ ने फ़रमाया "जिब्रील" यहूदी कहने लगे कि जिब्रील तो हमारा दुश्मन है, वही तो लड़ाई, क़त्ल और अज़ाब लेकर उतरता रहा है और इस बहाने से आप (ﷺ) को मानने से इंकार कर दिया। (इब्ने कसीर और फ़तहुल क़दीर)

وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْ عِندِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيقٌ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُورِهِمْ كَأَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿101﴾

१०१. और जब कभी उन के पास अल्लाह का कोई रसूल उनकी किताब की तसदीक़ (पुष्टि) करने आया, तो उन अहले किताब के एक गुट ने अल्लाह की किताब को इस तरह पीछे डाल दिया जैसे जानते नहीं थे।

وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِينُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۖ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِينَ كَفَرُوا يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ وَمَآ أُنزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هٰرُوتَ وَمٰرُوتَ ۚ وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ أَحَدٍ حَتّٰى يَقُولَآ إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ۖ فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ ۚ وَمَا هُم بِضَآرِّينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنفَعُهُمْ ۚ وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهُ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلٰقٍ ۚ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهِ أَنفُسَهُمْ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿102﴾

१०२. और उस के पीछे लग गये जिसे शैतान, (हज़रत) सुलेमान के मुल्क में पढ़ते थे। सुलेमान ने तो कुफ़्र न किया था बल्कि यह कुफ़्र शैतानों का था, वे लोगों को जादू सिखाते थे, और बाबिल में हारुत और मारुत दो फ़रिश्तों पर जो उतारा गया था, वह दोनों भी किसी शख़्स को उस वक़्त तक न सिखाते थे जब तक वे यह न कह दें कि हम तो एक इम्तेहान हैं, तू कुफ़्र न कर, फिर लोग उन से वह सीखते जिससे पति-पत्नी में फूट डाल दें। हक़ीक़त में वे बिना अल्लाह की मर्ज़ी के किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकते।[1] ये लोग वह सीखते हैं जो इन्हें न नुक़सान पहुँचाए और न फ़ायेदा पहुँचा सके, और वह निश्चित रुप से जानते हैं कि इस के लेने वाले का आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं है। और वह बहुत ही बुरी चीज़ है जिसके बदले वे अपने आप को बेच रहे हैं, अगर ये जानते होते।

وَلَوْ أَنَّهُمْ اٰمَنُوا وَاتَّقَوْا لَمَثُوبَةٌ مِّنْ عِندِ اللّٰهِ خَيْرٌ ۖ لَّوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿103﴾

१०३. और अगर ये लोग ईमान लाते और अल्लाह से डर रखते तो अल्लाह (तआला) की ओर से भलाई मिलती, अगर ये जानते होते।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا لَا تَقُولُوا رٰعِنَا وَقُولُوا انظُرْنَا وَاسْمَعُوا ۗ وَلِلْكٰفِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿104﴾

१०४. ऐ ईमानवालो! तुम (नबी ﷺ को) راعنا (हमारा ध्यान दीजिए या हमारा ख़्याल कीजिए) न कहा करो, बल्कि انظرنا (हमारी ओर देखिये)

[1] यह जादू भी उस समय तक किसी को नुक़सान नहीं पहुँचा सकता, जब तक अल्लाह का हुक्म और मर्ज़ी न हो, इसलिए उस के सीखने का क्या फ़ायेदा है? यही वजह है कि इस्लाम ने जादू सीखने और करने को कुफ़्र कहा है, हर तरह की भलाई की कामना और नुकसान से बचाव के किए केवल अल्लाह तआला से ही दुआ की जाये क्योंकि वही हर चीज का करने वाला है और मख़लूक का हर काम उसी की मर्ज़ी से होता है।

कहो ।[1] और सुनते रहा करो और काफ़िरों के लिए दुखदायी अज़ाब है।

१०५. न तो अहले किताब के काफ़िर और न मूर्तिपूजक चाहते हैं कि तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से भलाई उतरे (उन के इस हसद से क्या हुआ?) अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपनी रहमत ख़ास तरीक़े से अता कर दे और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है।

مَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿105﴾

१०६. जिस आयत को हम मंसूख़ कर दें या भुला दें उससे अच्छी या उस जैसी और लाते हैं[2] क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह हर चीज़ की क़ुदरत रखता है।

مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ أَوْ نُنْسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ أَوْ مِثْلِهَا ۗ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿106﴾

१०७. क्या तुझे मालूम नहीं कि धरती और आकाशों का मुल्क अल्लाह ही के लिए है। और अल्लाह के सिवाय तुम्हारा कोई संरक्षक (वली) और मददगार नहीं।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيرٍ ﴿107﴾

१०८. क्या तुम अपने रसूल से वैसे सवाल करना चाहते हो जैसे इससे पहले मूसा (ﷺ) से पूछा गया[3] (सुनो!) जो ईमान को कुफ़्र से बदलता है वह सीधी राह से भटक जाता है।

أَمْ تُرِيدُونَ أَنْ تَسْـَٔلُوا رَسُولَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوسٰى مِنْ قَبْلُ ۗ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيلِ ﴿108﴾

[1] راعنا, का मतलब है, हमारा विचार कीजिये, लेकिन यहूदी अपने हसद की वजह से इस लफ़्ज़ को थोड़ा सा बिगाड़ कर इस्तेमाल करते थे, जिससे उसका मतलब बदल जाता था, वे कहते थे راعينا जिसका मतलब 'हमारे चरवाहे' । या راعنا का मतलब है 'मूर्ख' वग़ैरह, अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुम انظرنا कहा करो।

[2] نسخ के शाब्दिक अर्थ (लफ़्ज़ी मायने) तो "नक़्ल" करने के हैं, लेकिन धार्मिक परिभाषा में एक हुक्म को मंसूख़ करके दूसरा हुक्म उतारने के हैं, यह बदलाव अल्लाह तआला की तरफ़ से हुआ है, जैसे आदम (ﷺ) के समय में सगे बहन-भाई में शादी जायज़ थी, बाद में इसे हराम कर दिया गया आदि, इसी तरह क़ुरआन में भी अल्लाह तआला ने कुछ हुक्म मंसूख़ करके उनकी जगह पर नये क़ानून उतारे हैं।

[3] मुसलमानों (सहाबा) को चेतावनी (तंबीह) दी जा रही है कि तुम यहूदियों की तरह अपने रसूल से अपनी मनमानी ग़ैर ज़रूरी सवाल मत किया करो, इस में कुफ़्र की उम्मीद है।

وَدَّ كَثِيرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّونَكُم مِّنۢ بَعْدِ إِيمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚ حَسَدًا مِّنْ عِندِ أَنفُسِهِم مِّنۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۖ فَاعْفُوا وَاصْفَحُوا حَتّٰى يَأْتِيَ اللّٰهُ بِأَمْرِهِۦٓ ۗ إِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿109﴾

१०९. इन अहले किताब के ज़्यादातर लोग सच्चाई जाहिर हो जाने के बावजूद सिर्फ़ हसद और जलन की वजह से तुम्हें भी ईमान से हटा देना चाहते हैं तुम भी माफ़ करो और छोड़ दो यहाँ तक कि अल्लाह अपना फैसला लागू कर दे। बेशक अल्लाह (तआला) हर काम करने की कुदरत रखता है।

وَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَءَاتُوا الزَّكٰوةَ ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُم مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِندَ اللّٰهِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿110﴾

११०. तुम नमाज की अदायगी करो और ज़कात (धर्मदान) देते रहो और जो भलाई तुम अपने लिये आगे भेजोगे सब कुछ अल्लाह के पास पा लोगे, बेशक अल्लाह (तआला) तुम्हारे अमल को देख रहा है।

وَقَالُوا لَن يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَن كَانَ هُودًا أَوْ نَصٰرٰى ۗ تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ ۗ قُلْ هَاتُوا بُرْهٰنَكُمْ إِن كُنتُمْ صٰدِقِينَ ﴿111﴾

१११. और ये कहते हैं कि जन्नत में यहूदी और इसाई के सिवाय कोई न जायेगा, ये सिर्फ़ उन की तमन्नायें हैं, उन से कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो कोई सुबूत तो पेश करो।

بَلٰى مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُۥ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُۥٓ أَجْرُهُۥ عِندَ رَبِّهِۦ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿112﴾

११२. सुनों ! जिस ने अपने को अल्लाह के सपुर्द कर दिया, और नेक है उसी के लिये उस के रब के यहाँ अज्र है और न उन पर कोई डर होगा न कोई ग़म।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَىْءٍ وَقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلٰى شَىْءٍ وَهُمْ يَتْلُونَ الْكِتٰبَ ۗ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿113﴾

११३. यहूदी कहते हैं इसाई सही रास्ते पर नहीं, और इसाई कहते हैं कि यहूदी सही रास्ते पर नहीं। जबकि ये तौरात पढ़ते हैं, इसी तरह इन ही जैसी बात जाहिल भी कहते हैं,[1] कयामत के दिन अल्लाह इन के इस इख़्तिलाफ़ का फ़ैसला कर देगा।

---

[1] अहले किताब के मुक़ाबले में अरब के मूर्तिपूजक पढ़े लिखे नहीं थे, इसलिए उन्हें जाहिल कहा गया, लेकिन वे भी मूर्तिपूजक होने के बावजूद यहूदी और इसाईयों की तरह इस झूठी उम्मीदों में लिप्त (मुब्तिला) थे कि वही सच्चाई पर हैं इसीलिए वे नबी ﷺ को अधर्मी कहते थे।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَآ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ؕ لَهُمْ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ وَّلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿114﴾

११४. और उस से बड़ा ज़ालिम कौन है? जो अल्लाह (तआला) की मस्जिदों में अल्लाह का ज़िक्र करने से रोके, और उनको बर्बाद करने की कोशिश करे,[1] ऐसे लोगों को डरते हुए उस में दाख़िल होना चाहिए, उन के लिए दुनिया में भी ज़िल्लत है और आख़िरत में भी बड़ी-बड़ी सज़ायें हैं।

وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿115﴾

११५. और पूरब व पश्चिम का मालिक अल्लाह ही है, तुम जिधर भी मुंह करो उधर ही अल्लाह का मुंह है,[2] अल्लाह (तआला) बहुत ताक़त वाला जानने वाला है।

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ لَّهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿116﴾

११६.और ये कहते हैं कि अल्लाह (तआला) की औलाद है (नहीं बल्कि) वह पाक है, धरती और आकाशों की सारी मख़लूक़ पर उसकी हुकूमत है और हर एक उसका फ़रमांबरदार है।

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿117﴾

११७. वह आकाशों और धरती का ईजाद करने वाला है, और वह जिस काम का फ़ैसला करता है कह देता है कि हो जा, वह हो जाता है।

---

[1] तबाही सिर्फ़ यही नहीं है कि उसे ढा दिया जाये तथा इमारत को नुकसान पहुंचाया जाये, बल्कि उन में अल्लाह की इबादत और ज़िक्र करने से रोकना, धार्मिक नियमों की स्थापना (क़ायम करना) और शिर्क के प्रदर्शन (मज़ाहिर) से पाक करने से मना करना भी ज़ुल्म और अल्लाह के घरों को बरबाद करना है।

[2] हिजरत के बाद जब मुसलमान 'बैतुल मुक़द्दस' की ओर मुंह करके नमाज़ पढ़ा करते थे, तो मुसलमानों को इसका दुख था, इस मौक़ा पर यह आयत उतरी। कुछ कहते हैं कि यह आयत उस समय उतरी जब 'बैतुल मुक़द्दस' से फिर ख़ाने काअ़बा की ओर मुंह करने का हुक्म हुआ तो यहूदियों ने तरह-तरह की बातें गढ़ी, कुछ के नज़दीक इसके उतरने की वजह सफ़र में सवारी पर नफ़िल नमाज़ों को पढ़ने की इजाज़त हुई कि सवारी का मुंह किधर भी हो, नमाज़ पढ़ सकते हो, कभी कुछ वजह से जमा हो जाते हैं और उन सभी के हुक्म के लिए एक ही आयत उतरती है, ऐसी आयतों के लिए कई कथन (अक़्वाल) जमा होते हैं, किसी कथन में एक उतरने की वजह का बयान होता है और किसी में दूसरा। ये आयत भी इसी तरह की है। (अहसनुल तफ़ासीर)

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ أَوْ تَأْتِينَآ ءَايَةٌ ۗ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِم مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ۘ تَشَٰبَهَتْ قُلُوبُهُمْ ۗ قَدْ بَيَّنَّا الْءَايَٰتِ لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿118﴾

११८. और इसी तरह अनपढ़ लोगों ने भी कहा कि ख़ुद अल्लाह (तआला) हम से बातें क्यों नही करता या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती, इसी तरह ऐसी ही बात उन के पहले लोगों ने भी की थी, उन के और इन के दिल एक जैसे हो गये, हम ने तो यक़ीन करने वालों के लिए निशानियों का बयान कर दिया।

إِنَّآ أَرْسَلْنَٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۖ وَلَا تُسْـَٔلُ عَنْ أَصْحَٰبِ الْجَحِيمِ ﴿119﴾

११९. हम ने आप को हक़ के साथ ख़ुशख़बरी देने वाला और आगाह कराने वाला बनाकर भेजा है और नरकवासियों के बारे में आप से नही पूछा जायेगा।

وَلَن تَرْضَىٰ عَنكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصَٰرَىٰ حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ۗ قُلْ إِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۗ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَآءَهُم بَعْدَ الَّذِى جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِن وَلِىٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿120﴾

१२०. और आप से यहूदी और इसाई कभी भी ख़ुश न होंगे, जब तक कि आप उन के मज़हब का अनुकरण (पैरवी) न कर लें, (आप) कह दीजिए कि अल्लाह की हिदायत ही हिदायत होती है,[1] और अगर आप ने अपने पास इल्म आ जाने के बावजूद फिर भी उनकी इच्छाओं की पैरवी की तो अल्लाह के पास न तो आप का कोई वली होगा न कोई मददगार।

الَّذِينَ ءَاتَيْنَٰهُمُ الْكِتَٰبَ يَتْلُونَهُۥ حَقَّ تِلَاوَتِهِۦٓ أُولَٰٓئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِۦ ۗ وَمَن يَكْفُرْ بِهِۦ فَأُولَٰٓئِكَ هُمُ الْخَٰسِرُونَ ﴿121﴾

१२१. जिन्हें हमने किताब दी[2] और वे उसे पढ़ने के हक़ के साथ पढ़ते हैं[3] वे इस किताब पर भी ईमान रखते हैं और जो इस पर ईमान नहीं रखते वह ख़ुद अपना घाटा करते हैं।

---

[1] जो अब इस्लाम धर्म की शक्ल में है जिसकी दावत नबी ﷺ दे रहे हैं, न कि बदले हुए रूप में यहूदी और इसाई धर्म।

[2] अहले किताब के बुरे लोगों के बुरे चरित्र और अख़लाक़ का ज़रूरी बयान करने के बाद उन में जो कुछ लोग अच्छे काम करने वाले और सच्चे थे, इस आयत में उनकी सिफ़तों और उन को ईमानवाले होने की ख़बर दी जा रही है। इन में अब्दुल्लाह बिन सलाम और उन जैसे और इंसान हैं जिनको यहूदियों में से इस्लाम धर्म क़ुबूल करने की ख़ुशनसीबी हासिल हुई।

[3] "वह इस तरह पढ़ते हैं, जिस तरह पढ़ने का हक़ है।" के कई मतलब बयान किये गये हैं। जैसे, १- "ध्यानपूर्वक पढ़ते है।" जन्नत का बयान आता है तो जन्नत की तमन्ना करते है तथा जहन्नम का बयान आता है तो उससे बचे रहने की दुआ करते हैं। (२) इस के हलाल को हलाल, हराम को हराम समझते और अल्लाह के कलाम को बदला नहीं करते, जैसे दूसरे यहूदी करते थे। (३) उस में जो कुछ लिखा है लोगों को बताते है, उसकी कोई बात नहीं छिपाते। (४) इसकी वाज़ेह (स्पष्ट) बातों के अनुसार अमल करते है, अस्पष्ट (ग़ैर वाज़ेह) बातों पर ईमान रखते हैं और जो बाते समझ में नहीं आती उन्हें आलिमों से हल करवाते हैं। (५) इसकी एक-एक बात का पालन करते हैं। (फ़तहुल क़दीर)

يَٰبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ٱذْكُرُوا۟ نِعْمَتِىَ ٱلَّتِىٓ أَنْعَمْتُ
عَلَيْكُمْ وَأَنِّى فَضَّلْتُكُمْ عَلَى ٱلْعَٰلَمِينَ (122)

१२२. ऐ इस्राईल के पुत्रों! मैंने तुम को जो नेमतें दी हैं उन्हें याद करो और यह कि मैंने तुम्हें सारे जहाँ में फ़जीलत अता कर रखी थी।

وَٱتَّقُوا۟ يَوْمًا لَّا تَجْزِى نَفْسٌ عَن نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَلَا
يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنفَعُهَا شَفَٰعَةٌ
وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ (123)

१२३. और उस दिन से डरो जिस दिन कोई इंसान किसी इंसान को कोई फ़ायेदा न पहुँचा सकेगा न किसी इंसान से कोई बदला क़ुबूल किया जायेगा न उसे कोई सिफ़ारिश फ़ायेदा पहुँचा सकेगी न उसकी मदद की जायेगी।

وَإِذِ ٱبْتَلَىٰٓ إِبْرَٰهِۦمَ رَبُّهُۥ بِكَلِمَٰتٍ فَأَتَمَّهُنَّ ۖ قَالَ إِنِّى
جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامًا ۖ قَالَ وَمِن ذُرِّيَّتِى ۖ قَالَ
لَا يَنَالُ عَهْدِى ٱلظَّٰلِمِينَ (124)

१२४. और जब इब्राहीम (عليه السلام) की उन के रब ने कई-कई बातों से परीक्षा ली,[1] और उन्होंने सभी को पूरा कर दिखाया तो (अल्लाह ने) फ़रमाया कि मैं तुम्हें लोगों का इमाम बना दूँगा। पूछा- और मेरी औलाद को, जवाब दिया कि मेरा वादा जालिमों से नहीं।

وَإِذْ جَعَلْنَا ٱلْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا وَٱتَّخِذُوا۟
مِن مَّقَامِ إِبْرَٰهِـۧمَ مُصَلًّى ۖ وَعَهِدْنَآ إِلَىٰٓ إِبْرَٰهِـۧمَ
وَإِسْمَٰعِيلَ أَن طَهِّرَا بَيْتِىَ لِلطَّآئِفِينَ
وَٱلْعَٰكِفِينَ وَٱلرُّكَّعِ ٱلسُّجُودِ (125)

१२५. और हम ने बैतुल्लाह (कअ़बा) को इंसानों के लिए सवाब और अमन की जगह बनाया, तुम "मुक़ामे इब्राहीम" (इब्राहीम का मुक़ाम- मस्जिद हराम में एक मुक़र्रर जगह का नाम है जो काअ़बा के दरवाज़े के सामने थोड़ी बायें हटकर है) को "मुसल्ला" (नमाज़ पढ़ने का मुक़ाम) मुक़र्रर कर लो[2], और हम ने इब्राहीम और इस्माईल (عليهم السلام) से वादा लिया कि मेरे घर को तवाफ़ और एतिकाफ़ करने वालों और रुकूउ करने और सज्दा करने वालों के लिए पाक और साफ़ रखो।

---

[1] कलिमात से मुराद धार्मिक हुक्म, हज के क़ानून, बेटे की क़ुर्बानी, हिजरत, नमरूद की आग, और वह सभी इम्तेहान हैं जिन से हज़रत इब्राहिम (عليه السلام) गुज़ारे गये, और वह हर इम्तेहान में कामयाब रहे जिसके नतीजे में इंसानों के मुखिया पद से सम्मानित (सरफ़राज़) किये गये। इसलिए मुसलमान ही नहीं, यहूदी इसाई यहाँ तक कि अरब के मूर्तिपूजकों, सब ही में उन के व्यक्तित्व का सम्मान (एहतेराम) है और उनको अगुवा माना और समझा जाता है।

[2] **इब्राहिम का मुक़ाम'** से मतलब वह पत्थर है, जिस पर खड़े होकर हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) काअ़बा को बनाया करते थे, इस पत्थर पर हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) के पैर के निशान हैं। अब इस पत्थर को एक शीशे में महफ़ूज़ कर दिया गया है, जिसे हर हाजी और उमरा करने वाला इंसान बैतुल्लाह की ज़ियारत के वक़्त देख सकता है, इस जगह पर तवाफ़ पूरा करने के बाद दो रकाअत नमाज़ पढ़ना सुन्नत है।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿126﴾

१२६. और जब इब्राहीम ने कहा, हे मेरे रब ! तू इस जगह को शान्तिमय (मामून) नगर बना और यहाँ के रहने वालों को जो अल्लाह और क़यामत के दिन पर ईमान रखने वाले हों, फलों की रोज़ी अता कर ![1] अल्लाह ने कहा कि मैं काफ़िरों को भी थोड़ा फ़ायेदा दूँगा, फिर उन्हें आग के अज़ाब की तरफ मजबूर कर दूँगा, यह पहुँचने की बुरी जगह है।

وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿127﴾

१२७. जब इब्राहीम (عليه السلام) और इस्माईल (عليه السلام) कअबा की बुनियाद (और दीवारें) उठाते जाते थे और कहते जाते थे कि ऐ हमारे रब ! तू हम से क़ुबूल कर तू ही सुनने वाला और जानने वाला है।

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَاۤ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۪ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿128﴾

१२८. हे हमारे रब ! हमें अपना फ़रमाँबरदार बना और हमारी औलाद में से एक समूह को अपना फ़रमाँबरदार बना और हमें अपनी इबादतें सिखा और हमारी तौबा क़ुबूल कर, तू तौबा क़ुबूल करने वाला, रहम करने वाला है।

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿129﴾

१२९. हे हमारे रब ! उन में, उन्हीं में से एक रसूल (ईश्वदूत) भेज,[2] जो उनके पास तेरी आयतें पढ़े और उन्हें किताब व हिक्मत सिखाये[3] और उन्हें पाक करे, बेशक तू ग़ालिब और हिक्मत वाला है।

---

[1] अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम की ये दुआयें क़ुबूल कीं, यह नगर शान्ति (अमन) कि नगरी भी है, और खेती न होने के बावजूद भी दुनिया के सभी फल और हर तरह के अनाज की अधिकता को देख कर इंसान दंग हो जाता है।

[2] यह हज़रत इब्राहीम और इस्माईल की आख़िरी दुआ है। यह भी अल्लाह तआला ने क़ुबूल किया और हज़रत इस्माईल (عليه السلام) की औलाद में से हज़रत मोहम्मद रसूल अल्लाह (ﷺ) को रसूल बनाया, इसीलिए नबी (ﷺ) ने फ़रमाया :

«أنا دعوة أبي إبراهيم، وبشارة عيسى ورؤيا أمي التي رأت»

"मैं अपने बाप हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) की दुआ, हज़रत ईसा की ख़ुशख़बरी और अपनी माँ का ख़्वाब हूँ।" (मुसनद अहमद ससंदर्भ इब्ने कसीर)

[3] किताब से मतलब क़ुरआन करीम और हिक्मत (विज्ञान) से मतलब हदीस है।

१३०. और इब्राहीम के धर्म (दीन) से वही मुंह मोड़ेगा जो ख़ुद बेवकूफ़ हो, हम ने तो उसे दुनिया में भी अपना लिया और आख़िरत में भी वह नेक लोगों में से हैं।

وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِی الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِی الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿130﴾

१३१. जब (भी) उन के रब ने कहा कि आत्म-सर्मपण कर दो तो कहा कि मैंने सारे जहां के रब के लिए आत्मसर्मपण कर दिया।

اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗۤ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿131﴾

१३२. इसी की वसीयत इब्राहीम और याक़ूब ने अपनी औलाद को की, कि हमारे बच्चों! अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए इस धर्म को निर्धारित कर दिया है, ख़बरदार! तुम मुसलमान ही मरना।[1]

وَوَصّٰى بِهَاۤ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِیَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿132﴾

१३३. क्या तुम (हज़रत) याक़ूब की मौत के वक़्त हाज़िर थे? जब उन्होंने अपनी औलाद से कहा कि तुम मेरी मौत के बाद किसकी इबादत करोगे, तो सभी ने जवाब दिया था कि आप के रब की और आप के बुज़ुर्ग इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ के माबूद की, जो एक ही है और हम उसी के ताबेदार रहेंगे।

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ بَعْدِیْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿133﴾

१३४. यह उम्मत तो गुज़र चुकी, जो उन्होंने किया वो उन के लिए है और जो तुम करोगे वह तुम्हारे लिए है, उन के अमल के बारे में तुम से नहीं पूछा जायेगा।

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْئَلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿134﴾

१३५. ये कहते हैं कि यहूदी और इसाई बन जाओ तो हिदायत पाओगे, तुम कहो कि सही रास्ते पर तो इब्राहीम (ﷺ) के पैरोकार हैं, और इब्राहीम (ﷺ) सिर्फ़ अल्लाह के फ़रमांबर्दार थे वे मूर्तिपूजक नहीं थे।[2]

وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿135﴾

[1] हज़रत इब्राहीम ﷺ और हज़रत याक़ूब ﷺ ने الدين (सत्यधर्म) की वसीयत अपनी औलाद को किया जो यहूदी धर्म नही इस्लाम धर्म ही है। जैसा कि यहां भी इसका बयान मौजूद है और क़ुरआन करीम में कई जगहों पर भी इसका तफ़सीली बयान है।

[2] यहूदी, मुसलमानों को यहूदी धर्म की और इसाई, इसाई धर्म की दावत देते और कहते कि हिदायत का नूर इसी में है। अल्लाह तआला ने कहा कि उन से कहो कि हिदायत इब्राहीम के धर्म की अनुकरण (पैरवी) में है, जो हनीफ था (यानी सिर्फ़ एक अल्लाह ही का पैरोकार और उसकी इबादत करने वाला) वह मूर्तिपूजक नहीं था।

قُولُوٓا۟ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَآ أُنزِلَ إِلَىٰٓ إِبْرَٰهِـۧمَ وَإِسْمَـٰعِيلَ وَإِسْحَـٰقَ وَيَعْقُوبَ وَٱلْأَسْبَاطِ وَمَآ أُوتِىَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَآ أُوتِىَ ٱلنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُۥ مُسْلِمُونَ (136)

१३६. (ऐ मुसलमानों!) तुम सब कहो हम अल्लाह पर ईमान लाये और उस पर भी जो हमारी तरफ़ उतारी गई और जो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक, याकूब और उनकी औलाद पर उतारी गई और जो कुछ अल्लाह की तरफ से मूसा, ईसा और दूसरे नबियों को दिये गए, हम उन में से किसी के बीच फ़र्क नहीं करते, हम अल्लाह के ताबेदार हैं।[1]

فَإِنْ ءَامَنُوا۟ بِمِثْلِ مَآ ءَامَنتُم بِهِۦ فَقَدِ ٱهْتَدَوا۟ ۖ وَّإِن تَوَلَّوْا۟ فَإِنَّمَا هُمْ فِى شِقَاقٍ ۖ فَسَيَكْفِيكَهُمُ ٱللَّهُ ۚ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ (137)

१३७. अगर वह तुम जैसा ईमान लाए तो हिदायत पाएंगे, और अगर मुंह मोड़े तो ख़िलाफ़ में हैं, अल्लाह (तआला) उन से निकट भविष्य (मुस्तक़बिल) में तुम्हारी मदद करेगा। वह अच्छी तरह से सुनने और जानने वाला है।

صِبْغَةَ ٱللَّهِ ۖ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ ٱللَّهِ صِبْغَةً ۖ وَنَحْنُ لَهُۥ عَـٰبِدُونَ (138)

१३८. अल्लाह का रंग अपनाओ और अल्लाह (तआला) से अच्छा रंग किसका होगा?[2] हम तो उसी की इबादत करने वाले हैं।

---

[1] यानी ईमान यह है कि सभी नबियों को अल्लाह तआला की ओर से जो कुछ मिला या उन पर उतरा, सभी पर ईमान लाया जाए, किसी भी किताब या रसूल का इंकार न किया जाए, किसी एक किताब या नबी को मानना, किसी को न मानना, यह नबियों में फ़र्क जाहिर करता है जिसे इस्लाम ने ठीक नही कहा है, लेकिन अब अमल केवल क़ुरआन करीम के क़ानूनों और आदेशानुसार होंगे, पहले किताबों में लिखी हुई के अनुसार नहीं, क्योंकि पहले तो वे अपने असल रूप (शक्ल) में नहीं है, परिवर्तित (बदले हुए) हैं, दूसरे क़ुरआन ने उन सभी के हुक्मों को मंसूख़ कर दिया है।

[2] इसाईयों ने एक पीले रंग का पानी निर्धारित (मुक़र्रर) कर रखा है, जो हर इसाई लड़के को और हर उस इंसान को भी दिया जाता है जिसका मक़सद इसाई धर्म क़ुबूल करना होता है। इस रीति का नाम उन के यहाँ "बैप्टिज़्म" है। यह उन के यहाँ बहुत जरूरी है इस के बिना वे किसी के पाक होने की कल्पना (तसव्वुर) नही करते, अल्लाह तआला ने उनका खण्डन (तरदीद) किया है और कहा है कि सच्चा रंग तो अल्लाह का रंग है, उस से बड़ा कोई रंग नहीं। अल्लाह के रंग का मतलब वह प्राकृतिक धर्म है, या इस्लाम धर्म है, जिसकी तरफ़ हर नबी ने अपने-अपने ज़माने में अपनी-अपनी उम्मत को दावत दिया या 'एकेश्वरवाद' (तौहीद) की दावत।

قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِي اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ﴿139﴾

१३९. (आप) कह दीजिए क्या तुम हम से अल्लाह के बारे में झगड़ते हो, जो हमारा और तुम्हारा रब है, हमारे लिए हमारे अमल हैं, तुम्हारे लिए तुम्हारे अमल, हम तो उसी के लिए मुख़्लिस हैं।

اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ كَانُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ۗ قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ۗ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿140﴾

१४०. क्या तुम कहते हो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक़ और याकूब और उनकी औलाद यहूदी या इसाई थी? कह दो क्या तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह (तआला)? अल्लाह के पास सुबूत छुपाने वालों से ज़्यादा ज़ालिम और कौन है? और अल्लाह (तआला) तुम्हारे अमल से ग़ाफ़िल नहीं।

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿141﴾

१४१. यह समुदाय (उम्मत) है जो गुज़र चुका, जो उन्होंने किया उन के लिए है और जो तुम ने किया तुम्हारे लिये, तुम से उन के अमल के बारे में सवाल नहीं किया जाएगा।[1]

---

[1] इस आयत में फिर फ़ायेदा और अमल की विशेषता (फ़ज़ीलत) का बयान करके बुज़ुर्गों और महात्माओं से रिश्ता या उन पर भरोसा को बेकार बताया गया है। क्योंकि :

(مَنْ بَطَّأَ بِهِ عَمَلُهُ لَمْ يُسْرِعْ بِهِ نَسَبُهُ)

"जिसको उसका कर्म (अमल) पीछे छोड़ गया, उसका वंश उसे आगे नही बढ़ाएगा।" (सहीह मुस्लिम)

मतलब है कि बुज़ुर्गों के अच्छे काम से तुम्हें कोई फ़ायेदा और उन के गुनाहों पर तुम से कोई पूछताछ न होगी, बल्कि उन के अमल के बारे में तुम से या तुम्हारे अमल के बारे में उन से नही पूछा जाएगा।

﴿وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ اُخْرٰى﴾

"कोई किसी का बोझ नहीं उठाएगा।" (सूर: फ़ातिर-१८)

﴿وَاَنْ لَيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى﴾

"इंसान के लिए वही कुछ है जिस के लिए उस ने कोशिश की।" (सूर: अल-नजम-३९)

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّاهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا ۚ قُلْ لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿١٤٢﴾

१४२. क़रीब ही वेवकूफ़ लोग कहेंगे कि जिस क़िब्ला (जिस दिशा की तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़ी जाती है) पर यह थे उस से इन्हें किस चीज़ ने फेर दिया? (आप) कह दीजिए कि पूरब और पश्चिम का मालिक अल्लाह (तआला) है वह जिसे चाहे सीधा रास्ता दिखाता है।[1]

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۗ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ ۚ وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿١٤٣﴾

१४३. और हम ने इसी तरह तुम्हें बीच की (संतुलित) उम्मत बनाया है।[2] ताकि तुम लोगों पर गवाह हो जाओ और रसूल (ﷺ) तुम पर गवाह हो जाएं और जिस क़िब्ले पर तुम पहले से थे, उसे हम ने सिर्फ़ इसलिए मुक़र्रर किया था कि हम जान लें कि रसूल के सच्चे ताबेदार कौन-कौन हैं और कौन है जो अपनी एड़ियों के वल पलट जाता है, जबकि यह काम कठिन है, लेकिन जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी है (उन पर कोई कठिनाई नहीं) अल्लाह (तआला) तुम्हारा ईमान वर्बाद नही करेगा, अल्लाह (तआला) लोगों के साथ प्यार और रहम करने वाला है।

قَدْ نَرَىٰ تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ ۖ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا ۚ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۗ وَإِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٤٤﴾

१४४. हम आप के मुंह को आसमान की तरफ़, बार-बार उठते हुए देख रहे हैं, अब हम आप को उस क़िब्ले की तरफ़ फेर देंगे, जिस से आप खुश हो जायें, आप अपना मुंह मस्जिद हराम (कअबा) की तरफ़ फेर लें और आप जहां कहीं भी हों आप अपना मुंह उसी ओर फेरा करें। अहले किताब को इस बात के अल्लाह की तरफ़ से सच होने का सच्चा इल्म है और अल्लाह तआला उन अमलों से ग़ाफ़िल नहीं, जो ये करते हैं।

[1] यह आयत क़िब्ला के वारे में नाज़िल हुई।

[2] وَسَطًا का मतलब है, 'मध्य' (बीच), लेकिन यह बड़ाई और फ़ज़ीलत के लिए भी इस्तेमाल होता है, यहां भी इसी मतलव में इस्तेमाल हुआ है।

१४५. और आप अगर अहले किताब को सभी सुबूत पेश कर दें, फिर भी वे आप के क़िब्ले का अनुकरण (पैरवी) नहीं करेंगे और न आप उन के क़िब्ले को मानने वाले, न ये आपस में एक-दूसरे के क़िब्ले को मानने वाले हैं। अगर आप इस के बावजूद कि आप के पास इल्म आ चुका फिर भी उनकी इच्छाओं को पूरी करने के लिए पैरवी करने लगें तो बेशक आप भी ज़ालिम हो जाएंगे।[1]

وَلَئِنْ أَتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَٰبَ بِكُلِّ ءَايَةٍ مَّا تَبِعُوا۟ قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ أَنتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُم بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۚ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَآءَهُم مِّنۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ إِنَّكَ إِذًا لَّمِنَ الظَّٰلِمِينَ ﴿145﴾

१४६. जिन्हें हमने किताब दी है वे तो इसे ऐसा पहचानते हैं, जैसे कोई अपने पुत्रों को पहचानता है, उनका एक गुट सच को पहचान कर फिर छुपाता है।

الَّذِينَ ءَاتَيْنَٰهُمُ الْكِتَٰبَ يَعْرِفُونَهُۥ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَآءَهُمْ ۖ وَإِنَّ فَرِيقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿146﴾

१४७. आपके रब की तरफ से यह पूरा सच है, होशियार! आप शक करने वालों में से न हों।

الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿147﴾

१४८. और हर इंसान एक न एक ओर आकृष्ट (मुतवज्जिह) हो रहा है, तुम नेकी की तरफ दौड़ो जहाँ कहीं भी तुम रहोगे, अल्लाह तुम्हें ले आयेगा, अल्लाह (तआला) को हर चीज़ की क़ुदरत है।

وَلِكُلٍّ وِجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيهَا ۖ فَاسْتَبِقُوا۟ الْخَيْرَٰتِ ۚ أَيْنَ مَا تَكُونُوا۟ يَأْتِ بِكُمُ اللَّهُ جَمِيعًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿148﴾

१४९. और आप जहाँ से निकलें अपना मुँह मस्जिदे हराम की तरफ़ कर लिया करें, यही सच है आप के रब की तरफ़ से और जो कुछ तुम कर रहे हो उस से अल्लाह अन्जान नहीं।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ وَإِنَّهُۥ لَلْحَقُّ مِن رَّبِّكَ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿149﴾

१५०. और जिस जगह से आप निकलें अपना मुँह मस्जिदे हराम की तरफ़ फेर लें और जहाँ कहीं तुम रहो अपना मुँह उसी तरफ कर लिया करो, ताकि लोगों की कोई हुज्जत तुम पर बाक़ी न रह जाए, उनके सिवाय जिन्होंने उन में से ज़ुल्म किये हैं, तुम उन से मत डरो,[2] मुझ से ही डरो ताकि मैं अपनी नेमत तुम पर पूरी कर

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنتُمْ فَوَلُّوا۟ وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُۥ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا۟ مِنْهُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِى وَلِأُتِمَّ نِعْمَتِى عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿150﴾

[1] यह चेतावनी (तंबीह) पहले गुज़र चुकी है, मक़सद उम्मत को होशियार करना है कि क़ुरआन और हदीस के इल्म के बावजूद अहले बिदअत के पीछे लगना ज़ुल्म और भटकाव है।

[2] ज़ालिमों से न डरो, यानी मूर्तिपूजकों की बातों की फ़िक्र न करो।

दूँ और इसलिए भी कि तुम हिदायत पा सको।

كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿151﴾

१५१. जिस तरह हम ने तुम में तुम्ही में से रसूल (ईशदूत-मोहम्मद ﷺ) को भेजा, जो हमारी आयतें (पाक क़ुरआन) तुम्हारे सामने तिलावत करता है और तुम्हें पाक करता है और तुम्हें किताब और हिक्मत और उन बातों का जिन से तुम लाइल्म थे इल्म दे रहा है।

فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ﴿152﴾

१५२. इसलिए तुम मुझे याद करो मैं भी तुम्हें याद करुँगा और मेरे शुक्रगुजार रहो और नाशुक्री से बचो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿153﴾

१५३. हे ईमानवालो! सब्र और नमाज के जरिये मदद चाहो, अल्लाह (तआला) सब्र करने वालों का साथ देता है।[1]

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ۭ بَلْ اَحْيَاۗءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿154﴾

१५४. और अल्लाह (तआला) की राह में शहीद होने वालों को मुर्दा न कहो,[2] वे जिन्दा हैं, लेकिन तुम नहीं समझते।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ۭ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ﴿155﴾

१५५. और हम किसी न किसी तरह तुम्हारा इम्तेहान जरूर लेंगे, दुश्मन के डर से, भूख-प्यास से, माल व जान, फलों की कमी से और उन सब्र करने वालों को खुशख़बरी दे दीजिए।

الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿156﴾

१५६. उन्हें जब कभी भी कोई कठिनाई आती है, तो कह दिया करते हैं कि हम तो खुद अल्लाह (तआला) के लिए हैं और हम उसी की ओर लौटने वाले हैं।

[1] इंसान की दो ही हालतें होती हैं। सुख-सुविधा (ऐशो-आराम) या दुख और मुसीबत, सुख में अल्लाह का शुक्र करने पर जोर और दुख में सब्र और अल्लाह से मदद लेने पर बल है।

[2] शहीदों को मरा हुआ न कहना उनके मान-सम्मान के लिए है। यह जिन्दगी बर्जख़ (आलोक-परलोक के बीच का जीवन है) जिसे हमारी अक़्ल समझने में क़ासिर है। यह जिन्दगी सम्मान के अनुसार नबियों, ईमानवालों यहाँ तक कि काफ़िरों को भी हासिल है। शहीद की रूह और कुछ क़ौल के अनुसार ईमान वालों की रूहें भी एक चिड़िया की शक्ल में जन्नत में जहाँ चाहती है फिरती है। (इब्ने कसीर और सूर: आले-इमरान-१६९ देखें)

أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿157﴾

१५७. यही हैं जिन पर उन के रब की रहमत और नवाज़िशें हैं और यही लोग सच्चे रास्ते पर हैं।

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِن شَعَائِرِ اللَّهِ ۖ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿158﴾

१५८. बेशक सफ़ा (पहाड़) और मरवह (पहाड़) अल्लाह (तआला) की निशानियों में से हैं,[1] इसलिए अल्लाह के घर का हज और उमरा करने वाले पर इनका तवाफ़ कर लेने में भी कोई हर्ज नहीं। अपनी ख़ुशी से भलाई करने वालों का अल्लाह सम्मान करता है और उन्हें अच्छी तरह जानने वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ مِن بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ ۙ أُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللَّاعِنُونَ ﴿159﴾

१५९. जो लोग हमारी उतारी हुई निशानियों और निर्देशों (हिदायत) को छुपाते हैं इस के बावजूद कि हम उसे अपनी किताब (पाक क़ुरआन) में लोगों के लिए बयान कर चुके हैं उन लोगों पर अल्लाह की और सभी धिक्कारने वालों की धिक्कार है।[2]

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُوا فَأُولَٰئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿160﴾

१६०. लेकिन वह लोग जो तौबा कर लें और सुधार कर लें और बयान करें तो मैं उनकी तौबा क़ुबूल कर लेता हूं, और मैं तौबा क़ुबूल करने वाला और रहम करने वाला हूं।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿161﴾

१६१. बेशक जो काफ़िर कुफ़्र की हालत में मर जाएं उन पर अल्लाह की और फ़रिश्तों की और सभी लोगों की लानत है।

خَالِدِينَ فِيهَا ۖ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿162﴾

१६२. जिस में वे हमेशा रहेंगे न उन से अज़ाब हल्का किया जायेगा और न उन्हें ढील दी जायेगी।

---

[1] شعائر बहुवचन (जमा) شعيرة का है, जिसका मतलब निशानी के है, यहां हज के काम (जैसे अरफ़ात में रुकना, सअई करना, (सफ़ा-मरवह पहाड़ों के बीच मुक़र्रर रास्ते का चक्कर लगाना, कंकरियां मारना, क़ुर्बानी देना से) मुराद है जो अल्लाह तआला ने मुक़र्रर किया है।

[2] अल्लाह तआला ने जो बातें अपनी किताब में उतारी हैं उन्हें छिपाना इतना बड़ा गुनाह है कि अल्लाह की लानतों के सिवा दूसरे लानतें करने वालों के ज़रिये भी लानत की जाती है। हदीस में है (من سُئل عن علم فكتمه أُلجم يوم القيامة بلجام من النار)

وَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ ﴿163﴾

१६३. और तुम सब का माबूद एक अल्लाह ही है उस के सिवाय कोई सच्चा माबूद नहीं, वह बहुत कृपालु और बड़ा दयालु है।

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِن مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيَاحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿164﴾

१६४. बेशक आकाश और धरती का बनाना, रात दिन का फेर बदल, नावों का लोगों को फ़ायेदा देने वाली चीजों को लेकर समुद्र में चलना, आकाश से वर्षा उतार कर मुर्दा धरती को जिन्दा कर देना, इस में हर तरह के जीव को फैला देना, हवा की दिशा परिवर्तन (बदलना) करना, और बादल जो आकाश व धरती के बीच मुसख़्ख़र हैं, इस में अक़्लमंदो के लिए अल्लाह की क़ुदरत की निशानी हैं।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِن دُونِ اللَّهِ أَندَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِّلَّهِ ۗ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ ﴿165﴾

१६५. और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह के साझीदार दूसरों को ठहरा कर उनसे ऐसा प्रेम रखते हैं जैसा प्रेम अल्लाह से होना चाहिए और ईमानवाले अल्लाह से प्रेम में सख़्त होते हैं, काश कि मूर्तिपूजक जानते जबकि अल्लाह के अज़ाबों को देखकर (जान लेंगे) कि सभी ताक़त अल्लाह ही को है और अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है। (तो कभी भी मूर्तिपूजा न करते)

إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتُّبِعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ ﴿166﴾

१६६. जिस समय मुखिया लोग अपने पैरोंकारों से अलग हो जायेंगे और अज़ाब को अपनी आँखों से देख लेंगे और सभी रिश्ते टूट जायेंगे।

وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا ۗ كَذَٰلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَا هُم بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ ﴿167﴾

१६७. और ताबेदार कहने लगेंगे, काश हम दुनिया की तरफ़ दोबारा जायें तो हम भी उन से इसी तरह अलग हो जाएं, जैसे ये हम से हैं। इसी तरह अल्लाह तआला उन्हें उन के अमल दिखाएगा उनको पछतावे के लिए, ये कभी भी जहन्नम से न निकल पाएंगे।[1]

[1] मुशरिक आख़िरत में धर्मगुरु और धर्माचारियों की मजबूरी और ख़्यानत पर अफ़सोस करेंगे, लेकिन इस अफ़सोस का कोई फ़ायेदा न होगा, काश दुनिया में ही शिर्क से तौबा कर लें।

يَاأَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿168﴾

१६८. हे लोगों ! धरती में जितनी भी हलाल और पाक चीज़ें हैं, उन्हें खाओ-पियो और शैतान के रास्ते पर न चलो,[1] वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿169﴾

१६९. वह तुम्हें सिर्फ़ बुराई और बेहयाई का और अल्लाह (तआला) पर उन बातों के कहने का हुक्म देता है जिनका तुम्हें इल्म नहीं।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۗ أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿170﴾

१७०. और उन से जब कभी कहा जाता है कि अल्लाह (तआला) की उतारी हुई किताब पर अमल करो तो जवाब देते हैं कि हम तो उस रास्ते का पालन करेंगे जिस पर हम ने अपने बुज़ुर्गों (बाप-दादा) को पाया, जबकि उन के बुज़ुर्ग बेवक़ूफ़ और भटके हुए हों।[2]

وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثَلِ الَّذِي يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَاءً وَنِدَاءً ۚ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿171﴾

१७१. और काफ़िर उन जानवरों की तरह हैं जो अपने चरवाहे की सिर्फ़ पुकार और आवाज़ ही को सुनते हैं (समझते नहीं) वह बहरे गूंगे और अंधे हैं, उन्हें अक़्ल नहीं है।[3]

---

[1] यानी शैतान के ताबेदार बनकर अल्लाह की हलाल की हुई चीज़ों को हराम न कहो, जिस तरह से मूर्तिपूजकों ने किया कि अपनी मूर्तियों के नाम से समर्पित (वक़्फ़) जानवरों को अपने लिए हराम कर लेते थे, जिसका तफ़सीली बयान सूर: अल-अन्आम में आयेगा।

[2] आज भी अहले बिदअत को समझाया जाए कि इन नई बातों की धर्म में कोई कीमत नहीं, तो वह यही जवाब देंगे कि ये रीति-रिवाज हमारे बुज़ुर्गों से चली आ रही है, जबकि बुज़ुर्ग भी दीन के इल्म से नावाकिफ़ और हिदायत से महरूम हो सकते हैं, इसलिए मज़हबी दलीलों के सुबूत के सामने बुज़ुर्गों के हुक्म को मानना, इमामों की पैरवी (बिना सुबूत के उनकी बात माने जाना) पूरी तरह से भटकाव है, अल्लाह तआला मुसलमानों को भटकाव के दलदल से निकाले।

[3] इन काफ़िरों की मिसाल, जिन्होंने अपने बुज़ुर्गों की पैरवी में अपनी अक़्ल और इल्म को छोड़ दिया है, उन जानवरों की तरह है, जिनको चरवाहा बुलाता और पुकारता है, तो वह जानवर आवाज़ तो सुनते हैं, लेकिन यह नहीं समझते कि उन्हें क्यों बुलाया और पुकारा जा रहा है? इसी तरह यह ताबेदार भी बहरे है कि सच की आवाज़ नहीं सुनते, गूंगे है कि सच बात मुंह से नहीं निकालते, अंधे है कि सच देख नहीं सकते और अक़्ल से ख़ाली हैं कि सच की दावत और एकेश्वरवाद (तौहीद) और सुन्नत की दावत को समझने के लायक़ नहीं हैं, यहां दुआ से क़रीब की आवाज़ और निदाअ से दूर की आवाज़ मुराद है।

१७२. ऐ ईमानवालो! जो (पाक) चीज़ हम ने तुम्हें अता की हैं, उन्हें खाओ-पियो और अल्लाह (तआला) के शुक्रगुज़ार रहो, अगर तुम सिर्फ़ उसी की इबादत करते हो।[1]

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا لِلَّهِ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿172﴾

१७३. तुम पर मुर्दा और ख़ून (बहा हुआ), सूअर का गोश्त और वह हर चीज़ जिस पर अल्लाह के नाम के सिवाय दूसरों के नाम पुकारे जायें हराम हैं, लेकिन जो मजबूर हो जाये और वह सीमा उल्लंघन करने वाला और ज़ालिम न हो, उसको उन को खाने में कोई गुनाह नहीं, अल्लाह (तआला) बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنزِيرِ وَمَا أُهِلَّ بِهِ لِغَيْرِ اللَّهِ ۖ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿173﴾

१७४. बेशक जो लोग अल्लाह तआला की उतारी हुई किताब छिपाते हैं, और उसे थोड़ी-थोड़ी क़ीमत पर बेचते हैं, यक़ीन करो वे अपने पेट में आग भर रहे हैं, क़यामत के दिन अल्लाह तआला उन से बात भी नहीं करेगा, न उन्हें पाक करेगा, उन के लिए सख़्त अज़ाब हैं।

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ وَيَشْتَرُونَ بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۙ أُولَٰئِكَ مَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ إِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿174﴾

१७५. यही वह लोग हैं जिन्होंने गुमराही को हिदायत के बदले और अज़ाब को मग़फ़िरत के बदले ख़रीद लिया है, यह लोग आग का अज़ाब कितना सहन करने वाले हैं।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿175﴾

१७६. इन अज़ाबों की वजह यही है कि अल्लाह तआला ने सच्ची किताब उतारी और इस किताब में इख़्तेलाफ़ रखने वाले ज़रूर दूर के विभेद (ख़िलाफ़) में हैं।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ نَزَّلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ ۗ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِي الْكِتَابِ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ﴿176﴾

[1] इस में ईमानवालों को उन सभी चीज़ों के खाने का हुक्म है, जिन्हें अल्लाह ने हलाल की हैं और उस पर अल्लाह का शुक्रगुज़ार होने की बात कही गयी है, उस से तो एक बात यह मालूम हुई कि अल्लाह की हलाल की हुई चीज़ ही पाक और पाकीज़ा हैं, हराम की हुई चीज़ पाक नहीं चाहे वे मन को कितनी ही पसंद क्यों न हो (जैसे पश्चिमी देशों को सुअर का गोश्त बहुत ज़्यादा पसन्द है।

१७७. सारी अच्छाई पूरब और पश्चिम की तरफ मुँह करने में ही नहीं, बल्कि हक़ीक़त में अच्छा वह इंसान है जो अल्लाह (तआला) पर, क़यामत के दिन पर, फ़रिश्तों पर, अल्लाह की किताब पर और नबियों पर ईमान रखने वाला है, जो माल से प्रेम करने पर भी रिश्तेदारों, यतीमों, ग़रीबों, मुसाफिरों और भिखारियों को दे, क़ैदियों को आज़ाद करे, नमाज़ की पाबंदी और ज़कात को अदा करे, जब वादा करे तो उस को पूरा करे, माल की कमी, दुख-दर्द और लड़ाई के समय सब्र करे, यही सच्चे लोग हैं और यही परहेज़गार (बुराई से बचने वाले) हैं।

لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُوَلُّوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ وَآتَى الْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَاهَدُوا وَالصَّابِرِينَ فِي الْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ وَحِينَ الْبَأْسِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ (177)

१७८. हे ईमानवालों! तुम पर क़त्ल किये गये इंसान का बदला लेना फ़र्ज़ किया गया है, आज़ाद आज़ाद के बदले, ग़ुलाम ग़ुलाम के बदले, नारी नारी के बदले, हाँ अगर जिस किसी को उस के भाई की तरफ़ से माफ़ कर दिया जाये, उसे भलाई का सम्मान (एहतेराम) करना चाहिए और आसानी के साथ देयत (माल जो क़त्ल के बदले लिया जाये फ़िदिया) अदा करना चाहिए,[1] तुम्हारे रब की तरफ़ से यह छूट और रहमत है[2] उस के बाद भी जो उल्लघंन (तजावुज़) करे, उसे बहुत अज़ाब का सामना करना पड़ेगा।[3]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلَى الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْأُنْثَىٰ بِالْأُنْثَىٰ فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَاءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ ذَٰلِكَ تَخْفِيفٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ (178)

---

[1] माफी की दो हालतें हैं, एक तो बिना कोई माल बदले में लिए यानि देयत लिए बिना ही सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशी का हक़दार बनने के लिए माफ़ करना, दूसरी हालत क़त्ल के बजाये देयत क़ुबूल कर लेना। अगर यह दूसरी हालत अपनायी जाये, तो कहा जा रहा है कि देयत लेने वाला भलाई का पालन करे। وأداء إليه بإحسان में क़ातिल से कहा जा रहा है कि बिना किसी कष्ट दिये अच्छी तरह से देयत को अदा करे, क़त्ल हुये इंसान के नज़दीकी रिश्तेदारों ने उस पर मेहरबानी की है उस के बदले में शुक्रिया ही के साथ दे। هل جزاء الإحسان إلا الإحسان (अर्रहमान)

[2] यह छूट और मेहरबानी (यानि बदला, माफ़ी या देयत तीनों हालतें) अल्लाह तआला की तरफ़ से तुम पर हुई हैं, नहीं तो इससे पहले तौरात वालों के लिए बदला या माफ़ी थी, लेकिन देयत नहीं थी और इंजील वालों (इसाईयों) में केवल माफ़ी ही थी, बदला था न देयत। (इब्ने कसीर)

[3] दैयत, (माल जो मक़तूल के वारिसीन क़ातिल से क़त्ल के बदले में सज़ाये मौत माफ़ करने के लिए माँगे) क़ुबूल करने या ले लेने के बाद भी उसका क़त्ल कर दे, तो यह ज़ुल्म और ज़्यादती

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰأُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿179﴾

१७९. अक़्लमंदो! क़िसास (प्रतिहत्या, हत्यादण्ड) में तुम्हारे लिए जिंदगी है इस वजह से तुम (क़त्ल करने से) रुकोगे ।[1]

كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا ۖ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿180﴾

१८०. तुम पर फ़र्ज़ कर दिया गया है कि जब तुम में से कोई मरने लगे और माल छोड़ जाता हो, तो अपने माँ-बाप और रिश्तेदारों के लिए अच्छाई के साथ वसीयत कर जाये ।[2] परहेज़गारों पर यह फ़र्ज़ वाजेह है ।

فَمَنْ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَإِنَّمَا إِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ۚ إِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿181﴾

१८१. अब जो इंसान उसे सुनने के बाद बदल दे, तो उसका गुनाह बदलने वाले पर ही होगा, बेशक अल्लाह तआला सुनने वाला और जानने वाला है ।

فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا أَوْ إِثْمًا فَأَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿182﴾

१८२. हाँ जो वसीयत करने वाले के पक्षपात और गुनाह से डरे और अगर वह उन में आपस में सुधार करा दे, तो उस पर गुनाह नहीं, अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला मेहरबान है ।

يٰأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿183﴾

१८३. ऐ ईमानवालो! तुम पर रोज़े (व्रत जो रमज़ान के महीने में रखे जाते है) फ़र्ज़ किये गये, जिस तरह से तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किये गये थे, ताकि तुम तक़्वा (अल्लाह से डर) का रास्ता अपनाओ ।[3]

है, जिसकी सज़ा उसको दुनिया और आख़िरत दोनों में भुगतना पड़ेगा ।

[1] जब क़ातिल को यह डर होगा कि क़त्ल के बदले में उसे भी मार डाला जायेगा, तो वह किसी को भी क़त्ल करने की हिम्मत नही करेगा और जिस समाज में क़त्ल के बदले में यह क़ानून लागू हो जाता है, वहाँ यह डर समाज को क़त्ल और ख़ून बहाने से महफ़ूज रखता है, जिस से समाज में बहुत सुख-शान्ति (अमनो-अमान) रहती है । इसका अवलोकन (मुशाहदा) सऊदी अरब के समाज में किया जा सकता है, जहाँ इस्लामी क़ानून के पालन के ही वजह से अल्लाह की नेमत से सुख-शान्ति का माहौल है ।

[2] वसीयत करने का यह हुक्म विरासत की आयत उतरने से पहले दिया गया था, अब यह मन्सूख़ है ।

[3] صيام-صوم (रोज़ा, व्रत) का मतलब है सुबह सूरज निकलने से पहले रात के अंधेरे के बाद जो

أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ ط فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ط وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ ط فَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ ط وَأَن تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ (184)

१८४. गिनती में कुछ ही दिन हैं, लेकिन अगर तुम में से जो इंसान बीमार हो या सफर में हो, तो वह दूसरे दिनों में गिनती पूरी कर ले और जो इसकी कुदरत रखता हो फ़िदिया में एक ग़रीब को खाना दे, फिर जो इंसान भलाई में बढ़ जाये वह उसी के लिए बेहतर है, लेकिन तुम्हारे हक़ में बेहतर अमल रोज़े (व्रत) रखना ही है अगर तुम जानते हो।

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَىٰ وَالْفُرْقَانِ ج فَمَن شَهِدَ مِنكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ط وَمَن كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ط يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ز وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ (185)

१८५. रमज़ान का महीना वह है, जिस में क़ुरआन उतारा गया।[1] जो लोगों के लिए हिदायत है, और जो हिदायत और हक़ व बातिल के दरम्यिान फ़ैसलाकुन है, तो तुम में जो भी इस महीने को पाये उसे रोज़ा रखना चाहिए, हाँ जो रोगी हो या सफर में हो, तो उसे दूसरे दिन में यह गिनती पूरी करनी चाहिए, अल्लाह (तआला) की मर्ज़ी तुम्हारे साथ आसानी की है सख़्ती की नहीं, वह चाहता है कि तुम गिनती पूरी कर लो और अल्लाह (तआला) की अता की गई हिदायत के अनुसार उसकी बड़ाई बयान करो और उसके शुक्रगुज़ार रहो।

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ط أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ (186)

१८६. और जब मेरे बन्दे (भक्त) मेरे बारे में आप से सवाल करें तो कह दें कि मैं बहुत ही क़रीब हूँ, हर पुकारने वाले की पुकार को जब कभी भी वह मुझे पुकारे मैं क़बूल करता हूँ, इसलिए लोगों को भी चाहिए कि वह मेरी बात मानें और मुझ पर ईमान रखें यही उनकी भलाई का कारण (बाईस) है।

सफ़ेद रौशनी वातावरण में होती है, के वक़्त से लेकर सूरज के डूबने तक खाने-पीने बीवी से हमबिस्तरी करने से, अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने के लिए रुके रहना, यह इबादत नफ़्स की पाकी और सफ़ाई के लिए बहुत ज़रूरी है, इसलिए इसे तुम से पहले की उम्मतों पर भी फ़र्ज़ किया गया था।

[1] रमज़ान में क़ुरआन उतरने का मतलब यह नहीं कि पूरा क़ुरआन किसी एक रमज़ान में उतरा, बल्कि यह है कि रमज़ान की शबे क़द्र (एहतेराम वाली रात) में लौह महफ़ूज़ (अल्लाह की वह किताब जिस में शुरू से आख़िर तक सभी कुछ लिखा है) से दुनिया के आसमान में उतार दिया गया और वहाँ बैतुल इज़्ज़त (इज़्ज़त वाला घर) में रख दिया गया, वहाँ से हालात के एतबार से लगभग. २३ साल तक उतरता रहा। (इब्ने कसीर) इसलिए यह कहना कि क़ुरआन रमज़ान में या लैलतुल क़द्र या लैलतुल मुबारक में उतरा यह सब सच है।

१८७. रोज़े की रातों में अपनी वीवियों से मिलने की तुम्हें इजाज़त है, वह तुम्हारा लिबास हैं और तुम उन के लिबास हो, तुम्हारी छिपी खयानत का अल्लाह को इल्म है, उस ने तुम्हारी तौबा को क़ुबूल कर तुम्हें माफ़ कर दिया, अब तुम्हें उन से हमबिस्तरी की और अल्लाह (तआला) की लिखी हुई चीज़ को ढूंढ़ने का हुक्म है, तुम खाते-पीते रहो, यहां तक की फ़ज्र की सफेदी का धागा अंधेरे के काले धागे से वाज़ेह हो जाये,[1] फिर रात तक रोज़े को पूरा करो और बीवियों से उस समय हमबिस्तरी न करो जब कि तुम मस्जिदों में ऐतेकाफ़ (एक मुक़र्ररा वक़्त के लिए अल्लाह की इबादत के मक़सद से अपने आप को मस्जिद तक ही महदूद कर लेना) में हो, यह अल्लाह (तआला) के हुदूद हैं, तुम इन के क़रीब भी न जाओ, इसी तरह अल्लाह अपनी निशानियां लोगों पर बयान करता है, ताकि वे बचें।

أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَىٰ نِسَائِكُمْ ۚ
هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۗ عَلِمَ اللَّهُ
أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَخْتَانُونَ أَنفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ
وَعَفَا عَنكُمْ ۖ فَالْآنَ بَاشِرُوهُنَّ وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ
اللَّهُ لَكُمْ ۚ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ
الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۖ
ثُمَّ أَتِمُّوا الصِّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ
وَأَنتُمْ عَاكِفُونَ فِي الْمَسَاجِدِ ۗ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ
فَلَا تَقْرَبُوهَا ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ (187)

१८८. और एक-दूसरे का माल ग़लत तरीक़े से ना खाया करो, न हक़दार इंसानों को रिश्वत पहुँचाकर किसी का कुछ माल ज़ुल्म से हड़प कर लिया करो, अगरचे कि तुम जानते हो।[2]

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوا
بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِّنْ أَمْوَالِ
النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ (188)

१८९. लोग आप से नये चाँद के बारे में सवाल करते हैं, आप कह दीजिए कि यह लोगों (की इबादत) के वक़्त और हज के मौसम के लिए है (एहराम की हालत में) और घरों के पीछे से तुम्हारा आना कोई नेक काम नहीं, बल्कि नेक काम वह है जो अल्लाह से डरता हो। घरों में

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَهِلَّةِ ۖ قُلْ هِيَ مَوَاقِيتُ لِلنَّاسِ
وَالْحَجِّ ۗ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَن تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِن
ظُهُورِهَا وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَىٰ ۗ وَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ
أَبْوَابِهَا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ (189)

[1] इस्लाम के शुरू में एक हुक्म यह था कि रोज़ा खोल लेने के बाद ईशा (रात) की नमाज़ या सोने तक खाने-पीने और पत्नी से हमबिस्तरी करने का हुक्म था, सोने के बाद इन में से कोई काम नहीं किया जा सकता था। वाज़ेह है यह मना करना कठिन था और इस के हिसाब से काम करना कठिन था, अल्लाह तआला ने इस आयत में यह दोनों पाबन्दी मन्सूख़ कर दी।

[2] यह ऐसे इंसान के बारे में है जिसके पास किसी का हक़ हो और मालिक के पास कोई सुबूत न हो, जिसका फ़ायेदा उठाकर वह इंसान अदालत या हक़दार से अपने हक़ में फ़ैसला करा ले, इस तरह दूसरे का हक़ ले ले, यह ज़ुल्म और हराम है, अदालत का फ़ैसला ज़ुल्म और हराम को जायेज़ नहीं कर सकता, यह ज़ालिम अल्लाह तआला के सामने मुजरिम होगा। (इब्ने कसीर)

उन के दरवाज़े से आया करो,[1] और अल्लाह से डरते रहा करो ताकि तुम कामयाब हो जाओ।

१९०. और लड़ो अल्लाह की राह में उन से जो तुमसे लड़ते हैं और ज़ुल्म न करो[2] अल्लाह (तआला) ज़ालिम को पसंद नहीं करता है।

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ (190)

१९१. और उन्हें मारो जहाँ भी पाओ और उन्हें निकालो जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला है और (सुनो) फ़ित्ना (लड़ाई-झगड़ा, फ़साद) क़त्ल से ज़्यादा बुरा है[3] और मस्जिदे हराम के पास उन से लड़ाई न करो, जब तक कि वे ख़ुद तुम से न लड़े, अगर वे तुम से लड़ें, तो तुम भी उन्हें मारो,[4] काफ़िरों का बदला यही है।

وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُم مِّنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ ۚ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ عِندَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّىٰ يُقَاتِلُوكُمْ فِيهِ ۖ فَإِن قَاتَلُوكُمْ فَاقْتُلُوهُمْ ۗ كَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ (191)

१९२. अगर वे रुक जायें, तो अल्लाह (तआला) बहुत बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

فَإِنِ انتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ (192)

१९३. और उन से लड़ो, जब तक कि फ़ित्ना न मिट जाये और अल्लाह (तआला) का दीन रह जाये, अगर वह रुक जायें (तो तुम भी रुक जाओ) ज़ुल्म तो केवल ज़ालिमों पर है।

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ لِلَّهِ ۖ فَإِنِ انتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ (193)

---

[1] अन्सार जाहिलियत के दौर में जब हज्ज या उमर: का एहराम (हज और उमर: के लिए एक ख़ास हालत जिस में मर्द एक लुंगी और एक ओढ़ने की चादर जो धार्मिक नियमानुसार लपेटी जाये, बाँधता है) बाँध लेते और फिर उसके बाद किसी चीज़ की ज़रूरत पड़ती, तो अपने घरों में मुख्य दरवाज़े से न दाख़िल होते, बल्कि पीछे की दीवार लाँघ कर दाख़िल होते, इसको वह सवाब समझते, अल्लाह तआला ने कहा कि यह सवाब नहीं है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[2] इस आयत में पहली बार उन लोगों से लड़ने का हुक्म दिया गया है, जो हमेशा मुसलमानों के क़त्ल करने के ख़्याल में रहते थे, फिर भी ज़्यादती से रोका गया है, जिसका मतलब यह है कि कुचलो नहीं, औरतों, बच्चों, बूढ़ों को जिनका जंग में योगदान न हो क़त्ल मत करो, पेड़ वगैरह को जला देना, जानवरों को बिला वजह मार डालना भी ज़्यादती है, इन से बचा जाये। (इब्ने कसीर)

[3] मज़हब इस्लाम के शुरूआती दौर में मक्का शहर में चूँकि मुसलमान कमज़ोर और बिखरे हुए थे, इसलिए काफ़िरों से लड़ना मना था, जब मुसलमान मक्का शहर से हिजरत करके मदीने आये तो मुसलमान की सारी ताक़त जमा हो गयी, फिर उनको जिहाद करने का हुक्म अता किया गया, शुरू में आप केवल उन्हीं से लड़ते जो मुसलमानों से लड़ते, लेकिन इस के बाद इसको और बढ़ाया गया और मुसलमानों ने ज़रूरत के ऐतबार से काफ़िरों के इलाक़े में भी जाकर जिहाद किया।

[4] हरम के हुदूद में लड़ना मना है, लेकिन अगर काफ़िर इसकी रिआयत न करें और तुम से लड़ें तो तुम्हें भी उन से लड़ने का हुक्म है।

१९४. हुरमत वाले महीने के बदले हुरमत वाले महीने हैं और हुरमतें अदले-बदले की हैं, जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम भी उस पर उसी तरह का ज़ुल्म करो जो तुम पर किया है और अल्लाह तआला से डरते रहा करो और जान रखो कि अल्लाह (तआला) परहेज़गारों के साथ है।

اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿194﴾

१९५. और अल्लाह की राह में ख़र्च करो और अपने हाथों कष्ट में न पड़ो। भलाई करो अल्लाह भलाई करने वालों से प्रेम करता है।

وَاَنْفِقُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛۚ وَاَحْسِنُوْا ۛۚ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿195﴾

१९६. और हज व उमरे को अल्लाह तआला के लिए पूरा करो,[1] और अगर तुम रोक दिये जाओ, तो जो भी क़ुर्बानी का जानवर हो उसे क़ुर्बानी कर डालो ।[2] और अपने सिर न मुंडवाओ जब तक कि क़ुर्बानी क़ुर्बानगाह तक न पहुंच जाये। और तुम में से जो बीमार हो या उसके सिर में कोई दर्द हो जिसकी वजह से वह सिर मुंडवा ले तो उस पर फ़िदिया है कि चाहे तो रोज़ा रख ले, या चाहे तो सदक़ा दे, या क़ुर्बानी करे[3] लेकिन जैसे ही शान्ति की हालत हो जाये, तो जो उमरे से लेकर हज तक तमत्तुअ (लाभान्वित) करे, बस उसे जो भी क़ुर्बानी मौजूद हो उसे कर डाले। जिसमें ताक़त न हो वह तीन रोज़े तो हज के दिनों में रख ले और सात वापसी में यह पूरे दस हो गये।[4] यह हुक्म

وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْىِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى يَبْلُغَ الْهَدْىُ مَحِلَّهٗ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ بِهٖٓ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ ۥ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْىِ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِى الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ؕ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ اَهْلُهٗ حَاضِرِى الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿196﴾

---

[1] यानी हज्ज या उमरे का «एहराम» बांध लो, तो उसको पूरा करना ज़रूरी है, चाहे नफ़ली हज्ज व उमर: ही हो। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[2] अगर रास्ते में दुश्मन या भयंकर बीमारी की वजह से रुकावट आ जाये, तो एक जानवर (हदी) बकरी, गाय या ऊँट जो भी हो, वहीं क़ुर्बानी देकर सिर मुंडा लो और एहराम खोल दो, जिस तरह नबी ﷺ और आप के सहाबा ने हुदैबिया की जगह पर क़ुर्बानियों की बलि दी थी, हुदैबिया का मुक़ाम «हरम» के हुदूद से बाहर है। (फ़तहुल क़दीर) और अगले साल उसकी क़ज़ा दो जैसे नबी ﷺ ने ६ हिजरी वाले उमरे की क़ज़ा (बदला) ७ हिजरी में दी।

[3] यानी (अर्थात) उसको कोई ऐसा रोग हो जाये कि उसको सिर मुंडवाना पड़ जाये, तो उसका फ़िदिया (प्रतिशोध) ज़रूरी है। हदीस के अनुसार ऐसे इंसान को चाहिए कि वह ६ भूखे लोगों को भोजन कराये या एक बकरी की बलि (क़ुर्बानी) दे या तीन रोज़े (व्रत) रखे।

[4] हज तीन तरह से किया जा सकता है, जिन के तीन नाम हैं, (१) इफ़राद – सिर्फ़ हज्ज के इरादे

उन के लिए है जो मस्जिदे हराम (मक्का) के रहने वाले न हों।[1] (लोगों)! अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि अल्लाह (तआला) सख़्त सज़ायें देने वाला है।

१९७. हज के महीने मुक़र्रर हैं,[2] इसलिए जो इन में हज वाजिब करे वह अपनी बीवी से जिमाअ करने, गुनाह करने और लड़ाई-झगड़ा करने से बचता रहे, तुम जो सवाब का काम करोगे उसे अल्लाह (तआला) जानने वाला है, और अपने साथ रास्ता का ख़र्च ले लिया करो, सब से बेहतर रास्ता ख़र्च तो अल्लाह का डर है और ऐ अक़्लमंदों! मुझ से डरते रहा करो।

اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ ۙ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۚ وَاتَّقُوْنِ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿197﴾

१९८. तुम पर अपने रब का फ़ज़्ल ढूंढ़ने में कोई गुनाह नहीं।[3] जब तुम अरफ़ात से लौटो तो मशअरे हराम (मुज़्दलिफ़ा) के क़रीब अल्लाह का ज़िक्र करो और उस के ज़िक्र का बयान उस तरह करो, जैसे कि उस ने तुम्हें निर्देश दिये हैं, हालांकि तुम उस से पहले गुमराहों में थे।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ فَاِذَآ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۪ وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿198﴾

से एहराम बांधना, (२) क़िरान - हज्ज और उमर: दोनो का इरादा एक साथ करके एहराम बांधना, इन दोनो हालतों में हज्ज के सभी अरकान पूरा किये बिना एहराम खोलना जायज़ (उचित) नहीं है।(३) हज्ज-ए-तमत्तुअ - इस में भी हज्ज और उमर: दोनो का इरादा होता है, लेकिन पहले केवल उमर: का इरादा करके एहराम बांधा जाता है, और फिर उमर: करके एहराम खोल दिया जाता है और फिर ८ ज़िलहिज्जा को ही हज्ज के लिए मक्का ही से दोबारा एहराम बांधा जाता है, तमत्तुअ का मतलब है, फ़ायेदा उठाना, या एहराम उतारकर उमर: और हज्ज के बीच फ़ायेदा उठा लिया जाता है, हज्ज-क़िरान और हज्ज-तमत्तुअ दोनो में ही एक हदी (एक जानवर की क़ुर्बानी) देनी है। इस आयत में इसी हज्ज तमत्तुअ के हुक्म का बयान है, तमत्तुअ करने वाला ताक़त के ऐतबार से १० ज़िलहिज्जा को एक जानवर की क़ुर्बानी दे, अगर क़ुर्बानी देनें की ताक़त न हो, तो तीन रोज़े हज्ज के दिनों में और सात घर जाकर पूरा करे, हज्ज के दिन, जिन में रोज़े रखने है ९ ज़िलहिज्जा (अरफ़ात का दिन) से पहले या तशरीक़ के दिन हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[1] या तमत्तुअ और उसके कारण हदी या रोज़े सिर्फ़ उन लोगों के लिए है जो मक्कावासी न हों।

[2] और यह हैं शव्वाल, ज़ीक़ाद, और ज़िलहज्ज के दस दिन। मतलब यह है कि उमर: तो साल के दिनों में भी हो सकता है, लेकिन हज्ज तो कुछ मुक़र्रर दिनों में ही होता है, इसलिए उसका एहराम हज्ज के महीनों के सिवाय बांधना जायज़ नहीं। (इब्ने कसीर)

[3] फ़ज़्ल का मतलब तिजारत और काम है यानी हज्ज का सफ़र करते वक़्त तिजारत करने में कोई रुकावट नहीं।

ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (199)

१९९. फिर तुम उस जगह से लौटो जिस जगह से सभी लोग लौटते हैं और अल्लाह (तआला) से इस्तेग़फार करते रहो, बेशक अल्लाह (तआला) बख़्शने वाला, रहम करने वाला है।

فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ؕ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ (200)

२००. फिर जब तुम हज के हर काम पूरे कर लो, तो अल्लाह (तआला) को याद करो, जिस तरह से तुम अपने बुज़ुर्गों को याद करते थे, बल्कि उससे ज्यादा।[1] कुछ लोग वह भी हैं जो कहते है "हमारे रब! हमें इस दुनिया में दे दे, ऐसे लोगों का आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं है।"

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ (201)

२०१. और कुछ लोग वह भी हैं, जो कहते हैं, "ऐ हमारे पालनहार! हमें इस दुनिया में भलाई अता कर और आख़िरत में भी भलाई अता कर और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा दे।"

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ (202)

२०२. ये वह लोग हैं जिन के लिए उन के अमलों का हिस्सा है और अल्लाह (तआला) जल्द ही हिसाब लेने वाला है।

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِىْٓ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِىْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ (203)

२०३. और अल्लाह (तआला) की याद उन गिनती के कुछ दिनों (तशरीक़ के दिन) में करो,[2] दो दिन की जल्दी करने वाले पर कोई गुनाह नहीं, और जो पीछे रह जाये उस पर भी कोई गुनाह नहीं[3] यह परहेज़गार (महान इंसान)

---

[1] अरब के लोग हज्ज के बाद मिना के मुक़ाम पर मेला लगाते और अपने-अपने बुज़ुर्गों की तारीफें करते, मुसलमानों से कहा जा रहा है कि जब १० ज़िलहिज्जा को कंकरियाँ मारकर, क़ुर्बानी देकर, सिर मुँडवाकर, काअबा का तवाफ़ करके और सफ़ा और मरवा के बीच सअई करके छुटकारा पाओ तो उसके बाद तीन दिन मिना में रुकना है, और वहाँ अल्लाह को बहुत याद करो, जैसे कि जाहिलियत के दौर में तुम अपने बुज़ुर्गों की चर्चा करते थे।

[2] मतलब तशरीक़ के दिन हैं, यानी ११, १२ और १३ ज़िलहिज्जा। इन दिनों में अल्लाह तआला के ज़िक्र से मतलब यह है कि ऊँची आवाज़ के साथ सुन्नत के ऐतबार से मुक़र्रर तकबीर कहे, केवल फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद ही नहीं (जैसा कि एक अस्पष्ट हदीस के आधार पर मशहूर है), बल्कि हर वक़्त यह तकबीर पढ़ी जाये (अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इलाहा इल्लल्लाह, वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर वलिल्लाहिलहम्द) जमरात को कंकरियाँ मारते वक़्त हर कंकरी के साथ तकबीर पढ़नी सुन्नत के अनुरुप (मुताबिक़) है।

[3] जमरात को कंकरियाँ मारना, तीन दिन बेहतर है, लेकिन अगर कोई दो दिन के बाद मिना से वापस आ जाये तो उसका भी हुक्म है।

के लिए है, और अल्लाह (तआला) से डरते रहो, और जान रखो, कि तुम सब उसी की ओर जमा किये जाओगे।

२०४. और कुछ लोगों की दुनियावी बातें आप को खुश कर देती हैं और वह अपने दिल की बातों पर अल्लाह को गवाह करता है, हालांकि हक़ीक़त में वह बड़ा झगड़ालू है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿204﴾

२०५. और जब वह लौटकर जाता है, तो ज़मीन में फ़साद फैलाने, खेती और नसल की बर्बादी की कोशिश में लगा रहता है और अल्लाह (तआला) फ़साद को पसंद नहीं करता है।

وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۗ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿205﴾

२०६. और जब उस से कहा जाता है कि अल्लाह से डर, तो घमण्ड उसे गुनाह पर उकसा देता है, ऐसे के लिए सिर्फ़ जहन्नम ही है, और बेशक वह बहुत बुरी जगह है।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ۗ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿206﴾

२०७. और कुछ लोग वह भी हैं जो कि अल्लाह (तआला) की मर्ज़ी हासिल करने के लिए अपनी जान तक बेच डालते हैं[1] और अल्लाह (तआला) अपने बन्दों पर बड़ी शफ़क़त करने वाला है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿207﴾

२०८. ऐ ईमानवालो! इस्लाम में पूरे तौर पर दाख़िल हो और शैतान के पद चिन्हों की पैरवी न करो,[2] वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۪ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۗ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿208﴾

२०९. अगर तुम निशानियों के आ जाने के बावजूद भी फिसल जाओ, तो जान लो कि अल्लाह (तआला) ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है।

فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿209﴾

---

[1] यह आयत, कहते हैं कि हज़रत सुहैब रूमी के लिए उतरी है, जब वह हिजरत करने लगे, तो काफ़िरों ने कहा कि यह माल तो यहाँ का कमाया हुआ है, इसे हम साथ नहीं ले जाने देंगे, हज़रत सुहैब रूमी ने यह सारा माल उन के हवाले कर दिया और धर्म साथ लेकर नबी ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हो गये, आप ने सुनकर कहा "सुहैब ने फ़ायेदेमंद तिजारत किया है" दो बार कहा। (फ़तहुल क़दीर)

[2] ईमानवालों को कहा जा रहा है कि पूरी तरह से इस्लाम में दाख़िल हो जाओ, इस तरह न करो कि जो बातें तुम्हारे अपने फ़ायेदा और मन के मुताबिक़ हैं तो उन्हें अपना लो, बाक़ी को छोड़ दो। इसी तरह जो बातें तुम छोड़ आये हो उसे दीन इस्लाम में मिलावट करने की कोशिश न करो, बल्कि सिर्फ़ दीन इस्लाम के क़ानून को पूरी तरह से अपनाओ।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ (210)

२१०. क्या लोगों को इस बात का इंतज़ार है कि अल्लाह (तआला) ख़ुद बादलों के झुरमुट में आ जाये, और फ़रिश्ते भी, और काम का अन्त कर दिया जाये, अल्लाह ही की तरफ सभी काम लौटाये जाते हैं।

سَلْ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰھُمْ مِّنْ اٰيَةٍۢ بَيِّنَةٍ ۭ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ (211)

२११. इस्राईल की औलाद से पूछो कि हम ने उन्हें कितनी वाज़ेह निशानियाँ अता कीं[1] और जो अल्लाह (तआला) की नेमत अपने पास पहुँच जाने के बावजूद बदल डाले (वह जान ले) कि अल्लाह (तआला) भी कठिन सज़ाओं का देने वाला है।

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاۗءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ (212)

२१२. काफ़िरों के लिए दुनियावी ज़िन्दगी मुज़य्यन कर दी गई है, और वह ईमानवालों से हँसी मज़ाक करते हैं[2] मगर जो परहेज़गार हैं क़यामत के दिन उनसे बहुत बड़े होंगे, अल्लाह (तआला) जिसे चाहता है बेशुमार अता करता है।

كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۣ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۠ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۭ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ۭ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (213)

२१३. हक़ीक़त में लोग एक ही उम्मत थे, फिर अल्लाह (तआला) ने नबियों को ख़ुशख़बरी देने और आगाह करने को भेजा और उन के साथ किताब उतारी, ताकि लोगों के हर इख़्तिलाफ़ का फ़ैसला हो जाये। और केवल उन्हीं लोगों ने जो उसे दिये गये थे अपने पास दलील आ जाने के बावजूद आपसी हसद और घमण्ड की वजह से उस में इख़्तिलाफ़ किया, इसलिए अल्लाह (तआला) ने ईमानवालों के इस इख़्तिलाफ़ में भी सच्चाई की तरफ़ अपनी इजाज़त के ज़रिये हिदायत की और अल्लाह जिसको चाहे सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करता है।

---

[1] मिसाल के तौर पर मूसा की छड़ी, जिस के ज़रिये हम ने जादूगरों के जादू को तोड़ा, समुद्र में रास्ता बनाया, पत्थर से बारह चश्में निकाले, बादलों का साया, मन्न व सलवा का उतरना और जो अल्लाह तआला की ताक़त और हमारे पैगम्बरों की सच्चाई के सुबूत थे, लेकिन उस के बाद भी उन्होंने अल्लाह तआला के हुक्म की नाफ़रमानी की।

[2] चूँकि मुसलमानों की अकसरियत ग़रीबों पर आधारित (मुश्तमिल) थी, जो दुनियावी दौलत और आराम से मुक्त थे, इसलिए काफ़िर यानि मक्का के क़ुरैश उनका मज़ाक़ उड़ाते थे, जैसाकि धनवानों का हर ज़माने में यही अमल रहा है।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَ الضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ ﴿214﴾

२१४. क्या तुम यह विचार (ख़्याल) कर बैठे हो कि जन्नत में चले जाओगे? अगरचे अब तक तुम पर वह हालत नहीं आयी जो तुम से अगलों पर आयी[1] उन्हें ग़रीबी और बीमारी पहुँची, और वह यहाँ तक झिंझोड़े गये कि रसूल और उन के साथ के ईमान वाले लोग कहने लगे कि अल्लाह की मदद कब आयेगी? सुन रखो कि अल्लाह की मदद क़रीब ही है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿215﴾

२१५. आप से पूछते हैं कि वह क्या ख़र्च करें, आप कह दीजिए कि जो माल तुम ख़र्च करो वह माँ-बाप के लिए, रिश्तेदारों, यतीमों व ग़रीबों और मुसाफ़िरों के लिए है और तुम जो कुछ भलाई करोगे अल्लाह (तआला) को उस का इल्म है।

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿216﴾

२१६. तुम पर जिहाद फ़र्ज किया गया, अगरचे कि वह तुम्हारे लिए कठिन मालूम होता हो, हो सकता है कि तुम किसी चीज़ को बुरी जानो और हक़ीक़त में वही तुम्हारे लिए भली हो, और यह भी हो सकता है कि तुम जिस चीज़ को अच्छी समझो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो, सच्चा इल्म अल्लाह ही को है, तुम सिर्फ़ अंजान हो।

[1] मदीना की ओर हिजरत (मक्का से मदीना मजहबे इस्लाम क़ुबूल करने की वजह से जो हिजरत हुई है) के बाद जब मुसलमानों को यहूदियों, मुनाफ़िक़ों और अरब के मूर्तिपूजकों के ज़रिये कई तरह के कष्ट और कठिनाईयाँ पँहुचने के बाद कुछ मुसलमानों ने नबी ﷺ से शिकायत की जिस पर मुसलमानों को अल्लाह तआला ने यह आयत उतारकर तसल्ली दी और ख़ुद नबी ﷺ ने फ़रमाया तुम से पहले लोगों को उन के सिर से लेकर पैर तक आरे से चीरा गया और लोहे की कंघी के द्वारा उनका गोश्त खुर्चा गया, लेकिन यह ज़ुल्म और तकलीफ़ें भी उनको अपने दीन से नही फिरा सकीं। फिर फ़रमाया "अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआला इस मामले को पूरा (यानी इस्लाम को फ़त्ह) करेगा।" यहाँ तक कि एक सवार सन्आ से (यमन की राजधानी है) हज़र मूत तक अकेला सफ़र करेगा और उसे अल्लाह के सिवाय किसी का डर न होगा।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ۖ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ۖ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۗ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ۗ وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿217﴾

२१७. लोग आप से हुरमत वाले महीनों में जंग के बारे में सवाल करते हैं, आप कह दीजिए उन में जंग करना बहुत बड़ा गुनाह है, लेकिन अल्लाह के रास्ते से रोकना, उन के साथ कुफ्र करना, मस्जिदे हराम से रोकना और वहाँ के रहने वालों को वहाँ से निकालना अल्लाह के क़रीब उस से भी बड़ा गुनाह है और फ़ित्ना क़त्ल से भी बड़ा गुनाह है,[1] यह लोग तुम से लड़ाई-झगड़ा करते ही रहेंगे यहाँ तक कि अगर उन से हो सके तो तुम्हें तुम्हारे धर्म से फेर दें[2] और तुम में से जो लोग अपने धर्म से पलट जायें और उसी कुफ्र की हालत में मरें, उन के आमाल दुनिया और आख़िरत के सभी बर्बाद हो गये, यह लोग जहन्नमी होंगे और हमेशा जहन्नम में ही रहेंगे ।[3]

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿218﴾

२१८. हाँ जिन्होंने ईमान क़ुबूल किया और हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया (दीन की हिफ़ाज़त के लिए अल्लाह की राह में लड़े) वही अल्लाह की रहमत की उम्मीद रखते हैं और अल्लाह (तआला) बड़ा बख़्शने वाला रहम करने वाला है ।

---

[1] रजब, ज़ुलक़ादा, ज़िलहिज्जा, और मोहर्रम, यह चार महीने जाहिलियत मे भी हुरमत वाले महीने माने जाते थे, जिन मे क़त्ल और जंग करना अच्छा नहीं समझा जाता था, इस्लाम ने भी इन के एहतेराम को उसी तरह रखा ।

[2] जब यह अपनी चालों और साजिशों और तुम्हें मुर्तद्द (इस्लाम धर्म से फिरने वाला) बनाने की कोशिश से रुकने वाले नहीं, तो फिर तुम उन से सामना करने में हुरमत वाले महीने की वजह से क्यों रुके रहो?

[3] जो इस्लाम धर्म से पलट जाये यानी मुर्तद्द हो जाये (यदि वह माफ़ी न माँगे) तो उसकी दुनियावी सजा क़त्ल है, हदीस में है (مَن بدّل دينه فاقتلوه) (सहीह बुख़ारी, हदीस ३०१७, किताबुल जिहाद) इस आयत में उसके आख़िरत की सजा का बयान है ।

२१९. लोग आप से शराब और जुआ के बारे में सवाल करते हैं, आप कह दीजिए इन दोनों में बड़ा गुनाह है, और लोगों को इस से दुनियावी फ़ायेदा भी होता है, लेकिन उनका गुनाह उन के फ़ायेदा से कहीं ज़्यादा है, आप से यह भी पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें, आप कह दीजिए ज़रूरत से ज़्यादा को। अल्लाह (तआला) इसी तरह अपना हुक्म वाज़ेह तौर से तुम्हारे लिए बयान कर रहा है कि तुम सोच समझ सको।

يَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۖ قُلْ فِيهِمَآ إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَإِثْمُهُمَآ أَكْبَرُ مِن نَّفْعِهِمَا ۗ وَيَسْـَٔلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَ ۖ قُلِ الْعَفْوَ ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿219﴾

२२०. दुनियावी और आख़िरत के अमलों को, और आप से यतीमों के बारे में भी सवाल करते हैं।[1] आप कह दीजिए कि उन की भलाई करना ही अच्छा है, तुम अगर अपने माल उनके माल में मिला भी लो तो वह तुम्हारे भाई हैं, बदनियत और नेक नियत सब को अल्लाह पूरी तरह से जानता है, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हे कठिनाई में डाल देता। बेशक अल्लाह (तआला) ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है।

فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَىٰ ۖ قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۖ وَإِن تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَعْنَتَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿220﴾

२२१. और मुशरिक औरतों से उस वक़्त तक शादी न करो जब तक कि वह ईमान न ले आयें।[2] ईमानवाली लौंडी (दासी) भी मुशरिक (बहुदेववादी) आज़ाद औरत से बेहतर है, अगरचे कि तुम्हें मुशरिक ही अच्छी लगती हो और न मुशरिक मर्दों को अपनी औरतों से विवाह करने दो, जब तक की वह ईमान न ले आयें, ईमानदार गुलाम (मुसलमान दास) आज़ाद

وَلَا تَنكِحُوا الْمُشْرِكَاتِ حَتَّىٰ يُؤْمِنَّ ۚ وَلَأَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ ۗ وَلَا تُنكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا ۚ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكٍ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ ۗ أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ ۖ وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِإِذْنِهِ ۖ وَيُبَيِّنُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿221﴾

---

[1] जब यतीमों के माल ज़ुल्म करके खाने वालों के लिए सख़्त सज़ा का हुक्म आया, तो सहाबा डर गये और यतीमों की हर चीज़ अलग कर दी, यहाँ तक कि खाना-पीना अलग कर दिया, अगर उन के खाने-पीने की चीज़ बच जाती, तो उसको इस्तेमाल में न लाते, जिससे वह चीज़ ख़राब हो जाती; इस डर से कि कहीं इस सज़ा के हक़दार न बना दिये जायें, इस पर यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर)

[2] मुशरिक औरतों से मुराद मूर्तिपूजक या मुशरिक औरतें हैं, क्योंकि किताब वालों (यहूदी और ईसाई) औरतों से शादी करने का हुक्म क़ुरआन ने दिया है, लेकिन किसी मुसलमान औरत की शादी अहले किताब मर्दों से नहीं हो सकती, फिर भी हज़रत उमर ﷺ ने मसलहतन यहूदी इसाई औरतों से शादी करना अच्छा नही समझा है। (इब्ने कसीर)

मुशरिक (से ज़्यादा अच्छा है, अगरचे कि तुम्हें मुशरिक अच्छा लगे, ये लोग जहन्नम की तरफ बुलाते हैं और अल्लाह जन्नत की तरफ़ और मग़फिरत की तरफ अपने हुक्म से बुलाता है, वह अपनी निशानियाँ लोगों के लिए बयान कर रहा है, ताकि नसीहत हासिल करें।

وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ ۖ قُلْ هُوَ أَذًى فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ فِي الْمَحِيضِ ۖ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَطْهُرْنَ ۖ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ﴿222﴾

२२२. और आप से माहवारी के बारे में सवाल करते हैं, कह दीजिए वह गंदगी है, माहवारी के वक़्त औरतों से अलग रहो[1] और जब तक वह पाक न हो जायें उनके क़रीब न जाओ, हाँ जब वह पाक हो जायें, तो उन के पास जाओ जहाँ से अल्लाह ने तुम्हें इजाजत दी है अल्लाह माफ़ी माँगने वाले को और पाक रहने वाले को पसंद करता है।

نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّىٰ شِئْتُمْ ۖ وَقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُم مُّلَاقُوهُ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿223﴾

२२३. तुम्हारी बीवियाँ तुम्हारी खेतियाँ हैं, अपनी खेतियों में जिस तरह चाहो आओ और अपने लिए (सवाब) आगे भेजो, और अल्लाह (तआला) से डरते रहो, और जान रखो, कि तुम उस से मिलने वाले हो और ईमानवालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।

وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِّأَيْمَانِكُمْ أَن تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُصْلِحُوا بَيْنَ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿224﴾

२२४. और अल्लाह (तआला) को अपनी क़समों का (इस तरह) निशाना न बनाओ कि भलाई और परहेज़गारी और लोगों के बीच सुधार करने को छोड़ बैठो।[2] और अल्लाह (तआला)

---

[1] अपनी जवानी पर पहुँचने पर हर औरत को जो माहवारी का ख़ून आता है, उसे हैज़ कहते हैं और कई बार अप्राकृतिक रुप (ग़ैर फ़ितरी) से बीमारी की वजह से जो ख़ून आता है, उसे इस्तेहाज़ा कहते हैं, जिसका हुक्म व क़ानून हैज़ से मुख़्तलिफ़ है, हैज़ के दिनों में औरत को नमाज़ माफ़ है, और रोज़ा रखने से रोका गया है, लेकिन उन के बदले दूसरे दिनों में रखना फ़र्ज़ है, मर्दों के लिए सिर्फ़ जिमाअ से रोका गया है।

[2] यानी ग़ुस्सा में ऐसी क़सम मत उठाओ कि मैं फ़लाँ इंसान के ऊपर भलाई नहीं करूँगा, फ़लाँ इंसान से नहीं बोलूँगा, फ़लाँ इंसान के बीच सुलह नहीं कराऊँगा। इस तरह की क़समों के बारे में हदीस शरीफ़ में आया है कि अगर इस तरह की क़सम खा भी लो तो उसे तोड़ दो, और क़सम का कफ़्फ़ार: (क़सम खाने के बाद अगर तोड़ दी जाये, तो उसकी सज़ा) अदा करो। (क़सम के कफ़्फ़ारे के लिए देखिए सूर: अल-मायेद:, आयत ८९)

सुनने वाला जानने वाला है।

लَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿225﴾

२२५. अल्लाह तआला तुम्हें तुम्हारी उन क़समों पर न पकड़ेगा जो मज़बूत न हों।[1] हाँ तुम्हारी पकड़ उस चीज़ पर है, जो तुम्हारे दिलों का अमल है, अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला सहनशील है।

لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ مِنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَاۗءُوْ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿226﴾

२२६. जो लोग अपनी बीवियों (पत्नियों) से (न मिलने की) क़सम खायें उन के लिए चार महीने की मुद्दत है।[2] फिर अगर वह लौट आयें, तो अल्लाह (तआला) बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿227﴾

२२७. और अगर तलाक़ का ही इरादा कर लें तो अल्लाह (तआला) बहुत सुनने वाला जानने वाला है।

---

[1] यानी जो बिना सोचे समझे और आदत के तौर पर हो, लेकिन जान बूझकर क़सम खाना बहुत बड़ा गुनाह है।

[2] إيلاء का मतलब क़सम खाने के हैं अगर कोई शौहर क़सम खा ले कि मैं अपनी बीवी के साथ एक माह या दो माह (मिसाल के तौर पर) सम्बन्ध नहीं रखूंगा, फिर क़सम की मुद्दत पूरी करके कोई सम्बन्ध स्थापित (क़ायम) करता है, तो कोई सज़ा नहीं है, और अगर फिर क़सम की मुद्दत पूरी होने के पहले सम्बन्ध स्थापित कर ले तो क़सम तोड़ने का कफ़्फ़ारा अदा करना होगा।

अगर चार माह की मुद्दत से ज़्यादा या बिना मुद्दत के क़सम खायी गयी है, तो उन के लिए इस आयत में मुद्दत मुक़र्रर कर दी गयी है कि वह चार माह बाद अगर चाहे तो सम्बन्ध स्थापित कर ले या उन्हें तलाक़ दे दे (उसे चार माह से ज़्यादा लटकाये रहने का हुक्म नहीं है) पहली हालत में उसे क़सम तोड़ने की सज़ा भुगतना पड़ेगा और अगर दोनों में से कोई हालत नहीं अपनायेगा, तो अदालत उसको दोनों में से किसी एक को अपनाने पर मजबूर करेगा कि वह उस से सम्बन्ध स्थापित कर ले या तलाक़ दे दे ताकि उस स्त्री पर ज़ुल्म न हो। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

वَالْمُطَلَّقٰتُ

२२८. तलाक़ शुदा औरतें अपने आप को तीन माहवारी तक रोके रखें।[1] उन के लिये जायज़ नहीं कि अल्लाह ने उन के रिहम में जो पैदा किया हो उसे छिपायें, अगर उन्हें अल्लाह (तआला) पर और क़यामत के दिन पर ईमान हो। उनके शौहर को इस मुद्दत में उन्हें लौटा लेने का पूरा हक़ हैं, अगर उनका इरादा सुधार का हो,[2] औरतों के भी वैसे ही हक़ हैं, जैसे उन पर मर्दों के हैं अच्छाई के साथ।[3] हाँ, मर्दों की औरतों पर फ़ज़ीलत है, और अल्लाह (तआला) ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।

وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ؕ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۪ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿228﴾

२२९. ये तलाक़ दो बार है[4] फिर या तो अच्छाई से रोकना।[5] या जायज़ तरीक़े से छोड़ देना है[6] और तुम्हें उचित नहीं कि तुम ने उन्हें जो दिया है, उस में से कुछ भी लो, हाँ! यह और बात है कि दोनों को अल्लाह के हुदूद क़ायम न रखने का डर हो, इसलिए यदि तुम्हें डर हो कि यह दोनों अल्लाह के हुदूद क़ायम न रख सकेंगे, तो स्त्री आज़ादी हासिल करने के लिए कुछ दे डाले, इस में दोनो पर कोई गुनाह नहीं[7] यह अल्लाह के हुदूद हैं, होशियार। इन से

اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـًٔا اِلَّآ اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿229﴾

---

[1] इस से मुराद वह तलाक़ शुदा औरतें है जो गर्भवती (हामला) भी न हो (क्योंकि हामला औरत के लिए प्रसव की मुद्दत मुक़र्रर है) जिसे जिमाअ से पहले ही तलाक़ हो गयी हो वह भी न हो (क्योंकि उसकी कोई इद्दत ही नहीं है) बूढ़ी भी न हो जिसको माहवारी आना बंद हो गया हो (क्योंकि उनकी इद्दत तीन माह है)

[2] लौटाने से शौहर का मक़सद अगर परेशान करना न हो, तो शौहर को इद्दत के अन्दर लौटने का पूरा हक़ है, बीवी के वली को इस में रुकावट डालने का कोई हक़ नहीं है।

[3] यानी दोनों के हक़ एक-दूसरे से मिलते जुलते हैं, जिनको पूरा करने के दोनों धार्मिक नियमों से प्रतिबन्धित है, लेकिन मर्द को औरत पर फ़ज़ीलत प्राकृतिक शक्ति (फ़ितरी ताक़त) में, जिहाद (धर्मयुद्ध) के हुक्म में, जायदाद के बंटवारे में औरत से दुगना मर्द को तलाक़ और लौटाने के हक़ (वग़ैरह) में हासिल हैं।

[4] यानी वह तलाक़ जिस में शौहर को रुजूअ का हक़ है, वह दो बार है। पहली बार तलाक़ के बाद भी और दूसरी बार तलाक़ के बाद भी शौहर अपनी बीवी से सम्बन्ध फिर से क़ायम कर सकता है, तीसरी बार तलाक़ देने के बाद यह सम्बन्ध स्थापित करने का हक़ नहीं।

[5] यानी सम्बन्ध क़ायम करके उसे अच्छी तरह से बसाना।

[6] यानि तीसरी बार तलाक़ देकर।

[7] इस में "खुलअ" का बयान है, जिस के अनुसार बीवी अपने शौहर से रिश्ता तोड़ना चाहे तो

आगे न बढ़ना और जो लोग अल्लाह के हुदूद को तजाउज़ कर जायें, वह ज़ालिम हैं।

फَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتَّىٰ تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ ۗ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يَتَرَاجَعَا إِنْ ظَنَّا أَنْ يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ ۗ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿230﴾

२३०. फिर यदि उसको (तीसरी बार) तलाक़ दे दे, तो अब वह उस के लिए हलाल नहीं जब तक कि वह स्त्री उस के सिवाय दूसरे से विवाह न करे, फिर अगर वह तलाक दे दे, तो उन दोनों को मेलजोल कर लेने में कोई गुनाह नहीं।[1] जबकि वे जान लें कि अल्लाह के हुदूद को क़ायम रख सकेंगे, यह अल्लाह (तआला) के हुदूद हैं, जिन्हें वह जानने वाले के लिए बयान कर रहा है।

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ ۚ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ ضِرَارًا لِتَعْتَدُوا ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ۚ وَلَا تَتَّخِذُوا آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا ۚ وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنَ الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿231﴾

२३१. और जब तुम औरतों को तलाक़ दो और वह अपनी इद्दत (तीन माहवारी की मुद्दत को कहते हैं) ख़त्म करने के क़रीब हों, तो अब उन्हें अच्छी तरह से बसाओ या भलाई के साथ अलग कर दो। और उन्हें नुक़सान पहुँचाने के मक़सद से ज़ुल्म व ज़्यादती करने के लिए न रोको, जो इंसान ऐसा करे उस ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, तुम अल्लाह के हुक्म को मज़ाक न बनाओ।[2] और अल्लाह की नेमत जो तुम पर है याद करो और जो कुछ किताब व हिक्मत उस ने उतारी है, जिस से तुम्हें तालीम दे रहा है उसे भी, और अल्लाह (तआला) से डरते रहा

उस हालत में शौहर को हक है कि वह अपना महर वापस ले ले। पति अगर रिश्ता तोडना न क़ुबूल करे, तो अदालत शौहर को तलाक देने का हुक्म करेगी, अगर वह उसे न माने तो अदालत शादी ख़त्म करेगी। यानि यह खुलअ, तलाक़ के ज़रिये भी हो सकता है और तोड़नें के ज़रिये भी दोनों हालतों में इद्दत एक माहवारी है।

[1] इस तलाक़ से मुराद तीसरी तलाक़ है और इसके बाद शौहर को न तो सम्बन्ध स्थापित करने का हक़ है और न शादी करने का, अब यह औरत किसी दूसरे मर्द से शादी करे और वह अपनी मर्जी से तलाक़ दे या उसकी मौत हो जाये, तो उसके बाद वह अपने पहले शौहर से शादी कर सकती है, लेकिन हमारे देश में जो इस प्रकार का "हलाला" करने और कराने की बुरी रस्म है। नबी ﷺ ने ऐसे "हलाला" करने और कराने वाले पर लानत की है, हलाला की वजह से की गई शादी, शादी नहीं होती यह ज़िना है, इस शादी से औरत अपने शौहर के लिए हलाल नहीं होगी।

[2] कुछ लोग मज़ाक़ में तलाक़ दे देते या शादी कर लेते या आज़ाद कर देते, फिर कहते कि मैंने तो मज़ाक़ किया था। अल्लाह तआला ने इसे अपनी आयत में मज़ाक कहा है जिसका मक़सद इस तरह के कामों से रोकना है, इसलिए नबी ﷺ ने फ़रमाया कि मज़ाक से भी अगर ऊपर बयान किया गया काम करेगा तो वह हक़ीक़त माना जायेगा और मज़ाक़ की तलाक़, शादी और आज़ादी लागू हो जायेगी। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

करो और याद रखो कि अल्लाह (तआला) हर एक चीज़ को जानता है।

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا
تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاضَوْا
بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوفِ ۗ ذَٰلِكَ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ
مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ ذَٰلِكُمْ أَزْكَىٰ
لَكُمْ وَأَطْهَرُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ (232)

२३२. और जब तुम अपनी औरतों को तलाक़ दो और वह अपनी इद्दत पूरी कर लें, तो उन्हें उन के पतियों से शादी करने से न रोको, जबकि वह आपस में भलाई के ऐतबार से राज़ी हों। यह तालीम उन्हें दी जाती है जिन्हें तुम में से अल्लाह (तआला) पर और क़यामत के दिन पर यक़ीन और ईमान हो, इस में तुम्हारी अच्छी सफ़ाई और पाकीज़गी है और अल्लाह (तआला) जानता है तुम नहीं जानते।

وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ
لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ ۚ وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ
رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ
إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَارَّ وَالِدَةٌ بِوَلَدِهَا وَلَا
مَوْلُودٌ لَهُ بِوَلَدِهِ ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذَٰلِكَ ۗ
فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا
جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ۗ وَإِنْ أَرَدْتُمْ أَنْ تَسْتَرْضِعُوا
أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُمْ مَا آتَيْتُمْ
بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا
تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ (233)

२३३. और मायें अपनी औलादों को पूरे दो साल दूध पिलायें, जिनका इरादा दूध पिलाने की पूरी मुद्दत का हो,[1] और जिनकी औलाद हैं उनकी ज़िम्मेदारी है कि उनको रोटी कपड़ा दे, जो भलाई के साथ हो। हर एक इंसान को इतनी ही कठिनाई दी जाती है, जितनी उसकी ताक़त हो, माँ को उसकी औलाद की वजह से या बाप को उसकी औलाद की वजह से उसे कोई नुकसान न पहुँचाया जाये,[2] वारिस पर भी उसी जैसी ज़िम्मेदारी है, फिर अगर दोनों (यानी माँ-बाप) अपनी रज़ामंदी और आपसी इरादा से दूध छुड़ाना चाहें, तो दोनों पर कोई गुनाह नहीं, और अगर तुम अपनी औलादों को दूध पिलाना चाहते हो तो भी तुम पर कोई गुनाह नहीं,

---

[1] इस आयत में दूध पिलाने के मसले का हल बयान किया गया है, इसमें पहली बात कही गयी है वह यह है कि जो पूरी मुद्दत तक दूध पिलाना चाहे, तो यह मुद्दत दो साल की है, इन लफ़्ज़ों से इस से कम मुद्दत तक दूध पिलाने की गुंजाईश निकलती है, दूसरी बात यह कि दूध पिलाने की ज़्यादा से ज़्यादा मुद्दत दो साल है।

[2] माँ को तकलीफ़ पहुँचाने का मतलब यह है कि जैसे माँ अपने बच्चे को अपने पास रखना चाहे लेकिन ममता को ठुकराकर उसका बच्चा उस से ज़बरदस्ती छीन लिया जाये या यह कि बिना ख़र्च की ज़िम्मेदारी लिए उसको दूध पिलाने पर मजबूर किया जाये, बाप को तकलीफ़ पहुँचाने का मतलब यह है कि माँ दूध पिलाने से इंकार कर दे या उसकी ताक़त से ज़्यादा उस से धन की माँग करे।

जबकि तुम उन के दुनियावी दस्तूर के ऐतबार से उन को दे दो, अल्लाह तआला से डरते रहो और जानते रहो कि अल्लाह तुम्हारे अमलों को देख रहा है।

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا ۖ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿234﴾

२३४. तुम में से जो लोग मर जायें और बीवियाँ छोड़ जायें, वह औरते अपने आप को चार महीने और दस (दिन) इद्दत में रखें।[1] फिर जब मुद्दत ख़त्म कर लें तो जो अच्छाई के साथ अपने लिए करे उस में तुम पर कोई गुनाह नहीं, और अल्लाह (तआला) तुम्हारे हर अमल को जानने वाला है।

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُم بِهِ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْنَنتُمْ فِي أَنفُسِكُمْ ۚ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ سَتَذْكُرُونَهُنَّ وَلَٰكِن لَّا تُوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا إِلَّا أَن تَقُولُوا قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۚ وَلَا تَعْزِمُوا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي أَنفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿235﴾

२३५. और तुम पर इस में कोई गुनाह नहीं कि तुम इशारा से या अस्पष्ट रुप से इन औरतों से शादी के बारे में कहो या अपने दिल में इरादा छिपाओ, अल्लाह (तआला) को इल्म है कि तुम ज़रूर उनको याद करोगे, लेकिन तुम उनसे छिपाकर वादा न कर लो। हाँ, यह बात और है कि तुम अच्छी बात बोला करो और जब तक इद्दत की मुद्दत पूरी नहीं हो शादी का बन्धन मज़बूत न करो। जान लो, कि अल्लाह (तआला) को तुम्हारे दिलों की बातों का भी इल्म है, तुम उस से डरते रहा करो और यह भी जान रखो, कि अल्लाह (तआला) बख़्शने वाला और सहनशील है।

لَّا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِن طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ مَا لَمْ تَمَسُّوهُنَّ أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً ۚ وَمَتِّعُوهُنَّ عَلَى الْمُوسِعِ قَدَرُهُ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهُ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ ﴿236﴾

२३६. अगर तुम औरतों को बिना हाथ लगाये और बिना महर मुक़र्रर किये तलाक़ दे दो तो भी तुम पर कोई गुनाह नहीं, हाँ उन्हें कुछ न कुछ फ़ायेदा दो, मालदार अपने हिसाब और ग़रीब अपनी ताक़त के हिसाब से दस्तूर के हिसाब से अच्छा फ़ायेदा दें। भलाई करने वालों के लिए यह ज़रूरी है।[2]

---

[1] मौत की यह इद्दत हर बीवी के लिए है शौहर ने उस से जिमाअ किया हो या न किया हो। गर्भवती (हामला) के लिए यह क़ानून नहीं क्योंकि उसकी इद्दत प्रसव हो जाना है।

[2] यह उस औरत के बारे में हुक्म है कि शादी के वक़्त महर (स्त्री धन) मुक़र्रर नहीं की गयी थी और शौहर हमबिस्तरी करने के पहले तलाक़ भी दे दे, तो उसे कुछ न कुछ फ़ायेदा देकर विदा

وَإِنْ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمَسُّوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوَ الَّذِي بِيَدِهِ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۚ وَأَنْ تَعْفُوا أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۚ وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ (237)

२३७. और अगर तुम औरतों को इस से पहले तलाक़ दे दो कि तुम ने उन्हें हाथ लगाया हो और तुम ने उनका महर भी मुक़र्रर किया हो, तो मुक़र्रर महर का आधा (महर) दे दो, यह बात और है कि वह ख़ुद माफ़ कर दें, या वह इंसान माफ़ कर दे जिसके हाथ में निकाह की गाँठ है। तुम्हारा माफ़ कर देना तक़्वा से बहुत क़रीब है और आपसी फ़ज़ीलत को न भूलो। बेशक अल्लाह (तआला) तुम्हारे अमलों को देख रहा है।

حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ (238)

२३८. नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो ख़ासकर बीच वाली नमाज़ की[1] और अल्लाह (तआला) के लिए नम्रतापूर्वक (बाअदब) खड़े रहा करो।

فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكْبَانًا ۖ فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ (239)

२३९. अगर तुम्हें डर हो तो पैदल ही या सवार ही सहीह, और अगर शान्ति हो जाये तो अल्लाह (तआला) की बड़ाई को बयान करो जिस तरह कि उस ने तुम्हें उस बात की तालीम दी है, जिसे तुम नहीं जानते थे।[2]

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا وَصِيَّةً لِأَزْوَاجِهِمْ مَتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ إِخْرَاجٍ ۚ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَعْرُوفٍ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (240)

२४०. और जो तुममें से मर जायें और बीवियाँ छोड़ जायें, वह वसीयत कर जायें कि उनकी बीवियाँ साल भर फ़ायेदा उठायें[3] उन्हें कोई न निकाले, और अगर वे ख़ुद निकल जायें तो तुम पर इस में कोई गुनाह नहीं जो वह अपने लिए अच्छाई से करें अल्लाह (तआला) ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है।

करो, यह फ़ायेदा (तलाक़ का फ़ायेदा) मर्द की ताक़त के हिसाब से होना चाहिए या मालदार अपने हिसाब और ग़रीब अपनी ताक़त भर दे।

[1] बीच वाली नमाज़ से मुराद अस्र नमाज़ है, जिसको इस हदीस रसूलुल्लाह ﷺ के आधार पर मुक़र्रर कर दिया गया है, जो जंग ख़न्दक़ के दिन अस्र की नमाज़ को صلوٰة وسطى कहा है।

[2] यानी दुश्मन से डर की वजह से जिस तरह भी मुमकिन हो, पैदल चलते हुए, सवारी पर बैठे हुए नमाज़ पढ़ लो, लेकिन जब डर की हालत ख़त्म हो जाये तो उसी तरह नमाज़ पढ़ो, जिस तरह सिखलाया गया है।

[3] यह आयत अगरचे तरतीब में बाद की है लेकिन मन्सूख़ है, इसकी मन्सूख़ी की आयत पहले आ चुकी है जिस में मौत की इद्दत चार महीना दस दिन बताई गई है, इस के सिवाय विरासत की आयत ने बीवी का हिस्सा मुक़र्रर कर दिया है, अब शौहर को बीवी के लिए वसीयत (उत्तरदान) करने की कोई ज़रूरत नहीं रही न घर और न ख़र्च की।

وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿241﴾

२४१. और तलाक़ दी हुई औरतों को अच्छी तरह फ़ायेदा पहुँचाना परहेज़गारों पर ज़रूरी है।

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿242﴾

२४२. इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों (आदेशों) को बयान करता है ताकि तुम समझो।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ۪ فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ۟ ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿243﴾

२४३. क्या तुम ने उन्हें नहीं देखा जो हज़ारों की तादाद में मौत की वजह से अपने घरों से निकल पड़े अल्लाह ने उन से कहा कि मर जाओ फिर उन्हें ज़िन्दा कर दिया।[1] बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल वाला है मगर ज़्यादा लोग शुक्रिया अदा नहीं करते।

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿244﴾

२४४. और अल्लाह की राह में लड़ो और यह जान लो कि अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है।

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ؕ وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ ۪ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿245﴾

२४५. कौन अल्लाह को अच्छा उधार देगा[2] जिसे वह फिर उसे कई गुना ज़्यादा अता करेगा और अल्लाह ही कमी और ज़्यादती करता है और तुम उसी की ओर दोबारा जाओगे।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى ۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ؕ قَالُوْا وَمَا لَنَآ اَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَاَبْنَآئِنَا ؕ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿246﴾

२४६. क्या आप ने इस्राईल के वंश की "मूसा" के बाद की जमाअत को नहीं देखा जब उन्होंने अपने नबी (ईशदूत) से कहा कि हमारा एक राजा बना दीजिये ताकि हम अल्लाह की राह में लड़ें उन्होंने कहा कि हो सकता है कि जिहाद फ़र्ज़ हो जाने के बाद, तुम जिहाद न करो। उन्होंने कहा कि भला हम अल्लाह की राह मे जिहाद क्यों न करेंगे? हम तो अपने घरों से उजाड़े गये हैं और औलादों से दूर कर दिये गये हैं। फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ हुआ, तो सिवाय थोड़े से इंसानों के सब फिर गये और अल्लाह

[1] यह हादसा किसी पिछली उम्मत का है, जिसकी तफ़सील किसी हदीस में नहीं मिलती।

[2] अच्छे उधार से मुराद अल्लाह की राह में और जिहाद में माल सदक़ा करना है यानी जान की तरह माल देने में भी संकोच न करो, माल मे बढ़ोत्तरी और कमी भी अल्लाह के हाथ में है और वह दोनों तरह से तुम्हारा इम्तेहान लेता है। कभी माल में बढ़ोत्तरी करके और कभी माल में कमी करके, फिर अल्लाह की राह मे ख़र्च करने से कमी भी नहीं होती है, अल्लाह तआला इसमें कई-कई गुना बढ़ोत्तरी करता है, कभी ज़ाहिरी तौर से कभी छिपे तौर से और रूहानी तौर पर और आख़िरत में तो ज़रूर उस मे अधिकता आश्चर्यचकित होगी।

ज़ालिमों को अच्छी तरह से जानता है।

وَ قَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ مَلِكًا ۚ قَالُوا أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ۚ قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۖ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿247﴾

२४७. और उन से उन के नबी ने कहा कि अल्लाह (तआला) ने तालूत (यह एक नाम है) को तुम्हारा बादशाह बना दिया है, तो कहने लगे भला उसका हम पर राज्य कैसे हो सकता है, उस से बहुत अधिक राज्य के हक़दार हम हैं, उसको तो धन की ज़्यादती भी नहीं अता की गई है। उस (नबी) ने कहा सुनो! अल्लाह (तआला) ने उस को तुम पर फ़ज़ीलत दी है और उसे इल्म और जिस्मानी ताक़त भी ज़्यादा अता किया है[1] हक़ीक़त बात यह है कि अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपना मुल्क दे, अल्लाह (तआला) कुशादगी वाला और इल्म वाला है।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَن يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿248﴾

२४८. और उन के नबी ने फिर उन से कहा, उस के मुल्क की वाज़ेह निशानी यह है कि तुम्हारे पास वह सन्दूक आ जायेगा[2] जिस में तुम्हारे रब की तरफ़ से दिल के सुकून का सामान है और मूसा की औलाद और हारून की

---

[1] हज़रत तालूत उस वंश से नहीं थे, जिससे इस्राईल की औलादों के बादशाहों का सिलसिला चला आ रहा था, यह ग़रीब और एक आम सेनानी थे, जिस पर उन्होंने आवाज़ उठायी थी, पैग़म्बर ने कहा कि यह मेरा चुनाव नहीं है। अल्लाह ने उन्हें तैनात किया है, फिर भी नेतृत्व (क़ियादत) के लिए माल से ज़्यादा अक़्ल, इल्म और जिस्मानी ताक़त की ज़रूरत है और तालूत इस में तुम सभी से अच्छे हैं, इसलिए अल्लाह ने उन्हें इस पद के लिए चुन लिया है।

[2] सन्दूक यानी ताबूत, जो तोब से है, जिसके मतलब पलटने के हैं, क्योंकि इस्राईल की औलाद प्रसाद (तबर्रुक) के लिए इसकी ओर पलटते थे। (फ़तहुल क़दीर) इस ताबूत में हज़रत मूसा व हारून عليه السلام की पाक चीज़ें थीं, यह ताबूत भी उन के दुश्मन उन से छीन कर ले गये थे। यह ताबूत अल्लाह तआला ने निशानी के शक्ल में फ़रिश्तों के ज़रिये हज़रत तालूत के घर के दरवाज़े पर रखवा दिया, इसे देखकर इस्राईल की औलादें ख़ुश भी हुई और इसे अल्लाह तआला की तरफ़ से निशानी मानकर तालूत को अपना राजा मान लिया और अल्लाह तआला ने भी इसे उन के लिए एक चमत्कार (आयत) व फ़त्ह और सब्र की वजह बना दिया سَكِينَة का मतलब ही अल्लाह तआला की तरफ़ से ख़ास मदद का उतरना जिसे वह अपने ख़ास बन्दों पर उतारता है जिसकी वजह से भयानक जंग में जब बड़े-बड़े बहादुरों के दिल काँप जाते हैं तो ईमानवालों के दिल दुश्मन के डर और धाक से ख़ाली और फ़त्ह व कामयाबी की उम्मीद से भरे होते हैं। इस से मालूम हुआ कि नबियों की अवशेष (बाक़िआत) अल्लाह के हुक्म से ज़रूर फ़ज़ीलत और उपयोगिता (अहमियत) रखती हैं, लेकिन यह ज़रूरी है कि वह सही तरीक़े से उनकी (तबर्रुकात) हो।

औलाद का बाक़ी छोड़ा हुआ सामान है, फ़रिश्ते उसे उठाकर लायेंगे, बेशक यह तो तुम्हारे लिए वाज़ेह (स्पष्ट) निशानी है, अगर तुम ईमानदार हो।

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُم بِنَهَرٍ فَمَن شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَن لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَاقُو اللَّهِ كَم مِّن فِئَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةً بِإِذْنِ اللَّهِ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ (249)

२४९. फिर जब तालूत सेना लेकर निकले तो कहा सुनो एक नदी[1] के ज़रिये अल्लाह को तुम्हारा इम्तिहान लेना है तो जो उस से पानी पियेगा वह मेरा नहीं और जो उस में से न चखे वह मेरा है, यह और बात है कि अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले तो कुछ के सिवाय बाक़ी सभों ने पानी पी लिया, (हज़रत) तालूत जब नदी से पार हो गये और जो उन के साथ ईमानदार थे तो उन्होंने कहा कि आज तो हम में ताक़त नहीं कि जालूत और उसकी फ़ौजों से लड़ें,[2] लेकिन जिन्हे अल्लाह से मिलने पर यक़ीन था उन्होंने कहा कि बहुत सी छोटी जमाअत अल्लाह के हुक्म से भारी जमाअतों पर फ़त्ह हासिल कर लेती हैं और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

जिस तरह इस तावूत में हक़ीक़त में हज़रत मूसा और हारून की पाक चीज़ें थी, लेकिन जिस तरह आजकल कई जगहों पर मुक़द्दस बाक़ियात कहकर कई चीज़ें हैं, जिनका कोई ऐतिहासिक (तारीख़ी) सुबूत पूरी तरह से साबित नहीं होता, इसी तरह ख़ुद बनायी गयी चीज़ों से भी कुछ हासिल नहीं हो सकता, जिस तरह से कुछ लोग नबी ﷺ के जूते के समान बनाकर अपने पास रखने को या घरों में लटकाने को या ख़ास तरीक़े से बनाकर तकलीफ़ दूर करने और दिली मुराद पूरी करने वाला समझते हैं, इसी तरह क़ब्रों पर वलियों के नामों के चढ़ावे को पाक चीज़ और वहाँ के सामान्य भोज को पाक चीज़ समझते हैं, जबकि यह अल्लाह के सिवाय दूसरों पर चढ़ावा हैं, जो शिर्क की परिधि में आता है, इसको खाना ख़ासकर हराम है, क़ब्रों को ग़ुस्ल कराया जाता है और उसका पानी पाक समझा जाता है, हालांकि क़ब्रों को ग़ुस्ल कराना ख़ानये कअबा के ग़ुस्ल की नक़ल है, जो किसी तरह से जायज़ नहीं है, यह गंदा पानी पाक कैसे हो सकता है, यह सभी बातें नाजायेज़ हैं, इनका धार्मिक नियमों में कोई असल नहीं है।

[1] यह नदी जार्डन और फ़िलस्तीन के बीच है। (इब्ने कसीर)

[2] इन ईमानवालों ने भी जब शुरू में दुश्मन की बहुत बड़ी तादाद देखी, तो अपनी कम तादाद को देखते हुए इस बात को वाज़ेह किया, जिस पर उन के आलिमों और उन से ज़्यादा ईमान रखने वालों ने कहा कि कामयाबी तादाद में ज़्यादती और हथियार के आधार पर नहीं मिलती, बल्कि अल्लाह तआला की इच्छा पर आधारित (मबनी) है और अल्लाह तआला का समर्थन (ताईद) हासिल करने के लिए सब्र का होना ज़रूरी है।

وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿250﴾

२५०. और जब उनका जालूत और उसकी फ़ौजों से मुक़ाबला हुआ, तो उन्होंने दुआ की, हे हमारे पालनहार! हमें सब्र अता कर और साबित क़दम बना दे और काफ़िर क़ौम पर हमारी मदद कर।[1]

فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ۭ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ ۙ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿251﴾

२५१. अत: उन्हें अल्लाह के हुक्म से पराजित कर दिया और दाऊद ने जालूत का क़त्ल कर दिया[2] और अल्लाह ने उसे मुल्क और हिक्मत[3] और जितना चाहा इल्म भी अता किया और अगर अल्लाह कुछ लोगों को दूसरे गरोह से हटाता न रहता तो धरती में फ़साद फैल जाता, लेकिन अल्लाह दुनिया के लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल करने वाला है।[4]

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۭ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿252﴾

२५२. यह अल्लाह की आयतें (सूत्र) हैं जिन्हें हम आप पर सच्चाई के साथ पढ़ते हैं और निश्चय ही आप रसूलों (ईशदूतों) में से हैं।[5]

---

[1] जालूत उस दुश्मन क़ौम का सेना नायक था, जिस से तालूत और साथियों का मुक़ाबला था, यह अमालक़ा की क़ौम थी, जो अपने वक़्त में योद्धा और बहादुर लोग समझे जाते थे, उनकी इसी प्रसिद्धता (शुहरत) के वजह से ठीक जंग के समय में ईमानवालों ने अल्लाह के दरबार में सब्र और मज़बूती के लिए और कुफ़्र के सामने ईमानवालों को फ़त्ह और कामयाबी की दुआ की, यानी भौतिक कारणों (माद्दी अस्बाब) के साथ-साथ ईमानवालों के लिए ज़रूरी है कि वह अल्लाह की ओर से कामयाबी और फ़त्ह के लिए ख़ास तरीक़े से दुआ करें, जिस तरह बद्र की जंग के वक़्त नबी ﷺ ने अल्लाह के दरबार में बड़ी आग्रहता और विनम्रता (इन्कसारी-इसरार) से फ़त्ह और कामयाबी के लिए दुआ की थी, जिसे अल्लाह ने क़बूल किया जिसकी वजह से मुसलमानों की छोटी सी तादाद ने काफ़िरों की बहुत बड़ी तादाद पर फ़त्ह हासिल किया।

[2] हज़रत दाऊद जो अभी न पैग़म्बर थे और न बादशाह, इस तालूत की सेना में एक फ़ौजी थे, उन के हाथों जालूत मारा गया और इस थोड़े से ईमानवालों को बड़ी लड़ाकू क़ौम पर जीत दिलवाई।

[3] इस के बाद अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद को बादशाहत और नबूवत दोनों अता किया।

[4] इस में अल्लाह के एक क़ानून की चर्चा है कि वह इंसानों ही के एक उम्मत के ज़रिये दूसरी उम्मत के ज़ुल्म और ग़ल्बा को ख़त्म करता रहता है अगर वह ऐसा न करता और किसी एक ही उम्मत को सदा ताक़त और ग़ल्बा का सौभाग्य दिये रहता तो यह धरती ज़ुल्म और फ़साद से भर जाती।

[5] यह पिछले वाक़िआत जिनका इल्म आप पर नाज़िल पाक क़ुरआन के ज़रिये दुनिया को हो रहा है, हे मुहम्मद (ﷺ) बेशक आप की नबूअत और सच्चाई का सुबूत हैं, इनका बयान न किसी किताब में किया है न किसी से सुना है, जिस से वाज़ेह है कि यह ग़ैब की ख़बरें हैं जो वह्यी (ईशवाणी) के ज़रिये अल्लाह आप पर उतार रहा है।

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَنْ كَلَّمَ اللَّهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجَاتٍ ۚ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ ۗ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَلَٰكِنِ اخْتَلَفُوا فَمِنْهُمْ مَنْ آمَنَ وَمِنْهُمْ مَنْ كَفَرَ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلُوا وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ (253)

२५३. यह रसूल हैं, जिन में से हम ने कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत दी है उन में से कुछ हैं जिन से अल्लाह (तआला) ने बात की है और कुछ का मर्तबा ऊंचा किया है और हम ने ईसा पुत्र मरियम को मोजिज़ा अता किया और पाक रूह से उनका समर्थन कराया,[1] अगर अल्लाह चाहता तो उन के बाद वाले अपने पास निशानियाँ आ जाने के बाद आपस में कभी भी लड़ाई-भिड़ाई न करते, लेकिन उन लोगों ने इख़्तिलाफ़ किया, उन में से कुछ ने ईमान क़ुबूल किया और कुछ काफ़िर हुए, और अगर अल्लाह (तआला) चाहता तो यह आपस में न लड़ते लेकिन अल्लाह (तआला) जो चाहता है, करता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خُلَّةٌ وَلَا شَفَاعَةٌ ۗ وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ (254)

२५४. हे ईमानवालो ! जो हम ने तुम्हें दे रखा है, उस में से ख़र्च करते रहो, इस से पहले कि वह दिन आये जिस दिन न तिजारत है न दोस्ती और न सिफ़ारिश, और काफ़िर ही ज़ालिम हैं।

اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ ۖ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ (255)

२५५. अल्लाह (तआला) ही सच्चा माबूद है, जिस के सिवाये कोई माबूद नहीं, जो ज़िन्दा है, और सबका थामने वाला है, जिसे न ऊंघ आये न नींद उस की मिल्कियत में ज़मीन व आसमान की सभी चीज़ें हैं, कौन है जो उस के हुक्म के बिना उस के सामने सिफ़ारिश कर सके, वह जानता है जो उन के सामने हैं, जो उन के पीछे हैं और वह उस के इल्म में से किसी चीज़ का घेरा नही कर सकते, लेकिन वह जितना चाहे।[2] उसकी कुर्सी की वुसअत ने ज़मीन व आसमान को घेर रखा है, वह अल्लाह (तआला) उनकी

---

[1] मतलब वह मोजिज़ा हैं, जो हज़रत ईसा को अता किये गये थे, जैसे मरे हुए को जिलाना आदि जिसकी तफ़सील सूर: आले इमरान में आयेगी, पाक रूह से मुराद जिब्रील है, जैसाकि पहले भी गुज़र चुका है।

[2] यह आयतुल कुर्सी है। सहीह हदीसों में इसका बहुत महत्व (फ़ज़ीलत) बयान किया गया है, जैसे यह क़ुरआन की सब से अज़ीम आयत है, इसको रात को पढ़ने से शैतान से महफ़ूज़ रहता है, इस को हर नमाज़ के बाद पढ़ना चाहिए। (इब्ने कसीर)

हिफ़ाज़त से न थकता है और न ऊबता है, वह तो बहुत महान और बहुत बड़ा है।

لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ ۙ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿256﴾

२५६. दीन के बारे में कोई दबाव नहीं, सच-झूठ से अलग हो गया, इसलिये जो इंसान तागूत (अल्लाह तआला के सिवाय दूसरे देवों) को नकार कर अल्लाह (तआला) पर ईमान लाये, उस ने मज़बूत कड़े को थाम लिया, जो कभी भी न टूटेगा और अल्लाह (तआला) सुनने वाला, जानने वाला है।

اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ڛ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰۗـــُٔـھُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿257﴾

२५७. ईमानवालों का संरक्षक (वली) अल्लाह तआला ख़ुद है, वह उन्हें अंधेरे से रोशनी की ओर निकाल ले जाता है, और काफ़िरों के दोस्त शैतान हैं, वह उन्हें रौशनी से अंधेरे की तरफ़ ले जाते हैं, यह लोग जहन्नमी हैं, जो हमेशा उसी में पड़े रहेंगे।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْ حَاۗجَّ اِبْرٰھٖمَ فِيْ رَبِّهٖٓ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰھٖمُ رَبِّيَ الَّذِيْ يُـحْيٖ وَيُمِيْتُ ۙ قَالَ اَنَا اُحْيٖ وَاُمِيْتُ ۭ قَالَ اِبْرٰھٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِيْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِيْ كَفَرَ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿258﴾

२५८. क्या तूने उसे नहीं देखा, जिस ने मुल्क पाकर इब्राहीम (عليه السلام) से उस के पालनहार के बारे में झगड़ा किया जब इब्राहीम ने कहा कि मेरा रब तो वह है जो जिन्दा करता और मारता है, वह कहने लगा, मैं भी जिलाता और मारता हूँ, इब्राहीम (عليه السلام) ने कहा अल्लाह (तआला) सूरज को पूरब की ओर से ले आता है, तू उसे पश्चिम से ले आ, अब वह काफ़िर भौंचक्का रह गया और अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता।

कुर्सी से कुछ ने पैर रखने की जगह, कुछ ने ताक़त, कुछ ने मुल्क, और कुछ ने अर्श मतलब लिया है, लेकिन अल्लाह तआला की सिफ़ात और फ़ज़ीलतों के बारे में मोहद्दिसीन (हदीस के आलिम) और बुज़ुर्गों की यही राय है कि अल्लाह तआला की जो सिफ़त, जिस तरह से क़ुरआन और हदीस में बयान है, उनको बिना किसी तर्क-वितर्क के उन पर ईमान रखा जाये, इसलिए यही ईमान रखना चाहिए कि हक़ीक़त में कुर्सी है जो अर्श से अलग है, यह किस तरह की है, इस पर वह किस तरह बैठता है? इसका बयान हम नहीं कर सकते क्योंकि इसकी कैफ़ियत और हक़ीक़त के बारे में हमें इल्म नहीं है।

२५९. या उस इंसान के समान जिसका गुज़र उस वस्ती पर हुआ, जो छत के बल औंधी पड़ी हुई थी, कहने लगा उसकी मौत के बाद अल्लाह (तआला) उसे किस तरह जिन्दा करेगा तो अल्लाह (तआला) ने उसे सौ साल के लिये मार दिया, फिर उसे (जिन्दा) उठाया, पूछा! "कितनी मुद्दत तुझ पर गुजरी?" जवाब दिया कि "एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा।"[1] कहा कि "तू बल्कि सौ साल तक रहा, फिर अब तू अपने खाने-पीने को देख कि बिल्कुल ख़राब नहीं हुआ और अपने गधे को भी देख, हम तुझे लोगों के लिये निशानी बनाते हैं, तू देख कि हम हड्डियों को किस तरह खड़ी करते हैं, फिर उन पर गोश्त चढ़ाते हैं।" जब यह सब वाज़ेह हो चुका, तो कहने लगा, "मैं जानता हूँ कि अल्लाह (तआला) सब कुछ जानने वाला है।"[2]

أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَىٰ قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّىٰ يُحْيِي هَٰذِهِ اللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۖ فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ ۖ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ۖ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۖ قَالَ بَل لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانظُرْ إِلَىٰ طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۖ وَانظُرْ إِلَىٰ حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ آيَةً لِّلنَّاسِ ۖ وَانظُرْ إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (259)

२६०. और जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने कहा, "हे मेरे रब! मुझे दिखा कि तू मुर्दों को किस तरह जिन्दा करेगा?" अल्लाह (तआला) ने कहा "क्या तुम्हें ईमान नहीं?" जवाब दिया, "ईमान तो है, लेकिन मेरे दिल को इत्मेनान हो जायेगा।" कहा, "चार परिन्दे लो, उन के टुकड़े कर डालो, फिर हर पहाड़ पर उनका एक-एक हिस्सा रख दो, फिर उन्हें पुकारो तुम्हारे पास दौड़ते हुए आ जायेंगे" और जान रखो कि अल्लाह (तआला) ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَىٰ ۖ قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِن ۖ قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِن لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِي ۖ قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ۚ وَاعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (260)

[1] कहा जाता है कि जब वह इंसान मरा था तो थोड़ा दिन चढ़ा था, और जब वह जिन्दा हुआ तो भी शाम नहीं हुई थी तो उस ने हिसाब लगाया था कि अगर मैं कल आया था, तो एक दिन बीता या दिन का कुछ हिस्सा गुज़रा है जबकि हक़ीक़त यह है कि इस के इस वाक़िआ की मुद्दत सौ साल की थी।

[2] यानी यक़ीन तो मुझे पहले भी था, लेकिन अब आँखों से देखकर यक़ीन और इल्म में और मज़बूती आ गयी है।

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿261﴾

२६१. जो लोग अल्लाह (तआला) की राह में अपना माल ख़र्च करते हैं, उनकी मिसाल उस दाने जैसी है, जिस में से सात बालियाँ निकलें और हर वाली में सौ दाने हों, और अल्लाह (तआला) जिसे चाहे कई गुना दे और अल्लाह (तआला) बड़ा कुशादा और इल्म वाला है।

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿262﴾

२६२. जो लोग अपना माल अल्लाह (तआला) की राह में ख़र्च करते हैं, फिर उसके बाद एहसान नहीं जताते और न तकलीफ़ देते हों[1] उनका फल उन के रब के पास है, उन पर न तो कोई डर है न वह उदास होंगे।

قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ؕ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ ﴿263﴾

२६३. भली बात कहना और माफ़ करना उस सदक़ा से बेहतर है, जिस के बाद दुख दिया जाये और अल्लाह बेनियाज़ और सहनशील है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿264﴾

२६४. हे ईमानवालो! अपने सदक़ा को एहसान जताकर और दुख पहुँचाकर बेकार न करो, जिस तरह से वह इंसान जो अपना माल दिखावे के लिये ख़र्च करे और न अल्लाह (तआला) पर ईमान रखे और न क़यामत पर, उसकी मिसाल उस चिकने पत्थर की है, जिस पर थोड़ी सी मिट्टी हो, फिर उस पर ज़ोरदार बारिश हो और वह उसे बिल्कुल साफ़ और सख़्त छोड़ दे,[2] इन रियाकारों

---

[1] अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने की फ़ज़ीलत का जो बयान गुज़र चुका है, केवल उस इंसान को हासिल हो सकेगा, जो माल ख़र्च करने के बाद एहसान न जतायें, और मुँह में ऐसे लफ़्ज़ न कहें जिससे किसी ग़रीब के सम्मान को ठेस पहुँचे और उसको तकलीफ़ का एहसास हो, यह इतना बड़ा गुनाह है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया :

"क़यामत के दिन अल्लाह तआला तीन तरह के इंसानों से बात नहीं करेगा उन में एक एहसान जताने वाला है।" (मुस्लिम, किताबुल ईमान)

[2] इस आयत में यह कहा गया है कि, सदक़ा व सवाब करके, भलाई करके जताना और दुख देने वाली बातें करना ईमानवालों को ज़ेब नहीं देते, बल्कि उन लोगों की आदत है जो मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) हैं वह देखावे के लिये ख़र्च करते हैं। दूसरे ऐसे ख़र्च करने की मिसाल ऐसी है कि जैसे पत्थर की चट्टान पर मिट्टी जम जाये और कोई उस में बीज बो दे और उस के बाद बारिश का एक झोंका आये, तो सब कुछ बह जाये और वह पत्थर मिट्टी से बिल्कुल साफ़ हो जाये, या जिस तरह वह बारिश उस पत्थर के लिये फ़ायेदामंद नहीं हुई उसी तरह दिखावे का दान भी उसको कोई फ़ायेदा नहीं पहुँचा सकेगा।

को अपनी कमाई से कोई चीज हाथ नहीं लगती और अल्लाह (तआला) काफ़िरों के समुदाय को हिदायत नहीं देता।

२६५. उन लोगों की मिसाल जो अपना माल अल्लाह (तआला) की मर्जी हासिल करने के लिए खुशी दिल से और यक़ीन के साथ ख़र्च करते हैं, उस बाग़ जैसी है जो ऊँची धरती पर हो और जोरदार बारिश से अपना फल दुगना लादे और अगर उस पर बारिश न भी हो तो फुहार ही काफ़ी है, और अल्लाह (तआला) तुम्हारे अमलों को देख रहा है।

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿265﴾

२६६. क्या तुम में से कोई भी यह चाहता है कि उस के खजूरों और अंगूरों के वाग़ हों, जिस में नहरें वह रही हों और हर तरह के फल मौजूद हों, उस इंसान का बुढ़ापा आ गया हो, उस के नन्हें-नन्हें वच्चे भी हों और अचानक वाग़ को वगुला लग जाये जिस में आग भी हो जिस से वाग़ जल जाये। इसी तरह अल्लाह (तआला) तुम्हारे लिए निशानियों को वयान करता है, ताकि तुम फ़िक्र कर सको।

اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ اَعْنَابٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ ۖ فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿266﴾

२६७. हे ईमानवालो! अपनी हलाल कमाई में से और धरती में से तुम्हारे लिये हमारी निकाली हुई चीजों में से ख़र्च करो। उन में से बुरी चीजों को ख़र्च करने का इरादा न करना जिसे तुम ख़ुद लेने वाले नहीं हो, हाँ! अगर आँखें वन्द कर लो तो,[1] और जान लो अल्लाह (तआला) वेनियाज और हम्द वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّآ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۠ وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّآ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ۭ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿267﴾

[1] या जिस तरह से तुम ख़ुद बेकार चीजे लेना अच्छा नहीं समझते, उसी तरह अल्लाह की राह में अच्छी चीज़ ही ख़र्च करो।

२६८. शैतान तुम्हें गरीबी से डराता है, और बेहयाई का हुक्म देता है[1] और अल्लाह (तआला) तुम को अपनी रहमत और फ़ज़्ल का वायेदा करता है । अल्लाह (तआला) बहुत मेहरबान और इल्म वाला है ।

اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿268﴾

२६९. वह जिसे चाहे इल्म, अक़्ल देता है और जिसे अक़्लमंदी दे दी गई उसे बहुत सारी भलाई दी गई और नसीहत केवल अक़्लमंद ही हासिल करते हैं ।

يُّؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿269﴾

२७०. तुम चाहे जितना ख़र्च करो (या सदक़ा करो) और जो कुछ नज़र मानो[2] उसे अल्लाह (तआला) जानता है और ज़ालिमों का कोई सहायक नहीं ।

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿270﴾

२७१. अगर तुम दान-पुण्य (सदक़ात) को ज़ाहिर करो, तो वह भी अच्छा है, और अगर तुम उसे छिपा कर गरीबों को दे दो, तो यह तुम्हारे लिये सबसे अच्छा है । अल्लाह (तआला) तुम्हारे गुनाहों को ख़त्म कर देगा और अल्लाह (तआला) तुम्हारे सभी अमलों से बाख़बर है ।

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿271﴾

---

[1] यानी नेक काम में माल ख़र्च करना हो, तो शैतान यह डर पैदा कराता है कि इस से तुम गरीब और भिखारी हो जाओगे, लेकिन बुरे कर्मों में बेकार करने में ऐसे इरादों को क़रीब नहीं आने देता बल्कि उन बुरे कामों को इस तरह बना-सँवार के पेश करता है कि उन के लिए छिपी हुई इच्छायें इस तरह जाग जाती हैं कि उन पर इंसान बड़े से बड़ा माल ख़र्च कर डालता है ।

[2] मनौती (नज़र) का मतलब है कि मेरा फ़्लाँ काम हो गया या फ़्लाँ दु:ख का ख़ात्मा हो जायेगा, तो मैं अल्लाह की राह में इतना सदक़ा करूँगा, इस नज़र को पूरा करना ज़रूरी है, अगर किसी नाफ़रमानी और नाजायेज़ काम की नज़र मानी है तो उसे पूरा करना ज़रूरी नहीं है । नज़र भी नमाज़ और रोज़े की तरह इबादत है, इसलिये अल्लाह के सिवाय किसी और की नज़र मानना उसकी इबादत है जो शिर्क है, जैसाकि आजकल मशहूर मज़ारों पर मनौती और चढ़ावे का यह काम आम है, अल्लाह तआला इस शिर्क से बचाये ।

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿272﴾

२७२. उन्हें हिदायत पर ला खड़ा करना तुम्हारे अधिकार में नहीं, बल्कि हिदायत (मार्गदर्शन) अल्लाह (तआला) देता है जिसे चाहता है, और तुम जो अच्छी चीज़ अल्लाह की राह में दोगे उसका फ़ायेदा ख़ुद पाओगे, तुम्हें सिर्फ़ अल्लाह (तआला) की ख़ुशी हासिल (प्राप्त) करने के लिये ख़र्च करना चाहिये, तुम जो कुछ माल ख़र्च करोगे उसका पूरा-पूरा बदला तुम्हें दिया जायेगा और तुम्हारा हक़ (अधिकार) न मारा जायेगा।

لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِى الْاَرْضِ ؗ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿273﴾

२७३. दान के लायक़ सिर्फ़ वह ग़रीब हैं जो अल्लाह की राह में रोक दिये गये, जो देश में चल-फिर नहीं सकते,[1] बेवक़ूफ़ लोग उनके सवाल न करने की वजह से उन्हें मालदार समझते हैं, आप उन के मुँह को देखकर अलामत से उन्हें पहचान लेंगे, वह लोगों से चिमटकर भीख नहीं माँगते, तुम जो कुछ माल ख़र्च करो अल्लाह (तआला) उसका जानने वाला है।

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿274﴾

२७४. जो लोग अपने माल को रात-दिन छुपा कर या खुल्लम-खुल्ला ख़र्च करते हैं, उन के लिये उन के रब के पास बदला है, न उन्हें कोई डर है और न कोई ग़म।

---

[1] इस से मुराद वह मुहाजिर हैं जो मक्का से मदीना आये और अल्लाह की राह में आने की वजह से उनकी हर चीज़ छूट गयी, इस परिधि (ज़ुमरा) में दीन की तालीम हासिल करने वाले विद्यार्थी और आलिम (धार्मिक शिक्षक) भी आते हैं।

اَلَّذِيْنَ يَأْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿275﴾

२७५. ब्याज खाने वाले लोग न खड़े होंगे, लेकिन उसी तरह, जिस तरह वह खड़ा होता है, जिसे शैतान लग कर पागल बना देता है।[1] यह इसलिये कि यह कहा करते थे कि तिजारत भी तो ब्याज ही की तरह है,[2] जबकि अल्लाह (तआला) ने तिजारत को हलाल किया और ब्याज को हराम। और जो इंसान अपने पास आयी हुई अल्लाह (तआला) की नसीहत सुन कर रूक गया उस के लिये वह है जो गुजर गया,[3] और उसका मामला अल्लाह (तआला) के पास है और जो फिर (हराम की ओर) पलटा वह जहन्नमी है, वे हमेशा उसी में रहेंगे।

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿276﴾

२७६. अल्लाह (तआला) ब्याज को मिटाता है और दान को बढ़ाता है,[4] और अल्लाह (तआला) किसी नाशुक्रा और काफ़िर को मित्र नहीं बनाता।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿277﴾

२७७. जो लोग ईमान के साथ (सुन्नत के अनुसार) काम करते, नमाज़ों को क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं, उनका फल उन के रब के पास है, उन पर न तो कोई डर है और न कोई दुख।

---

[1] ब्याज लेने वाले की यह हालत क़ब्र से उठते वक़्त या क़यामत के मैदान में होगी।

[2] हालांकि तिजारत में तो सामान और पैसे का बराबर लेन देन होता रहता है, दूसरे इस में फ़ायेदा व नुक़्सान की उम्मीद रहती है, जबकि ब्याज में यह दोनों बातें नही होती हैं, इसलिए अल्लाह ने बेचने को हलाल और ब्याज को हराम कहा है, फिर यह दोनों एक कैसे हो सकते हैं?

[3] ईमान लाने और माफ़ी मांग लेने के बाद पिछला ब्याज लेने पर पकड़ नहीं होगी।

[4] यह ब्याज के वास्तविक (हक़ीक़ी) और आत्मिक नुक़्सान के बाद सदक़ा के फ़ायेदा की तफ़्सील है, ब्याज से देखने में तो बढ़ोत्तरी होती है, लेकिन उसके असल मायने के अनुसार परिणामस्वरूप (अंजाम के ऐतबार से) ब्याज का माल उसकी बरबादी और ख़राबी की वजह बनती है, इस बात का समर्थन (ताईद) अब पश्चिमी देशों के अर्थशास्त्री भी करने लगे हैं।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَذَرُوا۟ مَا بَقِىَ مِنَ ٱلرِّبَوٰٓا۟ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿278﴾

२७८. हे ईमानवालो! अल्लाह (तआला) से डरो और जो ब्याज बाक़ी रह गया है, वह छोड़ दो अगर तुम सचमुच ईमानवाले हो।

فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا۟ فَأْذَنُوا۟ بِحَرْبٍ مِّنَ ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ ۖ وَإِن تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوسُ أَمْوَٰلِكُمْ لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ ﴿279﴾

२७९. अगर ऐसा नहीं करते तो अल्लाह (तआला) और उस के रसूल से लड़ने के लिये तैयार हो जाओ।[1] और अगर माफ़ी माँग लो तो तुम्हारा असल माल तुम्हारा ही है न तुम ज़ुल्म करो और न तुम पर ज़ुल्म किया जाये।[2]

وَإِن كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ ۚ وَأَن تَصَدَّقُوا۟ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿280﴾

२८०. और अगर कोई ग़रीब हो तो उसे सहूलत तक वक़्त देना चाहिये, और सदक़ा कर दो तो तुम्हारे लिये ज़्यादा अच्छा है, अगर तुम में इल्म हो।

وَٱتَّقُوا۟ يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى ٱللَّهِ ۖ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿281﴾

२८१. और उस दिन से डरो, जिस में तुम सब (अल्लाह तआला) की तरफ़ लौटाये जाओगे और हर इंसान को उस के अमल के ऐतबार से पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जायेगा।[3]

---

[1] यह ऐसी कड़ी चेतावनी (तंबीह) है जो किसी दूसरे गुनाह के करने पर नहीं आई है, इसलिये हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने कहा कि जो इंसान इस्लामी मुल्क में ब्याज छोड़ने के लिये तैयार न हो तो वक़्त के राज्य प्रमुख (हाकिम) की ज़िम्मेदारी है कि उससे तौबा कराये (क्योंकि वह अल्लाह और रसूल से जंग का एलान कर रहा है) और न रूकने की हालत में उसकी गर्दन मार दे। (इब्ने कसीर)

[2] तुम अगर असल माल से ज़्यादा माल वसूल करोगे, तो यह तुम्हारा ज़ुल्म होगा और अगर तुम्हें असल माल न दिया जाये तो यह तुम पर ज़ुल्म होगा।

[3] कुछ क़ौल के ऐतबार से यह नबी करीम ﷺ पर नाज़िल आख़िरी आयत (श्लोक) है जिस के बाद ही आप का इंतिक़ाल हो गया।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا تَدَايَنتُم بِدَيْنٍ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَٱكْتُبُوهُ ۚ وَلْيَكْتُب بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِٱلْعَدْلِ ۚ وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَن يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ ٱللَّهُ ۚ فَلْيَكْتُبْ وَلْيُمْلِلِ ٱلَّذِى عَلَيْهِ ٱلْحَقُّ وَلْيَتَّقِ ٱللَّهَ رَبَّهُۥ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْـًٔا ۚ فَإِن كَانَ ٱلَّذِى عَلَيْهِ ٱلْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْتَطِيعُ أَن يُمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهُۥ بِٱلْعَدْلِ ۚ وَٱسْتَشْهِدُوا۟ شَهِيدَيْنِ مِن رِّجَالِكُمْ ۖ فَإِن لَّمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَٱمْرَأَتَانِ مِمَّن تَرْضَوْنَ مِنَ ٱلشُّهَدَآءِ أَن تَضِلَّ إِحْدَىٰهُمَا فَتُذَكِّرَ إِحْدَىٰهُمَا ٱلْأُخْرَىٰ ۚ وَلَا يَأْبَ ٱلشُّهَدَآءُ إِذَا مَا دُعُوا۟ ۚ وَلَا تَسْـَٔمُوٓا۟ أَن تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَىٰٓ أَجَلِهِۦ ۚ ذَٰلِكُمْ أَقْسَطُ عِندَ ٱللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَٰدَةِ وَأَدْنَىٰٓ أَلَّا تَرْتَابُوٓا۟ ۖ إِلَّآ أَن تَكُونَ تِجَٰرَةً حَاضِرَةً تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ

२८२. हे ईमानवालो! जब तुम आपस में मुक़र्रर मुद्दत के लिए एक-दूसरे से उधार का लेन-देन करो तो लिख लिया करो और लेखक को चाहिये कि आपस का मामला इंसाफ़ के साथ लिखे, लेखक (लिखने वाले) को चाहिये कि लिखने से इंकार न करे, जैसे अल्लाह (तआला) ने उसे सिखाया है उसी तरह उसे भी लिख देना चाहिये और जिस के ज़िम्मे हक़ हो वह लिखवाये और अपने अल्लाह (तआला) से डरे जो उसका रब है, और हुक़ूक़ में से कुछ घटाये नहीं, हाँ जिस इंसान पर हुक़ूक़ हों और वह जाहिल हो या कमज़ोर हो या लिखवाने की ताक़त न रखता हो तो उसका वली इंसाफ़ के साथ लिखवा दे और अपने में से दो मर्दों को गवाह रख लो, अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें जिन्हें तुम गवाह के तौर पर पसन्द कर लो, ताकि एक की भूल-चूक को दूसरी याद दिला दे।[1] और गवाहों को चाहिये कि वे जब बुलाये जायें तो इंकार न करें, और क़र्ज़ को जिसकी मुद्दत मुक़र्रर है चाहे छोटा हो या बड़ा हो लिखने में सुस्ती न करो, अल्लाह तआला के क़रीब यह बात बहुत इंसाफ़ वाली है, और गवाही को ठीक रखने वाली और शक से भी ज़्यादा बचाने वाली है।[2] और

---

[1] यह एक मर्द के सामने दो औरतों को मुक़र्रर करने की फ़ज़ीलत और अक़्लमंदी है, या औरत अक़्ल और याद रखने में मर्द से कमज़ोर है। (जैसाकि सहीह मुस्लिम की एक हदीस में औरत को कम अक़्ल कहा गया है) यह औरत के हुक़ूक़ का हनन और बेइज़्ज़ती का सुबूत नहीं है, (जैसाकि कुछ लोग कहते हैं) बल्कि उनकी फ़ितरी क़मज़ोरी का बयान है जो अल्लाह तआला के इल्म और मर्ज़ी पर मबनी है। घमंड की वजह से कोई इसको क़ुबूल न करे तो और बात है, लेकिन हक़ीक़त और घटनाओं के आधार पर इसका खण्डन नहीं किया जा सकता।

[2] लिखने का फ़ायेदा है कि इससे इंसाफ़ की माँग पूरी होगी, गवाही भी सही होगी (कि गवाह के मौजूद न होने या मौत के बाद उनका लिखा हुआ लेख गवाह बन जायेगा) और किसी तरह के शक से दोनों पक्ष महफ़ूज़ रहेंगे, क्योंकि शक होने की हालत में लेख देख लेने पर शक दूर कर लिया जायेगा।

أَلَّا تَكْتُبُوهَا ۗ وَأَشْهِدُوٓا۟ إِذَا تَبَايَعْتُمْ ۚ وَلَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ ۚ وَإِن تَفْعَلُوا۟ فَإِنَّهُۥ فُسُوقٌۢ بِكُمْ ۗ وَاتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ۖ وَيُعَلِّمُكُمُ ٱللَّهُ ۗ وَٱللَّهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ﴿282﴾

यह बात अलग है कि वह मामला नगद तिजारत की शक्ल में हो जो आपस में लेन-देन कर रहे हो तो तुम पर उसके न लिखने में कोई गुनाह नहीं। ख़रीदने बेचने के वक़्त भी गवाह मुक़र्रर कर लिया करो, और (याद रखो) न तो लिखने वाले को नुक़सान पहुँचाया जाये और न गवाहों को[1] और अगर तुम ऐसा करो तो यह तुम्हारी खुली नाफ़रमानी है। अल्लाह (तआला) से डरो, अल्लाह (तआला) तुम्हें नसीहत दे रहा है और अल्लाह (तआला) सब कुछ जानने वाला है।

وَإِن كُنتُمْ عَلَىٰ سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا۟ كَاتِبًا فَرِهَٰنٌ مَّقْبُوضَةٌ ۖ فَإِنْ أَمِنَ بَعْضُكُم بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ ٱلَّذِى ٱؤْتُمِنَ أَمَٰنَتَهُۥ وَلْيَتَّقِ ٱللَّهَ رَبَّهُۥ ۗ وَلَا تَكْتُمُوا۟ ٱلشَّهَٰدَةَ ۚ وَمَن يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُۥٓ ءَاثِمٌ قَلْبُهُۥ ۗ وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿283﴾

२८३. और अगर तुम सफ़र में हो और लिखने वाला न पाओ तो गिरवी अपने पास रख लिया करो, और अगर आपस में एक-दूसरे पर यक़ीन हो, तो जिसे अमानत दी गयी है वह उसे अदा कर दे, और अल्लाह (तआला) से डरता रहे जो उसका रब है[2] और गवाही को न छुपाओ और जो उसे छिपा ले वह मन का पापी है,[3] और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह (तआला) उसे अच्छी तरह जानता है।

---

[1] इनको नुक़सान पहुँचाने से मुराद यह है कि बहुत दूर से उन्हें बुलाया जाये, जिस से उनकी व्यस्तता (मश्ग़ूलियत) में अड़चन और तिजारत में नुक़सान हो या उनको झूठी बात लिखने या उसका गवाह बनने के लिए मजबूर किया जाये।

[2] अगर एक-दूसरे पर भरोसा हो तो बिना गिरवी रखे भी क़र्ज़ का सौदा कर सकते हो। अमानत से मुराद यहाँ क़र्ज़ है, अल्लाह से डरते हुए उसे जायेज़ तरीक़े से अदा कर दो।

[3] गवाही को छिपाना बहुत बड़ा गुनाह है, इसलिये इसकी बहुत बुराई यहाँ क़ुरआन में और हदीस में की गयी है, इसलिये सही गवाही की बड़ी अहमियत भी है। सहीह मुस्लिम की हदीस है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया :

«أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِخَيْرِ الشُّهَدَاءِ ؟ الَّذِي يَأْتِي بِشَهَادَتِهِ قَبْلَ أَنْ يُسْأَلَهَا»

वह सब से अच्छा गवाह है, जो बिना गवाही की माँग के ख़ुद गवाही के लिये हाज़िर हो जाये। (सहीह मुस्लिम)

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ۗ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿284﴾

२८४. ज़मीनो आसमान की हर चीज़ अल्लाह (तआला) के अधिकार में है। तुम्हारे दिलों में जो कुछ है, उसे चाहे ज़ाहिर करो या छुपाओ, अल्लाह (तआला) उसका हिसाब लेगा, फिर जिसे चाहे माफ़ कर दे और जिसे चाहे सज़ा दे और अल्लाह (तआला) हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۗ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿285﴾

२८५. रसूल उस चीज़ पर ईमान लाये जो उसकी तरफ़ अल्लाह (तआला) की तरफ़ से उतारी गयी और मुसलमान भी ईमान लाये। यह सब अल्लाह (तआला) और उसके फ़रिश्ते पर, और उस की किताबों पर, और उस के रसूलों पर ईमान लाये, उस के रसूलों में से किसी के बीच हम फ़र्क़ नहीं करते, उन्होंने कहा कि हम ने सुना और इताअत की, हम तुझ से माफ़ी चाहते हैं। हे हमारे रब! और हमें तेरी ही तरफ़ लौटना है।

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۗ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟ وَارْحَمْنَا ۟ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿286﴾

२८६. अल्लाह किसी भी आत्मा (नफ़्स) पर उस की ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं डालता, जो सवाब वह करे वह उस के लिए है और जो बुराई वह करे वह उसी पर है। हे हमारे रब! अगर हम भूल गये हों या गलती की हो तो हमें न पकड़ना। हे हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जो हम से पहले लोगों पर डाला था। हे हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जो हमारी ताक़त में न हो और हमें माफ़ कर दे, और हमें माफ़ी अता कर, और हम पर रहम कर, तू ही हमारा मालिक है, हमें काफ़िर क़ौम पर फ़त्ह अता कर।

सूरतु आले इमरान-३

سُوْرَةُ اٰلِ عِمْرٰنَ

सूरः आले इमरान मदीना में उतरी[1] इस में दो सौ आयतें हैं और बीस रूकुअ़ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. अलिफ़•लाम•मीम

الٓمّٓ ﴿1﴾

२. अल्लाह (तआला) वह है जिसके सिवाय कोई माबूद नहीं, जो ज़िन्दा है और सभी का रक्षक है।[2]

اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ﴿2﴾

३. जिसने हक़ के साथ इस किताब (पाक क़ुरआन) को उतारा, जो अपने से पहले के (धर्मशास्त्रों) को प्रमाणित करती है, और उसी ने [इस से पहले (धर्मग्रन्थ)] तौरात और इंजील उतारा।

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿3﴾

४. इससे पहले लोगों की हिदायत के लिए और क़ुरआन भी उसी ने उतारा।[3] जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों से कुफ़्र करते हैं उनके लिये सख़्त अज़ाब हैं। और अल्लाह (तआला)

مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿4﴾

---

[1] यह सूरः मदनी है। इसकी सभी आयतें मुख़्तलिफ़ अवक़ात में मदीने में ही उतरी और इसका शुरूआती हिस्सा यानी ८३ आयतों तक इसाईयों के नजरान के वफ़द (यह नगर अब सऊदी अरब में है) के बारे में उतरा हुआ है, जो ९ हिजरी में नबी ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ था, ईसाईयों ने आकर नबी करीम ﷺ से अपने ईसाई अक़ीदा और इस्लाम के बारे में बहस मुबाहिसा किया, जिसकी तरदीद करते हुए उन्हें मुबाहिला (एक तरीक़ा है, जिसके अनुसार क़सम खाकर अपनी बात कही जाती है) की दावत भी दी गई, जिसका तफ़सीली बयान आगे आयेगा, उसी पृष्ठभूमि में क़ुरआन करीम की इन आयतों का अध्ययन किया जायेगा।

[2] حيّ और قيوم अल्लाह तआला के बहुत ख़ास नाम है, हई का मतलब है कि वह शुरू से है और आख़िर तक रहेगा, उसे मौत और फ़ना नहीं। क़य्यूम का मतलब वह सारी मख़लूक़ को क़ायम रखने वाला, रक्षक और संरक्षक (निगराँ) है, सारी दुनिया को उसकी ज़रूरत है उसे किसी की ज़रूरत नहीं।

[3] यानी अपने-अपने वक़्त में तौरात और इंजील भी ज़रूर लोगों की हिदायत का चश्मा थीं, इसलिये कि उन के उतारने का मक़सद ही यही था फिर भी उस के बाद وأنزل الفرقان कह कर वाज़ेह कर दिया कि तौरात और इंजील का ज़माना ख़त्म हो गया। अब क़ुरआन उतर चुका वह फ़ुरक़ान है और अब सिर्फ़ वही सच व झूठ की पहचान है, इसको सच माने बिना अल्लाह के क़रीब कोई मुसलमान और मोमिन नहीं।

जबरदस्त है और बदला लेने वाला है।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ﴿٥﴾

५. बेशक अल्लाह (तआला) से जमीन और आसमान की कोई चीज छिपी नहीं है।

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦﴾

६. वही माता के गर्भ में तुम्हारी शक्ल जिस तरह चाहता है बनाता है उस के सिवाय कोई भी हक़ीक़त में इबादत के लायक़ नहीं है, वह ताक़त वाला और हिक्मत वाला है।

هُوَ الَّذِي أَنزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُّحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ ۖ فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ ۗ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ ۗ وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِّنْ عِندِ رَبِّنَا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٧﴾

७. वही अल्लाह (तआला) है जिस ने तुझ पर किताब उतारी, जिस में वाज़ेह और ठोस आयतें हैं, जो असल किताब हैं और कुछ समान (मुतशाबिह) आयतें हैं,[1] फिर जिन के दिलों में खराबी है तो वह मुतशाबिह आयतों के पीछे लग जाते हैं, फितना तलाश करने के लिये और उनकी तावील के लिये, लेकिन उन के मक़सद हक़ीक़ी को अल्लाह (तआला) के सिवाय कोई नहीं जानता ।[2] और कामिल व मजबूत इल्म वाले यही कहते हैं कि हम तो उन पर ईमान ला चुके यह सब हमारे रब की तरफ़ से है, और नसीहत तो सिर्फ अक़्लमंद ही हासिल करते हैं।

---

[1] 'मुहकमात' से मतलब वह आयतें हैं जिन में अम्र व नहयी (आदेश-निदेश), समस्यायें (मसायेल) और कथायें हैं, जिनका मतलब वाजेह और अटल है, उनके समझने में किसी तरह की कठिनाई नहीं आती । इस के ख़िलाफ़ "आयात मुताशाबिहात" है। जैसे अल्लाह का वुजूद और तक़दीर की समस्यायें, जन्नत, जहन्नम और मलायेका आदि (वग़ैरह)।

[2] तावील का एक मतलब है किसी चीज के असल का इल्म। इस मायने के ऐतबार से إلا الله पर रूकना ज़रूरी है, क्योंकि हर विषय की असल हक़ीक़त का इल्म सिर्फ अल्लाह ही को है, दूसरा मतलब किसी विषय की व्याख्या, तफ़सीर, बयान और स्पष्टीकरण (वज़ाहत) है, इस मायने के ऐतबार से والراسخون, पर रुका जा सकता है, क्योंकि आलिम लोग भी सहीह तफ़सीर और बयान का इल्म रखते हैं। (इब्ने कसीर)

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا
مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ ﴿8﴾

८. हे हमारे रब! हमें हिदायत देने के बाद हमारे दिल टेढ़े न कर दे और हमें अपने पास से रहमत अता कर, बेशक तू ही सब से बड़ा दाता है।

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ ۚ
إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ﴿9﴾

९. हे हमारे रब ! तू बेशक लोगों को एक दिन जमा करने वाला है, जिस के आने में कोई शक नहीं, बेशक अल्लाह (तआला) वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ
وَلَا أَوْلَادُهُم مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ وَأُولَٰئِكَ
هُمْ وَقُودُ النَّارِ ﴿10﴾

१०. काफ़िरों को उन के माल और उन की औलाद अल्लाह (तआला) के अज़ाबों से छुड़ाने में कुछ काम न आ सकेगी, यह तो जहन्नम का ईंधन ही हैं।

كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ
وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿11﴾

११. जैसाकि फ़िरऔन की औलाद का हाल हुआ और उन का जो उन से पहले थे, उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया, फिर अल्लाह (तआला) ने उन्हें उन के गुनाहों पर पकड़ लिया और अल्लाह (तआला) सख़्त सजा देने वाला है।

قُل لِّلَّذِينَ كَفَرُوا سَتُغْلَبُونَ وَتُحْشَرُونَ
إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿12﴾

१२. काफ़िरों से कह दीजिये कि तुम लोग निकट भविष्य (मुस्तक़बिल क़रीब) में पराजित किये जाओगे। और जहन्नम की तरफ़ जमा किये जाओगे और वह बुरा बिछौना है।

قَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ فِي فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۖ فِئَةٌ
تُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَىٰ كَافِرَةٌ
يَرَوْنَهُم مِّثْلَيْهِمْ رَأْيَ الْعَيْنِ ۚ وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ
بِنَصْرِهِ مَن يَشَاءُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً
لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿13﴾

१३. बेशक तुम्हारे लिये (इबरत की) निशानी थी, उन दो गुटों में जो गुथ गये थे, एक गुट अल्लाह की राह में लड रहा था, और दूसरा गुट काफ़िरों का था, वह उन्हें आँखों से अपने से दुगना देखते थे, और अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपनी मदद से मजबूत कर देता है। बेशक इस में आँखों वालों के लिये बड़ी नसीहत है।

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿١٤﴾

१४. पसंदीदा चीजों की मुहब्बत लोगों के लिये मुजय्यन कर दी गई है, जैसे स्त्रियाँ और पुत्र, सोना, चाँदी के जमा किये हुए ख़जाने और निशानदार घोड़े और चौपाये और खेती ।[1] यह दुनियावी जिन्दगी का सामान है, और लौटने का अच्छा ठिकाना तो अल्लाह (तआला) ही के पास है ।

قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ ۢ بِالْعِبَادِ ﴿15﴾

१५. आप कह दीजिये कि क्या मैं तुम्हें इस से बेहतर चीज बताऊँ? अल्लाह से डरने वाले लोगों के लिये उन के रब के पास जन्नत हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जिन में वे हमेशा रहेंगे,[2] और पक़ीजा बीवियाँ[3] और अल्लाह (तआला) की खुशी है और सभी बन्दे अल्लाह (तआला) की निगाह में हैं ।

اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿16﴾

१६. जो कहते हैं कि हे हमारे रब! हम ईमान ला चुके, इसलिये हमारे गुनाह माफ़ कर दे और हमें आग के अजाब से बचा ।

اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴿17﴾

१७. जो सब्र करने वाले, और सच्चे और फ़रमाँबर्दार और अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने वाले हैं और पिछली रात को (मोक्ष प्राप्त

---

[1] شَهَوَات से यहाँ मुराद مُشْتَهَيَات है, यानी वह चीजें जो इंसान को प्राकृतिक रूप (फ़ितरी तौर) से पसंद हैं, इसलिये इन से लगाव और उन से मुहब्बत नाजायेज नहीं है, लेकिन यह मुहब्बत मजहबे इस्लाम के क़ानून की परिधि (दायरे) में और संतुलित (मुतवाज़िन) हो, उनकी ख़ूबसूरती भी अल्लाह तआला की तरफ़ से इम्तेहान है ।

﴿إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ﴾

"हम ने जमीन पर जो कुछ बनाया है इसे जमीन की ख़ूबसूरती के लिये बनाया है, ताकि लोगों का हम इम्तेहान लें ।" (अल-कहफ़-७)

[2] इस आयत में ईमानवालों को बताया जा रहा है कि दुनिया की ऊपर बयान की गई चीजों में ही न खो जाना, बल्कि उनसे बेहतर तो वह जिंदगी और उसकी रहमत है जो रब के पास है, जिस के हक़दार अल्लाह के डर से डरने वाले हैं, इसलिये अल्लाह से डरो, अगर यह तुम्हारे अन्दर पैदा हो गया तो बिला शक दुनिया और आख़िरत की सारी भलाइयाँ अपने दामन में बटोर लोगे ।

[3] पाक का मतलब है कि वह दुनियावी गंदगी और मैल-कुचैल, माहवारी और दूसरी गंदगी से पाक होंगी और पाक दामन होंगी, इसलिये अगली दो आयतों में अल्लाह के डर से डरने वालों की फ़जीलतों का बयान है ।

करने की कामना के लिये) इस्तिग़फ़ार करने वाले हैं।

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ وَ اُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًۢا بِالْقِسْطِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿18﴾

१८. अल्लाह उस के फ़रिश्तों और आलिमों ने गवाही दी है कि अल्लाह के सिवाय कोई माबूद नहीं, वह इन्साफ़ को क़ायम रखने वाला है, वही ज़बरदस्त हिक्मत वाला है, उस के सिवाय कोई इबादत के लायक़ नहीं।

اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۫ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿19﴾

१९. बेशक अल्लाह के पास दीन इस्लाम ही है।[1] (अल्लाह के लिए मुकम्मल सिपुर्दगी) और जो किताब दिये गये उन्होंने इल्म आने के बाद आपस में हसद की वजह से इख़्तिलाफ़ किया, और जो अल्लाह की आयतों (पाक क़ुरआन) को न माने तो अल्लाह जल्द ही हिसाब लेगा।

---

[1] इस्लाम वही दीन है जिसकी तबलीग़ और तालीम हर नबी अपने दौर में देते रहे और अब यह उसकी मुकम्मल शक्ल है जिसे आख़िरी रसूल मोहम्मद ﷺ दुनिया के सामने पेश कर रहे हैं। जिस में एकेश्वरवाद (तौहीद), रिसालत और आख़िरत के लिए इस तरह यक़ीन रखना है जैसे आप ﷺ ने बताया है, अब सिर्फ़ यह यक़ीन रख लेना कि अल्लाह (परमेश्वर) एक है या कुछ अच्छा काम कर लेना इस्लाम नहीं न इससे आख़िरत में नजात हासिल होगी, अक़ीदा और दीन यह है कि अल्लाह को एक माना जाये, सिर्फ़ उसी एक अल्लाह की इबादत की जाये, मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ समेत सभी रसूलों के लिए यक़ीन रखा जाये और आप ﷺ पर रिसालत का ख़ातमा माना जाये और उम्मीद के साथ वह यक़ीन और अमल किये जायें जो क़ुरआन और रसूलों के क़ौल (हदीस) में बयान है अब इस दीन इस्लाम के सिवाय कोई दूसरा दीन अल्लाह के यहाँ क़ुबूल न होगा।

﴿وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ﴾

"और जो इंसान इस्लाम के सिवाय किसी दूसरे दीन की खोज करे उसका दीन क़ुबूल नहीं होगा और आख़िरत में वह नुक़सान उठाने वालों में होगा।" (आले इमरान : ८५)

﴿قُلْ يَاأَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا﴾

"कह दीजिये कि हे लोगो! मैं तुम सबकी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ।" (सूर: आराफ़-१५८)

﴿تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا﴾

"शुभ है वह जिस ने अपने बन्दे पर फ़ुरक़ान (विवेकारी शास्त्र) उतारा ताकि वह दुनिया को ख़बरदार करे।" (अल-फ़ुरक़ान-१)

आप ﷺ ने फ़रमाया : उस अल्लाह की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है जो यहूदी या इसाई मुझ पर यक़ीन किये बिना मर जाये वह जहन्नमी है। (सहीह मुस्लिम) यह भी कहा कि मैं लाल-काले (सभी इंसान) के लिये भेजा गया हूँ इसीलिए आप ने अपने दौर के सभी राजाओं को ख़त लिखकर उनको इस्लाम दीन क़ुबूल करने की दावत दी। (सहीहैन, माध्यम इब्ने कसीर)

فَإِنْ حَآجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ۗ وَقُل لِّلَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْأُمِّيِّينَ أَأَسْلَمْتُمْ ۚ فَإِنْ أَسْلَمُوا فَقَدِ اهْتَدَوا ۖ وَّإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ﴿20﴾

२०. अगर वह आप से झगड़ा करें तो आप कह दें कि मैंने और मेरे पैरोकारों ने ख़ुद को अल्लाह के लिए समर्पित कर दिया और आप अहले किताब और अनपढ़ लोगों[1] को कहें कि क्या तुम इस्लाम लाये। अगर वह इस्लाम को क़ुबूल कर ले तो सीधा रास्ता पा गये और अगर मुंह फेरें तो आप को सिर्फ़ पहुंचाना है और अल्लाह बन्दों को देख रहा है।

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿21﴾

२१. बेशक जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों से कुफ़्र करते हैं, और ईशदूतों (अम्बिया) को नाजायज़ क़त्ल करते हैं और जो लोग इंसाफ़ की बात करें, उन्हें भी क़त्ल करते हैं तो (हे नबी) आप उन्हें बड़े अज़ाब में बाख़बर कर दीजिये।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿22﴾

२२. उन्हीं के (पुण्य) काम दुनिया और आख़िरत में बेकार हो गये और इनका कोई सहायक (मददगार) नहीं।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ وَهُم مُّعْرِضُونَ ﴿23﴾

२३. क्या आपने उन्हें नहीं देखा, जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया है, वह अपने आपस के फ़ैसले के लिये अल्लाह (तआला) की किताब की तरफ़ बुलाये जाते हैं, फिर भी उनका एक गिरोह मुंह फेर कर लौट जाता है।[2]

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ ۖ وَغَرَّهُمْ فِي دِينِهِم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿24﴾

२४. इसकी वजह उन का यह कहना है कि उन्हें गिनती के कुछ दिन ही आग स्पर्श (छू) करेगी, यह उनकी मनगढ़न्त बातों ने उन्हें उन के दीन के बारे में धोखे में डाल रखा है।

[1] अनपढ़ लोगों से मुराद अरब के मूर्तिपूजक हैं जो किताब वालों के मुक़ाबले में आम तौर पर जाहिल थे।

[2] इन किताब वालों से मुराद वह मदीने के रहने वाले यहूदी हैं जिनका बहुमत दीन इस्लाम क़ुबूल करने लायक ही नहीं थे, और इस्लाम मुसलमानों और नबी ﷺ के ख़िलाफ़ मसायेल पैदा करने में मश्ग़ूल रहे, यहां तक कि उन के दो गिरोहों को देश निकाला और एक गिरोह को क़त्ल कर दिया गया।

فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنَٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿25﴾

२५. फिर क्या हालत होगी जब उन्हें हम उस दिन जमा करेंगे, जिस के आने में कोई शक नहीं, और हर इंसान को अपने किये का पूरा बदला दिया जायेगा और उन पर जुल्म न किया जायेगा।

قُلِ ٱللَّهُمَّ مَٰلِكَ ٱلْمُلْكِ تُؤْتِى ٱلْمُلْكَ مَن تَشَآءُ وَتَنزِعُ ٱلْمُلْكَ مِمَّن تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَن تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَن تَشَآءُ ۖ بِيَدِكَ ٱلْخَيْرُ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿26﴾

२६. आप कह दीजिए, ऐ अल्लाह, हे सारी दुनिया के मालिक! तू जिसे चाहे मुल्क दे और जिस से चाहे मुल्क छीन ले और तू जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील कर दे, तेरे ही हाथों में सारी भलाईयाँ हैं।[1] बेशक तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

تُولِجُ ٱلَّيْلَ فِى ٱلنَّهَارِ وَتُولِجُ ٱلنَّهَارَ فِى ٱلَّيْلِ ۖ وَتُخْرِجُ ٱلْحَىَّ مِنَ ٱلْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ ٱلْمَيِّتَ مِنَ ٱلْحَىِّ ۖ وَتَرْزُقُ مَن تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿27﴾

२७. तू ही रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है,[2] तू ही निर्जीव से जीव पैदा करता है,[3] और ज़िन्दा से बेजान निकालता है, तू ही है कि जिसे चाहता है अनगिनत रोज़ी अता करता है।

---

[1] इस आयत में अल्लाह की बेपनाह क़ुदरत और ताक़त का बयान है, राजा को रंक और रंक को राजा बना देने का हक़ उसी को है الخير بيدك की जगह पर بِيَدِكَ الْخَيْرُ (सूचना की प्राथमिकता के साथ) से मुराद फ़ज़ीलत दिखाना है, यानी भलाईयाँ सिर्फ़ तेरे ही हाथ में हैं, तेरे सिवाय कोई भलाई नहीं दे सकता, शर (बुराई) का (ख़ालिक़) भी अगरचे अल्लाह ही है लेकिन यहाँ सिर्फ़ ख़ैर (भलाई) का बयान किया गया। शर (बुराई) का नहीं इसलिये कि भलाई सिर्फ़ अल्लाह की मेहरबानी है, इसके ख़िलाफ़ बुराई इन्सान के अपने अमल का बदला है जो उसे मिलता है या इसलिये कि बुराई भी उसकी तक़दीर के लिखे का एक हिस्सा है, जिसमें भलाई इस तरह है कि अल्लाह के सभी काम भले हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[2] रात को दिन में और दिन को रात में दाखिल करने का मतलब मौसम का बदलना है, एक मौसम में रात लम्बी होती है तो दिन छोटा है, और दूसरे मौसम में इसके ख़िलाफ़ दिन लम्बा होता है और रात छोटी हो जाती है, यानी कभी रात का हिस्सा दिन में और दिन का हिस्सा रात में दाखिल कर देता है, जिस से रात और दिन छोटे बड़े हो जाते हैं।

[3] जैसे वीर्य (बेजान) पहले इंसान से निकलता है और फिर उस निर्जीव (वीर्य) से इंसान, इसी तरह बेजान अण्डे से ज़िन्दा मुर्गी और फिर ज़िन्दा मुर्गी से बेजान अण्डा या काफ़िर से मोमिन और मोमिन से काफ़िर पैदा करता है।

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكٰفِرِينَ أَوْلِيَآءَ مِن دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِي شَيْءٍ إِلَّآ أَن تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقٰىةً ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهُ ۗ وَإِلَى اللّٰهِ الْمَصِيرُ ﴿28﴾

२८. मोमिनों को चाहिए कि ईमानवालों को छोड़कर काफिरों को अपना दोस्त न बनायें,[1] और जो ऐसा करेगा वह अल्लाह (तआला) की किसी पक्ष (हिमायत) में नहीं, लेकिन यह कि उनके (डर से) किसी तरह की हिफ़ाजत का इरादा हो,[2] और अल्लाह (तआला) ख़ुद तुम्हें अपने आप से डरा रहा है और अल्लाह (तआला) ही की तरफ़ लौटकर जाना है।

قُلْ إِن تُخْفُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ يَعْلَمْهُ اللّٰهُ ۗ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَاللّٰهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿29﴾

२९. कह दीजिए कि चाहे तुम अपने दिल की बातें छिपाओ या जाहिर करो, अल्लाह (तआला) सब को जानता है, आकाशों और धरती में जो कुछ है सब उसे मालूम है, अल्लाह (तआला) हर चीज पर क़ुदरत रखने वाला है।

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۛ وَمَا عَمِلَتْ مِن سُوٓءٍ ۛ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ أَمَدًا بَعِيدًا ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهُ ۗ وَاللّٰهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ﴿30﴾

३०. जिस दिन हर एक नफ़्स (व्यक्ति) अपने किये भलाई और बुराई को मौजूद पायेगा, ख़्वाहिश करेगा कि काश! उस के और गुनाह के बीच बहुत दूरी होती। अल्लाह (तआला) अपने आप से डरा रहा है और अल्लाह (तआला) अपने बन्दों पर बहुत मेहरबान है।

قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿31﴾

३१. कह दीजिए! अगर तुम अल्लाह (तआला) से मुहब्बत करते हो तो मेरी इत्तेबा करो, ख़ुद अल्लाह (तआला) तुम से मुहब्बत करेगा और

---

[1] औलिया, वली का बहुवचन (जमा) है। वली ऐसे दोस्त को कहते हैं जिस से दिली मुहब्बत और ख़ास रिश्ता हो, जैसे अल्लाह तआला ने अपने आप को ईमानवालों का वली कहा है।

﴿اللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا﴾

"अल्लाह ईमानवालों का वली है।" (अल-बकर:-२५७)

यानी ईमानवालों को एक-दूसरे से मुहब्बत और ख़ास रिश्ता है और वे आपस में एक-दूसरे के वली (मित्र) हैं।

[2] यह हुक्म उन मुसलमानों के लिए है, जो किसी काफिर मुल्क में रहते हों और उन से दोस्ती किये बिना उनके ख़ौफ से बचना मुमकिन न हो तो वह उनसे जबानी दोस्ती कर सकते हैं।

तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा ।[1] और अल्लाह (तआला) बहुत बख़्शने वाला रहम करने वाला है ।

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿32﴾

३२. कह दीजिये कि अल्लाह (तआला) और रसूल के हुक्म की इताअत करो, अगर वह मुँह फेर लें तो बेशक अल्लाह (तआला) काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता ।[2]

إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿33﴾

३३. बेशक अल्लाह (तआला) ने सभी लोगों में से आदम को और नूह को और इब्राहीम के परिवार और इमरान के परिवार को चुन लिया।

ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِن بَعْضٍ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿34﴾

३४. कि ये सभी आपस में एक-दूसरे के वंश से हैं और अल्लाह (तआला) सुनता और जानता है।

إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۖ إِنَّكَ أَنتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿35﴾

३५. जब इमरान की बीवी ने कहा कि हे मेरे पालनहार! मेरे गर्भ में जो कुछ भी है उसे तेरे नाम से आज़ाद करने[3] की मन्नत मान ली तो तू इसे क़ुबूल कर, बेशक तू अच्छी तरह से सुनने वाला और जानने वाला है ।

---

[1] यानी रसूल अल्लाह ﷺ की इत्तेबा करने की वजह से सिर्फ़ तुम्हारे गुनाह को ही नहीं माफ़ किया जायेगा, बल्कि तुम उसके महबूब बन जाओगे तो यह कितनी अच्छी बात है कि अल्लाह के सामने एक इंसान अल्लाह के प्रेमी की जगह हासिल कर ले ।

[2] इस आयत में अल्लाह के हुक्म की इत्तेबा के साथ-साथ रसूल अल्लाह ﷺ की इत्तेबा करने की फिर से पुनर्रावृत्ति (ताकीद) करके यह वाज़ेह किया गया है कि अब बिना मोहम्मद ﷺ की पैरवी किये नजात नहीं हासिल हो सकती और इसका नकारना कुफ़्र है, और ऐसे काफ़िरों को अल्लाह तआला पसन्द नहीं करता, चाहे वह अल्लाह की मुहब्बत और नज़दीक होने के कितने ही दावेदार हों । इस आयत में हदीस के न मानने वालों और रसूल अल्लाह ﷺ की पैरवी न करने वालों की कड़ी आलोचना की गयी है क्योंकि दोनों ही अपने-अपने रूप से ऐसा काम करते हैं जिसे यहाँ कुफ़्र के बराबर बताया गया है ।

[3] محررا (तेरे नाम आज़ाद) का मतलब तेरी धर्मस्थली (इबादतगाह) की ख़िदमत के लिये पेश करती हूँ ।

३६. जब बच्चे को जन्म दिया तो कहने लगी मेरे रब! मुझे तो लड़की हुई है, अल्लाह (तआला) अच्छी तरह से जानता है कि क्या जन्म दिया है, और लड़का, लड़की की तरह नहीं, मैंने उसका नाम मरियम रखा है, मैं उसे और उसकी औलाद को मरदूद शैतान से तेरी पनाह में देती हूँ।[1]

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنثَىٰ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنثَىٰ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿36﴾

३७. उसे उस के रब ने अच्छी तरह से क़ुबूल किया और उसका सब से अच्छा पालन-पोषण कराया, उसका संरक्षक (निगहबान) जकरिया को बनाया[2] जब कभी जकरिया उनके कमरे में जाते तो उन के पास रिज़्क रखी हुई पाते थे।[3] वह पूछते थे कि हे मरियम ! तुम्हारे पास यह रोजी (जीविका) कहाँ से आयी? वह जवाब देती कि यह अल्लाह (तआला) के पास से है, बेशक अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अनगिनत रिज़्क अता करे।

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِندَهَا رِزْقًا قَالَ يَا مَرْيَمُ أَنَّىٰ لَكِ هَٰذَا قَالَتْ هُوَ مِنْ عِندِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَن يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿37﴾

३८. उसी जगह पर जकरिया (عليه السلام) ने अपने पालनहार से दुआ की, कहा कि ऐ मेरे पालनहार! मुझे अपने पास से नेक औलाद अता कर, बेशक तू दुआ सुनने वाला है।

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿38﴾

---

[1] अल्लाह तआला ने यह दुआ क़ुबूल की, जैसाकि सहीह हदीसों में है कि जब बच्चा पैदा होता है तो शैतान उसे छूता है, जिस से वह चीख़ता है, लेकिन अल्लाह तआला ने हजरत मरियम और उन के बेटे ईसा को इस से महफ़ूज रखा है।

«مَا مِنْ مَوْلُودٍ يُولَدُ إِلَّا مَسَّهُ الشَّيْطَانُ حِينَ يُولَدُ فَيَسْتَهِلُّ صَارِخًا مِنْ مَسِّهِ إِيَّاهُ إِلَّا مَرْيَمَ وَابْنَهَا»

(सहीह बुख़ारी, किताबुल तफ़सीर, मुस्लिम किताबुल फजायल)

[2] हजरत जकरिया मरियम के मौसा भी थे इसलिए भी, इस के सिवाय अपने समय में पैगम्बर होने की वजह से सब से अच्छे संरक्षक बन सकते थे जो कि हजरत मरियम की आर्थिक (मुआशी) जरुरतों, शैक्षिक और नैतिक प्रशिक्षण (तरबीयत) का उचित प्रबन्ध कर सकते थे।

[3] मेहराब से मुराद वह कमरा है जिस में हजरत मरियम रहा करती थीं, रिज़्क से मुराद फल आदि हैं, यह फल बिना मौसम के हुआ करते थे यानी गर्मी के फल सर्दियों में और सर्दियों के फल गर्मियों में उन के कमरे में होते थे।

३९. फिर फ़रिश्तों ने पुकारा जब कि वह कमरे में खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे कि अल्लाह (तआला) तुझे यहिया की यक़ीनी ख़ुशख़बरी देता है।[1] जो अल्लाह (तआला) के कलमे की तसदीक़ करने वाला[2] मुखिया, परहेज़गार और नबी होगा नेक लोगों में से।

فَنَادَتْهُ الْمَلَٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ (39)

४०. कहने लगे हे मेरे रब! मेरे यहाँ लड़का कैसे होगा? मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूँ और मेरी पत्नी बाँझ है, कहा इसी तरह अल्लाह (तआला) जो चाहे करता है।

قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ۭ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ (40)

४१. कहने लगे रब! मेरे लिए इसकी कोई निशानी बना दे, कहा निशानी यह है कि तीन दिन तक तू लोगों से बात न कर सकेगा, सिर्फ़ इशारे से समझायेगा, तू अपने रब का ज़िक्र ज़्यादा कर और सुबह व शाम उसी की बड़ाई को ब्यान कर।

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ۭ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ (41)

४२. और जब फ़रिश्तों ने कहा हे मरियम! अल्लाह (तआला) ने तुझे मुंतख़ब कर लिया और तुझे पाक कर दिया, और सारी दुनिया की औरतों में तेरा चुनाव (इंतिख़ाब) कर लिया।[3]

وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰكِ عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ (42)

---

[1] बिना मौसम के फल देखकर हज़रत ज़करिया के दिल में (अपने बुढ़ापे और अपनी बीवी के बाँझ होने पर भी) यह उम्मीद पैदा हुई कि काश अल्लाह तआला उन्हें भी इसी तरह औलाद अता कर दे, इसी वजह से उनके हाथ दुआ के लिये उठ गये, जिसे अल्लाह तआला ने क़ुबूल भी कर लिया और अता भी किया।

[2] अल्लाह के कलमें की तसदीक़ से मुराद हज़रत ईसा की तसदीक़ करेगा, यानी हज़रत यहिया हज़रत ईसा से बड़े हुए, दोनों आपस में मौसेरे भाई थे, दोनों ने एक-दूसरे का अनुमोदन किया, سيدا का मतलब है सरदार, حصورا का मतलब है पाप से विशुद्ध यानी गुनाह के क़रीब न गये हों, इसका मतलब यह कि उनको गुनाह से रोक दिया गया हो यानी हसूर, महसूर के मतलब में लिया गया है, कुछ ने इसका मतलब नामर्द किया है, लेकिन यह ठीक नहीं है, क्योंकि यह एक ऐब है, जबकि यहाँ उनकी फ़ज़ीलत, इज़्ज़त के तौर पर इस्तेमाल हुआ है।

[3] हज़रत मरियम की यह इज़्ज़त और मान उनकी अपनी फ़ज़ीलत और उनके दौर के एतबार से है, क्योंकि सहीह हदीसों में हज़रत मरियम के साथ हज़रत ख़दीजा को भी خيرنسائها (सभी औरतों में बेहतर) कहा गया है और कुछ हदीसों में चार औरतों को मुकम्मल कहा गया है। हज़रत मरियम, हज़रत आसिया (फ़िरऔन की बीवी), हज़रत ख़दीजा, हज़रत आयेशा और

يٰمَرْيَمُ اقْنُتِىْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِىْ وَارْكَعِىْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿43﴾

४३. हे मरियम ! तू अपने रव के हुक्मों का पालन और सज्दा कर और झुकने वालों (रूकुअ करने वालों) के साथ झुका कर (रूकुअ कर)।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۪ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿44﴾

४४. यह ग़ैव की ख़बरों में से है, जिसे हम आप को वह्‌यी कर रहे हैं, तव आप उस वक़्त उन के पास न थे जव वह अपने क़लम डाल रहे थे कि उन में से मरियम की परवरिश कौन करेगा? और न आप उन के झगड़ों के वक़्त उन के पास थे।[1]

اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿45﴾

४५. जव फ़रिश्तों ने कहा हे मरियम! तुझे अल्लाह (तआला) अपने एक कलिमा[2] की ख़ुशख़बरी देता है कि जिसका नाम मसीह ईसा इब्ने मरियम है जो दुनिया और आख़िरत में सम्मानित है और वह मेरे निकटवर्तियों (मुक़र्रबीन) में से है।

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِى الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿46﴾

४६. वह लोगों से पालने में वात करेगा और अधेड़ उम्र में भी,[3] और वह नेकों में से होगा।

हज़रत आयेशा के वारे में कहा गया है कि उनकी फ़ज़ीलत औरतों में वैसे ही है, जैसे सरीद (हलुवा या खीर) को सभी खानों में फ़ज़ीलत है। (इब्ने कसीर) और तिर्मिज़ी में हज़रत फ़ातिमा पुत्री मोहम्मद ﷺ को भी अच्छी औरतों में शामिल किया गया है। (इब्ने कसीर) इसका यह भी मतलव हो सकता है कि ऊपर वयान की गई औरतों को दूसरी औरतों में फ़ज़ीलत और वड़ाई अता की गयी है कि वे अपने-अपने दौर में फ़ज़ीलत रखती हैं।

[1] आजकल अहले विदअत ने नबी करीम ﷺ की मान-मर्यादा में अतिश्योक्ति (ग़ुलू) करते हुए उन्हें अल्लाह तआला की तरह ग़ैव का आलिम और सर्वव्यापी (हाज़िर व नाज़िर) मानने का अक़ीदा गढ़ लिया है। इस आयत में इन दोनों वातों का स्पष्ट खण्डन (तरदीद) हो रहा है, अगर आप ﷺ को ग़ैव का इल्म होता तो अल्लाह तआला यह न फ़रमाता कि हम ग़ैव की ख़बरें आप को दे रहे हैं क्योंकि जिसको पहले ही से यह इल्म हो उससे ऐसे नहीं कहा जाता।

[2] हज़रत ईसा को कलमा या अल्लाह का कलमा इसलिये कहा गया है कि उनकी पैदाइश एक चमत्कारिक रूप से आम इन्सानी उसूल के ख़िलाफ़ विना वाप के अल्लाह की विशेष सामर्थ्य (क़ुदरत) और उस के कथन كُنْ (हो जा) की उत्पत्ति है।

[3] हज़रत ईसा के (पालने) माँ की गोद में वातचीत करने का वयान ख़ुद क़ुरआन करीम की सूरः मरियम में है, इस के सिवाय सहीह हदीस में दो दूसरे वच्चों के माँ की गोद में वात करने का वयान है, एक साहवे जुरैज और एक इस्राईली स्त्री का वच्चा। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्विया)

قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِىْ بَشَرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿47﴾

४७. कहने लगी, "मेरे रब! मुझे लड़का कैसे होगा? हालांकि मुझे किसी मर्द ने छुआ भी नहीं है।" फ़रिश्ते ने कहा, "इसी तरह अल्लाह (तआला) जो चाहे पैदा करता है, जब कभी वह किसी काम को करना चाहता है तो सिर्फ़ कह देता है "हो जा" तो वह हो जाता है।"

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿48﴾

४८. और अल्लाह (तआला) उसे लिखना और हिक्मत और तौरात व इंजील सिखायेगा।

وَرَسُوْلًا اِلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ اَنِّىْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّىْٓ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْىِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِىْ بُيُوْتِكُمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿49﴾

४९. और वह इस्राईल की औलाद का रसूल होगा कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की निशानी लाया हूं, मैं तुम्हारे लिए पक्षी के रूप के ही तरह का मिट्टी की चिड़िया बनाता हूं, फिर उस में फूंक मारता हूं तो वह अल्लाह (तआला) के हुक्म से पक्षी बन जाता है और मैं अल्लाह (तआला) के हुक्म से पैदाईशी अंधे को और कोढ़ी को अच्छा कर देता हूं और मुर्दा को ज़िन्दा कर देता हूं और जो कुछ तुम खाओ और जो कुछ भी तुम अपनें घरों में जमा करो मैं तुम्हें बता देता हूं, इस में तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है अगर तुम ईमानवाले हो।

وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَىَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِىْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۟ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿50﴾

५०. और मैं तौरात की तसदीक़ करने वाला हूं जो मेरे सामने है, और मैं इसलिये आया हूं कि तुम पर कुछ उन चीज़ों को हलाल करूं जो तुम पर हराम कर दी गयी है,[1] और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की निशानी लाया हूं, इसलिये तुम अल्लाह (तआला) से डरो और मेरी ही पैरवी करो।

اِنَّ اللّٰهَ رَبِّىْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿51﴾

५१. यक़ीन करो! मेरा और तुम्हारा रब अल्लाह ही है, तुम सब उसी की इबादत करो, यही सीधी राह है।

---

[1] इस से मुराद या तो वह चीज़ें हैं, जो अल्लाह तआला ने सज़ा के तौर पर उन पर हराम कर दी थी या फिर वह चीज़ें जो उनके आलिमों ने ख़ुद अपने ऊपर हराम कर ली थी, अल्लाह का हुक्म नहीं था। (क़ुर्तबी) या ऐसी चीज़ भी हो सकती है जो उनके आलिमों ने अपने सोच-विचार से हराम कर रखी थीं और सोंच-विचार में उन से ग़लती हुई और हज़रत ईसा ने इन ग़ल्तियों को दूर करके उन्हें हलाल कर दिया। (इब्ने कसीर)

فَلَمَّآ أَحَسَّ عِيسَىٰ مِنْهُمُ ٱلْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنصَارِىٓ إِلَى ٱللَّهِ ۖ قَالَ ٱلْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ ٱللَّهِ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَٱشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿52﴾

५२. लेकिन जब (हज़रत) ईसा (عليه السلام) ने उनका इंकार महसूस कर लिया तो कहने लगे अल्लाह (तआला) की राह में मेरी मदद करने वाला कौन-कौन है? हवारियों ने जवाब दिया कि हम अल्लाह (तआला) की राह में सहायक हैं,[1] हम अल्लाह (तआला) पर ईमान लाये और आप गवाह रहिये कि हम मुसलमान हैं।

رَبَّنَآ ءَامَنَّا بِمَآ أَنزَلْتَ وَٱتَّبَعْنَا ٱلرَّسُولَ فَٱكْتُبْنَا مَعَ ٱلشَّٰهِدِينَ ﴿53﴾

५३. हे हमारे रब ! हम तेरी उतारी हुई वहयी पर ईमान लाये और हम ने तेरे रसूल की इत्तेबा किया, बस अब तू हमें गवाहों में लिख ले।

وَمَكَرُوا۟ وَمَكَرَ ٱللَّهُ ۖ وَٱللَّهُ خَيْرُ ٱلْمَٰكِرِينَ ﴿54﴾

५४. और काफ़िरों ने चाल चली और अल्लाह (तआला) ने भी योजना बनायी और अल्लाह (तआला) सभी योजनाकारों से अच्छा है।[2]

إِذْ قَالَ ٱللَّهُ يَٰعِيسَىٰٓ إِنِّى مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَىَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَجَاعِلُ ٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُوكَ فَوْقَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ ۖ ثُمَّ إِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿55﴾

५५.जब अल्लाह (तआला) ने फ़रमाया हे ईसा! मैं तुझे पूरी तरह से लेने वाला हूँ,[3] और तुझे अपनी तरफ़ उठाने वाला हूँ और तुझे काफ़िरों से पाक करने वाला हूँ, तरफ़ तुम्हारे पैरोकारों को काफ़िरों से क़यामत के दिन तक ऊपर रखने वाला हूँ, फिर तुम सब को लौटना मेरी ही तरफ़ है, मैं ही तुम्हारे बीच सभी इख़्तिलाफ़ों का फ़ैसला करूँगा।

---

[1] हवारियों, हवारी का बहुवचन (जमा) है जिसका मतलब है أنصار (अन्सार) सहायक। जिस तरह नबी ﷺ का क़ौल है। "إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيًّا وَ حَوَارِيَّ الزُّبَيْرُ" "हर नबी का कोई ख़ास सहायक होता है और मेरा सहायक ज़ुबैर है।" (सहीह बुख़ारी)

[2] مَكْر (मक्र) अरबी भाषा में बारीक और गुप्त (छिपे) उपाय को कहते हैं और इसी मतलब में यहाँ अल्लाह को خَيْرُ الْمَاكِرِين कहा गया है, मानो यह तरीक़ा बुरा भी हो सकता अच्छा भी, अगर बुरे प्रयोजन (मक़सद) के लिये हो तो बुरा अच्छे मक़सद के लिये हो तो अच्छा है।

[3] التوفي यह توفى से बना जिसका धातु (मसदर) وفى है इसका असल मायने पूरी तरह से लेना है, इंसान की मौत पर 'वफ़ात' लफ़्ज़ इसलिये बोला जाता है, कि उसके शरीरिक अधिकार (हक़) पूरी तरह से छीन लिये जाते हैं, इसलिए इस शब्दार्थ के कई शक्लों में से मौत सिर्फ़ एक शक्ल है। नींद में भी साम्यिक रूप (वक़्ती तौर) से मानवी अधिकार (इंसानी हुक़ूक़) निलम्बित कर दिये जाते हैं, इस वजह से नींद के लिये भी पाक क़ुरआन ने 'वफ़ात' के लफ़्ज़ का इस्तेमाल किया है, जिस से मालूम हुआ कि कि इसका असल मायने पूरी तरह से लेना ही है। إني متوفيك यहाँ अपने असल मायने में इस्तेमाल हुआ है, यानी हे ईसा! मैं तुझे यहूदियों, इसाईयों से बचाकर पूरी तरह से अपनी तरफ़ आकाश पर उठा लूँगा, और ऐसा ही हुआ।

५६. फिर काफ़िरों को तो मैं इस दुनिया और आख़िरत में सख़्त अज़ाब दूँगा और उनका कोई मददगार न होगा।

فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَأُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿56﴾

५७. लेकिन ईमानवालों और नेक काम करने वालों को अल्लाह (तआला) उनका पूरा-पूरा बदला देगा और अल्लाह तआला ज़ालिमों से मुहब्बत नहीं करता।

وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿57﴾

५८. यह जिसे हम तेरे ऊपर पढ़ रहे हैं आयतें हैं और दृढ़ उपदेश (हिक्मत वाली नसीहत) है।

ذَٰلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ ﴿58﴾

५९. अल्लाह (तआला) के पास ईसा की मिसाल आदम की तरह है, जिसे मिट्टी से पैदा करके कह दिया कि हो जा, बस वह हो गया।

إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ ۖ خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿59﴾

६०. तेरे रब की ओर से हक़ यही है, ख़बरदार! शक करने वालों में से न होना।

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿60﴾

६१. इसलिए जो भी आप के पास इस इल्म के आ जाने के बाद भी आप से इस में झगड़े तो आप कह दीजिए कि आओ हम तुम अपने-अपने बेटों को और हम तुम अपनी बीवियों को और हम और तुम अपने आप को बुला लें फिर हम मिल कर दुआ करें और झूठों पर अल्लाह की फिटकार (लानत) भेजें।[1]

فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ ﴿61﴾

६२. बेशक सिर्फ़ यही सच्चा बयान है और अल्लाह (तआला) के सिवाय कोई दूसरा इबादत के लायक़ नहीं, और बेशक अल्लाह ताक़तवर और हिक्मत वाला है।

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿62﴾

---

[1] यह मोबाहला की आयत कहलाती है, मोबाहला का मतलब है दो गिरोह का एक-दूसरे पर लानत यानी बद्दुआ देना, मतलब यह है कि जब दो गिरोहों में किसी बारे में झगड़ा और इख़्तिलाफ़ हो जाये और बहस व मुबाहसा से उसका ख़ात्मा होता न दिखाई दे तो दोनों अल्लाह से यह दुआ करें कि हम में जो झूठा हो उस पर लानत हो।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿63﴾

६३. फिर भी अगर वे क़ुबूल न करें तो अल्लाह (तआला) भी अच्छी तरह विद्रोहियों (फ़सादियों) को जानने वाला है।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿64﴾

६४. आप कह दीजिए कि हे अहले किताब! ऐसी इन्साफ़ वाली बात की ओर आओ जो हम में तुम में बराबर है कि हम अल्लाह (तआला) के सिवाय किसी की इबादत न करें और न उसके साथ किसी को शामिल करें, न अल्लाह (तआला) को छोड़ कर आपस में एक-दूसरे को रब ही बना लें, अगर वह मुँह मोड़ लें तो कह दो कि गवाह रहना कि हम तो मुसलमान हैं।[1]

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنْزِلَتِ التَّوْرَاةُ وَالْإِنْجِيلُ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿65﴾

६५. ऐ अहले किताब ! तुम इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो? जबकि तौरात और इंजील तो उन के बाद उतारी गयी, क्या तुम फिर भी नहीं समझते?[2]

هَا أَنْتُمْ هَٰؤُلَاءِ حَاجَجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿66﴾

६६. सुनो! तुम लोग उस में झगड़ चुके जिसका तुम्हें इल्म था, अब इस में क्यों झगड़ते हो जिस का तुम्हें इल्म ही नहीं है? और अल्लाह (तआला) जानता है तुम नहीं जानते।

---

[1] सहीह बुख़ारी में है कि क़ुरआन करीम के इस हुक्म से आप ﷺ ने हिरक़ल बादशाह रोम को ख़त भेजा, उस में इस आयत के हवाले से दीन इस्लाम क़ुबूल करने की दावत दी और उसे कहा कि तू मुसलमान हो जायेगा तो दुगुना सवाब मिलेगा, वर्ना तेरी पूरी रियाआ का भी गुनाह तेरे सिर पर होगा।

[2] हज़रत इब्राहीम के बारे में झगड़े का मतलब है कि यहूदी और इसाई दोनों यह दावा करते थे कि हज़रत इब्राहीम उनके दीन के मानने वाले थे, अगरचे तौरात जिस पर यहूदी यक़ीन करते हैं और इंजील जिसे इसाई पाक किताब मानते हैं, दोनों हज़रत इब्राहीम के सैकड़ों साल बाद उतरी, फिर हज़रत इब्राहीम यहूदी या इसाई किस तरह हो सकते थे? कहते हैं कि हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा के बीच एक हज़ार साल की मुद्दत का फ़र्क़ है और हज़रत मूसा और हज़रत ईसा के बीच दो हज़ार साल का फ़र्क़ था। (क़ुर्तबी)

६७. इब्राहीम न तो यहूदी थे न इसाई, बल्कि वह पूरी तरह से सिर्फ़ मुसलमान थे,[1] वह मूर्तिपूजक भी न थे।

مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ يَهُوْدِيًّا وَّلَا نَصْرَانِيًّا وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا ۭ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (67)

६८. सब लोगों से ज़्यादा इब्राहीम के क़रीब वह लोग हैं जिन्होंने उनका कहना माना और यह नबी और जो लोग ईमान लाये, ईमानवालों का वली और मददगार अल्लाह है।

اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَھٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ (68)

६९. अहले किताब का एक गुट चाहता है कि तुम्हें भटका दे, हक़ीक़त में वे ख़ुद अपने आप को भटका रहे हैं और समझते नहीं।[2]

وَدَّتْ طَّاۗىِٕفَةٌ مِّنْ اَھْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْ ۭ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَھُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ (69)

७०. ऐ अहले किताब ! तुम ख़ुद गवाह होने के बावजूद भी अल्लाह की आयतों को क्यों नहीं मानते।

يٰٓاَھْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ (70)

७१. ऐ अहले किताब! जानने के बावजूद भी सच और झूठ को क्यों मिला रहे हो और सच्चाई को क्यों छिपा रहे हो?

يٰٓاَھْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (71)

७२. और अहले किताब के एक गुट ने कहा कि जो कुछ भी ईमानवालों पर उतारा गया है उस पर दिन चढ़े तो ईमान लाओ और शाम के वक़्त इंकार कर दो ताकि यह लोग भी पलट जायें।

وَقَالَتْ طَّاۗىِٕفَةٌ مِّنْ اَھْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ عَلَي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ لَعَلَّھُمْ يَرْجِعُوْنَ (72)

७३. और सिवाय तुम्हारे दीन पर चलने वालों के और किसी पर यक़ीन न करो, आप कह दीजिए! बेशक हिदायत तो अल्लाह ही की हिदायत है। (और यह भी कहते हैं कि इस बात पर भी यक़ीन न करो) कि कोई उस जैसा दिया जाये जैसा तुम दिये गये हो, या यह कि यह तुम

وَلَا تُؤْمِنُوْٓا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ۭ قُلْ اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ ۙ اَنْ يُّؤْتٰٓى اَحَدٌ مِّثْلَ مَآ اُوْتِيْتُمْ اَوْ يُحَاۗجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۭ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ (73)

---

[1] حنيفاً مسلماً (ख़ालिस मुसलमान) यानी शिर्क से नफ़रत करने वाला और सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करने वाला।

[2] यह यहूदियों के हसद और जलन की वज़ाहत है जो वह ईमानवालों से रखते थे और इसी हसद की वजह से मुसलमानों को भटकाने की कोशिश करते थे, अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि इस तरह वह ख़ुद ही अन्जाने में अपने आप को भटका रहे हैं।

से तुम्हारे रब के पास झगड़ा करेंगे, आप कह दीजिए कि फ़ज़्ल तो अल्लाह (तआला) के हाथ में है, वह जिसे चाहे उसे अता करे, अल्लाह (तआला) बहुत बड़ा और जानने वाला है।

يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ (74)

७४. वह अपनी रहमत से जिसे चाहे ख़ास कर ले, और अल्लाह (तआला) फ़ज़्ल वाला और बहुत बड़ा है।

وَمِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ إِنْ تَأْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَنْ إِنْ تَأْمَنْهُ بِدِينَارٍ لَا يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَائِمًا ۗ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمِّيِّينَ سَبِيلٌ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ (75)

७५. और कुछ अहले किताब ऐसे भी हैं कि तू ख़ज़ाने का अमानतदार उन्हें बना दे तो भी तुझे वापस कर दें, और उन में कुछ ऐसे भी हैं कि अगर तू उन्हें एक दीनार भी अमानत के तौर पर दे तो तुझे अदा न करें, हां! यह और बात है कि तू उन के सिर पर ही खड़ा रहे, यह इसलिए कि उन्होंने कह रखा है कि हम पर इन अनपढ़ों के हक़ का कोई गुनाह नहीं, यह लोग जानने के बावजूद भी अल्लाह पर झूठ बोलते हैं।

بَلَىٰ مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ وَاتَّقَىٰ فَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ (76)

७६. क्यों नहीं (पकड़ होगी) लेकिन जो इंसान अपना वादा पूरा करे और अल्लाह तआला से डरे, तो अल्लाह तआला भी ऐसे डरने वालों को अपना दोस्त रखता है।[1]

إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (77)

७७. बेशक जो अल्लाह (तआला) के वादे और अपनी क़समों को थोड़ी सी क़ीमत पर बेच डालते हैं, उन के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं है, अल्लाह (तआला) न तो उन से बातचीत करेगा, न क़ियामत के दिन उनकी ओर देखेगा, न उन्हें पाक करेगा और उन के लिए बहुत बड़ा अज़ाब है।

---

1 "वादा पूरा करे।" का मतलब है वह वादा पूरा करे जो अहले किताब से या हर नबी के वास्ते से उनकी उम्मतों से नबी ﷺ पर ईमान लाने के बारे में लिया गया है। "और अल्लाह से डरे" अल्लाह तआला के ज़रिये रोके गये कामों से रूके और उन बातों के अनुसार कर्म (अमल) करें जो नबी ﷺ बयान करें, ऐसे लोग बेशक अल्लाह की पकड़ से बचे रहेंगे, बल्कि अल्लाह के प्यारे होंगे।

وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلْوُنَ أَلْسِنَتَهُم بِالْكِتَٰبِ لِتَحْسَبُوهُ مِنَ الْكِتَٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتَٰبِ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِندِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِندِ اللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿78﴾

७८. अवश्य उन में ऐसा गिरोह भी है जो किताब पढ़ते हुए अपनी ज़बान मरोड़ लेता है, ताकि तुम उसे किताब ही का लेख समझो, हालांकि हक़ीक़त में वह किताब में से नहीं और यह कहते भी हैं कि वह अल्लाह (तआला) की तरफ़ से हैं, हालांकि हक़ीक़त में वह अल्लाह तआला की तरफ़ से नहीं, वह तो जान बूझ कर अल्लाह (तआला) पर झूठ बोलते हैं।[1]

مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَن يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِّي مِن دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِن كُونُوا رَبَّٰنِيِّينَ بِمَا كُنتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتَٰبَ وَبِمَا كُنتُمْ تَدْرُسُونَ ﴿79﴾

७९. किसी ऐसे इंसान को जिसे अल्लाह (तआला) किताब, हिक्मत और नबूअत अता करे, यह जायेज़ नहीं कि फिर भी लोगों से कहे कि अल्लाह (तआला) को छोड़कर मेरे बन्दे बन जाओ बल्कि वह तो कहेगा कि तुम सब लोग रब के हो जाओ,[2] तुम्हें किताब सिखाने और तुम को पढ़ाने की वजह से।

[1] यह उन यहूदियों का बयान है जिन्होंने अल्लाह की किताब (तौरात) में न केवल बदलाव किया बल्कि दो गुनाह और किये, एक तो ज़बान को मरोड़कर किताब के लफ़्ज़ों को पढ़ते, जिस से जनता को हक़ीक़त के ख़िलाफ़ असर देने में वह सफल हो जाते, दूसरे अपनी मन-गढ़न्त बातों को अल्लाह की बातें कहते, दुर्भाग्य (बद्‌क़िस्मती) से मुसलमानों के धार्मिक अगवाओं (पेशवाओं) में भी, नबी ﷺ की भविष्यवाणी (पेशीनगोई) "لَتَتَّبِعُنَّ سَنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ" (तुम अपने से पहली उम्मतों की क़दम-क़दम पर पैरवी करोगे) के हिसाब से ऐसे बहुत से लोग हैं जो दुनियावी स्वार्थ (ग़र्ज़) या गिरोही तअस्सुब या इख़्तिलाफ़े राय की वजह से क़ुरआन करीम के साथ भी यही सुलूक करते हैं। पढ़ते क़ुरआन की आयत हैं और विषय ख़ुद गढ़ते हैं, जनता समझती है कि मोलवी साहब ने मसले का हल क़ुरआन से निकाला है, हक़ीक़त में इस हल का क़ुरआन से कोई वास्ता नहीं होता या आयत के अर्थों में बदलाव या बनावट से काम लिया जाता है ताकि साबित किया जा सके कि यह अल्लाह की तरफ़ से है।

[2] यह इसाईयों के बारे में कहा जा रहा है कि उन्होंने हज़रत ईसा को माबूद बना दिया है, अगरचे वह एक इंसान थे जिन्हें किताब, हिक्मत और नबूअत से नवाज़ा गया था, और ऐसा कोई इंसान यह दावा नहीं कर सकता कि अल्लाह को छोड़कर मेरे पुजारी और भक्त बन जाओ, बल्कि वह यह कहता है कि अल्लाह वाले बन जाओ।

وَلَا يَأْمُرَكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ أَرْبَابًا ۗ أَيَأْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ﴿80﴾

८०. और वह तुम्हें यह हुक्म नहीं देगा कि फ़रिश्तों (स्वर्गदूतों) और नवियों (ईश्दूतों) को माबूद वना लो, क्या फ़रमावर्दार होने के वाद तुम्हें नाफ़रमान बन जाने का हुक्म देगा।

وَإِذْ أَخَذَ اللّٰهُ مِيثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ آتَيْتُكُمْ مِنْ كِتٰبٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُولٌ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ۗ قَالَ ءَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ إِصْرِي ۗ قَالُوٓا أَقْرَرْنَا ۗ قَالَ فَاشْهَدُوا وَأَنَا مَعَكُمْ مِنَ الشّٰهِدِينَ ﴿81﴾

८१. और जब अल्लाह (तआला) ने नवियों से वायेदा लिया कि जो कुछ मैं तुम्हें किताव और हिक्मत दूं, फिर तुम्हारे पास वह रसूल आये जो तुम्हारे पास की चीज़ को सच बताये तो तुम्हारे लिए उस पर ईमान लाना और उसकी मदद करना ज़रूरी है। फ़रमाया कि तुम क्या इस को क़ुबूल करते हो और उस पर मेरा ज़िम्मा ले रहे हो सब ने कहा हमें क़ुबूल है, फ़रमाया तो गवाह रहो और मैं ख़ुद भी तुम्हारे साथ गवाह हूं।

فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُونَ ﴿82﴾

८२. अब इस के वाद भी जो पलट जाये, वह ज़रूर नाफ़रमान है।[1]

أَفَغَيْرَ دِينِ اللّٰهِ يَبْغُونَ وَلَهٗٓ أَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿83﴾

८३. क्या वह अल्लाह (तआला) के दीन के सिवाय किसी दूसरे दीन की खोज में हैं? जब कि सभी आसमानों वाले और ज़मीन वाले अल्लाह (तआला) के फ़रमांवरदार हैं, ख़ुशी से हों तो और नाख़ुशी से हों तो,[2] सभी को उसकी तरफ़ लौटाया जायेगा।

---

[1] यह अहले किताव (यहूदी और इसाई) और दूसरे धर्म वालों को तंबीह है कि मोहम्मद ﷺ के आ जाने के बाद भी उन पर ईमान लाने के बजाये अपने-अपने दीन का पालन करना इस वादा के ख़िलाफ़ है, जो अल्लाह तआला ने हर नबी के ज़रिये हर उम्मत (समुदायों) से लिया है और इस वादा को तोड़ देना अधर्म है, फ़िसक यहां कुफ़्र के मतलव में है क्योंकि नबूअते मोहम्मदी (ﷺ) से इंकार केवल फ़िसक नही कुफ़्र है।

[2] जब ज़मीन व आसमान की कोई चीज़ अल्लाह तआला की क़ुदरत और ताक़त से वाहर नहीं है, चाहे ख़ुशी से या नाख़ुशी से, तो तुम उस के सामने सिर झुकाने (या इस्लाम क़ुबूल करने से) कहां भाग रहे हो ? अगली आयत में ईमान लाने का तरीक़ा वताकर फिर कहा जा रहा है कि हर नबी को हर आसमान से उतरी किताव पर बिना किसी इख़्तिलाफ़ के ईमान लाना ज़रूरी है, फिर कहा जा रहा है कि इस्लाम दीन के सिवाय दूसरा दीन क़ुबूल नहीं होगा। किसी दूसरे दीन के पैरोंकारों की तक़दीर में सिर्फ़ नुक़सान के और कुछ न होगा।

८४. आप कह दीजिए कि हम अल्लाह (तआला) पर और जो कुछ हम पर उतारा गया है और जो इब्राहीम (عليه السلام) और इस्माईल (عليه السلام) और याकूब (عليه السلام) और उनकी संतान (औलाद) पर उतारा गया, और जो कुछ मूसा (عليه السلام) और ईसा (عليه السلام) और दूसरे नबियों को अल्लाह (तआला) की तरफ़ से अता किये गये उन सब पर ईमान लाये ।[1] हम उन में से किसी के बीच फ़र्क़ नहीं करते और हम अल्लाह (तआला) के फ़रमांवर्दार हैं ।

قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ (84)

८५. और जो (इंसान) इस्लाम के सिवाय किसी दूसरे दीन की खोज करे उसका दीन क़ुबूल नहीं होगा और वह आख़िरत में घाटा उठाने वालों में होगा ।

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ (85)

८६. अल्लाह (तआला) किस तरह से उन लोगों को हिदायत देगा जो अपने ईमान लाने, रसूल की सच्चाई जानने की गवाही देने और अपने पास वाज़ेह निशानी आ जाने के बाद भी काफ़िर हो जायें । अल्लाह (तआला) ऐसे ज़ालिमों को सीधी राह नहीं दिखाता ।

كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ (86)

८७. उन की सज़ा यह है कि उन पर अल्लाह की लानत है और फ़रिश्तों की और सब लोगों की ।

اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ (87)

[1] मतलब सभी नबियों पर ईमान लाना कि वह अपने-अपने वक़्त में अल्लाह की तरफ़ से भेजे गये थे, और उन पर जो किताबें और सहीफ़े उतारे गये, उनके बारे में यह यक़ीन रखना कि वह आसमानी किताबें थीं, जो हक़ीक़त में अल्लाह की तरफ़ से उतारी हुई थीं ज़रूरी है, लेकिन अब पैरवी सिर्फ़ क़ुरआन के हुक्म के ऐतबार से होगी, क्योंकि क़ुरआन ने पिछली किताबों को मंसूख़ कर दिया है ।

८८. वह उस में हमेशा रहेंगे न उन से सजा हल्की की जायेगी और न छूट दिया जायेगा।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿88﴾

८९. लेकिन जो लोग इस के बाद तौबा और सुधार कर लें तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।[1]

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۗ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿89﴾

९०. बेशक जो लोग अपने ईमान (विश्वास) के बाद कुफ़्र (अविश्वास) करें फिर कुफ़्र में बढ़ जायें[2] उनकी तौबा कभी भी क़ुबूल न की जायेगी[3] और यही गुमराह हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ ﴿90﴾

९१. बेशक जो लोग काफ़िर हों और मरते वक़्त तक काफ़िर रहें, उन में से अगर कोई जमीन भर सोना दे, अगरचे (यद्यपि) फ़िदिया में हो तो भी कभी भी क़ुबूल न होगा, इन्हीं के लिए सख़्त अज़ाब है और उनका कोई मददगार नहीं।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ۗ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿91﴾

[1] अन्सार में से एक मुसलमान धर्मभ्रष्ट (मुर्तद्द) हो गया और मूर्तिपूजकों से जा मिला, लेकिन जल्द ही उसे पछतावा हुआ और उस ने लोगों के जरिये रसूल अल्लाह ﷺ तक ख़बर भिजवायी कि (هل لي من توبة) (क्या मेरी तौबा क़ुबूल हो सकती है) उस पर यह आयत उतरी। इस से मालूम हुआ कि मुर्तद्द की सजा जबकि सख़्त है, क्योंकि उस ने हक़ को पहचान लेने के बाद हसद, जलन और सरकशी से सच्चाई से मुंह फेरा और इंकार किया, लेकिन अगर कोई साफ़ दिल से माफ़ी मांगे और अपना सुधार कर ले तो अल्लाह तआला माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है, उसकी तौबा क़ुबूल है।

[2] इस आयत में उनकी सजा का बयान हो रहा है, जो मुर्तद्द होने के बाद माफ़ी न मांगे और इंकार की हालत में मर जाये।

[3] इस से वह माफ़ी का मतलब है जो मौत के वक़्त मांगी जाये, बल्कि माफ़ी का दरवाज़ा हर इंसान के लिए हर वक़्त खुला हुआ है।

९२. जब तक तुम अपनी पसंदीदा माल से अल्लाह (तआला) की राह में न ख़र्च करोगे, कभी भी भलाई न पाओगे और जो कुछ तुम ख़र्च करो उसे अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है।

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۗ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿92﴾

९३. तौरात उतरने से पहले ही (हज़रत) याक़ूब (عليه السلام) ने जिस चीज़ को अपने ऊपर हराम कर लिया था उस के सिवाय सभी खाने इस्राईल की औलाद के लिए हलाल थे। आप कह दीजिए कि अगर तुम सच्चे हो तो तौरात ले आओ और पढ़ सुनाओ।

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَاۗءِيْلُ عَلٰي نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ۭ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْھَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿93﴾

९४. उस के बाद भी जो लोग अल्लाह (तआला) पर झूठा बुहतान लगायें वही ज़ालिम हैं।

فَمَنِ افْتَرٰى عَلَي اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَاُولٰۗىِٕكَ ھُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿94﴾

९५. कह दीजिए कि अल्लाह (तआला) सच्चा है, तुम सभी इब्राहीम हनीफ़ की मिल्लत की पैरवी करो, जो मूर्तिपूजक न थे।

قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۣ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۭ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿95﴾

९६. बेशक (अल्लाह तआला) का पहला घर जो लोगों के लिये बनाया गया, वही है जो मक्का (नगरी) में है जो पूरी दुनिया के लिये मुबारक और हिदायत है।

اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّھُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿96﴾

९७. जिस में वाज़ेह निशानियाँ हैं, "मुक़ामे इब्राहीम" (एक पत्थर है जिस पर ख़ाना कअबा की तामीर के वक़्त हज़रत इब्राहीम खड़े होते थे) इस में जो आ जाये बेख़ौफ़ हो जाता है। अल्लाह (तआला) ने उन लोगों पर जो उस की तरफ़ राह पा सकते हों, उस घर का हज्ज ज़रूरी कर दिया है।[1] और जो कोई कुफ़्र करे, तो अल्लाह

فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ڬ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ۭ وَلِلّٰهِ عَلَي النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ۭ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِىٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿97﴾

---

[1] "रास्ता पा सकते हों" का मतलब यह है कि रास्ते के ख़र्च का इंतेज़ाम हो, यानी इतना माल हो कि रास्ते का ख़र्च आसानी से पूरा हो जाये, इस के सिवाय इंतेज़ाम से मुराद यह भी है कि रास्ते में अमन हो और जान व माल महफ़ूज़ हो। इसी तरह यह भी ज़रूरी है कि सेहत सफ़र

(तआला) पूरी दुनिया से वेनियाज है।[1]

९८. आप कह दीजिए कि ऐ अहले किताव! तुम अल्लाह की आयतों का इंकार क्यों करते हो? और जो कुछ करते हो अल्लाह (तआला) उस पर गवाह है।

قُلْ يَاهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٨﴾

९९. उन अहले किताव से कह दीजिए कि तुम अल्लाह (तआला) की राह (धर्म) से जो ईमान लाये हैं उन्हें क्यों रोकते हो और उस में बुराई ढूंढ़ते हो, जवकि तुम ख़ुद गवाह हो? और अल्लाह (तआला) तुम्हारे अमलों से अंजान नहीं।

قُلْ يَاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ ۭ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٩﴾

१००. ऐ ईमानवालो! अगर तुम अहले किताव के किसी गिरोह की वातें मानोगे तो वह तुम्हारे ईमान लाने के वाद तुम्हें कुफ़्र की तरफ़ फेर देंगे।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٠﴾

१०१. और (यानी यह वाजेह है) तुम किस तरह कुफ़्र कर सकते हो? जवकि तुम पर अल्लाह (तआला) की आयतें पढ़ी जाती हैं और तुम में रसूल (ﷺ) मौजूद हैं, और जो अल्लाह (तआला) के दीन को मजवूती से पकड़ ले वेशक उसे सीधा रास्ता दिखा दिया गया है।

وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ۭ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٠١﴾

१०२. ऐ ईमानवालो! अल्लाह से उतना डरो जितना उस से डरना चाहिए और (देखो) मरते दम तक मुसलमान ही रहना।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٢﴾

के लायक हो, इस के अलावा औरत के लिए उसका महरम जरूरी है। (फ़तहुल क़दीर) यह आयत हर उस इंसान के लिए है जो इस तरह की ताक़त रखे, उस के लिए हज फ़र्ज होने की दलील (तर्क) है। और हदीसों से इस मसले की वजाहत होती है कि जिन्दगी मे एक वार हज फ़र्ज है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[1] हज की ताक़त होने के वाद भी हज न करना क़ुरआन ने इसे कुफ़्र से तावीर किया है, जिस से हज के फ़र्ज होने को और भी ताकत मिलती है, हदीसों में भी ऐसे इंसान को सख्त तंबीह की गयी है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيعًا وَّلَا تَفَرَّقُوا ۠ وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنْتُمْ أَعْدَآءً فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖٓ إِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ۗ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿103﴾

१०३. और अल्लाह (तआला) की रस्सी को सब मिलकर मज़बूती से थाम लो, और गुटबन्दी न करो,[1] और अल्लाह (तआला) की उस वक़्त की नेमत को याद करो जब तुम लोग आपस में एक-दूसरे के दुश्मन थे, उस ने तुम्हारे दिल में प्रेम डाल दिया और तुम उस की नेमत से भाई-भाई हो गये, और तुम आग के गड्ढे के किनारे तक पहुँच चुके थे तो उस ने तुम्हें बचा लिया। अल्लाह (तआला) इसी तरह अपनी निशानियों को बयान करता है ताकि तुम हिदायत पा सको।

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ أُمَّةٌ يَّدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿104﴾

१०४. और तुम में से एक गिरोह ऐसा होना चाहिए, जो भलाई की ओर बुलाये और नेक कामों का हुक्म दे और बुरे कामों से रोके और यही लोग सफल (कामयाब) होने वाले हैं।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۗ وَأُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿105﴾

१०५. और तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने अपने पास वाज़ेह दलील आ जाने के बावजूद भी फूट और भेद डाला, इन्हीं के लिए सख़्त अज़ाब है।

---

[1] ولا تفرقو (और गुटबन्दी न करो) के ज़रिये गुटों में बंटने से रोक लगा दी गयी है, इसका मतलब यह है कि उन दो नियमों से जिनका बयान हो चुका है मुँह फेर लेने की वजह से आपस में फूट पड़ सकती है और तुम अलग-अलग गुटों में बंट जाओगे, इसलिए गुटबन्दी का इतिहास देख लीजिए यही वजह वाज़ेह होकर सामने आयेगी। क़ुरआन और हदीस को समझने और उसकी तफ़सीर में कुछ इख़्तिलाफ़, यह गुटबन्दी की वजह नहीं है, यह इख़्तिलाफ़ तो सहाबा और ताबईन के वक़्त में भी था, लेकिन मुसलमान गुटों में नहीं बंटे थे, क्योंकि आपसी इख़्तिलाफ़ के बाद भी सभी की इताअत का केन्द्र (मरकज़) और यक़ीन का बिन्दु एक ही था और वह है क़ुरआन और रसूलुल्लाह ﷺ की हदीस, लेकिन जब शख़्सियत के नाम पर ख़्यालों का प्रदर्शन (इज़हार) होने लगा, तो इताअत और अक़ीदा के यह केन्द्र और बिन्दु बदल गये। अपने-अपने पेशवाओं और उन के क़ौल और ख़्यालात पहले मुक़ाम पर और अल्लाह और उस के रसूल ﷺ के क़ौल और हुक्म दूसरे मुक़ाम पर कर दिये गये और यहीं से उम्मते मुसलिमा में गुटबन्दी शुरू हुई, जो रोज़ बरोज़ बढ़ती ही गयी और बहुत मज़बूत हो गयी।

يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ فَأَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۚ أَكَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿106﴾

१०६. जिस दिन कुछ मुंह सफेद होंगे और कुछ काले,[1] काले मुंह वालों (से कहा जायेगा) कि तुम ने ईमान लाने के बाद कुफ्र क्यों किया? अपने इंकार की सजा चखो।

وَأَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿107﴾

१०७. और सफेद मुंह वाले अल्लाह (तआला) की रहमत में होंगे और उस में हमेशा रहेंगे।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿108﴾

१०८. (हे नबी)! हम इन सच्ची आयतों की तिलावत आप पर कर रहे हैं और अल्लाह (तआला) का इरादा लोगों पर जुल्म करने का नहीं है।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ؕ وَإِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْأُمُوْرُ ﴿109﴾

१०९. और अल्लाह (तआला) के लिए है जो कुछ आसमानों और जमीन में है और अल्लाह (तआला) की तरफ़ सभी कामों को लौटना है।

كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ أَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَأَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿110﴾

११०. तुम सब से अच्छी उम्मत हो जो लोगों के लिए पैदा की गयी है कि तुम नेक कामों का हुक्म देते हो और बुरे कामों से रोकते हो, और अल्लाह (तआला) पर ईमान रखते हो। अगर अहले किताब ईमान लाते तो उन के लिए बेहतर होता, उन में ईमानवाले भी हैं, लेकिन ज़्यादातर लोग फ़ासिक़ हैं।

لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ إِلَّا أَذًى ؕ وَإِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْأَدْبَارَ ۚ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿111﴾

१११. यह लोग तुम्हें सताने के सिवाय और ज़्यादा कुछ नुक़सान नहीं पहुंचा सकते और अगर तुम से लड़ाई हो तो पीठ फेर लेंगे, फिर वे मदद नहीं दिये जायेंगे।

[1] हज़रत इब्ने अब्बास (رضی اللہ عنہما) ने इस से अहले सुन्नत वल जमाअत और अहले बिदअत मुराद लिया है। (इब्ने कसीर और फ़तहुल क़दीर) इस से मालूम हुआ कि इस्लाम वही है जिस पर अहले सुन्नत वल जमाअत काम कर रहे हैं, और अहले बिदअत और मुख़ालिफ़ीन लोग इस्लाम के उस वरदान (नेमत) से महरूम हैं, जो नजात (मोक्ष) का सबब है।

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ أَيْنَ مَا ثُقِفُوٓا إِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُو بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ۚ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُونَ الْأَنْبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۚ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿112﴾

११२. यह हर जगह पर जलील हैं, यह और बात है कि अल्लाह (तआला) की या लोगों की पनाह में हों, यह अल्लाह के ग़जब के हक़दार हो गये, और उन पर ग़रीबी थोप दी गयी। यह इसलिए कि यह लोग अल्लाह (तआला) की आयतों को नहीं मानते थे और बिला वजह नबियों को क़त्ल करते थे, यह बदला इनकी नाफ़रमानियों और हुदूद तोड़ने (सीमा लांघने) का है।

لَيْسُوا سَوَآءً ۚ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ أُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُونَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُونَ ﴿113﴾

११३. यह सारे के सारे एक जैसे नहीं, बल्कि इन अहले किताब में एक गिरोह (सच्चाई पर) क़ायम भी है जो रात में अल्लाह की आयत पढ़ते और सज्दा करते हैं।

يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرٰتِ ۚ وَأُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِينَ ﴿114﴾

११४. यह अल्लाह और क़यामत (प्रलय) पर विश्वास (ईमान) रखते हैं, भलाईयों का आदेश करते और बुराईयों से रोकते हैं, और भलाई के कामों में जल्दी करते हैं, यह नेक लोगों में से हैं।

وَمَا يَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوهُ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيمٌۢ بِالْمُتَّقِينَ ﴿115﴾

११५. और यह जो कुछ भी भलाई करें उसका अनादर (नाक़दरी) न किया जायेगा और अल्लाह (तआला) परहेजगारों को अच्छी तरह जानता है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَآ أَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۚ وَأُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ﴿116﴾

११६. बेशक काफ़िरों को उन के माल और उन की औलाद अल्लाह के यहां कुछ काम न आयेंगी, यह तो जहन्नमी (नरकीय) हैं जिस में वे हमेशा रहेंगे।

مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿117﴾

११७. वह जो भी इस दुनियावी ज़िंदगी में ख़र्च करते हैं उस हवा के समान है जिसमें पाला हो जो किसी ज़ालिम क़ौम के खेत को लग कर उसका नाश कर दे,[1] अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया लेकिन वह ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे थे ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ؕ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۖۚ وَمَا تُخْفِيْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿118﴾

११८. ऐ ईमानवालो ! तुम अपना हार्दिक मित्र (जिगरी दोस्त) ईमानवालों के सिवाय किसी दूसरे को न बनाओ, (तुम नहीं देखते दूसरे लोग तो) तुम्हारी तबाही में कोई कसर उठा नही रखते, वह तो चाहते यह हैं कि तुम दुख में पड़ो, उनकी दुश्मनी तो ख़ुद उनके मुंह से भी वाजेह हो चुकी है और वह जो उन के सीनों में छिपा है वह बहुत ज़्यादा है, हम ने तुम्हारे लिए आयतों को बयान कर दिया तुम अक़्लमंद हो (तो फ़िक्र करो)

هٰٓاَنْتُمْ اُولَآءِ تُحِبُّوْنَهُمْ وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۖۚ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ؕ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿119﴾

११९. हां, तुम तो उन से मुहब्बत करते हो और वह तुम से मुहब्बत नही करते, तुम पूरी किताब को मानते हो और (वह नहीं मानते फिर मुहब्बत कैसी?) यह तुम्हारे सामने तो अपने ईमान को क़ुबूल करते हैं, लेकिन अकेले में ग़ुस्से में ऊंगलियां चबाते हैं ।[2] कह दो अपने ग़ुस्से में ही मर जाओगे, अल्लाह तआला सीनों की छुपी बातों को अच्छी तरह जानता है ।

---

[1] क़यामत के दिन काफ़िरों के माल काम आयेंगे न औलाद, यहां तक कि भलाई के कामों में ख़र्च किया हुआ माल भी बेकार हो जायेगा, और उनका मुवाज़ना उस पाले की जैसी है जो हरी-भरी खेती को जलाकर बर्बाद कर देता है, ज़ालिम इन खेतियों को देखकर ख़ुश हो रहे होते हैं और फ़ायेदा की उम्मीद करते हैं कि अचानक उनकी उम्मीदें मिट्टी में मिल जाती हैं । इस से मालूम हुआ कि जब तक ईमान नही होगा तब तक भलाई में माल ख़र्च करने वालों की दुनिया में चाहे जितनी मशहूर क्यों न हो, आख़िरत में उन्हें उसका बदला कुछ न मिलेगा, वहां तो उन के लिए रोज़ाना जहन्नम में रहने का अज़ाब ही है ।

[2] عَضَّ يَعَضُّ का मतलब दांत से काटने के हैं, यह उनके ग़ुस्से की ज़्यादती व तेज़ी का बयान है, जैसाकि अगली आयत اِنْ تَمْسَسْكُمْ में भी उनकी इसी हालत को वाज़ेह किया जा रहा है ।

१२०. तुम्हें अगर भलाई मिले तो उन्हें बुरा लगता है, (हाँ), अगर बुराई पहुँचे तो खुश होते हैं, अगर तुम सब्र करो और परहेजगारी करो तो उनकी चाल तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचायेगी। अल्लाह (तआला) ने उन के अमलों को घेर रखा है।

إِن تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَإِن تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا بِهَا ۖ وَإِن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا ۗ إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿120﴾

१२१. (ऐ नबी! उस वक्त को भी याद करो) जब सुबह ही सुबह आप अपने घर से निकल कर मुसलमानों को मैदाने जंग में लड़ाई के मोर्चे पर ठीक तरह से[1] बिठा रहे थे, और अल्लाह तआला सुनने जानने वाला है।

وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿121﴾

१२२. जब तुम्हारे दो गिरोह ने हिम्मत खो दिया,[2] उनका वली अल्लाह है,[3] और उसी अल्लाह पर मुसलमानों को भरोसा करना चाहिए।

إِذْ هَمَّت طَّائِفَتَانِ مِنكُمْ أَن تَفْشَلَا وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿122﴾

१२३. और अल्लाह ने बद्र की जंग में तुम्हारी उस वक्त मदद की जबकि तुम गिरी हुई हालत में थे,[4] इसलिए अल्लाह से डरो ताकि शुक्रगुजार बनो।

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنتُمْ أَذِلَّةٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿123﴾

१२४. जब आप मुसलमानों को तसल्ली दे रहे थे, क्या तुम्हें यह काफी नहीं होगा कि अल्लाह तीन हजार फरिश्ते उतार कर तुम्हारी मदद करे।

إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَن يَكْفِيَكُمْ أَن يُمِدَّكُمْ رَبُّكُم بِثَلَاثَةِ آلَافٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُنزَلِينَ ﴿124﴾

---

[1] ज़्यादातर व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) के नजदीक यह ओहद के जंग की घटना (वाक़ेआ) है, जो शव्वाल (रमजान के बाद का महीना जिसे ईद का महीना भी कहते हैं लेकिन वास्तविक (हक़ीक़ी) अरबी नाम यह है) ३ हिजरी में हुई।

[2] यह औस और खजरज के दो क़बीले (बनू हारिसा और बनू सलमा) थे।

[3] इस से मालूम हुआ के अल्लाह ने उन की मदद की और उन की कमजोरी को दूर करके उन को हिम्मत दिया।

[4] तादाद और सामान की कमी के आधार पर, क्योंकि बद्र की जंग में मुसलमानों की तादाद ३१३ थी और वह भी बिना सामान के, सिर्फ दो घोड़े और सत्तर ऊँट थे, बाक़ी सभी पैदल थे। (इब्ने कसीर)

بَلٰٓى اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿125﴾

१२५. क्यों नहीं? अगर तुम सब्र और परहेजगारी करो और यह लोग इसी दम तुम्हारे पास आ जायें तो तुम्हारा रब तुम्हारी मदद पाँच हजार फ़रिश्तों से करेगा जो निशानदार होंगे।

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ؕ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿126﴾

१२६. और हम ने इसे तुम्हारे लिये सिर्फ़ खुशखबरी और तुम्हारे दिलों के इत्मिनान के लिए बनाया, वर्ना मदद तो ग़ालिब, हिक्मत वाले अल्लाह की तरफ़ से ही होती है।

لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآئِبِيْنَ ﴿127﴾

१२७. (इस अल्लाह की मदद का मक़सद यह था कि अल्लाह) काफ़िरों के एक गिरोह को काट दे या ज़लील कर दे और वह नाकाम होकर लौटें।

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿128﴾

१२८. (हे पैग़म्बर) आप के वश में कुछ नहीं[1] अल्लाह (तआला) चाहे तो उनकी तौबा क़ुबूल कर ले या अज़ाब दे, क्योंकि वे ज़ालिम हैं।

وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿129﴾

१२९. आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह ही का है, वह जिसे चाहे माफ़ करे और जिसे चाहे अज़ाब दे और अल्लाह (तआला) बख़्शने वाला, रहम करने वाला है।

---

[1] यानी उन काफ़िरों को हिदायत देना या उनके बारे में किसी तरह का फ़ैसला करना अल्लाह के वश में है, हदीस में आता है कि ओहद की जंग में नबी ﷺ के दाँत भी शहीद हुए और चेहरा भी ज़ख़्मी हुआ तो आप ने कहा कि, "वह कौम किस तरह कामयाब होगी जिस ने अपने नबी को घायल कर दिया।" यानी आप ने उनकी हिदायत से नाउम्मीदी ज़ाहिर की, इस पर यह आयत उतरी। इस तरह कुछ कथनों में आता है कि आप ﷺ ने कुछ काफ़िरों के लिए क़ुनूते नाज़िला का एहतेमाम किया, जिस में उन के लिये बद्दुआ दिया, जिस पर यह आयत अल्लाह तआला ने उतारी, इसलिए आप ने बद्दुआ बन्द कर दिया। (इब्ने कसीर व फ़तहुल क़दीर)

इस आयत से उन लोगों को नसीहत लेनी चाहिए जो नबी ﷺ को मुख़्तार कुल मानते हैं कि उन को इतना भी हक़ नहीं था कि किसी को सच्ची राह पर लगा दें, अगरचे कि आप मार्ग (हिदायत) की तरफ़ बुलाने के लिये भेजे गये थे।

१३०. ऐ ईमानवालो! दुगुना तिगुना कर ब्याज न खाओ,[1] और अल्लाह (तआला) से डरो ताकि तुम्हें कामयाबी मिले।

يَآأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَوٰٓا أَضْعَافًا مُّضَٰعَفَةً ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ (130)

१३१. और उस आग से डरो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गयी है।

وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي أُعِدَّتْ لِلْكَٰفِرِينَ (131)

१३२. और अल्लाह और उसके रसूल के हुक्मों की पैरवी करो, ताकि तुम पर मेहरबानी की जाये।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ (132)

१३३. और अपने रब की माफ़ी की तरफ़ और उस जन्नत की ओर दौड़ो[2] जिसकी चौड़ाई आसमानों और ज़मीन के बराबर है, जो परहेज़गारों के लिए तैयार की गयी है।

وَسَارِعُوٓا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمَٰوَٰتُ وَالْأَرْضُ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ (133)

१३४. जो लोग आसानी में और तकलीफ़ में (भी अल्लाह की राह में) ख़र्च करते हैं, ग़ुस्से को पी जाते हैं, और लोगों को माफ़ करने वाले हैं।[3] अल्लाह उन परहेज़गारों को दोस्त रखता है।

الَّذِينَ يُنفِقُونَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكَٰظِمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ (134)

---

[1] चूँकि ओहद की जंग में नाकामी रसूल अल्लाह ﷺ के हुक्म पर अमल न करने और दुनियावी दौलत से लालच की वजह से हुई थी, इसलिए अब दुनिया के लालच की सब से ज़्यादा ख़तरनाक और स्थाई (मुस्तक़िल) रूप ब्याज से मना किया जा रहा है और हुक्म को बजा लाने पर ज़ोर दिया जा रहा है, और बढ़ा-चढ़ा कर ब्याज न खाओ का यह कभी भी मतलब नहीं है कि अगर आम ब्याज है तो जायेज़ है, बल्कि ब्याज थोड़ा हो ज़्यादा, अकेला हो या मिला हुआ सभी नाजायेज़ है जैसा कि पहले गुज़र चुका है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अल्लाह से डरो और उस आग से डरो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गयी है, जिस से यह तंबीह भी है कि अगर ब्याज लेने से न रुके तो यह अमल तुम्हें कुफ़्र तक पहुँचा सकता है, क्योंकि ऐसा करना अल्लाह और उस के रसूल से जंग का एलान है।

[2] धन-दौलत और दुनिया के पीछे लगकर आख़िरत (परलोक) बर्बाद करने के बजाय अल्लाह और रसूल के हुक्मों की पैरवी करो और अल्लाह की माफ़ी और उसकी जन्नत की राह अपनाओ जो फ़रमाँबर्दारों के लिए बनायी गयी है, इसलिए आगे फ़रमाबर्दारों की कुछ फ़ज़ीलतें बतायी गयी हैं।

[3] यानी जब उन्हें गुस्सा आता है तो उसे पी जाते हैं, यानी गुस्से से काम नहीं करते और उन्हें माफ़ कर देते हैं जो उन के साथ बुराई करते हैं।

وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ وَمَن يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿135﴾

१३५. जब उन से कोई बुरा काम हो जाये या कोई गुनाह कर बैठें, तो जल्दी ही अल्लाह की याद और अपने गुनाहों के लिए तौबा करते हैं,[1] और हक़ीक़त में अल्लाह (तआला) के सिवाय गुनाहों को कौन माफ़ कर सकता है, और वे जानते हुये अपने किये पर इसरार नहीं करते।

أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُم مَّغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَجَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ﴿136﴾

१३६. उन्हीं का बदला उन के पालनहार की ओर से माफ़ी और बाग़ है जिन के नीचे नहरें बह रही हैं जिस में वह हमेशा रहेंगे और सदाचारियों (नेक काम करने वालों) का यह कितना अच्छा अज्र है।

قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكُمْ سُنَنٌ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿137﴾

१३७. तुम से पहले से नियम चला आ रहा है, तुम धरती में यात्रा (सफ़र) करो तथा देखो कि जो अल्लाह की आयतों को नहीं माने उनका अन्त (अंजाम) कैसा हुआ।

هَٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ﴿138﴾

१३८. यह लोगों के लिये एक बयान और परहेज़गारों के लिये हिदायत और नसीहत है।

وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿139﴾

१३९. तुम हिम्मत न खोओ, न फ़िक्र करो, अगर तुम ईमानदार हो तो तुम्हीं विजयी होगे।

إِن يَمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهُ ۚ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذَ مِنكُمْ شُهَدَاءَ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿140﴾

१४०. (इस जंग में) अगर तुम ज़ख़्मी हुये हो तो वह भी (बद्र की जंग में) इसी तरह ज़ख़्मी हुये हैं और इन दिनों को हम लोगों के बीच अदलते-बदलते रहते हैं,[2] ताकि अल्लाह ईमान वालों को (अलग करके) देख ले, और तुम में से

---

[1] यानी उन के इंसान होने की वजह से जब उन से कोई गुनाह या ग़लती हो जाती है, तो फ़ौरन तौबा करने लगते हैं।

[2] एक और तरह से मुसलमानों को तसल्ली दी जा रही है कि अगर ओहद में तुम्हारे कुछ लोग घायल हुये हैं तो क्या हुआ? तुम्हारे मुख़ालिफ़ भी तो बद्र की जंग में और ओहद के शुरू में इसी तरह घायल हो चुके हैं और यह अल्लाह की रीति है कि वह जीत हार के दिनों को बदलता रहता है, कभी जीतने वाले को हरा कर कभी हारने वाले को जिता कर देता है।

कुछ को शहीद बना दे, और अल्लाह जालिमों से मुहब्बत नहीं करता।

१४१. और ताकि अल्लाह मोमिनों को अलग कर ले और काफ़िरों का सत्यानाश कर दे।

وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿141﴾

१४२. क्या तुम ने सोचा है कि जन्नत (स्वर्ग) में दाख़िल हो जाओगे हालांकि अभी अल्लाह ने यह नहीं देखा है कि कौन तुम में जिहाद (धर्मयुद्ध) करते हैं और कौन सब्र करते हैं।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿142﴾

१४३. और तुम इस से पहले मौत की तमन्ना करते थे अब तो तुम ने उसे आंखों से देख लिया।

وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۖ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿143﴾

१४४. और मुहम्मद[1] तो सिर्फ़ एक रसूल हैं, इस से पहले बहुत से रसूल गुजरे हैं तो अगर वह मर जायें या मार दिये जायें तो क्या तुम (इस्लाम) से एड़ियों के बल फिर जाओगे और जो कोई अपनी एड़ी के बल फिर जाये वह अल्लाह को कोई नुक़सान (हानि नहीं पहुंचा सकेगा, और अल्लाह शुक्रगुज़ारों को जल्द बदला देगा।

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۭ اَفَا۟ىِٕنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ۭ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰي عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـــًٔا ۭ وَسَيَجْزِي اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿144﴾

१४५. और बिना अल्लाह तआला के हुक्म के कोई जीव नहीं मर सकता, मुक़र्ररा वक़्त लिखा हुआ है, दुनिया से मुहब्बत करने वालों को हम कुछ दुनिया अता कर देते हैं और आख़िरत का सवाब चाहने वालों को हम वह भी अता करेंगे और शुक्रिया अदा करने वालों को हम जल्द ही अच्छा बदला देंगे।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ۭ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۭ وَسَنَجْزِي الشّٰكِرِيْنَ ﴿145﴾

[1] मुहम्मद ﷺ सिर्फ़ रसूल (ईशदूत) ही हैं, यानी उनकी विशेषता (ख़ुसूसियत) भी रिसालत है यह नहीं कि वह इंसानी ख़ुसूसियत से ऊपर और ख़ुदाई सिफ़ात से युक्त (मुत्तसिफ़) हैं कि उन्हें मौत से पाला न पड़े।

وَكَأَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ أَصَابَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ (146)

१४६. और बहुत से नबियों के साथ बहुत से अल्लाह वाले जिहाद (धर्मयुद्ध) कर चुके हैं, उन्हें भी अल्लाह की राह में दुख पहुंचे, लेकिन न तो उन्होंने हिम्मत खोई न कमजोर रहे और न दबे और अल्लाह सब्र करने वालों को ही चाहता है।

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ إِلَّآ أَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِيْٓ أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ (147)

१४७. और वह यही कहते रहे कि हे हमारे रब हमारे गुनाहों को माफ कर दे और हम से हमारे कामों में अकारण ज़्यादती हुई हो, उसे माफ़ कर और हमें मजबूती अता कर और हमें काफ़िरों की क़ौम पर मदद अता कर।

فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ (148)

१४८. और अल्लाह तआला ने उन्हें दुनिया का सवाब दिया और आख़िरत के पुण्य (सवाब) की विशेषता (फ़ज़ीलत) भी प्रदान (अता) की और अल्लाह तआला नेकी करने वालों को दोस्त रखता है।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰٓى أَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ (149)

१४९. हे ईमानवालो! अगर तुम काफ़िरों की बातें मानोगे तो वह तुम्हें तुम्हारी एड़ी के बल पलटा देंगे (यानी तुम्हें मुर्तद्द बना देंगे) फिर तुम घाटे में हो जाओगे।

بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ (150)

१५०. बल्कि अल्लाह (तआला) तुम्हारा मालिक है और वही सब से अच्छा मददगार है।

سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَآ أَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَأْوٰىهُمُ النَّارُ ۗ وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ (151)

१५१. हम जल्द ही काफ़िरों के दिलों में डर डाल देंगे, इस वजह से कि वे अल्लाह के साथ उन चीज़ों को साझी करते हैं, जिस की कोई दलील अल्लाह ने नहीं उतारी,[1] उनका ठिकाना

[1] मुसलमानों की हार देखते हुए कुछ काफ़िरों के दिलों में यह ख़्याल आया कि यह मुसलमानों को ख़त्म करने का अच्छा मौक़ा है, इस मौक़ा पर अल्लाह तआला ने उन के दिलों में मुसलमानों का डर डाल दिया, फिर उन्हें अपने इस ख़्याल को पूरा करने की हिम्मत न रही। (फ़तहुल क़दीर) सहीहैन की हदीस में है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया कि मुझे पांच चीज़ें ऐसी अता

जहन्नम (नरक) है और उन ज़ालिमों की बुरी जगह है।

१५२. और अल्लाह (तआला) ने अपना वादा सच्चा कर दिखाया जबकि तुम उस के हुक्म से उन्हें काट रहे थे, यहाँ तक कि जब तुम अपना हौसला खो रहे थे और काम में झगड़ने लगे, और नाफ़रमानी की उस के बाद कि उस ने तुम्हारी मनपसंद चीजें तुम्हें दिखा दीं, तुम में से कुछ दुनिया चाहते थे और कुछ का आख़िरत का विचार (ख़्याल) था तो फिर उस ने तुम्हें उन से फेर दिया ताकि तुम्हारा इम्तेहान ले और बेशक उस ने तुम्हारी ग़ल्ती को माफ़ कर दिया और ईमानवालों पर अल्लाह (तआला) बहुत फ़ज़्ल वाला है।[1]

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗٓ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰٓى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِى الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَآ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ۭ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿152﴾

(प्रदान) की गयी हैं, जो मुझ से पहले किसी नबी को नहीं अता की गयी उन में एक यह है कि (نُصِرْتُ بِالرُّعْبِ مَسِيرَةَ شَهْرٍ) "दुश्मन के दिल में एक माह की दूरी तक मेरा डर डालकर, मेरी मदद की गयी है।"

इस हदीस से मालूम हुआ कि आप ﷺ का डर स्थाई (मुस्तक़िल) रूप से दुश्मनों के दिलों में डाल दिया गया, इस आयत से मालूम होता है कि आप ﷺ के साथ आप की उम्मत यानी मुसलमानों का भी डर मूर्तिपूजकों के दिलों में डाल दिया गया है, इसकी वजह उन का शिर्क है, यानी मूर्तिपूजकों का दिल दूसरों के डर से काँपता रहता है, शायद यही वजह है कि मुसलमानों की एक बड़ी तादाद मूर्तिपूजकों की तरह यक़ीन और अमल की वजह से ही दुश्मन उन से डरने के बजाय वह दुश्मनों से डरते हैं।

[1] इस में सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की उस ख़ुसूसियत का बयान है जो उनकी कमियों के बाद भी अल्लाह ने उन पर फ़रमाया, यानी उनकी ग़लतियों का स्पष्टीकरण (वज़ाहत) करके कि भविष्य (मुस्तक़बिल) में ऐसा न करें, अल्लाह ने उन के लिए माफ़ी का एलान कर दिया ताकि कोई हासिद उन पर इल्ज़ाम न लगा सके, जब अल्लाह तआला ने ही क़ुरआन करीम में उन के लिए सामान्य (आम) माफ़ी का एलान कर दिया, तो अब किसी को ताना या इल्ज़ाम लगाने का कोई मौक़ा कहाँ रह गया ?

إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلْوُونَ عَلَىٰٓ أَحَدٍ وَٱلرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِىٓ أُخْرَىٰكُمْ فَأَثَٰبَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوا۟ عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَآ أَصَٰبَكُمْ ۗ وَٱللَّهُ خَبِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿153﴾

१५३. जबकि तुम चढ़े चले जा रहे थे, किसी की ओर ध्यान तक नहीं करते थे और अल्लाह के रसूल तुम को पीछे से पुकार रहे थे, बस तुम्हें दुख पर दुख पहुँचा ताकि तुम अपनी खोयी (विजय) पर ग़म न करो और न उस (सदमा) पर जो तुम्हें पहुँचा[1] और अल्लाह (तआला) तुम्हारे सारे कर्मों (आमाल) को जानता है।

ثُمَّ أَنزَلَ عَلَيْكُم مِّنۢ بَعْدِ ٱلْغَمِّ أَمَنَةً نُّعَاسًا يَغْشَىٰ طَآئِفَةً مِّنكُمْ ۖ وَطَآئِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِٱللَّهِ غَيْرَ ٱلْحَقِّ ظَنَّ ٱلْجَٰهِلِيَّةِ ۖ يَقُولُونَ هَل لَّنَا مِنَ ٱلْأَمْرِ مِن شَىْءٍ ۗ قُلْ إِنَّ ٱلْأَمْرَ كُلَّهُۥ لِلَّهِ ۗ يُخْفُونَ فِىٓ أَنفُسِهِم مَّا لَا يُبْدُونَ لَكَ ۖ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ ٱلْأَمْرِ شَىْءٌ مَّا قُتِلْنَا هَٰهُنَا ۗ قُل لَّوْ كُنتُمْ فِى بُيُوتِكُمْ لَبَرَزَ ٱلَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ ٱلْقَتْلُ إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ ۖ وَلِيَبْتَلِىَ ٱللَّهُ مَا فِى صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِى قُلُوبِكُمْ ۗ وَٱللَّهُ عَلِيمٌۢ بِذَاتِ ٱلصُّدُورِ ﴿154﴾

१५४. फिर उस दुख के बाद तुम पर शान्ति उतारी और तुम में से एक गिरोह को शान्ति की नींद आने लगी, और हाँ, कुछ वह लोग भी थे जिन्हें अपनी जानों की पड़ी थी।[2] वह अल्लाह तआला के लिए नाहक़ मूर्खता जैसा ग़लत ख़्याल करने लगे और कहते थे कि हमें भी कुछ हक़ है, आप कह दीजिए काम तो कुल का कुल अल्लाह के वश में है, यह लोग अपने दिलों के भेद आप को नहीं बताते, कहते हैं कि अगर हमें कुछ भी अधिकार (हक़) होता तो यहाँ क़त्ल न किये जाते। आप कह दीजिए कि अगर तुम अपने घरों में होते तो भी जिन के नसीब में क़त्ल होना था वह क़त्ल के मुक़ाम की तरफ़ चल खड़े होते। अल्लाह (तआला) को तुम्हारे सीनों के अन्दर का इम्तेहान लेना था और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उस से पाक करना था, और अल्लाह (तआला) ग़ैब का जानने वाला है (दिलों के भेद अच्छी तरह जानता है)।

---

[1] यानी यह दुख पर दुख इसलिए दिया ताकि तुम्हारे अन्दर दु:ख सहन करने की ताक़त और मज़बूत इरादा और हिम्मत पैदा हो, जब यह ताक़त और हिम्मत पैदा हो जाती है तो फिर इंसान को खोई चीज़ पर दुख नहीं होता, तकलीफ़ पर किसी तरह की आधीरता (मलाल) नहीं होती है।

[2] इस से मुराद मुनाफ़िक़ हैं, वाज़ेह (स्पष्ट) है कि ऐसी हालत में उन को तो अपनी जानों की ही पड़ी थी।

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿155﴾

१५५. तुम में से जिन लोगों ने उस दिन पीठ दिखाई जिस दिन दोनों गिरोहों में मुठभेड़ हुई थी, यह लोग अपने कुछ कर्मों (आमाल) की वजह से शैतान के बहकावे में आ गये, लेकिन यक़ीन करो कि अल्लाह ने उन्हें माफ कर दिया, अल्लाह तआला माफ करने वाला धैर्य (हिल्म) वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا فِي الْأَرْضِ أَوْ كَانُوا غُزًّى لَّوْ كَانُوا عِندَنَا مَا مَاتُوا وَمَا قُتِلُوا لِيَجْعَلَ اللَّهُ ذَٰلِكَ حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ وَاللَّهُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿156﴾

१५६. हे मुसलमानो! तुम उनकी तरह न बनो जो नाशुक्रे हो गये और उन के भाईयों ने जब ज़मीन में सफ़र किया या जिहाद के लिये निकले तो कहा कि अगर वह हमारे पास रहते तो उन्हें मौत न आती न उनका क़त्ल होता,[1] (उन के इस ख़्याल की वजह यह है कि) अल्लाह इसे उन के दिलों के हसरत की वजह बना दे, ज़िन्दगी और मौत अल्लाह ही देता है और अल्लाह तुम्हारे अमलों को देख रहा है।

وَلَئِن قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿157﴾

१५७. अगर तुम अल्लाह की राह में शहीद हो जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की माफी और रहमत उस (माल) से अच्छी है जो वे जमा कर रहे हैं।[2]

وَلَئِن مُّتُّمْ أَوْ قُتِلْتُمْ لَإِلَى اللَّهِ تُحْشَرُونَ ﴿158﴾

१५८. और तुम मरो या मारे जाओ तुम्हें अल्लाह के पास ही जमा होना है।

---

[1] ईमानवालों को काफ़िरों और मुनाफ़िकों के जैसे ईमान से रोका जा रहा है, क्योंकि यह ईमान बुज़दिली का आधार है। इस के ख़िलाफ जब यक़ीन हो कि मौत व हयात अल्लाह तआला के हाथ में है, फिर यह कि मौत का वक़्त मुक़र्रर है तो इस से इंसान के अन्दर इरादा, हिम्मत और अल्लाह की राह में लड़ने की भावना (ख़्वाहिश) पैदा होती है।

[2] मौत तो यक़ीनी आनी है, लेकिन अगर मौत ऐसी आये जिस के बाद इंसान अल्लाह की माफ़ी और कृपा का पात्र (मुस्तहिक़) हो जाये, तो यह दुनिया की धन-दौलत से बेहतर है, जिस को जमा करने में इंसान ज़िन्दगी खपा देता है, इसलिए अल्लाह की राह में जिहाद करने से पीछे नहीं हटना चाहिए इससे लगाव और मुहब्बत होनी चाहिए क्योंकि इस से अल्लाह की माफ़ी और रहमत हासिल हो जाती है, लेकिन इस के साथ शर्त है कि मन की पाकीज़गी के साथ हो।

फ़बिमा रह़्मतिम् मिनल्लाहि लिन्-त लहुम्

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ ۚ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللهِ ۗ إِنَّ اللهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿159﴾

१५९. अल्लाह की रहमत की वजह से आप उन के लिये कोमल वन गये हैं और अगर आप वदज़ुबान और सख़्त दिल होते तो यह सब आप के पास से भाग खड़े होते, इसलिए आप उन्हें माफ़ करें,[1] और उन के लिए क्षमा-याचना करें और काम का मशवरा उन से किया करें,[2] फिर जब आप का पुख़्ता इरादा हो जाये तो अल्लाह (तआला) पर भरोसा करें[3] और अल्लाह (तआला) भरोसा करने वालों को दोस्त रखता है।

إِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَإِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ بَعْدِهٖ ۗ وَعَلَى اللهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿160﴾

१६०. अगर अल्लाह तआला तुम्हारी मदद करे तो तुम पर कोई ग़ालिब नहीं हो सकता, और अगर वह तुम्हें छोड़ दे तो कौन है जो तुम्हारी मदद करे? और ईमानवालों को अल्लाह तआला पर ही भरोसा करना चाहिए।

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَّغُلَّ ۗ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿161﴾

१६१. और यह नामुमकिन है कि नवी के ज़रिये ख़्यानत हो जाये, हर ख़्यानत करने वाला क़यामत के दिन ख़्यानत को लेकर हाज़िर होगा, फिर हर इंसान को अपने अमल का पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा और उन पर ज़ुल्म न किया जायेगा।

---

[1] नवी ﷺ जो ऊँचे अख़लाक़ वाले थे, अल्लाह तआला अपने इस पैग़म्बर पर एक परोपकार (एहसान) का बयान कर रहा है कि आप ﷺ के अन्दर जो नर्मी है यह अल्लाह तआला की ख़ास रहमत का नतीजा है, अगर आप ﷺ के अन्दर यह न होती इसके विपरीत आप ﷺ दुर्व्यवहारी (वद्अख़लाक़) और सख़्त दिल के होते तो लोग आप ﷺ से क़रीव होने के वजाय दूर भागते, इसलिए आप ﷺ माफ़ी से ही काम लें।

[2] यानी मुसलमानों की तसल्ली के लिए मशविरा कर लिया करें, इस आयत से मशविरा की अहमियत, फ़ज़ीलत, फ़ायेदा, उसकी ज़रूरत और अच्छा होना सावित होता है। मशविरा लेने का यह हुक्म कुछ आलिमों के नज़दीक ज़रूरी है और कुछ के विचार में समुचित (मुस्तहव)।

[3] यानी मशविरा के बाद जिस पर आप का इरादा पक्का हो जाये, फिर अल्लाह पर भरोसा करके कर डालें, इस से तो एक वात यह मालूम हुई कि मशविरा के वाद आख़िरी फ़ैसला हाकिम ही का होगा न कि परामर्शदाता (मश्वरा देने वाला) या उन के वहुमत (अकसरियत) का जैसाकि लोकतन्त्र में है। दूसरी यह कि सारा भरोसा अल्लाह पर ही होगा न कि मशविरा देने वालों की अक़्ल या समझ पर। अगली आयत में भी अल्लाह पर भरोसा करने पर और ज़ोर दिया जा रहा है।

१६२. क्या वह इंसान जिस ने अल्लाह की खुशी का अनुसरण (इत्तेबा) किया उस के समान है जो अल्लाह के गुस्से के साथ लौटा? और उसका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरी जगह है।

أَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللَّهِ كَمَنْ بَاءَ بِسَخَطٍ مِنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿162﴾

१६३. अल्लाह तआला के पास उन के अलग-अलग दर्जे हैं और उन के सभी अमलों को अल्लाह अच्छी तरह देख रहा है।

هُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿163﴾

१६४. बेशक मुसलमानों पर अल्लाह का उपकार (एहसान) है कि उस ने उन्हीं में से एक रसूल उन में भेजा जो उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब और सूझ-बूझ सिखाता है,[1] और बेशक यह सब उस से पहले वाज़ेह तौर से भटके हुए थे।

لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا مِنْ أَنْفُسِهِمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿164﴾

१६५. (क्या बात है) कि जब तुम पर एक मुसीबत आई जिस के दुगना तुम ने उन्हें पहुँचाई है तो तुम ने कहा कि यह कहाँ से आयी। (हे रसूल) आप कह दें कि यह तुम ने खुद अपने ऊपर डाली है, बेशक हर चीज़ पर अल्लाह कुदरत

أَوَلَمَّا أَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُمْ مِثْلَيْهَا قُلْتُمْ أَنَّىٰ هَٰذَا ۖ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿165﴾

---

[1] इस आयत में रिसालत के तीन ख़ास मक़सद का बयान है। (१) आयतों की तिलावत (२) पाक करना (३) किताब और सूझ-बूझ की नसीहत। किताब की शिक्षा (इल्म) में तिलावत ख़ुद आ जाती है, तिलावत के साथ ही शिक्षा मुमकिन है, तिलावत के बिना शिक्षा का अस्तित्व (वजूद) नहीं, इस के सिवाय तिलावत को एक मक़सद के तौर पर बयान किया गया है, इससे इस बिन्दु का स्पष्टीकरण (वज़ाहत) होता है कि तिलावत ख़ुद भी पाकी और सवाब का काम है, चाहे पढ़ने वाला उसका मतलब समझे या न समझे। क़ुरआन का मतलब और मक़सद समझने की कोशिश करना हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है, लेकिन जब तक यह मक़सद हासिल न हो या इतनी समझ व क़ाबलियत न हो, क़ुरआन की तिलावत में सुस्ती या रूके रहना ठीक नहीं, पाकी का मतलब है ईमान, अमल और अख़लाक़ का सुधार। जिस तरह आप ﷺ ने उन्हें मूर्तिपूजा से हटाकर तौहीद की तरफ़ लगाया, इसी तरह बहुत असभ्य (ग़ैर मुहज़्ज़ब) और ग़लत समाज को सभ्य (तहज़ीब) और चरित्र (अख़लाक़) के रास्ते पर चलाया, हिक्मत (समझ-बूझ) व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) के क़रीब हदीस है।

रखता है ।

وَمَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿166﴾

१६६. और दोनों गिरोहों की मुठभेड़ के दिन तुम्हें जो कुछ पहुंचा तो यह अल्लाह के हुक्म से पहुंचा और ताकि अल्लाह मुसलमानों को जाहिरी तौर से जान ले ।

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۚۖ وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوِ ادْفَعُوْا ؕ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّا اتَّبَعْنٰكُمْ ؕ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَىِٕذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿167﴾

१६७. और मुनाफिकों को जान ले जिन से कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में लड़ो या हमले से वचाव करो तो उन्होंने कहा कि अगर हम जानते कि लड़ाई होगी तो जरूर तुम्हारा साथ देते, वह उस दिन ईमान की निसवत कुफ्र से करीब थे, अपने मुख से वह बात कर रहे थे जो उन के दिलों में न थी, और अल्लाह उसे जानता है जिसे वे छुपाते हैं ।

اَلَّذِيْنَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ؕ قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿168﴾

१६८. जिन्होंने अपने भाईयों के लिये कहा और ख़ुद भी वैठे रहे कि अगर वह हमारी बात मानते तो क़त्ल न किये जाते, कह दो कि अगर तुम सच्चे हो तो अपनी मौत को टाल दो ।[1]

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿169﴾

१६९. और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये उन्हें मुर्दा न समझो वल्कि वे ज़िन्दा हैं, अपने रब के पास रोजी दिये जा रहे हैं ।[2]

[1] यह मुनाफिकों के उस क़ौल का खण्डन (तरदीद) है कि "अगर वह हमारी वात मान लेते तो मारे न जाते ।" अल्लाह तआला ने फ़रमाया अगर तुम सच्चे हो तो तुम अपने ऊपर से मौत को टाल दो, मुराद यह है कि नसीव से किसी को अलग नही किया गया, मौत भी जहां और जिस तरह नसीव में है, उसी जगह पर और उसी तरह आकर रहेगी, इसलिए जिहाद और अल्लाह की राह में लड़ने से रुकने या भागने से कोई मौत के पंजे से नहीं वच सकता ।

[2] शहीदों की यह ज़िन्दगी वास्तविक (हक़ीक़ी) है या काल्पनिक (ख़्याली) ? बेशक वास्तविक है, लेकिन इसका इल्म दुनिया वालों को नहीं है, जैसाकि क़ुरआन ने वाजेह कर दिया है । देखिए सूर: अल-बक़र:-१५४ । फिर इस ज़िन्दगी का मतलव क्या है? कुछ कहते हैं कि क़ब्रों में उनकी रूहें लौटा दी जाती हैं और वह अल्लाह की अता की गयी नेमतों को हासिल करके ख़ुश होते हैं, कुछ कहते हैं कि जन्नत के फलों की ख़ुशवू उन्हें आती रहती है, जिस से उनकी पाक रूहें मगन रहती है, लेकिन हदीस से एक तीसरी हालत सामने आती है, इसलिए वही सही है वह यह कि उनकी रूहें हरे पंक्षियों के जिस्म में या सीने में दाख़िल कर दी जाती हैं और वह जन्नत

१७०. अल्लाह तआला ने अपनी कृपा (फ़ज़्ल) जो उन को दे रखी है, उस से वह बहुत खुश हैं और खुशियाँ मना रहे हैं उन लोगों के बारे में जो अब तक उन से नहीं मिले उन के पीछे हैं, इस बात पर कि उन को न कोई डर है और न कोई ग़म।

فَرِحِينَ بِمَآ ءَاتَىٰهُمُ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦ وَيَسْتَبْشِرُونَ بِٱلَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا۟ بِهِم مِّنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿170﴾

१७१. वह अल्लाह की नेमत और फ़ज़्ल से खुश होते हैं और उस से भी कि अल्लाह तआला ईमानवालों के अज्र को बर्बाद नहीं करता।

يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ ٱللَّهِ وَفَضْلٍ وَأَنَّ ٱللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿171﴾

१७२. जिन लोगों ने घायल होने के बाद (भी) अल्लाह और रसूल का हुक्म मान लिया उन में से जो नेक काम किये और परहेज़गार रहे उन के लिए बड़ा अज्र है।

ٱلَّذِينَ ٱسْتَجَابُوا۟ لِلَّهِ وَٱلرَّسُولِ مِنۢ بَعْدِ مَآ أَصَابَهُمُ ٱلْقَرْحُ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا۟ مِنْهُمْ وَٱتَّقَوْا۟ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿172﴾

१७३. जिनसे लोगों ने कहा कि लोग तुम्हारे लिये जमा हो चुके हैं इसलिए उन से डरो, तो उनका ईमान बढ़ गया और कहा कि अल्लाह हमारे लिये बस है और वह सब से अच्छा संरक्षक (वली) है।[1]

ٱلَّذِينَ قَالَ لَهُمُ ٱلنَّاسُ إِنَّ ٱلنَّاسَ قَدْ جَمَعُوا۟ لَكُمْ فَٱخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَٰنًا وَقَالُوا۟ حَسْبُنَا ٱللَّهُ وَنِعْمَ ٱلْوَكِيلُ ﴿173﴾

में खाती पीती फिरती है और वहाँ की नेमतों से फ़ायदेमंद होती रहती हैं। (फ़तहुल क़दीर, निर्देशित सहीह मुस्लिम किताबुल ईमार:)

[1] "हमराउल असद" और कहा जाता है कि छोटे बद्र के मुक़ाम पर अबू सुफ़ियान ने कुछ लोगों की खिदमत पैसा देकर हासिल की और उन के ज़रिये मुसलमानों में यह अफ़वाह फैला दी कि मक्का के मूर्तिपूजक जंग के लिए भरपूर तैयारी कर रहे हैं, ताकि यह सुन कर मुसलमानों की हिम्मत टूट जाये। कुछ कथनों (रिवायतों) में यह है कि यह काम शैतान ने अपने चेलों से लिया, लेकिन मुसलमान यह अफ़वाह सुन कर और भी मज़बूत इरादे और हिम्मत से तैयार हो गये, जिसको यहाँ ईमान की अधिकता से तुलना (ताबीर) की गयी है क्योंकि ईमान जितना मज़बूत होगा जिहाद की हिम्मत और इरादा भी उतना ही ज़्यादा होगा। यह आयत इस बात की गवाह है कि ईमान कोई ठोस चीज़ नहीं है, बल्कि इस में कमी और ज़्यादती होती रहती है जैसाकि मोहद्दिसीन का ख़्याल है, यह भी मालूम हुआ कि दुख में ईमान वाले अल्लाह पर यक़ीन और भरोसा करते हैं इसीलिए हदीस में (حَسْبُنَا اللهُ وَنِعْمَ الوَكِيل) पढ़ने पर बल दिया गया है, इसी तरह सहीह बुख़ारी में है हज़रत इब्राहीम ﷺ को जब आग में डाला गया तो आप की ज़बान पर यही लफ़्ज़ थे। (फ़तहुल क़दीर)

فَانْقَلَبُوا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوءٌ وَاتَّبَعُوا رِضْوَانَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ ﴿174﴾

१७४. (साबित यह हुआ कि) वह अल्लाह की नेमत के साथ वापस हुए उन्हें कोई दुख नहीं पहुंचा, उन्होंने अल्लाह की रज़ामंदी का रास्ता अपनाया और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है।

إِنَّمَا ذَٰلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءَهُ فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿175﴾

१७५. यह शैतान ही है जो अपने दोस्तों से डराता है, इसलिए उन से न डरो मुझ से ही डरो अगर तुम ईमान वाले हो।

وَلَا يَحْزُنكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ ۚ إِنَّهُمْ لَن يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۗ يُرِيدُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي الْآخِرَةِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿176﴾

१७६. जो तेज़ी से कुफ़्र में जा रहे हैं, उन से आप ग़मगीन न हों, वह अल्लाह तआला का कुछ न बिगाड़ सकेंगे, अल्लाह आख़िरत में उन्हें कोई हिस्सा नहीं देना चाहता[1] और उन के लिए बड़ा अज़ाब है।

إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَن يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿177﴾

१७७. कुफ़्र को ईमान के बदले ख़रीदने वाले लोग कदापि-कदापि अल्लाह (तआला) को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकते और उन्हीं के लिए सख़्त अज़ाब है।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ خَيْرٌ لِّأَنفُسِهِمْ ۚ إِنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ لِيَزْدَادُوا إِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿178﴾

१७८. काफ़िर लोग यह न सोचें कि हमारा उन्हें मुहलत देना उन के लिये अच्छा है, हम यह मुहलत इसलिये दे रहे हैं कि वह और ज़्यादा गुनाह कर लें, और उन्हीं के लिये अपमानित (रुस्वा करने वाला) यातना (अज़ाब) है।[2]

---

[1] नबी ﷺ की दिली तमन्ना थी कि सभी लोग मुसलमान हो जायें, इसी वजह से उन के इंकार और झुठलाने से आप को दुख होता था, अल्लाह तआला ने इस आयत में आप ﷺ को तसल्ली दी है कि आप दुखी न हों यह अल्लाह का कुछ न बिगाड़ सकेंगे, अपनी ही आख़िरत ख़राब कर रहे हैं।

[2] इस आयत में अल्लाह तआला के वक़्त देने के क़ानून का बयान है, यानी अल्लाह तआला अपने क़ानून और मर्ज़ी से काफ़िरों को वक़्त अता करता है, वक़्ती तौर से उन्हें सांसारिक ख़ुशहाली और माल व औलाद अता (प्रदान) करता है, लोग समझते हैं कि उन पर अल्लाह की रहमत हो रही है, लेकिन अगर अल्लाह की अता की हुई सुख-समृद्धि (ऐशो-आराम) से लाभान्वित होने वाले सवाब और अल्लाह के हुक्म का पालन (पैरवी) करने का मार्ग (रास्ता) नही अपनाते तो

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۖ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿179﴾

१७९. जिस हाल पर तुम हो उसी पर अल्लाह ईमानवालों को छोड़ नहीं देगा, जब तक कि पाक और नापाक को अलग-अलग न कर दे, और न अल्लाह ऐसा है कि तुम्हें ग़ैब से बाख़बर कर दे, लेकिन अल्लाह अपने रसूलों में से जिसको चाहे चुन लेता है, इसलिए तुम अल्लाह (तआला) पर और उसके रसूलों पर ईमान रखो, अगर तुम ईमान लाओ और अल्लाह से परहेज़गारी करो तो तुम्हारे लिए बहुत बड़ा बदला है।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿180﴾

१८०. और जिन को अल्लाह ने अपनी कृपा (फ़ज़्ल) से (धन) दिया है और वह उस में कंजूसी करते हैं तो इसे अच्छा न समझें बल्कि वह उन के लिए बहुत बुरा है, उन्होंने जिस (धन) में कंजूसी की है क़यामत के दिन उन के (गले का) तौक़ होगा[1] और आसमानों व ज़मीन का हक़ (मीरास) सिर्फ़ अल्लाह के लिये है, और वह तुम्हारे आमाल से बाख़बर है।

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿181﴾

१८१. बेशक अल्लाह ने उन लोगों की बात सुन ली है जिन्होंने कहा कि अल्लाह ग़रीब है और हम गनी हैं, हम उनकी यह बात लिख लेंगे और इन के ज़रिये रसूलों का नाहक़ क़त्ल को भी और हम कहेंगे कि जलने का अज़ाब चखो।

यह दुनियावी सुख अल्लाह तआला की नेमत नहीं, अल्लाह कि तरफ़ से वक़्त अता करना है, जिस से उन के कुफ़्र और नाफ़रमानी में बढ़ोत्तरी ही होती है, आख़िर वह नरक की स्थाई (दायमी) यातना के हक़दार हो जाते हैं।

[1] इस में उस कंजूस का बयान किया गया है, जो अल्लाह के दिये हुए माल को अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करता, यहाँ तक कि उन में से फ़र्ज़ ज़कात भी नहीं निकालता। सहीह बुख़ारी की हदीस में आता है कि क़यामत के दिन उसके माल को एक ज़हरीले साँप बनाकर ज़ंजीर की तरह गले में डाल दिया जायेगा, वह साँप उस की बाँहें पकड़ेगा और कहेगा कि मैं तेरा माल हूँ, तेरा ख़ज़ाना हूँ।

१८२. यह तुम्हारे करतूत हैं और बेशक अल्लाह अपने बन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं करता।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿182﴾

१८३. इन्होंने कहा कि हम से अल्लाह ने वादा लिया है कि हम किसी रसूल को न मानें जब तक कि वह हमारे सामने ऐसी क़ुर्बानी न लाये जिसे आग खा जाये, आप कहिये कि तुम्हारे पास मुझ से पहले रसूल दलायेल और उस के साथ वह भी लाये जो तुम ने कहा तो तुम ने उन्हें क्यों क़त्ल किया अगर तुम सच्चे हो।

اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ۭ قُلْ قَدْ جَاۗءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْھُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿183﴾

१८४. फिर भी अगर यह लोग आप को झुठलायें, तो आप से पहले बहुत से रसूल झुठलाये गये, जो अपने साथ स्पष्ट प्रमाण, (वाज़ेह दलायल) सहीफ़े और रौशन किताब लेकर आये।[1]

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَاۗءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿184﴾

१८५. हर जानदार को मौत का मज़ा चखना ही है और क़यामत के दिन तुम अपने बदले पूरे-पूरे दिये जाओगे, लेकिन जो इंसान आग से हटा दिया जाये और जन्नत (स्वर्ग) में दाख़िल करा दिया जाये, बेशक वह सफल हो गया और दुनिया की ज़िन्दगी सिर्फ़ धोखे का सामान है।[2]

كُلُّ نَفْسٍ ذَاۗىِٕقَةُ الْمَوْتِ ۭ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿185﴾

---

[1] नबी ﷺ को तसल्ली दी जा रही है कि आप यहूदियों की कटहुज्जती से उदास न हों, इस तरह का सुलूक सिर्फ़ आप के साथ नहीं किया जा रहा है, बल्कि आप से पहले आने वाले पैग़म्बरों के साथ भी यही किया जा चुका है।

[2] इस आयत में एक अटल हक़ीक़त का बयान है कि मौत से कोई भाग नहीं सकता। दूसरा यह कि दुनिया में जिस ने भी अच्छा या बुरा जो कुछ किया है, उसको उसका पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा। तीसरा कामयाबी की हद बतायी गयी है कि हक़ीक़त में कामयाब वह है जिस ने दुनिया में रहकर अपने रब को ख़ुश कर लिया जिसके नतीजे में वह जहन्नम से आज़ाद कर दिया गया और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया। चौथा यह कि दुनिया की ज़िन्दगी धोखे का सामान है, जो उस से अपना दामन बचाकर निकल गया, वह नसीब वाला है और जो उस मे फँस गया, नाकाम और बदनसीब है।

१८६. वेशक तुम्हारे माल व जान में तुम्हारा इम्तेहान लिया जायेगा, और जरूर तुम्हें उन लोगों की जो तुम से पहले किताव दिये गये और मूर्तिपूजकों की वहुत सी दुख देने वाली वातें सुननी पड़ेगीं और अगर तुम सब्र करो और हुक्म को मानो, तो जरूर यह वहुत वड़े हिम्मत का काम है ।[1]

لَتُبْلَوُنَّ فِيٓ أَمْوَٰلِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ مِن قَبْلِكُمْ وَمِنَ ٱلَّذِينَ أَشْرَكُوٓا۟ أَذًى كَثِيرًا ۚ وَإِن تَصْبِرُوا۟ وَتَتَّقُوا۟ فَإِنَّ ذَٰلِكَ مِنْ عَزْمِ ٱلْأُمُورِ ﴿186﴾

१८७. और जब अल्लाह (तआला) ने अहले किताव से वादा लिया कि तुम उसे सभी लोगों से जरूर वयान करोगे और उसे छिपाओगे नहीं, तो फिर भी उन लोगों ने उस वादा को पीठ पीछे डाल दिया और उसे वहुत कम दाम पर वेच डाला, उनकी यह तिजारत वहुत वुरी है।

وَإِذْ أَخَذَ ٱللَّهُ مِيثَٰقَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهُۥ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُونَهُۥ فَنَبَذُوهُ وَرَآءَ ظُهُورِهِمْ وَٱشْتَرَوْا۟ بِهِۦ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُونَ ﴿187﴾

१८८. वह लोग जो अपने करतूतों पर खुश हैं और चाहते हैं कि जो उन्होंने नहीं किया उस पर भी उनकी तारीफ़ की जाये, आप उन्हें अजाव से आजाद न समझिये, उन के लिए तो दर्दनाक अज़ाव हैं।

لَا تَحْسَبَنَّ ٱلَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَآ أَتَوا۟ وَّيُحِبُّونَ أَن يُحْمَدُوا۟ بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا۟ فَلَا تَحْسَبَنَّهُم بِمَفَازَةٍ مِّنَ ٱلْعَذَابِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿188﴾

---

[1] अहले किताव से मुराद यहूदी और इसाई हैं, यह नवी ﷺ, इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ ग़लत कलिमात अदा करते थे, यही हालत अरव के मूर्तिपूजकों की थी, इनके सिवाय मदीने में आने के वाद मुनाफ़िक़ ख़ास तौर से उनका मुखिया अव्दुल्लाह विन उवैय्य भी आप की मान-मर्यादा (इज़्ज़त-वक़ार) पर वार करता था, आप ﷺ के मदीना आने से पहले मदीनावासी उसे अपना सरदार वनाने वाले थे, और उसके ताज पहनाने की तैयारी पूरी हो चुकी थी कि आप ﷺ के आने से उसका यह ख़्वाव टूट गया, जिसका उसे वहुत दुख था, इसलिए प्रतिशोध (इंतिक़ाम) की भावना की वजह से वह आप के ख़िलाफ़ अपमान और निन्दा (मुजम्मत) करने का कोई मौक़ा हाथ से नहीं जाने देता था (जैसाकि वुख़ारी के हवाले से इसका आवश्यक विवरण पिछले हाशिया में गुजर चुका है)। इस हालत में मुसलमानों को माफ़ करने और सब्र करने की तालीम दी जा रही है, जिस से मालूम हुआ कि इस्लाम की दावत देने वालों को दुखों और तकलीफ़ों का होना इस सच्चे रास्ते में अटल परिस्थिति (हालात) में से है और इसका इलाज सब्र अल्लाह के दीन की मज़वूती के लिए अल्लाह की मदद की तमन्ना और अल्लाह की ओर लौटने के सिवाय कुछ भी नहीं। (इव्ने कसीर)

१८९. और आसमानों व जमीन का मालिक अल्लाह (तआला) ही है और अल्लाह (तआला) हर चीज पर क़ुदरत रखता है।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ (189)

१९०. बेशक आसमानों और ज़मीन के बनाने में और रात-दिन के हेर-फेर में यक़ीनन अक़्ल वालों के लिए निशानियाँ हैं।

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّیْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ (190)

१९१. जो अल्लाह (तआला) की याद खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर लेटे हुए करते हैं और आसमानों व ज़मीन की पैदाईश पर विचार करते हैं (और कहते हैं) कि हे हमारे रब ! तूने यह सब बिना फ़ायेदा के नही बनाया, तू पाक है, बस तू हमें आग के अज़ाब से बचा ले।[1]

الَّذِیْنَ یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِیٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰی جُنُوْبِهِمْ وَیَتَفَكَّرُوْنَ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (191)

१९२. ऐ हमारे पालनहार! तू जिसे आग में डाले बेशक तूने उसे अपमानित (ज़लील) किया और ज़ालिमों का मददगार कोई नहीं है।

رَبَّنَاۤ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَیْتَهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِیْنَ مِنْ اَنْصَارٍ (192)

१९३. हे हमारे रब! हम ने सुना कि एक पुकारने वाला ईमान की तरफ पुकार रहा है कि लोगो! अपने रब पर ईमान लाओ और हम ईमान लाये। हे हमारे रब! अब तो हमारे गुनाह माफ़ कर दे और हमारी बुराईयाँ हम से दूर कर दे और हमारी मौत नेक लोगों के साथ कर।

رَبَّنَاۤ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِیًا یُّنَادِیْ لِلْاِیْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖۗ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَیِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ (193)

१९४. हे हमारे रब! हमें वह अता कर जिसका वादा तूने हम से अपने रसूलों के मुँह से किया है और हमें क़यामत के दिन रुस्वा न कर, बेशक तू वादा के ख़िलाफ़ नहीं करता।

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰی رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ (194)

[1] इन दस आयतों में से पहली आयत में अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत व ताक़त के कुछ लक्षणों (नमूनों) की चर्चा की है और फ़रमाया कि यह निशानियाँ ज़रूर हैं लेकिन किन के लिए? अक़्लमंदों और आलिमों के लिए यानी इसका मतलब यह हुआ कि इन अजायबे क़ुदरत और उस के सामर्थ्य (क़ुदरत) को देखकर भी जिसे अल्लाह का इल्म (ज्ञान) न हो वह अक़्लमंद नहीं है।

फ़स्तजा-ब लहुम रब्बुहुम अन्नी ला उज़ीउ अ़-म-ल आ़मिलिम् मिन्कुम् मिन् ज़-करिन् औ उन्सा, बअ्ज़ुकुम् मिम्बअ्ज़िन्, फ़ल्लज़ी-न हाजरू व उख्रिजू मिन् दियारिहिम् व ऊज़ू फ़ी सबीली व क़ातलू व क़ुतिलू ल उकफ़्फ़िरन्-न अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल उद्ख़िलन्नहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु सवाबम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि, वल्लाहु अ़िन्दहू हुस्नुस्-सवाब (195)

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّیْ لَآ اُضِیْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰی ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَالَّذِیْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِیَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِیْ سَبِیْلِیْ وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَیِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿195﴾

१९५. अतः उन के पालनहार ने उन की दुआ क़ुबूल की[1] कि तुम में से किसी अमल करने वाले के अमल को चाहे वह मर्द हो या औरत में कभी बेकार नहीं करता।[2] तुम आपस में एक-दूसरे से हो, इसलिए वह लोग जिन्होंने हिजरत (धर्म के कारण स्थानान्तरण) किया और अपने घरों से निकाल दिये गये और जिन्हें मेरी राह में तकलीफ़ दी गई और जिन्होंने जिहाद किया और शहीद किये गये, जरूर मैं उनकी बुराईयाँ उन से दूर कर दूँगा और जरूर उन को उस जन्नत में ले जाऊँगा, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, यह है सवाब अल्लाह (तआला) की तरफ़ से और अल्लाह (तआला) ही के पास अच्छा बदला है।

لَا یَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فِی الْبِلَادِ ﴿196﴾

१९६. नगरों में काफ़िरों का आना-जाना तुझे धोखे में न डाल दे।

مَتَاعٌ قَلِیْلٌ ۫ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿197﴾

१९७. यह तो बहुत ही थोड़ा फ़ायेदा है,[3] उस के बाद उनका ठिकाना तो जहन्नम है और वह बुरी जगह है।

---

[1] فاستجاب यहाँ أجاب यानी क़ुबूल किया के अर्थ (मायने) में इस्तेमाल हुआ है।

[2] मर्द हो या औरत का बयान इसलिये कर दिया गया है कि इस्लाम ने कुछ कामों में मर्द-औरत के बीच उन के एक-दूसरे से फ़ितरी इख़्तिलाफ़ और गुणों (सिफ़तों) के आधार पर जो अन्तर (फ़र्क़) किया है। जैसे विलायत और हाकमियत में, जीविका उपार्जन में जिहाद में भाग लेने में और विरासत में आधा हिस्सा मिलने में, इस से यह मतलब न निकाल लिया जाये कि सवाब के कामों के बदला में भी शायद मर्द-औरत में कुछ फ़र्क़ किया जायेगा, नहीं, ऐसा नहीं होगा। सब का बराबर बदला मिलेगा, वही सवाब अगर एक औरत करेगी तो उसको भी वही बदला मिलेगा।

[3] यह दुनिया के साधन, आराम और सहूलतें खुले तौर से चाहे जितने ज़्यादा क्यों न हों, हक़ीक़त में थोड़ी सी सामग्री है क्योंकि आख़िर में उनको बरबाद होना है और उनकी तबाही से पहले वह लोग ख़ुद भी बरबाद हो जायेंगे, जो उन को हासिल करने की वजह से अल्लाह तआला को भी भूल जाते हैं और हर तरह के सामाजिक बन्धनों और अल्लाह की सीमाओं (हुदूद) का उल्लंघन (तजावुज़) करते हैं।

لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿198﴾

१९८. लेकिन जो लोग अपने रब से डरते रहे उन के लिए जन्नत हैं, जिन के नीचे नहरें वह रही हैं, उन में वे हमेशा रहेंगे, यह अल्लाह की ओर से मेहमान नवाज़ी है, और सवाब का काम करने वालों के लिए अल्लाह (तआला) के पास जो कुछ भी है वह सब से बेहतर और अच्छा है।[1]

وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿199﴾

१९९. और ज़रूर अहले किताब में से भी कुछ लोग ऐसे हैं, जो अल्लाह (तआला) पर ईमान लाते हैं और तुम्हारी तरफ़ जो उतारा गया है और जो उनकी ओर उतारा गया उस पर भी। अल्लाह तआला से डर के रहते हैं, और अल्लाह (तआला) की आयतों को छोटे-छोटे दामों पर नहीं बेचते,[2] उनका बदला उन के रब के पास है। बेशक अल्लाह (तआला) जल्द ही हिसाब लेने वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۟ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿200﴾

२००. ऐ ईमानवालो! तुम सब्र (धैर्य) करो, और एक-दूसरे को थामे रखो और जिहाद (धर्मयुद्ध) के लिए तैयार रहो ताकि तुम कामयाबी को पहुँचो।

---

[1] उन के खिलाफ़ जो परहेज़गारी और अल्लाह के डर से ज़िन्दगी गुज़ार के अल्लाह के घर में हाज़िर होंगे, अगरचे उन के पास अल्लाह को भूल जाने वालों की तरह माल की ज़्यादती और दौलत उस तरह उपलब्ध (हासिल) न होगी, लेकिन वह अल्लाह के मेहमान होंगे जो तमाम कायनात का मालिक है, और वहाँ उन को जो बदला मिलेगा, वह उस से ज़्यादा होगा जो दुनिया में काफ़िरों को सामायिक रूप (वक़्ती तौर) से हासिल हुआ था।

[2] इस आयत में अहले किताब के उस गिरोह का बयान है, जिन्हें रसूल करीम ﷺ की रिसालत पर ईमान लाने की खुशनसीबी हासिल हुई, उन के ईमान और ईमान के गुणों (सिफ़्तों) का बयान करके अल्लाह तआला ने दूसरे अहले किताब से उन्हें बेहतर कर दिया।

सूरतुन निसा-४

سُورَةُ النِّسَاءِ

सूरः निसा[1] मदीना में उतरी और इस में एक सौ छिहत्तर आयतें और चौवीस रूकूउ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱتَّقُوا۟ رَبَّكُمُ ٱلَّذِى خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَٰحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَآءً ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ٱلَّذِى تَسَآءَلُونَ بِهِۦ وَٱلْأَرْحَامَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ①

१. हे लोगो! अपने उस पालनहार से डरो जिस ने तुम को एक जान से पैदा किया और उसी से उसकी वीवी को पैदा किया[2] और दोनों से वहुत से मर्द-औरत फैला दिये और उस अल्लाह से डरो जिस के नाम पर एक-दूसरे से मांगते हो और रिश्ता तोड़ने[3] से (भी वचो), वेशक अल्लाह तुम पर संरक्षक (निगहवां) है।

---

[1] **सूरतुन निसा-**

निसा का मतलव "औरतें" है, इस सूरः में औरतों के बहुत से मसले का वयान है, इसलिए इसे सूरः निसा कहा जाता है।

[2] "एक जान" से मतलव इंसानों के परम पिता हजरत आदम ﷺ हैं, और ﴿وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا﴾ में مِنْهَا से "वही जीव" यानी आदम और उन से उनकी वीवी हजरत हौवा को पैदा किया, हजरत हौवा हजरत आदम से किस तरह पैदा हुई, इस में इख़्तिलाफ है। हजरत इव्ने अव्वास के क़ौल के हिसाव से हजरत हौवा मर्द (यानी आदम) से पैदा हुई यानी उनकी वायीं पसली से, एक हदीस में भी कहा गया है।

«إِنَّ الْمَرْأَةَ خُلِقَتْ مِنْ ضِلَعٍ وَإِنَّ أَعْوَجَ شَيْءٍ فِي الضِّلَعِ أَعْلاهُ»

(सहीह वुख़ारी, किताव वदऊल ख़ल्क़, सहीह मुस्लिम, कितावुल रिदाओं)

"औरत पसली से पैदा की गयी है और पसली में सव से टेढ़ी ऊपरी है, अगर तू उसे सीधा करना चाहे तो तोड़ वैठेगा और अगर तू उस से फ़ायेदा उठाना चाहे, टेढ़ेपन से ही फ़ायेदा उठा सकता है।"

[3] والأرحام का मतलव है रिश्तों को तोड़ने से वचो। رحم-أرحام का बहुवचन (जमा) है, मतलव रिश्ता है, जो मां के गर्भ के आधार पर वनते हैं इस से शादी के लायक और शादी के लायक नहीं (क़रीवी रिश्तेदार) दोनों रिश्ता मुराद है, रिश्तों का तोड़ना वहुत वड़ा गुनाह है। हदीस में क़रीवी रिश्तेदारों को हर हालत में रिश्ता जोड़ने और उन के हुक़ूक़ को अदा करने पर ख़ास जोर दिया गया है, जिसे रिश्ता जोड़ना कहा जाता है।

وَاٰتُوا الْيَتٰمٰٓى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۖ وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَهُمْ اِلٰٓى اَمْوَالِكُمْ ۚ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ﴿2﴾

२. और यतीमों को उन का माल दे दो और पाक के बदले नापाक न लो और अपने माल में मिलाकर उनका माल न खाओ, बेशक यह बड़ा गुनाह है।

وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِى الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَلَّا تَعُوْلُوْا ﴿3﴾

३. और अगर तुम्हें डर हो कि यतीम लड़कियों से शादी करके तुम इंसाफ न कर सकोगे तो और औरतों में जो तुम्हें अच्छी लगें तुम उन से शादी कर लो, दो-दो, तीन-तीन, चार-चार, लेकिन अगर अदल न रखने का डर है तो एक ही काफी है या तुम्हारी मिल्कियत की दासियाँ यह ज़्यादा क़रीब है कि (ऐसा करने से नाइंसाफ़ी और) एक ओर झुक जाने से बचो।[1]

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ۚ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَىْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓـًٔا مَّرِيْٓـًٔا ﴿4﴾

४. और औरतों को उन के महर (जो राशि विवाह के लिए मान्य हो) मर्जी से दे दो, और अगर वह ख़ुद अपनी मर्जी से कुछ महर छोड़ दें तो उसे अपनी मर्जी से खाओ पिओ।

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِىْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيٰمًا وَّارْزُقُوْهُمْ فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿5﴾

५. और बेअक़्लों को अपना माल जिसे अल्लाह ने तुम्हारा सहारा बनाया है न दो और उन में से उन्हें खिलाओ और पहनाओ और उन से नर्म बात बोलो।

---

[1] यानी एक ही औरत से शादी करने में भलाई है, क्योंकि एक से ज़्यादा बीवियाँ रखने की हालत में सभी के साथ इंसाफ़ करना मुश्किल है, जिसकी तरफ़ दिली मुहब्बत ज़्यादा होगी उसी की तरफ़ जीवन-सामग्री उपलब्ध (मुहय्या) करने में ज़्यादा ध्यान होगा, इस तरह बीवियों के बीच इंसाफ़ करने में नाकाम होगा और अल्लाह के यहाँ गुनहगार होगा, क़ुरआन ने इस हक़ीक़त को दूसरी जगह पर बहुत वाज़ेह तौर से इस तरह बयान किया है।

﴿وَلَنْ تَسْتَطِيعُوا أَنْ تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوهَا كَالْمُعَلَّقَةِ﴾

"और तुम कभी भी इस बात की ताक़त न रखोगे कि बीवियों के बीच इंसाफ़ रख सको, अगरचे तुम ख़्वाहिश रखो (तो यह ज़रूर करो) कि एक तरफ़ न झुक जाओ और दूसरी बीवियों को बीच पर लटका दो।" (सूरः निसा-१२९)

इस से मालूम हुआ कि एक से ज़्यादा शादियाँ और बीवियों के साथ इंसाफ़ न करना ग़लत है और बहुत भयानक भी।

وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰىٓ اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَاِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَاْكُلُوْهَآ اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ۗ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿6﴾

६. और यतीमों को उनके बालिग़ हो जाने तक सुधारते और आज़माईश करते रहो, फिर अगर तुम उन में सुधार देखो तो उन्हें उन के माल सौंप दो, और उन के बड़े हो जाने के डर से उन के माल को जल्दी-जल्दी फ़ुज़ूल ख़र्चों से न खाओ, धनवानों को चाहिए कि उन के माल से बचते रहें, अगर ग़रीब हों तो नियमानुसार खा लो, फिर जब उन्हें उन के माल सौंपो तो गवाह बना लो, और लेखा-जोखा के लिये अल्लाह काफ़ी है।

لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۪ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ۗ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿7﴾

७. माता-पिता और क़रीबी रिश्तेदारों की सम्पत्ति में मर्दों का हिस्सा है और औरतों का भी (जो धन-सम्पत्ति माँ-बाप और क़रीबी रिश्तेदार छोड़ कर मरें) चाहे वह धन कम हो या ज़्यादा (उसमें) हिस्सा मुक़र्रर किया हुआ है।[1]

وَاِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ اُولُوا الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْهُمْ مِّنْهُ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿8﴾

८. और जब बँटवारे के वक़्त रिश्तेदार, यतीम और ग़रीब आ जायें, तो तुम उस में से थोड़ा बहुत उन्हें भी दे दो और उन से नर्मी से बोलो।[2]

وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا عَلَيْهِمْ ۪ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿9﴾

९. और चाहिए कि वह इस बात से डरें कि अगर वह अपने पीछे (नन्हें-नन्हें) कमज़ोर बच्चे छोड़ जाते, जिनके ख़राब हो जाने का डर रहता है (तो उन की मुहब्बत क्या होती), तो बस अल्लाह तआला से डर कर दुरुस्त बात कहा करें।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ۗ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ﴿10﴾ ع

१०. जो लोग नाहक़ ज़ुल्म से यतीमों का माल खा जाते हैं, वह अपने पेट में आग ही भर रहे हैं और वह जहन्नम में जायेंगे।

---

[1] इस्लाम से पहले यह भी ज़ुल्म था कि औरतों और छोटे बच्चों को उत्तराधिकार (वारिस) के रूप में कुछ भी भाग नहीं दिया जाता था, सिर्फ़ बड़े लड़के जो लड़ने के लायक़ होते थे, वही सारी सम्पत्ति (जायदाद) के उत्तराधिकारी माने जाते थे, इस आयत में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मर्दों की तरह औरतें, और बच्चे-बच्चियाँ भी अपने माँ-बाप और रिश्तेदारों के उत्तराधिकारी होंगी उन्हें महरूम नहीं किया जायेगा।

[2] इसे कुछ आलिमों ने उत्तराधिकार (विरासत) की आयत से मंसूख़ कहा है, लेकिन ठीक बात यह है कि यह मंसूख़ का हुक्म नहीं है, बल्कि एक ख़ास अख़लाक़ी हिदायत है कि मदद के लायक़ रिश्तेदार जिनका विरासत में कोई हिस्सा न हो, उन्हें भी बँटवारे के वक़्त कुछ दे दो, इस के सिवाय उन से प्यार से नर्म बात कहो, माल को आते देख कर क़ारून और फ़िरऔन न बनो।

يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِىٓ أَوْلَٰدِكُمْ ۖ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ ۚ فَإِن كُنَّ نِسَآءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۖ وَإِن كَانَتْ وَٰحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۚ وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَٰحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ إِن كَانَ لَهُۥ وَلَدٌ ۚ فَإِن لَّمْ يَكُن لَّهُۥ وَلَدٌ وَوَرِثَهُۥٓ أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَإِن كَانَ لَهُۥٓ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ

११. अल्लाह तआला तुम्हें तुम्हारी औलाद के बारे में हुक्म देता है कि एक लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के बराबर है,[1] अगर सिर्फ़ लड़कियाँ हों और दो से ज़्यादा हों, तो उन्हें मिरास के माल में से दो तिहाई मिलेगा,[2] और अगर एक ही लड़की हो तो उस के लिए आधा है और मरने वाले के माँ-बाप में से हर के लिए उस के छोड़े हुये माल का छठा भाग है, अगर उस (मृतक) की औलाद हो,[3] अगर औलाद न हो, और माँ-बाप वारिस हों तो फिर उसकी माँ के लिए तीसरा हिस्सा है,[4] हाँ,

---

[1] इस की हिक्मत और इंसाफ़ वाला होने का बयान हम पहले कर आये हैं, वारिस लड़का और लड़की दोनों हों तो फिर इस उसूल के अनुसार बटवारा होगा, लड़का और लड़की छोटे हों या बड़े सब वारिस होंगे, यहाँ तक कि पेट का बच्चा भी वारिस होगा, हाँ काफ़िर औलाद वारिस नहीं होगी।

[2] यानी लड़का न हो तो माल का दो तिहाई (२/३) दो से ज़्यादा लड़कियों को दिये जायेंगे और अगर दो ही लड़कियाँ हों तो भी उन्हें दो तिहाई (२/३) हिस्सा दिया जायेगा, जैसाकि हदीस में आता है कि साद बिन रबीअ "ओहद" में शहीद हो गये, उनकी दो लड़कियाँ थीं, लेकिन साद के पूरे माल पर उन के एक भाई ने क़ब्ज़ा कर लिया, तो नबी ﷺ ने उन के चचा से दो तिहाई (२/३) उनको दिलाया (त्रिमिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा, किताबुल फ़राईद) इस के सिवाये सूर: निसा के आख़िर में बताया गया है कि अगर मरने वाले की वारिस दो बहनें हों तो दो तिहाई (२/३) माल की वारिस होंगी तो फिर दो लड़कियाँ दो तिहाई (२\३) माल की ज़्यादा वारिस होंगी, जिस तरह दो बहनों से ज़्यादा होने की हालत में उन्हें दो से ज़्यादा लड़कियों के क़ानून के अनुसार रख गया है। (फ़तहुल क़दीर) सारांश (ख़ुलासा) यह हुआ कि दो या दो से ज़्यादा लड़कियाँ हों तो तरका (छोड़े माल) में दो तिहाई लड़कियों का हिस्सा होगा, बाक़ी माल असबा (वह वारिस जिस का हिस्सा मुक़र्रर नहीं है) में बटवारा होगा।

[3] माँ-बाप के हिस्सा की तीन हालतें बयान की गई हैं, पहला यह कि मरने वाले की औलाद हों तो माँ-बाप हर एक को सिर्फ़ छठवाँ (१/६) हिस्सा मिलेगा, बाक़ी दो तिहाई माल औलाद में बँटवारा होगा, हाँ अगर मरने वाले की औलाद में एक लड़की हो तो उसमें से सिर्फ़ आधा माल (यानी छ: हिस्सों में से तीन हिस्सा) लड़की के होंगे और छठाँ हिस्सा (१/६) माँ को या १/६ बाप को देने बाद (१/६) बाक़ी रह जायेगा और यह बाक़ी (१/६) असबा होकर बाप के हिस्सा में जायेगा, यानी उसे दो (१/६) मिलेगा, एक बाप के रूप में दूसरा अस्बा के रूप में।

[4] यह दूसरी हालत है कि मरने वाले की औलाद नहीं है (याद रहे कि पौता-पौती औलाद में सर्वसम्मति से शामिल हैं) इस हालत में माँ के लिये तीसरा हिस्सा (१/३) और बाक़ी दो हिस्सा (२/३) बाप को अस्बा के तौर पर मिलेगे, और अगर माँ-बाप के साथ मरने वाले की बीवी या मरने वाली औरत का शौहर भी जिन्दा हो तो बेहतर है कि शौहर या बीवी का हिस्सा (जिसकी

السُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۗ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ لَا تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ۚ فَرِيضَةً مِنَ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١١﴾

अगर मरने वाले के कई भाई हों तो फिर उसकी माँ का छठा हिस्सा है,[1] यह हिस्सा उस वसीयत (की तकमील) के बाद है जो मरने वाला कर गया हो या क़र्ज अदा करने के बाद तुम्हारे पिता हों, या तुम्हारी औलाद तुम्हें नहीं मालूम कि उन में से कौन तुम्हें फ़ायेदा पहुँचाने में ज़्यादा क़रीब है,[2] यह हिस्सा अल्लाह (तआला) की तरफ़ से मुक़र्रर किये हुए हैं, बेशक अल्लाह तआला जानने वाला हिक्मत वाला है।

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَإِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ ۚ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِينَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۚ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَكُمْ وَلَدٌ ۚ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ

१२. और तुम्हारी बीवियाँ जो कुछ छोड़ कर मरें और उनकी औलाद न हो तो आधा तुम्हारा है और अगर उनकी औलाद हो तो उन के छोड़े हुए माल में से तुम्हारे लिए चौथाई है[3] उस वसीयत को अदा करने के बाद जो वह कर गयी हों या क़र्ज को अदा करने के बाद और जो (तरका) तुम छोड़ जाओ उस में से उन के लिए

तफ़सील आगे आ रही है) निकाल कर बाक़ी माल में से माँ के लिये एक तिहाई (१ /३) और बाक़ी (२/३) बाप का होगा।

[1] तीसरी हालत यह है कि मरने वाले के भाई-बहिन जिन्दा हों तो वे भाई-बहिन सगे (ऐनी) यानी एक ही माँ-बाप की औलाद हो, या अल्लाती यानी बाप एक माँ कई हों, या बाप कई माँ एक हो यानी अख़्याफ़ी भाई-बहिन हों, अगरचे ये भाई-बहिन मरने वाले के बाप के रहते मीरास के हक़दार नहीं होंगे, लेकिन माँ के लिये "हजब" हिस्सा कम करने की वजह बन जायेंगे, यानी अगर एक से ज़्यादा होंगे तो माँ के तिहाई भाग (१/३) को छठवें हिस्सा (१/६) में बदल देंगे, बाक़ी पूरा माल (५/६) बाप के हिस्सा में चला जायेगा, लेकिन कोई अन्य वारिस न हो तब, हाफ़िज इब्ने कसीर लिखते हैं कि जम्हूर के क़रीब दो भाई का वही क़ानून है जो दो से ज़्यादा का बयान हुआ है, इस का मतलब यह हुआ कि अगर एक भाई-बहिन हो तो माँ का तिहाई हिस्सा रह जायेगा, वह (१/६) में परिवर्तित (तब्दील) नहीं होगा। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[2] अत: तुम अपनी अक़्ल के अनुसार विरासत का बटवारा न करो, बल्कि अल्लाह के हुक्म के ऐतबार से जिसका जितना हिस्सा मुक़र्रर है वह उन्हें दो।

[3] औलाद के न होने की हालत में लड़के की औलाद यानी पौता भी औलाद के बराबर हैं, इस पर उम्मत मुसलेमा की रज़ामंदी है, (फ़तहुल क़दीर और इब्ने कसीर) इसी तरह मरने वाले शौहर की औलाद चाहे वह उसकी वर्तमान (मौजूदा) पत्नी से हो या किसी दूसरी बीवी से, इसी तरह मरने वाली बीवी की औलाद चाहे उस के मौजूदा पति से हो या पहले के किसी शौहर से।

فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوصُونَ بِهَآ أَوْ دَيْنٍ ۗ وَإِن كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَٰلَةً أَوِ امْرَأَةٌ وَلَهُۥٓ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَإِن كَانُوٓا أَكْثَرَ مِن ذَٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَآءُ فِى الثُّلُثِ ۚ مِنۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصَىٰ بِهَآ أَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿12﴾

चौथाई है, अगर तुम्हारी औलाद न हो, और अगर तुम्हारी औलाद हो तो फिर उन्हें तुम्हारे छोड़े हुए माल में से आठवाँ हिस्सा मिलेगा,[1] उस वसीयत के बाद जो तुम कर गये हो और क़र्ज़ को अदा करने के बाद, और जिनकी मीरास ली जाती है, वह मर्द या औरत कलाल: हो (यानी उसका बाप या लड़का न हो) और उस का एक भाई या एक बहन हो,[2] तो उन में से हर एक का छठाँ हिस्सा है, और उस से ज़्यादा हो तो एक तिहाई में सभी शामिल हैं,[3] उस वसीयत के बाद जो की गयी हो और क़र्ज़ के अदा होने के बाद जबकि दूसरों को नुक़सान न पहुँचाई गयी हो,[4] यह मुक़र्रर किया हुआ अल्लाह (तआला) की तरफ़ से है और अल्लाह (तआला) हर बात का जानने वाला और सहनशील है।

---

[1] बीवी अगर एक हो या कई हों, चौथा या आठवाँ हिस्सा मिलेगा यही हिस्सा उन में बटवारा होगा, हर एक को चौथाई (१/४) या आठवाँ (१/८) हिस्सा नहीं मिलेगा, यह सर्वसम्मति नियम (मसअला) है।

[2] इस से मुराद माँ जाये भाई-बहिन हैं, यानी जिनकी माँ एक हो बाप अलग-अलग, क्योंकि सगे भाई-बहिन या अल्लाती (कई माँ और एक बाप से) भाई-बहन का हिस्सा मीरास में इस तरह नहीं है, और इस का बयान इसी सूर: में आख़िर में आ रहा है, और यह मसअला भी सर्वसम्मति से है। (फ़तहुल क़दीर) हक़ीक़त में वंश के लिये (للذكر مثل حظ الانثيين) का क़ानून चलता है, यही वजह है कि लड़के-लड़कियों के लिये यहाँ और बहन-भाईयों के लिए इस सूर: की आख़िरी आयत हर दो में यही क़ानून है, लेकिन माँ की औलाद में चूँकि वंशज (नसली) हिस्सा नहीं होता इसलिये वहाँ हर भाई-बहन को बराबर हिस्सा दिया जाता है, जो भी हालत हो एक भाई को या एक बहन को हर को छठवाँ (१/६) हिस्सा मिलेगा।

[3] एक से ज़्यादा होने पर यह सब एक तिहाई (१/३) हिस्सा में साझी होंगे, मर्द-औरत में कोई फ़र्क़ नहीं किया जायेगा, बिना फ़र्क़ सभी को बराबर हिस्सा मिलेगा, मर्द हों या औरत।

[4] इस तरह की वसीयत के ज़रिये किसी वारिस को महरूम कर दिया जाये, या किसी का हिस्सा घटा दिया जाये, या यूँ हीं वारिसों को नुक़सान पहुँचाने के लिये कह दे कि फ़्लाँ इंसान से मैंने इतना क़र्ज़ लिया है जब कि कुछ भी न लिया हो, मानो नुक़सान पहुँचाने का संबन्ध उत्तराधिकार (विरासत) और क़र्ज़ दोनों से है, और दोनों के ज़रिये नुक़सान पहुँचाना मना और गुनाह है और ऐसी वसीयत भी अनृत (बातिल) होगी।

१३. यह हुदूद अल्लाह तआला के मुक़र्रर किये हैं और जो अल्लाह (तआला) और उस के रसूल (ﷺ) के हुक्म को बजा लायेगा उसे अल्लाह (तआला) जन्नत में ले जायेगा, जिन के नीचे नहरें वह रही हैं, जिन में वह हमेशा रहेंगे और यह बहुत बड़ी कामयाबी है।

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْھٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْھَا ۭ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ⑬

१४. और जो इंसान अल्लाह (तआला) की और रसूल (ﷺ) की नाफ़रमानी करे और उसकी मुक़र्रर हुदूद को लाँघ जाये, उसे वह जहन्नम में डाल देगा, जिस में वह हमेशा रहेगा, ऐसों के लिए ही रुस्वा करने वाला अज़ाब है।

وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْھَا ۠ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ⑭

१५. तुम्हारी औरतों में से जो ज़िना का काम करें, उन पर अपने में से चार गवाह तलब करो, अगर वह गवाही दें तो उन औरतों को घर में बन्दी बना दो, यहाँ तक कि मौत उनकी उम्र को पूरा कर दे,[1] या अल्लाह तआला उन के लिए कोई दूसरा रास्ता निकाले।[2]

وَالّٰتِيْ يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَاۗىِٕكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْھُنَّ فِي الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰىھُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَھُنَّ سَبِيْلًا ⑮

१६. और तुम में से जो दो इंसान ऐसा काम कर लें[3] उन्हें तकलीफ़ दो,[4] अगर वह माफ़ी माँग लें और सुधार कर लें, तो उन से मुहँ फेर लो। बेशक अल्लाह तआला तौबा क़ुबूल करने वाला और रहम करने वाला है।

وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِھَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْھُمَا ۚ فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ⑯

[1] यह ज़िना औरतों की वह सज़ा है जो इस्लाम के शुरूआती दौर में जब ज़िना की सज़ा मुक़र्रर नहीं हुई थी, सामायिक (वक़्ती) रूप से मुक़र्रर की गई थी।

[2] इस से ज़िना की वह सज़ा मुराद है जो बाद में मुक़र्रर की गई, यानी शादी शुदा ज़ानी मर्द-औरत के लिये रजम यानी पत्थरों से मार डालना और ग़ैर शादी शुदा ज़ानी मर्द-औरत के लिये सौ-सौ कोड़े की सज़ा, जिसकी तफ़सीर सूर: नूर और सहीह हदीसों में बयान है।

[3] कुछ ने इस से बाल मैथुन (लिवातत) मायेना लिया है, यानी दो मर्दों का आपसी संभोग और कुछ ने इस से कुंआरे मर्द-औरत मतलब लिया है, और इस से पहले की आयत को शादी शुदा के साथ ख़ास किया है और कुछ ने इस क़ौल से मुराद मर्द-औरत लिया है वह कुंआरे हों या शादी शुदा। इब्ने जरीर ने दूसरे मायने को प्रधानता दी है और पहली आयत में बयान सज़ा को सूर: नूर में बयान सज़ा से मंसूख़ माना है। (तफ़सीर तबरी)

[4] यानी मुहँ से डाँटना, फटकारना और धिक्कारना या हाथ से कुछ मार पीट देना और अब यह मंसूख़ है।

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّوٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِن قَرِيبٍ فَأُولَٰٓئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿17﴾

१७. अल्लाह तआला केवल उन्हीं लोगों की तौबा (क्षमा) स्वीकार (क़ुबूल) करता है जो अंजान होने के कारण बुराई करें और जल्द ही उस से रुक जायें और माफी मागें तो अल्लाह (तआला) भी उनकी तौबा क़ुबूल करता है। अल्लाह (तआला) बड़ा ज्ञानी बुद्धिमान है।

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّـَٔاتِ ۚ حَتَّىٰٓ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تُبْتُ الْـَٰٔنَ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ ۚ أُولَٰٓئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿18﴾

१८.और उनकी तौबा क़ुबूल नहीं, जो बुराईयां करते चले जायें यहां तक कि उन में से किसी की मौत क़रीब आ जाये, तो कह दें कि मैंने अब माफी मांगी[1] उनकी माफी भी क़ुबूल नहीं होती जो कुफ़्र की हालत में मर जायें, यही लोग हैं जिन के लिए हम ने सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَن تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا ۖ وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَآ ءَاتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّآ أَن يَأْتِينَ بِفَٰحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِن كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَىٰٓ أَن تَكْرَهُوا شَيْـًٔا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ﴿19﴾

१९. ऐ ईमानवालो! तुम्हारे लिये मना है कि जबरदस्ती औरतों को वारिस के रूप में ले बैठो,[2] उन्हें इसलिए न रोक रखो कि जो तुम ने उन्हें दे रखा है उस में से कुछ ले लो। हां, यह और बात है कि वह कोई खुली बुराई और ज़िना का व्यवहार (सुलूक) करें[3] उन के साथ अच्छा सुलूक करो, अगरचे कि तुम उन्हें पसन्द न करो लेकिन बहुत मुमकिन है कि तुम एक चीज को

---

[1] इससे वाज़ेह है कि मौत के वक़्त की तौबा क़ुबूल नहीं है, जैसा कि हदीस में भी आता है जिसका बयान आले इमरान की आयत ९ में गुज़र हो चुका।

[2] इस्लाम से पहले औरत पर यह ज़ुल्म भी होता था कि किसी के मरने के बाद उस के घर के लोग उस के माल की तरह उसकी बीवी के भी ज़बरदस्ती वारिस बन जाते थे, और ख़ुद अपनी मर्जी से उसकी ख़ुशी के बिना उस से शादी कर लेते, या अपने भाई, भतीजे से उसकी शादी कर देते, यहां तक की सौतेला लड़का अपने मरहूम बाप की बीवी से शादी कर लेता, या अगर चाहते तो उसे किसी से शादी करने की इजाज़त न देते और वह पूरी उम्र यूं ही गुज़ारा करने के लिये मजबूर होती, इस्लाम ने ज़ुल्म के इन सभी तरीक़ों को हराम कर दिया।

[3] खुली बुराई से मुराद ज़िना या बदज़ुबानी और नाफ़रमानी है, इन दोनों ही हालत में शौहर को यह इजाज़त दी गई है कि उस के साथ ऐसा सुलूक करे कि वह उसका दिया हुआ माल या महर वापस करके खुलाअ कराने पर मजबूर हो जाये। (जैसाकि खुलाअ में शौहर को महर वापस लेने का हक दिया गया है।) (देखिये सूरः बक़रः-२२९)

बुरा जानो, और अल्लाह (तआला) उस में बहुत सी भलाई कर दें।[1]

२०. और अगर तुम एक बीवी की जगह पर दूसरी बीवी करना ही चाहो और उन में से किसी को तुम ने माल का ख़ज़ाना दे रखा हो तो भी उस में से कुछ न लो,[2] क्या तुम उसे बदनाम करके खुले गुनाह से ले लोगे।

وَإِنْ أَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ وَّاٰتَيْتُمْ إِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا تَأْخُذُوْا مِنْهُ شَيْـًٔا ۭ اَتَاْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿20﴾

२१. और तुम उसे कैसे ले लोगे? बावजूद इस के कि तुम एक-दूसरे से मिल चुके हो[3] और उन औरतों ने तुम से मज़बूत वादा ले रखा है।[4]

وَكَيْفَ تَاْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ اَفْضٰى بَعْضُكُمْ اِلٰى بَعْضٍ وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿21﴾

२२. और उन औरतों से शादी न करो, जिनसे तुम्हारे बापों ने शादी किया हो[5] लेकिन जो हो चुका, यह बेशर्मी का काम और कीना की वजह से हैं और बड़ा बुरा रास्ता है।

وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَاۗؤُكُمْ مِّنَ النِّسَاۗءِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۭ اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ۭ وَسَاۗءَ سَبِيْلًا ﴿22﴾

---

[1] यह बीवी के साथ अच्छे सुलूक का वह हुक्म है जिस पर क़ुरआन ने बहुत ज़ोर दिया है, और हदीस में भी नबी ﷺ ने इस को बहुत महत्व (अहमियत) दिया है, एक हदीस में आयत के उसी अर्थ (मायने) को बयान किया गया है।

[2] ख़ुद तलाक़ देने की हालत में महर वापस लेने को सख़्ती से रोक दिया गया है, قِنْطَار माल का ख़ज़ाना और बहुत ज़्यादा माल को कहते हैं, यानी कितना भी महर दे दिया हो वापस नहीं ले सकते, अगर ऐस करोगे तो यह ज़ुल्म वाज़ेह गुनाह होगा।

[3] एक-दूसरे से मिल चुके हो का मायने सहवास (जिमाअ) है, जिसे अल्लाह तआला ने इशारा के रूप में बयान किया है।

[4] मज़बूत वादा से उस वादे का मतलब है जो शादी के वक़्त मर्द से लिया जाता है कि तुम इसे अच्छी तरह से रखना या नर्मी के साथ छोड़ देना।

[5] अज्ञान युग (ज़माना जाहिलियत) में सौतेला लड़का अपने बाप की बीवी से शादी कर लेता था, उस से रोका जा रहा है कि यह बड़ी बेशर्मी का काम है। ﴿وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَاۗؤُكُمْ﴾ आम हुक्म है जो ऐसी औरत से शादी को भी वर्जित (मम्नूअ) एलान कर रहा है, जिस से उस के बाप ने शादी किया, किन्तु समागम (दुख़ूल) से पहले तलाक़ दे दिया, यह बात हज़रत इब्ने अब्बास से साबित है, और धर्म विशेषज्ञ (उलमा) इसी को मानते हैं। (तफ़सीर तबरी)

२३. तुम पर हराम की गयीं।[1] तुम्हारी मायें, तुम्हारी बेटियाँ, तुम्हारी बहनें, तुम्हारी फूफियाँ, तुम्हारी ख़ालायें, भाई की बेटियाँ, बहन की बेटियाँ और तुम्हारी वह मायें जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया हो। और तुम्हारी दूध में भागीदार बहनें, तुम्हारी सास और तुम्हारी वह पालन-पोषण की गयीं लड़कियाँ जो तुम्हारी गोद में हैं, तुम्हारी उन औरतों से जिन से तुम जिमाअ

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَٰتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَٰتُكُمْ وَعَمَّٰتُكُمْ وَخَٰلَٰتُكُمْ وَبَنَاتُ ٱلْأَخِ وَبَنَاتُ ٱلْأُخْتِ وَأُمَّهَٰتُكُمُ ٱلَّٰتِىٓ أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوَٰتُكُم مِّنَ ٱلرَّضَٰعَةِ وَأُمَّهَٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَٰٓئِبُكُمُ ٱلَّٰتِى فِى حُجُورِكُم مِّن نِّسَآئِكُمُ ٱلَّٰتِى دَخَلْتُم بِهِنَّ

---

[1] जिन औरतों से शादी हराम है उनकी तफ़सील दी जा रही है, इन में सात मुहर्रमात नसब से हैं, सात दुग्ध कर्म (रदाअत) से और चार ससुराली, इन के सिवा हदीस से साबित है कि भतीजी, फूफी, भांजी और ख़ाला को एक साथ शादी करके रखना हराम है।

सात वंशज निषेधित (नसबी हराम) औरतें हैं। मायें, बेटियाँ, बहनें, फूफियाँ, ख़ालायें, भतीजी और भांजी, रदाअत (दुग्धकर्म) से निषेधित (हराम) सात, रदाअत से माँ, उसकी बेटियां, बहनें, फूफियाँ, ख़ालायें। रदाअत से भतीजियाँ और भांजियाँ हैं। ससुराली निषेधित स्त्रियां (मुहर्रमात) सास, संभोगित पत्नी की पहले शौहर से बेटियाँ, बहुयें और दो सगी बहनों को एक साथ शादी करके रखना, इनके सिवा बाप की बीवी जिसकी चर्चा इस से पहले की आयत में हो चुकी है। हदीस के मुताबिक़ औरत जब तक विवाह (निकाह) में है, उसकी फूफी, ख़ाला, उसकी भतीजी और भांजी से भी विवाह वर्जित है, वंशज निषेधित स्त्रीयों की सूची में माँ की माँ (नानियां) उनकी दादियां, और बाप की मायें नीचे तक शामिल हैं, जिना से पैदा हुई बेटी, बेटी है या नहीं, इस में एख़्तिलाफ़ है, तीनों इमाम उसे बेटी मानते हैं और उस से शादी हराम समझते हैं। इमाम शाफ़ई कहते हैं कि वह शरीअत के अनुसार बेटी नहीं, इसलिए वह जिस तरह (يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ) (अल्लाह तुम्हें औलाद में त्यक्त धन (तरका) बटवारा करने का हुक्म देता है) के अन्तर्गत नहीं और सर्वसम्मति से वारिस नहीं। इसी तरह इस आयत के भी अन्तर्गत नहीं। والله اعلم। "बहनें" सगी हों या माँ से या बाप से। "फूफियां" में बाप की और सभी मूल पुरुष (यानी नाना, दादा) की तीनों तरह की बहनें आती हैं। "ख़ालायें" इस के अन्तर्गत माँ की और सभी मूल स्त्री (यानी दादी, नानी) की तीनों तरह की बहनें आती हैं। "भतीजियों" में तीनों तरह के भाईयों की औलाद सीधे हों या वास्ता से। ऐसे ही "भांजियों" में तीनों तरह की बहनों की औलाद ख़ुद उनकी हों या उनकी औलाद की औलाद शामिल हैं।

दूसरी तरह रदाअत से निषेधित औरतें। दूध पिलाने वाली माँ, जिसका दूध, दूध पीने की मुद्दत में पिया हो। (यानी दो साल के भीतर) दूध से बहन जिसे तुम्हारी सगी माँ या दूध पिलाने वाली माँ ने दूध पिलाया, तुम्हारे साथ पिलाया या तुम से पहले या बाद तुम्हारे दूसरे भाई-बहन के साथ पिलाया या जिस औरत की सगी माँ या दूध वाली माँ ने तुम्हें दूध पिलाया, चाहे कई वक़्त

فَإِن لَّمْ تَكُونُوا دَخَلْتُم بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ وَأَن تَجْمَعُوا بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿23﴾

कर चुके हो। हाँ, अगर तुम ने उन से जिमाअ न किया हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं, और तुम्हारे अपने सगे बेटों की बीवियाँ और तुम्हारा दो सगी बहनों को एक साथ शादी करना। हाँ, जो हो चुका सो हो चुका, बेशक अल्लाह तआला माफ़ करने वाला मेहरबान रहम करने वाला है।

में पिलाया हो, दूध से भी वह सभी रिश्ते वर्जित (हराम) हो जायेंगे जो वंश से वर्जित होते हैं, इसकी तफ़सील यह है कि दूध पिलाने वाली माँ की ख़ुद अपनी औलाद, और जिनको दूध पिलाया है, दूध पीने वाले बच्चे के भाई-बहन, दूध पिलाने वाली माँ का शौहर, उसका बाप और उस मर्द की बहनें, उसकी फूफियाँ, उस औरत की बहनें, ख़ालायें, उस औरत के जेठ, देवर उस के चचा, ताया बन जायेंगे, और इस दूध पीने वाले बच्चे के सगे भाई-बहन आदि इस घराने पर दूध पीने की वजह से वर्जित न होंगे।

तीसरी क़िस्म, ससुराली हराम की हुई स्त्रियाँ (मुहर्रमात) बीवी की माँ यानी सास (बीवी की नानी, दादी भी इस में शामिल हैं) और किसी ने औरत से शादी करके बिना जिमाअ कि तलाक दे दिया, तब भी उसकी माँ (सास) से विवाह हराम होगा, किन्तु किसी औरत से शादी कर के बिना हमबिस्तरी "तलाक़" दे दी हो तो उसकी बेटी से उसकी शादी जायेज होगी। (फ़तहुल क़दीर)

रबीब: बीवी की पहले शौहर से बेटी इसका हराम होना मशरूत है, यानी उसकी माँ से जिमाअ कर लिया होगा तो, "रबीबा" से विवाह हराम नहीं तो हलाल होगा, في حجوركم (वह रबीब: जिनका पालन, पोषण तुम्हारी गोद में हुआ) यह बंधन आम हालत की वजह से है, शर्त के रूप में नहीं, अगर वह बेटी किसी दूसरी जगह में पाली जायेगी या रहेगी, तब भी शादी वर्जित होगी, बीवी को हलील: कहा जाता है, क्योंकि अरबी में उसका मतलब उतरने की जगह है और बीवी शौहर के साथ रहती और जाती है, बेटों में पौते और नवासे भी आते हैं, यानी उनकी बीवियों से भी शादी वर्जित होगी, इसी तरह दूध पिलाई औलाद के जोड़े भी हराम होंगे من أصلابكم (तुम्हारे सगे बेटों की बीवियाँ) के बन्धन से यह वाजेह हो गया कि लेपालक की बीवियों से शादी नाजायज नहीं, दो बहनें सगी हों या दूध की उन से एक वक़्त में विवाह हराम है, लेकिन एक के मरने या तलाक़ की हालत में इद्दत पूरी होने के बाद दूसरी से विवाह जायेज है। इसी तरह चार बीवियों में से एक को तलाक़ देने के बाद पाँचवीं से शादी की इजाज़त नहीं, जब तक तलाक़ शुदा औरत इद्दत न पूरी कर ले।

२४. और (तुम्हारे लिए) शादी-शुदा औरतें (हराम की गई हैं) लेकिन जो (दासी) तुम्हारी मिल्कियत में हों,[1] यह हुक्म तुम पर अल्लाह ने फ़र्ज़ कर दिये हैं, और इन के सिवाय दूसरी औरतें तुम्हारे लिए हलाल की गई कि अपने माल (महर) से उन से विवाह करो, बदकारी के लिए नहीं पाकी के लिए, इसलिए जिन से तुम फ़ायेदा उठाओ उन्हें उनका महर दो,[2] और तुम मुक़र्रर महर के बाद आपसी रज़ामंदी से जो चाहो तय कर लो तुम पर कोई बुराई नहीं, बेशक अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है।

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ؕ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿24﴾

२५. और तुम में से जो आज़ाद मुसलमान औरत से शादी की ताक़त न रखता हो वह उस मुसलमान दासी से (शादी करे) जो तुम्हारी मिल्कियत में हो। अल्लाह तुम्हारे अमल से पूरी तरह बाख़बर है, तुम आपस में एक ही हो, इसलिए तुम उन के घर वालों की इजाज़त से उन से शादी करो[3] और नियम के मुताबिक़ उनका महर दे दो, वह पाक हों बदकार न हों, न गुप्त (पोशीदा) प्रेमी रखने वालियाँ, तो जब यह शादी शुदा हो जायें फिर बदकारी करें तो उन पर आज़ाद औरतों की आधी सज़ा है[4] यह शादी का हुक्म उस के लिये है जिसे बदकारी का डर हो और सहन करना तुम्हारे लिये अच्छा है और

وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ؕ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ؕ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿25﴾

---

[1] क़ुरआन करीम में احصان चार मानों में इस्तेमाल हुआ है (१) शादी (२) आज़ादी (३) पाकीज़गी (४) और इस्लाम, इस बिना पर محصنات के चार मतलब हैं (१) शादी-शुदा औरतें (२) आज़ाद औरतें (३) पाक दामन औरतें (४) और मुसलमान औरतें। यहाँ पहला मायने मुराद है।

[2] यह इस बात पर ज़ोर है कि जिन औरतों से तुम शादी धार्मिक रूप से करके फ़ायेदा और सुख हासिल करो, उन्हें उनका मुक़र्रर महर ज़रूर अदा कर दो।

[3] इस से मालूम हुआ कि दासी का मालिक ही दासी का संरक्षक (वली) है, दासी की शादी किसी से उसकी मर्ज़ी के बिना नहीं किया जा सकता, इसी तरह दास भी मालिक के हुक्म के बिना किसी से शादी नहीं कर सकता।

[4] यानी दासियों को सौ के बजाय (आधे यानी) पचास कोड़े की सज़ा दी जायेगी, यानी उनके लिए पत्थर मारकर मार डालने की सज़ा नहीं हो सकती, क्योंकि वह आधी नहीं हो सकती, और कुँवारी दासी को ताज़ीरी दंड होगा। (तफ़सीली जानकारी के लिए तफ़सीर इब्ने कसीर देखें)

अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है।[1]

يُرِيدُ اللَّهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ وَيَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ (26)

२६. अल्लाह (तआला) तुम्हारे लिये वाज़ेह करना और तुम्हें तुम से पहले के (नेक लोगों का) रास्ता दिखाना और तुम्हारी तौबा क़ुबूल करना चाहता है और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है।

وَاللَّهُ يُرِيدُ أَن يَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيدُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الشَّهَوَاتِ أَن تَمِيلُوا مَيْلًا عَظِيمًا (27)

२७. और अल्लाह तआला चाहता है कि तुम्हारी तौबा क़ुबूल करे और जो लोग कामवासना के अधीन (ख़्वाहिशात के पैरो) हैं वह चाहते हैं कि तुम उस से बहुत दूर हट जाओ।

يُرِيدُ اللَّهُ أَن يُخَفِّفَ عَنكُمْ وَخُلِقَ الْإِنسَانُ ضَعِيفًا (28)

२८. अल्लाह तुम्हारा बोझ हलका करना चाहता है, और इंसान कमज़ोर पैदा किया गया है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَن تَكُونَ تِجَارَةً عَن تَرَاضٍ مِّنكُمْ وَلَا تَقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا (29)

२९. हे मुसलमानो! अपना माल आपस में नाजायज़ तरीक़े से न खाओ, लेकिन यह कि तुम्हारी आपस की रज़ामंदी से तिजारत हो,[2] और अपने आप को क़त्ल न करो,[3] बेशक अल्लाह तआला तुम पर रहम करने वाला है।

---

[1] यानी दासी के साथ शादी वही लोग कर सकते हैं, जो अपनी जवानी के जज़्बात पर क़ाबू रखने की ताक़त न रखते हों, और बुराई में पड़ने का डर हो, अगर ऐसा डर न हो तो उस वक़्त तक सब्र करना अच्छा है जब तक किसी आज़ाद ख़ानदानी औरत से शादी करने लायक़ न हों।

[2] इसके लिए यह शर्त है कि लेन-देन जायज़ कामों का हो, हराम की तिजारत आपसी रज़ामंदी से भी नाजायज़ ही रहेगा, इस के सिवाय रज़ामंदी में ख़ियार-ए-मजलिस का भी मसला आता है, यानी जब तक एक-दूसरे से जुदा न हो, सौदा ख़त्म करने का हक़ रहेगा, जैसा कि हदीस में है:

«الْبَيِّعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا»

"दोनों आपस में सौदा करने वाले को, जब तक जुदा न हों हक़ है।" (सहीह बुख़ारी व मुस्लिम किताबुल बोयुअ)

[3] इसका मतलब ख़ुदकशी भी हो सकती है, जो बड़ा गुनाह है और गुनाह करना भी जो तबाही की वजह है, और किसी मुसलमान का क़त्ल करना भी, क्योंकि सभी मुसलमान एक जिस्म की तरह हैं, इसलिए उसका क़त्ल करना भी ऐसा ही है जैसे अपने आपको ख़ुद क़त्ल कर लिया हो।

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَي اللّٰهِ يَسِيْرًا (30)

३०. और जो इंसान यह (नाफ़रमानी) हद लांघ कर और ज़ुल्म से करेगा तो क़रीब मुस्तक़बिल में हम उसे आग में डालेगें, और यह अल्लाह के लिए बड़ा आसान है।

اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَاۗىِٕرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا (31)

३१. अगर तुम इन बड़े गुनाहों से बचते रहोगे जिन से तुम को मना किया जाता है तो हम तुम्हारे छोटे गुनाहों को दूर कर देंगे और इज़्ज़त के दरवाज़े में दाख़िल कर देंगे।

وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰي بَعْضٍ ۭ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ۭ وَلِلنِّسَاۗءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ۭ وَسْـَٔـلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا (32)

३२. और उस चीज की तमन्ना न करो, जिस की वजह से अल्लाह ने तुम में से किसी को किसी पर फ़ज़ीलत अता की है, मर्दों का वह हिस्सा है जो उन्होंने कमाया और औरतों के लिए वह हिस्सा है जो उन्होंने कमाया, और अल्लाह (तआला) से उसका फ़ज़्ल मांगो, बेशक अल्लाह (तआला) हर चीज का जानकार है।

وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۭ وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا (33)

३३. और मां-बाप या क़रीबी रिश्तेदार जो छोड़कर मरें, उसके वारिस हम ने हर इंसान के मुक़र्रर कर रखे हैं,[1] और जिन से तुम ने अपने हाथों मुआहदा किया है उन्हें उनका हिस्सा दो, हक़ीक़त में अल्लाह तआला हर चीज को देख रहा है।

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَي النِّسَاۗءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰي بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ۭ فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ

३४. मर्द औरत पर हाकिम हैं, इस वजह से कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी है, और इस वजह से कि मर्दों ने अपना माल ख़र्च किया हैं,[2] इसलिए नेक फ़रमाबर्दार औरतें शौहर की ग़ैर मौजूदगी में अल्लाह की हिफ़ाजत के ज़रिये

---

[1] موالي बहुवचन (जमा) है مولى का, और مولى के कई मतलब हैं, दोस्त, आज़ाद किया गया ग़ुलाम, चचेरा भाई, पड़ोसी। लेकिन यहां पर इससे मुराद वारिस हैं, मतलब यह है कि हर मर्द-औरत जो कुछ छोड़ कर मर जायेंगे उस के वारिस मां-बाप और दूसरे क़रीबी रिश्तेदार होंगे।

[2] इस में मर्द की हाकमियत और फ़ज़ीलत की दो वजह बताई गई है, एक फ़ितरी है जो उस की जिस्मानी ताक़त और दिमाग़ी सलाहियत है, जिस में मर्द औरत से यक़ीनी तौर से बेहतर है। दूसरा सबब यह है, जिसको हासिल करने का हक़ दीन इस्लाम ने मर्द को दिया हैं, और औरत को उसकी फ़ितरी कमज़ोरी और ख़ास इल्म के सबब जो इस्लाम ने औरत को इस्मत और उसकी पाकीज़गी की हिफ़ाज़त के लिए ज़रूरी बतायी है, औरत को आर्थिक उलझनों से दूर रखा है।

اللّٰهُ ؕ وَالّٰتِیۡ تَخَافُوۡنَ نُشُوۡزَهُنَّ فَعِظُوۡهُنَّ وَاهۡجُرُوۡهُنَّ فِی الۡمَضَاجِعِ وَاضۡرِبُوۡهُنَّ ۚ فَاِنۡ اَطَعۡنَكُمۡ فَلَا تَبۡغُوۡا عَلَیۡهِنَّ سَبِیۡلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِیًّا كَبِیۡرًا ﴿34﴾

(इज्जत और माल) की मुहाफिज औरतें हैं और जिन औरतों से तुम्हें नाफ़रमानी का डर हो उन्हें तंबीह करो, और उनका विस्तर अलग कर दो (फिर भी न मानें) तो मारो और अगर तुम्हारा कहना मान लें तो उन पर रास्ते की खोज न करो,[1] बेशक अल्लाह बहुत बड़ा है।

وَاِنۡ خِفۡتُمۡ شِقَاقَ بَیۡنِهِمَا فَابۡعَثُوۡا حَكَمًا مِّنۡ اَهۡلِهٖ وَحَكَمًا مِّنۡ اَهۡلِهَا ۚ اِنۡ یُّرِیۡدَاۤ اِصۡلَاحًا یُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَیۡنَهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِیۡمًا خَبِیۡرًا ﴿35﴾

३५. अगर तुमको (शौहर-बीवी के) बीच अनबन होने का डर हो तो एक पंच पति के परिवार से और एक बीवी के परिवार से मुक़र्रर करो, अगर ये दोनों सुलह कराना चाहें तो अल्लाह उन दोनों को मिला देगा, बेशक अल्लाह जानने वाला ख़बर रखने वाला है।

وَاعۡبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشۡرِكُوۡا بِهٖ شَیۡـًٔا وَّبِالۡوَالِدَیۡنِ اِحۡسَانًا وَّبِذِی الۡقُرۡبٰی وَالۡیَتٰمٰی وَالۡمَسٰكِیۡنِ وَالۡجَارِ ذِی الۡقُرۡبٰی وَالۡجَارِ الۡجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالۡجَنۡۢبِ وَابۡنِ السَّبِیۡلِ ۙ وَمَا مَلَكَتۡ اَیۡمَانُكُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ مَنۡ كَانَ مُخۡتَالًا فَخُوۡرَا ﴿36﴾

३६. और अल्लाह की इबादत करो, उस के साथ किसी को शरीक न करो, और मां-बाप, रिश्तेदारों, यतीमों, गरीबों, करीब के पड़ोसी, दूर के पड़ोसी[2] और साथ के मुसाफिर के साथ एहसान करो, और मुसाफ़िर और जो तुम्हारे ताबे हैं (उन के साथ), बेशक अल्लाह डींग मारने वाले, घमंडी से मुहब्बत नहीं करता।

اِلَّذِیۡنَ یَبۡخَلُوۡنَ وَیَاۡمُرُوۡنَ النَّاسَ بِالۡبُخۡلِ وَیَكۡتُمُوۡنَ مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖ ؕ وَاَعۡتَدۡنَا لِلۡكٰفِرِیۡنَ عَذَابًا مُّهِیۡنًا ﴿37﴾

३७. जो लोग (ख़ुद) कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी करने को कहते हैं, और अल्लाह तआला ने जो अपने फ़ज़्ल से उन्हें अता कर रखा है उसे छिपाते हैं, हम ने उन नाशुक्रों के लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है।

---

[1] नाफ़रमानी की हालत में सब से पहले औरत को समझाना-बुझाना है, फिर वक़्ती तौर से अलग हो जाना है, जो एक अक़्लमंद औरत के लिए बहुत बड़ी चेतावनी है। जब इस से भी न माने तो थोड़ी मार मारने का हुक्म है, लेकिन यह मार पशुओं वाली या ज़ालिमाना न हो जैसाकि जाहिल लोगों की आदत है।

[2] الجار الجنب रिश्तेदार पड़ोसी की मुक़ाबले में इस्तेमाल हुआ है, जिसका मतलब है ऐसा पड़ोसी जो रिश्तेदार न हो, यानी यह कि पड़ोसी से पड़ोसी के रूप में प्रेम व्यवहार (सुलूक) किया जाये, वह रिश्तेदार हो या रिश्तेदार न हो, जिस तरह से हदीस में भी इस बात पर बड़ा ज़ोर देकर बयान किया गया है।

وَالَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ وَمَن يَكُنِ الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا فَسَاءَ قَرِينًا ﴿38﴾

३८. और जो लोग अपना माल लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं और अल्लाह (तआला) पर और क़यामत के दिन पर ईमान नहीं रखते, और जिसका संगी-साथी शैतान हो वह बहुत बुरा साथी है।

وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ آمَنُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللَّهُ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِهِمْ عَلِيمًا ﴿39﴾

३९. और भला उनका क्या नुक़सान (हानि) था अगर यह अल्लाह (तआला) पर और क़यामत के दिन पर ईमान लाते और अल्लाह (तआला) ने जो उन्हें अता कर रखा है, उस में से ख़र्च करते, अल्लाह (तआला) उन्हें अच्छी तरह से जानने वाला है।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۖ وَإِن تَكُ حَسَنَةً يُضَاعِفْهَا وَيُؤْتِ مِن لَّدُنْهُ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿40﴾

४०. बेशक, अल्लाह (तआला) एक ज़र्रे के बराबर ज़ुल्म नहीं करता, और अगर नेकी हो तो उसे दुगुना कर देता है, और ख़ास तौर से अपने पास से बहुत बड़ा अजर अता (प्रदा) करता है।

فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ شَهِيدًا ﴿41﴾

४१. तो क्या हाल होगा जिस वक़्त हर उम्मत में से एक गवाह हम लायेंगे और आप को उन लोगों पर गवाह बनाकर लायेंगे।[1]

يَوْمَئِذٍ يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصَوُا الرَّسُولَ لَوْ تُسَوَّىٰ بِهِمُ الْأَرْضُ وَلَا يَكْتُمُونَ اللَّهَ حَدِيثًا ﴿42﴾

४२. जिस दिन काफ़िर और रसूल के नाफ़रमान यह तमन्ना करेंगे कि काश उन्हें ज़मीन के साथ बराबर कर दिया जाता और अल्लाह (तआला) से कोई बात न छिपा सकेंगे।

---

[1] हर उम्मत का पैग़म्बर (सन्देष्टा) अल्लाह के दरबार में गवाही देगा "हे अल्लाह ! हम ने तो तेरा पैग़ाम अपनी क़ौम तक पहुँचा दिया था, अब उन्होंने नहीं माना तो इसमें हमारी क्या ख़ता है?" फिर उन पर नबी करीम ﷺ गवाही देंगे "हे अल्लाह! यह सच कहते हैं।" आप ﷺ यह गवाही उस क़ुरआन के ज़रिये देंगे जो आप पर उतरा और जिस में पहले के नबियों और उनकी क़ौमों के हादसे ज़रूरत के ऐतबार से बयान हैं।

४३. हे ईमानवालो ! अगर तुम नशे में धुत हो तो नमाज के क़रीब न जाओ[1] जब तक कि अपनी बात समझने न लगो, और जनाबत (की हालत में जब तक ग़ुस्ल न कर लो[2] हाँ, अगर राह चलते गुजर जाने वाले हो तो और बात है, और अगर तुम रोगी हो, या सफ़र में हो या तुम में से कोई शौच से आया हो या तुम ने औरतों के साथ जिमाअ किया हो और तुम्हें पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो और अपने मुँह और अपने हाथ मल लो ।[3] बेशक अल्लाह (तआला) बहुत माफ़ करने वाला बख़्शने वाला है ।

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ۗ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُوْرًا (43)

४४. क्या तुम ने उन्हें नही देखा जिन्हें किताब का कुछ भाग दिया गया? वह गुमराही खरीदते हैं और चाहते हैं कि तुम भी गुमराह हो जाओ ।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ (44)

४५. और अल्लाह (तआला) तुम्हारे दुश्मनों को अच्छी तरह से जानने वाला है और अल्लाह (तआला) का दोस्त होना ही काफ़ी है और अल्लाह (तआला) का मददगार होना बस है ।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۙ وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا (45)

---

[1] यह हुक्म उस वक़्त दिया गया था, जब तक शराब हराम नहीं की गयी थी । इसलिए एक दावत में शराब पीने के बाद जब नमाज के लिए खड़े हुए तो नशे में क़ुरआन के लफ़्ज भी इमाम साहब ग़लत पढ़ गये। (तफ़सील के लिए देखिए तिर्मिज़ी, तफ़सीर सूर: अन-निसा) जिस पर यह आयत उतरी कि नशे की हालत में नमाज न पढ़ा करो, यानी उस समय तक नमाज के वक़्त शराब पीना हराम किया गया था, पूरी तरह हराम और मना होने का हुक्म बाद में उतरा ।

[2] यानी नापाकी की हालत में भी नमाज न पढ़ो, क्योंकि नमाज के लिए पाकीजगी जरूरी है ।

[3] रोगी से मुराद वह रोगी है जिसे पानी के इस्तेमाल से नुक़सान या रोग के बढ़ जाने का डर हो (२) आम मुसाफ़िर, लम्बा सफ़र हो या छोटा, अगर पानी मुयस्सर न हो तो उसे तयम्मुम करने का हुक्म है । पानी न मिलने की हालत में यह हुक्म निवासी (मोक़ीम) को भी है, लेकिन रोगी और मुसाफ़िर को चूंकि इस तरह की हालत आम तौर से आती थी इसलिए ख़ास तौर से उन के लिए हुक्म को बयान कर दिया गया है (३) शौच (क़जाये हाजत) से आने वाला (४) और बीवी के साथ जिमाअ करने वाला, उनको भी पानी न मिलने की हालत में तयम्मुम करके नमाज पढ़ने का हुक्म है ।

مِنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا لَيًّا بِأَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّينِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَقْوَمَ وَلَٰكِن لَّعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿46﴾

४६. कुछ यहूदी कलाम को उनके सही मुकाम से फेर बदल कर देते हैं और कहते हैं कि हम ने सुना और नाफ़रमानी की और सुन उस के बिना कि तू सुना जाये और हमारी ताबेदारी कुबूल करो (लेकिन इस के कहने में) अपनी ज़ुबान मरोड़ लेते हैं और दीन को कलंकित करते हैं, और अगर यह लोग कहते कि हम ने सुना और हम ने मान लिया और आप सुनिये और हमें देखिये तो यह उनके लिए बहुत अच्छा था और ज़्यादा बेहतर था, लेकिन अल्लाह (तआला) ने उन के कुफ़्र की वजह से उन पर लानत की है तो यह बहुत कम ईमान लाते हैं।[1]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ آمِنُوا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُم مِّن قَبْلِ أَن نَّطْمِسَ وُجُوهًا فَنَرُدَّهَا عَلَىٰ أَدْبَارِهَا أَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّا أَصْحَابَ السَّبْتِ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿47﴾

४७. हे अहले किताब ! जो कुछ हम ने उतारा है, जो उस की तसदीक़ करने वाला है जो तुम्हारे पास है, इस पर उससे पहले ईमान लाओ कि हम चेहरे बिगाड़ दें और उन्हें घुमा कर पीठ की तरफ़ कर दें या उन पर लानत भेजें, जैसाकि हम ने शनिवार वाले दिन के लोगों पर लानत की है और अल्लाह (तआला) का फ़ैसला ज़रूर पूरा किया हुआ है।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدِ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا ﴿48﴾

४८. बेशक अल्लाह (तआला) अपने साथ शिर्क किये जाने को माफ़ नहीं करता और इस के सिवाय जिसे चाहे माफ़ कर दे,[2] और जो अल्लाह (तआला) के साथ शिर्क करे उस ने अल्लाह पर भारी आरोप घड़ा।[3]

---

[1] यानी ईमान लाने वाले बहुत थोड़े हैं, जैसा कि पहले बयान हो चुका है कि यहूदियों में से ईमान लाने वालों की संख्या दस तक भी नहीं पहुँची, या यह मतलब है कि बहुत कम बातों पर ईमान लाते हैं, जब कि फ़ायदेमंद ईमान यह है कि सब बातों पर ईमान लाया जाये।

[2] यानी ऐसे गुनाह जिन से ईमान वाले माफ़ी मागें बिना मर जायें, अल्लाह तआला अगर किसी को चाहे तो बिना सज़ा दिये माफ़ कर देगा, बहुत से लोगों को सज़ा देने के बाद और बहुत से लोगों को नबी ﷺ की शिफ़ाअत (सिफ़ारिश) पर माफ़ कर देगा, लेकिन शिर्क किसी भी हालत में माफ़ नहीं होगा क्योंकि मुशरिक पर अल्लाह तआला ने जन्नत हराम कर दिया है।

[3] दूसरी जगह फ़रमाया ﴿إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾ (लुकमान) "शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है।" हदीस में इसे बहुत बड़ा गुनाह कहा गया है "أكبر الكبائر الشرك بالله"

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُزَكُّونَ أَنفُسَهُم ۚ بَلِ اللَّهُ يُزَكِّي مَن يَشَاءُ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا (49)

४९. क्या आप ने उन्हें नहीं देखा जो अपनी पाकीजगी (और तारीफ़) ख़ुद करते हैं? बल्कि अल्लाह (तआला) जिसे चाहे पाक करता है, और वे एक धागे बराबर भी ज़ुल्म न किये जायेंगे।

انظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۖ وَكَفَىٰ بِهِ إِثْمًا مُّبِينًا (50)

५०. देखो यह लोग अल्लाह (तआला) पर किस तरह झूठा इल्ज़ाम लगाते हैं, और यह बड़े गुनाह के लिये बहुत है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا هَٰؤُلَاءِ أَهْدَىٰ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا سَبِيلًا (51)

५१. क्या आप ने उन्हें नहीं देखा जिन्हें किताब का कुछ हिस्सा मिला है, जो मूर्तियों पर और झूठे देवों पर ईमान रखते हैं, और काफ़िरों के हक़ में कहते हैं कि यह लोग ईमानवालों से ज़्यादा सच्चे रास्ते पर हैं?

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ ۖ وَمَن يَلْعَنِ اللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُ نَصِيرًا (52)

५२. यही वह लोग हैं जिन पर अल्लाह (तआला) ने लानत की है और जिसे अल्लाह (तआला) लानती कह दे तो तू किसी को उसका मदद करने वाला नहीं पायेगा।

أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَإِذًا لَّا يُؤْتُونَ النَّاسَ نَقِيرًا (53)

५३. क्या उनका कोई हिस्सा मुल्क में है? अगर ऐसा हो तो फिर यह किसी को एक खजूर की गुठली की फांक के बराबर भी कुछ न देंगे।

أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَىٰ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۖ فَقَدْ آتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيمَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَاهُم مُّلْكًا عَظِيمًا (54)

५४. या यह लोगों से हसद रखते हैं, उस पर जो अल्लाह (तआला) ने अपने फ़ज़्ल से उन्हें अता किया है तो हम ने तो इब्राहीम की औलाद को किताब और हिक्मत भी अता किया और बड़ा मुल्क भी अता किया।

فَمِنْهُم مَّنْ آمَنَ بِهِ وَمِنْهُم مَّن صَدَّ عَنْهُ ۚ وَكَفَىٰ بِجَهَنَّمَ سَعِيرًا (55)

५५. फिर उन में से कुछ ने तो उस किताब को माना और कुछ उस से रुक गये[1] और जहन्नम का जलाना काफ़ी है।

---

[1] यानी इस्राईल की औलाद को जो हज़रत इब्राहीम के ख़ानदान और क़बीला में से हैं, हम ने नबूवत भी दी और बड़ा मुल्क और हुकूमत भी, फिर भी यह सभी यहूदी उन पर ईमान नहीं लाये कुछ ईमान लाये और कुछ रुक गये। मतलब यह है कि हे मोहम्मद ﷺ अगर यह आप पर ईमान नहीं ला रहे हैं तो यह कोई अनोखी बात नहीं है, इनकी तो तारीख़ ही नबियों को झुठलाने से भरी पड़ी है, यहाँ तक कि यह तो अपने वंश के नबियों पर भी ईमान नही लाये।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا ۖ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُم بَدَّلْنَاهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا (56)

५६. जिन लोगों ने हमारी आयतों का इंकार किया उन्हें हम जरूर आग मे डाल देंगे, जब उन की खालें (चर्म) पक जायेंगी, हम उन के अलावा और खालें बदल देंगे, ताकि वह अज़ाब का मज़ा चखते रहें, बेशक अल्लाह तआला ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَّهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۖ وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيلًا (57)

५७. और जो लोग ईमान लाये और नेक अमल किये, हम क़रीब मुस्तक़बिल में उन्हें उन जन्नतों में ले जायेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जिन में वे हमेशा रहेंगे, उन के लिए वहाँ पाक बीवियाँ होंगी और हम उन्हें घनी छाँव (पूरी आरामदायक जगह) में ले जायेंगे।

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَن تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُم بَيْنَ النَّاسِ أَن تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ ۚ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُم بِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا (58)

५८. अल्लाह (तआला) तुम्हें हुक्म देता है कि अमानत (धरोहर) उन के मालिकों को पहुँचा दो, और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो तो अदल के साथ फ़ैसला करो,[1] बेशक वह अच्छी बात है जिसकी शिक्षा अल्लाह (तआला) तुम्हें दे रहा है, बेशक अल्लाह (तआला) सुनने वाला देखने वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنكُمْ ۖ فَإِن تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا (59)

५९. हे ईमानवालो! अल्लाह के हुक्म की पैरवी करो और रसूल (ﷺ) की और अपने में से हाकिमों के हुक्म को मानो, फिर अगर किसी बात में एख़्तिलाफ़ करो तो उसे लौटाओ अल्लाह (तआला) और रसूल (ﷺ) की तरफ़, अगर तुम्हें अल्लाह और क़यामत के दिन पर ईमान है, यह सब से अच्छा है और नतीजा के ऐतबार से बहुत अच्छा है।[2]

---

[1] इस में हाकिमों को ख़ास तौर से इंसाफ़ करने का हुक्म दिया गया है। एक हदीस में है हाकिम जब तक ज़ुल्म न करे, अल्लाह तआला उसके साथ होता है, जब वह ज़ुल्म करना शुरू कर देता है, अल्लाह उसको उसकी इन्द्रियों (नफ़्स) को सौंप देता है। (सुनन इब्ने माजा, किताबुल अहकाम)

[2] अल्लाह की ओर लौटाने से मुराद क़ुरआन करीम तथा रसूल ﷺ से है, अब रसूल ﷺ की हदीस

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَنْ يَتَحَاكَمُوا إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ يَكْفُرُوا بِهِ ۖ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا (60)

६०. क्या! आप ने उन्हें नही देखा जिसका ख़्याल है कि जो कुछ आप पर और जो कुछ आप से पहले उतारा गया है, उस पर उनका ईमान है, लेकिन वह अपने फ़ैसले अल्लाह के सिवाय दूसरों के पास ले जाना चाहते हैं, अगरचे उन्हें हुक्म दिया गया है कि वह उनका (शैतान का) इंकार करें? शैतान तो यह चाहता है कि उन्हें भटका कर दूर डाल दे।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتَ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنْكَ صُدُودًا (61)

६१. और उन से जब कभी कहा जाता है कि अल्लाह (तआला) ने जो (पाक किताब) उतारा है उसकी तरफ़ और रसूल की तरफ़ आओ, तो आप देखेंगे कि यह मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) आप से मुँह फेर कर रुक जाते हैं।[1]

فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَتْهُمْ مُصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَاءُوكَ يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا إِحْسَانًا وَتَوْفِيقًا (62)

६२. फिर क्या वजह है कि जब उन पर उनके अमल की वजह से कोई मुसीबत आ पड़ती है, तो फिर यह आप के पास आकर अल्लाह (तआला) की क़सम (शपथ) लेते हैं कि हमारा इरादा तो सिर्फ़ भलाई और अच्छा तअल्लुक़ ही का था।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَهُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا (63)

६३. यह वह लोग हैं जिन के दिलों का भेद अल्लाह (तआला) को अच्छी तरह मालूम है, आप उन से अनसुनी कीजिये, और उन्हें तालीम देते रहिए और उन्हें वह बात कहिए जो उन के दिलों में घर करने वाली हो।

है, यह आपसी एख़्तिलाफ़ ख़त्म करने के लिए एक सब से अच्छा क़ानून बताया गया है, इस क़ानून से भी वाज़ेह होता है कि तीसरे इंसान का हुक्म मानना ज़रूरी नही है।

[1] यह आयत ऐसे लोगों के बारे में उतरी है, जो अपना फ़ैसला कराने के लिए मोहम्मद ﷺ की अदालत में ले जाने के बजाय यहूदियों के मुखिया या क़ुरैश के मुखिया के पास ले जाना चाहते थे, लेकिन यह हुक्म आम लोगों के लिए है और इस में सभी वह लोग शामिल हैं जो क़ुरआन और सुन्नत के ख़िलाफ़ अपने फ़ैसले के लिए इन दोनों को छोड़ कर दूसरों की तरफ़ जाते हैं।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿64﴾

६४. और हम ने हर रसूल को सिर्फ इसीलिए भेजा कि अल्लाह (तआला) के हुक्म से उस के हुक्म की पैरवी की जाये और अगर यह लोग जिन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया तेरे पास आ जाते, और अल्लाह (तआला) से तौबा करते और रसूल भी उन के लिए माफ़ी तलब करते, तो बेशक यह लोग अल्लाह तआला को माफ़ करने वाला रहम करने वाला पाते।

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿65﴾

६५. तो क़सम है तेरे रब की! यह (तब तक) ईमानवाले नहीं हो सकते जब तक कि सभी आपस के एख़्तिलाफ़ में आप को फ़ैसला करने वाला न क़ुबूल कर लें, फिर जो फ़ैसला आप कर दें उन से अपने दिलों में ज़रा भी तंगी और नाख़ुशी न पायें और फ़रमाँबरदार की तरह क़ुबूल कर लें।

وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اَوِ اخْرُجُوْا مِنْ دِيَارِكُمْ مَّا فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ بِهٖ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَشَدَّ تَثْبِيْتًا ﴿66﴾

६६. और अगर हम उन पर यह फ़र्ज़ कर देते कि अपने आप को क़त्ल कर लो या अपने घरों से निकल जाओ, तो उसे उन में से बहुत ही कम लोग पालन करते, और अगर यह वही करें जिसकी उन्हें तालीम दी जाती है, तो ज़रूर ही उन के लिए बहुत अच्छा होता और बहुत ज़्यादा मज़बूत होता।

وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّآ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿67﴾

६७. और तब तो हम उन्हें अपने पास से बहुत सवाब अता करते।

وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿68﴾

६८. और बेशक उन्हें सत्य सीधा रास्ता अता कर देते।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ﴿69﴾

६९. और जो भी अल्लाह (तआला) और रसूल (ﷺ) के हुक्म की पैरवी करे, वह उन लोगों के साथ होगा, जिन पर अल्लाह (तआला) ने अपनी नेमतें की है, जैसे नबियों, सिद्दीकों, शहीदों और नेक लोगों के (साथ), यह अच्छे साथी हैं।

ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ﴿70﴾ ع

७०. यह अल्लाह (तआला) की तरफ़ से फ़ज़्ल है और अल्लाह (तआला) ही काफ़ी जानकार है।

يٰٓاَيُّھَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا ﴿71﴾

७१. हे मुसलमानो! अपने बचाव का सामान ले लो,[1] फिर गिरोह-गिरोह बनकर प्रस्थान करो या सब के सब एक साथ प्रस्थान करो।

وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَھُمْ شَهِيْدًا ﴿72﴾

७२. और बेशक तुम में कुछ ऐसे भी हैं जो संकोच (तरद्दुद) करते हैं[2] फिर अगर तुम्हें कोई नुक़सान होता है तो कहते हैं कि अल्लाह (तआला) ने मुझ पर बड़ी नेमत की कि मैं उनके साथ मौजूद नहीं था।

وَلَىِٕنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَھُمْ فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿73﴾

७३. और अगर तुम को अल्लाह (तआला) का कोई फ़ज़्ल हासिल हो जाये तो जैसे कि तुम में और उन में रिश्ता था ही नहीं, कहते हैं कि काश! मैं भी उन के साथ होता तो बड़ी कामयाबी को पहुँच जाता।

فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۭ وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿74﴾

७४. लेकिन जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के बदले बेच चुके हैं, उन्हें अल्लाह (तआला) की राह में जिहाद करना चाहिए और जो अल्लाह (तआला) की राह में जिहाद करते हुए शहीद हो जाये या विजयी हो जाये तो बेशक हम उसे बहुत अच्छा बदला अता करेंगे।

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاۗءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ ھٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ڌ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ﴿75﴾

७५. भला क्या वजह है कि तुम अल्लाह की राह में और उन कमज़ोर मर्दों, औरतों और नन्हे-नन्हे बच्चों के छुटकारे के लिए जिहाद न करो? जो इस तरह से दुआ कर रहे हैं कि हे हमारे रब! इन ज़ालिमों की बस्ती से हमें निकाल दे और हमारे लिए ख़ुद अपने पास से हिमायती मुक़र्रर कर और हमारे लिए ख़ास तौर से अपने

---

[1] अपना बचाव करो, अस्त्र-शस्त्र (हथियार) और जंग का सामान और दूसरे साधन (ज़रिये) से।

[2] यह मुनाफ़िक़ों का बयान है। संकोच का मतलब जिहाद में जाने से कतराते और पीछे रह जाते हैं।

पास से सहायक बना ।[1]

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا اَوْلِيَاۗءَ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ﴿76﴾

७६. जो लोग ईमान लाये हैं, वह तो अल्लाह (तआला) की राह में जिहाद करते हैं और जिन लोगों ने कुफ्र किया है वह तो तागूत की राह में लड़ते हैं बस,[2] तुम शैतान के दोस्तों से जंग करो, यक़ीन करो कि शैतान की चाल (बिल्कुल कमज़ोर और) बहुत कमज़ोर है ।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۭ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۣ وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿77﴾

७७. क्या तुम ने उन्हें नहीं देखा जिन्हें हुक्म दिया गया कि अपने हाथों को रोके रखो और नमाज़ें पढ़ते रहो और ज़कात अदा करते रहो, फिर जब उन्हें जिहाद का हुक्म दिया गया तो उसी वक़्त उनका एक गिरोह लोगों से इस तरह डरा हुआ था जैसे अल्लाह (तआला) का डर हो, बल्कि इससे भी अधिक । और कहने लगे, हे हमारे रब! तूने हम पर जिहाद क्यों फ़र्ज़ किया?[3] क्यों हमें थोड़ी ज़िन्दगी और न गुज़ारने दिया? आप कह दीजिए कि दुनिया का फ़ायेदा तो बहुत कम है और परहेज़गारों के लिए आख़िरत बेहतर है, और तुम एक धागे के बराबर भी ज़ुल्म न किये जाओगे ।

---

[1] ज़ालिमों की बस्ती से (आयत के उतरने के आधार पर) मुराद मक्का है । हिजरत के बाद वहाँ बाक़ी रह जाने वाले मुसलमान ख़ास तौर से बूढ़े मर्द, औरत और बच्चे काफ़िरों के ज़ुल्म से तंग आकर अल्लाह के दरबार में मदद की दुआ करते थे, अल्लाह तआला ने मुसलमानों को ख़बरदार किया कि तुम مستضعفين (ऊपर बयान कमज़ोर इंसानों) को काफ़िरों से आज़ाद कराने के लिए जिहाद क्यों नहीं करते?

[2] मुसलमान और काफ़िर दोनों को जंग की ज़रूरत होती है, लेकिन दोनों के जंग के मक़सद में बड़ा फ़र्क़ है । मुसलमान अल्लाह के लिए लड़ता है, सिर्फ़ दुनिया या मुल्क बढ़ाने के लिए नहीं, जब कि काफ़िर का मक़सद यही दुनिया और उस के फ़ायदे होते हैं ।

[3] मक्के में मुसलमान चूँकि तादाद और संसाधन की कमी की वजह से लड़ने के लायक़ नहीं थे, इसलिए उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ उन्हें जंग से रोके रखा गया, और दो बातों पर ज़ोर दिया जाता रहा, एक यह कि काफ़िरों के ज़ुल्म को सब्र और हिम्मत से बरदाश्त करें और माफ़ी और हौसले से ही काम लें । दूसरे यह कि नमाज़, ज़कात और दूसरी इबादत और तालीम के हिसाब से अमल करें ताकि अल्लाह तआला से रिश्ता मज़बूत बुनियादों पर क़ायम हो, लेकिन हिजरत के बाद मदीने में जब मुसलमानों की ताक़त जमा हो गयी तो फिर उन्हें लड़ने की इजाज़त दी गयी ।

أَيْنَ مَا تَكُونُوا يُدْرِكُّكُمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِي بُرُوجٍ مُشَيَّدَةٍ ۗ وَإِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَقُولُوا هَٰذِهِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۖ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَقُولُوا هَٰذِهِ مِنْ عِنْدِكَ ۚ قُلْ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۖ فَمَالِ هَٰؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا (78)

७८. तुम जहाँ कहीं भी होगे मौत तुम्हें आ पकड़ेगी चाहे तुम मजबूत क़िलों में हो, और अगर इन्हें कोई भलाई मिलती है तो कहते हैं कि यह अल्लाह (तआला) की तरफ से है, और अगर कोई बुराई पहुँचती है, तो कह उठते हैं कि यह तेरी ओर से है।[1] उन्हें कह दो, यह सब कुछ अल्लाह (तआला) की तरफ़ से हैं, उन्हें क्या हो गया है कि कोई बात समझने के क़रीब भी नहीं?

مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ۖ وَمَا أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَفْسِكَ ۚ وَأَرْسَلْنَاكَ لِلنَّاسِ رَسُولًا ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا (79)

७९. तुझे जो भलाई मिलती है वह अल्लाह (तआला) की तरफ से है और जो बुराई पहुँचती है वह तेरे अपने ख़ुद की तरफ़ से है, हम ने तुझे मानव जाति के लिए रसूल बनाकर भेजा है और अल्लाह (तआला)गवाह काफी है।

مَنْ يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ ۖ وَمَنْ تَوَلَّىٰ فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا (80)

८०. इस रसूल (ﷺ) की जो इताअत करे उसी ने अल्लाह (तआला) की इताअत की और जो मुँह फेर ले तो हम ने आप को कोई उन पर रक्षक (निगराँ) बना कर नहीं भेजा।

وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَزُوا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ ۖ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُونَ ۖ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا (81)

८१. और यह कहते तो हैं कि इताअत है, फिर जब आप के पास से उठ कर बाहर निकलते हैं तो उन में का एक गुट जो बात आप ने या उसने कही है उसके ख़िलाफ़ रातों को विचार-विमर्श (राय-मश्विरा) करता है,[2] उन की रातों की बातचीत अल्लाह (तआला) लिख रहा है, आप उन से मुँह फेर लें और अल्लाह तआला पर भरोसा रखें, अल्लाह तआला काफ़ी काम बनाने वाला है।

---

[1] यहाँ से फिर से मुनाफ़िक़ों की बातों का बयान हो रहा है।

[2] यह मुनाफ़िक़ीन आप के पास जो बातें ज़ाहिर करते हैं, रातों को इस के ख़िलाफ़ बातें करते हैं और साज़िश करते हैं। आप ﷺ उन से बचें और अल्लाह पर भरोसा करें, इनकी साज़िश आप को नुक़सान नहीं पहुँचा सकती, क्योंकि आप का निगहबान और कामों को बनाने वाला अल्लाह है।

८२. क्या यह लोग क़ुरआन पर विचार नहीं करते? अगर यह अल्लाह (तआला) के सिवाय किसी दूसरे की तरफ़ से होता तो बेशक इस में बहुत कुछ इख़्तिलाफ़ पाते ।[1]

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ ۚ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا ﴿82﴾

८३. और जहाँ उन को कोई ख़बर अमन या डर की मिली कि उन्होंने उसका प्रचार करना शुरू कर दिया, और अगर ये लोग उसे रसूल (ﷺ) के और अपने में से ऐसी बातों के ज़रिये तक पहुचने वालों के हवाले कर देते, तो इस की हक़ीक़त वह लोग मालूम कर लेते जो नतीजा मालूम करने की अक़्ल रखते हैं और अगर अल्लाह (तआला) का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुम पर न होती तो कुछ इंसानों के सिवाय तुम सभी शैतान के पैरोकार बन जाते ।

وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ ۖ وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَىٰ أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ يَسْتَنْبِطُونَهُ مِنْهُمْ ۗ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطَانَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿83﴾

८४. तो तू अल्लाह तआला की राह में जिहाद करता रह, तुझे सिर्फ़ तेरे लिए ही हुक्म दिया जाता है । हाँ, ईमानवालों को आकर्षित (मुतवज्जिह) करता रह, बहुत मुमकिन है कि अल्लाह (तआला) काफ़िरों के हमले को रोक दे और अल्लाह (तआला) बहुत ताक़त वाला है और सज़ा देने में भी बहुत सख़्त है ।

فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا نَفْسَكَ ۚ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ ۖ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَكُفَّ بَأْسَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنْكِيلًا ﴿84﴾

८५. जो इंसान किसी सवाब और भले काम करने की सिफ़ारिश करे, उसे भी उसका कुछ हिस्सा मिलेगा और जो बुराई और बुरे काम करने की सिफ़ारिश करे, उस के लिए भी उस में से

مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِنْهَا ۖ وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ لَهُ كِفْلٌ مِنْهَا ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُقِيتًا ﴿85﴾

---

[1] क़ुरआन करीम से हिदायत हासिल करने के लिए उस में ग़ौर करने पर ज़ोर दिया जा रहा है और उसकी सच्चाई जाँचने के लिए एक स्तर (मेयार) भी बताया जा रहा है कि अगर यह किसी इंसान के ज़रिये लिखा हुआ होता (जैसा कि काफ़िरों का ख़्याल है) तो इसके विषय और बयान किये गये हादसों में टकराव और एख़्तिलाफ़ होता, क्योंकि यह एक छोटी किताब नहीं है । एक बड़ी और तफ़सीली किताब है, जिसका हर हिस्सा मोजिज़ा और अदब में बेमिसाल है, जबकि इंसान के ज़रिये बनाई किताब में ज़ुबान का मेयार और उसकी कोमलता और सरलता स्थिर (क़ायम) नहीं रहती ।

एक हिस्सा है और अल्लाह (तआला) हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

८६. और जब तुम्हें सलाम किया जाये तो उस से अच्छा जवाब दो, या उन्हीं लफ़्ज़ों को पलट दो, बेशक अल्लाह (तआला) हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है।

وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَآ اَوْ رُدُّوْهَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ حَسِيْبًا ﴿86﴾

८७. अल्लाह वह है, जिस के सिवाय कोई (सच्चा) माबूद नहीं, वह तुम सब को ज़रूर क़यामत के दिन जमा करेगा, जिस के (आने) में कोई शक नहीं, अल्लाह (तआला) से ज़्यादा सच किस की बात होगी।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا ھُوَ ۭ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ﴿87﴾

८८. तुम्हें क्या हो गया है कि मुनाफ़िक़ों के बारे में दो गुट हो रहे हो?[1] उन्हें तो उन के अमलों की वजह से अल्लाह (तआला) ने औंधा कर दिया है। अब क्या तुम यह चाहते हो कि उसे राह दिखाओ, जिसे अल्लाह ने गुमराह कर दिया है, तो जिसे अल्लाह गुमराह कर दे कभी तुम उस के लिए कोई राह न पाओगे।

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَھُمْ بِمَا كَسَبُوْا ۭ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ۭ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿88﴾

८९. वह तमन्ना करते हैं कि जैसे काफ़िर वे हैं तुम भी उनकी तरह ईमान का इंकार करने लगो और तुम सभी बराबर बन जाओ, इसलिए उनमें से किसी को हक़ीक़ी दोस्त न बनाओ[2] जब तक वह अल्लाह की राह में हिजरत न करें, फिर अगर (इस से) मुँह फेरें तो उन्हें पकड़ो[3] और क़त्ल करो जहाँ पाओ। होशियार! उन में से किसी को दोस्त और मददगार न समझ बैठो।

وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَاۗءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْھُمْ اَوْلِيَاۗءَ حَتّٰي يُھَاجِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْھُمْ وَاقْتُلُوْھُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْھُمْ ۠ وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْھُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿89﴾

---

[1] यह सवाल इंकार के लिए है यानी तुम्हारे बीच इन मुनाफ़िक़ों के बारे में एख़्तिलाफ़ नहीं होना चाहिए था, इन मुनाफ़िक़ों से मुराद वह लोग हैं जो ओहद की जंग के वक़्त मदीना शहर के बाहर कुछ दूर जाने के बाद वापस आ गये थे कि हमारी बात नहीं मानी गयी।

[2] हिजरत (इस्लाम के लिए देश छोड़ना) इस बात का सुबूत है कि अब यह ख़ालिस मुसलमान बन गये हैं, इस हालत में दोस्ती और मुहब्बत जायेज़ होगी।

[3] यानी जब तुम्हें उन पर वश और हक़ हासिल हो जाये।

إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيثَاقٌ أَوْ جَاءُوكُمْ حَصِرَتْ صُدُورُهُمْ أَن يُقَاتِلُوكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوا قَوْمَهُمْ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَاتَلُوكُمْ ۚ فَإِنِ اعْتَزَلُوكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوكُمْ وَأَلْقَوْا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ فَمَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا ﴿٩٠﴾

९०. लेकिन जो उस क़ौम से रिश्ता रखते हों जिनके और तुम्हारे बीच सुलह हो चुकी हो या जो तुम्हारे पास आयें तो उन के दिल तंग हो रहे हों कि तुम से लड़ें, और अपनी क़ौम से लड़ें, और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम पर क़ूवत अता कर देता और वह जरूर तुम से लड़ते, तो अगर वह तुम से अलग रहें और लड़ाई न करें और तुम्हारी ओर सलामती का पैग़ाम पेश करें, तो (फिर) अल्लाह ने तुम्हारे लिये उन पर कोई राह जंग की नहीं बनाई है।

سَتَجِدُونَ آخَرِينَ يُرِيدُونَ أَن يَأْمَنُوكُمْ وَيَأْمَنُوا قَوْمَهُمْ كُلَّمَا رُدُّوا إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكِسُوا فِيهَا ۚ فَإِن لَّمْ يَعْتَزِلُوكُمْ وَيُلْقُوا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَيَكُفُّوا أَيْدِيَهُمْ فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ ۚ وَأُولَٰئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ﴿٩١﴾

९१. तुम कुछ दुसरों को पाओगे जो तुम से और अपनी क़ौम से महफ़ूज़ रहना चाहते हैं, और जब कभी वह फ़ितना[1] की तरफ़ फेरे जाते हैं तो उस में औंधे मुहँ पड़ जाते हैं, अगर वह तुम से अलग न रहें और तुम से सुलह न करें और अपने हाथ न रोकें तो उन्हें पकड़ो और जहाँ पाओ क़त्ल करो, यही वह हैं जिन पर हम ने तुम को खुली हुज्जत दिया है।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَن يَقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا خَطَأً ۚ وَمَن قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَأً فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ إِلَّا أَن يَصَّدَّقُوا ۚ فَإِن كَانَ مِن قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ

९२. किसी मुसलमान के लिये जायेज़ नहीं कि किसी मुसलमान का क़त्ल कर दे, लेकिन चूक से हो जाये (तो और बात है) और जो इंसान किसी मुसलमान का क़त्ल चूक से कर दे[2] तो उस पर एक मुसलमान ग़ुलाम (या दासी) आज़ाद करना और मक़तूल के रिश्तेदारों को ख़ून की क़ीमत देना है।[3] लेकिन यह और बात

---

[1] फ़ितना से मुराद शिर्क भी हो सकता है। اركسوا فيها उसी शिर्क में लौटा दिये जाते, या फ़ितना से मुराद लड़ाई है कि जब उन्हें मुसलमानों के साथ लड़ने के लिए बुलाया या लौटाया जाता है, तो वह उस पर तैयार हो जाते हैं।

[2] ग़लती की वजह और हालात कई एक हो सकती हैं, मक़सद है कि ख़्याल और इरादा क़त्ल करने का न हो, लेकिन किसी वजह से क़त्ल हो जाये।

[3] यह ग़लती से क़त्ल के गुनाह की सज़ा का बयान हो रहा है, जो दो रूप में है। एक कफ़्फ़ारा और तौबा के रूप में है, या एक मुसलमान ग़ुलाम को आज़ाद करना और दूसरे इंसानी हुक़ूक़ के रूप में है, और वह है दियत (ख़ून की क़ीमत) मरने वाले के ख़ून के बदले मरने वाले के वारिसों को जो कुछ भी दिया जाये, वह दियत है। और दियत की मिक़दार हदीसों की बुनियाद

وَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِّنَ اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٩٢﴾

है कि वह माफ़ कर दें, और अगर वह मक़तूल तुम्हारे दुश्मन क़ौम से हो और मुसलमान हो तो एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद करना ज़रूरी है, और अगर मक़तूल उस क़ौम से है जिसके और तुम्हारे (मुसलमानों के) बीच सुलह है तो ख़ून की क़ीमत उसके रिश्तेदारों को अदा करना है और एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद करना भी है, और जो न पाये उस को दो महीने लगातार रोज़ा रखना है[1] अल्लाह से माफ़ करवाने के लिए, और अल्लाह जानने वाला व हिक्मत वाला है।

وَمَن يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا ﴿٩٣﴾

९३. और जो कोई किसी मुसलमान को जान-बूझ कर क़त्ल कर डाले उसकी सज़ा जहन्नम है, जिस में वह हमेशा रहेगा, उस पर अल्लाह (तआला) का ग़ज़ब है।[2] उसे अल्लाह (तआला)

पर सौ ऊंट या उसके बराबर नग़द सोना, चाँदी या रूपया के रूप में होगी।

टिप्पणी : ध्यान रहे कि जान बूझ कर क़त्ल में ख़ून का बदला ख़ून है (जिसे क़िसास कहते हैं) या सज़ा के तौर पर दियत है, और सज़ा के तौर पर दियत की मिक़दार सौ ऊंट है जो उम्र और सेहत के हिसाब से तीन तरह का होना चाहिए, जबकि भूल-चूक में क़त्ल होने से सिर्फ़ दियत है, क़िसास नहीं है।

[1] यानी अगर ग़ुलाम आज़ाद करने की ताक़त न हो तो पहली हालत और इस आख़िरी हालत में दियत के साथ लगातार (बिना नाग़ा) के दो माह रोज़े हैं, अगर बीच में नाग़ा हो गया तो पुन: नये सिरे से रोज़े रखने ज़रूरी होंगे, लेकिन दीनी वजह से नाग़ा हो जाने पर नये सिरे से रोज़ा रखने की ज़रूरत नहीं है। जैसे माहवारी, प्रसव रक्त या कठिन रोग की वजह से रोज़ा रखने में रुकावट हो, सफ़र को दीनी वजह मानने में इख़्तिलाफ़ है। (इब्ने कसीर)

[2] यह जान बूझकर किये गये क़त्ल की सज़ा है। क़त्ल तीन तरह का होता है : (१) अनजाने में क़त्ल (जिसका बयान इस आयत से पहली आयत में है) (२) जान बूझकर क़त्ल की तरह (जो हदीस से साबित है) (३) जान बूझकर क़त्ल, जिसका मतलब है किसी का इरादये क़त्ल से क़त्ल किया गया हो, और इसके लिए उस साधन तंत्र का इस्तेमाल करना जिससे आम तौर पर क़त्ल किया जाता है, जैसे तलवार, भाला वग़ैरह। इस आयत में मुसलमान के क़त्ल पर बहुत सख़्त चेतावनी (तंबीह) दी गयी है जैसे : इसकी सज़ा जहन्नम है, जिसमें हमेशा रहना होगा, इसके सिवाय अल्लाह तआला का ग़ज़ब और उसकी लानत और बहुत बड़ा अज़ाब भी होगा, इतनी सख़्त सज़ा एक ही वक़्त में किसी दूसरे गुनाह में बयान नहीं की गई हैं, जिससे यह वाज़ेह होता है कि एक मुसलमान का क़त्ल अल्लाह तआला के यहाँ कितना सख़्त गुनाह है।

ने लानत की है और उस के लिए बहुत बड़ी सज़ा तैयार कर रखी है।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰٓى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۡ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ۭ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿٩٤﴾

९४. हे ईमानवालो ! जब तुम अल्लाह की राह में जा रहे हो तो जाँच-पड़ताल कर लो और जो तुम से सलाम अलैक कहे तुम उसे यह न कहो कि तू ईमानवाला नहीं। तुम दुनियावी ज़िन्दगी के असबाब की खोज में हो तो अल्लाह (तआला) के पास बहुत से सुख के असबाब हैं, पहले तुम भी ऐसे ही थे, फिर अल्लाह (तआला) ने तुम पर एहसान किया, इसलिए तुम ज़रूर खोज (छानबीन) कर लिया करो, बेशक अल्लाह (तआला) तुम्हारे अमलों को अच्छी तरह जानता है।

لَا يَسْتَوِي الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِي الضَّرَرِ وَ الْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ ۭ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ۭ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ۭ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿95﴾

९५. जो मुसलमान बिला वजह बैठे रहें और जो अल्लाह की राह में अपने तन-धन के साथ जिहाद करते हों बराबर न होंगे, अल्लाह ने उन्हें जो अपने मालों और जानों के साथ जिहाद करते हैं उन पर जो बैठ रहते हैं दर्जों में फ़ज़ीलत दी है और वैसे तो हर एक को शुभवचन[1] दिया है, लेकिन अल्लाह ने जो जिहाद करने वाले हैं उनको बैठे रहने वालों पर बड़े अज्र की फ़ज़ीलत दी है।

دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿96﴾

९६. अपनी तरफ़ से दर्जे की भी, माफ़ी की भी और रहम की भी, और अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

हदीस में भी इसकी कड़ी आलोचना और इस पर सख़्त चेतावनी का बयान है।

[1] यानी तन, मन और धन से जिहाद करने वालों को जो मुक़ाम हासिल होगा, जिहाद में हिस्सा न लेने वाले जबकि इस से महरूम रहेंगे, फिर भी अल्लाह तआला ने दोनों को भलाई का वादा किया है। इस से आलिमों ने यह मतलब निकाला है कि आम हालतों में जिहाद फ़र्ज़ नहीं, ज़रूरत के मुताबिक़ फ़र्ज़ है यानी अगर आवश्यकतानुसार लोग जिहाद में हिस्सा ले लें तो उस इलाके के दूसरे लोगों की ओर से इस फ़र्ज़ की अदायगी समझी जायेगी।

९७. जो लोग अपने आप पर ज़ुल्म करने वाले हैं, जब फ़रिश्ते उनकी जान निकालते हैं तो कहते हैं कि तुम किस हालत में थे? वह कहते हैं कि हम जमीन में कमज़ोर थे,[1] तो वे सवाल करते हैं कि क्या अल्लाह की जमीन कुशादा न थी कि तुम उस में हिजरत कर जाते? इन्हीं लोगों का मुक़ाम जहन्नम है और वह बुरा मुक़ाम है।

إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّىٰهُمُ الْمَلَٰٓئِكَةُ ظَالِمِيٓ أَنفُسِهِمْ قَالُوا۟ فِيمَ كُنتُمْ ۖ قَالُوا۟ كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ قَالُوٓا۟ أَلَمْ تَكُنْ أَرْضُ اللَّهِ وَٰسِعَةً فَتُهَاجِرُوا۟ فِيهَا ۚ فَأُو۟لَٰٓئِكَ مَأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَسَآءَتْ مَصِيرًا ﴿97﴾

९८. लेकिन जो मर्द, औरत और बच्चे मजबूर हैं जो कोई उपाय नहीं कर सकते और न रास्ता जानते हैं।[2]

إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَٰنِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ﴿98﴾

९९. तो बहुत मुमकिन है कि अल्लाह (तआला) उन्हें माफ़ कर दे, और अल्लाह माफ़ करने वाला बख़्शने वाला है।

فَأُو۟لَٰٓئِكَ عَسَى اللَّهُ أَن يَعْفُوَ عَنْهُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَفُوًّا غَفُورًا ﴿99﴾

१००. और जो कोई अल्लाह की राह में हिजरत करेगा, वह जमीन पर बहुत से रहने की जगह भी पायेगा और कुशादगी भी, और जो कोई अपने घर से अल्लाह (तआला) और उस के रसूल (ﷺ) की तरफ़ निकल पड़ा, फिर उसे मौत ने पकड़ लिया हो तो भी ज़रूर उसका अज्र अल्लाह (तआला) के ऊपर होगा, और अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला रहीम है।

وَمَن يُهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرَٰغَمًا كَثِيرًا وَسَعَةً ۚ وَمَن يَخْرُجْ مِنۢ بَيْتِهِۦ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِۦ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُۥ عَلَى اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿100﴾

[1] यहाँ "जमीन" से मुराद आयत के उतरने की फ़ज़ीलत की बुनियाद पर मक्का और उसका क़रीबी इलाक़ा है और अल्लाह की जमीन से मुराद मदीना है, लेकिन हुक्म के बुनियाद पर आम धरती है यानी पहला मुक़ाम काफ़िरों का इलाक़ा होगा, जहाँ इस्लाम की तालीम के हिसाब से काम करना कठिन हो जाये। और अल्लाह की जमीन से मुराद वह हर इलाक़ा होगा जहाँ इंसान अल्लाह के दीन की पैरवी के मक़सद से हिजरत करके जाते हैं।

[2] यह उन मर्दों, औरतों और बच्चों को इस हुक्म से अलग किया है, जो वसायेल से महरूम और जो राह से भी अंजान थे। बच्चे अगरचे दीनी क़ानून की पैरवी करने के लिए मजबूर नहीं हैं, लेकिन यहाँ उनका बयान करके हिजरत की फ़ज़ीलत को और वाज़ेह किया गया है कि बच्चे भी हिजरत करें या फिर यहाँ पर बालिग़ उम्र के क़रीब पहुँचने वाले बच्चे होगें।

وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَوٰةِ إِنْ خِفْتُمْ أَن يَفْتِنَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ إِنَّ الْكَٰفِرِينَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِينًا ﴿١٠١﴾

१०१. और जब ज़मीन में सफ़र करो तो तुम पर नमाज़ क़स्र करने (चार रकअत की नमाज़ दो रकअत पढ़ने में) कोई बुराई नहीं, अगर तुम्हें यह डर हो कि काफ़िर (विश्वासहीन) तुम्हें तकलीफ़ देंगे,[1] बेशक कुफ़्फ़ार तुम्हारे खुले दुश्मन हैं।

وَإِذَا كُنتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَوٰةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُم مَّعَكَ وَلْيَأْخُذُوٓا أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِن وَرَآئِكُمْ وَلْتَأْتِ طَآئِفَةٌ أُخْرَىٰ لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ ۗ وَدَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ تَغْفُلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيلُونَ عَلَيْكُم مَّيْلَةً وَٰحِدَةً ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِن كَانَ بِكُمْ أَذًى مِّن مَّطَرٍ أَوْ كُنتُم مَّرْضَىٰٓ أَن تَضَعُوٓا أَسْلِحَتَكُمْ ۖ وَخُذُوا حِذْرَكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَٰفِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿١٠٢﴾

१०२. और जब आप उन में हों और उन के लिए नमाज़ को क़ायम करें तो चाहिए कि उनका एक गुट आप के साथ हथियार लिए खड़ा हो, फिर जब यह सज्दा कर चुकें तो यह हट कर तुम्हारे पीछे आ जायें और दूसरा गुट जिस ने नमाज़ नहीं पढ़ी है वह आ जाये, और तेरे साथ नमाज़ अदा करे और अपना बचाव और अपने हथियार लिए रहे, काफ़िर चाहते हैं कि तुम किसी तरह अपने हथियार और अपने सामानों से बेख़बर हो जाओ, तो वह तुम पर अचानक हमला कर दें।[2] और हाँ, अपने हथियार उतारकर रखने में उस वक़्त तुम पर कोई बुराई नहीं जबकि तुम तकलीफ़ में हो, या बारिश की वजह या रोग होने की वजह हो और

---

[1] इस में सफ़र की हालत में नमाज़ क़स्र करना (चार रकअत वाली नमाज़ को दो रकअत ही पढ़ने) की इजाज़त दी जा रही है। "अगर तुम्हें डर हो" ग़ालिब हालात की बुनियाद पर है, क्योंकि उस समय पूरा अरब मैदाने जंग बना हुआ था, किसी तरफ़ का सफ़र ख़तरे से ख़ाली नहीं था, यानी यह रुकावट नहीं है कि अगर रास्ता में डर हो तो क़स्र का हुक्म है, क्योंकि क़ुरआन करीम के दूसरे मुक़ामों पर इसी तरह की शर्तों का बयान है जो ग़ालिब हालात से ऐसा मुमकिन हो सकता है। जैसे "तुम अपनी दासियों को बदकारी के लिए मजबूर न करो, अगर वह इससे बचना चाहें" चूँकि वह बचना चाहती थी इसलिए अल्लाह तआला ने बयान किया, नहीं तो इसका मतलब यह कदापि नहीं कि अगर वह तैयार हों तो तुम्हारे लिए जायेज़ है कि तुम उन से कुकर्म करवा लिया करो।

[2] इस आयत में सलातुल ख़ौफ़ (डर के वक़्त की नमाज़) की आज्ञा, बल्कि हुक्म दिया जा रहा है। सलातुल ख़ौफ़ का मतलब है डर की नमाज़, यह उस वक़्त जायेज़ है, जब मुसलमान और काफ़िरों की फ़ौजें आमने-सामने जंग के लिए तैयार खड़ी हों और एक पल की भी ग़फ़लत मुसलमानों के लिए बहुत ही नुक़सानदह साबित हो सकती है, ऐसे वक़्त में अगर नमाज़ का वक़्त आ जाये तो सलातुल ख़ौफ़ का हुक्म है।

अपने बचाव के सामान साथ में लिये रखो। बेशक अल्लाह तआला ने नकारने वालों के लिए रुसवाई का अज़ाब तैयार कर रखा है।

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ ۚ فَإِذَا اطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۚ إِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ﴿103﴾

१०३. फिर जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो उठते, बैठते और लेटते अल्लाह (तआला) का ज़िक्र करते रहो[1] और शांति प्राप्त (हासिल) हो तो नमाज़ क़ायम करो, बेशक[2] नमाज़ मुसलमानों पर निश्चित और निर्धारित (मुक़र्रर) वक़्त पर फ़र्ज़ की गयी है।[3]

وَلَا تَهِنُوْا فِي ابْتِغَاءِ الْقَوْمِ ۖ إِنْ تَكُوْنُوْا تَأْلَمُوْنَ فَإِنَّهُمْ يَأْلَمُوْنَ كَمَا تَأْلَمُوْنَ ۚ وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿104﴾

१०४. और उन लोगों का पीछा करने से सुस्ती न करो, अगर तुम्हें तकलीफ़ होती है, तो उन्हें भी तकलीफ़ होती है जैसे तुम्हें होती है, और तुम अल्लाह (तआला) से वह उम्मीदें रखते हो जो उन्हें नहीं, और अल्लाह (तआला) जानने वाला हिक्मत वाला है।

إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَا أَرٰىكَ اللّٰهُ ۚ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَآئِنِيْنَ خَصِيْمًا ﴿105﴾

१०५. बेशक, हम ने तुम्हारी तरफ़ हक़ के साथ किताब उतारा है, ताकि तुम लोगों के बीच उस के हिसाब से इंसाफ़ करो जिस से अल्लाह (तआला) ने तुम्हें बाख़बर कराया, और ख़्यानत करने वालों के हिमायती न बनो।

وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ۖ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿106﴾

१०६. और अल्लाह (तआला) से माफ़ी माँगो, बेशक अल्लाह तआला बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

---

[1] मुराद यही डर की नमाज़ है, इस में चूँकि सहूलत दी गयी है, इसलिए इसको पूरा करने के लिए कहा जा रहा है कि खड़े, बैठे, और लेटे अल्लाह का बयान करते रहो।

[2] इस से मुराद यह है कि जब जंग के बादल छँट जायें तो फिर नमाज़ को उस के उसी तरीक़े के हिसाब से पढ़ना है, जो आम हालत में पढ़ी जाती है।

[3] इस में नमाज़ को मुक़र्ररा वक़्त से पढ़ने पर ज़ोर दिया जा रहा है, जिस से मालूम होता है कि दीनी वजुहात के बग़ैर दो नमाज़ों को जमा करना सही नहीं है, क्योंकि इस तरह कम से कम एक नमाज़ अपने मुक़र्ररा वक़्त पर नहीं पढ़ी जायेगी, जो इस आयत के ख़िलाफ़ है।

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ﴿107﴾

१०७. और उनकी ओर से झगड़ा न करो जो ख़ुद अपना ही विश्वासघात करते हैं, बेशक धोखेबाज़ पापी अल्लाह (तआला) को अच्छा नहीं लगता।

يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ﴿108﴾

१०८. वह लोगों से तो छुप जाते हैं, लेकिन अल्लाह से नहीं छुप सकते, वह उन के साथ है जब कि वे रात में अप्रिय बातों की योजना बनाते हैं और अल्लाह उन के करतूत को घेरे हुये है।

هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَاۗءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۣ فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿109﴾

१०९. हाँ, यह तुम लोग हो जो उन के हक़ में दुनिया में लड़े, लेकिन क़यामत के दिन उन की तरफ़ से अल्लाह से कौन बहस करेगा और कौन उनका वकील बनकर खड़ा होगा।[1]

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْۗءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿110﴾

११०. और जो भी कोई बुराई करे या ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म करे, फिर अल्लाह से माफ़ी माँगे तो अल्लाह को बख़्शने वाला, रहम करने वाला पायेगा।

وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰي نَفْسِهٖ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿111﴾

१११. और जो गुनाह करता है उसका बोझ उसी पर है,[2] और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है।

وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْۗئَةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْۗــــًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿112﴾

११२. और जो कोई बुराई या गुनाह करता है फिर किसी बेगुनाह पर थोप देता है, उस ने खुला बुहतान और बहुत गुनाह किया।

---

[1] यानी जब इस गुनाह की वजह से उसकी पकड़ होगी, तो कौन अल्लाह की पकड़ से उसे बचा सकेगा?

[2] इस विषय को दूसरी आयत में अल्लाह तआला फ़रमाता है :

﴿وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى﴾

"कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा।" (सूरः बनी इस्राईल-१५)

यानी कोई किसी का उत्तरदायी (जवाबदेह) नहीं होगा, हर इंसान को वही कुछ मिलेगा जो कमा कर साथ ले गया होगा।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ؕ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿113﴾

११३. और अगर आप पर अल्लाह का फ़ज़्ल और रहमत न होती तो उन के एक गुट ने आप को गुमराह करने की साजिश कर लिया था, लेकिन वह ख़ुद को गुमराह करते हैं और वह आप को कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकते और अल्लाह ने आप पर किताब और इल्म उतारा है और आप जिसको नहीं जानते थे उसका इल्म दिया है और आप पर अल्लाह का भारी फ़ज़्ल है।

لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿114﴾

११४. उनकी ज़्यादातर कानाफूसी में कोई भलाई नहीं,[1] लेकिन जिस ने एहसान या भलाई या लोगों के बीच सुधार के लिये हुक्म दिया[2] और जो यह काम अल्लाह की मर्ज़ी की खोज के लिए करेगा[3] हम उसे हक़ीक़त में बहुत बड़ा बदला देंगे।

وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿115﴾

११५. और जो सच्ची राह के वाज़ेह होने के बाद रसूल (मुहम्मद ﷺ) की मुख़ालफ़त करेगा और मुसलमानों के रास्ते के सिवाय खोज करेगा, हम उसे उसी ओर जिस ओर वह फिरता हो फेर देंगे, फिर हम उसे जहन्नम में झोंक[4] देंगे और वह बहुत बुरी जगह है।

---

[1] نجوى नजवा (कानफूसी) से मुराद वह बातें हैं जो मुनाफ़िक़ आपस में मुसलमानों के ख़िलाफ़ या एक-दूसरे के ख़िलाफ़ करते थे।

[2] यानी दान-पुण्य (सदक़ात), भलाई (जो हर तरह के सवाब को शामिल है) और लोगों के बीच सुधार करने के बारे में मशविरा सवाब पर आधारित हैं, जैसाकि इन कामों की फ़ज़ीलत और अहमियत पर हदीस में भी ज़ोर दिया गया है।

[3] क्योंकि अगर इख़्लास (यानी अल्लाह की ख़ुशी का मक़सद) नहीं होगा, तो बड़े से बड़ा कर्म भी बेकार जायेगा, बल्कि फ़ितना बन जायेगा। अल्लाह हमें फ़ितना और दिखावे के काम से बचाये।

[4] हिदायत वाज़ेह हो जाने के बाद रसूलुल्लाह ﷺ के ख़िलाफ़ और मुसलमानों का रास्ता छोड़ कर किसी दूसरे रास्ते की पैरवी इस्लाम में से निकलना है, जिस पर यहाँ जहन्नम की धमकी दी गयी है।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا (116)

११६. अल्लाह अपने साथ शिर्क किये जाने को कभी भी माफ़ नहीं करेगा और इस के सिवाय (गुनाहों) को जिस के लिये चाहे माफ़ कर देगा और जिस ने अल्लाह के साथ शिर्क किया वह बहुत दूर बहक गया।

إِنْ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا إِنَاثًا وَإِنْ يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَرِيدًا (117)

११७. यह तो अल्लाह (तआला) को छोड़कर केवल देवियों को पुकारते हैं [1] और हक़ीक़त में यह दुष्ट (मरदूद) शैतान को पुकारते हैं।[2]

لَعَنَهُ اللَّهُ ۘ وَقَالَ لَأَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَفْرُوضًا (118)

११८. जिसे अल्लाह (तआला) ने लानत की है, और उस ने कहा है कि तेरे बन्दों में से मैं मुकर्रर हिस्सा ले कर रहूँगा।[3]

وَلَأُضِلَّنَّهُمْ وَلَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ آذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُبِينًا (119)

११९. और उन्हें राह से भटकाता रहूँगा और झूठी उम्मीदें दिलाता रहूँगा[4] और उन्हें तालीम दूँगा कि जानवरों के कान चीरें[5] और उन से कहूँगा कि अल्लाह की बनाई हुई शक्ल बिगाड़ दें। सुनो, जो अल्लाह को छोड़ कर शैतान को अपना दोस्त बनायेगा वह खुले घाटे में होगा।

---

1 إناث (इनास) (औरतों) से मुराद या तो मूर्तियाँ हैं, जिनके नाम स्त्रीलिंग में थे। जैसे لات (लात), عزى (उज़्ज़ा), مناة (मनात) और نائلة (नायेल:) आदि। या मुराद फ़रिश्ते हैं, क्योंकि अरब के मूर्तिपूजक फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ समझते थे और उनकी इबादत करते थे।

2 मूर्ति, फ़रिश्तों और दूसरे लोगों की इबादत हक़ीक़त में शैतान की इबादत है, क्योंकि शैतान ही इंसान को अल्लाह के दरवाज़े से बहका कर दूसरे के दरबार में और चौखट पर झुकाता है, जैसा कि अगली आयत में है।

3 "मुक़र्रर हिस्सा" से मुराद नज़र-नियाज़ भी हो सकता है, जो मूर्तिपूजक, क़ब्रों में दफ़न (गड़े) इंसान के नाम पर निकालते हैं और नरकवासियों का वह हिस्सा भी हो सकता है, जिन्हें शैतान भटका कर अपने साथ जहन्नम में ले जायेगा।

4 यह वह झूठी उम्मीदें हैं, जो शैतान के लालच और हस्तक्षेप (दख़लअंदाज़ी) से पैदा होती हैं और इंसानों के भटकावे की वजह बनती हैं।

5 यह بحيرة (बहीर:) और سائبة (सायब:) जानवरों के निशान और शक्ल हैं। मुशरिक उनको मूर्तियों के नाम से दान कर देते थे, तो पहचान के लिए कान आदि चीर दिया करते थे।

१२०. वह उन से (जबानी) वादे करता रहेगा और हरे बाग़ दिखाता रहेगा (लेकिन याद रखो) शैतान के जो वादे उन से हैं वह पूरी तरह से धोखा हैं।

يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۖ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَٰنُ إِلَّا غُرُورًا ﴿120﴾

१२१. यह वह लोग हैं जिनका मुक़ाम जहन्नम है, जहाँ से उन्हें छुटकारा नहीं मिलेगा।

أُولَٰٓئِكَ مَأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا مَحِيصًا ﴿121﴾

१२२. और जो ईमान लायें और भले काम करें, हम उन्हें उन जन्नतों में ले जायेंगे, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जहाँ वह हमेशा रहेंगे। यह है अल्लाह का वादा जो बेशक सच है और अल्लाह से अधिक सच्चा अपनी बात में कौन हो सकता है?

وَالَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّٰتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۚ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا ﴿122﴾

१२३. तुम्हारी आरजूओं और अहले किताब की आरजूओं से कुछ नहीं होना है, जो बुरा करेगा उस की सजा पायेगा और अल्लाह के सिवाय अपना कोई वली और मददगार नहीं पायेगा।

لَّيْسَ بِأَمَانِيِّكُمْ وَلَآ أَمَانِيِّ أَهْلِ الْكِتَٰبِ ۗ مَن يَعْمَلْ سُوٓءًا يُجْزَ بِهِۦ وَلَا يَجِدْ لَهُۥ مِن دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿123﴾

१२४. और जो ईमानवाला हो मर्द हो या औरत और वह नेक अमल करे, बेशक इस तरह के लोग जन्नत में जायेंगे और खजूर की गुठली की फाँक के बराबर भी उस का हक़ नहीं मारा जायेगा।

وَمَن يَعْمَلْ مِنَ الصَّٰلِحَٰتِ مِن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰٓئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ نَقِيرًا ﴿124﴾

१२५. और उस से अच्छे दीन वाला कौन हो सकता है जो अल्लाह के लिए पूर्ण आत्म-समर्पण (मुकम्मल खुद सपुर्दगी) कर दे और वह नेक भी हो, और इब्राहीम के दीन की पैरवी किया हो जो यकसू थे और इब्राहीम को अल्लाह ने अपना दोस्त बना लिया है।[1]

وَمَنْ أَحْسَنُ دِينًا مِّمَّنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُۥ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَاتَّبَعَ مِلَّةَ إِبْرَٰهِيمَ حَنِيفًا ۗ وَاتَّخَذَ اللَّهُ إِبْرَٰهِيمَ خَلِيلًا ﴿125﴾

---

[1] यहाँ कामयाबी का एक मेयार और उसके एक नमूना का बयान किया जा रहा है, पैमाना यह है कि ख़ुद को अल्लाह के हवाले कर दे, भलाई करने वाला बन जाये और इब्राहीम के दीन की पैरवी करे और हज़रत इब्राहीम वह हैं, जिनको अल्लाह तआला ने अपना ख़लील बनाया।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿126﴾

१२६. और जो कुछ भी आसमानों और जमीन में है अल्लाह का है और अल्लाह हर चीज को घेरने वाला है।

وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ﴿127﴾

१२७. वे औरतों के बारे में आप से सवाल करते हैं, आप कह दें कि ख़ुद अल्लाह तुम्हें उन के बारे में हुक्म देता है और जो कुछ किताब (क़ुरआन) में तुम्हारे सामने पढ़ा जाता है, उन यतीम औरतों (लड़कियों) के बारे में जिन को तुम उन का वाजिब हक़्क़ नहीं देते और उन से शादी करना चाहते हो और कमज़ोर बच्चों के बारे में और यह कि तुम यतीमों के बारे में इंसाफ़ करो, और तुम जो भी नेक काम करोगे अल्लाह उसे अच्छी तरह जानने वाला है।

وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ؕ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ؕ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿128﴾

१२८. और अगर किसी बीवी को अपने शौहर की बेरूख़ी और बेपरवाही का डर हो तो दोनों पर आपस में सुलह कर लेने में कोई बुराई नहीं।[1] और सुलह बेहतर है, और लालच हर मन में शामिल कर दी गई है, और अगर तुम एहसान करो और तक़्वा अख़्तियार करो तो अल्लाह तुम्हारे करतूतों से बाख़बर है।

وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿129﴾

१२९. और तुम बीवियों के बीच कभी भी इंसाफ़ न कर सकोगे, अगरचे इसकी आरज़ू रखो, इसलिए तुम (एक की ओर) पूरी तरह न झुक जाओ कि दूसरी को अधर में लटकती हुई छोड़ दो, और अगर तुम सुधार कर लो और (नाइंसाफ़ी से) बचो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है।

---

[1] शौहर अगर किसी वजह से अपनी बीवी को पसन्द न करे और उस से दूरी और बेरुख़ी और इंकार रोज़ का अमल बना ले या एक से अधिक बीवियाँ होने की हालत में किसी कम ख़ूबसूरत बीवी से दूर रहे तो बीवी अपना कुछ हक़्क़ छोड़ कर शौहर से सुलह कर ले, तो इस सुलह से शौहर-बीवी पर कोई गुनाह न होगा, क्योंकि सुलह हर हालत में बेहतर है। मोमिनों की माँ हज़रत सौदा (رضي الله عنها) ने भी अपने बुढ़ापे में अपनी बारी हज़रत आयेशा को दे दिया था, जिसे नबी ﷺ ने क़ुबूल किया था। (सहीह बुख़ारी, मुस्लिम, किताबुन निकाह)

وَإِنْ يَتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ﴿130﴾

१३०. और अगर दोनों जुदा हो जायें तो अल्लाह अपनी रहमत से दोनों को बेनियाज़ कर देगा, और अल्लाह कुशादगी वाला हिक्मत वाला है।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ۚ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا ﴿131﴾

१३१. और आसमानों और ज़मीन का सब कुछ अल्लाह ही का है, और हम ने तुम से पहले के लोग जो किताब दिये गये थे, उन को और तुम को यही हुक्म दिया है कि अल्लाह से डरो और अगर तुम न मानो तो बेशक जो आसमानों में और ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है और अल्लाह बेनियाज़, तारीफ़ किया गया है।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿132﴾

१३२. और जो भी आसमानों में और ज़मीन में है सभी अल्लाह का है और अल्लाह काम बनाने वाला बस है।

اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ﴿133﴾

१३३. हे लोगो ! अगर वह चाहे तो तुम सब को ले जाये और दूसरों को ले आये, और अल्लाह इस पर पूरी क़ुदरत रखने वाला है।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ﴿134﴾

१३४. जो इंसान दुनियावी बदला चाहता हो, तो (याद रखो कि) अल्लाह के पास दुनिया व आख़िरत (दोनों का) बदला मौजूद है और अल्लाह सुनता देखता है।

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۖ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰۤى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ

१३५. हे ईमानवालो! इंसाफ़ पर मज़बूत रहने वाले और अल्लाह के लिये सच गवाही देने वाले बन जाओ, अगरचे वह ख़ुद तुम्हारे अपने और माँ-बाप और रिश्तेदारों के[1] ख़िलाफ़ हो, अगर वह इंसान धनी हो तो या ग़रीब हो तो उन दोनों से अल्लाह का रिश्ता ज़्यादा है[2] इसलिए

---

[1] इस में अल्लाह तआला ने ईमानवालों को इंसाफ़ क़ायम करने और सच्ची गवाही देने पर ज़ोर दिया है, चाहे उसकी वजह से उनको ख़ुद या माँ-बाप और रिश्तेदारों को नुक़सान ही क्यों न उठाना पड़े, इसलिए कि सच्चाई सब से बड़ी है और प्रभावशाली (ग़ालिब) है।

[2] यानी किसी धनवान के धन की वजह से छूट दी जाये, और न किसी ग़रीब की ग़रीबी का डर तुम्हें सच बात कहने से रोके बल्कि अल्लाह इन दोनों से तुम्हारे ज़्यादा क़रीब और अच्छा है।

وَإِن تَلْوُۥٓا۟ أَوْ تُعْرِضُوا۟ فَإِنَّ ٱللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿135﴾

इंसाफ़ करने में मनमानी न करो और अगर ग़लत बयान दोगे या न मानोगे तो अल्लाह तुम्हारे अमल से बाख़बर है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ ءَامِنُوا۟ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَٱلْكِتَٰبِ ٱلَّذِى نَزَّلَ عَلَىٰ رَسُولِهِۦ وَٱلْكِتَٰبِ ٱلَّذِىٓ أَنزَلَ مِن قَبْلُ ۚ وَمَن يَكْفُرْ بِٱللَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَٰلًۢا بَعِيدًا ﴿136﴾

१३६. हे ईमानवालो! अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) और उस किताब (पाक क़ुरआन) पर जिसे उस ने अपने रसूल (ﷺ) पर उतारी है और उन किताबों के ऊपर ईमान लाओ जो इस से पहले उतारी गयी, और जो अल्लाह और उस के फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उस के रसूलों और क़यामत के दिन को नहीं माने वह बहुत दूर बहक गया।

إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ثُمَّ كَفَرُوا۟ ثُمَّ ءَامَنُوا۟ ثُمَّ كَفَرُوا۟ ثُمَّ ٱزْدَادُوا۟ كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ ٱللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيلًۢا ﴿137﴾

१३७. बेशक जो ईमान लाये फिर नकार दिये, फिर ईमान लाये फिर इंकार किये और इंकार में बढ़ गये, अल्लाह हक़ीक़त में उन्हें माफ़ नहीं करेगा और न सीधा रस्ता दिखायेगा।

بَشِّرِ ٱلْمُنَٰفِقِينَ بِأَنَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿138﴾

१३८. मुनाफ़िक़ों को बाख़बर कर दो कि उन के लिये दु:खद अज़ाब ज़रूरी है।

ٱلَّذِينَ يَتَّخِذُونَ ٱلْكَٰفِرِينَ أَوْلِيَآءَ مِن دُونِ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۚ أَيَبْتَغُونَ عِندَهُمُ ٱلْعِزَّةَ فَإِنَّ ٱلْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ﴿139﴾

१३९. जो मुसलमानों को छोड़कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं, क्या वह उन के पास इज़्ज़त की खोज करते हैं? (तो याद रहे कि) सभी इज़्ज़त अल्लाह के हक़ में है।

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِى ٱلْكِتَٰبِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ ءَايَٰتِ ٱللَّهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَأُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا۟ مَعَهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا۟ فِى حَدِيثٍ غَيْرِهِۦٓ ۚ إِنَّكُمْ إِذًا مِّثْلُهُمْ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ جَامِعُ ٱلْمُنَٰفِقِينَ وَٱلْكَٰفِرِينَ فِى جَهَنَّمَ جَمِيعًا ﴿140﴾

१४०.और अल्लाह (तआला) ने तुम पर अपनी किताब (पाक क़ुरआन) में यह हुक्म उतारा है कि जब तुम अल्लाह की आयतों के साथ इंकार और मज़ाक़ होते सुनो तो उनके साथ उस मजलिस में न बैठो, जब तक कि वे दूसरी बात में न लग जायें, क्योंकि इस वक़्त तुम उन्हीं के समान होगे,[1] बेशक अल्लाह मुनाफ़िक़ों और

[1] यानी मना करने के बावजूद अगर तुम ऐसी मजलिसों में जहाँ अल्लाह की आयतों का मज़ाक़ उड़ाया जा रहा हो बैठोगे और उसे रोकोगे नहीं, तो फिर तुम भी उन के बराबर गुनाह के हिस्सेदार बनोगे।

काफिरों (विश्वासहीनों) को जहन्नम में इकट्ठा करने वाला है।

الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْٓا اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ قَالُوْٓا اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ﴿141﴾

१४१. जो तुम्हारे बारे में इंतेजार (प्रतीक्षा) करते हैं, फिर अगर तुम्हारी जीत अल्लाह की तरफ से हो तो ये कहते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे और अगर विश्वासहीनों (काफिरों) को जरा-सी कामयाबी मिले तो कहते हैं कि क्या हम ने तुम्हें घेर नहीं लिया और मुसलमानों से नहीं बचाया था? तो क़यामत (प्रलय) के दिन अल्लाह ही तुम्हारे बीच फ़ैसला करेगा और अल्लाह कभी भी काफिरों को मुसलमानों पर कोई रास्ता (ग़ल्बा) नहीं देगा।

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَاِذَا قَامُوْٓا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿142﴾

१४२. बेशक मुनाफ़िक़ीन अल्लाह (तआला) से छल कर रहे हैं, और वह उन्हें उस छल का बदला देने वाला है, और जब नमाज को खड़े होते हैं, तो बड़ी सुस्ती की हालत में खड़े होते हैं[1] सिर्फ लोगों को दिखाते हैं[2] और अल्लाह की याद बस बहुत कम करते हैं।

---

[1] नमाज इस्लाम का ख़ास रुक्न है और सब से बड़ा अमल है, और इस में भी वह काहिली और सुस्ती का दिखावा करते थे, क्योंकि उनका दिल ईमान और अल्लाह के डर और पाकी से महरूम था। यही वजह थी कि ईशा (रात) और फ़ज्र (सुबह) की नमाजें ख़ास तौर से उन पर भारी थीं, जैसाकि नबी ﷺ का फ़रमान है।

«أَثْقَلُ الصَّلَاةِ عَلَى الْمُنَافِقِينَ صَلَاةُ الْعِشَاءِ وَصَلَاةُ الْفَجْرِ...»

"मुनाफ़िक़ों के ऊपर ईशा और फ़ज्र की नमाज सब से भारी है।" (सहीह बुख़ारी, मवाक़ीतुस्सलात, सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद)

[2] यह नमाज भी वह मक्कारी और दिखावे के लिए पढ़ते थे ताकि मुसलमानों को धोखा दे सकें।

مُّذَبْذَبِينَ بَيْنَ ذَٰلِكَ لَآ إِلَىٰ هَٰٓؤُلَآءِ وَلَآ إِلَىٰ هَٰٓؤُلَآءِ ۚ وَمَن يُضْلِلِ ٱللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُۥ سَبِيلًا ﴿143﴾

१४३. वह बीच में ही असमंजस्य (शक व शुब्हा) में हैं, न पूरी तरह से उनकी ओर न जायज तरीक़े से इन की तरफ़, और जिसे अल्लाह (तआला) भटका दे, तो तू उस के लिए कोई रास्ता नहीं पायेगा।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّخِذُوا۟ ٱلْكَٰفِرِينَ أَوْلِيَآءَ مِن دُونِ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۚ أَتُرِيدُونَ أَن تَجْعَلُوا۟ لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَٰنًا مُّبِينًا ﴿144﴾

१४४. हे ईमानवालो! ईमानवालों को छोड़कर काफ़िरों को दोस्त न बनाओ, क्या तुम यह चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह (तआला) की खुली हुज्जत क़ायम कर लो।

إِنَّ ٱلْمُنَٰفِقِينَ فِى ٱلدَّرْكِ ٱلْأَسْفَلِ مِنَ ٱلنَّارِ وَلَن تَجِدَ لَهُمْ نَصِيرًا ﴿145﴾

१४५. मुनाफ़िक़ीन तो बेशक (नि:संदेह) जहन्नम के सब से निचले दर्जे में जायेंगे।[1] नामुमकिन है कि तू उनका कोई मदद करने वाला पा ले।

إِلَّا ٱلَّذِينَ تَابُوا۟ وَأَصْلَحُوا۟ وَٱعْتَصَمُوا۟ بِٱللَّهِ وَأَخْلَصُوا۟ دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُو۟لَٰٓئِكَ مَعَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۖ وَسَوْفَ يُؤْتِ ٱللَّهُ ٱلْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿146﴾

१४६. हां, अगर माफ़ी मांग लें और सुधार कर लें और अल्लाह (तआला) पर पूरा यक़ीन करें और सच्चे तौर से अल्लाह ही के लिए दीनी काम करें, तो यह लोग ईमानवालों के साथ हैं[2] अल्लाह (तआला) ईमानवालों को बहुत बड़ा बदला देगा।

مَّا يَفْعَلُ ٱللَّهُ بِعَذَابِكُمْ إِن شَكَرْتُمْ وَءَامَنتُمْ ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ﴿147﴾

१४७. अल्लाह (तआला) तुम्हें सज़ा देकर क्या करेगा, अगर तुम शुक्रगुज़ार रहो और ईमान के साथ रहो? और अल्लाह (तआला) बहुत इज़्ज़त करने वाला पूरा जानने वाला है।

---

[1] जहन्नम का सब से निचला दर्जा هاوية (हाविय:) कहलाता है, أعاذنا الله منها मुनाफ़िक़ों के बयानों अमलों और बुराईयों से हम सभी मुसलमानों की अल्लाह तआला हिफ़ाज़त करे।

[2] यानी मुनाफ़िक़ों में से जो इन चार बातों का साफ़ दिल से एहतेराम करेगा, वह जहन्नम मे जाने के बजाय जन्नत में ईमानवालों के साथ होगा

१४८. अल्लाह बुराई के साथ उंची आवाज़ से मुहब्बत नहीं करता, लेकिन मज़लूम को इस की इजाज़त है और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है।	لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿148﴾
१४९. अगर तुम कोई नेक काम खुल कर करो या छिपाकर या किसी बुराई को माफ़ करते हो, तो वेशक अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला, क़ुदरत वाला है।	اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ﴿149﴾
१५०. जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान नहीं रखते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उस के रसूलों के बीच अलगाव करें और कहते हैं कि हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते और इस के बीच रास्ता बनाना चाहते हैं।	اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۙ ﴿150﴾
१५१. यक़ीन करो, कि यह सभी लोग असली काफ़िर हैं।[1] और काफ़िरों के लिये हम ने बहुत सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा हैं।	اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿151﴾
१५२. और जो अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाये और उन में से किसी के बीच इख़्तिलाफ़ नहीं किये उन्हीं को अल्लाह उनका पूरा बदला देगा और अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है।	وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿152﴾
१५३. आप से अहले किताब यह सवाल करते हैं कि आप उन पर आसमान से कोई किताब उतारें[2] तो उन्होंने मूसा से इस से बड़ी माँग की थी और कहा कि हमें वाज़ेह तौर से अल्लाह	يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ

[1] अहले किताब के बारे में पहले बयान हो चुका है कि वह कुछ नबियों को मानते और कुछ को नहीं मानते। जैसे यहूदी हज़रत ईसा और हज़रत मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ को नहीं मानते, और ईसाई हज़रत मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ को क़ुबूल नही करते, अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि नबियों के बीच फ़र्क़ करने वाले पक्के काफ़िर हैं

[2] यानी जिस तरह हज़रत मूसा عليه السلام तूर पहाड़ पर गये और तख़्तियों पर लिखी हुई तौरात लेकर आये, उसी तरह आप आसमान पर जाकर लिखा हुआ क़ुरआन मजीद लेकर आईये, यह माँग सिर्फ़ फ़ितना, इंकार करने और हसद की बिना पर था।

بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿153﴾

को दिखाओ, फिर उन्हें बिजली ने घेर लिया उन के ज़ुल्म की वजह से फिर उन्होंने वाज़ेह दलीलों के आ जाने के बाद बछड़े को (पूज्य) बना लिया, और हम ने उन्हें माफ़ कर दिया और मूसा (नबी) को खुली दलील दिया।

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿154﴾

१५४. और उन से वादा लेने के लिए तूर (पहाड़) हम उन के ऊपर ले आये और उन्हें हुक्म दिया कि सज्दा करते हुए दरवाज़े में दाख़िल हो और यह भी हुक्म किया कि शनिवार के दिन उल्लंघन (तजावुज़) न करना और हम ने उन से सख़्त से सख़्त वादा लिया।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ۭ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿155﴾

१५५. ऐसा उन के वादा ख़िलाफ़ी करने और अल्लाह की आयतों के इंकार और बिला वजह रसूलों (ईशदूतों) के क़त्ल करने और उन के इस क़ौल की वजह से हुआ कि हमारे दिल ढके हुये हैं (नहीं) अल्लाह ने उन के कुफ़्र की वजह से उन के दिलों पर मुहर लगा दी है, इसलिये यह थोड़े ही ईमान रखते हैं।

وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا ﴿156﴾

१५६. और उन के कुफ़्र की वजह और मरियम पर बुहतान लगाने की वजह से।[1]

وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ

१५७. और उन के यह कहने की वजह से कि हम ने मसीह, मरियम के बेटे ईसा, अल्लाह के रसूल को क़त्ल कर दिया, हालांकि न तो उन्होंने क़त्ल किया न उन्हें फांसी दी[2] लेकिन उन के

[1] इस से मुराद युसूफ़ बढ़ई के साथ हज़रत मरियम के ग़लत सम्बन्ध का आरोप (इल्ज़ाम) है, आजकल भी कुछ लोग इस बहुत बड़े गुनाह (इल्ज़ाम) को एक "हक़ीक़त" साबित करने पर तुले हुए हैं और कहते हैं कि यूसुफ़ बढ़ई (अल्लाह की पनाह) हज़रत ईसा के बाप थे। और इस तरह (हज़रत) ईसा के बिना बाप के चमत्कारी जन्म का इंकार करते हैं।

[2] इस से वाज़ेह हुआ कि यहूदी हज़रत ईसा के क़त्ल या फांसी देने में कामयाब नहीं हुए, जैसेकि सूर: आले इमरान की आयत नं. ५५ की टिप्पणी में मुख़्तसर बयान आ चुका है।

شُبِّهَ لَهُمْ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ ۚ مَا لَهُم بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا (157)

लिये शबीह बना दिया गया।[1] यक़ीन करो कि ईसा के बारे में इख़्तिलाफ़ करने वाले उन के बारे में शक में हैं, उन्हें इसका कोई इल्म नही सिवाय गुमान वाली बातों पर काम करने के, इतना तय है कि उन्होंने उनका क़त्ल नही किया।

بَل رَّفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا (158)

१५८. बल्कि अल्लाह (तआला) ने उन्हें अपनी तरफ़ उठा लिया,[2] और अल्लाह जबरदस्त हिक्मत वाला है।

وَإِن مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا (159)

१५९. अहले किताब में से कोई ऐसा न बाक़ी बचेगा जो (हज़रत) ईसा (ﷺ) की मौत से पहले उन पर ईमान न लाये और क़यामत के दिन वह उन पर गवाह होंगे।

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبَاتٍ أُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَن سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا (160)

१६०. यहूदियों के ज़ुल्म की वजह से हम ने उन पर हलाल चीज़ें हराम कर दिया और उन के अल्लाह के रास्ते से ज़्यादा (लोगों) को रोकने की वजह से।

وَأَخْذِهِمُ الرِّبَا وَقَدْ نُهُوا عَنْهُ وَأَكْلِهِمْ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۚ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا (161)

१६१. और उन के ब्याज लेने की वजह से जिस से उन्हें रोक दिया गया था, और लोगों का माल नाहक लेने से, और हम ने उन में से काफ़िरों के लिये दु:खद अज़ाब तैयार किया है।

---

[1] इसका मतलब यह है कि जब हज़रत ईसा को यहूदियों की योजना का पता चला तो उन्होंने अपने पैरोकारों को, जिनकी तादाद १२ या १७ थी, जमा किया और फ़रमाया कि तुम में से कौन मेरी जगह पर क़ुर्बानी देने को तैयार है? ताकि अल्लाह तआला उसकी शक्लो सूरत मेरी जैसी बना दे, एक नौजवान इसके लिए तैयार हो गया, इसलिए हज़रत ईसा (ﷺ) को वहाँ से आसमान पर उठा लिया गया, उसके बाद यहूदी आये और उन्होंने उस नौजवान को फांसी पर चढ़ा दिया, जिसे ईसा की तरह बना दिया गया था, यहूदी यही समझते रहे कि हम ने हज़रत ईसा को फांसी पर चढ़ा दिया। हक़ीक़त यह है कि हज़रत ईसा वहाँ मौजूद ही नहीं थे, वह ज़िन्दा अपने जिस्म के साथ आसमान पर उठाये जा चुके थे। (इब्ने कसीर और फ़तहुल क़दीर)

[2] यह हक़ीक़त है कि अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से हज़रत ईसा को ज़िन्दा आसमान पर उठा लिया और मुतवातिर सहीह हदीस से भी इस बात की ताईद होती है। यह हदीसें, हदीस की सभी किताबों के अलावा सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम में लिखी हुई हैं। इन हदीसों से आसमान पर उठा लिए जाने के सिवाय क़ियामत से पहले उनके ज़मीन पर उतरने और दूसरी बातों का बयान है।

لَٰكِنِ الرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلِكَ ۚ وَالْمُقِيمِينَ الصَّلَاةَ ۚ وَالْمُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أُولَٰئِكَ سَنُؤْتِيهِمْ أَجْرًا عَظِيمًا (162)

१६२. लेकिन उनमें जो कामिल और मजबूत इल्म वाले हैं,[1] और ईमानवाले हैं जो उस पर ईमान लाते हैं, जो आप की तरफ़ उतारा गया, और जो आप से पहले उतारा गया और नमाज को क़ायम करने वाले हैं, ज़कात को अदा करने वाले हैं, अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखने वाले हैं, यह वह हैं जिन्हें हम बहुत बड़ा बदला अता करेंगे।

إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَىٰ نُوحٍ وَالنَّبِيِّينَ مِن بَعْدِهِ ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسَىٰ وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهَارُونَ وَسُلَيْمَانَ ۚ وَآتَيْنَا دَاوُودَ زَبُورًا (163)

१६३. बेशक हम ने आप की तरफ़ उसी तरह वहयी की है, जैसे कि नूह (ﷺ) और उन के बाद के नबियों की तरफ़ हम ने वहयी की, और इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याक़ूब और उनकी औलादों पर और ईसा व अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान की तरफ़। और हम ने दाऊद (ﷺ) को ज़बूर अता की।

وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَاهُمْ عَلَيْكَ مِن قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۚ وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَىٰ تَكْلِيمًا (164)

१६४. और आप से पहले के बहुत से रसूलों के वाक़ेआत हम ने आप से बयान किये हैं,[2] और बहुत से रसूलों की नहीं भी कीं हैं[3] और मूसा से अल्लाह ने सीधे बात की।

---

[1] इन से मुराद हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम वग़ैरह हैं, जो यहूदियों में से मुसलमान हुए थे।

[2] जिन रसूलों के नाम और उन के वाक़ेआत क़ुरआन में बयान किये गये हैं, उनकी तादाद २५ है। (१) आदम (२) इदरीस (३) नूह (४) हूद (५) स्वालेह (६) इब्राहीम (७) लूत (८) इस्माईल (९) इसहाक़ (१०) याक़ूब (११) यूसुफ़ (१२) अय्यूब (१३) शुऐब (१४) मूसा (१५) हारून (१६) यूनुस (१७) दाऊद (१८) सुलैमान (१९) इलियास (२०) अल-यसअ (२१) ज़करिया (२२) यहिया (२३) ईसा (२४) ज़ुलकिफ़ल, ज़्यादातर रावियों के नज़दीक (२५) हज़रत मोहम्मद सलवातुल्लाह व सलामुहू अलैहि व अलैहिम अजमईन।

[3] जिन नबियों और रसूलों के नाम और वाक़ेआत क़ुरआन में बयान नहीं हैं उनकी तादाद कितनी है? अल्लाह तआला ही अच्छी तरह से जानता है। एक हदीस में जो बहुत मशहूर है एक लाख चौबीस हज़ार और एक हदीस में आठ हज़ार बताई गयी है, लेकिन यह क़ौल बहुत कमज़ोर हैं, क़ुरआन और हदीस से सिर्फ़ यही मालूम होता है कि मुख़तलिफ़ वक़्त में और हालतों में ख़ुशख़बरी देने वाले और होशियार करने वाले (नबी) आते रहे हैं, आख़िर में यह नबूवत का सिलसिला हज़रत मोहम्मद ﷺ पर ख़त्म हो गया। आप ﷺ से पहले कितने नबी आये उनकी सही तादाद का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है, आप ﷺ के बाद जितने भी लोग नबूअत का दावा करें वह दज्जाल और झूठे हैं, और उन पर ईमान लाने वाले इस्लाम से बाहर हैं, और मोहम्मद ﷺ की उम्मत से अलग एक मुख़ालिफ़ उम्मत है। जैसे- बहाई, बाबिया और मिर्ज़ाई उम्मत।

رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿165﴾

१६५. (हम ने इन्हें) ख़ुशख़बरी और आगाह करने वाला रसूल बनाया, ताकि लोगों को कोई बहाना रसूलों को भेजने के बाद अल्लाह (तआला) पर न रह जाये, और अल्लाह (तआला) बड़ा जबरदस्त और हिक्मत वाला है।

لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿166﴾ؕ

१६६. जो कुछ आप की तरफ़ उतारा है, उस बारे में अल्लाह तआला ख़ुद गवाही देता है कि उसे अपने इल्म से उतारा है, और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं और अल्लाह (तआला) की गवाही बस है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًا بَعِيْدًا ﴿167﴾

१६७. बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते (दीन) से रोका वह बहुत दूर भटक गये।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا ﴿168﴾ۙ

१६८. बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया और ज़ुल्म किया, अल्लाह उन्हें माफ़ नहीं करेगा न उन्हें किसी राह की हिदायत करायेगा।[1]

اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿169﴾

१६९. लेकिन जहन्नम का रास्ता, जिस में वह हमेशा रहेंगे और यह अल्लाह पर आसान है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿170﴾

१७०. हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से सच लेकर रसूल (मुहम्मद ﷺ) आ गये उन पर ईमान लाओ, तुम्हारे लिये बेहतर है और अगर तुम ने इंकार दिया तो आसमानों और जमीन में जो भी है अल्लाह का है और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है।

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ

१७१. हे अहले किताब! अपने दीन में गुलू न करो[2] और अल्लाह के ऊपर सच ही बोलो, बेशक मरियम के बेटे ईसा मसीह सिर्फ़ अल्लाह

---

[1] क्योंकि लगातार अधर्म (कुफ़्र) और ज़ुल्म करके उन्होंने अपने दिलों को काला कर लिया है, जिस से अब उनकी हिदायत और नजात की कोई उम्मीद की किरण नहीं दिखायी देती।

[2] غلو का मतलब हद से सिवा (किसी चीज को बढ़ा-चढ़ा कर बयान करना) है। जैसे ईसाईयों ने हज़रत ईसा और उनकी माँ के बारे में किया कि उनको रिसालत और बन्दगी के मुक़ाम से उठा कर माबूद के पद पर आसीन कर दिया, और उनकी अल्लाह की तरह इबादत करने लगे, इसी तरह हज़रत ईसा के मानने वालों को भी गुलू का प्रदर्शन करके उन्हें मासूम (प्राकृतिक निष्पाप) बनाकर उन्हें हराम और हलाल बनाने का हक़ दे दिया।

مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰهَآ اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ ۫ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۫ وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗٓ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿171﴾

के रसूल और कलिमा हैं[1] जिसे मरियम की तरफ डाल दिया और उसकी तरफ़ से रूह हैं, इसलिए अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और न कहो कि अल्लाह तीन हैं,[2] रुक जाओ यह तुम्हारे लिये भला है। बेशक तुम्हारा इलाह सिर्फ़ एक अल्लाह है, वह पाक है इस से कि उसकी कोई औलाद हो, उसी के लिए है जो आसमानों और ज़मीन में है और अल्लाह काम बनाने के लिये काफ़ी है।

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿172﴾

१७२. मसीह अल्लाह के दास होने से कभी भी नफ़रत नहीं करते और न क़रीबी फ़रिश्ते[3] और जो अल्लाह की इबादत से नफ़रत और घमंड करेगा वह उन सभी को अपनी ओर जमा करेगा।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا وَاسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿173﴾

१७३. तो जो ईमान लाये और नेक काम किये उन्हें उनका पूरा बदला देगा और अपने फ़ज़्ल से और भी ज़्यादा देगा, लेकिन जो नफ़रत किये और घमन्ड किये उन्हें दुःखद अज़ाब देगा और वे अल्लाह के सिवाय अपने लिए कोई वली और मददगार नहीं पायेंगे।

---

[1] अल्लाह के कलिमा का मतलब यह है कि कलिमा كُنْ (हो जा) से बाप के बिना उनकी पैदाईश हुई, और यह कलिमा हज़रत जिब्रील के ज़रिये हज़रत मरियम तक पहुँचाया गया, अल्लाह की रूह का मतलब वह फूंक है, जो हज़रत जिब्रील ने अल्लाह के हुक्म से हज़रत मरियम के गरेबान में फूंका, जिसे अल्लाह तआला ने बाप के मनी की जगह पर बना दिया। इस तरह ईसा अल्लाह के लफ्ज़ भी हैं जो फ़रिश्ते ने हज़रत मरियम की तरफ डाला और उसकी वह रूह हैं जिसे लेकर जिब्रील मरियम की तरफ़ भेजे गये। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[2] इसाईयों के कई गुट हैं, कुछ हज़रत ईसा को अल्लाह, कुछ अल्लाह के साझी और कुछ अल्लाह का बेटा मानते हैं, फिर जो अल्लाह मानते हैं वह तीन अल्लाह के और हज़रत ईसा को तीन में से एक होने पर यक़ीन करते हैं। अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि तीन अल्लाह कहने से रुक जाओ, अल्लाह तआला सिर्फ़ एक है।

[3] हज़रत ईसा की तरह कुछ लोगों ने फ़रिश्तों को भी अल्लाह का साझी बना रखा था, अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि यह सब के सब अल्लाह के बंदे हैं, और इस से उन्हें कभी कोई इंकार नहीं है, तुम उन को अल्लाह या उसकी इबादत में किस बिना पर शरीक करते हो।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ قَدْ جَآءَكُم بُرْهَٰنٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَأَنزَلْنَآ إِلَيْكُمْ نُورًا مُّبِينًا (174)

१७४. हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की तरफ़ से दलील आ चुकी है[1] और हम ने तुम्हारी तरफ़ नूर (पाक क़ुरआन) उतार दिया है।[2]

فَأَمَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ بِٱللَّهِ وَٱعْتَصَمُوا۟ بِهِۦ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِى رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ وَيَهْدِيهِمْ إِلَيْهِ صِرَٰطًا مُّسْتَقِيمًا (175)

१७५. फिर जो लोग अल्लाह के ऊपर ईमान लाये और उसे मज़बूती से पकड़ लिया उन्हें अपने फ़ज़्ल और रहमत में दाख़िल करेगा और उन्हें अपने तरफ़ का सीधा रास्ता दिखायेगा।

يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ ٱللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِى ٱلْكَلَٰلَةِ ۚ إِنِ ٱمْرُؤٌا۟ هَلَكَ لَيْسَ لَهُۥ وَلَدٌ وَلَهُۥٓ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَآ إِن لَّمْ يَكُن لَّهَا وَلَدٌ ۚ فَإِن كَانَتَا ٱثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا ٱلثُّلُثَانِ مِمَّا تَرَكَ ۚ وَإِن كَانُوٓا۟ إِخْوَةً رِّجَالًا وَنِسَآءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ ٱلْأُنثَيَيْنِ ۗ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ لَكُمْ أَن تَضِلُّوا۟ ۗ وَٱللَّهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌۢ (176)

१७६. वे आप से सवाल करते हैं, आप कह दें तुम्हें अल्लाह कलाल: के बारे में निर्देश करता है[3] कि अगर किसी मर्द की मौत हो जाये और उस के वारिसों में कोई औलाद न हो और उसकी एक बहन हो तो उस के लिये छोड़े हुए (धन) का आधा है, और वह उस (बहन) का वारिस है अगर उस के कोई औलाद न हो, अगर दो बहनें हों तो दोनों के लिये दो तिहाई है उसमें से जिसे वह छोड़ गया[4] और अगर भाई बहन दोनों हों, मर्द भी और औरतें भी, तो मर्द के लिये दो औरतों के बराबर (हिस्सा) है अल्लाह तुम्हारे लिये बयान कर रहा है ताकि तुम भटक न जाओ और अल्लाह सब कुछ जानने वाला है।

---

[1] बुरहान, का मतलब है ऐसा अकाट्य तर्क, जिस के बाद किसी को बहाने का कोई मौका न रहे, ऐसी तरकीब जिस से हर तरह के शुब्हात ख़त्म हो जायें, इसीलिए इसे आगे आसमानी नूर कहा गया है।

[2] इस से मुराद पाक क़ुरआन है जो कुफ़्र और शिर्क के अंधेरे में रौशनी है, गुमराही की पगडंडियों पर सीधा रास्ता और अल्लाह तआला की मज़बूत रस्सी है, इसलिए इस के हिसाब से ईमान वाले अल्लाह के फ़ज़्ल और रहमत के मुस्तहिक़ होंगे।

[3] कलाल: के बारे में पहले बयान हो चुका है कि उस मरने वाले को कहते हैं, जिनका न बाप हो और न बेटा।

[4] यही हुक्म दो से ज़्यादा बहनों की हालत में होगा, यानी यह मतलब हुआ कि अगर कलाल: इंसान की दो या दो से ज़्यादा बहनें होंगी तो उन्हें कुल माल का दो तिहाई मिलेगा।

सूरतुल मायेद:-५

سُورَةُ الْمَائِدَةِ

सूरतुल मायेद: मदीने में उतरी, इस में एक सौ बीस आयतें और सोलह रूकूउ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ۗ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ (1)

१. हे ईमानवालो! वंधनों (वादों) को पूरा करो, तुम्हारे लिये चौपाये जानवर हलाल कर दिये गये हैं[1] उनके सिवाये जो पढ़कर तुम को सुनाये जाते हैं लेकिन एहराम की हालत में शिकार न करो, वेशक अल्लाह जो चाहता है हुक्म देता है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَاۗىِٕرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَاۗىِٕدَ وَلَآ اٰۗمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ۭ وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ۭ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَي الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۠ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَي الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ (2)

२. हे ईमानवालो! अल्लाह के धर्म अनुष्ठानों (शआईर) की वेहुरमती न करो, न हुरमत वाले महीने की,[2] न कुर्बानी के लिये हरम तक ले जाये जा रहे और पट्टा पहनाये जानवर की,[3] न हुरमत वाले घर (कअ़बा) को जा रहे लोगों की, जो अल्लाह की दया और ख़ुशी की खोज कर रहे हैं, और जब एहराम खोलो तो फिर शिकार कर सकते हो, और जिन्होंने तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका उनकी दुश्मनी तुम्हें हुदूद लांघ जाने पर तैयार न करे, और नेकी और परहेज़गारी पर आपस में मदद करो, गुनाह और ज़ुल्म में मदद

---

[1] بهيمة चौपाये जानवर को कहा जाता है, انعام ऊँट, गाय, बकरी और भेड़ को कहा जाता है, क्योंकि इनकी चाल में नर्मी होती है, यह पालतू चौपाये नर और मादा मिलाकर आठ तरह के हैं, जिनकी तफ़सीली जानकारी सूर: अल-अंआम की आयत नं॰ १२४ में आयेगी। इस के सिवाय जो जानवर जंगली कहलाते हैं, जैसे : हिरन, नील गाय आदि, जिनका आम तौर पर शिकार किया जाता है, यह भी जायेज़ हैं, जैसा कि सूर: अल-बक़र: की आयत नं॰ १७३ में तफ़सीली बयान हो चुका है। हां नुकीले दांत वाले वह जानवर जो अपने शिकार को पकड़ कर चीरता हो। जैसे: शेर, चीता, कुत्ता, बिल्ली, भेड़िया आदि नुकीले दांत वाले जानवर हैं, वह पक्षी जो अपना शिकार पंजे से झपट कर पकड़ता है, जैसे: शिकरा, बाज़, शाहीन, गिद्ध आदि ये सब हराम हैं।

[2] शहरुल हराम से मुराद हुरमत वाले चार महीने (रजब, ज़ुलक़ादा, ज़ुलहिज्जा और मोहर्रम) हैं इन का एहतेराम बाक़ी रखो और उन में क़त्ल न करो, कुछ ने इस से सिर्फ़ एक महीना यानी ज़ुलहिज्जा का महीना (हज का महीना) लिया है।

[3] हदी ऐसे जानवर को कहा जाता है, जो हाजी हरम में क़ुर्बानी देने के लिए साथ ले जाते थे।

न करो और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह सख़्त अजाब देने वाला है।

३. तुम पर हराम कर दिया गया है मुरदार, और ख़ून, और सूअर का गोश्त और जिस पर अल्लाह के सिवाय दूसरों का नाम पुकारा गया हो[1] और गला घुट कर मरा,[2] और चोट से मरा,[3] और गिरकर मरा[4] और दूसरे जानवर के सींघ मारने से मरा[5] और जिसका कुछ हिस्सा दरिन्दों ने खा लिया हो[6] लेकिन जिसे तुम ने जिब्ह कर दिया,[7] और जो थानों पर जिब्ह किया जाये और पांसे (लाटरी) के जरिये बांटना यह सभी बहुत

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَا أَكَلَ السَّبُعُ إِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوا بِالْأَزْلَامِ ذَٰلِكُمْ فِسْقٌ الْيَوْمَ يَئِسَ

---

1 यहाँ से उन हराम (प्रतिबन्धित) चीजों का बयान शुरू होता है, जिनका इशारा सूर: के शुरू में दिया गया है। आयत का इतना हिस्सा सूर: अल-बक़र: में गुजर चुका है। (देखिए आयत नं॰ १७३)

2 गला कोई इंसान घोट दे या किसी चीज से फंस कर ख़ुद गला घुट जाये, दोनों हालत में मरे हुए जानवर हराम हैं।

3 किसी ने पत्थर, लाठी या कोई और चीज मारी जिस से वह बिना जिब्ह (इस्लामी तरीक़े के हिसाब से गले पर छुरी चलाना) किये ही मर गया, जाहिलियत के दौर में ऐसे जानवरों को खा लिया जाता था, इस्लामी क़ानून ने मना कर दिया।

बन्दूक़ का शिकार : बन्दूक़ से शिकार किए हुए जानवरों के बारे में आलिमों (इस्लामी धर्मगुरुओं) के बीच एख़्तिलाफ़ है। इमाम शौकानी ने एक हदीस से मतलब निकालते हुए बन्दूक़ के शिकार को जायज माना है। (फ़तहुल क़दीर) यानी अगर बिस्मिल्लाह पढ़ कर गोली चलायी गयी और शिकार जिब्ह करने से पहले ही मर गया तो उसका खाना इस क़ौल के एतबार से जायज है।

4 चाहे वह ख़ुद गिरा हो या किसी ने पहाड़ आदि (वग़ैरह) से धक्का देकर गिराया हो।

5 نطيحة कलिमा منطوحة के मतलब में है, यानी किसी ने उसे टक्कर मार दी और बिना जिब्ह किये वह मर गया।

6 यानी शेर, चीता और भेड़िया जैसे दरिन्दों ने उसे खाया हो और वह मर गया हो, दौरे जाहिलियत में मर जाने के बावजूद ऐसे जानवरों को खा लिया जाता था।

7 आम रावियों के नजदीक यह छूट सभी बयान किये जानवरों के लिए है यानी गला घोंटने से चोट के जरिये घायल, ऊँचे मुक़ाम से गिरने से या टक्कर के जरिये या किसी दरिन्दे से घायल जानवर, अगर तुम इस हालत में पाओ कि उनमें जिन्दगी की किरण पायी जाती हो और फिर तुम उसे इस्लामी क़ानून के हिसाब से जिब्ह कर लो, तो फिर तुम्हारे लिए खाना जायेज होगा।

الَّذِينَ كَفَرُوا مِن دِينِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ۚ
الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ
نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ
فِي مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّإِثْمٍ ۙ فَإِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣﴾

बड़े गुनाह है। आज काफ़िर (मूर्तिपूजक) तुम्हारे दीन की तरफ़ से मायूस हो गये, इसलिए उनसे न डरो सिर्फ़ मुझ से डरो, आज मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमतें पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम दीन को पसन्द कर लिया, लेकिन जो भूख में बेक़रार हो जाये और कोई गुनाह न करना चाहता हो तो बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, बड़ा रहम करने वाला है ।[1]

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أُحِلَّ لَهُمْ ۖ قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ ۙ
وَمَا عَلَّمْتُم مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِينَ تُعَلِّمُونَهُنَّ
مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ ۖ فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ
وَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ
سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٤﴾

४. वह आप (रसूल) से सवाल करते हैं कि उन के लिये क्या (खाना) जायज़ है आप कह दें कि तुम्हारे लिये पाक चीज़ें जायज़ हैं, और वह शिकारी जानवर जो तुम ने सधा रखे हों जिन को कुछ बातें सिखाते हो जो अल्लाह ने तुम्हें सिखलाई, तो अगर तुम्हारे लिये वह (शिकार) को दबोच रखें और उसे छोड़ते समय अल्लाह का नाम उस पर लो तो उसे (शिकार को) खाओ,[2] और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है ।

الْيَوْمَ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ ۖ وَطَعَامُ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ حِلٌّ لَّكُمْ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۖ
وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ

५. आज सभी पाक चीजें तुम्हारे लिए हलाल कर दी गयीं और अहले किताब का ज़बीहा तुम्हारे लिये हलाल है[3] और तुम्हारा ज़बीहा उनके लिये जायज़ है, और पाक दामन मुसलमान औरतें

---

[1] यह भूख की बेक़रारी की हालत में हराम खाने की इजाज़त है, लेकिन इस के ज़रिये अल्लाह की नाफ़रमानी और हुदूद तोड़ने का इरादा न हो, सिर्फ़ जान बचाना ही मक़सद हो ।

[2] ऐसे सिखाये हुए जानवरों का शिकार किया हुआ जानवर दो शर्तों के साथ जायेज़ है, एक यह कि उसे शिकार पर छोड़ते समय बिस्मिल्लाह पढ़ लिया गया हो, दूसरा यह कि शिकारी जानवर शिकार करके अपने मालिक के लिए रख छोड़े और उसका इंतेज़ार करे, ख़ुद न खाये । अगरचे उसने उसे मार भी डाला हो, तब भी वह मरा हुआ शिकार किया हुआ जानवर जायेज़ होगा, जबकि उस के शिकार के लिए सिखाये और छोड़े हुए जानवर के सिवाय किसी दूसरे जानवर को शामिल न किया हो । (सहीह बुख़ारी, किताबुज्ज़बाएहे वस्सैदे-मुस्लिम किताबुस्सैदे)

[3] अहले किताब का वही ज़िब्ह किया जानवर जायेज़ होगा जिसमें ख़ून बह गया होगा, यानी उनका मशीन के ज़रिये ज़िब्ह जायेज़ नहीं है, क्योंकि इस में ख़ून का बहना जो ज़रूरी है पाया नहीं जाता ।

और जो तुम से पहले किताब (धर्मशास्त्र) दिये गये उन में से पाक दामन औरतें[1] जब तुम उन्हें उनकी महर दे दो, शादी करके बदकारी के लिये नहीं और न गुप्त प्रेमी बनाने के लिये, और जो ईमान को नकार दे उसका अमल बेकार हो गया, और वह आख़िरत में घाटे में रहेगा।

الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ مُحْصِنِينَ غَيْرَ مُسَافِحِينَ وَلَا مُتَّخِذِي أَخْدَانٍ ۗ وَمَن يَكْفُرْ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ⑤

६. हे ईमानवालो ! जब तुम नमाज़ के लिये उठो तो अपने मुँह और कोहनियों तक अपने हाथों को धो लिया करो[2] और अपने सिर का मसह (दोनो हाथ तर करके सिर पर फेरना) कर लो[3] और अपने पाँव टख़नों तक धुल लो,[4] और अगर तुम नापाक हो तो ग़ुस्ल कर लो,[5] और अगर

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ۚ وَإِن كُنتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوا ۚ وَإِن كُنتُم مَّرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ

---

[1] अहले किताब की औरतों के साथ शादी की इजाज़त के साथ एक तो पाक दामन ज़रूरी है, जो आजकल ज़्यादातर अहले किताब औरतों में नहीं मिलता है, दूसरे उस के बाद यह कहा गया है कि जो ईमान के साथ कुफ़्र करे, उसके आमाल बर्बाद हो गये। इस से यह तंबीह करना है कि अगर ऐसी औरत से शादी करने से ईमान के बर्बाद होने का डर है, तो यह बहुत नुक़सान वाली तिजारत है, और आजकल अहले किताब की औरतों से शादी करने में ईमान को जो ख़तरा है, उस के बयान की ज़रूरत नहीं।

[2] "मुहँ धोओ," यानी एक-एक, दो-दो या तीन-तीन बार दोनों हाथ कलाईयों तक धोने, कुल्ली करने, नाक में पानी डालकर छींकने के बाद, जैसाकि हदीस से साबित है, मुँह धोने के बाद हाथों को कोहनियों तक धोया जाये।

[3] मसह (यानी दोनों हाथ भीगा कर सर पर फेरना) पूरे सिर का किया जाये, जैसाकि हदीस से साबित है, "अपने हाथ आगे से पीछे (गुद्दी) तक ले जाये और फिर वापस वहाँ से आगे लाये जहाँ से शुरू किया था।" इसी के साथ कानों का मसह कर ले, अगर सिर पर पगड़ी या मुरेठा हो तो हदीस के हिसाब से मोज़ों की तरह उस पर भी मसह जायेज़ है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल तहारः) इस तरह एक बार मसह कर लेना काफ़ी है।

[4] أرجلكم का लगाव وجوهكم से है, यानी अपने पैर टख़नों तक धुलो, और अगर मोज़े या इस तरह के दूसरे कपड़े पैरों पर चढ़े हों तो (जबकि वज़ू की हालत में पहना हो) सहीह हदीस के अनुसार पैर धोने के बजाय मोज़ों आदि पर मसह भी जायेज़ है।

[5] नापाकी से मुराद वह नापाकी है जो एहतिलाम या बीवी से जिमाअ के वजह से होती है, और इसी हुक्म में माहवारी और प्रसव रक्त भी है, माहवारी और प्रसव रक्त रुक जाये तो पाकी के लिए ग़ुस्ल करना फ़र्ज़ है, लेकिन पानी न मिलने की हालत में तयम्मुम की इजाज़त है। (फ़तहुल क़दीर और ऐसरुत्तफ़ासीर)

أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِّنكُم مِّنَ الْغَائِطِ أَوْ لَامَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُم مِّنْهُ ۚ مَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُم مِّنْ حَرَجٍ وَلَٰكِن يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ (6)

तुम बीमार या सफ़र पर हो, या तुम में से कोई शौचालय से आये या तुम बीवी से मिले हो और पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो उसे अपने चेहरों और हाथों पर मलो, अल्लाह तुम पर तंगी नहीं चाहता, लेकिन तुम्हें पाक बनाना चाहता है और ताकि तुम पर अपनी नेमत पूरी करे और ताकि तुम शुक्रगुजार रहो।

وَاذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الَّذِي وَاثَقَكُم بِهِ إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ (7)

७. और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत और उस अहद को याद करो जिसका तुम से मुआहिदा हुआ, जब तुम ने कहा कि हम ने सुना और मान लिया और अल्लाह (तआला) से डरते रहो, बेशक अल्लाह (तआला) दिलों की बातों का जानकार है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ لِلَّهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ ۖ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ عَلَىٰ أَلَّا تَعْدِلُوا ۚ اعْدِلُوا هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ (8)

८. हे ईमानवालो! अल्लाह के लिये सच पर मजबूत, इंसाफ़ पर गवाह हो जाओ, और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें इंसाफ़ न करने पर तैयार न करे, इंसाफ़ करो वह परहेजगारी से बहुत क़रीब है और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाख़बर है।

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۙ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ (9)

९. जिन्होंने यक़ीन किया और नेक अमल किये अल्लाह ने उनको माफ़ और भारी बदला का वायेदा दिया है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ (10)

१०. और जिन्होंने यक़ीन नही किया और हमारे हुक्मों को झुठलाया वही जहन्नमी हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ هَمَّ قَوْمٌ أَن يَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنكُمْ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ (11)

११. ऐ ईमानवालों! अल्लाह (तआला) ने जो एहसान तुम पर किये हैं उसे याद करो, जब कि एक क़ौम ने तुम पर ज़ुल्म करना चाहा तो अल्लाह (तआला) ने उन के हाथों को तुम तक पहुँचने से रोक दिया, और अल्लाह (तआला) से डरते रहो और ईमानवालों को अल्लाह तआला पर ही भरोसा करना चाहिए।

وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۚ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا ؕ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مَعَكُمْ ؕ لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿12﴾

१२. और अल्लाह तआला ने इस्राईल के बेटों से वादा लिया और उन्हीं में से बारह सरदार हम ने मुक़र्रर किये,[1] और अल्लाह (तआला) ने फ़रमा दिया, मैं बेशक तुम्हारे साथ हूं, अगर तुम नमाज़ क़ायम रखोगे, और ज़कात देते रहोगे और मेरे रसूलों को मानते रहोगे और उनकी मदद करते रहोगे और अल्लाह (तआला) को बेहतर क़र्ज़ देते रहोगे, तो बेशक मैं तुम्हारी बुराईयाँ तुम से दूर रखूंगा और तुम्हें उन जन्नतों में ले जाऊंगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, अब इस वादा के बाद भी तुम में से जो इंकार करे, वह बेशक सीधे रास्ते से भटक गया।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿13﴾

१३. फिर उन के वादा तोड़ने के सबब हम ने उन पर लानत किया और उन के दिल सख़्त कर दिये कि वह कलिमा को उन के उस जगह से तबदील कर देते हैं,[2] और जो कुछ नसीहत उन को दी गयी उसका बहुत बड़ा हिस्सा भुला बैठे, उन के एक न एक ख़ियानत की ख़बर तुझे मिलती रहेगी, लेकिन थोड़े से (लोग) ऐसे नहीं भी हैं, फिर भी उन्हें माफ़ करता जा और माफ़ करता जा, बेशक अल्लाह तआला एहसान करने वालों को दोस्त रखता है।

---

[1] यह उस समय का वाक़ेआ है, जब हज़रत मूसा जबाबर: से जंग के लिए तैयार हुए तो उन्होंने अपनी उम्मत के बारह जातियों के बारह संरक्षक नियुक्त कर दिये ताकि वे उन्हें जंग के लिए तैयार भी करें, और अगुवाई भी करें और दूसरे मुआमलात का एहतेमाम भी करें।

[2] यानी इतने इंतेज़ाम और वादे के बावजूद भी इस्राईल की औलाद ने वादा तोड़ दिया, जिस के सबब वे अल्लाह के लानती हुए, इस लानत का दुनियावी नतीजा यह हुआ कि उन के दिल सख़्त कर दिये गये, जिस से उन के दिल असरअंदाज़ होने से महरूम हो गये और नबियों की तक़रीर और तालीम उन के लिए बेकार हो गयी।

وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوٓا إِنَّا نَصَٰرَىٰٓ أَخَذْنَا مِيثَٰقَهُمْ فَنَسُوا۟ حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوا۟ بِهِۦ فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ ٱلْعَدَاوَةَ وَٱلْبَغْضَآءَ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ ۚ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ ٱللَّهُ بِمَا كَانُوا۟ يَصْنَعُونَ (14)

१४. और जो अपने आप को इसाई कहते हैं, हम ने उन से (भी) वादा लिया था, उन्होंने भी उसका बड़ा हिस्सा भुला दिया, जो उन्हें शिक्षा दी गयी थी, तो हम ने भी उन के बीच दुश्मनी और नफ़रत डाल दिया जो क़यामत तक रहेगी।[1] और जो कुछ यह करते हैं जल्द ही अल्लाह तआला उन्हें सब बता देगा।

يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِّمَّا كُنتُمْ تُخْفُونَ مِنَ ٱلْكِتَٰبِ وَيَعْفُوا۟ عَن كَثِيرٍ ۚ قَدْ جَآءَكُم مِّنَ ٱللَّهِ نُورٌ وَكِتَٰبٌ مُّبِينٌ (15)

१५. हे अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद! ﷺ) आ गये जो बहुत सी वह बातें बता रहे हैं जो किताब (तौरात और इंजील) की बातें तुम छुपा रहे थे[2] और बहुत-सी बातों को छोड़ रहे हैं, तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से नूर और खुली किताब (पाक क़ुरआन) आ चुकी है।[3]

---

[1] यह अल्लाह को दिये गये वादे के ख़िलाफ़ अमल करने की वह सज़ा है, जो अल्लाह तआला की तरफ़ से उन पर क़ियामत तक के लिए थोप दी गयी है, इसलिए इसाईयों के कई गुट हैं जो एक-दूसरे से बहुत नफ़रत और हसद रखते हैं, एक-दूसरे को काफ़िर कहते हैं और एक-दूसरे की इबादतगाहों में इबादत नहीं करते, लगता है कि मुसलमानों पर भी यह दण्ड थोप दिया गया है, यह क़ौम भी कई गुटों में बंट गई है, जिन के बीच बहुत ज़्यादा इख़्तिलाफ़ हैं और नफ़रत व हसद की दीवार खड़ी है।

[2] यानी उन्होंने तौरात और इंजील में जो तबदीली की और उलट फेर किये उन्हें उजागर किया और जिनको छिपाते थे उन्हें ज़ाहिर किया, जैसे पत्थर से मारने की सज़ा, जैसा कि हदीस में इसकी तफ़सीली जानकारी मिलती है।

[3] 'नूर और खुली किताब' दोनों से मुराद एक ही 'क़ुरआन करीम' है, इनके बीच अरबी लफ़्ज़ वॉव (و) तफ़सीर के लिए है, लेकिन दोनों से मुराद एक यानी पाक क़ुरआन ही है, जिसका वाज़ेह सुबूत क़ुरआन करीम की अगली आयत है जिसमें कहा जा रहा है يهدي به الله "कि इस के ज़रिये अल्लाह तआला हिदायत देता है, अगर नूर और किताब दो होते तो कलिमा इस तरह होते يهدي بهما الله अल्लाह तआला इन दोनों के ज़रिये हिदायत देता है," लेकिन ऐसा नहीं है। इसलिए क़ुरआन करीम के इन लफ़्ज़ों से यह वाज़ेह हो गया कि नूर और खुली किताब दोनों का मतलब एक ही यानी क़ुरआन करीम है, यह नहीं कि नूर से नबी करीम ﷺ और खुली किताब से पाक क़ुरआन का मतलब है, जैसाकि इस्लाम मज़हब में नई बातें गढ़ने वालों ने गढ़ लिया है।

१६. जिस के जरिये अल्लाह उन्हें सलामती का रास्ता दिखाता है जो उसकी ख़ुशी की पैरवी करें और उन्हें अंधेरे से अपनी रहमत से नूर की तरफ़ निकाल लाता है और उन्हें सीधा रास्ता दिखाता है।

يَّهۡدِیۡ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضۡوَانَهٗ سُبُلَ
السَّلٰمِ وَيُخۡرِجُهُمۡ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوۡرِ
بِاِذۡنِهٖ وَيَهۡدِيۡهِمۡ اِلٰی صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿16﴾

१७. बेशक वह लोग काफ़िर हो गये जिन्होंने कहा कि मरियम का बेटा मसीह अल्लाह है। कह दो कि अगर मरियम का बेटा मसीह और उसकी मां और दुनिया के सभी लोगों को वह हलाक करना चाहे तो कौन है जिसका अल्लाह के सामने जरा भी हक़ है? और आसमानों और जमीन और जो दोनों के बीच है अल्लाह ही का मुल्क है, वह जो (भी) चाहे पैदा करता है और अल्लाह हर चीज पर क़ादिर है।

لَقَدۡ كَفَرَ الَّذِيۡنَ قَالُوۡۤا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الۡمَسِيۡحُ
ابۡنُ مَرۡيَمَ ؕ قُلۡ فَمَنۡ يَّمۡلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيۡـئًا
اِنۡ اَرَادَ اَنۡ يُّهۡلِكَ الۡمَسِيۡحَ ابۡنَ مَرۡيَمَ وَاُمَّهٗ
وَمَنۡ فِى الۡاَرۡضِ جَمِيۡعًا ؕ وَلِلّٰهِ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ
وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا ؕ يَخۡلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ
وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿17﴾

१८. और यहूदी और इसाई कहते हैं कि हम अल्लाह के बेटे और दोस्त हैं।[1] आप कह दीजिए कि फिर अल्लाह (तआला) तुम्हारे गुनाहों के सबब तुम्हें सजा क्यों देता है ? नहीं बल्कि तुम उसकी मख़लूक़ में एक इंसान हो, वह जिसे चाहता है माफ़ करता है और जिसे चाहता है सजा देता है और अल्लाह (तआला) की मिल्कियत आसमानों और जमीन पर और उनके बीच जो कुछ है हर चीज पर है और उसी की ओर पलट कर आना है।

وَقَالَتِ الۡيَهُوۡدُ وَالنَّصٰرٰى نَحۡنُ اَبۡنٰٓؤُا اللّٰهِ
وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلۡ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمۡ بِذُنُوۡبِكُمۡ ؕ
بَلۡ اَنۡتُمۡ بَشَرٌ مِّمَّنۡ خَلَقَ ؕ يَغۡفِرُ لِمَنۡ
يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَلِلّٰهِ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ
وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا وَاِلَيۡهِ الۡمَصِيۡرُ ﴿18﴾

१९. हे अहले किताब! रसूलों के आने में एक विलम्ब (वक़्फ़े) के बाद हमारा रसूल (मुहम्मद ﷺ) आ चुका है जो तुम्हारे लिये (धर्म विधानों) को बयान कर रहा है ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी देने वाला और आगाह करने वाला नहीं आया तो तुम्हारे पास एक ख़ुशख़बरी देने वाला और सतर्क (आगाह)

يٰۤاَهۡلَ الۡكِتٰبِ قَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُوۡلُنَا يُبَيِّنُ لَـكُمۡ
عَلٰى فَتۡرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنۡ تَقُوۡلُوۡا مَا جَآءَنَا
مِنۡۢ بَشِيۡرٍ وَّلَا نَذِيۡرٍ فَقَدۡ جَآءَكُمۡ بَشِيۡرٌ
وَّنَذِيۡرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿19﴾

[1] यहूदियों ने हजरत उजैर को और इसाईयों ने हजरत ईसा को अल्लाह का बेटा कहा और ख़ुद को भी अल्लाह का बेटा और उसका प्यारा समझने लगे।

करने वाला (आख़िरी रसूल) आ गया है,[1] बेशक अल्लाह हर चीज पर क़ादिर है।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يَٰقَوْمِ ٱذْكُرُوا۟ نِعْمَةَ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ أَنۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُم مُّلُوكًا وَءَاتَىٰكُم مَّا لَمْ يُؤْتِ أَحَدًا مِّنَ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿20﴾

२०. और याद करो जब मूसा (عليه السلام) ने अपनी क़ौम से कहा हे मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह (तआला) के उस एहसान को याद करो कि उस ने तुम में से पैग़म्बर बनाये और तुम्हें मुल्क अता किया,[2] और तुम्हें वह अता किया जो सारी दुनिया में किसी को अता नहीं किया।

يَٰقَوْمِ ٱدْخُلُوا۟ ٱلْأَرْضَ ٱلْمُقَدَّسَةَ ٱلَّتِى كَتَبَ ٱللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا۟ عَلَىٰٓ أَدْبَارِكُمْ فَتَنقَلِبُوا۟ خَٰسِرِينَ ﴿21﴾

२१. मेरी क़ौम वालो! उस पाक जमीन में दाख़िल हो, जो अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे नाम लिख दी है,[3] और अपनी पीठ न दिखाओ[4] कि नुक़सान में पड़ जाओगे।

قَالُوا۟ يَٰمُوسَىٰٓ إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ وَإِنَّا لَن نَّدْخُلَهَا حَتَّىٰ يَخْرُجُوا۟ مِنْهَا فَإِن يَخْرُجُوا۟ مِنْهَا فَإِنَّا دَٰخِلُونَ ﴿22﴾

२२. उन्होंने जवाव दिया हे मूसा! वहाँ तो ताक़तवर लड़ाकू लोग हैं और जब तक वह वहाँ से निकल न जायें, हम तो कभी भी नहीं जायेंगे, अगर वे वहाँ से निकल जायें तो हम (ख़ुशी से) वहाँ चले जायेंगे।

[1] हजरत ईसा और हजरत मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के बीच के वक़्त में जो लगभग ५७० साल का फ़र्क है, यह फ़र्क एक अवकाश (वक़्फ़ा) कहलाता है। अहले किताब से कहा जा रहा है कि इस अवकाश के बाद हम ने अपने आख़िरी रसूल (ﷺ) को भेज दिया है, अब तुम यह भी न कह सकोगे कि हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी देने वाला और बाख़बर करने वाला पैग़म्बर ही नहीं आया।

[2] ज़्यादातर नबी इस्राईल की औलादों में हुये है जिनका सिलसिला हजरत ईसा पर ख़त्म कर दिया गया और पैग़म्बर मुहम्मद इस्माईल की औलाद से हुए -ﷺ। इसी तरह कई बादशाह भी इस्राईल की औलाद में हुए और कुछ नबियों को भी अल्लाह तआला ने मुल्क अता किया, जैसे हजरत सुलेमान عليه السلام।

[3] इस से मुराद जीत है, जिस का वादा अल्लाह तआला ने जिहाद की शक्ल में उन से कर रखा था।

[4] यानी जिहाद से मुँह न मोड़ो।

२३. लेकिन जो अल्लाह से डर रहे थे उन में से दो मर्दों ने कहा जिन पर अल्लाह ने इंआम किया कि तुम उन पर दरवाज़े से दाख़िल हो जाओ, जब दाख़िल हो जाओगे तो तुम्ही ग़ालिब रहोगे और अगर ईमान रखते हो तो अल्लाह ही पर भरोसा रखो ।[1]

قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ غٰلِبُوْنَ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (23)

२४. उन्होंने कहा कि हे मूसा ! हम कभी भी वहाँ न जायेंगे जब तक वह उसमें रहेंगे, इसलिए तुम और तुम्हारा रब जाकर दोनों लड़ो हम यहीं बैठे हैं ।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَآ اَبَدًا مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَآ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ (24)

२५. उस (मूसा) ने कहा मेरे रब ! मैं सिर्फ़ ख़ुद पर और अपने भाई (हारून) पर हक़ रखता हूं इसलिए हमारे और फ़ासिकों के बीच अलगाव कर दे ।[2]

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ اِلَّا نَفْسِيْ وَاَخِيْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ (25)

२६. उस (अल्लाह) ने कहा यह चालीस साल तक उन पर हराम है, वह धरती में घूमते फिरते रहेंगे[3] इसलिए आप (मूसा) फ़ासिकों पर अफ़सोस न करें ।

قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۚ يَتِيْهُوْنَ فِى الْاَرْضِ ۭ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ (26)

---

[1] मूसा की क़ौम में सिर्फ़ यही दो इंसान निकले जिन्हें अल्लाह तआला की तरफ़ से मदद पर यक़ीन था, उन्होंने क़ौम को समझाया कि तुम हिम्मत तो करो, तो फिर देखो कि अल्लाह तआला किस तरह कामयाबी अता करता है ।

[2] इस में फ़ासिक़ क़ौम के सामने अपनी मजबूरी का इज़हार भी है, और उन से अलग होने का एलान भी ।

[3] यह तीह का मैदान कहलाता है, जिस में चालीस साल यह लोग अपनी नाफ़रमानी और जिहाद से इंकार के कारण फिरते रहे, फिर भी इस मैदान में अल्लाह ने उन्हें खाने के लिये मन्न (एक तरह की मीठी गोंद) और सल्वा (एक तरह की चिड़िया) उतारे, जिस से उकताकर उन्होंने अपने रसूल से कहा कि रोज़ एक तरह के खाने से हमारा मन भर गया, इसलिए अपने रब (अल्लाह) से दुआ करो कि वह कई तरह की वनस्पतियाँ और दालें हमारे लिये उपजाये, यहीं उन पर बादलों ने छाया की, पत्थर पर हज़रत मूसा के लाठी मारने से बारह जातियों के लिये बारह चश्मे जारी हुये, ऐसे ही दूसरे मोजिज़े भी होते रहे, चालीस साल बाद फिर ऐसी हालत पैदा की गई कि यह बैतुल मक़दिस में दाख़िल हुए ।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَيْ آدَمَ بِالْحَقِّ ۘ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ ۖ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ (27)

२७. और आदम के दो बेटों की सच्ची कहानी उन्हें पढ़कर सुना दो[1] जबकि दोनों ने एक-एक क़ुर्बानी भेंट दी तो एक से क़ुबूल की गई और दूसरे से क़ुबूल नहीं की गयी[2] तो उस ने कहा कि मैं तुझे ज़रूर मार डालूँगा तो उस ने कहा कि अल्लाह परहेज़गारों से ही क़ुबूल करता है।

لَئِنْ بَسَطْتَ إِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسِطٍ يَدِيَ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَكَ ۖ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ (28)

२८. अगर तू मुझे क़त्ल करने के लिये हाथ बढ़ायेगा तो मैं तुझे क़त्ल करने के लिए हाथ नहीं बढ़ा सकता, मैं अल्लाह सारी दुनिया के रब से डरता हूँ।

إِنِّي أُرِيدُ أَنْ تَبُوءَ بِإِثْمِي وَإِثْمِكَ فَتَكُونَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ (29)

२९.मैं चाहता हूँ कि तू मेरा गुनाह और अपना गुनाह समेट ले और जहन्नमियों में हो जाये, और यही ज़ालिमों का बुरा बदला है।

فَطَوَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ (30)

३०. बस उसकी इच्छाओं ने उसे भाई का क़त्ल करने के लिए तैयार कर दिया और उस ने उस का क़त्ल कर दिया, जिस से वह नुक़सान उठाने वालों में हो गया।

فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ كَيْفَ يُوَارِي سَوْءَةَ أَخِيهِ ۚ قَالَ يَا وَيْلَتَا أَعَجَزْتُ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَٰذَا الْغُرَابِ فَأُوَارِيَ سَوْءَةَ أَخِي ۖ فَأَصْبَحَ مِنَ النَّادِمِينَ (31)

३१. फिर अल्लाह (तआला) ने एक कव्वे को भेजा जो धरती खोद रहा था कि उसे दिखाये कि वह अपने भाई की लाश (शव) को किस तरह छिपा दे, वह कहने लगा हाय अफ़सोस ! क्या मैं ऐसा करने के लायक़ भी न रहा कि अपने भाई की लाश को इस कौए की तरह गाड़ सकता? फिर तो वह बड़ा दुखी और शर्मिन्दा हो गया।

---

[1] आदम के इन दो बेटों का नाम हाबील और क़ाबील था।

[2] यह चढ़ावा या क़ुर्बानी किसलिए पेश की गयी? इस के बारे में कोई सही क़ौल नहीं है, लेकिन यह ज़रूर मशहूर है कि आदम عليه السلام के दो बेटों ने अल्लाह के लिए क़ुर्बानी की, एक की क़ुबूल हुई दूसरे की नहीं, इसलिए दूसरा हसद का शिकार हो गया और अपने भाई को मार डाला।

مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۚ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِي الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَآ اَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ﴿32﴾

३२. इसी कारण हम ने इस्राईल की औलाद पर लिख दिया कि जो इंसान किसी को बिना इस के कि वह किसी का क़ातिल हो या धरती पर फ़साद पैदा करने वाला हो, क़त्ल कर डाले तो ऐसा है कि उस ने सभी लोगों को क़त्ल कर दिया, और जो इंसान एक की जान बचाये, उस ने मानो सभी को जिन्दा कर दिया।[1] और उन के पास हमारे रसूल बहुत-सी वाज़ेह निशानियाँ लेकर आये, लेकिन फिर भी उन में से ज़्यादातर लोग धरती पर ज़ुल्म (और ज़्यादती और क्रूरता) करने वाले ही रहे।

اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿33﴾

३३. उनकी सज़ा जो अल्लाह (तआला) से और उसके रसूल से लड़ें और धरती पर फ़साद करें यही है कि वे मार दिये जायें या फाँसी पर चढ़ा दिये जायें या उलटी तरफ़ से उन के हाथ पैर काट दिये जायें, या उन्हें देश से निकाल दिया जाये, यह तो हुई उन की दुनियावी ज़िल्लत और बेइज़्ज़ती और आख़िरत में उनके लिए भारी अज़ाब है।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿34﴾

३४. लेकिन जो अपने ऊपर तुम्हारे क़ाबू पाने से पहले माफ़ी माँग लें, तो बेशक अल्लाह तआला बड़ा माफ़ करने वाला, बड़ा रहम व करम करने वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿35﴾

३५. हे मुसलमानों! अल्लाह तआला से डरते रहो और उसकी ओर नज़दीकी हासिल करने की कोशिश करो।[2] और उसकी राह में जिहाद करो ताकि तुम्हारी भलाई हो।

---

[1] इस नाजायेज क़त्ल के बाद अल्लाह तआला ने इंसानों की क़ीमत को ज़ाहिर करने के लिये इस्राईल की औलाद को यह हुक्म उतारा, इस से अनुमान लगाया जा सकता है कि अल्लाह तआला के यहाँ इंसानों की कितनी अहमियत है।

[2] वसीला (وسيلة) का मतलब ऐसी चीज है जो किसी मक़सद को हासिल और उसकी नज़दीकी का ज़रिया बने, "अल्लाह तआला की नज़दीकी हासिल करने का सबब तलाश करो" का मतलब होगा कि ऐसे अमल करो जिस से तुम्हें अल्लाह की ख़ुशी और उसकी नज़दीकी हासिल हो। इमाम शौकानी का क़ौल है : "वसीला वह नेक अमल है जिन के ज़रिये से बन्दा अल्लाह की नज़दीकी हासिल करते हैं।" इसी तरह मना करदा और हराम चीज़ों और कामों से बचने से भी अल्लाह की नज़दीकी हासिल होती है, इसलिए मना करदा और हराम चीज़ों और कामों को छोड़ना भी अल्लाह की नज़दीकी हासिल करने का ज़रिया है, लेकिन बेवक़ूफ़ों (मूर्खों) ने इस हक़ीक़ी ज़रिया को छोड़ कर क़ब्र में गड़े लोगों को अपना ज़रिया बना लिया है, जिसका इस्लामी क़ानून में कोई जगह नहीं है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (36)

३६. यक़ीन करो, कि काफ़िरों के लिए अगर वह सब कुछ हो जो सारी धरती में है, और उस के बराबर और ज़्यादा भी हो और वह उन सब को क़यामत के दिन के अज़ाब के बदले फ़िदिया में देना चाहें तो भी असम्भव है कि उन से क़ुबूल कर लिया जाये, उन के लिए तो दुखदायी अज़ाब है।

يُرِيدُونَ أَن يَخْرُجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُم بِخَارِجِينَ مِنْهَا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ (37)

३७. वे चाहेंगे कि जहन्नम से निकल जायें, लेकिन वे कभी भी उस में से न निकल सकेंगे, उन के लिए तो दायमी अज़ाब है।[1]

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا جَزَاءً بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (38)

३८. चोर और चोरनी का हाथ काट दो,[2] यह उनके करतूत का बदला और अल्लाह की तरफ़ से सज़ा है, और अल्लाह तआला ताक़तवाला और हिक्मत वाला है।

فَمَن تَابَ مِن بَعْدِ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ (39)

३९. जो अपने गुनाह के बाद माफ़ी माँग ले और सुधार कर ले, तो अल्लाह (तआला) उसकी तौबा क़ुबूल करता है।[3] बेशक अल्लाह तआला माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَيَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (40)

४०. क्या तुझे इल्म नही कि अल्लाह (तआला) के लिए आसमानो ज़मीन का मुल्क है? जिसे चाहे अज़ाब दे जिसे चाहे माफ़ कर दे, अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

---

[1] यह आयत काफ़िरों (विश्वासहीन) के लिए है, क्योंकि ईमानवालों को सज़ा के बावजूद जहन्नम से निकाल लिया जायेगा, जैसाकि हदीस से इसकी तसदीक़ होती है।

[2] कुछ आलिमों के अनुसार चोरी का यह हुक्म आम है, चोरी थोड़ी सी चीज़ की हो या बहुत-सी चीज़ की। इसी तरह वह महफ़ूज़ मुक़ाम पर रखी हो या ग़ैर महफ़ूज़ मुक़ाम पर रखी हो, हर हालत में चोरी की सज़ा दी जायेगी, जब कि दूसरे उलमा के क़रीब इसके लिए महफ़ूज़ और मुक़र्रर ज़रूरी है, फिर तादाद के निर्धारण में इख़्तिलाफ़ है। हदीस के आलिमों के नज़दीक़ कम से कम तादाद चौथाई दीनार या तीन दिरहम के या उसकी क़ीमत के बराबर की कोई चीज़ हो, इस से कम की चोरी पर हाथ नहीं काटा जायेगा। इसी तरह हाथ कलाईयों से काटे जायेंगे, कोहनी या कंधों से नहीं, जैसाकि कुछ का ख़्याल है। (तफ़सीली जानकारी के लिए हदीस, फ़िक्ह और तफ़सीर की किताबों को पढ़ा जाये)

[3] इस माफ़ी से मुराद अल्लाह के यहाँ माफ़ी की क़ुबूलियत है, यह नहीं कि माफ़ी माँग लेने से चोरी या किसी हद वाले अपराध (गुनाह) की सज़ा माफ़ हो जायेगी, हुदूद, तौबा से माफ़ नहीं की जायेंगी।

يَٰٓأَيُّهَا الرَّسُولُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِينَ قَالُوٓا اٰمَنَّا بِأَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا ۛ سَمّٰعُونَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُونَ لِقَوْمٍ اٰخَرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ ۖ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ مِنْ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۖ يَقُولُونَ إِنْ أُوتِيتُمْ هٰذَا فَخُذُوهُ وَإِنْ لَمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوا ۚ وَمَنْ يُرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۚ أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ أَنْ يُطَهِّرَ قُلُوبَهُمْ ۚ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۖ وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ (41)

४१. हे रसूल! आप उन के लिये दुखी न हों जो कुफ्र में दौड़ लगा रहे है जिन्होंने अपने मुंह से कहा कि हम ने यक़ीन किया और उनके दिलों ने यक़ीन नहीं किया, और जो यहूदी हो गये, उनमें कुछ झूठ सुनने के अभ्यासी और दूसरे लोगों के गुप्तचर हैं, जो आप के पास नहीं आये, वह कलिमा को उन के जगहों से फेर देते हैं, कहते हैं कि अगर तुम यह दिये जाओ तो मान लो और यह (हुक्म) न दिये जाओ तो अलग रहो, और जिसे अल्लाह भटकाना चाहे उस के लिये अल्लाह पर आप का ज़रा भी हक़ नहीं है, इन्हीं के दिलों को अल्लाह पाक नहीं करना चाहता, इन्हीं के लिये दुनिया में ज़िल्लत और आख़िरत में भारी अज़ाब है।

سَمّٰعُونَ لِلْكَذِبِ أَكّٰلُونَ لِلسُّحْتِ ۚ فَإِنْ جَآءُوكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۖ وَإِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَضُرُّوكَ شَيْـًٔا ۖ وَإِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ (42)

४२. यह कान लगा-लगा कर झूठ सुनने वाले[1] और जी भर-भर कर हराम खाने वाले हैं, अगर यह तुम्हारे पास आयें तो तुम्हें हक़ है चाहो तो उन के बीच फ़ैसला कर दो चाहो तो न करो, अगर तुम उन से मुंह मोड़ भी लोगे तो भी ये तुम्हें कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकते और अगर तुम फ़ैसला करो तो उन में इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करो, बेशक इंसाफ़ करने वालों के साथ अल्लाह तआला मुहब्बत रखता है।

وَكَيْفَ يُحَكِّمُونَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ وَمَآ أُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ (43)

४३. और (तअज्जुब की बात है कि) वह कैसे अपने पास तौरात होते हुए, जिस में अल्लाह का हुक्म है तुम को फ़ैसला करने वाला बनाते है, फिर उस के बाद पलट जाते हैं, वास्तव (हक़ीक़त) में ये ईमान और यक़ीन वाले नहीं हैं।

[1] سماعون (सम्माऊना) का मतलब है "बहुत सुनने वाला" इस के दो मतलब हो सकते हैं, भेद जानने के लिए बहुत ज़्यादा सुनना या दूसरों की बातें जानने के लिए सुनना, कुछ रावियों ने पहला मतलब लिया है और कुछ ने दूसरा।

إِنَّآ أَنزَلْنَا ٱلتَّوْرَىٰةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا ٱلنَّبِيُّونَ ٱلَّذِينَ أَسْلَمُوا۟ لِلَّذِينَ هَادُوا۟ وَٱلرَّبَّـٰنِيُّونَ وَٱلْأَحْبَارُ بِمَا ٱسْتُحْفِظُوا۟ مِن كِتَـٰبِ ٱللَّهِ وَكَانُوا۟ عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا۟ ٱلنَّاسَ وَٱخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوا۟ بِـَٔايَـٰتِى ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ فَأُو۟لَـٰٓئِكَ هُمُ ٱلْكَـٰفِرُونَ ﴿٤٤﴾

४४. हम ने तौरात उतारी है जिसमें हिदायत और नूर है, यहूदियों में इसी तौरात के जरिये अल्लाह के मानने वाले,[1] अंबिया (عليهم السلام) और अल्लाह वाले और आलिम फैसला किया करते थे, क्योंकि उन्हें अल्लाह की इस किताब की हिफ़ाज़त का हुक्म दिया गया था, और वे इस पर क़ुबूल करने वाले गवाह थे, अब तुम्हें चाहिए कि लोगों से न डरो, बल्कि मुझ से डरो, मेरी आयतों को थोड़े-थोड़े दाम पर न बेचो और जो अल्लाह की उतारी हुई वह्यी की बिना पर फैसला न करें वे पूरा और मुकम्मल काफ़िर हैं।

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَآ أَنَّ ٱلنَّفْسَ بِٱلنَّفْسِ وَٱلْعَيْنَ بِٱلْعَيْنِ وَٱلْأَنفَ بِٱلْأَنفِ وَٱلْأُذُنَ بِٱلْأُذُنِ وَٱلسِّنَّ بِٱلسِّنِّ وَٱلْجُرُوحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَن تَصَدَّقَ بِهِۦ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهُۥ ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ فَأُو۟لَـٰٓئِكَ هُمُ ٱلظَّـٰلِمُونَ ﴿45﴾

४५. और हमने (तौरात) में यहूदियों के हक़ में यह बात मुक़र्रर कर दी है कि जान के बदले जान और आंख के बदले आंख, और नाक के बदले नाक, और कान के बदले कान व दांत के बदले दांत और ख़ास घावों का भी बदला है, फिर जो इंसान उसको माफ़ कर दे तो वह उस के लिए पछतावा है और जो लोग अल्लाह के हुक्मों के ऐतबार से फ़ैसला न करें, वही लोग ज़ालिम हैं।

وَقَفَّيْنَا عَلَىٰٓ ءَاثَـٰرِهِم بِعِيسَى ٱبْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ ٱلتَّوْرَىٰةِ ۖ وَءَاتَيْنَـٰهُ ٱلْإِنجِيلَ فِيهِ هُدًى وَنُورٌ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ ٱلتَّوْرَىٰةِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٦﴾

४६. और हम ने उन के पीछे ईसा इब्ने मरियम को भेजा, जो अपने से पहले की किताब यानी तौरात की तसदीक़ करने वाले थे, और हम ने उन्हें इंजील अता की, जिसमें नूर और हिदायत थी, और वह अपने से पहले की किताब तौरात की तसदीक़ करती थी और वह वाज़ेह हिदायत और तालीम थी, अल्लाह तआला से डरने वालों के लिए।

---

[1] أَسْلَمُوا (असलमू) यह नबियों की फ़ज़ीलत का बयान है कि वे सभी नबी दीन इस्लाम के मानने वाले थे, जिसकी तरफ़ मोहम्मद ﷺ दावत दे रहे हैं, यानी सभी नबियों का दीन एक ही रहा है, इस्लाम जिसकी बुनियाद है कि एक अल्लाह की इबादत (उपासना) और उसकी इबादत में किसी को शामिल न किया जाये, हर नबी ने सब से पहले अल्लाह और उस के साथ किसी को भी शामिल न करने की दावत दी।

وَلْيَحْكُمْ أَهْلُ الْإِنْجِيلِ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ ۚ وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ (47)

४७. और इंजील वालों को भी चाहिए कि अल्लाह तआला ने जो कुछ इंजील में उतारा है, उसी के ऐतबार से फ़ैसला करें,[1] और जो अल्लाह तआला के उतारे हुए से ही फ़ैसला न करें वे फ़ासिक़ हैं।

وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ ۖ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ ۖ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ عَمَّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۚ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِنْ لِيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ ۖ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۚ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ (48)

४८. और हम ने आप की तरफ़ सच्चाई से भरी यह किताब उतारी है, जो अपने से पहले की सभी किताबों की तसदीक़ करती है और उनकी मुहाफ़िज़ है, इसलिए आप उन के बीच अल्लाह की उतारी हुई किताब के ऐतबार से फ़ैसला कीजिए, इस सच्चाई से हटकर उनकी तमन्नाओं पर न जाईये, तुम में से हर एक लिए हम ने एक शरीअत और रास्ता मुक़र्रर कर दिया है।[2] अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही उम्मत बना देता, लेकिन वह चाहता है कि जो तुम्हें दिया है, उस में तुम्हारा इम्तेहान ले, तो तुम सवाब की तरफ़ जल्दी करो, तुम सबको अल्लाह ही की तरफ़ पलट कर जाना है, फिर वह तुम्हें हर वह चीज़ बता देगा जिस में तुम इख़्तिलाफ़ रखते हो।

وَأَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ أَنْ يَفْتِنُوكَ عَنْ بَعْضِ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكَ ۖ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ أَنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُصِيبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوبِهِمْ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ النَّاسِ لَفَاسِقُونَ (49)

४९. और आप उन के झगड़े में अल्लाह की उतारी हुई वह्यी के अनुसार फ़ैसला दीजिए, उनकी इच्छाओं की पैरवी न कीजिए और उन से होशियार रहिये कि कहीं ये आप को अल्लाह के उतारे हुए किसी हुक्म से इधर-उधर न कर दें, अगर यह मुँह मोड़ लें तो यक़ीन करो कि अल्लाह का यही इरादा है कि उन्हें उन के कुछ

[1] इंजील के मानने वालों को यह हुक्म उस वक़्त तक था, जब तक हज़रत ईसा की नबूवत का दौर था, नबी ﷺ के आने के बाद हज़रत ईसा की नबूवत का दौर भी ख़त्म हो गया और इंजील के हुक्मों की पैरवी भी ख़त्म हो गई, अब ईमानवाला वही समझा जायेगा जो मोहम्मद ﷺ की रिसालत पर ईमान लायेगा और क़ुरआन करीम के हुक्म की पैरवी करेगा।

[2] इस से मुराद पहले के दीनी क़ानून हैं, जिन में कुछ हुक्म एक-दूसरे से अलग थे, एक दीन के क़ानून में कोई चीज़ हराम और दूसरे दीन के क़ानून में वही हलाल थी, कुछ में किसी मसले में कड़ाई थी तो दूसरे में आसानी थी, लेकिन दीन सभी एक यानी तौहीद पर आधारित (मबनी) था, इस तरह सभी की दावत एक थी।

गुनाहों की सज़ा दे ही दे और ज़्यादातर लोग नाफ़रमान होते हैं।

أَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ ۚ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿50﴾

५०. क्या यह लोग फिर से जाहिलीयत का फ़ैसला चाहते हैं? और यक़ीन रखने वालों के लिए अल्लाह (तआला) से बेहतर फ़ैसला करने वाला और हुक्म करने वाला कौन हो सकता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ أَوْلِيَاءَ ۘ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿51﴾

५१. हे ईमानवालो! तुम यहूदियों और इसाईयों को दोस्त न बनाओ, यह तो आपस में ही एक-दूसरे के दोस्त हैं, तुम में से जो कोई भी इन से दोस्ती करे तो वह उन में से है, ज़ालिमों को अल्लाह तआला कभी भी हिदायत नहीं देता।

فَتَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَىٰ أَن تُصِيبَنَا دَائِرَةٌ ۚ فَعَسَى اللَّهُ أَن يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ عِندِهِ فَيُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا أَسَرُّوا فِي أَنفُسِهِمْ نَادِمِينَ ﴿52﴾

५२. आप देखेंगे कि जिन के दिलों में रोग है, वह दौड़-दौड़ कर उन में घुस रहे हैं और कहते हैं कि हमें डर है कि ऐसा न हो कि कोई हादसा हम पर वाक़ेअ हो जाये, बहुत मुमकिन है कि अल्लाह (तआला) जीत अता कर दे या अपने पास से कोई दूसरा फ़ैसला लाये, फिर तो यह अपने दिल में छिपाई हुई बात पर बहुत शर्मिन्दा होंगे।

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا أَهَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ ۙ إِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ۚ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَأَصْبَحُوا خَاسِرِينَ ﴿53﴾

५३. और ईमानवाले कहेंगे कि क्या यही वे लोग हैं जो बड़े यक़ीन से अल्लाह की क़सम खा-खा कर कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, उन के आमाल बर्बाद हो गये और ये नाकाम हो गये।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَن يَرْتَدَّ مِنكُمْ عَن دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ أَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ

५४. हे ईमानवालो! तुम में से जो अपने दीन से पलट जाये[1] तो अल्लाह (तआला) बहुत जल्द ऐसी क़ौम के लोगों को लायेगा जो अल्लाह के प्यारे होंगे और वे भी अल्लाह से प्यार करते होंगे[2] वह नर्म दिल होंगें मुसलमानों पर, सख़्त

---

[1] अल्लाह तआला की ओर से वह्यी है जो नबी ﷺ की वफ़ात के बाद वाक़ेअ हुई, इस फ़ितना को कुचलने का सेहरा हज़रत अबू बक्र (رضي الله عنه) और उन के साथियों को हासिल हुआ।

[2] मुर्तद (दीन के किसी क़ानून पर यक़ीन न रखने वाले) के ख़िलाफ़ जिस क़ौम को अल्लाह तआला खड़ा करेगा, उन के चार अवसाफ़ को वाज़ेह करके बयान किया जा रहा है। १. अल्लाह से मुहब्बत करना और उसका प्यारा होना, २. ईमानवालों के लिए नरम और काफ़िरों के लिए सख़्त होना, ३. अल्लाह की राह में जिहाद करना, ४. अल्लाह के बारे में

عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۡ يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿54﴾

और बेरहम होंगें काफ़िरों पर, अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, किसी मलामत करने वाले इंसान की मलामत करने की फ़िक्र न करेंगें, ये है अल्लाह (तआला) का फ़ज़्ल जिसे चाहे अता करे, अल्लाह तआला सर्वशक्तिमान है और बहुत इल्म वाला है।

اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ﴿55﴾

५५. (मुसलमानों)! तुम्हारा दोस्त ख़ुद अल्लाह और उस का रसूल है और ईमानवाले हैं[1] जो नमाजों को क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करतें हैं और वे रूकूउ (ख़शूअ के साथ और ध्यानमग्न होकर) करने वाले हैं।

وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿56﴾

५६. और जो इंसान अल्लाह (तआला) से और उस के रसूल और मुसलमानों से दोस्ती करे उसे यक़ीन करना चाहिए कि अल्लाह (तआला) के बन्दे ही ग़ालिब होंगे।[2]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿57﴾

५७. मुसलमानों! उन लोगों को दोस्त न बनाओ जो तुम्हारे दीन को हँसी-खेल बनाये हुए हैं, (चाहे) वे उन में से हों जो तुम से पहले किताब दिये गये या काफ़िर हों, अगर तुम ईमानवाले हो तो अल्लाह से डरते रहो।

किसी के मलामत करने की फ़िक्र न करना। सहाबा किराम (رضي الله عنهم) इन अवसाफ़ और फ़ज़ीलतों से मुज़य्यन थे, इसलिए अल्लाह तआला ने उन्हें दुनिया और आख़िरत के सभी सुखों से नवाज़ा और दुनिया में ही अपनी ख़ुशी का सर्टीफ़िकेट उन्हें अता कर दिया।

[1] जब यहूदियों और ईसाईयों की दोस्ती से मना किया गया तो अब इसका जवाब दिया जा रहा है कि फिर वह दोस्ती किससे करें ? कहा कि ईमानवालों का सब से पहला दोस्त अल्लाह तआला ख़ुद है और उस के रसूल हैं और फिर उसके पैरोकार ईमानवाले हैं, आगे उन के कुछ एक गुण बताये गये हैं।

[2] यह अल्लाह तआला की जमाअत की अलामत है और उसकी कामयाबी की ख़बर दी जा रही है। अल्लाह तआला के बन्दों का गुट वही है जो सिर्फ़ अल्लाह, उस के रसूल और ईमानवालों से नाता रखे, और काफ़िरों, मूर्तिपूजकों, यहूदियों और इसाईयों से दोस्ती और तरफ़दारी का नाता न रखे, चाहे वे उन के सगे-सम्बन्धी क्यों न हों, जैसाकि सूर: मुजादिल: के आख़िर में फ़रमाया गया है।

५८. और जब तुम नमाज के लिए पुकारते हो, तो वह उसे हँसी-खेल ठहरा लेते हैं, यह इसलिए कि यह अक्ल नही रखते हैं।

وَ اِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا وَّلَعِبًا ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ (58)

५९. आप कह दीजिए, हे यहूदियों और इसाईयो! तुम हम से केवल इसलिए दुश्मनी रखते हो कि हम अल्लाह (तआला) पर और जो कुछ हमारी तरफ़ उतारा गया है और जो कुछ इस से पहले उतारा गया है उस पर ईमान लाये हैं, और इसलिए भी कि तुम में ज़्यादातर फ़ासिक़ हैं।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ (59)

६०. कह दीजिए कि क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि इस से भी ज़्यादा बुरे बदले का पाने वाला अल्लाह तआला के क़रीब कौन है? वह जिस पर अल्लाह तआला ने लानत की हो और उस पर वह ग़ज़बनाक हुआ हो, और उन में से कुछ को बन्दर ओर सूअर बना दिया, और जिन्होंने झूठे देवताओं की इबादत की, यही लोग बुरे दर्जे वाले हैं और यही सच्चे रास्ते से बहुत ज़्यादा भटके हुए हैं।

قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۭ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ۭ اُولٰۤئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ (60)

६१. और जब वे आप के पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये, अगरचे वह कुफ्र लिये हुए आये थे और उसी कुफ्र के साथ गये भी, और यह जो कुछ छिपा रहे हैं उसे अल्लाह तआला अच्छी तरह जानता है।

وَاِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ (61)

६२. और आप देखेंगे कि इन में से बहुत से गुनाह के कामों की ओर, ज़ुल्म और सरकशी की तरफ़ और हराम माल खाने की तरफ़ लपक रहे है, जो कुछ यह कर रहे है वह बहुत बुरे अमल हैं।

وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۭ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (62)

६३. उन्हें उन के पुजारी और आलिम उनको झूठ बोलने और हराम खाने से क्यों नही रोकते? बेशक ये बुरे काम है, जो यह कर रहे हैं।[1]

لَوْلَا يَنْهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۭ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ (63)

[1] यह आलिमों, धर्मगुरुओं और साधु, संतों की मज़म्मत है कि आम लोगो में से ज़्यादातर तुम्हारे सामने नाफ़रमानी और बुरे काम करते हैं लेकिन तुम उन्हें रोकते नहीं, ऐसी हालत में तुम्हारी ख़ामोशी बहुत बड़ा गुनाह है, इस से मालूम होता है कि नेक काम की तब्लीग और बुरे काम से रोकने का काम कितना अहम है और इसे छोड़ देने पर कितनी कड़ी धमकी है, जैसाकि अहादीस (रसूल के कौल) में इस मामले को तफ़सीली और वाज़ेह तौर से बयान किया गया है।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ ۚ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلُعِنُوا بِمَا قَالُوا ۘ بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُنفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم مَّا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۚ وَأَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۚ كُلَّمَا أَوْقَدُوا نَارًا لِّلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللَّهُ ۚ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ (64)

६४. और यहूदियों ने कहा कि अल्लाह (तआला) का हाथ बंधा हुआ है, उन्हीं के हाथ बंधे हुए हैं, और उन के इस क़ौल के सबब उन पर लानत की गयी, बल्कि अल्लाह तआला के दोनों हाथ खुले हुए है, जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है और जो कुछ तेरी ओर तेरे रब की ओर से उतारा जाता है वह उनमें से ज़्यादातर को सरकशी और कुफ़्र में बढ़ा देता है, और हम ने उन में आपस में ही क़ियामत तक के लिए दुश्मनी और हसद डाल दिया है, वह जब कभी भी जंग की आग को भड़काना चाहते हैं अल्लाह तआला उसको बुझा देता है,[1] यह देश भर में ख़ौफ़ और फ़साद मचाते फिरते हैं[2] और अल्लाह तआला फ़सादियों से मुहब्बत नहीं करता।

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأَدْخَلْنَاهُمْ جَنَّاتِ النَّعِيمِ (65)

६५. और अगर यह अहले किताब ईमान लाते और अल्लाह से डरते, तो हम उनकी सभी बुराईयाँ मिटा देते और उन्हें ज़रूर सुखद जन्नत में ले जाते।

وَلَوْ أَنَّهُمْ أَقَامُوا التَّوْرَاةَ وَالْإِنجِيلَ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِم مِّن رَّبِّهِمْ لَأَكَلُوا مِن فَوْقِهِمْ وَمِن تَحْتِ أَرْجُلِهِم ۚ مِّنْهُمْ أُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ سَاءَ مَا يَعْمَلُونَ (66)

६६. अगर वह तौरात और इंजील और उन धर्मशास्त्रों की पाबन्दी करते जो उनकी तरफ़ उन के रब की ओर से उतारी गई है तो अपने ऊपर और पैरों के नीचे से खाते,[3] उन में एक गिरोह तो बीच का है और ज़्यादातर लोग बुरा काम कर रहे हैं।

---

[1] यानी यह जब भी आप के ख़िलाफ़ कोई साज़िश करते है या लड़ाई का सबब पैदा करते हैं, तो अल्लाह तआला उनको नाकाम कर देता और उनकी साज़िश को उन्हीं पर पलटा देता है।

[2] उनका दूसरा आचरण (आदत) यह है कि ज़मीन पर फ़साद फैलाने की भरपूर कोशिश करते हैं। हक़ीक़त यह है कि अल्लाह तआला फ़सादियों को प्रिय नहीं रखता।

[3] ऊपर-नीचे का मतलब कुशादगी के लिया गया है, या ऊपर से का मतलब ज़रूरत के ऐतबार से आसमान से और नीचे से का मतलब ज़मीन से है जिसका नतीजा ग़ल्ला की कसरत है।

يَاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿67﴾

६७. हे रसूल! (सन्देशवाहक) आप की तरफ़ आप के रब के पास से जो (पैग़ाम) उतारा गया है उसे पहुँचा दें, अगर आप ने यह नहीं किया तो अपने रब का पैग़ाम नहीं पहुँचाया और अल्लाह लोगों से आप की हिफ़ाज़त करेगा, बेशक अल्लाह काफ़िरों को हिदायत नहीं देता।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَىْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿68﴾

६८. आप कह दें कि हे अहले किताब! तुम्हारा कोई आधार नहीं, जब तक कि तौरात और इंजील और जो भी (धर्मशास्त्र) तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे पास उतारा गया है, उसकी पाबन्दी (पालन) न करो और जो आप की तरफ़ (पाक क़ुरआन) आप के रब की तरफ़ से उतारा गया है वह इन में से ज़्यादातर की हठ और कुफ़्र को बढ़ायेगा[1] इसलिए आप काफ़िरों पर अफ़सोस न करें।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِئُوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿69﴾

६९. मुसलमानों, यहूदियों, तारों के पुजारियों और इसाईयों में से जो भी अल्लाह और आख़िरी दिन (क़यामत) पर ईमान लायेगा और नेक काम करेगा उन पर कोई डर नहीं न वह ग़म करेंगे।

لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰۤى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا كَذَّبُوْا وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ﴿70﴾

७०. हम ने इस्राईल के बेटों (यहूदियों) से वादा लिया और उन के पास रसूलों को भेजा, जब कोई रसूल उन के पास ऐसा हुक्म लाया जो उन का मन क़ुबूल न करता था तो उन्होंने एक गुट को झुठलाया और एक गुट को क़त्ल करते रहे।

وَحَسِبُوْۤا اَلَّا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿71﴾

७१. और समझ बैठे कि कोई सज़ा न मिलेगी इसलिये अंधे-बहरे हो गये, फिर अल्लाह (तआला) ने उन को माफ़ कर दिया उस के बावजूद भी उन में से ज़्यादातर लोग अंधे-बहरे हो गये, और अल्लाह (तआला) उन के अमलों को अच्छी तरह देखने वाला है।

---

[1] यह हिदायत और भटकाव उस नियमानुसार है जो अल्लाह तआला का क़ानून है, यानी जिस तरह कुछ कामों और चीज़ों के कारण ईमान, नेक काम और फ़ायदेमंद इल्म में बढ़ोत्तरी होती है।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوٓا إِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۖ وَقَالَ الْمَسِيحُ يٰبَنِىٓ إِسْرَآءِيلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّى وَرَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُۥ مَن يُشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوٰىهُ النَّارُ ۖ وَمَا لِلظّٰلِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ ﴿72﴾

७२. वह लोग काफ़िर हो गये जिन्होंने कहा कि **मरियम का बेटा मसीह ही अल्लाह है**, जबकि **मसीह ने** (ख़ुद) कहा कि हे इस्राईल के बेटो! मेरे रब और अपने रब अल्लाह की इबादत करो क्योंकि जो अल्लाह के साथ शिर्क करेगा अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना जहन्नम है और ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा।[1]

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوٓا إِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ إِلٰهٍ إِلَّآ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ وَإِن لَّمْ يَنتَهُوا عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿73﴾

७३. वह लोग भी पूरी तरह से काफ़िर हो गये जिन्होंने कहा कि अल्लाह तीन का तीसरा है,[2] हक़ीक़त में अल्लाह (तआला) के सिवाय कोई माबूद नहीं और अगर यह लोग अपने क़ौल से न रुके तो उन में से जो कुफ़्र में रहेंगे उन्हें सख़्त अज़ाब ज़रूर पहुँचेगा।

أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُۥ ۚ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿74﴾

७४. यह लोग अल्लाह (तआला) की तरफ़ क्यों नहीं झुकते और क्यों नहीं तौबा करते? अल्लाह (तआला) बहुत माफ़ करने वाला और बड़ा रहम करने वाला है।

مَّا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۖ وَأُمُّهُۥ صِدِّيقَةٌ ۖ كَانَا يَأْكُلَانِ الطَّعَامَ ۗ انظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيٰتِ ثُمَّ انظُرْ أَنّٰى يُؤْفَكُونَ ﴿75﴾

७५. मरियम के बेटे मसीह सिर्फ़ पैग़म्बर होने के सिवाय कुछ भी नही, उस से पहले भी बहुत से पैग़म्बर हो चुके हैं, उसकी माँ एक पाक और सच्ची औरत थीं,[3] दोनों (माँ-बेटे) खाना खाया करते थे।[4] आप देखिये हम किस तरह दलील

---

[1] हज़रत मसीह ने अपनी बंदगी और रिसालत का इज़हार उस वक़्त भी किया था जब वह माँ की गोद में दूध पीने की उम्र में थे, फिर बुलूग़त में भी यही एलान किया और साथ ही साथ शिर्क की पहचान और बचावो का तरीक़ा और बुराईयाँ भी बयान कर दी कि मूर्तिपूजक पर जन्नत हराम है और उसका कोई मददगार भी न होगा, जो उसे जहन्नम से निकाल लाये, जैसाकि ज़ालिमों का भ्रम है।

[2] यह इसाईयों के दूसरे गुट का बयान है, जो तीन के जोड़ को अल्लाह मानता है और उसे त्रिमूर्ति कहता है।

[3] صِدِّيقَة का मतलब है ईमानवाली और पाक यानी उन्होंने भी हज़रत ईसा की रिसालत को माना और उस पर यक़ीन किया, इसका मतलब यह हुआ कि वह रसूल नहीं थीं जैसा कि कुछ लोगों को भरम हुआ है।

[4] इस में हज़रत मसीह और हज़रत मरियम दोनों के माबूद न होने और इंसान होने को साबित किया है, क्योंकि खाना खाना, यह इंसान की ज़रूरत और मर्ज़ी के मुताबिक़ है। जो माबूद हो, वह तो इन गुणों (सिफ़्तों) से तो पाक है, बल्कि हर तरह से पाक होता है, यानी दोनों आम इंसान थे और उन में सभी इंसानी ख़ुसूसियत पाई जाती थीं।

उनके सामने पेश करते हैं, फिर ख़्याल कीजिए कि वे किस तरह पलटाये जाते हैं।

قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿76﴾

७६. आप कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह के सिवाय उनको पूजते हो जो न तो तुम्हारे नुक़सान के मालिक हैं और न किसी तरह के फ़ायदे के, अल्लाह (तआला) ही अच्छी तरह सुनने वाला और पूरी तरह से जानने वाला है।[1]

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوْۤا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿77﴾

७७. कह दीजिए, हे अहले किताब ! अपने दीन में ग़ुलू न करो[2] और उन लोगों की इच्छाओं की पैरवी न करो, जो पहले से भटक चुके है और बहुतों को भटका चुके हैं और सीधे रास्ते से हट गये हैं।

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿78﴾

७८. इस्राईल की औलाद के काफ़िरों को (हज़रत) दाऊद और (हज़रत) ईसा इब्ने मरियम के मुँह से लानत किया गया, इस सबब कि वे नाफ़रमानी करते थे और हद से तजावुज़ करते थे।

كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿79﴾

७९. वे आपस में एक-दूसरे को बुरे कामों से जो वह करते थे रोकते न थे, जो कुछ यह करते थे ज़रूर वह बहुत बुरा था।

---

[1] यह मूर्तिपूजकों की बेअक़्ली को साबित किया जा रहा है कि उन्होंने ऐसों को पूज्य बना रखा है जो किसी को न फ़ायेदा पहुँचा सकते है और न नुक़सान, बल्कि फ़ायेदा-नुक़सान तो दूर की बात, वह तो किसी बात को सुनने और किसी की हालत को जानने की ही ताक़त नहीं रखते हैं, यह ताक़त सिर्फ़ अल्लाह ही को है, इसलिए मुश्किल कुशा और हाजत रवा सिर्फ़ वही है।

[2] यानी सच्चाई की पैरवी करने में हद से तजावुज़ न करो, और जिनका एहतेराम करने का हुक्म दिया गया है, उसमें ग़ुलू करके नबूवत के पद से उठा कर माबूद के मुक़ाम पर न बिठा दो, जैसे कि हज़रत मसीह के बारे में तुम ने किया, ग़ुलू हर वक़्त में शिर्क और भटकाव का ज़रिया रहा है। मुसलमान भी इस ग़ुलू से महफ़ूज़ नहीं रह सके, उन्होंने कुछ विद्वानों (आलिमों) के बारे में ग़ुलू किया और उनके ख़्याल, क़ौल यहाँ तक कि उन से जुड़े हुए दीनी फ़ैसले और इरादों को भी रसूल अल्लाह ﷺ की हदीस के मुक़ाबले में तरजीह दी।

تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَ فِى الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿80﴾

८०. उन में के ज़्यादातर लोगों को आप देखेंगे कि वे काफ़िरों से दोस्ती करते हैं, जो कुछ उन्होंने अपने आगे भेज रखा है वह बहुत बुरा है, (यह) कि अल्लाह (तआला) उन से नाराज़ हुआ और वे हमेशा अज़ाब में रहेंगे।[1]

وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿81﴾

८१. अगर उन्हें अल्लाह (तआला) पर, नबी पर और जो उतारा गया है, उस पर ईमान होता तो यह काफ़िरों से दोस्ती न करते, लेकिन उन में से ज़्यादातर लोग दुराचारी (ग़लतकार) हैं।[2]

لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّا نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَ رُهْبَانًا وَّ اَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿82﴾

८२. बेशक आप ईमानवालों का सख़्त दुश्मन यहूदियों और मूर्तिपूजकों को पायेंगे,[3] और ईमानवालों के सब से ज़्यादा क़रीब की दोस्ती, आप ज़रूर उन में पायेंगे जो अपने आप को इसाई कहते हैं, यह इसलिए कि उन में आलिम और वैरागी हैं और इस सबब कि वे घमण्ड नहीं करते।[4]

---

[1] यह काफ़िरों से दोस्ती का नतीजा है कि अल्लाह तआला उन पर ग़ज़बनाक हुआ और इसी ग़ज़ब के सबब दायमी तौर से जहन्नम का अज़ाब है।

[2] इसका मतलब यह है कि जिस इंसान के अन्दर सच में यक़ीन होगा वह गुमराहों से कभी दोस्ती नहीं करेगा।

[3] इसलिए कि यहूदियों में दुश्मनी और इंकार, सच्चाई से मुंह मोड़ना, घमन्ड, आलिमों और ईमानवालों की आलोचना की भावना बहुत पायी जाती है। यही वजह है कि नबियों का क़त्ल और उन को झुठलाना उनका किरदार रहा है, यहाँ तक कि उन्होंने रसूल अल्लाह ﷺ के क़त्ल की कई बार साज़िश की, आप ﷺ पर जादू भी किया, हर तरह से नुक़सान पहुँचाने की घृणित (मकरूह) योजना बनाई और इस बारे में मूर्तिपूजकों की भी यही हालत रही है।

[4] رهبان से मुराद, नेक और बैरागी और قسيسين से मुराद उलमा और आलिम है, यानी इन इसाईयों में इल्म और नर्मी है, इसलिये उन में यहूदियों की तरह इंकार और घमन्ड नहीं। इस के सिवाय इसाई दीन में माफ़ी की शिक्षा (तालीम) की प्रधानता है, यहाँ तक कि उन के ग्रन्थों में लिखा है कि कोई तुम्हारे दायें गाल पर मारे तो बायाँ गाल उस के सामने कर दो, इन सबबों से यह यहूदियों के मुक़ाबले मुसलमानों के क़रीब हैं।

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَى أَعْيُنَهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ ۖ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿83﴾

८३. और जब वह रसूल की तरफ़ उतारे हुए (पैग़ाम) सुनते हैं, तो आप उनकी आखों से वहते आंसू की धारा को देखते हैं, इस वजह से कि उन्होंने हक़ को पहचान लिया, वह कहते हैं हे हमारे रब! हम मुसलमान हो गये, बस तू हमें भी गवाहों में लिख ले।

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ﴿84﴾

८४. और हमें क्या है कि अल्लाह और उस सच्चाई पर यक़ीन न करें जो हमारे पास आया है और यह उम्मीद न करें कि हमारा रब हमें सालिहीन में शामिल कर देगा।

فَأَثَابَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿85﴾

८५. तो अल्लाह ने उनकी इस दुआ के सबब ऐसे बाग़ दिये जिन के नीचे नहरें जारी हैं, जिस में हमेशा रहेंगे और यही नेक लोगों का बदला है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿86﴾

८६. और जो काफ़िर हो गये और हमारी आयतों को झुठला दिये वही जहन्नमी हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿87﴾

८७. हे ईमानवालो! उन पाक चीज़ों को हराम न बनाओ जिन्हें अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल बना दिया[1] और ज़्यादती न करो, बेशक अल्लाह ज़्यादती करने वालों से प्यार नहीं करता।

وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿88﴾

८८. और अल्लाह (तआला) ने जो चीज़ें तुम्हें दी हैं उन में से पाकीज़ा हलाल चीज़ें खाओ और अल्लाह तआला से डरो, जिस पर तुम ईमान रखते हो।

[1] हदीस में आता है कि एक आदमी नबी ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा हे रसूलुल्लाह ﷺ! जब मैं गोश्त खाता हूं तो जिमाअ की इच्छा (ख़्वाहिश) ज़्यादा हो जाती है, इसलिए मैंने अपने ऊपर गोश्त हराम कर लिया है, जिस पर यह आयत उतरी। (सहीह तिर्मिज़ी, अलबानी, भाग ३, पेज ४६)

८९. अल्लाह तआला तुम्हारी क़समों में बेकार क़समों पर तुम को नहीं पकड़ता, लेकिन पकड़ उसकी करता है तुम जिन क़समों को मज़बूत कर दो,[1] उसका कफ़्फ़ारा दस ग़रीबों को खाना देना है औसत दर्जे का, जो अपने घरवालों को खिलाते हो,[2] या उनको कपड़ा देना,[3] या एक ग़ुलाम या लौण्डी आज़ाद करना है,[4] और जिस से यह न हो सके वह तीन दिन रोज़े रखे।[5] यह तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा है जबकि तुम क़सम खा लो और अपनी क़समों की हिफ़ाज़त

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ۭ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ۭ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ۭ وَاحْفَظُوْٓا اَيْمَانَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿89﴾

---

[1] क़सम को अरबी ज़ुबान में हलफ़ या यमीन कहते हैं, जिनका बहुवचन (जमा) अहलाफ़ और ऐमान है। क़सम की तीन क़िस्में हैं : (१) लग्‌व (२) ग़मूस (३) मोअक्कद। (१) लग्‌व वह क़सम है जो इंसान बात-बात पर आदतन बिना किसी वजह और मक़सद के खाता रहता है, इस में कोई पकड़ न होगी। (२) ग़मूस वह भूठी क़सम है जो इंसान धोखा देने या छल के लिए खाता है, यह बहुत बड़ा गुनाह है, लेकिन इस का कोई कफ़्फ़ारा नहीं है। (३) मोअक्कद वह क़सम है जो इंसान अपनी बात में ज़ोर और पुख़्तगी के लिए जानबूझ कर खाये, इस तरह की क़सम को अगर तोड़ेगा तो उसका वह कफ़्फ़ारा अदा करेगा, जिसका आगे आयत में बयान है।

[2] इस खाने की तादाद के लिए कोई एक सही क़ौल नहीं है, इसलिए इख़्तिलाफ़ है, लेकिन इमाम शाफ़ई ने उस हदीस से दलील देते हुए, जिस में रमज़ान में रोज़े की हालत में बीवी से जिमाअ करने का जो कफ़्फ़ारा है, लगभग आधा किलो हर ग़रीब का खाना मुक़र्रर किया है, क्योंकि नबी ﷺ ने उस इंसान को बीवी के साथ रोज़े की हालत में जिमाअ करने के कफ़्फ़ारा के तौर पर १५ साअ खजूरें दिलवायी थीं, जिन्हें साठ ग़रीबों में बाँटा गया था, एक साअ में चार मुद्द और एक मुद्द (लगभग छः सौ ग्राम होता है) इस बिना पर बिना शोरबे के सालन के दस ग़रीबों को देने के लिए दस मुद्द (यानी छः किलो) खाना कफ़्फ़ारा होगा। (इब्ने कसीर)

[3] कपड़े के बारे में भी इख़्तिलाफ़ है, ज़ाहिरी तौर से मुराद कपड़े का जोड़ा है जिसमें इंसान नमाज़ पढ़ सके, कुछ आलिमों ने खाना और कपड़ा दोनों के लिए रीति और रिवाज को विश्वस्त (मोतबर) माना है।

[4] कुछ आलिमों ने चूक से क़त्ल के कफ़्फ़ारा पर हिसाब करके दास और दासियों के लिए ईमान का प्रतिबन्ध (शर्त) लगाया है। इमाम शौकानी कहते हैं, आयत आम है जिस के अन्दर मोमिन और काफ़िर दोनों आते हैं।

[5] यानी जिस इंसान को ऊपर के तीनों विषयों में से किसी की ताक़त न हो वह तीन दिन रोज़ा रखे, कुछ आलिम लगातार रोज़े (व्रत) रखने के हक़ में हैं और कुछ के ख़्याल से दोनों जायेज़ हैं।

करो, इस तरह अल्लाह तआला तुम्हारे लिए अपने हुक्मों को बयान करता है, ताकि तुम शुक्रिया अदा करो।

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِنَّمَا ٱلْخَمْرُ وَٱلْمَيْسِرُ وَٱلْأَنصَابُ وَٱلْأَزْلَـٰمُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ ٱلشَّيْطَـٰنِ فَٱجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٩٠﴾

९०. हे ईमानवालो! शराब, जुआ और मूर्तियों की जगह और पांसे गन्दे शैतानी काम हैं, इसलिए तुम इस से अलग रहो ताकि कामयाब हो जाओ।[1]

إِنَّمَا يُرِيدُ ٱلشَّيْطَـٰنُ أَن يُوقِعَ بَيْنَكُمُ ٱلْعَدَٰوَةَ وَٱلْبَغْضَآءَ فِى ٱلْخَمْرِ وَٱلْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَن ذِكْرِ ٱللَّهِ وَعَنِ ٱلصَّلَوٰةِ ۖ فَهَلْ أَنتُم مُّنتَهُونَ ﴿٩١﴾

९१. शैतान चाहता ही है कि शराब और जुआ के जरिये तुम्हारे बीच दुश्मनी और हसद डाल दे और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज से रोक दे तो तुम रुकते हो या नहीं।[2]

وَأَطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَأَطِيعُوا۟ ٱلرَّسُولَ وَٱحْذَرُوا۟ ۚ فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا ٱلْبَلَـٰغُ ٱلْمُبِينُ ﴿٩٢﴾

९२. और अल्लाह के हुक्म की पैरवी करो और रसूल की इताअत करो और होशियार रहो और अगर तुम ने मुँह फेरा तो जान लो कि हमारे रसूल पर खुला संदेश (पैगाम) पहुँचा देना है।

لَيْسَ عَلَى ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّـٰلِحَـٰتِ جُنَاحٌ فِيمَا طَعِمُوٓا۟ إِذَا مَا ٱتَّقَوا۟ وَّءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّـٰلِحَـٰتِ ثُمَّ ٱتَّقَوا۟ وَّءَامَنُوا۟ ثُمَّ ٱتَّقَوا۟ وَّأَحْسَنُوا۟ ۗ وَٱللَّهُ يُحِبُّ ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿٩٣﴾

९३. ऐसे लोगों पर जो ईमान रखते हों और नेकी का काम करते हों, उस चीज में कोई गुनाह नहीं जिस को वह खाते-पीते हों, जबकि वह लोग अल्लाह से डरते हों और ईमान रखते हों और नेकी का काम करते हों, फिर परहेजगारी करते हों और ईमान रखते हों फिर परहेजगारी करते हों और बहुत ज़्यादा नेकी का काम करते हों, अल्लाह ऐसे नेक काम करने वालों से मुहब्बत करता है।

---

[1] यह शराब के बारे में तीसरा हुक्म है। पहले दो हुक्मों में उसे वाजेह तौर से हराम नहीं किया गया है, लेकिन यहाँ उस के साथ जुआ, इबादतगाहों या थानों और शगुन के तीरों को बुरा और शैतानी काम एलान करके वाजेह लफ़्जों में इन सभी से महफ़ूज रहने का हुक्म दे दिया गया है।

[2] यह जुआ और शराब के दूसरे सामाजिक और दीनी नुकसान हैं, जिन के बयान की जरूरत नहीं, इसी वजह से शराब को सभी बुराईयों की माँ कहा जाता है और जुआ भी ऐसी ही बुरी लत है, यह इंसान को किसी काम का नहीं रखता और ज़्यादातर धनवानों और खानदानी जागीरदारों को भीखारी और दरिद्र बना देता है, अल्लाह दोनों से महफ़ूज रखे।

९४. हे ईमानवालो! अल्लाह (तआला) कुछ शिकार के जरिये तुम्हारा इम्तेहान लेता है,[1] जिन तक तुम्हारे हाथ और तुम्हारे भाले पहुँच सकेंगे ताकि अल्लाह (तआला) मालूम कर ले कि कौन इंसान उस से बिना देखे डरता है, जो इंसान इस के बाद हद से बढ़ जायेगा उसे सख़्त सजा है।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿94﴾

९५. हे ईमानवालो! जब तुम (हज या उमर: का) एहराम की हालत में रहो तो शिकार न करो और तुम में से जो भी जान बूझ-कर उसे मारे[2] तो उसे फ़िदिया देना है उसी के समान,[3] पालतू जानवर से जिसका फ़ैसला तुम में से दो आदिल करेंगे जो क़ुर्बानी के लिये कअबा तक पहुँचाया जायेगा या फ़िदिया के तौर पर मिस्कीनों को खाना देना है या उस के बराबर रोज़े (व्रत) रखना है ताकि अपने किये की सज़ा चखो, जो पहले हो चुका अल्लाह ने उसे माफ़ कर दिया और जो इस (मना के हुक्म) के बाद ऐसा फिर करेगा अल्लाह उस से बदला लेगा, अल्लाह ताक़तवर बदला लेने वाला है।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ۭ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَاۗءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًۢا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ۭ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ۭ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿95﴾

[1] शिकार अरबों के जिन्दगी गुज़ारने का एक ख़ास ज़रिया था, इसलिए एहराम की हालत में इसे हराम करके उनका इम्तेहान लिया गया, ख़ास तौर से हुदैबिया में रहने के वक़्त शिकार ज़्यादा सहाबा के नजदीक आते, लेकिन उन्हीं दिनों में यह चार आयतें उतरीं, जिस में उस से मुतअल्लिक हुक्म दिये गये।

[2] «जान-बूझ कर» के कलिमा से कुछ आलिमों ने यह दलील निकाली है कि बिना कोशिश के अगर भूल से अंजाने में क़त्ल हो जाये तो उस में फ़िदिया नहीं है, लेकिन ज़्यादातर आलिमों के नजदीक मर्जी और ग़ैर मर्जी दोनों हालतों में जानवर क़त्ल करने पर फ़िदिया देना होगा, जान-बूझ कर की बात हालतों के हिसाब से है शर्त की के शक्ल में नहीं है।

[3] बराबर जानवर से मुराद फ़ितरी यानी जिस्म और दर्जे में बराबर होना है, क़ीमत में बराबर होना नहीं है, जैसाकि अगर हिरण का क़त्ल हुआ तो उसके बराबर बकरी है, गाय के बराबर नील गाय है आदि। लेकिन जिस जानवर का बराबर नहीं मिल सकता हो, वहाँ उस क़ीमत के तौर पर फ़िदिया लेकर मक्का पहुँचा दिया जायेगा। (इब्ने कसीर)

أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۖ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿96﴾

९६. तुम्हारे लिए समुन्दर का शिकार पकड़ना और खाना हलाल किया गया है।[1] तुम्हारे इस्तेमाल के लिए और मुसाफ़िरों के लिए, और ख़ुश्की का शिकार हराम किया गया जब तक तुम एहराम की हालत में हो, और अल्लाह (तआला) से डरो जिस के पास जमा किये जाओगे।

جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَامًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ ۚ ذَٰلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿97﴾

९७. अल्लाह ने कअबा को जो हुरमत वाला घर है, लोगों के लिये क़ायम रहने का सबब बनाया और हुरमत वाले महीने को और हरम में क़ुर्बानी दिये जाने वाले जानवरों को भी और उन जानवरों को भी जिन के गले में पट्टे हों।[2] यह इसलिए ताकि तुम इस बात पर यक़ीन कर लो कि बेशक अल्लाह (तआला) आसमानों और ज़मीन के अन्दर की चीज़ों का इल्म रखता है और बेशक अल्लाह सभी चीज़ को अच्छी तरह जानता है।

اعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿98﴾

९८. तुम यक़ीन करो कि अल्लाह तआला सज़ा भी सख़्त देने वाला है और अल्लाह (तआला) बड़ा बख़्शने वाला और बहुत रहम करने वाला भी है।

مَّا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿99﴾

९९. रसूल का फ़र्ज़ तो सिर्फ़ पहुँचाना है और अल्लाह (तआला) सभी कुछ जानता है जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छिपा रखते हो।

---

[1] صَيْد (सैद) से मुराद ज़िन्दा जानवर और طَعَامُهُ (तआमुहु) से मुराद मुर्दा (मछली वग़ैरह) है जिसे समुद्र या नदी बाहर फेंक दे या पानी के ऊपर आ जाये, जिस तरह से हदीस में वाज़ेह तौर से कहा गया है कि समुद्र का मुर्दा जानवर हलाल है। (तफ़सीली जानकारी के लिए देखें तफ़सीर इब्ने कसीर, और नैनुल औतार वग़ैरह)

[2] कअबा को बैतुल-हराम इसलिए कहा जाता है कि उस के हद के अन्दर शिकार करना, पेड़ काटना वग़ैरह हराम है, इसी तरह अगर इस में बाप के क़ातिल से भी सामना हो जाये तो उसे छेड़ा नहीं जाता था।

१००. आप कह दीजिए कि नापाक और पाक बराबर नहीं, अगरचे आप को नापाक की ज़्यादती अच्छी लगती हो, अल्लाह (तआला) से डरते रहो, हे अक़्लमंदो! ताकि तुम कामयाब हो।

قُلْ لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿100﴾

१०१. हे ईमानवालो ! ऐसे विषय में सवाल न करो कि जिसे ज़ाहिर कर दिया जाये तो तुम्हें बुरा लग जाये और अगर क़ुरआन उतारे जाने के वक़्त सवाल करोगे तो तुम्हारे ऊपर ज़ाहिर कर दिया जायेगा,[1] जो हो चुका अल्लाह ने उसे माफ़ कर दिया और अल्लाह बख़्शने वाला सहन करने वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿101﴾

१०२. तुम से पहले कुछ लोगों ने यही सवाल किया फिर उन के इंकारी हो गये।

قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ﴿102﴾

१०३. अल्लाह ने हुक्म नहीं दिया है बहीर: की न साएब: की न वसील: की न हाम की[2] लेकिन काफ़िर अल्लाह पर झूठा इल्ज़ाम लगाते हैं और उन में ज़्यादातर अक़्ल नहीं रखते।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿103﴾

---

[1] यह निषेधाज्ञा (ममानिअत) क़ुरआन के उतरने के वक़्त थी, ख़ुद नबी ﷺ भी सहाबा को ज़्यादा सवाल करने से रोकते थे। एक हदीस में आप ﷺ ने फ़रमाया : "मुसलमानों में सब से बड़ा गुनहगार वह है जिस के सवाल करने के सबब कोई चीज हराम हो गयी, जबकि उससे पहले वह हलाल थी।"

[2] यह उन जानवरों की क़िस्में हैं जो अरबवासी अपनी मूर्तियों के नाम पर आज़ाद करते थे, इनकी कई तफ़सीरें की गयी है। हज़रत सईद बिन मुसय्यिब के क़ौल के मुताबिक़ सहीह बुख़ारी में इसकी तफ़सीर निम्न रूप से संकलित की गयी है। **बहीर**:- वह जानवर है जिसका दूध दूहना छोड़ दिया जाता था और कहा जाता था कि यह मूर्तियों के लिए है, इसलिए कोई भी इंसान उस के थनों को हाथ नहीं लगाता। **साएब**: वह जानवर जिन्हें वे मूर्तियों के नाम पर छोड़ देते उन पर न सवारी करते न माल लादते, जैसे छुट्टे सांड। **वसील**:- वह ऊँटनी जिससे सब से पहले मादा पैदा होती और फिर दूसरी बार भी मादा होती (यानी एक मादा के बाद दूसरी मादा हुई और किसी नर के पैदा न होने के सबब बीच में भेद न हुआ) तो ऐसी ऊँटनियों को भी मूर्तियों के नाम आज़ाद छोड़ दिया करते थे और **हाम**- वह नर ऊँट है जिसके ज़रिये उसकी नस्ल से कई ऊँट पैदा हो चुके होते हैं, तो उनको भी मूर्तियों के नाम पर छोड़ देते, उससे भी सवारी और भार वाहन का काम नहीं लेते और हामी पशु कहते।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ قَالُوا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿104﴾

१०४. और जब उन से कहा गया कि उस (पाक क़ुरआन) की और रसूल (मुहम्मद ﷺ) की तरफ़ आओ तो उन्होंने कहा कि जिस (रीति) पर हम ने अपने बुज़ुर्गों को पाया है वह हमें बस है, अगरचे उन के बुज़ुर्ग कुछ न जान रहे हों और सही रास्ते पर न हों।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنفُسَكُمْ ۖ لَا يَضُرُّكُم مَّن ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۚ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿105﴾

१०५. हे ईमानवालो! अपनी फ़िक्र करो, जब तुम सच्चे रास्ते पर चल रहे हो तो जो इंसान भटक जाये उस से तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं, अल्लाह ही के पास तुम सभी को जाना है, फिर वह तुम सब को बतला देगा जो कुछ तुम करते थे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَانِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ أَوْ آخَرَانِ مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُم مُّصِيبَةُ الْمَوْتِ ۚ تَحْبِسُونَهُمَا مِن بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ إِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۙ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا إِذًا لَّمِنَ الْآثِمِينَ ﴿106﴾

१०६. हे ईमानवालो! जब तुम में किसी की मौत का वक़्त हो तो वसीयत के वक़्त तुम में से दो आदिल इंसान को गवाह होना चाहिये[1] या तुम्हारे सिवाये दो अन्य को अगर तुम ज़मीन में सफ़र कर रहे हो और तुम पर मौत की मुसीबत आ जाये,[2] (शक की हालत में) तुम दोनों (गवाहों) को (जमाअत की) नमाज़ के बाद रोकोगे फिर दोनो अल्लाह की क़सम लेंगे कि हम इस (गवाही) के बदले कोई क़ीमत नहीं लेना चाहते[3] अगरचे वह क़रीबी हो और हम अल्लाह

---

[1] "तुम में से हों" का मतलब कुछ ने यह लिया है कि मुसलमानों में से हों, और कुछ ने कहा है कि مُوْصِي (वसीयत करने वाले) की क़ौम के हों, इसी तरह (آخَرَانِ مِنْ غَيْرِكُمْ) में दोनों मतलब होंगे, यानी مِنْ غَيْرِكُم से मुराद जो मुसलमान न हों (अहले किताब) होंगे या उत्तरदान कर्ता की क़ौम के सिवाय दूसरी क़ौम से।

[2] यानी सफ़र में ऐसा रोग हो जाये जिससे बचने की उम्मीद न हो तो वह सफ़र में दो आदिल गवाह बनाकर जो वसीयत करना चाहे कर दे।

[3] अगर मरने वाले के वारिस को यह शक हो जाये कि गवाहों ने ख़ियानत की या फेर-बदल किया है, तो वह नमाज़ के बाद यानी लोगों की मौजूदगी में उन से क़सम लें और वह क़सम खाकर कहें कि हम अपनी क़सम के बदले दुनिया का कोई फ़ायेदा नहीं हासिल कर रहे हैं यानी झूठी क़सम नहीं खा रहे हैं।

की गवाही नहीं छुपा सकते, अगर ऐसा करेंगे तो हम दोषी हैं।

१०७. फिर अगर पता लग जाये कि वह दोनों (गवाह) किसी गुनाह के पात्र (मुस्तहक़) हुये हैं[1] तो जिन के ऊपर गुनाह के पात्र हुए हैं उन में से दो क़रीबी रिश्तेदार दोनों (गवाहों) की जगह खड़े होगें और अल्लाह की क़सम लेंगे कि हमारी गवाहियाँ इन दोनों की गवाहियों से ज्यादा सच है और हम ने ज़्यादती नहीं किया है, हम इस हालत में ज़ालिम होंगे।

فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰٓ أَنَّهُمَا ٱسْتَحَقَّآ إِثْمًا فَـَٔاخَرَانِ يَقُومَانِ
مَقَامَهُمَا مِنَ ٱلَّذِينَ ٱسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ ٱلْأَوْلَيَٰنِ
فَيُقْسِمَانِ بِٱللَّهِ لَشَهَٰدَتُنَآ أَحَقُّ مِن شَهَٰدَتِهِمَا
وَمَا ٱعْتَدَيْنَآ إِنَّآ إِذًا لَّمِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿107﴾

१०८. यह सबसे क़रीबी ज़रिया है कि वे लोग सच्ची गवाही दें या उन्हें यह डर हो कि क़समों के बाद फिर क़सम उल्टी पड़ जायेगी और अल्लाह से डरो और सुन लो कि अल्लाह फ़ासिकों को हिदायत नहीं देता।

ذَٰلِكَ أَدْنَىٰٓ أَن يَأْتُوا۟ بِٱلشَّهَٰدَةِ عَلَىٰ وَجْهِهَآ أَوْ يَخَافُوٓا۟
أَن تُرَدَّ أَيْمَٰنٌۢ بَعْدَ أَيْمَٰنِهِمْ ۗ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَٱسْمَعُوا۟ ۗ
وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْفَٰسِقِينَ ﴿108﴾

१०९. जिस (क़यामत) दिन अल्लाह (तआला) पैग़म्बरों (उपदेशकों) को जमा करेगा, फिर पूछेगा कि तुम को क्या जवाब मिला था? वह जवाब देंगें हम को कुछ नहीं मालूम, सिर्फ़ तू ही ग़ैब का जानकार है।

يَوْمَ يَجْمَعُ ٱللَّهُ ٱلرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَآ أُجِبْتُمْ ۖ
قَالُوا۟ لَا عِلْمَ لَنَآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ عَلَّٰمُ ٱلْغُيُوبِ ﴿109﴾

११०. जब अल्लाह कहेगा कि हे मरियम के बेटे ईसा! अपने और अपनी माँ के ऊपर मेरी नेमत को याद करो जब मैंने पाकीज़ा रूह[2] (जिब्रील) के ज़रिये तुम्हारी मदद की, तुम पालने में और अधेड़ उम्र में लोगों से बात करते रहे और जब हम ने किताब और हिक्मत और तौरात और इंजील का इल्म दिया और जब तुम मेरे हुक्म से पक्षी की प्रतिमा (मुजस्समा) मिट्टी से बनाते थे और उस में फूंकते थे तो मेरे हुक्म से पक्षी बन

إِذْ قَالَ ٱللَّهُ يَٰعِيسَى ٱبْنَ مَرْيَمَ ٱذْكُرْ نِعْمَتِى
عَلَيْكَ وَعَلَىٰ وَٰلِدَتِكَ إِذْ أَيَّدتُّكَ بِرُوحِ ٱلْقُدُسِ
تُكَلِّمُ ٱلنَّاسَ فِى ٱلْمَهْدِ وَكَهْلًا ۖ وَإِذْ عَلَّمْتُكَ
ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْحِكْمَةَ وَٱلتَّوْرَىٰةَ وَٱلْإِنجِيلَ ۖ وَإِذْ
تَخْلُقُ مِنَ ٱلطِّينِ كَهَيْـَٔةِ ٱلطَّيْرِ بِإِذْنِى فَتَنفُخُ

---

[1] यानी झूठी क़सम खाई हैं।

[2] इस से मुराद हज़रत जिब्रील है, जैसाकि सूरः अल-बक़रः की आयत नं॰ ८७ में गुज़रा।

فِيهَا فَتَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِي وَتُبْرِئُ الْأَكْمَهَ
وَالْأَبْرَصَ بِإِذْنِي ۖ وَإِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِي ۖ
وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَنكَ إِذْ جِئْتَهُم
بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنْ هَٰذَا
إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ (110)

जाता था और तुम मेरे हुक्म से पैदाईशी अन्धे और कोढ़ी को सेहतयाब कर रहे थे और मेरे हुक्म से मुर्दों को निकालते थे और जब मैंने इस्राईल के बेटों को तुम से रोका जब तुम उन के पास मोजिज़ा लाये[1] तो उन में से काफ़िरों ने कहा कि यह सिर्फ़ खुला जादू है।

وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي وَبِرَسُولِي
قَالُوا آمَنَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّنَا مُسْلِمُونَ (111)

१११. और जबकि मैंने हवारियों को प्रेरणा (इल्हाम किया) दी[2] कि तुम मुझ पर और मेरे रसूलों पर ईमान लाओ, उन्होंने कहा, हम ईमान लाये और आप गवाह रहिए कि हम पूरी तरह से फ़रमाबर्दार हैं।

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ
يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَن يُنَزِّلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِّنَ
السَّمَاءِ ۖ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ (112)

११२. याद करो जब हवारियों ने कहा कि हे ईसा मरियम के बेटे! क्या तुम्हारा रब हम पर आसमान से एक थाल उतार सकता है ?[3] उस (ईसा) ने कहा अगर तुम ईमान रखते हो तो अल्लाह से डरो।

---

[1] यह इशारा है उस साज़िश की तरफ़ जो यहूदियों ने हज़रत ईसा के क़त्ल करने और फांसी पर चढ़ाने के लिए बनाया था, जिस से महफ़ूज़ करके अल्लाह तआला ने उनको आसमान पर उठा लिया।

[2] "हवारी" से मुराद हज़रत ईसा के वह मानने वाले हैं, जो उन पर ईमान लाये और उन के साथी और मददगार बने, उनकी तादाद बारह बतायी जाती है, यहाँ "वह्यी" से मुराद वह वह्यी नहीं जो फ़रिश्तों के ज़रिये रसूलों पर उतरती थी, बल्कि "मन में डालने" के मतलब में है जो अल्लाह की तरफ़ से कुछ लोगों के मन में पैदा कर दी जाती है, जैसे हज़रत मूसा की माँ और हज़रत मरियम में इसी तरह की मनोभावना पैदा की गई। इस से मालूम हुआ कि जिन लोगों ने "वह्यी" के कलिमा से मूसा की माँ और मरियम को रसूल माना है वह सही नहीं, इसलिए कि इसका मतलब मन में ख़्याल पैदा करना है, इसी तरह यहाँ हवारियों के रसूल होने का मतलब नहीं।

[3] मायद: ऐसे बर्तन (तबक, सीनी, प्लेट या ट्रे) को कहते हैं जिस में खाना हो, इसलिए खाने की जगह को भी मायद: कहा जाता है, क्योंकि उस पर भी खाना रखा जाता है, सूर: का नाम भी इसी वजह से है कि इस में इसका बयान है। हवारियों ने अपने दिल के सुकून के लिए यह माँग की थी, जिस तरह से हज़रत इब्राहीम ने मुर्दों को जिलाये जाने के प्रदर्शन (मुशाहिदा) की माँग की थी।

११३. उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि उस में से खायें और हमारे दिलों को सुकून हो जाये और हमें यक़ीन हो कि आप ने हम से सच कहा और हम उस पर गवाह हो जायें।

قَالُوا نُرِيدُ أَن نَّأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَن قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿113﴾

११४. मरियम के बेटे ईसा ने कहा, हे अल्लाह! हम पर आसमान से एक थाल उतार दे जो हम में से पहले और आख़िर के लिये ख़ुशी की बात हो जाये और तेरी तरफ़ से एक निशान हो और हमें रोज़ी अता कर तू बेहतर रोज़ी देने वाला है।

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِّنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِّأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِّنكَ ۖ وَارْزُقْنَا وَأَنتَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿114﴾

११५. अल्लाह (तआला) ने कहा कि मैं वह ख़ाना तुम लोगों के लिए उतारने वाला हूँ, फिर तुम में से जो इंसान उस के बाद कुफ़्र करेगा तो मैं उस को ऐसा अज़ाब दूंगा कि वह अज़ाब मैं सारी दुनिया में किसी को न दूंगा।

قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۖ فَمَن يَكْفُرْ بَعْدُ مِنكُمْ فَإِنِّي أُعَذِّبُهُ عَذَابًا لَّا أُعَذِّبُهُ أَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِينَ ﴿115﴾

११६. और (वह वक़्त भी याद करो है) जबकि अल्लाह (तआला) कहेगा कि हे ईसा इब्ने मरियम, क्या तुम ने उन लोगों से कह दिया था कि मुझ को और मेरी माँ को अल्लाह के सिवाय माबूद बना लेना?[1] (ईसा) कहेंगे कि मैं

وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَٰهَيْنِ مِن دُونِ اللَّهِ ۖ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ

---

[1] यह सवाल क़यामत के दिन होगा, मक़सद इस से अल्लाह को छोड़ कर किसी दूसरे को माबूद बनाने वालों को बाख़बर करना है कि जिन को तुम माबूद और परेशानी दूर करने वाला समझते थे वह तो ख़ुद अल्लाह के दरबार में उत्तरदायी (जवाबदेह) हैं।

दूसरी बात यह मालूम हुई कि इसाईयों ने हज़रत मसीह के साथ हज़रत मरियम को माबूद बनाया है।

तीसरी बात यह मालूम हुई कि अल्लाह के सिवाय माबूद वही नहीं जिन्हें मूर्तिपूजकों ने पत्थर या लकड़ियों का कोई रूप बनाकर उनकी इबादत की, जिस तरह आजकल क़ब्र के पूजारी आलिम अपनी जनता को यह बताकर धोखा दे रहे हैं, बल्कि अल्लाह के वे बंदे भी अल्लाह के सिवाय माबूद की परिधि (दायरे) में आते हैं जिनकी लोगों ने किसी भी रूप से इबादत की, जैसे हज़रत ईसा और मरियम की इसाईयों ने की।

أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ إِنْ كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ (116)

तो तुझे मुनज़्ज़ह (पाक) समझता हूं, मुझ को किस तरह से शोभा (ज़ेब) देती कि मैं ऐसी बात कहता जिस के कहने का मुझे कोई हक़ नहीं, अगर मैंने कहा होगा तो तुझ को उस का इल्म होगा, तू तो मेरे दिल की बात जानता है, मैं तेरे जी में जो कुछ है उस को नहीं जानता, सिर्फ़ तू ही ग़ैबों (परोक्षों) का जानकार है।

مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ (117)

११७. मैंने उन से सिर्फ़ वही कहा जिस का तूने मुझे हुक्म दिया कि अपने रब और मेरे रब अल्लाह की इबादत करो, और जब तक मैं उन में रहा उन पर गवाह रहा और जब तूने मुझे उठा लिया तो तू ही उनका संरक्षक (निगरां) था और तू हर चीज़ पर गवाह है।

إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (118)

११८. अगर तू इन को सज़ा दे तो यह तेरे बंदे हैं और अगर तू इन्हें माफ़ कर दे तो तू ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।

قَالَ اللَّهُ هَٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ (119)

११९. अल्लाह (तआला) कहेगा कि यह वह दिन है कि सच्चों का सच उन के लिए फ़ायदेमंद होगा, उन को बाग़ मिलेंगे जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, जिस में वह हमेशा हमेश रहेंगे, अल्लाह तआला उन से ख़ुश (प्रसन्न) और ये अल्लाह से ख़ुश हैं, यह बहुत भारी कामयाबी (सफलता) है।

لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (120)

१२०. अल्लाह ही का मुल्क (राज्य) है, आसमानों का और ज़मीन का और उनका जो उन में मौजूद हैं और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

सूरतुल अन्आम-६

سُوْرَةُ الْأَنْعَامِ

सूरः अन्आम मक्का में नाज़िल हुई और इस में एक सौ पैंसठ आयतें और वीस रुकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बहुत मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. सब तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और अंधेरों व नूर को बनाया[1] फिर भी जो ईमान नहीं रखते (दूसरों को) अपने रब के बराबर मानते हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ۥ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿1﴾

२ उसी ने तुम्हें मिट्टी से बनाया, फिर एक वक़्त मुक़र्रर किया,[2] और एक मुक़र्रर वक़्त उस के पास है,[3] फिर भी तुम शक करते हो।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰى اَجَلًا ۭ وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ﴿2﴾

३. और वही अल्लाह है आसमानों में और ज़मीन में, वह तुम्हारे छुपे और ज़ाहिर को जानता है और तुम्हारी कमाई से बाख़बर है।[4]

وَهُوَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَفِي الْاَرْضِ ۭ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ﴿3﴾

---

[1] ज़ुलुमात से रात का अंधेरा और नूर से दिन का उजाला या कुफ़्र (अविश्वास) का अंधेरा और ईमान का उजाला मुराद है।

[2] यानी मौत का वक़्त।

[3] यानी आख़िरी दिन के वक़्त को सिर्फ़ अल्लाह जानता है, यानी पहला «अजल» लफ़्ज इस्तेमाल किया गया है, उसका मतलब पैदाईश से मौत तक का वक़्त (उम्र) है, दूसरे «अजलुममुस्सम्मा» कलिमा का मतलब मौत के बाद से क़यामत तक दुनिया की उम्र है, जिस के बाद वह पतन (ज़वाल) और विनाश (तबाही) से मिल कर ख़त्म हो जायेगा और एक दूसरी दुनिया यानी आख़िरत की ज़िन्दगी की शुरूआत होगी।

[4] अहले सुन्नत यानी सलफ़ का अक़ीदा है कि अल्लाह तआला ख़ुद तो अर्श पर है जैसा कि वह तारीफ़ के लायक़ है, लेकिन अपने इल्म के आधार पर हर जगह पर है, यानी उस के इल्म और ख़बर के दायरे से कोई भी चीज़ बाहर नहीं, लेकिन कुछ गुटों के लोग यह कहते हैं कि अल्लाह तआला अर्श पर नहीं बल्कि हर जगह पर है, और वह इस आयत से अपने ईमान की तसदीक़ करते हैं, लेकिन यह ईमान ठीक नहीं है, यह दलील भी ठीक नहीं है, आयत का मतलब यह है कि वह ताक़त जिसको आसमानों और ज़मीन पर अल्लाह कहकर पुकारते हैं और आसमानों ज़मीन पर जिसका मुल्क है और आसमानों ज़मीन पर जिसको माबूद समझा

وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿4﴾

४. और उन के पास कोई निशानी उन के रब की निशानियों में से नहीं आती बल्कि वह उस से मुंह फेरते हैं।

فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ أَنبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿5﴾

५. उन्होंने उस सच्ची किताब को भी झूठा बताया जबकि वह उन के पास पहुंची, तो जल्द ही उन्हें ख़बर मिल जायेगी, उस चीज़ की जिस का यह लोग मज़ाक़ करते थे।

أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّن قَرْنٍ مَّكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّن لَّكُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِم مِّدْرَارًا وَجَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُم بِذُنُوبِهِمْ وَأَنشَأْنَا مِن بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ﴿6﴾

६. क्या उन्होंने देखा नहीं कि हम उन से पहले कितने गुटों को बर्बाद कर चुके हैं जिन को हम ने दुनिया में इतनी ताक़त अता की थी जैसी तुम्हें भी नहीं अता किया और हम ने उन पर मूसलाधार बारिश की, और हम ने उन के नीचे से नदियां बहायीं, फिर हम ने उन को उन के गुनाहों के सबब बर्बाद कर दिया[1] और उन के बाद दूसरी क़ौम पैदा किया।

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوهُ بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿7﴾

७. और अगर हम कागज़ पर लिखी हुई कोई पुस्तक भी आप पर उतारते, फिर यह लोग अपने हाथों से छू भी लेते तब भी यह काफ़िर लोग यही कहते कि यह कुछ भी नहीं मगर खुला जादू है।

وَقَالُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۖ وَلَوْ أَنزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْأَمْرُ ثُمَّ لَا يُنظَرُونَ ﴿8﴾

८. और उन्होंने कहा कि आप पर कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया? और अगर हम फ़रिश्ता उतार देते तो विषय का फ़ैसला कर

जाता है, वह अल्लाह तुम्हारे छिपे और ज़ाहिर और जो कुछ अमल तुम लोग करते हो सब को जानता है। (फ़तहुल क़दीर) इसकी दूसरी दलील भी पेश की गई हैं जिन्हें आलिम लोगों की तफ़सीर में देखा जा सकता है जैसे तफ़सीर तबरी और इब्ने कसीर आदि (वग़ैरह)।

[1] यानी जब गुनाह के सबब तुम से पहले की क़ौमों को हम बर्बाद कर चुके हैं, जबकि वे ताक़त में तुम से कहीं ज़्यादा थे, ज़रिया और माल के बाहुल्य (बहुतात) में भी तुम से ज़्यादा थे तो तुम्हें बर्बाद करना हमारे लिये क्या कठिन है? इस से मालूम हुआ कि किसी समाज की ज़ाहरी तरक़्क़ी और ख़ुशहाली से यह नहीं समझ लेना चाहिए कि वह कामयाब और विजयी है, यह मौक़ा और वक़्त देने की वह हालत हैं जो इम्तेहान लेने के लिए कई क़ौमों को दी जाती है, लेकिन जब उनका वक़्त पूरा हो जाता है तो यह सारी तरक़्क़ी और ख़ुशहाली उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचाने में कामयाब नहीं होती।

दिया जाता फिर उन्हें मौक़ा नहीं दिया जाता।[1]

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّ لَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ ﴿٩﴾

९. और अगर हम रसूल को फ़रिश्ता बनाते तो उसे मर्द बनाते और उन पर वही शक पैदा करते जो शक कर रहे हैं।[2]

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿10﴾

१०. और आप से पहले बहुत से रसूलों (ईशदूतों) का मज़ाक़ किया गया, तो जो मज़ाक़ कर रहे थे उन के मज़ाक़ का बुरा नतीजा उन पर पलट पड़ा।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿11﴾

११. आप कह दीजिए कि ज़रा ज़मीन पर घूम फिर कर देख लो कि झुठलाने वालों का क्या नतीजा हुआ?

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ قُلْ لِّلّٰهِ ۭ كَتَبَ عَلٰي نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۭ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰي يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿12﴾

१२ आप कह दीजिए कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है इन सब पर किस की मिल्कियत है? आप कह दीजिए, सब पर अल्लाह की मिल्कियत है, अल्लाह ने रहमत करना अपने ऊपर फ़र्ज़ कर लिया है।[3] तुम को अल्लाह (तआला) क़यामत के दिन जमा करेगा, इस में कोई शक नहीं, जिन लोगों ने ख़ुद को बर्बाद कर लिया है, वही ईमान नहीं लायेंगे।

---

[1] अल्लाह ने इंसानों को हिदायत देने के लिए, जितने भी अम्बिया और रसूल (संदेशवाहक) भेजे सभी इंसान मर्द ही थे, और हर क़ौम में उन्हीं में से एक को वह्यी और रिसालत के लिए चुन लिया, यह इसलिये कि उसके बिना रसूल हिदायत का काम पूरा नहीं कर सकता था।

[2] यानी अगर हम फ़रिश्ते ही को रसूल बनाकर भेजने का फ़ैसला करते, तो साफ़ बात है कि वह फ़रिश्ते की शक्ल में आ नहीं सकता था, क्योंकि इस तरह से इंसान उस से डर जाते और क़ुरबत और नज़दीकी पैदा करने के बजाय दूर भागते, इसलिए ज़रूरी था कि उसे इंसान की शक्ल में भेजा जाता, लेकिन तुम्हारे यह नेता फिर यही शक करते कि इंसान ही है, जो इस वक़्त भी रसूल को इंसान की शक्ल में पेश कर रहे हैं तो फ़रिश्ते के भेजने का क्या फ़ायेदा?

[3] जिस तरह हदीस में नबी ﷺ ने फ़रमाया: जब अल्लाह तआला ने दुनिया को पैदा किया तो अर्श पर यह लिख दिया «إِنَّ رَحْمَتِي تَغْلِبُ غَضَبِي» (सहीह बुख़ारी)। बेशक मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर प्रभावी (ग़ालिब) है, लेकिन यह रहमत क़यामत के दिन केवल ईमानवालों के लिए होगी, काफ़िरों पर अल्लाह बहुत ग़ज़बनाक होगा, इसका मतलब यह है कि दुनिया में उसकी नेमत और रहमत आम तौर से सभी के लिए है चाहे वे ईमानवाला, काफ़िर, नेक काम करने वाला या बुरे काम करने वाला।

وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿13﴾

१३. और जो कुछ दिन और रात में रहते हैं वह सभी कुछ अल्लाह के ही हैं और वह बहुत सुनने वाला और बड़ा जानने वाला है।

قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ۗ قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ ۖ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿14﴾

१४ आप कहिये कि क्या मैं उस अल्लाह के सिवाय को दोस्त (रब, माबूद) बना लूँ जो आसमानों और ज़मीन का ख़ालिक़ है, और वह खिलाता है खिलाया नहीं जाता, आप कहिये कि मुझे हुक्म किया गया है कि मैं उन में सब से पहले रहूँ जिस ने (अल्लाह पर) आत्मसमर्पण किया और मुश्रिकों में कभी भी न रहूँ।

قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿15﴾

१५. आप कह दीजिए कि मैं अगर अपने रब का कहना न मानूँ तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब से डराता हूँ।

مَنْ يُصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ ۚ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ﴿16﴾

१६. जिस से उस दिन सज़ा ख़त्म कर दी जायेगी, उस पर अल्लाह ने बहुत रहमत की और यह वाज़ेह कामयाबी है।

وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِنْ يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿17﴾

१७. और अगर अल्लाह (तआला) तुझ को कोई तकलीफ़ दे तो उसको दूर करने वाला अल्लाह तआला के सिवाय कोई दूसरा नहीं है और अगर तुझ को अल्लाह तआला फ़ायेदा अता करे तो वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ﴿18﴾

१८. वही अपने बन्दों पर प्रभावशाली (ग़ालिब) है और वही हिक्मत वाला, ख़बर रखने वाला है।

قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ شَهِيدٌ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَٰذَا الْقُرْآنُ لِأُنْذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ بَلَغَ ۚ أَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ آلِهَةً أُخْرَىٰ ۚ قُلْ لَا أَشْهَدُ ۚ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ وَإِنَّنِي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ ﴿19﴾

१९ आप कहिये कि किस की गवाही बड़ी है, कहिये कि हमारे और तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह (साक्षी) है और यह क़ुरआन मेरी तरफ़ वह्यी किया गया है ताकि उस के ज़रिये तुम्हें और जिस तक पहुँचे उन सब को आगाह करूँ,[1] क्या तुम गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे माबूद

[1] रबीअ़ बिन अनस कहते हैं कि अब जिस के पास भी यह क़ुरआन पहुँच जाये, अगर वह रसूल ﷺ का सच्चा पैरोकार है तो उसका यह फ़र्ज़ है कि वह भी लोगों को अल्लाह की तरफ़ उसी तरह दावत दे, जिस तरह रसूल ﷺ ने लोगों को दावत दिया था और उसी तरह बाख़बर करे जिस तरह से आप ﷺ ने बाख़बर किया था। (इब्ने कसीर)

हैं? आप कह दें कि मैं इस की गवाही नहीं देता, आप कहिये कि वह एक ही मावूद है और मैं तुम्हारे शिर्क से बरी हूं।

الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۘ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿20﴾

२०. जिन्हें हम ने किताव (तौरात और इंजील) दी है वह आप (मुहम्मद ﷺ) को उसी तरह पहचानते हैं, जैसे अपने बेटों को, जो अपने आप को खो दिये हैं वही यक़ीन नहीं करेंगे।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿21﴾

२१. और उस से बढ़कर ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठा इल्ज़ाम लगाये और उस की निशानियों (चिन्हों) को झूठा माने, बेशक ज़ालिम कामयाब नहीं होते।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿22﴾

२२. और जिस दिन हम सब को जमा करेंगे, फिर जिन्होंने शिर्क किया उन से कहेंगे वे कहां हैं जिन को तुम (अल्लाह का) साभी समझ रहे थे (वह दिन याद है)।

ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ﴿23﴾

२३. फिर उन के शिर्क का सिवाये इस के कोई बहाना न होगा कि कहें कि अपने रब अल्लाह की क़सम हम मुशरिक नहीं थे।[1]

اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿24﴾

२४. देखो कि वह कैसे अपने ऊपर झूठ बोल गये और उन का इल्ज़ाम उन से खो गया।

---

[1] फ़ित्ना का एक मतलब शिर्क और एक मतलब तौबा के किये गये हैं, यानी आख़िर में यह दलील और तौवा को पेश करके छुटकारा पाने की कोशिश करेंगे कि हम तो मूर्तिपूजक नहीं थे।

यहां यह शक न हो कि वहां तो इंसान के हाथ-पैर गवाही देंगे और मुंह पर मोहर लगा दी जायेगी, फिर यह इंकार किस तरह करेंगे? इसका जवाब हज़रत इब्ने अव्वास ने दिया है कि जब मूर्तिपूजक देखेंगे कि मुसलमान जन्नत में जा रहे हैं तो वह आपस में विचार-विमर्श (राय-मशिवरा) कर के मूर्तिपूजन से ही इंकार कर देंगे, तव अल्लाह तआला उन के मुंह पर मोहर लगा देगा और उन के हाथ-पैर उन्होंने जो किया होगा उसकी गवाही देंगे, फिर वह अल्लाह तआला से कोई बात छुपाने की ताक़त न रख सकेंगे। (इब्ने कसीर)

२५. उन में से कुछ आप की ओर कान धरते हैं,[1] और हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल रखे हैं कि उसे समझें और उन के कान बहरे हैं, और अगर वह सभी निशानियों को देख लें तब भी उन पर यक़ीन नहीं करेंगे, यहाँ तक कि जब आप के पास आते हैं झगड़ा करते हैं, काफ़िर (विश्वासहीन) कहते हैं कि यह सिर्फ़ बुज़ुर्गों की ख़्याली कहानियाँ हैं।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۗ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۗ حَتّٰۤى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿25﴾

२६. और यह लोग इस से दूसरों को भी रोकते हैं और ख़ुद भी दूर-दूर रहते हैं, और ये लोग अपने आप को बर्बाद कर रहे हैं और कुछ नहीं जानते।

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿26﴾

२७. और अगर आप उस वक़्त देखें जब ये लोग जहन्नम के क़रीब खड़े किये जायेंगे तो कहेंगे,[2] हाय! क्या ही अच्छी बात हो कि हम फिर वापस भेज दिये जायें (और अगर ऐसा हो जाये) तो हम अपने रब की निशानियों को न झुठलायें और हम ईमानवालों में से हो जायें।

وَلَوْ تَرٰۤى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿27﴾

२८. बल्कि जिस चीज़ को इस के पहले छुपाया करते थे वह उन के सामने आ गयी है, अगर यह लोग फिर वापस भेज दिये जायें तब भी यह वही करेंगे जिस से इन को रोका गया था और बेशक वे लोग झूठे हैं।

بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ۗ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿28﴾

२९. और यह कहते हैं कि सिर्फ़ यही दुनियावी ज़िन्दगी हमारी ज़िन्दगी है और हम दोबारा ज़िन्दा नहीं किये जायेंगे।

وَقَالُوْۤا اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿29﴾

---

[1] यानी यह मूर्तिपूजक आप के पास क़ुरआन तो आकर सुनते हैं, लेकिन चूँकि मक़सद हिदायत हासिल करना नहीं है, इसलिए इस से कोई फ़ायेदा नहीं हासिल करते।

[2] यहाँ पर अगर का जवाब ग़ायब है जो इस तरह होगा, "तो आप को भयानक मंज़र दिखायी देगा।"

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ وُقِفُوا۟ عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ أَلَيْسَ هَٰذَا بِٱلْحَقِّ ۚ قَالُوا۟ بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا۟ ٱلْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ (30)

३०. और अगर आप उस वक़्त देखें जब ये अपने रब के सामने खड़े किये जायेंगे, अल्लाह (तआला) फ़रमायेगा कि क्या यह सच नहीं है? वे कहेंगे बेशक रब की क़सम सच है, अल्लाह (तआला) फ़रमायेगा तो अपने कुफ्र (अविश्वास) का अज़ाब सहन करो।

قَدْ خَسِرَ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِلِقَآءِ ٱللَّهِ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَتْهُمُ ٱلسَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا۟ يَٰحَسْرَتَنَا عَلَىٰ مَا فَرَّطْنَا فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ۚ أَلَا سَآءَ مَا يَزِرُونَ (31)

३१. बेशक नुक़सान में पड़े वह लोग जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया, यहाँ तक कि जब वह मुक़र्रर वक़्त उन पर अचानक आ पड़ेगा, कहेंगे कि हाय अफ़सोस हमारी सुस्ती पर जो इस के बारे में हुई और उनकी हालत यह होगी कि अपना बोझ अपनी कमर पर लादे हुए होंगे, ख़बरदार! वह बुरा बोझ लादेंगे।

وَمَا ٱلْحَيَوٰةُ ٱلدُّنْيَآ إِلَّا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۖ وَلَلدَّارُ ٱلْءَاخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ (32)

३२. और दुनियावी ज़िन्दगी तो कुछ भी नहीं सिवाये खेल-तमाशा के, और आख़िरी घर (आख़िरत) अल्लाह से डरने वालों के लिए अच्छा है, क्या तुम सोच-विचार नहीं करते हो?

قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُۥ لَيَحْزُنُكَ ٱلَّذِى يَقُولُونَ ۖ فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَكَ وَلَٰكِنَّ ٱلظَّٰلِمِينَ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ يَجْحَدُونَ (33)

३३. हम अच्छी तरह जानते हैं कि उन के क़ौल आप को दुखी करते हैं, तो यह लोग आप को झूठा नहीं कहते, लेकिन यह ज़ालिम अल्लाह तआला की आयतों का इंकार करते हैं।[1]

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ فَصَبَرُوا۟ عَلَىٰ مَا كُذِّبُوا۟ وَأُوذُوا۟ حَتَّىٰٓ أَتَىٰهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَٰتِ ٱللَّهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِن نَّبَإِى۟ ٱلْمُرْسَلِينَ (34)

३४. और आप से पहले रसूलों को झूठा कहा जा चुका है और उन्होंने उस झुठलाये जाने पर सब्र किया, और वे तकलीफ़ दिये गये यहाँ तक कि उन के पास हमारी मदद आ गई, अल्लाह की बातें कोई बदलने वाला नहीं, और आप के

---

[1] नबी ﷺ को काफ़िरों के झुठलाने पर जो तकलीफ़ और दुख पहुँचता था, उस के इज़ाला और आप ﷺ को तसल्ली के लिए फ़रमाया जा रहा है कि यह आप को नहीं झुठला रहे हैं (आप को तो सच्चे और ईमानदार मानते हैं) बल्कि यह अल्लाह की आयतों को झुठलाया जा रहा है, और यह एक ज़ुल्म है जो वह कर रहे हैं, आज भी जो लोग नबी ﷺ के अच्छे किरदार, न्यायकारी, ईमानदारी और सच्चाई का ख़ूब झूम-झूम कर बयान करते हैं और इस विषय पर ज़ोरदार भाषण देते हैं, लेकिन रसूलुल्लाह ﷺ की पैरवी करने में कठिनाई महसूस करते हैं, आप ﷺ के क़ौल के मुक़ाबले में सोच, फ़िक्र और अपने नेताओं के क़ौल को अहमियत देते हैं, उन्हें सोचना चाहिए कि यह किसका किरदार है जिसे उन्होंने अपनाया है?

पास पैग़म्बरों के वाक़ेआत आ चुके हैं।

وَإِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْأَرْضِ أَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَاءِ فَتَأْتِيَهُمْ بِآيَةٍ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدَىٰ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ (35)

३५. और अगर उनका मुहँ फेरना आप पर भारी हो रहा है तो अगर आप से हो सके तो ज़मीन में कोई सुरंग या आसमान में कोई सीढ़ी खोज लें और उन के पास कोई मोजिज़ा ला दें और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें सच्चे रास्ते पर जमा कर देता[1] इसलिए मुर्खों में न बनिये।

إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ ۘ وَالْمَوْتَىٰ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ (36)

३६. वही लोग क़ुबूल करते हैं जो सुनते है,[2] और मरे हुए लोगों को अल्लाह (तआला) ज़िन्दा कर के उठायेगा, फिर सब उसी (अल्लाह ही) की तरफ़ लाये जायेंगे।

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ ۚ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يُنَزِّلَ آيَةً وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ (37)

३७. और उन्होंने कहा कि उन पर उन के रब की ओर से कोई मोजिज़ा क्यों नहीं उतारा गया? आप कह दें कि अल्लाह कोई मोजिज़ा उतारने की पूरी क़ुदरत रखता है, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طَائِرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أُمَمٌ أَمْثَالُكُمْ ۚ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتَابِ مِنْ شَيْءٍ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ (38)

३८. और जितने तरह के जानदार ज़मीन पर चलने वाले हैं और जितने तरह के पंख से उड़ने वाले पक्षी हैं, उन में से कोई भी ऐसा नहीं जो कि तुम्हारी तरह के गुट न हों, हम ने किताब में लिखने से कोई चीज़ न छोड़ी,[3] फिर

---

[1] नबी ﷺ को मुख़ालिफ़ों और काफ़िरों के झुठलाने से जो तकलीफ़ और दुख पहुँचता था उस के बिना पर अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि ये तो अल्लाह तआला की मर्ज़ी और तक़दीर से होना ही था, और अल्लाह के हुक्म के बिना आप ﷺ उन्हें दीन इस्लाम क़ुबूल करने के लिए तैयार नही कर सकते, चाहे आप ﷺ ज़मीन में सुरंग खोदकर और आसमान पर सीढ़ी लगाकर कोई निशानी लाकर उन्हें दिखा भी दें।

[2] यानी उन काफ़िरों की हालत मुर्दों की तरह है, जिस तरह से वह बोलने और सुनने की ताक़त से महरूम है, यह भी चूँकि अपनी अक़्ल और फ़िक्र से सच के समझने का काम नही लेते, इसलिए यह भी मरे हुए की तरह हैं।

[3] किताब से मुराद लौह महफ़ूज़ है, (महफ़ूज़ किताब है जिस में सभी लोगों की तक़दीर उन के अमल के ऐतबार से अल्लाह के अज़ली इल्म की बुनियाद पर महफ़ूज़ करके लिख दिया है) यानी वहाँ हर चीज़ लिखी हुई है या क़ुरआन है जिस में मुख़्तसर और तफ़सीली तौर से दीन

सब अपने रब के पास जमा किये जायेंगे।

३९. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को नहीं माना वह बहरे गुंगे अंधेरे में हैं, अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह कर देता है और जिसे चाहता है सीधे रास्ते पर लगा देता है।[1]

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صُمٌّ وَبُكْمٌ فِي الظُّلُمَاتِ ۗ مَنْ يَشَإِ اللَّهُ يُضْلِلْهُ وَمَنْ يَشَأْ يَجْعَلْهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿39﴾

४०. आप कह दीजिए कि अपना हाल तो बताओ कि अगर तुम पर अल्लाह का कोई अजाब आ पड़े या तुम पर क़यामत ही आ पहुँचे तो क्या अल्लाह के सिवाय दूसरों को पुकारोगे? अगर तुम सच्चे हो।

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿40﴾

४१. बल्कि ख़ास तौर से उसी को पुकारोगे, फिर जिस के लिए तुम पुकारोगे अगर वह चाहे तो उस को हटा भी दे और जिन को तुम साझीदार ठहराते हो उन सभी को भूल जाओगे।

بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِنْ شَاءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ﴿41﴾

४२. और हम ने दूसरी उम्मतों की तरफ भी जो कि आप से पहले गुजर चुकी हैं, पैग़म्बर भेजे थे उन को भी हम ने ग़रीबी और रोग से पकड़ा ताकि वे आजिज़ी करें।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِنْ قَبْلِكَ فَأَخَذْنَاهُمْ بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُونَ ﴿42﴾

४३. इस तरह जब उन्हें हमारी सज़ा मिली तो वे कमज़ोर क्यों न पड़े? लेकिन उन के दिल सख़्त हो गये और शैतान ने उन के अमलों को उन के ख़्यालों में अच्छा कर दिया।

فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا وَلَٰكِنْ قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿43﴾

४४. और जब वह उस नसीहत को भूल गये जिस की शिक्षा दी गई थी तो हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये, यहाँ तक कि वह जब अपनी पाई हुई चीज़ों पर इतरा गये तो उन्हें हम ने अचानक पकड़ लिया और वह मायूस हो

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً فَإِذَا هُمْ مُبْلِسُونَ ﴿44﴾

के हर क़ानून पर रौशनी डाली गई है।

[1] अल्लाह की आयतों को झुठलाने वाले चूँकि अपने कानों से सच बात नहीं सुनते और अपने मुँह से सच नहीं बोलते, इसलिए वह ऐसे हैं जैसे गूंगे और बहरे होते हैं, इस के सिवाय यह कुफ़्र ज़िल्लत के अंधेरे में घिरे हुए होते हैं, इसलिए उन्हें कोई ऐसी चीज़ दिखायी नहीं देती जिस से वे अपना सुधार कर सकें।

कर रह गये।

فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ (45)

४५. फिर जालिम लोगों की जड़ कट गयी और अल्लाह (तआला) की तारीफ है जो दुनिया का रब है।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِهِ ۗ انْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُونَ (46)

४६. आप कहिए कि यह बताओ अगर अल्लाह (तआला) तुम्हारे सुनने और देखने की ताक़त पूरी तरह से ले ले और तुम्हारे दिलों पर मोहर लगा दे तो अल्लाह (तआला) के सिवाय कोई माबूद है कि यह तुम को फिर दे दे? आप देखिए कि हम किस तरह से दलील को कई रूप से पेश कर रहे हैं, फिर भी वह कतरा रहे हैं।[1]

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ بَغْتَةً أَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ إِلَّا الْقَوْمُ الظَّالِمُونَ (47)

४७. आप कहिए कि यह बताओ अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब अचानक या सावधानी में आ पड़े तो क्या सिवाये ज़ालिमों के कोई मारा जायेगा।

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنْذِرِينَ ۖ فَمَنْ آمَنَ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (48)

४८. और हम पैग़म्बर को इसलिए भेजा करते हैं कि वे ख़ुशख़बरी दें और डरायें, फिर जो ईमान ले आये और अपना सुधार कर ले उन को न कोई डर होगा ओर न वे दुखी होगें।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ (49)

४९. और जो लोग हमारी आयतों को झुठलायें उन को अज़ाब पहुँचेगा क्योंकि वे नाफ़रमान हैं।

---

[1] आँख कान और दिल इंसानी जिस्म के ख़ास अंग हैं, अल्लाह कह रहा है कि अगर वह चाहे तो इन अंगों में जो ख़ुसूसियत रखी हैं उन्हें छीन ले, यानी सुनने देखने की ताक़त, जिस तरह गुमराहों के अंग इन ख़ुसूसियतों से महरूम होते हैं या वह चाहे तो इन अंगों ही को ख़त्म कर दे वह दोनों बातों की क़ुदरत रखता है, उस की पकड़ से कोई बच नही सकता है, लेकिन यह कि वह ख़ुद किसी को बचाना चाहे, आयतों को कई तरीक़े से पेश करने का मतलब यह है कि कभी डराने और ख़ुशख़बरी देने के ज़रिये, कभी लालच और चेतावनी (तंबीह) देने के ज़रिये और कभी दूसरे ज़रिये से।

५०. (आप) कह दीजिए कि न तो मैं तुम से यह कहता हूं कि मेरे पास अल्लाह का ख़ज़ाना है और न मैं ग़ैब जानता हूं, और न मैं यह कहता हूं कि मैं फ़रिश्ता हूं, मैं तो सिर्फ़ जो कुछ मेरे पास वह्यी आती है, उसकी पैरवी करता हूं।[1] (आप) कहिए कि अंधा और आंख वाला किस तरह बराबर हो सकते हैं? तो क्या तुम फ़िक्र नहीं करते!

قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآىِٕنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۭ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۭ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ (50)

५१. और ऐसे लोगों को डराईए जो इस बात का डर रखते हैं कि अपने रब के सामने इस हालत में जमा किये जायेंगे कि जितने अल्लाह के अलावा हैं न उनकी मदद करेंगे और न कोई सिफ़ारिश करने वाला होगा, इस उम्मीद के साथ कि वे डर जायेंगे।

وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ (51)

५२ और आप उन्हें न निकालिए जो सुबह और शाम अपने रब की इबादत करते हैं, ख़ास तौर से उसकी ख़ुशी की फ़िक्र करते हैं, उनका हिसाब ज़रा भी आप से संबन्धित नहीं, और आप का हिसाब ज़रा भी उन से संबन्धित नहीं कि आप उन को निकाल दें, बल्कि आप ज़ुल्म करने वालों में से हो जायेंगे।

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ۭ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ (52)

---

1 "मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने भी नहीं हैं, इस से मुराद यह है कि हर तरह की ताक़त और क़ुदरत मेरे पास नहीं है कि मैं तुम्हें अल्लाह के हुक्म और मर्ज़ी के बिना कोई मोजिज़ा दिखा दूं जैसाकि तुम चाहते हो, जिसे देख कर तुम्हें मेरी सच्चाई पर यक़ीन आ जाये, मेरे पास अप्रत्यक्ष (ग़ैब) का इल्म भी नहीं है जिस से मैं मुस्तक़बिल में घटित होने वाली घटनाओं से तुम्हें बाख़बर कर सकूं। मैं फ़रिश्ता होने का दावा भी नहीं कर सकता कि तुम मुझे ऐसे काम करने के लिए मजबूर करो जो इंसान की ताक़त और क़ूवत से बाहर की बात हो, मैं तो केवल उस वह्यी का मानने वाला हूं जो मुझ पर उतारी गयी और इस में हदीस भी है, जैसाकि आप ने फ़रमाया: "मुझे क़ुरआन के साथ उस के समान भी अता किया गया।" यह समान हदीस रसूलुल्लाह ﷺ है।

وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَاۗءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ۭ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ (53)

५३. और इसी तरह हम ने उन्हें आपस में इम्तेहान में डाल दिया ताकि यह कहें कि क्या अल्लाह ने हमारे बीच से उन पर एहसान किया है,[1] क्या यह बात नहीं है कि अल्लाह शुक्र अदा करने वालों को खूब जानता है।[2]

وَاِذَا جَاۗءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰي نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْۗءًۢا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ ۙ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (54)

५४ और आप के पास जब वह लोग आयें जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो कह दीजिए, "तुम पर सलामती हो," तुम्हारे रब ने अपने ऊपर रहमत फर्ज कर लिया है कि तुम में से जिस ने बेवकूफी से बुरा काम कर लिया फिर उस के बाद तौबा और सुधार कर लिया तो अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ (55)

५५. इसी तरह हम अपनी आयतों का तफ़सीली बयान करते हैं ताकि मुजरिमों का रास्ता वाज़ेह हो जाये।

قُلْ اِنِّىْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قُلْ لَّآ اَتَّبِعُ اَهْوَاۗءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ (56)

५६. आप कह दीजिए कि मुझे रोका गया है कि उन की इबादत करूँ जिन को अल्लाह के सिवाये तुम पुकारते हो, आप कहिए कि मैं तुम्हारी मनमानी की पैरवी न करूँगा, क्योंकि ऐसी हालत में मैं गुमराह हो जाऊंगा और हिदायत पर नहीं रह जाऊंगा।[3]

---

[1] शुरू में ज़्यादातर ग़रीब या ग़ुलाम लोग ही मुसलमान हुए थे, इसलिए यही बात धनवान काफ़िरों के इम्तेहान का सबब बन गयी, और वे इन ग़रीबों का मजाक़ उड़ाते थे और जो उन के क़ाबू में थे उन्हें वे तक़लीफ़ भी देते थे और कहते थे कि क्या यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने एहसान किया है? उनका मतलब यह होता था कि ईमान और इस्लाम पर अगर हक़ीक़त में अल्लाह का एहसान होता तो यह सब से पहले हम पर होता, जिस तरह दूसरी जगह पर कहा है।

[2] यानी अल्लाह तआला उपरी चमक-दमक, भेष-भूषा और आन-बान को नहीं देखता, वह तो दिल की हालत को देखता और उसी से जानता है कि शुक्रगुजार और सच्चे बन्दे कौन हैं?

[3] यानी अगर मैं भी तुम्हारी तरह अल्लाह की इबादत (आराधना) के बजाय, तुम्हारी इच्छाओं (मर्ज़ी) के अनुसार अल्लाह के सिवाय दूसरे की इबादत करना शुरू कर दूं तो ज़रूर मैं भटक जाऊंगा, मतलब यह है कि अल्लाह के सिवाय दूसरे की इबादत और बंदगी करना सबसे बड़ा

قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَكَذَّبْتُم بِهِ ۚ مَا عِندِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۖ يَقُصُّ الْحَقَّ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْفَاصِلِينَ ﴿57﴾

५७. (आप) कह दीजिए कि मेरे पास एक सुबूत है मेरे रब की तरफ से, और तुम उस को झुठलाते हो। जिस चीज की तुम जल्दी कर रहे हो वह मेरे पास नहीं, हुक्म किसी का नहीं सिवाये अल्लाह के, अल्लाह तआला वास्तविक बातों को बता देता है और वही सब से अच्छा फैसला करने वाला है।

قُل لَّوْ أَنَّ عِندِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَقُضِيَ الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ﴿58﴾

५८. आप कह दीजिए कि अगर मेरे पास वह जिस की तुम जल्दी मांग कर रहे हो, होती तो मेरे और तुम्हारे बीच (झगड़े का) फैसला हो गया होता, और अल्लाह जालिमों को अच्छी तरह जानता है।

وَعِندَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ وَمَا تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿59﴾

५९. और उसी (अल्लाह) के पास गैब की कुंजियाँ हैं जिन को सिर्फ वही जानता है, और जो थल और जल में हैं उन सभी को जानता है और जो पत्ता गिरता है उसे भी जानता है और जमीन के अंधेरों में कोई भी दाना नहीं पड़ता और न कोई तर और खुश्क चीज गिरती है, लेकिन ये सब खुली किताब में है।[1]

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿60﴾

६०. वही (अल्लाह) है जो रात में तुम्हारी रूह को (एक गुणा) क़ब्ज करता है[2] और दिन में जो भी करते हो जानता है, फिर तुम्हें उस में एक मुक़र्ररा मुद्दत पूरी करने के लिये जागृत करता है, फिर तुम्हें उसी की तरफ लौट जाना

भटकाव है, लेकिन बदनसीबी में यह भटकाव उतना ही आम है, यहाँ तक कि मुसलमानों का एक गुट भी इस में लिप्त (मुब्तिला) है। هداهم الله تعالى

[1] "किताब मोबीन" से मुराद "महफ़ूज किताब" है, इस आयत से भी मालूम हुआ कि गैब का इल्म सिर्फ अल्लाह को ही है, सभी गैब का ख़जाना उसी के पास है, इसलिए नाशुक्रों, मूर्तिपूजकों और मुख़ालिफों पर कब अजाब डाला जाये इसका भी इल्म अल्लाह ही को है, और वही अपनी मर्जी से इसका फैसला करने वाला है। हदीस में आता है कि परोक्ष (ग़ैब) की बातें पांच हैं १. क़यामत का इल्म, २. बारिश का आना, ३. माँ के पेट में पलने वाला बच्चा, ४. कल मुस्तक़बिल में होने वाला हादसा और ५. मौत किस जगह पर आयेगी। इन पांचों बातों का इल्म केवल अल्लाह ही को है। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः अल-अंआम)

[2] यहाँ नींद को मौत कहा गया है, इसलिए इसे "छोटी मौत" और मौत को "बड़ी मौत" कहा गया है. मौत की वजाहत के लिए देखें सूरः आले इमरान आयत न. ५५ की तफ़सीर)

है, फिर जो तुम करते रहे उसे तुम को बता देगा।

६१. वही अपने बन्दों पर ग़ालिब है और तुम पर निगराँ (फ़रिश्ते) भेजता है, यहाँ तक कि जब तुम में किसी की मौत (का वक़्त) आ जाये तो हमारे फ़रिश्ते उस की जान निकाल लेते हैं और वे ज़रा भी सुस्ती नहीं करते।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ (61)

६२. फिर वे अपने सच्चे रव (अल्लाह) के पास लाये जायेंगे, होशियार! उसी का हुक्म चलेगा और वह बहुत जल्द हिसाब लेगा।

ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ۭ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۣ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ (62)

६३. आप कहिये कि थल और जल के अंधेरों से जब उसे नर्मी और चुपके से पुकारते हो कि अगर हमें इस से आज़ाद कर दे तो तेरे ज़रूर शुक्रगुज़ार हो जायेंगे तो तुम्हें कौन बचाता है?

قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ لَىِٕنْ اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ (63)

६४. आप ख़ुद कहिये कि इस से और हर मुसीबत से तुम्हें अल्लाह ही बचाता है, फिर भी तुम ही शिर्क करते हो।

قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ (64)

६५. आप कहिये कि वही तुम पर तुम्हारे ऊपर से कोई अज़ाब भेजने या तुम्हारे पैरों के नीचे[1] से (अज़ाब) भेजने या तुम्हें अनेक गिरोह बनाकर आपस में लड़ाई का मज़ा चखाने की ताक़त रखता है। आप देखिये कि हम कई तरह से कैसे बातों (आयतों) को बयान कर रहे हैं ताकि वह समझ जायें।

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓي اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ۭ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ (65)

६६. और आप की क़ौम ने उसे झुठला दिया जब कि वह हक़ है। आप कह दीजिए कि मैं तुम पर अधिकारी (निगराँ) नहीं हूँ।

وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ۭ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ (66)

६७. हर ख़बर का एक मुक़र्रर वक़्त है और तुम जल्द ही जान लोगे।

لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ۡ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ (67)

---

[1] जैसे धंसाया जाना, तूफ़ान बाढ़, जिस में सब कुछ डूब जाता है या मतलब है कि अधीनस्थ (मातहत) कर्मचारी, ग़ुलामों और नौकरों की तरफ़ से अज़ाब कि वे विश्वासघाती और बेईमान हो जायें।

وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِيٓ ءَايَٰتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا۟ فِى حَدِيثٍ غَيْرِهِۦ ۚ وَإِمَّا يُنسِيَنَّكَ ٱلشَّيْطَٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ ٱلذِّكْرَىٰ مَعَ ٱلْقَوْمِ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿68﴾

६८. और जब आप उन लोगों को देखें जो हमारी आयतों में कुरेद कर रहे हैं तो उन लोगों से अलग हो जायें, यहाँ तक कि वह दूसरे काम में लग जायें और अगर आप को शैतान भुला भी दे, तो याद आने के बाद फिर ऐसे ज़ालिम लोगों के साथ मत बैठें ।[1]

وَمَا عَلَى ٱلَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِم مِّن شَىْءٍ وَلَٰكِن ذِكْرَىٰ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿69﴾

६९. और जो लोग परहेज़गारी रखते हैं उन पर उन के पकड़ का कोई असर नहीं होगा, और लेकिन उन के हक़ में तालीम देना है, शायद वे भी परहेज़गारी रखने लगें ।

وَذَرِ ٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُوا۟ دِينَهُمْ لَعِبًا وَلَهْوًا وَغَرَّتْهُمُ ٱلْحَيَوٰةُ ٱلدُّنْيَا ۚ وَذَكِّرْ بِهِۦٓ أَن تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ لَيْسَ لَهَا مِن دُونِ ٱللَّهِ وَلِىٌّ وَلَا شَفِيعٌ وَإِن تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَآ ۗ أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ أُبْسِلُوا۟ بِمَا كَسَبُوا۟ ۖ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌۢ بِمَا كَانُوا۟ يَكْفُرُونَ ﴿70﴾

७०. और ऐसे लोगों से कभी भी रिश्ता न रखें जिन्होंने अपने दीन को खेल बना रखा है और दुनियावी ज़िन्दगी ने उन्हें धोखे में डाल रखा है। और इस क़ुरआन के ज़रिये तालीम भी देते रहें ताकि कोई इंसान अपने अमल के सबब इस तरह न फंस जाये कि कोई अल्लाह के सिवाय उसकी न मदद करने वाला हो और न सिफ़ारिश करने वाला और यह हालत हो कि अगर दुनिया भर के बदले दे डाले तब भी उसे न लिया जाये । वे ऐसे ही हैं कि अपने अमलों के सबब फंस गये, उन के लिए बहुत गर्म पानी पीने के लिए होगा और दुखदायी सज़ा होगी उन के कुफ़्र के सबब ।

[1] इस आयत में अगरचे ख़िताब नबी ﷺ को किया गया है, किन्तु इस से सम्बोधित (मुख़ातिब) हर मुसलमान है, यह अल्लाह का बलपूर्वक (ताक़ीदी) हुक्म है जिसे पाक क़ुरआन में कई मुक़ामों में बयान किया गया है। सूर: निसाअ आयत नं॰ १४० में भी इस विषय की चर्चा आ चुकी है, इस से हर ऐसी मजलिस मुराद है जिस में अल्लाह और रसूल के हुक्मों का मज़ाक़ किया जाता हो या व्यवहारिक (अमली) रूप से उनकी नाफ़रमानी की जाती हो या गुमराह अपनी ग़लत विचारों के ज़रिया आयात (पाक क़ुरआन के मंत्रों) के मायनों को छिन्न-भिन्न कर रहे हों, ऐसी मजलिसों में आलोचना (तन्क़ीद) और सच की मदद के लिये जाना जायेज़ है वर्ना बहुत बड़े गुनाह और अल्लाह के ग़ज़ब का सबब है।

قُلْ أَنَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدَانَا اللَّهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانَ لَهُ أَصْحَابٌ يَدْعُونَهُ إِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۗ قُلْ إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۖ وَأُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿71﴾

७१. आप कहिए कि क्या हम अल्लाह के सिवाये उसे पुकारें जो हमारा भला-बुरा न कर सकता हो और अल्लाह की हिदायत मिलने के बाद उस के समान एड़ियों के बल फेर दिये जायें जैसे शैतान ने बहका दिया हो और वह धरती में भटकता फिर रहा हो, उस के साथी उसे सही रास्ते की ओर पुकार रहे हों कि हमारे पास आओ ।[1] आप कहिये कि अल्लाह की हिदायत ही हक़ीक़त में हिदायत है और हमें हुक्म किया गया है कि दुनिया के मालिक के लिए ख़ुदसिपुर्दगी कर दें ।

وَأَنْ أَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَاتَّقُوهُ ۚ وَهُوَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿72﴾

७२. और नमाज़ क़ायम करो और उस (अल्लाह) से डरो, वह वही है जिस की तरफ़ तुम जमा किये जाओगे ।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ وَيَوْمَ يَقُولُ كُنْ فَيَكُونُ ۚ قَوْلُهُ الْحَقُّ ۚ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ ۚ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ﴿73﴾

७३. उसी ने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया, और जिस दिन कहेगा "हो जा" तो हो जायेगा, उसका क़ौल सच है और जिस दिन नरसिन्घा फूँका जायेगा, मुल्क सिर्फ़ उसी का होगा, वह जानने वाला है, ग़ैब और हाज़िर का और वह हिक्मत वाला बाख़बर है ।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ آزَرَ أَتَتَّخِذُ أَصْنَامًا آلِهَةً ۖ إِنِّي أَرَاكَ وَقَوْمَكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿74﴾

७४ और याद करो जब इब्राहीम ने अपने पिता आज़र[2] से कहा क्या आप मूर्तियों को माबूद बना रहे हैं? मैं आप को और आप की क़ौम को खुली गुमराही में देख रहा हूँ ।

---

[1] यह उन लोगों की मिसाल है जो ईमान के बाद बेईमान और एकेश्वरवाद के बाद अनेकेश्वरवाद की ओर फिर जायें, उनकी मिसाल ऐसी ही है कि वह अपने साथियों से बिछड़ कर जंगलों में चकित हो कर परेशानी की हालत में भटकता फिर रहा हो, साथी उस को बुला रहे हों लेकिन चकित होने के वजह से कुछ न दिखायी पड़ रहा हो या जिन्नातों के पंजे में फंसने के सबब सही रास्ते पर आना नामुमकिन हो ।

[2] इतिहासकार हज़रत इब्राहीम के बाप के दो नाम बताते हैं, यह नाम आज़र और तारूख़ हैं, मुमकिन है कि दूसरा नाम उपाधि (लक़ब) हो । कुछ कहते हैं कि आज़र आप के चचा का नाम था, लेकिन यह सही नहीं है, इसलिए कि क़ुरआन ने आज़र की चर्चा हज़रत इब्राहीम के पिता के रूप में की है, इसलिए सही "ही है ।

७५. और इसी तरह हम ने इब्राहीम को आसमानों और जमीन का मुल्क (राज्य) दिखायी ताकि वह पूरे यकीन करने वालों में हो जायें।

وَكَذٰلِكَ نُرِيٓ إِبْرٰهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونَ مِنَ الْمُوقِنِينَ (75)

७६. फिर जब उन पर रात का अंधेरा छा गया तो एक तारा देखा, कहा कि यह मेरा रब है फिर जब वह डूब गया तो कहा कि मैं डूबने वाले से मुहब्बत नही करता।

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّي ۚ فَلَمَّآ أَفَلَ قَالَ لَآ أُحِبُّ الْاٰفِلِينَ (76)

७७. फिर जब चांद को चमकते देखा तो कहा यह मेरा रब है, फिर जब वह डूब गया तो कहा कि अगर मेरे रब ने मुझे रास्ता नही दिखाया तो मैं गुमराहों में हो जाऊँगा।

فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّي ۚ فَلَمَّآ أَفَلَ قَالَ لَئِن لَّمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّينَ (77)

७८. फिर जब सूरज को चमकता हुआ देखा तो कहा कि यह मेरा रब है, यह तो सब से बड़ा है, फिर जब वह डूब गया तो कहा कि बेशक मैं तुम्हारे शिर्क से बरी हूं।[1]

فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّي هٰذَآ أَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ أَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ إِنِّي بَرِيٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ (78)

७९. मैंने अपना मुंह उसकी तरफ़ फेर दिया, जिस ने आसमानों और जमीन को पैदा किया यकसू होकर और मैं मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) में से नही हूं।

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا ۖ وَمَآ أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ (79)

८०. और उन से उनकी कौम वालों ने झगड़ा करना शुरू कर दिया,[2] आप (हजरत इब्राहीम) ने कहा कि क्या तुम अल्लाह के बारे में मुझ से झगड़ा करते हो, अगरचे उस ने मुझे हिदायत दी है और मैं उन चीजों से जिन को तुम अल्लाह के

وَحَآجَّهُ قَوْمُهُ ۚ قَالَ أَتُحَآجُّوٓنِّي فِي اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ۚ وَلَآ أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِۦٓ إِلَّآ أَن يَشَآءَ رَبِّي شَيْـًٔا ۗ وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۗ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ (80)

---

[1] यानी वह सभी चीजें जिन को अल्लाह का साझी बनाते या जिन की पूजा करते हो, उस से मैं दुखी हूं, इसलिए कि इन में तबदीली होती है, कभी निकलते हैं कभी डूबते हैं, जो इस बात का सुबूत है कि इनकी तख़लीक़ हुई है और उनका बनाने वाला कोई और है जिसके आदेशाधीन (ताबे) ये हैं।

[2] जब कौम वालों ने तौहीद (एकेश्वरवाद) का यह भाषण सुना जिस में उन के (खुद बनाये) देवताओं का खण्डन (तरदीद) भी किया गया था, तो उन्होंने भी अपनी दलील पेश करना शुरू कर दिया, जिस से मालूम हुआ कि मूर्तिपूजकों ने भी अपने ईमान के लिए कुछ दलील बना रखी थी, जिसको आज भी देखा जा सकता है, जितने भी शिर्क करने वाले लोग है, सभी ने अपने-अपने पैरोकारों को मुतमइन करने के लिए ऐसे माहिर खोज रखे है जिन्हें वे दलील समझते है या जिनसे कम से कम उनके पैरोकारों को अपने जाल में फंसाये रख सकते हैं।

साथ शामिल करते हो, नहीं डरता लेकिन यह कि मेरा रब ही किसी वजह से चाहे। मेरा रब हर चीज को अपने इल्म के दायरे में घेरे हुए है, क्या तुम फिर भी ख़्याल नहीं करते?

وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُم بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا ۚ فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿81﴾

८१. और मैं उस चीज से कैसे डरूं जिसे तुम ने (अल्लाह का) साझीदार बना लिया, जबकि तुम उसे अल्लाह का साझी बनाने से नहीं डरते जिस का तुम्हारे पास अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी है, फिर इन दोनों गिरोहों में कौन हक़ के ज़्यादा लायक़ है, अगर तुम इल्म रखते हो।

الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُم بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ ﴿82﴾

८२. जो लोग ईमान लाये और अपने ईमान को किसी शिर्क से लिप्त नहीं किया उन्हीं के लिए अमन है और वही सीधे रास्ते पर हैं।[1]

وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ۚ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَّن نَّشَاءُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿83﴾

८३. और यह हमारी दलील है जिसे हम ने इब्राहीम को उन के क़ौम के मुक़ाबले में दिया, हम जिसका पद चाहें बढ़ाते हैं, बेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला इल्म वाला है।

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۚ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِن قَبْلُ ۖ وَمِن ذُرِّيَّتِهِ دَاوُودَ وَسُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿84﴾

८४. और हम ने उन्हें (पुत्र) इसहाक़ और (पौत्र) याक़ूब अता किया, और हर को सीधा रास्ता दिखाया, और इस से पहले नूह को रास्ता दिखाया और उन की औलाद में दाऊद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून को, और इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला अता करते हैं।

---

[1] आयत में यहां जुल्म से मुराद शिर्क है, जब यह आयत उतरी तो अल्लाह के रसूल के सहाबा ने इस का आम मतलब (सुस्ती, बुराई, गुनाह, क्रूरता वग़ैरह) समझा और परेशान हो गये, रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में आ कर कहने लगे कि हम में कौन है जिस ने जुल्म न किया हो? आप ने कहा कि इस का मतलब वह जुल्म नहीं जो तुम ने समझा है बल्कि इस से मुराद शिर्क (मिश्रण) है, जैसे हजरत लुक़मान ने अपने बेटे से कहा था।

﴿إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾

बेशक शिर्क सबसे बड़ा जुल्म है। (सूर: लुक़मान-१३, सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: अल-अंआम)

८५. और ज़करिया और यहया और ईसा[1] और इलियास को, सब सालेहीन में थे।

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِلْيَاسَ ۖ كُلٌّ مِّنَ الصَّالِحِينَ (85)

८६. और इस्माईल और यसअ और यूनुस और लूत को, सब को हम ने दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत दी।

وَإِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَيُونُسَ وَلُوطًا ۚ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعَالَمِينَ (86)

८७. और उन के बापों और औलादों और भाईयों में से, और हम ने उनका इन्तिख़ाब किया और उन्हें सीधा रास्ता दिखाया।

وَمِنْ آبَائِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَإِخْوَانِهِمْ ۖ وَاجْتَبَيْنَاهُمْ وَهَدَيْنَاهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ (87)

८८. यही अल्लाह का रास्ता है अपने बंदों में से जिसे वह चाहता है, उसे राह दिखाता है और अगर वे लोग भी शिर्क (मिश्रण) करते तो उन के अमल बेकार हो जाते।[2]

ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ (88)

८९. इन्हीं को हम ने किताब और हिक्मत और नुबूवत अता किया, और अगर यह लोग इसे न मानें[3] तो हम ने ऐसे लोगों को तैयार कर रखा है जो इसका इंकार नहीं करेंगे।[4]

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَإِن يَكْفُرْ بِهَا هَٰؤُلَاءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوا بِهَا بِكَافِرِينَ (89)

---

[1] ईसा (عليه السلام) का बयान हज़रत नूह या इब्राहीम की औलाद में इसलिए किया गया है (अगरचे उन के बाप नहीं थे) कि लड़की की औलाद भी मर्द के औलाद में शामिल होती है, जिस तरह से नबी ﷺ ने हज़रत हसन (رضي الله عنه) [अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा (رضي الله عنها) के बेटे] को अपना बेटा बताया «إِنَّ ابْنِي هَذَا سَيِّدٌ وَلَعَلَّ اللهَ أَنْ يُصْلِحَ بِهِ بَيْنَ فِئَتَيْنِ عَظِيمَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ» (सहीह बुख़ारी किताबुस सुलह) तफ़सीली जानकारी के लिए देखें तफ़सीर इब्ने कसीर)

[2] अट्ठारह नबियों के नामों का बयान कर के अल्लाह तआला कह रहा है, अगर वे लोग भी शिर्क में फँस जाते तो उन के सारे अमल बरबाद हो जाते, जिस तरह से नबी ﷺ को दूसरी जगह पर मुख़ातब करते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ﴾

"हे पैग़म्बर अगर तूने भी अल्लाह तआला के साथ किसी दूसरे को शामिल किया, तो तेरे सारे अमल बरबाद कर दिये जायेंगे।" (सूरः अज़-ज़ुमर-६५)

अगरचे पैग़म्बरों से शिर्क होना मुमकिन नहीं, मक़सद पैरोकारों को शिर्क की भयानकता और तबाही से बाख़बर करना है।

[3] इस से मुराद रसूलुल्लाह ﷺ के मुख़ालिफ़, मूर्तिपूजक और बेदीन हैं।

[4] इस से मुराद मक्का से जाकर मदीने में बसने वाले और मदीने के वासी मुसलमान और क़यामत तक आने वाले ईमान वाले हैं।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهْ ۗ قُل لَّا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْعَالَمِينَ ﴿٩٠﴾

९०. यही लोग है जिन को अल्लाह ने सही रास्ता दिखाया, इसलिए आप उन के रास्ते की पैरवी करें, आप कहिये कि मैं इस पर किसी बदले की माँग नहीं करता, यह दुनिया वालों के लिये सिर्फ़ यादगार है।

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ بَشَرٍ مِّن شَيْءٍ ۗ قُلْ مَنْ أَنزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَىٰ نُورًا وَهُدًى لِّلنَّاسِ ۖ تَجْعَلُونَهُ قَرَاطِيسَ تُبْدُونَهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا ۖ وَعُلِّمْتُم مَّا لَمْ تَعْلَمُوا أَنتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩١﴾

९१. और उन्हें जिस तरह अल्लाह की क़द्र करना चाहिए था क़द्र नहीं किया, जब उन्होंने यह कहा कि अल्लाह ने किसी इंसान पर कुछ नहीं उतारा। आप कहिये कि मूसा जो किताब तुम्हारे पास लाये जो लोगों के लिए नूर और हिदायत है, उसे किस ने उतारा जिसे तुम मुख़्तलिफ़ कागज़ों में रखते हो,[1] जिस में से कुछ ज़ाहिर करते और ज़्यादातर छुपाते हो और तुम्हें वह इल्म दिया गया जिसे तुम और तुम्हारे बुज़ुर्ग नहीं जानते थे। आप कहिए कि अल्लाह फिर उन्हें उन के कुरेद में खेलते छोड़ दीजिए।

وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا ۚ وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَهُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٩٢﴾

९२. और यह भी एक मुबारक किताब है, जिसे हम ने उतारा है, अपने से पहले (धर्मशास्त्रों) की तसदीक़ है, ताकि आप असल बस्ती (मक्का) और उस के आसपास (के नगरों यानी पूरी इंसानी दुनिया) को बाख़बर करें, और जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं वही लोग इसे मानेंगे और वही अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करेंगे।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ أُوحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ وَمَن قَالَ سَأُنزِلُ مِثْلَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ ۗ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُو أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا

९३. और उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठा इल्ज़ाम लगाये या कहे कि मेरी तरफ़ वह्यी आई है, जबकि उस की तरफ़ कुछ नहीं आयी, और जिस ने कहा कि जिस तरह अल्लाह ने उतारा मैं भी उतारूँगा, अगर आप ज़ालिमों को मौत के सख़्त अज़ाब में देखेंगे, जब फ़रिश्ते अपने हाथ लपकाये होते हैं

[1] आयत की तफ़सीर के अनुसार अब यहूदियों को मुख़ातब कर के कहा जा रहा है कि तुम इस किताब को विभिन्न पृष्ठों (मुख़्तलिफ़ पन्नों) में रखते हो, जिन में से जिन को चाहते हो ज़ाहिर करते हो जिनको चाहते हो छिपा लेते हो, जैसे पत्थरों से मार कर सज़ा देने का क़ानून और नबी ﷺ के अवसाफ़ की बात है।

أَنفُسَكُمُ ۖ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿93﴾

कि अपनी जान निकालो, आज तुम्हें अल्लाह पर नाहक़ इल्ज़ाम लगाने और तकब्बुर से उस की आयतों का इंकार करने के सबब अपमानकारी (रुस्वाकुन) बदला दिया जायेगा।

وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فُرَادَىٰ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُم مَّا خَوَّلْنَاكُمْ وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ ۖ وَمَا نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَاءُ ۚ لَقَد تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنكُم مَّا كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿94﴾

९४. और तुम हमारे पास अकेले-अकेले आ गये, जैसे तुम्हें पहली बार पैदा किया और तुम्हें जो दिया उसे अपने पीछे छोड़ आये और तुम्हारे सिफ़ारिशी हमें नहीं दिख रहे हैं, जिन को तुम अपने कामों में हमारा साझी समझ रहे थे, बेशक तुम्हारे संबन्ध कट गये और तुम्हारा ख़्याल तुम से खो गया।

إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿95﴾

९५. अल्लाह ही बीजों और गुठलियों को फाड़कर कोपल निकालता है,[1] वह जानदार को बेजान से बेजान को जानदार से निकलता है, वही अल्लाह है, फिर तुम कहाँ फिरे जा रहे हो?

فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿96﴾

९६. वह पौ फाड़ने वाला है और उस ने रात को आराम के लिये सूरज और चाँद को हिसाब लगाने के लिये बनाया, यह ठहराई बात है ज़बरदस्त इल्म वाले (अल्लाह) का।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿97﴾

९७. और उसी ने तुम्हारे लिये तारे बनाये ताकि तुम थल जल के अंधेरों में उन के ज़रिये रास्ते का पता लगाओ,[2] हम ने उन लोगों के

---

[1] यहाँ से अल्लाह तआला की बेइन्तेहा ताक़त और क़ुदरत का बयान शुरू हो रहा है। फ़रमाया: अल्लाह तआला दाने और गुठली को, जिसे किसान धरती के अन्दर दबा देता है, उसे फ़ाड़ कर अनेक रंग-रूप के पेड़ उगाता है, धरती एक होती है, पानी भी जिस से खेतों की सिंचाई होती है, एक ही तरह का होता है, लेकिन जिस-जिस चीज़ के वे दाने और गुठलियाँ होते हैं, उन के अनुसार अल्लाह तआला उन से कई तरह के अनाज और फलों के पेड़ उगाता है, क्या अल्लाह के सिवाय दूसरा कोई है जो इस काम को करता है या कर सकता है?

[2] यहाँ सितारों का एक फ़ायेदा और मक़सद बताया गया है और इस के दूसरे और भी दो मक़सद हैं जो दूसरी जगह पर बयान किये गये हैं। आकाशों की शोभा (ज़ीनत) और शैतानों की सज़ा, यानी अगर शैतान आसमान पर जाने की कोशिश करते हैं तो यह उन पर अंगारे बन कर गिरते हैं, कुछ सलफ़ का क़ौल है, "इन तीन बातों के सिवाय इन सितारों के बारे में यदि कोई इंसान ईमान रखता हो तो वह ग़लती पर है और अल्लाह पर झूठ बाँधता है।"

इस से मालूम होता है कि हमारे देश में जो ज्योतिष विज्ञान (इल्मे नुजूम) की चर्चा है, जिस में

लिए निशानियों को बयान कर दिया है जो इल्म रखते हैं।

وَهُوَ الَّذِىٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿98﴾

९८. और उसी ने तुम्हें एक जान से पैदा किया फिर तुम्हारा एक दायमी और एक समर्पण (आरज़ी) जगह है,[1] हम ने उन के लिये निशानियों (लक्षणों) का बयान कर दिया है जो समझते हैं।

وَهُوَ الَّذِىٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَىْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۗ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ۗ اِنَّ فِىْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿99﴾

९९. और वही है जिस ने आसमान से बारिश बरसाई, फिर हम ने उस से हर तरह के पौधे उगाये, फिर उस से हरियाली निकाली जिस से हम गुथे हुये अनाज और खजूर के गाभ से लटकते हुये गुच्छे और अंगूरों और जैतून और अनार के बाग़ (उद्यान) निकलते हैं जो एक तरह और अनेक तरह होते हैं, उन के फलों को देखो जब फलें और उनका पकना, बेशक इस में उन लोगों के लिये चिन्ह (निशानियाँ) हैं जो ईमान रखते हैं।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿100﴾

१००. और लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का साझी बना दिया है, जबकि उसी ने उन को पैदा किया है, और उस (अल्लाह) के लिये बेटे और बेटियाँ गढ़ लीं बिना किसी इल्म के, वह (अल्लाह) इन के बयान किये अवसाफ़ से पाक और (अच्छा) है।

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ۗ وَخَلَقَ كُلَّ شَىْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿101﴾

१०१. यह आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, उस के औलाद कहाँ हो सकती है? जब कि उसकी कोई बीवी नहीं है वह हर चीज़ का बनाने वाला[2] और जानने वाला है।

सितारों के ज़रिये मुस्तक़बिल के वाक़ेआत और इंसान की ज़िन्दगी या दुनिया में उन के असर का दावा किया जा रहा है, वह बेकार है और इस्लामी क़ानून के ख़िलाफ़ भी, इसलिए एक हदीस में इसे जादू का ही एक हिस्सा बताया गया है।

[1] ज़्यादातर व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) के ख़्याल से مُستقر (मुस्तक़र) से गर्भाशय (रिहम) और مُستودع से बाप की पीठ मुराद है। (फ़तहुल-क़दीर और इब्ने कसीर)

[2] यानी जैसे अल्लाह सभी उपर बयान चीज़ें पैदा करने में अकेला है, कोई उसका साझी नहीं उसी तरह वह इस लायक़ है कि उस की अकेले इबादत की जाये किसी और को उसकी इबादत में शामिल न किया जाये, लेकिन लोगों ने एक अकेले को छोड़कर अनेकों को उसका

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿102﴾

१०२. वही अल्लाह तुम्हारा रब है, उस के सिवाये कोई माबूद नहीं, हर चीज का बनाने वाला है, इसलिए उसी की इबादत करो और वह हर चीज का निगराँ है।

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۫ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿103﴾

१०३. आँखें उसे देख नहीं सकतीं और वह सभी निगाहों को देखता है और वह गहराई से देखने वाला सर्वसूचित (बाख़बर) है।

قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ۭ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿104﴾

१०४. तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे पास दलील आ गई है, तो जो देखेगा वह अपने भले के लिये (देखेगा) और जो अंधा बन जायेगा वह अपना बुरा करेगा और मैं तुम्हारा मुहाफ़िज नहीं हूँ।

وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿105﴾

१०५. इसी तरह हम आयतों (पाक क़ुरआन की) को फेर-फेर कर बयान कर रहें हैं ताकि वे कहें कि आप ने पढ़ा है और ताकि उन लोगों के लिये जो जानते हैं हम उसे अच्छी तरह बयान कर दें।

اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿106﴾

१०६. आप अपने रब के हुक्म (वहयी) की इत्तेबा करें कि अल्लाह के सिवाय कोई माबूद नहीं और मुश्रिकों से विमुख हो जायें।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ۭ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿107﴾

१०७. और अगर अल्लाह चाहता तो यह शिर्क (अल्लाह के साझीदार) न करते[1] और हम ने आप को इन लोगों का निगराँ नहीं बनाया, और

साझी बना रखा है जब कि वह ख़ुद अल्लाह की तख़लीक़ है। मुश्रिक इबादत तो मूर्तियों या क़ब्रों में गड़ी लाश की करते हैं, लेकिन कहा गया है कि उन्होंने देवों को अल्लाह का साझी बना रखा है, हक़ीक़त में देवों से मुराद शैतान हैं और उन्हीं के कहने पर शिर्क किया जाता है, इसलिए मानो कि उन्हीं की इबादत की जाती है, इस बारे में पाक क़ुरआन में कई जगहों पर बयान किया गया है। (मिसाल के तौर पर सूर: निसाअ-११७, सूर: मरियम-४४, सूर: यासीन-६०, सूर: सबा-४१)

[1] इस नुक्ता की वज़ाहत पहले की जा चुकी है कि अल्लाह की मर्ज़ी दूसरी चीज़ है और उसकी ख़ुशी तो इसी में है कि उसके साथ किसी को शामिल न किया जाये, फिर भी इंसान को इस पर मजबूर नहीं किया है क्योंकि मजबूरी से इंसान का इम्तेहान न हो पाता, बल्कि अल्लाह तआला के पास तो ऐसी ताक़त है कि वह चाहे तो कोई इंसान शिर्क करने की ताक़त ही नहीं रख सके। (फिर देखिये सूर: अल-बक़र:-२५३ और सूर:अल-अंआम ३५ की तफ़सीर)

न आप उन पर हक रखने वाले हैं ।[1]

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَسُبُّوا اللَّهَ عَدْوًا بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ كَذَٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِم مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿108﴾

१०८. और जो अल्लाह के सिवा दूसरों को पुकारते हैं उन को गाली न दो नही तो दुश्मन होकर अंजाने वे अल्लाह को गाली देंगे,[2] इसी तरह हम ने हर उम्मत के लिये उन के अमल को सुशोभित (मुजय्यन) बना दिया है, फिर उन्हें अपने रब की ओर ही लौटना है, इसलिए वह उन्हें उस से बाख़बर करेगा जो वे करते रहे ।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِن جَاءَتْهُمْ آيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِندَ اللَّهِ ۖ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿109﴾

१०९. और उन्होंने बलपूर्वक अल्लाह की क़सम खाई कि उन के पास कोई निशानी आई[3] तो बेशक मान लेंगे, आप कहिये कि आयतें अल्लाह के पास हैं और आप को क्या पता कि वह (निशानियाँ) आ जायें तब भी वह नहीं मानेंगे ।

وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿110﴾

११०. और हम उन के दिलों और आँखों को फेर देंगे जिस तरह उन्होंने पहले इस के ऊपर यक़ीन नहीं किया, और उनको उनकी सरकशी (के अँधेरे) में भटकता रहने देंगे ।

[1] यह विषय भी क़ुरआन मजीद में कई जगहों पर बयान किया गया है, मक़सद नबी ﷺ की दावती मंसब और बाख़बर करने वाली पदवी की वजाहत है जो रिसालत की माँग है और आप ﷺ केवल इसी हद तक ज़िम्मेदार थे, इस से ज़्यादा आप के पास अगर हक होते तो आप ﷺ अपने प्यारे चाचा अबू तालिब को जरूर मुसलमान कर लेते, जिन के दीन इस्लाम को क़ुबूल करने की आप बहुत तमन्ना रखते थे ।

[2] यह निषेध की विधि के इस क़ानून पर आधारित (मबनी) है कि अगर किसी जायेज़ काम से उस से बड़ी ख़राबी पैदा होती हो तो वहाँ पर जायेज़ को न करना ठीक और है, इस तरह नबी ﷺ ने भी फ़रमाया है कि तुम किसी के माँ-बाप को गाली मत दो कि इस तरह तुम ख़ुद अपने माँ-बाप की गाली का वजह बन जाओगे । (सहीह मुस्लिम, किताबुल-ईमान, बाब बयानुल कबायर व अकबरिहा) इमाम शौकानी लिखते हैं कि मुमानअत के तरीक़ा का यह मूलाधार है । (फ़तहुल क़दीर)

[3] यानी कोई बड़ा मोजिज़ा जो उनकी मर्ज़ी से हो, जैसे मूसा की छड़ी, मुर्दा को जिन्दा और समूद की ऊँटनी जैसा ।

وَلَوْ أَنَّنَا نَزَّلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَلَٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتَىٰ وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوا لِيُؤْمِنُوٓا إِلَّآ أَن يَشَآءَ اللَّهُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُونَ ﴿111﴾

१११. और अगर हम उन के पास फ़रिश्ते उतार दें और उन से मुर्दे बात करें और उन के सामने हर चीज जमा कर दें तो (भी) अल्लाह के चाहे बिना यह लोग यक़ीन नहीं करेंगे, लेकिन इन में से ज़्यादातर लोग बेवक़ूफ़ी कर रहे हैं।

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيَٰطِينَ الْإِنسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا ۚ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ ۖ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿112﴾

११२. और इसी तरह हम ने हर नबी (उपदेशक) के लिये जिन्नों और इन्सानों के शैतानों (राक्षसों) को दुश्मन बनाया[1] जो आपस में धोखा देने के लिये चिकनी-चुपड़ी बात का वसवसा देते रहे और अगर तेरा रब चाहता तो ऐसा न करते। इसलिए आप उन्हें और उन की साजिश को छोड़ दें (उनकी फ़िक्र न करें)।

وَلِتَصْغَىٰٓ إِلَيْهِ أَفْـِٔدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْءَاخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُم مُّقْتَرِفُونَ ﴿113﴾

११३. और ताकि उन के दिल उस की तरफ़ मायेल हो जायें जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते और उस से ख़ुश हो जायें और वही गुनाह कर लें जो वह लोग कर रहे थे।[2]

أَفَغَيْرَ اللَّهِ أَبْتَغِي حَكَمًا وَهُوَ الَّذِيٓ أَنزَلَ إِلَيْكُمُ الْكِتَٰبَ مُفَصَّلًا ۚ وَالَّذِينَ ءَاتَيْنَٰهُمُ الْكِتَٰبَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنَزَّلٌ مِّن رَّبِّكَ بِالْحَقِّ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿114﴾

११४. तो क्या मैं अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे शासक की खोज करूँ जब कि उसी ने तुम्हारी तरफ़ एक मुफ़स्सल किताब (क़ुरआन) उतारा है, और हम ने जिन को किताब दिया है वे जानते हैं कि हक़ीक़त में वह तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ है, इसलिए आप शक करने वाला न बनें।[3]

---

[1] यह वही बात है जो कई तरह से रसूलुल्लाह ﷺ की तसल्ली के लिए कही गयी है कि आप ﷺ से पहले जितने भी नबी आये, उनको भी झुठलाया गया, उन्हें सज़ायें दी गईं इत्यादि (वग़ैरह)। मक़सद यह है कि जिस तरह से उन्होंने सब्र और हिम्मत से काम किया, आप ﷺ भी इन सच के दुश्मनों के लिए सब्र और मजबूती का प्रदर्शन (इज़्हार) करें। इस से मालूम हुआ कि शैतान के पैरोकार इंसान के सिवाय जिन्नों में से भी हैं और ये वे हैं जो दोनों गुटों के दुश्मन, विद्रोही, ज़ालिम, दुराचारी और अभिमानी (मुतकब्बिर) हैं।

[2] यानी शैतान के बुरे इरादे के शिकार वही लोग होते हैं, जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और यह सच है कि जिस तरह से लोगों के दिलों में आख़िरत का यक़ीन कमज़ोर होता जा रहा है, उसी के अनुरूप (मुताबिक़) लोग शैतानी जाल में फंस रहे हैं।

[3] आप ﷺ को मुख़ातब करके हक़ीक़त में मुसलमानों को तालीम दी जा रही है।

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿115﴾

११५. और तुम्हारे रब के कलाम सच्चे क़ौल और इंसाफ़ में पूरा हो गये, उस के कलाम को कोई बदल नहीं सकता और वह अच्छी तरह सुनने वाला जानने वाला है।

وَإِن تُطِعْ أَكْثَرَ مَن فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿116﴾

११६. और यदि आप धरतीवासियों में ज़्यादातर की पैरवी करेंगे तो वह आप को अल्लाह के रास्ते से बहका देंगे, वे सिर्फ़ बेबुनियाद ख़्याल (कल्पना) की पैरवी करते और अंदाज़ा लगाते हैं।[1]

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَن يَضِلُّ عَن سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿117﴾

११७. बेशक आप का रब उन को अच्छी तरह जानता है, जो उस के रास्ते से भटक जाता है, और वह उस को भी अच्छी तरह जानता है, जो उस के रास्ते पर चलते हैं।

فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِن كُنتُم بِآيَاتِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿118﴾

११८. तो जिस (जानवर) पर अल्लाह का नाम लिया जाये उस में से खाओ अगर तुम उस के हुक्मो पर ईमान रखते हो।[2]

---

[1] क़ुरआन में बयान इस सच्चाई का अवलोकन (मुशाहदा) हर दौर में किया जा सकता है, दूसरी जगह पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ﴾

"आप की मर्ज़ी के बावजूद ज़्यादातर लोग ईमान लाने वाले नहीं।" (सूर: यूसुफ़-१०३)

इस से मालूम हुआ कि सच और सच्चाई के रास्ते पर चलने वाले हमेशा थोड़े ही होते हैं, जिस से यह बात भी साबित होती है कि सच और सच्चाई की बुनियाद दलील और सुबूत है, लोगों की ज़्यादा या कम तादाद नहीं, ऐसा नहीं कि जिस बात को ज़्यादा लोगों ने माना हो वह सच हो और कम लोग सच्चाई पर न हों, बल्कि क़ुरआन के ज़रिये इस सच्चाई की बुनियाद पर यह मुमकिन है कि सच्चे लोग कम होते हों और झूठे लोग बहुत। जिसकी तसदीक़ हदीस से होती है जिस में नबी ﷺ ने फ़रमाया है: मेरे पैरोकार ७३ गुटों में बट जायेंगे, जिन में से केवल एक ही गुट जन्नत में जायेगा बाक़ी सभी जहन्नम में जायेंगे, और इस जन्नत में जाने वाले गुट की निशानियाँ बतायीं कि जो «مَا أَنَا عَلَيْهِ وَأَصْحَابِي» "मेरे और मेरे सहाबा के रास्ते पर चलने वाला होगा।" (अबू दाऊद, किताबुस-सुन्न: बाब शरह अस-सुन्न: नं॰ ४५९६, तिर्मिज़ी, किताबुल ईमान, बाब माजाअ फ़ी इफ़तराक़ हाज़ेहिल-उम्मः)

[2] यानी जिस जानवर को शिकार करते वक़्त, या क़ुर्बानी, या ज़िब्ह करते वक़्त अल्लाह का नाम लिया जाये उसे खा लो, अगर वे उन जानवरों में से हों जिन को खाने की इजाज़त है, इसका मतलब यह हुआ कि जिस जानवर पर जानबूझ कर अल्लाह का नाम न लिया जाये, वे हलाल और पाक नहीं हैं। आप ﷺ ने फ़रमाया : «سَمُّوا عَلَيْهِ أَنتم وَكُلُوا» (सहीह बुख़ारी बाब ज़बीहतुल-आराब नं॰ ५५०७) तुम अल्लाह का नाम लेकर खा लो, शक की हालत में यह छूट है, इसका

११९. और तुम्हारे लिये कौन सी बात इस का सबब हो सकती है कि तुम ऐसे जानवरों में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो? अगरचे अल्लाह (तआला) ने उन सभी जानवरों की तफ़सील बता दी है जिन को तुम पर हराम किया गया है, लेकिन वह भी जब तुम को बहुत जरूरत पड़ जाये (तो जायेज है) और यह तय बात है कि बहुत से इंसान अपने गलत इरादों पर विना किसी सुबूत के भटकाते हैं, इस में कोई शक नहीं कि अल्लाह (तआला) ज़्यादती करने वालों को अच्छी तरह जानता है।

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُم مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا لَّيُضِلُّونَ بِأَهْوَائِهِم بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ﴿١١٩﴾

१२०. तुम खुले और छिपे गुनाहों को छोड़ दो, बेशक जो गुनाह कमाते हैं वे अपने गुनाह करने का बदला क़रीब में ही दिये जायेंगे।

وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ﴿١٢٠﴾

१२१. और उसे न खाओ जिस जानवर पर (जिब्ह के वक़्त) अल्लाह का नाम न लिया गया हो और यह (कर्म) फ़िस्क़ का है,[1] और शैतान अपने दोस्तों को वसवसा देते हैं ताकि वह तुम से झगड़ा करें और अगर तुम ने उनकी इताअत की तो तुम बेशक मुश्रिक हो जाओगे।

وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ ۗ وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ ۖ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ﴿١٢١﴾

१२२. और ऐसा इंसान जो पहले मुर्दा रहा फिर हम ने उसे जिन्दा कर दिया और उस के लिये नूर बना दिया जिस से लोगों में चलता है क्या उस के समान हो सकता है जो अंधेरों में हो जिन से निकल न सकता हो?[2] ऐसे ही काफ़िरों

أَوَمَن كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَن مَّثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ

यह मतलब नहीं कि हर तरह के जानवरों का मांस बिस्मिल्लाह पढ़ लेने से जायेज हो जायेगा, इस से ज़्यादा से ज़्यादा यह साबित होता है कि मुसलमानों की मंडियों और दूकानों पर मिलने वाला गोश्त हलाल है, अगर किसी को शक और शुब्हा हो तो वह खाते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ ले।

[1] यानी जानबूझ कर अल्लाह का नाम जिस जानवर पर न लिया गया हो उसका खाना फ़िस्क़ और नाजायेज है। हजरत इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) ने इस के यही माने बयान किये हैं, वह कहते हैं कि "जो भूल जाये उसे नाफ़रमान नहीं कहते हैं।"

[2] इस आयत में अल्लाह तआला ने काफ़िर को मृतक (मरा हुआ) और ईमानवालों को जिन्दा

مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿122﴾

(अधर्मियों) के लिये जो वे अमल करते हैं सुशोभित (मुज़य्यन) बना दिये गये हैं।

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكَابِرَ مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا فِيهَا ۖ وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿123﴾

१२३. और इसी तरह हम ने हर बस्ती के बड़े मुजरिमों को साजिश रचने के लिये बनाया ताकि उस में साजिश रचे और वह अपने ख़िलाफ़ ही साजिश रचते हैं और इस का संवेदन (इदराक) नहीं कर पाते।

وَإِذَا جَاءَتْهُمْ آيَةٌ قَالُوا لَن نُّؤْمِنَ حَتَّىٰ نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَا أُوتِيَ رُسُلُ اللَّهِ ۘ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ ۗ سَيُصِيبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا صَغَارٌ عِندَ اللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ﴿124﴾

१२४. और जब उन के पास कोई आयत आई तो उन्होंने कहा कि हम कभी यक़ीन नहीं करेंगे जब तक हमें भी उसी के बराबर न दी जाये जो अल्लाह के रसूलों को दी गई, अल्लाह अच्छी तरह जानता है कि वह अपना रिसालत कहाँ रखे,[1] जल्द ही जो गुनाह किये हैं उन्हें अल्लाह के पास से ज़लील होना है और जो साजिश करते रहे उस का बदला बहुत बड़ा अज़ाब है।

فَمَن يُرِدِ اللَّهُ أَن يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ ۖ وَمَن يُرِدْ أَن يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ ضَيِّقًا حَرَجًا كَأَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَاءِ ۚ كَذَٰلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿125﴾

१२५. जिन को अल्लाह सच्चा रास्ता दिखाना चाहता है उस के सीने को इस्लाम (दीन) के लिये खोल देता है और जिसे गुमराह करना चाहता है उस के सीने को और तंग कर देता है जैसे कि वह आसमान में चढ़ रहा हो,[2] इसी तरह अल्लाह उनको नापाक बना देता है जो ईमान नहीं रखते।

कहा है, इसलिए कि काफ़िर कुफ्र की ज़िल्लत के अंधेरे में भटकता फिरता है और उस से निकल ही नहीं पाता जिसका नतीजा मौत और तबाही है और ईमानवाले का दिल अल्लाह पर ईमान से ज़िन्दा रहता है, जिस से उसकी ज़िन्दगी के रास्ते नूरानी हो जाते हैं।

[1] यानी यह फ़ैसला करना कि किस को नबी बनाया जाये? यह तो अल्लाह का काम है क्योंकि वही हर बात की अहमियत और फ़ज़ीलत को जानता है और उसे ही मालूम है कि कौन इस पद का हक़दार है? मक्का का कोई चौधरी और धनवान या हज़रत अब्दुल्लाह और हज़रत आमिना का यतीम बेटा?

[2] यानी जिस तरह ताक़त लगाकर आसमान पर चढ़ना नामुमकिन है, उसी तरह से जिस इंसान के सीने को अल्लाह तआला तंग कर दे, उस में तौहीद (एकेश्वरवाद) और ईमान का दाख़िल होना मुमकिन नहीं है उस के सिवाय कि अल्लाह ही उसका सीना इस के लिए खोल दे।

وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا ۚ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿126﴾

१२६. यह तुम्हारे रब का सीधा रास्ता है, हम ने आयतों का तफ़सीली बयान उस क़ौम के लिये कर दिया है जो नसीहत हासिल करते हैं।

لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿127﴾

१२७. इन्हीं के लिये उन के रब के यहाँ सलामती का घर है और वही उन के अच्छे अमल के सबब उन का दोस्त है।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ۚ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۚ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿128﴾

१२८. और जिस दिन (अल्लाह) इन सभी को जमा करेगा (और कहेगा) हे जिन्नों के गिरोह! तुम ने इन्सानों में से बहुत अपना लिया और इंसान में से उन के दोस्त कहेंगे, हे हमारे रब हमें आपस में फ़ायेदा पहुँचा, और हम तेरे मुक़र्रर वक़्त को जो तूने हमारे लिये मुक़र्रर किया जा पहुँचे, (अल्लाह) कहेगा कि तुम्हारी जगह जहन्नम है जिस में तुम हमेशा रहोगे, लेकिन जो अल्लाह चाहे[1] बेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला, इल्म वाला है।

وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿129﴾

१२९. इसी तरह हम ज़ालिमों को उन के बुरे काम के सबब आपस में दोस्त बना देते हैं।

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ

१३०. हे जिन्नों और इन्सानों के गिरोह! क्या तुम्हारे पास तुम में से रसूल नहीं आये,[2] जो तुम्हारे सामने हमारी आयतें पढ़ते रहे हों और तुम्हें इस (क़यामत) के दिन का सामना करने से बाख़बर करते रहे हों। वे कहेंगे कि हम अपने

---

[1] और अल्लाह का फ़ैसला काफ़िरों के लिए जहन्नम का दायमी अज़ाब ही है जिस को उस ने लगातार क़ुरआन करीम में वाज़ेह तौर से बयान किया है, छूट से किसी तरह का ग़लत अनुमान नहीं लगा लेना चाहिए क्योंकि यह छूट अल्लाह तआला ने ख़ुद अपनी मर्ज़ी से बयान किया है, इसे किसी दूसरी चीज़ के साथ शामिल नहीं किया जा सकता, इसलिए कि अगर वह काफ़िरों को जहन्नम से निकालना चाहे तो निकाल सकता है, इस से वह मजबूर भी नहीं है और न कोई दूसरा रोकने वाला है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[2] रिसालत और नुबूवत के बारे में जिन्नात इंसानों के अधीन (ताबे) हैं, क्योंकि जिन्नातों में नबी नहीं आये हैं, लेकिन रसूलों के संदेशवाहक और ख़ुशख़बरी पहुँचाने वाले जिन्नातों में होते रहे हैं, जो अपनी क़ौम के जिन्नों को अल्लाह की ओर दावत देते रहे हैं।

الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ (130)

खिलाफ़ गवाह हैं, और दुनियावी ज़िन्दगी ने उन्हें धोखा दिया और अपने ख़िलाफ़ गवाह होंगे कि वह काफ़िर थे।[1]

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّ اَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ (131)

१३१. (रसूल भेजे गये) क्योंकि तुम्हारा रब किसी गाँव वाले को किसी ज़ुल्म के सबब तबाह नहीं करता जब कि उस के रहने वाले ग़ाफ़िल हों।

وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ (132)

१३२. और सब के लिये उस के अमल के ऐतबार से कई दर्जे हैं और तुम्हारा रब उन अमल से ग़ाफ़िल नहीं जो वह कर रहे हैं।

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَاۗءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ (133)

१३३. और तुम्हारा रब बेनियाज़ रहम करने वाला है, अगर चाहे तो तुम्हारा नाश कर दे और तुम्हारे बाद जिसे चाहे तुम्हारी जगह पर रख दे जैसे तुम्हें एक दूसरी क़ौम के वंश में पैदा किया है।

اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ (134)

१३४. जिस चीज़ के लिए तुम को वादा दिया जाता है, वह बेशक आने वाली चीज़ है, और तुम मजबूर नहीं कर सकते।[2]

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰي مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ (135)

१३५. आप कहिये कि ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह पर अपना अमल करते रहो, मैं भी (अपनी जगह पर) कर रहा हूँ,[3] तुम्हें जल्द ही इल्म हो जायेगा कि किस का अंजाम इस दुनिया के बाद (अच्छा) होता है, बेशक ज़ालिम कभी भी कामयाब नहीं होंगे।

---

[1] क़यामत के मैदान में मुशरिक अनेक पैंतरे बदलेंगे, कभी अपने मुशरिक होने का इंकार करेंगे (अल-अंआम, २३) और कभी क़ुबूल किये बिना चारा नहीं होगा, जैसे यहाँ उनकी क़ुबूलियत का बयान किया गया है।

[2] इस से मुराद क़यामत (प्रलय) है। "और तुम मजबूर नहीं कर सकते" का मतलब है कि वह तुम्हें फिर से ज़िन्दा करने की ताक़त रखता है, चाहे तुम मिट्टी के कण-कण में मिल जाओ।

[3] यह कुफ़ और नाफ़रमानी पर बाक़ी रहने का हुक्म नहीं है, बल्कि सख़्त तंबीह है, जैसाकि अगले लफ़्ज़ों से वाज़ेह है।

१३६. और अल्लाह ने जो खेती और जानवर पैदा किये, उन्होंने उन में से कुछ हिस्सा अल्लाह का बना दिया और अपने विचारानुसार कहा कि यह अल्लाह का है और यह हमारे देवताओं का,[1] फिर जो हमारे देवताओं का (हिस्सा) है वह अल्लाह तक नहीं पहुँचता और जो अल्लाह का है वह उन के देवताओं तक पहुँचता है,[2] वे बुरा फ़ैसला दे रहे हैं।

وَجَعَلُوا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيبًا فَقَالُوا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ۗ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ (136)

१३७. और इसी तरह बहुत से मुश्रिकों (मूर्तिपूजकों) के लिये उन के देवताओं ने उनको तबाह करने और उन पर उन के दीन को मुश्तबः बनाने के लिये उनकी औलाद के क़त्ल को सुसज्जित बना दिया है,[3] और अगर अल्लाह चाहता तो वह यह नहीं करते, इसलिए आप इन को और इन के मनघड़त को छोड़ दीजिये।

وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ (137)

१३८. और उन्होंने कहा कि यह जानवर और खेती हराम है, इसे वही खायेगा अपने इरादे से हम जिसे चाहेंगे और कुछ जानवर की पीठ (यानी सवारी) हराम है[4] और कुछ जानवर पर (ज़िब्ह करते वक़्त) अल्लाह का नाम नहीं लेते अल्लाह

وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ۗ سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ (138)

---

[1] इस आयत में मूर्तिपूजकों के उस ईमान और अमल की मिसाल पेश की जा रही है जो उन्होंने ख़ुद गढ़ लिये थे, वह खेती की पैदावार और जानवरों में से कुछ हिस्सा अल्लाह के लिए और कुछ हिस्सा झूठ और मनगढ़न्त देवताओं के नाम पर निकाल देते थे, अल्लाह के हिस्से को मेहमानों, फ़क़ीरों और रिश्तेदारों पर ख़र्च करते, फिर अगर मूर्तियों के हिस्से में अनुमानित पैदावार न होती तो अल्लाह के हिस्से को निकाल कर उस में शामिल कर लेते और अगर उन के ख़िलाफ़ घटता तो मूर्तियों के हिस्से से न निकालते और कहते कि अल्लाह तो बेनियाज़ है।

[2] अगर मूर्तियों के मुक़र्रर: हिस्सा में कमी होती तो वह अल्लाह के मुक़र्रर: हिस्सा में से लेकर मूर्तियों की ज़रूरतों पर ख़र्च कर लेते, यानी अल्लाह के सामने मूर्तियों का डर उन के दिलों में ज़्यादा था जिस को आज के मूर्तिपूजकों के अमल से भी देखा जा सकता है।

[3] यह इशारा उन की बच्चियों (बालिकाओं) को ज़िन्दा गाड़ देने या मूर्तियों की क़ुर्बानी के तौर पर नज़र चढ़ाने की तरफ़ है।

[4] यह दूसरी शक्ल है कि वह कई तरह के जानवरो को मूर्तियों के नाम पर आज़ाद कर देते जिन से सामान ढोने या सवारी का काम नहीं लेते जैसे कि «बहीरः» और «साएबः» वग़ैरह का तफ़सीली बयान पहले आ चुका है।

पर झूठ बाँधने के लिये,[1] अल्लाह उन्हें उन के इल्जाम का बदला जल्द देगा।

وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَٰذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَىٰ أَزْوَاجِنَا ۖ وَإِن يَكُن مَّيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ ۚ سَيَجْزِيهِمْ وَصْفَهُمْ ۚ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿139﴾

१३९. और उन्होंने कहा कि इन जानवरों के गर्भ में जो है वह ख़ास तौर से हमारे मर्दों के लिये है और हमारी बीवियों पर हराम है, और अगर मुर्दा हो तो सभी उस में हिस्सेदार हैं[2] वह (अल्लाह) उन के इस क़ौल का बदला जल्द देगा, बेशक वह हिक्मत वाला जानने वाला है।

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ ۚ قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿140﴾

१४०. वे नुक़सान में पड़ गये जिन्होंने बिना इल्म के बेवकूफ़ी के सबब अपनी औलाद को क़त्ल किया और अल्लाह ने जो रोज़ी अता की उसे हराम कर लिया अल्लाह पर झूठ बांधने के सबब, वे गुमराह हो गये और सच्चे रास्ते पर नहीं रह गये।

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ جَنَّاتٍ مَّعْرُوشَاتٍ وَغَيْرَ مَعْرُوشَاتٍ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا أُكُلُهُ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۚ

१४१. वही है जिसने लताओं और बिन लताओं के बाग़ात पैदा किये[3] और खजूर और खेतियाँ जिन के ज़ायक़े कई तरह के हैं, और ज़ैतून और अनार एक तरह और अनेक तरह। जब फल लायें तो तुम इन को खाओ और उसकी कटाई के

---

[1] यह तीसरी शक्ल है कि वह ज़िब्ह करते वक़्त सिर्फ़ मूर्तियों का नाम लेते, अल्लाह का नाम नहीं लेते, कुछ ने इस का मतलब यह लिया है कि इन जानवरों पर सवार होकर वह "हज" के लिये नहीं जाते थे, जो भी हो यह सब उनकी ख़ुद गढ़ी बातें थीं जिन्हें वह अल्लाह का हुक्म साबित करना चाहते थे।

[2] यह एक दूसरी शक्ल है कि जो जानवर वह अपनी मूर्तियों के नाम सदक़ा कर देते थे, इन में से कुछ के बारे में कहते थे कि इन का दूध और उन के गर्भ से जो पैदा होने वाला ज़िन्दा बच्चा हमारे मर्दों के लिए हलाल है, औरतों के लिए हराम है, हाँ अगर बच्चा मरा हुआ पैदा होता है तो उस के खाने में औरत और मर्द बराबर हैं।

[3] معروشات (मअरूशात) का मस्दर (अर्श) है, जिसका मतलब बुलन्द करना और ऊपर उठाने के हैं, मुराद कुछ पेड़ों की लतायें हैं जो ऊपर (छप्पर छतों वग़ैरह पर) चढ़ाई जाती हैं, जैसे अंगूर और कुछ तरकारियों की लतायें हैं, लेकिन कुछ लतायें जो ऊपर नहीं चढ़ाई जाती हैं, बल्कि धरती पर ही फलती-फूलती हैं, जैसे खरबूज़े और तरबूज़े वग़ैरह की लतायें है।

كُلُوا مِن ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ ۖ وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ (141)

दिन उसका हक़ अदा करो[1] और इस्राफ़ न करो, बेशक अल्लाह इस्राफ़ करने वालों से मुहब्बत नहीं करता ।[2]

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولَةً وَفَرْشًا ۚ كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ (142)

१४२. और जानवरों में कुछ बोझ लादने के लायक़ और कुछ जमीन से लगे हुये बनाया । खाओ, जो तुम्हें अल्लाह ने दिया है और शैतान के क़दमों के निशान की पैरवी न करो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है ।

ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ ۖ مِّنَ الضَّأْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ آلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ ۖ نَبِّئُونِي بِعِلْمٍ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ (143)

१४३. वह आठ तरह के जोड़े (बनाये)[3] भेड़ में दो, बकरी में दो,[4] आप कहिये कि अल्लाह ने दोनों के नर को हराम किया है या दोनों की मादा को? या उस को जो दोनों मादा के गर्भाशय (रिहम) में शामिल है? मुझे इल्म के साथ बताओ अगर सच्चे हो ।

وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ آلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ ۖ أَمْ كُنتُمْ شُهَدَاءَ

१४४. और ऊँट में दो और गाय में दो, आप कहिए कि क्या अल्लाह ने दोनों मादा को या दोनों नरों को हराम किया है? या उसको जिस पर दोनों मादा के रिहम शामिल हो । क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जब अल्लाह ने इस का

---

[1] यानी जब खेत से अनाज काट कर साफ कर लो, और पेड़ से फल तोड़ लो, तो उसका हक़ अदा करो, इस से मुराद कुछ आलिमों के नजदीक अपनी मर्जी से सदक़ा है, कुछ के नजदीक जरूरी सदक़ा या दसवाँ हिस्सा (तराई की जमीन की पैदावार हो) या बीसवाँ हिस्सा (अगर जमीन कुऐं, ट्यूब वेल या नहर के पानी से सींची जाती हो)

[2] इसलिए इस्राफ़ किसी भी चीज में अच्छा नहीं है, दान-पुण्य (सदक़ा-ख़ैरात) के काम में या दूसरे किसी काम में, हर काम में औसत और हुदूद के भीतर ताक़त के ऐतबार से जायेज और अच्छा है और इसी पर जोर दिया गया है ।

[3] यानी ‹उसी अल्लाह ने आठ जोड़े पैदा किये›, इस आयत में ‹अजवाज› लफ्ज का इस्तेमाल हुआ है, जो ‹जौज› का बहुवचन है, एक ही जाति के नर और मादा को ‹जौज› कहते हैं और उन दोनों में से सब को भी ‹जौज› कह लिया जाता है, क्योंकि हुए एक-दूसरे का ‹जौज› होता है । क़ुरआन में इस जगह पर भी ‹अजवाज› हर एक के लिए ही इस्तेमाल हुआ है यानी आठ जानवर अल्लाह ने पैदा किये जो आपस में एक-दूसरे के जोड़े हैं, यह नहीं कि आठ जोड़े पैदा किये, इस तरह से उनकी तादाद १६ हो जायेगी जो आयत के अगले हिस्से के ऐतबार से ठीक नहीं है ।

[4] यह आठ की तकमील है, और मुराद दो तरह से नर और मादा है, यानी भेड़ से नर और मादा और बकरी से नर-मादा पैदा किये । (भेड़ में दुम्बा भी शामिल है)

إِذْ وَصَّاكُمُ اللَّهُ بِهَٰذَا ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ (144)

हुक्म किया? फिर उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठा इल्ज़ाम लगाये[1] ताकि बिना किसी इल्म लोगों को गुमराह बना दे। बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता।

قُلْ لَا أَجِدُ فِي مَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَىٰ طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا مَسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خِنْزِيرٍ فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ رَحِيمٌ (145)

१४५. आप कहिये कि मुझे जो हुक्म किया गया है उस में किसी खाने वाले के लिये कोई खाना हराम नहीं पाता, लेकिन यह कि वह मुर्दा हो या बहता ख़ून या सूअर का गोश्त, इसलिये कि वह बिल्कुल नापाक है या जो शिर्क का कारण हो जिस पर अल्लाह के सिवा दूसरों का नाम पुकारा गया हो,[2] फिर जो कोई मजबूर हो, जब कि बाग़ी और हद से बाहर जाने वाला न हो तो अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُفُرٍ ۖ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۚ ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ (146)

१४६. और हम ने यहूदियों पर नाख़ून वाले जानवर हराम कर दिये और गाय व बकरी की चर्बी उन पर हराम कर दी, लेकिन जो दोनों की पीठ और आंतों में हो या जो किसी हड्डी से लिपटी हो, हम ने यह उन के (दीन) बग़ावत का बदला दिया और हम सच्चे हैं।

فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ (147)

१४७. अगर वह आप को झुठलायें तो कहिये कि तुम्हारे रब (अल्लाह) की रहमत बहुत वसीअ है, और उस का अज़ाब मुजरिमों से फेरा नही जाता।

[1] यानी यही सब से बड़ा ज़ुल्म है, हदीस में आता है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया कि मैंने अम्र बिन लुहैयी को जहन्नम में आंत खींचते हुए देखा, उस ने सब से पहले मूर्तियों के नाम पर वसीला और 'हाम' वग़ैरह जानवर छोड़ने का सिलसिला शुरू किया। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: मायेद:, मुस्लिम किताबुल जन्न:)

[2] इस आयत में जिन चार हराम चीज़ों का बयान है, उसका सूर: बक़र: की आयत-१७३ की तफ़सीर में तफ़सील से बयान हो चुका है।

१४८. मुश्रिक कहेंगे कि अगर अल्लाह चाहता तो हम और हमारे बुजुर्ग शिर्क नहीं करते, न किसी चीज को हराम बनाते, इसी तरह इन से पहले के लोग झुठलाये यहाँ तक कि हमारा अजाब चख लिये, कहिये कि क्या तुम्हारे पास कोई इल्म है तो उसे हमारे लिये निकालो (जाहिर करो), तुम कल्पना (गुमान) की पैरवी करते हो और सिर्फ़ अंदाजा लगाते हो।

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا
وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ
كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا ۗ قُلْ
هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ۖ إِنْ
تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ (148)

१४९. आप कहिये कि फिर अल्लाह ही की दलील प्रभावशाली (ग़ालिब) है, इसलिए अगर वह चाहे तो तुम सभी को हिदायत दे सकता है।

قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۖ فَلَوْ شَاءَ
لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ (149)

१५०. आप कहिये कि अपने उन गवाहों को लाओ जो यह गवाही दें कि अल्लाह ने इसे हराम किया है, फिर अगर वह गवाही दें तो आप उन के साथ गवाही न दें और उनकी मनमानी इरादों की इत्तेबा न करें और जिन्होंने हमारी आयतों को झूठा कहा और जो आख़िरत पर यकीन नहीं करते और (दूसरों को) अपने रब की तरह मानते हैं।

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَاءَكُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ
حَرَّمَ هَٰذَا ۖ فَإِنْ شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا
تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ (150)

१५१. आप कहिये कि आओ मैं पढ़कर सुनाऊँ कि तुम को तुम्हारे रब ने किस से मना किया है,[1] वह ये कि उस के साथ किसी चीज का शिर्क न करो, और माँ-बाप के साथ एहसान करो,[2] और अपनी औलाद को ग़रीबी के सबब

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ ۖ أَلَّا تُشْرِكُوا
بِهِ شَيْئًا ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ وَلَا تَقْتُلُوا
أَوْلَادَكُمْ مِنْ إِمْلَاقٍ ۖ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ ۖ

---

[1] यानी हराम वह नहीं है जिन को तुम ने बिना दीनी सुबूत के सिर्फ़ अपने झूठे शक और शुब्हा की बिना पर हराम बना दिया है, बल्कि हराम तो वह चीज है जिस को तुम्हारे रब ने हराम किया है, क्योंकि तुम्हारा जन्मदाता तो तुम्हारा रब है और हर चीज का उसी को ही इल्म है, इसलिए उसी को यह हक है कि वह जिस चीज को चाहे हलाल (उचित) और जिस चीज को चाहे हराम (अनुचित) करे, इसलिए मैं तुम्हें उन बातों की तफ़सीली जानकारी देता हूँ, जिनकी तंबीह तुम्हारे रब ने की है।

[2] अल्लाह तआला के एक होने और उस के हुक्म की पैरवी करने के बावजूद यहाँ भी (और कुरआन में दूसरे मुकाम पर भी) माँ-बाप के साथ दया-भाव (हुस्ने सुलूक) करने का हुक्म

وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿151﴾

क़त्ल न करो, हम तुम को और उन को रोज़ी अता करते हैं[1] और ज़ाहिर व छुपी फ़हाशी के क़रीब न जाओ और उस जान को जिस से अल्लाह ने मना किया है क़त्ल न करो, लेकिन वैधानिक (शरई) कारण से,[2] तुम को उस ने इसी का हुक्म दिया है ताकि तुम समझो।

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۖ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۖ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۖ وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۖ وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿152﴾

१५२. और यतीम के माल के क़रीब न जाओ, लेकिन बहुत अच्छे ढंग से यहां तक कि वह बुलूग़त को पहुंचे,[3] और इंसाफ़ के साथ नाप और तौल पूरा करो,[4] हम किसी पर उस की ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं रखते, और जब बोलो तो इंसाफ़ करो, अगरचे वह क़रीबी रिश्तेदार हो, और अल्लाह से किया वादा पूरा करो, उस ने तुम लोगों को इसी का हुक्म दिया है ताकि तुम याद रखो।

दिया गया है, जिससे यह वाज़ेह होता है कि रब के हुक्म की पैरवी के बावजूद मां-बाप के हुक्म की पैरवी की बड़ी फ़ज़ीलत है, अगर किसी ने इस हुक्म (मां-बाप के हुक्म की पैरवी और उन से हुस्ने सुलूक करने) की ज़रूरतों को पूरा नहीं किया तो वह अल्लाह के हुक्म की पैरवी भी नहीं कर सकता और उस में भी नाकाम रहेगा।

[1] जाहिलियत के दौर का यह बहुत ख़राब काम आज भी परिवार नियोजन के शक्ल में मौजूद है और पूरी दुनिया में इस के प्रचार-प्रसार का काम हो रहा है, अल्लाह तआला इससे महफ़ूज़ रखे।

[2] यानी बदले के तौर पर न सिर्फ़ जायेज़ है, बल्कि अगर मरने वाले के रिश्तेदार माफ़ न करें तो यह क़त्ल बहुत ज़रूरी हो जाता है।

[3] जिस यतीम का संरक्षण (किफ़ालत) तुम्हारे हक़ में आये, उस के लिए अच्छा सोचना तुम्हारा फ़र्ज़ है, इसकी भलाई के लिए ज़रूरी है कि अगर उस के पास माल है यानी विरासत में से उस का हिस्सा मिला है चाहे नगद हो या ज़मीन-जायदाद के रूप में, अगर उस वक़्त वह उसको महफ़ूज़ रखने में कामयाब न हों तो उस के माल की उस वक़्त तक बग़ैर किसी लालच से हिफ़ाज़त की जाये जब तक कि वह बुलूग़त को न पहुंच जाये, यह न हो कि उस के बालिग़ होने से पहले उसके माल, ज़मीन और जायदाद को ठिकाने लगा दिया जाये।

[4] नाप-तौल में कमी करना, लेते वक़्त तो पूरा नाप-तौल से लेना, लेकिन देते वक़्त ऐसा न करना, बल्कि डंडी मारकर दूसरों को कम देना, यह बहुत नीच और सभ्यता (तहज़ीब) से गिरी हुई बात है, जनाब शुऐब की क़ौम में यही रोग था, जो उन की तबाही का सबब बना।

وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِیْ مُسْتَقِیْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِیْلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿153﴾

१५३. और यही[1] मेरा सीधा रास्ता है[2] इसलिए उसी पर चलो और दूसरे रास्ते पर न चलो नहीं तो तुम्हें उस के रास्ते से जुदा कर देंगे, उस ने तुम को इसी का हुक्म दिया है ताकि तुम महफ़ूज रहो।

ثُمَّ اٰتَیْنَا مُوْسَی الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَی الَّذِیْۤ اَحْسَنَ وَتَفْصِیْلًا لِّكُلِّ شَیْءٍ وَّهُدًی وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ یُؤْمِنُوْنَ ﴿154﴾

१५४. फिर हम ने (रसूल) मूसा को किताब दी, उस पर नेमत पूरी करने के लिये जिस ने नेक अमल किया और हर चीज की तफ़सील और हिदायत और रहमत के लिये[3] ताकि वे अपने रब से मिलने पर यक़ीन करें।

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿155﴾

१५५. और यह (पाक क़ुरआन) एक मुबारक किताब है जिसे हम ने उतारा, इसलिए तुम इस की इत्तेबा करो ताकि तुम पर रहम (दया) किया जाये।

اَنْ تَقُوْلُوْۤا اِنَّمَاۤ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰی طَآىِٕفَتَیْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۪ وَاِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِیْنَ ﴿156﴾

१५६. ताकि यह न कहो कि हम से पहले दो क़ौमों पर किताब (तौरात और इंजील) उतारी गई और हम उनकी तालीम से अंजान (अनभिज्ञ) रहे।

[1] "यह" से मुराद क़ुरआन मजीद है या दीन इस्लाम या वे हुक्म जो फ़जीलत से इस आयत में बयान किये गये हैं, और वह है तौहीद, मरने के बाद का नतीजा और रिसालत, और यही दीन इस्लाम के तीन बुनियाद हैं, जिसकी धुरी पर पूरे इस्लामी क़ानून घूमते हैं, इसलिए इस का जो भी मतलब लिया जाये, एक ही मतलब है।

[2] "सीधे मार्ग" को एकवचन (मुफ़रद) के रूप में बयान किया गया है, क्योंकि अल्लाह का या क़ुरआन का, और रसूलुल्लाह ﷺ का रास्ता एक ही है एक से ज़्यादा नहीं, इसलिए पैरवी सिर्फ उसी एक रास्ते की करना है किसी दूसरे की नहीं, यही इस्लामी उम्मत की एकता और अखण्डता की बुनियाद है जिस से हट कर यह उम्मत कई गुटों में बंट गयी है।

[3] यह पाक क़ुरआन का अपना अंदाज है कि जिसे कई जगहों पर दोहराया गया है कि जहाँ पाक क़ुरआन की चर्चा होती है वहाँ तौरात की, और जहाँ तौरात की चर्चा हो वहाँ पाक क़ुरआन की भी चर्चा कर दी जाती है।

१५७. या तुम यह न कहो कि अगर हम पर किताब नाज़िल होती तो हम उन से ज़्यादा सच्चे रास्ते पर होते तो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से वाज़ेह दलील और हिदायत और रहमत आ चुकी है, फिर उस से ज़्यादा पापी कौन है जिस ने अल्लाह की आयतों को झूठा कहा और उन से फिर गया, हम सख़्त अज़ाब अपनी आयतों से फिरने के सबब उन्हें देंगे जो फेर रहे हैं।

أَوْ تَقُولُوا لَوْ أَنَّا أُنزِلَ عَلَيْنَا الْكِتَٰبُ لَكُنَّا أَهْدَىٰ مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَاءَكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن كَذَّبَ بِـَٔايَٰتِ اللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۗ سَنَجْزِي الَّذِينَ يَصْدِفُونَ عَنْ ءَايَٰتِنَا سُوٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ ﴿157﴾

१५८. वह फ़रिश्तों के आने का इंतेज़ार कर रहे हैं या अपने रब (अल्लाह) के आने का या आप के रब की कुछ निशानी आने का? जिस दिन तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी आ जायेगी किसी नफ़्स को उसका ईमान काम न देगा जिस ने उस से पहले ईमान क़ुबूल न किया हो या अपने ईमान में कोई नेक काम न किया हो, आप कहिये कि तुम इंतेज़ार करो हम (भी) इंतेज़ार कर रहे हैं।[1]

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا أَن تَأْتِيَهُمُ الْمَلَٰٓئِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ ءَايَٰتِ رَبِّكَ ۗ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ ءَايَٰتِ رَبِّكَ لَا يَنفَعُ نَفْسًا إِيمَٰنُهَا لَمْ تَكُنْ ءَامَنَتْ مِن قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِيٓ إِيمَٰنِهَا خَيْرًا ۗ قُلِ انتَظِرُوٓا إِنَّا مُنتَظِرُونَ ﴿158﴾

१५९. बेशक जिन्होंने अपना दीन अलग-अलग कर दिया और अनेक धार्मिक सम्प्रदाय (फ़िर्क़ा) बन गये[2] आप का उन से कोई रिश्ता नहीं, उनका फ़ैसला अल्लाह के पास है फिर उन्हें उस से आगाह करेगा जो वह करते रहे हैं।

إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ ۚ إِنَّمَآ أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿159﴾

१६०. जो इंसान अच्छा काम करेगा उसे उस के दस गुना मिलेगे, और जो बुरे काम करेगा उसे उस के बराबर सज़ा मिलेगी और उन लोगों पर ज़ुल्म न होगा।

مَن جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُۥ عَشْرُ أَمْثَالِهَا ۖ وَمَن جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَىٰٓ إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿160﴾

---

[1] यह ईमान न लाने वालों और तौबा न करने वालों के लिए तंबीह है, और बाख़बर किया जा रहा है। क़ुरआन करीम में इसी बारे में सूर: मोहम्मद-१८, सूर: मोमिन- ८४ और ८५ में बयान किया गया है।

[2] इस से कुछ लोग यहूदी और इसाई मुराद लेते हैं, जो कई गुटों में बँटे हुए थे, कुछ मूर्तिपूजकों को लेते हैं जिन में कुछ फ़रिश्तों की, कुछ सितारों की, कुछ कई मूर्तियों की पूजा करते थे, लेकिन यह विषय आम है जिन में काफ़िर और मूर्तिपूजकों सहित वे सभी लोग भी शामिल हैं जो अल्लाह के दीन और रसूल ﷺ के रास्ते को छोड़ कर दूसरे दीन अपना कर दूसरे रास्ते अपनाकर इख़्तिलाफ़ और फूट का रास्ता अपनाते है। (फ़तहुल क़दीर)

قُلْ إِنَّنِي هَدَانِي رَبِّي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ دِينًا قِيَمًا مِّلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿161﴾

१६१. आप कह दीजिए कि मुझे मेरे रब ने एक सीधा रास्ता बता दिया है कि वह एक मुस्तहकम दीन है जो तरीक़ा है इब्राहीम का, जो अल्लाह की तरफ़ यकसू थे और वह मुश्रिकों में न थे।

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿162﴾

१६२. आप कह दीजिए कि बेशक मेरी नमाज़, और मेरी सभी इबादतें और मेरी ज़िन्दगी और मौत सारी दुनिया के रब अल्लाह के लिए हैं।

لَا شَرِيكَ لَهُ ۖ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ﴿163﴾

१६३. उसका कोई शरीक नहीं, मुझे इसी का हुक्म दिया गया है और मैं पहला हूँ जिन्होंने सब से पहले उसे माना।

قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِي رَبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿164﴾

१६४. आप कहिये कि क्या मैं अल्लाह के सिवाये किसी दूसरे रब की खोज करूँ जब कि वही हर चीज़ का रब है[1] और कोई नफ़्स जो भी कमायेगा उसी पर होगा कोई किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा, फिर तुम्हें तुम्हारे रब की तरफ़ दोबारा जाना है, वह तुम्हारे इख़्तिलाफ़ों के बारे में तुम्हें बतायेगा।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ ۗ إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿165﴾

१६५. और उसी ने तुम को धरती में ख़लीफ़ा बनाया और एक के पदों को दूसरे पर बढ़ाया ताकि जो कुछ तुम्हें अता किया उस में तुम्हारा इम्तेहान ले, बेशक तुम्हारा रब जल्द अज़ाब देने वाला है, और बेशक वह बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

[1] यहाँ रब से मुराद माबूद बनाना है जिसका मूर्तिपूजक इंकार करते रहे हैं, और जो उस के रब होने की माँग है, लेकिन मूर्तिपूजक उस के रब होने को तो मानते थे और उस में किसी को भी साझीदार नहीं ठहराते थे, लेकिन माबूद होने में साझीदार ठहराते थे।

सूरतुल आराफ़-७

سُورَةُ الْأَعْرَافِ

सूर: अल-आराफ़ मक्का में उतरी और इस की दो सौ छ: आयतें हैं और चौबीस रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. अलिफ़. लाम. मीम. साद।

الٓمّٓصٓ ⑴

२. यह एक किताब है जो आप की तरफ़ उतारी गई ताकि इस के जरिये बाख़बर करने से आप के दिल में तंगी पैदा न हो और ईमान वालों के लिये शिक्षा है।

كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ⑵

३. जो (धर्म विधान) आप के रब की तरफ़ से उतारा गया, उसकी इत्तेबा करो और उस के सिवाये दूसरे औलिया की इत्तेबा न करो तुम लोग बहुत कम नसीहत हासिल करते हो।

اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۗ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ⑶

४. और बहुत सी बस्तियों को हम ने बर्बाद कर दिया और उन पर हमारा अज़ाब रात के वक़्त पहुंचा या ऐसी हालत में कि वे दोपहर के वक़्त आराम कर रहे थे।[1]

وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ⑷

५. तो जब उन के पास हमारा अज़ाब आया तो उन की पुकार सिर्फ़ यही रही कि उन्होंने कहा कि हम ही ज़ालिम (पापी) रहे हैं।

فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ⑸

६. फिर हम उन से ज़रूर पूछ करेंगे जिन के पास पैग़ाम भेजा गया और पैग़म्बरों से ज़रूर पूछ करेंगे।[2]

فَلَنَسْــَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْــَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ⑹

---

[1] قَآئِلُوْنَ कलिमा "दोपहर के वक़्त खाना खा के आराम करने को कहते हैं।" मतलब यह है कि हमारा अज़ाब अचानक ऐसे वक़्त में आया जब वे बेफ़िक्री से अपने बिस्तरों में आराम कर रहे थे।

[2] उम्मतों से यह पूछा जायेगा कि क्या तुम्हारे पास पैग़म्बर (संदेशवाहक) आये थे? उन्होंने

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِم بِعِلْمٍ وَمَا كُنَّا غَائِبِينَ ⑦

७. फिर हम उन के सामने इल्म के साथ बयान कर देंगे और हम बेख़बर नहीं थे।

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ فَمَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ⑧

८. और उस दिन ठीक वज़न होगा फिर जिस का पलड़ा भारी होगा वही कामयाब होंगे।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُم بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَظْلِمُونَ ⑨

९. और जिस का पलड़ा हल्का होगा, तो ये वे लोग होंगे जिन्होंने अपना नुक़सान कर लिया, इस वजह से कि हमारी आयतों के साथ ज़ुल्म करते रहे थे।[1]

وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ⑩

१०. और हम ने तुम को ज़मीन में रहने का स्थान दिया और उस में तुम्हारे लिये सामाने ज़िन्दगी बनाया, तुम बहुत कम शुक्रिया अदा करते हो।

وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ لَمْ يَكُن مِّنَ السَّاجِدِينَ ⑪

११. और हम ने तुम को पैदा किया, फिर तुम्हारी शक्ल बनाई, फिर हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो, तो सभी ने सज्दा किया सिवाय इब्लीस के, कि वह सज्दा करने वालों में शामिल नहीं हुआ।

قَالَ مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ ⑫

१२. (अल्लाह ने) कहा कि जब मैंने तुझे सज्दा करने का हुक्म दिया तो किस सबब ने तुझे सज्दा करने से रोक दिया, उस ने कहा मैं इस से अच्छा हूं, तूने मुझे आग से पैदा किया और इसे मिट्टी से पैदा किया है।[2]

हमारा पैग़ाम पहुँचाया था? वहां वे जवाब देंगे, "हां, हे अल्लाह ! तेरे पैग़म्बर तो बेशक हमारे पास आये थे लेकिन हमारी ही बदनसीबी थी कि हम ने उन की फ़िक्र नहीं की।" और पैग़म्बरों से पूछा जायेगा कि तुम ने हमारा पैग़ाम अपनी उम्मत को पहुँचा दिये और उन्होंने उस के मुक़ाबले में क्या अमल किये? पैग़म्बर इस सवाल का जवाब देंगे जिस का तफ़सीली बयान पाक क़ुरआन में कई जगहों पर मौजूद है।

[1] इन आयतों में अमलों के तौलने का बयान किया गया है, जो क़यामत के दिन होगा, जिसे पाक क़ुरआन में कई जगहों पर और हदीसों में बयान किया गया है।

[2] शैतान का यह उज़्र उस के गुनाह से भी ज़्यादा गुनाह बन गया, एक तो उसका यह सोचना कि अच्छे को अपने से नीचे के इज़्ज़त व एहतेराम का हुक्म नहीं दिया जा सकता, ग़लत है।

१३. (अल्लाह तआला ने) हुक्म दिया कि तू आकाश[1] से उतर, तुझे कोई हक नहीं कि आकाश में रह के घमंड करे, इसलिए निकल, बेशक तू अपमानितों (जलीलों) में से है।[2]

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَنْ تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصَّاغِرِينَ ﴿13﴾

१४. उस (शैतान) ने कहा कि मुझे (क़यामत तक) मौक़ा अता कीजिए जब लोग दोबारा ज़िन्दा किये जायेंगे।

قَالَ أَنْظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿14﴾

१५. (अल्लाह ने) कहा कि तुझे मौक़ा अता कर दिया गया।

قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿15﴾

१६. उस (शैतान) ने कहा तेरे मुझ को धिक्कारने के सबब मैं उनके लिये तेरे सीधे रास्ते पर बैठूंगा।

قَالَ فَبِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿16﴾

१७. फिर उन के सामने और पीछे से और दायें और बायें से हमला करूंगा[3] और आप इन में ज़्यादातर को शुक्रगुज़ार नहीं पायेंगे।

ثُمَّ لَآتِيَنَّهُمْ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ ۖ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ﴿17﴾

१८. (अल्लाह ने) कहा, तू इस से (यहाँ से) अपमानित (ज़लील व ख़्वार) होकर निकल जा, जो उन में से तेरी इत्तेबा करेगा मैं तुम सभी से जहन्नम को ज़रूर भर दूंगा।

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُومًا مَدْحُورًا ۖ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿18﴾

इसलिए कि असल मामला अल्लाह का हुक्म है, उस के हुक्म के आगे अच्छा और कम अच्छा की बात करना अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी है। दूसरे उस ने अपने अच्छे होने की यह दलील दी कि मैं आग से हूँ और यह मिट्टी से है, परन्तु उस ने उस फ़ज़ीलत को अनदेखी कर दिया जो हज़रत आदम को हासिल हुई, यानी अल्लाह तआला ने ख़ुद अपने हाथ से बनाया और अपनी तरफ़ से रूह फूंकी, इस फ़ज़ीलत के बराबर दुनिया की कोई इज़्ज़त हो सकती है?

[1] ज़्यादातर तफ़सीर निगारों ने "इस से" का माने यह किया है कि उस से यानी जन्नत से निकल जाओ और कुछ ने "इस से" का माने यह लिया है कि आसमान से नीचे उतरो। आदरणीय अनुवादक ने यही दूसरा माने लेकर उसका अनुवाद "आसमान से उतरो" किया है।

[2] अल्लाह के हुक्म के सामने घमण्ड करने वाला इज़्ज़त व एहतेराम का नहीं बल्कि बेइज़्ज़ती और ज़िल्लत का हक़दार होता है।

[3] मतलब यह है कि हर सवाब और गुनाह के रास्ते पर मैं बैठूंगा, अच्छे काम से उन्हें रोकूंगा और गुनाह को उन के सामने अच्छा और ख़ूबसूरत बना कर पेश करूंगा और उनको अपनाने के लिए शिक्षा दूंगा।

وَيٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿19﴾

१९. और (हम ने कहा कि) हे आदम! तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो, फिर जिस जगह से मर्जी हो खाओ, और इस पेड़ के क़रीब न जाओ नहीं तो ज़ालिम हो जाओगे।[1]

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ﴿20﴾

२०. फिर शैतान ने दोनों में वसवसा[2] पैदा किया ताकि दोनों के लिये उन की शर्मगाहों को ज़ाहिर कर दे, और कहा कि तुम दोनों के रब ने तुम्हें इस पेड़ से इसीलिए रोका है कि तुम दोनों फ़रिश्ता हो जाओगे या हमेशा रहने वाले हो जाओगे।

وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿21﴾

२१. उस ने उन दोनों के सामने क़सम खाई कि मैं तुम दोनों का शुभचिन्तक (ख़ैरख़्वाह) है।

فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۖ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿22﴾

२२. इस तरह धोखे से दोनों को नीचे लाया, जैसे ही दोनों ने पेड़ का ज़ायेका लिया दोनों के लिये उन के गुप्तांग ज़ाहिर हो गये और वे अपने ऊपर जन्नत के पत्ते चिपकाने लगे और उन के रब ने दोनों को पुकारा, कि क्या मैंने तुम दोनों को इस पेड़ से नहीं रोका था? और तुम से नही कहा कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है।[3]

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ۫ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿23﴾

२३. दोनों ने कहा, हमारे रब! हम ने अपने ऊपर ज़ुल्म कर लिया, और अगर तूने हमें माफ़ नहीं किया और हम पर रहम न किया तो हम नुक़सान उठाने वालों में से हो जायेंगे।

قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿24﴾

२४. (अल्लाह तआला ने) कहा, तुम नीचे उतरो, तुम आपस में दुश्मन हो और तुम्हें एक वक़्त तक धरती में रहना और फ़ायदेमंद होना है।

[1] यानी सिर्फ़ इस पेड़ के सिवाये जहाँ से और जितना चाहो खाओ, इस पेड़ का फल खाने पर रूकावट सिर्फ़ इम्तेहान के तौर पर थी।

[2] वसवसा का मतलब है धीमी आवाज़, और वह बुरी बात जो शैतान दिल में पैदा करता है।

[3] यानी इस तंबीह के बाद भी तुम शैतान के वसवसों (शंका) के शिकार हो गये, इस से मालूम हुआ कि शैतान के जाल भी बड़े ख़ूबसूरत होते हैं, और उन से बचने के लिए बड़ी कोशिश और हर वक़्त होशियार रहने की ज़रूरत है।

قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ وَمِنْهَا تُخْرَجُونَ ﴿25﴾

२५. कहा कि तुम उसी में जिन्दगी गुज़ारोगे और उसी में मरोगे और उसी से निकाले जाओगे।

يَٰبَنِىٓ ءَادَمَ قَدْ أَنزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُوَٰرِى سَوْءَٰتِكُمْ وَرِيشًا ۖ وَلِبَاسُ ٱلتَّقْوَىٰ ذَٰلِكَ خَيْرٌ ۚ ذَٰلِكَ مِنْ ءَايَٰتِ ٱللَّهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿26﴾

२६. हे आदम के बेटो! हम ने तुम्हें ऐसा कपड़ा अता किया जो तुम्हारे गुप्तांग (शर्मगाह) को ढांके और ज़ीनत दे,[1] और परहेज़गारी का कपड़ा ही अच्छा है यह अल्लाह की निशानी हैं ताकि वह याद करें।

يَٰبَنِىٓ ءَادَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ ٱلشَّيْطَٰنُ كَمَآ أَخْرَجَ أَبَوَيْكُم مِّنَ ٱلْجَنَّةِ يَنزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْءَٰتِهِمَآ ۗ إِنَّهُۥ يَرَىٰكُمْ هُوَ وَقَبِيلُهُۥ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۗ إِنَّا جَعَلْنَا ٱلشَّيَٰطِينَ أَوْلِيَآءَ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿27﴾

२७. हे आदम के बेटो! तुम्हें शैतान बहका न दे जैसे तुम्हारे माता-पिता को जन्नत से निकलवा दिया, वह उन का कपड़ा उतरवा दिया ताकि उन्हें उन के गुप्तांग दिखाये, बेशक वह और उस की जाति तुम्हें ऐसी जगह से देखती है कि तुम उन्हें देख नहीं सकते,[2] हम ने शैतानों को उन लोगों का दोस्त बना दिया जो ईमान (विश्वास)[3] नहीं रखते।

وَإِذَا فَعَلُوا۟ فَٰحِشَةً قَالُوا۟ وَجَدْنَا عَلَيْهَآ ءَابَآءَنَا وَٱللَّهُ أَمَرَنَا بِهَا ۗ قُلْ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَأْمُرُ بِٱلْفَحْشَآءِ ۖ أَتَقُولُونَ عَلَى ٱللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿28﴾

२८. और वे जब कोई बुराई करते हैं तो कहते हैं कि हम ने अपने पुरखों को इसी पर पाया, और अल्लाह ने हमें इस का हुक्म दिया है। आप कह दीजिये कि अल्लाह बुराई का हुक्म नहीं देता, क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात करते हो जिसे तुम नहीं जानते।

---

[1] سَوْآت जिस्म के वह हिस्से हैं जिनको ढाँकना ज़रूरी है, जैसे गुप्तांग और ريشا वह कपड़ा है जो ज़ीनत और ख़ूबसूरती के लिये पहना जाये, मानो पहला ज़रूरी कपड़ा है और दूसरा ज़ीनत और इज़ाफ़ा के लिये होता है, अल्लाह ने इन दोनों तरह के लिये ज़रिया पैदा कर दिये।

[2] इस में ईमानवालों को शैतान और उसकी जाति यानी उस के चेलों से होशियार किया गया है कि कहीं तुम्हारी लापरवाही और सुस्ती से फ़ायेदा उठा कर तुम्हें भी उसी तरह इम्तेहान और बुरे रास्ते में न डाल दे, जिस तरह तुम्हारे माँ-बाप (आदम और हव्वा) को उस ने जन्नत से निकलवाया और जन्नत के कपड़े उतरवा दिये, ख़ास तौर से जब वह नज़र भी नहीं आते तो उन से बचने का तरीक़ा और फ़िक्र ज़्यादा होनी चाहिए।

[3] यानी जिन में ईमान नहीं है वही उस के दोस्त हैं, और ख़ास तौर से उस के शिकार होते हैं, फिर भी वह ईमानवालों पर भी डोरे डालता रहता है, कुछ और नहीं तो छुपा शिर्क (दिखावे के नेक काम) और खुले शिर्क (मिश्रणवाद) में लीन कर देता है, और इस तरह वह उनको ईमान के पूँजी से महरूम कर देता है।

२९. आप (रसूल) कहिये कि मेरे रब ने मुझे इंसाफ़ का हुक्म दिया है,[1] और हर सज्दा के वक्त अपने चेहरे को सीधी दिशा में कर लो और उस (अल्लाह) के लिये दीन को ख़ालिस कर के उसे पुकारो, उस ने जैसे तुम को शुरू में पैदा किया उसी तरह फिर पैदा होगे।

قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ ۖ وَأَقِيمُوا وُجُوهَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ ﴿29﴾

३०. और उस (अल्लाह) ने कुछ को हिदायत दी और कुछ गुमराही के मुस्तहिक़ बन गये, उन्होंने अल्लाह के सिवाय शैतानों (असुरों) को अपना दोस्त बना लिया, और सोचते हैं कि वह हिदायत पर हैं।

فَرِيقًا هَدَىٰ وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَالَةُ ۗ إِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ﴿30﴾

३१. हे आदम के बेटो! मस्जिद में जाने के हर वक़्त अपना कपड़ा अपना लो[2] और खाओ-पिओ और इस्राफ़ न करो, बेशक जो इस्राफ़ करते हैं अल्लाह उन से मुहब्बत नहीं करता।[3]

يَا بَنِي آدَمَ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ﴿31﴾

३२. (हे रसूल!) आप कहिये कि उस ज़ीनत को किस ने हराम किया है जिसे अल्लाह ने अपने बन्दों के लिये पैदा किया है और पाक रिज़्क को, आप कहिये कि वह दुनियावी ज़िन्दगी में उन लोगों के लिये है जिन्होंने यक़ीन किया (और) ख़ास कर के क़यामत के दिन में उन्हीं के लिये हैं, हम आयतों का इसी तरह तफ़सीली बयान कर रहे हैं उन के लिये जो इल्म रखते हैं।

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِي أَخْرَجَ لِعِبَادِهِ وَالطَّيِّبَاتِ مِنَ الرِّزْقِ ۚ قُلْ هِيَ لِلَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿32﴾

---

[1] इंसाफ़ का मतलब कुछ ने لا إله إلا الله यानी तौहीद (एकेश्वरवाद) लिया है।

[2] आयत में ज़ीनत से मुराद कपड़ा है, इस का सम्बन्ध (तआल्लुक़) भी मूर्तिपूजकों के नंगे तवाफ़ करने से है, इसलिए उन्हें कहा गया कि कपड़ा पहन के अल्लाह की इबादत करो।

[3] इस्राफ़ (हद से पार होना) किसी भी बारे में यहाँ तक कि खाने और पीने में भी ठीक नही माना गया है, एक हदीस में नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जो चाहो खाओ, जो चाहो पहनो, लेकिन दो बातों से बचो, इस्राफ़ और घमन्ड से।" सहीह बुख़ारी, किताबुल लिबास, बाब क़ौल अल्लाह तआला क़ुल मन हर्रम ज़ीनतल्लाह ...) कुछ सलफ़ का क़ौल है: «كلوا و اشربوا ولا تسرفوا» इस आधी आयत में सारी बीमारियों की चिकित्सा (इलाज) जमा कर दी गयी। (इब्ने कसीर)

قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿33﴾

३३. आप कहिये कि मेरे रब ने सभी खुले और छिपे अशिष्ट (फ़ुहुश) बातों को हराम किया है और पाप और नाहक़ ज़ुल्म करने को[1] और अल्लाह के साथ उसे शिर्क करने को जिसकी उस ने कोई दलील नहीं उतारी, और अल्लाह पर नामालूम बातें बोलने को।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿34﴾

३४. और हर उम्मत का एक मुक़र्रर वक़्त है फिर जब उन का मुक़र्रर वक़्त आ जाये तो न एक पल की देर होगी न सवेर।

يَا بَنِي آدَمَ إِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي ۙ فَمَنِ اتَّقَىٰ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿35﴾

३५. हे आदम के बेटो ! अगर तुम्हारे पास तुम में से मेरे रसूल (दूत) आयें जो तुम्हारे सामने मेरी आयतों को बयान करें, तो जो तक़्वा बरतेगा और सुधार कर लेगा उन पर न कोई डर होगा और न दु:खी होंगे।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿36﴾

३६. और जिन्होंने हमारी आयतों को नकारा, और उन से तकब्बुर किया वही जहन्नमी हैं, वही उस में हमेशा रहेंगे।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ أُولَٰئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُمْ مِنَ الْكِتَابِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ قَالُوا أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا وَشَهِدُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ﴿37﴾

३७. उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन है जिस ने अल्लाह पर झूठ बांधा या उस की आयतों को झुठला दिया, इन को किताब से मुक़र्रर हिस्सा पहुँचेगा, यहाँ तक कि जब उन के पास हमारे फ़रिश्ते उन की जान निकालने आयेंगे तो कहेंगे कि वह कहाँ हैं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवाये पुकारते रहे? वे कहेंगे हम से खो गये और अपने काफ़िर (अधर्मी) होने को ख़ुद क़ुबूल कर लेंगे।

---

[1] गुनाह अल्लाह की नाफ़रमानी का नाम है, और एक हदीस में नबी ﷺ ने फ़रमाया: "गुनाह वह है जो तेरे सीने में खटके, और लोगों को इसकी ख़बर हो जाने पर तू बुरा समझे।" (सहीह मुस्लिम किताबुल विर्र) और कुछ लोग कहते हैं कि गुनाह वह है जिस का असर करने वाले तक महदूद हो और بَغْي (बग़ाय) वह है कि इस का असर दूसरों तक भी पहुँचें, यहाँ बग़ाय के साथ नाहक़ का मायेना, बिला वजह ज़ुल्म और सख़्ती जैसे लोगों के हक़ों का हनन (ग़सब) करना, किसी का माल छीन लेना, बिला वजह मारना-पीटना और बुरा-भला और सख़्त बात कह कर बेइज़्ज़त करना वग़ैरह है।

قَالَ ادْخُلُوا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ فِي النَّارِ ۭ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ۭ حَتّٰٓي اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَاۗءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ڛ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ (38)

३८. वह (अल्लाह) कहेगा कि जिन्नों और इन्सानों के उन गिरोहों के साथ जो तुम से पहले गुज़र गये[1] जहन्नम में दाख़िल हो जाओ, जब कोई गिरोह दाख़िल होगा तो दूसरे को लानत करेगा, यहाँ तक कि जब उस (जहन्नम) में सभी जमा हो जायेंगे तो उनके पिछले अपने अगलों के बारे में कहेंगे कि हे हमारे रब! इन्होंने ही हम को गुमराह बनाया तू इन्हें जहन्नम की दुगनी सज़ा दे, (अल्लाह) कहेगा कि सब के लिये दुगना है लेकिन तुम नहीं जानते।

وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ (39)

३९. और अगले अपने पिछलों से कहेंगे कि हम पर तुम्हारी कोई फ़ज़ीलत नहीं, इसलिए तुम भी अपने अमल के सबब अज़ाब का मज़ा लो।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَاۗءِ وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰي يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِيْنَ (40)

४०. बेशक जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उन से तकब्बुर किया, उन के लिये आसमान के दरवाज़े नहीं खोले जायेंगे, और वे जन्नत में दाख़िल नहीं हो पायेंगे जब तक ऊँट सूई के नाके में दाख़िल न हो जाये[2] और हम पापियों को इसी तरह बदला देते हैं।

لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ (41)

४१. उन के लिए जहन्नम की आग का बिस्तर होगा और उन के ऊपर उसी का ओढ़ना होगा, और हम ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा देते हैं।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ ۡ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (42)

४२. और जो ईमान लाये और नेक काम किये, हम किसी जान को उसकी ताक़त के ऐतबार से ही उत्तरदायी (जवाबदेह) बनाते हैं, यही जन्नती हैं यही उस में हमेशा रहेंगे।

وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰىنَا

४३. और हम उन के दिलों के कपट को दूर कर देंगे, उन के नीचे नदियाँ बहती होंगी, और वह कहेंगे, अल्लाह के लिये सभी तारीफ़ है

---

[1] उमम, उम्मत का बहुवचन (जमा) है, मुराद वह क़ौम और उम्मत है, जो कुफ़्र और विरोध (मुख़ालिफ़त) और शिर्क व झुठलाने में एक तरह होंगें।

[2] यह नामुमकिन बात है, जिस तरह ऊँट का सुई के छेद से पार होना नामुमकिन है उसी तरह काफ़िरों का जन्नत में दाख़िल होना नामुमकिन है।

لِهٰذَا ۗ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۖ وَنُودُوا أَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿43﴾

जिसने हमें इस के रास्ते पर लगाया, अगर वह हिदायत न कराता तो हम ख़ुद रास्ते पर नहीं लगते, सचमुच हमारे रब के रसूल हक़ के साथ आये, और उन से पुकार कर कहा जायेगा कि अपने अमल के बदले तुम इस जन्नत के हक़दार बना दिये गये।

وَنَادٰى أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ أَصْحٰبَ النَّارِ أَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۖ قَالُوا نَعَمْ ۚ فَأَذَّنَ مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ أَنْ لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِينَ ﴿44﴾

४४. और जन्नती जहन्नमियों को पुकारेंगे कि हम ने अपने रब के वादे को जो हमें दिया सच पाया, तो क्या तुम से तुम्हारे रब ने जो वादा किया सच पाया?[1] वे कहेंगे हाँ, फिर एक पुकारने वाला उन के बीच पुकारेगा कि अल्लाह की लानत ज़ालिमों पर है।

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ كٰفِرُونَ ﴿45﴾

४५. जो अपने रब के रास्ते से रोकना और उसे टेढ़ा करना चाहते हैं और वे आख़िरत का भी इन्कार करते हैं।

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيمٰىهُمْ ۚ وَنَادَوْا أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ أَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۚ لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ ﴿46﴾

४६. और उन दोनों के बीच एक पर्दा होगा[2] और «आराफ़» पर कुछ मर्द होंगे[3] जो हर एक को उन के निशानों से पहचान लेंगे, और जन्नतियों को पुकारेंगे कि तुम पर सलामती हो, वह उस (जन्नत) में दाख़िल नहीं हो पाये

---

[1] यही बात नबी ﷺ ने बद्र के मौक़ा पर जब काफ़िर मारे गये और उन की लाशें एक कुऐं में फेंक दी गयीं, उन्हें मुख़ातब करते हुए कही: जिस पर हज़रत उमर (ﷺ) ने कहा: «आप ऐसे लोगों को मुख़ातब कर रहे हैं जो मर चुके हैं।» आप ﷺ ने फ़रमाया: «अल्लाह की क़सम! मैं उन्हे जो कुछ कह रहा हूँ, वह तुम से अधिक सुन रहे हैं, लेकिन अब वे जवाब देने की ताक़त नहीं रखते।» (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्न:, बाब अरज मक़अदिल मय्यित मिनल जन्नते अविन्नारे और बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़त्ले अबी जहल)

[2] «इन दोनों के बीच» से मुराद जन्नत व जहन्नम के बीच या ईमानवालों और काफ़िरों के बीच है, हिजाबुन (حجاب) (आड़ या पट) से दीवार मुराद है जिस का बयान सूर: हदीद में है।

[3] यह कौन होंगे? उन के निर्धारण के लिए व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) में बहुत इख़्तिलाफ़ है, ज़्यादातर मुफ़स्सिरों का ख़्याल है कि यह वे लोग होंगे जिन के सवाब और गुनाह बराबर होंगे, उन की नेकी जहन्नम में जाने से और गुनाह जन्नत में जाने से रोकेंगे, और इस तरह अल्लाह की तरफ़ से आख़िरी फ़ैसला होने तक वह अधर में लटके होंगे।

होंगे और उसकी उम्मीद रखते होंगे।

४७. और जब उन की आँखें जहन्नमियों पर पड़ेंगी तो कहेंगे कि हमारे रब हमें ज़ालिमों के साथ न करना।

وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَاءَ أَصْحَابِ النَّارِ قَالُوا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ (47)

४८. और आराफ़ वाले कुछ लोगों को जिन्हें उन के निशानों से पहचानते होंगे पुकारेंगे कि तुम्हारी जमाअत और तुम्हारा घमन्ड तुम्हारे काम नहीं आया।

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَهُم بِسِيمَاهُمْ قَالُوا مَا أَغْنَىٰ عَنكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ (48)

४९. क्या यही हैं जिन के बारे में तुम ज़ोर देकर क़सम खा रहे थे कि इन (जन्नतियों) पर अल्लाह की रहमत[1] नहीं होगी (उन से कहा जायेगा) कि जन्नत में दाखिल हो जाओ तुम पर कोई डर नहीं और न तुम ग़मगीन होगे।

أَهَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ ۚ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنتُمْ تَحْزَنُونَ (49)

५०. और जहन्नम के साथी जन्नत के साथियों को पुकारेंगे कि हम पर कुछ पानी डाल दो या अल्लाह ने तुम्हें जो रिज़्क़ अता किया है उस में से कुछ दो, वे कहेंगे अल्लाह ने दोनों को काफ़िरों के लिये हराम कर दिया है।

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ ۚ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكَافِرِينَ (50)

५१. जिन्होंने अपने दीन को मनोरंजन और खेल बना लिया और दुनियावी ज़िन्दगी ने जिन को फुसला दिया, इसलिए आज हम उन्हें भूल जायेंगे, जैसे वह इस दिन को भूल गये और हमारी आयतों को नकारते रहे।

الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهْوًا وَلَعِبًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنسَاهُمْ كَمَا نَسُوا لِقَاءَ يَوْمِهِمْ هَٰذَا وَمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ (51)

५२. और हम ने उनके पास एक किताब इल्म पर मबनी तफ़सीली बयान के साथ भेज दिया है जो हिदायत और रहमत है उन के लिये जो ईमान रखते हैं।

وَلَقَدْ جِئْنَاهُم بِكِتَابٍ فَصَّلْنَاهُ عَلَىٰ عِلْمٍ هُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ (52)

५३. क्या वह इस के आख़िरी नतीजा का इंतेज़ार कर रहे हैं?[2] जिस दिन इस का आख़िरी नतीजा

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ ۚ يَوْمَ يَأْتِي تَأْوِيلُهُ

[1] इस से मुराद ईमान वाले हैं जो दुनिया में ग़रीब, कंगाल, मजबूर और कमज़ोर तरह के लोग थे, जिन का मज़ाक बयान किये गये घमण्डी लोग उड़ाया करते थे और कहा करते थे कि अगर ये अल्लाह के प्यारे होते तो इन का दुनिया में यही हाल होता?

[2] तावील का मतलब है किसी चीज़ की हक़ीक़त और नतीजा, यानी अल्लाह की किताब के ज़रिये

يَقُولُ الَّذِينَ نَسُوهُ مِن قَبْلُ قَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ فَهَل لَّنَا مِن شُفَعَاءَ فَيَشْفَعُوا لَنَا أَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ قَدْ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿53﴾

आ जायेगा, तो जिन लोगों ने इस से पहले उसे भुला दिया, वह कहेंगे कि हमारे रब के रसूल हक़ ले कर आये, तो क्या कोई हमारा सिफ़ारिशी है जो हमारे लिये सिफ़ारिश कर दे? या हम दोबारा (दुनिया में) भेज दिये जाते तो उस के सिवाये अमल करते जो करते रहे, उन्होंने ख़ुद को नुक़सान में डाल दिया और जो बातें गढ़ते रहे उन से खो गईं।

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿54﴾

५४. बेशक तुम्हारा रब अल्लाह (तआला) ही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में बनाया, और फिर अर्श (सिंहासन) पर मुस्तवी हो गया।[1] वह रात को दिन से ऐसे छुपा देता है कि वह उसे तेज़ चाल से आ लेती है,[2] और सूरज व चाँद और सितारे को ताबे किया कि वे उसके मातहत हैं, सुन लो उसी की तख़लीक़ और उसी का हुक्म है, सारे जहाँ का रब बहुत मुबारक है।

वादा, तंबीह और जन्नत व जहन्नम का बयान कर दिया था, लेकिन ये उस दुनिया का नतीजा अपनी आँखों से देखने के इंतेज़ार में थे तो अब वह नतीजा उन के सामने आ गया।

[1] استواء (इस्तेवा) के मतलब हैं ‹उच्च› और ‹स्थिर› होना और सलफ़ ने बिना किसी दुनियावी मिसाल और बिना किसी तुलना (तश्बीह) के यही मतलब लिए हैं, यानी अल्लाह तआला अर्श पर उच्च और स्थिर है, लेकिन किस तरह, किस हालत में, इसे हम बयान नहीं कर सकते न किसी तरह की तुलना या मिसाल ही पेश कर सकते हैं। नईम बिन हम्माद का कौल है: «जिस ने भी अल्लाह की तुलना या मिसाल किसी ख़ल्क के साथ दिया उस ने भी कुफ़्र किया, और जिस ने अल्लाह की, अपने बारे में बयान करदा बात का इंकार किया उस ने भी कुफ़्र किया।» और अल्लाह के बारे में उस की या उसके रसूल ﷺ के ज़रिये बयान की गई बात को बयान करना मिसाल नहीं है, इसलिए जो बातें अल्लाह तआला के बारे में शरीअत में बयान मिलते हैं और उन की तसदीक़ होती है उन पर बिना किसी दलील या बिना हालत जाने और बिना मिसाल के ईमान रखना ज़रूरी है। (इब्ने कसीर)

[2] حثيثا (हसीसन) का मतलब है बहुत तेज़ चाल से, और मतलब है कि एक के बाद दूसरा तुरंत आ जाता है, यानी दिन का नूर आता है तो रात का अंधेरा जल्द ही ख़त्म हो जाता है और रात आती है तो दिन का नूर ख़त्म हो जाता है और दूर और नज़दीक अंधेरा छा जाता है।

५५. अपने रब को नम्रतापूर्वक (आजिज़ी) और चुपके से भी पुकारो, वह हद से बढ़ने वालों से मुहब्बत नहीं करता है।

أُدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿55﴾

५६. और धरती में सुधार के बाद बिगाड़ न पैदा करो और डर व उम्मीद के साथ उस की इबादत करो, बेशक अल्लाह की रहमत नेक लोगों से क़रीब है।[1]

وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۚ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿56﴾

५७. और वही अल्लाह है जो अपनी रहमत से पहले ख़ुशख़बरी के लिये हवायें भेजता है, यहाँ तक कि जब वह भारी बादलों को लाद कर लाती हैं तो हम उसे किसी सूखी धरती की ओर हाँक देते हैं, फिर उस से पानी की बारिश करते हैं फिर उस से हर तरह के फल निकालते हैं, हम इसी तरह मुर्दों को निकालेंगे ताकि तुम ख़्याल करो।[2]

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَاحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنَاهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَنزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۚ كَذَٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿57﴾

५८. और पाक ज़मीन अपने रब के हुक्म से अपने पौधे उपजाती है, और ख़राब (ज़मीन) बहुत कम उपज लाती है, इसी तरह हम निशानियों को कई तरह से बयान करते हैं, उन लोगों के लिए जो शुक्रिया अदा करते हैं।

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۖ وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا ۚ كَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ ﴿58﴾

५९. हम ने नूह (ﷺ) को उन की क़ौम के पास भेजा तो उन्होंने कहा, ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो उस के सिवाय कोई तुम्हारा माबूद नहीं, बेशक मैं तुम पर बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ।

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿59﴾

---

[1] इन आयतों में चार बातों की तालीम दी गयी है : १. अल्लाह (परमेश्वर) से रोकर और धीमी आवाज़ में दुआ की जाये, २. दुआ में ज़्यादती न की जाये यानी अपने पद और ताक़त से ज़्यादा दुआ न की जाये, ३. सुधार के बाद फ़साद न फैलाया जाये यानी अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी कर के फ़साद फैलाने में हिस्सा न लिया जाये, ४. उस के अज़ाब का डर भी दिल में हो और उस की रहमत की उम्मीद भी, इस तरह से दुआ करने वाले अच्छे इंसान हैं कि बेशक अल्लाह की रहमत उन के क़रीब है।

[2] जिस तरह से हम बारिश करके अक्सर मुर्दा ज़मीन में ज़िन्दगी पैदा कर देते हैं, और वह कई तरह के अनाज और फल पैदा करती है, उसी तरह क़यामत के दिन सभी इंसानों को जो मिट्टी में मिल कर मिट्टी हो चुके होंगे, हम दोबारा ज़िन्दा करेंगे और फिर उन का फ़ैसला करेंगे।

قَالَ الْمَلَأُ مِن قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿60﴾

६०. उन की क़ौम के सरदारों ने कहा कि हम आप को खुली गुमराही में देख रहे हैं।[1]

قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي ضَلَالَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿61﴾

६१. उन्होंने कहा ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं गुमराह नही, लेकिन दुनिया के रब का रसूल हूं।

أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿62﴾

६२. तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुंचाता हूं और तुम्हारी भलाई कर रहा हूं, और अल्लाह की तरफ़ से वह इल्म रखता हूं जो इल्म तुम नहीं रखते।

أَوَعَجِبْتُمْ أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿63﴾

६३. क्या तुम्हें तअज्जुब है कि तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारी क़ौम के एक मर्द पर कोई नसीहत की बात आई है ताकि तुम्हें ख़बर करे, और तुम तक़्वा बरतो और ताकि तुम पर रहम की जाये।

فَكَذَّبُوهُ فَأَنجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ﴿64﴾

६४. तो उन्होंने उन को झुठला दिया फिर हम ने नूह और उन के पैरोकारों को नाव में बचा लिया, और जो हमारी आयतें (निशानियां) नहीं माने उन्हें डूबो दिया, बेशक वह एक अंधी क़ौम थी।

وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۚ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿65﴾

६५. और आद के पास उन के भाई (रसूल) हूद को भेजा[2] उन्होंने कहा, हे मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवाय तुम्हारा कोई माबूद नहीं, क्या तुम डरते नहीं?

---

[1] शिर्क (यानी मिश्रणवाद) इंसानी अक्ल को ऐसे विकार ग्रस्त (माउफ़) कर देता है कि वह सीधे रास्ते को बुरा और बुरे को सीधा रास्ता समझने लगता है, रसूल नूह की क़ौम में भी यह भ्रम पैदा हुआ, रसूल नूह जो उन्हें तौहीद की ओर बुला रहे थे (अल्लाह की पनाह) वह उन्हें गुमराह दिख रहे थे।

[2] यह आद कौम पहले आद थे जिनका घर यमन की रेतीली पहाड़ियों में था और अपनी ताक़त और क़ूवत में बेमिसाल थे, इनकी तरफ़ उन्हीं की जाति (क़ौम) के एक आदमी हज़रत "हूद" रसूल बन कर आये।

६६. उन के क़ौम के काफ़िर प्रमुखों (सरदारों) ने कहा, हमें तुम बेवक़ूफ़ लग रहे हो, बेशक हम तुम को झूठों मे से समझते हैं।

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿66﴾

६७. उन्होंने कहा, हे मेरी क़ौम के लोगो! मुझ में बेवक़ूफ़ नहीं, लेकिन मैं दुनिया के रब का रसूल हूँ।

قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿67﴾

६८. मैं तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हारा ईमानदार ख़ैरख़्वाह हूँ।

أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ أَمِينٌ ﴿68﴾

६९. क्या तुम्हें तअज्जुब है कि तुम्हारे रब की तरफ़ से कोई उपदेश (नसीहत) की बात तुम्हीं में से एक मर्द के पास आई है ताकि वह तुम्हें बाख़बर करे, तुम याद करो जब कि (अल्लाह ने) तुम्हें नूह की क़ौम के बाद उन की जगह पर कर दिया और तुम्हारी डील-डौल को ज़्यादा कुशादा किया, इसलिए तुम अल्लाह की नेमतों को याद करो ताकि कामयाब हो जाओ।

أَوَعَجِبْتُمْ أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ قَوْمِ نُوحٍ وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْطَةً ۖ فَاذْكُرُوا آلَاءَ اللَّهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿69﴾

७०. उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिये आये हो कि हम सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करें और अपने बुज़ुर्गों के माबूदों को छोड़ दें।[1] इसलिए तुम जिस की धमकी हमें देते हो लाओ अगर तुम सच्चे हो।

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا ۖ فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿70﴾

७१. उन्होंने कहा कि तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर अज़ाब और ग़ज़ब आ ही गया, क्या तुम मुझ से कुछ ऐसे नामों के बारे में झगड़ा करते हो जो तुम ने और तुम्हारे बुज़ुर्गों ने रख लिये हैं, जिन की कोई दलील अल्लाह ने नहीं उतारी है, तुम इंतेज़ार करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ इंतेज़ार कर रहा हूँ।

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَغَضَبٌ ۖ أَتُجَادِلُونَنِي فِي أَسْمَاءٍ سَمَّيْتُمُوهَا أَنتُمْ وَآبَاؤُكُم مَّا نَزَّلَ اللَّهُ بِهَا مِن سُلْطَانٍ ۚ فَانتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ ﴿71﴾

[1] बुज़ुर्गों की पैरवी हर ज़माने में भटकावे का सबब रही है, आद के क़ौम वालों ने भी यही दलील पेश किया और मूर्तिपूजा छोड़कर तौहीद का रास्ता अपनाने के लिए तैयार नहीं हुए, बदनसीबी से मुसलमानों में भी अपने बुज़ुर्गों की पैरवी का रोग आम तौर से है।

७२. तो हम ने उसे और उस के पैरोकारों को अपनी रहमत से बचा लिया और उन लोगों की जड़ काट दी, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और वे ईमान वाले नहीं थे।[1]

فَأَنجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَمَا كَانُوا مُؤْمِنِينَ ﴿72﴾

७३. और समूद के पास उन के भाई सालेह को (भेजा), उन्होंने कहा, हे मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की इबादत करो उस के सिवाय तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से सुबूत आ गया, यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिये निशानी है, उसे अल्लाह की धरती में खाने को छोड़ दो, उसे बुराई से हाथ न लगाना कि तुम्हें दुःखद अज़ाब पकड़ ले।

وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ هَٰذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةً ۖ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ ۖ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿73﴾

७४. और तुम उन हालतों को याद करो जब (अल्लाह ने) तुम को आद (क़ौम) के बाद ख़लीफ़ा बनाया और धरती में तुम्हें रहने की जगह दी, तुम उसकी बराबर ज़मीन में घरों को बनाते हो,[2] और पहाड़ों को काट कर घर बनाते हो, तो अल्लाह की नेमतों को याद करो और ज़मीन में फ़साद करते न फिरो।

وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِن سُهُولِهَا قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا ۖ فَاذْكُرُوا آلَاءَ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿74﴾

७५. उन की क़ौम के घमन्डी सरदारों ने कहा अपने कमज़ोरों से जो ईमान लाये थे कि क्या तुम्हें यक़ीन है कि सालेह अपने रब के भेजे हुये हैं, उन्होंने कहा कि हम उस के ऊपर ईमान रखते हैं जिस के साथ उन्हें भेजा गया है।

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِ لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِمَنْ آمَنَ مِنْهُمْ أَتَعْلَمُونَ أَنَّ صَالِحًا مُّرْسَلٌ مِّن رَّبِّهِ ۚ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿75﴾

७६. घमन्डी सरदारों ने कहा कि तुम जिस के ऊपर यक़ीन करते हो हम यक़ीन नहीं रखते।

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي آمَنتُم بِهِ كَافِرُونَ ﴿76﴾

[1] इस क़ौम पर हवाओं का अज़ाब आया जो लगातार सात दिन आठ रातें चलता रहा और आद के लोगों की लाशें जिन्हें अपनी ताक़त पर बड़ा घमंड था खजूर के खोखले पेड़ की तरह धरती पर पड़े दिखाई दे रहे थे।

[2] इसका मतलब है कोमल धरती से मिट्टी लेकर ईंटें तैयार करते हो और उन ईंटों से महल तैयार करते हो, जैसे आज भी भट्टों पर इसी तरह मिट्टी से ईंटें तैयार की जाती हैं।

فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يَٰصَٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ (77)

७७. इसलिए उन्होंने ऊँटनी को क़त्ल कर दिया और अपने रब के हुक्म की नाफ़रमानी की और कहा कि हे सालेह! अगर तुम रसूल हो तो अपनी धमकी पूरी करो।

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَٰثِمِينَ (78)

७८. तो उन्हें भूकम्प ने घेर लिया और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।

فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَٰقَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلَٰكِن لَّا تُحِبُّونَ النَّٰصِحِينَ (79)

७९. वह (सालेह) उन से मुँह फेर कर चल दिये, और कहा कि हे मेरी क़ौम के लोगो! मैंने तुम को अपने रब का हुक्म पहुँचा दिया और तुम्हारा शुभचिंतक (ख़ैरख़्वाह) रहा, लेकिन तुम ख़ैरख़्वाहों से मुहब्बत नहीं करते।

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَٰحِشَةَ مَا سَبَقَكُم بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعَٰلَمِينَ (80)

८०. और (हम ने) लूत को (भेजा) जब कि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम ऐसा बुरा काम करते हो, जिसे तुम से पहले किसी ने सारी दुनिया में नहीं किया।

إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّن دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ (81)

८१. तुम मर्दों के साथ सम्भोग करते हो औरतों को छोड़ कर, बल्कि तुम तो हद से गुज़र गये हो।

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَن قَالُوا أَخْرِجُوهُم مِّن قَرْيَتِكُمْ ۖ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ (82)

८२. और उनकी क़ौम से कोई जवाब न बन पड़ा सिवाय इस के कि आपस में कहने लगे कि इन लोगों को अपनी बस्ती से निकाल दो, यह लोग बड़े पाक साफ़ बनते हैं।

فَأَنجَيْنَٰهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ الْغَٰبِرِينَ (83)

८३. तो हमने उसको (लूत) और उनके घर वालों को बचा लिया सिवाय उनकी बीवी के, कि वह उन्हीं लोगों में रही जो (अज़ाब में) रह गये थे।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ (84)

८४. और हम ने उन के ऊपर एक नयी तरह की बारिश की,[1] तो देखो तो सही कि उन मुजरिमों का क्या नतीजा हुआ ?

[1] यह ख़ास तरह की बारिश क्या थी? पत्थरों की बारिश, जिस तरह से दूसरी जगह पर फ़रमाया है :

﴿وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ مَّنضُودٍ﴾

"हम ने उन पर तह पर तह पत्थरों की बारिश बरसायी।" (सूर: हूद-८२)

८५. और (हम ने) मदयन की तरफ़ उन के भाई शुऐब को (भेजा)[1] उन्होंने कहा कि हे मेरी क़ौम के लोगो! तुम अल्लाह की इबादत करो उसके सिवाय तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारी ओर वाज़ेह निशानी आ चुकी है, बस तुम नाप-तौल पूरा-पूरा किया करो और लोगों को उनकी चीज़ें कम कर के न दो[2] और सारी धरती पर इसके बाद कि सुधार कर दिया गया फ़साद मत फैलाओ, यह तुम्हारे लिए फ़ायदेमंद है अगर तुम ईमान ले आओ।

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يَٰقَوْمِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُۥ ۖ قَدْ جَآءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَأَوْفُوا۟ ٱلْكَيْلَ وَٱلْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا۟ ٱلنَّاسَ أَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَٰحِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿85﴾

८६. और तुम हर एक रास्ते पर उन्हें धमकी देने और अल्लाह के रास्ते से रोकने के लिये जो अल्लाह पर ईमान लाये न बैठा करो, और उस में ग़लती की खोज करते हुए, और याद करो जब तुम थोड़े थे तो अल्लाह ने तुम्हें ज़्यादा कर दिया, फिर देखो कि फ़सादियों का अंजाम कैसा रहा।

وَلَا تَقْعُدُوا۟ بِكُلِّ صِرَٰطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ مَنْ ءَامَنَ بِهِۦ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَٱذْكُرُوٓا۟ إِذْ كُنتُمْ قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمْ ۖ وَٱنظُرُوا۟ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلْمُفْسِدِينَ ﴿86﴾

८७. और अगर तुम में से कुछ लोगों ने उस हुक्म पर यक़ीन किया जिस के साथ मैं भेजा गया हूँ, और कुछ ने यक़ीन नहीं किया है तो थोड़ा सब्र रखो, यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच फ़ैसला कर दे और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है।

وَإِن كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنكُمْ ءَامَنُوا۟ بِٱلَّذِىٓ أُرْسِلْتُ بِهِۦ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا۟ فَٱصْبِرُوا۟ حَتَّىٰ يَحْكُمَ ٱللَّهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ ٱلْحَٰكِمِينَ ﴿87﴾

---

[1] मदयन हज़रत इब्राहीम के बेटे और पोते का नाम था, फिर उन्हीं के वंश से सम्बन्धित क़बीले का नाम भी मदयन और जिस बस्ती में वे रहते थे उसका नाम भी मदयन पड़ा गया, इस तरह इस को क़बीले और बस्ती दोनों के लिए बोला जाता है, यह बस्ती हिजाज़ इलाक़े के रास्ते में मआन के क़रीब है, इन्हीं को क़ुरआन में दूसरे मुक़ाम पर أصحاب الأيكة (वन के निवासी) भी कहा गया है, उनकी तरफ़ हज़रत शुऐब नबी बनाकर भेजे गये। देखिये (सूर: अश-शुअरा-१७६)

टिप्पणी : हर नबी को उन की क़ौम का भाई कहा गया है, जिसका मतलब उसी क़ौम और जाति का एक इंसान है, जिसको कुछ जगह पर رسولا منهم या من أنفسهم भी कहा गया है, और मतलब उन सब का यही है कि रसूल और नबी इंसानों में से ही एक इंसान होता है जिसे अल्लाह तआला लोगों की हिदायत के लिए चुन लेता है और वह्यी के ज़रिये उस पर अपनी किताब और अहकाम उतारता है।

[2] तौहीद की दावत के बाद उस क़ौम में नाप-तौल की कमी एक बड़ी कमी थी, जिस से रोका गया और पूरा-पूरा नाप तौल कर देने की तालीम दी गई, यह बुराई भी बहुत भयानक है जिस से उस क़ौम के नैतिक (अख़लाक़ी) गिरावट का पता लगता है जिस में यह बुराई पाई जाती है, यह बुरी ख़्यानत है कि पैसे तो पूरे लिये जायें और चीज़ कम दी जाये, इसलिए सूर: मुतफ़्फ़िफ़ीन में ऐसे ही लोगों के लिए तबाही की धमकी दी गई है।

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ يَا شُعَيْبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِن قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كَارِهِينَ ﴿88﴾

८८. उनकी क़ौम के घमण्डी सरदारों ने कहा हे शुऐब! हम तुम्हें और जो तुम्हारे साथ ईमान लाये हैं उनको जरूर अपने नगरों से निकाल देंगे वरन् तुम फिर हमारे धर्म में आ जाओ, उन्होंने कहा कि जबकि हम उस से घिन करते हों।

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُم بَعْدَ إِذْ نَجَّانَا اللَّهُ مِنْهَا ۚ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَن نَّعُودَ فِيهَا إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا ۚ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ﴿89﴾

८९. हम तो अल्लाह पर झूठ का आरोपण करेंगे अगर हम तुम्हारे धर्म में फिर से आ गये जबकि अल्लाह ने हमें उससे आज़ाद कर दिया है और हमारे लिये उस में फिर से आ जाना मुमकिन नहीं, लेकिन यह कि अल्लाह चाहे जो हमारा रब है। हमारे रब ने हर चीज़ को अपने इल्म की परिधि (इहाते) में ले रखा है, हम ने अपने अल्लाह पर ही भरोसा कर लिया, हे हमारे रब! हमारे और हमारे लोगों के बीच फ़ैसला कर दे सच्चाई के साथ और तू सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है।

وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ إِذًا لَّخَاسِرُونَ ﴿90﴾

९०. और उनकी क़ौम के काफ़िर सरदारों ने कहा कि अगर तुम ने शुऐब की इताअत की तो उस वक़्त तुम बेशक नुक़सान उठाने वाले हो जाओगे।[1]

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ﴿91﴾

९१. तो उनको भूकम्प ने आ पकड़ा, इसलिए वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।[2]

---

[1] अपने बुज़ुर्गों के दीन को छोड़ना और माप-तौल में कमी न करना, यह उन के नज़दीक नुक़सान वाली बात थी, सच्चाई यह थी कि इस में उन्हीं का फ़ायेदा था, लेकिन दुनिया वालों की नज़र में फ़ायेदा ही सभी कुछ होता है, जो माप-तौल में डंडी मारने से उन्हें मिल रहा था, वह ईमानवालों के दीर्घगामी (मुस्तक़िल) फ़ायदे के लिए उसे क्यों छोड़ते?

[2] यहाँ رَجْفَة (रजफ़:) आया है, जिसका मतलब भूकम्प (ज़लज़ला) है, और सूर: हूद आयत नं॰ ९४ में صَيْحَة लफ़्ज़ जिसका मतलब "चीख़" इस्तेमाल हुआ है। इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि अज़ाब में यह सब हुआ, यानी छाया वाले दिन अज़ाब आया, सब से पहले बादलों की छाया में आग के शोले चिंगारियाँ, फिर आकाश से बहुत तेज़ गर्जन हुई और धरती में भूकम्प आया, जिस की वजह से उनकी आत्माओं (रूहों) ने शरीर छोड़ दिया और अजीवित लाश बन कर पक्षियों की तरह घुटनों में मुँह देकर औंधे के औंधे पड़े रह गये।

९२. जिन्होंने शुऐब को झुठलाया, उनकी यह हालत हो गयी कि जैसे उन (घरों) में कभी बसे ही नहीं थे, जिन्होंने शुऐब को झुठलाया वही नुक़सान में पड़ गये।	الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا هُمُ الْخَاسِرِينَ ﴿92﴾
९३. उस वक़्त शुऐब उन से मुंह मोड़ कर चले और कहने लगे कि हे मेरी क़ौम के लोगो! मैंने अपने रब का पैग़ाम तुम्हें पहुंचा दिया और मैंने तुम्हारी शुभचिन्ता (ख़ैरख़्वाही) की, फिर मै उन काफिरों पर दुखी क्यों हूं?	فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۖ فَكَيْفَ آسَىٰ عَلَىٰ قَوْمٍ كَافِرِينَ ﴿93﴾
९४. और हम ने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा कि वहां के निवासियों को हम ने रोग और तकलीफ़ से पकड़ा न हो, ताकि वे गिड़गिड़ायें (विनती करें)।	وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا أَخَذْنَا أَهْلَهَا بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُونَ ﴿94﴾
९५. फिर हम ने उस दरिद्रता को ख़ुशहाली से बदल दिया, यहां तक कि जब वे ख़ुशहाल हो गये और कहने लगे कि हमारे बुज़ुर्गों को भी तंगी और तरक्की का सामना करना पड़ा, तो हम ने अचानक उन को पकड़ लिया और उन को ख़बर भी न थी।	ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّىٰ عَفَوا وَّقَالُوا قَدْ مَسَّ آبَاءَنَا الضَّرَّاءُ وَالسَّرَّاءُ فَأَخَذْنَاهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿95﴾
९६. और अगर उन नगरों के रहने वाले ईमान लाते और परहेज़गारी बरतते तो हम आसमान और ज़मीन की बरकतों के दरवाज़े उन पर खोल देते, लेकिन उन्होंने झुठलाया तो हम ने उन्हें उन के बुराईयों के सबब पकड़ लिया।	وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِن كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُم بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿96﴾
९७. क्या फिर भी इन बस्तियों के रहने वाले इस बात से बेफ़िक्र हो गये हैं कि उन पर हमारा अज़ाब रात के वक़्त आ पड़े जिस वक़्त वह नींद में हों।	أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُم بَأْسُنَا بَيَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿97﴾
९८. और क्या उन बस्तियों के रहने वाले इस बात से बेफ़िक्र हो गये हैं? कि उन पर हमारा अज़ाब दिन चढ़े में आये जिस वक़्त वे खेलों में मसरूफ़ हों।	أَوَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُم بَأْسُنَا ضُحًى وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿98﴾

أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ ۚ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ (99)

९९. क्या वह अल्लाह की योजना से बेख़ौफ़ हो गये, सो अल्लाह की योजना से नुक़सान वाले लोग[1] ही बेख़ौफ़ होते हैं।

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ أَهْلِهَا أَنْ لَوْ نَشَاءُ أَصَبْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ (100)

१००. तो क्या जो लोग धरती में उस के रहने वालों की तबाही के बाद वारिस बने हैं उन्हें इल्म नहीं हुआ कि अगर हम चाहें तो उनके गुनाहों के सबब उन्हें मुसीबत में डाल दें और उन के दिलों पर बन्द लगा दें फिर वे सुन न सकें।[2]

تِلْكَ الْقُرَىٰ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَائِهَا ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِنْ قَبْلُ ۚ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْكَافِرِينَ (101)

१०१. इन नगरों की कुछ घटनायें हम आप को बता रहे हैं और उन के रसूल उन के पास दलील सहित आये फिर भी जिसे उन्होंने पहले नहीं माना उसे फिर मानने लायक़ न हुये, इसी तरह अल्लाह काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगा देता है।

وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِمْ مِنْ عَهْدٍ ۖ وَإِنْ وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ (102)

१०२. और हम ने उन के ज़्यादातर लोगों को अहद का पालन करते नहीं पाया और हम ने उन में से ज़्यादातर को फ़ासिक़ पाया।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا بِهَا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ (103)

१०३. फिर उन के बाद हम ने (रसूल) मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उस के सरदारों के पास भेजा,[3] तो उन्होंने उनका हक़ पूरा न किया, फिर देखो कि फ़ासिदियों का

---

[1] इन आयतों में अल्लाह तआला ने सब से पहले यह बयान किया है कि ईमान (विश्वास) और तक़्वा ऐसा विषय है कि जिस बस्ती के लोग उसे अपना लें उस पर अल्लाह तआला आकाश और धरती के धन-सम्पत्तियों के दरवाज़े खोल देता है, यानी आवश्यकतानुसार आकाश से वर्षा करता है और धरती को उस से सिंचाई करके उपज को बढ़ाता है। नतीजतन तरक्की और ख़ुशहाली होती है, लेकिन इसके ख़िलाफ़ झुठलाने वाले और कुफ़्र का रास्ता अपनाने वाली क़ौम अल्लाह के अज़ाब के अधिकारी (मुस्तहिक़) होते हैं, फिर मालूम नहीं होता कि रात-दिन किस वक़्त अज़ाब आ पड़े और खेलती-खाती इस बस्ती को एक पल में खण्डहर बना कर रख दे, इसलिए अल्लाह के इन अज़ाबों से बेफ़िक्र नहीं होना चाहिए, इस बेफ़िक्री का नतीजा सिर्फ़ नुक़सान के सिवा कुछ नहीं। مَكْر (मकर) के मतलब के लिए देखिए सूर: आले इमरान आयत ५४ की तफ़सीर।

[2] यानी गुनाहों के नतीजे में केवल अज़ाब ही नहीं आता है, दिलों पर भी ताले लग जाते हैं। फिर बड़े से बड़े अज़ाब भी उनको बेख़ौफ़ी की नींद से नहीं जगा सकते।

[3] यहाँ से मूसा का बयान शुरू हो रहा है, जो बयान किये गये नबियों के बाद आये, जो बहुत बड़े सम्मानित (इज़्ज़त वाले) पैग़म्बर थे, जिन्हें मिस्र के फ़िरऔन और उसकी जनता के पास निशानियाँ और मोजिज़े दे कर भेजा गया था।

अंजाम कैसा रहा।

१०४. और मूसा ने फ़रमाया: ऐ फ़िरऔन! मैं सारी दुनिया के रब की तरफ़ से पैग़म्बर हूँ।

وَقَالَ مُوسَىٰ يَٰفِرۡعَوۡنُ إِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ﴿104﴾

१०५. मेरे लिए यही बेहतर है कि सच के सिवाय अल्लाह पर कोई बात न बोलूँ, मैं तुम्हारे रब की तरफ़ से एक बड़ी निशानी भी लाया हूँ, इसलिए तू इस्राईल की औलाद को मेरे साथ भेज दे।[1]

حَقِيقٌ عَلَىٰٓ أَن لَّآ أَقُولَ عَلَى ٱللَّهِ إِلَّا ٱلۡحَقَّۚ قَدۡ جِئۡتُكُم بِبَيِّنَةٖ مِّن رَّبِّكُمۡ فَأَرۡسِلۡ مَعِيَ بَنِيٓ إِسۡرَٰٓءِيلَ ﴿105﴾

१०६. उस (फ़िरऔन) ने कहा अगर आप कोई मोजिज़ा लेकर आये हैं तो उसे पेश कीजिए, अगर आप सच्चे हैं।

قَالَ إِن كُنتَ جِئۡتَ بِـَٔايَةٖ فَأۡتِ بِهَآ إِن كُنتَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿106﴾

१०७. फिर आप ने अपनी छड़ी डाल दी तो अचानक वह एव साफ़ अजगर साँप बन गया।

فَأَلۡقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعۡبَانٞ مُّبِينٞ ﴿107﴾

१०८. और अपना हाथ बाहर निकाला तो वह अचानक सभी देखने वालों के सामने बहुत ही चमकता हुआ हो गया।

وَنَزَعَ يَدَهُۥ فَإِذَا هِيَ بَيۡضَآءُ لِلنَّٰظِرِينَ ﴿108﴾

१०९. फ़िरऔन की क़ौम के सरदारों ने कहा कि यह बड़ा माहिर जादूगर है।

قَالَ ٱلۡمَلَأُ مِن قَوۡمِ فِرۡعَوۡنَ إِنَّ هَٰذَا لَسَٰحِرٌ عَلِيمٞ ﴿109﴾

११०. वह तुम्हें तुम्हारे देश से निकलना चाहता है फिर तुम लोग क्या विचार देते हो?

يُرِيدُ أَن يُخۡرِجَكُم مِّنۡ أَرۡضِكُمۡۖ فَمَاذَا تَأۡمُرُونَ ﴿110﴾

१११. उन्होंने कहा कि आप उसे और उस के भाई को वक़्त दीजिए और नगरों में इकट्ठा करने वालों को भेज दीजिए।

قَالُوٓاْ أَرۡجِهۡ وَأَخَاهُ وَأَرۡسِلۡ فِي ٱلۡمَدَآئِنِ حَٰشِرِينَ ﴿111﴾

---

[1] इस्राईल की औलाद जिनका मूल निवास सीरिया का इलाक़ा था, हज़रत यूसुफ़ के वक़्त में मिस्र चली गयी थी फिर वहीं के निवासी हो गये। फ़िरऔन ने उन्हें दास बना लिया था और उन पर तरह-तरह के ज़ुल्म करता था जिसका तफ़सीली बयान सूर: अल बक़र: में गुज़र चुका है और आगे भी आयेगा। फ़िरऔन और उस के दरबार के मंत्रियों ने जब हज़रत मूसा की दावत को ठुकरा दिया तो हज़रत मूसा ने दूसरी माँग की कि इस्राईल की औलाद को आज़ाद कर दे ताकि यह अपने असल मकान पर जाकर मान-सम्मान की ज़िन्दगी गुज़ारें और अल्लाह की इबादत करें।

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَٰحِرٍ عَلِيمٍ ﴿112﴾

११२. कि वे सभी माहिर जादूगरों को आप के सामने लाकर हाज़िर करें।[1]

وَجَآءَ ٱلسَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوٓا۟ إِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ ٱلْغَٰلِبِينَ ﴿113﴾

११३. और जादूगर फ़िरऔन के पास आये और कहा कि अगर हम सफल हो गये तो क्या हमारे लिए कोई बदला है?

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ ٱلْمُقَرَّبِينَ ﴿114﴾

११४. उस ने कहा हाँ, और तुम सब क़रीबी लोगों में हो जाओगे।[2]

قَالُوا۟ يَٰمُوسَىٰٓ إِمَّآ أَن تُلْقِىَ وَإِمَّآ أَن نَّكُونَ نَحْنُ ٱلْمُلْقِينَ ﴿115﴾

११५. उन (जादूगरों) ने कहा कि ऐ मूसा ! चाहे आप डालिए या हम ही डालें।

قَالَ أَلْقُوا۟ ۖ فَلَمَّآ أَلْقَوْا۟ سَحَرُوٓا۟ أَعْيُنَ ٱلنَّاسِ وَٱسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَآءُو بِسِحْرٍ عَظِيمٍ ﴿116﴾

११६. (मूसा ने) कहा कि तुम ही डालो तो जब उन्होंने डाला तो लोगों की नज़रबन्दी कर दी और उनको डरा दिया, और एक तरह का बड़ा जादू दिखाया।

وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۖ فَإِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿117﴾

११७. और हम ने मूसा को हुक्म किया कि अपनी छड़ी डाल दो, फिर वह अचानक उन के स्वांग (ढोंग) को निगलने लगी।

فَوَقَعَ ٱلْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿118﴾

११८. अत: सच ज़ाहिर हो गया और उन्होंने जो कुछ बनाया था सब जाता रहा।

---

[1] हज़रत मूसा के वक़्त में जादूगरों की बड़ी इज़्ज़त थी, इसीलिए हज़रत मूसा के पेश किये मोजिज़े को भी उन्होंने जादू समझा और जादू के ज़रिये उस के काट की योजना बनायी, जिस तरह से दूसरे मुक़ाम पर फ़रमाया कि फ़िरऔन और उस के दरबारियों ने कहा, "हे मूसा ! क्या तू चाहता है कि अपने जादू की ताक़त से हमें अपनी धरती से निकाल दे, और हम भी इस जैसा जादू इस के मुक़ाबिले में लायेंगे, इस के लिए किसी ख़ास मुक़ाम और वक़्त का मुक़र्रर हम ख़ुद करें जिसका दोनों पालन करें। हज़रत मूसा ने कहा कि नौरोज़ का दिन और चाश्त का वक़्त है, इस हिसाब से लोग जमा हो जायें।" (सूर: ताहा- ५७ से ५९)

[2] जादूगर चूँकि दुनिया पाने की तमन्ना रखते थे, इसलिए उन्होंने जादू की तालीम ली थी, इसलिए अच्छा मौक़ा देखा कि राजा को हमारी ज़रूरत हुई है, क्यों न मौक़ा का फ़ायेदा उठा कर ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायेदा उठायें। इसलिए उन्होंने कामयाबी के बाद उसके बदले में मांग पेश कर दी, जिस पर फ़िरऔन ने कहा कि केवल धन ही नहीं मिलेगा बल्कि हमारे क़रीबी लोगों में शामिल हो जाओगे।

فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ﴿119﴾

११९. अत: वह लोग इस मौक़ा पर हार गये और बहुत जलील होकर फिरे।

وَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿120﴾

१२०. और जादूगर सज्दे में गिर गये।

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿121﴾

१२१. कहने लगे हम ईमान लाये सारी दुनिया के रब पर।

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿122﴾

१२२. जो मूसा और हारून का भी रब है।[1]

قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِى الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿123﴾

१२३. फ़िरऔन ने कहा तुम उस (मूसा) पर ईमान मेरे हुक्म से पहले ले आए, बेशक यह एक साज़िश है जो तुम ने नगर में उस के निवासियों को उस से निकालने के लिये रच लिया है, अत: तुम्हें जल्द पता चल जायेगा।

لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿124﴾

१२४. मैं तुम्हारे एक तरफ़ का हाथ और दूसरे तरफ़ की टाँग काटूँगा, फिर तुम सब को फाँसी पर लटका दूँगा।

قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿125﴾

१२५. (उन्होंने) जवाब दिया कि हम (मर कर) अपने रब के पास ही जायेंगे।[2]

وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ۚ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿126﴾

१२६. और तुम ने हम में यही बुराई तो देखा है कि हम ने अपने रब की आयतों (लक्षणों) पर यक़ीन कर लिया जब वह हमारे पास आ गईं, हे हमारे रब! हम पर सब्र उंडेल दे और हमें मुसलमान ही रहते हुए मौत दे।

---

[1] जादूगरों ने, जो जादू की कला और उसकी असली हक़ीक़त को जानते थे, यह देखा तो समझ गये कि मूसा ने जो कुछ यहाँ पेश किया है जादू नहीं है, यह हक़ीक़त में अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह की मदद से ही यह मोजिज़ा पेश किया है जिस ने एक पल में हम सभी की कला पर पानी फेर दिया, इसलिए उन्होंने मूसा पर ईमान लाने का एलान कर दिया, इससे यह बात वाज़ेह हो गयी कि झूठ-झूठ है, चाहे उस पर कितने ही ख़ूबसूरत कपड़े चढ़ा दिये जायें और सच-सच ही है, चाहे उस पर कितने ही पट डाल दिये जायें, आख़िर में जीत सच की होती है।

[2] इसका मतलब यह है कि अगर तू हमारे साथ ऐसा सुलूक करेगा तो तुझे भी इस बात के लिए तैयार रहना चाहिए कि क़यामत वाले दिन अल्लाह तआला तुझे इस गुनाह की सख़्त सज़ा देगा, इसलिए कि हम सभी को मरकर उसी के पास जाना है, उसकी सज़ा से कौन बच सकता है? यानी फ़िरऔन को दुनिया के अज़ाब के मुक़ाबले आख़िरत के अज़ाब से डराया गया है।

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَذَرُ مُوسَىٰ وَقَوْمَهُ لِيُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَيَذَرَكَ وَآلِهَتَكَ ۚ قَالَ سَنُقَتِّلُ أَبْنَاءَهُمْ وَنَسْتَحْيِي نِسَاءَهُمْ وَإِنَّا فَوْقَهُمْ قَاهِرُونَ ﴿127﴾

१२७. और फ़िरऔन की जाति के सरदारों ने कहा कि क्या आप मूसा और उसकी जाति को यूं ही रहने देंगे ताकि धरती पर फ़साद करें,[1] और आप को और आप के देवताओं को छोड़ दें, उस ने कहा हम उनके बेटों को क़त्ल करेंगे और उनकी औरतों को जिन्दा रहने देंगे, और हम उन पर प्रभावी (ग़ालिब) हैं।

قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ وَاصْبِرُوا ۖ إِنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿128﴾

१२८. मूसा ने अपनी जाति से कहा कि अल्लाह (तआला) की मदद लो और सब्र रखो यह धरती अल्लाह (तआला) की है, वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है उसका वारिस बना देता है और आख़िरी कामयाबी उन्हीं की होती है जो अल्लाह से डरते हैं।[2]

قَالُوا أُوذِينَا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۚ قَالَ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يُهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿129﴾

१२९. उन्होंने कहा कि आप के आने से पहले भी[3] हमें कष्ट दिया गया और आप के आने के बाद भी, उन्होंने कहा कि जल्द ही तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मनों को बरबाद कर देगा और इस धरती की विरासत तुम को देगा फिर यह देखेगा कि तुम्हारा अमल कैसा है?

وَلَقَدْ أَخَذْنَا آلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِينَ وَنَقْصٍ مِنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿130﴾

१३०. और हम ने फ़िरऔन की आल को सूखे और फलों की कमी के ज़रिये घेर लिया ताकि वह नसीहत हासिल कर लें।[4]

---

[1] यह हर दौर के गुमराहों का काम रहा है कि वे ईमानवालों को फ़सादी और उन के ईमान की दावत और एकेश्वरवाद (तौहीद) को फ़साद से मुवाज़ना करते हैं फ़िरऔन के पैरोकारों ने भी यही किया।

[2] जब फ़िरऔन की तरफ़ से दोबारा ज़ुल्म शुरू हुआ तो हज़रत मूसा ने अपनी जाति के लोगों को अल्लाह की मदद हासिल करने और सब्र करने की शिक्षा दी कि अगर तुम सच्चे रास्ते पर रहे तो आख़िर में धरती का राज्य तुम्हें ही हासिल होगा।

[3] यह इशारा उन ज़ुल्मों (अत्याचारों) की तरफ़ है जो मूसा के जन्म से पहले उन पर होते रहे।

[4] फ़िरऔन की औलाद से मुराद फ़िरऔन के पैरोकार हैं और सेनीन (سنين) से अकाल या सूखा यानी बारिश की कमी और पेड़ों में कीड़े लग जाने के सबब पैदावार में कमी है, इस इम्तेहान से मक़सद यह था कि शायद वह इस ज़ुल्म और घमण्ड से रुक जायें जिस में वे मुब्तिला हैं।

१३१. अगर उन के पास भलाई आती है तो कहते हैं कि यह हमारे लिए होना ही चाहिए और अगर परेशानी आती है तो मूसा और उनके पैरोकारों से अपशगुन लेते हैं,[1] सुन लो उन का अपशगुन अल्लाह के पास है[2] लेकिन उन में ज़्यादातर लोग नहीं जानते।

فَإِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَنَا هٰذِهٖ ۚ
وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوا بِمُوسٰى
وَمَنْ مَّعَهٗ ۗ أَلَآ إِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ
اللّٰهِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ (131)

१३२. और उन्होंने कहा, कि हमारे पास जो भी निशानी हम पर जादू चलाने के लिये लाओ हम तुम्हारा यक़ीन नहीं करेंगे।

وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ
فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ (132)

१३३. फिर हम ने उन पर तूफ़ान और टिड्डियाँ और जूयें और मेढक और ख़ून भेजा अलग-अलग निशानियाँ,[3] फिर उन्होंने अहंकार किया और वह मुजरिम लोग थे।

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ
وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۚ
فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ (133)

---

[1] حَسَنَة (हसन:) से मुराद अनाज और फलों की बहुतायत और سَيِّئَة का मतलब है बुराई, जिस से मुराद हसन: के ख़िलाफ़ अकाल, सूखा और पैदावार में कमी है।

[2] طائر का मतलब है "उड़ने वाला" यानी पक्षी। क्योंकि वे लोग पक्षी के दायें और बायें उड़ने से शुभ और अशुभ लिया करते थे, इसलिए यह कलिमा पूरी तरह से 'फ़ालनामा' के लिए इस्तेमाल होने लगा और यहाँ यह इसी मतलब में इस्तेमाल हुआ है।

[3] तूफ़ान से मुराद है बाढ़, बहुत ज़्यादा वर्षा, जिस से हर चीज़ डूब गयी या मुर्दों की ज़्यादा तादाद है, जिस से हर घर में दुख के बादल छा गये। جراد (जराद) टिड्डी को कहते हैं। टिड्डी दल का हमला फसलों की बरबादी का सूचक है और इस के लिए मशहूर है, ये टिड्डियाँ उन की फसलों और फलों को खाकर चट कर जातीं। قُمَّل (क़ुम्मल) से मुराद जूं जो इंसान के शरीर और कपड़ों और बालों में हो जाती हैं या घुन का कीड़ा जो अनाज में लग जाता है, तो उस के ज़्यादातर हिस्से को ख़त्म कर देता है। जूं से इंसान को नफ़रत भी होती है और उसकी अधिकता से बहुत कठिनाई भी, और जब यह अज़ाब के रूप में हो तो उसकी कठिनाई का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। इस तरह घुन का अज़ाब भी अर्थिक स्थिति को खोखला कर देने के लिए काफ़ी है। ضَفَادِع अरबी भाषा में ضِفدع (ज़िफ़दअ) का बहुवचन (जमा) है। यह मेंढक को कहते हैं, जो पानी, धरती और झोपड़ियों के छप्परों में रहता है, यह मेंढक उन के भोजन मे, बिस्तरों पर, रखे हुए अनाजों में यानी हर जगह पर और हर तरफ़ मेंढक ही मेंढक हो गये, जिस से उनका खाना-पीना सोना और आराम करना कठिन हो गया। دَم (दम) का मतलब ख़ून है, जिसका मतलब है कि पानी का ख़ून बन जाना, इस तरह पानी पीना उन के लिए नामुमकिन हो गया। कुछ ने ख़ून का मतलब नकसीर का रोग लिया है यानी हर इंसान की नाक से ख़ून जारी हो गया। آيات مُفَصَّلات यह स्पष्ट (वाज़ेह) और अलग-अलग चमत्कार (मोजिज़े) थे, जो समय-समय से उन के पास आये।

१३४. और जब उन पर कोई अज़ाब आता तो कहते कि हे मूसा ! हमारे लिये अपने रब से उस वादे के ज़रिये जो आप को दिया दुआ कर दीजिये, अगर आप ने हम से अज़ाब दूर कर दिया तो हम ज़रूर आप पर ईमान ले आयेंगे और आप के साथ इस्राईल के बेटों को भेज देंगे।

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا يٰمُوسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ ﴿134﴾

१३५. फिर जब हम उन से उस अज़ाब को एक ख़ास वक़्त तक कि उस तक उनको पहुँचना था, हटा देते तो वे तुरंत वचन भंग (अहद शिकनी) करने लगते।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ إِلَىٰٓ أَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوهُ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ﴿135﴾

१३६. फिर हम ने उन से बदला लिया यानी उनको समुद्र में डूबो दिया, इस वजह से कि वे हमारी निशानियों को झुठलाते थे और उन से बहुत असावधानी (ग़फ़लत) बरतते थे।

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غٰفِلِينَ ﴿136﴾

१३७. और हम ने उन लोगों को जो बहुत कमज़ोर गिने जाते थे उस धरती के पूरब और पश्चिम का मालिक बना दिया जिस में हम ने बरकतें रखी हैं, और आप के रब का नेक वादा बनी इस्राईल के बारे में उन के सब्र के सबब पूरा हो गया और हम ने फ़िरऔन और उस की क़ौम के बनाये गये कारख़ानों को और जो ऊँचे मकान तामीर करते थे सब को तहस-नहस कर दिया।[1]

وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضْعَفُونَ مَشٰرِقَ الْأَرْضِ وَمَغٰرِبَهَا الَّتِي بٰرَكْنَا فِيهَا ۖ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنَىٰ عَلَىٰ بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ ۙ بِمَا صَبَرُوا ۖ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهُ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ ﴿137﴾

१३८. और हम ने बनू इस्राईल (इस्राईल के बेटों) को समुद्र के पार उतार दिया, फिर उन का एक ऐसी जाति पर गुज़र हुआ जो अपने कुछ बुतों (प्रतिमाओं) से लगे बैठे थे, कहने लगे कि हे मूसा ! हमारे लिये भी एक ऐसा ही पूज्य

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَوْا عَلَىٰ قَوْمٍ يَعْكُفُونَ عَلَىٰٓ أَصْنَامٍ لَهُمْ ۚ قَالُوا يٰمُوسَى اجْعَلْ لَنَآ إِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ ۚ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿138﴾

---

[1] उद्योग से मुराद कल-कारख़ाने, मकान और हथियार वग़ैरह है, और يعرشون "जो वह ऊँचा उठाते थे" से मुराद ऊँचे-ऊँचे घर भी हो सकते हैं और अंगूरों आदि की लतायें भी जो वह छप्परों पर चढ़ाते थे। मतलब यह हुआ कि उन के शहरों के ऊँचे-ऊँचे मकान, उद्योग, हथियार और दूसरे सामान भी बरबाद कर दिया और उन के बाग़ भी।

मुक़र्रर कर दीजिए, जैसे उन के यह देवता हैं आप ने फ़रमाया: हक़ीक़त में तुम लोगों में बड़ी जिहालत है।[1]

إِنَّ هَٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيهِ وَبَٰطِلٌ مَّا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿139﴾

१३९. यह लोग जिस काम में लगे हुए हैं वह नाश कर दिया जायेगा और उनका यह काम सिर्फ़ वातिल (ग़लत) है।

قَالَ أَغَيْرَ ٱللَّهِ أَبْغِيكُمْ إِلَٰهًا وَهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿140﴾

१४०. फ़रमाया कि क्या अल्लाह (परमेश्वर) के सिवाय और किसी को तुम्हारा माबूद मुक़र्रर कर दूँ, अगरचे उस ने सारे जहाँ वालों पर तुम्हें प्रधानता (फ़ज़ीलत) दी है।

وَإِذْ أَنجَيْنَٰكُم مِّنْ ءَالِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوٓءَ ٱلْعَذَابِ ۖ يُقَتِّلُونَ أَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَآءَكُمْ ۚ وَفِى ذَٰلِكُم بَلَآءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿141﴾

१४१. और वह वक़्त याद करो जब हम ने तुम्हें फ़िरऔन के पैरोकारों से बचा लिया जो तुम्हें कड़ी सज़ायें देते थे, तुम्हारे बेटों को क़त्ल कर देते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा छोड़ देते थे और इस में तुम्हारे रब की तरफ़ से भारी आज़माईश थी।

وَوَٰعَدْنَا مُوسَىٰ ثَلَٰثِينَ لَيْلَةً وَأَتْمَمْنَٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيقَٰتُ رَبِّهِۦٓ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوسَىٰ لِأَخِيهِ هَٰرُونَ ٱخْلُفْنِى فِى قَوْمِى وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ ٱلْمُفْسِدِينَ ﴿142﴾

१४२. और हम ने मूसा को तीस रात का वादा दिया और दस ज़्यादा रात से उसको पूरा किया, इस तरह उन के रब का वक़्त पूरा चालीस रात का हो गया, और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, मेरे (जाने के) वाद इन (क़ौम) का इंतेज़ाम (प्रबन्ध) करना और सुधार करते रहना और फ़सादी लोगों के रास्ते की इत्तेबा न करना।[2]

---

[1] इस से बड़ी जिहालत और बेवक़ूफ़ी और क्या होगी कि जिस अल्लाह ने उन्हें फ़िरऔन जैसे बड़े दुश्मन से न केवल आज़ादी दिलाई बल्कि उनकी आँखों के सामने उसे उसकी सेना के साथ डूबो दिया और उन्हें मोजिज़ा से समुद्र पार करा दिया। वे समुद्र के पार करते ही अल्लाह को भूल कर ख़ुद बनाये गये देवता खोजने लगे, कहते हैं यह मूर्तियाँ गाय की शक्ल की थीं, जो पत्थर की बनी थीं।

[2] हज़रत हारून ख़ुद नबी थे, सुधार करना उन की ज़िम्मेदारी में शामिल था, हज़रत मूसा ने सिर्फ़ चेतावनी और सावधानी के लिये यह नसीहतें दीं यहाँ मीक़ात से मुराद मुक़र्रर समय है।

१४३. और जब मूसा हमारे वक़्त पर आये और उन के रब ने उन से बातें की तो उन्होंने विनय (अर्ज़) किया कि हे मेरे रब ! मुझे अपना दीदार करा दे मैं तुझे एक पल देख लूँ, आदेश हुआ कि तुम मुझको कभी भी नहीं देख सकोगे, लेकिन तुम इस पहाड़ की तरफ़ देखते रहो, अगर वह अपनी जगह पर खड़ा रहा तो तुम भी मुझे देख सकोगे, फिर उन के रब ने जब उस पर रौशनी डाली तो तजल्ली (प्रकाश) ने उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया, और मूसा बेहोश होकर गिर पड़े, फिर जब होश में आये तो कहा कि बेशक आप पाक हैं, मैं आप से तौबा करता हूँ और मैं सब से पहले आप पर ईमान लाता हूँ।

وَلَمَّا جَآءَ مُوسٰى لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ أَرِنِيٓ أَنظُرْ إِلَيْكَ ۚ قَالَ لَن تَرٰىنِي وَلٰكِنِ انظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِي ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ مُوسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ أَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا۠ أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿143﴾

१४४. हुक्म हुआ कि हे मूसा! मैंने अपनी रिसालत और अपने साथ कलाम से दूसरे लोगों पर तुम्हें फ़ज़ीलत दी है तो जो कुछ मैं ने तुम को अता किया है उसे ले लो और शुक्र करो।[1]

قَالَ يٰمُوسٰىٓ إِنِّي اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِي وَبِكَلٰمِي ۖ فَخُذْ مَآ ءَاتَيْتُكَ وَكُن مِّنَ الشّٰكِرِينَ ﴿144﴾

१४५. और हम ने कुछ तख़्तियों पर हर तरह की नसीहतें और हर चीज़ की तफ़सील उन को लिख कर दिया,[2] तुम उनको पूरी ताक़त से पकड़ लो, और अपनी क़ौम को हुक्म करो कि उन के अच्छे हुक्मों पर अमल करें, अब बहुत जल्द तुम लोगों को उन फ़ासिकों की जगह दिखाता हूँ।[3]

وَكَتَبْنَا لَهٗ فِي الْأَلْوَاحِ مِن كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَأْمُرْ قَوْمَكَ يَأْخُذُوا بِأَحْسَنِهَا ۚ سَأُورِيكُمْ دَارَ الْفٰسِقِينَ ﴿145﴾

[1] यह अल्लाह तआला से कलाम का दूसरा मौक़ा था जिससे हज़रत मूसा को सम्मानित (सरफ़राज़) किया गया। इस से पहले जब आग लेने गये थे तो अल्लाह तआला से बातचीत हुई थी और रिसालत अता की गई थी।

[2] यानी तौरात तख़्तियों की शक्ल में अता की गयी थी, जिस में उन के लिए धर्मिक आदेश थे, कहने और करने के और शिक्षा-दीक्षा (तालीम व नसीहत) का पूरा बयान था।

[3] دار (दार) से मुराद या तो नतीजा यानी तबाही है, या इस से मुराद यह है कि ज़ालिमों के देश पर तुम्हें राज दूँगा, और इस से मुराद सीरिया देश है जिस पर उस वक़्त अमालिका का राज्य था जो अल्लाह के नाफ़रमान थे।

سَأَصْرِفُ عَنْ آيَاتِيَ الَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَإِن يَرَوْا كُلَّ آيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوا بِهَا وَإِن يَرَوْا سَبِيلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا وَإِن يَرَوْا سَبِيلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ (146)

१४६. मैं ऐसे लोगों को अपनी आयतों से विमुख ही रखूँगा जो दुनिया में तकब्बुर करते हैं, जिस का उन्हें कोई हक़ नहीं, अगर वह सभी निशानियाँ (लक्षण) देख भी लें तब भी उन पर यक़ीन नहीं करेंगे, और अगर वे सच्चे रास्ते को देख भी लें तो उसे अपना रास्ता न बनायें, और अगर वे गुमराही को देख लें तो उसको अपना रास्ता बना लें, यह इस वजह से है कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उन से ग़ाफ़िल रहे।[1]

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (147)

१४७. और वह लोग जिन्होंने हमारी आयतों और प्रलय (आख़िरत) के आने को झुठलाया, उन के सब अमल बेकार हो गये, उन्हें वही यातना दी जायेगी जो ये करते थे।[2]

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَىٰ مِن بَعْدِهِ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ ۚ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا ۘ اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظَالِمِينَ (148)

१४८. और मूसा की क़ौम ने उन के बाद अपने आभूषणों से एक बछड़ा बना कर देवता बना लिया जो एक ढाँचा था जिस में एक आवाज़ थी, क्या उन्होंने यह न देखा कि वह उन से बात नहीं करता था और न उन को कोई रास्ता बताता था, उसको उन्होंने (देवता) बना लिया और बड़ी नाइंसाफ़ी का काम किया।[3]

---

[1] यह इस बात का सबब बताया जा रहा है कि लोग सवाब के बदले गुनाह और सच के मुक़ाबिल झूठ का रास्ता क्यों ज़्यादा अपनाते हैं? यह वजह है अल्लाह की आयतों को झुठलाने, और उन से असावधानी (ग़फ़लत) और मुँह मोड़ने का। यह हर समाज में आम तौर से पाया जाता है।

[2] इस में अल्लाह की आयतों को झुठलाने और आख़िरत को क़ुबूल न करने वालों का अंजाम बताया गया है, चूँकि उन के आमाल की बुनियाद इंसाफ़ और सच्चाई पर नहीं, बल्कि ज़ुल्म और झूठ है, इसलिए उन के आमालनामा में गुनाह ही गुनाह होगा, जिसका अल्लाह तआला के यहाँ कोई मूल्य न होगा। हाँ, उनको इस बुराई का बदला वहाँ ज़रूर दिया जायेगा।

[3] मूसा ﷺ जब चालीस रातों के लिए तूर पहाड़ पर गये, तो सामरी नाम के इंसान ने सोने के आभूषण जमा करके एक बछड़ा तैयार किया, जिस में उस ने जिब्रील के घोड़े के खुर की मिट्टी भी, जो उस ने संभाल कर रखी हुई थी उस में शामिल कर दी, जिस में अल्लाह तआला ने ज़िन्दगी का असर रखा था, जिसके सबब बछड़ा कुछ-कुछ बैल की आवाज़ निकालता था।

وَلَمَّا سُقِطَ فِيٓ أَيۡدِيهِمۡ وَرَأَوۡاْ أَنَّهُمۡ قَدۡ ضَلُّواْ قَالُواْ لَئِن لَّمۡ يَرۡحَمۡنَا رَبُّنَا وَيَغۡفِرۡ لَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ ٱلۡخَٰسِرِينَ (149)

१४९. और जब लज्जित हुए[1] और मालूम हुआ कि हक़ीक़त में वे लोग भटकावे में पड़ गये तो कहने लगे कि अगर हमारा रब हम पर रहम न करे और हमारे गुनाह माफ़ न करे तो हम बिल्कुल ही नुक़सान पाने वालों में हो जायेंगे।

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰٓ إِلَىٰ قَوۡمِهِۦ غَضۡبَٰنَ أَسِفٗا قَالَ بِئۡسَمَا خَلَفۡتُمُونِي مِنۢ بَعۡدِيٓۖ أَعَجِلۡتُمۡ أَمۡرَ رَبِّكُمۡۖ وَأَلۡقَى ٱلۡأَلۡوَاحَ وَأَخَذَ بِرَأۡسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُۥٓ إِلَيۡهِۚ قَالَ ٱبۡنَ أُمَّ إِنَّ ٱلۡقَوۡمَ ٱسۡتَضۡعَفُونِي وَكَادُواْ يَقۡتُلُونَنِي فَلَا تُشۡمِتۡ بِيَ ٱلۡأَعۡدَآءَ وَلَا تَجۡعَلۡنِي مَعَ ٱلۡقَوۡمِ ٱلظَّٰلِمِينَ (150)

१५०. और जब मूसा अपनी क़ौम की ओर वापस आये, गुस्सा और ग़म में डूबे हुए तो कहा कि तुम ने मेरे बाद यह बड़ी बुरी जानशीनी की है, क्या अपने रब के हुक्म से पहले ही तुम ने जल्दबाज़ी की, और जल्दी से तख़्तियाँ एक तरफ़ डाल दीं, और अपने भाई (हारून) का सिर पकड़ कर अपनी ओर घसीटने लगे। (हारून ने) कहा कि हे मेरी माँ से जन्मे (माँजाई)[2] इन लोगों ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि मेरा क़त्ल कर दें तो तुम मुझ पर दुश्मनों को न हंसवाओ और मुझे इन ज़ालिमों के दर्जे में न गिनो।

قَالَ رَبِّ ٱغۡفِرۡ لِي وَلِأَخِي وَأَدۡخِلۡنَا فِي رَحۡمَتِكَۖ وَأَنتَ أَرۡحَمُ ٱلرَّٰحِمِينَ (151)

१५१. (मूसा ने) कहा ऐ मेरे रब! मेरी ग़लतियों को माफ़ कर और मेरे भाई की भी और हम दोनों को अपनी रहमत में दाख़िल कर ले और तू रहम करने वालों में सब से ज़्यादा रहम करने वाला है।

إِنَّ ٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُواْ ٱلۡعِجۡلَ سَيَنَالُهُمۡ غَضَبٞ مِّن رَّبِّهِمۡ وَذِلَّةٞ فِي ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَاۚ وَكَذَٰلِكَ نَجۡزِي ٱلۡمُفۡتَرِينَ (152)

१५२. बेशक जिन लोगों ने बछड़े की पूजा की है, उन पर बहुत जल्द उन के रब की तरफ़ से गुस्सा और अपमान इस दुनियावी ज़िन्दगी में ही पड़ेगा, और हम झूठा इल्ज़ाम लगाने वालों को ऐसी ही सज़ा देते हैं।

---

[1] سُقِطَ فِي أَيْدِيهِمْ यह एक मुहावरा है, जिसका मतलब शर्मिन्दा होना है, यह लज्जा मूसा عليه السلام की वापसी के बाद हुई जब उन्होंने आकर इस पर बुरा-भला कहा और डाँटा, जैसा सूर: ताहा में आयेगा, यहाँ इसे इसलिए पहले लाया गया है कि उनकी कथनी-करनी इकट्ठा हो जाये। (फ़तहुल क़दीर)

[2] हज़रत हारून और मूसा सगे भाई थे, लेकिन यहाँ हज़रत हारून ने "माँजाये" इसलिए कहा कि इन लफ़्ज़ों में प्रेम और कोमलता का पहलू ज़्यादा है।

وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوا مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿153﴾

१५३. और जिन लोगों ने पाप के काम किये फिर वह उनके बाद उन से क्षमा माँग लें और ईमान ले आयें तो तुम्हारा रब उस माफ़ी के बाद गुनाह माफ़ कर देने वाला रहीम है।

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۖ وَفِيْ نُسْخَتِهَا هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ﴿154﴾

१५४. और जब मूसा का गुस्सा शान्त हुआ तो उन तख़्तियों को उठा लिया, उन के लेखों में उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते थे, हिदायत और रहमत थीं।[1]

وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّآ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّايَ ۭ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَاۗءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِيَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ۭ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَاۗءُ وَتَهْدِيْ مَنْ تَشَاۗءُ ۭ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ﴿155﴾

१५५. और मूसा ने सत्तर आदमी अपनी क़ौम में से हमारे मुक़र्ररा वक़्त के लिए मुंतख़ब किये, तो जब उनको भूकम्प ने आ पकड़ा तो (मूसा) दुआ करने लगे कि हे मेरे रब ! अगर तुझ को यह मंज़ूर होता तो इस से पहले ही इनको और मुझ को नाश कर देता, क्या तू हम में से कुछ मूर्खों के सबब सब को नाश कर देगा? यह घटना केवल तेरी तरफ़ से एक इम्तेहान है, ऐसे इम्तेहानों से जिसे तू चाहे भटकावे में डाल दे और जिसको चाहे हिदायत दे दे, तू ही हमारा संरक्षक (निगराँ) है, अब हमें माफ़ कर और रहम कर और तू माफ़ करने वालों में सब से ज़्यादा माफ़ करने वाला है।

وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَآ اِلَيْكَ ۭ قَالَ عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَاۗءُ ۚ وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۭ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿156﴾

१५६. और हम लोगों के नाम दुनिया में भी भलाई (पुण्य) लिख दे और आख़िरत में भी, हम तेरी तरफ़ ध्यान केन्द्रित करते हैं, (अल्लाह तआला) कहता है कि मैं अपना अज़ाब उसी पर नाज़िल करता हूँ जिस पर चाहता हूँ, और मेरी रहमत के दायरे में हर चीज़ है, तो वह रहमत उन लोगों के नाम ज़रूर लिखूँगा, जो अल्लाह से डरते हैं और ज़कात (धर्मदान) देते हैं और जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं।

[1] तौरात को भी क़ुरआन की तरह, उन्हीं लोगों के लिए हिदायत और रहमत कहा गया है जो अल्लाह से डरते हैं, क्योंकि ख़ास फ़ायेदा आसमानी किताबों का उन्हीं लोगों को होता है, दूसरे लोग तो चूँकि अपने कानों को सच सुनने से, आँखों को सच्चाई देखने से बन्द किये होते हैं, इसलिए वह रहमत से आम तौर से लाभ उठाने से महरूम ही रहते हैं।

اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ ۡ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۭ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿157﴾

१५७. जो लोग ऐसे अनपढ़ रसूल (दुनियावी आलिमों द्वारा शिक्षा न प्राप्त की हो) नबी की इत्तेबा करते हैं, जिनको वह लोग अपने पास तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं,[1] वह उन को नेकी के कामों का हुक्म करते हैं और बुराई के कामों से रोकते हैं,[2] और पाक चीज़ों को हलाल (जायेज़) बताते हैं और नापाक (अशुद्ध) चीज़ों को हराम (नजायेज़) बताते हैं, और उन लोगों पर जो भार और गले के फंदे थे उन को दूर करते हैं, इसलिए जो लोग इस (नबी) पर ईमान लाते हैं और उनकी ताईद करते हैं और उनकी मदद करते हैं और उस नूर की इत्तेबा करते हैं जो उन के साथ भेजा गया है, ऐसे लोग पूरी कामयाबी हासिल करने वाले हैं।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعَا الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۠ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿158﴾

१५८. आप कह दीजिए कि हे लोगो! मैं तुम सभी की तरफ़ उस अल्लाह का भेजा हुआ हूँ जिसका मुल्क सभी आकाशों और धरती में है, उस के सिवाय कोई भी इबादत के लायक़ नहीं, वही ज़िन्दगी अता करता है और वही मौत अता करता है, इसलिए अल्लाह पर और उसके रसूल अनपढ़ नबी पर यक़ीन करो जो कि अल्लाह पर और उस के हुक्म पर ईमान रखते हैं और उनकी इत्तेबा करो ताकि तुम सच्चे रास्ते पर आ जाओ।

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿159﴾

१५९. और मूसा की क़ौम में एक उम्मत ऐसी भी है जो हक़ के ऐतबार से ही हिदायत करती है और उस के ऐतबार से ही इंसाफ़ करती है।[3]

---

[1] यह आयत भी इस बात को वाज़ेह करने के लिए क़तई दलील रखती है कि मोहम्मद ﷺ की रिसालत पर ईमान लाये बिना आख़िरत की कामयाबी मुमकिन नहीं, और ईमान वही है जिसका तफ़सीली बयान मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ ने किया है, इस आयत से भी "सर्व धर्म संभव" (वहदते अदयान) की जड़ कटती है।

[2] भला वह है जिसे शरीअत ने भला कहा, और बुरा वह है जिसे शरीअत ने नाजायेज़ किया है।

[3] इस से मुराद वही कुछ लोग हैं जो मुसलमान हो गये थे, अब्दुल्लाह बिन सलाम वगैरह رضي الله عنهم

१६०. और हम ने उनको बारह परिवारों में बाँट कर सब की अलग-अलग उम्मत मुक़र्रर कर दिया,[1] और हम ने मूसा को हुक्म दिया जबकि उन के समुदाय (क़ौम) ने उन से पानी मांगा कि अपनी छड़ी को अमुक पत्थर पर मारो, फिर तुरन्त उस में से बारह चश्मे बह निकले, हर व्यक्ति ने अपने पानी पीने की जगह जान लिया, और हम ने उन पर बादलों की छाया की, और उन को तुरंजबीन और बटेरें पहुँचायीं कि खाओ पाक मज़ेदार चीज़ें, जो कि हम ने तुम को अता की हैं और उन्होंने हमारा कोई नुक़सान नहीं किया लेकिन अपना ही नुक़सान करते थे।

وَقَطَّعْنَٰهُمُ ٱثْنَتَىْ عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا ۚ وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ إِذِ ٱسْتَسْقَىٰهُ قَوْمُهُۥٓ أَنِ ٱضْرِب بِّعَصَاكَ ٱلْحَجَرَ ۖ فَٱنۢبَجَسَتْ مِنْهُ ٱثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۚ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ ٱلْغَمَٰمَ وَأَنزَلْنَا عَلَيْهِمُ ٱلْمَنَّ وَٱلسَّلْوَىٰ ۖ كُلُوا۟ مِن طَيِّبَٰتِ مَا رَزَقْنَٰكُمْ ۚ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِن كَانُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿160﴾

१६१. और जब उनको हुक्म दिया गया कि तुम लोग उस बस्ती में जाकर रहो और खाओ, उस से जिस जगह पर तुम रूचि रखो और मुँह से यह कहते जाना कि माफ़ी माँगते हैं और झुक-झुक कर दरवाज़े से दाख़िल होना, हम तुम्हारी ग़लतियाँ माफ़ कर देंगे, जो भलाई करेंगे उनको इस से ज़्यादा अता करेंगे।

وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ ٱسْكُنُوا۟ هَٰذِهِ ٱلْقَرْيَةَ وَكُلُوا۟ مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا۟ حِطَّةٌ وَٱدْخُلُوا۟ ٱلْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيٓـَٰٔتِكُمْ ۚ سَنَزِيدُ ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿161﴾

१६२. तो बदल डाला उन ज़ालिमों ने एक-दूसरे क़ौल से जो ख़िलाफ़ था उस क़ौल के जिस का उन्हें हुक्म दिया गया था, इस पर हम ने आकाश से एक मुसीबत भेजी, इस सबब कि वे ज़ुल्म किया करते थे।

فَبَدَّلَ ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ ٱلَّذِى قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ ٱلسَّمَآءِ بِمَا كَانُوا۟ يَظْلِمُونَ ﴿162﴾

[1] أسباط बहुवचन (जमा) है سبط का, और इस का मतलब पौत्र है, यहाँ अस्बात वंशों के लिए इस्तेमाल किया गया है, यानी हज़रत याक़ूब के बारह बेटों से बारह वंश धरती पर बने, हर वंश पर अल्लाह तआला ने एक-एक निरीक्षक (निगराँ) भी तैनात किया था और कह दिया था (وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا) (सूर: अल-मायेद:-१२) यहाँ अल्लाह तआला उन बारह उम्मतों के कुछ-कुछ फ़ज़ीलतों में आपसी इख़्तिलाफ़ होने के सबब उन के अलग-अलग उम्मत होने की चर्चा एहसान जताने के लिए कर रहा है।

وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۚ كَذٰلِكَ ۚ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿163﴾

१६३. और आप उन लोगों से उस नागरिको का[1] जो समुन्दर के क़रीब बसे थे उस वक़्त की हालत पूछिये जब कि वह शनिवार के दिन के बारे में हुदूद लांघ रहे थे, जब कि उन के शनिवार के दिन उनको मछलियाँ ज़ाहिर हो-हो कर उनके सामने आतीं थीं, और जब शनिवार का दिन न होता तो उन के सामने न आती थी, हम उनका इस तरह इम्तेहान ले रहे थे, इस सबब से कि वे हुक्मों की नाफ़रमानी करते थे।

وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمًا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۗ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿164﴾

१६४. और जबकि उन में से एक गुट ने यह कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत करते हो जिनको अल्लाह पूरी तरह से तबाह करने वाला है, या उन को सख़्त सजा देने वाला है, उन्होंने जवाब दिया कि तुम्हारे रब के सामने तौबा करने के लिए और इसलिए कि शायद ये डर जायें।

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۢ بَـِٔيْسٍۢ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿165﴾

१६५. तो जब वह उस को भूल गये जिस को उन को याद दिलाया जाता रहा तो हम ने उन लोगों को तो बचा लिया जो उन को बुरी बातों से रोकते थे, और उन लोगों को जो जुल्म करते थे एक सख़्त अजाब में पकड़ लिया, इस सबब से कि वे नाफ़रमानी करते थे।

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿166﴾

१६६. यानी जब वह जिस काम से मना किया गया था उस में सीमा को पार कर गये, तो हम ने उनको कह दिया कि तुम अपमानित (ज़लील) बन्दर बन जाओ।

وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۗ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿167﴾

१६७. और वह वक़्त याद रखना चाहिए कि आप के रब ने बता दिया कि वह इन (यहूदियों) पर क़यामत तक ऐसे इंसान को मुसल्लत रखेगा जो इन लोगों को सख़्त सजा के ज़रिये दुख पहुँचाता रहेगा, बेशक आप का रब जल्द ही

[1] उस बस्ती के निर्धारण (तईअन) में इख़्तिलाफ़ है, कोई उस का नाम ईला, कोई तबरीया, कोई ईलिया और कोई सीरिया की कोई बस्ती जो समुद्र के क़रीब थी बतलाता है। मुफ़स्सिरों का ज़्यादातर झुकाव ईला की तरफ़ है जो मदयन और तूर पहाड़ के बीच कुलज़ुम सागर के किनारे पर आबाद थी।

अज़ाब देने वाला है, और बेशक वह हक़ीक़त में बहुत माफ़ करने वाला और रहीम है।[1]

وَقَطَّعْنٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿168﴾

१६८. और हम ने संसार में उन के (विभिन्न) गुट कर दिये, कुछ उन में नेक थे और कुछ दूसरे अख़लाक़ के थे, और हम उन को ख़ुशहाली और बदहाली के ज़रिये उनका इम्तेहान लेते रहे कि शायद वे लौट जायें।[2]

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿169﴾

१६९. फिर उनके बाद ऐसे लोग उनके वारिस हुए कि किताब को उन से हासिल किया, वह इस हक़ीर दुनिया का थोड़ा-सा भी धन ले लेते हैं और कहते हैं कि हमें ज़रूर नजात मिल जायेगी, अगरचे उन के पास वैसा ही धन-दौलत आने लगे तो उसे भी ले लेंगे, क्या उन से इस किताब के इस मज़मून का वादा नहीं लिया गया कि अल्लाह की तरफ़ सच बात के सिवाय दूसरे क़ौल को सम्बन्धित न करें? और उन्होंने इस किताब में जो कुछ था उसको पढ़ लिया, और आख़िरत का घर उन लोगों के लिए अच्छा है जो अल्लाह का डर रखते हैं, फिर क्या तुम नहीं समझते।

وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿170﴾

१७०. और जो लोग किताब पर अडिग हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं, हम ऐसे लोगों का जो ख़ुद का सुधार कर लें अज्र बेकार न करेंगे।

وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهٗ وَاقِعٌ ۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿171﴾

१७१. और वह वक़्त भी याद करो जब हम ने पहाड़ को छतरी के समान उन के ऊपर लटका दिया और उन को यक़ीन हो गया कि अब उन पर गिरा, और कहा कि हम ने जो किताब तुम को दिया है उसे मज़बूती से क़ुबूल

---

[1] यानी अगर उन में से कोई माफ़ी माँग कर मुसलमान हो जायेगा तो वह इस ज़िल्लत और सख़्त अज़ाब से बच जायेगा।

[2] इस में यहूदियों के कई गुटों में बँट जाने और उन में कुछ के नेक होने की चर्चा है, और उनकी दोनों तरह से इम्तेहान लेने का बयान है कि शायद वह अपनी करतूतों से रुक जायें और अल्लाह की तरफ़ पलट आयें।

करो और याद रखो जो हुक्म इस में है, उस से उम्मीद है कि तुम (अल्लाह से) डरने लगो।[1]

وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِيٓ ءَادَمَ مِن ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوا۟ بَلَىٰ شَهِدْنَآ أَن تَقُولُوا۟ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَٰذَا غَٰفِلِينَ (172)

१७२. और जब आप के रब ने आदम की औलाद की पीठों से उनकी औलाद को निकाला और उन से उन ही के बारे में वादा लिया कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? सब ने जवाब दिया, क्यों नहीं, हम सभी गवाह हैं, ताकि तुम लोग क़यामत के दिन यह न कहो कि हम तो इस से सिर्फ़ अन्जान थे।

أَوْ تَقُولُوٓا۟ إِنَّمَآ أَشْرَكَ ءَابَآؤُنَا مِن قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنۢ بَعْدِهِمْ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ ٱلْمُبْطِلُونَ (173)

१७३. या यह कहो कि सब से पहले शिर्क तो हमारे बुज़ुर्गों ने किया और हम उन के बाद उन के वंश में हुए, तो क्या उन ग़लत लोगों के कुकर्मों पर तू हमें तबाही में झोंक देगा।

وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ ٱلْءَايَٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ (174)

१७४. और हम इसी तरह आयतों को साफ़-साफ़ बयान कर देते हैं ताकि वे वापस आ जायें।

وَٱتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ٱلَّذِيٓ ءَاتَيْنَٰهُ ءَايَٰتِنَا فَٱنسَلَخَ مِنْهَا فَأَتْبَعَهُ ٱلشَّيْطَٰنُ فَكَانَ مِنَ ٱلْغَاوِينَ (175)

१७५. और उन लोगों को उस व्यक्ति की हालत पढ़ कर सुनाईये कि जिस को हम ने अपनी निशानियाँ अता कीं, फिर वह उन से बिल्कुल निकल गया, फिर शैतान उस के पीछे लग गया, इस तरह वह भटके हुए लोगों में शामिल हो गया।[2]

---

[1] यह उस वक़्त का वाक़ेआ है जब हज़रत मूसा उन के पास तौरात लाये और उसके हुक्म उनको सुनाये, तो उन्होंने अपने अख़लाक़ के ऐतबार से उन के ऊपर अमल करना क़बूल न किया और नाफ़रमानी की, जिस के सबब अल्लाह तआला ने उन के सिर पर पहाड़ ला खड़ा किया कि तुम पर गिरा कर कुचल दिया जायेगा, जिस से डर कर उन्होंने वादा किया कि तौरात के हिसाब से काम करेंगे।

[2] मुफ़स्सिरों ने इसे एक ख़ास इंसान से सम्बन्धित माना है, जिसे किताबे इलाही का इल्म हासिल था, लेकिन वह संसार और शैतान का पैरोकार बन कर गुमराह हो गया, लेकिन उस के ख़ास करने में कोई सुबूत नहीं, इसलिए उस के तईअन की कोई ज़रूरत भी नहीं है।

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿176﴾

१७६. और अगर हम चाहते तो उस को इन निशानियों के सबब ऊँचे पद पर आसीन कर देते, लेकिन वह तो दुनिया के माया मोह में पड़ गया और अपनी आरज़ूओं की पैरवी करने लगा तो उस की हालत कुत्ते की तरह हो गयी कि अगर तुम उस पर हमला करो तब भी हाँफे या उसको छोड़ दो तब भी हाँफे,[1] यही हालत उन लोगों की है जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया, अत: आप इस हालत को बयान कर दीजिए, शायद वह लोग कुछ सोचें।

سَآءَ مَثَلَا ۨ الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿177﴾

१७७. उन लोगों की हालत भी बुरी हालत है जो हमारी आयतों को झूठ मानते हैं, और अपना नुक़सान करते हैं।

مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿178﴾

१७८. जिस को अल्लाह तआला ख़ुद हिदायत देता है वही हिदायत पर होता है, और जिन्हें अल्लाह गुमराह कर दे वही घाटे में हैं।

وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿179﴾

१७९. और हम ने ऐसे बहुत से जिन्न और इंसान जहन्नम के लिए पैदा किये हैं, जिन के दिल ऐसे हैं जिन से नहीं समझते, और जिन की आँखें ऐसी हैं जिन से नहीं देखते, और जिन के कान ऐसे हैं जिन से नहीं सुनते। यह लोग चौपाये (पशु) की तरह हैं, बल्कि उन से भी ज़्यादा भटके हुए हैं,[2] यही लोग ग़ाफ़िल हैं।

---

[1] لَهَثَ थकान या प्यास के सबब ज़बान निकालने को कहते हैं, कुत्ते की यही आदत होती है कि उसे डांटो-डपटो या उसकी हालत पर छोड़ दो, दोनों हालतों में यह भौंकने से नहीं रुकता, इसी तरह इसकी यह भी आदत है कि वह पेट भर खाये हो या भूखा हो, तंदुरूस्त हो या रोगी, थका हुआ हो या चुस्त, हर हालत में ज़बान निकाले हाँफता रहता है, यही हालत ऐसे इंसान की है जिसे नसीहत दो या न दो, उसकी हालत एक ही रहेगी और दुनियावी धन-दौलत के लिए लार टपकती रहेगी।

[2] यानी दिल, आँख और कान अल्लाह तआला ने इसलिए अता की हैं कि इंसान इन से फ़ायेदा उठाते हुए अपने रब को समझे, उसकी निशानियों को देखे और सच बात को ध्यानपूर्वक सुने, लेकिन जो इंसान इन चीज़ों से यह काम नहीं लेता, वह उन से फ़ायेदामंद न होने के सबब जानवरों की तरह है, बल्कि उन से भी ज़्यादा भटका हुआ है, इसलिए कि जानवर फिर भी कुछ अपने फ़ायदे और नुक़सान की समझ रखते हैं, क्योंकि वे फ़ायदेमंद चीज़ों से फ़ायेदा

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪ وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ۭ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿180﴾

१८०. और अच्छे नाम अल्लाह के लिए ही हैं, इसलिए इन नामों से अल्लाह ही को पुकारो, और ऐसे लोगों से सम्बन्ध भी न रखो जो उस के नामों में टेढ़ापन करते हैं, उन लोगों को उन के किये की सजा जरूर मिलेगी।

وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿181﴾

१८१. और हमारी मख़लूक़ में एक उम्मत ऐसी भी है जो हक़ के साथ हिदायत करते हैं और उसी के मुताबिक़ इंसाफ़ करते हैं।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿182﴾

१८२. और जो लोग हमारी आयतों (चिन्हों) को झुठलाते हैं हम उनको धीरे-धीरे (पकड़ में) ऐसे लिये जा रहे हैं कि उन को पता भी नही।

وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۭ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿183﴾

१८३. और उन को मौक़ा देता हूँ, बेशक मेरा तरीक़ा बड़ा मजबूत है।

اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿184﴾

१८४. क्या उन लोगों ने इस बात पर ख़्याल नहीं किया कि उन के साथी को तनिक भी जुनून नहीं, वह तो सिर्फ़ एक साफ़ डराने वाले हैं।[1]

اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿185﴾

१८५. और क्या उन लोगों ने ख़्याल नहीं किया आकाशों और धरती के लोक में और दूसरी चीजों में, जो अल्लाह ने पैदा की हैं और इस बात में कि मुमकिन है कि उनकी मौत करीब ही आ पहुँची हो, फिर उस (क़ुरआन) के बाद कौन सी-बात पर ये लोग ईमान लायेंगे?[2]

उठाते हैं और नुक़सानदह चीजों से दूर रहते हैं, लेकिन अल्लाह तआला की हिदायत से गुमराह इंसान के अन्दर तो यह समझ भी नहीं होती कि उस के लिए फ़ायदेमंद चीजें कौन-सी हैं और नुक़सानदह चीजें कौन-सी, इसीलिए अगले कलिमे में उन्हें बेख़बर कहा गया है।

[1] صاحب (साहिब) से मुराद आख़िरी रसूल मुहम्मद ﷺ हैं जिनको मुश्रिक कभी जादूगर कभी पागल (نعوذ بالله) कहते थे, अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यह तुम्हारे ख़्याल न करने का नतीजा है, वह तो हमारा पैग़म्बर है, जो हमारा हुक्म पहुँचाने वाला और उन से बेख़बर रहने वालों और नाफ़रमानी करने वालों को डराने वाला है।

[2] हदीस से यहाँ मुराद क़ुरआन मजीद है यानी नबी ﷺ के बाख़बर करने और ख़ुशख़बरी देने और क़ुरआन करीम के बाद भी अगर यह ईमान न लायें तो इन से बढ़कर उनको डराने वाली चीज

مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ؕ وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿186﴾

१८६. जिसको अल्लाह (तआला) भटका दे उसे कोई रास्ता पर नहीं ला सकता, और अल्लाह (तआला) उन को उन की गुमराही में भटकते छोड़ देता है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَاۤ اِلَّا هُوَ ؔ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ؕ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿187﴾

१८७. यह लोग आप से क़यामत के[1] बारे में सवाल करते हैं कि वह कब आयेगी। आप कह दीजिए कि इसका इल्म सिर्फ़ मेरे रब के पास ही है, इस को इस के वक़्त पर सिवाय अल्लाह (तआला) के कोई दूसरा ज़ाहिर न करेगा, वह आकाशों और धरती की बहुत बड़ी (घटना) होगी, वह तुम पर अचानक आ पड़ेगी, वह आप से इस तरह पूछते हैं जैसाकि आप उस की खोज कर चुके हैं। आप कह दीजिए कि उस का इल्म ख़ास तौर से अल्लाह ही के पास है लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।

قُلْ لَّاۤ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۚۛ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ ۚۛ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿188﴾

१८८. आप कह दीजिए कि ख़ुद मैं अपनी ज़ात ख़ास के लिए किसी फ़ायदे का हक़ नहीं रखता और न किसी नुक़सान का, लेकिन इतना ही जितना कि अल्लाह ने चाहा हो, और अगर मैं ग़ैब की बातें जानता होता तो मैं बहुत से फ़ायदे हासिल कर लेता, और कोई नुक़सान मुझे न पहुँचता,[2] मैं तो सिर्फ़ डराने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ, उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं।

दूसरी क्या होगी जो अल्लाह की तरफ़ से उतरे और फिर यह उस पर ईमान लायें?

[1] ساعة (साअ:) का मतलब है (क्षण या पल) क़यामत को साअ: इसलिए कहा गया है कि यह अचानक इस तरह आ जायेगी कि यह सारी दुनिया एक पल में तहस-नहस हो जायेगी या हिसाब की जल्दी के बुनियाद पर क़ियामत के वक़्त को साअत से तुलना की गयी है।

[2] यह आयत इस बात के लिए कितनी वाज़ेह है कि नबी ﷺ ग़ैब जानने वाले नहीं, ग़ैब जानने वाला केवल अल्लाह तआला ख़ुद है, लेकिन ज़ुल्म और अज्ञान की इन्तिहा है कि इस के बावजूद दीन में बिदअत वाले आप ﷺ को ग़ैब जानने वाले साबित करने की नाकाम कोशिश करते हैं।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا ۖ فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيفًا فَمَرَّتْ بِهِ ۖ فَلَمَّا أَثْقَلَت دَّعَوَا اللَّهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ آتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿189﴾

१८९. वह (अल्लाह तआला) ऐसा है कि जिस ने तुम्हें सिर्फ़ एक जान से पैदा किया, और उसी से उसका जोड़ा बनाया,[1] ताकि वह अपने उस जोड़े से सुकून हासिल करे,[2] फिर पति ने पत्नी से नजदीकी की, तो उसे गर्भ रह गया, हल्का-सा, फिर वह उसको लेकर चलती फिरती रही, जब वह भार को महसूस करने लगी, तो पति-पत्नी दोनों अल्लाह से जो उनका मालिक है दुआ करने लगे कि अगर तूने हम को सहीह सालिम औलाद अता कर दी तो हम बहुत शुक्र अदा करेंगे।[3]

فَلَمَّا آتَاهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهُ شُرَكَاءَ فِيمَا آتَاهُمَا ۚ فَتَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿190﴾

१९०. तो जब अल्लाह ने दोनों को सहीह सालिम (औलाद) अता किया तो अल्लाह की अता में वह दोनों अल्लाह का साझी ठहराने लगे,[4] इसलिए अल्लाह पाक है उनके शिर्क करने से।

---

[1] इस से मुराद हज़रत हव्वा हैं, जो हज़रत आदम की बीवी बनीं, उनकी पैदाईश हज़रत आदम से हुई, जिस तरह से منها के सर्वनाम (ज़मीर) से, जो एकवचन ज़ाहिर करता है, वाज़ेह है। (तफ़सील के लिए देखिए सूर: निसा, आयत नं॰१ की तफ़सीर)

[2] यानी एक-दूसरे से सुख और सुकून हासिल करे, इसलिए कि एक जिन्स अपने ही जिन्स से ज़्यादा करीब और मुहब्बत कर सकती है, जो सुकून हासिल करने के लिए ज़रूरी है, नज़दीकी के बिना यह मुमकिन ही नहीं है।

यानी अल्लाह तआला ने मर्द और औरत दोनों में एक-दूसरे के लिए जो ख़िचाव और लगाव रखा है, फ़ितरत की यह देन वह जोड़ा बन कर पूरा करते हैं, एक-दूसरे से नज़दीकी और मुहब्बत हासिल करते हैं, इसलिए यह सच है कि जो आपसी मुहब्बत पति और पत्नी के बीच होती है, वह दुनिया के किसी दूसरे रिश्ते में नहीं होती।

[3] भारी हो जाने से मुराद, जब बच्चा गर्भ में बड़ा हो जाता है, तो ज्यों-ज्यों पैदाईश का वक़्त करीब आता जाता है, माँ-बाप के दिल में डर और शक पैदा होता जाता है। (ख़ास तौर से जब औरत को औरत रोग हो) तो इंसान की फ़ितरत है कि डर के सबब अल्लाह की तरफ़ आकर्षित होते है, इसलिए वे दोनों अल्लाह से दुआ करते हैं और शुक्र अदा करने का वादा करते हैं।

[4] साझीदार बना देने से मुराद या तो बच्चे का नाम ऐसा रखना है, जैसे इमामबख़्श, पीरदित्ता, अब्दशम्स बन्द: अली वग़ैरज, जिस से यह वाज़ेह होता है कि बच्चा फ़्लाँ पीर या साधू के (نعوذ باللہ) नज़रे करम का नतीजा है, या अपने इस यक़ीन को ज़ाहिर करे कि हम तो फ़्लाँ पीर या साधू या फ़्लाँ क़ब्र पर गये थे जिसके नतीजे से बच्चा पैदा हुआ, यह सभी हालतें अल्लाह का साझीदार बनाने की हैं, जो बदनसीबी से मुसलमानों में भी आम तौर से पाई जाती है।

اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿191﴾

१९१. क्या ऐसों को साभीदार ठहराते हैं जो किसी चीज़ को न बना सकें, (बल्कि) ख़ुद उन को ही बनाया गया हो।

وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿192﴾

१९२. और वह उन को किसी तरह की मदद नहीं दे सकते, और वे ख़ुद अपनी मदद नहीं कर सकते।

وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ۭ سَوَاۗءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ﴿193﴾

१९३. और अगर तुम कोई बात बताने को उन को पुकारो तो तुम्हारे कहने पर न चलें, तुम्हारे लगाव से दोनों बातें बराबर हैं चाहे तुम उनको पुकारो या चुप रहो।

اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿194﴾

१९४. हक़ीक़त में तुम अल्लाह को छोड़ कर जिन को पुकारते (इबादत करते) हो वह भी तुम ही जैसे बन्दे हैं, तो तुम उनको पुकारो, फिर उनको चाहिए कि वह तुम्हारा कहना कर दें, अगर तुम सच्चे हो।

اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ ۡ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ ۡ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ۡ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۭ قُلِ ادْعُوْا شُرَكَاۗءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿195﴾

१९५. क्या उन के पैर हैं जिन से वे चलते हों, या उन के हाथ हैं जिस से किसी चीज़ को थाम सकें, या उनकी आँखें हैं जिन से देखते हों, या उन के कान हैं जिन से वे सुनते हैं। आप कह दीजिए कि तुम अपने सभी साभीदारों को बुला लो, फिर मुझे (नुक़सान पहुँचाने की) उपाय करो, फिर मुझे तनिक मौक़ा न दो।

اِنَّ وَلِيِّۦَ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ ڮ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ﴿196﴾

१९६. बेशक मेरा सहायक (वली) अल्लाह ही है, जिस ने यह किताब (पाक क़ुरआन) उतारा, और वह नेक लोगों की मदद करता है।

وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿197﴾

१९७. और तुम जिन लोगों को अल्लाह को छोड़ कर पुकारते (इबादत करते) हो वह तुम्हारी कुछ मदद नहीं कर सकते, और न वह अपनी मदद कर सकते हैं।[1]

[1] जो अपनी मदद आप करने के क़ाबिल न हो, वे भला दूसरों की मदद क्या करेंगे।

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَسْمَعُوا ۖ وَتَرَاهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿198﴾

१९८. और अगर उनको कोई बात बताने को पुकारो तो उस को न सुनें, और उन को आप देखते हैं कि वह आप को देख रहे हैं और वह कुछ भी नहीं देखते।

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ ﴿199﴾

१९९. आप माफ़ी का रास्ता अपनायें, भलाई के काम की तालीम दें और जाहिलों से अलग रहें।

وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿200﴾

२००. और अगर आप को कोई शक शैतान की ओर से आने लगे तो अल्लाह की पनाह माँग लिया कीजिए, बेशक वह बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَائِفٌ مِنَ الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُمْ مُبْصِرُونَ ﴿201﴾

२०१. बेशक जो लोग (अल्लाह से) डरते हैं जब उनको कोई शक शैतान की तरफ़ से आ जाता है तो वह याद में लग जाते हैं, इसलिए अचानक उनकी आँखें खुल जाती हैं।[1]

وَإِخْوَانُهُمْ يَمُدُّونَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ ﴿202﴾

२०२. और जो शैतानों के पैरो हैं वह उनको मुसीबत में खींचे ले जाते है फिर वे नहीं रुकते।

وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِمْ بِآيَةٍ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا أَتَّبِعُ مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ مِنْ رَبِّي ۚ هَٰذَا بَصَائِرُ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿203﴾

२०३. और जब आप कोई मोजिज़ा उन के सामने पेश नहीं करते तो वह लोग कहते हैं कि आप यह मोजिज़ा क्यों न लाये। (आप) फ़रमा दीजिए कि मैं उसकी इत्तेबा करता हूँ जो मुझ पर मेरे रब की तरफ़ से आदेश भेजा गया है, यह मानो तुम्हारे रब की तरफ़ से बहुत सी दलीलें हैं और हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं।

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿204﴾

२०४. और जब क़ुरआन पढ़ा जाये तो उसे ध्यानपूर्वक सुनो और ख़ामोश रहो, उम्मीद है

[1] इस में अल्लाह से डर रखने वालों के बारे में बताया गया है कि वे शैतान से होशियार रहते हैं। طائف या طيف उस ज़ेहनी ख़्यालों को कहते हैं जो दिल में आये या ख़्वाब में आये, यहाँ उसे शैतान के ज़रिये डाला गया शक के लिए इस्तेमाल हुआ है, क्योंकि शैतान के ज़रिये शक भी ज़ेहनी ख़्यालों में ही पैदा होते हैं। (फ़तहुल क़दीर)

कि तुम पर रहमत हो ।[1]

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿205﴾

२०५. और (हे इंसान) ! अपने मन में आजिज़ी और डर कर अपने रब को याद करता रह, सुबह और शाम आवाज़ को कम कर के और ग़ाफ़िलों में न होना ।

اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ﴿206﴾ السجدة ع

२०६. बेशक जो लोग तेरे रब के क़रीब हैं वे उस की इबादत से घमंड नहीं करते, और उस की पाकीज़गी बयान करते और उस को सज्दा करते हैं ।

سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ

सूरतुल अंफ़ाल-८

सूर: अंफ़ाल मदीना में उतरी और इस की पचहत्तर आयतें और दस रुकूअ हैं ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

[1] यहां काफ़िरों को कहा जा रहा है जो क़ुरआन के पढ़ते वक़्त शोर करते थे और अपने साथियों से कहते थे :

﴿لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا﴾

"यह क़ुरआन मत सुनो और शोर करो ।" (सूर: हा॰ मीम॰ सज्दा-२६)

उन से कहा जा रहा है कि इसके बजाय अगर ग़ौर से सुनो और चुप रहो, तो शायद अल्लाह तआला तुम्हें हिदायत अता कर दे, इस तरह तुम अल्लाह की रहमत के हक़दार बन जाओ ।

कुछ आलिम इसे आम तौर से लेते हैं यानी जब भी क़ुरआन पढ़ा जाये चाहे नमाज़ हो या नमाज़ न हो सब को चुप हो कर सुनने का आदेश है, इस आम हुक्म से भाव निकाल कर ज़ोर से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में मुक़्तदी (नमाज़ में इमाम के सिवाय सभी नमाज़ियों को कहते हैं) के सूर: फ़ातिहा पढ़ने को भी क़ुरआन के इस हुक्म के ख़िलाफ़ मानते हैं, जब कि ऊंची आवाज़ से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में इमाम के पीछे सूर: फ़ातिहा पढ़नें के लिए हुक्म नबी ﷺ से सहीह हदीसों से साबित है, जैसाकि इस के मक्की होने से भी साबित होता है, लेकिन अगर इसे आम तौर से मान भी लिया जाये तब भी इस आम से मुक़्तदियों को नबी ﷺ ने निकाल दिया, और इस तरह इस आयत के आम होने के बाद भी ऊंची आवाज़ से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में मुक़्तदियों को सूर: फ़ातिहा ज़रूर पढ़नी होगी, क्योंकि क़ुरआन के इस आम हुक्म से मुक़्तदियों की छूट के लिए सहीह हदीस और ठोस हदीसों से साबित होता है ।

يَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ۖ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۖ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿1﴾

१. ये लोग आप से जंग में मिले माल के बारे में पूछते हैं,[1] आप कह दीजिए कि जंग से हासिल माल अल्लाह के हैं और रसूल के हैं, इसलिए तुम अल्लाह से डरो और अपने आपसी रिश्तों को सुधारो और अल्लाह तआला और उस के रसूल के हुक्म की इताअत करो अगर तुम ईमानवाले हो ।[2]

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿2﴾

२ बस ईमान वाले ही ऐसे होते हैं कि जब अल्लाह (तआला) का बयान होता है तो उन के दिल डर जाते हैं, और जब अल्लाह की आयतें उनको पढ़कर सुनायी जाती हैं तो वे आयतें उन के ईमान को और ज़्यादा कर देती हैं और वह लोग अपने रब पर भरोसा करते हैं ।[3]

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿3﴾

३. जो कि नमाज़ पाबन्दी से पढ़ते हैं और हम ने जो कुछ उनको दिया है वे उस में से ख़र्च करते हैं ।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ۚ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿4﴾

४ सच्चे ईमानवाले यही लोग हैं, उन के लिए बड़े पद हैं उन के रब के पास और मग़फ़िरत और इज़्ज़त की रोज़ी है ।

---

[1] أنفال कलिमा نفل कलिमा का बहुवचन (जमा) है, जिसका मतलब है ज़्यादा, ये उस माले ग़नीमत को कहा जाता है जो काफ़िरों के साथ जंग में हाथ लगे, इसे अंफ़ाल इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह उन चीज़ों में से है जो पहले के उम्मतों के लिए हराम थी, यानी यह मुसलमानों के लिए एक ज़ाइद चीज़ जायेज़ की गयी है या इसलिए कि ये जिहाद के बदला से (जो आख़िरत में मिलेगा) एक अधिक चीज़ है, जो कई बार दुनिया ही में मिल जाती है ।

[2] इस का मतलब यह हुआ कि बयान किये तीनों बातों के अनुसार अमल किये बिना ईमान पूरा नहीं । इस से अल्लाह का डर (तक़्वा), आपस में सम्बन्धों का सुधार, और अल्लाह और अल्लाह के रसूल ﷺ के हुक्म की पैरवी की फ़ज़ीलत को वाज़ेह किया गया है, ख़ास तौर से जंग में मिले माल के बँटवारे में इन तीनों बातों को ध्यान में रखना ज़रूरी है ।

[3] इन आयतों में ईमानवालों के चार अवसाफ़ बताये गये हैं । १. यह अल्लाह और उस के रसूल ﷺ के हुक्म की पैरवी करते हैं, न कि केवल अल्लाह का या क़ुरआन का, २. अल्लाह का बयान सुन कर उसकी बड़ाई और अज़मत के असर से दिल काँप उठते हैं, ३. क़ुरआन पढ़ने से उन के ईमान में बढ़ोत्तरी होती है, ४. वे अपने रब पर भरोसा करते हैं, तवक्कुल का मतलब है कि ज़ाहिरी असबाबों को अपनाने के बावजूद अल्लाह पर भरोसा करते हैं, यानी ज़ाहिरी असबाब से मुँह नहीं मोड़ते क्योंकि उनको अपनाने का अल्लाह ने हुक्म दिया है ।

५. जैसा कि आप के रब ने आप के घर से सच के साथ आप को निकाला, और मुसलमानों का एक गुट इस को भारी समझता था।

كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۪ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ⑤

६. वह वाज़ेह हो जाने के बाद सच के बारे में आप से झगड़ा कर रहे थे जैसेकि वह मौत की ओर हांके जा रहे हों और (उसे) देख रहे हों।

يُجَادِلُوْنَكَ فِى الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ⑥

७. और तुम लोग उस वक़्त को याद करो कि जब अल्लाह तुम से उन दो गुटों में से एक का वादा करता था कि वह तुम्हारे हाथ आ जायेगा,[1] और तुम इस उम्मीद में थे कि बिना हथियारों वाला गुट तुम्हारे हाथ आ जाये, और अल्लाह तआला को क़ुबूल था कि अपने हुक्म से सच का सच होना साबित कर दे और उन काफ़िरों की जड़ काट दे।

وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ⑦

८. ताकि सच का सच होना और झूठ का झूठ होना साबित कर दे, चाहे ये मुजरिम लोग पसन्द न करें।

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ⑧

९. उस वक़्त को याद करो जब कि तुम अपने रब से दुआ कर रहे थे, फिर अल्लाह तआला ने तुम्हारी सुन ली कि मैं तुम को एक हज़ार फ़रिश्तों से मदद दूंगा जो लगातार चले आयेंगे।[2]

اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّىْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ⑨

---

[1] यानी या तो तिजारिती क़ाफ़िला तुम्हें मिल जायेगा, जिस से तुम्हें लड़ाई के बिना बहुत ज़्यादा माल-सामग्री मिल जायेगी, दूसरी हालत में क़ुरैश की सेना से तुम्हारा मुक़ाबिला होगा और तुम्हारी जीत होगी और जंग से मिले माल-सामग्री मिलेगी।

[2] इस जंग में मुसलमानों की तादाद ३१३ थी, जब कि काफ़िर उन के तीन गुने (यानी) लगभग एक हज़ार थे, फिर मुसलमान निहत्थे थे और बिना हथियार के थे, जबकि काफ़िरों के पास असलहों की ज़्यादती थी। इन हालात में मुसलमानों को सहारा केवल अल्लाह ही की ताक़त का था, जिस से वे रो रो कर विनती कर रहे थे, ख़ुद नबी करीम ﷺ एक ख़ैमें में आग्रहपूर्ण (गिरिया व ज़ारी) में लीन थे। (सहीह बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी) इसलिए अल्लाह तआला ने दुआयें क़ुबूल कीं और एक हज़ार फ़रिश्ते एक-दूसरे के पीछे लगातार मुसलमानों की मदद के लिए आ गये।

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَىِٕنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ⑩

१०. और अल्लाह (तआला) ने यह मदद सिर्फ इस सबब से की कि ख़ुशख़बरी हो और तुम्हारे दिलों को सुकून हो जाये, और जीत सिर्फ अल्लाह की तरफ़ से है,[1] बेशक अल्लाह बहुत ज़्यादा ताक़त वाला और हिक्मत वाला है।

اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ⑪

११. उस वक़्त को याद करो, जबकि (अल्लाह तआला) तुम पर ऊँघ तारी कर रहा था, अपनी ओर से सुकून अता करने के लिए।[2] और तुम पर आकाश से पानी बरसा रहा था कि इस पानी के ज़रिये तुम को पाक कर दे और तुम से शैतानी शंकाओं को दूर कर दे, और तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे और तुम्हारे पाँव जमा दे।

اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓىِٕكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ⑫

१२. उस वक़्त को याद करो, जब कि आप का रब फ़रिश्तों को हुक्म दे रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, इसलिए तुम ईमान वालों की हिम्मत बढ़ाओ। मैं अभी काफ़िरों के दिलों में डर डालता हूँ। इसलिए तुम गर्दनों पर मारो और उन के जोड़-जोड़ पर चोट लगाओ।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ⑬

१३. यह इस बात की सज़ा है कि उन्होंने अल्लाह की और उस के रसूल की मुख़ालफ़त की और जो अल्लाह की और उस के रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं तो अल्लाह तआला सख़्त सज़ा देने वाला है।

---

[1] यानी फ़रिश्तों का उतारना तो सिर्फ ख़ुशख़बरी और तुम्हारे दिलों के सुकून के लिए था, बल्कि असल मदद तो अल्लाह की तरफ़ से थी, जो फ़रिश्तों के बिना भी तुम्हारी मदद कर सकता था, फिर भी इस से यह समझना भी जायेज़ नहीं कि फ़रिश्तों ने जंग में हिस्सा नहीं लिया। हदीसों से मालूम होता है कि जंग में फ़रिश्तों ने हिस्सा लिया और कई काफ़िरों का क़त्ल भी किया, (देखिए सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम किताबुल मग़ाज़ी व फ़ज़ायेल अस्सहाबा)

[2] ओहुद की जंग की तरह बद्र के जंग में भी अल्लाह तआला ने मुसलमानों पर ऊँघ तारी कर दिया, जिस से उन के दिलों के भार हल्के हो गये और सुकून व आराम की एक ख़ास हालत उन पर असरअंदाज़ हो गयी।

ذٰلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكٰفِرِينَ عَذَابَ النَّارِ ﴿14﴾

१४. तो यह सजा का मजा चखो और ध्यान रहे कि काफ़िरों के लिए आग का अज़ाब मुक़र्रर ही है।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوٓا إِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوهُمُ الْأَدْبَارَ ﴿15﴾

१५. हे ईमानवालो! जब तुम काफ़िरों से मुठभेड़ करो तो उन से पीठ मत फेरना।[1]

وَمَنْ يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُۥٓ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِنَ اللّٰهِ وَمَأْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿16﴾

१६. और जो शख़्स उन से उस मौक़ा पर पीठ फेरेगा, लेकिन अगर कोई लड़ाई के लिए पैंतरा बदलता हो या जो अपने गुट की तरफ़ पनाह लेने आता हो, (वह अलग है) बाक़ी दूसरा जो ऐसा करेगा वह अल्लाह के ग़ज़ब को पायेगा, और उसका ठिकाना नरक होगा और वह बहुत ही बुरा स्थान है।

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۚ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ۚ إِنَّ اللّٰهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿17﴾

१७. तो तुम ने उन्हें क़त्ल नहीं किया, लेकिन अल्लाह तआला ने उन्हें क़त्ल किया,[2] और आप ने (धूल की मुट्ठी) नहीं फेंकी, लेकिन अल्लाह तआला ने फेंकी,[3] और ताकि मुसलमानों को अपनी तरफ़ से उनकी कोशिश का बहुत ज़्यादा अज्र अता करे[4] बेशक अल्लाह तआला ज़्यादा सुनने

---

[1] زحفا (ज़हफ़न) कलिमा का मतलब है एक-दूसरे के सामने होना और संघर्ष करना, यानी मुसलमान और काफ़िर जब सामने हो कर लाम बन्दी करें तो पीठ फेर कर भागने का हुक्म नहीं है।

[2] यानी बद्र की लड़ाई की यह सारी तफ़सील तुम्हारे सामने पेश कर दिया गया है और जिस-जिस तरह से अल्लाह ने तुम्हारी मदद की है, उसकी वज़ाहत के बाद तुम यह न समझ लेना कि काफ़िरों का क़त्ल यह तुम्हारा कारनामा है। नहीं, बल्कि यह अल्लाह ही की मदद का नतीजा है, जिस के सबब तुम्हें यह ताक़त मिली, इसलिए हक़ीक़त में उनका क़त्ल करने वाला अल्लाह तआला है।

[3] बद्र की लड़ाई में नबी ﷺ ने कंकरियों को मुट्ठी में भर कर काफ़िरों की तरफ़ फेंका था, जिसे एक तो अल्लाह तआला ने काफ़िरों के मुंह और आंखों तक पहुंचा दिया। दूसरे उस में यह गुण पैदा कर दिया कि जिस के सबब उनकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया और उन्हें कुछ नहीं दिखायी देता था, यह मोजिज़ा भी, जो उस वक़्त अल्लाह की मदद से ज़ाहिर हुआ, मुसलमानों की कामयाबी में बहुत ज़्यादा मददगार साबित हुआ।

[4] بلاء (बलाअन) यहां एहसान के मतलब में इस्तेमाल हुआ है, यानी अल्लाह का यह समर्थन (ताईद) व रहमत अल्लाह का एहसान है, जो ईमानवालों पर हुआ।

वाला ज़्यादा जानने वाला है।

ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ⑱

१८. (एक बात तो) यह हुई (दूसरी बात है) कि अल्लाह तआला को काफ़िरों की चाल को नाकाम करना था।

اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ⑲

१९. अगर तुम लोग फ़ैसला चाहते हो तो वह फ़ैसला तुम्हारे सामने है, और अगर रुक जाओ तो यह तुम्हारे लिए बहुत बेहतर है, और अगर तुम फिर भी वही काम करोगे तो हम भी फिर वही काम करेंगे और तुम्हारा समुदाय तुम्हारे तनिक काम नहीं आयेगा, चाहे कितनी ज़्यादा तादाद हो, तथा हक़ीक़त बात यह है कि अल्लाह तआला ईमानवालों के साथ है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ⑳

२०. हे ईमानवालो! अल्लाह का और उस के रसूल (संदेशवाहक) का कहना मानो और उस (का कहना मानने) से मुंह न फेरो सुनते जानते हुए।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ㉑

२१. और तुम उन लोगों की तरह न होना जो दावा तो करते हैं कि हम ने सुन लिया, हालांकि वह सुनते (सुनाते) कुछ नहीं।[1]

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ㉒

२२. बेशक बहुत बुरी मख़लूक़ अल्लाह तआला के क़रीब वे लोग हैं जो बहरे हैं, गूंगे हैं जो कि तनिक भी नहीं समझते।

وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ۗ وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ㉓

२३. और अगर अल्लाह (तआला) उन में कोई अच्छाई देखता तो उन को सुनने की ताक़त अता करता, और अगर उन को अब सुना दे तो ज़रूर मुंह फेरेंगे, विमुख होते हुए।[2]

[1] यानी सुन लेने के बावजूद उस के ऐतबार से अमल न करना यह काफ़िरों का तरीक़ा है, तुम इस तरीक़ा से बचो। अगली ही आयत में ऐसे लोगों को गूंगा, बहरा, अनपढ़ और नासमझ बताया गया है।

[2] पहले सुनने से मुराद लाभकारी सुनना है, इस दूसरे सुनने से प्राकृतिक रूप (फ़ितरी तौर) से सुनने की ताक़त है। यानी अगर अल्लाह तआला उन्हें सच बात सुना भी देता, तो चूंकि उन के

२४. हे ईमानवालो ! तुम अल्लाह और रसूल के हुक्मों की पैरवी करो, जब कि रसूल तुम को तुम्हारी ज़िन्दगी बख़्श विषय की तरफ़ बुलाते हों, और याद रखो कि अल्लाह तआला इंसान के और उस के दिल के बीच आड़ बन जाता है, और बेशक तुम्हें अल्लाह ही के पास जमा होना है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱسْتَجِيبُوا۟ لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ ۖ وَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ ٱلْمَرْءِ وَقَلْبِهِۦ وَأَنَّهُۥٓ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿24﴾

२५. और तुम ऐसी मुसीबत से बचो कि जो ख़ास तौर से उन ही लोगों पर नाज़िल न होगी जो तुम में से उन गुनाहों के दोषी हैं,[1] और यह जान रखो कि अल्लाह तआला बहुत सख़्त सज़ा देने वाला है।

وَٱتَّقُوا۟ فِتْنَةً لَّا تُصِيبَنَّ ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ مِنكُمْ خَآصَّةً ۖ وَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ شَدِيدُ ٱلْعِقَابِ ﴿25﴾

२६. और उस हालत को याद करो, जब कि तुम धरती पर थोड़े थे, कमज़ोर माने जाते थे, इस डर में रहते थे कि तुम को लोग उचक न लें, तो अल्लाह ने तुम्हें रहने के लिए जगह दी और तुम को अपनी मदद से ताक़त अता की और तुम को पकीज़ा रिज़्क़ अता किये, ताकि तुम शुक्र करो।[2]

وَٱذْكُرُوٓا۟ إِذْ أَنتُمْ قَلِيلٌ مُّسْتَضْعَفُونَ فِى ٱلْأَرْضِ تَخَافُونَ أَن يَتَخَطَّفَكُمُ ٱلنَّاسُ فَـَٔاوَىٰكُمْ وَأَيَّدَكُم بِنَصْرِهِۦ وَرَزَقَكُم مِّنَ ٱلطَّيِّبَٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿26﴾

२७. हे ईमानवालो ! तुम अल्लाह और रसूल (के हक़) का हनन (ख़्यानत) न करो और अपनी सुरक्षित चीज़ों में विश्वासघात (ख़्यानत) न करो,[3] और तुम जानते हो।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَخُونُوا۟ ٱللَّهَ وَٱلرَّسُولَ وَتَخُونُوٓا۟ أَمَٰنَٰتِكُمْ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿27﴾

दिल में सच जानने की खोज ही नहीं, इसलिए वे लगातार इस से मुंह फेरते रहेंगे।

[1] इस से मुराद या तो बन्दों का एक-दूसरे पर हक़ है, जो बिना किसी तरह के आम और ख़ास की छूट के ज़ुल्म करते हैं या वे आम अज़ाब हैं, जो बारिश की अधिकता, या बाढ़ आदि धरती और आकाश की मुसीबत की शक्ल में नाज़िल होते हैं और सवाब व अज़ाब दोनों के करने वाले बराबर से असरअंदाज होते हैं, या कुछ हदीसों में सवाब के कामों का हुक्म देना और गुनाह के कामों से रोकने को छोड़ देने से जिन अज़ाब की चेतावनी (तंबीह) का बयान किया गया है, वह मुराद है।

[2] इस से मक्की ज़िन्दगी की कठिनाईयों और डर का बयान और उस के बावजूद मदीने की ज़िन्दगी में अमनो अमान और ख़ुशहाली जो अल्लाह की रहमत से हासिल हुई उसका बयान है।

[3] अल्लाह तआला और रसूल ﷺ के हक़ों में ख़्यानत का मतलब यह है कि प्रत्यक्ष रूप (ज़ाहिरी

وَاعْلَمُوٓا أَنَّمَآ أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَأَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿28﴾

२८. और तुम इस बात को जान रखो कि तुम्हारा धन और तुम्हारी औलाद एक इम्तेहान के लिए हैं,[1] (और इस बात को भी जान रखो) कि अल्लाह तआला के पास बहुत बड़ा बदला है।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوٓا إِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿29﴾

२९. हे ईमानवालो! अगर तुम अल्लाह से डरते रहोगे तो अल्लाह (तआला) तुम्हें एक फ़ैसले की चीज अता करेगा, और तुम से तुम्हारे गुनाह दूर करेगा और तुम को माफ़ कर देगा और अल्लाह (तआला) बड़ा फ़ज़्ल वाला है।

وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ ۚ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ۖ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِينَ ﴿30﴾

३०. और उस घटना (वाक़ेआ) का भी जिक्र कीजिए, जबकि काफ़िर लोग आप के बारे में साजिश कर रहे थे कि आप को बंदी बना लें या आप को क़त्ल कर दें या आप को देश निकाला दे दें,[2] और वह अपनी साजिश कर रहे थे और अल्लाह तआला अपनी योजना बना रहा था और अल्लाह तआला सब से बेहतर योजना बनाने वाला है।

तौर) से तो अल्लाह और रसूल ﷺ के आज्ञाकारी (फ़रमाँबरदार) बन कर रहें, अकेले में उस के खिलाफ़ काम करें। विश्वासघात यह भी है कि किसी जरूरी काम को छोड़ दे और निषेधित काम को करे। और (وتخونوا أماناتكم) का मतलब है कि एक इंसान दूसरे इंसान के पास कोई चीज हिफ़ाजत के इरादे से रखे, उस में विश्वासघात न करे।

[1] माल और औलाद की मुहब्बत ही किसी इंसान को आम तौर से विश्वासघात (ख़्यानत) करने पर और अल्लाह और रसूल ﷺ के हुक्म तोड़ने पर मजबूर करता है, इसलिए इनको मुसीबत (परीक्षा) कहा गया है, यानी इसके जरिये इंसान का इम्तेहान लिया जाता है कि उनकी मुहब्बत के साथ यक़ीन और हुक्म की पैरवी की माँग को पूरा करता है या नहीं? अगर वह पूरा करता है, तो समझ लो वह अपने इम्तेहान में कामयाब हो गया, उसकी दूसरी शक्ल में नाकाम। इस हालत में यह माल और औलाद उसके लिए अल्लाह के अजाब को भोगने का सबब बन जायेंगे।

[2] यह उस साजिश का बयान है जो मक्का के मूर्तिपूजक नेताओं ने एक रात दारुन नदवा में तैयार किया था, आख़िर में यह तय किया गया कि हर जाति के युवकों को आप ﷺ के क़त्ल करने के लिए तैनात किया जाये, ताकि किसी एक को क़त्ल के बदले में क़त्ल न किया जा सके बल्कि धन देकर जान छूट जाये।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَٰذَا ۙ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿31﴾

३१. और जब उन के सामने हमारी आयतें पढ़ी जातीं हैं तो कहते हैं कि हम ने सुन लिया, अगर हम चाहें तो हम भी इसकी तरह कह दें, यह तो कुछ भी नहीं सिर्फ़ पूर्वजों की बिना सुबूत की बातें हैं।

وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿32﴾

३२. और जबकि उन लोगों ने कहा, हे अल्लाह! अगर यह क़ुरआन हक़ीक़त में आप की तरफ़ से है, तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा, या हम पर कोई तकलीफ़ देने वाला आज़ाब नाज़िल कर दे।

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿33﴾

३३. और अल्लाह (तआला) ऐसा न करेगा कि उन में आप के होते हुए उन को अज़ाब दे, और अल्लाह (तआला) उनको अज़ाब न देगा[1] इस हालत में कि यह तौबा भी करते हों।

وَمَا لَهُمْ أَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ ۚ إِنْ أَوْلِيَاؤُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿34﴾

३४. और उन में क्या बात है कि उन को अल्लाह (तआला) सज़ा न दे, बावजूद कि वे लोगों को मस्जिदे हराम से रोकते हैं, जबकि वह लोग इस मस्जिद के संरक्षक (निगरां) नहीं, उसके संरक्षक अल्लाह के फ़रमांबरदारों के सिवाय कोई नहीं, लेकिन उन में ज़्यादातर लोग इल्म नहीं रखते।

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً وَتَصْدِيَةً ۚ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿35﴾

३५. और उन की नमाज़ काअबा के क़रीब सिर्फ़ यह थी, सीटियां बजाना और तालियां बजाना[2] तो अपने कुफ़्र के सबब इस अज़ाब का मज़ा चखो।

---

[1] यानी रसूलों की मौजूदगी में क़ौमों पर अज़ाब नहीं आता, इसलिए आप ﷺ की मौजूदगी भी उन लोगों के अमनो अमान से रहने का सबब थी।

[2] मूर्तिपूजक जिस तरह अल्लाह के घर (ख़ानये काअबा) का नंगे होकर तवाफ़ करते थे, उसी तरह तवाफ़ करते वक़्त मुंह में उंगलिया डाल कर सीटियां बजाते थे और तालियां बजाते थे, इसको भी यह इबादत और सवाब का काम समझते थे, जिस तरह आज भी अनपढ़ सूफ़ी मस्जिदों और आस्तानों पर नाचते हैं, ढोल पीटते और धमालें डालते हैं, यही हमारी नमाज़ और इबादत (अराधना) है, नाच-नाच कर अपने यार (अल्लाह) को मना लेंगे।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَسَيُنفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ (36)

३६. बेशक यह काफ़िर लोग अपना माल इसलिए ख़र्च कर रहे हैं कि अल्लाह के मार्ग से रोकें, तो ये लोग अपना माल ख़र्च करते ही रहेंगे, फिर वह धन उन के लिए पश्चाताप का सबब बन कर रह जायेंगे, फिर पराजित हो जायेंगे, और काफ़िरों को नरक की तरफ़ जमा किया जायेगा।

لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكُمَهُ جَمِيعًا فَيَجْعَلَهُ فِي جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ (37)

३७. इसलिए कि अल्लाह (तआला) नापाकों को पाकों से अलग कर दे, और नापाकों को एक-दूसरे से मिला दे, फिर उन सब को इकट्ठा करे, फिर उन सब को नरक में डाल दे, ऐसे लोग पूरी तरह से नुक़सान में हैं।

قُل لِّلَّذِينَ كَفَرُوا إِن يَنتَهُوا يُغْفَرْ لَهُم مَّا قَدْ سَلَفَ وَإِن يَعُودُوا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ (38)

३८. आप काफ़िरों से कह दीजए कि अगर यह लोग रुक जायें तो इन के सारे गुनाह जो पहले कर चुके हैं, माफ़ कर दिये जायेंगे[1] और अगर अपनी वही रीति रखेंगे तो पहले के (काफ़िरों के) लिए नियम लागू हो चुका है।

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ ۚ فَإِنِ انتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ (39)

३९. और तुम उन से उस समय तक संघर्ष करो कि उन के अक़ीदा में बिगाड़ न रहे[2] और धर्म अल्लाह ही का हो जाये, फिर अगर यह रुक जायें तो अल्लाह (तआला) उनके अमलों को ख़ूब देखता है।

وَإِن تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَوْلَاكُمْ ۚ نِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ (40)

४०. और अगर मुँह फेरें, तो यक़ीन रखें कि अल्लाह (तआला) तुम्हारा दोस्त है, वह अच्छा दोस्त और अच्छा मददगार है।

---

[1] रुक जाने का मतलब मुसलमान हो जाना है, जिस तरह हदीस में भी है, "जिस ने इस्लाम धर्म क़ुबूल करके सवाब का रास्ता अपना लिया, उससे उसके गुनाहों की पूछ-ताछ नहीं होगी, जो उसने जाहिलियत में किये होंगे, और जिसने इस्लाम धर्म क़ुबूल करके भी बुराई न छोड़ी, उस से पहले और बाद सभी अमलों का हिसाब होगा।" (सहीह बुख़ारी) एक दूसरी हदीस में है:

"इस्लाम पहले के गुनाहों को मिटा देता है।" (मुसनद अहमद, भाग ४, पेज, ९९)

[2] फ़ित्ना से मुराद है शिर्क (मिश्रणवाद) यानी उस समय तक जिहाद जारी रखो जब तक शिर्क ख़त्म न हो जाये।

४१. और जान लो कि तुम जिस तरह का जो भी लड़ाई का माल[1] (परिहार) हासिल करो उस में से पाँचवां हिस्सा तो अल्लाह[2] और रसूल और रिश्तेदारों और यतीमों और ग़रीबों और मुसाफ़िरों के लिये है, अगर तुम ने अल्लाह पर ईमान रखा है और उस पर जो हम ने अपने बन्दे पर उस दिन उतारा है जो सच और झूठ के बीच विलगाव का[3] था, जिस दिन दोनों सेनायें भिड़ गईं थीं, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِی الْقُرْبٰی وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰكِیْنِ وَابْنِ السَّبِیْلِ ۙ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰی عَبْدِنَا یَوْمَ الْفُرْقَانِ یَوْمَ الْتَقَی الْجَمْعٰنِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿41﴾

४२. जबकि तुम क़रीब के किनारे पर और वे दूर के किनारे पर थे, और काफ़िला तुम से (बहुत) नीचे थे, अगर तुम आपस में वादा करते तो मुक़र्रर वक़्त पर पहुँचने में इख़्तिलाफ़ कर जाते, लेकिन अल्लाह को एक काम कर ही डलाना था जो मुक़र्रर हो चुका था, ताकि जो नाश हो वह दलील पर (यानी तय जानकर) नाश हो और जो ज़िन्दा रह जाये वह भी दलील पर (सच पहचान कर) ज़िन्दा रहे और अल्लाह अच्छी तरह सुनने वाला जानने वाला है।

اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْیَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰی وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ ؕ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِی الْمِیْعٰدِ ۙ وَلٰكِنْ لِّیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۙ۬ لِّیَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَیِّنَةٍ وَّیَحْیٰی مَنْ حَیَّ عَنْۢ بَیِّنَةٍ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ۙ﴿42﴾

[1] ग़नीमत (परिहार) से मुराद वह माल है जो लड़ाई में काफ़िरों को हरा के हासिल किया जाता है, पहले की क़ौमों में यह रीति थी कि लड़ाई के ख़त्म होने के बाद ग़नीमत को जमा किया जाता और आकाश से आग आकर उसे जला कर भस्म कर देती, लेकिन मुसलमानों के लिये ग़नीमत जायेज़ बना दिया गया और जो माल बिना लड़ाई, सुलह या कर (जिज़्या) के ज़रिये हासिल हो उसे «फ़ैय» कहा जाता है, कभी ग़नीमत को भी «फ़ैय» कहा जाता है।

[2] अल्लाह का लफ़्ज़ सिर्फ़ अच्छे के लिए या इसलिये है कि हर चीज़ का हक़ीक़ी मालिक तो वही है और हुक्म भी उसी का चलता है, मुराद अल्लाह और रसूल के हिस्सा से एक ही है।

[3] बद्र की लड़ाई १७ रमज़ानुल मुबारक २ हिजरी को हुई, उस दिन को यौमुल फ़ुरक़ान इसलिए कहा गया कि यह काफ़िरों और मुसलमानों के बीच पहली लड़ाई थी, और मुसलमानों को जीत और असर ग़ल्बा करके यह साबित कर दिया कि इस्लाम सच है और कुफ़्र और शिर्क (बहुदेववाद) झूठ है।

إِذْ يُرِيكَهُمُ اللَّهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا ۖ وَلَوْ أَرَاكَهُمْ كَثِيرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿43﴾

४३. जब कि तुझे तेरे सपने में अल्लाह ने उन की तादाद कम दिखाई, अगर उन को ज़्यादा दिखाता तो तुम बुज़दिल बन जाते और इस बारे में आपसी इख़्तिलाफ़ करते, लेकिन अल्लाह ने बचा लिया, बेशक वह सीनों की बातों को जानने वाला है।[1]

وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَيُقَلِّلُكُمْ فِي أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿44﴾

४४. और जब कि उस ने मिलने के समय उन्हें तुम्हारी नज़र में बहुत कम दिखाया और तुम्हें उन की नज़र में कम दिखाया, ताकि अल्लाह (तआला) उस काम को आख़िर तक पहुँचा दे, जो करना ही था, और सभी उमूर अल्लाह ही की ओर फेरे जाते हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿45﴾

४५. हे ईमानवालो! जब तुम किसी (विरोधी) सेना से भिड़ जाओ, तो अड़ जाओ और अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करो, ताकि तुम्हें कामयाबी हासिल हो।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ ۖ وَاصْبِرُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿46﴾

४६. और अल्लाह की और उस के रसूल के हुक्म की इताअत करते रहो, आपस में इख़्तिलाफ़ मत रखो, नहीं तो बुज़दिल हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी, और सब्र व यक़ीन रखो, बेशक अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَارِهِم بَطَرًا وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿47﴾

४७. और उन लोगों जैसे न बनो, जो घमंड करते हुए और लोगों में अभिमान करते हुए अपने घरों से चले और अल्लाह के रास्ते से रोकते थे, जो कुछ वह कर रहे हैं अल्लाह उसे घेर लेने वाला है।

[1] अल्लाह तआला ने नबी ﷺ को सपने में मूर्तिपूजकों की तादाद कम दिखायी और वही तादाद आप ﷺ ने सहाबा के सामने बयान कर दी, जिस से उनकी हिम्मत बढ़ गई, और इस के ख़िलाफ़ काफ़िरों की तादाद ज़्यादा दिखायी जाती तो सहाबा के दिलों में बुज़दिली पैदा होती और आपसी इख़्तिलाफ़ पैदा होने की उम्मीद थी, लेकिन अल्लाह ने इन दोनों हालतों से मुसलमानों को बचा लिया।

وَإِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ أَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَاءَتِ الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنْكُمْ إِنِّي أَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ اللّٰهَ ۚ وَاللّٰهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ (48)

४८. और जब कि उनके अमलों को शैतान उन्हें सुशोभित (जीनत वाला) दिखा रहा था और कह रहा था कि इंसानों में से कोई भी आज तुम पर ग़ालिब नहीं हो सकता, मैं ख़ुद तुम्हारा समर्थक (हिमायती) हूँ, लेकिन जब दोनों गुट जाहिर हुए, तो अपनी एड़ियों के बल पीछे पलट गया और कहने लगा कि मैं तो तुम से अलग हूँ, मैं वह देख रहा हूँ जो तुम नहीं देख रहे,[1] मैं अल्लाह से डरता हूँ, और अल्लाह (तआला) सख़्त अज़ाब वाला है।

إِذْ يَقُولُ الْمُنٰفِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰؤُلَاءِ دِينُهُمْ ۗ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَإِنَّ اللّٰهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (49)

४९. जब कि मुनाफ़िक़ (द्वयवादी) लोग कह रहे थे और वह भी जिनके दिलों में रोग था[2] कि उन्हें तो उन के धर्म ने धोके में डाल दिया है, और जो भी अल्लाह पर भरोसा करे तो अल्लाह तआला बेशक ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है।

وَلَوْ تَرٰى إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا الْمَلٰئِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ (50)

५०. और काश कि तू देखता जबकि फ़रिश्ते काफ़िरों की जान निकालते हैं, उन के मुँह और कमर पर मार मारते हैं (और कहते हैं) तुम जलने के अज़ाब का मज़ा चखो।[3]

---

[1] मूर्तिपूजक जब मक्का से निकले तो उन्हें अपने ख़िलाफ़ क़बीले बनी बक्र बिन किनाना से यह डर था कि वे पीछे से उन्हें नुक़सान न पहुँचायें, इसलिए शैतान सुराक़ा बिन मालिक के शक्ल में आया, जो बनी बक्र बिन किनाना के मुखिया थे, और उन्होंने न केवल जीत की ही भविष्यवाणी (पेशीन गोई) की, बल्कि अपनी हिमायत का यक़ीन दिलाया, लेकिन जब फ़रिश्तों को उस ने देखा तो उसे अल्लाह की मदद मालूम हुई तो एड़ियों के बल भाग खड़ा हुआ।

[2] इस से मुराद या तो वह मुसलमान हैं, जो नये-नये मुसलमान हुए थे और मुसलमानों की कामयाबी पर उन्हें शक था, या इस से मुराद मूर्तिपूजक हैं और यह भी मुमकिन है कि मदीने के रहने वाले यहूदी मुराद हों।

[3] कुछ मुफ़स्सिरों ने इसे बद्र की लड़ाई में मक़तूल मूर्तिपूजकों के बारे में बताया है। हज़रत इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं कि जब मूर्तिपूजक मुसलमानों की तरफ़ आते तो मुसलमान उन के मुँह पर तलवारें मारते, जिस से बचने के लिए वे पीठ फेर कर भागते, तो फ़रिश्ते उन के पिछले हिस्से पर तलवार मारते, लेकिन यह आम आयत है जो हर काफ़िर और मूर्तिपूजक को शामिल किये हुए है।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتۡ اَيۡدِيۡكُمۡ وَاَنَّ اللّٰهَ
لَيۡسَ بِظَلَّامٍ لِّلۡعَبِيۡدِ ﴿51﴾

५१. यह उन अमलों के सबब जो तुम्हारे हाथों ने पहले ही भेज रखा है, बेशक अल्लाह (तआला) अपने बन्दों पर जरा भी ज़ुल्म नहीं करता।

كَدَاۡبِ اٰلِ فِرۡعَوۡنَ ۙ وَالَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ؕ
كَفَرُوۡا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوۡبِهِمۡ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ قَوِىٌّ شَدِيۡدُ الۡعِقَابِ ﴿52﴾

५२. फ़िरऔन के पैरोकारों की हालत की तरह और उन के बुज़ुर्गों के, कि उन्होंने अल्लाह की आयतों पर यक़ीन नहीं किया तो अल्लाह ने उन के गुनाहों के सबब उन्हें पकड़ लिया, अल्लाह (तआला) बेशक जबरदस्त और सख़्त अज़ाब वाला है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمۡ يَكُ مُغَيِّرًا نِّـعۡمَةً اَنۡعَمَهَا
عَلٰى قَوۡمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوۡا مَا بِاَنۡفُسِهِمۡ ۙ
وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيۡعٌ عَلِيۡمٌ ﴿53﴾

५३. ये इसलिए कि अल्लाह (तआला) ऐसा नहीं कि किसी क़ौम पर कोई नेमत कर के फिर बदल दे, जब तक कि वह ख़ुद अपनी उस हालत को न बदल दें, जो कि उनकी अपनी थी,[1] और यह कि अल्लाह तआला सुनने वाला जानने वाला है।

كَدَاۡبِ اٰلِ فِرۡعَوۡنَ ۙ وَالَّذِيۡنَ مِنۡ
قَبۡلِهِمۡ ؕ كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمۡ فَاَهۡلَكۡنٰهُمۡ
بِذُنُوۡبِهِمۡ وَاَغۡرَقۡنَاۤ اٰلَ فِرۡعَوۡنَ ۚ
وَكُلٌّ كَانُوۡا ظٰلِمِيۡنَ ﴿54﴾

५४. फ़िरऔन की आल और उनके पहले के लोगों के बराबर कि उन्होंने अपने रब की बातों को झुठलाया तो हम ने उनके गुनाहों के सबब उन्हें तबाह कर दिया और फ़िरऔन वालों को डुबो दिया और यह सभी ज़ालिम थे।

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنۡدَ اللّٰهِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا
فَهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿55﴾

५५. सभी जीवों से बुरे अल्लाह के नजदीक वह हैं जो कुफ़्र करें फिर वह ईमान न लायें।

اَلَّذِيۡنَ عٰهَدْتَّ مِنۡهُمۡ ثُمَّ يَنۡقُضُوۡنَ
عَهۡدَهُمۡ فِىۡ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمۡ لَا يَتَّقُوۡنَ ﴿56﴾

५६. जिन से आप ने वादा लिया, फिर भी वे अपना वादा हर बार तोड़ते हैं और कभी भी तक़्वा नहीं बरतते।

---

[1] इसका मतलब यह है कि जब तक कोई कौम शुक्र का रास्ता अपनाकर और अल्लाह तआला के ज़रिये बताये गये नाजायेज से मुख मोड़ कर अपनी हालतों और अख़लाकों को बदल नहीं लेती अल्लाह तआला उस पर अपने सुख-सुविधाओं और नेमत के दरवाज़े बन्द नहीं करता, दूसरे लफ़्ज़ों में अल्लाह तआला गुनाहों के सबब अपनी नेमतें ख़त्म कर देता है और अल्लाह तआला की रहमत का पात्र (मुस्तहक़) होने के लिए ज़रूरी है कि गुनाहों से बचा जाये।

فَإِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِم مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ (57)

५७. इसलिए जब कभी तू उन पर लड़ाई में ग़ालिब हो जाओ तो उन्हें ऐसी मार मारो कि उन के पिछले भी भाग खड़े हों,[1] शायद वह नसीहत हासिल कर लें।

وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِن قَوْمٍ خِيَانَةً فَانبِذْ إِلَيْهِمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ (58)

५८. और अगर तुझे किसी क़ौम से धोखेबाज़ी का डर हो तो बराबरी की हालत में उन की सुलह तोड़ दे,[2] अल्लाह ख़्यानत करने वालों से मुहब्बत नहीं रखता।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا ۚ إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ (59)

५९.और काफ़िर यह ख़्याल न करें कि वे भाग निकले, बेशक वे मजबूर नहीं कर सकते।

وَأَعِدُّوا لَهُم مَّا اسْتَطَعْتُم مِّن قُوَّةٍ وَمِن رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ وَآخَرِينَ مِن دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمُ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تُنفِقُوا مِن شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ (60)

६०. और तुम उन से (लड़ने के) लिये अपनी इस्तेताअत भर क़ूवत तैयार करो, और घोड़े तैयार रखने की भी,[3] कि उस से तुम अल्लाह के दुश्मनों और अपने दुश्मनों को डरा सको और उन के सिवाय दूसरों को भी, जिन्हें तुम नहीं जानते, अल्लाह उन्हें अच्छी तरह जान रहा है, और जो कुछ भी अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करोगे, वह तुम्हें पूरा-पूरा दिया जायेगा और तुम्हारे हक़ का नुक़सान नहीं किया जायेगा।

---

[1] شَرِّدْ بِهِم का मतलब है कि उनको ऐसी मार मारो कि जिस से उन के मानने वालों और साथियों में भगदड़ मच जाये, यहाँ तक कि वह आप की तरफ़ इस उम्मीद से मुख ही न करें कि कहीं उनका भी वही नतीजा न हो जो उनके पहले के लोगों का हुआ।

[2] धोखेबाज़ी से मुराद है जिस क़ौम से सुलह हुई, उस से यह डर कि वह सुलह तोड़ दे।

[3] قُوَّة की तफ़सीर नबी करीम के क़ौल से तीर चलाना है, (सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारः) क्योंकि उस समय यह बहुत बड़ा लड़ाई का हथियार था, और महत्वपूर्ण (अहम) शिक्षा थी, जिस तरह घोड़े लड़ाई के लिए बहुत ज़रूरी थे, जैसाकि इस आयत से भी वाज़ेह होता है, लेकिन अब तीर चलाने और घोड़े की लड़ाई में इतनी ज़रूरत और अहमियत नहीं रही, इसलिए (وَأَعِدُّوا لَهُم مَّا اسْتَطَعْتُم) के अधीन आजकल के आधुनिक हथियार आते हैं (जैसे-मीज़ाईल, टैंक, बम, और लड़ाई के विमान और पोत और लड़ाई के लिए पनडुब्बियाँ वग़ैरह) जिनकी तैयारी ज़रूरी है।

६१. और अगर वे सुलह की तरफ झुकें, तो तू भी सुलह की तरफ़ झुक जा, और अल्लाह पर भरोसा रख, बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है।

وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿61﴾

६२. और अगर वे तुझ से धोका करना चाहेंगे तो अल्लाह तुझे बस है, उसी ने अपनी मदद से और ईमानवालों से तेरा समर्थन कराया है।

وَاِنْ يُّرِيْدُوْۤا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ؕ هُوَ الَّذِيْۤ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿62﴾

६३. और उन के दिलों में आपसी मुहब्बत भी उसी ने पैदा किया है, अगर आप धरती की सभी चीजें ख़र्च कर देते तो भी उन के दिलों में मुहब्बत का जज़्बा पैदा नहीं कर सकते थे[1] लेकिन अल्लाह ही ने उन के दिलों में मुहब्बत डाल दिया, वेशक वह गालिब हिक्मत वाला है।

وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّاۤ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿63﴾

६४. हे नबी (ईशदूत)! आप और आप के पैरोकार मुसलमानों को अल्लाह बस है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿64﴾

६५. हे नबी! मुसलमानों को जिहाद (धर्मयुद्ध) का शौक दिलाओ, अगर तुम में से बीस साबिर भी होंगे तो भी दो सौ पर ग़ालिब रहेंगे, और अगर तुम में से एक सौ होंगे तो एक हजार काफ़िरों पर गालिब रहेंगे,[2] इस सबब कि वे नासमझ लोग हैं।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ؕ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْۤا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿65﴾

६६. अच्छा अब अल्लाह तुम्हारा बोझ हल्का करता है, वह अच्छी तरह जानता है कि तुम में कमजोरी है तो अगर तुम में से एक सौ साबिर होंगे तो वे दो सौ पर ग़ालिब रहेंगे और अगर तुम

اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ؕ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْۤا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿66﴾

[1] इन आयतों में अल्लाह तआला ने नबी ﷺ और ईमानवालों पर जो एहसान किये उन में से एक बड़े एहसान को बयान किया है, वह यह कि नबी ﷺ की ईमानवालों के जरिये मदद की, वे आप ﷺ के दाहिने हाथ और रक्षक और सहायक बन गये, ईमानवालों पर यह एहसान किया कि इस से पहले जो उन में दुश्मनी थी उसे मुहब्बत में बदल दिया।

[2] यह मुसलमानों के लिए ख़ुशख़बरी है कि तुम्हारे मजबूती से लड़ने वाले २० सैनिक दो सौ पर और सौ एक हजार पर ग़ालिब रहेंगे।

में से एक हज़ार होंगे तो वह अल्लाह के हुक्म से दो हज़ार पर ग़ालिब रहेंगे[1] और अल्लाह (तआला) सब्र करने वालों के साथ है।

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُثْخِنَ فِي الْأَرْضِ ۚ تُرِيدُونَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖ وَاللَّهُ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٧﴾

६७. नबी के हाथ में बन्दी नहीं चाहिए, जब तक कि देश में हिंसक युद्ध न हो जाये तुम तो दुनिया के धन चाहते हो और अल्लाह का इरादा आख़िरत का है, और अल्लाह तआला ग़ालिब हिक्मत वाला है।

لَوْلَا كِتَابٌ مِنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿68﴾

६८. अगर पहले से ही अल्लाह की तरफ़ से बात लिखी न होती[2] तो जो कुछ तुम ने लिया है उसके बारे में तुम्हें कोई सख़्त अज़ाब होता।

فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿69﴾

६९. और जो हलाल और पाक धन लड़ाई से हासिल करो उसे खाओ[3] और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह तआला बड़ा बख़्शने वाला और रहम करने वाला है।

---

[1] पिछला हुक्म सहाबा पर भारी हुआ, क्योंकि इसका मतलब था एक मुसलमान दस काफ़िरों के लिए, बीस दो सौ के लिए और एक सौ एक हज़ार के लिए काफ़ी है, और काफ़िरों के सामने मुसलमानों की इतनी तादाद हो तो जिहाद फ़र्ज़ और इससे बचना नाजायेज़ है। इसलिए अल्लाह तआला ने कमी करके एक और दस के अनुपात (तनासुब) को एक और दो का अनुपात कर दिया। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: अल-अंफ़ाल) अब इस अनुपात पर जिहाद फ़र्ज़ और इस से कम पर फ़र्ज़ नहीं है।

[2] इस बारे में मुफ़स्सिरों में इख़्तिलाफ़ है कि यह लिखी हुई बात क्या थी? कुछ ने कहा कि इस से मुराद लड़ाई में मिली धन-सामग्री को नाजायेज़ करने का हुक्म है, यानी चूँकि यह तक़्दीर का लेख लिखा था कि मुसलमानों को लड़ाई में मिली धन-सामग्री नाजायेज़ होगी, इसलिए तुम ने फ़िदिया ले कर जायेज़ काम किया, अगर ऐसा न होता तो फ़िदिया लेने के सबब तुम्हें बहुत अज़ाब सहन करना पड़ता, कुछ ने बद्र में शहीद होने वालों की तौबा इस से मुराद लिया है, कुछ ने रसूलुल्लाह ﷺ की मौजूदगी को अज़ाब न आने का सबब मुराद लिये हैं आदि। (तफ़सीली जानकारी के लिए देखें फ़तहुल क़दीर)

[3] इस में लड़ाई से मिली माल-सामग्री को हलाल और पाक ठहराकर फ़िदिया को हलाल होना बताया गया है, जिस से इस बात का समर्थन (ताईद) होता है कि "लिखी हुई बात" शायद इस से मुराद लड़ाई में मिली धन-सामग्री है।

७०. हे नबी ! अपने हाथ के नीचे के बन्दियों से कह दो कि अगर अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों में अच्छा इरादा देखेगा तो जो कुछ तुम से लिया गया है, उस से अच्छा तुम्हें अता करेगा, और फिर गुनाह भी माफ़ कर देगा और अल्लाह माफ़ करने वाला रहम करने वाला है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ قُل لِّمَن فِيٓ أَيۡدِيكُم مِّنَ ٱلۡأَسۡرَىٰٓ إِن يَعۡلَمِ ٱللَّهُ فِي قُلُوبِكُمۡ خَيۡرٗا يُؤۡتِكُمۡ خَيۡرٗا مِّمَّآ أُخِذَ مِنكُمۡ وَيَغۡفِرۡ لَكُمۡۚ وَٱللَّهُ غَفُورٞ رَّحِيمٞ ﴿70﴾

७१. और अगर वे तुझ से ख़यानत का इरादा करेंगे तो यह तो इस से पहले ख़ुद अल्लाह के साथ ख़यानत कर चुके हैं, आख़िर उस ने उन्हें पकड़वा दिया, और अल्लाह तआला इल्म वाला हिक्मत वाला है।

وَإِن يُرِيدُواْ خِيَانَتَكَ فَقَدۡ خَانُواْ ٱللَّهَ مِن قَبۡلُ فَأَمۡكَنَ مِنۡهُمۡۗ وَٱللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿71﴾

७२. जो लोग (इस्लाम) धर्म पर ईमान लाये और हिजरत (प्रस्थान) कर गये और अपने माल, जान से अल्लाह के रास्ते में जिहाद (धर्मयुद्ध) किये,[1] और जिन लोगों ने उन को पनाह और मदद दी[2] यह सब आपस में एक-दूसरे के मित्र हैं, और जो ईमान लाये लेकिन हिजरत (प्रवास) नहीं किया तुम से उनकी तनिक भी मित्रता नहीं जब तक कि वह हिजरत (देश त्याग) न करें।[3] हाँ! अगर वह धर्म के बारे में तुम से मदद माँगें तो तुम पर मदद देना ज़रूरी है, सिवाये उन लोगों के कि तुम्हारे और उन के बीच मुआहदा है, और जो भी तुम कर रहे हो अल्लाह अच्छी तरह देख रहा है।

إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَهَاجَرُواْ وَجَٰهَدُواْ بِأَمۡوَٰلِهِمۡ وَأَنفُسِهِمۡ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ وَٱلَّذِينَ ءَاوَواْ وَّنَصَرُوٓاْ أُوْلَٰٓئِكَ بَعۡضُهُمۡ أَوۡلِيَآءُ بَعۡضٖۚ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَلَمۡ يُهَاجِرُواْ مَا لَكُم مِّن وَلَٰيَتِهِم مِّن شَيۡءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُواْۚ وَإِنِ ٱسۡتَنصَرُوكُمۡ فِي ٱلدِّينِ فَعَلَيۡكُمُ ٱلنَّصۡرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوۡمِۭ بَيۡنَكُمۡ وَبَيۡنَهُم مِّيثَٰقٞۗ وَٱللَّهُ بِمَا تَعۡمَلُونَ بَصِيرٞ ﴿72﴾

७३. और काफ़िर आपस में एक-दूसरे के मित्र हैं, अगर तुम ने ऐसा न किया तो देश में फ़ित्ना होगा और बहुत फ़साद पैदा हो जायेगा।

وَٱلَّذِينَ كَفَرُواْ بَعۡضُهُمۡ أَوۡلِيَآءُ بَعۡضٍۚ إِلَّا تَفۡعَلُوهُ تَكُن فِتۡنَةٞ فِي ٱلۡأَرۡضِ وَفَسَادٞ كَبِيرٞ ﴿73﴾

---

[1] ये "सहावा" मुहाजेरीन (जो मक्का नगरी छोड़ कर मदीना आये) कहलाते हैं, जो फ़ज़ीलत में सहाबा में सब से बेहतर हैं।

[2] ये अन्सार कहलाते हैं (ये मदीना के असल निवासी हैं) ये फ़ज़ीलत के दूसरे मुक़ाम पर हैं।

[3] यह सहाबा का तीसरा दर्जा है जो मुहाजिर और अंसार के सिवाय हैं, ये मुसलमान होने के बाद अपने ही इलाक़े और जाति में रहते थे, इसलिए फ़रमाया कि तुम्हारे हक़ या विरासत के वे हक़दार नहीं।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوا وَّنَصَرُوا أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَّهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ (74)

७४. जो लोग ईमान लाये और हिजरत किया और अल्लाह की राह में जिहाद किया और जिन्होंने पनाह दिया और मदद पहुँचायी, यही लोग सच्चे ईमानवाले हैं, उन के लिए माफ़ी और इज़्ज़त वाला रिज़्क़ है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا مِن بَعْدُ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنكُمْ ۚ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ (75)

७५. और जो लोग इस के बाद ईमान लाये और हिजरत किया और तुम्हारे साथ होकर जिहाद किया, तो यह लोग भी तुम में से ही हैं, और रिश्ते वाले उन में से आपस में एक-दूसरे के ज़्यादा क़रीब हैं अल्लाह के हुक्म में,[1] बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला है।

सूरतुत्तौब:-९

سُورَةُ التَّوْبَةِ

सूर: तौब:* मदीने में उतरी और इस में एक सौ उन्तीस आयतें और सोलह रुकूअ हैं।

بَرَاءَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدتُّم مِّنَ الْمُشْرِكِينَ (1)

१. (यह) अल्लाह और उसके रसूल (दूत) की तरफ़ से बेज़ारी का एलान है[2] उन मुशरिकों के बारे में जिन से तुम ने मुआहदा किया है।

---

[1] भाईचारे और क़सम की बिना पर विरासत में जो हिस्सेदार बनते थे, इस आयत में उसे ख़ारिज कर दिया गया है, अब वारिस वही होगा जो जिसका वंशीय या ससुराली रिश्ता होगा।

* **नाम का सबब** : मुफ़स्सिरों ने इस के कई नामों का बयान किया है, लेकिन ज़्यादा मशहूर दो नाम हैं, पहले ‹तौबा›, इसलिए कि इस में ईमानवालों की तौबा क़ुबूल होने का बयान है। दूसरा नाम ‹बराअत› है, इसलिए कि इस में मूर्तिपूजकों से सुलह से अलग होने का एलान किया गया है। यह क़ुरआन मजीद का एक ही सूर: है, जिसके शुरू में बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम नहीं लिखा है, इस के भी कई सबब किताबों में लिखे हुए हैं, लेकिन ज़्यादा सही बात यह लगती है कि सूर: अंफ़ाल और सूर: तौबा इन दोनों के बारे में समानता पायी जाती है, इसलिए यह सूर: अंफ़ाल की पूरक (तक्मिला) या बाक़ी है, यह सात बड़ी सूरतों में से सातवीं बड़ी सूर: है, जिन्हें सबआ तिवाल कहा जाता है।

[2] फ़त्ह मक्का के बाद ९ हिजरी में नबी ﷺ ने हज़रत अबू बक्र, हज़रत अली (رضی الله عنهما) और दूसरे कुछ सहाबा को यह आयतें और हुक्म दे कर भेजा ताकि वह मक्के में उनको आम लोगों के सामने एलान कर दें, उन्होंने आप ﷺ के हुक्म के मुताबिक़ एलान कर दिया कि कोई इंसान अब (काबा) का नंगा तवाफ़ (परिक्रमा) नहीं कर सकेगा, बल्कि अगले साल से किसी मूर्तिपूजक को बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) के हज का हुक्म नहीं दिया जायेगा। (सहीह बुख़ारी न॰ १३६९, मुस्लिम न॰ ९८३)

فَسِيحُوا فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۙ وَأَنَّ اللَّهَ مُخْزِي الْكَافِرِينَ (2)

२. इसलिए (हे मुश्रिको!) तुम देश में चार महीने सफ़र कर लो, और जान लो कि तुम अल्लाह को मजबूर नहीं कर सकते और अल्लाह काफ़िरों को रुस्वा करने वाला है।

وَأَذَانٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ۙ وَرَسُولُهُ ۚ فَإِن تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ وَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ (3)

३. अल्लाह और उस के रसूल (दूत) की तरफ़ से हज अकबर के दिन[1] साफ़ एलान है कि अल्लाह मुश्रिकों से बेज़ार है और उसका रसूल भी, अगर अब भी तुम तौबा कर लो तो तुम्हारे लिये बेहतर है और अगर तुम मुँह फेरो तो जान लो कि तुम अल्लाह को मजबूर नहीं कर सकोगे और काफ़िरों को सख़्त अज़ाब की ख़बर दे दो।

إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدتُّم مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنقُصُوكُمْ شَيْئًا وَلَمْ يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتِمُّوا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ (4)

४. लेकिन वह मुश्रिक जिन से तुम ने मुआहदा कर लिया है, और उन्होंने तुम्हें ज़रा भी नुक़सान नहीं पहुंचाया और तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी की मदद नहीं की तो तुम भी मुआहदा की मुद्दत उन के साथ पूरी करो, बेशक अल्लाह परहेज़गारों से मुहब्बत करता है।

فَإِذَا انسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا

५. फिर हुरमत वाले महीनों[2] के ख़त्म होते ही मूर्तिपूजकों को जहाँ पाओ क़त्ल करो, उन्हें

---

[1] सहीहैन (बुख़ारी और मुस्लिम) और दूसरी सहीह हदीस की किताबों से साबित है कि हज अकबर के दिन से मुराद योमुन्नहर (यानी १० ज़िलहिज्जा) का दिन है। (तिर्मिज़ी नं॰ ९५७ बुख़ारी नं॰ ४६५५, मुस्लिम नं॰ ९८२) उसी दिन मिना के मुक़ाम पर मुक्ति (बराअत) का एलान किया गया, १० ज़िलहिज्जा को हज अकबर इसलिए कहा जाता है कि इस दिन हज की सब से ज़्यादा और ख़ास दीनी रीतियों को अदा किया जाता है, और आम लोग उमरे को हज असग़र कहा करते थे, इसलिए उमरे से अच्छा करने के लिए हज को महा हज (अकबर) कहा गया। लोगों में जो यह मशहूर है कि जुमआ को आये वह हज अकबर है, बेबुनियाद है।

[2] इन हुरमत वाले महीनों से मुराद क्या है? इस में इख़्तिलाफ़ है, एक ख़्याल तो यह है कि इस से मुराद वही चार महीने हैं जो हुरमत वाले हैं, यानी मुहर्रम, रजब, ज़ीक़ाद: और ज़िलहिज्जा। लेकिन इमाम इब्ने कसीर के ऐतबार से यहाँ निषेधित महीने नहीं हैं, बल्कि १० ज़िलहिज्जा से १० रबीउस्सानी तक के चार महीने मुराद हैं, उन्हें हुरमत वाले महीने इसलिए कहा गया है कि बराअत के एलान के बिना पर इन चार महीनों में उन मूर्तिपूजकों से लड़ने और उन के ख़िलाफ़ किसी भी कार्यवाही का हुक्म नहीं था। मुक्ति (बराअत) के एलान के बुनियाद पर यह दलील ज़्यादा अच्छी मालूम होती है।

الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَخُذُوْهُمْ
وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ
تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا
سَبِيْلَهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿5﴾

बन्दी बनाओ, उनका घेराव करो और उन के ताक में हर घाटी में जा बैठो, लेकिन अगर वे तौबा कर लें और नमाज पाबन्दी से (लगातार) पढ़ने लगें और ज़कात अदा करने लगें तो तुम उनका रास्ता छोड़ दो, बेशक अल्लाह तआला बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

وَاِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ
فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ
مَاْمَنَهٗ ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿6﴾

६. अगर मुश्रिकों में से कोई तुझ से पनाह माँगे तो तू उसे पनाह दे दे, यहाँ तक कि वह अल्लाह का क़ौल सुन ले फिर उसे उस के शान्ति स्थान तक पहुँचा दे[1] यह इसलिए कि वह लोग नावाक़िफ़ हैं।[2]

كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ
رَسُوْلِهٖٓ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ۗ
اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿7﴾

७. मूर्तिपूजकों का वादा अल्लाह और उस के रसूल के क़रीब कैसे रह सकता है, सिवाय उन के जिन से मुआहदा तुम ने मस्जिदे हराम के पास किया है तो जब तक वे लोग तुम से मुआहदा निभायें, तुम भी उन से वादा की पासदारी करो, अल्लाह (तआला) परहेज़गार लोगों से मुहब्बत करता है।

كَيْفَ وَاِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ
اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ۗ يُرْضُوْنَكُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ وَتَاْبٰى
قُلُوْبُهُمْ ۚ وَاَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿8﴾

८. उन के वादों का क्या भरोसा, उनको अगर तुम पर ग़ल्बा मिल जाये तो न ये सम्बन्ध का ख़्याल करें न अहद व पैमान का, अपने मुँह से ये तुम्हें परिचा रहे हैं, लेकिन इनके दिल नहीं

[1] इस आयत में जंगजू मूर्तिपूजकों के बारे में एक छूट दी गयी है कि अगर कोई मूर्तिपूजक पनाह माँगे तो उसे पनाह दे दो, यानी उसे अपनी हिफ़ाज़त में महफ़ूज़ रखो ताकि कोई दूसरा मुसलमान उसे मार न सके, ताकि उसे अल्लाह की बातें सुनने और इस्लाम धर्म क़ुबूल करने का नसीब हासिल हो जाये, लेकिन अगर अल्लाह की बातें सुनने के बाद भी वह इस्लाम दीन नहीं क़ुबूल करता है, तो उसे उस के महफ़ूज़ मकाम तक पहुँचा दो, यानी अपनी हिफ़ाज़त का कर्त्तव्य आख़िर पल तक निभाना है, जब तक वह अपने महफ़ूज़ मकाम तक नहीं पहुँच जाता उसकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी तुम्हारे ऊपर है।

[2] यानी पनाहगीरों को पनाह की छूट इसलिए अता की गयी है क्योंकि यह लोग नावाक़िफ़ हैं, मुमकिन है अल्लाह और उस के रसूल की बातें उन के इल्म में आयें और मुसलमानों के अख़लाक़ और किरदार वह देखें, तो इस्लाम धर्म क़ुबूल करके आख़िरत के अज़ाब से बच जायें, जिस तरह हुदैबिया की सुलह के बाद बहुत से काफ़िर मदीना आते-जाते रहे, तो मुसलमानों के अख़लाक़ और किरदार को देख कर इस्लाम धर्म को समझने में बहुत मदद मिली और बहुत से लोग मुसलमान हो गये।

मानते और उनमें से ज़्यादातर तो फ़ासिक़ हैं।

اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿9﴾

९. उन्होंने अल्लाह की आयतों को बहुत कम दाम में बेच दिया और उस के रास्ते से रोका, बहुत बुरा है जो यह कर रहे हैं।

لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ﴿10﴾

१०. यह तो किसी मुसलमान के हक़ में किसी रिश्ता का या अहद की कभी फ़िक्र नहीं करते, यह हैं ही हद से गुज़रने वाले।

فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ ؕ وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿11﴾

११. अब भी अगर ये तौबा (पश्चाताप) कर लें और नमाज़ लगातार पढ़नें लगें और ज़कात देते रहें, तो तुम्हारे दीनी भाई हैं[1] और हम तो जानकारों के लिए अपनी आयतों को तफ़सील के साथ बयान कर रहे हैं।

وَاِنْ نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْٓا اَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَآ اَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ ﴿12﴾

१२. अगर ये लोग अहद और वादे के बाद भी अपना अहद तोड़ दें और तुम्हारे धर्म की निन्दा भी करें, तो तुम भी उन काफ़िरों के सरदारों से भिड़ जाओ, उनकी क़सम कोई चीज़ नहीं, मुमकिन है कि इस तरह वह रुक जायें।

اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَهُمْ بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿13﴾

१३. तुम उन लोगों के सिर कुचलने के लिए क्यों तैयार नहीं होते, जिन्होंने अपनी क़समों को तोड़ दिया और (आख़िर) ईशदूत (रसूल) को देश से निकाल देने की सोच में हैं। और ख़ुद ही पहली बार उन्होंने तुम से छेड़ की है, क्या तुम उन से डरते हो? अल्लाह ही को सब से ज़्यादा हक़ है कि तुम उस से डर रखो अगर तुम ईमान वाले हो।

---

[1] नमाज़, तौहीद (एकेश्वरवाद में यक़ीन) और रिसालत के क़ुबूल करने के बाद, इस्लाम का सबसे अहम और ख़ास रुक्न है जो अल्लाह का हक़ है, उस में अल्लाह की इबादत के कई रूप हैं, इस में हाथ बाँधकर खड़ा होना है, रुकूअ और माथा टेकना है, दुआ और अज़कार है, अल्लाह की अज़मत और बड़ाई का और अपनी कमज़ोरी और लाचारी का प्रदर्शन (इज़हार) है। इबादत के यह सारे तरीक़े और रूप सिर्फ़ अल्लाह के लिए योग्य हैं, नमाज़ के बाद दूसरा फ़रीज़ा ज़कात अदा करना है, जिस में इबादती काम होने के साथ-साथ दूसरे इंसानों पर उन के नैतिक (अख़लाक़ी) हक़ भी शामिल हैं।

قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ (14)

१४. उन से तुम जंग करो, अल्लाह तुम्हारे हाथों उनको तकलीफ़ देगा, उन्हें ज़लील और बेइज़्ज़त करेगा, तुम्हें उन पर मदद देगा और मुसलमानों के दिलों को ठन्डा करेगा।

وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ ۗ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ (15)

१५. और उन के दिलों के दुख और ग़ुस्से को दूर करेगा[1] और वह जिसकी तरफ़ चाहता है रहम से आकर्षित (मुतवज्जिह) होता है, और अल्लाह तआला जानने वाला हिक्मत वाला है।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا مِن دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلِيجَةً ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ (16)

१६. क्या तुम यह समझ बैठे हो कि तुम छोड़ दिये जाओगे? अगरचे कि अल्लाह (तआला) ने तुम में से उन्हें मुमताज नहीं किया है जो जिहाद के सिपाही हैं, और जिन्होंने अल्लाह के और उस के रसूल के और ईमानवालों के सिवाय किसी को दोस्त नहीं बनाया, और अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानने वाला है जो तुम कर रहे हो।

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَن يَعْمُرُوا مَسَاجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَىٰ أَنفُسِهِم بِالْكُفْرِ ۚ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ (17)

१७. मुमकिन नहीं कि मूर्तिपूजक अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें, जबकि हाल यह है कि यह अपने कुफ़्र के ख़ुद गवाह हैं,[2] उन के अमल बरबाद और बेकार हैं, और वे दायमी तौर से नरकवासी हैं।[3]

---

[1] यानी जब यह मुसलमान कमज़ोर थे, तो यह मूर्तिपूजक उन पर ज़ुल्म करते थे, जिसके सबब मुसलमानों के दिल उनसे बहुत दुखी और घायल थे, जब मुसलमानों के हाथों वह मारे जायेंगे और ज़िल्लत व रुसवाई उनकी तक़दीर में आयेगी तो फ़ितरी बात है कि इस से उत्पीड़ित और दुखी मुसलमानों के दिलों को ठंढक मिलेगी और मन का ग़ुस्सा कम होगा।

[2] مساجد الله से मुराद मस्जिदे हराम है, बहुवचन (जमा) लफ़्ज़ इसलिए इस्तेमाल किया गया है कि दुनिया की सभी मस्जिदों का यह केन्द्र (क़िब्ला) है, या अरबों में एक वचन के लिए बहुवचन का इस्तेमाल भी जायेज़ कहा जाता है, मतलब यह है कि अल्लाह के घर (यानी मस्जिदे हराम) की तामीर करना या बसाना मुसलमानों का काम है, न कि उनका जो कुफ़्र और शिर्क करते हैं, और उसको क़ुबूल भी करते हैं, जैसे कि वे तलबिया में कहा करते थे : ((لَبَّيْكَ ! لاَ شَرِيكَ لَكَ، إِلاَّ شَرِيكًا هُوَ لَكَ، تَمْلِكُهُ وَمَا مَلَكَ)) (सहीह मुस्लिम)

[3] यानी उन के वे अमल जो देखने में नेक लगते हैं, जैसे ख़ानये काअबा का तवाफ़, उमरः और हाजियों की ख़िदमत आदि (वग़ैरह)। लेकिन ईमान के बिना वह ऐसे पेड़ की तरह हैं जो बिना छाया और बिना फल के हो या वे उन फूलों की तरह हैं जिन में ख़ुशबू नहीं है।

إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿18﴾

१८. अल्लाह की मस्जिदों को तो वह आबाद करते हैं, जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हों, नमाज़ बराबर पढ़ते हों, ज़कात देते हों, और अल्लाह के सिवाय किसी से न डरते हों, मुमकिन है कि यही लोग बेशक हिदायत याफ़्ता हैं।

اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿19﴾

१९. क्या तुम ने हाजियों को पानी पिला देना और मस्जिदे हराम की सेवा करना उस के बराबर कर दिया है जो अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान लाये और अल्लाह की राह में जिहाद किया, यह अल्लाह के नज़दीक बराबर नहीं[1] और अल्लाह (तआला) ज़ालिमों को रास्ता नहीं दिखाता है।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿20﴾

२०. जो लोग ईमान लाये, हिजरत की, अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जान से जिहाद किया, वह अल्लाह के सामने बहुत ज़्यादा दर्जे वाले हैं, और यही लोग कामयाबी हासिल करने वाले हैं।

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ﴿21﴾

२१. उनका रब उन्हें अपनी रहमत और ख़ुशी और ऐसी जन्नतों की ख़ुशख़बरी देता है जिन में उन के लिये दायमी सुख है।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿22﴾

२२. वहाँ ये हमेशा रहेंगे अल्लाह के पास, बेशक बहुत बड़े बदले हैं।[2]

[1] मूर्तिपूजक हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे हराम की देख भाल करने का जो काम करते थे उस पर उन्हें बड़ा घमंड था, और इसके मुक़ाबले में वे ईमान और जिहाद को कोई फ़ज़ीलत नहीं देते थे, जिसकी फ़ज़ीलत मुसलमानों में थी। अल्लाह ने फ़रमाया : क्या तुम हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे हराम का प्रबन्ध करने को अल्लाह पर ईमान और अल्लाह की राह में जिहाद के बराबर समझते हो ? याद रखो, अल्लाह के क़रीब ये बराबर नहीं हैं, बल्कि मूर्तिपूजक का कोई भी अमल क़ुबूल नहीं, चाहे वह सवाब के तौर पर ही हो।

[2] इन आयतों में उन ईमानवालों की प्रधानता (फ़ज़ीलत) की चर्चा की गयी है जिन्होंने हिजरत किया और अपने तन-मन-धन से जिहाद में हिस्सा लिया। फ़रमाया कि अल्लाह के यहाँ उन्हीं का पद अच्छा है और वही सफल हैं, यह अल्लाह की रहमत और रज़ा और दायमी इंआम के पात्र हैं, न कि वे जो ख़ुद अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनते हैं और अपने पूर्वजों के रीति-रिवाजों को ही अल्लाह पर ईमान के मुक़ाबले में प्यारा रखते हैं।

२३. हे ईमानवालों! अपने पिताओं और अपने भाईयों को दोस्त न बनाओ अगर वह कुफ़्र को ईमान से ज़्यादा अच्छा समझें, तुम में से जो भी उनसे प्रेम रखेगा वह पूरी तरह (गुनाहगार और) ज़ालिम है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَا تَتَّخِذُوٓاْ ءَابَآءَكُمْ وَإِخْوَٰنَكُمْ أَوْلِيَآءَ إِنِ ٱسْتَحَبُّواْ ٱلْكُفْرَ عَلَى ٱلْإِيمَٰنِ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ﴿23﴾

२४. आप कह दीजिए कि अगर तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारे वंश और कमाया धन और वह तिजारत जिसकी कमी से तुम डरते हो, और वे घर जिन्हें तुम प्यारा रखते हो (अगर) यह तुम्हें अल्लाह और उस के रसूल और अल्लाह की राह में जिहाद से ज़्यादा प्यारा हैं, तो तुम इंतेज़ार करो कि अल्लाह तआला अपना अज़ाब ले आए, अल्लाह तआला फ़ासिकों को रास्ता नहीं दिखाता है।

قُلْ إِن كَانَ ءَابَآؤُكُمْ وَأَبْنَآؤُكُمْ وَإِخْوَٰنُكُمْ وَأَزْوَٰجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَٰلٌ ٱقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَٰرَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَجِهَادٍ فِى سَبِيلِهِۦ فَتَرَبَّصُواْ حَتَّىٰ يَأْتِىَ ٱللَّهُ بِأَمْرِهِۦ ۗ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْفَٰسِقِينَ ﴿24﴾

२५. बेशक अल्लाह तआला ने तुम्हें बहुत से मैदाने जंग में फ़त्ह अता की है, और हुनैन[1] की लड़ाई के दिन भी, जबकि तुम्हें अपनी ज़्यादा तादाद पर घमन्ड था, लेकिन इसने तुम्हें कोई फ़ायेदा नहीं दिया, लेकिन धरती अपनी विस्तार (वुसअत) के बावजूद भी तुम्हारे लिए तंग हो गयी, फिर तुम पीठ फेर कर मुड़ गये।

لَقَدْ نَصَرَكُمُ ٱللَّهُ فِى مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۙ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنكُمْ شَيْـًٔا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ ٱلْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُم مُّدْبِرِينَ ﴿25﴾

२६. फिर अल्लाह ने अपनी तरफ़ से सलामती अपने नबी पर और ईमानवालों पर उतारी और अपनी वह सेना भेजी, जिन्हें तुम देख नहीं रहे थे और काफ़िरों को पूरा अज़ाब दिया, और इन काफ़िरों का यही बदला था।

ثُمَّ أَنزَلَ ٱللَّهُ سَكِينَتَهُۥ عَلَىٰ رَسُولِهِۦ وَعَلَى ٱلْمُؤْمِنِينَ وَأَنزَلَ جُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ ۚ وَذَٰلِكَ جَزَآءُ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿26﴾

२७. फिर उस के बाद भी जिसे चाहे अल्लाह (तआला) माफ़ करे अल्लाह ही बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

ثُمَّ يَتُوبُ ٱللَّهُ مِنۢ بَعْدِ ذَٰلِكَ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ ۗ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿27﴾

---

[1] हुनैन मक्का और तायफ़ नगरों के बीच एक घाटी का नाम है, यहाँ हवाज़िन और सक़ीफ़ के दो क़बीले रहते थे, जो अपनी तीरअंदाज़ी में मशहूर थे, यह मुसलमानों के ख़िलाफ़ लड़ने की तैयारी कर रहे थे कि इसकी ख़बर रसूलुल्लाह ﷺ को मिली तो आप ﷺ बारह हज़ार मुसलमानों की सेना लेकर इन क़बीलों से जंग करने के लिए हुनैन की घाटी में गये, यह फ़त्ह मक्का के १८ या १९ दिन के बाद शव्वाल की घटना (वाक़ेआ) है।

२८. हे ईमानवालो! बेशक मूर्तिपूजक नापाक हैं,[1] वह इस साल के बाद मस्जिदे हराम के क़रीब भी न आने पायें,[2] अगर तुम्हें ग़रीबी का डर है, तो अल्लाह तुम्हें अपनी रहमत से धनवान बना देगा अगर चाहे, बेशक अल्लाह जानने वाला और हिक्मत वाला है।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖٓ اِنْ شَآءَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ (28)

२९. उन लोगों से लड़ो जो अल्लाह पर और आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, जो अल्लाह और उस के रसूल के ज़रिये हराम की गई चीज़ को हराम नहीं समझते, न सच्चे दीन को क़ुबूल करते हैं उन लोगों में से जिन्हें किताब अता की गयी है, यहाँ तक कि वह ज़लील होकर अपने हाथों से जिज़िया (टैक्स) अदा करें।[3]

قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ (29)

३०. यहूदी कहते हैं कि उज़ैर अल्लाह का बेटा है, और ईसाई कहते हैं कि मसीह अल्लाह का बेटा है, यह क़ौल सिर्फ़ उनके मुँह की बात है, पहले के काफ़िरों के क़ौल की यह भी बराबरी करने लगे हैं, अल्लाह इनका नाश करे यह कहाँ फिरे जा रहे हैं?

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۭ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ (30)

३१. उन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर अपने आलिमों और धर्माचारियों (दरवेशों) को रब बनाया है,[4] और मरियम के बेटे मसीह को, अगरचे कि उन्हें एक अकेले अल्लाह ही की इबादत का हुक्म दिया गया था, जिसके सिवाय

اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ (31)

---

[1] मूर्तिपूजकों के नापाक और अशुद्ध (नजिस) होने का मतलब अक़ीदा, ईमान और अमलों की नापाकी है, कुछ के क़रीब मूर्तिपूजक बाहरी और अन्दरी दोनों तरह से नापाक हैं, क्योंकि वे शौच (सफ़ाई, और पाकीज़गी) का इस तरह प्रबन्ध नहीं करते, जिसका हुक्म धार्मिक नियमों ने दिया है।

[2] यह वही हुक्म है जो ९ हिजरी में मुक्ति (बराअत) का एलान के वक़्त किया गया था, जिसकी तफ़सील पहले गुज़र चुकी है।

[3] मुश्रिकों से लड़ने के हुक्म के बाद यहूदियों और ईसाईयों से लड़ने का हुक्म दिया जा रहा है, (अगर वे इस्लाम दीन क़ुबूल न करें) या फिर जिज़िया दे कर मुसलमानों की पनाह में रहना क़ुबूल कर लें। सुरक्षा कर को "जिज़िया" कहते हैं, यह उन के लिए है जो ग़ैर मुस्लिम हैं, लेकिन इस्लामी राज्य में रह रहे हों।

[4] इसकी तफ़सीर हज़रत अदी पुत्र हातिम के ज़रिये बयान हदीस से वाज़ेह है।

कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह उन के शिर्क करने से पाक है।

يُرِيدُونَ أَن يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَن يُتِمَّ نُورَهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿32﴾

३२. वह अल्लाह के नूर को अपने मुखों से बुझा देना चाहते हैं, और अल्लाह इंकार करता है, लेकिन यह कि अपने नूर को पूरा करे, अगरचे काफ़िर लोग नाखुश हों।[1]

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ﴿33﴾

३३. उसी ने अपने रसूल को सच्चा रास्ता और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे दूसरे सभी दीनों पर ग़ालिब कर दे,[2] अगरचे मुश्रिक बुरा मानें।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْأَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَأْكُلُونَ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۗ وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ

३४. हे ईमानवालो! ज़्यादातर उलमा और इबादत करने वाले लोगों का माल नाहक़ खा जाते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और जो लोग सोने चाँदी का ख़ज़ाना रखते हैं और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं करते उन्हें सख़्त अज़ाब की ख़बर सुना दो।[3]

---

[1] यानी अल्लाह ने रसूल ﷺ को जो नूर और सच्चा दीन दे कर भेजा है, यहूदी, इसाई और मूर्तिपूजक चाहते हैं कि उसे झगड़े और लांछन से मिटा दें, तो उनकी मिसाल उस जैसी है जो अपनी फूंक से सूरज की किरण और चाँद की रौशनी को बुझाने की कोशिश करे, तो जिस तरह यह नामुमकिन है उसी तरह जो सच्चा दीन अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ को देकर भेजा है उसको मिटाना भी नामुमकिन है, वह सभी दीनों पर ग़ालिब होकर रहेगा। जैसाकि अगली आयत में अल्लाह ने फ़रमाया : काफ़िर का लफ़्ज़ी माने है छिपाने वाला, इसी वजह से रात को भी काफ़िर कहते हैं, क्योंकि वह सभी चीज़ों को अपने अंधेरे में छिपा लेती है, किसान को भी काफ़िर कहते हैं, क्योंकि वह अनाज के दाने को धरती में छिपा देता है, इसलिए काफ़िर भी अल्लाह के नूर को छिपाना चाहते हैं या अपने दिलों में कुफ़्र, साज़िश और मुसलमानों और इस्लाम के ख़िलाफ़ हसद और जलन को छिपाये हुए हैं, इसलिए उन्हें काफ़िर कहा जाता है।

[2] दलील और निशानी की बुनियाद पर यह ग़लबा हर वक़्त हासिल है, लेकिन जब मुसलमानों ने दीन के हुक्म पर अमल किया तो उन्हें दुनियावी ग़लबा हासिल हुआ, और अब भी मुसलमान अपने दीन के ऐतबार से काम करने लगें तो उनका असर ज़रूर मुमकिन है, इसलिए कि अल्लाह का वादा है कि अल्लाह के मानने वाले ही ग़ालिब और कामयाब होंगे, शर्त यह है कि मुसलमान अल्लाह वाले बन जायें।

[3] हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फ़रमाते हैं कि यह ज़कात के हुक्म से पहले का हुक्म है, ज़कात

الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿34﴾

يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِىْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿35﴾

३५. जिस दिन उस ख़जाना को जहन्नम की आग में तपाया जायेगा, फिर उस से उन के माथे और पहलू और पीठें दागी जायेंगी (उन से कहा जायेगा) यह है जिसे तुम ने अपने लिए ख़जाना बना कर रखा था, तो अपने ख़ज़ानों का मज़ा चखो।

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِىْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَآ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿36﴾

३६. महीनों की गिनती अल्लाह के नज़दीक अल्लाह की किताब में बारह की है, उसी दिन से जब से आकाशों और धरती को उस ने पैदा किया है, उन में से चार हुरमत और इज़्ज़त के हैं[1] यही पाक दीन है,[2] तुम इन महीनों में अपनी जानों पर ज़ुल्म न करो, और तुम सभी मुश्रिकों से जिहाद करो, जैसेकि वे तुम सभी से लड़ते हैं, और जान रखो कि अल्लाह तआला परहेज़गारों के साथ है।

اِنَّمَا النَّسِىْٓءُ زِيَادَةٌ فِى الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ

३७. महीनों का आगे पीछे कर देना कुफ्र को ज़्यादा करना है,[3] उससे वह गुमराह किये जाते

के हुक्म के बाद ज़कात द्वारा लोगों के माल की पकीज़गी का ज़रिया बताया है, इसलिए आलिमों का कहना है कि जिस माल से ज़कात अदा कर दी जाये वह ख़ज़ाना नहीं है और जिस से ज़कात न दी जाये वह ख़ज़ाना है, जिस पर क़ुरआन की यह तंबीह आयी है।

[1] فِي كِتَابِ الله से मुराद 'लौहे महफ़ूज़' (सुरक्षित पुस्तक) है।

[2] यानी उन महीनों का उसी नम्बर में होना जो अल्लाह ने रखा है, और जिन में चार हुरमत वाले हैं, यही हिसाब सही और गिनती पूरी है।

[3] نَسِيٌّ (नसीउन) मतलब 'पीछे करने के' हैं, अरबों में भी हुरमत वाले महीनों में लूटमार, ख़ून-ख़राबा और लड़ाई को अच्छा नहीं समझा जाता था, परन्तु लगातार महीनों की हुरमत करना ख़ून-ख़राबा से रुके रहना उनके लिए कठिन था, इसलिए उसका हल उन्होंने यह निकाल रखा था कि जिस हुरमत वाले महीने में वे ख़ून-ख़राबा करना चाहते वह कर लेते, और यह एलान कर देते कि इस हुरमत वाले महीने के बदले फ़्लां महीना हुरमत वाला होगा, जैसे मोहर्रम के महीने की हुरमत ख़त्म करके सफ़र के महीने को हुरमत वाला एलान कर देते, इस तरह हुरमत वाले महीनों में बदलाव और हेर-फेर का ज़्यादा कर लिया करते थे, इसको 'नसी' कहा

الَّذِينَ كَفَرُوا يُحِلُّونَهُ عَامًا وَّيُحَرِّمُونَهُ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ۭ زُيِّنَ لَهُمْ سُوْۗءُ اَعْمَالِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿37﴾

हैं जो काफ़िर हैं, एक साल को हलाल कर लेते हैं, और एक साल को हराम बना लेते हैं कि अल्लाह ने जो हराम रखा है उसकी गिनती में तो बराबरी कर लें, फिर जिसे हराम किया है उसे हलाल बना लें, उन के बुरे काम उन्हें अच्छे दिखा दिये गये हैं और अल्लाह काफ़िरों को हिदायत नहीं देता है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ ۭ اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿38﴾

३८. हे ईमानवालो! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुम से कहा जाता है कि चलो अल्लाह के रास्ते में हिजरत करो तो तुम धरती पकड़ लेते हो, क्या तुम आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी पर ही रीझ गये हो, सुनो! दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में बहुत छोटी है।

اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ڏ وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَـيْـــًٔا ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿39﴾

३९. अगर तुम ने हिजरत न की तो अल्लाह (तआला) तुम्हें दुखदायी सज़ा देगा और तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को बदल लायेगा, तुम अल्लाह (तआला) को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकते,[1] और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

जाता था, अल्लाह तआला ने उसके बारे में फ़रमाया कि यह अधर्म (कुफ़्र) का ज़्यादा करना है, क्योंकि इस अदल-बदल से मक़सद लड़ाई-झगड़ा, ख़ून-ख़राबा और दुनियावी फ़ायेदा के अलावा कुछ भी नहीं।

[1] रोम के इसाई राजा हरकूलिस के बारे में यह ख़बर मिली कि वह मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंग की तैयारी कर रहा है, इसलिए नबी ﷺ ने भी इसके लिए तैयारी का हुक्म दे दिया, यह श़व्वाल ९ हिजरी का वाक़ेआ है, सख़्त गर्मी थी और लम्बा सफ़र था, कुछ मुसलमानों और मुश्‍िरकों को यह हुक्म भारी लगा जिसका बयान इस आयत में किया गया है, और उन्हें बाख़बर और होशियार किया गया है, यह तबूक की जंग कहलाती है, जो हक़ीक़त में नहीं हुई। २० दिन मुसलमान सीरिया के क़रीब तबूक के मुक़ाम पर इंतेज़ार करके वापस आ गये, इसको कठिनाईयों की जंग कहा जाता है, क्योंकि इस लम्बे सफ़र में इस सेना को ज़्यादा कठिनाईयों का सामना करना पड़ा था। اثّاقلتم यानी सुस्ती करने और पीछे रहना चाहते हो, इसका प्रदर्शन (मुज़ाहरा) कुछ लोगों की तरफ़ से हुआ, लेकिन इसको सम्बोधित (मुख़ातब) सभी से कर दिया गया। (फ़तहुल क़दीर)

إِلَّا تَنصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا ۖ فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ ۗ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (40)

४०. अगर तुम उस (रसूल मुहम्मद ﷺ) की मदद न करो तो अल्लाह ही ने उसकी मदद की, उस वक़्त जब काफ़िरों ने उसे (देश से) निकाल दिया था, दो में से दूसरा जबकि वह दोनों गुफ़ा में थे, जब यह अपने साथी से कह रहे थे कि फ़िक्र न करो अल्लाह हमारे साथ है,[1] तब अल्लाह ही ने अपनी तरफ़ से सुकून उतारकर उन सेनाओं से उसकी मदद की जिन्हें तुम ने देखा भी नहीं, उस ने काफ़िरों की बात नीची कर दी और बड़ा और बेहतर तो अल्लाह का ही कौल है,[2] अल्लाह (तआला) ग़ालिब और हिक्मत वाला है।

انفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ (41)

४१. निकल खड़े हो जाओ हल्के-फुल्के हो तो भी और भारी-भरकम हो तो भी,[3] और अल्लाह के रास्ते में अपने तन-मन-धन से जिहाद करो, यही तुम्हारे लिए अच्छा है अगर तुम में इल्म हो।

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوكَ وَلَٰكِن بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ۚ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ يُهْلِكُونَ أَنفُسَهُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ (42)

४२. अगर जल्द हासिल होने वाली धन-सामग्री होती[4] और हल्का-सा सफ़र होता तो ये ज़रूर आप के पीछे हो लेते, लेकिन उन पर तो दूरी और दूरी की तकलीफ़ पड़ गई। और अब तो ये अल्लाह की क़सम खायेंगे कि अगर हम में

---

[1] जिहाद से पीछे रहने वालों या उससे जान छुड़ाने वालों से कहा जा रहा है कि अगर तुम मदद नहीं करते हो तो अल्लाह को तुम्हारी मदद की ज़रूरत भी नहीं है, अल्लाह तआला ने अपने रसूलों की उस वक़्त भी मदद की जब उस ने गुफ़ा में पनाह ली थी और अपने साथी (हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़) से कहा था, "फ़िक्र न करो अल्लाह हमारे साथ है।" इसकी मुफ़स्सल हदीस आती है।

[2] काफ़िरों के क़ौल से शिर्क और अल्लाह के क़ौल से तौहीद (एकेश्वरवाद) का मतलब है।

[3] इस के कई मतलब बयान कये जाते हैं, व्यक्तिगत (ज़ाती) तौर से या सामूहिक तौर से, ख़ुशी से या नाख़ुशी से, ग़रीब हो या अमीर हो, जवान हो या बूढ़ा हो, पैदल हो या सवार हो, विवाहित हो या अविवाहित हो, वह हिजरत करने वालों में से हो या रह जाने वालों में।

[4] यहाँ से उन लोगों का बयान हो रहा है जिन्होंने उज़्र बता कर नबी ﷺ से इजाज़त ले लिया था, जब कि हक़ीक़त में उन के पास कोई उज़्र नहीं था, عَرَض से मुराद जो दुनियावी फ़ायदे सामने आये, मतलब है जंग में मिली ग़नीमत।

ताक़त और क़ूवत होती तो हम ज़रूर आप के साथ निकलते, यह अपनी जानों को ख़ुद ही तबाही की ओर डाल रहे हैं, इन के झूठे होने का सच्चा इल्म अल्लाह को है।

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿43﴾

४३. अल्लाह तुझे माफ़ कर दे, तूने उन्हें क्यों इजाज़त दे दिया, बिना इस के कि तेरे सामने सच्चे लोग वाज़ेह तौर से ज़ाहिर हो जायें और तू झूठे लोगों को भी जान ले।

لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ ۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿44﴾

४४. अल्लाह पर और क़यामत (प्रलय) के दिन पर ईमान और यक़ीन रखने वाले तो माल से और जान से जिहाद करने से रूके रहने की कभी भी तुझ से इजाज़त नहीं मांगेंगे और अल्लाह तआला परहेज़गारों को अच्छी तरह जानता है।

اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿45﴾

४५. यह इजाज़त तो तुझ से वही मांगते हैं, जिन्हें न अल्लाह पर ईमान है न आख़िरत के दिन पर यक़ीन है, जिन के दिल शक में पड़े हुए है और यह अपने शक ही में भटक रहे हैं।[1]

وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿46﴾

४६. अगर उनका इरादा (जिहाद पर) निकलने का होता, तो वह इस (सफ़र) के लिए संसाधन (वसायेल) की तैयारी करते, लेकिन अल्लाह को उनका उठना प्यारा नहीं था, इसलिए उन्हें कुछ करने से रोक दिया, और कह दिया गया कि तुम बैठने वालों के साथ बैठे ही रहो।

لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَا۟اَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ ۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿47﴾

४७. अगर यह तुम में मिल कर निकलते भी तो तुम्हारे लिए फ़ित्ना के अलावा दूसरी कोई चीज़ न बढ़ाते, बल्कि तुम्हारे बीच ख़ूब घोड़े दौड़ाते, और तुम में इख़्तिलाफ़ डालने की खोज

[1] यह उन मुनाफ़िक़ों (अवसरवादियों) का बयान है, जिन्होंने झूठे बहाने बना कर रसूल करीम ﷺ से जिहाद में हिस्सा न लेने का हुक्म ले लिया था, उन के बारे में कहा गया है कि ये अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते। इसका मतलब यह है कि इस ईमान की कमी ने उनको जिहाद में हिस्सा न लेने पर मजबूर किया है, अगर ईमान इन के दिलों में मज़बूत होता तो न तो यह जिहाद से भागते और न इनको शको शुब्हा ने घेरा होता।

में रहते, उन के मानने वाले ख़ुद तुम में मौजूद हैं,[1] और अल्लाह तआला ज़ालिमों को अच्छी तरह जानता है।

४८. ये तो इस से पहले भी इख़्तिलाफ़ पैदा करने की खोज में रहे हैं, और तेरे लिए कामों को उलट-पुलट करते रहे हैं, यहां तक कि हक़ आ पहुंचा और अल्लाह का हुक्म ग़ालिब हो गया, इस के बावजूद कि वे नाख़ुशी में ही रहे।

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوا لَكَ الْأُمُورَ حَتَّىٰ جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَارِهُونَ ﴿48﴾

४९. उनमें से कोई तो कहता है कि मुझे हुक्म दे दीजिए मुझे परेशानी में न डालिए, बाख़बर रहो कि वह तो फ़ित्ना में पड़ चुके हैं और बेशक नरक काफ़िरों को घेर लेने वाली है।[2]

وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ ائْذَنْ لِي وَلَا تَفْتِنِّي ۚ أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا ۗ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿49﴾

५०. आप को अगर कोई भलाई हासिल हो जाये तो उन्हें बुरा लगता है और कोई बुराई पहुंच जाये तो कहते हैं, हम ने तो अपनी बात पहले ही से ठीक कर ली थी, फिर तो बड़े इतराते हुए लौटते हैं।[3]

إِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۖ وَإِنْ تُصِبْكَ مُصِيبَةٌ يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا أَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَهُمْ فَرِحُونَ ﴿50﴾

---

[1] इस से मालूम होता है कि मुनाफ़िक़ों (अवसरवादियों) के लिए ख़ुफ़िया काम करने वाले कुछ लोग मुसलमानों के साथ सेना में मौजूद थे, जो मुनाफ़िक़ों (अवसरवादियों) को मुसलमानों की ख़बरें पहुंचाया करते थे।

[2] "मुझे फ़ित्ने (भेद) में न डालिए।" इसका एक मतलब तो यह होगा अगर आप मुझे इजाज़त नहीं देंगे तो मुझे बिना इजाज़त रुकने पर ज़्यादा गुनाह होगा, इस बिना पर फ़ित्ना 'गुनाह' के मतलब में होगा, यानी मुझे गुनाह में न डालिए। दूसरा मतलब फ़ित्ना का तबाही है, यानी मुझे साथ ले जाकर तबाही में न डालिए। कहा जाता है कि जद्द बिन क़ैस ने निवेदन किया कि मुझे साथ न ले जायें, रोम की औरतों को देख कर मैं सब्र न रख सकूंगा, इस पर नबी ﷺ ने मुंह फेर लिया और इजाज़त दे दिया, उस के बाद आयत उतरी, अल्लाह तआला ने फ़रमाया : "फ़ित्ना में तो वह पड़ चुके हैं" यानी जिहाद में पीछे रहना और उससे जान चुराना, ख़ुद एक फ़ित्ना और बहुत बड़ा गुनाह है, जिस में ये शामिल हैं और मरने के बाद नरक की आग उनको घेर लेने वाली है, जिससे भागने का कोई रास्ता उनके लिए न होगा।

[3] आगे-पीछे के कलाम की बिना पर حسنة से यहां कामयाबी और फ़ायेदा और سيئة से नाकामी, हार और इसी तरह का नुक़सान जो लड़ाई में होता है, मुराद है इस में उन के अन्दरूनी बुराईयों का प्रदर्शन (इज़हार) है जो मुनाफ़िक़ों (भ्रष्टाचारियों) के दिलों में था, इसलिए कि दुख पर ख़ुश होना और भलाई हासिल होने पर दुख और तकलीफ़ का एहसास करना दुश्मनी के सबबों को ज़ाहिर करता है।

قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿51﴾

५१. (आप) कह दीजिए कि हमें सिवाय अल्लाह के हमारे हक़ में लिखे हुए के कोई चीज पहुँच ही नहीं सकती, वह हमारा मालिक है, और (आप कह दीजिए) ईमानवालों को अल्लाह ही पर पूरा भरोसा करना चाहिए।

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ۭ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖٓ اَوْ بِاَيْدِيْنَا ۡ فَتَرَبَّصُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿52﴾

५२. कह दीजिये कि तुम हमारे बारे में जिस के इंतेज़ार में हो, वह दो भलाईयों में से एक है, और हम तुम्हारे हक़ में इस बात के इंतेज़ार में हैं कि या तो अल्लाह (तआला) तुम्हें अपने पास से कोई सज़ा दे या हमारे हाथों से, बस एक तरफ़ तुम इंतेज़ार करो, दूसरी तरफ़ हम तुम्हारे साथ इंतेज़ार कर रहे हैं।

قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ۭ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿53﴾

५३. कह दीजिए कि तुम ख़ुशी या नाख़ुशी किसी तरह भी ख़र्च करो, क़ुबूल तो कभी नहीं किया जायेगा,[1] बेशक तुम फ़ासिक़ लोग हो।

وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّآ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿54﴾

५४. कोई सबब उन के ख़र्च को क़ुबूल न होने का इस के सिवाय नहीं कि ये अल्लाह और उस के रसूल के नाफ़रमान हैं और बड़ी सुस्ती से नमाज़ में आते हैं और बुरे दिल से ख़र्च करते हैं।

---

[1] انفقوا हुक्म है, लेकिन यहाँ इस कलिमा का मतलब यह है कि अगर तुम ख़र्च करोगे तो क़ुबूल नहीं किया जायेगा, या यह ख़बर देने वाले कलिमा के मतलब में है, मतलब यह है कि दोनों बातें एक तरह हैं, ख़र्च करो या न करो, अपनी मर्ज़ी से अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे तो भी नाक़ुबूल है, क्योंकि क़ुबूल करने की पहली शर्त ईमान है और वही तुम्हारे अन्दर नहीं है, और नाख़ुशी से ख़र्च किया हुआ माल अल्लाह के यहाँ वैसे ही ठुकराया हुआ है, क्योंकि वहाँ जायेज़ मक़सद नहीं मौजूद है जो क़ुबूल करने के लिए ज़रूरी है, यह आयत भी इसी तरह है जिस तरह यह है।

﴿اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ﴾

"आप इन के लिए माफ़ी माँगें या न माँगें।" (सूरः अत्तौबः-८०)

यानी दोनों बातें एक तरह हैं।

५५. इसलिए आप को उन के माल और औलाद तअज्जुब में न डाल दें, अल्लाह यही चाहता है कि उन्हें दुनिया की जिन्दगी में ही सजा दे[1] और उनके कुफ्र की ही हालत में उनकी जान निकल जाये ।[2]

فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿55﴾

५६. और ये अल्लाह की कसम खा-खा कर कहते हैं कि ये तुम्हारे गुट के लोग हैं, अगरचे कि वे हकीकत में तुम्हारे नहीं, बात केवल इतनी है कि ये बुजदिल लोग हैं ।

وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ۭ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ ﴿56﴾

५७. अगर ये कोई महफूज मकाम या कोई गुफा या कोई भी सिर छिपाने की जगह पा लें तो अभी उस तरफ लगाम तोड़ कर उल्टे भाग छूटें ।

لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ﴿57﴾

५८. उन में वे भी हैं जो सदका के माल के बंटवारे के बारे में आप पर इल्जाम रखते हैं, अगर उस में से उनको मिल जाये तो खुश हैं और अगर उस में से न मिला तो फौरन ही बिगड़ खड़े होते हैं ।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِي الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ﴿58﴾

५९. अगर ये लोग अल्लाह और उस के रसूल के दिये हुए पर खुश रहते और कह देते कि अल्लाह हमें काफी है, अल्लाह हमें अपने फज्ल से देगा और उसका रसूल भी, हम तो अल्लाह ही से उम्मीद रखने वाले हैं ।

وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ﴿59﴾

६०. सदका केवल फकीरों के लिए हैं और गरीबों के लिए और उन के काम करने वालों

اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَاۗءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ

[1] इमाम इब्ने कसीर और इमाम इब्ने जरीर तबरी ने इस से जकात और अल्लाह की राह में सदका करना मुराद निकाला है, यानी इन मुनाफिकों (अवसरवादियों) से जकात और सदका तो (जो वह मुसलमान जाहिर करने के लिए देते हैं) दुनिया में कुबूल किये जायें ताकि इस तरह से उन्हें दुनिया में धन की मार भी दी जाये ।

[2] आखिर में उनकी मौत कुफ्र की हालत में होगी, इसलिए कि वे अल्लाह के पैगम्बर को सच्चे दिल से कुबूल करने को तैयार ही नहीं और अपने कुफ्र और मुनाफकत पर ही अडिग (कायम) और मजबूत हैं ।

وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿60﴾

के लिए, और उनके लिए जिन के दिल परचाये जा रहे हों और ग़ुलाम आज़ाद करने और क़र्ज़दार लोगों के लिए, और अल्लाह की राह में और मुसाफ़िरों के लिए[1] फ़र्ज़ है अल्लाह की तरफ़ से और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत वाला है।

وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ

६१. और उन में से वे भी हैं जो पैग़म्बर (संदेशवाहक) को तकलीफ़ देते हैं और कहते हैं कि हल्के कान का है, (आप) कह दीजिए कि वह कान तुम्हारी भलाई के लिए है[2] वह

---

[1] इन आठ लोगों पर ख़र्च करने का मुख़्तसर बयान इस तरह है। (१,२) भिखारी और ग़रीब लगभग क़रीब ही क़रीब है और एक माने दूसरे से मिलता-जुलता है, यानी ग़रीब को भिखारी और भिखारी को ग़रीब कह ही लिया जाता है। (३) काम करने वालों से मुराद सरकारी कर्मचारी हैं जो ज़कात व सदक़ा की राशि वसूल करते हैं और बाँटते हैं, और उसका लेखा-जोखा रखते हैं। (४) आकर्षित हृदय (मुअल्लफ़ा क़ुलूब) एक तो वह काफ़िर हैं जो थोड़ा-थोड़ा इस्लाम की तरफ़ आकर्षित होते हों और उनकी मदद करने पर यह उम्मीद हो कि वह मुसलमान हो जायेंगे। दूसरे नये मुसलमान हैं जिनको इस्लाम पर मज़बूती से क़ायम रहने के लिए मदद की ज़रूरत हो। तीसरे वे लोग भी हैं जिनकी मदद करने से यह उम्मीद हो कि वह अपने इलाक़े के लोगों को मुसलमानों पर हमला करने से रोकेंगे और इस तरह वह क़रीबी कमज़ोर मुसलमानों की हिफ़ाज़त करेंगे, यह और इस तरह की दूसरी हालतें दिल खींचने करने की हैं, जिन पर ज़कात की राशि ख़र्च की जा सकती है, चाहे बयान किये लोग धनवान ही हों, कुछ लोगों के अनुसार यह इस्तेमाल ख़त्म हो गया है, लेकिन यह बात ठीक नहीं है, हालात और वक़्त के अनुसार हर ज़माने में इस मद पर ज़कात की राशि ख़र्च करना जायेज़ है। (५) गर्दनें आज़ाद कराने के लिए। (६) क़र्ज़दार से एक तो वह क़र्ज़दार मुराद हैं जो अपने परिवार को ज़िन्दगी गुज़ारने और ज़िन्दगी की ज़रूरत को पूरा करते-करते दूसरे लोगों के क़र्ज़ से दब गये हों, और उन के पास नगद राशि भी नहीं है और ऐसा सामान भी नहीं है जिसे बेचकर वे उस क़र्ज़ को चुका सकें। दूसरे वे ज़िम्मेदार लोग जिन्होंने किसी दूसरों की ज़मानत दी हो और फिर वह उसकी अदायगी के ज़िम्मेदार बना दिये गये हों, या इन सभी लोगों को ज़कात की राशि से मदद करना जायेज़ है। (७) अल्लाह की राह से मुराद जिहाद है, यानी लड़ाई का सामान और ज़रूरतों और मुजाहिद (चाहे वह मालदार ही हो) पर ज़कात की राशि ख़र्च करनी जाएज़ है। इसी तरह कुछ आलिमों के नज़दीक तबलीग़ (निमन्त्रण) और दावत भी अल्लाह की राह में शामिल है, क्योंकि इसका भी मक़सद अल्लाह के क़ौल को हर इंसान तक पहुँचाना है। (८) रास्ते के लोगों से मुराद मुसाफ़िर हैं, यानी कोई भी इंसान सफ़र के वक़्त मदद का पात्र (मुस्तहिक़) हो गया हो तो चाहे वह अपने देश में धनवान ही हो, उसकी मदद ज़कात की राशि से की जा सकती है।

[2] यहाँ से फिर मुनाफ़िक़ों (द्वयवादियों) की चर्चा हो रही है। नबी ﷺ के ख़िलाफ़ एक इल्ज़ाम यह उन्होंने लगाया कि यह कान का कच्चा (या हल्का) है, मतलब यह है कि यह हर इंसान की बात सुन लेता है (यानी यह आप ﷺ के इल्म, फ़ज़्ल और माफ़ करने के गुणों से उन्हें धोखा

وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِينَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ
اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۚ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ
رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿61﴾

अल्लाह पर ईमान रखता है और मुसलमानों की बातों का यक़ीन करता है, और तुम में से जो ईमानवाले हैं यह उन के लिए रहमत है, और रसूलुल्लाह (अल्लाह के रसूल) को जो लोग तकलीफ़ देते हैं उनके लिए दुखदायी अज़ाब है।

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ
وَرَسُوْلُهٗۤ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا
مُؤْمِنِيْنَ ﴿62﴾

६२. वे सिर्फ़ तुम्हें ख़ुश करने के लिए तुम्हारे सामने अल्लाह की क़सम खा जाते हैं, हालांकि अगर यह ईमानदार होते तो अल्लाह और उस के रसूल ख़ुश किये जाने के ज़्यादा हक़दार थे।

اَلَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ۚ
ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿63﴾

६३. क्या ये नहीं जानते कि जो भी अल्लाह का और उस के रसूल की मुख़ालफ़त करेगा उस के लिए बेशक नरक की आग है, जिस में वे हमेशा रहने वाले हैं, यह बहुत बड़ा अपमान है।

يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ
تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۚ قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ
اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ﴿64﴾

६४. मुनाफ़िक़ों को (हर वक़्त) यह डर लगा रहता है कि कहीं उन (मुसलमानों) पर कोई आयत न उतरे, जो उन के दिलों की बातें उन्हें बता दे। कह दीजिए कि तुम मज़ाक़ उड़ाते रहो, बेशक अल्लाह तआला उसे ज़ाहिर करने वाला है जिस से तुम डरे हुए हो।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ
وَنَلْعَبُ ۚ قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ
تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿65﴾

६५. अगर आप उन से पूछें तो साफ़ कह देंगे कि हम तो यूँ ही आपस में हँस-बोल रहे थे। कह दीजिए कि अल्लाह, उसकी आयतें और उसका रसूल ही तुम्हारी हंसी-मज़ाक़ के लिए बाक़ी रह गये हैं?[1]

हुआ)। अल्लाह ने फ़रमाया कि नहीं, हमारा पैग़म्बर फ़ित्ना और फ़साद की कोई बात नहीं सुनता, जो भी सुनता है तुम्हारा उस में हित, नेकी और भलाई है।

[1] मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) अल्लाह की आयतों का मज़ाक़ उड़ाते थे, ईमानवालों का अपमान करते, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह ﷺ के बारे में बुरी बात का इस्तेमाल करने में परहेज़ न करते, जिसकी ख़बर किसी तरह से ईमानवालों और रसूलुल्लाह ﷺ को हो जाती थी, लेकिन अगर उन से पूछा जाता तो साफ़ मुकर जाते और कहते कि हम तो आपस में इसी तरह हंसी-मज़ाक़ कर रहे थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "हंसी-मज़ाक़ के लिए तुम्हारे सामने अल्लाह और उसकी आयतें और उसका रसूल ही रह गया है?" मतलब यह कि अगर तम्हारा मक़सद आपस में हंसी-मज़ाक़ का होता तो उस में अल्लाह, उसकी आयतें और रसूल बीच में क्यों आते? ये बेशक उस हसद और जलन का इशारा है जो अल्लाह की आयतों और हमारे पैग़म्बर के

لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ۚ إِنْ نَعْفُ عَنْ طَائِفَةٍ مِنْكُمْ نُعَذِّبْ طَائِفَةً بِأَنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿66﴾

६६. तुम बहाने न बनाओ, बेशक तुम अपने ईमान लाने के बाद काफिर हो गये, अगर हम तुम में से कुछ लोगों से अनदेखी भी कर लें तो कुछ लोगों को उनके ज़ुल्म की सख़्त सज़ा भी देंगे।

الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ بَعْضُهُمْ مِنْ بَعْضٍ ۚ يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ ۚ نَسُوا اللَّهَ فَنَسِيَهُمْ ۗ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿67﴾

६७. सभी मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) मर्द और औरत आपस में एक ही हैं,[1] ये बुरी बातों का हुक्म देते हैं और भली बातों से रोकते हैं और अपनी मुठ्ठी बन्द रखते हैं। ये अल्लाह को भूल गये, अल्लाह ने भी उन्हें भुला दिया, बेशक मुनाफ़िक़ (द्वयवादी) ही फ़ासिक़ हैं।

وَعَدَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللَّهُ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُقِيمٌ ﴿68﴾

६८. अल्लाह तआला इन मुनाफ़िक़ मर्दों-औरतों और काफ़िरों से नरक की आग का वादा कर चुका है, जहाँ ये हमेशा रहेंगे, वही उन के लिए बस है, उन पर अल्लाह की लानत है, और उन के लिए दायमी अज़ाब है।

كَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَأَكْثَرَ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِي خَاضُوا ۚ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿69﴾

६९. तुम से पहले के लोगों की तरह जो तुम से बहादुर और माल-दौलत और औलाद में ज़्यादा थे तो वह अपना धार्मिक भाग बरत गये, फिर तुम ने भी अपना भाग बरत लिया[2] जैसे तुम से पहले लोग अपने हिस्से से फ़ायदेमंद हुये थे और तुम ने भी उसी तरह मज़ाक़ वाला गप किया जैसे उन्होंने किया था, उनके काम दुनिया और आख़िरत में बरबाद हो गये और यही लोग घाटे में हैं।

ख़िलाफ़ तुम्हारे दिलों में मौजूद है।

[1] मुनाफ़िक़ जो क़सम खाकर मुसलमानों को यक़ीन दिलाया करते थे कि "हम तुम ही में से हैं" अल्लाह तआला ने इसका खण्डन (तरदीद) किया कि ईमानवालों से उनका क्या मतलब ? लेकिन यह सभी मुनाफ़िक़ चाहे मर्द हों या औरत एक ही हैं, यानी कुफ़्र और भ्रष्टाचार में एक-दूसरे से बढ़-चढ़ कर हैं, आगे उनकी बुराईयों को बयान किया जा रहा है जो ईमानवालों के गुणों (सिफ़तों) के ठीक उल्टा और ख़िलाफ़ हैं।

[2] خلاق का दूसरा तर्जुमा दुनियावी हिस्सा भी किया गया है, यानी तुम्हारे हिस्सा में दुनिया का जितना हिस्सा लिख दिया गया है उसे बरत लो, जिस तरह से तुम से पहले के लोगों ने अपना हिस्सा बरता और फिर मरने या अज़ाब से हमकिनार हो गये।

७०. क्या उन्हें अपने से पहले के लोगों की ख़बर नहीं पहुँची, नूह और आद और समूद के क़ौम और इब्राहीम की क़ौम और मदयन के रहने वाले और उलट-पुलट कर दी गयी बस्तियों के लोगों की,[1] उन के पास रसूल (ईशदूत) दलीलें लेकर पहुँचे तो अल्लाह तआला ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करे, बल्कि उन्होंने ख़ुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म किया।

أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَقَوْمِ إِبْرَاهِيمَ وَأَصْحَابِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكَاتِ ۚ أَتَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿70﴾

७१. मुसलमान मर्द और औरत एक-दूसरे के (मददगार और) मित्र हैं, वे भलाईयों का हुक्म देते हैं और बुराईयों से रोकते हैं, नमाज़ें पाबंदी से पढ़ते हैं, ज़कात अदा करते हैं, अल्लाह और उस के रसूल की बात मानते हैं,[2] यही लोग हैं जिन पर अल्लाह (तआला) जल्द ही रहमत करेगा, बेशक अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है।

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ أُولَٰئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿71﴾

७२. इन ईमानदार मर्दों और औरतों से अल्लाह (तआला) ने उन जन्नतों का वादा किया है जिन के नीचे नहरें बह रहीं हैं, जहाँ वे हमेशा रहने वाले हैं और उन पाकीज़ा घर का, जो उन ख़त्म न होने वाले जन्नत में हैं, और अल्लाह की ख़ुशी सब से महान है, यही बहुत बड़ी कामयाबी है।

وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ ۚ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿72﴾

[1] यहाँ उन छः क़ौमों का ज़िक्र किया गया है जिनका स्थान सीरिया देश रहा है, यह अरब क्षेत्र के क़रीब है और उनकी कुछ बातें शायद उन्होंने अपने पूर्वजों से सुनी भी हों। नूह की क़ौम जो सैलाब में डुबो दी गई, आद की क़ौम जो ताक़त और क़ूवत में बेहतर होने के बावजूद, तेज़ हवाओं के झोंकों से बरबाद कर दी गई। समूद की क़ौम, जिसे आकाश की चीख़ ने बरबाद कर दिया। इब्राहीम की क़ौम जिसके राजा नमरूद बिन कनआन बिन कोश को मच्छर से मरवा दिया गया। मदयन के निवासी (हज़रत शुऐब की क़ौम) जिन्हें चीख़, भूकम्प और बादलों की छाया के अज़ाब से तबाह किया गया और उल्टे-पल्टे गये लोग, इससे मुराद लूत की क़ौम है, जिन की बस्ती का नाम «सदूम» था। ائتكاف का मतलब है उलट-पलट देना, उन पर एक तो आकाश से पत्थर बरसाये गये, दूसरे उनकी बस्ती को ऊपर उठा कर नीचे फेंका गया, जिससे पूरी बस्ती ऊपर तले हो गयी, इस बिना पर उन उल्टे-पल्टे लोगों को «असहाब मुतफ़िकात» कहा जाता है।

[2] नमाज़ अल्लाह के हक़ों में बहुत बड़ी इबादत है और ज़कात दूसरे लोगों के हक़ के बिना पर ख़ास मक़ाम रखती है, इसी वजह से इन दोनों का ख़ास तौर से बयान करके कहा गया है कि वह हर बारे में अल्लाह और उस के रसूल के हुक्मों की पैरवी करते हैं।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ جَٰهِدِ ٱلْكُفَّارَ وَٱلْمُنَٰفِقِينَ وَٱغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ (73)

७३. हे नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िकों से जिहाद करते रहो,[1] और उन पर कड़ाई करो, उनका असल जगह नरक है, जो बहुत बुरी जगह है।

يَحْلِفُونَ بِٱللَّهِ مَا قَالُوا۟ وَلَقَدْ قَالُوا۟ كَلِمَةَ ٱلْكُفْرِ وَكَفَرُوا۟ بَعْدَ إِسْلَٰمِهِمْ وَهَمُّوا۟ بِمَا لَمْ يَنَالُوا۟ ۚ وَمَا نَقَمُوٓا۟ إِلَّآ أَنْ أَغْنَىٰهُمُ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ مِن فَضْلِهِۦ ۚ فَإِن يَتُوبُوا۟ يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۖ وَإِن يَتَوَلَّوْا۟ يُعَذِّبْهُمُ ٱللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا فِى ٱلدُّنْيَا وَٱلْءَاخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِى ٱلْأَرْضِ مِن وَلِىٍّ وَلَا نَصِيرٍ (74)

७४. ये अल्लाह की क़सम खा कर कहते है कि उन्होंने नहीं कहा, अगरचे कि बेशक कुफ्र का कलिमा इन के मुँह से निकल चुका है, और ये अपने इस्लाम के बावजूद भी काफ़िर हो गये हैं, और इन्होंने उस काम का इरादा भी किया है जिसे हासिल न कर सके, ये केवल इसी बात का बदला ले रहे हैं कि उन्हें अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से और इस के रसूल ने धनवान कर दिया, अगर यह अब भी तौबा कर लें तो यह इन के हक़ में अच्छा है और अगर मुँह मोड़े रहें तो अल्लाह (तआला) उन्हें दुनिया व आख़िरत में दुखदायी सज़ा देगा, और पूरी धरती में उनका कोई वली और मददगार न खड़ा होगा।

وَمِنْهُم مَّنْ عَٰهَدَ ٱللَّهَ لَئِنْ ءَاتَىٰنَا مِن فَضْلِهِۦ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُونَنَّ مِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ (75)

७५. इन में वह भी हैं जिन्होंने अल्लाह से वादा किया था कि अगर वह हमें अपने फ़ज़्ल से धन अता करेगा तो हम ज़रूर सदक़ा करेंगे और पूरी तरह से नेक लोगों में हो जायेंगे।

فَلَمَّآ ءَاتَىٰهُم مِّن فَضْلِهِۦ بَخِلُوا۟ بِهِۦ وَتَوَلَّوا۟ وَّهُم مُّعْرِضُونَ (76)

७६. लेकिन जब अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उन्हें दिया तो यह उस में कंजूसी करने लगे और टाल-मटोल करके मुँह मोड़ लिया।[2]

فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِى قُلُوبِهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ يَلْقَوْنَهُۥ بِمَآ أَخْلَفُوا۟ ٱللَّهَ مَا وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا۟ يَكْذِبُونَ (77)

७७. तो इस की सज़ा के तौर पर अल्लाह ने उन के दिलों में निफ़ाक़ डाल दिया, अल्लाह से मिलने के दिनों तक, क्योंकि उन्होंने अल्लाह से किये हुए वादे की मुख़ालफ़त की, और झूठ बोलते रहे।

---

[1] इस आयत में नबी करीम ﷺ को काफ़िरों और मुनाफ़िकों से जिहाद और उन पर कड़ाई करने का हुक्म दिया जा रहा है, नबी ﷺ के बाद इस से मुताअल्लिक़ आप ﷺ का पैरोकार है।

[2] इस आयत को कुछ मुफ़स्सिर एक सहाबी हज़रत साअलबा बिन हातिब अन्सारी के बारे में बताते हैं, लेकिन सुबूत की बुनियाद पर यह सही नही है, सही बात यह है कि इस में भी मुनाफ़िकों के एक दूसरे अमल का बयान किया गया है।

أَلَمْ يَعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَىٰهُمْ وَأَنَّ ٱللَّهَ عَلَّٰمُ ٱلْغُيُوبِ ﴿78﴾

७८. क्या वे यह नहीं जानते कि अल्लाह (तआला) को उन के दिल का भेद (राज़) और उनकी कानाफूसी सब मालूम है और अल्लाह (तआला) सभी छिपी बातों का जानकार है?[1]

ٱلَّذِينَ يَلْمِزُونَ ٱلْمُطَّوِّعِينَ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ فِى ٱلصَّدَقَٰتِ وَٱلَّذِينَ لَا يَجِدُونَ إِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ سَخِرَ ٱللَّهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿79﴾

७९. जो लोग उन मुसलमानों पर इल्ज़ाम लगाते हैं, जो दिल खोलकर सदक़ा करते हैं और उन लोगों पर जिन को अपनी मेहनत के सिवाय कुछ हासिल ही नहीं, तो ये उनका मज़ाक करते हैं, अल्लाह भी उन से मज़ाक करता है, और उन्हीं के लिए बहुत सख़्त अज़ाब है।

ٱسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِن تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَن يَغْفِرَ ٱللَّهُ لَهُمْ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا۟ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْفَٰسِقِينَ ﴿80﴾

८०. आप इन के लिए तौबा करें या न करें, अगर आप सत्तर बार भी इन के लिए तौबा करें तो भी अल्लाह उन्हें कभी भी माफ़ नहीं करेगा[2] ये इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उस के रसूल से कुफ़्र किया है[3] और ऐसे फ़ासिकों को अल्लाह हिदायत नहीं देता।

فَرِحَ ٱلْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلَٰفَ رَسُولِ ٱللَّهِ وَكَرِهُوٓا۟ أَن يُجَٰهِدُوا۟ بِأَمْوَٰلِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ وَقَالُوا۟ لَا تَنفِرُوا۟ فِى ٱلْحَرِّ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا لَّوْ كَانُوا۟ يَفْقَهُونَ ﴿81﴾

८१. पीछे रह जाने वाले लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के ख़िलाफ़ अपने बैठे रह जाने पर ख़ुश हैं, उन्होंने अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जान से जिहाद करना अप्रिय रखा और उन्होंने कह दिया कि इस गर्मी में न निकलो, कह दीजिए कि नरक की आग बहुत गरम है, काश कि वे समझते होते।

---

[1] इस में उन मुनाफ़िक़ों के लिए कड़ी तंबीह है जो अल्लाह तआला से वादा करते हैं फिर उसकी फ़िक्र नहीं करते, जैसे कि वे यह समझते हैं कि अल्लाह उनकी पोशीदा बातों और राज़ों को नहीं जानता, अगरचे कि अल्लाह सभी कुछ जानता है, क्योंकि वह तो ग़ैब का जानने वाला है, सभी अप्रत्यक्ष (पोशीदा) बातों को जानता है।

[2] सत्तर की तादाद मुबालग़ा और ज़्यादती के लिए है कि चाहे जितना ज़्यादा उन की मग़फ़िरत के लिए दुआ करें, अल्लाह तआला उनको कभी भी माफ़ नहीं करेगा, यह मतलब नहीं कि अगर सत्तर से ज़्यादा बार दोष मुक्ति के लिए विनय की गयी तो उनको माफ़ कर दिया जायेगा।

[3] यह माफ़ी से महरूम करने का सबब बता दिया गया है, ताकि लोग किसी की सिफ़ारिश की उम्मीद में न रहें बल्कि ईमान और नेक कामों की दौलत लेकर अल्लाह के दरबार में हाज़िर हों, अगर क़यामत सामग्री (तोशा) किसी के पास नहीं होगा तो ऐसे काफ़िरों और नाफ़रमानों की कोई सिफ़ारिश भी नहीं करेगा, इसलिए कि अल्लाह तआला ऐसे लोगों के लिए सिफ़ारिश का हुक्म ही अता नहीं करेगा।

فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا ۚ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ (82)

८२. अतः उन्हें चाहिए कि बहुत कम हँसें और ज़्यादा रोयें, बदले में उस के जो ये करते थे।

فَإِن رَّجَعَكَ اللَّهُ إِلَىٰ طَائِفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَأْذَنُوكَ لِلْخُرُوجِ فَقُل لَّن تَخْرُجُوا مَعِيَ أَبَدًا وَلَن تُقَاتِلُوا مَعِيَ عَدُوًّا ۖ إِنَّكُمْ رَضِيتُم بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ الْخَالِفِينَ (83)

८३. तो अगर अल्लाह तआला आप को उन के किसी गुट की तरफ़ लौटा कर वापस ले आये फिर ये आप से लड़ाई के मैदान में निकलने की आज्ञा माँगें, तो आप कह दीजिए कि तुम मेरे साथ कभी भी नहीं चल सकते और न मेरे साथ दुश्मन से लड़ाई कर सकते हो, तुम ने पहली बार ही बैठे रहने को अच्छा समझा था, तो तुम पीछे रह जाने वालों में ही बैठे रहो।

وَلَا تُصَلِّ عَلَىٰ أَحَدٍ مِّنْهُم مَّاتَ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَىٰ قَبْرِهِ ۖ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَاتُوا وَهُمْ فَاسِقُونَ (84)

८४. और इन में से कोई मर जाये तो उस के जनाज़े पर नमाज़ आप कभी भी न पढ़ें और न उसकी क़ब्र (समाधि) पर खड़े हों,[1] यह अल्लाह और उस के रसूल के इन्कार करने वाले हैं और मरते दम तक फ़ासिक़ रहे हैं।

وَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَن يُعَذِّبَهُم بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ (85)

८५. और आप को इन के माल और औलाद कुछ भी भली न लगें, अल्लाह तआला यही चाहता है कि उन्हें इन चीज़ों से दुनियावी सज़ा दे और ये अपनी जान निकलने तक काफ़िर (नाशुक्रा) ही रहें।

وَإِذَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ أَنْ آمِنُوا بِاللَّهِ وَجَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُولُو الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا ذَرْنَا نَكُن مَّعَ الْقَاعِدِينَ (86)

८६. और जब कोई सूरत (क़ुरआन करीम का अध्याय) उतारी जाती है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उस के रसूल के साथ मिलकर जिहाद करो, तो उन में से मालदारों का एक गुट आप के पास आकर यह कह कर इजाज़त ले लेता है कि हमें तो बैठे रहने वालों में ही छोड़ दीजिए।[2]

---

[1] यह आयत अगरचे मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबैय्य के बारे में उतरी है, लेकिन इसका हुक्म आम है, हर इंसान जिसकी मौत कुफ़्र और निफ़ाक़ की हालत में हुई हो, वह उस में शामिल है।

[2] यह उन्ही मुनाफ़िक़ों का बयान है जिन्होंने झूठे बहाने बना कर पीछे बैठे रहना ही अच्छा

رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ﴿87﴾

८७. यह तो घर में रहने वाली औरतों का साथ देने पर रीझ गये और उनके दिलों पर मुहर लगा दी गयी, अब वह कुछ समझ-बूझ नहीं रखते ।[1]

لَٰكِنِ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۚ وَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿88﴾

८८. लेकिन ख़ुद रसूल (ईशदूत) और उस के साथ के ईमानवाले अपनी मालों और जानों से जिहाद करते हैं, उन्हीं के लिए भलाई है और यही लोग कामयाबी पाने वाले हैं ।

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿89﴾

८९. इन्हीं के लिए अल्लाह (तआला) ने वह जन्नत तैयार की हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जिन में वह सदा रहने वाले होंगे, यही बहुत बड़ी कामयाबी है ।[2]

وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿90﴾

९०. गँवारों में से बहाना बनाने वाले लोग हाज़िर हुए कि उन्हें इजाज़त दी जाये और वह बैठे रहे जिन्होंने अल्लाह से और उस के रसूल से झूठी बातें बनायीं थीं, अब तो उन में जितने भी काफ़िर है उन्हें दुखदायी अज़ाब पहुँच कर रहेगा ।

समझा था أولوا الطَول से मुराद है धनवान, यानी इन लोगों को पीछे न रहना चाहिए था, क्योंकि उन के पास अल्लाह का अता किया हुआ सभी कुछ था, قاعدين से मुराद कुछ मजबूरी के सबब घर में बैठे रहने वाले आदि हैं, जैसाकि अगली आयत में उनको خوالف से मुक़ाबला किया गया है, जो خالفة का बहुवचन (जमा) है, यानी "पीछे रहने वाली औरतें ।"

[1] दिलों पर मोहर लग जाना, यह लगातार गुनाह करने के सबब होता है, जिसकी वज़ाहत पहले की जा चुकी है, इस के साथ इंसान सोचने-समझने की ताक़त से महरूम हो जाता है ।

[2] उन मुनाफ़िक़ों के ख़िलाफ़ ईमानवालों का अख़लाक़ यह है कि वह अपने तन-मन-धन से अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं, अल्लाह की राह में उन्हें अपनी जानों की फ़िक्र भी नहीं है और न धन की, उन के क़रीब अल्लाह का हुक्म सब से बड़ा है उन्हीं के लिए भलाई है, यानी आख़िरत (परलोक) की भलाई और जन्नत का सुख, और कुछ के क़रीब दुनिया और आख़िरत दोनों जगहों का फ़ायेदा, और यही लोग कामयाब और ऊँचे पदों पर आसीन होने के लायक़ होंगे ।

९१. कमजोरों और रोगियों पर और उन पर जो ख़र्च करने को कुछ नहीं पाते कोई दोष नहीं जब तक वह अल्लाह और उस के रसूल (दूत) के ख़ैरख़्वाह हों, ऐसे नेक लोगों पर कोई रास्ता नहीं और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।[1]

९२. और न उन पर जो आप के पास आते हैं कि आप उन्हें सवारी का इन्तेज़ाम कर दें तो आप जवाब देते हैं कि मैं तुम्हारे वाहन के लिये कुछ नहीं पाता तो वह दु:ख से आँसू बहाते लौट जाते हैं कि उन्हें ख़र्च करने के लिए कुछ भी हासिल नहीं।[2]

९३. बेशक उन पर रास्ता (इल्ज़ाम) है जो धनी रह कर भी आप से इजाज़त माँगते हैं, यह नारियों के साथ रह जाने पर ख़ुश हैं और अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी है जिस के सबब वह लाइल्म हो गये हैं।[3]

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَى وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يُنْفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَبِيلٍ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿91﴾

وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا أَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا وَأَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا مَا يُنْفِقُونَ ﴿92﴾

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ ۚ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿93﴾

---

[1] इस आयत में उन लोगों का बयान है जो हक़ीक़त में मजबूर थे और उनका सबब भी वाज़ेह था, जैसाकि १. मजबूर और कमज़ोर यानी बूढ़े, अंधे और लंगड़े वग़ैरह मजबूर इसी दायरे में आते हैं, कुछ ने उनको रोगियों में शामिल किया है २. रोगी ३. जिन के पास जिहाद के ख़र्च उठाने की ताक़त नहीं थी और बैतुल माल (धार्मिक कोष) में भी उनके ख़र्च उठाने की ताक़त न थी, अल्लाह और उस के रसूल ﷺ के हक़ से मुराद है, जिहाद की उन के दिलों में तड़प, मुजाहिदीन (जिहाद के सिपाहियों) से मुहब्बत रखते हैं और अल्लाह और उस के रसूल ﷺ के हुक्मों की पैरवी करते हैं, ऐसे मोहसिनीन (परोपकारी) अगर जिहाद में शामिल होने के लायक़ न हों तो उन पर कोई गुनाह नहीं।

[2] यह मुसलमानों के एक गुट का बयान है, जिन के पास अपनी सवारियाँ भी नहीं थीं और नबी ﷺ ने भी उन्हें सवारियाँ मुहय्या कराने में लाचारी ज़ाहिर की, जिस पर उन्हें इतना दुख हुआ कि आँखों से आँसू निकल पड़े। ﷺ यानी बिग़ैर किसी लालच के मुसलमान जो किसी भी तरह से जायेज़ सबब रखते थे। अल्लाह तआला ने जो हर ज़ाहिर और छिपी बातों का जानने वाला है, उनको जिहाद में शामिल होने से अलग कर दिया, बल्कि हदीस में आता है कि नबी ﷺ ने उन मजबूर लोगों के बारे में जिहाद में शामिल होने वाले लोगों से फ़रमाया: "तुम्हारे पीछे मदीने में कुछ लोग ऐसे भी हैं कि तुम जिस घाटी को तय करते हो, और जिस रास्ते पर चलते हो, तुम्हारे साथ वह बदला पाने में बराबर से शामिल हैं।" सहाबा केराम ने पूछा, यह किस तरह हो सकता है, जब कि वे मदीने में बैठे हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: «حَبَسَهُمُ الْعُذْرُ» "सबब ने उन्हें वहाँ रोक दिया है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद और सहीह मुस्लिम नं॰ १५१८)

[3] ये पाखण्डी हैं जिनका बयान आयत नं॰ ८६ और ८७ में गुज़र चुका है, यहाँ फिर उनका बयान बग़ैर किसी लालच के मुसलमानों के मुक़ाबिले में हुआ है।

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ ۚ قُل لَّا تَعْتَذِرُوا لَن نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّأَنَا اللَّهُ مِنْ أَخْبَارِكُمْ ۚ وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿94﴾

९४. वे तुम से बहाने बनायेंगे जब तुम उन के पास जाओगे, (हे नबी!) कह दो कि बहाने न बनाओ, हम तुम्हारा यक़ीन नहीं करेंगे अल्लाह ने हमें तुम्हारे करतूतों से बाख़बर कर दिया है, और अल्लाह एवं उस के रसूल (संदेशवाहक) तुम्हारे अमल देख लेंगे फिर तुम ग़ैब और हाज़िर के जानकार के पास लौटाये जाओगे फिर वह तुम्हें बता देगा जो तुम कर रहे थे।

سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا انقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ إِنَّهُمْ رِجْسٌ ۖ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿95﴾

९५. हाँ! वह तुम्हारे सामने अल्लाह की क़सम खायेंगे जब तुम उन के पास वापस जाओगे ताकि तुम उन को उनकी हालत पर छोड़ दो, इसलिए तुम उन्हें उनकी हालत पर छोड़ दो, यक़ीनन वह बहुत नापाक हैं और उन का ठिकाना नरक है, उन के करतूतों के बदले जो किया करते थे।

يَحْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۖ فَإِن تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿96﴾

९६. यह तुम्हारे क़रीब इसलिये क़सम खायेंगे कि तुम उन से ख़ुश हो जाओ तो अगर तुम उन से ख़ुश हो भी जाओ तो अल्लाह ऐसे फ़ासिक़ों से ख़ुश नहीं होता।[1]

الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا حُدُودَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿97﴾

९७. देहाती लोग कुफ़्र और निफ़ाक़ में बहुत ही सख़्त हैं, और उनको ऐसा होना ही चाहिए कि उनको इन हुक्मों का इल्म न हो जो अल्लाह ने अपने रसूल पर उतारे हैं, और अल्लाह बहुत इल्म वाला बहुत हिक्मत वाला है।

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَن يَتَّخِذُ مَا يُنفِقُ مَغْرَمًا وَيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَائِرَ ۚ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿98﴾

९८. और उन देहातियों में से कुछ ऐसे हैं कि जो कुछ ख़र्च करते हैं उसको सज़ा समझते हैं, और तुम मुसलमानों के लिये बुरे दिन के इंतेज़ार में रहते हैं, बुरा वक़्त उन पर ही पड़ने वाला है, और अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है।

[1] इन तीन आयतों में उन मुनाफ़िक़ों का बयान है जो तबूक की लड़ाई के वक़्त मुसलमानों के साथ नहीं गये थे, नबी ﷺ और मुसलमानों के महफ़ूज़ वापस आने पर अपने बहाने पेश करके उनकी नज़रों में वफ़ादार बनना चाहते थे।

وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ؕ اَلَاۤ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿99﴾

९९. और कुछ देहातियों में ऐसे भी है जो अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो कुछ ख़र्च करते है उसको अल्लाह की क़ुर्बत और रसूल की दुआ का जरिया बनाते हैं,[1] याद रखो कि उनका यह ख़र्च करना बेशक उन के लिए क़ुर्बत का ज़रिया है, उनको अल्लाह जरूर अपनी रहमत में दाख़िल कर देगा, अल्लाह बहुत बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿100﴾

१००. और जो मोहाजिर (मक्का से मदीना आये हुए लोग) और अंसार (मदीना के मूल निवासी) पहले हैं, और जितने लोग बग़ैर किसी ग़र्ज़ से उन के पैरोकार हैं,[2] अल्लाह उन सभी से ख़ुश हुआ और वे सब अल्लाह से ख़ुश हुए और (अल्लाह ने) उन के लिए ऐसे बाग़ का इंतेज़ाम कर रखा है जिन के नीचे नहरें बहती हैं, जिन में वे हमेशा रहेंगे,[3] यह बड़ी कामयाबी है।

وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۛؕ وَمِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ۛؔ مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ

१०१. और कुछ तुम्हारे आसपास के देहातियों में से और अहले मदीना में ऐसे मुनाफ़िक़ है जो निफ़ाक़ पर अड़े हुए हैं, आप उन को नही

---

[1] ये अरब देहातियों की दूसरी क़िस्म है जिनको अल्लाह ने शहरी इलाक़े से दूर रहने के बावजूद अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाने की ख़ुशनसीबी अता किया, और इस ईमान के सबब उन से वह गँवारपन भी दूर कर दिया जो देहाती ज़िन्दगी के सबब देहातियों में आम तौर से पाया जाता है, इसलिए वह अल्लाह की राह में ख़र्च हुए माल को सज़ा समझने के बजाय अल्लाह की क़ुर्बत और रसूल ﷺ की दुआयें लेने का ज़रिया समझते हैं।

[2] इस में तीन गुटों का बयान है, एक मोहाजिरों का, जिन्होंने धर्म के लिये अल्लाह और रसूल ﷺ के हुक्म पर मक्का और दूसरे इलाक़ों से हिजरत किया और सब कुछ छोड़-छाड़ कर मदीना आ गये, दूसरे अंसार जो मदीना के निवासी थे, उन्होंने हर मौक़ा पर रसूलुल्लाह ﷺ की मदद और हिफ़ाज़त की। तीसरा गुट वह है जो इन मोहाजिरों और अंसार के अच्छे सुलूक और एहसान के साथ पैरोकार हैं, इस गुट से मुराद कुछ के नज़दीक ताबईन हैं।

[3] अल्लाह तआला उन से ख़ुश हो गया का मतलब है अल्लाह तआला ने उन के नेक अमल क़ुबूल कर लिये, उन के इंसान होने के सबब जो ग़ल्तियाँ हुई माफ़ कर दिया और वह उन पर नाराज़ नहीं।

لَا تَعْلَمُهُمْ ۖ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ۚ سَنُعَذِّبُهُم مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ﴿101﴾

जानते[1] उनको हम जानते हैं हम उन को दोहरी सजा देंगे, फिर वे बहुत बड़े अज़ाब की तरफ़ भेजे जायेंगे।

وَآخَرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا عَسَى اللَّهُ أَن يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿102﴾

१०२. और कुछ दूसरे लोग हैं जो अपनी गलतियों को क़ुबूल करते हैं, जिन्होंने मिले हुए अमल किये थे, कुछ अच्छे और कुछ बुरे। अल्लाह से उम्मीद है कि उन की तौबा क़ुबूल करे, बेशक अल्लाह बहुत बख़्शने वाला और रहम करने वाला है।

خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِم بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّ صَلَوٰتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿103﴾

१०३. आप उनके मालों में से सदक़ा ले लीजिये, जिसके ज़रिये आप उनको पाक और साफ़ कर दें और उन के लिए दुआ कीजिए, बेशक आप की दुआ उन के लिए इत्मिनान का ज़रिया है और अल्लाह (तआला) अच्छी तरह सुनता है, अच्छी तरह जानता है।

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿104﴾

१०४. क्या उनको यह इल्म नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा क़ुबूल करता है और वही सदक़ा को क़ुबूल करता है,[2] और यह कि अल्लाह ही तौबा क़ुबूल करने में और रहम करने में कामिल है।

وَقُلِ اعْمَلُوا فَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ ۖ وَسَتُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿105﴾

१०५. और कह दीजिए कि तुम अमल किये जाओ तुम्हारे अमल अल्लाह ख़ुद देख लेगा और उसका रसूल और ईमानवाले (भी देख लेंगे) और ज़रूर तुम को ऐसे के पास जाना है जो सभी छिपी और खुली बातों का जानने वाला है, इसलिए वह तुम को तुम्हारे सब किये हुए को बतला देगा।

---

[1] कितने साफ़ लफ़्ज़ों में नबी ﷺ के ग़ैब न जानने का खण्डन (तरदीद) है, काश अहले बिदअत (धर्म में नई चीजें करने वाले) को क़ुरआन समझने की सआदत हासिल हो।

[2] सदक़ा क़ुबूल करता है का मतलब (अगर वह जायेज़ कमायी से हो) यह है कि उसे बढ़ाता है, जिस तरह हदीस में आया है, नबी ﷺ ने फ़रमाया : "अल्लाह तआला तुम्हारे सदक़ा की इस तरह पालन-पोषण करता है जिस तरह तुम में से कोई इंसान अपने घोड़े के बच्चे का पालन-पोषण करता है, यहां तक कि एक खजूर के बराबर सदक़ा (बढ़-बढ़कर) ओहुद पहाड़ के बराबर हो जाता है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुज़ ज़कात और मुस्लिम, किताबुज़ ज़कात)

وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿106﴾

१०६. और कुछ दूसरे लोग हैं जिनका मामला अल्लाह के हुक्म आने तक स्थगित (मुलतवी) है,[1] या तो उन को सजा देगा या उनकी तौबा (पश्चाताप) क़ुबूल कर लेगा, और अल्लाह बहुत जानने वाला है, बहुत हिक्मत वाला है।

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَاۤ اِلَّا الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿107﴾

१०७. और कुछ ऐसे हैं जिन्होंने इस मक़सद से मस्जिद बनायी है कि नुक़सान पहुँचायें और कुफ़्र की बातें करें, और ईमानवालों में फूट डालें और उस इंसान के ठहरने का इंतेज़ाम करें जो इस के पहले से अल्लाह और उसके रसूल का मुख़ालिफ़ है, और क़सम खा जायेंगे कि सिर्फ़ भलाई के अलावा हमारा कोई मक़सद नहीं, और अल्लाह गवाह है कि वे पूरी तरह से झूठे हैं।

لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ؕ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ؕ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿108﴾

१०८. आप उस में कभी खड़े न हों,[2] लेकिन जिस मस्जिद की बुनियाद पहले दिन से ही तक़वा पर रखी गयी हो, वह इस लायक़ है कि आप उस में खड़े हों[3] इस में ऐसे लोग हैं कि वे ज़्यादा पाक होने को अच्छा समझते हैं और

---

[1] तबूक की लड़ाई में पीछे रह जाने वालों में एक तो मुनाफ़िक़ लोग थे, दूसरे वे जो बिला किसी वजह के ही पीछे रह गये थे, और उन्होंने अपनी ग़लती को क़ुबूल कर लिया था, लेकिन उन्हें माफ़ नहीं किया गया था। इस आयत में उन्हीं का बयान है जिनका मामला स्थगित (मुलतबी) कर दिया था, यह तीन लोग थे जिनकी चर्चा आगे आयेगी।

[2] यानी आप ﷺ ने वहाँ जाकर जो नमाज़ पढ़ने का वादा किया है उसके अनुसार वहाँ जाकर नमाज़ न पढ़ें, अत: आप ﷺ ने न केवल यह कि न वहाँ नमाज़ पढ़ी, बल्कि अपने कुछ साथियों को भेजकर मस्जिद गिरा दी और उसे ख़त्म कर डाला, इससे आलिमों ने नतीजा निकाला है कि जो मस्जिद अल्लाह की इबादत के बजाय मुसलमानों के बीच इख़्तिलाफ़ पैदा करने के लिए बनायी जाये वह मस्जिद ज़रार है, उसको गिरा दिया जाये ताकि मुसलमानों में भेद और बिखराव न पैदा हो।

[3] इस से मुराद कौन-सी मस्जिद है ? इस में इख़्तिलाफ़ है, कुछ ने मस्जिदे "क़ुबा" और कुछ ने मस्जिदे नबवी ﷺ को कहा है, सलफ़ का एक गुट दोनों के हक़ में रहा है।

[4] हदीस में आता है कि इस से मुराद अहले क़ुबा हैं, नबी ﷺ ने उन से पूछा कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी पाकीज़गी की तारीफ़ की है, तुम क्या करते हो? उन्होंने कहा कि हम ढेले इस्तेमाल करने के साथ-साथ पानी भी इस्तेमाल करते हैं। (इब्ने कसीर) इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि यह आयत इस बात का सुबूत है कि ऐसी पुरानी मस्जिद में नमाज़ पढ़ना बेहतर है, जो सिर्फ़ अल्लाह की इबादत के ग़र्ज़ से बनाई गयी हो, इसके सिवाय नेकों के ऐसे गिरोह के साथ नमाज़ पढ़ना बेहतर है जो पूरा वज़ू करने और पाकीज़गी और सफ़ाई का ठीक तरह से

अल्लाह तआला ज़्यादा पाक रहने वालों को प्यारा रखता है।

أَفَمَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿109﴾

१०९. फिर क्या ऐसा इंसान बेहतर है जिस ने अपने घर की बुनियाद अल्लाह से डरने पर और अल्लाह की ख़ुशी पर रखी हो या वह इंसान कि जिस ने अपने घर की बुनियाद किसी घाटी के किनारे पर जोकि गिरने ही को हो रखी हो, फिर वह उसे लेकर नरक की आग में गिर पड़े? और अल्लाह तआला ऐसे ज़ालिमों को समझ ही नहीं देता।

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿110﴾

११०. उनका यह घर जिसे उन्होंने बनाया है, सदा उन के दिलों में शक की बिना पर (काँटा बनकर) खटकता रहेगा, लेकिन यह कि उनके दिल ही टुकड़े-टुकड़े हो जायें, और अल्लाह इल्म वाला और हिक्मत वाला है।

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ ۖ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ ۚ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿111﴾

१११. बेशक अल्लाह ने मुसलमानों से उनकी जानों और मालों को जन्नत के बदले ख़रीद लिया है, वह अल्लाह की राह में लड़ते हैं जिस में क़त्ल करते और क़त्ल होते हैं, उस पर सच्चा वादा है तौरात और इंजील और क़ुरआन में। और अल्लाह से ज़्यादा अपने वादे का पालन कौन कर सकता है? इसलिए तुम अपने इस बेचने पर जो कर लिये हो ख़ुश हो जाओ, और यह बड़ी कामयाबी है।

التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّائِحُونَ الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿112﴾

११२. वे ऐसे हैं जो तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं, (अल्लाह की) हम्द करने वाले, रोज़ा (व्रत) रखने वाले, (या सच्चे रास्ते पर सफ़र करने वाले) रुकुअ और सज्दा करने वाले अच्छी बातों की नसीहत देने वाले और बुरी बातों से रोकने वाले और अल्लाह के क़ानूनों को ध्यान में रखने वाले हैं, और ऐसे ईमान वालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।[1]

एहतेमाम करने वाले हों।

[1] मतलब यह है कि पूरा ईमानवाला वह है जो कथनी-करनी में इस्लाम की नसीहतों की

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوٓا أَن يَسْتَغْفِرُوا
لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوٓا أُولِي قُرْبَىٰ مِنۢ بَعْدِ
مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَٰبُ الْجَحِيمِ ﴿113﴾

११३. पैग़म्बर और दूसरे मुसलमानों को इजाज़त नही कि मूर्तिपूजकों के लिए माफ़ी की दुआ करें, अगरचे वे रिश्तेदार ही हों, इस हुक्म के वाज़ेह होने के बाद कि ये लोग नरक में जायेंगे।[1]

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَٰهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَن مَّوْعِدَةٍ
وَعَدَهَآ إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُۥٓ أَنَّهُۥ عَدُوٌّ لِّلَّهِ
تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرَٰهِيمَ لَأَوَّٰهٌ حَلِيمٌ ﴿114﴾

११४. और इब्राहीम का अपने बाप के लिए माफ़ी की दुआ करना वह सिर्फ़ वादे का सबब था जो उन्होंने उसे दिया था, फिर जब उन पर यह बात वाज़ेह हो गयी कि वह अल्लाह का दुश्मन है, तो वह उस से बरी (बेज़ार) हो गये,[2] हक़ीक़त में इब्राहीम बड़े नर्म सहन करने वाले थे।

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًۢا بَعْدَ إِذْ هَدَىٰهُمْ
حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُم مَّا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمٌ ﴿115﴾

११५. और अल्लाह ऐसा नहीं करता कि किसी क़ौम को हिदायत देने के बाद भटका दे जब तक उन बातों को साफ़-साफ़ न बता दे जिन से वे बचें, बेशक अल्लाह हर चीज़ को अच्छी तरह जानता है।

إِنَّ اللَّهَ لَهُۥ مُلْكُ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُحْيِۦ وَيُمِيتُ ۚ
وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿116﴾

११६. बेशक अल्लाह ही का मुल्क है आकाशों और धरती में, वही जिलाता और मारता है, और तुम्हारा अल्लाह के सिवाय न कोई दोस्त है न कोई मदद करने वाला है।

لَقَدْ تَّابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَٰجِرِينَ وَالْأَنصَارِ
الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنۢ بَعْدِ مَا كَادَ

११७. अल्लाह (तआला) ने पैग़म्बर की हालत पर ध्यान दिया और मोहाजिरों व अंसार की

ख़ूबसूरत मिसाल हों और उन चीज़ों से बचने वाला हो जिन से अल्लाह ने रोक दिया है और अल्लाह के हुक्मों की नाफ़रमानी करने वाला नहीं बल्कि उनका मुहाफ़िज़ हो, ऐसे ही पूरे ईमानवाले ख़ुशख़बरी के हक़दार हैं।

[1] इसकी तफ़सीर सहीह बुख़ारी में तफ़सील से मौजूद है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत तफ़सीर, सूरः तौबा)

[2] हज़रत इब्राहीम पर भी जब यह बात वाज़ेह हुई कि मेरा बाप अल्लाह का दुश्मन है और नरक में जाने वाला है, तो उन्होंने उससे अलगाव कर लिया और उसके बाद माफ़ी की दुआ नहीं की।

يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّهُ بِهِمْ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿117﴾

हालत पर भी, जिन्होंने ऐसी तंगी के वक़्त पैग़म्बर का साथ दिया,[1] उसके बाद कि उन में से एक गुट के दिल डांवाडोल होने लगे थे फिर अल्लाह ने उनकी हालत पर रहम किया, बेशक अल्लाह उन सब पर बहुत मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خُلِّفُوا حَتَّىٰ إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَن لَّا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿118﴾

११८. और तीन इंसानों की हालत पर भी जिनका मामला स्थगित (मुलतवी) कर दिया गया था[2] यहाँ तक कि जब धरती अपने फैलाव के बावजूद भी उन के लिए तंग होने लगी और वे ख़ुद अपने वजूद से तंग आ गये, और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से कहीं पनाह नहीं मिल सकती सिवाय इस के कि उसकी तरफ़ पलटा जाये, फिर उनकी हालत पर रहम किया

---

[1] तबूक की लड़ाई के सफ़र को कठिनाई (कष्ट) का वक़्त कहा गया है, इसलिए कि एक तो कड़ी धूप का वक़्त था, दूसरे फसलें तैयार थीं, तीसरे सफ़र लम्बा था और चौथे साधन (वसायेल) की कमी थी, इसलिये इसे جيش العسرة (कठिनाई का सफ़र या सेना) कहा जाता है।

[2] خُلِّفُوا का वही मतलब है जो مُرْجَوْنَ का है, यानी जिनका मामला मुअख़्ख़र कर दिया गया था और पचास दिन के बाद उनकी तौबा क़ुबूल हुई। यह तीन सहाबा थे, काअब बिन मालिक, मुरार: बिन रबीअ और हिलाल बिन उमैय्या, यह पक्के मुसलमान थे, इससे पहले हर जिहाद में शामिल होते रहे, इस तबूक के जिहाद में सुस्ती के सबब शामिल नहीं हो सके, बाद में उन्हें अपनी ग़लती का एहसास हुआ, सोचा एक ग़लती (पीछे रहने की) तो हो ही गयी है लेकिन मुनाफ़िक़ों की तरह अब रसूलुल्लाह ﷺ के सामने झूठी दलील न पेश करेंगे, इसलिए हाज़िर होकर अपनी ग़लती को वाज़ेह तौर से क़ुबूल कर लिया और उसकी सज़ा के लिये अपने आप को पेश कर दिया। नबी ﷺ ने उन के मामले को अल्लाह पर छोड़ दिया कि वह उनके बारे में कोई हुक्म उतारेगा, फिर भी उस अवधि (मुद्दत) में आप ﷺ सहाबा केराम को इन तीनों से नाता रखने यहाँ तक की बातचीत तक करने से रोक दिया और चालीस रातों के बाद उन्हें हुक्म दिया गया कि वह अपनी बीवियों से भी दूर रहें, अत: बीवियों से भी जुदाई हो गई और दस दिन गुज़रने के बाद तौबा क़ुबूल कर ली गयी और बयान की गई आयत उतरी। इस वाक़ेआ की तफ़सीली जानकारी हज़रत काअब बिन मालिक के क़ौल के ऐतबार से हदीस में मौजूद है। देखिये (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़व: तबूक, मुस्लिम, किताबुत तौब:, बाब हदीस तौबते काअब बिन मालिक)

ताकि वे मुस्तक़बिल में भी तौबा कर सकें, बेशक अल्लाह तआला बहुत ज़्यादा तौबा क़ुबूल करने वाला और बहुत रहम करने वाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿119﴾

११९. ऐ ईमानवालो! अल्लाह (तआला) से डरो और सच्चों के साथ रहो।[1]

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿120﴾

१२०. मदीना और उस के आसपास के गाँव वालों के लिए ठीक न था कि रसूलुल्लाह का साथ छोड़कर पीछे रह जायें और न यह कि अपनी जान को उनकी जान से ज़्यादा प्यारा समझें, यह इस सबब से कि उनको अल्लाह की राह में जो प्यास लगी और जो थकान पहुँची और जो भूख लगी और जो चलना चले, जो काफ़िरों के लिए ग़ुस्से का सबब हुआ हो, और दुश्मनों की जो कुछ ख़बर ली, उन सब पर उन के नाम (एक-एक) नेक काम लिखा गया, बेशक अल्लाह तआला नेकों का बदला बरबाद नहीं करता।

وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿121﴾

१२१. और जो भी छोटा और बड़ा उन्होंने ख़र्च किया और जितने मैदान उन को पार करने पड़े, यह सब भी उन के नाम लिखा गया ताकि अल्लाह (तआला) उन के कामों का अच्छे से अच्छा बदला अता करे।

---

[1] सच्चाई के सबब ही अल्लाह तआला ने इन तीन सहाबियों की ग़लतियों को न केवल माफ़ ही किया बल्कि उनकी तौबा को क़ुरआन की आयत बनाकर उतारा رضي الله عنهم و رضوا عنه। इसलिये ईमानवालों को हुक्म दिया गया कि अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ रहो, इसका मतलब यह है कि जिस के दिल के अन्दर तक़वा (यानी अल्लाह का डर) होगा वह सच्चा होगा और जो झूठा होगा समझ लो कि उसका दिल तक़वा से ख़ाली है, इसीलिये हदीस में आता है कि ईमानवालों से कुछ दूसरी ग़लतियाँ तो हो सकती हैं लेकिन वह झूठा नहीं हो सकता।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنْفِرُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنْذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿122﴾

१२२. और मुसलमानों को यह न चाहिए कि सब के सब निकल खड़े हों, तो ऐसा क्यों न किया जाये कि उन के हर बड़े गुट से छोटा गुट जाया करे ताकि वे दीन को समझ-बूझकर हासिल करें और ताकि यह लोग अपनी क़ौम को जबकि वह उन के पास आयें, डरायें ताकि वे डर जायें।

يَآيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿123﴾

१२३. ऐ ईमानवालो! उन काफ़िरों से लड़ो जो तुम्हारे आसपास हैं, और उनको तुम्हारे अन्दर सख़्ती पाना चाहिए और यह यक़ीन करो कि अल्लाह तआला तक़वा (संयम) वालों के साथ है।

وَإِذَا مَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَقُولُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَٰذِهِ إِيمَانًا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿124﴾

१२४. और जब कोई सूर: उतारी जाती है तो कुछ (मुनाफ़िक़) कहते हैं कि इस सूर: ने तुम में से किसके ईमान को बढ़ाया है[1] तो जो लोग ईमानदार हैं इस सूर: ने उन के ईमान में इज़ाफ़ा किया है और वे ख़ुश हो रहे हैं।

وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿125﴾

१२५. और जिनके दिलों में रोग है, इस सूर: ने उन में उनकी गंदगी के साथ और गंदगी बढ़ा दी है और वे कुफ़्र की हालत ही में मर गये।[2]

أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿126﴾

१२६. और क्या उनको नही दिखायी देता कि यह लोग हर साल एक बार या दो बार किसी न किसी मुसीबत में डाले जाते हैं, फिर भी न तौबा करते हैं न नसीहत हासिल करते हैं।

---

[1] इस सूर: में मुनाफ़िक़ों के जिन अमलों का पर्दा उठाया गया है, ये आयतें उनका बाक़ी और पूरक (तकमिला) हैं, इस में बताया जा रहा है कि जब उनकी ग़ैर मौजूदगी में कोई सूर: या उसका कोई हिस्सा उतरता और उनके इल्म में बात आती तो वे हँसी और मज़ाक़ के रूप में एक-दूसरे से कहते कि इस से तुम में से किस के ईमान में ज़्यादती हुई।

[2] रोग से मुराद निफ़ाक़ और अल्लाह की आयतों के बारे में शको शुब्हा है, फ़रमाया: "परन्तु यह सूर: मुनाफ़िक़ों को उन के निफ़ाक़ और फ़िस्क़ में अधिकता करती है और वह अपने कुफ़्र और शिर्क में इस तरह मज़बूत हो जाते हैं कि उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ नहीं होती और कुफ़्र (अधर्म) पर ही उनका ख़ातिमा होता है।"

وَإِذَا مَآ أُنزِلَتْ سُورَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ هَلْ يَرَىٰكُم مِّنْ أَحَدٍ ثُمَّ ٱنصَرَفُوا۟ ۚ صَرَفَ ٱللَّهُ قُلُوبَهُم بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ﴿127﴾

१२७. और जब कोई सूर: उतारी जाती है तो एक-दूसरे को देखने लगते हैं कि तुम को कोई देखता तो नहीं फिर चल देते हैं। अल्लाह (तआला) ने उनका दिल मोड़ दिया है, इस सबब से कि वे नासमझ लोग हैं।

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِٱلْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿128﴾

१२८. तुम्हारे पास एक ऐसे पैगम्बर (ईशदूत) की आमद हुई है जो तुम्हारी ही जाति से हैं[1] जिन को तुम्हारे नुक़सान की बातें बहुत भारी लगती हैं, जो तुम्हारे फ़ायदे के बड़े इच्छुक (ख़्वाहिशमंद) रहते हैं, ईमानवालों के लिए बहुत ही शफ़ीक़ मेहरबान हैं।

فَإِن تَوَلَّوْا۟ فَقُلْ حَسْبِيَ ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَهُوَ رَبُّ ٱلْعَرْشِ ٱلْعَظِيمِ ﴿129﴾

१२९. फिर अगर वे मुख मोड़ें तो आप कह दीजिए कि मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, उस के सिवाय कोई सच्चा माबूद नहीं, मैंने उसी पर भरोसा किया और वह बहुत बड़े अर्श (सिंहासन) का मालिक (स्वामी) है।[2]

سُورَةُ يُونُسَ

सूरतु यूनुस-१०

सूर: यूनुस मक्के में उतरी और इसकी एक सौ नौ आयतें हैं और ग्यारह रूकुअ हैं।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

الٓر ۚ تِلْكَ ءَايَٰتُ ٱلْكِتَٰبِ ٱلْحَكِيمِ ﴿1﴾

१. अलिफ़. लाम. रा.। यह हिक्मत भरी किताब की आयतें हैं।

---

[1] सूर: के आख़िर में मुसलमानों पर नबी ﷺ की शक्ल में जो बड़ा एहसान किया गया है उसका ज़िक्र किया जा रहा है, आप ﷺ की पहली फ़ज़ीलत यह बयान की जा रही है कि वह तुम्हारी जाति से हैं यानी मर्द की शक्ल में हैं (वह नूर या दूसरा कुछ नहीं) जैसाकि दुर्आस्था (ख़राब अक़ीदा) के शिकार लोग जनता को इस तरह के गौरख धन्धे में फंसाते हैं।

[2] हज़रत अबू दरदा फ़रमाते हैं कि जो इंसान यह आयत حسبي الله सुबह और शाम सात-सात बार पढ़ लेगा, अल्लाह तआला उसकी परेशानियों (परेशानी और कठिनाई) के लिए काफ़ी हो जायेगा। (सुनन अबू दाऊद नं॰ ५०८१)

أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ أَنذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِندَ رَبِّهِمْ ۗ قَالَ الْكَافِرُونَ إِنَّ هَٰذَا لَسَاحِرٌ مُّبِينٌ ﴿٢﴾

२. क्या उन लोगों को इस बात से ताज्जुब हुआ कि हम ने उन में से एक इंसान के पास वह्यी (प्रकाशना) भेज दी कि सभी इंसानों को डराइये और जो ईमान ले आये उनको यह ख़ुशख़बरी सुना दीजिए कि उनके रब के पास उनको पूरा बदला और इ़ज़्ज़त मिलेगी, काफ़िरों ने कहा कि यह इंसान बेशक साफ़ जादूगर (तांत्रिक) है।

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۖ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۖ مَا مِن شَفِيعٍ إِلَّا مِن بَعْدِ إِذْنِهِ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٣﴾

३. बेशक तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने छः दिनों में आकाशों और धरती को पैदा कर दिया फिर अर्श पर क़ायम हुआ, वह हर काम का इन्तिज़ाम करता है,[1] उसकी इजाज़त के बिना उस के पास कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं, ऐसा अल्लाह तुम्हारा रब है तो तुम उसकी इबादत करो, क्या तुम फिर भी नसीहत हासिल नहीं करते?

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۚ إِنَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٤﴾

४. तुम सब को अल्लाह ही के पास जाना है, अल्लाह ने सच्चा वादा कर रखा है, बेशक वही पहली बार पैदा करता है, फिर वही दोबारा पैदा करेगा ताकि ऐसे लोगों को जो कि ईमान लाये और उन्होंने नेकी के काम किये, इंसाफ़ के साथ बदला दे और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए खौलता हुआ पानी पीने को मिलेगा और दुखदायी अज़ाब होगा उन के कुफ़्र के सबब।[2]

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَّرَهُ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۚ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَٰلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٥﴾

५. वह (अल्लाह तआला) ऐसा है जिसने सूरज को चमकता बनाया और चाँद को रौशन बनाया, और उसके लिए स्थान (गंतव्य) मुक़र्रर किये ताकि तुम सालों का हिसाब कर सको और हिसाब को जान लो, अल्लाह तआला ने ये सभी चीज़ें बेकार नहीं पैदा कीं, वह यह सुबूत उन्हें साफ़ बता रहा है जो अक़्ल रखते हैं।

---

[1] यानी आकाश और धरती को पैदा कर के उस ने उसे यूँ ही नहीं छोड़ दिया, बल्कि सारी मख़लूक़ का नज़्म और तदबीर इस तरह कर रहा है कि कभी किसी का आपस में टकराव नहीं हुआ, हर चीज़ उस के हुक्म के ऐतबार से अपने-अपने काम में मसरूफ़ है।

[2] इस आयत में क़यामत के आने, अल्लाह के सामने सभी के जमा होने, बदले और सज़ा का बयान है, यह विषय क़ुरआन करीम में कई अंदाज़ से कई मक़ाम पर बयान हुआ है।

إِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ⑥

६. बेशक रात-दिन के एक-दूसरे के बाद आने में और अल्लाह तआला ने आकाश और धरती में जो कुछ पैदा कर रखा है, उन सब में उन लोगों के लिए सुबूत हैं जो अल्लाह का डर रखते हैं।

إِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ⑦

७. जिन लोगों को हमारे पास आने का यक़ीन नहीं है, और वह दुनियावी ज़िन्दगी पर ख़ुश हो गये हैं और उस में जी लगा बैठे हैं और जो लोग हमारी आयतों से ग़ाफ़िल हैं।

أُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ⑧

८. ऐसे लोगों का ठिकाना (स्थान) उनके अमलों के सबब नरक है।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ⑨

९. बेशक जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये, उनका रब उनको ईमान वाले होने के सबब (उन के मक़सद तक) पहुँचा देगा,[1] सुख के बाग़ों में जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी।

دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ⑩

१०. वहाँ उन के मुँह से यह बात निकलेगी 'सुब्हानल्लाह'[2] और उनका आपसी सलाम (अभिवादन) यह होगा 'अस्सलामु अलैकुम' और उनकी आख़िरी बात यह होगी कि सारी तारीफ़ अल्लाह ही के लिए हैं जो सारी दुनिया का रब है।

---

[1] इसका एक दूसरा तर्जुमा यह किया गया है कि दुनिया में ईमान के सबब क़यामत के दिन अल्लाह तआला उन के लिये पुल सिरात से गुज़रना आसान कर देगा, कुछ के नज़दीक यह अल्लाह तआला से मदद हासिल करने के लिये है और तर्जुमा यह होगा कि अल्लाह तआला क़यामत के दिन उन के लिये एक आसमानी नूर मुहय्या करेगा, जिसकी रौशनी में वे चलेंगे जैसा कि सूर: हदीद में इसका बयान आता है।

[2] यानी जन्नत में जाने वाले हर पल अल्लाह की बड़ाई और तारीफ़ में लगे होंगे, जिस तरह हदीस में आता है : "अहले जन्नत के मुँह से अल्लाह की बड़ाई और तारीफ़ इस तरह निकलेगी जिस तरह साँस निकलती है।"

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ؕ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿11﴾

११. और अगर अल्लाह लोगों को फ़ौरन नुक़सान पहुँचा देता, जैसे लोग फ़ौरन फ़ायेदा चाहते हैं इसलिए उन का वादा कभी का पूरा हो चुका होता तो हम उन लोगों को जिन्हें हमारे पास आने का यक़ीन नहीं है उन के हाल पर छोड़ देते हैं कि वे अपनी सरकशी में भटकते रहें।

وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖۤ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَاۤ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿12﴾

१२. और जब इंसान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो हम को पुकारता है लेटे भी, बैठे भी, खड़े भी। फिर जब हम उसकी तक़लीफ़ को दूर कर देते हैं तो वह ऐसा हो जाता है कि जैसे उस ने अपनी तक़लीफ़ के लिए जो उसे पहुँची थी कभी हमें पुकारा ही नहीं था।[1] इन हुदूद तोड़ने वालों के अमल को उन के लिए उसी तरह पसन्दीदा होने वाला बना दिया गया है।

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿13﴾

१३. और हम ने तुम से पहले बहुत से ऐसे गिरोहों को बरबाद कर दिया जबकि उन्होंने ज़ुल्म किया, अगरचे उन के पास उन के पैग़म्बर भी निशानियाँ लेकर आये और वे कब ऐसे थे कि ईमान ले आते? हम अपराधी लोगों को इसी तरह सज़ा दिया करते हैं।

ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿14﴾

१४. फिर उन के बाद हम ने दुनिया में उनकी जगह पर तुम को बसाया, ताकि हम देख लें कि तुम कैसे काम करते हो।

---

[1] यह इंसान की उस हालत का बयान है जो उस के बहुमत की करनी है, बल्कि बहुत से अल्लाह के मानने वाले भी इस सुस्ती का काम आम तौर से करते हैं कि दुख के वक़्त बहुत अल्लाह-अल्लाह हो रहा है, दुआयें की जा रही हैं, तौबा और इस्तिग़फ़ार किया जा रहा है, लेकिन जब अल्लाह तआला दुख का वह कठिन वक़्त निकाल देता है तो फिर अल्लाह के दरबार में आजिज़ी और दुआ से भी अन्जान हो जाते हैं और अल्लाह ने उनकी दुआओं को क़ुबूल करके जिस कठिनाईयों से आज़ादी दिलायी उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करने की भी ख़ुशनसीबी उनको नहीं होती।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ ۙ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا ائْتِ بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَٰذَا أَوْ بَدِّلْهُ ۚ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أُبَدِّلَهُ مِنْ تِلْقَاءِ نَفْسِي ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ ۖ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ (15)

१५. और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं जो बिल्कुल साफ़ हैं, तो यह लोग जिनको हमारे पास आने का यक़ीन नहीं है, इस तरह कहते हैं कि इस के सिवाय दूसरा क़ुरआन लाईये, या इस में कुछ तब्दीली कर दीजिए, आप (ﷺ) यह कह दीजिए कि मुझे यह हक़ नहीं कि अपनी तरफ़ से उस में तब्दीली कर दूं, बस मैं तो उसी की इत्तेबा करूंगा जो मेरे पास वहयी के ज़रिये मेरे पास आयी है, अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूं तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब का डर रखता हूं।

قُلْ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرَاكُمْ بِهِ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِنْ قَبْلِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ (16)

१६. आप कह दीजिए कि अगर अल्लाह ने चाहा होता तो न तो मैं तुम को वह पढ़कर सुनाता और न अल्लाह (तआला) तुम को उसकी ख़बर देता, क्योंकि इस से पहले तो मैं एक लम्बी उम्र तक तुम में रह चुका हूं, फिर क्या तुम समझ नहीं रखते ?

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُونَ (17)

१७. तो उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर बुहतान बांधे या उसकी आयतों को झूठ कहे, बेशक ऐसे मुजरिम कभी कामयाब नहीं होंगे।

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ ۚ قُلْ أَتُنَبِّئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ (18)

१८. और ये लोग अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जो न उनको नुक़सान पहुंचा सकें और न उनको फ़ायेदा पहुंचा सकें, और कहते हैं कि ये अल्लाह के सामने हमारी सिफ़ारिश करने वाले हैं। आप कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह को ऐसे उमूर की ख़बर देते हो जिसे वह नहीं जानता आकाशों में और न धरती में, वह पाक और बरतर है उन लोगों के शिर्क से।

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا ۚ

१९. और सभी लोग एक ही उम्मत (समुदाय-धर्म) के थे, फिर उन्होंने इख़्तिलाफ़ पैदा किये[1] और

---

[1] यानी यह शिर्क (अनेकेश्वरवाद) लोगों की अपनी उपज है, और पहले इसका कोई वजूद नही

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿19﴾

अगर एक बात न होती जो आप के रब की तरफ़ से मुक़र्रर की जा चुकी है, तो जिस चीज में यह लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं उनका पूरी तरह से फ़ैसला हो चुका होता।

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۖ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ ﴿20﴾

२०. और ये लोग यह कहते हैं कि उन पर कोई मोजिज़ा क्यों नहीं उतरा?[1] (तो आप) कह दीजिए कि गैब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है, तो तुम भी इंतेज़ार में रहो मैं भी तुम्हारे साथ इंतेज़ार में हूँ।

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُم مَّكْرٌ فِي آيَاتِنَا ۚ قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ ﴿21﴾

२१. और जब हम लोगों को दुख पहुँचने के बाद सुख का मज़ा चखाते हैं,[2] तो वह तुरंत हमारी आयतों के बारे में मकर करने लगते हैं। आप कह दीजिए कि अल्लाह तदबीर में तुम से अधिक तेज़ है, बेशक हमारे फ़रिश्ते तुम्हारे छलकपट को लिख रहे हैं।

هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا كُنتُمْ فِي الْفُلْكِ وَجَرَيْنَ بِهِم بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ

२२. वह (अल्लाह) ऐसा है जो तुम्हें जल और थल में सफ़र कराता है,[3] यहाँ तक कि जब तुम नाव में होते हो, और वे नवकाएं लोगों को मुवाफ़िक़ हवा के ज़रिये लेकर चलती है और वे लोग उन से ख़ुश होते हैं, उन पर एक

था, सभी लोग एक ही दीन और एक ही रास्ते पर थे जो इस्लाम है, जिस में एकेश्वरवाद (तौहीद) को ख़ास मकाम हासिल है। हज़रत नूह तक लोग इसी रास्ते तौहीद पर चलते रहे, फिर उन में इख़्तिलाफ़ हो गया और कुछ लोगों ने अल्लाह के साथ दूसरे को भी देवता, माबूद और कष्टनिवारक (मुश्किल कुशा) समझना शुरू कर दिया।

[1] इस से मुराद कोई बड़ा और खुला मोजिज़ा है, जैसे समूद की क़ौम के लिये ऊँटनी का ज़ाहिर होना, उन के लिये सफ़ा पहाड़ को सोने का या मक्के के पहाड़ों को ख़त्म कर के उनकी जगह पर नहरें और बाग़ बनाने का या दूसरे इस तरह का कोई मोजिज़ा ज़ाहिर करके दिखाया जाये।

[2] दुख के बाद सुख का मतलब है ग़रीबी, सूखा और दुख और मुसीबत के बाद सुख का मतलब क़ीमती ज़िन्दगी के लिए वसायेल की अधिकता आदि।

[3] يسيركم वह तुम्हें चलाता या चलने-फिरने की क़ूवत अता करता है। "थल में" यानी उस ने तुम्हें पैर दिया जिन से तुम चलते हो, सवारियाँ मुहय्या की, जिन पर सवार होकर दूर जगह का सफ़र करते हो। और "जल में" यानी अल्लाह (तआला) ने तुम्हें नवकाएं और जहाज़ बनाने का गुण (सिफ़त) और समझ अता किया, तुम ने उन्हें बनाया और उन के ज़रिये समुन्दर में दूर तक सफ़र करते हो।

وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِن كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ لَئِنْ أَنجَيْتَنَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ (22)

तूफ़ानी हवा का झोंका आता है और हर तरफ़ से लहरें उठती हैं और वे समझते हैं कि (बुरे) आ घिरे, (उस वक़्त) सभी शुद्ध विश्वास (ख़ालिस ईमान) और अक़ीदा के साथ अल्लाह ही को पुकारते हैं कि अगर तू इस से बचा ले तो हम ज़रूर (तेरे) शुक्रगुज़ार बन जायेंगे।

فَلَمَّا أَنجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَىٰ أَنفُسِكُم مَّتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ (23)

२३. फिर जब अल्लाह (तआला) उनको बचा लेता है, तो तुरंत ही वह धरती में नाहक़ फ़साद करने लगते हैं। हे लोगो! यह तुम्हारी सरकशी तुम्हारे लिए दुखदायी होने वाली है, दुनियावी ज़िन्दगी के (कुछ) फ़ायदे हैं, फिर तुम को हमारे पास आना है, फिर हम सब तुम्हारा किया हुआ तुम को बता देंगे।

إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّىٰ إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَادِرُونَ عَلَيْهَا أَتَاهَا أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا كَأَن لَّمْ تَغْنَ بِالْأَمْسِ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ (24)

२४. दुनियावी ज़िन्दगी की हालत ऐसी है, जैसे हम ने आकाश से पानी बरसाया, फिर उस से धरती की वनस्पति जिनको इंसान और जानवर खाते हैं, ख़ूब हरी-भरी होकर निकली, यहाँ तक कि जब वह धरती अपनी ज़ीनत का पूरा हिस्सा ले चुकी और उसका ख़ूब सौन्दर्य हो गया और उसके मालिकों ने समझा कि अब हम इस पर पूरे तौर से हक़दार हो चुके तो दिन में या रात में उस पर हमारी तरफ़ से कोई हुक्म (दुर्घटना) आ गया, तो हम ने उसको ऐसा साफ़ कर दिया कि जैसे कल यहाँ थी ही नहीं, हम इसी तरह निशानियों को मुफ़स्सल बयान करते हैं ऐसे लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं।

وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَىٰ دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ (25)

२५. और अल्लाह (तआला) सलामती के घर की तरफ़ तुम को बुलाता है और जिसको चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है।

لِّلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (26)

२६. जिन लोगों ने नेक काम किया है उनके लिए भलाई है, और कुछ ज़्यादा भी और उनके मुँह पर न स्याही छायेगी और न अपमान (ज़िल्लत), ये लोग जन्नत में रहने वाले हैं, वे उस में हमेशा रहेंगे।

وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ مَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ كَأَنَّمَا أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطَعًا مِنَ اللَّيْلِ مُظْلِمًا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (27)

२७. और जिन लोगों ने बुरे अमल किये उनको बुराई की सजा समान मिलेगी[1] और उन पर अपमान छा जायेगा, उनको अल्लाह (तआला) से कोई बचा न पायेगा, जैसे कि उन के मुँह पर अंधेरी रात के पर्त लपेट दिये गये हैं, ये लोग नरक में रहने वाले हैं, वे उस में हमेशा रहेंगे।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاؤُكُمْ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَاؤُهُمْ مَا كُنْتُمْ إِيَّانَا تَعْبُدُونَ (28)

२८. और वह दिन भी याद के क़ाबिल है, जिस दिन हम उन सभी को जमा करेंगे, फिर मूर्ति-पूजकों से कहेंगे कि तुम और तुम्हारे साझीदार अपनी जगह पर ठहरो, फिर हम उन में आपस में फूट डाल देंगे, और उन के वे साझीदार कहेंगे कि तुम हमारी इबादत (पूजा) नहीं करते थे।

فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغَافِلِينَ (29)

२९. तो हमारे तुम्हारे बीच अल्लाह काफ़ी है गवाह के रूप में कि हम को तुम्हारी इबादत की ख़बर भी न थी।

هُنَالِكَ تَبْلُو كُلُّ نَفْسٍ مَا أَسْلَفَتْ وَرُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ (30)

३०. उस जगह पर हर इंसान अपने पहले किये गये कामों की जाँच कर लेगा, और ये लोग अल्लाह की तरफ़ जो उनका हक़ीक़ी मालिक है, लौटाये जायेंगे और जो कुछ झूठ (ईष्टदेव) बना रखे थे, सभी उन से खो जायेंगे।

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَّنْ يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ (31)

३१. आप कहिए कि वह कौन है, जो तुम को आकाश और धरती से रिज़्क़ पहुँचाता है या वह कौन है जो कानों और आँखों पर पूरा हक़ रखता है, और वह कौन है जो जानदार को बेजान से निकालता है और बेजान को जानदार से निकालता है, और वह कौन है जो सभी कामों का संचालन (नज़्म) करता है? बेशक वह यही कहेंगे कि अल्लाह,[2] तो उन से कहिए कि फिर

---

[1] पहले की आयत में जन्नत में रहने वाले लोगों का बयान था, उस में बताया गया था कि उन्हें इन नेक कामों का बदला कई-कई गुना मिलेगा और फिर इस से ज़्यादा अल्लाह के दीदार से सम्मानित (बाइज़्ज़त) होंगे। इस आयत में बताया जा रहा है कि बुराई का बदला बुराई के बराबर ही मिलेगा। سَيِّئَات का मतलब कुफ़्र (अधर्म) और शिर्क और दूसरी बुराईयाँ हैं।

[2] इस आयत से भी वाज़ेह होता है कि मूर्तिपूजक अल्लाह को मालिक, ख़ालिक़, रब और उसको हर काम का हल करने वाला क़ुबूल करते थे, लेकिन उसके बावजूद चूँकि वह उसकी इबादत

डरते क्यों नहीं?

فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلٰلُ ۚ فَأَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿32﴾

३२. तो यह है अल्लाह (तआला) जो तुम्हारा सच्चा रब है, फिर सच के बाद दूसरा क्या रह गया सिवाय भटकावे के, फिर कहाँ भटके जाते हो?[1]

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿33﴾

३३. इसी तरह आप के रब की यह बात कि यह ईमान न लायेंगे, सभी फ़ासिक़ लोगों के बारे में साबित हो चुकी है ।[2]

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ۚ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَأَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿34﴾

३४. आप (इस तरह) कहिए कि क्या तुम्हारे साझीदारों में कोई ऐसा है जो पहली बार भी पैदा करे फिर दोबारा पैदा करे? आप कह दीजिए कि अल्लाह ही पहली बार पैदा करता है फिर वही दोबारा भी पैदा करेगा, फिर तुम कहाँ फिरे जाते हो?

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ إِلَى الْحَقِّ ۚ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ۗ أَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُّتَّبَعَ أَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ إِلَّآ أَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۗ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿35﴾

३५. आप कहिए कि तुम्हारे साझीदारों में कोई ऐसा है कि सच का रास्ता बताता हो? आप कह दीजिए कि अल्लाह ही सच का रास्ता बताता है, तो फिर जो ताक़त सब बात का रास्ता बतलाती हो, वह ज़्यादा इत्तेबा और पैरवी के लायक़ है, या वह इंसान जिसको बिना बताये ख़ुद ही रास्ता न दिखायी दे तो तुम को क्या हो गया है, तुम कैसे फ़ैसले करते हो?

में दूसरों को साझीदार ठहराते थे, इसीलिये अल्लाह ने उन्हें नरक का ईंधन बताया, आजकल के ईमान के दावेदार भी इसी इबादत-एकेश्वरवाद (तौहीद) के इंकार करने वाले हैं ।

[1] यानी रब और माबूद तो यही है जिसके बारे में तुम्हें ख़ुद क़ुबूल है कि हर चीज का ख़ालिक़, मालिक और संयोजक (निगराँ) वही है, फिर इस इबादत के लायक़ को छोड़कर जो तुम दूसरों को देवता बनाये फिरते हो वह भटकावे के सिवाय क्या है तुम्हारी समझ में यह बात क्यों नही आती? तुम कहाँ फिरे जाते हो?

[2] यानी जिस तरह मूर्तिपूजक सारी बातों को क़ुबूल कर लेने के बावजूद अपनी मूर्तिपूजा पर क़ायम हैं और उसे छोड़ने के लिये तैयार नहीं, इसी तरह तेरे रब की यह बात साबित हो गयी कि यह ईमान नहीं लाने वाले हैं ।

३६. और उन में से ज़्यादातर लोग बेबुनियाद (अनुमानित) ख़्यालों पर चल रहे हैं, बेशक बेअसल (अनुमानित) ख़्याल सच (की पहचान) में ज़रा भी काम नहीं दे सकता ये जो कुछ कर रहे हैं, बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है।

وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا ۚ إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿36﴾

३७. और यह क़ुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह (की वह्यी) के सिवाय (ख़ुद ही) गढ़ लिया गया हो, बल्कि यह तो (उन किताबों की) तसदीक़ करने वाली है, जो इस के पहले (उतर) चुकी है, और किताब (ज़रूरी अहकाम) का तफ़सीली बयान है, इस में कोई बात शक की नहीं कि सारे जहाँ के रब की तरफ़ से है।

وَمَا كَانَ هَٰذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿37﴾

३८. क्या यह लोग इस तरह कहते हैं कि आप ने उसको गढ़ लिया है? आप कह दीजिए कि तो फिर तुम इसकी तरह एक ही सूर: लाओ और अल्लाह के सिवाय जिन-जिन को बुला सको उनको बुला लो अगर तुम सच्चे हो।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿38﴾

३९. बल्कि वे ऐसी चीज़ को झुठलाने लगे जिसको अपने इल्म के दायरे में नहीं लाये और अभी उनको इसका आख़िरी नतीजा नहीं मिला, जो लोग उन से पहले हुए हैं उसी तरह उन्होंने भी झुठलाया था, तो देख लीजिए कि उन ज़ालिमों का अंजाम कैसा हुआ?[1]

بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿39﴾

४०. और उन में से कुछ ऐसे हैं जो इस पर ईमान ले आयेंगे और कुछ ऐसे हैं कि उस पर ईमान न लायेंगे, और आप का रब फ़साद करने वालों को अच्छी तरह जानता है।

وَمِنْهُمْ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ ۚ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿40﴾

[1] ये उन काफ़िरों और मूर्तिपूजकों को चेतावनी देकर होशियार किया जा रहा है कि तुम से पहले की क़ौमों ने भी अल्लाह की आयतों को झुठलाया, तो देख लो उनका क्या अंजाम हुआ? अगर तुम इसे झुठलाने से न रुके तो तुम्हारा भी अंजाम इस से अलग न होगा।

وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ لِي عَمَلِي وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۖ أَنْتُمْ بَرِيئُونَ مِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا بَرِيءٌ مِمَّا تَعْمَلُونَ ﴿41﴾

४१. और अगर वे आप को झुठलाते रहें तो यह कह दीजिए कि मेरा किया हुआ मुझ को मिलेगा और तुम्हारा किया हुआ तुम को मिलेगा, तुम मेरे किये हुए के जिम्मेदार नहीं हो और मैं तुम्हारे किये हुए का जिम्मेदार नहीं हूं।

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ ۚ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ﴿42﴾

४२. और उन में कुछ ऐसे हैं जो आप की तरफ कान लगा कर सुनते हैं, क्या आप बहरों को सुनाते हैं चाहे उनको अक़्ल भी न हो?

وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ ۚ أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوا لَا يُبْصِرُونَ ﴿43﴾

४३. और उन में कुछ ऐसे हैं कि आप को देख रहे हैं, फिर क्या आप अंधों को रास्ता दिखाना चाहते हैं चाहे उनकी आंख भी न हो?

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَٰكِنَّ النَّاسَ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿44﴾

४४. यह यक़ीनी बात है कि अल्लाह लोगों पर जरा भी जुल्म नहीं करता लेकिन लोग ख़ुद ही अपने आप पर जुल्म करते हैं।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَنْ لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ ۚ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿45﴾

४५. और उन को वह दिन याद दिलाइए जिस में अल्लाह उनको (अपनी सेवा में) इस हालत में जमा करेगा (कि उन्हें लगेगा) कि (दुनिया में) सारे दिन का एक आध पल रहे हों[1] और आपस में एक-दूसरे को पहचानने को खड़े हों[2] हक़ीक़त में नुक़सान में पड़े वह लोग जिन्होंने अल्लाह के पास जाने को झुठलाया और वे हिदायत पाने वाले नहीं थे।

وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ﴿46﴾

४६. और हम जिसका उन से वादा कर रहे हैं उस में से कुछ जरा सा आप को दिखला दें या (उनके जाहिर होने से पहले) हम आप को मौत दे दें, तो हमारे पास तो उनको आना ही है, फिर

---

[1] यानी क़यामत की कठिनाईयां देखकर दुनिया के सारे मजे भूल जायेंगे और दुनिया की जिन्दगी उन्हें ऐसी महसूस होगी कि जैसे कि वे दुनिया में एक-आध पल ही रहे हैं।

[2] क़यामत में कई हालतें होंगी, जिन्हें क़ुरआन में कई जगहों पर बयान किया गया है, एक वक़्त ऐसा होगा कि एक-दूसरे को पहचानेंगे, कुछ मौक़े ऐसे आयेंगे कि आपस में एक-दूसरे पर भटकावे का इल्जाम देंगे।

अल्लाह उन के सभी अमलों का गवाह है ।[1]

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ ۖ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿47﴾

४७. और हर उम्मत के लिए एक रसूल (संदेश-वाहक) है, फिर जब उनका रसूल आ चुकता है उनका फ़ैसला इंसाफ़ के साथ किया जाता है,[2] और उस पर ज़ुल्म नहीं किया जाता ।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿48﴾

४८. और यह लोग कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो ?

قُل لَّا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۚ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿49﴾

४९. आप कह दीजिए कि मैं ख़ुद अपने लिए तो किसी फ़ायदे और किसी नुक़सान का हक़ रखता ही नहीं लेकिन जितना अल्लाह की मर्ज़ी हो, हर उम्मत के लिए एक मुक़र्रर वक़्त है, जब उनका वह मुक़र्रर वक़्त आ पहुँचता है तो एक पल न पीछे हट सकते हैं और न आगे खिसक सकते हैं ।[3]

---

[1] इस आयत में अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि हम उन काफ़िरों के बारे में जो वादा कर रहे हैं अगर उन्होंने कुफ़्र (अधर्म) और मूर्तिपूजा को जारी रखा तो उन पर भी उसी तरह अल्लाह का अज़ाब आ सकता है, जिस तरह से पहले की क़ौमों पर आया, इनमें से कुछ अगर आप के जीवन में भेज दें तो यह भी मुमकिन है, जिस से आप की आँखे ठंडी होंगी, लेकिन अगर आप इस से पहले ही दुनिया से उठा लिये गये, तब भी कोई बात नहीं, इन काफ़िरों को आख़िर में हमारे पास ही आना है, इन के सारे अमलों और हाल की हमें ख़बर है वहाँ ये हमारे अज़ाबों से किस तरह बच सकेंगे? यानी दुनिया में मुमकिन है कि हमारे ख़ास राज़ के सबब अज़ाब से बच जायें, लेकिन आख़िरत में तो उनके लिये हमारे अज़ाबों से बचना मुमकिन नहीं होगा क्योंकि क़यामत आने का मक़सद ही यही है कि वहाँ पैरोकारों को उन के हुक्म की पैरवी का फल और नाफ़रमानी करने वालों को उनकी नाफ़रमानी की सज़ा दी जाये ।

[2] इसका एक मतलब तो यह है कि हर क़ौम में हम रसूल भेजते रहे, और जब रसूल अपना बाख़बर करने और पैग़ाम पहुँचाने का काम पूरा कर देता तो फिर हम उनके बीच इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर देते, यानी पैग़म्बर और उन पर ईमान ले आने वालों को बचा लेते और दूसरों को बरबाद कर देते । क्योंकि :

﴿وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا﴾

"हमारी रीत नहीं कि रसूल भेजने से पहले ही अज़ाब देने लगें ।" (बनू इस्राईल : १५)

[3] यह मूर्तिपूजकों के अल्लाह के अज़ाब की माँग पर कहा जा रहा है कि मैं तो अपने ख़ुद के फ़ायदे और नुक़सान का हक़ नहीं रखता तो क्योंकर मैं दूसरों को फ़ायदा और नुक़सान पहुँचा सकूँ? हाँ, यह सारा हक़ अल्लाह ही के हाथ में है और वह अपनी मर्ज़ी से ही किसी को फ़ायदा

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿50﴾

५०. आप कह दीजिए कि यह तो बताओ कि अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब रात को आ पड़े या दिन को, तो अज़ाब में कौन सी ऐसी चीज़ है कि अपराधी लोग उसको जल्दी माँग रहे हैं।

اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ؕ آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿51﴾

५१. क्या फिर जब वह आ ही पड़ेगा तब उस पर ईमान लाओगे, हाँ अब मान लिया जब कि तुम उसकी जल्दी मचा रहे थे।

ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿52﴾

५२. फिर ज़ालिमों से कहा जायेगा कि अब हमेशा के अज़ाब का मज़ा चखो, तुम को तो तुम्हारे किये का ही बदला मिला है।

وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِيْ وَرَبِّيْۤ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ؕ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿53﴾

५३. और वे आप से पूछते हैं कि क्या वह (अज़ाब) वास्तविक बात है? आप कह दीजिए कि हाँ, क़सम है मेरे रब की कि वह वास्तविक (हक़ीक़ी) बात है और तुम (अल्लाह को) किसी तरह भी मजबूर नहीं कर सकते।

وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿54﴾

५४. और अगर हर जान जिस ने जुल्म (शिर्क) किया है, के पास इतना हो कि सारी धरती भर जाये तब भी उसको देकर अपनी जान बचाने लगे, और जब अज़ाब देख लेगें तो लज्जा को छिपाये रखेंगे और उनका फ़ैसला इंसाफ़ के साथ होगा और उन पर ज़ुल्म न होगा।

और नुक़सान पहुँचाने का फ़ैसला करता है, इसके सिवाय अल्लाह तआला ने हर उम्मत के लिये एक वक़्त मुक़र्रर किया हुआ है, इस मुक़र्रर वक़्त तक मौक़ा देता है, लेकिन जब वह वक़्त आ जाता है तो फिर वह एक पल न पीछे हो सकते हैं न आगे खिसक सकते हैं।

टिप्पणी : यहाँ यह बात बहुत ज़रूरी है कि जब सब से अच्छा मर्द रसूलों के सरदार मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ तक किसी को फ़ायेदा और नुक़सान पहुँचाने पर वश नहीं तो आप ﷺ के बाद के लोगों में कौन-सा इंसान ऐसा हो सकता है जो किसी की ज़रूरत को पूरा कर दे और मुसीबत दूर करने पर वश रखता हो? इस तरह ख़ुद अल्लाह के पैग़म्बर से मदद माँगना, उनसे दुआ करना "या रसूलुल्लाह अलमदद" और "أغثني يا رسول الله" आदि लफ़्ज़ों से पुकारना या ध्यान लगाना किसी भी तरह जायेज़ नहीं, क्योंकि यह क़ुरआन की इस आयत और इसी तरह की दूसरी वाज़ेह नसीहतों के ख़िलाफ़ है बल्कि यह शिर्क के दायरे में आता है।

५५. याद रखो कि जितनी चीज़ें आकाशों और ज़मीन में हैं, सभी अल्लाह की मिल्कियत में हैं, याद रखो कि अल्लाह का वादा सच्चा है लेकिन बहुत से लोग इल्म ही नहीं रखते।

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿55﴾

५६. वही जान डालता है वही जान निकालता है और तुम सब उसी के पास लाये जाओगे।[1]

هُوَ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿56﴾

५७. हे लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक ऐसी चीज़ आयी है जो नसीहत है[2] और दिलों में जो (रोग) है उन के लिए शिफ़ा है, और हिदायत करने वाला है और रहमत है ईमान वालों के लिए।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿57﴾

५८. आप कह दीजिए कि बस लोगों को अल्लाह के फ़ज़्ल और रहमत पर ख़ुश होना चाहिए,[3] वह उस से कहीं ज़्यादा बेहतर है जिसको वह जमा कर रहे हैं।

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿58﴾

५९. आप कहिए कि ये तो बताओ कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो रोज़ी भेजी थी, फिर तुम ने उसका कुछ हिस्सा हराम और कुछ हलाल कर लिया[4] आप पूछिए कि क्या तुम को अल्लाह ने हुक्म दिया था या अल्लाह पर झूठ गढ़ते हो?

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿59﴾

---

[1] इन आयतों में आकाश और धरती के बीच हर चीज़ पर अल्लाह तआला की मिल्कियत, अल्लाह के वादे का सच होना, जीवन-मृत्यु पर उसका हक़ और उस के दरबार में सब की हाज़िरी का बयान है, जिस से मक़सद पहले की बातों की तसदीक़ और ताईद है कि जो ताक़त इतने हक़ों की मालिक है, उसकी पकड़ से बच निकलकर कोई कहाँ जा सकता है?

[2] यानी जो क़ुरआन को दिल लगा कर पढ़े और उसके मतलब और भाव पर ख़्याल करे, उसके लिये क़ुरआन नसीहत है, तालीम व नसीहत का अस्ल मतलब है पहले और बाद के नतीजा को याद दिलाना, चाहे डराने के ज़रिये हो या लालच के ज़रिये।

[3] ख़ुशी उस हालत का नाम है जो किसी प्यारी चीज़ के मिलने पर इंसान अपने दिल में महसूस करता है, ईमानवालों से कहा जा रहा है कि यह क़ुरआन अल्लाह की ख़ास रहमत और उसकी मेहरबानी है, इस पर ईमानवालों को ख़ुश होना चाहिए यानी उन के दिलों में ख़ुशी और आनन्द होना चाहिए, उसका मतलब यह नहीं है कि ख़ुशी ज़ाहिर करने के लिये सभा और जुलूसों का, दीप जलाने का और इसी तरह के दूसरे बेकार और फ़ुज़ूल का काम करो, जैसाकि आजकल के बिदअती इस आयत से जश्ने ईद मीलाद और इसकी ग़लत रस्म का जायेज़ होना साबित करते हैं।

[4] इस से मुराद वही कुछ जानवरों का हराम करना है जो मूर्तिपूजक अपनी मूर्तियों के नाम पर छोड़ दिया करते थे, जिसका तफ़सीली बयान सूरः अल-अन्आम में गुज़र चुका है।

وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ اِنَّ اللهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿60﴾

६०. और जो लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं उनका क़यामत (प्रलय) के बारे में क्या ख़्याल है? हक़ीक़त में लोगों पर अल्लाह तआला का बड़ा ही एहसान है, लेकिन ज़्यादातर लोग शुक्र अदा नहीं करते।

وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ۚ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ وَلَآ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿61﴾

६१. और आप किसी हालत में हों और इन हालतों में आप कहीं से क़ुरआन पढ़ते हों और तुम लोग जो काम भी करते हो हम को सभी की ख़बर रहती है, जब तुम उस काम में मसरूफ़ रहते हो और आप के रब से कोई चीज तिनका बराबर छिपी नहीं, न धरती में न आकाश में और न कोई चीज उस से छोटी और न कोई बड़ी, लेकिन यह सब खुली किताब में है।

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿62﴾

६२. याद रखो कि अल्लाह के मित्रों पर[1] न कोई डर है न वे दुखी होते हैं।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿63﴾

६३. ये वे लोग हैं जो ईमान लाये और (गुनाह से) तक़वा बरतते हैं।

---

[1] नाफ़रमानों के बाद अल्लाह तआला अपने फ़रमांबरदारों की चर्चा कर रहा है और वह हैं औलिया अल्लाह, (अल्लाह के मित्र)। 'औलिया' बहुवचन (जमा) है 'वली' कलिमा का जिसका लफ़्ज़ी माने 'क़रीबी' है। इस बुनियाद पर "औलिया अल्लाह" का मतलब होगा वे सच्चे और बेग़र्ज ईमानवाले जिन्होंने अल्लाह के हुक्म की इताअत कर के और ग़लत कामों से बचकर अल्लाह की नज़दीकी हासिल कर ली, इसीलिये अल्लाह तआला ने ख़ुद अगली आयत में उनकी तारीफ़ इन लफ़्ज़ों में की है, "जो ईमान लाये और जिन्होंने अल्लाह का डर दिल में रखा" ईमान और अल्लाह का डर ही अल्लाह की नज़दीकी हासिल करने की बुनियाद और अहम ज़रिया है। इस बिना पर हर अल्लाह का डर रखने वाला ईमानदार अल्लाह का वली है, लोग वली होने के लिये करामत दिखाना ज़रूरी समझते हैं और फिर वे अपने बनाये हुए वलियों के झूठे-सच्चे करामतों का प्रचार (तबलीग़) करते हैं, यह ख़्याल पूरी तरह ग़लत है, करामत और वली का न चोली-दामन का साथ है न इस के लिये ज़रूरी रुकावट। यह अलग बात है कि किसी से करामत ज़ाहिर हो जाये तो अल्लाह की इच्छा है, इस में उस वली की मर्ज़ी शामिल नहीं है, लेकिन किसी अल्लाह से डर करने वाले मोमिन और सुन्नत की पैरवी करने वाले से करामत का इज़हार हो या न हो उस के वली होने में कोई शक नहीं।

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (64)

६४. उनके लिए दुनियावी जिन्दगी में भी[1] और आखिरत में भी ख़ुशख़बरी है, अल्लाह तआला की बातों में कुछ बदलाव नहीं हुआ करता, यह बड़ी कामयाबी है।

وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ؕ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (65)

६५. और आप को उनकी बातें दुख में न डालें, मुकम्मल ग़ल्बा अल्लाह ही के लिए है, वह सुनने वाला जानने वाला है।

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ ؕ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ (66)

६६. याद रखो कि जितना कुछ आकाशों में है और जितने धरती में हैं यह सब अल्लाह के ही हैं, और जो लोग अल्लाह को छोड़ कर दूसरे साझीदारों को पुकारते हैं किस चीज की इत्तेबा कर रहे है, सिर्फ ख़्याली विचारों की इत्तेबा कर रहे हैं और सिर्फ अटकल वाली बातें कर रहे हैं।[2]

هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ (67)

६७. वह ऐसा है जिसने तुम्हारे लिए रात बनायी ताकि तुम उस में आराम करो और दिन भी इस तरह से बनाया कि देखने भालने का जरिया है, बेशक इस में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं।

قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ الْغَنِىُّ ؕ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍۭ بِهٰذَا ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (68)

६८. वे कहते हैं कि अल्लाह औलाद रखता है, वह इस से पाक है, वह तो किसी का मुहताज नहीं, उसी की मिल्कियत है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, तुम्हारे पास इस पर कोई सुबूत नहीं, क्या अल्लाह पर ऐसी बात लगाते हो जिसका तुम इल्म नहीं रखते।

[1] दुनिया में ख़ुशख़बरी से मुराद सवाब के काम हैं या वह ख़ुशख़बरी है जो मौत के वक़्त फ़रिश्ते एक ईमानवाले को देते हैं, जैसाकि क़ुरआन और हदीस से साबित है।

[2] यानी अल्लाह के साथ किसी को साझीदार ठहराना किसी दलील की बुनियाद पर नहीं, बल्कि एक अटकल पच्चू, राय और गुमान की देन है। आज अगर इंसान अपनी अक़्ल और समझ को सही तरीक़े से इस्तेमाल करे तो बेशक उस पर यह वाज़ेह हो सकता है कि अल्लाह का कोई साझीदार नहीं, और जिस तरह वह आकाश और धरती को पैदा करने में अकेला है कोई उसका साझीदार नहीं, तो फिर इबादत में दूसरे उसके साझीदार किस तरह हो सकते हैं?

६९. (आप) कह दीजिए कि जो लोग अल्लाह पर मिथ्यारोपण (इफ़्तरा) करते हैं वे कामयाब न होंगे।

قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿69﴾

७०. (यह) दुनिया में थोड़ा सा सुख है फिर हमारे पास उनको आना है, फिर हम उनको उन के कुफ़्र (अविश्वास) के बदले सख़्त सज़ा चखायेंगे।

مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿70﴾

७१. और आप उन को नूह की ख़बर पढ़कर सुनाईए जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि हे मेरी क़ौम के लोगो! अगर तुमको मेरा रहना और अल्लाह के हुक्मों की शिक्षा देना भारी लगता है तो मेरा तो अल्लाह (तआला) ही पर भरोसा है, तुम अपनी योजना अपने साथियों के साथ मज़बूत कर लो, फिर तुम्हारी योजना तुम्हारे लिए घुटन का सबब न होनी चाहिए, फिर मेरे साथ कर गुज़रो और मुझे मौक़ा न दो।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ إِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَقَامِي وَتَذْكِيرِي بِآيَاتِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُونِ ﴿71﴾

७२. फिर भी अगर तुम मुँह मोड़ते जाओ तो मैंने तुम से कोई बदला तो नहीं मांगा, मेरा बदला तो केवल अल्लाह (तआला) ही देगा और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं मुसलमानों में से रहूँ।[1]

فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿72﴾

---

[1] हज़रत नूह के इस क़ौल से भी मालूम हुआ कि सभी नबियों का दीन इस्लाम ही रहा है, अगरचे दीनी नियम अलग-अलग और शरीअतें उनकी अलग रहीं। जैसाकि आयत सूर: अल-मायेद:, ४८ से वाज़ेह है (لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا) लेकिन दीन सभी का इस्लाम था, देखिये सूर: अल-बकर:-१३१, १३२, सूर: यूसुफ़-१०१, सूर: अन-नमल-९१, सूर: यूनुस-८४, सूर: अल-आराफ़-१२६, सूर: अन-नमल-४४, सूर: अल-मायेद:-४४,१११ और सूर: अल-अंआम-१६२ और १६३।

فَكَذَّبُوهُ فَنَجَّيْنَٰهُ وَمَن مَّعَهُۥ فِى ٱلْفُلْكِ وَجَعَلْنَٰهُمْ خَلَٰٓئِفَ وَأَغْرَقْنَا ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا ۖ فَٱنظُرْ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلْمُنذَرِينَ (73)

७३. तो वे लोग उनको झुठलाते रहे, फिर हम ने उनको और जो उन के साथ नाव में सवार थे उनको नजात अता की, और उनको वारिस बनाया[1] और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था उनको डुबो दिया, तो देखना चाहिए क्या नतीजा हुआ उन लोगों का जो डराये जा चुके थे।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنۢ بَعْدِهِۦ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَآءُوهُم بِٱلْبَيِّنَٰتِ فَمَا كَانُوا۟ لِيُؤْمِنُوا۟ بِمَا كَذَّبُوا۟ بِهِۦ مِن قَبْلُ ۚ كَذَٰلِكَ نَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ ٱلْمُعْتَدِينَ (74)

७४. फिर उन (नूह) के बाद हम ने दूसरे रसूलों को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा, तो वे उन के पास वाज़ेह सुबूत लेकर आये, पर जिस चीज को उन्होंने पहले वक़्त में झूठा कह दिया, यह न हुआ कि फिर उस पर ईमान ले आते[2] हम इसी तरह हद पार करने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنۢ بَعْدِهِم مُّوسَىٰ وَهَٰرُونَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَإِي۟هِۦ بِـَٔايَٰتِنَا فَٱسْتَكْبَرُوا۟ وَكَانُوا۟ قَوْمًا مُّجْرِمِينَ (75)

७५. फिर हम ने उन (पैग़म्बरों) के बाद मूसा और हारून को फ़िरऔन[3] और उस के प्रमुखों (सरदारों) के पास अपने चमत्कार देकर भेजा तो उन्होंने घमंड किया और वे लोग मुजरिम क़ौम थे।

فَلَمَّا جَآءَهُمُ ٱلْحَقُّ مِنْ عِندِنَا قَالُوٓا۟ إِنَّ هَٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِينٌ (76)

७६. फिर जब उनको हमारे पास से सच (सुबूत) पहुँचा तो वे लोग कहने लगे कि बेशक यह खुला जादू है।[4]

---

[1] यानी धरती में उन बचने वालों को पहले के लोगों का वारिस बनाया, फिर इंसानों का आगामी वंश उन्हीं लोगों ख़ास तौर से हज़रत नूह के तीन बेटों से चला, इसीलिये हज़रत नूह को दूसरा आदम (द्वितीय मनु) कहा जाता है।

[2] लेकिन इन क़ौमों ने रसूलों की बात नही मानी, सिर्फ़ इसलिये कि जब पहले-पहल ये रसूल उनके पास आये तो फ़ौरन बिना किसी विचार-विमर्श के उनको नकार दिया, यह पहली बार का इंकार उनके लिये स्थाई (मुस्तक़िल) पर्दा बन गया, और वे यही सोचते रह गये कि हम तो पहले नकार चुके हैं, अब इसको क़ुबूल करना क्यों? नतीजतन ईमान से महरूम रहे।

[3] रसूलों का सामान्य (आम) बयान करने के बाद हज़रत मूसा और हारून का बयान किया जा रहा है, अगरचे रसूलों के बीच वह भी आ जाते हैं, लेकिन उनकी गिनती अहम रसूलों में होती है, इसलिये ख़ास तौर से उनका अलग बयान किया।

[4] जब क़ुबूल न करने के लिये ठीक दलील या सुबूत नहीं मिलता तो उससे छुटकारा हासिल

قَالَ مُوسَىٰٓ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ۖ أَسِحْرٌ هَٰذَا وَلَا يُفْلِحُ ٱلسَّٰحِرُونَ ﴿77﴾

७७. मूसा ने कहा कि क्या तुम इस सच के बारे में जबकि वह तुम्हारे पास आ पहुँचा है, ऐसी बात कहते हो, क्या यह जादू है, जब कि जादूगर कामयाब नहीं होते?

قَالُوٓا۟ أَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ ءَابَآءَنَا وَتَكُونَ لَكُمَا ٱلْكِبْرِيَآءُ فِى ٱلْأَرْضِ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِينَ ﴿78﴾

७८. वह लोग कहने लगे क्या तुम हमारे पास इसलिए आये हो कि हम को उस रास्ते से हटा दो जिस पर हम ने अपने बुज़ुर्गों को पाया है, और तुम दोनों को दुनिया में बड़ापन मिल जाये,[1] और हम तुम दोनों को कभी नहीं मानेंगे।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ٱئْتُونِى بِكُلِّ سَٰحِرٍ عَلِيمٍ ﴿79﴾

७९. और फ़िरऔन ने कहा कि मेरे पास सभी माहिर जादूगरों को लाओ।

فَلَمَّا جَآءَ ٱلسَّحَرَةُ قَالَ لَهُم مُّوسَىٰٓ أَلْقُوا۟ مَآ أَنتُم مُّلْقُونَ ﴿80﴾

८०. फिर जब जादूगर आये तो मूसा ने उन से कहा कि डालो जो कुछ तुम डालने वाले हो।

فَلَمَّآ أَلْقَوْا۟ قَالَ مُوسَىٰ مَا جِئْتُم بِهِ ٱلسِّحْرُ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ سَيُبْطِلُهُۥٓ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ ٱلْمُفْسِدِينَ ﴿81﴾

८१. तो जब उन्होंने डाला तो मूसा ने कहा कि यह जो कुछ तुम लाये हो जादू है, तय बात है कि अल्लाह इस को अभी बरबाद किये देता है, अल्लाह ऐसे फ़सादियों का काम बनने नहीं देता।

وَيُحِقُّ ٱللَّهُ ٱلْحَقَّ بِكَلِمَٰتِهِۦ وَلَوْ كَرِهَ ٱلْمُجْرِمُونَ ﴿82﴾

८२. और अल्लाह तआला सच्चे सुबूत को अपने क़ौल से वाज़ेह कर देता है, चाहे मुजरिम को कितना ही बुरा लगे।

करने के लिये कह देते हैं कि यह जादू है।

[1] यह न मानने वालों की दूसरी गलत दलील है, जो सही दलील से आजिज होकर पेश करते हैं। एक यह कि तुम हमें हमारे पूर्वजों (बुज़ुर्गों) के रास्ते से हटाना चाहते हो, दूसरे यह कि हमें मान-मर्यादा और मुल्क हासिल है, उसे छीनकर ख़ुद क़ब्ज़ा करना चाहते हो, इसलिये हम तो कभी भी तुम पर ईमान नहीं लायेंगे, यानी पूर्वजों की पैरवी और दुनियावी राज्य और मान-मर्यादा ने उन्हें ईमान लाने से रोके रखा, उस के बाद आगे वही क़िस्सा है कि फ़िरऔन ने माहिर जादूगरों को बुलाया और हज़रत मूसा और जादूगरों का मुक़ाबला हुआ, जिस तरह सूर: आराफ़ में गुज़रा और सूर: ताहा में भी इसकी कुछ तफ़सील आयेगी।

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿83﴾

८३. फिर मूसा पर उनकी क़ौम वालों में से केवल कुछ ही ईमान लाये, वह भी फ़िरऔन और अपने सरदारों से डरते-डरते कि कहीं उनको दुख न पहुँचाये,[1] और हक़ीक़त में फ़िरऔन उस देश में ऊँचा (ताक़त वाला) था, और यह भी बात थी कि वह हद से बाहर हो गया था।

وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ﴿84﴾

८४. और मूसा ने कहा, हे मेरी क़ौम के लोगो! अगर तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो, अगर तुम मुसलमान (आज्ञा-पालक) हो।

فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۙ﴿85﴾

८५. तो उन्होंने कहा कि हम ने अल्लाह ही पर भरोसा किया, हे हमारे रब! हम को इन ज़ालिम क़ौम के लिए फ़ितना न बना।

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿86﴾

८६. और हम को अपनी रहमत से इन काफ़िर लोगों से नजात अता कर।[2]

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿87﴾

८७. और हम नें मूसा और उन के भाई की तरफ़ वह्यी (प्रकाशना) भेजी कि तुम दोनों अपने इन लोगों के लिए मिस्र में घर क़ायम रखो, और तुम सब उन्हीं घरों को नमाज़ पढ़ने की जगह मुक़र्रर कर लो और पाबन्दी के साथ नमाज़ पढ़ो और आप ईमानवालों को ख़ुशख़बरी दे दें।

---

[1] क़ुरआन करीम की यह तफ़सीर भी इस बात को बताती है कि ईमान लाने वाले थोड़े से लोग फ़िरऔन की क़ौम में से थे, क्योंकि उन्हीं को फ़िरऔन और उसके दरबारियों और सरदारों से तक़लीफ़ पहुँचाये जाने का डर था, इस्राईल की औलाद वैसे फ़िरऔन की ग़ुलामी और अधीनता (मातहत) का अपमान (ज़िल्लत) एक लम्बे वक़्त से सहन कर रहे थे, लेकिन मूसा ﷺ पर ईमान लाने से उसका कोई सम्बन्ध (तआल्लुक़) नहीं था, न उन्हें इस के सबब से ज़्यादा तकलीफ़ का डर था।

[2] अल्लाह पर भरोसा करने के साथ-साथ उन्होंने अल्लाह के दरबार में दुआयें भी कीं, और अवश्य ईमानवालों के लिये यह एक बहुत बड़ा हथियार भी है और सहारा भी।

وَقَالَ مُوسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿88﴾

८८. और मूसा ने दुआ की, हे मेरे रब! तूने फ़िरऔन और उस के सरदारों को ज़ीनत और हर तरह के धन दुनियावी ज़िन्दगी में अता किये। हे हमारे रब! (इसलिए अता किये हैं) कि वे तेरे रास्ते से भटकावें। हे हमारे रब! उन के मालों को ध्वस्त (बरबाद) कर दे और उन के दिलों को सख़्त (कठोर) कर दे[1] ताकि यह ईमान न लाने पायें यहाँ तक कि दुखदायी अज़ाबों को देख लें।

قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿89﴾

८९. (अल्लाह तआला ने) कहा कि तुम दोनों की दुआ क़ुबूल कर ली गयी तुम सीधे रास्ते पर रहो, और उन लोगों के रास्ते पर न चलना जो नादान है।

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ۭ حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿90﴾

९०. और हम ने ईस्राइल की औलाद को समुद्र से पार कर दिया, फिर उन के पीछे-पीछे फ़िरऔन अपनी सेना के साथ ज़ुल्म और ज़्यादती के मक़सद से चला, यहाँ तक कि जब डूबने लगा[2] तो कहने लगा, मैं ईमान लाता हूँ कि जिस पर इस्राईल की औलाद ईमान लायी है, कोई उस के सिवाय इबादत के लायक़ नहीं और मैं मुसलमानों में से हूँ।

---

[1] जब मूसा ﷺ ने देखा कि फ़िरऔन और उसकी क़ौम पर वाज व नसीहत का भी कोई असर नहीं हुआ, और इस तरह के मोजिज़े देखकर भी उन के अंदर कोई बदलाव नहीं आया तो फिर उनको शाप (बद्दुआ) दिया, जिसे अल्लाह तआला ने बयान किया है।

[2] यानी अल्लाह के हुक्म पर चमत्कारिक रूप (मोजिज़ाना तौर) से बने हुए पानी वाले रास्ते पर, जिस पर चलकर मूसा और उसकी क़ौम ने समुद्र पार किया था, फ़िरऔन और उसकी सेना भी समुद्र पार करने के इरादे से चलना शुरू किया, मक़सद यह था कि मूसा इस्राईल की औलाद को जो मेरी ग़ुलामी से आज़ाद कराने के मक़सद से रातों-रात ले आया, तो उसे दुबारा क़ैदी बना लिया जाये, जब फ़िरऔन और उसकी सेना उस समन्द्री रास्ते में दाख़िल हो गई तो अल्लाह ने समुद्र को पहले की तरह बहने का हुक्म दे दिया, नतीजतन फ़िरऔन सहित सब के सब समुद्र में डूब गये।

آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿91﴾

९१. (जवाब दिया गया कि) अब ईमान लाता है? और पहले नाफ़रमानी करता रहा और फ़सादियों में शामिल रहा।

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿92﴾

९२. तो आज हम तेरी लाश को छोड़ देंगे ताकि तू उन लोगों के लिए निशाने इबरत हो जाये जो तेरे बाद हैं[1] और बेशक ज़्यादातर लोग हमारे निशानियों से ग़ाफ़िल हैं।

وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰھُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَاۗءَھُمُ الْعِلْمُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَھُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿93﴾

९३. और हम ने इस्राईल की औलाद को बहुत अच्छा रहने का ठिकाना दिया और हम ने उन्हें मज़ेदार चीज़ें खाने के लिए अता कीं तो उन्होंने इख़्तिलाफ़ नहीं किया यहां तक कि उन के पास इल्म पहुंच गया, तय बात है कि आप का रब उन के बीच क़यामत के दिन उन बातों में फ़ैसला कर देगा जिन बातों में वे इख़्तिलाफ़ करते थे।

فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْـَٔـلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَاۗءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿94﴾

९४. फिर अगर आप उसकी तरफ़ से शक में हों जिसको हम ने आप की तरफ़ भेजा है, तो आप उन लोगों से पूछिए जो आप से पहले की किताबों को पढ़ते हैं, बेशक आप के पास आप के रब की तरफ़ से सच्ची किताब आयी है, आप कभी भी शक करने वालों में से न हों।

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿95﴾

९५. और न उन लोगों में से हों, जिन्होंने अल्लाह (तआला) की आयतों को झुठलाया, तो आप घाटे पाने वालों में से हो जायें।

اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿96﴾

९६. बेशक (नि:संदेह) जिन लोगों के बारे में आप के रब की बातें साबित हो चुकी हैं, वे ईमान न लायेंगे।

---

[1] जब फ़िरऔन डूब गया तो उसकी मौत का बहुत से लोगों को यक़ीन नहीं आता था, अल्लाह तआला ने समुद्र को हुक्म दिया, उसने उसकी लाश किनारे पर फेंक दिया, जिसको फिर सब ने देखा, मशहूर है कि आज भी यह लाश मिस्र के अजायबघर में महफ़ूज़ है। والله أعلم بالصواب

وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿97﴾

९७. चाहे उसके पास सभी दलील पहुँच जायें, जब तक वे दुखदायी अज़ाब को न देख लें।

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ؕ لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿98﴾

९८. इसलिए कोई वस्ती ईमान नहीं लायी कि ईमान लाना उन के लिए फ़ायदेमंद होता, सिवाय यूनुस की क़ौम के,[1] जब वे ईमान ले आये तो हम ने अपमान (ज़िल्लत) का अज़ाब दुनियावी ज़िन्दगी में उन से हटा दी और उनको एक (निश्चित) वक़्त तक सुख भोगने (का मौक़ा) दिया।

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِى الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿99﴾

९९. और अगर आप का रब चाहता तो सारी धरती के सभी लोग ईमान ले आते,[2] तो क्या आप लोगों को मजबूर कर सकते हैं यहाँ तक कि वह मोमिन ही हो जायें?

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿100﴾

१००. अगरचे किसी का ईमान लाना अल्लाह के हुक्म के विना मुमकिन नहीं, और अल्लाह वेअक़्ल लोगों पर नापाकी थोप देता है।[3]

قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا تُغْنِى الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿101﴾

१०१. आप कह दीजिए कि तुम ख़्याल करो कि क्या-क्या चीज़ें आकाशों और धरती में हैं और जो लोग ईमान नहीं लाते उन को दलील और चेतावनी (तंवीह) कोई फ़ायेदा नहीं पहुँचाती।

---

[1] जिन वस्तियों को हम ने तवाह किया, उन में से कोई एक वस्ती ऐसी क्यों न हुई, जो ऐसा ईमान लाती जो उनके लिये फ़ायदेमंद होता। हाँ, केवल यूनुस की क़ौम ऐसी हुई है कि जब वह ईमान ले आयी तो अल्लाह ने उससे अज़ाब दूर कर दिया।

[2] लेकिन अल्लाह ने ऐसा नहीं चाहा, क्योंकि यह उसकी योजना और मर्ज़ी के ख़िलाफ़ है, जिसको पूरी तरह से वही जानता है, यह इसलिये फ़रमाया कि नवी करीम ﷺ की वड़ी ख़्वाहिश होती थी कि सब मुसलमान हो जायें, अल्लाह तआला ने फ़रमाया: यह नहीं हो सकता क्योंकि अल्लाह की मर्ज़ी जो ऊँची हिक्मत और वेहतरीन मसलिहत पर मवनी है, उसकी यह माँग नहीं, इसलिये आगे फ़रमाया कि आप लोगों को ताक़त के ज़ोर ईमान लाने पर कैसे मजबूर कर सकते हैं? जबकि आप (ﷺ) के अन्दर न इसकी ताक़त है न उस के आप ज़िम्मेदार हैं।

[3] नापाकी से मुराद अज़ाब या कुफ़्र (अविश्वास) है, यानी जो लोग अल्लाह की निशानियों पर विचार नहीं करते, वे कुफ़्र (अधर्म) में ही लिप्त (मसरूफ़) रहते हैं और इस तरह अज़ाब के हक़दार हो जाते हैं।

१०२. तो क्या वे लोग सिर्फ उन लोगों की सी घटनाओं का इंतेजार कर रहे हैं, जो उन से पहले गुजर चुकी हैं, (आप) कह दीजिए कि ठीक है तो तुम इंतेजार में रहो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतेजार करने वालों में से हूँ।

فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّىْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿102﴾

१०३. फिर हम अपने पैगम्बरों को और ईमान-वालों को बचा लेते थे, इसी तरह हमारे हक में है कि हम ईमान वालों को नजात दिया करते हैं।

ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿103﴾

१०४. (आप) कह दीजिए[1] कि ऐ लोगो! अगर तुम मेरे दीन की तरफ से शक में हो तो मैं उन देवताओं की इबादत नहीं करता, जिनकी तुम अल्लाह को छोड़ कर इबादत करते हो, परन्तु हाँ, उस अल्लाह की इबादत करता हूँ, जो तुम्हारी जान निकालता है, और मुझ को हुक्म हुआ है कि मैं ईमानवालों में से हूँ।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ښ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿104﴾

१०५. और यह कि यकसू होकर अपना चेहरा इस दीन की तरफ[2] कर लेना और कभी मूर्तिपूजकों में से न बनना।

وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿105﴾

१०६. और अल्लाह को छोड़कर कभी ऐसी चीज को न पुकारना जो तुझ को न कोई फायेदा पहुँचा सके और न कोई नुक़सान पहुँचा सके, फिर अगर ऐसा किया तो तुम उस हालत में जालिमों में से हो जाओगे।[3]

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿106﴾

---

[1] इस आयत में अल्लाह तआला अपने आखिरी पैगम्बर हजरत मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ को हुक्म दे रहा है कि आप ﷺ लोगों पर वाजेह कर दें कि आप ﷺ का रास्ता और मूर्तिपूजकों के रास्ते एक-दूसरे से अलग हैं।

[2] हनीफ का मतलब है एकसू, यानी हर एक दीन छोड़कर केवल दीन इस्लाम क़ुबूल करना और हर तरफ से मुँह मोड़कर सिर्फ एक अल्लाह की तरफ यकसू होकर आकर्षित (मुतवज्जिह) होना सब से तोड़ना और अल्लाह से सम्बंध रखना।

[3] यानी अगर अल्लाह को छोड़कर ऐसे देवताओं को आप पुकारेंगे जो किसी को फायेदा और नुकसान पहुँचाने की ताक़त नहीं रखते, तो यह जुल्म होगा, जुल्म का मतलब है किसी चीज को उस के असल जगह से हटाकर किसी दूसरी जगह पर रख देना, इबादत चूँकि केवल उस अल्लाह का हक़ है, जिस ने सारी कायनात को पैदा किया है और जिन्दगी के सभी वसायेल वही मुहैय्या करता है, तो इस इबादत के हक़दार ताक़त को छोड़कर किसी दूसरे की पूजा-उपासना करना, गलत इस्तेमाल है, इसलिये शिर्क को बहुत बड़ा जुल्म कहा गया है, यहाँ भी अगरचे खिताब नबी ﷺ को है, लेकिन हकीकी खिताब पूरी इंसानियत और मुसलमानों को है।

وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِنْ يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ ۚ يُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿107﴾

१०७. और अगर तुम को अल्लाह कोई दुख पहुँचाये तो सिवाय उस के कोई दूसरा उसको दूर करने वाला नहीं है, और अगर वह तुम्हें कोई सुख पहुँचाना चाहे तो उस के फ़ज़्ल को कोई हटाने वाला नहीं, वह अपने फ़ज़्ल अपने बन्दों में से जिस पर चाहे निछावर कर दे और वह बड़ा बख़्शने वाला और बहुत रहम करने वाला है।

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ ۖ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ﴿108﴾

१०८. (आप) कह दीजिए ऐ लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ पहुँच चुका है[1] इसलिए जो इंसान सीधे रास्ते पर आ जाये, तो वह अपने लिए सीधे रास्ते पर आयेगा, और जो इंसान रास्ते से भटक गया, तो उसका भटकना उसी पर पड़ेगा, और मैं तुम पर प्रभारी (निगराँ) नहीं बनाया गया।

وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿109﴾

१०९. और आप उसकी इत्तेबा करते रहिए जो कुछ वह्यी (आदेश) आप के पास भेजी जाती है, और सब्र कीजिये यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे, और वह सभी हाकिमों से बेहतर हाकिम है।

सूरतु हूद-११

سُورَةُ هُودٍ

सूर: हूद* मक्का में उतरी और इसकी एक सौ तेईस आयतें और दस रूकूअ हैं।

[1] हक़ से मुराद इस्लाम धर्म (दीन) और क़ुरआन है, जिस में अल्लाह के एक होने और मोहम्मद ﷺ की रिसालत पर ईमान लाना फ़र्ज़ है।

* इस सूर: में भी उन क़ौमों का बयान है जिन्होंने अल्लाह की निशानी और पैग़म्बरों को झुठलाया, जिस के सबब अल्लाह के अज़ाब का निशाना बने और तारीख़ के पृष्ठों (सफ़हों) से ग़लत लफ़्ज़ों की तरह मिटा दिये गये, या तारीख़ के पृष्ठों में नसीहत का नमूना बनकर मिसाल बनी हुई हैं। इसीलिए हदीस में है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (ﷺ) ने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा कि क्या बात है आप (ﷺ) बूढ़े से दिखायी देते हैं ? तो आप ﷺ ने जवाब दिया कि मुझे सूर: हूद, वाक़िआ, अम्मयतसाअलून और इज़ाअश्शम्सु कूवेरत वग़ैरह ने बूढ़ा कर दिया है। (तिर्मिज़ी नं॰ ३२९७, सहीह तिर्मिज़ी अलबानी ३\११३)

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. अलिफ़॰ लाम॰ रा॰, यह एक ऐसी किताब है कि इसकी आयतें मजबूत की गयी हैं फिर मुफ़स्सल बयान की गयी हैं, एक हिक्मत वाले पूर्णज्ञान (ख़बीर) वाले की तरफ़ से।

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۙ﴿1﴾

२. यह कि अल्लाह के सिवाय किसी की इबादत न करो, मैं तुम को अल्लाह की तरफ़ से डराने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ।

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ۙ﴿2﴾

३. और यह कि तुम लोग अपने गुनाह अपने रब से माफ़ी कराओ, फिर उसी की तरफ़ ध्यानमग्न हो जाओ, वह तुम को मुक़र्रर वक़्त तक बेहतर सामान (ज़िन्दगी) देगा[1] और हर ज़्यादा अच्छे काम करने वाले को ज़्यादा फ़ज़्ल देगा, और अगर तुम लोग मुख मोड़ते रहे तो मुझ को तुम्हारे लिए एक बड़े दिन के अज़ाब की फ़िक्र है।

وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ﴿3﴾

४. तुम को अल्लाह ही के पास जाना है और वह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है।

اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿4﴾

५. याद रखो वह लोग अपनी छातियों को दोहरा किये देते हैं ताकि अपनी बातें (अल्लाह से) छिपा सकें। याद रखो कि वह लोग जिस वक़्त अपने कपड़े लपेटते हैं वह उस वक़्त भी सब कुछ जानता है, जो कुछ छिपाते (चुपके-चुपके बातें करते) हैं और जो कुछ साफ़ (बातें) करते हैं, बेशक वह दिलों के अन्दर की बातें जानता है।

اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ؕ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿5﴾

---

[1] यहाँ उस दुनियावी ज़रियों को जिसको क़ुरआन ने आम तौर से "घमंड का ज़रिया" धोखे का सामान कहा है, यहाँ इसे "बेहतर सामान ज़िन्दगी" कहा गया है, इसका मतलब यह हुआ कि जो आख़िरत से बेफ़िक्र होकर दुनियावी सुख से फ़ायेदा हासिल करेगा उस के लिए यह धोखे का साधन (ज़रिया) है।

وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٦﴾

६. और धरती पर चलते-फिरते जितने भी जानदार हैं सभी की रोज़ी अल्लाह (तआला) पर है वही उन के रहने की जगह भी जानता है और उन को सौंपे जाने की जगह भी, सभी कुछ खुली किताब में मौजूद है।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۗ وَلَئِن قُلْتَ إِنَّكُم مَّبْعُوثُونَ مِن بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧﴾

७. और (अल्लाह ही) वह है जिस ने छः दिन में आकाशों और धरती को पैदा किया, और उसका अर्श (सिंहासन) पानी पर था,[1] ताकि वह तुम्हारा इम्तेहान ले कि तुम में अच्छे अमल वाला कौन है? अगर आप उन से कहें कि तुम लोग मरने के बाद फिर ज़िन्दा किये जाओगे तो काफ़िर जवाब देंगे कि ये तो केवल खुला जादू ही है।

وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَىٰ أُمَّةٍ مَّعْدُودَةٍ لَّيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ ۗ أَلَا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٨﴾

८. और अगर हम उन से अज़ाब को कुछ वक़्त तक के लिये मुअख़्ख़र कर दें, तो यह ज़रूर पुकार उठेंगे कि अज़ाब को कौन-सी चीज़ रोके हुई है। सुनो! जिस दिन वह उनके पास आयेगा फिर उन से टलने वाला नहीं, फिर तो जिसका मज़ाक कर रहे थे, वह उन्हीं पर उलट पड़ेगा।

وَلَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ إِنَّهُ لَيَئُوسٌ كَفُورٌ ﴿٩﴾

९. और अगर हम इंसान को किसी सुख का मज़ा चखा कर फिर उसे उस से ले लें तो वह बहुत मायूस और बहुत नाशुक्रा बन जाता है।

وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّئَاتُ عَنِّي ۚ إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ﴿١٠﴾

१०. और अगर हम उसे कोई सुख पहुँचायें, उस कठिनाई के बाद जो उसे पहुँच चुकी थी तो वह कहने लगता है कि बस बुराईयाँ मुझ से जाती रहीं।[2] बेशक वह बड़ा ही ख़ुश होकर घमंड करने लगता है।

---

[1] यही बात सहीह हदीस से भी साबित होती है, इसलिए एक हदीस में आता है "अल्लाह तआला ने आकाश और धरती को पैदा करने से पचास हज़ार साल पहले मख़लूक़ की तक़दीर लिखा, उस समय उस का अर्श पानी पर था।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़दर, और देखिये सहीह बुख़ारी, बदउल ख़ल्क़)

[2] यानी समझता है कि कठिनाईयों का दौर ख़त्म हो गया है, अब उसे कोई कठिनाई नहीं आयेगी।

إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَٰتِ أُولَٰئِكَ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿11﴾

११. उन के सिवाय जो सब्र करते हैं और नेक कामों में लगे रहते है, उन्हीं लोगों के लिये माफ़ी भी है और बहुत बड़ा बदला भी।

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَضَائِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَن يَقُولُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ كَنزٌ أَوْ جَاءَ مَعَهُ مَلَكٌ ۚ إِنَّمَا أَنتَ نَذِيرٌ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿12﴾

१२. तो शायद कि आप उस वह्यी (प्रकाशना) के किसी हिस्से को छोड़ देने वाले हैं, जो आप की तरफ़ उतारी जाती है और उस से आप का सीना तंगी में है, सिर्फ़ उनकी इस बात पर कि इस पर कोई ख़जाना क्यों नही उतरा? या इस के साथ कोई फ़रिश्ता ही आता, सुन लीजिये! आप तो केवल डराने वाले ही हैं[1] और हर चीज का संरक्षक (निगराँ) केवल अल्लाह तआला है।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرَيَاتٍ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿13﴾

१३. क्या ये कहते हैं कि इस क़ुरआन को उसी ने गढ़ा है, जवाब दीजिये कि फिर तुम भी इस की तरह दस सूरः गढ़ी हुई ले आओ और अल्लाह के सिवाय जिसे चाहो अपने साथ शामिल भी कर लो अगर तुम सच्चे हो।

فَإِلَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا أُنزِلَ بِعِلْمِ اللَّهِ وَأَن لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿14﴾

१४. फिर अगर वे तुम्हारी इस बात को क़ुबूल न करें, तो तुम निश्चित रूप से जान लो कि यह क़ुरआन अल्लाह के इल्म के साथ उतारा गया है, और यह कि अल्लाह के सिवाय कोई माबूद नहीं, तो क्या तुम मुसलमान होते हो?[2]

---

[1] मूर्तिपूजक नबी ﷺ के बारे में कहा करते थे कि उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतरता, या उस की तरफ़ कोई ख़जाना क्यों नहीं उतार दिया जाता? (सूरः अल-फ़ुरक़ान-८) एक दूसरी जगह पर कहा गया है "हमें इल्म है कि यह लोग आप (ﷺ) के बारे में जो बातें कहते हैं, उन से आप (ﷺ) दुखी होते हैं।" (सूरः अल-हिज्र-९८) इस आयत में उन्हीं बातों के बारे में कहा जा रहा है कि शायद आप (ﷺ) दुखी होते हों, मुमकिन है आप (ﷺ) वह उन्हें सुनाना नापसन्द समझें। लेकिन आप (ﷺ) इन बातों से बेफ़िक्र होकर, उन को अल्लाह की वह्यी (प्रकाशना) सुनायें, उन्हें पसन्द हो या नापसन्द, वे क़ुबूल करें या ना क़ुबूल। आप (ﷺ) का फ़र्ज सिर्फ़ करना और तंबीह है, वह आप (ﷺ) हर हालत में किये जायें।

[2] यानी क्या इस के बाद भी कि तुम इस चुनौती का जवाब देने में लाचार हो, यह मानने के लिये कि यह क़ुरआन अल्लाह ही का उतारा हुआ है, तैयार नहीं हो और न मुसलमान होने के लिये तैयार हो?

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ﴿15﴾

१५. जो इंसान दुनियावी जीवन और उसकी ज़ीनत पर रीझा हुआ हो, हम ऐसों को उनके सभी अमल का (बदला) यहीं पूरी तरह से पहुँचा देते हैं और यहाँ उन्हें कोई कमी नहीं की जाती।

أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبَاطِلٌ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿16﴾

१६ हाँ, यही वे लोग हैं जिन के लिये आख़िरत में आग के सिवाय दूसरा कुछ नहीं, और जो कुछ उन्होंने यहाँ किया होगा वहाँ सब बेकार है और जो कुछ उन के अमल थे वह सब नाश होने वाले हैं।[1]

أَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِنْهُ وَمِنْ قَبْلِهِ كِتٰبُ مُوسٰىٓ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ أُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ ۚ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِنْهُ ۚ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿17﴾

१७. वह जो अपने रब की तरफ़ से एक दलील पर हो और उस के साथ अल्लाह की तरफ़ से गवाह हो, और उस से पहले मूसा की किताब (गवाह हो) जो पथ-प्रदर्शक (रहनुमा) और रहमत है (दूसरों की तरह हो सकता है?) यही लोग हैं जो उस पर ईमान रखते हैं, और सभी गुटों में से जो भी इसका इंकारी हो, उसके आख़िरी वादे की जगह नरक है,[2] फिर तू उस में किसी तरह के शक में न हो, बेशक यह तेरे रब की तरफ़ से पूरा का पूरा हक़ है, लेकिन ज़्यादातर लोग ईमान लाने वाले नहीं होते।

[1] इन दो आयतों के बारे में कुछ का ख़्याल है कि इस में मुनाफ़िक़ लोगों की चर्चा है, कुछ के नजदीक इस से मुराद यहूदी और इसाई हैं और कुछ के नजदीक इस में दुनिया के हरीस लोगों का बयान है, क्योंकि मुनाफ़िक़ भी जो अच्छे अमल करते हैं, अल्लाह तआला उन का बदला उन्हें दुनिया में दे देता है, आख़िरत में उनके लिये सज़ा के सिवाय कुछ न होगा, इस विषय को क़ुरआन मजीद में सूर: बनी इस्राईल आयत १८,२१ और सूर: शूरा आयत २० में बयान किया गया है।

[2] सभी गुटों से मुराद पूरी धरती पर पाये जाने वाले धर्म हैं, यहूदी, इसाई, आगपूजक, बौद्धधर्म, मूर्तिपूजक, काफ़िर और दूसरे, जो भी मोहम्मद ﷺ पर और क़ुरआन पर ईमान नहीं लायेगा, उसका ठिकाना नरक है। यह वही विषय है जिसे इस हदीस में बयान किया गया है "क़सम है उस ताक़त की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, इस उम्मत के जिस यहूदी या इसाई ने भी मेरी नुबूअत के बारे में सुना और फिर मुझ पर ईमान नहीं लाया, वह नरक में जायेगा।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब वजूबुल ईमान, बिरिसालते नबियेना मोहम्मद ﷺ इला जमीइन्नासे) यह विषय इस से पहले सूर: अल-बक़र: आयत नं॰ ६२ और सूर: निसाअ आयत नं॰ १५० और १५२ में भी गुज़र चुका है।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ؕ اُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَيَقُوْلُ الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿18﴾

१८. और उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे, ये लोग अपने रब के सामने पेश किये जायेंगे और सारे गवाह कहेंगे कि ये वह लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ बांधा, सावधान! अल्लाह की लानत है ज़ालिमों पर।[1]

الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿19﴾

१९. जो अल्लाह की राह से रोकते हैं और उस में गलती की खोज कर लेते हैं, यही वह लोग हैं जो आख़िरत का इंकार करते हैं।

اُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ۘ يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ؕ مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ﴿20﴾

२०. न ये लोग दुनिया में अल्लाह को हरा सके और न उनका कोई मददगार अल्लाह के सिवाय हुआ, उन के लिये सज़ा दुगनी की जायेगी, न ये सुनने की ताक़त रखते थे और न ये देखते ही थे।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿21﴾

२१. यही हैं जिन्होंने अपना नुक़सान आप कर लिया और जिन से अपना बांधा हुआ झूठ खो गया।

لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿22﴾

२२. बेशक यही लोग आख़िरत (परलोक) में घाटे में होंगे।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ ۙ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿23﴾

२३. बेशक जो लोग ईमान लाये और उन्होंने काम भी नेकी के किये और अपने रब की तरफ़ झुकते रहे, वही जन्नत में जाने वाले हैं, जहां वे हमेशा रहने वाले हैं।

مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿24﴾

२४. न दोनों गुटों की मिसाल अंधे-बहरे और देखने-सुनने वाले जैसी है, क्या यह दोनों मिसाल में बराबर हैं? क्या फिर भी तुम नसीहत हासिल नहीं करते?

---

[1] हदीस में इस की तफ़सीर इस तरह आती है कि क़यामत (प्रलय) के दिन अल्लाह तआला एक ईमानवाले से उस के गुनाहों को क़ुबूल करायेगा कि तुझे इल्म है कि तूने फ़्लां गुनाह किया था, फ़्लां भी किया था, वह ईमान वाला कहेगा हां ठीक है। अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि मैंने उन गुनाहों पर दुनिया में भी पर्दा डाल रखा था, जा आज भी उन्हें माफ़ करता हूं। लेकिन दूसरे लोग या काफ़िरों का मामला ऐसा होगा कि उन्हें गवाहों के सामने पुकारा जायेगा और गवाह यह गवाही देंगे कि यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ बांधा था। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरः हूद)

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿25﴾

२५. और बेशक हम ने नूह (عليه السلام) को उसकी क़ौम की तरफ़ रसूल (संदेशवाहक) बना कर भेजा कि मैं तुम्हें वाजेह तौर से बाख़बर कर देने वाला हूं।

أَن لَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿26﴾

२६. कि तुम केवल अल्लाह की इबादत ही किया करो,[1] मुझे तो तुम पर दुखदायी दिन के अज़ाब का डर है।

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ مَا نَرَاكَ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرَاكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّأْيِ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَاذِبِينَ ﴿27﴾

२७. तो उसकी क़ौम के काफ़िरों के मुखियाओं ने जवाब दिया कि हम तो तुझे अपनी तरह इंसान ही देखते हैं,[2] और तेरे पैरोकार को भी देखते हैं कि वाजेह तौर से सिवाय नीच लोगों के[3] दूसरा कोई नहीं (जो तुम्हारी इत्तेबा कर रहे हैं) हम तो तुम्हारी किसी तरह की फ़ज़ीलत अपने ऊपर नहीं देख रहे, बल्कि हम तो तुझे झूठा समझ रहे हैं।

قَالَ يَا قَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَآتَانِي رَحْمَةً مِّنْ عِندِهِ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ أَنُلْزِمُكُمُوهَا وَأَنتُمْ لَهَا كَارِهُونَ ﴿28﴾

२८. (नूह ने) कहा, ऐ मेरी क़ौम वालो ! मुझे बताओ तो अगर मैं अपने रब की तरफ़ से मिली निशानी पर हुआ और मुझे उसने अपने पास की (कोई अच्छी) रहमत अता की हो[4]

---

[1] यह वही तौहीद की दावत है जो हर नबी ने आकर अपनी-अपनी क़ौम को दिया, जिस तरह कहा :

﴿وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ﴾

"जो पैग़म्बर हम ने आप से पहले भेजे, उनकी तरफ़ वह्यी (प्रकाशना) की कि मेरे सिवाय कोई माबूद नहीं, बस मेरी ही इबादत करो।" (सूर: अल-अम्बिया-२५)

[2] यह वही शक है जिसकी तफ़सीर कई जगहों पर की जा चुकी है कि काफ़िरों के नज़दीक इंसानियत के साथ नुबूअत और रिसालत का इकट्ठा होना बड़ा अजीब था, जिस तरह आजकल बिदअत करने वालों को भी अजीब लगता है और वे रसूल (ﷺ) के इंसान होने का इंकार करते हैं।

[3] ईमान वाले चूंकि अल्लाह और रसूल के हुक्मों के सामने अपनी अक़्ल, इरादे और दलील का इस्तेमाल नहीं करते, इसलिये झूठ के पैरोकार यह समझते हैं कि यह मोटी अक़्ल वाले हैं कि अल्लाह का रसूल इन्हें जिस ओर मोड़ देता है ये मुड़ जाते हैं, जिस चीज़ से रोक देता है रूक जाते हैं, यह भी ईमान वालों की बड़ी फ़ज़ीलत है, बल्कि ईमान की ज़रूरी माँग है, लेकिन काफ़िरों और असत्यवादियों (बातिल परस्तों) के नज़दीक यह फ़ज़ीलत भी 'जुर्म' है।

[4] بَيِّنَة से मुराद ईमान और यक़ीन है और रहमत से नुबूअत, जिस से अल्लाह तआला ने नूह (عليه السلام) को विभूषित (सरफ़राज़) किया था।

फिर वह तुम्हारी आँखों में न समाई तो क्या जबरदस्ती उसे तुम्हारे गले में डाल दूं जबकि तुम उसे नहीं चाहते हो।

२९. हे मेरी क़ौम वालो! मैं इसके बदले तुम से कोई धन नहीं माँगता, मेरा बदला तो केवल अल्लाह तआला के पास है, न मैं ईमानवालों को अपने पास से निकाल सकता हूं,[1] उन्हें अपने रब से मिलना है, लेकिन मैं देखता हूं कि तुम लोग बेवकूफ़ी कर रहे हो।

وَيٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَي اللّٰهِ وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْـهَلُوْنَ ﴿29﴾

३०. और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अगर मैं ईमान वालों को अपने पास से निकाल दूं, तो अल्लाह के मुक़ाबले में मेरी मदद कौन कर सकता है, क्या तुम कुछ भी सोच-विचार नहीं करते?

وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿30﴾

३१. और मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, (सुनो) मैं ग़ैब का इल्म भी नहीं रखता, न मैं यह कहता हूं कि मैं फ़रिश्ता हूं, न मेरा यह क़ौल है कि जिन पर तुम्हारी निगाह अपमान से पड़ रही है उन्हें अल्लाह (तआला) कोई अच्छी तरह देगा ही नहीं, उन के दिल में जो कुछ है अल्लाह अच्छी तरह जानता है, अगर मैं ऐसा कहूं तो बेशक मेरी भी गिनती ज़ालिमों में हो जायेगी।

وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَاۗىِٕنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ اِنِّىْ مَلَكٌ وَّلَآ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْٓ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ۭ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ښ اِنِّىْٓ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿31﴾

३२. (क़ौम के लोगों ने) कहा : ऐ नूह! तू हम से बहस और बहुत बहस कर चुका, अब तो तू जिस चीज़ से हमें डरा रहा है, वही हमारे पास ले आ अगर तू सच्चा है।[2]

قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿32﴾

[1] इस से मालूम होता है कि नूह ﷺ की क़ौम के सरदारों ने भी समाज में कमज़ोर समझे जाने वाले ईमान वालों को हज़रत नूह से अपनी सभा या अपनी नज़दीकी से दूर करने की माँग की होगी, जिस तरह मक्का के सरदारों ने रसूलुल्लाह ﷺ से इस तरह की माँग की थी।

[2] यह वही बेवकूफ़ी है जिस को भटके हुए लोग करते आये हैं कि वे अपने पैग़म्बर से कहते रहे अगर तू सच्चा है तो हम पर अज़ाब उतारकर हमें बरबाद करवा दे, अगर उन में अक़्ल होती तो वे कहते कि अगर तू सच्चा है और हक़ीक़त में अल्लाह का रसूल है तो हमारे लिये भी दुआ कर कि अल्लाह तआला हमारे दिल भी खोल दे ताकि हम इसे अपना लें।

قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُم بِهِ اللَّهُ إِن شَاءَ وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ﴿33﴾

३३. जवाब दिया कि उसे भी अल्लाह (तआला) ही लायेगा अगर वह चाहे, और हाँ! तुम उसे मजबूर नहीं कर सकते।[1]

وَلَا يَنفَعُكُمْ نُصْحِي إِنْ أَرَدتُّ أَنْ أَنصَحَ لَكُمْ إِن كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ أَن يُغْوِيَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿34﴾

३४. और तुम्हें मेरी नसीहत कुछ भी फायेदा नहीं पहुँचा सकती, चाहे मैं जितना ही तुम्हारा ख़ैरख़्वाह क्यों न हूँ, अगर अल्लाह की मर्जी तुम्हें भटकाने की हो, वही तुम सब का रब है और उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَيَّ إِجْرَامِي وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تُجْرِمُونَ ﴿35﴾

३५. क्या ये कहते हैं कि उसे ख़ुद उसी ने गढ़ लिया है? तो जवाब दो कि अगर मैंने उसे गढ़ लिया हो तो मेरा गुनाह मुझ पर है और मैं उन गुनाहों से अलग हूँ जिन को तुम कर रहे हो।

وَأُوحِيَ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُ لَن يُؤْمِنَ مِن قَوْمِكَ إِلَّا مَن قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿36﴾

३६. और नूह की तरफ़ वह्‌यी (प्रकाशना) भेजी गयी कि तेरी क़ौम में जो भी ईमान ला चुके उन के सिवाय अब कोई ईमान लायेगा ही नहीं, फिर तो उन के अमलों पर दुखी न हो।

وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُم مُّغْرَقُونَ ﴿37﴾

३७. और एक नाव हमारी आँखों के सामने और हमारी वह्‌यी (प्रकाशना) से तैयार कर,[2] और ज़ालिमों के बारे में हम से कोई बात न कर, वे पानी में डूबो दिये जाने वाले हैं।[3]

---

[1] यानी अज़ाब का आना पूरी तरह से अल्लाह की मर्जी पर है, यह नहीं कि जब मैं चाहूँ तुम पर अज़ाब आ जाये, लेकिन जब अल्लाह अज़ाब का फ़ैसला कर लेगा या भेज देगा तो फिर उस को रोकने वाला कोई नहीं है।

[2] "हमारी आँखों के सामने" का मतलब है "हमारी देख-भाल में" लेकिन यह आयत अल्लाह तआला के लिये आँख होने के गुण को बताती है जिस पर अक़ीदा रखना फ़र्ज़ है, और "हमारी वह्‌यी (प्रकाशना) से" का मतलब उसकी लम्बाई-चौड़ाई आदि की जो हालत हम ने बतलायी है, उस तरह उसे बना। इस जगह पर कुछ मुफ़स्सिरों ने नाव की लम्बाई-चौड़ाई, उस के तलों और किस तरह की लकड़ी और दूसरे सामान उस में इस्तेमाल किया गया, उस का तफ़सीली बयान किया है, जो वाज़ेह है कि किसी दलील पर आधारित (मबनी) नहीं है। उसका सही तफ़सीली इल्म सिर्फ़ अल्लाह ही को है।

[3] कुछ ने इस से मुराद हज़रत नूह के बेटे और बीवी को लिया है, जो ईमान नहीं लाये थे और डूबने वालों में से थे, कुछ ने इस से डूबने वाली पूरी उम्मत लिया है, और मतलब यह है कि इन के लिये मौक़ा देने की माँग न करना क्योंकि अब इन की तबाही का वक़्त आ गया है या यह

وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأٌ مِّنْ قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ ۚ قَالَ إِن تَسْخَرُوا مِنَّا فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ (38)

३८. वह (नूह) नाव बनाने लगे, उसकी क़ौम के जो भी गुट के लोग उस के पास से गुज़रते वे उस का मज़ाक़ उड़ाते, वह कहते अगर तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाते हो तो हम भी तुम पर एक दिन हँसेंगे जैसे तुम मज़ाक़ कर रहे हो।

فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ (39)

३९. तुम्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा कि किस पर अज़ाब आना है, जो उसे ज़लील करे और उस पर दायमी अज़ाब उतर जाये।

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِن كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ ۚ وَمَا آمَنَ مَعَهُ إِلَّا قَلِيلٌ (40)

४०. यहाँ तक कि जब हमारा हुक्म आ गया और तन्दूर उबलने लगा,[1] हम ने कहा कि इस नाव में हर तरह के जोड़े दोहरे सवार करा ले[2] और अपने घर के लोगों को भी, सिवाय उन के जिन पर पहले से बात पड़ चुकी है, और सभी ईमान वालों को भी, उस के साथ ईमान लाने वाले बहुत ही कम थे।

وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْرَاهَا وَمُرْسَاهَا ۚ إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ (41)

४१. और नूह ने कहा कि इस नाव में बैठ जाओ अल्लाह ही के नाम से इसका चलना और ठहरना है,[3] बेशक मेरा रब बड़ा बख़्शने वाला और बड़ा रहम करने वाला है।

وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ وَنَادَىٰ

४२. और वह नाव उन्हें पहाड़ों जैसी लहरों में लेकर जा रही थी,[4] और नूह ने अपने बेटे को

मतलब है कि उन की तबाही के लिये जल्दी न करें, मुक़र्रर वक़्त में यह सब डूब जायेंगे। (फ़तहुल क़दीर)

[1] इस से कुछ ने रोटी पकाने वाला तन्दूर, कुछ ने मुक़र्रर मक़ाम जैसे ऐनुलवर्दः, और कुछ ने धरती का तल लिया है। हाफ़िज इब्ने कसीर ने इसी आख़िरी मतलब को तरजीह दी है यानी पूरी ज़मीन चश्मों की तरह उबल पड़ी, ऊपर से आकाश की वर्षा ने बाक़ी बची कमी को पूरा कर दिया।

[2] इस से मुराद मर्द और औरत यानी नर और मादा है, इस तरह हर जानदार का जोड़ा नाव में रख लिया गया, और कुछ कहते हैं कि पौदे भी रखे गये थे।

[3] यानी अल्लाह ही के नाम से उस के पानी की सतह पर चलना और उसी के नाम पर रूकना है, इस से एक मक़सद ईमान वालों को तसल्ली देना और हिम्मत देना था कि किसी तरह के डर के बिना नाव में सवार हो जाओ, अल्लाह ही इस नाव का मुहाफ़िज और रखवाला है, उसी के हुक्म से चलेगी और उसी के हुक्म से ठहरेगी।

[4] यानी जब धरती पर पानी था, यहाँ तक कि पहाड़ भी डूबे हुए थे, यह नाव हज़रत नूह और उन के साथियों को अपने अंदर महफ़ूज लिये अल्लाह के हुक्म से और उस की हिफ़ाज़त में पहाड़ की तरह चल रही थी, वरना इतने तूफ़ान वाले पानी में नाव की क्या अहमियत होती है?

نُوحٌ ٱبْنَهُۥ وَكَانَ فِى مَعْزِلٍ يَٰبُنَىَّ ٱرْكَب مَّعَنَا وَلَا تَكُن مَّعَ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿42﴾

जो एक किनारे पर था पुकार कर कहा, ऐ मेरे प्यारे बच्चे! हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों में शामिल न रह।[1]

قَالَ سَـَٔاوِىٓ إِلَىٰ جَبَلٍ يَعْصِمُنِى مِنَ ٱلْمَآءِ ۚ قَالَ لَا عَاصِمَ ٱلْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ ٱللَّهِ إِلَّا مَن رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا ٱلْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ ٱلْمُغْرَقِينَ ﴿43﴾

४३. उस ने जवाब दिया कि मैं तो किसी ऊँचे पहाड़ की पनाह में आ जाऊँगा जो मुझे पानी से बचा लेगा, नूह ने कहा आज अल्लाह के हुक्म से बचाने वाला कोई नहीं, वही केवल बचेंगे जिन पर अल्लाह की रहमत हुई, उसी वक़्त उन के बीच लहर आ गयी और वह डूबने वालों में हो गया।

وَقِيلَ يَٰٓأَرْضُ ٱبْلَعِى مَآءَكِ وَيَٰسَمَآءُ أَقْلِعِى وَغِيضَ ٱلْمَآءُ وَقُضِىَ ٱلْأَمْرُ وَٱسْتَوَتْ عَلَى ٱلْجُودِىِّ ۖ وَقِيلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿44﴾

४४. और कह दिया गया कि ऐ धरती ! अपने पानी को निगल जा,[2] और ऐ आकाश ! बस कर थम जा, उसी वक़्त पानी सुखा दिया गया और काम पूरा कर दिया गया, और नाव जूदी नामक पहाड़[3] पर जा लगी, और कहा गया कि नाइंसाफ़ी करने वालों पर धिक्कार (लानत) उतरे।

وَنَادَىٰ نُوحٌ رَّبَّهُۥ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ٱبْنِى مِنْ أَهْلِى وَإِنَّ وَعْدَكَ ٱلْحَقُّ وَأَنتَ أَحْكَمُ ٱلْحَٰكِمِينَ ﴿45﴾

४५. और नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा कि ऐ मेरे रब ! मेरा बेटा तो मेरे घर वालों मे से है, बेशक तेरा वादा पूरी तरह से सच्चा है और तू सभी हाकिमों से बेहतर हाकिम है।[4]

قَالَ يَٰنُوحُ إِنَّهُۥ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ ۖ إِنَّهُۥ عَمَلٌ

४६. (अल्लाह तआला ने) फ़रमाया ऐ नूह! बेशक वह तेरे अहल से नहीं है,[5] उस के काम

---

[1] यह हज़रत नूह का चौथा बेटा था, जिस की कुन्नियत (उपाधि) 'कन्आन' और नाम 'याम' था, उस से हज़रत नूह ने इसरार किया कि मुसलमान हो जा और काफ़िरों के साथ शामिल होकर डूबने वालों में न हो।

[2] निगलने का इस्तेमाल जानवर के लिये होता है कि वह अपने मुँह का कौर निगल जाता है, यहाँ पानी के सूखने को निगल जाने से तुलना करने में इस हिक्मत का इल्म होता है कि पानी धार-धार नहीं सूखा, बल्कि अल्लाह तआला के हुक्म से धरती ने फ़ौरन अपने अंदर सारा पानी इस तरह निगल लिया जिस तरह जानवर कौर निगल जाता है।

[3] जूदी पहाड़ का नाम है, जो कुछ लोगों के क़ौल के मुताबिक़ ईराक के नगर मौसिल के क़रीब है, हज़रत नूह की क़ौम भी इसी के क़रीब आबाद थी।

[4] हज़रत नूह ने शायद अपने बेटे की मुहब्बत के जज़्बे से प्रेरित (बेख़ुद) होकर अल्लाह के दरबार में दुआ की और कुछ मुफ़स्सिर कहते हैं कि उन्हें यह उम्मीद थी कि शायद यह मुसलमान हो जायेगा, इसलिये उस के बारे में यह दुआ की।

[5] हज़रत नूह ने अपनी ख़ानदानी क़ुरबत के सबब उसे अपना बेटा कहा था, लेकिन अल्लाह

غَيْرُ صَالِحٍ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنِّيْٓ أَعِظُكَ أَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿46﴾

बिल्कुल नापसंदीदा हैं[1] तुझे कभी भी वह चीज नहीं मांगनी चाहिये जिसका तुझे तनिक भी इल्म न हो,[2] मैं तुझे नसीहत करता हूं कि तू जाहिलों में से अपनी गिन्ती कराने से रूक जा।

قَالَ رَبِّ إِنِّيْٓ أَعُوْذُ بِكَ أَنْ أَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ بِهِ عِلْمٌ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِيْ وَتَرْحَمْنِيْٓ أَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿47﴾

४७. (नूह ने) कहा ऐ मेरे रब ! मैं तेरी ही पनाह चाहता हूं, इस बात से कि तुझ से वह मांगू जिसका मुझे इल्म ही न हो, अगर तू मुझे माफ़ नहीं करेगा और तू मुझ पर रहम न करेगा तो मैं घाटा उठाने वालों में हो जाऊंगा।

قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى أُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ وَأُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيْمٌ ﴿48﴾

४८. कहा गया कि हे नूह ! हमारी तरफ़ से सलामती और उन बरकतों के साथ उतर जो तुझ पर है और तेरे साथ की बहुत सी उम्मतों पर, और बहुत सी वह उम्मत होंगी जिन्हें हम लाभ तो जरूर पहुंचायेंगे, लेकिन फिर उन्हें हमारी तरफ़ से दुखदायी अज़ाब भी पहुंचेगा।

تِلْكَ مِنْ أَنْبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ إِلَيْكَ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ أَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا فَاصْبِرْ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿49﴾

४९. यह ख़बर ग़ैब की ख़बरों में से है जिसकी वह़यी (प्रकाशना) हम आप की तरफ़ करते हैं, इन्हें इस से पहले न आप जानते थे और न आप की क़ौम, इसलिये आप सब्र करें, यक़ीन कीजिये कि नतीजा परहेजगारों के लिये ही है।

तआला ने ईमान की बुनियाद पर दीन की नजदीकी के क़ानून के मुताबिक़ इस बात को नकारा कि वह तेरे अहल से है, इसलिए कि एक नबी का असल परिवार तो वही है जो उस पर ईमान लाये, चाहे वह कोई भी हो, और अगर ईमान न लाये, तो चाहे वह नबी का बाप हो, बेटा हो या पत्नी, वह नबी के परिवार का सदस्य नहीं।

[1] यह अल्लाह तआला ने उसके सबब का बयान किया है, इस से मालूम हुआ कि जिस के पास ईमान और नेक अमल नहीं होगा, उसे अल्लाह के अज़ाब से अल्लाह का पैग़म्बर भी बचाने की ताक़त नहीं रखता। आजकल लोग पीरों, फ़क़ीरों और गद्दी नशीनों (पुजारियों) से सम्बन्ध (तआल्लुक़) होने को ही नजात के लिये काफ़ी मानते हैं और नेक काम करने की ज़रूरत नहीं समझते, जबकि नेकी के काम के बिना नबी के साथ ख़ानदानी रिश्ता भी काम नहीं आता तो ये सम्बंध क्या काम आयेंगे?

[2] इस से मालूम हुआ कि नबी को ग़ैब का इल्म नहीं होता, उसको उतना ही इल्म होता है, जितना वह़यी (प्रकाशना) के जरिये अल्लाह तआला उसे अता करता है, अगर हज़रत नूह को पहले इल्म होता कि उनकी दुआ क़ुबूल न होगी, तो बेशक वह उस से बचते।

وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۚ قَالَ يَٰقَوْمِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُۥٓ ۖ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ (50)

५०. और आद क़ौम की तरफ़ उन के भाई हूद को हम ने भेजा, उस ने कहा मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह ही की इबादत करो, उस के सिवाय कोई माबूद नही, तुम तो सिर्फ़ बुहतान लगा रहे हो।

يَٰقَوْمِ لَآ أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنْ أَجْرِىَ إِلَّا عَلَى ٱلَّذِى فَطَرَنِىٓ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ (51)

५१. मेरी क़ौम के लोगो! मैं तुम से इस की कोई उजरत नहीं मांगता, मेरा बदला उस के ऊपर है जिस ने मुझे पैदा किया है, तो क्या फिर भी तुम अक़्ल से काम नहीं लेते।

وَيَٰقَوْمِ ٱسْتَغْفِرُوا۟ رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوٓا۟ إِلَيْهِ يُرْسِلِ ٱلسَّمَآءَ عَلَيْكُم مِّدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَىٰ قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا۟ مُجْرِمِينَ (52)

५२. और हे मेरी क़ौम के लोगो! तुम अपने रब से अपने गुनाहों की माफ़ी मांगो और उस के दरबार में तौबा करो ताकि वह वर्षा वाले बादल तुम पर भेज दे, और तुम्हारी ताक़त में और इज़ाफ़ा करे, और तुम गुनहगार होकर मुंह न मोड़ो।

قَالُوا۟ يَٰهُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِىٓ ءَالِهَتِنَا عَن قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ (53)

५३. उन्होंने कहा हे हूद! तू हमारे पास कोई दलील तो लाया नहीं और हम केवल तेरे कहने से अपने देवताओं को छोड़ने वाले नहीं और न हम तुझ पर ईमान लाने वाले हैं।

إِن نَّقُولُ إِلَّا ٱعْتَرَىٰكَ بَعْضُ ءَالِهَتِنَا بِسُوٓءٍ ۗ قَالَ إِنِّىٓ أُشْهِدُ ٱللَّهَ وَٱشْهَدُوٓا۟ أَنِّى بَرِىٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ (54)

५४. बल्कि हम तो यही कहते हैं कि तू हमारे किसी देवता के बुरे झपेटे में आ गया है, उस ने जवाब दिया कि मैं अल्लाह को गवाह बनाता हूं और तुम भी गवाह रहो कि मैं तो अल्लाह के सिवाय उन सब से अलग हूं, जिन्हें तुम साझीदार बना रहे हो।

مِن دُونِهِۦ ۖ فَكِيدُونِى جَمِيعًا ثُمَّ لَا تُنظِرُونِ (55)

५५. अच्छा तुम सब मिल कर मेरे ख़िलाफ़ बुराई कर लो और मुझे कभी भी मौक़ा न दो।

إِنِّى تَوَكَّلْتُ عَلَى ٱللَّهِ رَبِّى وَرَبِّكُم ۚ مَّا مِن دَآبَّةٍ إِلَّا هُوَ ءَاخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَآ ۚ إِنَّ رَبِّى عَلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ (56)

५६. मेरा भरोसा केवल अल्लाह तआला पर ही है, जो मेरा रब और तुम सब का रब है, जितने भी चलने-फिरने वाले हैं सबका मस्तक (पेशानी) वही थामे हुए है, बेशक मेरा रब बिल्कुल सीधे रास्ते पर है।

فَإِن تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُم مَّا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ ۚ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّونَهُ شَيْئًا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿57﴾

५७. फिर भी तुम मुंह फेरते हो तो फेरो, मैं तो तुम्हें वह पैग़ाम पहुँचा चुका जो देकर मुझे तुम्हारी तरफ़ भेजा गया था, मेरा रब तुम्हारी जगह पर दूसरे लोगों को कर देगा और तुम उसका कुछ भी न बिगाड़ सकोगे, बेशक मेरा रब हर चीज का मुहाफ़िज है।

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَنَجَّيْنَاهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿58﴾

५८. और जब हमारा हुक्म आ पहुँचा तो हम ने हूद को और उसके मुसलमान साथियों को अपनी ख़ास रहमत से नजात अता की, और हम ने उन सब को घोर (सख़्त) अज़ाब से बचा लिया।[1]

وَتِلْكَ عَادٌ ۖ جَحَدُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهُ وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿59﴾

५९. यह थी आद की क़ौम, जिन्होंने अपने रब की आयतों को नकार दिया और उस के रसूलों की नाफ़रमानी की[2] और हर सरकश नाफ़रमान के हुक्मों का पालन किया।

وَأُتْبِعُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا إِنَّ عَادًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۗ أَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُودٍ ﴿60﴾

६०. और दुनिया में भी उन के पीछे धिक्कार (लानत) लगा दी गई और क़यामत (प्रलय) के दिन भी,[3] देख लो आद की क़ौम ने अपने रब से कुफ़्र (इंकार) किया, हूद की क़ौम आद पर लानत हो।

---

[1] सख़्त अज़ाब से मुराद वही तेज़ हवा का अज़ाब है, जिस के ज़रिये हज़रत हूद की क़ौम 'आद' को तबाह कर दिया गया और जिस से हज़रत हूद और उन पर ईमान लाने वालों को बचा लिया गया।

[2] 'आद' की ओर केवल एक नबी हज़रत हूद ही भेजे गये थे, लेकिन यहाँ अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उन्होंने रसूलों की नाफ़रमानी की। इस से या तो यह मतलब हो कि एक रसूल को झुठलाना यह हुआ जैसे कि सभी को झुठलाया है, क्योंकि सभी रसूलों पर ईमान लाना फ़र्ज़ है या यह मतलब है कि यह समाज अपने कुफ़्र और इंकार में इतनी बढ़ गयी थी कि अगर हज़रत हूद के बाद कई रसूल भी भेजते तो यह समुदाय (क़ौम) सब को झुठलाता और इस से कभी यह उम्मीद नही थी कि वह किसी भी रसूल पर ईमान ले आता, या मुमकिन है कि और भी नबी भेजे गये हों और उस समुदाय ने हर एक को झुठलाया हो।

[3] लानत का मतलब है अल्लाह की रहमत से दूरी, नेकी के कामों से महरूम और लोगों की तरफ़ से लानत और बिलगाव (मलामत), दुनिया में यह लानत इस तरह कि ईमानवालों में इन का बयान हमेशा लानत और बिलगाव के रूप में होगा और क़यामत मे इस तरह कि वहाँ सभी के सामने ज़िल्लत और रुसवाई का सामना करेंगे और अल्लाह के अज़ाब में फंसेंगे।

وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَٰلِحًا ۚ قَالَ يَٰقَوْمِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُۥ ۖ هُوَ أَنشَأَكُم مِّنَ ٱلْأَرْضِ وَٱسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَٱسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تُوبُوٓا۟ إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّى قَرِيبٌ مُّجِيبٌ ﴿61﴾

६१. और समूद की क़ौम की तरफ़ उनके भाई सालेह को भेजा, उस ने कहा कि हे मेरी क़ौम के लोगो! तुम अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, उस के सिवाय तुम्हारा कोई माबूद नहीं, उसी ने तुम्हें धरती से पैदा किया है,[1] और उसी ने तुम्हें इस धरती पर बसाया है, इसलिए तुम उस से माफ़ी मांगो और उस की तरफ़ तौबा करो, बेशक मेरा रब तौबा को क़ुबूल करने वाला निकट है।

قَالُوا۟ يَٰصَٰلِحُ قَدْ كُنتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَٰذَآ ۖ أَتَنْهَىٰنَآ أَن نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ ءَابَآؤُنَا وَإِنَّنَا لَفِى شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَآ إِلَيْهِ مُرِيبٍ ﴿62﴾

६२. उन्होंने कहा ऐ सालेह! इस से पहले हम तुम से बहुत-सी उम्मीदें लगाये हुए थे, क्या तू हमें उनकी इबादत से रोकता है, जिनकी पूजा-अर्चना (इबादत) हमारे बाप-दादा करते चले आये, हमें तो इस दीन में शक है, जिस की तरफ़ तू हमें बुला रहा है।[2]

قَالَ يَٰقَوْمِ أَرَءَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّى وَءَاتَىٰنِى مِنْهُ رَحْمَةً فَمَن يَنصُرُنِى مِنَ ٱللَّهِ إِنْ عَصَيْتُهُۥ ۖ فَمَا تَزِيدُونَنِى غَيْرَ تَخْسِيرٍ ﴿63﴾

६३. उस ने जवाब दिया कि हे मेरी क़ौम के लोगो! ज़रा बताओ तो अगर मैं अपने रब की तरफ़ से किसी ख़ास दलील पर हुआ और उस ने मुझे अपने पास से रहमत अता की हो, फिर अगर मैंने उस की नाफ़रमानी की तो कौन है जो उस के सामने मेरी मदद करे? तुम तो मेरे नुक़सान ही में इज़ाफ़ा कर रहे हो।

---

[1] यानी शुरू में तुम्हें धरती से पैदा किया, वह इस तरह कि तुम्हारे बाप आदम की पैदाइश मिट्टी से हुई और सभी इंसान आदम के वंश में पैदा हुए, इस तरह सभी इंसानों की पैदाइश धरती से हुई, या इस का मतलब है कि तुम जो कुछ खाते-पीते हो सब धरती से पैदा होता है और उसी ख़ूराक से वीर्य (मनी) बनता है, जो माँ के गर्भाशय (रिहम) में जाकर इंसान के वजूद का सबब बनता है।

[2] यानी पैग़म्बर अपनी क़ौम में चूँकि किरदार, अख़लाक़, इंसाफ़ और सच्चाई में बेहतर होता है, इसलिये क़ौम की उस से अच्छी उम्मीदें वाबस्ता होती हैं, इसी सबब हज़रत सालेह की क़ौम ने भी उन से यह कहा, लेकिन तौहीद की दावत देते ही उन की उम्मीदों का यह केन्द्र (मरकज़) उनकी आँखों का काँटा बन गया और उस दीन में शक का इज़हार किया जिसकी तरफ़ हज़रत सालेह उन्हें बुला रहे थे, यानी दीन तौहीद का।

وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿64﴾

६४. और ऐ मेरी क़ौम वालो! यह अल्लाह की भेजी हुई ऊँटनी है, जो तुम्हारे लिये एक मोजिज़ा है, अब तुम इसे अल्लाह की धरती पर खाती हुई छोड़ दो और उसे किसी तरह की तकलीफ़ न पहुँचाओ, वरना जल्द ही तुम्हें अज़ाब पकड़ लेगा।[1]

فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ﴿65﴾

६५. फिर भी उन लोगों ने उस ऊँटनी के पैर काट कर (मार डाला), इस पर सालेह ने कहा कि अच्छा तो तुम अपने घरों में तीन दिन तक रह लो, यह वादा झूठा नहीं है।

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿66﴾

६६. फिर जब हमारा आदेश आ पहुँचा, हम ने सालेह और उन पर ईमान लाने वालों को अपनी रहमत से उस से भी बचा लिया और उस दिन के अपमान से भी, बेशक तुम्हारा रब ताक़त वाला और ज़बरदस्त है।

وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿67﴾

६७. और ज़ालिमों को बड़ी तेज़ कड़क ने आ दबोचा, फिर तो वह अपने घरों में मुँह के बल मरे पड़े हुए रह गये।

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَا۟ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ﴿68﴾

६८. इस तरह कि जैसे वे वहाँ कभी आबाद न थे होशियार रहो कि समूद की क़ौम ने अपने रब से कुफ़्र किया, सुन लो! उन समूद वालों पर लानत है।

وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى

६९. और हमारे भेजे हुए रसूल इब्राहीम के पास ख़ुशख़बरी लेकर पहुँचे[2] और सलाम कहा

---

[1] यह वही ऊँटनी है जो अल्लाह तआला ने उन की माँग पर उनकी आँखों के सामने एक पहाड़ या चट्टान से निकाली, इसीलिये उसे 'अल्लाह की ऊँटनी' कहा गया है, क्योंकि वह सिर्फ़ अल्लाह के हुक्म से चमत्कारिक (मोजिज़ाना) रूप से ख़िलाफ़े आदत ज़ाहिर हुई थी, उस के लिये उन्हें कह दिया गया था कि इसे तकलीफ़ न पहुँचाओ, वरना तुम अल्लाह के अज़ाब की पकड़ में आ जाओगे।

[2] यह हक़ीक़त में हज़रत लूत और उनकी क़ौम की घटना का एक हिस्सा है, हज़रत लूत, हज़रत इब्राहीम के चाचा के बेटे थे, हज़रत लूत की बस्ती 'मृत्यु सागर' के दक्षिण-पूर्व में थी, जबकि हज़रत इब्राहीम ﷺ फ़िलिस्तीन में निवास कर रहे थे, जब हज़रत लूत की क़ौम को ख़त्म करने का फ़ैसला कर लिया गया तो उनकी तरफ़ फ़रिश्ते भेजे गये, ये फ़रिश्ते लूत की क़ौम की तरफ़ जाते वक़्त रास्ते में हज़रत इब्राहीम ﷺ के पास ठहरे और उन्हें पुत्र की ख़ुशख़बरी दी।

قَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿69﴾

उन्होंने भी सलाम का जवाब दिया और बिना किसी ताख़ीर के गाय का भूना हुआ बच्चा ले आये।[1]

فَلَمَّا رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ﴿70﴾

७०. अब जो देखा कि उन के तो हाथ भी उसकी तरफ़ नहीं पहुँच रहे, तो उन्हें अंजान पाकर दिल ही दिल में उन से ख़ौफ़ज़दा होने लगे[2] उन्होंने कहा डरो नहीं, हम तो लूत की क़ौम की तरफ़ भेजे हुए आये हैं।

وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿71﴾

७१. और उसकी बीवी जो खड़ी हुई थी वह हँस दी[3] तो हम ने उसे इसहाक़ की और उस के बाद याक़ूब की ख़ुशख़बरी दी।

قَالَتْ يٰوَيْلَتٰۤى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ﴿72﴾

७२. वह कहने लगी आह बदनसीबी! मेरे यहाँ औलाद हो सकती है, मैं ख़ुद बुढ़िया और मेरे शौहर भी बड़ी उम्र के हैं, यह बेशक बड़ी ताज्जुब की बात है।[4]

---

[1] हज़रत इब्राहीम मेहमानों का बहुत सत्कार (मेहमानी) करते थे, वह यह नहीं समझ सके कि यह फ़रिश्ते हैं जो इंसान की शक्ल में आये हैं और खाते-पीते नहीं हैं बल्कि उन्होंने उन्हें मेहमान समझा और फ़ौरन मेहमानों की सेवा-सत्कार के लिये बछड़े का भुना हुआ गोश्त उन की सेवा में प्रस्तुत (पेश) किया, इस से यह भी पता चलता है कि मेहमानों से पूछने की ज़रूरत नहीं बल्कि जो मिले ख़िदमत में पेश कर दिया जाये।

[2] हज़रत इब्राहीम ने जब देखा कि उन के हाथ खाने की चीज़ों की तरफ़ नहीं बढ़ रहे हैं तो उन्हें डर महसूस हुआ, कहते हैं कि उन के यहाँ यह बात मशहूर थी कि आया हुआ मेहमान अगर खाने का फ़ायेदा न उठाये तो समझा जाता था कि आने वाला मेहमान अच्छे इरादे से नहीं आया है, इस से यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह के पैग़म्बरों को ग़ैब का इल्म नहीं होता, अगर इब्राहीम ﷺ ग़ैब के जानने वाले होते तो बछड़े का भुना हुआ गोश्त भी न लाते और उन से डरते भी नहीं।

[3] हज़रत इब्राहीम की बीवी क्यों हँसी ? कुछ लोग कहते हैं कि लूत की क़ौम के फ़साद से वह भी अवगत थी, उन की तबाही की ख़बर पाकर वह भी ख़ुश हुई। कुछ कहते हैं कि इसलिये हँसी आयी कि देखो आकाश से उन की तबाही का फ़ैसला हो चुका है और यह क़ौम अब भी बेफ़िक्र है, और कुछ कहते हैं कि इस हँसने का सम्बन्ध उस ख़ुशख़बरी से है जो फ़रिश्तों ने इस बूढ़े जोड़े को दी।

[4] यह बीवी हज़रत सारह थीं, जो ख़ुद भी बूढ़ी थीं और उनके शौहर हज़रत इब्राहीम भी बूढ़े थे, इसलिये ताज्जुब एक आम बात थी, जिसे उन्होंने ज़ाहिर किया।

قَالُوْٓا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ۭ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿73﴾

७३. (फ़रिश्तों ने) कहा कि क्या तू अल्लाह की क़ुदरत से ताज्जुब कर रही है, तुम पर हे इस घर के लोगो! अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें उतरे,[1] बेशक अल्लाह ही के लिये सारी हम्द और शान हैं।

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَجَاۗءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِيْ قَوْمِ لُوْطٍ ﴿74﴾

७४. जब इब्राहीम का डर ख़त्म हो गया और उसे खुशख़बरी भी पहुँच चुकी तो हम से लूत की क़ौम के बारे में कहने सुनने लगे।[2]

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ﴿75﴾

७५. बेशक इब्राहीम बहुत साबिर और नरम दिल और अल्लाह की तरफ़ झुकने वाले थे।

يٰٓاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَاۗءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ﴿76﴾

७६. हे इब्राहीम! इस इरादे को छोड़ दो, आप के रब का हुक्म आ पहुँचा है, और उन पर न लौटाये जाने वाले अज़ाब ज़रूर आने वाले हैं।

وَلَمَّا جَاۗءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْۗءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿77﴾

७७. और जब हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते लूत के पास पहुँचे तो वह उन के सबब बहुत दुखी हो गये, और दिल ही दिल में दुखी होने लगे और कहने लगे कि आज का दिन बहुत दुखों का दिन है।

وَجَاۗءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ۭ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۭ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَاۗءِ بَنَاتِيْ هُنَّ اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ۭ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ ﴿78﴾

७८. और उसकी क़ौम उसकी तरफ़ दौड़ती हुई आई, वह तो पहले ही से बुराईयों में लीन थी, (लूत ने) कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! ये हैं मेरी बेटियाँ जो तुम्हारे लिये बहुत पाक है, अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों के बारे में रुस्वा न करो, क्या तुम में एक भी भला आदमी नहीं है।

---

[1] हज़रत इब्राहीम की बीवी को यहाँ पर फ़रिश्तों ने أهل بيت (अहले बैत) (घर वाले) कहा है और उन्हें बहुवचन (जमा) عليكم से मुख़ातब किया है, जिस से एक बात तो यह साबित हो गई कि 'अहले बैत' में किसी भी इंसान की बीवी सब से पहले शामिल होती है, दूसरी यह कि अहले बैत के लिए बहुवचन का इस्तेमाल करना भी जायेज़ है। जैसाकि सूर: अहज़ाब आयत नं॰ ३३ में अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह ﷺ की पाकीज़ा बीवियों को भी अहले बैत कहा है और उन्हें पुरूषवाचक बहुवचन सर्वनाम (जमा-मुज़क्कर) से ख़िताब भी किया है।

[2] इस बातचीत से मुराद यह है कि हज़रत इब्राहीम ने फ़रिश्तों से कहा कि जिस बस्ती को तबाह करने तुम जा रहे हो उसी में हज़रत लूत भी मौजूद हैं, जिस पर फ़रिश्तों ने जवाब दिया "हम जानते हैं कि लूत भी वहीं रहते हैं, लेकिन हम उन को और उन के परिवार को सिवाय उन की बीवी के बचा लेंगे।" (सूर: अल-अनकबूत, ३२)

قَالُوا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَقٍّ وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ (79)

७९. उन्होंने जवाब दिया कि तू अच्छी तरह जानता है कि हमें तो तेरी बेटियों पर कोई हक़ ही नहीं और तू हमारी असल मर्ज़ी से अच्छी तरह वाक़िफ़ है।

قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةً أَوْ آوِي إِلَىٰ رُكْنٍ شَدِيدٍ (80)

८०. (लूत ने) कहा कि काश कि मुझ में तुम से लड़ने की ताक़त होती या मैं किसी मज़बूत पनाह में होता।

قَالُوا يَا لُوطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَصِلُوا إِلَيْكَ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ اللَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا امْرَأَتَكَ إِنَّهُ مُصِيبُهَا مَا أَصَابَهُمْ إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ أَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ (81)

८१. अब (फ़रिश्तों ने) कहा हे लूत! हम तेरे रब के भेजे हुए हैं, नामुमकिन है ये कि तुझ तक पहुँच जायें, बस तू अपने घरवालों को लेकर कुछ रात रहते निकल खड़ा हो, तुम में से किसी को मुड़ कर भी नहीं देखना चाहिये, सिवाय तेरी बीवी के, इसलिये कि उसे भी वही पहुँचने वाला है जो सब को पहुँचेगा, बेशक उनके वादे का वक़्त सुबह का है, क्या सुबह बिल्कुल क़रीब नहीं?

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِنْ سِجِّيلٍ مَنْضُودٍ (82)

८२. फिर जब हमारा आदेश आ पहुँचा, हम ने उस बस्ती को उलट-पलट कर दिया, ऊपर का हिस्सा नीचे कर दिया और उन पर कंकड़ीले पत्थरों की बारिश की जो तह पर तह थे।

مُسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ (83)

८३. तेरे रब की तरफ़ से चिन्हित (निशानज़दा) थे और वे उन ज़ालिमों से ज़रा भी दूर न थे।

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ إِنِّي أَرَاكُمْ بِخَيْرٍ وَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُحِيطٍ (84)

८४. और (हम ने) मदयन वालों की तरफ़ उन के भाई शुऐब को (भेजा) उस ने कहा हे मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की इबादत करो उस के सिवाय तुम्हारा कोई माबूद नहीं, और तुम नाप-तौल में भी कमी न करो,[1] मैं तुम्हें ख़ुशहाल देख रहा हूँ, और मुझे तुम पर घेरने वाले दिन के अज़ाब का डर भी है।

---

[1] तौहीद की दावत देने के बाद उस क़ौम में जो खुली चारित्रक (अख़लाक़ी) ख़राबी नाप-तौल में कमी की थी उस से उन्हें रोका। उन का यह अख़लाक़ था कि अगर कोई उन के पास कोई चीज़ बेचने के लिये आता तो उस से ज़्यादा चीज़ ले लेते और अगर कोई ग्राहक ख़रीदने आता तो उस से नाप-तौल में कमी करते।

وَيٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ
وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا
فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿85﴾

८५. ऐ मेरी क़ौम के लोगो! नाप-तौल इंसाफ़ से पूरा-पूरा करो, लोगों को उनकी चीजें कम न दो, और ज़मीन में फ़साद और ख़राबी न मचाओ।

بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ
وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿86﴾

८६. अल्लाह तआला का हलाल किया हुआ बाक़ी फ़ायेदा तुम्हारे लिये बहुत ही अच्छा है अगर तुम ईमानदार हो[1] मैं कोई तुम्हारा निगराँ (और हक़दार) नहीं हूँ।

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ
مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ فِيْٓ اَمْوَالِنَا
مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ﴿87﴾

८७. उन्होंने जवाब दिया कि हे शुऐब! क्या तेरी सलात[2] तुझे यही हुक्म देती है कि हम अपने बुज़ुर्गों के देवताओं को छोड़ दें और हम अपने माल में जो कुछ करना चाहे उस का करना भी छोड़ दें, तू तो बड़ा समझदार और नेक चलन है।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ
وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ
اِلٰى مَآ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ
مَا اسْتَطَعْتُ ؕ وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَيْهِ
تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿88﴾

८८. कहा कि ऐ मेरी क़ौम! देखो तो अगर मैं अपने रब की तरफ़ से खुला सुबूत लिए हुए हूँ और उस ने अपने पास से अच्छी रोज़ी दे रखी है, मेरी कभी यह मर्ज़ी नहीं कि तुम्हारा ख़िलाफ़ करके ख़ुद उस चीज की तरफ़ झुक जाऊँ जिस से तुम्हें रोक रहा हूँ, मेरा इरादा तो अपनी ताक़त भर सुधार करने का ही है, और मेरी तौफ़ीक़ अल्लाह ही की मदद से है, उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की तरफ़ मैं आकर्षित हूँ।

وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ
مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ
وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ﴿89﴾

८९. और ऐ मेरी क़ौम (के लोगो)! कहीं ऐसा न हो कि तुम मेरे विरोध में आकर उन अज़ाबों के पात्र (मुस्तहिक़) हो जाओ जो नूह की क़ौम और हूद की क़ौम और सालेह की क़ौम को आयी[3] और लूत की क़ौम तो तुम से ज़रा भी दूर नहीं।

---

[1] بقيت الله से मुराद वह फ़ायेदा है जो नाप-तौल में किसी तरह की कमी किये बिना ईमानदारी के साथ सौदा देने के बाद हासिल होता है, यह चूँकि हलाल और पाक है और अज्र व सवाब भी इसी में है, इसलिये अल्लाह का बाक़ी कहा गया है।

[2] صلاة से मुराद इबादत, धर्म या क़ुरआन पढ़ना है।

[3] यानी उन का मक़ाम तुम से दूर नहीं, या उस सबब मैं तुम से दूर नहीं, जो उन के ऊपर अज़ाब का सबब बना।

وَاسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ وَدُودٌ ﴿90﴾

९०. और तुम अपने रब से मग़फ़िरत तलब करो और उसकी तरफ़ झुक जाओ, यक़ीन करो कि मेरा रब बहुत रहम और बहुत प्रेम करने वाला है।

قَالُوا يَا شُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيرًا مِمَّا تَقُولُ وَإِنَّا لَنَرَاكَ فِينَا ضَعِيفًا ۖ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنَاكَ ۖ وَمَا أَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيزٍ ﴿91﴾

९१. उन्होंने कहा हे शुऐब! तेरी ज़्यादातर बातें हमारी समझ में नहीं आतीं, और हम तो तुझे अपने अंदर बहुत कमज़ोर पाते हैं, अगर तेरे क़बीले का आदर न होता तो हम तो तुझे पथराव कर देते,[1] और हम तुझे कोई बाइज़्ज़त इंसान नहीं समझते।

قَالَ يَا قَوْمِ أَرَهْطِي أَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَاتَّخَذْتُمُوهُ وَرَاءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۖ إِنَّ رَبِّي بِمَا تَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿92﴾

९२. उन्होंने जवाब दिया कि हे मेरी क़ौम के लोगो! क्या तुम्हारे नज़दीक मेरे क़बीले के लोग अल्लाह से भी ज़्यादा बाइज़्ज़त हैं कि तुम ने उसे पीठ के पीछे डाल दिया है, बेशक मेरा रब जो कुछ तुम कर रहे हो सब को घेरे हुए हैं।

وَيَا قَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۖ سَوْفَ تَعْلَمُونَ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۖ وَارْتَقِبُوا إِنِّي مَعَكُمْ رَقِيبٌ ﴿93﴾

९३. और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अब तुम अपनी जगह पर काम किये जाओ, मैं भी काम कर रहा हूँ, तुम्हें अनक़रीब मालूम हो जायेगा कि किस के पास वह अज़ाब आता है जो उसे अपमानित (ज़लील) कर दे और कौन है जो झूठा है? तुम इंतेज़ार करो और मैं भी तुम्हारे साथ इंतेज़ार कर रहा हूँ।

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَأَخَذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جَاثِمِينَ ﴿94﴾

९४. और जब हमारा हुक्म (अज़ाब) आ पहुँचा, हमने शुऐब को और उनके साथ सभी ईमानवालों को अपनी ख़ास रहमत से नजात अता की और ज़ालिमों को कड़ी चिंघाड़ के अज़ाब ने आ दबोचा,[2] जिस से वह अपने घरों में औंधे पड़े हुए बाक़ी रह गये।

---

[1] हज़रत शुऐब का वंश कहा जाता है कि उनका मददगार नहीं था, लेकिन वह क़बीला कुफ़्र (अधर्म) और शिर्क में अपनी क़ौम के साथ था, इसलिये अपना सहधर्मी (हम मज़हब) होने के सबब उस जाति का एहतेराम, इसलिए हज़रत शुऐब के साथ कड़ा अख़लाक़ और उन्हें नुक़सान पहुँचाने में रुकावट था।

[2] इसी चीख़-चिंघाड़ से उन के दिल टुकड़े-टुकड़े हो गये और वे मर गये, उस के बाद भूकम्प (ज़लज़ला) भी आया, जैसाकि सूरः आराफ़-९१ और सूरः अनकबूत-३७ में है।

९५. जैसेकि वह उन घरों में कभी बसे ही न थे, होशियार रहो, मदयन के लिये भी वैसी ही दूरी हो जैसी दूरी समूद की हुई।	كَانْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۗ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿95﴾
९६. और बेशक हम ने ही मूसा को अपनी आयतों और रौशन दलीलों के साथ भेजा था।	وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿96﴾
९७. फ़िरऔन और उसके मुखियाओं की तरफ़, फिर भी उन लोगों ने फ़िरऔन के हुक्मों की इत्तेबा की और फ़िरऔन का कोई हुक्म जायेज़ और ठीक था ही नहीं।	اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَآ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ﴿97﴾
९८. वह तो क़यामत (प्रलय) के दिन अपनी जाति का अगुवा बनकर उन सब को नरक में जा खड़ा करेगा[1] वह बहुत बुरा घाट है,[2] जिस पर ला खड़े किये जायेंगे।	يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ۭ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ﴿98﴾
९९. और उन पर इस दुनिया में भी लानत हुई और क़यामत के दिन भी, कितना बुरा इंआम है जो दिया गया।	وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ﴿99﴾
१००. बस्तियों की यह कुछ ख़बर जो हम तेरे सामने बयान कर रहे हैं, उन में से कुछ मौजूद हैं और कुछ कटी फ़सल की तरह हो गयी हैं।	ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا قَاۗىِٕمٌ وَّحَصِيْدٌ ﴿100﴾
१०१. और हम ने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि ख़ुद ही उन्होंने अपने ही ऊपर ज़ुल्म किया, और उन्हें उनके देवताओं ने कोई फ़ायेदा नहीं पहुँचाया, जिन्हें वे अल्लाह के सिवाय पुकारते थे, जबकि तेरे रब का हुक्म आ पहुँचा, बल्कि उन्होंने उनका नुक़सान ही बढ़ा दिया।	وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَاۗءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۭ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ﴿101﴾

[1] यानी फ़िरऔन जिस तरह दुनिया में उसका अगुवा और मुखिया था, क़यामत के दिन भी यह आगे-आगे ही होगा और अपनी क़ौम को अपने नेतृत्व (रहनुमाई) में नरक में लेकर जायेगा।

[2] وِرْدٌ पानी के घाट को कहते हैं, जहाँ प्यासे जाकर अपनी प्यास बुझाते हैं, लेकिन यहाँ नरक को وِرد कहा गया है, مَوْرُوْدٌ वह जगह या घाट यानी नरक जिस में लोग ले जाये जायेंगे यानी जगह भी बुरा और जाने वाले भी बुरे।

وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗۤ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ﴿102﴾

१०२. और तेरे रब की पकड़ का यही नियम है, जबकि वह बस्तियों में रहने वाले जालिमों को पकड़ता है, बेशक उस की पकड़ दुखदायी और सख़्त कड़ी है।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿103﴾

१०३. बेशक इस में उन लोगों के लिये नसीहत है, जो क़यामत (प्रलय) के अज़ाब से डरते हैं, वह दिन जिस में सब लोग जमा किये जायेंगे और वह, वह दिन है जिस में सब हाज़िर किये जायेंगे।

وَمَا نُؤَخِّرُهٗۤ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ﴿104﴾

१०४. और उसे हम जो देर करते हैं, वह सिर्फ़ एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिये है।

يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ﴿105﴾

१०५. जिस दिन वह आ जायेगी किसी को हिम्मत न होगी कि अल्लाह की इजाज़त के बिना कोई बात भी कर ले, तो उन में से कोई बदनसीब होगा और कोई ख़ुशनसीब।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ﴿106﴾

१०६. तो जो बदनसीब हुए वे नरक में होंगे, वहाँ उनकी धीमी और ऊँची चीख़ होगी।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ﴿107﴾

१०७. वे वहीं हमेशा रहने वाले हैं, जब तक आकाश और धरती बरक़रार रहें,[1] सिवाय उस वक़्त के जो तुम्हारे रब की मर्ज़ी हो, बेशक तेरा रब जो कुछ चाहे कर डालता है।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِي الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ﴿108﴾

१०८. और जो ख़ुशनसीब किये गये, वे स्वर्ग में होंगे जहाँ वे हमेशा रहेंगे जब तक आकाश और धरती बाक़ी रहे, लेकिन जो तेरा रब चाहे, यह न ख़त्म होने वाली बख़्शिश है।

---

[1] इन लफ़्ज़ों से कुछ लोगों में यह भ्रम हुआ है कि काफ़िरों के लिये नरक का अज़ाब दायमी नहीं है, बल्कि एक वक़्त तक है यानी जब तक धरती और आकाश का वजूद रहेगा, लेकिन यह बात सही नहीं है क्योंकि यहाँ ما دامت السماوات و الأرض अरब वासियों की रोज़आना बोलचाल और मुहाविरे के अनुसार (मुताबिक़) उतरा है।

१०९. इसलिये आप उन चीजों से शक्को शुब्हा में न रहें, जिन्हें ये लोग पूज रहे हैं, उनकी इबादत तो इस तरह है जिस तरह इनके बुजुर्गों की इस से पहले थी, हम उन सब को पूरा-पूरा हिस्सा बिना कमी के देने वाले ही हैं।

فَلَا تَكُ فِىْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿109﴾

११०. बेशक हम ने मूसा को किताब अता की, फिर उस में इख़्तिलाफ़ किया गया, अगर पहले ही आप के रब की बात लागू न हो गई होती तो निश्चय ही उनका फ़ैसला कर दिया जाता, उन्हें तो इस में शक़ लग रहा है (ये तो दुविधा में हैं)।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِىْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿110﴾

१११. और बेशक उन में से हर एक को (जब उन के सामने जायेगा तो) आप का रब उसे उस के अमलों (कर्मों) का पूरा बदला अता करेगा, बेशक वे जो कुछ कर रहे हैं उन से वह बाख़बर है।

وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ؕ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿111﴾

११२. बस आप अडिग रहिये जैसाकि आप को हुक्म दिया गया है, और वे लोग भी जो आप के साथ तौबा (क्षमा-याचना) कर चुके हैं। होशियार! तुम हद से न बढ़ना,[1] अल्लाह तुम्हारे सारे अमलों को देख रहा है।

فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ؕ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿112﴾

११३. और देखो ज़ालिमों की तरफ़ कभी न झुकना, वर्ना तुम्हें भी आग की लौ लग जायेगी,[2] और अल्लाह के सिवाय तुम्हारी मदद करने वाला न खड़ा हो सकेगा और न तुम्हें मदद दी जायेगी।

وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿113﴾

[1] इस आयत में नबी ﷺ और ईमानवालों को एक तो मज़बूत रहने की नसीहत दी जा रही है, जो दुश्मन का सामना करने के लिये एक बहुत बड़ा हथियार है।

[2] इसका मतलब यह है कि ज़ालिमों के साथ नर्मी और तारीफ़ करके उन से मदद न लो। इस से उनको यह एहसास होगा कि जैसे तुम उनकी दूसरी बातों को भी प्यारा समझते हो। इस तरह यह तुम्हारा एक बड़ा गुनाह बन जायेगा जो तुम्हें भी उन के साथ नरक की आग का हक़दार बना सकता है।

११४. और दिन के दोनों किनारों में नमाज क़ायम रख और रात की कई घड़ियों में भी,[1] बेशक नेकियाँ बुराईयों को दूर कर देती है,[2] यह नसीहत है नसीहत हासिल करने वालों के लिये।

وَأَقِمِ الصَّلَوٰةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ۚ إِنَّ الْحَسَنَٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّـَٔاتِ ۚ ذَٰلِكَ ذِكْرَىٰ لِلذَّٰكِرِينَ ﴿114﴾

११५. और आप सब्र कीजिये, बेशक अल्लाह (तआला) नेकी करने वालों का फल बरबाद नहीं करता।

وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿115﴾

११६. तो क्यों न तुम से पहले के युग के लोगों में से ऐसे भलाई करने वाले लोग हुए जो धरती में फ़साद फैलाने से रोकते, सिवाय उन कुछ के जिन्हें हम ने उन में से नजात अता की थी, जालिम लोग तो उस चीज के पीछे पड़ गये, जिस में उन्हें सम्पन्नता (आसूदगी) दी गई थी और वे पापी थे।

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِن قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةٍ يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّنْ أَنجَيْنَا مِنْهُمْ ۗ وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أُتْرِفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿116﴾

---

[1] 'दोनों किनारों' से मुराद कुछ ने सुबह और मगरिब (सूर्यास्त), कुछ ने सिर्फ इशा (रात्रि) और कुछ ने मगरिब (सूर्यास्त) और इशा दोनों का वक़्त लिया है। इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि मुमकिन है कि यह आयत मेराज से पहले उतरी हो, जिस में पाँच नमाजें फ़र्ज की गयीं, क्योंकि इस से पहले केवल दो ही नमाजें फ़र्ज थीं, एक सूरज निकलने से पहले और एक सूरज डूबने से पहले और रात के पिछले हिस्से में तहज्जुद की नमाज, फिर तहज्जुद की नमाज आम मुसलमानों से माफ़ कर दी गई, फिर उस तहज्जुद नमाज की फ़रजियत कुछ के क़ौल के अनुसार आप से भी ख़त्म कर दी गई। (इब्ने कसीर)

[2] जिस तरह से हदीसों में भी इसको तफ़सील से बयान किया गया है। जैसे "पाँच नमाजें, जुमअ: (शुक्रवार) से जुमअ: (शुक्रवार) तक और रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक, इन के बीच होने वाले गुनाहों को दूर कर देने वाले हैं, अगर बड़े गुनाह से बचा जाये" (सहीह मुस्लिम किताबुत तहारत.....) एक दूसरी हदीस में रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :

"बताओ! अगर तुम में किसी के दरवाजे के सामने एक बड़ी नहर बहती हो, वह हर दिन उस में पाँच बार गुस्ल करता हो, क्या उस के जिस्म पर उस के बाद मैल-कुचैल बाक़ी रह जायेगी।" सहाबा (आप के साथियों) ने जवाब दिया, "नहीं" आप ﷺ ने फ़रमाया :

इसी तरह पाँच नमाजें हैं, उन के जरिये अल्लाह तआला गुनाहों और गल्तियों को मिटा देता है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मवाक़ीत, बाबुस्सलवातिल ख़मसे कफ़्फ़ारतुन (और) मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाबुल मश्ये इलस्सलाते तुमहा बिहिल ख़ताया व तुरफ़आ बिहिद दरजातु)

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّ اَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿117﴾

११७. आप का रब ऐसा नहीं कि किसी बस्ती को जुल्म से तबाह कर दे, जबकि वहाँ के लोग परहेजगार हों।

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ﴿118﴾

११८. और अगर आप का रब चाहता तो सब लोगों को एक रास्ते पर एक उम्मत कर देता, वे तो हमेशा (सदैव) मुख़ालफ़त करने वाले ही रहेंगे।

اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ۭ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۭ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿119﴾

११९. सिवाय उन के जिन पर आप का रब रहम करे, उन्हें तो इसीलिये पैदा किया है, और आप के रब की यह बात पूरी है कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इंसानों सब से भर दूँगा।

وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَاۗءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿120﴾

१२०. और रसूलों की सब हालतें हम आप के सामने आप के दिल के सुकून के लिए बयान कर रहे हैं, आप के पास इस सूर: (अंश) में भी हक़ पहुँच चुका, जो नसीहत और उपदेश (वाज) है ईमानवालों के लिए।

وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ۭ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ﴿121﴾

१२१. और ईमान न लाने वालों से कह दीजिये कि तुम लोग अपने तौर से अमल किये जाओ, हम भी अमलों में लीन (मशग़ूल) हैं।

وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿122﴾

१२२. और तुम भी इंतेजार करो, हम भी इंतेजार कर रहे हैं।

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿123﴾

१२३. और आकाशों और धरती का इल्मे ग़ैब अल्लाह (तआला) को ही है, और सारे कामों का लौटाना भी उसी की तरफ़ है, इसलिए तुझे उसी की इबादत (उपासना) करनी चाहिए और उसी पर भरोसा रखना चाहिये और तुम जो कुछ करते हो उस से अल्लाह (तआला) अन्जान नहीं।

सूरतु यूसुफ़-१२

سُوْرَةُ يُوْسُفَ

सूर: यूसुफ़ मक्का में नाज़िल हुई और इस की एक सौ ग्यारह आयतें और बारह रुकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. अलिफ़• लाम• रा•, यह रौशन किताब की आयतें हैं।

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ (1)

२. बेशक हम ने इसे अरबी क़ुरआन उतारा है कि तुम समझ सको।[1]

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ (2)

३. हम आप के सामने सब से अच्छा बयान पेश करते हैं, इस वजह से कि हम ने आप की तरफ़ यह क़ुरआन वह्यी (प्रकाशना) के ज़रिये उतारा है और बेशक इससे पहले आप अंजानों में से थे।[2]

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ (3)

---

[1] आसमानी किताबों को उतारने का मक़सद लोगों को हिदायत और निर्देशन (रहनुमाई) देना है, और यह मक़सद तभी हासिल हो सकता है, जब वह किताब उस भाषा में हो जिस को वे समझ सकें, इसलिये सभी आसमानी किताबें उस क़ौम की अपनी भाषा में उतारी गयीं, जिस क़ौम की हिदायत के लिये वह उतारी गई थीं। क़ुरआन करीम के पहले मुख़ातब लोग अरबवासी थे, इसलिये क़ुरआन भी अरबी भाषा में उतारा गया, इस के सिवाय अरबी भाषा अपनी तफ़सीर, असर और बयान की बुनियाद पर दुनिया की दूसरी भाषाओं से बेहतर भाषा है, इसीलिये अल्लाह तआला ने इस बेहतर किताब (क़ुरआन मजीद) को बेहतर भाषा (अरबी) में बेहतर रसूल (हज़रत मोहम्मद ﷺ) पर बेहतर फ़रिश्ते (जिब्रील) के ज़रिये नाज़िल किया, और मक्का नगर जहां इस की शुरूआत हुई, दुनिया के अच्छे नगरों में अच्छा नगर है और जिस महीनें में इस का नुज़ूल होना शुरु हुआ, वह भी अच्छा महीना रमज़ान का है।

[2] क़ुरआन करीम के इन लफ़्ज़ों से भी वाज़ेह होता है कि नबी करीम ﷺ को ग़ैब का इल्म नहीं था, वरना अल्लाह तआला आप को अंजान न कहता। दूसरी बात यह मालूम हुई कि आप ﷺ अल्लाह के सच्चे नबी हैं, क्योंकि आप ﷺ पर वह्यी (प्रकाशना) के ज़रिये ही इस सत्यकथा का बयान किया गया है, आप ﷺ न किसी के शागिर्द थे कि किसी गुरू से सीख कर बयान कर देते, और न किसी दूसरे से ही ऐसा रिश्ता था कि जिस से सुनकर तारीख़ का यह वाक़ेआ उस के ख़ास हिस्सों के साथ आप ﷺ प्रसारित कर देते, यह बेशक अल्लाह तआला ही ने वह्यी (प्रकाशना) के ज़रिये आप ﷺ पर उतारा है, जैसाकि इस जगह पर वाज़ेह किया गया है।

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ ﴿4﴾

४. जबकि यूसुफ़ ने अपने बाप से बताया कि पिताजी मैंने ग्यारह सितारों को और सूरज-चाँद को देखा कि वे सभी मुझे सज्दा कर रहे हैं।

قَالَ يَا بُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُؤْيَاكَ عَلَىٰ إِخْوَتِكَ فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا ۖ إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنسَانِ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿5﴾

५. (याक़ूब عليه السلام ने) कहा कि हे मेरे प्यारे बेटे! अपने इस ख़्वाब की चर्चा अपने भाईयों से न करना, ऐसा न हो कि वे तेरे साथ कोई छल करें,[1] शैतान तो इंसान का खुला दुश्मन है।

وَكَذَٰلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَمَّهَا عَلَىٰ أَبَوَيْكَ مِن قَبْلُ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿6﴾

६. और इसी तरह तेरा रब तुझे मुन्तख़ब करेगा और तुझे मामला (बात) समझने (यानी स्वप्नफल बताने) की भी नसीहत देगा और अपनी नेमत तुझे पूरी तरह से अता करेगा[2] और याक़ूब के परिवार को भी जैसाकि उस ने इससे पहले तेरे दो बुज़ुर्गों यानी इब्राहीम और इसहाक़ को भी भरपूर नेमत अता की, बेशक तेरा रब बड़े इल्म वाला और बहुत हिक्मत वाला है।

لَّقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٌ لِّلسَّائِلِينَ ﴿7﴾

७. बेशक यूसुफ़ और उस के भाईयों में सवाल करने वालों के लिये बड़ी निशानियाँ हैं।

إِذْ قَالُوا لَيُوسُفُ وَأَخُوهُ أَحَبُّ إِلَىٰ أَبِينَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّ أَبَانَا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿8﴾

८. जबकि उन्होंने कहा कि यूसुफ़ और उसका भाई हमारे बाप को हम से ज़्यादा प्यारा है, अगरचे हम लोग ताक़तवर जमात हैं, कोई शक नहीं कि हमारे बाप वाज़ेह ग़लती पर हैं।

اقْتُلُوا يُوسُفَ أَوِ اطْرَحُوهُ أَرْضًا يَخْلُ لَكُمْ وَجْهُ أَبِيكُمْ وَتَكُونُوا مِن بَعْدِهِ قَوْمًا صَالِحِينَ ﴿9﴾

९. यूसुफ़ को क़त्ल कर दो या उसे (अज्ञात) जगह पर पहुँचा दो, ताकि तुम्हारे बाप का ध्यान तुम्हारी तरफ़ ही हो जाये, उस के बाद तुम भले हो जाना।

[1] हज़रत याक़ूब ने ख़्वाब से यह अंदाज़ा लगा लिया कि उन का यह बेटा बड़ी शान वाला होगा, इसलिये उन्हें डर हुआ कि उस की इस अज़मत का अंदाज़ा लगाकर उस के दूसरे भाई उसे कोई नुक़सान न पहुँचाये, इस सबब उन्होंने इस ख़्वाब की चर्चा करने से रोक दिया।

[2] इस से मुराद नुबूअत है, जो हज़रत यूसुफ़ عليه السلام को अता की गयी, या वे ईनाम हैं जिन के मिस्र में यूसुफ़ عليه السلام हक़दार बने।

قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿10﴾

१०. उन में से एक ने कहा कि यूसुफ़ को क़त्ल तो न करो बल्कि किसी अंधे कुऐं की तली में डाल आओ[1] कि उसे कोई यात्रियों का गिरोह उठा ले जाये, अगर तुम्हें करना ही है तो इस तरह करो।

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ وَاِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ﴿11﴾

११. उन्होंने कहा कि हे पिता! आख़िर आप यूसुफ़ के बारे में हम पर यक़ीन क्यों नहीं करते, हम तो उस के शुभचिन्तक (ख़ैरख़्वाह) हैं।

اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿12﴾

१२. कल आप उसे जरूर हम लोगों के साथ भेज दीजिये कि खूब खाये-पिये और खेले[2] उसकी हिफ़ाजत के हम जिम्मेदार हैं।

قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْٓ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ﴿13﴾

१३. (याक़ूब ने) कहा कि उसे तुम्हारा ले जाना मेरे लिये वहुत दुखद होगा, मुझे यह भी डर लगा रहेगा कि तुम्हारी लापरवाही में उसे भेड़िया खा जाये।

قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّآ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿14﴾

१४. उन्होंने जवाब दिया कि हम जैसे बड़े ताक़तवर गिरोह की मौजूदगी में भी अगर उसे भेड़िया खा जाये तो हम बिल्कुल निकम्मे हुए।

فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْٓا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿15﴾

१५. फिर जब उसे ले चले और सभी ने मिल कर ठान लिया कि उसे सुनसान गहरे कुऐं की तह में फेंक दें, हम ने यूसुफ़ की तरफ़ वह्यी (प्रकाशना) की कि बेशक (वक़्त आ रहा है) कि तू उन्हें इस बात की ख़बर उस हालत में देगा कि वे जानते ही न हों।

---

[1] جُبّ कुऐं को और غَيَابَة उसकी तली और गहराई को कहते हैं, कुआं वैसे भी गहरा ही होता है और उस में गिरी हुई चीज किसी को दिखाई नहीं देती, जब उस के साथ कुऐं की गहराई का भी बयान किया तो जैसेकि अतिश्योक्ति (मुबालग़ा) का प्रदर्शन (इजहार) किया।

[2] खेल-कूद की तरफ़ आकर्षण (मैलान) इंसान की फ़ितरत में शामिल है, इसीलिये जायेज खेल-कूद पर अल्लाह तआला ने किसी दौर में भी रुकावट नहीं लगाया, इस्लाम में भी इन की इजाजत है लेकिन प्रतिबन्धित (मशरूत तौर पर) यानी ऐसे खेल-कूद की आज्ञा है जो जायेज हैं जिन में दीनी नियमों के जरिये हराम न हों या हराम तक पहुँचने का जरिया न बनें। इसलिए हजरत याक़ूब ने भी खेल-कूद की हद तक मना नहीं किया, लेकिन यह शक किया कि तुम लोग खेल-कूद में मशग़ूल हो जाओ और उसे भेड़िया खा जांये, क्योंकि खुले मैदान और रेगिस्तानों में वहां भेड़िये आम तौर से पाये जाते थे।

وَجَآءُوٓ أَبَاهُمْ عِشَآءً يَبْكُونَ ﴿16﴾

१६. और रात (इशा) के वक़्त (वे सब) अपने बाप के पास रोते हुए पहुँचे।

قَالُوا۟ يَٰٓأَبَانَآ إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِندَ مَتَٰعِنَا فَأَكَلَهُ ٱلذِّئْبُ ۖ وَمَآ أَنتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صَٰدِقِينَ ﴿17﴾

१७. और कहने लगे कि प्यारे पिताजी! हम आपस में दौड़ में लग गये और यूसुफ़ को सामान के पास छोड़ दिया तो भेड़िया उसे खा गया, आप तो हमारी बात पर यक़ीन करने वाले नहीं चाहे हम पूरे सच्चे ही हों।

وَجَآءُو عَلَىٰ قَمِيصِهِۦ بِدَمٍ كَذِبٍ ۚ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۖ وَٱللَّهُ ٱلْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿18﴾

१८. और यसुफ़ के कुर्ते को झूठे ख़ून से भिगा कर लाये थे (पिता ने) कहा, (इस तरह नहीं) बल्कि तुम ने अपने मन से ही एक बात बना ली है, अब सब्र ही बेहतर है,[1] और तुम्हारी बनायी हुई बातों पर अल्लाह ही से मदद की दुआ है।

وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا۟ وَارِدَهُمْ فَأَدْلَىٰ دَلْوَهُۥ ۖ قَالَ يَٰبُشْرَىٰ هَٰذَا غُلَٰمٌ ۚ وَأَسَرُّوهُ بِضَٰعَةً ۚ وَٱللَّهُ عَلِيمٌۢ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿19﴾

१९. और एक मुसाफ़िर (यात्री) का गिरोह आया और उन्होंने अपने पानी लाने वाले को भेजा, उस ने अपना डोल लटका दिया, कहने लगा वाह-वाह! ख़ुशी की बात है, यह तो एक बालक है,[2] उन्होंने उसे तिजारत का माल समझकर छिपा दिया और अल्लाह (तआला) उस से बाख़बर था जो वे कर रहे थे।

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۭ بَخْسٍ دَرَٰهِمَ مَعْدُودَةٍ ۚ وَكَانُوا۟ فِيهِ مِنَ ٱلزَّٰهِدِينَ ﴿20﴾

२०. और उन्होंने उसे बहुत ही कम दाम (यानी) गिनती के कुछ दिरहमों पर बेच डाला, वे तो यूसुफ़ के बारे में ज़्यादा रूचिहीन (बेरग़बत) थे।

---

[1] कहते हैं कि एक बकरी का बच्चा काट कर उस के ख़ून से यूसुफ़ की कमीज़ भिगा ली और यह भूल गये कि अगर भेड़िया यूसुफ़ को खाता तो कमीज़ भी फाड़ता, कमीज़ फटी ही नहीं थी, जिस को देखकर और साथ ही हज़रत यूसुफ़ के ख़्वाब और नुबूअत की ताक़त से अन्दाज़ा लगा कर हज़रत याक़ूब ने कहा कि यह घटना इस तरह घटित नहीं हुई है, जैसे तुम बयान कर रहे हो बल्कि यह तुम्हारी मनगढ़त है, फिर भी जो होना था हो चुका, हज़रत याक़ूब उस के विवरण (तफ़सील) से अंजान थे, इसलिये केवल सब्र के सिवाय कोई चारा न था और अल्लाह की मदद के अलावा कोई सहारा न था।

[2] وارد (वारिद) उस इंसान को कहते हैं जो मुसाफ़िरों के गिरोह के लिये पानी आदि का इंतेज़ाम करने के मक़सद से आगे-आगे चलता है ताकि ठीक जगह देखकर मुसाफ़िरों को ठहराया जा सके। यह वारिद (मुसाफ़िरों के लिये पानी का इंतेज़ाम करने वाला) जब कुऐं पर आया और अपना डोल नीचे लटकाया तो हज़रत यूसुफ़ ने उस की डोरी पकड़ ली, वारिद (जल-प्रबन्धक) ने एक सुन्दर बच्चे को देखा तो ऊपर खींच लिया और बहुत ख़ुश हुआ।

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖۤ اَكْرِمِيْ مَثْوٰىهُ عَسٰۤى اَنْ يَّنْفَعَنَاۤ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي الْاَرْضِ ؗ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰۤى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿21﴾

२१. और अहले मिस्र में से जिस ने उसे ख़रीदा था उस ने अपनी बीवी से कहा कि इसे इज़्ज़त और एहतेराम के साथ रखो, बहुत मुमकिन है कि यह हमें फ़ायेदा पहुँचाये या हम इसे अपना बेटा ही बना लें, इस तरह हम ने (मिस्र की) धरती पर यूसुफ़ के पाँव जमाये कि हम उसे ख़्वाब की ताबीर का कुछ इल्म सिखा दें, अल्लाह अपने इरादे की पूर्ति में क़ुदरत रखता है, लेकिन ज़्यादातर लोग अन्जान होते हैं।

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗۤ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿22﴾

२२. और जब (यूसुफ़) पूरी जवानी को पहुँच गये, हम ने उसे फ़ैसला की ताक़त और इल्म दे दिया, हम भलाई करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं।

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِيْ هُوَ فِيْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّيْۤ اَحْسَنَ مَثْوَايَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿23﴾

२३. और उस औरत ने जिस के घर यूसुफ़ थे, यूसुफ़ को फुसलाना शुरू किया कि वह अपने मन की हिफ़ाज़त करना छोड़ दे, और दरवाज़ा बन्द करके कहने लगी लो आ जाओ। (यूसुफ़ ने) कहा, अल्लाह बचाये! वह मेरा रब है, मुझे उस ने बहुत अच्छी तरह से रखा है, नाइंसाफ़ी करने वालों का भला नहीं होता।[1]

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَاۤ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ﴿24﴾

२४. और उस औरत ने यूसुफ़ की इच्छा की और यूसुफ़ उसकी इच्छा करते, अगर वह अपने रब की दलील देख न लेते, इसी तरह हुआ इसलिये कि हम उस से बुराई और बेहयाई दूर कर दें, बेशक वह हमारे चुने हुए बन्दों मे से था।

وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّاۤ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿25﴾

२५. और दोनों दरवाज़े की तरफ़ दौड़े, उस औरत ने यूसुफ़ का कपड़ा (कुर्ता) पीछे से खींच कर फाड़ दिया और उस औरत का शौहर दोनों को दरवाज़े के क़रीब ही मिल गया, तो कहने लगी कि जो इंसान तेरी बीवी के साथ बुरी इच्छा रखे, बस उसकी सज़ा यही है कि उसे

[1] यहाँ से हज़रत यूसुफ़ का एक नया इम्तेहान शुरू हुआ, मिस्री अज़ीज़ की बीवी जिस को उस के शौहर ने ख़ास तौर से कहा था कि यूसुफ़ को आदर-सम्मान के साथ रखे, वह हज़रत यूसुफ़ की ख़ूबसूरती पर मोहित हो गयी, और उन्हें गुनाह की प्रेरणा (तरग़ीब) देने लगी, जिसे हज़रत यूसुफ़ ने ठुकरा दिया।

बन्दी बना लिया जाये और दूसरा कोई सख़्त अज़ाब दिया जाये।

قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِي عَنْ نَفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ أَهْلِهَا إِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكَاذِبِينَ (26)

२६. (यूसुफ़ ने) कहा, यह औरत ही मुझे बहला फुसला कर (मेरी मनोकामना की हिफ़ाज़त से लापरवाह करना) चाहती थी, और औरत की जाति के एक आदमी ने गवाही दी कि अगर उसका कुर्ता आगे से फटा हो तो औरत सच्ची है और यूसुफ़ झूठ बोलने वालों मे से है।

وَإِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصَّادِقِينَ (27)

२७. और अगर उसका कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है, तो औरत झूठी है और यूसुफ़ सच्चों में से है।

فَلَمَّا رَأَى قَمِيصَهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِنْ كَيْدِكُنَّ ۖ إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ (28)

२८. तो शौहर ने जो देखा कि कुर्ता पीछे से फटा है तो यह साफ़ कह दिया कि यह तो तुम औरतों की चाल है, बेशक तुम्हारे हथकंडे भारी हैं।

يُوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَا ۚ وَاسْتَغْفِرِي لِذَنْبِكِ ۖ إِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخَاطِئِينَ (29)

२९. यूसुफ़, अब इस बात को आती-जाती करो, और (हे औरत)! अपने गुनाहों से माफ़ी माँग, बेशक तू गुनाहगारों में से है।

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ نَفْسِهِ ۖ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۖ إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ (30)

३०. और नगर की औरतों में चर्चा होने लगी कि अज़ीज़ की बीवी अपने (युवक) ग़ुलाम को अपनी ज़रूरत पूरी करने के लिये बहलाने-फुसलाने में लगी रहती है, उसके दिल में यूसुफ़ का प्यार बैठ गया है, हमारी समझ से तो वह वाज़ेह ग़लती पर है।

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَأً وَآتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِنْهُنَّ سِكِّينًا وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۖ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَٰذَا بَشَرًا إِنْ هَٰذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ (31)

३१. उस ने जब उनकी इस छलपूर्ण ग़ीबत को सुना तो उन्हें आमंत्रित (मदऊ) किया, और उन के लिये एक सभा का एहतेमाम किया, और उन में से हर एक को एक छुरी दे दी, और कहा कि हे यूसुफ़! इन के सामने चले आओ, उन औरतों ने जब उसे देखा तो बहुत बड़ा जाना और अपने हाथ काट लिये, और मुँह से निकल गया कि पाकी अल्लाह के लिये है, यह इंसान कभी भी नहीं, यह तो बेशक कोई बहुत बड़ा फ़रिश्ता है।[1]

[1] इस का यह मतलब नहीं कि फ़रिश्ते इंसान से शक्लो सूरत में अच्छे या बेहतर हैं, क्योंकि

قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِىْ لُمْتُنَّنِىْ فِيْهِ ۭ وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ۭ وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَآ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ (32)

३२. (उस वक़्त मिस्र के अज़ीज़ की बीवी ने) कहा कि यही है जिन के बारे में तुम मुझे बुरा भला कह रहीं थीं, मैंने हर तरह से इससे अपना मतलब पूरा करना चाहा, लेकिन यह बेदाग़ बचा रहा, और जो कुछ मैं इस से कह रही हूं अगर यह न करेगा तो बेशक यह बन्दी बना दिया जायेगा, और निश्चय यह बहुत बेइज़्ज़त होगा।

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ ۚ وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ (33)

३३. (यूसुफ़ ने) कहा कि ऐ मेरे रब! जिस बात की तरफ़ यह औरतें मुझे बुला रही हैं, उस से तो जेल मुझे ज़्यादा प्यारा है, अगर तूने उन के छल मुझ से दूर न किया तो मैं इन की तरफ़ आकर्षित (मायेल) हो जाऊंगा, और बिल्कुल बेवक़ूफ़ों में शामिल हो जाऊंगा।[1]

فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (34)

३४. उस के रब ने उसकी दुआ क़ुबूल कर ली और उन औरतों के छल से उसे बचा लिया, बेशक वह सुनने वाला और जानने वाला है।

ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ (35)

३५. फिर उन सभी निशानियों के देख लेने के बाद उन्हें यही भला लगा कि यूसुफ़ को कुछ वक़्त के लिये जेल में रखें।[2]

फ़रिश्तों को इंसानों ने देखा ही नही है, इस के अलावा इंसानों के लिये ख़ुद अल्लाह ने क़ुरआन में वाज़ेह किया है कि हम ने उसे सब से अच्छे रूप में पैदा किया है, इन औरतों ने इंसान की शक्ल को इसलिये नकारा किया कि उन्होंने ख़ूबसूरती का रूप जो इंसान के रूप में देखा उन की आंखों ने कभी नहीं देखा था, और उन्होंने फ़रिश्तों से मुआज़ना इसलिये किया कि आम लोग यही समझते है कि फ़रिश्ते गुण और रूप के मुताबिक़ ऐसा रूप रखते हैं जो इंसान के रूप से बेहतर है। इस से यह मालूम होता है कि नबियों के ग़ैर मामूली सिफ़ात और गुणों के सबब उन्हें मानव जाति से निकाल कर नूर वाली मख़लूक़ में रख देना हर युग के ऐसे लोगों का काम रहा है जो नुबूअत और उस के पद से अंजान होते हैं।

[1] हज़रत यूसुफ़ ने यह दुआ अपने दिल में की, क्योंकि एक ईमानवाले के लिये दुआ भी एक हथियार है। हदीस में आता है सात आदमियों को अल्लाह तआला अर्श की छाया अता करेगा, उन में से एक वह आदमी है जिसे एक ऐसी औरत गुनाह के लिये बुलाये जो ख़ूबसूरत भी हो और ऊंचे पद पर आसीन भी हो, लेकिन वह उस के जवाब में यह कह दे कि मैं तो "अल्लाह से डरता हूं।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल आज़ान, बाबु मन जलस फ़िल मस्जिद यन्तज़िरूस्सला: व फ़ज़लुल मस्जिद और सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात बाबु फ़ज़ल एख़फ़ा इस्सदक:)

[2] सच्चाई और पकीज़गी वाज़ेह हो जाने के बाद भी यूसुफ़ को जेल में डालने का यही सबब उन के सामने हो सकता था कि मिस्र का अज़ीज़ हज़रत यूसुफ़ को अपनी पत्नी से दूर रखना

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ۚ قَالَ اَحَدُهُمَآ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ۚ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿36﴾

३६. और उस के साथ ही दो दूसरे नौजवान जेल में आये, उन में से एक ने कहा कि मैंने ख़्वाब में अपने आप को शराब निचोड़ते हुए देखा है, और दूसरे ने कहा कि मैंने अपने आप को देखा है कि मैं अपने सिर पर रोटी उठाये हुए हूँ जिसे पक्षी खा रहे हैं, हमें आप इसका फल बतायें, हमें तो आप ख़ूबी वाले इंसान मालूम होते हैं।[1]

قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ۭ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ۭ اِنِّيْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿37﴾

३७. (यूसुफ़ ने) कहा तुम्हें जो खाना दिया जाता है उस के तुम्हारे पास पहुँचने से पहले ही मैं तुम्हें उसका फल बता दूँगा, यह सब कुछ उस इल्म का नतीजा है जो मुझे मेरे रब ने सिखाया है, मैंने उन लोगों का दीन छोड़ दिया है, जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते और आख़िरत को भी क़ुबूल नहीं करते हैं।

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَاۗءِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۭ مَا كَانَ لَنَآ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۭ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿38﴾

३८. मैं अपने बाप और बुज़ुर्गों के दीन का पैरोकार हूँ, यानी इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब के दीन का, हमें कभी यह क़ुबूल नहीं कि हम अल्लाह तआला के साथ किसी को भी साझीदार बनायें,[2] हम पर और दूसरे सभी लोगों पर अल्लाह (तआला) का यह ख़ास फ़ज़्ल है, लेकिन ज़्यादातर लोग नाशुक्रे होते हैं।

चाहता होगा ताकि फिर वह यूसुफ़ को अपनी चाल में फंसानें की कोशिश न करे, जैसाकि उस का ऐसा इरादा था।

[1] यह दोनों नौजवान राज दरबार से तआल्लुक़ रखते थे, एक शराब पिलाने पर तैनात था, दूसरा रोटी बनाता था, किसी वजह से उन्हें जेल में डाल दिया गया था। हज़रत यूसुफ़ अल्लाह के पैग़म्बर थे, दीन की दावतो तबलीग़ के साथ-साथ इबादत, तपस्या, तक़्वा, सच्चाई, किरदार और अमल में दूसरे क़ैदियों से बेहतर थे, इस के अलावा ख़्वाबों की ताबीर का इल्म अल्लाह ने अता कर रखा था, इन दोनों ने ख़्वाब देखा तो फ़ितरी तौर से वे हज़रत यूसुफ़ के पास आये और कहा कि आप हमें अच्छे लोगों में से दिखायी दे रहे हैं, हमें हमारे ख़्वाबों की ताबीर बताईये। محسن का एक मलतब कुछ ने यह भी किया है कि आप ख़्वाबों की ताबीर अच्छी बताते हैं।

[2] यह वही तौहीद की दावत और मूर्तिपूजन का खण्डन (तरदीद) है, जो हर नबी की असल और पहली शिक्षा (नसीहत) और दावत होती थी।

यَصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿39﴾

३९. ऐ मेरे जेल के साथियो! क्या कई तरह के कई देवता अच्छे हैं या एक अल्लाह ज़बरदस्त ताक़तवर?

مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿40﴾

४०. उस के सिवाय जिनकी इबादत तुम कर रहे हो वे सब नाम ही के हैं जो तुम ने और तुम्हारे बुज़ुर्गों ने ख़ुद गढ़ लिया है, अल्लाह तआला ने इन का कोई सुबूत नहीं उतारा[1] फ़ैसला देना अल्लाह (तआला) ही का काम है, उस का हुक्म है कि तुम सभी उसके सिवाय किसी की इबादत (वंदना) न करो, यही सच्चा दीन है, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُكُمَا فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ؕ قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ﴿41﴾

४१. ऐ मेरे जेल के साथियो! तुम दोनों में से एक तो अपने राजा को शराब पिलाने के लिये तैनात हो जायेगा, लेकिन दूसरे को फांसी दी जायेगी और पक्षी उसका सिर नोच-नोच कर खायेंगे, तुम दोनों जिस के बारे में पूछ रहे थे, उसका फ़ैसला हो गया।[2]

وَقَالَ لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِيْ عِنْدَ رَبِّكَ ۫ فَاَنْسٰىهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ ﴿42﴾

४२. और जिस के बारे में यूसुफ़ का ख़्याल था कि उन दोनों में से यह छूट जायेगा, उस से कहा कि अपने राजा से मेरी चर्चा भी कर देना, फिर उसे शैतान ने राजा से बयान करना भुला दिया और यूसुफ़ ने कई साल जेल में काटे।

وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّيْٓ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ؕ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ﴿43﴾

४३. और राजा ने कहा कि मैंने ख़्वाब देखा है कि सात मोटी-ताज़ी गायें हैं जिन को सात दुबली-पतली सी गायें खा रही हैं, और सात बालियां हैं हरी-भरी, और सात दूसरी बिल्कुल सूखी हुई। हे दरबारियो! मेरे इस ख़्वाब की ताबीर बताओ अगर तुम ख़्वाब की ताबीर बता सकते हो।

---

[1] इसका एक मतलब तो यह है कि उसका नाम देवता तुम ने ख़ुद रखा है, जबकि न वे देवता है न उन के बारे में अल्लाह की तरफ़ से कोई सुबूत ही उतरा है। दूसरा मतलब यह है कि उन देवताओं के जो कई नाम तुम ने रखे हैं, जैसे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, गंज बख़्श, शकरगंज वग़ैरह, यह सब तेरे अपने बनाये हुए हैं, उन का कोई सुबूत अल्लाह ने नहीं उतारा।

[2] यानी अल्लाह के ज़रिये लिखी तक़दीर में पहले ही से लिखा था और जो फल मैंने बताया है यह आख़िर पूरा होकर रहेगा।

قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿44﴾

४४. उन्होंने जवाब दिया कि यह तो उड़ते हुए परीशाँ (व्यग्र) ख़्वाब हैं, और इस तरह के परीशाँ ख़्वाब की ताबीर जानने वाले हम नहीं।

وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ ﴿45﴾

४५. और उन क़ैदियों में से छूटे हुए को एक वक़्त के बाद याद आ गया और कहने लगा, मैं तुम्हें इस की ताबीर बतला दूंगा, मुझे जाने की इजाज़त अता कीजिए।

يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّيْٓ اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿46﴾

४६. हे यूसुफ़! हे बड़े सच्चे यूसुफ़ ! आप हमें इस ख़्वाब की ताबीर बताईए कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली (अस्वस्थ) गायें खा रही हैं, और सात बिल्कुल हरी बालियाँ है और सात ही दूसरी भी बिल्कुल सूखी हैं, ताकि मैं वापस जाकर उन लोगों से कहूं कि वे सभी जान लें।

قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ﴿47﴾

४७. (यूसुफ़ ने) जवाब दिया कि तुम सात साल लगातार आदत के मुताबिक अन्न बोना और उसे काटकर बालियों के साथ ही रहने देना, अपने खाने के लिये थोड़ी-सी तादाद के सिवाय।

ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ﴿48﴾

४८. उस के बाद सात साल बहुत सूखा के आयेंगे, वे उस अनाज को खा जायेंगे जो तुम ने उन के लिये जमा कर रखा था[1] सिवाय उस के जो थोड़े से तुम रोक रखते हो।[2]

---

[1] अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ़ को ख़्वाब की ताबीर का इल्म भी अता किया था, इसलिये वह इस ख़्वाब की तह तक जल्द पहुँच गये, उन्होंने मोटी और सेहतमंद गायों से मुराद सात साल ऐसे लिये जिन में ज़्यादा पैदावार होगी और सात कमज़ोर गायों से उस के विपरीत सात साल सूखा अकाल के, इसी तरह सात हरी बालियों से मुराद लिया कि धरती ज़्यादा पैदावार देगी और सात सूखी बालियों से मतलब यह लिया कि इन सात सालों में धरती में पैदावार नहीं होगी, और फिर उसके लिये तरीक़ा भी बताया कि सात साल तुम लगातार खेती करो और जो अनाज हो उसे काटकर बालियों के साथ रखो ताकि उनमें अनाज अधिक महफ़ूज़ रहे, फिर जब सात साल सूखे के आयेंगे तो यह अनाज तुम्हारे काम आयेगा, जिस को इकट्ठा तुम अब करोगे।

[2] مِمَّا تُحْصِنُوْنَ से मुराद बीज के लिये महफ़ूज़ दाने हैं जो दोबारा बोये जाते हैं।

ثُمَّ يَأْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ﴿49﴾

४९. फिर इस के बाद जो साल आयेगा उस में लोगों पर बहुत बारिश होगी और उसमें (अंगूर का रस भी) बहुत निचोड़ेंगे।

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ ﴿50﴾

५०. और राजा ने कहा कि उसे (यूसुफ़) को मेरे पास लाओ, जब संदेशवाहक (क़ासिद) उस (यूसुफ़) के पास पहुँचा तो उन्होंने कहा कि अपने राजा के पास वापस जाओ और उन से पूछो कि उन औरतों की सच्ची कहानी क्या है जिन्होंने अपने हाथ काट लिये थे,[1] उन के छल को अच्छी तरह से जानने वाला मेरा रब ही है।

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ۫ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿51﴾

५१. (राजा ने) पूछा, ऐ औरतो! उस वक़्त की सच्ची कहानी क्या है? जब तुम छल करके यूसुफ़ को उस के मन से भटकाना चाहती थीं, उन्होंने साफ़ जवाब दिया कि (अल्लाह जानता है) हम ने यूसुफ़ में कोई बुराई नहीं पायी, फिर तो अज़ीज़ की बीवी भी बोल उठी कि अब तो सच्ची बात वाज़ेह हो गई है, मैंने ही उसे बहकाने की कोशिश की थी उस के दिल से, और बेशक वह सच्चों मे से हैं।

ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ﴿52﴾

५२. यह इस सबब से कि (अज़ीज़) को मालूम हो जाये कि मैंने उसके साथ विश्वासघात (ख़्यानत) नहीं किया और यह भी कि अल्लाह छल करने वालों की चाल नहीं चलने देता।

---

[1] हज़रत यूसुफ़ ने देखा कि राजा अब मेहरबानी करना चाहता है तो उन्होंने इस तरह सिर्फ़ शाही मेहरबानी से जेल से निकलना नहीं चाहा, बल्कि अपने किरदार की बुलंदी और पाकीज़गी के साबित करने को प्राथमिकता (तरजीह) दी ताकि दुनिया के सामने आप के किरदार का ख़ूबसूरती और बुलंदी वाज़ेह हो जाये, क्योंकि अल्लाह की ओर से दावत देने वाले के लिये ये सच्चाई, पकीज़गी और नेक किरदार बहुत ज़रूरी है।

وَمَآ أُبَرِّئُ نَفْسِيْ ۚ إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوْٓءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّيْ ۗ إِنَّ رَبِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (53)

५३. और मैं अपने मन की पाकीजगी का बयान नहीं करती, बेशक मन तो बुराई की प्रेरणा देने वाला ही है,[1] लेकिन यह कि मेरा रब ही अपना रहम करे,[2] बेशक (निश्चय ही) मेरा रब बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖٓ أَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِيْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِيْنٌ أَمِيْنٌ (54)

५४. और राजा ने कहा उसे मेरे सामने लाओ कि मैं उसे अपने निजी कामों के लिये तैनात कर लूँ, फिर जब उस से बातचीत करने लगा तो कहने लगा कि आप हमारे यहाँ आज से बाइज़्ज़त और अमानतदार हैं।

قَالَ اجْعَلْنِيْ عَلٰى خَزَآئِنِ الْأَرْضِ ۚ إِنِّيْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ (55)

५५. (यूसुफ़ ने) कहा कि आप मुझे देश के ख़जाने पर तैनात कर दीजिये[3] मैं मुहाफ़िज और जानने वाला हूँ।

وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْأَرْضِ ۚ يَتَبَوَّأُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ ۚ نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ (56)

५६. और इस तरह हम ने यूसुफ़ को देश की बागडोर दे दी कि वह जहाँ चाहे रहे-सहे, हम जिसे चाहें अपनी रहमत पहुँचा देते हैं, और हम नेकी करने वालों के अमलों का फल बरबाद नहीं करते।

وَلَأَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ (57)

५७. और बेशक ईमानदारों और परहेज़गारों का आख़िरत का बदला बहुत अच्छा है।

---

[1] यह उस ने अपनी ग़लती की वजह बताई है कि इंसान का मन ही ऐसा है कि उसे बुराई के लिये उभारता और उकसाता है।

[2] मन के छल से वही महफ़ूज रहता है जिस पर अल्लाह तआला की रहमत हो, जिस तरह कि हज़रत यूसुफ़ को अल्लाह तआला ने बचा लिया।

[3] خزائن (ख़जाएन) बहुवचन (जमा) है خزانة (ख़ज़ाना) का। ख़ज़ाना का मतलब है 'कोष' यानी ऐसी जगह को कहते हैं जहाँ चीज़ें हिफ़ाज़त से रखी जाती हैं, धरती के ख़जाने से मुराद वे भण्डार हैं जहाँ अनाज जमा किया जाता था, इसकी व्यवस्था (तदबीर) अपने हाथ में लेने की इच्छा इसलिये ज़ाहिर की कि क़रीब मुस्तक़बिल में (ख़्वाब की ताबीर को देखते हुए) जो सूखे के साल आने वाले थे, उस से निपटने के लिये ख़ास इन्तेज़ाम किये जा सकें और अनाज की काफ़ी तादाद महफ़ूज रखी जा सके।

وَجَآءَ اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ (58)

५८. और युसुफ़ के भाई आये और यूसुफ़ के पास गये तो उस ने उन्हें पहचान लिया और उन्होंने उसे नहीं पहचाना ।[1]

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِيْ بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ اَنِّيْٓ اُوْفِي الْكَيْلَ وَاَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ (59)

५९. और जब उनका सामान तैयार करा दिया तो कहा कि तुम मेरे पास अपने उस भाई को लाना जो तुम्हारे बाप से है, क्या तुम ने नहीं देखा कि मैं नाप भी पूरा कर देता हूँ और मैं हूँ भी अच्छी तरह से मेहमान की इज़्ज़त करने वालों में।

فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِيْ بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِيْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ (60)

६०. लेकिन अगर तुम उसे मेरे पास लेकर न आये तो मेरी तरफ़ से तुम्हें कोई नाप नहीं मिलेगा बल्कि तुम मेरे क़रीब भी न आ सकोगे।

قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ اَبَاهُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ (61)

६१. उन्होंने कहा ठीक है हम उसके पिता से इस बारे में फुसलाकर पूरी कोशिश करेंगे।

وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ فِيْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ (62)

६२. और अपने नौकरों से कहा कि[2] उनका माल उन्हीं की बोरियों में रख दो कि जब लौट कर अपने परिवार में जायेंगे और माल को पहचान लें, तो बहुत मुमकिन है कि यह फिर आयें।

فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ (63)

६३. जब ये लोग लौटकर अपने बाप के पास गये तो कहने लगे हम से तो अनाज का नाप रोक लिया गया, अब आप हमारे साथ भाई को भेजिये कि हम नाप भर कर लायें हम उसकी हिफ़ाज़त के ज़िम्मेदार हैं।

---

[1] यह उस वक़्त का वाक़ेआ है जब ख़ुशहाली के सात साल ख़त्म होकर सूखा शुरू हो गया, जिस ने मिस्र देश के ज़्यादातर इलाक़े को पीड़ित कर दिया, यहाँ तक कि कनआन तक भी उसका असर पहुँचा, जहाँ हज़रत याक़ूब और हज़रत यूसुफ़ के भाई निवास करते थे। हज़रत यूसुफ़ ने इस से निपटने के लिये जो तदबीर की थी, वे कामयाब हुई और हर तरफ़ से लोग हज़रत यूसुफ़ से अनाज लेने के लिये आ रहे थे, हज़रत यूसुफ़ की प्रसिद्धि (शुहरत) कनआन तक भी पहुँची कि मिस्र का राजा इस तरह अनाज बिक्री कर रहा है, इसलिए पिता के हुक्म पर यूसुफ़ के भाई भी घर की पूँजी लेकर अनाज हासिल करने के लिये राजदरबार में पहुँचे, जहाँ हज़रत यूसुफ़ बैठे थे, जिन्हें ये भाई तो न पहचान सके, लेकिन यूसुफ़ ने अपने भाईयों को पहचान लिया।

[2] فِتْيَان (फ़ित्यान) का मतलब है नौजवान, जिस से मुराद है नौकर, सेवक और दास, जो राजदरबार में तैनात थे।

قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿64﴾

६४. (याक़ूब ने) कहा कि क्या मैं इस के बारे में तुम्हारा वैसे ही यक़ीन कर लूं जैसे इस से पहले उसके भाई के बारे में यक़ीन किया? बस अल्लाह तआला ही सब से बेहतर मुहाफ़िज़ है और वह सभी मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है।

وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ؕ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿65﴾

६५. और जब उन्होंने अपना सामान खोला तो अपना माल मौजूद पाया जो उनकी तरफ़ लौटा दिया गया था, कहने लगे हमारे पिताजी! हमें दूसरा क्या चाहिये? यह हमारा माल हमें लौटा दिया गया है, और हम अपने परिवार के लिये अनाज ला देंगे और अपने भाई की सुरक्षा (हिफ़ाज़त) करेंगे और एक ऊंट का नाप ज़्यादा लायेंगे, यह नाप तो ज़्यादा आसान है।[1]

قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿66﴾

६६. (याक़ूब ने) कहा कि मैं तो उसे कभी तुम्हारे साथ न भेजूंगा जब तक तुम अल्लाह को बीच में रखकर मुझ से वादा करो कि तुम उसे मेरे पास पहुँचा दोगे, सिवाय इसके कि तुम सब क़ैदी बना लिये जाओ, जब उन्होंने पक्का वादा किया तो उन्होंने कहा कि हम जो कुछ कहते हैं अल्लाह उसका संरक्षक (निगहबान) है।

وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَمَآ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ

६७. और (याक़ूब ने) कहा कि ऐ मेरे बच्चो! तुम सब एक दरवाज़े से न जाना, बल्कि कई दरवाज़ों से अलग-अलग तरह से दाख़िल होना,[2] मैं अल्लाह की तरफ़ से आयी हुई किसी चीज़ को तुम से टाल नहीं सकता, हुक्म सिर्फ़

---

[1] इसका एक मतलब तो यह है कि राजा के लिये एक ऊंट का वज़न कोई कठिन काम नहीं है, आसान है। दूसरा मतलब यह है कि ذلك का इशारा उस अनाज की तरफ़ है जो साथ लाये थे और يسير का मतलब थोड़ी तादाद है यानी हम जो अनाज लाये हैं वह थोड़ी तादाद में है, बिनयामीन के जाने से हमें ज़्यादा अनाज मिल जायेगा तो अच्छी ही बात है, हमारी ज़रूरत ज़्यादा अच्छी तरह से पूरी हो जायेगी।

[2] जब बिनयामीन सहित ग्यारह भाई मिस्र जाने लगे तो यह हिदायत की, क्योंकि एक ही बाप के ग्यारह बेटे जो शक्ल व सूरत में भी बेहतर हों, जब एक साथ एक ही जगह या एक साथ कहीं से गुज़रें तो आम तौर से उन्हें लोग ताज्जुब और हसद से देखते हैं और यही बात नज़र लगने का सबब बनती है, इसलिए उन्हें बुरी नज़र से बचने के लिये तरीक़ा के तौर में यह हिदायत दिया। नज़र लग जाना सच है, जैसाकि नबी करीम ﷺ से भी सहीह हदीस में साबित है।

مِنْ شَيْءٍ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿67﴾

अल्लाह ही का चलता है, मेरा पूरा यक़ीन उसी पर है और हर भरोसा करने वाले को उसी पर भरोसा करना चाहिये।

وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُم مَّا كَانَ يُغْنِي عَنْهُم مِّنَ اللَّهِ مِن شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِي نَفْسِ يَعْقُوبَ قَضَاهَا ۚ وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿68﴾

६८. और जब वे उन्हीं रास्तों से जिनका हुक्म उन के बाप ने दिया था गये, कुछ न था कि अल्लाह ने जो बात मुक़र्रर कर दी है वह उन्हें उस से ज़रा भी बचा ले, हाँ याक़ूब के दिल में एक ख़्याल (पैदा हुआ) जिस को उस ने पूरा किया। बेशक वह हमारे सिखाये उस इल्म का आलिम था, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ آوَىٰ إِلَيْهِ أَخَاهُ ۖ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿69﴾

६९. और ये सब जब यूसुफ़ के पास पहुँच गये तो उस ने अपने भाई को अपने क़रीब बिठा लिया और कहा कि मैं तेरा भाई (यूसुफ़) हूँ, अब तक ये जो कुछ करते रहे उसकी कुछ फ़िक्र न कर।

فَلَمَّا جَهَّزَهُم بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَيَّتُهَا الْعِيرُ إِنَّكُمْ لَسَارِقُونَ ﴿70﴾

७०. फिर जब उनका सामान तैयार कर दिया तो अपने भाई के सामान में अपना पानी पीने का प्याला रख दिया, फिर एक पुकारने वाले ने पुकार कर कहा हे क़ाफ़िला वालों![1] तुम लोग तो चोर हो।

قَالُوا وَأَقْبَلُوا عَلَيْهِم مَّاذَا تَفْقِدُونَ ﴿71﴾

७१. उन्होंने उन की तरफ़ मुँह फेर कर कहा कि तुम्हारी क्या चीज़ खो गयी है?

قَالُوا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَن جَاءَ بِهِ حِمْلُ بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ ﴿72﴾

७२. जवाब दिया कि राजकीय प्याला खो गया है जो उसे ले आये उसे एक ऊँट के बोझ का अनाज मिलेगा, उस वादे का मैं ज़मानतदार हूँ।

قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ عَلِمْتُم مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا سَارِقِينَ ﴿73﴾

७३. उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम! तुम्हें अच्छी तरह मालूम है कि हम देश में फ़साद पैदा करने के लिये नहीं आये और न हम चोर हैं।

---

[1] العِيرُ हक़ीक़त में उन ऊँटों, गधों और ख़च्चर को कहा जाता है, जिन पर अनाज लाद कर ले जाया जाता है, यहाँ मुराद أصحابُ العِير यानी सफ़र वाले मुसाफ़िर हैं।

قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿74﴾

७४. उन्होंने कहा अच्छा चोरी की क्या सजा है अगर तुम झूठ हो।

قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِيْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿75﴾

७५. जवाब दिया कि इसकी सजा यही है कि जिस के सामान में से पाया जाये वही उसका बदला है, हम तो जालिमों को यही सजा दिया करते हैं।

فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ﴿76﴾

७६. फिर (यूसुफ़ ने) सामान में खोज शुरू कर दी अपने भाई के सामान की खोज से पहले, फिर उस ने पीने के प्याले को अपने भाई के सामान (थैले) से निकाला, हम ने यूसुफ़ के लिये इसी तरह यह तदबीर बनाई, उस राजा के कानून के ऐतबार से यह अपने भाई को न ले सकता था, लेकिन यह कि अल्लाह को मंजूर हो, हम जिसका चाहें मर्तबा बुलन्द कर दें, हर आलिम के ऊपर एक बड़ा आलिम मौजूद है।[1]

قَالُوْۤا اِنْ يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِيْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ﴿77﴾

७७. उन्होंने कहा कि अगर इस ने चोरी की तो (ताज्जुब की बात नहीं) इस का भाई भी पहले चोरी कर चुका है, यूसुफ़ ने यह बात अपने दिल में रख ली और उन के सामने बिल्कुल जाहिर नहीं किया, कहा कि तुम बुरी जगह में हो, और जो तुम बयान कर रहे हो उसे अल्लाह अच्छी तरह जानता है।

قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗۤ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿78﴾

७८. उन्होंने कहा कि हे मिस्री अजीज ![2] इस के पिता बहुत बूढ़े इंसान हैं, आप इस के बदले हम में से किसी को ले लीजिये, हम देखते हैं कि आप बड़े नेक इंसान हैं।

[1] यानी हर आलिम से बढ़कर कोई न कोई आलिम होता है, इसलिये कोई आलिम इस घमन्ड में न रहे कि मैं ही अपने वक़्त का सब से बेहतर आलिम हूँ, और कुछ मुफ़स्सिर कहते हैं कि इसका मतलब है कि हर आलिम के ऊपर सब कुछ जानने वाला अल्लाह तआला है।

[2] हजरत यूसुफ़ को मिस्री अजीज इसलिये कहा गया कि उस वक़्त सारे हक़ीक़ी अधिकार (हक़) हजरत यूसुफ़ के पास थे, राजा सिर्फ़ नाम के लिये ही बादशाह था।

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ﴿79﴾

७९. (यूसुफ़ ने) कहा कि हम ने जिस के पास अपनी चीज़ पाई है उस के सिवाय दूसरों को बन्दी बनाने से अल्लाह की पनाह चाहते हैं, ऐसा करने से हम बेशक नाइंसाफ़ी करने वाले हो जायेंगे।

فَلَمَّا اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ؕ قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْۤ اَبِيْۤ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿80﴾

८०. जब यह उससे मायूस हो गये तो एकान्त में बैठकर राय-मशविरा करने लगे, उन में जो सब से बड़ा था उस ने कहा कि तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हारे पिता ने तुम से अल्लाह को बीच रखकर मज़बूत अहद और वादा लिया है और इस से पहले तुम यूसुफ़ के बारे में गुनाह कर चुके हो, अब तो मैं इस धरती से न हटूँगा जब तक पिता ख़ुद मुझे इजाज़त न दें, या अल्लाह तआला मेरे इस मसले का फ़ैसला कर दे, वह सब से अच्छा हाकिम है।[1]

اِرْجِعُوْۤا اِلٰۤى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَاۤ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ﴿81﴾

८१. तुम सब पिताजी की ख़िदमत में वापस जाओ और कहो कि हे पिताजी! आप के बेटे ने चोरी की और हम ने वही गवाही दी थी जो हम जानते थे, हम कुछ ग़ैब की हिफ़ाज़त करने वाले तो न थे।

وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْۤ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ؕ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿82﴾

८२. और आप उन नगरवासियों से पूछ लें, जहाँ हम थे और उन मुसाफ़िरों से भी पूछ लें जिन के साथ हम आये हैं, और बेशक हम पूरी तरह से सच्चे हैं।[2]

---

[1] अल्लाह मेरे मसले हल कर दे का मतलब है कि किसी तरह (मिस्री अज़ीज़) बिनयामीन को छोड़ दे और मेरे साथ जाने की इजाज़त दे दे, या यह मतलब है कि अल्लाह तआला मुझे इतनी ताक़त दे कि मैं बिनयामीन को तलवार या ताक़त से अज़ाद कराकर अपने साथ ले जाऊँ।

[2] नगर से मुराद मिस्र है जहाँ वे अनाज लेने गये थे, मतलब अहले मिस्र हैं। इसी तरह العير से मुराद اصحاب العير यानी सफ़र के साथी हैं, आप मिस्र जाकर अहले मिस्र से और उन मुसाफ़िरों से जिनके साथ सफ़र करके हम आये हैं, पूछ लें कि जो कुछ हम बयान कर रहे हैं वह सच है, इस में झूठ की कोई मिलावट नहीं है।

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۭ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ۭ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿83﴾

८३. (याक़ूब ने) कहा यह तो नहीं बल्कि तुम ने अपनी तरफ़ से बात बना ली, इसलिए सब्र ही बेहतर है, हो सकता है कि अल्लाह (तआला) उन सब को मेरे पास ही पहुँचा दे, वह ही आलिम और हिक्मत वाला है।

وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰٓاَسَفٰى عَلٰي يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿84﴾

८४. और फिर उनसे मुँह फेर लिया और कहा हाय यूसुफ़![1] उनकी आँखें दुख-ग़म की वजह से सफ़ेद हो गयी थीं[2] और वह दुख-ग़म को बरदाश्त किये हुए थे।

قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿85﴾

८५. (बेटों ने) कहा अल्लाह की क़सम! आप हमेशा यूसुफ़ की याद में ही गुम रहेंगे यहाँ तक कि घुल जायेंगे या मर जायेंगे।

قَالَ اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْٓ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿86﴾

८६. उन्होंने कहा कि मैं तो अपनी मुसीबत और दुख की फ़रियाद अल्लाह से कर रहा हूँ, मुझे अल्लाह की तरफ़ से उन बातों का इल्म हासिल है जिन से तुम अंजान हो।[3]

يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿87﴾

८७. मेरे प्यारे बेटो! तुम जाओ और यूसुफ़ और उस के भाई की भली तरह खोज करो, और अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, बेशक अल्लाह की रहमत से वही मायूस होते हैं जो काफ़िर होते हैं।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿88﴾

८८. फिर ये लोग जब यूसुफ़ के पास पहुँचे तो कहने लगे कि हे अज़ीज़! हम और हमारा परिवार बहुत कठिनाई में है, हम थोड़े से हक़ीर माल लाये हैं, लेकिन आप हमें पूरे अनाज का नाप दे दीजिये, और हम पर सदक़ा कीजिये, अल्लाह तआला सदक़ा करने वालों को बदला देता है।

---

[1] यानी इस नये दुख ने यूसुफ़ की जुदाई के पुराने दुख को भी नया कर दिया।

[2] यानी आँखों की कालिमा (स्याही) दुख के सबब सफ़ेदी में बदल गयी थी।

[3] इस से मुराद तो वह ख़्वाब है जिस के बारे में उन्हें पूरा यक़ीन था कि ज़रूर साकार होगा और वे यूसुफ़ के सामने सज्दा रेज़ होंगे या उनका यह यक़ीन था कि यूसुफ़ ज़िन्दा हैं और उन से ज़िन्दगी में ज़रूर मिलन होगा।

८९. (यूसुफ़ ने) कहा जानते भी हो कि तुम ने यूसुफ़ और उस के भाई के साथ अपनी जिहालत में क्या-क्या किया ?

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ﴿89﴾

९०. उन्होंने कहा क्या (हक़ीक़त में) तू ही यूसुफ़ है[1] जवाब दिया हाँ, मैं ही यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है, अल्लाह ने हम पर रहमत और मेहरबानी की। बात यह है कि जो भी परहेज़गारी और सब्र से रहे तो अल्लाह (तआला) किसी नेकी करने वाले का बदला बरबाद नहीं करता है।

قَالُوْٓا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَآ اَخِيْ ؗ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿90﴾

९१. उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम कि अल्लाह ने तुझे हम पर फ़ज़ीलत अता की है और यह भी सच है कि हम गुनहगार हैं।

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِــِٕيْنَ ﴿91﴾

९२. जवाब दिया, आज तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं है, अल्लाह तुम्हें माफ़ करे वह सभी रहम करने वालों में सब से बड़ा रहम करने वाला है।

قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ؗ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿92﴾

९३. मेरा यह कुर्ता तुम ले जाओ और मेरे पिता के मुँह पर डाल दो कि वह देखने लगें[2] और आ जायें, और अपने पूरे परिवार को मेरे पास ले आओ।

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿93﴾

९४. और जब ये क़ाफ़िला विदा हुआ तो उनके पिता ने कहा कि मुझे यूसुफ़ की ख़ुश्बू आ रही है, अगर तुम मुझे नाअक़्ल न समझो।[3]

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّيْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ﴿94﴾

---

[1] भाईयों ने जब मिस्री हाकिम के मुँह से उस यूसुफ़ का बयान सुना, जिसे उन्होंने बचपन में कनआन के एक अंधेरे कुऐं में फेंक दिया था तो वे ताज्जुब में पड़ गये और ग़ौर से देखने के लिये मजबूर भी हो गये कि कहीं हम से मुख़ातिब राजा यूसुफ़ तो नहीं? वर्ना यूसुफ़ के हादसे का इल्म उन्हें किस तरह हो सकता है? इसलिए उन्होंने सवाल किया कि क्या तू यूसुफ़ ही तो नहीं?

[2] कमीज़ के मुँह पर पड़ने से आँखों की रोशनी का आ जाना एक ताज्जुब और मोजिज़ा की शक्ल में था।

[3] उधर वह कमीज़ लेकर मुसाफ़िर मिस्र से चले और इधर हज़रत याक़ूब को अल्लाह तआला की तरफ़ से मोजिज़ा की तरह हज़रत यूसुफ़ की ख़ुश्बू आने लग गयी, यह जैसे इस बात का एलान था कि अल्लाह के पैग़म्बर (ईशदूत) को भी, जब तक अल्लाह तआला की तरफ़ से

قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿95﴾

९५. वे कहने लगे कि अल्लाह की क़सम! आप तो अपनी उसी पुरानी ग़लती पर क़ायम हैं।

فَلَمَّآ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿96﴾

९६. जब ख़ुशख़बरी देने वाले ने पहुँचकर उन के मुँह पर कुर्ता डाला, उसी पल वह दोबारा देखने लगे। कहा कि क्या मैं तुम से न कहा करता था कि मैं अल्लाह की तरफ़ से वह बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ اِنَّا كُنَّا خٰطِـِٕيْنَ ﴿97﴾

९७. उन्होंने कहा हे पिता! आप हमारे गुनाहों की क्षमा-याचना (मग़फ़िरत की दुआ) कीजिये, बेशक हम गुनहगार हैं।

قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿98﴾

९८. कहा, अच्छा मैं जल्द ही तुम्हारे लिये अपने रब से माफ़ी की दुआ करूँगा,[1] वह बहुत बड़ा माफ़ करने वाला और बहुत रहम करने वाला है।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ؕ ﴿99﴾

९९. जब ये पूरा परिवार यूसुफ़ के पास पहुँच गया तो यूसुफ़ ने अपने माँ-बाप को अपने क़रीब जगह दी, और कहा कि अल्लाह को मंज़ूर है तो आप सब सुख-शांति से मिस्र में आ जाओ।

وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ ۫

१००. और अपने सिंहासन (तख़्त) पर अपने माँ-बाप को ऊँचे मुक़ाम पर बिठाया, और सब उस के सामने सज्दा में हो गये[2] और तब कहा

ज़रिया और ख़बर न पहुँचे तो पैग़म्बर अन्जान होता है, चाहे बेटा अपने नगर के किसी कुऐं में ही क्यों न हो? और जब अल्लाह इंतेज़ाम कर दे तो मिस्र जैसे दूर-दराज इलाक़े से भी बेटे की ख़ुश्बू आ जाती है।

[1] फ़ौरन दुआ न करके दुआ का वादा दिया, मक़सद यह था कि रात के आख़िरी पहर में जो अल्लाह के ख़ास बन्दों का अल्लाह की इबादत करने का ख़ास वक़्त होता है, अल्लाह से उनकी माफ़ी के लिये दुआ करूँगा।

[2] कुछ ने इसका तर्जुमा यह किया है कि इज़्ज़त-एहतेराम के लिये यूसुफ़ के सामने झुक गये, लेकिन وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا के लफ़्ज़ बताते हैं कि वे धरती पर यूसुफ़ के सामने माथा रख दिये। यह सज्दा माथा टेकने के मानों में है, फिर भी यह सज्दा एहतेराम के लिये है इबादत के तौर पर नहीं, और लायके एहतेराम सज्दा हज़रत याक़ूब की शरीअत में जायेज़ था, इस्लाम में शिर्क (मिश्रण) को रोकने के लिये ऐसे ऐहतराम के लिए सज्दा करना नाजायेज़ कर दिया गया, और

قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا ۖ وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ أَخْرَجَنِي مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُم مِّنَ الْبَدْوِ مِن بَعْدِ أَن نَّزَغَ الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي ۚ إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ لِّمَا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿100﴾

कि पिताजी! यह मेरे पहले ख़्वाब की तावीर है, मेरे रब ने उसे पूरा कर दिखाया, उस ने मेरे साथ बड़ा एहसान किया जबकि मुझे जेल से निकाला और आप लोगों को रेगिस्तान से ले आया, उस इख़्तेलाफ़ के बाद जो शैतान ने मुझ में और मेरे भाईयों में डाल दिया था, मेरा रब जो चाहे उस के लिए अच्छी व्यवस्था (तदबीर) करने वाला है और बड़ा जानने वाला हिक्मत वाला है।

رَبِّ قَدْ آتَيْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِي مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنتَ وَلِيِّي فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ ﴿101﴾

१०१. हे मेरे रब ! तूने मुझे मुल्क अता किया और मुझे ख़्वाबों की तावीर का इल्म दिया, हे आकाशों और धरती के पैदा करने वाले ! तू ही दुनिया और आख़िरत में मेरा वली और मददगार है, तू मुझे मुसलमान की हालत में मार और नेकी करने वालों में शामिल कर दे ।[1]

ذَٰلِكَ مِنْ أَنبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۖ وَمَا كُنتَ لَدَيْهِمْ إِذْ أَجْمَعُوا أَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُونَ ﴿102﴾

१०२. यह ग़ैब की ख़बरों में से है जिसकी हम आप की तरफ़ वह्यी कर रहे हैं, और आप उन के पास न थे जबकि उन्होंने अपनी बात ठान ली थी और वे छल और कपट करने लगे थे।

وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿103﴾

१०३. अगरचे आप लाख चाहें ज़्यादातर लोग ईमान वाले न होंगे।

وَمَا تَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ﴿104﴾

१०४. और आप उन से उस पर कोई मज़दूरी नहीं मांग रहे हैं, यह तो सारी दुनिया के लिये नसीहत ही नसीहत है।

अब एहतेराम के तौर पर भी सज्दा किसी को करना नाजायेज़ है।

[1] अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ़ पर जो एहसान किये उन्हें याद करके और अल्लाह तआला के दूसरे गुणों (सिफ़ात) का बयान करके दुआ कर रहे हैं कि जब मुझे मौत आये तो इस्लाम की हालत में आये और मुझे सज्जन (पुनीत) पुरूषों के साथ मिला दे। इस से मुराद हज़रत यूसुफ़ के बाप-दादा हज़रत इब्राहीम और इसहाक़ आदि हैं, कुछ लोगों को इस दुआ से यह शक पैदा हुआ कि हज़रत यूसुफ़ ने मौत की दुआ की, अगरचे यह मौत की दुआ नहीं है, आख़िरी पल तक इस्लाम पर मज़बूत रहने की दुआ है।

وَكَأَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿105﴾

१०५. और आकाशों और धरती में बहुत सी निशानियाँ हैं, जिन से ये मुँह फेर कर निकल जाते हैं।

وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ﴿106﴾

१०६. और उन में से ज़्यादातर लोग अल्लाह पर ईमान रखने के बावजूद भी मुशरिक ही हैं।[1]

اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿107﴾

१०७. क्या वे इस बात से बेख़ौफ़ हो गये हैं कि उन के पास अल्लाह के अज़ाबों में से कोई आम अज़ाब आ जाये या उन पर अचानक क़यामत टूट पड़े और वे ग़ाफ़िल हों।

قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۣ عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ۭ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿108﴾

१०८. (आप) कह दीजिये मेरा यही रास्ता है, मैं और मेरे पैरोकार अल्लाह की तरफ़ बुला रहे हैं, पूरे यक़ीन और ऐतमाद के साथ[2] और अल्लाह पाक है और मैं मूर्तिपूजकों (मिश्रणवादियों) में नहीं।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ۭ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿109﴾

१०९. और आप से पहले हम ने बस्ती वालों में जितने भी रसूल भेजे हैं सब मर्द ही थे, जिन की तरफ़ हम वह्यी (प्रकाशना) उतारते गये[3] क्या धरती पर चल-फिर कर उन्होंने नहीं देखा कि उन से पहले के लोग का कैसा नतीजा हुआ? बेशक आख़िरत का घर परहेज़गारों (तक़्वा बरतने वालों) के लिये बहुत अच्छा है, क्या तुम फिर भी नहीं समझते?

---

[1] यह वह हक़ीक़त है जिसे क़ुरआन ने कई जगहों पर बड़ी वज़ाहत के साथ बयान किया है कि ये मूर्तिपूजक यह क़ुबूल करते हैं कि आकाश और धरती का ख़ालिक़, मालिक, रब और संचालक (मुंतज़िम) केवल अल्लाह तआला ही है, लेकिन इस के बावजूद इबादत में अल्लाह के साथ दूसरों को भी शामिल कर लेते हैं, और इस तरह ज़्यादातर लोग मुशरिक हैं, यानी हर युग के लोग तौहीद इबादत (पूजा) को मानने के लिये तैयार नहीं होते हैं, आज के क़ब्र पूजने वालों का शिर्क भी यही है कि वह क़ब्रों में गड़े बुज़ुर्गों को इबादत का हक़दार समझकर उन्हें मदद के लिये पुकारते भी हैं और इबादत की कई रीतियाँ भी अपनाते हैं।

[2] यानी यह तौहीद (एकेश्वरवाद) का रास्ता ही मेरा रास्ता है, बल्कि तमाम पैग़म्बरों का यही रास्ता रहा है, इसी की तरफ़ मैं और मेरे पैरोकार मज़बूत ईमान के साथ और दीनी क़ानूनों के सुबूतों के साथ लोगों को बुलाते हैं।

[3] यह आयत इस बात का सुबूत है कि सभी नबी मर्द हुए हैं,औरतों से किसी को भी नबूअत का पद नहीं मिला, इसी तरह उनका सम्बन्ध (तआल्लुक़) नगरों से था, उन में से कोई भी ग्रामीण (ग्रामवासियों) में से न था, क्योंकि ग्रामीण और देहाती नगरवासियों के मुक़ाबिल आम तौर से कठोर और अख़लाक़ में सख़्त होते हैं और नगरवासी उनकी मुक़ाबिल नर्म, आसान और सभ्य (मुहज़्ज़ब) होते हैं और यह ख़ूबियाँ नबूअत के लिये ज़रूरी हैं।

حَتّٰٓى اِذَا اسْتَيْـَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَآءَهُمْ نَصْرُنَا ۙ فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَآءُ ۭ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١١٠﴾

११०. यहाँ तक कि जब रसूल मायूस होने लगे और उम्मत के लोग यह ख़्याल करने लगे कि उन्हें झूठ कहा गया, फ़ौरन हमारी मदद उन्हें आ पहुँची, जिसे हम ने चाहा उसे नजात अता की, बात यह है कि हमारा अज़ाब गुनहगारों से वापस नहीं किया जाता।

لَقَدْ كَانَ فِيْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ۭ مَا كَانَ حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١١١﴾

१११. इन की कहानियों में अक़्लमंदों के लिये बिला शुब्हा नसीहत और तंबीह है, यह क़ुरआन झूठ बनायी हुई बातें नहीं, बल्कि यह तसदीक़ है, उन किताबों के लिये जो इस से पहले की हैं, और हर चीज़ का तफ़सीली बयान और हिदायत और रहमत है ईमान वालों के लिये।[1]

सूरतु राअद-१३

سُوْرَةُ الرَّعْدِ

सूर: अल-राअद मदीने में उतरी और इस में तैंतालीस आयतें और छ: रुकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

الٓمّٓرٰ ۣ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ۭ وَالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١﴾

१. अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰ रा॰। ये क़ुरआन की आयतें हैं और जो कुछ आप की तरफ़ आप के रब की तरफ़ से उतारा गया है सब सच है, लेकिन ज़्यादातर लोग ईमान नहीं लाते (यक़ीन नहीं करते)।

اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَي الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ

२. अल्लाह वह है जिस ने आकाशों को बिना खंभों के ऊँचा कर रखा है कि तुम उसे देख रहे हो, फिर वह अर्श पर क़ायम है[2] उसी ने सूरज

---

[1] यानी यह क़ुरआन जिस में यह यूसुफ़ की कहानी और दूसरी क़ौमों के वाक़ेआत का बयान है, कोई गढ़ा हुआ नही है बल्कि यह पहले की किताबों की तसदीक़ करने वाला और उसमें धर्म के विषयों सभी ज़रूरी बातों का तफ़सीली बयान है और ईमानवालों के लिये सीधा रास्ता और रहमत है।

[2] "इस्तवा अलल अर्श" का मतलब इस से पहले बयान हो चुका है कि इस से मुराद अल्लाह तआला का अर्श पर स्थिर होना है। मोहद्देसीन (हदीसों के आलिमों) का यही रास्ता है, वह इसका तफ़सीली ख़्याल नहीं करते, जैसे कुछ दूसरे गिरोह इस में और रब के दूसरे अवसाफ़ में कष्ट कल्पना करते हैं।

كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ
الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ (2)

और चाँद को तावे बना रखा है, हर एक मुक़र्रर वक़्त तक चल रहा है, वही काम की तदबीर करता है, वह अपनी निशानियाँ खोल-खोल कर बयान कर रहा है कि तुम अपने रब से मिलने का यक़ीन कर लो।

وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ
وَاَنْهٰرًا ؕ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ
اثْنَيْنِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ (3)

३. और उसी ने धरती को फैला कर बिछा दिया और उस में पहाड़ और नदियाँ पैदा कर दी हैं, और उस में हर तरह के फलों के जोड़े दोहरे-दोहरे पैदा किये हैं[1] वह रात से दिन को छिपाता है, निश्चय ही ग़ौर व फ़िक्र करने वालों के लिये उस में बहुत-सी निशानियाँ हैं।

وَفِي الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ
وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَآءٍ
وَّاحِدٍ ۫ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰى بَعْضٍ فِي الْاُكُلِ ؕ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ (4)

४. और धरती में कई तरह के टुकड़े एक-दूसरे से मिले-जुले हैं, और अंगूरों के बाग़ हैं और खेत हैं और खजूरों के पेड़ हैं शाखाओं वाले, और कुछ ऐसे हैं जो शाखाओं वाले नहीं, सब एक ही पानी से सींचे जाते हैं, फिर भी हम एक को एक पर फलों में फ़ज़ीलत देते हैं, इस में अक़्लमंदों के लिये बहुत सी निशानियाँ हैं।

وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا
ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ؕ۬ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
بِرَبِّهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (5)

५. और अगर तुझे ताज्जुब हो तो हक़ीक़त में उनका यह कहना आश्चर्यजनक (ताज्जुबख़ेज़) है कि क्या जब हम मिट्टी हो जायेंगे तो क्या हम नया जन्म लेंगे, यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने रब से कुफ़्र किया, और यही हैं जिनकी गर्दनों में फंदे होंगे, और यही हैं जो नरक में रहने वाले हैं जो उस में हमेशा रहेंगे।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ
وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ
لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ
لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ (6)

६. और जो तुझ से सज़ा की माँग में जल्दी कर रहे हैं सुख से पहले ही, बेशक उन से पहले (मिसाल के तौर पर) सज़ायें आ चुकी हैं, और बेशक तेरा रब माफ़ करने वाला है, लोगों के बेजा ज़ुल्म पर भी, और यह भी निश्चित बात है कि तेरा रब सख़्त सज़ा देने वाला भी है।

---

[1] इसका एक मतलब यह है कि नर और मादा दोनों बनाये जैसाकि मौजूदा तहक़ीक़ात ने इसकी तसदीक़ कर दी है, दूसरा मतलब (जोड़े-जोड़े का) यह है कि मीठा-खट्टा, ठंड-गर्म, स्याह-सफेद और मज़ेदार और बेमज़ा इसी तरह एक-दूसरे से अलग और विपरीत (मुख़तलिफ़) तरह का पैदा किया।

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۗ إِنَّمَا أَنتَ مُنذِرٌ ۖ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ⑦

७. और काफ़िर (कृतघ्न) कहते हैं कि उस पर उस के रब की तरफ़ से कोई निशानी (चमत्कार) क्यों नहीं उतारी गयी? बात यह है कि आप तो केवल बाख़बर करने वाले हैं और हर क़ौम के लिये हिदायत करने वाला है।[1]

اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنثَىٰ وَمَا تَغِيضُ الْأَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۖ وَكُلُّ شَيْءٍ عِندَهُ بِمِقْدَارٍ ⑧

८. मादा अपने पेट में जो कुछ रखती है, उसे अल्लाह तआला अच्छी तरह जानता है,[2] और पेट (गर्भाशय) का घटना-बढ़ना भी,[3] हर चीज़ उसके पास अंदाज़े से है।

عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ ⑨

९. छिपी और खुली बातों का वह इल्म रखने वाला है, सब से बड़ा और सब से ऊंचा और सब से अच्छा है।

سَوَاءٌ مِّنكُم مَّنْ أَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَن جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ⑩

१०. तुम में से किसी का अपनी बात छुपा कर कहना और ऊँची आवाज़ में उसे कहना और जो रात को छिपा हो और जो दिन में चल रहा हो, सब अल्लाह पर बराबर हैं।

لَهُ مُعَقِّبَاتٌ مِّن بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنفُسِهِمْ ۗ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءًا فَلَا مَرَدَّ لَهُ ۚ وَمَا لَهُم مِّن دُونِهِ مِن وَالٍ ⑪

११. उस के मुहाफ़िज़ इंसान के आगे पीछे तैनात हैं, जो अल्लाह के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त करते हैं, किसी क़ौम की हालत अल्लाह (तआला) नहीं बदलता जब तक कि वे ख़ुद न बदलें जो उनके दिल में है। अल्लाह (तआला) जब किसी क़ौम को सज़ा देने का फ़ैसला कर लेता है तो वह बदला नहीं करता, और सिवाय उस के कोई भी उनका संरक्षक (निगहबान) भी नहीं।

[1] यानी हर क़ौम की हिदायत के लिये अल्लाह तआला ने पैग़म्बर अवश्य भेजा है, यह अलग बात है कि क़ौमों ने यह रास्ता अपनाया या नहीं अपनाया, लेकिन सीधा रास्ता दिखाने के लिये संदेशवाहक हर क़ौम के अंदर अवश्य आया।

[2] माता के पेट में क्या है? नर है या मादा, ख़ूबसूरत है या बदसूरत, नेक है या बद, लम्बी उम्र या कम उम्र? सभी बातें केवल अल्लाह तआला ही जानता है।

[3] इस से मुराद गर्भ की मुद्दत है जो आम तौर से नौ माह होती है, लेकिन घटती और बढ़ती भी है, किसी वक़्त यह दस माह और किसी वक़्त सात-आठ माह हो जाती है, इसका भी इल्म अल्लाह के सिवाय किसी को नहीं।

هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا
وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿12﴾

१२. वह अल्लाह ही है जो तुम्हें बिजली की चमक डराने और उम्मीद दिलाने के लिये दिखाता है और भारी बादलों को पैदा करता है।[1]

وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ
وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ
يُجَادِلُوْنَ فِي اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ﴿13﴾

१३. और गर्ज उसकी तारीफ़ और महिमा (तस्बीह) बयान करती है और फ़रिश्ते भी उस के डर से, वही आकाश से बिजली गिराता है और जिस पर चाहता है, उस पर डालता है। काफ़िर अल्लाह के बारे में लड़-झगड़ रहे हैं और अल्लाह सख़्त ताक़त वाला है।

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۖ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ
لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ
اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ۚ وَمَا
دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿14﴾

१४. उसी को पुकारना सच है, जो लोग दूसरों को उस के अलावा पुकारते हैं वे उनकी किसी पुकार का जवाब नहीं देते, जैसे कोई इंसान अपने हाथ पानी की तरफ़ फैलाये हुए हो कि उस के मुँह में पड़ जाये जबकि वह पानी उस के मुँह में पहुँचने वाला नहीं[2] उन काफ़िरों की जितनी पुकार है सभी गुमराह है।

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا
وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿15﴾ السجدة

१५. और अल्लाह ही के लिये आकाशों और धरती के सभी जीव ख़ुशी और नाख़ुशी से सज्दा करते हैं और उनकी छाया भी सुबह और शाम।

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۖ قُلِ اللّٰهُ ۖ
قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ

१६. (आप) पूछिये कि आकाशों और धरती का रब कौन है? कह दीजिये अल्लाह। कह दीजिये क्यों तुम फिर भी इस के सिवाय दूसरों को मददगार बना रहे हो जो ख़ुद अपनी जान के भी

---

[1] भारी बादलों से मुराद वह बादल जिन में बारिश का पानी होता है।

[2] यानी जो अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को मदद के लिये पुकारते हैं, उनकी मिसाल ऐसी है जैसे कोई इंसान दूर से पानी की तरफ़ अपनी हथेलियाँ फैलाकर पानी से कहे कि तू मेरे मुँह तक आ जा, ज़ाहिर है कि पानी न चलने वाला है, उसे पता नहीं कि हथेलियाँ फैलाने वाले की ज़रूरत क्या है? और न उसे यह पता है कि वह मुझे अपने मुँह तक पहुँचने की माँग कर रहा है। और न उस में यह ताक़त है कि अपनी जगह से चलकर उसके हाथ या मुँह तक पहुँच जाये। इसी तरह ये मूर्तिपूजक अल्लाह के सिवाय जिनको पुकारते हैं, उन्हें न यह पता है कि कोई उन्हें पुकार रहा है और उसकी अमुक (फ़लाँ) ज़रूरत है, और न उस ज़रूरत को पूरा करने की उन में ताक़त ही है।

لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ اَمْ هَلْ تَسْتَوِى الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿16﴾

भले-बुरे का हक़ नहीं रखते, कह दीजिये क्या अंधा और आँखों वाला बराबर हो सकता है? या क्या अँधेरा और उजाल बराबर हो सकता है?[1] क्या जिन्हें ये अल्लाह का साझीदार बना रहे हैं उन्होंने भी अल्लाह की तरह पैदा की है कि उनके देखने में पैदाईश संदिग्ध (मुतशाबिह) हो गई? कह दीजिये कि केवल अल्लाह ही सभी चीज़ों का पैदा करने वाला है वह अकेला है और ज़बरदस्त ग़ालिब है।

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ؕ وَمِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِى النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۬ؕ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِى الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ﴿17﴾

१७. उसी ने आकाश से वर्षा की फिर अपनी अपनी शक्ति अनुसार नाले वह निकले, फिर पानी के धारे ने ऊपर चढ़कर झाग को उठा लिया, और उस चीज़ में भी जिसको आग में डाल कर तपाते हैं ज़ेवर या सामान के लिये उसी तरह के झाग हैं, इसी तरह अल्लाह तआला सच और झूठ को वाज़ेह करने की मिसाल देता है।[2] अब झाग बेकार होकर चला जाता है, लेकिन जो लोगों को फ़ायेदा पहुँचाने वाली चीज़ें हैं, वह धरती में ठहरी रहती हैं, अल्लाह (तआला) इसी तरह मिसाल दिया करता है।

[1] यानी जिस तरह अंधा और आँख वाला बराबर नहीं हो सकते, उसी तरह एकेश्वरवादी (मुवाहिद) और अनेकश्वरवादी (मुशरिक) बराबर नहीं हो सकते, इसलिये एक अल्लाह के पुजारी का दिल तौहीद की रोशनी से कामिल है, जबकि दूसरों के पुजारी उस से महरूम हैं, एकेश्वरवादी की आँखें हैं, वह एकेश्वरवाद का नूर देखता है और दूसरों के पुजारी को यह एकेश्वरवाद का नूर दिखायी नहीं पड़ता, इसलिये वह अंधा है। इसी तरह जिस तरह अँधेरा और उजाला बराबर नहीं हो सकते। एक अल्लाह का पुजारी जिसका दिल नूर से कामिल है, और एक मूर्तिपूजक (अनेकश्वरवादी) जिहालत और गुमराही के अंधेरों में भटक रहा है, बराबर नहीं हो सकते।

[2] यानी जब सच और झूठ का आपस में सामना और टकराव होता है तो झूठ को उसी तरह क़रार नहीं मिलता जिस तरह से बाढ़ की धारा का झाग पानी के साथ धातों का झाग, जिनको आग में तपाया जाता है, धातों के साथ बाक़ी नहीं रहता बल्कि ख़त्म और बरबाद हो जाता है।

१८. जिन लोगों ने अपने रब के हुक्मों का पालन किया उन के लिये भलाई है, और जिन लोगों ने उस के हुक्म की पैरवी न की अगर उन के लिये धरती में जो कुछ है सब कुछ हो, और उस के साथ वैसा ही दूसरा भी हो तो वह सब कुछ अपने बदले में दे दें, यही हैं जिन के लिये बुरा हिसाब है, और उनका ठिकाना नरक है जो बहुत बुरी जगह है।

لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؕ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿18﴾

१९. क्या वह इंसान जो यह इल्म रखता हो कि जो आप की तरफ़ आप के रब की तरफ़ से उतारा गया है वह हक़ है, उस इंसान जैसा हो सकता है जो अंधा हो,[1] नसीहत तो वही क़ुबूल करते हैं जो अक़्लमंद हों।

اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿19﴾

२०. जो अल्लाह को दिये गये वादे को पूरा करते हैं और वादा नहीं तोड़ते।[2]

الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ﴿20﴾

२१. और अल्लाह (तआला) ने जिन चीज़ों को जोड़ने का हुक्म दिया है वह उसे जोड़ते हैं, और वे अपने रब से डरते हैं और हिसाब की सख़्ती का डर रखते हैं।

وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ ﴿21﴾

२२. और वे अपने रब की ख़ुशी के लिये सब्र करते हैं, और नमाज़ों को लगातार क़ायम रखते हैं, और जो कुछ हम नें उन्हें दे रखा है उसे खुले और छुपे तौर से ख़र्च करते हैं, और बुराई को भी भलाई से टालते हैं, उन्हीं के लिये आख़िरत का घर है।

وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿22﴾

[1] यानी एक वह इंसान जो क़ुरआन की सच्चाई पर यक़ीन रखता हो और दूसरा अंधा हो, यानी उसे क़ुरआन की सच्चाई पर शक हो, क्या ये दोनों बराबर हो सकते हैं? सवाल नकारात्मक (मंफ़ी) है यानी ये दोनों उसी तरह बराबर नहीं हो सकते जिस तरह झाग और पानी या सोना और तांबा और उसकी मैल-कुचैल बराबर नहीं हो सकते।

[2] इस से मुराद वह आपसी सुलह और वादा हैं जो इंसान आपस में एक-दूसरे से करते हैं या वह जो उन के और उन के रब के बीच हैं।

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآىِٕهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓىِٕكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿23﴾

२३. और हमेशा रहने के बाग़[1] जहाँ ये ख़ुद जायेंगे और उन के बुज़ुर्गों और बीवियों और औलाद में से भी जो नेक काम करने वाले होंगे, उन के क़रीब फ़रिश्ते हर दरवाज़े से आयेंगे।

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿24﴾

२४. (कहेंगे कि) तुम पर सलामती (शान्ति) हो सब्र के बदले, क्या ही अच्छा बदला है इस आख़िरत के घर का।

وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ اُولٰٓىِٕكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿25﴾

२५. और जो लोग अल्लाह के वादे को उस की मज़बूती के बाद तोड़ देते हैं और जिन चीज़ों के जोड़ने का अल्लाह का हुक्म है उन्हें तोड़ देते हैं, और धरती में फ़साद फैलाते हैं, उन के लिए लानत है और उन के लिए बुरा घर है।[2]

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿26﴾

२६. अल्लाह (तआला) जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ाता है और घटाता है, ये तो दुनिया के जीवन में मस्त हो गये,[3] अगरचे कि दुनिया आख़िरत के मुक़ाबले में बहुत हक़ीर पूँजी है।[4]

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ﴿27﴾

२७. काफ़िर कहते हैं कि उस पर उसके रब की तरफ़ से कोई निशानी (चमत्कार) क्यों उतारी नहीं गयी? जवाब दीजिये कि जिसे अल्लाह भटकाना चाहे भटका देता है और जो उसकी तरफ़ झुके उसे रास्ता दिखा देता है।

---

[1] अदन का मतलब है हमेशा-हमेशा रहने वाले बाग़।

[2] यह नेकों के साथ बुरों के नतीजे का बयान कर दिया ताकि इंसान इस नतीजा से बचने की कोशिश करे।

[3] किसी को अगर दुनिया का माल ज़्यादा मिल रहा है, जबकि वह अल्लाह का नाफ़रमान है तो यह ख़ुश और बेफ़िक्र होने का मुक़ाम नहीं, क्योंकि यह मौक़ा है, पता नहीं कब यह मुद्दत ख़त्म हो जाये और अल्लाह की पकड़ में जकड़ लिया जाये।

[4] हदीस में आता है कि दुनिया की क़ीमत आख़िरत के मुक़ाबिल इस तरह है जैसे कोई इंसान अपनी उँगली समुद्र में डिबो कर निकाले तो देखे कि समुद्र के पानी के मुक़ाबिल उसकी उँगली में कितना पानी आया?

ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَتَطۡمَئِنُّ قُلُوبُهُم بِذِكۡرِ ٱللَّهِۗ أَلَا بِذِكۡرِ ٱللَّهِ تَطۡمَئِنُّ ٱلۡقُلُوبُ ﴿28﴾

२८. जो लोग ईमान लाये उन के दिल अल्लाह को याद करने से शान्ति प्राप्त (हासिल) करते हैं, याद रखो कि अल्लाह की याद से ही दिल को शान्ति हासिल होती है।

ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ طُوبَىٰ لَهُمۡ وَحُسۡنُ مَـَٔابٍ ﴿29﴾

२९. जो लोग ईमान लाये और जिन्होंने नेकी के काम भी किये उन के लिये खुशहाली है,[1] और सब से अच्छा मक़ाम है।

كَذَٰلِكَ أَرۡسَلۡنَٰكَ فِيٓ أُمَّةٍ قَدۡ خَلَتۡ مِن قَبۡلِهَآ أُمَمٌ لِّتَتۡلُوَا۟ عَلَيۡهِمُ ٱلَّذِيٓ أَوۡحَيۡنَآ إِلَيۡكَ وَهُمۡ يَكۡفُرُونَ بِٱلرَّحۡمَٰنِۚ قُلۡ هُوَ رَبِّي لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيۡهِ تَوَكَّلۡتُ وَإِلَيۡهِ مَتَابِ ﴿30﴾

३०. उसी तरह हम ने आप को उस उम्मत में भेजा है, जिस से पहले बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं कि आप उन्हें हमारी तरफ़ से जो वहयी (प्रकाशना) आप पर उतरी है पढ़कर सुनाईए, यह अल्लाह मेहरबान के नकारने वाले हैं।[2] (आप) कह दीजिये कि मेरा रब तो वही है, उस के सिवाय बेशक कोई भी इबादत के लायक़ नहीं, उसी के ऊपर मेरा भरोसा है और उसी की तरफ़ मेरा रुजूअ है।

وَلَوۡ أَنَّ قُرۡءَانٗا سُيِّرَتۡ بِهِ ٱلۡجِبَالُ أَوۡ قُطِّعَتۡ بِهِ ٱلۡأَرۡضُ أَوۡ كُلِّمَ بِهِ ٱلۡمَوۡتَىٰۗ بَل لِّلَّهِ ٱلۡأَمۡرُ جَمِيعًاۗ أَفَلَمۡ يَاْيۡـَٔسِ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ أَن لَّوۡ يَشَآءُ ٱللَّهُ لَهَدَى ٱلنَّاسَ جَمِيعٗاۗ وَلَا يَزَالُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ تُصِيبُهُم بِمَا صَنَعُوا۟ قَارِعَةٌ أَوۡ تَحُلُّ قَرِيبٗا مِّن دَارِهِمۡ حَتَّىٰ يَأۡتِيَ وَعۡدُ ٱللَّهِۚ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُخۡلِفُ ٱلۡمِيعَادَ ﴿31﴾

३१. और अगर (मान लिया जाये कि) कुरआन के ज़रिये पहाड़ चला दिये जाते या धरती टुकड़े-टुकड़े कर दी जाती या मुर्दों से बातें करा दी जातीं (फिर भी वह ईमान न लाते) बात यह है कि सब काम अल्लाह के हाथ में है तो क्या ईमान वालों का इस बात पर दिल नही जमता कि अगर अल्लाह तआला चाहे तो सभी लोगों को हिदायत दे दे। काफ़िर को तो उन के कुफ्र के बदले हमेशा ही कोई न कोई सख़्त सज़ा पहुँचती रहेगी या उन के मकानों के आसपास उतरती रहेगी, यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आ पहुँचे, बेशक अल्लाह तआला वादा तोड़ा नही करता।

---

[1] طوبى के कई मतलब बताये गये हैं। जैसे सवाब, पाक, मोजिज़ा, मुक़ाबिला, जन्नत में ख़ास पेड़ या मुक़र्रर जगह वग़ैरह। मतलब सभी का एक है यानी स्वर्ग में सब से अच्छा मक़ाम और उसकी सुख-सुविधा (नेमतें)।

[2] मक्का के मूर्तिपूजक 'रहमान' (कृपानिधि) लफ़्ज़ से बहुत भड़कते थे, हुदैबिया की सुलह के मौक़ा पर जब बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम के कलिमा लिखे गये तो उन्होंने कहा कि 'रहमान' (कृपानिधि) और रहीम (दयालु) क्या है ? हम नहीं जानते। (इब्ने कसीर)

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَأَمْلَيْتُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿32﴾

३२. और बेशक आप से पहले के पैग़म्बरों के साथ मज़ाक किया गया था और मैंने भी क़ाफ़िरों को ढील दी थी, फिर उन्हें पकड़ लिया था तो मेरा अज़ाब कैसा रहा?

أَفَمَنْ هُوَ قَائِمٌ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ قُلْ سَمُّوهُمْ أَمْ تُنَبِّئُونَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ أَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوا عَنِ السَّبِيلِ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿33﴾

३३. तो क्या वह अल्लाह जो ख़बर लेने वाला है हर इंसान का उसके किये हुए अमल पर, और उन लोगों ने अल्लाह के साझीदार ठहराये हैं, कह दीजिये ज़रा उनके नाम तो लो, या तुम अल्लाह को वह बातें बताते हो जो वह धरती पर जानता ही नहीं, या केवल ऊपरी-ऊपरी बातें बना रहे हो,[1] बात हक़ीक़त यह है कि कुफ़्र करने वालों के लिए उन के छल भले ही सुझाये गये हैं, और वे सच्चे रास्ते से रोक दिये गये हैं, और जिसे अल्लाह भटका दे उसे रास्ता दिखाने वाला कोई नही।

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَقُّ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ ﴿34﴾

३४. उन के लिये दुन्यिावी ज़िन्दगी में भी दुख है, और आख़िरत (परलोक) का अज़ाब तो बहुत सख़्त है, और उन्हें अल्लाह के ग़ज़ब से बचाने वाला कोई नहीं।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ أُكُلُهَا دَائِمٌ وَظِلُّهَا تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوْا وَعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ ﴿35﴾

३५. उस जन्नत की मिसाल जिसका वादा परहेज़गारों को किया गया है यह है कि उस के नीचे नहरें बह रही हैं, उसके फल हमेशा रहने वाले हैं और उस की छाया भी, यह है बदला परहेज़गारों का और काफ़िरों का अंजाम नरक है।

وَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَفْرَحُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَحْزَابِ مَنْ يُنْكِرُ بَعْضَهُ قُلْ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ إِلَيْهِ أَدْعُو وَإِلَيْهِ مَآبِ ﴿36﴾

३६. और जिन्हें हम ने किताब अता की है वे तो जो कुछ आप पर उतारा जाता है उस से ख़ुश होते हैं, और दूसरे सम्प्रदाय (फ़िरक़े) उस की कुछ बातों को क़ुबूल नहीं करते हैं, आप एलान कर दीजिये कि मुझे तो केवल यही हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूं और

---

[1] यहाँ ظاهر (ज़ाहिर) कल्पना के मतलब में है, यानी यह केवल उनकी ख़्याली बातें हैं। मतलब यह है कि तुम इन मूर्तियों की पूजा इस ख़्याल से करते हो कि ये लाभ-हानि पहुँचा सकती हैं और तुम ने उन के नाम भी देवता रखे हुए हैं। अगरचे ये नाम तुम्हारे और तुम्हारे बुज़ुर्गों के रखे हुए हैं, जिनका कोई सुबूत अल्लाह ने नाज़िल नहीं किया, ये केवल ख़्याल और मनमानी करते हैं। (सूर: अल-नज्म-२३)

उस के साथ साझीदार न बनाऊँ, मैं उसी की तरफ़ दावत दे रहा हूँ और उसी की तरफ़ मेरा ठिकाना होना है।

३७. और इसी तरह हम ने इस क़ुरआन को अरबी भाषा का फ़रमान उतारा है,[1] और अगर आप ने उनकी इच्छाओं (ख़्वाहिशों) की पैरवी की इसके बावजूद कि आप के पास इल्म आ चुका है तो अल्लाह (के अज़ाबों) से आप का न हिमायती मिलेगा और न हिफ़ाज़त करने वाला।[2]

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ۭ وَلَىِٕنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَاۗءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاۗءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ﴿37﴾

३८. और हम आप से पहले भी बहुत से रसूल भेज चुके हैं और हम ने उन सब को बीवी और औलाद वाला बनाया था, किसी रसूल से नहीं हो सकता कि कोई निशानी बिना अल्लाह की मर्ज़ी के ले आये, हर मुक़र्रर वादे की एक किताब है।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ۭ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ﴿38﴾

३९. अल्लाह जो चाहे मिटा दे और जो चाहे महफ़ूज़ रखे, सुरक्षित किताब (लौहे महफ़ूज़) उसी के पास है।[3]

يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَاۗءُ وَيُثْبِتُ ښ وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ الْكِتٰبِ ﴿39﴾

४०. और उन से किये हुए वादों में से कोई अगर हम आप को दिखा दें या आप को हम मौत दे दें, तो आप पर केवल पहुँचा देना ही है, हिसाब तो हमें लेना है।

وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴿40﴾

---

[1] यानी जिस तरह से आप के पहले के रसूलों पर भी स्थानीय भाषा (मक़ामी ज़बान) में किताबें नाज़िल की गयीं उसी तरह आप पर क़ुरआन हम ने अरबी भाषा में उतारा है, इसलिए कि आप के पहले सम्बोधित (मुख़ातब) अरबी लोग हैं, जो केवल अरबी भाषा ही जानते हैं, अगर यह क़ुरआन किसी दूसरी भाषा में नाज़िल होता तो यह इनकी समझ से ऊपर होता और हिदायत हासिल करने में इन के लिये बहाना हो जाता, हम नें क़ुरआन को अरबी भाषा में नाज़िल करके यह बहाना भी दूर कर दिया।

[2] यह हक़ीक़त में मुसलमानों के दीनी इल्म रखने वालों को तंबीह है कि वे संसार के वक़्ती लाभ के लिये क़ुरआन और हदीस के साफ़ फ़रमान की तुलना में लोगों की ख़्वाहिशों के पीछे न लगें, अगर वह ऐसा करेंगे तो उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचाने वाला कोई नहीं होगा।

[3] इसका एक मतलब तो यह है कि वह जिस आदेश को चाहे मिटा दे और जिसे चाहे बाक़ी रखे। दूसरा मतलब यह कि उस ने जो तक़दीर में लिख रखा है उस में वह बदलता रहता है, उस के पास लौहे महफ़ूज़ है जिसकी तसदीक़ कुछ हदीसों से होती है।

४१. क्या वे नहीं देखते कि हम धरती को उस के किनारों से घटाते चले आ रहे हैं ? अल्लाह हुक्म करता है और कोई उस के हुक्म को पीछे डालने वाला नहीं, वह जल्द हिसाब लेने वाला है।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ (41)

४२. और उन से पहले के लोगों ने भी अपने छल-कपट में कमी न की थी लेकिन सभी व्यवस्था (तदबीर) अल्लाह ही की हैं, जो इंसान कुछ कर रहा है अल्लाह के इल्म में है, काफ़िरों को अभी मालूम हो जायेगा कि उस लोक (आख़िरत) का बदला किस के लिये है।

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ الْمَكْرُ جَمِيعًا ۖ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۗ وَسَيَعْلَمُ الْكُفَّارُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ (42)

४३.और यह काफ़िर कहते हैं कि आप अल्लाह के रसूल नहीं। (आप) जवाब दीजिये कि मुझ में और तुममें अल्लाह गवाही देने वाला काफ़ी है, और वह जिसके पास किताब का इल्म है।[1]

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلًا ۚ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الْكِتَابِ (43)

सूरतु इब्राहीम-१४

سُورَةُ إِبْرَاهِيمَ

सूरः इब्राहीम मक्का में उतरी और इसकी बावन आयतें हैं और सात रुकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

१. अलिफ़•लाम•रा•, यह (सब से अच्छी) किताब हम ने आप की तरफ़ उतारी है कि आप लोगों को अंधेरे से उजाले की तरफ़ लायें उन के रब के हुक्म से, ज़बरदस्त तारीफ़ वाले अल्लाह के रास्ते की तरफ़।

الر ۚ كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَىٰ صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ (1)

[1] किताब से मुराद हक़ीक़ी किताब है, और मुराद तौरात और इंजील का इल्म है, यानी अहले किताब में वे लोग जो मुसलमान हो गये हैं, जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम, सलमान फ़ारसी और तमीम दारी वग़ैरह ।यानी यह भी जानते हैं कि मैं अल्लाह का रसूल हूं, अरब के मूर्तिपूजक ख़ास मसलों में अहले किताब से सवाल करते और उन से पूछते थे, अल्लाह तआला ने उनको हिदायत अता किया कि अहले किताब जानते हैं, उन से तुम पूछ लो। कुछ आलिम कहते हैं कि किताब से मुराद क़ुरआन है और किताब का इल्म रखने वाले मुसलमान हैं, और कुछ आलिमों ने किताब से मुराद लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तक) लिया है।

اللّٰهِ الَّذِیْ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ وَوَیْلٌ لِّلْكٰفِرِیْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِیْدِ ۙ﴿2﴾

२. जिस अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों और धरती में है, और काफ़िरों (नाशुक्रों) के लिये सख़्त अज़ाब की मुसीबत है।

الَّذِیْنَ یَسْتَحِبُّوْنَ الْحَیٰوةَ الدُّنْیَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَیَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَیَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ اُولٰٓئِكَ فِیْ ضَلٰلٍۭ بَعِیْدٍ ﴿3﴾

३. जो आख़िरत (परलोक) के मुक़ाबले में दुनियावी ज़िन्दगी का मोह करते हैं और अल्लाह की राह से रोकते हैं और उस में टेढ़ापन पैदा करना चाहते हैं, यही लोग परले दर्जे की गुमराही में हैं।

وَمَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِیُبَیِّنَ لَهُمْ ؕ فَیُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ یَّشَآءُ وَیَهْدِیْ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿4﴾

४. और हम ने हर नबी (संदेशवाहक) को उसकी क़ौमी (राष्ट्रीय) भाषा में ही भेजा है ताकि उन के सामने वाज़ेह तौर से बयान कर दे, अब अल्लाह जिसे चाहे भटका दे, और जिसे चाहे रास्ता दिखा दे, वह ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰیٰتِنَاۤ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ۬ وَذَكِّرْهُمْ بِاَیّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿5﴾

५. (याद करो जब कि) हम ने मूसा को अपनी निशानियाँ देकर भेजा कि तू अपनी क़ौम को अंधेरे से उजाले में निकाल, और उन्हें अल्लाह के उपकार (एहसान) याद दिला,[1] इस में निशानियाँ हैं हर सब्र करने वाले के लिये।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَیْكُمْ اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ یَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَیُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَیَسْتَحْیُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِیْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِیْمٌ ﴿6﴾

६. और जिस वक़्त मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह के वे नेमत याद करो जो उस ने तुम पर की हैं, जबकि उसने तुम्हें फ़िरऔन के साथियों से आज़ाद किया जो तुम्हें बहुत दुख पहुँचाते थे, तुम्हारे बेटों को क़त्ल करते थे और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दा छोड़ते थे, इस में तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर बहुत बड़ी आज़माइश थी।

وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِیْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِیْ لَشَدِیْدٌ ﴿7﴾

७. और जब तुम्हारे रब ने तुम्हें आगाह कर दिया कि अगर तुम शुक्रिया अदा करोगे तो बेशक मैं तुम्हें ज़्यादा अता करूँगा, और अगर तुम नाशुक्रे होगे तो निश्चय मेरा सख़्त अज़ाब है।

[1] ایام اللہ से मुराद अल्लाह के वे उपकार (एहसान) हैं जो इस्राईल की औलाद पर किये गये, जिनका तफ़सीली बयान पहले कई बार आ चुका है। या ایام وقائع घटनाओं के माने में है यानि वे घटनायें उन को याद दिला जिन से ये गुज़र चुके हैं, जिन में अल्लाह तआला के ख़ास एहसान हुए जिन में से कुछ का बयान यहाँ पर आ रहा है।

८. और मूसा ने कहा कि अगर तुम सब और धरती पर रहने वाले सभी लोग अल्लाह की नाशुक्री करें तो भी अल्लाह महान (बेनियाज़) और तारीफ़ वाला है।

وَقَالَ مُوسَىٰٓ إِن تَكْفُرُوٓا۟ أَنتُمْ وَمَن فِى ٱلْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ ٱللَّهَ لَغَنِىٌّ حَمِيدٌ ⑧

९. क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पहले के लोगों की ख़बर नहीं आई? यानी नूह की क़ौम की और आद और समूद की, और उन के बाद वालों की जिन्हें अल्लाह के सिवाय दूसरा कोई नहीं जानता उन के पास उन के रसूल मोजिज़े (चमत्कार) लाये, लेकिन वे अपने हाथ अपने मुंह में फेर ले गये[1] और वाज़ेह तौर से कह दिया कि जो कुछ तुम्हें देकर भेजा गया है हम उसे नही मानते हैं, और जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमें दावत दे रहे हो हमें तो उस में बहुत बड़ा शक है (हमें यक़ीन नहीं)।

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا۟ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَٱلَّذِينَ مِنۢ بَعْدِهِمْ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا ٱللَّهُ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِٱلْبَيِّنَٰتِ فَرَدُّوٓا۟ أَيْدِيَهُمْ فِىٓ أَفْوَٰهِهِمْ وَقَالُوٓا۟ إِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ أُرْسِلْتُم بِهِۦ وَإِنَّا لَفِى شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَنَآ إِلَيْهِ مُرِيبٍ ⑨

१०. उन के रसूलों ने उन से कहा कि क्या अल्लाह (जो सच है) उस के बारे में शक है जो आकाशों और धरती का पैदा करने वाला है, वह तो तुम्हें इसलिये बुला रहा है ताकि वह तुम्हारे सारे गुनाह माफ़ कर दे, और एक मुक़र्रर वक़्त तक तुम्हें मौक़ा अता करे, उन्होंने कहा कि तुम तो हम जैसे ही इंसान हो, तुम चाहते हो कि हम को उन देवताओं की पूजा से रोक दो जिनकी पूजा हमारे बुज़ुर्ग करते रहे, अच्छा तो कोई हमारे सामने वाज़ेह दलील पेश करो।[2]

قَالَتْ رُسُلُهُمْ أَفِى ٱللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى قَالُوٓا۟ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا تُرِيدُونَ أَن تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ ءَابَآؤُنَا فَأْتُونَا بِسُلْطَٰنٍ مُّبِينٍ ⑩

[1] मुफ़स्सिरों ने इस के कई मानों का ज़िक्र किया है। १- जैसे उन्होंने अपने हाथ अपने मुंह में रख लिये और कहा कि हमारा तो केवल एक ही जवाब है कि हम तुम्हारी रिसालत को क़ुबूल नही करते हैं। २- उन्होंने अपनी उंगलियों से अपने मुंह की तरफ़ इशारा कर के कहा कि होशियार रहो और ये जो पैग़ाम लेकर आये हैं उन की तरफ़ रुजूअ न करो। ३- उन्होंने अपने हाथ मुंह पर मज़ाक़ और ताज्जुब से रख लिये, जिस तरह से एक इंसान हंसी दबाने के लिये ऐसा करता है। ४- उन्होंने अपने हाथ रसूलों के मुंह पर रख कर कहा चुप रहो। ५- ग़ुस्सा और जलन के सबब अपने हाथ अपने मुंह में ले लिये।

[2] निशानियां और मोजिज़े हर नबी के साथ होते थे, इस से मुराद ऐसी दलील और मोजिज़ा है,

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِنْ نَّحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ وَمَا كَانَ لَنَآ أَنْ نَّأْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ⑪

११. उन के पैग़म्बरों ने उन से कहा कि यह तो सच है कि हम तुम जैसे इंसान हैं, लेकिन अल्लाह (तआला) अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है अपनी कृपा करता है,[1] अल्लाह के हुक्म के बिना हमारी ताक़त नहीं कि हम कोई मोजिज़ा तुम्हें ला दिखायें, और ईमानवालों को केवल अल्लाह (तआला) पर भरोसा रखना चाहिये।

وَمَا لَنَآ أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ۭ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ۭ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ⑫

१२. और आख़िरकार क्या सबब है कि हम अल्लाह (तआला) पर भरोसा न रखें, जबकि उसी ने हमें हमारा रास्ता दिखाया है, और जो दुख तुम हमें दोगे हम उन पर यक़ीनन सब्र ही करेंगे, भरोसा रखने वालों को यही मुनासिब है कि अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिये।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ أَرْضِنَآ أَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ۭ فَأَوْحٰٓى إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ⑬

१३. और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा कि हम तुम्हें देश से निकाल देंगे या तुम फिर से हमारे धर्म में लौट आओ, तो उन के रब ने उनकी ओर वह्यी (प्रकाशना) भेजी कि हम उन ज़ालिमों का ही नाश कर देंगे।

وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۭ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ ⑭

१४. और उस के बाद हम ख़ुद तुम्हें धरती पर बसायेंगे, यह है उन के लिये जो मेरे सामने खड़े होने से डर रखें और मेरी चेतावनी (तंबीह) से डरते रहें।

وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ⑮

१५. और उन्होंने निर्णय (फ़ैसला) माँगा, और सभी सरकश अड़ियल लोग नाकाम हो गये।

مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ ⑯

१६. उसके सामने नरक है जहाँ उन्हें पीप का पानी पिलाया जायेगा।[2]

जिसे देखने की उनकी इच्छा होती थी, जैसे मक्का के मूर्तिपूजकों ने रसूलुल्लाह ﷺ से कई तरह के मोजिज़े दिखाने की माँग की थी, जिसका बयान सूरः बनी इस्राईल में आयेगा।

[1] रसूलों ने पहले संदेहों का जवाब दिया कि बेशक हम तुम जैसे इंसान ही हैं, लेकिन तुम्हारा यह समझना ग़लत है कि इंसान रसूल नहीं हो सकता। अल्लाह तआला इंसानों की हिदायत के लिये इंसानों में से ही कुछ इंसानों को वह्यी (प्रकाशना) और रिसालत के लिये चुन लेता है और तुम सभी में से यह उपकार (इन्आम) अल्लाह ने हम पर किया है।

[2] صَدِيْدٌ पीप या वह ख़ून है जो नरक में जाने वालों के गोश्त और खालों से बहा होगा। कुछ

يَتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿17﴾

१७. जिसे तक्लीफ़ से घूँट-घूँट पियेगा, फिर भी उसे गले से उतार न सकेगा और उसे हर जगह से मौत आती दिखायी देगी, लेकिन वह मरने वाला नहीं, फिर उस के पीछे सख़्त अज़ाब है।

مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ِۨاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿18﴾

१८. उन लोगों की मिसाल जिन्होंने अपने रब से कुफ़्र किया उन के आमाल (कर्म) उस राख की तरह हैं जिस पर तेज़ हवा आँधी वाले दिन चले, जो भी उन्होंने किया उस में से किसी चीज़ पर समर्थ (क़ादिर) न होंगे, यही दूर का भटकाव है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿19﴾

१९. क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह तआला ने आकाशों को और धरती को सर्वश्रेष्ठ प्रबन्ध (तदबीर) से पैदा किया है, अगर वह चाहे तो तुम सब को तबाह कर दे और नई सृष्टि (मख़लूक़) ले आये।

وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿20﴾

२०. और अल्लाह पर यह काम कुछ भी कठिन नहीं।

وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿21﴾

२१. और सब के सब अल्लाह के सामने खड़े होंगे,[1] उस वक़्त कमज़ोर लोग घमन्ड वालों से कहेंगे कि हम तो तुम्हारे ताबेदार थे तो क्या तुम अल्लाह के अज़ाबों से कुछ अज़ाब हम से दूर कर सकने वाले हो, वे जवाब देंगे कि अगर अल्लाह हमें हिदायत देता तो हम भी तुम्हें हिदायत देते, अब तो हम पर बेक़रारी और

हदीसों में इसे «عُصَارَةُ أهلِ النَّار» (मुसनद अहमद हिस्सा ५, पेज १७१) (नरकवासियों के शरीर से निचोड़ा हुआ) और कुछ हदीसों में है कि यह इतना गर्म और उबलता हुआ होगा कि उन के मुँह के निकट पहुँचते ही उन के चेहरे की खाल झुलस कर गिर पड़ेगी और एक घूँट पीते ही पेट की आँतें पाख़ाना के रास्ते से निकल पड़ेंगी। أعاذنا الله منه

[1] यानी सभी महशर के मैदान (फ़ैसले वाले दिन जहाँ सभी जमा होंगे) में अल्लाह के सामने होंगे, कोई कहीं छिप नही सकेगा।

सब्र रखना दोनों बराबर है, हमारे लिये कोई छुटकारा नहीं।

وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ۭ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ۭ اِنِّىْ كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ۭ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ (22)

२२. और जब काम का फ़ैसला कर दिया जायेगा तो शैतान कहेगा कि अल्लाह ने तो तुम्हें सच वादा दिया था और मैंने तुम को जो वादा दिया उस के ख़िलाफ़ किया, मेरा कोई दबाव तुम पर तो था ही नहीं, हाँ मैंने तुम्हें पुकारा और तुम ने मेरी मान ली, अब तुम मुझ पर इल्ज़ाम न लगाओ, बल्कि ख़ुद अपने आप को धिक्कारो, न मैं तुम्हारी मदद कर सकता और न तुम मेरी फ़रियाद को पहुँचने वाले, मैं तो (शुरू से) मानता ही नहीं कि तुम मुझे इस से पहले अल्लाह (तआला) का साझीदार समझते रहे, बेशक ज़ालिमों के लिये दुखदायी अज़ाब हैं।

وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۭ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ (23)

२३. और जो लोग ईमान लाये और नेकी के काम किये वे उन स्वर्गों (जन्नतों) में दाख़िल किये जायेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं जहाँ वे हमेशा रहेंगे अपने रब के हुक्म से,[1] जहाँ उनका ख़ैर मक़दम (स्वागत) सलाम ही सलाम से होगा।[2]

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَاۗءِ (24)

२४. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) ने पाक बात की मिसाल (उदाहरण) एक पाक (पवित्र) पेड़ जैसा बयान किया जिसकी जड़ मज़बूत है और जिसकी शाखायें आकाश में हैं।

---

[1] यह बुरे लोगों और काफ़िरों के मुक़ाबले में परहेज़गारों और ईमान वालों का बयान है, इनका बयान उन के साथ इसलिये किया गया है कि ताकि लोगों के अन्दर ईमान के काम अपनाने की रूचि और ख़्वाहिश पैदा हो।

[2] यानी आपस में उनका स्वागत एक-दूसरे को सलाम करना होगा, इस के सिवाय फ़रिश्ते भी हर दरवाज़े से दाख़िल करके उन्हें सलाम करेंगे।

२५. जो अपने रब के हुक्म से हर वक्त अपने फल लाता है[1] और अल्लाह (तआला) लोगों के सामने मिसालों को बयान करता है ताकि वे नसीहत हासिल करें।

تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍۢ بِاِذْنِ رَبِّهَا ۭ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿25﴾

२६. और ख़बीस बात की तुलना गन्दे पेड़ जैसी है जो धरती के कुछ ही ऊपर से उखाड़ लिया गया, उसे कुछ ठहराव तो है नहीं।[2]

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِۨ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ﴿26﴾

२७. ईमानवालों को अल्लाह (तआला) पक्की बात के साथ क़ायम रखता है, दुनियावी ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में भी। हाँ ज़ालिम इंसानों को अल्लाह (तआला) भटका देता है, और अल्लाह जो चाहे कर डाले।

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ڐ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَاۗءُ ﴿27﴾

२८. क्या आप ने उनकी तरफ़ नज़र नहीं डाली, जिन्होंने अल्लाह की नेमत के बदले नाशुक्री ज़ाहिर की और अपनी क़ौम को तबाही के घर में ला उतारा।[3]

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿28﴾

२९. यानी नरक में जिस में यह सब जायेंगे जो बुरा ठिकाना है।

جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۭ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿29﴾

---

[1] इसका मतलब यह है कि ईमानवालों की मिसाल उस पेड़ जैसा है जो गर्मी और सर्दी हर मौसम में फल देता है। इसी तरह ईमानवालों के नेकी के काम रात-दिन के हर पल में आकाश की तरफ़ ले जाये जाते हैं, «पाक कलिमा» से इस्लाम या لا إله إلا الله और पाक पेड़ से खजूर का पेड़ मुराद है जैसाकि हदीस से साबित है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल इल्म, बाबुल फ़हम फ़िलइल्म और सहीह मुस्लिम, किताबुल सिफ़ातिल कियाम:, बाब मिस्लुल मोमिन मिस्लुल नख़्ल:)

[2] «बुरे वाक्य» से मुराद कुफ़्र और 'बुरे पेड़' से इन्द्रायन का पेड़ मुराद है जिसकी जड़ धरती के ऊपर ही होती है और ज़रा इशारे से उखड़ जाती है, यानी काफ़िर के अमल की कोई क़ीमत नहीं है, न वे आकाश पर जाते हैं और न अल्लाह के दरबार में क़ुबूल होते हैं।

[3] इसकी तफ़सीर सहीह बुख़ारी में है कि इस से मुराद मक्का के काफ़िर हैं। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: इब्राहीम) जिन्होंने मोहम्मद ﷺ की रिसालत की मुख़ालफ़त करके बद्र की जंग में मुसलमानों से लड़ा कर अपने लोगों को क़त्ल करवा डाला था।

३०. और उन्होंने अल्लाह के बराबर बना लिये कि लोगों को अल्लाह के रास्ते से भटकायें। (आप) कह दीजिये कि ठीक है मज़ा उड़ा लो तुम्हारा मुक़ाम तो आख़िर में नरक ही है।

وَجَعَلُوا لِلّٰهِ أَنْدَادًا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِهِ ۗ قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ﴿30﴾

३१. मेरे ईमान वाले बन्दों से कह दीजिये कि नमाज़ को क़ायम रखें और जो कुछ हम ने उन्हें दे रखा है उस में से कुछ छिपाकर और खुल कर के ख़र्च करते रहें, इस से पहले कि वह दिन आ जाये जिस में न कोई ख़रीदो फ़रोख़्त होगी न दोस्ती और प्रेम।[1]

قُلْ لِعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خِلَالٌ ﴿31﴾

३२. अल्लाह वह है जिस ने आकाशों और धरती को पैदा किया है और आकाशों से बारिश कर के उस के ज़रिये तुम्हारी रोज़ी के लिये फल निकाले हैं और नावों को तुम्हारे बस में कर दिया है कि नदियों में उस के हुक्म से चलें फिरें, उसी ने नदियाँ और नहरें तुम्हारे बस में कर दी हैं।

اللّٰهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَكُمْ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهَارَ ﴿32﴾

३३. उसी ने तुम्हारे लिये सूरज और चाँद को अधीन (मुसख़्ख़र) कर दिया है कि बराबर ही चल रहे हैं, और रात-दिन को भी तुम्हारे काम में लगा रखा है।[2]

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَائِبَيْنِ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿33﴾

३४. और उसी ने तुम्हें तुम्हारी मुँह माँगी सभी चीज़ों में से दे रखा है, अगर तुम अल्लाह की नेमतें गिनना चाहो तो उन्हें पूरा गिन भी नहीं सकते, बेशक इंसान बड़ा ज़ालिम और नाशुक्रा है।

وَآتَاكُمْ مِنْ كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ ۚ وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوهَا ۗ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ ﴿34﴾

---

[1] नमाज़ क़ायम करने का मतलब है कि उसे अपने वक़्त पर और सुन्नत के मुताबिक़ और ख़ुशूअ और विनम्र (मुतवज्जेह) होकर अदा किया जाये जिस तरह से नबी ﷺ की "सुन्नत" है। "इंफाक़" का मतलब है ज़कात अदा करना, क़रीबी रिश्तेदारों के साथ रहम किया जाये और दूसरे ग़रीबो पर उपकार किया जाये, यह नहीं कि अपनी ज़रूरतों और अपने ऊपर ख़ूब ख़र्च किया जाये और अल्लाह के बतलाये हुए मुक़ामों पर ख़र्च करने से बचा जाये। क़यामत का दिन ऐसा होगा जहाँ न ख़रीद-फ़रोख़्त मुमकिन होगी न कोई दोस्ती ही किसी के काम आयेगी।

[2] रात-दिन उनका आपसी अन्तर (फ़र्क़) जारी रहता है, कभी रात-दिन का कुछ हिस्सा लेकर लम्बी हो जाती है और कभी दिन-रात का कुछ हिस्सा लेकर लम्बा हो जाता है, और यह सिलसिला दुनिया की इब्तेदा से चल रहा है, इस में बाल बराबर अन्तर नहीं आया।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَٰهِيمُ رَبِّ ٱجْعَلْ هَٰذَا ٱلْبَلَدَ ءَامِنًا وَٱجْنُبْنِى وَبَنِىَّ أَن نَّعْبُدَ ٱلْأَصْنَامَ ﴿35﴾

३५. (इब्राहीम की यह दुआ भी याद करो) जब इब्राहीम ने कहा हे मेरे रब ! इस नगर को सलामती वाला बना दे,[1] और मुझे और मेरी औलाद को मूर्तिपूजा से महफ़ूज़ रख।

رَبِّ إِنَّهُنَّ أَضْلَلْنَ كَثِيرًا مِّنَ ٱلنَّاسِ ۖ فَمَن تَبِعَنِى فَإِنَّهُۥ مِنِّى ۖ وَمَنْ عَصَانِى فَإِنَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿36﴾

३६. हे मेरे रब! उन्होंने बहुत से लोगों को रास्ते से भटका दिया है, अब मेरा पैरोकार मेरा है और जो नाफ़रमानी करे तो तू बहुत ही माफ़ और रहम करने वाला है।

رَّبَّنَآ إِنِّىٓ أَسْكَنتُ مِن ذُرِّيَّتِى بِوَادٍ غَيْرِ ذِى زَرْعٍ عِندَ بَيْتِكَ ٱلْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ فَٱجْعَلْ أَفْـِٔدَةً مِّنَ ٱلنَّاسِ تَهْوِىٓ إِلَيْهِمْ وَٱرْزُقْهُم مِّنَ ٱلثَّمَرَٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ﴿37﴾

३७. हे मेरे रब ! मैंने अपनी कुछ औलाद इस बंजर जंगल में तेरे पाक घर के क़रीब बसायी है। हे मेरे रब ! यह इसलिये कि वे नमाज़ क़ायम करें[2] इसलिए तू कुछ लोगों के दिलों को उनकी तरफ़ मायेल कर दे, और उन्हें फलों का रिज़्क़ अता कर ताकि ये शुक्रिया अदा करें।

رَبَّنَآ إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِى وَمَا نُعْلِنُ ۗ وَمَا يَخْفَىٰ عَلَى ٱللَّهِ مِن شَىْءٍ فِى ٱلْأَرْضِ وَلَا فِى ٱلسَّمَآءِ ﴿38﴾

३८. हे हमारे रब ! तू अच्छी तरह जानता है जो हम छिपायें और जो ज़ाहिर करें, धरती और आकाश की कोई चीज़ अल्लाह से छिपी नहीं।

ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِى وَهَبَ لِى عَلَى ٱلْكِبَرِ إِسْمَٰعِيلَ وَإِسْحَٰقَ ۚ إِنَّ رَبِّى لَسَمِيعُ ٱلدُّعَآءِ ﴿39﴾

३९. अल्लाह की तारीफ़ है, जिस ने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इसहाक़ अता (प्रदान) किये, बेशक मेरा रब (अल्लाह) दुआओं का सुनने वाला है।

---

[1] "इस नगर" से मुराद मक्का है, दूसरी दुआओं (प्रार्थनाओं) से पहले यह दुआ की कि इसे सलामती वाला बना दे, इसलिये कि सलामती होगी तो लोग दूसरे उपकारों से भी सही तरीक़े से फ़ायदेमंद हो सकेंगे। वर्ना सलामती के बिना सभी सुख-सुविधाओं (ऐशो-आराम) के बावजूद डर, ख़ौफ़ की छाया इंसान को बेचैन और परीशान रखती है।

[2] इबादतों (आराधनाओं) में से केवल नमाज़ की चर्चा किया, जिस से नमाज़ की अहमियत वाज़ेह होती है।

४०. हे मेरे रब! मुझे नमाज़ का पाबन्द रख और मेरी औलाद को भी[1] हे मेरे रब! मेरी दुआ क़ुबूल कर।

رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿40﴾

४१. हे हमारे रब ! मुझे माफ़ी अता कर और मेरे माँ-बाप को भी माफ़ कर दे,[2] और दूसरे ईमानवालों को भी माफ़ कर, जिस दिन हिसाब होने लगे।

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿41﴾

४२. ज़ालिमों के अमलों से अल्लाह को अन्जान न समझ, वह तो उन्हें उस दिन तक मौक़ा दिये हुए है जिस दिन आँखें फटी रह जायेंगी।

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۗ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ﴿42﴾

४३. वे अपने सिर उठाये दौड़ भाग कर रहे होंगे, ख़ुद अपनी तरफ़ भी उनकी नज़र न लौटेगी और उन के दिल उड़े और गिरे हुए (शून्य) होंगे।

مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ﴿43﴾

४४. और लोगों को उस दिन से होशियार कर दे जब कि उन के क़रीब अज़ाब आ जायेगा और ज़ालिम कहेंगे कि हे हमारे रब! हमें बहुत थोड़े क़रीब के वक़्त तक का ही मौक़ा अता कर दे कि हम तेरा निमन्त्रण (दावत) मान लें और तेरे पैग़म्बरों की इत्तेबा में लग जायें, क्या तुम उस से पहले भी क़सम नहीं खा रहे थे कि तुम्हारे लिये दुनिया से टलना ही नहीं।

وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ۗ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ۙ ﴿44﴾

४५. और क्या तुम उन लोगों के घरों में रहते-सहते न थे जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, और क्या तुम पर वह मामला खुला नहीं कि हम ने उन के साथ कैसा कुछ किया? हम ने तो

وَّسَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿45﴾

---

[1] अपने साथ अपनी औलाद के लिये भी दुआ माँगी, जैसे इससे पहले भी अपने साथ अपनी औलाद के लिए भी यह दुआ माँगी कि उन्हें पत्थर की मूर्तियों को पूजने से बचा कर रखना। जिससे मालूम हुआ कि अल्लाह के दीन की तरफ़ दावत देने वालों को अपने घर वालों की हिदायत और उनकी दीनी तालीम और तरबियत की तरफ़ से कभी बेफ़िक्र नहीं होना चाहिए।

[2] हज़रत इब्राहीम ने यह दुआ उस वक़्त की जब कि अभी उन पर अपने बाप का अल्लाह का दुश्मन होना मालूम नहीं हुआ था, जब यह वाज़ेह हो गया कि मेरा बाप अल्लाह का दुश्मन है तो उस से अपने को अलग कर लिया, इसलिये कि मूर्तिपूजक के लिये नजात और माफ़ी की दुआ करना जायेज़ नही, चाहे वह कितना ख़ास और नज़दीकी ही क्यों न हो?

तुम्हारे समझाने को बहुत सी मिसालों को बयान कर दिया।

وَقَدْ مَكَرُوا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكْرُهُمْ ط وَإِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ (46)

४६. और यह अपने चाल चल रहे हैं और अल्लाह को उन की सभी चालों का इल्म है, उनकी चालें ऐसी न थीं कि उन से पहाड़ अपनी जगह से टल जायें।

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلِفَ وَعْدِهِ رُسُلَهُ ط إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ (47)

४७. आप यह कभी ख़्याल न करें कि अल्लाह अपने नबियों से वादा के ख़िलाफ़ करेगा,[1] अल्लाह बड़ा जबरदस्त और बदला लेने वाला है।

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمَاوَاتُ وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ (48)

४८. जिस दिन धरती इस धरती के अलावा दूसरी ही बदल दी जायेगी और आकाशों को भी, और सभी के सभी एक अल्लाह जबरदस्त के सामने होंगे।

وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ (49)

४९. और आप उस दिन मुजरिमों को देखेंगे कि जंजीरों में मिले-जुले एक जगह पर जकड़े होंगे।

سَرَابِيلُهُمْ مِنْ قَطِرَانٍ وَتَغْشَى وُجُوهَهُمُ النَّارُ (50)

५०. उन के कपड़े गन्धक के होंगे और आग उन के मुँह पर चढ़ी होगी।

لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ ط إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ (51)

५१. यह इसलिये कि अल्लाह (तआला) हर इंसान को उसके किये हुए अमल का बदला दे, बेशक अल्लाह (तआला) को हिसाब लेते देर नहीं लगेगी।

هَٰذَا بَلَاغٌ لِلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوا بِهِ وَلِيَعْلَمُوا أَنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ وَلِيَذَّكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ (52)

५२. यह क़ुरआन[2] सभी लोगों के लिए सूचना पत्र है कि इस के ज़रिये वे बाख़बर कर दिये जायें और पूरी तरह से मालूम कर लें कि अल्लाह एक ही इबादत के लायक़ है, और ताकि अक़्लमंद लोग सोच समझ लें।

---

[1] यानी अल्लाह ने अपने रसूलों से दुनिया और आख़िरत में मदद करने का जो वादा किया है वह बेशक सच है, उस से वादे की मुख़ालफ़त मुमकिन नहीं।

[2] यह इशारा क़ुरआन की तरफ़ है या पिछले तफ़सीलात की तरफ़ जो «ولا تحسبن الله غافلا» से बयान किया गया है।

سُوْرَةُ الْحِجْرِ

सूरतुल हिज्र-१५

सूर: अल-हिज्र मक्का में उतरी और इसकी निन्नानवे आयतें हैं और छः रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ①

१. अलिफ़॰ लाम॰ रा॰, यह (अल्लाह की) किताब की आयतें हैं और खुले और वाज़ेह क़ुरआन की।

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ②

२. वह भी वक़्त होगा जब काफ़िर अपने मुसलमान होने की कामना करेंगे।

ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ③

३. आप उन्हें खाता, फ़ायदे उठाने और (झूठी) उम्मीदों में लीन (मशग़ूल) होता छोड़ दें, वह ख़ुद अभी जान लेंगे।

وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ④

४. और किसी बस्ती को हम ने हलाक नहीं किया, लेकिन यह कि उस के लिए निर्धारित (मुक़र्ररा) लेख था।

مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ⑤

५. कोई गुट अपनी मौत से न आगे बढ़ता है, न पीछे रहता है।[1]

وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ⑥

६. और उन्होंने कहा कि हे वह इंसान! जिस के ऊपर क़ुरआन उतारा गया है, बेशक तू तो कोई दीवाना है।

لَوْ مَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ⑦

७. अगर तू सच्चा ही है तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नही लाता?

---

[1] जिस बस्ती को भी हम नाफ़रमानी के सबब हलाक करते हैं तो जल्दी नहीं करते, बल्कि हम ने एक वक़्त मुक़र्रर कर रखा है, उस समय तक उस बस्ती वालों को मौक़ा दिया जाता है, लेकिन जब वह मुक़र्रर वक़्त आ जाता है तो उन्हें बरबाद कर दिया जाता है फिर वह उस से आगे या पीछे नहीं होते।

مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ⑧

८. हम फ़रिश्तों को सच के साथ ही उतारते हैं और उस वक़्त वे अवसर दिये गये नहीं होते ।[1]

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ⑨

९. बेशक हम ने ही इस क़ुरआन को उतारा है और हम ही इस के मुहाफ़िज़ हैं ।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ⑩

१०. और हम ने आप से पहले की क़ौमों में भी अपने रसूल (लगातार) भेजे ।

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑪

११. और (लेकिन) जो भी रसूल (संदेशवाहक) आता, उस का वे मज़ाक उड़ाते ।

كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ⑫

१२. पापियों के दिलों में हम इसी तरह यही रचा दिया करते हैं ।

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ⑬

१३. वे इस पर ईमान नहीं लाते और बेशक पहले के लोगों का तरीक़ा (गुज़रा) हुआ है ।

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ⑭

१४. और अगर हम उन पर आकाश में दरवाज़े खोल भी दें और ये वहाँ चढ़ने लग जायें।

لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ⑮

१५. जब भी वे यही कहेंगे कि हमें नज़रबंद कर दिया गया है, बल्कि हम लोगों पर जादू कर दिया गया है ।

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ⑯

१६. और बेशक हम ने आकाश में बुर्जे बनाये हैं, और देखने वालों के लिए इसे शोभामान (मुज़य्यन) किया है ।

وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ⑰

१७. और उसे हर धिक्कारे शैतान से महफ़ूज़ रखा है ।[2]

---

[1] अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि फ़रिश्ते हम हक़ के साथ ही भेजते हैं, यानी जब हमारी हिक्मत और मर्ज़ी अज़ाब भेजने की होती है तो फिर फ़रिश्ते धरती पर उतरते हैं, और फिर वे अवसर (मुहलत) नहीं दिये जाते तुरन्त नाश कर दिये जाते हैं ।

[2] مرجوم ، رجيم के माना में है पत्थर मारना । शैतान को रजीम इसलिए कहा गया है कि यह जब भी आकाश की तरफ़ जाने की कोशिश करता है तो आकाश से 'शहाब साक़िब' (उल्का) उस

إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ مُّبِينٌ ﴿18﴾

१८. हाँ, जो चोरी छुपे सुनने की कोशिश करे उस के पीछे खुला शोला लगता है।[1]

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُونٍ ﴿19﴾

१९. और धरती को हम ने फैला दिया है और उस पर पहाड़ डाल रखे हैं, और उस में हम ने हर चीज़ निश्चित मात्रा (तादाद) में उगा दी है।

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَن لَّسْتُمْ لَهُ بِرَازِقِينَ ﴿20﴾

२०. और उसी में हम ने तुम्हारी रोज़ियाँ बना दी हैं, और जिन्हें तुम रिज़्क देने वाले नहीं हो।

وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا عِندَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنَزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ﴿21﴾

२१. और जितनी भी चीज़ें हैं, सबका ख़ज़ाना हमारे पास है,[2] और हम हर चीज़ को उस के निर्धारित (मुतअय्यन) मात्रा में उतारते हैं।

وَأَرْسَلْنَا الرِّيَاحَ لَوَاقِحَ فَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا أَنتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ﴿22﴾

२२. और हम बोझल हवायें[3] भेजते हैं फिर आकाश से बारिश करके तुम्हें पिलाते हैं, और तुम उसका भण्डार (ज़ख़ीरा) करने वाले नहीं हो।

وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ﴿23﴾

२३. और हम ही जिलाते और मारते हैं और (आख़िरकार) हम ही वारिस हैं।

पर टूट कर गिर पड़ते हैं, फिर रजीम धिक्कारे और बुरे के माना में भी इस्तेमाल होता है, क्योंकि जिसे पत्थरों से मारा जाता है, उसे हर तरफ़ से धिक्कारा और बुरा भी कहा जाता है। यहाँ अल्लाह तआला ने यही फ़रमाया है कि हम ने आकाशों की हिफ़ाज़त की है हर शैतान रजीम से, यानी इन सितारों के ज़रिये, क्योंकि ये शैतान को मारते हैं और उसे भागने पर मजबूर कर देते हैं।

[1] इसका मतलब यह है कि शैतान आकाशों पर बातें सुनने के लिए जाते हैं, जिन पर "शहाब साकिब" (उल्का) टूट कर गिरते हैं, जिन से कुछ तो जल जाते हैं और कुछ बच जाते हैं और कुछ सुन आते हैं।

[2] कुछ आलिमों ने خزائن से मुराद बारिश लिया है, क्योंकि बारिश ही पैदावार का ज़रिया है, लेकिन ज़्यादा सही बात यह है कि इस से मुराद सभी मुमकिन ख़ज़ाना हैं, जिन्हें अल्लाह तआला अपनी मर्ज़ी और हिक्मत की बिना पर अदम से वजूद में लाता रहता है।

[3] हवा को बोझल इसलिए कहा गया है कि यह उन बादलों को उठाती हैं जिनमें पानी होता है। जिस तरह لاقحة गर्भवती ऊँटनी को कहा जाता है जो गर्भ में बच्चा उठाये होती है।

२४. और तुम में से आगे बढ़ने वाले और पीछे हटने वाले भी हमारे इल्म में हैं।	وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِيْنَ ﴿24﴾
२५. और आप का रब सब लोगों को जमा करेगा, बेशक वह बड़ा हकीम बड़े इल्म वाला है।	وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۚ إِنَّهُ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿25﴾
२६. और बेशक हम ने इंसान को खनखनाती (सूखी) मिट्टी से, जो कि सड़े हुए गारे की थी, पैदा किया है।	وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿26﴾
२७. और उस से पहले जिन्नात को हम ने लौ (ज्वाला) वाली आग[1] से पैदा किया।	وَالْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ﴿27﴾
२८. और जब तेरे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं एक इंसान को काली सड़ी हुई खनखनाती मिट्टी से पैदा करने वाला हूं।	وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ إِنِّيْ خَالِقٌ ۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿28﴾
२९. तो जब मैं उसे पूरा बना चुकूं और उस में अपनी रूह फूंक दूं तो तुम सब उस के लिए सज्दा कर देना।[2]	فَإِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿29﴾
३०. इसलिए सभी फ़रिश्तों ने सब के सब ने माथा टेक दिया।	فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُوْنَ ﴿30﴾
३१. लेकिन इब्लीस, कि उस ने सज्दा करने वालों में शामिल होने से इंकार कर दिया।	إِلَّآ إِبْلِيْسَ ۭ أَبٰٓى أَنْ يَّكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ ﴿31﴾
३२. (अल्लाह तआला ने) कहा, हे इब्लीस! तुझे क्या हुआ कि तू सज्दा करने वालों में शामिल न हुआ?	قَالَ يٰٓإِبْلِيْسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ ﴿32﴾

[1] جِنٌّ को جن इसलिए कहा जाता है कि वह आँखों से दिखाई नहीं देते।

[2] सज्दा का यह हुक्म सम्मान स्वरूप (ताज़ीम के लिए) था, इबादत के तौर में नहीं और चूंकि यह अल्लाह का हुक्म था इसलिए इस के मान्य होने में कोई शक नहीं, लेकिन अब इस्लामी धार्मिक नियम में किसी को सम्मान स्वरूप भी सज्दा करना जायेज़ नहीं।

३३. वह बोला कि मैं ऐसा नहीं कि इस इंसान को सज्दा करूँ जिसे तूने काली और सड़ी हुई खनखनाती मिट्टी से पैदा किया है।[1]

قَالَ لَمْ أَكُن لِّأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿33﴾

३४. कहा कि अब तू जन्नत से निकल जा क्योंकि तू धिक्कारा हुआ है।

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿34﴾

३५. और तुझ पर मेरी लानत है क़यामत के दिन तक।

وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ﴿35﴾

३६. कहने लगा हे मेरे रब ! मुझे उस दिन तक मौक़ा अता कर कि लोग दोबारा उठा खड़े किये जायें।

قَالَ رَبِّ فَأَنظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿36﴾

३७. कहा कि (ठीक है) तू उन में से है, जिन्हें मौक़ा दिया गया है।

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿37﴾

३८. मुक़र्रर दिन के वक़्त तक का।

إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿38﴾

३९. (शैतान ने) कहा कि हे मेरे रब ! तूने मुझे भटकाया है, मुझे भी क़सम है कि मैं भी धरती में उन के लिए मोह पैदा करूँगा और उन सबको भटकाऊँगा।

قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿39﴾

४०. सिवाय तेरे उन बन्दों के जो चुन कर लिये गये हैं।

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿40﴾

४१. कहा कि हाँ यही मुझ तक पहुँचने का सीधा रास्ता है।

قَالَ هَٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿41﴾

४२. मेरे बन्दों पर तेरा कोई असर नहीं, लेकिन हाँ जो भटके हुए लोग तेरी इत्तेबा करेंगे।

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿42﴾

४३. और बेशक उन सब के वादे का मुक़ाम जहन्नम है।

وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿43﴾

[1] शैतान ने क़ुबूल न करने का सबब हज़रत आदम का मिट्टी और इंसान होना बताया, जिसका मतलब यह हुआ कि इंसान को उस के इंसान होने के सबब हीन समझना यह शैतान का (विचार) ख़्याल है जो मोमिनों का ईमान नहीं हो सकता।

४४. जिसके सात दरवाजे हैं, हर दरवाजे के लिए उनका एक हिस्सा बँटा हुआ है।[1]

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ ۖ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ﴿44﴾

४५. बेशक परहेज़गार लोग बाग़ों और चश्मों में होंगे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿45﴾

४६. (उन से कहा जायेगा) सलामती और अमन के साथ उस में दाख़िल हो जाओ।

ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ آمِنِينَ ﴿46﴾

४७. और उन के दिलों में जो कुछ भी कीना और रंजिश थी हम सब कुछ निकाल देंगे, वे भाई-भाई बने हुए एक-दूसरे के सामने सिंहासन पर बैठे होंगे।

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿47﴾

४८. न तो वहाँ उन्हें कोई दुख छू सकता है और न वह वहाँ से कभी निकाले जायेंगे।

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُم مِّنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿48﴾

४९. मेरे बन्दों को ख़बर कर दो कि मैं बहुत माफ़ करने वाला और बहुत रहम करने वाला हूँ।

نَبِّئْ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿49﴾

५०. और साथ ही मेरे अज़ाब भी बहुत दुखदायी हैं।

وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ﴿50﴾

५१. और उन्हें इब्राहीम के मेहमानों का (भी) हाल सुना दो।

وَنَبِّئْهُمْ عَن ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ﴿51﴾

५२. कि जब उन्होंने उस के पास आकर सलाम किया, तो उस ने कहा कि हम को तो तुम से डर लगता है।[2]

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا مِنكُمْ وَجِلُونَ ﴿52﴾

---

[1] यानी हर दरवाजे ख़ास तरह के लोगों के लिए मुक़र्रर होंगे, जैसे एक दरवाजे मूर्तिपूजकों के लिए, एक नास्तिकों के लिए, एक काफ़िरों के लिए, एक बदकारों, ब्याज खाने वालों, चोरों और डाकूओं के लिए आदि, या सात दरवाज़ों से मुराद सात तह और दर्जे हैं।

[2] हज़रत इब्राहीम عليه السلام को इन फ़रिश्तों से डर इसलिए हुआ कि उन्होंने हज़रत इब्राहीम का तैयार किया भुना हुआ बछड़े का गोश्त नहीं खाया, जैसाकि सूर: हूद में बयान हो चुका है। इस से मालूम हुआ कि अल्लाह तआला के अज़ीम पैग़म्बर को भी (छिपी बातों) ग़ैब का इल्म नहीं होता, अगर उन्हें ग़ैब का इल्म होता तो हज़रत इब्राहीम समझ जाते कि आने वाले मेहमान

५३. उन्होंने कहा डर न करो, हम तुम्हे एक इल्म वाले लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं।

قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَٰمٍ عَلِيمٍ (53)

५४. कहा क्या इस बुढ़ापे के छू लेने के बाद तुम मुझे ख़ुशख़बरी देते हो ! ये ख़ुशख़बरी तुम कैसे दे रहे हो?

قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي عَلَىٰٓ أَن مَّسَّنِيَ ٱلْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُونَ (54)

५५. उन्होने कहा, हम आप को बिल्कुल सच्ची ख़ुशख़बरी सुनाते हैं, आप मायूस लोगों में शामिल न हों।

قَالُوا بَشَّرْنَٰكَ بِٱلْحَقِّ فَلَا تَكُن مِّنَ ٱلْقَٰنِطِينَ (55)

५६. कहा अपने रब की रहमत से मायूस तो केवल (भटके और) बहके हुए लोग ही होते हैं।

قَالَ وَمَن يَقْنَطُ مِن رَّحْمَةِ رَبِّهِۦٓ إِلَّا ٱلضَّآلُّونَ (56)

५७. पूछा कि हे अल्लाह के भेजे हुए (फ़रिश्तो)! तुम्हारा ऐसा क्या ख़ास काम है?[1]

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا ٱلْمُرْسَلُونَ (57)

५८. उन्होंने जवाब दिया कि हम पापी लोगों की ओर भेजे गये हैं।

قَالُوٓا إِنَّآ أُرْسِلْنَآ إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ (58)

५९. लेकिन लूत का परिवार कि हम उन सब को जरूर बचा लेंगे।

إِلَّآ ءَالَ لُوطٍ إِنَّا لَمُنَجُّوهُمْ أَجْمَعِينَ (59)

६०. सिवाय लूत की पत्नी के कि हम ने उसे रुकने और बाक़ी रह जाने वालों में मुक़र्रर कर दिया है।

إِلَّا ٱمْرَأَتَهُۥ قَدَّرْنَآ إِنَّهَا لَمِنَ ٱلْغَٰبِرِينَ (60)

६१. जब भेजे हुए फ़रिश्ते लूत परिवार के पास पहुँचे।

فَلَمَّا جَآءَ ءَالَ لُوطٍ ٱلْمُرْسَلُونَ (61)

६२. तो लूत ने कहा तुम लोग तो कुछ अंजान से मालूम होते हो।

قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنكَرُونَ (62)

(अतिथि) फ़रिश्ते हैं और उन के लिए खाना तैयार करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि फ़रिश्ते को इंसानों की तरह खाने-पीने की जरूरत नहीं है।

[1] हजरत इब्राहीम ने इन फ़रिश्तों की बातचीत से यह अंदाजा लगाया कि यह सिर्फ़ औलाद की ख़ुशख़बरी देने ही नहीं आये हैं, बल्कि उन के आने की असल वजह कुछ और है, इसलिए उन्होंने पूछा।

६३. उन्होंने कहा (नहीं) बल्कि हम तेरे पास वह चीज लाये हैं, जिस में ये लोग शक कर रहे थे।

قَالُوا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَمْتَرُونَ ﴿63﴾

६४. और हम तो तेरे पास (वाजेह) सच लेकर आये हैं और हम हैं भी पूरे सच्चे।

وَأَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصٰدِقُونَ ﴿64﴾

६५. अब तू अपने परिवार के साथ इस रात के किसी हिस्से में चल दे, तू ख़ुद उन के पीछे रहना, (और होशियार)! तुम में से कोई भी मुड़ कर न देखे और जहाँ का हुक्म तुम्हें किया जा रहा है वहाँ चले जाना।

فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبٰرَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنكُمْ أَحَدٌ وَامْضُوا حَيْثُ تُؤْمَرُونَ ﴿65﴾

६६. और हम ने उसकी तरफ़ इस बात का फ़ैसला कर दिया कि सुबह होते-होते उन सबकी जड़ें काट दी जायेंगी।

وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذٰلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هٰؤُلَاءِ مَقْطُوعٌ مُّصْبِحِينَ ﴿66﴾

६७. और शहरी लोग ख़ुशियाँ मनाते हुए आये।

وَجَاءَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿67﴾

६८. (लूत ने) कहा ये लोग मेरे मेहमान हैं तुम मुझे ज़लील न करो।

قَالَ إِنَّ هٰؤُلَاءِ ضَيْفِي فَلَا تَفْضَحُونِ ﴿68﴾

६९. और अल्लाह (तआला) से डरो और मुझे अपमानित न करो।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُونِ ﴿69﴾

७०. वे बोले कि क्या हम ने तुम्हें संसार भर (की ठीकेदारी) लेने से मना नहीं कर रखा ?

قَالُوا أَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِينَ ﴿70﴾

७१. (लूत ने) कहा अगर तुम्हें करना ही है तो ये मेरी बेटियाँ हाज़िर हैं।[1]

قَالَ هٰؤُلَاءِ بَنَاتِي إِن كُنتُمْ فٰعِلِينَ ﴿71﴾

७२. तेरी उम्र की क़सम! वे तो अपने नशे में फिर रहे थे।[2]

لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿72﴾

---

[1] यानी तुम उन से विवाह कर लो या अपने क़ौम की औरतों को बेटियाँ कहा, यानी तुम औरतों के साथ विवाह करो या जो विवाहित हैं उन्हें ख़्वाहिश की तकमील अपनी पत्नियों से करनी चाहिए।

[2] अल्लाह तआला नबी ﷺ को मुख़ातिब कर के उनके जीवन की क़सम खा रहा है, जिस से आप ﷺ की फ़ज़ीलत और इज़्ज़त की वज़ाहत हो रही है, लेकिन दूसरे किसी के लिए अल्लाह के

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ﴿73﴾

७३. फिर सूरज निकलते निकलते उन्हें एक कड़ी आवाज ने पकड़ लिया।

فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿74﴾

७४. आख़िर हम ने उस (नगर) को ऊपर नीचे कर दिया और उन लोगों पर कंकड़ वाले पत्थर बरसाये।

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿75﴾

७५. बेशक हर एक शिक्षा हासिल करने वालों के लिए इस में बहुत-सी निशानियाँ हैं।

وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ﴿76﴾

७६. और यह बस्ती ऐसे रास्ते पर है, जिस पर लगातार यातायात होती रहती है।[1]

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿77﴾

७७. और इस में ईमानवालों के लिए बड़ी निशानी है।

وَاِنْ كَانَ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ﴿78﴾

७८. और ऐक: बस्ती के रहने वाले भी बड़े जालिम थे।[2]

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿79﴾

७९. जिन से आख़िर में हम ने बदला ले ही लिया, ये दोनों नगर खुले (आम) रास्ते पर हैं।

وَلَقَدْ كَذَّبَ اَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿80﴾

८०. और हिज्र वालों ने भी रसूलों को झुठलाया।[3]

सिवाय दूसरे किसी की क़सम खाना जायेज नहीं है। अल्लाह तआला तो पूरा मालिक है, वह जिसकी चाहे क़सम खाये, उस से कौन पूछने वाला है ? अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जिस तरह शराब के नशे में धुत्त इंसान की अक़्ल ख़राब हो जाती है, उसी तरह यह अपनी बुराई और भटकावे में इतने मस्त थे कि हजरत लूत की इतनी ठीक बात भी उनकी समझ में नहीं आ पायी।

[1] मुराद ख़ास रास्ता है, यानी लूत की क़ौम की बस्तियाँ मदीने से सीरिया जाते वक़्त रास्ते में पड़ती हैं। हर मुसाफ़िर को उन्हीं रास्ते से होकर गुजरना पड़ता है, कहते हैं ये पाँच बस्तियाँ थीं: सदूम, (यह केन्द्रीय बस्ती थी) साअब:, साव:, असर: और दूमा।

[2] ایکۃ घने पेड़ को कहते हैं, इस बस्ती में घने पेड़ होंगे, इसलिए उन्हें اصحاب الایکۃ (वन या जंगल वाले) कहा गया है। मुराद उससे शुऐब की उम्मत है और उनका जमाना हजरत लूत के बाद का है और उनका इलाक़ा मदीना और सीरिया के दरम्यान लूत की उम्मत की बस्तियों के क़रीब था, इसे मदयन कहा जाता है।

[3] حجر हजरत सालेह की क़ौम समूद की बस्तियों का नाम था, उन्हें اصحاب الحجر कहा गया है,

८१. और उन्हें हम ने अपनी निशानियाँ अता की थीं, लेकिन फिर भी वे उन से गर्दन मोड़ने वाले ही रहे।

وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿81﴾

८२. और ये लोग अपने घर पहाड़ों से काट-काट कर बना लिया करते थे बिना डर के।

وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ﴿82﴾

८३. आख़िर में उन्हें भी सुबह होते-होते कड़ी चीख़ (आवाज़) ने आ दबोचा।

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ﴿83﴾

८४. इसलिए उन की किसी तरकीब और अमल ने उन्हें कोई फ़ायेदा न दिया।

فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿84﴾

८५. और हम ने आकाशों और धरती को और उनके बीच की सभी चीज़ों को हक़ के साथ ही बनाया है,[1] और क़यामत ज़रूर-ज़रूर आने वाली है, बस तू ख़ूबी और अच्छाई से सहन कर ले।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ۭ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ﴿85﴾

८६. बेशक तेरा रब ही पैदा करने वाला और जानने वाला है।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿86﴾

८७. और बेशक हम ने आप को सात आयतें दे रखी हैं[2] जो दुहराई जाती हैं, और महान (अज़ीम) क़ुरआन भी दे रखा है।

وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿87﴾

यह बस्ती मदीना और तबूक के दरम्यिान थी, उन्होंने अपने पैग़म्बर हज़रत स्वालेह को झुठलाया, लेकिन यहां अल्लाह तआला ने फ़रमाया : "उन्होंने पैग़म्बरों को झुठलाया।" यह इसलिए है कि एक पैग़म्बर का झुठलाना वैसे ही है जैसे सारे पैग़म्बरों को झुठलाया।

[1] सच से मुराद वे फ़ायदे और हित हैं जो आकाश और धरती के बनाने का मक़सद है, या सच से मुराद नेक लोगों को उसके नेक अमल का बदला और बुरे लोगों को उनके बुरे अमल की सज़ा देना है। जिस तरह एक दूसरे मुक़ाम पर फ़रमाया : "अल्लाह ही के लिए है जो आकाशों में है और जो धरती में है ताकि वह बुरों को उनकी बुराईयों और नेक लोगों को उन के नेक अमल का बदला दे।" (सूर: अल-नजम-३१)

[2] سبع مثاني से मुराद क्या है ? इस में मुफ़स्सिरों में इख़्तिलाफ़ है, सही बात तो यह है कि इस से मुराद सूर: फ़ातिहा है, यह सात आयतें हैं और जो हर नमाज़ की हर रकअत में पढ़ी जाती हैं।

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿88﴾

८८. आप कभी अपनी आंखें इस बात की ओर न दौड़ायें जिसे हम ने उन में से कई तरह के लोगों को अता की है, न उन पर आप ग़म करें और ईमानवालों के लिए अपनी बाँह झुकाये रहें।

وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ﴿89﴾

८९. और कह दीजिए कि मैं स्पष्टरूप (वाज़ेह तौर) से डराने वाला हूँ।

كَمَا أَنزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ ﴿90﴾

९०. जैसाकि हम ने उन तक़सीम करने वालों पर उतारा।

الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ﴿91﴾

९१. जिन्होंने इस क़ुरआन के टुकड़े-टुकड़े कर दिये।

فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿92﴾

९२. क़सम है तेरे रब की! हम उन सब से ज़रूर पूछ करेंगे।

عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿93﴾

९३. हर उस चीज की जो वह करते थे।

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿94﴾

९४. बस आप[1] इस हुक्म को जो आप को किया जा रहा है खोल कर सुना दीजिए और मुशरिकों से मुँह फेर लीजिए।

إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ﴿95﴾

९५. आप से जो लोग मज़ाक करते हैं उनके (सज़ा) के लिए हम काफ़ी हैं।

الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿96﴾

९६. जो अल्लाह के साथ दूसरे देवता (माबूद) बनाते हैं, उन्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ﴿97﴾

९७. और हमें अच्छी तरह मालूम है कि उनकी बातों से आप का दिल तंग होता है।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُن مِّنَ السَّاجِدِينَ ﴿98﴾

९८. आप अपने रब की बड़ाई और तारीफ़ का बयान करते रहें, और सिर झुकाने वालों में शामिल हो जायें।

---

[1] فاصدع का मतलब वाज़ेह करके बयान करना, इस आयत के नाज़िल होने से पहले आप ﷺ छुपकर दीन की तब्लीग करते थे, इस के बाद आप ﷺ ने वाज़ेह तौर से दीन की दावत-तब्लीग करना शुरू कर दिया। (फ़तहुल क़दीर)

وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَأْتِيَكَ الْيَقِيْنُ (99)

९९. और अपने रब की इबादत करते रहें यहाँ तक कि आप को मौत आ जाये।

سُوْرَةُ النَّحْلِ

सूरतुन नहल-१६

सूरः नहल मक्का में उतरी और इसकी एक सौ अटठाईस आयतें और सोलह रूकअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ (1)

१. अल्लाह (तआला) का हुक्म आ पहुँचा, अब इसकी जल्दी न मचाओ, सारी पाकीज़गी उस के लिए है वह सब से बड़ा है उन सब से जिन्हें ये अल्लाह के क़रीब साझा बतलाते हैं।

يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اَنْ اَنْذِرُوْۤا اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاتَّقُوْنِ (2)

२. वही फ़रिश्तों को अपनी वह्यी (प्रकाशना) देकर अपने हुक्म के ज़रिये अपने बंदों में से जिस पर चाहता है उतारता है, कि तुम लोगों को बाख़बर कर दो कि मेरे सिवाय दूसरा कोई इबादत के लायक़ नहीं, इसलिए तुम मुझ से डरो।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ (3)

३. उसी ने आकाशों और धरती को सच्चाई के साथ पैदा किया, वह उस से बुलन्द है जो मुशरिक (मिश्रणवादी) करते हैं।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ (4)

४. उस ने इंसानों को वीर्य (नुतफ़ा) से पैदा किया फिर वह खुला झगड़ालू बन बैठा।

وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ (5)

५. उसी ने जानवर पैदा किये, जिन में तुम्हारे लिए गर्मी के कपड़े हैं, और दूसरे भी बहुत-से फ़ायदे हैं, और कुछ तुम्हारे खाने के काम आते हैं।

وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ (6)

६. और उन में तुम्हारी शोभा (रौनक) भी है, जब चराकर लाओ तब भी और जब चराने ले जाओ तब भी।

وَتَحۡمِلُ اَثۡقَالَكُمۡ اِلٰى بَلَدٍ لَّمۡ تَكُوۡنُوۡا بٰلِغِيۡهِ اِلَّا بِشِقِّ الۡاَنۡفُسِ ؕ اِنَّ رَبَّكُمۡ لَرَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ۙ﴿7﴾

७. और वह तुम्हारे बोझ उन नगरों तक उठाकर ले जाते हैं जहाँ तुम बिना आधी जान किये पहुँच नहीं सकते थे, बेशक तुम्हारा रब बड़ा ही शफ़ीक़ और बहुत रहम करने वाला है।

وَّالۡخَيۡلَ وَالۡبِغَالَ وَالۡحَمِيۡرَ لِتَرۡكَبُوۡهَا وَزِيۡنَةً ؕ وَيَخۡلُقُ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿8﴾

८. और घोड़ों को, खच्चरों को, गधों को (उस ने पैदा किया) ताकि तुम उनको सवारी के साधन के रूप में इस्तेमाल में ले आओ और वे ज़ीनत का ज़रिया भी हैं, दूसरे भी वह ऐसी चीज़ें पैदा करता है जिन का तुम्हें इल्म भी नहीं ।[1]

وَعَلَى اللّٰهِ قَصۡدُ السَّبِيۡلِ وَمِنۡهَا جَآئِرٌ ؕ وَلَوۡ شَآءَ لَهَدٰٮكُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ﴿9﴾

९. और अल्लाह पर सीधा रास्ता बता देना है, और कुछ टेढ़े रास्ते हैं, और अगर वह चाहता तो तुम सब को सीधे रास्ते पर लगा देता ।

هُوَ الَّذِىۡۤ اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّـكُمۡ مِّنۡهُ شَرَابٌ وَّمِنۡهُ شَجَرٌ فِيۡهِ تُسِيۡمُوۡنَ ﴿10﴾

१०. वही तुम्हारे फ़ायदे के लिए आकाश से बारिश करता है, जिसे तुम पीते भी हो और उसी से उगे हुए पेड़ों को तुम अपने जानवरों को चराते हो ।

يُنۡۢبِتُ لَـكُمۡ بِهِ الزَّرۡعَ وَالزَّيۡتُوۡنَ وَالنَّخِيۡلَ وَالۡاَعۡنَابَ وَمِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰ لِكَ لَاٰيَةً لِّقَوۡمٍ يَّتَفَكَّرُوۡنَ ﴿11﴾

११. इसी से वह तुम्हारे लिए खेती और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और हर तरह के फल उगाता है । बेशक फ़िक्र करने वाले लोगों के लिए तो इस में बड़ी निशानियाँ हैं ।

وَسَخَّرَ لَـكُمُ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوۡمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمۡرِهٖ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰ لِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ۙ﴿12﴾

१२. और उसी ने रात-दिन और सूरज और चाँद को तुम्हारी सेवा में लगा रखा है और सितारे भी उसी के हुक्म के अधीन (ताबे) हैं । बेशक इस में अक़्ल वालों के लिए कई तरह की निशानियाँ मौजूद हैं ।

---

[1] धरती के निचले हिस्से में, इसी तरह समुद्र में, निर्जल मरूस्थल (सहरा) में और जंगलों में अल्लाह तआला जानदार पैदा करता है, जिनका इल्म अल्लाह तआला के सिवाय किसी को नहीं और उसी में इंसान की बनाई चीज़ें भी आ जाती हैं जो अल्लाह तआला की दी हुई अक़्ल और इरादा को इस्तेमाल करते हुए उसी की पैदा की हुई कई चीज़ों को कई तरह से जोड़कर बनाता है, जैसे बस, कार, रेलगाड़ी, जहाज़ और वायुयान, और इसी तरह की बेशुमार चीज़ें और जो मुस्तक़बिल में भी आती रहेंगी ।

وَمَا ذَرَاَ لَكُمۡ فِى الۡاَرۡضِ مُخۡتَلِفًا اَلۡوَانُهٗ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوۡمٍ يَّذَّكَّرُوۡنَ ﴿13﴾

१३. और दूसरे भी (तरह-तरह की) चीजें कई रंग-रूप की उसने तुम्हारे लिए धरती में फैला रखी हैं। बेशक नसीहत हासिल करने वालों के लिए इस में बड़ी भारी निशानियाँ हैं।

وَهُوَ الَّذِىۡ سَخَّرَ الۡبَحۡرَ لِتَاۡكُلُوۡا مِنۡهُ لَحۡمًا طَرِيًّا وَّتَسۡتَخۡرِجُوۡا مِنۡهُ حِلۡيَةً تَلۡبَسُوۡنَهَا ۚ وَتَرَى الۡـفُلۡكَ مَوَاخِرَ فِيۡهِ وَلِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِهٖ وَلَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ﴿14﴾

१४. और समुद्र भी उसी ने तुम्हारे वश में कर दिये हैं कि तुम इस में से निकला हुआ ताजा गोश्त खाओ और उस में से अपने पहनने के लिए जेवर निकाल सको, और तुम देखोगे कि नवकायें इस में पानी चीरती हुई (चलती) हैं और इसलिए भी कि तुम उस के फ़ज़्ल की खोज करो, और हो सकता है कि तुम शुक्रिया भी अदा करो।[1]

وَاَلۡقٰى فِى الۡاَرۡضِ رَوَاسِىَ اَنۡ تَمِيۡدَ بِكُمۡ وَاَنۡهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمۡ تَهۡتَدُوۡنَ ﴿15﴾

१५. और उस ने धरती पर पहाड़ गाड़ दिये हैं ताकि तुम्हें लेकर न हिले,[2] और नदियाँ और रास्ते बना दिये ताकि तुम मक़सद तक पहुँचो।

وَعَلٰمٰتٍ ؕ وَبِالنَّجۡمِ هُمۡ يَهۡتَدُوۡنَ ﴿16﴾

१६. दूसरी भी बहुत-सी निशानियाँ (मुक़र्रर की), और सितारों से भी लोग रास्ता हासिल करते हैं।

اَفَمَنۡ يَّخۡلُقُ كَمَنۡ لَّا يَخۡلُقُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوۡنَ ﴿17﴾

१७. तो क्या वह जो पैदा करे उस जैसा है जो पैदा नहीं कर सकता? क्या तुम कभी नहीं सोंचते?

---

[1] इसमें समुद्र की तेज धाराओं को इंसान के अधीन (ताबे) कर देने के बयान के साथ, उसके तीन फ़ायदे भी बयान किये गये हैं। एक यह कि उस से मछली के रूप में ताजा गोश्त खाते हो (और मछली मरी भी हो तब भी हलाल है। यहाँ तक कि एहराम की हालत में भी उसका शिकार हलाल है) दूसरे उस से तुम मोती, सीपियाँ, (जवाहरात) निकालते हो। तीसरे उस में तुम नाव और जहाज चलाते हो, जिन के ज़रिये तुम एक देश से दूसरे देश जाते हो, तिजारती सामान भी लाते ले जाते हो, जिस से तुम्हें अल्लाह की नेमतें हासिल होती हैं, जिस पर तुम्हें अल्लाह का शुक्रगुज़ार होना चाहिए।

[2] यह पहाड़ों का फ़ायेदा बयान किया जा रहा है, और अल्लाह का एक बड़ा एहसान भी, क्योंकि अगर धरती हिलती रहती तो धरती पर रहना ही नामुमकिन होता, इसका अंदाजा उन भूकम्पों से लगाया जा सकता है जो पल या कुछ देर के लिए आते हैं, लेकिन किस तरह ऊँचे-ऊँचे घरों को गिरा कर नगरों को खण्डहर में बदल देते हैं।

وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللهِ لَا تُحْصُوهَا ۗ
إِنَّ اللهَ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ (18)

१८. और अगर तुम अल्लाह की नेमतों का हिसाब करना चाहो तो तुम उसे नहीं कर सकते । बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला रहम करने वाला है ।

وَاللهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ (19)

१९. और जो कुछ तुम छिपाओ या ज़ाहिर करो, अल्लाह सब कुछ जानता है ।

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللهِ
لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَّهُمْ يُخْلَقُونَ ۗ (20)

२०. और जिन-जिन को ये लोग अल्लाह (तआला) के सिवाय पुकारते हैं, वे किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते, बल्कि वे ख़ुद पैदा किये हुए हैं ।

أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَاءٍ ۖ وَمَا يَشْعُرُونَ ۙ
أَيَّانَ يُبْعَثُونَ (21)

२१. मुर्दा हैं ज़िन्दा नहीं, उन्हें तो यह भी मालूम नहीं कि कब उठाये जायेंगे ।

إِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
قُلُوبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُونَ (22)

२२. तुम सभी का माबूद सिर्फ़ अल्लाह (तआला) अकेला है और आख़िरत पर ईमान न रखने वालों के दिल मुन्कर (भ्रष्ट) हैं और वे ख़ुद गर्व (तकब्बुर) से भरे हुए हैं ।

لَا جَرَمَ أَنَّ اللهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۗ
إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ (23)

२३. बेशक अल्लाह (तआला) हर उस चीज़ को जिसको वे छिपाते हैं और जिसे ज़ाहिर करते हैं अच्छी तरह जानता है । वह घमंडियों को पसन्द नहीं करता ।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَّاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوا
أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۙ (24)

२४. और उन से जब पूछा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या उतारा है, तो जवाब देते हैं कि पहलों की कथायें हैं ।

لِيَحْمِلُوا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ وَمِنْ
أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ
أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ (25)

२५. (इसी का नतीजा होगा) कि क़यामत के दिन ये लोग अपने पूरे बोझ के साथ ही उनके बोझ के भी भागीदार होंगे जिन्हें बिना इल्म के भटकाते रहे, देखो तो कैसा बुरा बोझ उठा रहे हैं ।

قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَتَى اللهُ بُنْيَانَهُمْ
مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ
وَأَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ (26)

२६. उन से पहले के लोगों ने भी छल किया था, (आख़िर में) अल्लाह ने उन के (साजिश के) घरों को जड़ों से उखाड़ दिया और उनके (सिरों पर) छतें ऊपर से गिर पड़ीं और उनके पास अज़ाब वहाँ से आ गया जहाँ का उन्हें ध्यान और ख़्याल भी न था ।

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿27﴾

२७. फिर क़यामत के दिन भी अल्लाह (तआला) उन्हें रुस्वा करेगा और कहेगा कि मेरे वे साझीदार कहाँ हैं जिन के बारे में तुम लड़ते-झगड़ते थे, जिन्हें इल्म दिया गया था वे जवाब देंगे कि आज तो काफ़िरों को अपमान और बुराई चिमट गयी।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۪ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿28﴾

२८. वह जो अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं, फ़रिश्ते जब उनकी जान निकालने लगते हैं तो उस वक़्त वे झुक जाते हैं कि हम बुराई नहीं करते थे, क्यों नहीं? अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानने वाला है जो कुछ तुम करते थे।

فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿29﴾

२९. तो अब तुम सदा के लिए नरक के दरवाज़ों (से नरक) में प्रवेश करो,[1] तो क्या ही बुरी जगह है घमंड करने वालों की।

وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوْا خَيْرًا ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ؕ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿30﴾

३०. और परहेज़गारों से सवाल किया जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या नाज़िल किया है तो वह जवाब देते हैं कि अच्छे से अच्छा। जिन लोगों ने नेक काम किये उन के लिए इस दुनिया में भलाई है, और बेशक आख़िरत का घर तो बहुत अच्छा है, और क्या ही अच्छा परहेज़गारों का घर है।

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ ؕ كَذٰلِكَ يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿31﴾

३१. सदा रहने वाले बाग़ में वे जायेंगे जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जो वह माँग करेंगे वहाँ उन के लिए मौजूद होंगी, परहेज़गारों को अल्लाह ऐसे ही बदला अता करता है।

[1] इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि उनकी मौत के बाद तुरन्त उनकी रूहें नरक में चली जाती हैं, और उन की लाश क़ब्र (समाधि) में रहती है जहाँ अल्लाह अपनी क़ुदरत से जिस्म और रूह में दूरी होते हुए भी एक तरह का लगाव पैदा करके अज़ाब देता है, तथा सुबह-शाम उन पर आग पेश की जाती है, फिर जब क़यामत आयेगी तो उनकी रूह उनके जिस्मों में फिर आ जायेंगी और वे सदा के लिए नरक में डाल दिये जायेंगे।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ ۙ يَقُوْلُوْنَ
سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ﴿32﴾

३२. वे जिनकी जान फरिश्ते ऐसी हालत में निकालते हैं कि वह पाक-साफ हों, कहते हैं कि तुम्हारे लिये सलामती ही सलामती है अपने उन अमलों के बदले जन्नत में जाओ जो तुम कर रहे थे।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ
اَمْرُ رَبِّكَ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَمَا
ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿33﴾

३३. क्या यह इसी बात का इंतेजार कर रहे हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आ जायें या तेरे रब का हुक्म आ जाये? ऐसा ही उन लोगों ने भी किया जो इन से पहले थे, उन पर अल्लाह (तआला) ने कोई ज़ुल्म नही किया बल्कि वह ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते रहे।

فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ
مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿34﴾

३४. तो उन के बुरे कामों का बुरा बदला उन्हें मिल गया और जिसका मजाक़ उड़ाते थे, उस ने उन को घेर लिया।[1]

وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ
دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ
دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ
فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿35﴾

३५. और मुशरिकों ने कहा कि अगर अल्लाह (तआला) चाहता तो हम और हमारे बाप-दादा उसके सिवाय दूसरे की इबादत न करते न उसके हुक्म के बिना किसी चीज को हराम करते, यही अमल उन से पहले के लोगों का रहा तो रसूलों पर तो केवल खुला पैग़ाम पहुँचा देना है।

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا
اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى
اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا
فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿36﴾

३६. और हम ने हर उम्मत में रसूल भेजे कि (लोगो)! केवल अल्लाह की इबादत (उपासना) करो, और तागूत (उस के सिवाय सभी झूठे माबूद) से बचो, तो कुछ लोगों को अल्लाह ने हिदायत अता किया और कुछ पर गुमराही साबित हो गई, अब तुम ख़ुद धरती पर सैर करके देख लो कि झुठलाने वालों का फल कैसा हुआ।

[1] यानी जब रसूल उनसे कहते कि अगर तुम उन पर ईमान नही लाओगे तो अल्लाह का अज़ाब आ जायेगा, तो ये मजाक के तौर पर कहते कि जा अपने अल्लाह से कह दे कि वह अज़ाब भेज कर हमें बरबाद कर दे, इसलिए उस अज़ाब ने उन्हें घेर लिया जिसका वह मजाक़ करते थे, फिर उस से बचाव का कोई रास्ता उन के पास नही रहा।

إِن تَحْرِصْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَن يُضِلُّ ۖ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿37﴾

३७. अगर आप उन के हिदायत के इच्छुक (ख़्वाहिशमंद) रहे हैं लेकिन अल्लाह (तआला) उसे हिदायत नहीं देता है जिसे भटका दे, और न कोई उनका मददगार होता है।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَن يَمُوتُ ۚ بَلَىٰ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿38﴾

३८. और वे लोग बहुत बड़ी-बड़ी क़सम खाकर कहते हैं कि मरे हुए लोगों को अल्लाह (तआला) ज़िन्दा नहीं करेगा, क्यों नहीं, (ज़रूर ज़िन्दा करेगा) यह तो उसका सच्चा वादा है, लेकिन ज़्यादातर लोग नादानी कर रहे हैं।

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يَخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَاذِبِينَ ﴿39﴾

३९. इसलिए भी कि ये लोग जिस बात में इख़्तिलाफ़ करते थे, उसे अल्लाह (तआला) साफ़ बयान कर दे और इसलिए भी कि काफ़िर ख़ुद अपना झूठा होना जान लें।

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَن نَّقُولَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿40﴾

४०. हम जब किसी चीज़ का इरादा करते हैं तो केवल हमारा इतना कह देना होता है कि हो जा बस वह हो जाती है।

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِن بَعْدِ مَا ظُلِمُوا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿41﴾

४१. और जिन लोगों ने ज़ुल्म सहन करने के बाद अल्लाह के रास्ते में देश छोड़ा है हम उन्हें सब से अच्छी जगह दुनिया में अता करेंगे, और आख़िरत का बदला तो बहुत बड़ा है, काश ! लोग इस से वाक़िफ़ होते।

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿42﴾

४२. वे जिन्होंने सब्र किया और अपने रब पर ही भरोसा करते रहे।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِمْ ۚ فَاسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿43﴾

४३. और आप से पहले भी हम मर्दों को ही भेजते रहे जिनकी ओर वह्यी (प्रकाशना) उतारा करते थे, अगर तुम नहीं जानते तो विद्वानों (इल्म वालों) से पूछ लो।[1]

---

[1] أهل الذكر से मुराद अहले किताब हैं जो पिछले नबियों और उनकी तारीख़ से वाक़िफ़ थे। मतलब यह है कि हम ने जितने भी रसूल भेजे वे इंसान ही थे, इसीलिए मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ भी अगर इंसान हैं तो यह कोई नई बात नहीं कि तुम उन के इंसान होने के सबब उनकी रिसालत का इंकार कर दो, अगर शक हो तो तुम अहले किताब से पूछ लो कि गुज़रे ज़माने में सभी नबी इंसान थे या फ़रिश्ते, अगर वे फ़रिश्ते थे तो बेशक इंकार कर देना, अगर वे भी सभी इंसान थे तो फिर मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ की रिसालत का सिर्फ़ इंसान होने के सबब इंकार क्यों?

بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ۗ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ (44)

४४. निशानियों और किताबों के साथ, यह ज़िक्र (किताब) हम ने आप की तरफ़ उतारी है कि लोगों की तरफ़ जो उतारा गया है आप उसे वाज़ेह तौर से बयान कर दें, शायद कि वे सोच विचार करें।

اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ (45)

४५. बुरा छल-कपट करने वाले क्या इस बात से बेख़ौफ़ हो गये हैं कि अल्लाह (तआला) उन्हें धरती में धंसा दे या उन के पास ऐसी जगह से अज़ाब आ जाये, जहां का उन्हें शक और ख़्याल भी न हो।

اَوْ يَاْخُذَهُمْ فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ (46)

४६. या उनको चलते-फिरते पकड़ ले, यह किसी तरह से भी अल्लाह (तआला) को मजबूर नहीं कर सकते।

اَوْ يَاْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ ۗ فَاِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ (47)

४७. या उन्हें डरा-धमका कर पकड़ ले, फिर बेशक तुम्हारा रब बड़ा करूणाकारी (शफ़ीक़) और बड़ा रहीम है।

اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمْ دٰخِرُوْنَ (48)

४८. क्या उन्होंने अल्लाह की मख़लूक़ में से किसी को भी नहीं देखा कि उसकी छाया दायें-बायें झुक-झुक कर अल्लाह (तआला) के सामने सज्दा करती हैं और मजबूरी का प्रदर्शन (इज़हार) करती हैं।

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ (49)

४९. और बेशक आकाशों और धरती के सभी जानदार और सभी फ़रिश्ते अल्लाह (तआला) के सामने सज्दा करते हैं और ज़रा भी घमंड नहीं करते।

يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ (50)

५०. और अपने रब से जो उन के ऊपर है कपकपाते (कम्पित) रहते है और जो हुक्म मिल जाये उस के पालन करने में लगे रहते हैं।

وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ (51)

५१. और अल्लाह (तआला) कह चुका है कि दो माबूद न बनाओ, माबूद तो वही सिर्फ़ अकेला है, बस तुम सब केवल मेरा ही डर रखो।

५२. और आकाशों में और धरती में जो कुछ है सब उसी का है और उसी की इबादत हमेशा फ़र्ज़ है, क्या फिर भी तुम उस के सिवाय दूसरों से डरते हो?

وَلَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّیْنُ وَاصِبًا ؕ اَفَغَیْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ﴿52﴾

५३. और तुम्हारे पास जितनी भी नेमतें हैं, सब उसी की दी हुई हैं, अब भी जब तुम्हें कोई कठिनाई आ जाये तो उसी की तरफ़ दुआ और विनती करते हो।[1]

وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَیْهِ تَجْئَرُوْنَ ﴿53﴾

५४. और जहाँ उसने वह कठिनाई तुम से दूर कर दी, तुम में से कुछ लोग अपने रब के साथ साझीदार बनाने लगते हैं।

ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا فَرِیْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ یُشْرِكُوْنَ ﴿54﴾

५५. कि हमारी दी हुई नेमतों की नाशुक्री करें, (ठीक है) कुछ फ़ायेदा उठा लो आख़िर में तुम्हें मालूम हो ही जायेगा।

لِیَكْفُرُوْا بِمَاۤ اٰتَیْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ٚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿55﴾

५६. और जिसे जानते बूझते भी नहीं उस का हिस्सा हमारी दी हुई चीज़ों में मुक़र्रर करते हैं। अल्लाह की क़सम! तुम्हारे इस इल्ज़ाम का सवाल तुम से ज़रूर ही क़िया जायेगा।

وَیَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا یَعْلَمُوْنَ نَصِیْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ؕ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿56﴾

५७. और वह पाक अल्लाह (तआला) के लिए लड़कियाँ निर्धारित (मुक़र्रर) करते हैं और अपने लिए वह जो अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ हो।

وَیَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا یَشْتَهُوْنَ ﴿57﴾

५८. और उन में से जब किसी को लड़की होने की ख़बर दी जाये तो उसका मुँह काला हो जाता है और दिल ही दिल में घुटने लगता है।

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰی ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِیْمٌ ﴿58﴾

५९. इस बुरी ख़बर के सबब लोगों से छिपा-छिपा फिरता है, सोचता है क्या इस अपमान (ज़िल्लत) के लिये ही रहे या इसे मिट्टी में दबा दे! आह ! क्या ही बुरे फ़ैसले करते हैं?[2]

یَتَوَارٰی مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَیُمْسِكُهٗ عَلٰی هُوْنٍ اَمْ یَدُسُّهٗ فِی التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا یَحْكُمُوْنَ ﴿59﴾

---

[1] इसका मतलब यह है कि अल्लाह के एक होने का यक़ीन दिल की गहराईयों में मौजूद है जो उस वक़्त उभर कर सामने आ जाता है, जब हर तरफ़ से निराशा के बादल गहरे हो जाते हैं।

[2] यानी लड़की का जन्म सुनकर उनकी यह हालत होती है जो बयान हुई, और अल्लाह के लिए लड़कियाँ चुनते हैं, कैसा ग़लत फ़ैसला है? यहाँ यह न समझा जाये कि अल्लाह तआला भी

لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿60﴾

६०. आख़िरत पर ईमान न रखने वालों की ही बुरी मिसाल है, अल्लाह के लिए तो बहुत ऊंची मिसाल है, वह बड़ा ग़ालिब और हिक्मत वाला है।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿61﴾

६१. और अगर लोगों के पाप पर अल्लाह उनकी पकड़ करता तो धरती पर एक भी जीव न बचता, लेकिन वह तो उन्हें एक मुक़र्ररा वक़्त तक ढील देता है, फिर जब उनका वह वक़्त आ जाता है तो वह एक पल पीछे नहीं रह सकते और न आगे बढ़ सकते हैं।

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ؕ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ﴿62﴾

६२. और वह अपने लिए जो नापसन्द समझते हैं, उसे अल्लाह के लिए साबित करते हैं, और उनकी ज़ुबानें झूठी बातों का बयान करती हैं कि उन के लिए अच्छाई है। (नहीं-नहीं) हक़ीक़त में उन के लिए आग है और ये नरक-वासियों के अगवा हैं।

تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿63﴾

६३. अल्लाह की क़सम ! हम ने तुझ से पहले की उम्मतों की तरफ़ भी (अपने रसूल) भेजे लेकिन शैतान ने उन की बुराईयों को उनकी नज़र में अच्छा ठहराया, वह शैतान आज भी उनका दोस्त बना हुआ है और उन के लिए दुखदायी अज़ाब है।

وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿64﴾

६४. और इस किताब को हम ने आप पर इसलिए उतारा है कि आप हर उस बात को ज़ाहिर कर दें जिस में वे इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं, और यह ईमानवालों के लिए हिदायत और रहमत है।

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿65﴾

६५. और अल्लाह (तआला) आकाशों से बारिश करके उस से धरती को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा कर देता है। बेशक इस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं, जो सुनें।

लड़कों के मुक़ाबिल लड़कियों को हक़ीर समझता है, नहीं, अल्लाह के सामने लड़का-लड़की में कोई फ़र्क़ नहीं, न जिन्स की बुनियाद पर किसी की हिक़ारत (हीनता) और फ़ज़ीलत का ख़्याल उस के यहां है।

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۖ نُّسْقِيكُم مِّمَّا فِي بُطُونِهِ مِن بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِّلشَّارِبِينَ ﴿66﴾

६६. और तुम्हारे लिए तो जानवरों में भी बड़ी शिक्षा है कि हम तुम्हें उस के पेट में जो कुछ है, उसी में से गोबर और ख़ून के बीच से ख़ालिस दूध पिलाते हैं, जो पीने वालों के लिए आसानी से पचता है।

وَمِن ثَمَرَاتِ النَّخِيلِ وَالْأَعْنَابِ تَتَّخِذُونَ مِنْهُ سَكَرًا وَرِزْقًا حَسَنًا ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿67﴾

६७. और खजूर और अंगूर के पेड़ों के फलों से तुम मदिरा बना लेते हो और बेहतरीन सामाने रिज़्क़ (उत्तम जीविका) भी, जो लोग अक़्ल रखते हैं उनके लिए तो इस में भी बहुत बड़ी निशानी है।

وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُونَ ﴿68﴾

६८. और आप के रब ने मधुमक्खी को यह समझ दिया[1] कि पहाड़ों में, पेड़ों में और लोगों की बनायी हुई ऊंची-ऊंची टट्टियों में अपने घर (छत्ते) बना।

ثُمَّ كُلِي مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ۚ يَخْرُجُ مِن بُطُونِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿69﴾

६९. और हर तरह के फल खा, और अपने (रब) के आसान रास्तों पर चलती फिरती रह, उन के पेट से (पीने वाला पदार्थ) पेयद्रव (मशरूब) निकलता है, जिस के रंग कई हैं और जिस में लोगों के लिए शिफ़ा है, सोच और फ़िक्र करने वालों के लिए इस में भी बहुत बड़ी निशानी है।

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّاكُمْ ۚ وَمِنكُم مَّن يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿70﴾

७०. और अल्लाह (तआला) ने ही तुम सब को पैदा किया है, वही फिर तुम्हें मौत देगा, और तुम में ऐसे भी हैं जो बहुत बुरी आयु की तरफ़ लौटाये जाते हैं कि बहुत कुछ जानने के बाद भी न जानें।[2] बेशक अल्लाह (तआला) जानने वाला और क़ुदरत वाला है।

---

[1] वह्यी (प्रकाशना) से मुराद वह एहसास और वह समझ-बूझ है जो अल्लाह तआला ने अपनी ज़रूरियात के पूरा करने के लिए जानदारों को दी है।

[2] जब इंसान फ़ितरी उम्र से बढ़ जाता है तो फिर उसकी अक़्ल भी कमज़ोर हो जाती है और कई बार अक़्ल ख़त्म हो जाती है और वह बच्चे की तरह हो जाता है। यही बुढ़ापा है जिस से नबी ﷺ ने पनाह माँगी है।

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَآدِّيْ رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ۭ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ (71)

७१. और अल्लाह (तआला) ने ही तुम में से एक को दूसरे पर रिज़्क़ में ज़्यादा अता कर रखी है, लेकिन जिन्हें ज़्यादा अता किया गया है, वह अपनी रोज़ी को अपने अधीन दास (मातहत) को नहीं देते कि वह और ये उस में बराबर हो जायें तो क्या ये लोग अल्लाह के एहसानों को इंकार कर रहे हैं?

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۭ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ (72)

७२. और अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए तुम में से ही तुम्हारी बीवियाँ पैदा की और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे बेटे और पोते पैदा किये और तुम्हें अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने के लिए दीं, तो क्या फिर भी लोग बातिल पर ईमान लायेंगे? और अल्लाह तआला की नेमतों की नाशुक्री करेंगे?

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ (73)

७३. और वे अल्लाह (तआला) के सिवाय उनकी इबादत करते हैं, जो आकाशों और धरती से उन्हें कुछ भी तो रिज़्क नहीं दे सकते और न कुछ ताक़त रखते हैं।

فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ (74)

७४. तो अल्लाह (तआला) के लिए मिसाल न बनाओ, अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है और तुम नहीं जानते।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ۭ هَلْ يَسْتَوٗنَ ۭ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (75)

७५. अल्लाह (तआला) एक मिसाल को बयान कर रहा है कि एक ग़ुलाम है दूसरे की मिल्कियत का जो किसी बात का हक़ नहीं रखता, और एक दूसरा इंसान है जिसे हम ने अपने पास से बेहतरीन धन दे रखा है, जिस में से वह छुपे और खुले तौर से ख़र्च करता है, क्या ये सब बराबर हो सकते हैं?[1] अल्लाह (तआला) ही के लिए सारी तारीफ़ें हैं, बल्कि उन में के ज़्यादातर नहीं जानते।

[1] कुछ आलिम कहते हैं कि यह ग़ुलाम और आज़ाद की मिसाल है कि पहला ग़ुलाम और दूसरा आज़ाद है, ये दोनों बराबर नहीं हो सकते। कुछ कहते हैं कि यह ईमानवालों और काफ़िरों का मुआज़ना है, पहला काफ़िर और दूसरा ईमानवाला है, ये बराबर नहीं। कुछ कहते हैं कि यह अल्लाह तआला और झूठे देवताओं का मुआज़ना है, पहले से मुराद झूठे देवता और दूसरे से अल्लाह है, ये दोनों बराबर नहीं हो सकते। मतलब यही है कि एक ग़ुलाम और आज़ाद, इसके बावजूद कि दोनों इंसान हैं, दोनों अल्लाह की मख़लूक़ हैं और दूसरे भी बहुत-सी बातें दोनों के बीच बराबर हैं, इस के बावजूद मान-सम्मान, इज़्ज़त और एहतेराम में दोनों को बराबर नहीं समझते, तो अल्लाह तआला और पत्थर की एक मूर्ति या एक क़ब्र की ढेरी ये दोनों किस तरह बराबर हो सकते हैं ?

७६. और अल्लाह (तआला) एक दूसरी मिसाल बयान करता है दो इंसानों की जिन में से एक गूंगा है और किसी चीज पर हक़ नहीं रखता, बल्कि वह अपने मालिक पर बोझ है, कहीं भी उसे भेजे वह कोई भलाई नहीं लाता, क्या यह और वह जो इंसाफ का हुक्म देता है और है भी सीधे रास्ते पर, बराबर हो सकते हैं?

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ۭ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿76﴾

७७. और आकाशों और धरती का ग़ैब केवल अल्लाह ही को मालूम है, और क़यामत की बात तो ऐसी ही है, जैसे आंख का झपकना, बल्कि इस से भी ज़्यादा क़रीब। बेशक अल्लाह (तआला) हर चीज पर क़ुदरत रखने वाला है।

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿77﴾

७८. और अल्लाह (तआला) ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेट से निकाला है कि उस वक़्त तुम कुछ भी नहीं जानते थे, उसी ने तुम्हारे कान और आंखें और दिल बनाये कि तुम शुक्रिया अदा कर सको।

وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـــــًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصٰرَ وَالْاَفْـــِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿78﴾

७९. क्या उन लोगों ने पक्षियों को नहीं देखा जो हुक्म के मुताबिक बंधे हुए आकाश में हैं, जिन्हें अल्लाह के सिवाय कोई दूसरा नहीं थामे हुए है। बेशक इस में ईमान लाने वालों के लिए बड़ी निशानियां हैं।

اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَاۗءِ ۭ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿79﴾

८०. और अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों में रहने की जगह बना दिया है, और उसी ने तुम्हारे लिये जानवरों की खालों के घर बना दिये हैं, जिन्हें तुम हल्का पाते हो अपने प्रस्थान (कूच करने) के दिन और अपने पड़ाव के दिन भी, और उन के ऊन, रोयें और बालों से भी उस ने बहुत-सी चीजें और एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए फ़ायदे की चीजें बना दीं।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿80﴾

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿81﴾

८१. और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई चीजों में से छाया बनायी है। और उसी ने तुम्हारे लिए पहाड़ों में गुफा बनायी हैं और उसी ने तुम्हारे लिए कपड़े बनाये हैं जो तुम्हें गर्मी से महफ़ूज रखें और ऐसे कवच भी जो तुम्हें लड़ाई के वक़्त काम आयें, वह इसी तरह अपनी पूरी-पूरी नेमत अता कर रहा है कि तुम फ़रमांबर्दार बन जाओ।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿82﴾

८२. फिर भी अगर ये मुँह मोड़े रहें तो आप पर केवल साफ तौर से पहुँचा देना है।

يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿83﴾

८३. ये अल्लाह की नेमत जानते-पहचानते हुए भी उन को नकार रहे हैं, बल्कि उन में से ज़्यादातर नाशुक्रे हैं।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿84﴾

८४. और जिस दिन हम हर उम्मत में से गवाह खड़ा करेंगे फिर काफ़िरों को न तो इजाज़त दी जायेगी और न क्षमा-याचना (तौबा) करने को कहा जायेगा।

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿85﴾

८५. और जब ये ज़ालिम लोग अज़ाब देख लेंगे, फिर न तो उन से हल्की की जायेगी और न वे ढील दिये जायेंगे।[1]

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَاۗءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا هٰٓؤُلَاۗءِ شُرَكَاۗؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ فَاَلْقَوْا اِلَيْهِمُ الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿86﴾

८६. और जब मुशरिक अपने शरीकों को देख लेंगे तो कहेंगे कि हे हमारे रब! यही हमारे साझीदार हैं, जिन्हें हम तुझे छोड़ कर पुकारा करते थे, फिर वे उनको जवाब देंगे कि तुम पूरे ही झूठे हो।

وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَىِٕذِ ِۨ السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿87﴾

८७. और उस दिन वे सब (मजबूर होकर) अल्लाह के सामने आज्ञाकारी (फ़रमांबरदार) होना क़ुबूल करेंगे और जो बुहतान लगाया करते थे वह सब उन से खो जायेंगे।

[1] हल्का न करने का मतलब बीच में कोई आराम नहीं होगा, अज़ाब लगातार बिना किसी तरह की देर के होगा, और न ढील ही दी जायेगी यानी उन्हें तुरन्त कसकर पकड़ लिया जायेगा और जंजीरों से जकड़कर नरक में फेंक दिया जायेगा या माफ़ी माँगने का मौक़ा भी नहीं दिया जायेगा, क्योंकि आख़िरत अमल करने की जगह नहीं बदला हासिल करने की जगह है।

८८. जिन्होनें कुफ्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका हम उन्हें अज़ाब पर अज़ाब बढ़ाते जायेंगे,[1] यह बदला होगा उनके फ़साद पैदा करने का।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ﴿88﴾

८९. और जिस दिन हम हर उम्मत में उन्हीं में से उन के ऊपर गवाह खड़ा करेंगे और तुझे उन सब पर गवाह बनाकर लायेंगे, और हम ने तुझ पर यह किताब उतारी है जिस में हर बात का खुला बयान है[2] और हिदायत और रहमत और ख़ुशख़बरी है मुसलमानों के लिए।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۭ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿89﴾

९०. बेशक अल्लाह (तआला) इंसाफ़ का, भलाई का और क़रीबी रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म देता है और बेहयाई के कामों और बुराईयों और ज़ुल्म से रोकता है, वह ख़ुद तुम को नसीहत कर रहा है, ताकि तुम नसीहत हासिल करो।

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَاۗئِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاۗءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿90﴾

९१. और अल्लाह से किये हुए वादे को पूरा करो, जबकि तुम आपस में वादे और अहद करो और क़समों को उनकी मज़बूती के बाद मत तोड़ो, जबकि तुम अल्लाह (तआला) को अपना उत्तरदायी ठहरा चुके हो,[3] तुम जो कुछ करते हो अल्लाह

وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿91﴾

---

[1] जिस तरह जन्नत में ईमान वालों के कई पद होंगे, उसी तरह जहन्नम में काफ़िरों के अज़ाब में भिन्नता होगी, जो भटके हुए होने के साथ दूसरे लोगों को भटकाने का सबब बने होंगे, उनके अज़ाब दूसरों के मुक़ाबिल ज़्यादा होंगे।

[2] किताब से मुराद अल्लाह की किताब और नबी ﷺ की तफ़सीर यानी हदीस है, अपनी हदीसों को भी अल्लाह के रसूल ﷺ ने अल्लाह की किताब कहा है, जैसाकि उसैफ़ के क़िस्सा वग़ैरह में है। (देखिये सहीह बुख़ारी, किताबुल मुहारेबीन, बाब हल यामुरू इमाम रजुलन फ़यजरेबुल हद गायबन अन्ह, किताबुल सलात, बाबु ज़िक्रल बैये वल शराओ अलल मिम्बर फ़िल मस्जिद) और हर चीज़ का मतलब है माज़ी और मुस्तक़बिल की वे ख़बरें जिनका इल्म ज़रूरी और फ़ायदेमंद है, उसी तरह अम्र और निषेध (ममानिअत) का बयान और वे बातें जिन का दीन, दुनिया, तिजारत और रोज़ी के बारे में इंसान मजबूर है, क़ुरआन और हदीस दोनों में यह सब बातें वाज़ेह कर दी गयी हैं।

[3] क़सम एक तो वह है जो किसी सुलह या अहद के वक़्त उसे पक्का करने के लिए खायी जाती है। दूसरी क़सम वह है जो इंसान अपने तौर से किसी वक़्त भी खा लेता है कि फ़लाँ काम करूँगा या नहीं करूँगा, यहाँ आयत में पहले बयान क़सम का मतलब है कि तुम ने क़सम खायी

तआला उसे अच्छी तरह जानता है।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَاثًا ۖ تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ ۚ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ ۚ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿92﴾

९२. और उस (औरत) की तरह न हो जाना कि जिसने अपना सूत मजबूत कातने के बावजूद टुकड़े-टुकड़े तोड़ दिया कि तुम अपनी क़समों को आपस में छल-कपट का सबब बनाओ, इसलिए कि एक गुट दूसरे गुट से ऊंचा हो जाये, बात केवल यही है कि इस वादे से अल्लाह तुम्हारा इम्तेहान ले रहा है। बेशक अल्लाह तआला तुम्हारे लिए क़यामत के दिन हर उस चीज को वाजेह करके बयान कर देगा, जिस में तुम इख़्तेलाफ़ कर रहे थे।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِنْ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَلَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿93﴾

९३. और अगर अल्लाह (तआला) चाहता तो तुम सब को एक मत बना देता, लेकिन वह जिसे चाहे भटका देता है और जिसे चाहे हिदायत देता है। बेशक तुम जो कुछ कर रहे हो उसकी पूछताछ की जाने वाली है।

وَلَا تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا السُّوءَ بِمَا صَدَدْتُمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿94﴾

९४. और तुम अपनी क़समों को आपस के छल-कपट का जरिया न बनाओ, फिर तो तुम्हारे क़दम अपनी मजबूती के बाद डगमगा जायेंगे और तुम्हें सख़्त अजाब चखना पड़ जायेगा क्योंकि तुम ने अल्लाह के रास्ते से रोक दिया और तुम्हें ज़्यादा सख़्त अजाब होगा।

وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ إِنَّمَا عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿95﴾

९५. और तुम अल्लाह के वादे को थोड़े मूल्य के बदले न बेच दिया करो। याद रखो, अल्लाह के पास की चीज ही तुम्हारे लिए अच्छी है, अगर तुम में इल्म हो।

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ ۖ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ ۗ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِينَ صَبَرُوا أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿96﴾

९६. तुम्हारे पास जो कुछ है सब नाश होने वाला है और अल्लाह के पास जो कुछ है हमेशा रहने वाला है, और सब्र रखने वालों को हम अच्छे अमल का अच्छा बदला जरूर अता करेंगे।

है, क्योंकि दूसरे बयान क़सम के बारे में हदीस में हुक्म दिया गया है कि कोई इंसान किसी काम के लिए भी क़सम खा ले फिर देखे कि ज़्यादा नेकी दूसरे अमल में है यानी क़सम के खिलाफ़ करने में है, तो वह नेकी का काम करे और क़सम को तोड़कर उसका कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) अदा करे।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿97﴾

९७. जो इंसान नेकी के काम करे मर्द हो या औरत, और वह ईमानवाला हो तो हम उसे बेशक सब से अच्छी ज़िन्दगी अता करेंगे, और उन के नेकी के कामों का अच्छा बदला भी उन्हें ज़रूर देंगे।

فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿98﴾

९८. क़ुरआन पढ़ते समय धिक्कारे हुए शैतान से अल्लाह की पनाह माँगा करो।

اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿99﴾

९९. ईमानवालों और अपने रब पर भरोसा रखने वालों पर उसका कभी ज़ोर नहीं चलता।

اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ﴿100﴾

१००. हाँ, उसका असर उन पर ज़रूर है जो उस से दोस्ती करें और उसे अल्लाह का साझीदार बनायें।

وَاِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مُفْتَرٍ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿101﴾

१०१. और जब हम किसी आयत की जगह पर दूसरी आयत बदल देते हैं और जो कुछ अल्लाह (तआला) उतारता है, उसे वह अच्छी तरह जानता है, तो यह कहते हैं कि तू तो बुहतान लगाने वाला है, बात यह है कि उन में से ज़्यादातर जानते ही नहीं।

قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿102﴾

१०२. आप कह दीजिए कि उसे आप के रब की तरफ़ से जिब्रील हक़ के साथ लेकर आये हैं, ताकि ईमानवालों को अल्लाह (तआला) स्थिरता (सबात) अता करे और मुसलमानों के लिए हिदायत और ख़ुशख़बरी हो जाये।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ۭ لِسَانُ الَّذِيْ يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ ﴿103﴾

१०३. और हमें अच्छी तरह मालूम है जो काफ़िर कहते हैं कि उसे तो एक आदमी सिखाता है उसकी भाषा जिसकी तरफ़ यह मुख़ातिब कर रहे हैं अजमी (ख़ालिस अरबी भाषा नहीं) है, और यह क़ुरआन तो साफ़ अरबी भाषा में है।

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿104﴾

१०४. जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों पर ईमान नहीं रखते, उन्हें अल्लाह की तरफ़ से भी हिदायत हासिल नहीं होती और उन के लिए दुखदायी अज़ाब है।

إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿105﴾

१०५. झूठा इल्जाम तो वही लगाते हैं जिन्हें अल्लाह (तआला) की आयतों पर ईमान नहीं होता, और यही लोग झूठे हैं।

مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَٰكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿106﴾

१०६. जो इंसान अपने ईमान के बाद अल्लाह से कुफ्र करे उसके सिवाय जिसे मजबूर किया जाये और उसका दिल ईमान पर क़ायम हो, लेकिन जो लोग खुले दिल से कुफ्र करें तो उन पर अल्लाह का ग़जब है और उन्हीं के लिए बहुत बड़ा अजाब है।[1]

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿107﴾

१०७. यह इसलिए कि उन्होंने दुनियावी ज़िन्दगी को आख़िरत की ज़िन्दगी से बेहतर समझा। बेशक अल्लाह (तआला) काफ़िर लोगों को हिदायत नहीं करता।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿108﴾

१०८. यह वे लोग हैं जिन के दिलों पर और जिन के कानों और जिनकी आंखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है और यही लोग ग़ाफ़िल हैं।

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿109﴾

१०९. कोई शक नहीं कि यही लोग आख़िरत में ज़्यादा नुक़सान उठाने वाले हैं।

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا فُتِنُوا ثُمَّ جَاهَدُوا وَصَبَرُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿110﴾

११०. फिर जिन लोगों ने इम्तेहान में डाले जाने के बाद (धार्मिक कारणों से) हिजरत किया फिर जिहाद किया और सब्र का इज़्हार किया। बेशक तेरा रब इन बातों के बाद उन्हें माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।[2]

---

[1] यह मुर्तद की सजा है कि वह अल्लाह के ग़जब और सख़्त अजाब के हक़दार होंगे और उसकी दुनियावी सजा क़त्ल है।

[2] यह मक्के के उन मुसलमानों का बयान है जो कमज़ोर थे और दीने इस्लाम क़ुबूल करने के सबब काफ़िरों के ज़ुल्म और ज़्यादती का निशाना बने रहे। आख़िर उन्हें हिजरत का हुक्म दिया गया तो वे अपने सगे-सम्बन्धियों, देश, धरती, माल और ज़मीन सब कुछ छोड़कर इथोपिया या मदीना चले गये, फिर जब काफ़िरों के साथ लड़ाई का मौक़ा आया तो पूरी

يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿111﴾

१११. जिस दिन हर इंसान अपने लिए लड़ता-झगड़ता आयेगा और हर इंसान को उस के किये का पूरा बदला दिया जायेगा और लोगों पर कभी जुल्म न किया जायेगा।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَّأْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿112﴾

११२. और अल्लाह (तआला) उस बस्ती की मिसाल पेश करता है, जो पूरे सुख-शान्ति से थी, उसका रिज़्क उसके पास ख़ुशहाली के साथ हर रास्ते से चली आ रही थी, फिर उस ने अल्लाह (तआला) की नेमतों का इंकार किया, तो अल्लाह (तआला) ने उसे भूख और डर का मजा चखा दिया, जो बदला था उन के करतूतों का।

وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿113﴾

११३. और उन के पास उन्हीं में से रसूल पहुँचा, फिर भी उन्होंने उसे झुठलाया तो उन्हें अज़ाब ने आ पकड़ा और वे थे भी ज़ालिम।

فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۠ وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿114﴾

११४. और जो कुछ हलाल (उचित) और पाक रोज़ी अल्लाह ने तुम्हें अता कर रखी है, उसे खाओ और अल्लाह की नेमत का शुक्रिया अदा करो, अगर तुम उसी की इबादत करते हो।

اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿115﴾

११५. तुम पर केवल मुर्दा और ख़ून और सूअर का गोश्त और जिस चीज़ पर अल्लाह के सिवाय दूसरे का नाम लिया जाये हराम है, फिर भी अगर कोई इंसान मजबूर कर दिया जाये और न वह ज़ालिम हो और न हद से बढ़ने वाला हो, तो बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।

बहादुरी से लड़ने के लिए जिहाद में पूरी तरह से हिस्सा लिया और फिर उस रास्ते की कठिनाईयों और दुखों को सब्र के साथ सहन किया। इन सभी बातों के बाद बेशक उनके लिए तुम्हारा रब मेहरबानी और रहम करने वाला है, यानी रब की मेहरबानी और रहमत को हासिल करने के लिए ईमान और गुनाह के अमल का होना ज़रूरी है। जैसाकि बयान किये गये मुहाजिरों ने ईमान और अमल का सब से अच्छा मुज़ाहिरा किया तो रब की मेहरबानी और रहमत से वे कामयाब हुए।

وَلَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هَٰذَا حَلَالٌ وَهَٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿116﴾

११६. और किसी चीज को अपने मुंह से झूठ ही न कह दिया करो कि यह हलाल है और यह हराम है कि अल्लाह पर झूठा आरोप कर दो,[1] बेशक अल्लाह (तआला) पर झूठा आरोप करने वाले कामयाबी से महरूम ही रहते हैं।

مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿117﴾

११७. उन्हें बहुत कम फ़ायेदा हासिल होता है और उन के लिए ही दर्दनाक अज़ाब है।

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِن قَبْلُ ۖ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿118﴾

११८. और यहूदियों पर जो कुछ हम ने हराम किया था उसे हम पहले ही से आप को सुना चुके हैं, हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वे ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते रहे।

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿119﴾

११९. कि जो कोई जिहालत से बुरे अमल करे, फिर उस के बाद तौबा (क्षमा-याचना) कर ले और सुधार भी कर ले, तो फिर आप का रब बेशक बड़ा माफ करने वाला और बहुत रहम करने वाला है।

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِّلَّهِ حَنِيفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿120﴾

१२०. बेशक इब्राहीम अगुवा[2] और अल्लाह तआला की इताअत करने वाले एक्सू बेगर्ज थे, और वह मुश्रिकों में से न थे।

شَاكِرًا لِّأَنْعُمِهِ ۚ اجْتَبَاهُ وَهَدَاهُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿121﴾

१२१. अल्लाह तआला की अता की हुई नेमतों के शुक्रगुज़ार थे, अल्लाह (तआला) ने उन्हें निर्वाचित (मुन्तख़ब) कर लिया था और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत दे दिया था।

وَآتَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿122﴾

१२२. और हम ने उन्हें दुनिया में भी अच्छाई दी, और बेशक वह आख़िरत में भी नेक लोगों में से हैं।

---

[1] यह इशारा है उन जानवरों की तरफ़ जो वह मूर्तियों के नाम नजर करके उनको अपने लिए हराम कर लेते थे। जैसे बहीर:, साएब:, वसील: और हाम वग़ैरह (आदि)। (देखिये सूर: अल-मायेद:-१०३, सूर: अल-अंनाम-१३९ से १४१ तक की तफ़सीर)

[2] 'उम्मत' का मतलब मुखिया और अगुवा भी है जैसाकि तर्जुमा से वाज़ेह है, और उम्मत का मतलब पैरोकार भी है। इस बिना पर हज़रत इब्राहीम का अस्तित्व (वजूद) एक उम्मत के बराबर था। (उम्मत के मतलब के लिए सूर: हूद-८ की तफ़सीर देखिये)

ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿123﴾

१२३. फिर हम ने आप की तरफ़ वहयी (प्रकाशना) भेजी कि आप इब्राहीम हनीफ़ के मज़हब की इत्तेबा करें,[1] और वह मुश्रिकों (अनेकेश्वर के पुजारियों) में न थे।

إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿124﴾

१२४. शनिवार के दिन (की अहमियत) को तो केवल उन लोगों के लिए ही ज़रूरी किया गया था जिन्होंने उस में इख़्तिलाफ़ किया था, बात यह है कि आप का रब ख़ुद ही उन में उन के इख़्तिलाफ़ का फ़ैसला क़यामत के दिन करेगा।

ادْعُ إِلَىٰ سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ ۖ وَجَادِلْهُم بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن ضَلَّ عَن سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿125﴾

१२५. अपने रब की तरफ़ लोगों को हिक्मत और अच्छी शिक्षा के साथ बुलायें और उन से अच्छी तरह से बात करें, बेशक आप का रब अपने रास्ते से भटकने वालों को भी अच्छी तरह जानता है और वह रास्ते पर चलने वालों से भी पूरी तरह से वाक़िफ़ है।

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُم بِهِ ۖ وَلَئِن صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصَّابِرِينَ ﴿126﴾

१२६. और अगर बदला लो भी तो बिल्कुल उतना ही जितना दुख तुम्हें पहुँचाया गया हो, और अगर सब्र करो तो बेशक साबिरों के लिए यही बेहतर है।

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ ۚ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿127﴾

१२७. आप सब्र करें बिना अल्लाह की रहमत से आप सब्र कर ही नहीं सकते और उनकी हालत से दुखी न हों और जो छल-कपट यह करते हैं; उन से तंग दिल न हो।

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوا وَّالَّذِينَ هُم مُّحْسِنُونَ ﴿128﴾

१२८. यक़ीन करो कि अल्लाह (तआला) परहेज़गारों और नेकी करने वालों के साथ है।

[1] 'मिल्लत' का मतलब है ऐसा दीन जिसे अल्लाह तआला ने अपने किसी नबी के ज़रिये लोगों के लिए जायेज़ और फ़र्ज़ किया है। नबी ﷺ इस के बावजूद कि आप ﷺ सभी नबियों सहित आदम की औलाद के सरदार हैं, आप ﷺ को इब्राहीम के धार्मिक नियमों की इत्तेबा करने के लिए कहा गया है, जिससे हज़रत इब्राहीम की अहमियत और फ़ज़ीलत की तसदीक़ होती है, वैसे मौलिक रूप (अख़लाक़ी तौर) से सभी नबियों के धार्मिक नियम और मज़हब एक ही रहे हैं, जिस में रिसालत के साथ तौहीद और आख़िरत को बुनियादी हैसियत हासिल है।

सूरतु इस्रा-१७

سُوْرَةُ الْإِسْرَاءِ

सूरतु इस्रा* मक्के में उतरी और इस की एक सौ ग्यारह आयतें और बारह रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. पाक है वह (अल्लाह तआला) जो अपने वन्दे[1] को रातों रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे अकसा[2] तक ले गया, जिस के आसपास हम ने वरकतें (विभूतियाँ) अता कर रखी हैं[3] इसलिए कि हम उसे अपनी कुदरत के कुछ जलवे दिखायें[4] बेशक

سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِيْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ اٰيٰتِنَا ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ①

---

* यह सूर: मक्के में नाजिल हुई, इसलिए इसे मक्की कहते हैं। इस सूर: का दूसरा नाम बनी इस्राईल भी है, इसलिए कि इस में बनी इस्राईल के कुछ वाक़ेआत का बयान है। सहीह बुख़ारी में है कि हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद खुद सुनकर कहते हैं कि सूर: कहफ़, मरियम और बनी इस्राईल यह इबतदाई सूरतों में से हैं।

[1] إسراء का मतलब होता है रात के वक़्त ले जाना। आगे ليلا (रात) इसलिए बयान किया गया ताकि रात की कमी वाजेह हो जाये, यानी रात के एक हिस्से या थोड़े से हिस्से में, यानी चालीस रात का यह सफ़र, पूरी रात में भी नहीं बल्कि रात के एक थोड़े से हिस्से में पूरी हुई।

[2] أقصى दूर को कहते हैं। बैतुल मक़दिस जो अल-क़ुदस या इलिया (पुराना नाम) नगर में है और फ़िलिस्तीन में मौजूद है, मक्का से अल-क़ुदस तक का सफ़र ४० दिन का है, इस बिना पर मस्जिदे हराम की तुलना में बैतुल मक़दिस को मस्जिदे अक्सा (दूर की मस्जिद) कहा गया है।

[3] यह इलाक़ा क़ुदरती नदियों और फलों की अधिकता और नबियों की धरती है जहाँ उनका निवास स्थान और समाधिस्थल (मदफ़न) होने के सबब बेहतर है, इसलिए इसे मुबारक कहा गया है।

[4] इस सफ़र का यह मक़सद है ताकि हम अपने इस बन्दे को मुख़तलिफ़ और बड़ी निशानियाँ दिखायें, जिन में से एक निशानी और मोजिज़ा यह सफ़र भी है कि इतना लम्बा सफ़र रात के एक छोटे से हिस्से में हो गया। नबी करीम ﷺ को जो मेराज हुई यानी आकाशों पर ले जाया गया, वहाँ कई आकाशों पर अंबिया عليهم السلام से मिलन हुआ, इसकी तारीख़ में इख़्तिलाफ़ है, फिर भी इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि यह हिजरत से पहले का वाक़ेआ है। कुछ कहते हैं कि एक साल पहले की और कुछ कहते हैं कि कई साल पहले यह वाक़ेआ हुआ। इसी तरह महीना और तारीख़ में भी इख़्तिलाफ़ है, कोई रबीउल अव्वल १७ या २७, कोई रजब की २७ और कुछ कोई दूसरे महीने और इसकी तारीख़ बताते हैं।

अल्लाह (तआला) ही अच्छी तरह सुनने देखने वाला है।

وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا ﴿2﴾

२. और हम ने मूसा को किताब अता की और उसे इस्राईल की औलाद के लिए हिदायत बना दिया कि तुम मेरे सिवाय किसी दूसरे को कारसाज़ न बनाना।

ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ﴿3﴾

३. हे उन लोगों की औलाद! जिन्हें हम ने नूह के साथ सवार किया था, वह हमारा बहुत शुक्रगुज़ार बन्दा था।[1]

وَقَضَيْنَآ اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ فِي الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْاَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيْرًا ﴿4﴾

४. और हम ने इस्राईल की औलाद के लिए उनकी किताब में वाज़ेह फ़ैसला कर दिया था कि तुम धरती पर दो बार फ़साद पैदा करोगे और तुम बहुत ज़ुल्म करोगे।

فَاِذَا جَاۗءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّيَارِ ۭ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ﴿5﴾

५. इन दोनों वादों में से पहले के आते ही हम ने तुम्हारे सामने अपने बन्दों को उठा खड़ा किया जो बड़े लड़ाकू थे, फिर वह तुम्हारे घरों के अन्दर तक फैल गये और अल्लाह का वादा पूरा होना ही था।

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَجَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِيْرًا ﴿6﴾

६. फिर हम ने उन पर तुम्हारा ग़लबा दे कर (तुम्हारा दिन) फेर दिया और माल और औलाद से तुम्हारी मदद की और तुम्हें बड़े जत्थे वाला कर दिया।

[1] नूह के वक़्त के तूफ़ान (जल-प्रलय) के बाद इंसान का वंश नूह के उन बेटों के वंश से है जो नूह की नाव में सवार हुए थे और तूफ़ान से बच गये थे, इसलिए इस्राईल की औलाद को मुख़ातिब करते हुए कहा गया कि तुम्हारे पिता नूह अल्लाह का बहुत शुक्रगुज़ार बंदा था, तुम भी अपने पिता की तरह शुक्रिया का रास्ता अपनाओ और हम ने जो मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ को रसूल बनाकर भेजा है, उनको इंकार करके नाशुक्री न करो।

إِنْ أَحْسَنتُمْ أَحْسَنتُمْ لِأَنفُسِكُمْ ۖ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ۚ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءُوا وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا تَتْبِيرًا ﴿7﴾

७. अगर तुम ने अच्छे काम किये तो ख़ुद अपने फ़ायदे के लिए, और अगर तुम ने बुराईयाँ की तो भी ख़ुद अपने ही लिए, फिर जब दूसरा वादा आया तो (हम ने दूसरे बन्दों को भेज दिया) ताकि वे तुम्हारा मुँह बिगाड़ दें और पहली बार की तरह फिर उसी मस्जिद में घुस जायें और जिस-जिस चीज़ पर क़ाबू पायें तोड़-फोड़ कर जड़ से उखाड़ दें।[1]

عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يَرْحَمَكُمْ ۚ وَإِنْ عُدتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ﴿8﴾

८. उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम पर रहम करे। हाँ, अगर तुम फिर भी वही करने लगे तो हम भी फिर ऐसा ही करेंगे, और हम ने नकारने वालों के लिए क़ैदख़ाना नरक को बना रखा है।

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ﴿9﴾

९. बेशक यह क़ुरआन वह रास्ता दिखाता है जो सब से सीधा है और ईमानदार नेकों को जो नेकी के काम करते हैं, इस बात की ख़ुशख़बरी देता है कि उनके लिए बहुत अच्छा बदला (प्रतिफल) है।

وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿10﴾

१०. और वह लोग जो आख़िरत पर यक़ीन नहीं करते, उन के लिए हम ने दुखद अज़ाब तैयार कर रखा है।

وَيَدْعُ الْإِنسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ ۖ وَكَانَ الْإِنسَانُ عَجُولًا ﴿11﴾

११. और इंसान बुराई की दुआयें करने लगता है, बिल्कुल उसकी अपनी भलाई की दुआओं की तरह, इंसान बड़ा ही उतावला है।[2]

---

[1] यह दूसरी बार उन्होंने फ़साद पैदा किया कि हज़रत ज़करिया को क़त्ल कर दिया और हज़रत ईसा को क़त्ल करने की योजना बनाते रहे जिन्हें अल्लाह तआला ने ज़िन्दा आकाश पर उठा कर उन से बचा लिया।

[2] इंसान चूँकि उतावला है, इसलिए जब उसे दुख पहुँचता है तो अपनी बरबादी की तमन्ना इस तरह करता है जिस तरह सुख के लिए अपने रब से दुआ करता है। यह तो अल्लाह की रहमत और मेहरबानी है कि उसकी बद्दुआ को क़ुबूल नहीं करता, यही विषय सूर: यूनुस आयत ११ में आ चुका है।

وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ۭ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا ⑫

१२. और हम ने रात और दिन को (अपनी कुदरत की) निशानी बनाये हैं, रात की निशानी को हम ने प्रकाशहीन (बेनूर) कर दिया और दिन की निशानी को रौशन दिखाने वाली बनाया है ताकि तुम अपने रब के फ़ज़्ल की खोज कर सको और इसलिए भी कि सालों का गिनती और हिसाब जान सको, और हर विषय का हम ने तफ़सीली बयान कर दिया है।

وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰۗىِٕرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ۭ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ⑬

१३. और हम ने हर इंसान की बुराई-भलाई को उस के गले डाल दिया है और क़यामत के दिन हम उसके नामा आमाल को निकालेंगे, जिसे वह अपने ऊपर खुला हुआ पा लेगा।

اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ۭ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ۭ ⑭

१४. लो ख़ुद ही अपना कर्मपत्र (आमालनामा) आप पढ़ लो। आज तो तू आप ही अपना ख़ुद फ़ैसला करने को काफ़ी है।

مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۭ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۭ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ⑮

१५. जो हिदायत हासिल करता है, वह ख़ुद अपने भले के लिए हिदायत हासिल करता है और जो गुमराह हो जाये उसका बोझ उसी के ऊपर है, कोई बोझ वाला किसी दूसरे का बोझ अपने ऊपर न लादेगा और हमारा नियम ही नहीं कि रसूल भेजने से पहले ही अज़ाब भेजें।[1]

وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ⑯

१६. और जब हम किसी बस्ती के हलाक करने का इरादा कर लेते हैं तो वहाँ के ख़ुशहाल लोगों को कुछ हुक्म देते हैं और वे उस बस्ती में वाज़ेह तौर से नाफ़रमानी करने लगते हैं तो उन पर (अज़ाब का) फ़ैसला लागू हो जाता है और फिर हम उसे उलट-पलट कर देते हैं।

[1] कुछ मुफ़स्सिरों ने इस से केवल दुनियावी अज़ाब का मतलब लिया है, यानी आख़िरत के अज़ाब से बच न सकेंगे, लेकिन क़ुरआन करीम के दूसरे मुक़ामों से वाज़ेह है कि अल्लाह तआला लोगों से पूछेगा कि क्या तुम्हारे पास रसूल नहीं आये थे? जिस पर वे सकारात्मक (मुसबत) जवाब देंगे, जिस से यह महसूस होता है कि रसूलों को भेजने और किताब उतारे बिना वह किसी को अज़ाब नहीं देगा फिर भी इसका फ़ैसला कि किस उम्मत या किस इंसान तक उसका पैग़ाम नहीं पहुँचा, क़यामत के दिन वह ख़ुद ही कर देगा।

१७. और हम ने नूह के बाद भी बहुत से समुदाय नष्ट किये और तेरा रब अपने बंदों के गुनाहों से अच्छी तरह वाक़िफ़ और अच्छी तरह देखने वाला है।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِنْ بَعْدِ نُوحٍ ۗ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿17﴾

१८. जिसकी तमन्ना केवल इस जल्दी वाली दुनिया की ही हो, उसे हम यहाँ जितना जिस के लिए चाहें जल्दी से अता कर देते हैं, आख़िर में उस के लिए हम नरक मुक़र्रर कर देते हैं जहाँ वह बदहाल धिक्कारा हुआ दाख़िल होगा।[1]

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَنْ نُرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ يَصْلَاهَا مَذْمُومًا مَدْحُورًا ﴿18﴾

१९. और जिसकी तमन्ना आख़िरत की हो और जैसी कोशिश होनी चाहिए वह करता भी हो और वह ईमान के साथ भी हो, फिर तो यही लोग हैं जिनकी कोशिश को अल्लाह के यहाँ पूरा सम्मान किया जायेगा।

وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَشْكُورًا ﴿19﴾

२०. हर एक को हम देते हैं, इन्हें भी और उन्हें भी, तेरे रब के उपकार (इन्आम) में से, और तेरे रब का उपकार रुका हुआ नहीं है।

كُلًّا نُمِدُّ هَٰؤُلَاءِ وَهَٰؤُلَاءِ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ ۚ وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا ﴿20﴾

२१. देख ले, उन में एक को एक पर किस तरह फ़ज़ीलत अता कर रखी है और आख़िरत (परलोक) तो दर्जे के ऐतबार से बहुत बेहतर है और फ़ज़ीलत के ऐतबार से भी बहुत बेहतर है।[2]

انْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ وَلَلْآخِرَةُ أَكْبَرُ دَرَجَاتٍ وَأَكْبَرُ تَفْضِيلًا ﴿21﴾

२२. अल्लाह के साथ किसी दूसरे को माबूद न बना कि आख़िर में तू निन्दित (ज़लील) बेमददगार होकर बैठ रहेगा।

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُومًا مَخْذُولًا ﴿22﴾

---

[1] यानी हर संसार के लालची को दुनिया नहीं मिलती केवल उसको मिलती है जिसको हम चाहें, फिर उसको भी दुनिया उतनी नहीं मिलती जितने की वह तमन्ना करता है, बल्कि उतनी ही मिलती है जितनी हम उस के लिए फ़ैसला कर देते हैं, लेकिन इस दुनिया माँगने का नतीजा नरक का दायमी अज़ाब और उसका अपमान है।

[2] फिर भी दुनिया की यह चीज़ें किसी को कम किसी को ज़्यादा मिलती है, अल्लाह तआला अपनी मर्ज़ी और हिक्मत से यह रोज़ी बाँटता है, लेकिन आख़िरत में दर्जों का यह फ़र्क़ ज़्यादा वाज़ेह और ज़ाहिर होगा और वह इस तरह कि ईमान वाले स्वर्ग में और काफ़िर लोग नर्क में जायेंगे।

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ﴿23﴾

२३. और तेरा रब खुला हुक्म दे चुका है कि तुम उसके सिवाय किसी दूसरे की इबादत (आराधना) न करना और माता-पिता के साथ अच्छा सुलूक करना, अगर तेरी मौजूदगी में इन में से एक या ये दोनों बुढ़ापे को पहुँच जायें तो उनको 'ऊफ़' तक न कहना, उन्हें डाँटना नहीं बल्कि उनके साथ इज़्ज़तो एहतेराम से बातचीत करना।[1]

وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿24﴾

२४. और नर्मी और मुहब्बत के साथ उन के सामने इन्केसारी के हाथ फैलाये रखना,[2] और दुआ करते रहना कि हे मेरे रब ! इन पर ऐसे ही रहम करना जैसाकि इन्होंने मेरे बचपन में मेरा पालने पोसने में किया है।

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ﴿25﴾

२५. जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे तुम्हारा रब अच्छी तरह जानता है, अगर तुम नेक हो तो वह तौबा करने वालों को माफ़ करने वाला है।

وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿26﴾

२६. और रिश्तेदारों का, और ग़रीबों का, और मुसाफ़िरों का हक़ अदा करते रहो,[3] और फ़ुज़ूल ख़र्ची से बचो।

[1] इस आयत में बहुत रहम करने वाला अल्लाह तआला ने अपनी इबादत के दूसरे हिस्से में माता-पिता के साथ अच्छे सुलूक का हुक्म दिया है, जिससे माता-पिता की फ़रमाँबरदारी, उनकी ख़िदमत और उनकी इज़्ज़तो एहतेराम की अहमियत वाज़ेह होती है।

[2] पक्षी जब अपने बच्चों को अपनी प्रेम छाया में लेता है तो उन के लिए अपने पंख नीचे गिरा देता है, यानी तू भी अपने माता-पिता के साथ इसी तरह अच्छा और मुहब्बत भरा सुलूक कर और उनकी इसी तरह देखभाल कर जिस तरह उन्होंने बचपन में तेरा किया।

[3] क़ुरआन करीम के इन लफ़्ज़ों से मालूम हुआ कि ग़रीब क़रीबी रिश्तेदारों, ग़रीबों और किसी तरह की ज़रूरत वाले मुसाफ़िरों की मदद करके उन पर एहसान जताना नहीं चाहिए, क्योंकि यह एहसान नहीं बल्कि माल का वह हिस्सा है जो अल्लाह तआला ने धनवानों के धन में बयान किये इंसानों का रखा है, अगर धनवान यह धन अदा नहीं करेगा तो अल्लाह के सामने गुनहगार होगा, इसके सिवाय क़रीबी रिश्तेदारों का बयान करने से उन की तरजीह और हक़ भी वाज़ेह होता है। क़रीबी रिश्तेदारों के हक़ों को अदा करना और उनके साथ अच्छा सुलूक करने को रिश्ता जोड़ना कहा जाता है, जिसकी इस्लाम में बड़ी अहमियत है।

إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيَاطِينِ ۖ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ﴿27﴾

२७. फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वाले शैतानों के भाई हैं और शैतान अपने रब का बहुत नाशुक्रा है।

وَإِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاءَ رَحْمَةٍ مِّن رَّبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُل لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا ﴿28﴾

२८. और अगर तुझे उन से मुँह फेर लेना पड़े अपने रब की इस रहमत की खोज में जिस की तू उम्मीद रखता है, तो भी तुझे चाहिए कि अच्छी तरह और नर्मी से उन्हें समझा दे।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا ﴿29﴾

२९. और अपना हाथ अपनी गर्दन से बंधा हुआ न रख और न उसे पूरी तरह से खोल दे कि फिर धिक्कारा हुआ और पछताया हुआ बैठ जाये।

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿30﴾

३०. बेशक तेरा रब जिसके लिए चाहे रोज़ी का विस्तार (कुशादा) कर देता है और जिस के लिए चाहे तंग कर देता है।[1] बेशक वह अपने बंदों से बाख़बर है और अच्छी तरह से देखने वाला है।

وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ ۚ إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْئًا كَبِيرًا ﴿31﴾

३१. और ग़रीबी के डर से अपनी औलादों को न मार डालो! उन को और तुम को हम ही रिज़्क़ अता करते हैं। बेशक उनका क़त्ल करना बहुत बड़ा गुनाह है।

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنَىٰ ۖ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا ﴿32﴾

३२. और होशियार! व्याभिचार (ज़िना) के क़रीब भी न जाना क्योंकि वह बड़ी बेहयाई है और बहुत बुरा रास्ता है।[2]

---

[1] इस में ईमानवालों के लिये तसल्ली है कि उन के पास वसायल रिज़्क़ की कसरत नहीं तो इसका मतलब यह नहीं है कि अल्लाह के दरबार में उनकी जगह नहीं है, बल्कि यह रोज़ी की ज़्यादती या कमी का सम्बन्ध (तआल्लुक़) अल्लाह की उस हिक्मत और फ़ैसले से है, जिसे केवल वही जानता है, वह अपने दुश्मनों को धनवान बना दे और अपनों को इतना ही दे कि जिससे वे कठिनाई से अपना गुज़ारा कर सकें। यह उसकी मर्ज़ी है जिसको वह ज़्यादा दे, वह उसका प्रिय नहीं और थोड़े रिज़्क़ का मालिक उसका नापसन्दीदा नहीं।

[2] इस्लाम में चूँकि ज़िना बहुत बड़ा गुनाह है, इतना घोर कि अगर कोई विवाहित (शादीशुदा) मर्द और औरत इसे करे तो समाज में ज़िन्दा रहने का हक़दार ही नहीं है, फिर उसे तलवार के एक वार से मार डालना ही बस नहीं है बल्कि हुक्म है कि पत्थर मार-मार कर उसके जीवन का

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّي الْقَتْلِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ﴿33﴾

३३. और किसी जान को जिसका मारना अल्लाह ने हराम कर दिया है कभी नाजायेज़ क़त्ल न करना, और जो इंसान बेक़ुसूर मार डाला जाये हम ने उस के वारिस को हक़ दे रखा है, लेकिन उसे चाहिए कि मार डालने में जल्दी न करे, बेशक उसकी मदद की गयी है।

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۠ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ﴿34﴾

३४. और यतीम के माल के क़रीब न जाओ सिवाय उस तरीक़े के जो ज़्यादा बेहतर हो यहाँ तक कि वह अपनी समझदारी की उम्र को पहुँच जाये[1] और वादा पूरे करो क्योंकि वादा के बारे में पूछ होगी।

وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿35﴾

३५. और जब नापने लगो तो पूरे नाप से नापो और सीधी तराज़ू से तौलो, यही अच्छा है और इसका नतीजा भी बहुत अच्छा है।

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ﴿36﴾

३६. और जिस बात की तुझे ख़बर ही न हो, उस के पीछे मत पड़, क्योंकि कान और आँख और दिल इन में से हर एक से पूछताछ की जाने वाली है।

وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ﴿37﴾

३७. और धरती पर अकड़ कर न चलो, क्योंकि न तू धरती को चीर सकता है और न लम्बाई में पहाड़ों को पहुँच सकता है।[2]

अन्त (ख़ात्मा) कर दिया जाये ताकि वह समाज के लिए नसीहत की निशानी बन जाये, इसलिए यहाँ कहा गया कि व्याभिचार (ज़िना) के क़रीब न जाओ और उस के सबब और ज़रिया से ही बचकर रहो, जैसे पराई नारियों को देखना, उन से मिलना और बात करने का ज़रिया बनाना, इसी तरह औरतों का बन संवर कर बिना पर्दा घर से बाहर निकलना आदि, (वग़ैरह) इन सभी बातों से बचना ज़रूरी है ताकि इस बेहयाई से बचा जा सके।

[1] किसी की जान नाहक़ बर्बाद करने से मना करने के बाद धन के फ़ुज़ूल ख़र्ची से रोका जा रहा है और इस में यतीम का माल ख़ास अहमियत रखता है, इसलिए कहा कि यतीम के बालिग़ होने तक उसके धन को इस तरह से इस्तेमाल करो जिस में उसका फ़ायेदा हो, यह न हो कि बिना सोचे-विचारे ऐसे काम में लगा दो कि वह बरबादी और नुक़सान में जाये या जवानी तक पहुँचने से पहले ही तुम उसे ख़त्म कर दो।

[2] इतराकर और अकड़कर चलना अल्लाह तआला को बहुत नापसन्द है। क़ारून को इसीलिए

كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ﴿38﴾

३८. यह सब कामों की बुराई तेरे रब के क़रीब बहुत नापसन्द है।

ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۭ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِيْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿39﴾

३९. यह भी उस वहयी (प्रकाशना) में से है जिसे तेरे रब ने तेरी तरफ़ हिक्मत से उतारी है, इसलिए अल्लाह के साथ किसी दूसरे को माबूद न बनाना कि धिक्कार कर और रुस्वा (अपमानित) करके नरक में डाल दिया जाये।

اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ اِنَاثًا ۭ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ﴿40﴾

४०. क्या बेटों के लिए अल्लाह ने तुम्हें निर्वाचित (मुंतख़ब) कर लिया है और ख़ुद अपने लिए फ़रिश्तों को बेटियाँ बना लिया? बेशक तुम बहुत बड़ी बोल बोल रहे हो।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ۭ وَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ﴿41﴾

४१. और हम ने तो इस क़ुरआन में हर तरह से बयान कर दिया कि लोग समझ जायें, लेकिन इस पर भी उनकी नफ़रत ही ज़्यादा होती है।

قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗٓ اٰلِـهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِي الْعَرْشِ سَبِيْلًا ﴿42﴾

४२. कह दीजिए कि अगर अल्लाह के साथ दूसरे माबूद (देवता) भी होते जैसाकि ये लोग कहते हैं तो ज़रूर वह अब तक अर्श के मालिक की तरफ़ रास्ता तलाश लेते।[1]

سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا ﴿43﴾

४३. जो कुछ ये कहते हैं, उससे वह पाक और महान (अज़ीम), बहुत दूर और बहुत बलन्द है।

उस के घर और ख़ज़ाना सहित धरती में धंसा दिया (सूर: अल-क़सस-८१) हदीस में आता है: «एक इंसान दो चादरें पहनकर अकड़ कर चल रहा था कि उसको धरती में धंसा दिया गया और वह क़यामत तक धंसता चला जायेगा।»

[1] इसका एक मतलब तो यह है कि जिस तरह एक राजा दूसरे राजा पर हमला करके जीत हासिल कर लेता है, उसी तरह यह देवता भी अल्लाह पर हक़ हासिल करने का रास्ता खोज निकालते, और अब तक ऐसा नहीं हुआ जब कि उन देवताओं को पूजते ज़माने बीत गये, तो इसका मतलब यह है कि अल्लाह के सिवाय कोई माबूद नहीं, कोई ऐसी ताक़त ही नहीं, कोई फ़ायेदा और नुक़सान पहुँचाने वाला नहीं। दूसरा मतलब यह है कि वह अब तक अल्लाह की नज़दीकी हासिल कर चुके होते और यह मूर्तिपूजक जो यक़ीन रखते हैं कि उन के ज़रिये वह अल्लाह की क़ुरबत हासिल करते हैं, उन्हें भी वह अल्लाह के क़रीब कर चुके होते।

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ وَإِنْ مِّنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ ۗ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿44﴾

४४. सातों आकाश और धरती और जो कुछ उन में है उसी की महिमागान (तस्बीह) करती हैं, ऐसी कोई चीज नहीं जो पाकीजगी और बड़ाई के साथ उसे याद न करती हो। हाँ, यह सच है कि तुम उसकी महिमागान समझ नहीं सकते,[1] वह बड़ा सहनशील और माफ़ करने वाला है।

وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُورًا ﴿45﴾

४५. और तू जब क़ुरआन पढ़ता है हम तेरे और उन लोगों के बीच जो परलोक के प्रति (आख़िरत) पर यक़ीन नहीं रखते एक गुप्त पर्दा डाल देते हैं।

وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَّوْا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ نُفُورًا ﴿46﴾

४६. और उन के दिलों पर हम ने पर्दे डाल दिये हैं कि वह उसे समझें और उन के कानों में बोझ, और जब तू केवल अल्लाह ही का बयान उसकी एकता के साथ इस क़ुरआन में करता है तो वे मुँह फेर कर पीठ मोड़कर भाग खड़े होते हैं।

نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَىٰ إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ﴿47﴾

४७. जिस मक़सद से वे उसे सुनते हैं उन के इरादों से हम अच्छी तरह से वाक़िफ़ हैं, जब ये आप की तरफ़ कान लगाये हुए होते हैं तब भी, और जब ये विचार-विमर्श (मशविरा) करते हैं तब भी, जबकि यह जालिम कहते हैं कि तुम उस की इत्तेबा में लगे हुए हो जिस पर जादू कर दिया गया है।[2]

---

[1] यानी सब उसी के फ़रमाबरदार और अपनी-अपनी बोली में उसकी महिमा (तस्बीह) और गुणों का बयान करते हैं, अगरचे हम उनकी महिमा और गुणों के बयान को न समझ सकें, इसकी तसदीक़ क़ुरआन की दूसरी आयतों से भी होती है। जैसे हज़रत दाऊद के बारे में आता है :

﴿إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ﴾

"हम ने पहाड़ों को दाऊद के अधीन (ताबे) कर दिया, बस वे सुबह और शाम उस के साथ अल्लाह की पाकीज़गी का बयान करते हैं।" (सूर: स्वाद-१८)

[2] यानी नबी ﷺ को यह जादू से पीड़ित समझते हैं और यह समझते हुए क़ुरआन सुनते और आपस में कानाफूसी करते हैं, इसलिए हिदायत से महरूम ही रहते हैं।

أُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿48﴾

४८. देखें तो सही, वे आप के लिए क्या-क्या मिसाल देते हैं इसलिए वे वहक रहे हैं, अव तो रास्ता पाना उनके वश में नहीं रहा।

وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿49﴾

४९. उन्होंनें कहा कि क्या जव हम हड्डियाँ और धूल हो जायेंगे तो क्या हम नये जन्म में दोवारा उठाकर खड़े कर दिये जायेंगे।

قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ﴿50﴾

५०. जवाव दीजिए कि तुम पत्थर वन जाओ या लोहा।

اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا قُلِ الَّذِيْ فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَسَيُنْغِضُوْنَ اِلَيْكَ رُءُوْسَهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ﴿51﴾

५१. या कोई ऐसी चीज जो तुम्हारे दिलों में वहुत ही महान प्रतीत होती हो, फिर वह पूछें कि कौन है जो दोवारा हमारा जीवन लौटाये? (आप) जवाव दें कि वही (अल्लाह)! जिस ने तुम्हें पहली वार पैदा किया, इस पर वे अपने सिर हिला-हिलाकर आप से पूछेंगे कि अच्छा यह होगा कव? तो (आप) जवाव दें कि क्या ताज्जुव कि वह क़रीव ही आ लगी हो।

يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَتَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿52﴾

५२. जिस दिन वह तुम्हें वुलायेगा तुम उसकी तारीफ़ करते हुए इताअत करोगे और अंदाजा करोगे कि तुम्हारा रहना वहुत कम है।

وَقُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿53﴾

५३. और मेरे वंदों से कह दीजिए कि वह वहुत ही अच्छी वात अपने मुँह से निकाला करें क्योंकि शैतान आपस में फूट डलवाता है, वेशक शैतान इंसान का खुला दुश्मन है।

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿54﴾

५४. तुम्हारा रव तुम्हारे मुक़ाविले तुम से ज़्यादा जानने वाला है, वह अगर चाहे तो तुम पर रहम कर दे, चाहे तुम्हें सज़ा दे, हम ने आप को उनका उत्तरदायी वनाकर नहीं भेजा।

وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰى بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿55﴾

५५. और आकाशों और धरती में जो कुछ भी है आप का रव सव को अच्छी तरह जानता है, हम ने कुछ पैग़म्वरों को कुछ पर श्रेष्ठता (फ़ज़ीलत) अता की है, और दाऊद को ज़वूर हम ने ही अता की है।

قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا (56)

५६. कह दीजिये कि (अल्लाह के) सिवाय जिन्हें तुम [माबूद (वंदनीय)] समझ रहे हो, उन्हें पुकारो लेकिन न तो वह तुम से किसी दुख को दूर कर सकते हैं न बदल सकते हैं।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ ۚ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا (57)

५७. जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे ख़ुद अपने रब की नजदीकी की खोज में रहते हैं कि उन में से कौन ज़्यादा क़रीब हो जाये, वे ख़ुद उसकी रहमत की उम्मीद रखते हैं और उसके अज़ाब से डरते रहते हैं,[1] (बात भी यही है) कि तेरे रब का अज़ाब डरने की चीज़ है।

وَإِن مِّن قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا (58)

५८. और जितनी भी बस्तियाँ हैं हम क़यामत के दिन से पहले या तो उन्हें तहस-नहस कर देने वाले हैं या बहुत सख़्त सज़ा देने वाले हैं, यह तो किताब में लिखा जा चुका है।

وَمَا مَنَعَنَا أَن نُّرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَن كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ ۚ وَآتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوا بِهَا ۚ وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَخْوِيفًا (59)

५९. और हमें निशानियाँ (चमत्कार) उतारने से रोक केवल इसी की है कि अगले लोग इन्हें झुठला चुके हैं,[2] हम ने समूद को बसीरत के तौर पर ऊँटनी दी लेकिन उन्होंने उस पर

---

[1] इस आयत में من دونه से मुराद फरिश्तों और बुज़ुर्गों की वे तस्वीरें और मूर्तियाँ हैं जिन की वे पूजा करते थे या हज़रत उज़ैर और मसीह हैं जिन्हें यहूदी और इसाई अल्लाह का बेटा कहते और उन्हें सिफ़ाते इलाही से युक्त मानते थे या वे जिन्नात हैं जो मुसलमान हो गये थे और मूर्तिपूजक उनकी पूजा करते थे, इसलिए कि इस आयत में बताया जा रहा है कि वे ख़ुद भी अल्लाह की क़ुरबत हासिल करने की कोशिश करते और उसकी रहमत की तमन्ना करते और उसके अज़ाब से डरे हुए हैं और यह गुण बेजान (पत्थरों) में नहीं हो सकता, इस आयत से वाज़ेह हो जाता है कि من دون الله (अल्लाह के सिवाय जिनकी इबादत की जाती रही है) वे केवल पत्थर की मूर्तियाँ ही नहीं थीं अल्लाह के वे बंदे भी थे जिन में से कुछ फ़रिश्ते, कुछ औलिया, कुछ नबी और कुछ जिन्नात थे। अल्लाह तआला ने सब के बारे में फ़रमाया कि वह कुछ नहीं कर सकते, न किसी के दुख को दूर कर सकते हैं, न किसी की हालात बदल सकते हैं।

[2] यह आयत उस समय नाज़िल हुई जिस समय मक्का के काफ़िरों ने यह माँग की कि सफ़ा के पहाड़ को सोना बना दिया जाये या मक्का के पहाड़ अपनी जगह से हटा दिये जायें ताकि वहाँ खेती की जा सके, जिस पर अल्लाह तआला ने जिब्रील के ज़रिये से पैग़ाम भेजा कि उनकी माँग हम पूरा करने को तैयार हैं, लेकिन अगर उसके बाद भी वह ईमान न लाये तो फिर उनकी तबाही तय है, फिर उन्हें मौक़ा नहीं दिया जायेगा। नबी ﷺ ने भी इसी बात को ठीक समझा कि इनकी माँगें पूरी न की जाये ताकि वह यक़ीनी तबाही से बच जायें।

जुल्म किया, हम तो लोगों को केवल धमकाने के लिए निशानियाँ भेजते हैं।

وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ ۚ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ ۚ وَنُخَوِّفُهُمْ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا (60)

६०. और याद करो जबकि हम ने आप से कह दिया कि आप के रब ने लोगों को घेर लिया है जो रूयत आप को दिखायी थी, वह लोगों के लिए वाज़ेह इम्तेहान ही था और उसी तरह वह पेड़ भी जिस से क़ुरआन में नफ़रत का इज़हार किया गया है,[1] हम उन्हें बाख़बर कर रहे हैं लेकिन यह उन्हें और ज़्यादा दुश्मनी में बढ़ा रहा है।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ قَالَ أَأَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِينًا (61)

६१. और जब हम ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो तो इब्लीस के सिवाय सब ने किया, उस ने कहा कि क्या मैं उसे सज्दा करूँ जिसे तूने मिट्टी से बनाया है।

قَالَ أَرَأَيْتَكَ هَٰذَا الَّذِي كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَئِنْ أَخَّرْتَنِ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَأَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهُ إِلَّا قَلِيلًا (62)

६२. अच्छा देख ले उसे तूने मुझ पर फ़ज़ीलत तो दी है लेकिन अगर तूने मुझे क़यामत तक मौक़ा दिया तो मैं इसकी औलाद को बहुत कम लोगों के सिवाय अपने वश में कर लूँगा।

قَالَ اذْهَبْ فَمَن تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ جَزَاؤُكُمْ جَزَاءً مَّوْفُورًا (63)

६३. हुक्म हुआ कि जा, उन में से जो भी तेरा पैरोकार हो जायेगा तो तुम सबकी सज़ा नरक है, जो पूरा बदला है।

وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُم بِصَوْتِكَ وَأَجْلِبْ عَلَيْهِم بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ۚ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا (64)

६४. उन में से तू जिसे भी अपनी बात से बहका सके बहका ले और उन पर अपने सवार और पैदल चढ़ा ला, और उन के माल और औलाद में से अपना भी साझा लगा और उन्हें (झूठा) वादा दे ले, उन से जितने भी वचन (वादे) शैतान के होते हैं, सब के सब पूरा धोखा है।[2]

[1] सहाबा और ताबेईन ने इस रूया (दर्शन) की तफ़सीर ज़ाहिरी रूयत से की है और इस से मुराद मेराज का वाक़ेआ है जो बहुत से कमज़ोर लोगों के लिए भटकावे का सबब बन गया और वे मुर्तद हो गये, और पेड़ से मुराद ज़क्कूम (नरकीय) का पेड़ है, जिसको नबी ﷺ ने मेराज की रात नरक में देखा।

[2] अभिमान (धोखा) का मतलब होता है ग़लत काम को इस तरह ज़ाहिर किया जाये कि वह अच्छा और ठीक लगे।

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَٰنٌ ۚ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ وَكِيلًا ﴿65﴾

६५. मेरे सच्चे बन्दों पर तेरा कोई क़ाबू और वश नहीं, और तेरा रब बड़ा कारसाज़ काफ़ी है।

رَّبُّكُمُ ٱلَّذِى يُزْجِى لَكُمُ ٱلْفُلْكَ فِى ٱلْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا۟ مِن فَضْلِهِۦٓ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ﴿66﴾

६६. तुम्हारा रब वह है जो तुम्हारे लिये नदी में नौकायें चलाता है ताकि तुम उस के फ़ज़्ल की खोज करो, वह तुम्हारे ऊपर बड़ा रहम करने वाला है।

وَإِذَا مَسَّكُمُ ٱلضُّرُّ فِى ٱلْبَحْرِ ضَلَّ مَن تَدْعُونَ إِلَّآ إِيَّاهُ ۖ فَلَمَّا نَجَّىٰكُمْ إِلَى ٱلْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ ۚ وَكَانَ ٱلْإِنسَٰنُ كَفُورًا ﴿67﴾

६७. और समुद्र में मुसीबत पहुँचते ही जिन्हें तुम पुकारते थे सब भूल जाते हैं, केवल वही (अल्लाह) बाक़ी रह जाता है, फिर जब वह तुम्हें थल (ख़ुश्की) की तरफ़ महफ़ूज़ ले आता है तो तुम मुँह फेर लेते हो, इंसान बहुत ही नाशुक्रा है।

أَفَأَمِنتُمْ أَن يَخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ ٱلْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا۟ لَكُمْ وَكِيلًا ﴿68﴾

६८. तो क्या तुम इस से बेख़ौफ़ हो गये कि तुम्हें थल के किसी हिस्से में (ले जाकर धरती में) धँसा दे या तुम पर पथराव की आँधी भेज दे, फिर तुम अपने लिए किसी साथी को न पा सको।

أَمْ أَمِنتُمْ أَن يُعِيدَكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ ٱلرِّيحِ فَيُغْرِقَكُم بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ ثُمَّ لَا تَجِدُوا۟ لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِۦ تَبِيعًا ﴿69﴾

६९. क्या तुम इस बात से बेख़ौफ़ हो गये हो कि (अल्लाह तआला) दोबारा तुम्हें नदी के सफ़र में ले आये और तुम पर तेज़ हवा के झोंके भेज दे और तुम्हारे कुफ़्र के सबब तुम्हें डुबा दे, फिर तुम अपने लिए हम पर उसका दावा (पीछा) करने वाला किसी को न पाओगे।

۞ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِىٓ ءَادَمَ وَحَمَلْنَٰهُمْ فِى ٱلْبَرِّ وَٱلْبَحْرِ وَرَزَقْنَٰهُم مِّنَ ٱلطَّيِّبَٰتِ وَفَضَّلْنَٰهُمْ عَلَىٰ كَثِيرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ﴿70﴾

७०. और बेशक हम ने आदम की औलाद को बड़ी इज़्ज़त दी,[1] और उन्हें थल और जल की सवारियाँ दीं, और उन्हें पाक चीज़ों से रिज़्क़ अता की और अपनी बहुत सी मख़लूक़ पर उन्हें फ़ज़ीलत अता की।

---

[1] यह इज़्ज़त और एहतेराम के तौर पर सभी को हासिल है चाहे ईमान वाला हो या काफ़िर, क्योंकि यह इज़्ज़त दूसरी मख़लूक़, जान और जमादात और नबातात वग़ैरह के नहीं है।

يَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمَامِهِمْ ۖ فَمَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَأُولَٰئِكَ يَقْرَءُونَ كِتَابَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿71﴾

७१. जिस दिन हम हर उम्मत को उस के इमाम के साथ बुलायेंगे[1] फिर जिनका भी आमाल नामा दाहिने हाथ में दे दिया गया वह तो (ख़ुशी से) अपना आमालनामा पढ़ने लगेंगे, और धागे के बराबर (ज़र्रा बराबर) भी ज़ुल्म न किये जायेंगे।

وَمَن كَانَ فِي هَٰذِهِ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلًا ﴿72﴾

७२. और जो कोई इस दुनिया में अंधा रहा, वह परलोक (आख़िरत) में भी अंधा और रास्ता से बहुत ही भटका हुआ रहेगा।[2]

وَإِن كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ عَنِ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهُ ۖ وَإِذًا لَّاتَّخَذُوكَ خَلِيلًا ﴿73﴾

७३. और ये लोग आप को उस वह्यी (प्रकाशना) से जो हम ने आप पर उतारी है बहका देना चाह रहे थे कि आप इस के सिवाय कुछ दूसरी बातें ही हमारे नाम से बना लें, तब तो आप को ये लोग अपना दोस्त बना लेते।

وَلَوْلَا أَن ثَبَّتْنَاكَ لَقَدْ كِدتَّ تَرْكَنُ إِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيلًا ﴿74﴾

७४. और अगर हम आप को साबित (अडिग) न रखते तो ज़्यादा मुमकिन था कि उनकी तरफ कुछ न कुछ झुक ही जाते।

إِذًا لَّأَذَقْنَاكَ ضِعْفَ الْحَيَاةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيرًا ﴿75﴾

७५. फिर तो हम भी आप को दुगना अज़ाब दुनिया का देते और दुगनी ही मौत की, फिर आप तो अपने लिए हमारे आगे किसी को भी मददगार न पाते।

---

[1] इमाम का मतलब मुखिया, नेता और प्रतिनिधि (कायेद) है, यहाँ इस से क्या मुराद है? इस में इख़्तिलाफ है। कुछ आलिम कहते हैं कि इस से मुराद पैग़म्बर हैं यानी हर उम्मत को उस के पैग़म्बर के नाम से पुकारा जायेगा। कुछ कहते हैं कि इस से मुराद आसमानी किताबें हैं जो नबियों के साथ नाज़िल होती रहीं यानी हे तौरात वालो, हे इंजील वालो और हे क़ुरआन वालो आदि कह के पुकारा जायेगा। कुछ कहते हैं कि यहाँ 'इमाम' से मुराद आमालनामा हैं यानी हर इंसान को जब बुलाया जायेगा तो उसका आमालनामा उस के हाथ में होगा और उस के अनुसार उसका फ़ैसला किया जायेगा, इसी ख़्याल को इमाम शौकानी और इमाम इब्ने कसीर ने वरीयता (तरजीह) दिया है।

[2] أعمى (अंधा) से मुराद मन का अंधा है, यानी जो दुनिया में सच देखने और समझने और उसे क़ुबूल करने से महरूम रहा, वह आख़िरत में अंधा और अल्लाह की ख़ास नेमत और फ़ज़्ल से महरूम रहेगा।

وَإِنْ كَادُوا لَيَسْتَفِزُّونَكَ مِنَ الْأَرْضِ لِيُخْرِجُوكَ مِنْهَا وَإِذًا لَّا يَلْبَثُونَ خِلٰفَكَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿76﴾

७६. और ये तो आप के क़दम इस धरती से उखाड़ने ही लगे थे कि आप को इससे निकाल दें,[1] फिर ये भी आप के बाद बहुत कम ठहर पाते।[2]

سُنَّةَ مَنْ قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا ﴿77﴾

७७. ऐसा ही नियम उनका था, जो आप से पहले रसूल (संदेशवाहक) हम ने भेजे, और आप हमारे नियमों में कभी बदलाव न पायेंगे।

أَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوكِ الشَّمْسِ إِلَىٰ غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۖ إِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ﴿78﴾

७८. नमाज़ क़ायम करें सूरज ढलने से लेकर रात के अँधेरे तक[3] और प्रातः (फ़ज्र) का क़ुरआन पढ़ना भी, बेशक प्रातः (फ़ज्र) के वक़्त का क़ुरआन पढ़ना हाज़िर किया गया है।

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسَىٰ أَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا ﴿79﴾

७९. और रात के कुछ हिस्से में तहज्जुद (की नमाज़ में क़ुरआन) पढ़ा करें, यह ज़्यादती आप के लिए है, जल्द ही आप का रब आप को महमूद नाम के मुक़ाम पर खड़ा करेगा।[4]

وَقُلْ رَّبِّ أَدْخِلْنِي مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّأَخْرِجْنِي مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّي مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيرًا ﴿80﴾

८०. और विनय किया करें कि हे मेरे रब! मुझे जहाँ ले जा अच्छी तरह से ले जा और जहाँ से निकाल अच्छी तरह निकाल और मेरे लिए अपने पास से ग़ल्बा और मदद मुक़र्रर कर दे।

---

[1] यह उस साज़िश की तरफ़ इशारा है, जो नबी ﷺ को मक्का से निकालने के लिए मक्का के क़ुरैश ने तैयार किया था, जिस से अल्लाह ने आप ﷺ को बचा लिया।

[2] यानी अगर अपनी साज़िश से ये आप ﷺ को मक्का से निकाल देते तो ये भी उस के बाद ज़्यादा देर न रहते यानी अल्लाह के अज़ाब की पकड़ में आ जाते।

[3] دُلُوك का मतलब ढलना और غسق का मतलब अँधेरा है, सूरज ढलने के बाद ज़ोहर और अस्र की नमाज़ और रात के अँधेरा तक से मुराद मग़रिब और इशा की नमाज़ें हैं और क़ुरआन अल-फ़ज्र से मुराद फ़ज्र की नमाज़ है, क़ुरआन नमाज़ के मायने में है, इसको क़ुरआन की मिसाल इसलिए दी गयी है कि फ़ज्र में क़ुरआन की आयतों का पाठ (तिलावत) लम्बा होता है। इस तरह इस आयत मे पाँचों फ़र्ज़ नमाज़ों का बयान आ जाता है जिसका तफ़सीली बयान हदीसों में मिलता है और जो मुसलमानों के अमल से भी साबित है।

[4] यह वह मक़ाम है जो क़यामत के दिन अल्लाह तआला नबी ﷺ को अता करेगा और उस मक़ाम पर ही आप ﷺ वह सिफ़ारिश करेंगे जिस के बाद लोगों का हिसाब-किताब होगा।

وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۚ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ﴿81﴾

८१. और एलान कर दो कि हक़ आ गया और बातिल (असत्य) नाबूद हो गया, बेशक बातिल था भी मिट जाने योग्य ।[1]

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۙ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ﴿82﴾

८२. और यह क़ुरआन जो हम उतार रहे हैं ईमानवालों के लिए बहुत शिफ़ा और रहमत है। हाँ, ज़ालिमों को नुक़सान के सिवा कोई ज़्यादती नहीं होती ।

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ ۖ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَئُوسًا ﴿83﴾

८३. और इंसान पर जब भी हम अपना इंआम (पुरस्कार) करते हैं तो वह मुँह मोड़ लेता है और करवट बदल लेता है और जब भी उसे दुख होता है तो वह मायूस हो जाता है ।

قُلْ كُلٌّ يَعْمَلُ عَلَىٰ شَاكِلَتِهِ فَرَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ أَهْدَىٰ سَبِيلًا ﴿84﴾

८४. कह दीजिए कि हर इंसान अपने तरीक़े के मुताबिक़ काम करता है जो पूरी तरह हिदायत पर हैं, उन्हें तुम्हारा रब ही अच्छी तरह जानता है ।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ ۖ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُم مِّنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا ﴿85﴾

८५. और ये लोग आप से रूह के बारे में सवाल करते हैं, (आप) जवाब दीजिए कि रूह मेरे रब के हुक्म से है और तुम्हें जो इल्म दिया गया है वह बहुत ही कम है ।[2]

---

[1] हदीस में आता है कि मक्का फ़त्ह के बाद जब नबी ﷺ "ख़ानये काबा" में दाख़िल हुए तो वहाँ तीन सौ साठ मूर्तियाँ थीं, आप ﷺ के हाथ में छड़ी थी, आप ﷺ छड़ी की नोक से उन मूर्तियों को मारते जाते और (جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ) और (جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ) पढ़ते जाते (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर बनी इस्राईल, किताबुल मज़ालिम और मुस्लिम बाबु इज़ालतिल असनामे मिन हौलिल कअब:)

[2] रूह (आत्मा) वह छोटी चीज़ है जो किसी को दिखायी नहीं देती लेकिन हर जानदार की ताक़त और क़ूवत उसी रूह में पोशीदा है, इसकी हक़ीक़त और सच्चाई क्या है ? यह कोई नहीं जानता, यहूदियों ने एक बार नबी ﷺ से इस के बारे में पूछा तो यह आयत नाज़िल हुई । (सहीह बुख़ारी) आयत का मतलब यह है कि तुम्हारा इल्म अल्लाह के इल्म के सामने कुछ नहीं, और यह रूह जिस के बारे में तुम पूछ रहे हो इसका इल्म तो अल्लाह ने नबियों सहित किसी को भी नहीं दिया, बस इतना समझो कि यह मेरे रब का हुक्म है और मेरे रब की बड़ाई में से है जिसकी हक़ीक़त केवल वही जानता है ।

८६. और अगर हम चाहें तो जो वह्यी (प्रकाशना) आप की तरफ़ हम ने उतारी है सब ले लें, फिर आप को उस के लिए हमारे सामने कोई भी हिमायती न मिल सकेगा।

وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا ﴿86﴾

८७. सिवाय आप के रब की रहमत के। बेशक आप पर उसका बड़ा फ़ज़्ल है।

اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيْرًا ﴿87﴾

८८. कह दीजिए कि अगर सभी इंसान और जिन्न मिलकर इस क़ुरआन के बराबर लाना चाहें तो उन सब से इस की मिसाल लाना नामुमकिन है, अगरचे वे आपस में एक-दूसरे के सहायक (मददगार) भी बन जायें।

قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ﴿88﴾

८९. और हम ने तो इस क़ुरआन में लोगों के समझने के लिए हर तरह से सभी मिसाल बयान कर दिये हैं, लेकिन ज़्यादातर लोग नाशुक्री से नहीं रूकते।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؗ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿89﴾

९०. और उन्होंने कहा कि हम आप पर कभी ईमान लाने के नहीं, जब तक कि आप हमारे लिए धरती से जलस्रोत (चश्मा) न निकाल दें।

وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا ﴿90﴾

९१. या ख़ुद आप के लिए कोई बाग़ हो खजूरों और अंगूरों का और उस के बीच आप बहुत-सी नहरें बहती हुई निकाल कर दिखायें।

اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ﴿91﴾

९२. या आप आकाश को हम पर टुकड़े-टुकड़े कर के गिरा दें जैसा कि आप का ख़्याल है, या आप ख़ुद अल्लाह (तआला) को और फ़रिश्तों को हमारे सामने ला खड़ा करें।

اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ قَبِيْلًا ﴿92﴾

९३. या आप के अपने लिए कोई सोने का घर हो जाये या आप आकाश पर चढ़ जायें और हम तो आप के चढ़ जाने का भी उस वक़्त तक यक़ीन नहीं करेंगे जब तक कि आप हम पर कोई किताब न उतार लायें जिसे हम ख़ुद पढ़ लें, आप जवाब दें कि मेरा रब पाक है, मैं तो

اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِي السَّمَآءِ ؕ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ؕ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿93﴾

एक इंसान है जो रसूल (संदेशवाहक) बनाया गया है।

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿94﴾

९४. और लोगों के पास मार्गदर्शन (हिदायत) पहुँच चुकने के बाद ईमान से रोकने वाली केवल यही चीज रही कि उन्होंने कहा, क्या अल्लाह ने एक इंसान को ही रसूल (अवतार) बनाकर भेजा?[1]

قُلْ لَّوْ كَانَ فِى الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ﴿95﴾

९५. (आप) कह दें कि अगर धरती पर फ़रिश्ते चलते-फिरते और रहते होते तो हम भी उनके पास किसी आसमानी फ़रिश्ते को ही रसूल बनाकर भेजते।[2]

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ﴿96﴾

९६. कह दीजिए कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह का गवाह होना बस है, वह अपने बन्दों से अच्छी तरह वाकिफ़ और अच्छी तरह देखने वाला है।

وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ؕ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ﴿97﴾

९७. और अल्लाह जिसकी हिदायत कर दे वह हिदायत याफ़्ता है, और जिसे वह रास्ते से भटका दे नामुमकिन है कि तू उसका दोस्त उस के सिवाय दूसरे को पा ले, ऐसे लोगों को हम क़यामत वाले दिन औंधे मुँह जमा करेंगे, जबकि वे अंधे, गूंगे और बहरे होंगे, उनका ठिकाना नरक होगा, जब कभी वह हल्की होने लगेगी, हम उन पर उसे और भड़का देंगे।

[1] यानी किसी इंसान का रसूल होना काफ़िरों और मूर्तिपूजकों के लिए बहुत ताज्जुब की बात थी, वह यह बात मान नहीं रहे थे कि हमारे जैसा इंसान जो हमारी तरह चलता-फिरता है, हमारी तरह खाता-पीता है, हमारी तरह इंसानी रिश्तों से सम्बन्धित है, वह रसूल बन जाये, यह ताज्जुब उन के ईमान लाने में रूकावट था।

[2] अल्लाह तआला ने फ़रमाया जब धरती पर इंसान बसते हैं, तो उनकी हिदायत के लिए रसूल भी इंसान ही होंगे, ग़ैर इन्सानी रसूल, इंसान की हिदायत का कर्तव्य (फ़र्ज़) पूरा नहीं कर सकता, हाँ अगर धरती पर फ़रिश्ते बसते होते तो उन के लिए रसूल भी जरूर फ़रिश्ते होते।

ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا
ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ
خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿98﴾

९८. ये सब हमारी निशानियों से इंकार करने और यह कहने का नतीजा है कि क्या जब हम राख और ज़र्रा-ज़र्रा हो जायेंगे फिर हम नई पैदाईश करके उठा खड़े किये जायेंगे।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا
لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿99﴾

९९. क्या उन्होंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि जिस अल्लाह ने आकाश और धरती को पैदा किया वह उन जैसों को पैदा करने पर पूरी क़ुदरत रखता है, उसी ने उन के लिए एक ऐसा वक़्त मुक़र्रर कर रखा है, जो शक व शुब्हा से ख़ाली है, लेकिन ज़ालिम लोग नाशुक्रे बने बिना रहते नहीं।

قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآىِٕنَ رَحْمَةِ رَبِّيْٓ اِذًا
لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ﴿100﴾

१००. कह दीजिए कि (अगर मान लिया जाये) अगर तुम मेरे रब की रहमतों के ख़ज़ाने के मालिक बन जाते तो तुम उस वक़्त भी उसके ख़र्च हो जाने के डर से उस में कंजूसी करते, और इंसान है ही तंग दिल।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ
اِسْرَاۗءِيْلَ اِذْ جَاۗءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّىْ
لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ﴿101﴾

१०१. और हम ने मूसा को नौ मोजिज़े[1] बिल्कुल साफ़-साफ़ अता किये तू ख़ुद इस्राईल की औलाद से पूछ ले कि जब वे उन के पास पहुँचे तो फ़िरऔन बोला कि हे मूसा! मेरे

[1] **वे नौ मोजिज़े** : १- हाथ का रौशन होना, २- लाठी का कई तरह से इस्तेमाल, ३- सूखा, ४- फलों की कमी, ५- तूफ़ान, ६- टिड्डी दल का हमला, ७- खटमल और जूँ की ज़्यादती होना, ८- मेंढक और ख़ून। इमाम हसन बसरी कहते हैं कि सूखा और फलों की कमी एक ही बात है, और नवां मोजिज़ा लाठी का जादूगरों के जादू को अजगर बनकर निगल जाना है। हज़रत मूसा को इन के सिवाय भी मोजिज़े अता किये गये थे, जैसे लाठी का पत्थर पर मारना, जिस से बारह पानी के चश्मे निकल गये थे, बादलों की छाया करना, मन्न और सलवा वग़ैरह, लेकिन यहाँ नौ निशानियों से मुराद वही नौ मोजिज़े हैं जिन का मुज़ाहिरा (प्रदर्शन) फ़िरऔन और उस के पैरोकारों ने भी किया, इसीलिए हज़रत इब्ने अब्बास ने समुद्र फटकर रास्ता बन जाने को भी मोजिज़ा में शामिल किया है, और सूखा और फलों की कम पैदावार को एक ही मोजिज़ा माना है। तिर्मिज़ी के एक क़ौल में नौ मोजिज़ों का तफ़सीली बयान इस से अलग किया गया है, लेकिन सुबूत से वह क़ौल कमज़ोर है, इसलिए नौ मोजिज़े से मुराद यही बयान शुदा मोजिज़े हैं।

ख़्याल से तेरे ऊपर जादू कर दिया गया है।

१०२. (मूसा ने) जवाब दिया कि यह तो तुझे मालूम हो चुका है कि आकाशों और धरती के रब ही ने ये मोजिज़े दिखाने और समझाने के लिए उतारे हैं, हे फ़िरऔन ! मैं तो समझ रहा हूँ कि तू यक़ीनन नाश कर दिया गया है।

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ أَنزَلَ هَٰٓؤُلَآءِ إِلَّا رَبُّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ
وَٱلْأَرْضِ بَصَآئِرَ وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ يَٰفِرْعَوْنُ
مَثْبُورًا (102)

१०३. आख़िर में फ़िरऔन ने मज़बूत इरादा कर लिया कि उन्हें धरती से ही उखाड़ दे तो हम ने ख़ुद उसे और उस के कुल साथियों को डुबो दिया।

فَأَرَادَ أَن يَسْتَفِزَّهُم مِّنَ ٱلْأَرْضِ فَأَغْرَقْنَٰهُ
وَمَن مَّعَهُۥ جَمِيعًا (103)

१०४. और उस के बाद हम ने इस्राईल के बेटों से कह दिया कि उस धरती[1] पर तुम रहो सहो, हाँ जब आख़िरत का वादा आयेगा, हम तुम सब को समेट और लपेट कर ले आयेंगे।

وَقُلْنَا مِنۢ بَعْدِهِۦ لِبَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ٱسْكُنُوا۟ ٱلْأَرْضَ
فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ ٱلْءَاخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا (104)

१०५. और हम ने इस (क़ुरआन) को सच्चाई के साथ उतारा और यह भी सच के साथ उतरा, और हम ने आप को केवल ख़ुशख़बरी देने वाला और बाख़बर करने वाला बनाकर भेजा है।

وَبِٱلْحَقِّ أَنزَلْنَٰهُ وَبِٱلْحَقِّ نَزَلَ وَمَآ أَرْسَلْنَٰكَ
إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا (105)

१०६. और क़ुरआन को हम ने थोड़ा-थोड़ा कर के इसलिए उतारा है कि आप इसे वक़्त पाकर लोगों को सुनायें, और हम ने ख़ुद भी इसे थोड़ा-थोड़ा करके उतारा।

وَقُرْءَانًا فَرَقْنَٰهُ لِتَقْرَأَهُۥ عَلَى ٱلنَّاسِ عَلَىٰ مُكْثٍ
وَنَزَّلْنَٰهُ تَنزِيلًا (106)

[1] जैसाकि मालूम होता है उस धरती से मुराद मिस्र है, जिस से फ़िरऔन ने मूसा और उन के पैरोकारों को निकालने का इरादा किया था, लेकिन इस्राईल की औलाद का इतिहास (तारीख़) गवाह है कि वह मिस्र से निकलने के बाद पुन: मिस्र नहीं गये, बल्कि चालीस साल «तीह» के मैदान में गुज़ार कर फ़िलिस्तीन में दाख़िल हुए। इसका सुबूत सूर: अल-आराफ़ वग़ैरह में क़ुरआन के बयान से भी मिलता है, इसलिए ठीक यही है कि उस से मुराद फ़िलिस्तीन की धरती है।

قُلۡ اٰمِنُوۡا بِهٖۤ اَوۡ لَا تُؤۡمِنُوۡا ؕ اِنَّ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ مِنۡ قَبۡلِهٖۤ اِذَا يُتۡلٰى عَلَيۡهِمۡ يَخِرُّوۡنَ لِلۡاَذۡقَانِ سُجَّدًا ۙ﴿107﴾

१०७. कह दीजिए तुम इस पर ईमान लाओ या न लाओ, जिन्हें इस से पहले इल्म दिया गया है उन के पास तो जब भी इस को पढ़ा जाता है तो वे ठुड्डियों के बल सज्दा करने लगते हैं।

وَّيَقُوۡلُوۡنَ سُبۡحٰنَ رَبِّنَاۤ اِنۡ كَانَ وَعۡدُ رَبِّنَا لَمَفۡعُوۡلًا ﴿108﴾

१०८. और कहते हैं कि हमारा रब पाक है, हमारे रब का वादा बेशक पूरा होकर रहने वाला ही है।

وَيَخِرُّوۡنَ لِلۡاَذۡقَانِ يَبۡكُوۡنَ وَيَزِيۡدُهُمۡ خُشُوۡعًا ۩ ﴿109﴾

१०९. और वे ठुड्डियों के बल रोते हुए सज्दा की हालत में गिर पड़ते हैं, और यह क़ुरआन उनकी नर्मी और ख़ुशूअ और बढ़ा देता है।

قُلِ ادۡعُوا اللّٰهَ اَوِ ادۡعُوا الرَّحۡمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدۡعُوۡا فَلَهُ الۡاَسۡمَآءُ الۡحُسۡنٰى ۚ وَلَا تَجۡهَرۡ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتۡ بِهَا وَابۡتَغِ بَيۡنَ ذٰلِكَ سَبِيۡلًا ﴿110﴾

११०. कह दीजिए कि अल्लाह को अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान (कृपालु) कह कर। जिस नाम से भी पुकारो सभी अच्छे नाम उसी के हैं[1] न तो तू अपनी नमाज बहुत ऊंची आवाज से पढ़ और न बिल्कुल छिपाकर, बल्कि उस के बीच का रास्ता तलाश ले।

وَقُلِ الۡحَمۡدُ لِلّٰهِ الَّذِىۡ لَمۡ يَتَّخِذۡ وَلَدًا وَّلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ شَرِيۡكٌ فِى الۡمُلۡكِ وَلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرۡهُ تَكۡبِيۡرًا ﴿111﴾

१११. और कह दीजिए कि सभी तारीफ़ें अल्लाह के लिए ही हैं जो न औलाद रखता है और न अपने मुल्क में किसी को भागीदार रखता है, न वह ऐसा कमज़ोर है कि उसका कोई मददगार हो और तू उसकी पूरी-पूरी बड़ाई का बयान करता रह।

[1] जिस तरह पहले गुजर चुका है कि मक्का के मूर्तिपूजकों के लिये अल्लाह के सिफ़ाती नाम 'रहमान (दयालु), या 'रहीम (कृपालु) अपरिचित (नामानूस) थे, और कुछ हदीसों में आता है कि कुछ मूर्तिपूजकों ने नबी ﷺ के पाक मुंह से या 'रहमान व रहीम' (हे दयालु और कृपालु) के कलिमा सुने तो कहा कि हमें तो यह कहता है कि केवल एक अल्लाह को पुकारो और ख़ुद दो देवताओं को पुकार रहा है, जिस पर यह आयत नाज़िल हुई। (इब्ने कसीर)

सूरतुल कहफ़-१८

سُورَةُ الْكَهْفِ

सूर: कहफ* मक्के में उतरी और इस में एक सौ दस आयतें और बारह रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. सभी तारीफें उसी अल्लाह के लिए ही लायक़ हैं, जिस ने अपने बन्दे पर यह क़ुरआन उतारा और उस में कोई कमी बाक़ी नहीं छोड़ी।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ﴿1﴾

२. बल्कि सभी कुछ ठीक-ठाक रखा ताकि अपने पास की सख़्त सज़ा से बाख़बर कर दे और ईमान लाने वाले और नेक काम करने वालों को ख़ुश-ख़बरी सुना दे कि उन के लिए अच्छे बदले हैं।

قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ﴿2﴾

३. जिस में वे मुस्तक़िल तौर से हमेशा रहा करेंगे।

مّٰكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ﴿3﴾

४. और उन लोगों को भी डरा दे जो कहते हैं कि अल्लाह (तआला) औलाद रखता है।

وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ﴿4﴾

५. हक़ीक़त में न तो ख़ुद उन्हें इसका इल्म है न उन के बुज़ुर्गों को, यह बुहतान बड़ा बुरा है जो उन के मुँह से निकल रहा है, वह केवल झूठ बक रहे हैं।

مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ۭ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۭ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ﴿5﴾

* कहफ़ का मतलब है गुफ़ा। इस में गुफ़ा वालों का बयान है, इसलिए इसे सूर: कहफ़ कहा जाता है। इस की शुरूआती दस आयतों और आख़िरी दस आयतों की अहमियत का हदीस में बयान है जो इन को याद करे और पढ़ेगा वह दज्जाल के फ़साद से महफ़ूज़ रहेगा। (सहीह मुस्लिम, फ़ज़ल सूर: अल-कहफ़) जो इसका पाठ (तिलावत) जुमा के दिन करेगा अगले जुमा तक उस के लिए एक ख़ास तरह की रौशनी का नूर रहेगा। (मुस्तद्रक हाकिम २\३६८ और अलबानी ने इसे सहीह जामे सग़ीर नं॰ ६४७० में सहीह कहा है) इस के पढ़ने से घर में सलामती और तरक़्क़ी होती है, एक बार एक सहाबी ने सूर: कहफ़ पढ़ी, घर में एक जानवर भी था वह बिदकना शुरू हो गया, उन्होंने ध्यान से देखा कि क्या बात है ? तो उन्हें एक बादल दिखायी दिया, जिस ने उन्हें ढाँप रखा था, सहाबी ने इस वाक़िआ का बयान नबी ﷺ से किया, आप ﷺ ने फ़रमाया इसे पढ़ा करो, क़ुरआन पढ़ते समय सलामती उतरती है। (सहीह बुख़ारी, नं॰ ४७२४, मुस्लिम नं॰ ७९५)

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلَىٰٓ ءَاثَٰرِهِمْ إِن لَّمْ يُؤْمِنُوا۟ بِهَٰذَا ٱلْحَدِيثِ أَسَفًا ﴿6﴾

६. फिर अगर ये लोग इस बात पर[1] ईमान न लायें तो क्या आप उन के पीछे इसी दुख में अपनी जान को हलाक कर डालेंगे।

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى ٱلْأَرْضِ زِينَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ﴿7﴾

७. धरती पर जो कुछ है हम ने उसे धरती की ज़ीनत के लिए बनाया है कि हम उनका इम्तेहान ले लें कि उन में से कौन नेकी के काम को करने वाला है।

وَإِنَّا لَجَٰعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ﴿8﴾

८. और इस पर जो कुछ है, हम उसे एक बराबर मैदान कर डालने वाले हैं।

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَٰبَ ٱلْكَهْفِ وَٱلرَّقِيمِ كَانُوا۟ مِنْ ءَايَٰتِنَا عَجَبًا ﴿9﴾

९. क्या तू अपने ख़्याल में गुफ़ा और शिलालेख वालों को हमारी निशानियों में से कोई बड़ी अजीब निशानी समझ रहा है?

إِذْ أَوَى ٱلْفِتْيَةُ إِلَى ٱلْكَهْفِ فَقَالُوا۟ رَبَّنَآ ءَاتِنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ﴿10﴾

१०. उन नौजवानों ने जब गुफ़ा में पनाह ली तो दुआ की कि हे हमारे रब ! हमें अपने पास से रहमत अता कर और हमारे काम में हमारे लिए रास्ते को आसान कर दे।[2]

فَضَرَبْنَا عَلَىٰٓ ءَاذَانِهِمْ فِى ٱلْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ﴿11﴾

११. फिर हम ने उनके कानों पर गिन्ती के कई सालों तक उसी गुफ़ा में पर्दे डाल दिये।

ثُمَّ بَعَثْنَٰهُمْ لِنَعْلَمَ أَىُّ ٱلْحِزْبَيْنِ أَحْصَىٰ لِمَا لَبِثُوٓا۟ أَمَدًا ﴿12﴾

१२. फिर हम ने उन्हें उठा खड़ा कर दिया कि हम यह जान लें कि दोनों गुटों में से इस बड़ी मुद्दत को जो उन्होंने गुज़ारे, किस ने अधिक

---

[1] بهذا الحديث (इस बात) से मुराद क़ुरआन करीम है। काफ़िरों के ईमान लाने की जितनी शदीद इच्छा आप ﷺ को थी और उन के मुँह मोड़ने और इंकार से आप ﷺ को जो बहुत ज़्यादा दुख होता था, इस में आप ﷺ की इसी हालत का बयान है।

[2] ये वही नौजवान हैं जिन्हें कहफ़ वाले कहा गया है। (तफ़सीली बयान आगे आयेगा) उन्होंनें जब अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिए गुफ़ा में पनाह ली तो यह दुआ की, कहफ़ वालों की इस कहानी में नौजवानों के लिए बड़ी नसीहत है, आजकल के नौजवानों का ज़्यादातर वक़्त बेकार में बरबाद होता है और अल्लाह की तरफ़ ज़रा भी ध्यान नहीं। काश ! आज का मुसलमान नौजवान अपनी जवानी के वक़्त में माफ़ी माँग कर पैग़म्बरों की पैरवी करता और अपनी पूरी ताक़त और क़ूवत को अल्लाह की इबादत में लगा देता।

याद रखा है?[1]

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ۭ اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ هُدًى (13)

१३. हम उनकी सच्ची कहानी तेरे सामने बयान कर रहे हैं। ये कुछ नौजवान[2] अपने रब पर ईमान लाये थे और हम ने उन की हिदायत (मार्गदर्शन) में तरक़्क़ी अता की थी।

وَّرَبَطْنَا عَلٰي قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَا مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلٰـهًا لَّقَدْ قُلْنَآ اِذًا شَطَطًا (14)

१४. और हम ने उन के दिल मज़बूत कर दिये थे, जबकि ये उठ खड़े हुए और कहने लगे कि हमारा रब तो वही है जो आकाशों और धरती का रब है, नामुमकिन है कि हम उस के सिवाय किसी दूसरे माबूद को पुकारें, अगर ऐसा किया तो हम ने बहुत नामुनासिब बात कही।

هٰٓؤُلَاۗءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ لَوْلَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۢ بَيِّنٍ ۭ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَي اللّٰهِ كَذِبًا (15)

१५. यह है हमारी क़ौम जिस ने उसके सिवाय दूसरे माबूद बना रखे हैं, उन के प्रभुत्व (ग़ल्बे) का कोई वाज़ेह सुबूत क्यों नहीं पेश करते? अल्लाह पर झूठ बात बाँधने वाले से ज़्यादा ज़ालिम कौन है?

---

[1] उन दो गुटों का मतलब इख़्तिलाफ़ करने वाले लोग हैं, यह या तो उसी वक़्त के लोग थे जिन के बीच उन के बारे में इख़्तिलाफ़ हुआ, या रिसालत के वक़्त के काफ़िर और ईमान वाले मुराद हैं, और कुछ कहते हैं कि ये कहफ़ वाले ही हैं उनके दो गुट बन गये थे, एक कहता था कि हम इतने वक़्त तक सोये रहे, दूसरा उसको नकारता और पहले गुट से कम व ज़्यादा वक़्त बताता।

[2] ये नौजवान, कुछ आलिम कहते हैं कि इसाई धर्म के मानने वाले थे, और कुछ कहते हैं कि उनका ज़माना हज़रत ईसा से पहले का है। हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने इसी क़ौल को प्राथमिकता (तरजीह) दी है, कहते हैं कि एक राजा था दक़ियानूस, जो लोगों को मूर्तिपूजा करने और उन के नाम पर भोग-प्रसाद चढ़ाने की शिक्षा देता था। अल्लाह तआला ने इन कुछ नौजवानों के दिल में यह बात डाल दी कि इबादत के लायक़ तो सिर्फ़ एक अल्लाह ही है जो आकाश और धरती का ख़ालिक़ है और सारी दुनिया का रब है। فِتْيَة अल्पवाचक बहुवचन (जमा क़िल्लत) है, जिस से मालूम होता है कि इनकी तादाद नौ या उस से भी कम थी, यह अलग होकर एक जगह पर अल्लाह अकेले की इबादत करते थे, धीरे-धीरे लोगों में उनके तौहीद के यक़ीन का चर्चा होने लगा तो राजा तक बात पहुँची और उसने उन लोगों को अपने दरबार में बुलाकर उन से पूछा, तो वहाँ उन्होंने बेख़ौफ़ अल्लाह के एकेश्वरवाद (तौहीद) का बयान किया। आख़िर में राजा और अपनी क़ौम के मूर्तिपूजकों के डर से अपने धर्म की हिफ़ाज़त के लिए आबादी से दूर एक पहाड़ की गुफा में छिप गये, जहाँ अल्लाह तआला ने उन्हें गहरी नींद में सुला दिया और वे तीन सौ नौ साल वहाँ सोते रहे।

وَإِذِ اعْتَزَلْتُمُوهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَأْوُوا إِلَى الْكَهْفِ يَنشُرْ لَكُمْ رَبُّكُم مِّن رَّحْمَتِهِ وَيُهَيِّئْ لَكُم مِّنْ أَمْرِكُم مِّرْفَقًا ﴿16﴾

१६. और जबकि तुम उन से और अल्लाह के सिवाय उन के दूसरे माबूदों से अलग हो गये हो तो अब किसी गुफ़ा में जा बैठो, तुम्हारा रब तुम पर अपनी रहमत करेगा और तुम्हारे काम में आसानी पैदा कर देगा।

وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَت تَّزَاوَرُ عَن كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَت تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِّنْهُ ۚ ذَٰلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ ۗ مَن يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۖ وَمَن يُضْلِلْ فَلَن تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿17﴾

१७. और आप देखेंगे कि सूरज निकलने के वक़्त उनकी गुफ़ा के दायीं तरफ़ झुक जाता है और डूबने के वक़्त उनकी बायीं तरफ़ कतरा जाता है और वे उस गुफ़ा के कुशादा मुक़ाम में है।[1] यह अल्लाह की निशानियों में से है, अल्लाह (तआला) जिसकी हिदायत करे वे सच्चे रास्ते पर है और जिसे वह भटका दे नामुमकिन है कि आप उसका कोई वली और रहनुमा पा सकें।

وَتَحْسَبُهُمْ أَيْقَاظًا وَهُمْ رُقُودٌ ۚ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖ وَكَلْبُهُم بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ ۚ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿18﴾

१८. और आप विचार करेंगे कि वे जाग रहे हैं अगरचे वे सो रहे थे, और ख़ुद हम उनको दाहिने-बायें करवटें दिलाया करते थे, उनका कुत्ता भी चौखट पर अपने हाथ फैलाये हुए था, अगर आप झांक कर देखना चाहते तो ज़रूर उल्टे पांव भाग खड़े होते और उन के डर और रोब से आप भर दिये जाते।[2]

وَكَذَٰلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا بَيْنَهُمْ ۚ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ۖ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۚ قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ فَابْعَثُوا أَحَدَكُم

१९. और उसी तरह हम ने उन्हें जगाकर उठाया[3] कि आपस में पूछताछ कर लें, उन में से एक कहने वाले ने पूछा कि तुम कितनी देर ठहरे रहे? उन्होंने जवाब दिया एक दिन या एक दिन से भी कम,[4] कहने लगे कि तुम्हारे ठहरे रहने

---

[1] यानी सूरज निकलने के वक़्त दायीं तरफ़ को और डूबने के वक़्त बायीं तरफ़ को कतराकर निकल जाता और इस तरह दोनों वक़्त में उन पर धूप न पड़ती, अगरचे वह गुफ़ा में कुशादा मुक़ाम पर अराम कर रहे थे। فجوة का मतलब है कुशादा मुक़ाम।

[2] यह उनकी हिफ़ाज़त के लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से इंतेज़ाम था ताकि कोई उन के क़रीब न जा सके।

[3] यानी जिस तरह हम ने उनको अपनी ताक़त से सुला दिया था, उसी तरह तीन सौ नौ साल बाद उनको हम ने उठा दिया और इस तरह उठाया कि उनके जिस्म उसी तरह महफ़ूज़ थे जिस तरह तीन सौ नौ साल पहले सोते वक़्त थे, इसीलिए आपस में एक-दूसरे से उन्होंने सवाल किये।

[4] यानी जिस वक़्त वे गुफ़ा में गये, सुबह का पहला हिस्सा था, और जिस वक़्त जगे उस वक़्त दिन का आख़िरी पहर था, इस बिना पर वे समझे कि शायद एक दिन या उस से भी कम दिन

بِوَرِقِكُمْ هَٰذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ فَلْيَنظُرْ أَيُّهَا أَزْكَىٰ طَعَامًا فَلْيَأْتِكُم بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ﴿19﴾

का पूरा इल्म अल्लाह (तआला) को ही है, अब तो तुम अपने में से किसी को अपनी ये चाँदी देकर नगर भेजो वह ठीक तरह से देखभाल ले कि नगर का कौन-सा खाना पाक है, फिर उसी में से तुम्हारे खाने के लिए ले आये, और वह बहुत एहतेयात और नर्मी का बर्ताव करे और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे।[1]

إِنَّهُمْ إِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ فِي مِلَّتِهِمْ وَلَن تُفْلِحُوا إِذًا أَبَدًا ﴿20﴾

२०. अगर ये (काफ़िर) तुम पर अधिकार (ग़ल्बा) पा लेंगे तो तुम्हें पत्थरों से मार डालेंगे या दोबारा तुम्हें अपने धर्म में लौटा लेंगे तो फिर तुम कभी कामयाबी नहीं पा सकोगे।

وَكَذَٰلِكَ أَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا إِذْ يَتَنَازَعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِم بُنْيَانًا رَّبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِم مَّسْجِدًا ﴿21﴾

२१. और हम ने इस तरह लोगों को उनकी हालत से आगाह कर दिया[2] कि वे जान लें कि अल्लाह का वादा पूरा सच्चा है और क़यामत में कोई शक व शुब्हा नहीं, जबकि वे अपनी बातें में आपस में इख़्तिलाफ़ कर रहे थे, कहने लगे इन की गुफ़ा पर एक घर बना लो[3] उनका रब ही उन की हालत का ज़्यादा जानने वाला है, जिन लोगों ने उन के बारे में प्रभाव (ग़ल्बा)

के कुछ हिस्से में सोते रहे।

[1] एहतेयात और नर्मी पर ज़ोर इस उम्मीद से दिया, जिस के सबब वे नगर से निकलकर निर्जन (वीरान) जगह पर आये थे।

[2] यानी जिस तरह हम ने उन्हें सुलाया और जगाया, उसी तरह हम ने लोगों को उन के बारे में वाक़िफ़ कर दिया, यह परिचय इस तरह हुआ कि जिस वक़्त कहफ़ वालों का एक साथी चाँदी का वह सिक्का लेकर नगर में गया जो तीन सौ नौ साल के राजा दक़ियानूस के ज़माने का था, और वह सिक्का एक दूकानदार को दिया तो वह हैरान रह गया, उस ने पास के दुकान वाले को दिखाया, वह भी देखकर हैरान रह गया, जबकि कहफ़ वालों का साथी कहता रहा कि मैं इसी नगर का वासी हूं और कल ही यहां से गया हूं, लेकिन इस 'कल' को तीन सदियाँ गुज़र चुकी थीं, लोग किस तरह उसकी बात को मान लेते ? लोगों को यह शक हुआ कि कहीं इस इंसान को गड़ा हुआ धन तो नहीं मिल गया। धीरे-धीरे यह बात राजा या उस के अधिकारी तक पहुँची और उस साथी की मदद से वह गुफ़ा तक पहुँचा और कहफ़ वालों से मिला, उस के बाद अल्लाह तआला ने उन्हें फिर मौत दे दी। (इब्ने कसीर)

[3] ये कहने वाले कौन थे? कुछ आलिम कहते हैं कि उस वक़्त के ईमान वाले थे, कुछ कहते हैं कि राजा और उस के साथी थे, जब आकर उन्होंने मुलाक़ात की और उसके बाद अल्लाह ने उन्हें फिर सुला दिया, तो राजा और उस के साथियों ने कहा कि इनकी हिफ़ाज़त के लिए एक घर बना दिया जाये।

हासिल किया, वे कहने लगे कि हम तो उन के आसपास मस्जिद बना लेंगे ।[1]

سَيَقُولُونَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ قُل رَّبِّي أَعْلَمُ بِعِدَّتِهِم مَّا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ ۗ فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَاءً ظَاهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِم مِّنْهُمْ أَحَدًا ﴿٢٢﴾

२२. कुछ लोग कहेंगे कि गुफ़ा के लोग तीन थे और चौथा उन का कुत्ता था, कुछ कहेंगे कि पाँच थे छठा उन का कुत्ता था, ग़ैब के बारे में (निशाना देखे बिना) अंदाज़े से पत्थर चला देना, कुछ कहेंगे कि वे सात हैं और आठवां उनका कुत्ता है । (आप) कह दीजिए कि मेरा रब उनकी तादाद अच्छी तरह जानने वाला है, उन्हें बहुत कम लोग जानते हैं, फिर आप भी उन लोगों के बारे में केवल मुख़्तसर बातचीत ही करें, और उन में से किसी से उन के बारे में पूछताछ भी न करें ।

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَيْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾

२३. और कभी किसी काम पर इस तरह न कहें कि मैं इसे कल करूँगा ।

إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ ۚ وَاذْكُر رَّبَّكَ إِذَا نَسِيتَ

२४. लेकिन साथ ही इंशा अल्लाह (अल्लाह ने चाहा तो) कह लें[2] और जब भी भूलें अपने रब को

---

[1] यह ग़ल्बा हासिल करने वाले ईमान वाले थे या काफ़िर और मूर्तिपूजक ? शौकानी ने पहले क़ौल को मान्यता दी है और इब्ने कसीर ने दूसरे क़ौल को । क्योंकि नेक लोगों की क़ब्रों पर मस्जिदों की तामीर अल्लाह को पसंद नहीं । नबी ﷺ ने फ़रमाया :

«لَعَنَ اللهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ وَصَالِحِيهِمْ مَسَاجِدَ»

"अल्लाह तआला यहूदियों और इसाईयों पर लानत करे जिन्होंने अपने पैग़म्बरों और बुज़ुर्गों की क़ब्रों को मस्जिद बना लिया ।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल जनायेज़, बाब मायकरह मिन इत्तेख़ाज़िल मस्जिदे अलल क़बूरे और सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद बत्तेख़ाज़ि स्सोवरे फ़ीहा)

हज़रत उमर (ﷺ) की ख़िलाफ़त (शासनकाल) में ईराक़ में हज़रत दानियाल की क़ब्र मालूम हुई तो आप ने हुक्म दिया कि इसे छिपाकर आम क़ब्रों जैसी कर दिया जाये ताकि लोगों के इल्म में न आये कि फ़्लां क़ब्र फ़्लां पैग़म्बर की है । (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[2] मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि यहूदियों ने नबी ﷺ से तीन बातें पूछी थीं, रूह की हक़ीक़त क्या है और कहफ़ वाले और ज़ुलक़रनैन कौन थे? कहते हैं कि यही सवाल इस सूर: के नाज़िल होने के सबब बने । नबी ﷺ ने फ़रमाया मैं तुम्हें कल जवाब दूँगा, लेकिन उसके बाद पन्द्रह दिन तक जिब्रील वह्यी (प्रकाशना) लेकर नहीं आये, फिर जब आये तो अल्लाह तआला ने إن شاء الله कहने का हुक्म दिया । आयत में غدا (कल) से मुराद आने वाला दिन है यानी जब भी मुस्तक़बिल क़रीब या देर से कोई काम करने का इरादा करो तो إن شاء الله ज़रूर कहा करो, क्योंकि इंसान को तो पता नहीं कि वह जिस इरादे को ज़ाहिर कर रहा है, उसको पूरा करने

وَقُلْ عَسَىٰٓ أَن يَهْدِيَنِ رَبِّى لِأَقْرَبَ مِنْ هَٰذَا رَشَدًا ﴿24﴾

याद कर लिया करें[1] और कहते रहें कि मुझे पूरी उम्मीद है कि मेरा रब इस से भी ज़्यादा हिदायत के क़रीब की बात की हिदायत करेगा।

وَلَبِثُوا۟ فِى كَهْفِهِمْ ثَلَٰثَ مِا۟ئَةٍ سِنِينَ وَٱزْدَادُوا۟ تِسْعًا ﴿25﴾

२५. और वे लोग अपनी गुफ़ा में तीन सौ साल तक रहे और नौ साल और ज़्यादा गुज़ारे ।[2]

قُلِ ٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا۟ ۖ لَهُۥ غَيْبُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ أَبْصِرْ بِهِۦ وَأَسْمِعْ ۚ مَا لَهُم مِّن دُونِهِۦ مِن وَلِىٍّ وَلَا يُشْرِكُ فِى حُكْمِهِۦٓ أَحَدًا ﴿26﴾

२६. आप कह दीजिए कि अल्लाह ही को उनके ठहरे रहने के वक़्त का अच्छी तरह इल्म है, आकाशों और धरती का अन्तर्ज्ञान (ग़ैब) सिर्फ़ उसी को है, वह क्या ही अच्छा देखने सुनने वाला है । सिवाय अल्लाह के उनकी कोई मदद करने वाला नहीं, और अल्लाह तआला अपने हुक्म में किसी को शामिल नहीं करता ।

وَٱتْلُ مَآ أُوحِىَ إِلَيْكَ مِن كِتَابِ رَبِّكَ ۖ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَٰتِهِۦ وَلَن تَجِدَ مِن دُونِهِۦ مُلْتَحَدًا ﴿27﴾

२७. और आप की तरफ़ जो आप के रब की किताब वह्यी (प्रकाशना) की गयी है उसे पढ़ते रहें, उसकी बातों को कोई बदलने वाला नहीं, आप उस के सिवाय हरगिज़-हरगिज़ कोई पनाह न पायेंगे ।

وَٱصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ ٱلَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُم بِٱلْغَدَوٰةِ وَٱلْعَشِىِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُۥ ۖ وَلَا تَعْدُ عَيْنَاكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۖ وَلَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُۥ عَن ذِكْرِنَا وَٱتَّبَعَ هَوَىٰهُ وَكَانَ أَمْرُهُۥ فُرُطًا ﴿28﴾

२८. और अपने आप को उन्हीं के साथ रखा करें, जो अपने रब को सुबह और शाम पुकारते हैं और उसी के मुंह (अनुग्रह) की चाहना करते हैं। सावधान ! तेरी आँखें उन से न हटने पायें कि दुनियावी ज़िन्दगी की ज़ीनत की कोशिश में लग जाओ, (देखो) उसका कहना न मानना जिस के दिल को हम ने अपनी याद से विचलित (ग़ाफ़िल) कर दिया है, और जो अपनी मनोकामना

की ख़ुशनसीबी भी उसे अल्लाह की तरफ़ से मिलनी है या नहीं?

[1] यानी अगर बातचीत और वादा करते वक़्त إن شاء الله कहना भूल जाओ, तो जिस वक़्त याद आ जाये إن شاء الله कह लो, या फिर रब को याद करने का मतलब उसकी तारीफ़ और बड़ाई और उस से माफ़ी की दुआ है ।

[2] ज़्यादातर मुफ़स्सिरों ने इसको अल्लाह का क़ौल कहा है, सूरज के हिसाब से ३०० और चाँद के हिसाब से ३०९ साल होते हैं ।

(ख़्वाहिशात) के पीछे पड़ा हुआ है और जिसका अमल हद से गुज़र चुका है

وَقُلِ الْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَن شَاءَ فَلْيُؤْمِن وَمَن شَاءَ فَلْيَكْفُرْ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۚ وَإِن يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ ۚ بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا (29)

२९. और एलान कर दे कि यह सरासर हक़ (क़ुरआन) तुम्हारे रब की तरफ़ से है, अब जो चाहे ईमान लाये और जो चाहे कुफ़्र करे, ज़ालिमों के लिए हम ने वह आग तैयार कर रखी है जिसकी परिधि (क़नातें) उन्हें घेर लेंगी, अगर वे फ़रियाद करेंगे तो उनकी मदद उस पानी से की जायेगी जो तेलछट जैसा होगा जो चेहरे भून देगा, बड़ा ही बुरा पानी है और बड़ा बुरा आरामगाह (नरक) है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا (30)

३०. बेशक जो लोग ईमान लायें और नेकी का काम करें तो हम किसी नेकी करने वाले के बदला को बरबाद नहीं करते।[1]

أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ۚ نِعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا (31)

३१. उन के लिए हमेशा वाली जन्नत है उनके नीचे नदियाँ बह रही होंगी, वहाँ ये सोने के कड़े पहनाये जायेंगे [2] और हरे रंग के मुलायम और मोटे रेशम के कपड़े पहनेंगे,[3] वहाँ सिंहासन पर तकिये लगाये होंगे, क्या ही अच्छा बदला है और कितना अच्छा आरामघर है।

---

[1] क़ुरआन के अंदाज़े बयान के मुताबिक नरकवासियों के बयान के बाद जन्नत में जाने वालों का बयान है ताकि लोगों के अन्दर जन्नत हासिल करने की तमन्ना और शौक़ पैदा हो।

[2] क़ुरआन के नाज़िल होने के वक़्त और उस से पहले रिवाज था कि राजा, धनवान और क़बीलों के मुखिया अपने हाथों में सोने के कड़े पहनते थे जिससे उनकी इ़ज़्ज़त ज़ाहिर होती थी, स्वर्ग में जाने वालों को भी स्वर्ग में यह कड़े पहनायें जायेंगे।

[3] سُندُس बारीक रेशम إستبرق मोटा रेशम। दुनियाँ में मर्दों के लिए सोने और रेशमी कपड़े हराम हैं, जो लोग इस हुक्म के ऐतबार से अमल करेंगे, दुनियाँ में इन हराम चीज़ों के इस्तेमाल से बचेंगे, उन्हें जन्नत में यह सारी चीज़ें हासिल होंगी, वहाँ कोई चीज़ हराम नहीं होगी बल्कि जन्नत वाले जिस चीज़ की इच्छा करेंगे वह मौजूद होगी।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿32﴾

३२. और उन्हें उन दो इंसानों की मिसाल भी सुना दे जिन में से एक को हम ने दो बाग़ अंगूरों के दे रखे थे, जिन्हें खजूरों के पेड़ों से हम ने घेर रखा था,[1] और दोनों के बीच खेती पैदा कर दी थी।

كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ﴿33﴾

३३. दोनों बाग़ अपने फल बहुत लाये, और उस में कोई कमी न की, और हम ने उन बाग़ों के बीच नहर जारी कर रखी थी।

وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ﴿34﴾

३४. और (इस तरह) उसके पास फल थे, एक दिन उसने बातों ही बातों में अपने साथी से कहा कि मैं तुझ से ज़्यादा धनवान हूँ और जत्थे में भी ज़्यादा इज़्ज़त वाला हूँ।

وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَاۤ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖۤ اَبَدًا ﴿35﴾

३५. और यह अपने बाग़ में गया और था अपनी जान पर ज़ुल्म करने वाला, कहने लगा कि मैं विचार नही कर सकता कि किसी वक़्त भी यह बरबाद हो जाये।

وَّمَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿36﴾

३६. और न मैं क़यामत के क़ायम होने को मानता हूँ और अगर मान भी लूँ कि मैं अपने रब की तरफ़ लौटाया भी गया तो बेशक मैं (उस लौटने की जगह को) इस से भी ज़्यादा अच्छा पाऊँगा।

قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَكَفَرْتَ بِالَّذِيْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ﴿37﴾

३७. उस के साथी ने उस से बातें करते हुए कहा कि क्या तू उस (माबूद) को नहीं मानता है जिस ने तुझे मिट्टी से पैदा किया, फिर मनी से फिर तुझे पूरा इंसान (पुरूष) बना दिया।

لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَلَاۤ اُشْرِكُ بِرَبِّيْۤ اَحَدًا ﴿38﴾

३८. लेकिन मैं (तो अक़ीदा रखता हूँ कि) वही अल्लाह मेरा रब है, मैं अपने रब के साथ किसी को भी साझीदार न बनाऊँगा।

---

[1] जिस तरह चारदीवारी से हिफ़ाज़त की जाती है, उसी तरह इन बाग़ों के चारों तरफ़ खजूर के पेड़ थे जो बाड़े और चारदीवारी का काम देते थे।

وَلَوْلَآ إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ ٱللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِٱللَّهِ ۚ إِن تَرَنِ أَنَا۠ أَقَلَّ مِنكَ مَالًا وَوَلَدًا ﴿39﴾

३९. और तूने अपने बाग़ में जाते वक़्त क्यों नहीं कहा कि अल्लाह का चाहा होने वाला है, कोई ताक़त नहीं किन्तु अल्लाह की मदद से,[1] अगरचे तू मुझे माल और औलाद में कम देख रहा है।

فَعَسَىٰ رَبِّىٓ أَن يُؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّن جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ ٱلسَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيدًا زَلَقًا ﴿40﴾

४०. लेकिन बहुत मुमकिन है कि मेरा रब मुझे तेरे इस बाग़ से भी अच्छा अता कर दे और इस पर आकाशीय मुसीबत भेज दे तो यह चटियल और फिसलने वाला मैदान बन जाये।

أَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَن تَسْتَطِيعَ لَهُۥ طَلَبًا ﴿41﴾

४१. या इसका पानी नीचे उतर जाये और तेरे वश में न रहे कि तू उसे ढूंढ लाये।[2]

وَأُحِيطَ بِثَمَرِهِۦ فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَىٰ مَآ أَنفَقَ فِيهَا وَهِىَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ يَٰلَيْتَنِى لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّىٓ أَحَدًا ﴿42﴾

४२. और इसके (सारे) फल घेर लिये गये फिर वह अपने इस ख़र्च पर जो उसने उस पर किया था अपने हाथ मलने लगा और वह बाग़ छप्पर सहित औंधा पड़ा था, और (वह इंसान) कह रहा था कि हाय! मैं अपने रब के साथ किसी को भी साझी न बनाता।

وَلَمْ تَكُن لَّهُۥ فِئَةٌ يَنصُرُونَهُۥ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ﴿43﴾

४३. उस के हक़ में कोई भी जमाअत न उठी कि अल्लाह से कोई उसका बचाव करती और न वह ख़ुद ही बदला लेने वाला बन सका।

---

[1] अल्लाह के एहसानों का शुक्रिया अदा करने का तरीक़ा बताते हुए कहा कि बाग़ में दाख़िल होते वक़्त गर्व और घमण्ड को ज़ाहिर करने के बजाय यह कहा होता ما شاء الله لا قوة إلا بالله यानी जो कुछ होता है अल्लाह की मर्ज़ी से होता है, वह चाहे तो उसे बाक़ी रखे और चाहे तो नाश कर दे। इसीलिए हदीस में आता है कि जिस को किसी का माल, औलाद या हालत अच्छी लगे तो उसे ما شاء الله لا قوة إلا بالله पढ़ना चाहिए। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, माख़ूज़ मुसनद अबु याला)

[2] या दरमियान में जो नहर है, जो बाग़ की हरियाली और पैदावार का सबब है इसके पानी को इतनी गहराई में कर दे कि इस से पानी निकालना ही नामुमकिन हो जाये, और जहाँ पानी ज़्यादा गहराई में चला जाये तो फिर वहाँ बड़ी-बड़ी ताक़तवर मोटरें और मशीनें भी पानी ऊपर खींच लाने में नाकाम रहती हैं।

४४. यहीं से (साबित है) कि अधिकार (इख़्तियारात) उसी अल्लाह (तआला) हक़ के लिए है, वह बदला अता करने और नतीजा के ऐतबार से बहुत ही बेहतर है।

هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِّ ۚ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَخَيْرٌ عُقْبًا ﴿44﴾

४५. और उन के लिए दुनियावी ज़िन्दगी की मिसाल भी बयान कर, जैसे पानी। जिसे हम आकाश से उतारते हैं, उस से धरती की पैदावार मिली-जुली होती है, फिर आख़िर में वह चूर हो जाती है जिसे हवायें उड़ाये लिए फिरती हैं, और अल्लाह (तआला) हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।[1]

وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيَاحُ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿45﴾

४६. माल और औलाद तो दुनियावी ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं,[2] लेकिन बाक़ी रहने वाली नेकी तेरे रब के नज़दीक़ बदला के लिए तथा (मुस्तक़बिल की) अच्छी उम्मीद के लिए बहुत बेहतर है।

الْمَالُ وَالْبَنُونَ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَالْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِندَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ أَمَلًا ﴿46﴾

४७. और जिस दिन हम पहाड़ों को चलायेंगे और धरती को तू साफ़ खुली हुई देखेगा और

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً وَحَشَرْنَاهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ﴿47﴾

---

[1] इस आयत में दुनिया की हमेशा तब्दीली और अस्थिरता को खेती की एक मिसाल के ज़रिये वाज़ेह किया गया है कि खेती में लगे हुए पौधों और पेड़ पर जब आकाश से बारिश होती है तो पानी पाकर खेती लहलहा जाती है और पौधे और पेड़ नई ज़िन्दगी से प्रफुल्लित (ख़ुश) हो जाते हैं, लेकिन फिर एक वक़्त आता है कि खेती सूख जाती है पानी न मिलने के सबब या फसल पक जाने के सबब, तो फिर हवायें उसको उड़ाये फिरती हैं। हवा का एक झोंका कभी दायीं तरफ़ कभी बायीं तरफ़ झुका देता है। दुनिया की ज़िन्दगी भी हवा के एक झोंके या पानी के बुलबुले या खेती की तरह है जो अपनी कुछ दिन की बहार दिखाकर तबाही के घाट उतर जाती है, और यह सारे काम उसी के हाथों से होता है जो एक है और हर चीज़ उसके अधीन है। अल्लाह तआला ने दुनिया की यह मिसाल क़ुरआन मजीद में कई जगहों पर बयान किया है, जैसे सूरः यूनुस-२४, सूरः ज़ुमर-२१ और सूरः हदीद-२० और दूसरी आयतें।

[2] इस में दुनिया के उन लालचियों का खण्डन (तरदीद) है जो दुनिया के माल, सामान, क़बीला, परिवार और औलाद पर घमंड करते हैं, अल्लाह तआला ने फ़रमाया की फ़ानी संसार की ये चीज़ें वक़्ती ज़ीनत हैं, आख़िरत में यह चीज़ें कुछ काम नहीं आयेंगी, इसीलिए इस से आगे फ़रमाया कि आख़िरत में काम आने वाले अमल तो वह हैं जो बाक़ी रहने वाले हैं।

सभी लोगों को हम जमा करेंगे, उन में से किसी को बाक़ी न छोड़ेंगे।

وَعُرِضُوا عَلَىٰ رَبِّكَ صَفًّا ۖ لَّقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّن نَّجْعَلَ لَكُم مَّوْعِدًا ﴿48﴾

४८. और सब के सब तेरे रब के सामने कितारों में हाजिर किये जायेंगे। बेशक तुम हमारे सामने उसी तरह आये जिस तरह हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था लेकिन तुम तो इसी भ्रम में रहे कि हम कभी तुम्हारे लिए कोई वादे का दिन मुक़र्रर नहीं करेंगे।

وَوُضِعَ الْكِتَابُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ يَا وَيْلَتَنَا مَالِ هَٰذَا الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْصَاهَا ۚ وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا ۗ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ﴿49﴾

४९. और आमालनामा आगे में रख दिये जायेंगे, फिर तू देखेगा कि गुनहगार उस के लेख से डर रहे होंगे और कह रहे होंगे कि हाय हमारा नाश! यह कैसा लेख है जिसने कोई छोटा-बड़ा बिना घेरे नहीं छोड़ा, और जो कुछ उन्होंने किया था सब कुछ मौजूद पायेंगे और तेरा रब किसी पर ज़ुल्म और नाइंसाफ़ी न करेगा।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ

५०. और जब हम ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के आगे सज्दा करो तो इब्लीस के सिवाय सब ने सज्दा किया, यह जिन्नों में से था[1]

---

[1] क़ुरआन का यह साफ़ बयान है कि शैतान फ़रिश्ता नहीं था, फ़रिश्ता होता तो अल्लाह तआला के हुक्म की नाफ़रमानी करने की हिम्मत ही न होती, क्योंकि फ़रिश्तों के औसाफ़ अल्लाह तआला ने बयान किया है :

﴿لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ﴾

"वह अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी नहीं करते और वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म दिया जाता है।" (सूर: अल-तहरीम-६)

इस हालत में यह शक रहता है, अगर वह फ़रिश्ता नहीं था तो फिर वह अल्लाह के हुक्म से मुख़ातिब ही नहीं था क्योंकि इस के मुख़ातिब तो फ़रिश्ते थे, उन्हीं को सज्दा करने का हुक्म दिया गया था। 'रूहुल मआनी' के लेखक ने कहा है कि वह फ़रिश्ता यक़ीनन नहीं था, लेकिन वह फ़रिश्तों के साथ रहता था और उन्ही में शुमार होता था, इसलिए वह भी اسجدوا لآدم के हुक्म से मुख़ातिब था और आदम के सामने सज्दा करने के हुक्म के साथ उसको मुख़ातिब किया जाना तय है। अल्लाह का आदेश है : "जब मैंने तुझे हुक्म दिया तो फिर तूने सज्दा क्यों न किया।" (सूर: अल-आराफ़-१२)

فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗۤ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا (50)

उस ने अपने रब के हुक्म की नाफ़रमानी की[1] क्या फिर भी तुम उसे और उसकी औलाद को मुझे छोड़ कर अपना दोस्त बना रहे हो? अगरचे वह तुम सबका दुश्मन है, ऐसे ज़ालिमों का कितना बुरा बदला है।

مَاۤ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا (51)

५१. मैंने उन्हें आकाशों और धरती की पैदाईश के वक़्त मौजूद नहीं रखा था और न ख़ुद उन की अपनी पैदाईश में, और मैं भटकाने वालों को अपना मददगार बनाने वाला भी नहीं।

وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا (52)

५२. और जिस दिन वह कहेगा कि तुम्हारे ख़्याल से जो मेरे साझीदार थे उन्हें पुकारो, ये पुकारेंगे लेकिन उन में से कोई जवाब न देगा, और हम उनके बीच बरबादी का ज़रिया बना देंगे।

وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا (53)

५३. और मुजरिम नरक को देखकर समझ लेंगे कि वे इसी में जाने वाले हैं, लेकिन उससे बचने की जगह न पायेंगे।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا (54)

५४. और हम ने इस क़ुरआन में हर-हर तरह से सभी मिसालें लोगों के लिए बयान कर दिये हैं, लेकिन सभी चीज़ों से ज़्यादा झगड़ालू इंसान है।

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْۤا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّاۤ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا (55)

५५. और लोगों के पास हिदायत आ जाने के बाद उन्हें ईमान लाने और अपने रब से तौबा करने से केवल इसी बात ने रोका कि बुज़ुर्गों का सा मुआमला उन के साथ भी हो या उनके सामने खुला अज़ाब आ जाये।

[1] فسق का मतलब होता है निकलना, चूहा जब अपने बिल से निकलता है तो उसे अरबी भाषा में कहते है «فسقت الفارة من جحرها» शैतान भी इज़्ज़त और एहतेराम वाला सज्दा के हुक्म की नाफ़रमानी करके रब की इताअत से निकल गया।

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ ۖ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا أُنذِرُوا هُزُوًا ﴿56﴾

५६. और हम तो अपने रसूलों को केवल इसलिए भेजते हैं कि वे ख़ुशख़बरी सुना दें और बाख़बर कर दें, काफ़िर लोग बातिल को सुबूत बनाकर झगड़े चाहते हैं कि इस से सच को लड़खड़ा दें, वह मेरी आयतों (मंत्रों) और जिस चीज़ से डराया जाये उसे मज़ाक में उड़ाते हैं।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ ۚ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۖ وَإِن تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَن يَهْتَدُوا إِذًا أَبَدًا ﴿57﴾

५७. और उस से बढ़कर ज़ालिम कौन है जिसे उस के रब की आयतों के ज़रिये नसीहत दी जाये वह फिर भी मुख मोड़े रहे, और जो कुछ उस के हाथों ने आगे भेज रखा है उसे भूल जाये? बेशक हम ने उन के दिलों पर उसकी समझ से पर्दे डाल रखे हैं और उन के कानों में बोझ है, अगरचे तू उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाता रहे, लेकिन यह कभी भी हिदायत नहीं पायेंगे।

وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ ۖ لَوْ يُؤَاخِذُهُم بِمَا كَسَبُوا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ۚ بَل لَّهُم مَّوْعِدٌ لَّن يَجِدُوا مِن دُونِهِ مَوْئِلًا ﴿58﴾

५८. तेरा रब बड़ा बख़्शने वाला और रहम करने वाला है, वह अगर उन के अमलों की सज़ा में पकड़े तो बेशक उन्हे जल्द ही अज़ाब करे, लेकिन उन के लिए एक वादे का वक़्त मुक़र्रर है जिस से वह भागने की कभी जगह नहीं पायेंगे।[1]

وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِم مَّوْعِدًا ﴿59﴾

५९. और ये हैं वह बस्तियाँ जिन्हें हम ने उन के ज़ुल्म के सबब बरबाद कर दिया और उनकी तबाही का एक वक़्त हम ने मुक़र्रर कर रखा था।[2]

---

[1] यानी यह तो बख़्शने वाले रब की रहमत है कि वह गुनाह पर तुरन्त पकड़ नहीं करता बल्कि मौक़ा अता करता है, अगर ऐसा न होता तो अपने अमलों के सबब हर इंसान ही अल्लाह के अज़ाबों के पंजों में जकड़ा रहता, लेकिन यह ज़रूर है कि जब यह मौक़ा की मुद्दत ख़त्म हो जाती है और बरबादी का वह वक़्त आ जाता है जो अल्लाह ने मुक़र्रर किया होता है तो भागने का कोई रास्ता और बचाव का कोई तरीक़ा उनके लिए बाक़ी नहीं रहता। موئل का मतलब है पनाह की जगह, भागने का रास्ता।

[2] इस से मुराद आद, समूद, हज़रत शुऐब और हज़रत लूत वग़ैरह की क़ौम है जो हिजाज़ के

६०. और जब मूसा ने अपने नौजवान से कहा[1] कि मैं तो चलता ही रहूँगा यहाँ तक कि दो नदियों के संगम [2] के मुक़ाम पर पहुँचूँगा चाहे मुझे सालों चलना पड़े।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتَىٰهُ لَآ أَبْرَحُ حَتَّىٰٓ أَبْلُغَ مَجْمَعَ ٱلْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِىَ حُقُبًا ﴿60﴾

६१. जब वे दोनों वहाँ पहुँचे जहाँ दोनों नदियों के संगम की जगह थी, वहाँ अपनी मछली भूल गये जिस ने नदी में सुरंग जैसा अपना रास्ता बना लिया।

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَٱتَّخَذَ سَبِيلَهُۥ فِى ٱلْبَحْرِ سَرَبًا ﴿61﴾

६२. जब दोनों वहाँ से आगे बढ़े तो मूसा ने अपने नौजवान से कहा कि हमारा नाश्ता दे, हमें तो अपने इस सफ़र से बहुत तक़लीफ़ उठानी पड़ी।

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتَىٰهُ ءَاتِنَا غَدَآءَنَا لَقَدْ لَقِينَا مِن سَفَرِنَا هَٰذَا نَصَبًا ﴿62﴾

६३. (उस ने) जवाब दिया कि क्या आप ने देखा भी? जब हम पत्थर से टेक लगाकर आराम कर रहे थे वहीं मैं मछली भूल गया था, हक़ीक़त में शैतान ने मुझे भुला दिया कि मैं आप से इसकी चर्चा करूँ, उस मछली ने एक अजीब तरह से नदी[3] में अपना रास्ता बना लिया।

قَالَ أَرَءَيْتَ إِذْ أَوَيْنَآ إِلَى ٱلصَّخْرَةِ فَإِنِّى نَسِيتُ ٱلْحُوتَ وَمَآ أَنسَىٰنِيهُ إِلَّا ٱلشَّيْطَٰنُ أَنْ أَذْكُرَهُۥ ۚ وَٱتَّخَذَ سَبِيلَهُۥ فِى ٱلْبَحْرِ عَجَبًا ﴿63﴾

इलाक़े के क़रीब और उन के रास्तों में आवाद थे।

[1] नौजवान से मुराद हज़रत यूशआ बिन नून हैं जो मूसा की मौत के बाद उनके वारिस वने।

[2] इस जगह का निर्धारण (तअय्युन) किसी सहीह हदीस से नहीं हो सका है फिर भी नजदीक़ी के विना पर इस से मुराद सीनाई के सहरा का दक्षिणी किनारा है जहाँ अक़बा की खाड़ी और स्वेस की खाड़ी दोनों आकर मिलती और लाल सागर में जाकर मिल जाती हैं, दूसरी जगह जिनका बयान मुफ़स्सिरों ने किया है उन पर किसी तरह से दो सागरों के संगम का क़ौल साबित ही नहीं होता।

[3] यानी मछली ज़िन्दा होकर समुद्र में चली गयी और उस के लिए अल्लाह तआला ने समुद्र में सुरंग की तरह रास्ता बना दिया। हज़रत यूशअ ने मछली को समुद्र में जाते और रास्ता बनते हुए देखा, लेकिन हज़रत मूसा को बताना भूल गये, यहाँ तक कि आराम करके वहाँ से फिर सफ़र शुरू किया, उस दिन और उस के बाद रात का सफ़र करके, जब दूसरे दिन हज़रत मूसा को थकान और भूख का एहसास हुआ और अपने नौजवान साथी से कहा कि लाओ नाश्ता कर लें, उसने जवाब दिया, मछली तो जहाँ हम ने पत्थर से टेक लगाकर आराम किया था, वहाँ ज़िन्दा होकर समुद्र में चली गयी थी और वहाँ अजीब तरह से उस ने अपना रास्ता बना

قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿64﴾

६४. (मूसा ने) कहा यही था जिसकी खोज में हम थे, तो वे वहीं से अपने क़दमों के निशान को ढूंढते हुए वापस लौटे।

فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿65﴾

६५. फिर हमारे बन्दों में से एक बन्दा[1] को पाया, जिसे हमने अपने पास से ख़ास रहमत[2] अता कर रखी थी और उसे अपने पास से ख़ास[3] इल्म सिखा रखा था।

قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿66﴾

६६. उससे मूसा ने कहा कि मैं आप का हुक्म मानूँ कि आप मुझे उस सच्चे इल्म को सिखा दें जो आप को सिखाया गया है?

قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿67﴾

६७. उस ने कहा आप हमारे साथ कभी सब्र नहीं कर सकते।

وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿68﴾

६८. और जिस चीज को आप ने अपने इल्म में न लिया हो उस पर सब्र कर भी कैसे सकते हैं?

लिया था, जिसकी मैं आप से चर्चा करना भूल गया और शैतान ने मुझे भुला दिया।

[1] उस बन्दे से मुराद हज़रत ख़िज्र हैं जैसाकि सहीह हदीसों में वज़ाहत है। ख़िज्र का मतलब हरियाली है, यह एक बार धरती पर बैठे तो वह धरती का टुकड़ा नीचे से हरियाली बनकर लहलहाने लगा, इसी सबब उनका नाम ख़िज्र पड़ गया। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: अल-कहफ़)

[2] रहमत से कुछ मुफ़स्सिरों ने वे ख़ास उपहार मुराद लिये हैं जो अल्लाह ने अपने उस ख़ास बन्दे को अता किये और ज़्यादातर मुफ़स्सिरों ने इस से मुराद नबूअत लिया है।

[3] उस से नबूअत के इल्म के सिवाय जिस से हज़रत मूसा भी वाक़िफ़ थे, कुछ कायनात से सम्बन्धित (मुताल्लिक़) बातों का इल्म है जिसे अल्लाह तआला ने केवल हज़रत ख़िज्र को अता किया था, हज़रत मूसा के पास वह इल्म नहीं था। इस से मतलब निकालते हुए कुछ सूफ़ी (योगी) दावा करते हैं कि अल्लाह तआला कुछ लोगों को जो नबी नहीं होते علم لدني से नवाज़ता है जो बिना उस्ताद के सिर्फ़ अल्लाह की रहमत से हासिल होता है और यह पोशीदा इल्म धार्मिक नियमों के उल्टा और ख़िलाफ़ होता है, लेकिन यह मतलब इसलिए ठीक नहीं कि हज़रत ख़िज्र के बारे में तो अल्लाह तआला ने ख़ुद उन को ख़ास इल्म अता करने की वज़ाहत कर दी है, जबकि किसी दूसरे के लिए ऐसी वज़ाहत कहीं नहीं, अगर इसको आम कर दिया जाये तो फिर हर जादूगर इस तरह का दावा कर सकता है, इस सम्प्रदाय (फ़िर्क़े) में यह दावे आम हैं, इसलिए ऐसे दावों की कोई हैसियत नहीं।

قَالَ سَتَجِدُنِيٓ إِن شَآءَ ٱللَّهُ صَابِرًا وَلَآ أَعۡصِي لَكَ أَمۡرًا (69)

६९. मूसा ने जवाब दिया कि अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे सब्र करने वालों में पायेंगे और किसी बात में आप की नाफ़रमानी नहीं करूंगा।

قَالَ فَإِنِ ٱتَّبَعۡتَنِي فَلَا تَسۡـَٔلۡنِي عَن شَيۡءٍ حَتَّىٰٓ أُحۡدِثَ لَكَ مِنۡهُ ذِكۡرًا (70)

७०. (उस ने) कहा कि अगर आप मेरे साथ ही चलने का इसरार करते हैं तो ध्यान रहे कि किसी चीज़ के बारे में मुझ से कुछ न पूछना जब तक मैं ख़ुद उस के बारे में न बताऊं।

فَٱنطَلَقَا حَتَّىٰٓ إِذَا رَكِبَا فِي ٱلسَّفِينَةِ خَرَقَهَاۖ قَالَ أَخَرَقۡتَهَا لِتُغۡرِقَ أَهۡلَهَا لَقَدۡ جِئۡتَ شَيۡـًٔا إِمۡرًا (71)

७१. फिर वे दोनों चले यहां तक कि एक नाव में सवार हुए, (ख़िज़्र ने) उस के पटरे तोड़ दिये, (मूसा ने) कहा क्या आप उसे तोड़ रहे हैं कि नाव वालों को डूबा दें, आप ने तो बड़ा अनुचित (नामुनासिब)[1] काम किया।

قَالَ أَلَمۡ أَقُلۡ إِنَّكَ لَن تَسۡتَطِيعَ مَعِيَ صَبۡرًا (72)

७२. (ख़िज़्र ने) जवाब दिया कि मैंने तो पहले ही तुझ से कह दिया था कि तू मेरे साथ कभी सब्र न कर सकेगा।

قَالَ لَا تُؤَاخِذۡنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرۡهِقۡنِي مِنۡ أَمۡرِي عُسۡرًا (73)

७३. (मूसा ने) जवाब दिया कि मेरी भूल पर मुझे न पकड़िये और मुझे मेरे बारे में परेशानी में न डालिये।[2]

فَٱنطَلَقَا حَتَّىٰٓ إِذَا لَقِيَا غُلَٰمًا فَقَتَلَهُۥ قَالَ أَقَتَلۡتَ نَفۡسًا زَكِيَّةَۢ بِغَيۡرِ نَفۡسٍ لَّقَدۡ جِئۡتَ شَيۡـًٔا نُّكۡرًا (74)

७४. फिर दोनों चले यहां तक कि एक बालक[3] को पाया, (ख़िज़्र ने) उसे मार डाला, (मूसा ने) कहा कि क्या आप ने एक पाक रूह को बिना किसी जान के बदले मार डाला? बेशक आप ने तो बड़ी बुरी बात की।

---

[1] हज़रत मूसा को चूंकि इस ख़ास इल्म की ख़बर नहीं थी जिसके बिना पर ख़िज़्र ने नाव के पटरे तोड़ दिये थे, इसलिए सब्र न कर सके और अपने इल्म और अक़्ल की बिना पर इसे बहुत भयानक काम बताया, إمرا का मायेना (अर्थ) है الداهية العظيمة "बहुत भयानक काम।"

[2] यानी मेरे साथ नर्मी का सुलूक करें, सख़्ती का नहीं।

[3] ग़ुलाम से मुराद बालिग़ नौजवान भी हो सकता है और नाबालिग़ बच्चा भी।

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿75﴾

७५. वह कहने लगे क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ रह कर कभी सब्र नहीं कर सकते।

قَالَ إِن سَأَلْتُكَ عَن شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصَاحِبْنِي ۖ قَدْ بَلَغْتَ مِن لَّدُنِّي عُذْرًا ﴿76﴾

७६. (मूसा ने) जवाब दिया अगर अब इस के बाद मैं आप से किसी चीज़ के बारे में सवाल करूँ तो बेशक आप मुझे अपने साथ न रखना, बेशक मेरी तरफ़ से[1] आप (सीमा) उज्र को पहुँच चुके।

فَانطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا فَأَبَوْا أَن يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَن يَنقَضَّ فَأَقَامَهُ ۖ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا ﴿77﴾

७७. फिर दोनों चले, एक गाँववासियों के पास आकर उन से खाना माँगा, उन्होंने उनकी मेहमान नवाज़ी से इंकार कर दिया, दोनों ने वहाँ एक दीवार पायी जो गिरना चाहती थी उस ने उसे सीधी कर दिया,[2] (मूसा) कहने लगे अगर आप चाहते तो इस पर मज़दूरी ले लेते।

قَالَ هَٰذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ ۚ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِع عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿78﴾

७८. उस ने कहा बस यह जुदाई है मेरे और तेरे बीच, अब मैं तुझे इन बातों की हक़ीक़त भी बताऊँगा जिस पर तुम सब्र न कर सके।[3]

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسَاكِينَ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدتُّ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُم مَّلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ﴿79﴾

७९. नाव तो कुछ ग़रीबों की थी जो नदी में काम करते थे, मैंने उस में कुछ तोड़-फोड़ करने का इरादा कर लिया, क्योंकि उन के आगे एक राजा था जो हर अच्छी नाव को जबरदस्ती ले लेता था।

[1] यानी अगर अब सवाल करूँ तो अपने साथ रखने की ख़ुशनसीबी से मुझे महरूम कर दें, मुझे कोई शिकायत नहीं होगी, इसलिए कि आप के पास उचित कारण (सबब) होगा।

[2] हज़रत ख़िज़्र ने उस दीवार को हाथ लगाया और चमत्कारिक रूप (मोजिज़ाना तौर) से वह सीधी हो गयी, जैसाकि सहीह बुख़ारी के क़ौल से वाज़ेह है।

[3] लेकिन बिछड़ने से पहले हज़रत ख़िज़्र ने तीनों वाक़ेआत की हक़ीक़त से उन्हें आगाह और बाख़बर करना ज़रूरी समझा ताकि मूसा किसी शक के शिकार न हो जायें, और वह यह समझ लें कि नबूअत का इल्म और है जिससे उन्हें सुशोभित (मुज़य्यन) किया गया है, और कुछ उत्पत्ति के विषय का इल्म और है जो अल्लाह की मर्ज़ी और इल्म के ताबे है, जिसका इल्म हज़रत ख़िज़्र को दिया गया है, और उसी के ऐतबार से उन्होंने ऐसे काम किये जो दीनी ऐतबार से अच्छे नहीं थे, इसीलिए हज़रत मूसा उचित रूप (बजा तौर) से उन पर मौन नहीं रह सके थे।

وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِينَا أَنْ يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ﴿80﴾

८०. और उस नौजवान के माता-पिता ईमान वाले थे, हमें यह डर हुआ कि कही यह उन्हें अपनी सरकशी और वेदीनी से मजबूर और व्याकुल (परेशान) न कर दे।

فَأَرَدْنَا أَنْ يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِنْهُ زَكَاةً وَأَقْرَبَ رُحْمًا ﴿81﴾

८१. इसलिए हम ने चाहा कि उन्हें उनका रव उस के बदले इस से वेहतर पाक और उस से ज़्यादा प्यारा और महबूब बच्चा अता कर दे।

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزٌ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ۚ ذَٰلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ﴿82﴾

८२. और दीवार का क़िस्सा यह है कि उस नगर में दो यतीम लड़के हैं जिनका ख़ज़ाना उनकी इस दीवार के नीचे गड़ा है, उन के बाप बहुत ही नेक इंसान थे, तो तेरा रब चाहता था कि ये दोनों यतीम अपनी जवानी की उम्र में जाकर अपना यह ख़ज़ाना तेरे रव की रहमत और मेहरबानी से निकाल लें, मैंने अपने इरादे (और ख़्वाहिश) से कोई काम नही किया, यह हक़ीक़त थी उन वाक़ेआत की जिन पर आप सब्र न कर सके।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ ۖ قُلْ سَأَتْلُو عَلَيْكُمْ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿83﴾

८३. और आप से ज़ुलक़रनैन के वाक़ेआ के बारे में यह लोग पूछ रहे हैं। (आप) कह दीजिए कि मैं उन का थोड़ा-सा हाल तुम्हें पढ़ कर सुनाता हूं।

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿84﴾

८४. हम ने धरती पर उसे ताक़त दी थी और उसे हर चीज़[2] के साधन भी अता कर दिये थे।

فَأَتْبَعَ سَبَبًا ﴿85﴾

८५. वह एक रास्ता के पीछे लगा।

---

[1] यह मूर्तिपूजकों के तीसरे सवाल का जवाब हैं जो यहूदियों के कहने पर उन्होंने नबी ﷺ से किये थे।

[2] سبب का असली मतलब रस्सी है, इसका इस्तेमाल ऐसे साधन (वसायेल) और माध्यम (ज़रिया) के लिये होता है जो मक़सद हासिल के लिये इस्तेमाल किया जाता है, इस आधार पर سببا का मतलब है कि हम ने उसे ऐसे साधन और माध्यम मुहय्या किये, जिन से काम लेकर उस ने जीत हासिल की, दुश्मनों का घमंड मिट्टी में मिलाया, ज़ालिम हाकिमों का नाश किया।

حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِىْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ؕ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّاۤ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّاۤ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ﴿86﴾

८६. यहाँ तक कि सूरज डूबने के मुक़ाम तक पहुँच गया और उसे एक दलदल के स्रोत (चश्मे) में डूबते हुए पाया और उस स्रोत की जगह पर एक क़ौम को भी पाया, हम ने कह दिया हे ज़ुल्करनैन! तू उन्हें सज़ा दे या उन के बारे में तू कोई अच्छा तरीक़ा निकाले।

قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿87﴾

८७. उसने कहा कि जो ज़ुल्म करेगा उसे तो हम भी अब सज़ा देंगे, फिर वह अपने रब की तरफ़ लौटाया जायेगा और वह उसे सख़्त अज़ाब देगा।

وَاَمَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨالْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا يُسْرًا ؕ ﴿88﴾

८८. लेकिन जो ईमान लाये और नेक अमल करे उस के लिए बदले में भलाई है, और हम उसे अपने काम में भी आसानी का हुक्म देंगे।

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿89﴾

८९. फिर वह दूसरे रास्ते की तरफ़ लगा।

حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ۙ ﴿90﴾

९०. यहाँ तक कि जब वह सूरज निकलने की जगह पर पहुँचा तो उसे एक ऐसी क़ौम पर निकलते पाया कि उन के लिए हम ने उस से कोई पर्दा और आड़ नहीं बनायी।[1]

كَذٰلِكَ ؕ وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿91﴾

९१. वाक़ेआ ऐसा ही है, हम ने उसके आस-पास के कुल समाचारों को घेर रखा है।[2]

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿92﴾

९२. वह फिर एक दूसरे रास्ते की तरफ़ लगा।

حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿93﴾

९३. यहाँ तक कि जब दो दीवारों के बीच पहुँचा उन दोनों के उस तरफ़ एक ऐसी क़ौम को पाया जो बात समझने के क़रीब भी न थी।

---

[1] यानी ऐसी जगह पर पहुँच गया जो पूरब दिशा की आख़िरी आबादी थी, जहाँ उसने ऐसी क़ौम देखा जो मकानों में निवास करने के बजाय मैदानों और सहराओं में निवास किये हुए, निर्वस्त्र थी, यह मतलब है उन के और सूर्य के बीच पर्दा नहीं था, सूर्य उन के नंगे जिस्मों पर निकलता था।

[2] यानी ज़ुल्करनैन के बारे में हम ने जो बयान किया है वह इसी तरह है कि पहले वह पश्चिम की आख़िरी सीमा तक फिर पूरब की आख़िरी सीमा तक पहुँचा और हमें उसकी सब सलाहियतों, संसाधनों (अस्बाब) और दूसरी बातों का पूरा इल्म है।

قَالُوا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰٓ أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿94﴾

९४. (उन्होंने) कहा हे ज़ुल्क़रनैन ! याजूज और माजूज इस देश में बड़े फ़साद फैलाते हैं[1] तो क्या हम आप के लिए कुछ माल जमा कर दें? (इस शर्त पर कि) आप हमारे और उन के बीच कोई दीवार बना दें।

قَالَ مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿95﴾

९५. उस ने जवाब दिया कि मेरे बस में मेरे रब ने जो अता कर रखा है वही बेहतर है, तुम केवल अपनी ताक़त और क़ूवत से मेरी मदद करो, तुम्हारे और उन के बीच मैं मज़बूत दीवार बना देता हूँ।

آتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ حَتَّىٰٓ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوا حَتَّىٰٓ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا قَالَ آتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿96﴾

९६. मुझे लोहे की चादरें ला दो, यहाँ तक कि जब उन दो पहाड़ों के बीच दीवार तैयार कर दी तो हुक्म दिया कि फूंको (यानी तेज़ आग जलाओ) उस वक़्त तक कि लोहे की इन चादरों को बिल्कुल आग कर दिया, तो कहा मेरे पास लाओ इस पर पिघला हुआ ताँबा डाल दूँ।

فَمَا اسْطَاعُوٓا أَنْ يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ﴿97﴾

९७. फिर न तो उन में उस दीवार पर चढ़ने की ताक़त थी और न उस में कोई छेद कर सकते थे।

قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّي فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دَكَّآءَ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ﴿98﴾

९८. कहा कि यह केवल मेरे रब की रहमत है, लेकिन जब मेरे रब का वादा आयेगा तो उसे टुकड़े-टुकड़े कर देगा। बेशक मेरे रब का वादा सच्चा है।

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوجُ فِي بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ﴿99﴾

९९. और उस दिन हम उन्हें आपस में एक-दूसरे में गुडमुड होते हुए छोड़ देंगे और नरसिंघा (सूर) फूंक दिया जायेगा, फिर सब को एक साथ हम जमा कर लेंगे।

[1] याजूज और माजूज दो सम्प्रदाय (क़ौम) हैं और सहीह हदीस के बिना पर इंसानों में से ही हैं, और उन की तादाद दूसरे मानव जाति के मुक़ाबले में अधिक होगी और उन्ही से नरक ज़्यादा भरेगा। (सहीह बुख़ारी)

وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضًا ﴿100﴾

१००. और उस दिन हम नरक को (भी) काफ़िरों के सामने ला खड़ा कर देंगे।

الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ﴿101﴾

१०१. जिन की आंखें मेरी याद से पर्दे में थीं और (सच बात) सुन भी नहीं सकते थे।

اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْٓ اَوْلِيَآءَ ۭ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿102﴾

१०२. क्या काफ़िर यह सोंचे बैठे हैं कि मेरे सिवाय वे मेरे बन्दों को अपना हिमायती बना लेंगे? (सुनो) हम ने तो उन काफ़िरों की मेहमानी के लिए नरक को तैयार कर रखा है।

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿103﴾

१०३. कह दीजिए कि अगर (तुम कहो तो) मैं तुम्हें बता दूं कि अपने अमल के सबब सबसे ज़्यादा नुक़सान में कौन है?

اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿104﴾

१०४. वे हैं कि जिनकी दुनियावी ज़िन्दगी की सभी कोशिश बेकार हो गई और वे इसी भ्रम में रहे कि वे बहुत अच्छे काम कर रहे हैं।

اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَاۗىِٕهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿105﴾

१०५. यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब की आयतों से और उस से मिलने से इंकार किया, इसलिए उन के सारे अमल बेकार हो गये, फिर क़यामत के दिन हम उनका कोई भार मुक़र्रर न करेंगे।

ذٰلِكَ جَزَاۗؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿106﴾

१०६. हक़ीक़त यह है कि उनका बदला नरक है, क्योंकि उन्होंने कुफ़्र किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿107﴾

१०७. जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम भी किये, बेशक उन के लिए फ़िरदौस (जन्नत का सब से ऊंचा मुक़ाम)[1] के बाग़ों में स्वागत है।

---

[1] جنات الفردوس जन्नत का सब से बड़ा दर्जा है। इसलिए नबी ﷺ ने फ़रमाया कि जब भी तुम अल्लाह से जन्नत का सवाल करो तो अल-फ़िरदौस (सर्वोच्च) का सवाल करो, इसलिए कि वह जन्नत का सब से बड़ा दर्जा है और वहीं से जन्नत की नदियों का उदगम (शुरूअ) है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत तौहीद, बाबु व कान अर्शुहू अलल माए)

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿108﴾

१०८. जहां वे हमेशा रहेंगे, जिस मक़ाम को बदलने का कभी भी उनका इरादा ही न होगा।

قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿109﴾

१०९. कह दीजिए कि अगर मेरे रब की बातों को लिखने के लिए समुद्र स्याही बन जाये तो वह भी मेरे रब की बातों के ख़त्म होने से पहले ही ख़त्म हो जायेगा, चाहे हम उसी जैसा दूसरा भी उसकी मदद के लिए ले आयें।

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿110﴾

११०. आप कह दीजिए कि मैं तो तुम जैसा ही एक इंसान हूं, (हाँ) मेरी तरफ़ वह्यी (प्रकाशना) की जाती है कि सब का माबूद सिर्फ़ एक ही माबूद है, तो जिसे भी अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिए कि नेकी के काम करे और अपने रब की इबादत में[1] किसी को भी शरीक न करे।

سُوْرَةُ مَرْيَمَ

सूरतु मरियम-१९

सूर: मरियम* मक्के में उतरी और इस में अट्ठानवे आयतें हैं और छ: रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

---

[1] नेक काम वह है जो सुन्नत के ऐतबार से हो, यानी जो अपने रब से मुलाक़ात का यक़ीन रखता हो उसे चाहिए कि हर अमल नबी ﷺ की सुन्नत के मुताबिक़ करे, और दूसरे यह कि अल्लाह की इबादत में किसी दूसरे को साझीदार न ठहराये, इसलिए कि धर्म में नई बातें मिलाना और मूर्तिपूजा दोनों ही अमलों के बेकार होने का सबब हैं, अल्लाह तआला इन दोनों से हर मुसलमान को महफ़ूज रखे।

* हब्शा की हिजरत के क़िस्से में बताया गया है कि इथोपिया (हब्शा) के राजा नजाशी और उस के दरबारी और मंत्रियों (वज़ीरों) के सामने जब सूर: मरियम के शुरूआती हिस्से को हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब ने सुनाया तो उसे सुनकर उन सभी की दाढ़ियाँ आसूंओं से भीग गयीं, और नजाशी ने कहा कि यह क़ुरआन और हज़रत ईसा जो आये थे, सब एक ही रौशनी की किरणें हैं। (फ़तहुल क़दीर)

كٓهٰيٰعٓصٓ ﴿1﴾

१. काफ़•हा•या•ऐन•स्वाद•

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ﴿2﴾

२ यह है तेरे रब की उस रहमत का बयान, जो उसने अपने बन्दे ज़करिया[1] पर की थी।

اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ﴿3﴾

३. जब कि उस ने अपने रब से चुपके-चुपके दुआ की थी।[2]

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ﴿4﴾

४. कहा कि हे मेरे रब! मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गयी हैं और सिर बुढ़ापे के सबब भड़क उठा है, लेकिन मैं कभी भी तुझ से दुआ करके महरूम नहीं रहा।

وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَّرَآءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ﴿5﴾

५. और मुझे अपने (मरने के) बाद अपने क़रीबी रिश्तेदारों का डर है, मेरी बीवी भी बाँझ है, लेकिन तू मुझे अपनी तरफ़ से वारिस अता कर।

يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ﴿6﴾

६. जो मेरा भी वारिस हो और याक़ूब के वंश का भी वारिस, और हे मेरे रब ! तू उसे मक़बूल बन्दा बना ले।

يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ۨ اسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ﴿7﴾

७. हे ज़करिया! हम तुझे एक लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं जिसका नाम यहया है, हम ने उससे पहले इसका हमनाम भी किसी को नहीं किया।

قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ﴿8﴾

८. (ज़करिया) कहने लगे मेरे रब ! मेरे यहाँ लड़का कैसे होगा, मेरी पत्नी बाँझ और मैं ख़ुद बुढ़ापे की बहुत कमज़ोर हालत को पहुँच चुका हूँ।[3]

---

[1] हज़रत ज़करिया इस्राईल के वंश में से नबी हैं, यह बढ़ई थे और यही काम उन की आमदनी का ज़रिया था। (सहीह मुस्लिम, बाबु मिन फ़ज़ाएले ज़करिया)

[2] चुपके-चुपके दुआयें इसलिए की कि एक तो यह अल्लाह को ज़्यादा प्यारा है, क्योंकि इस में गिड़गिड़ाना, ध्यान, विनय (आजिज़ी) और नर्मी ज़्यादा होती है, दूसरे इसलिए कि कमज़ोर अक़्ल वाले न कहें कि यह बूढ़ा अब बुढ़ापे में औलाद माँग रहा है, जबकि औलाद के सभी ज़ाहिरी उम्मीदें ख़त्म हो चुकी हैं।

[3] عاقر उस औरत को भी कहते हैं, जो अपने बुढ़ापे के सबब जनने की सलाहियत से महरूम हो चुकी हो और शुरू से ही बाँझ को भी कहते हैं, यहाँ यह दूसरे ही मतलब में है।

قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ﴿9﴾

९. हुक्म हुआ कि (वादा) इसी तरह हो चुका, तेरे रब ने कह दिया है कि मुझ पर तो यह बिल्कुल आसान है और तू ख़ुद जबकि कुछ न था मैं तुझे पैदा कर चुका हूं।

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ﴿10﴾

१०. कहने लगे हे मेरे रब ! मेरे लिए कोई निशानी बना दे, हुक्म हुआ कि तेरे लिए निशानी यह है कि सेहतमंद होने के बावजूद भी तू तीन रातों तक किसी इंसान से बोल न सकेगा।

فَخَرَجَ عَلٰي قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿11﴾

११. अब ज़करिया अपने कमरे (हुजरे) से निकल कर अपनी क़ौम के पास आकर उन्हें इशारा करते हैं कि तुम सुबह और शाम अल्लाह की पाकीज़गी बयान करो।

يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۭ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ﴿12﴾

१२ हे यह्या! (मेरी) किताब को मज़बूती से थाम ले, और हम ने उसे बचपन ही से इल्म अता किया।

وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۭ وَكَانَ تَقِيًّا ﴿13﴾

१३. और अपने पास से दया (रहम) और पाकीज़ी भी वह परहेज़गार (संत) इंसान था।

وَّبَرًّۢا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ﴿14﴾

१४ और अपने माता-पिता के साथ नेक था, वह सख़्त और गुनहगार न था।

وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ﴿15﴾

१५. उस पर सलामती है जिस दिन उस ने जन्म लिया और जिस दिन वह मरे, और जिस दिन वह ज़िन्दा करके उठाया जायेगा।[1]

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿16﴾

१६. इस किताब में मरियम के क़िस्से भी बयान कर, जबकि वह अपने परिवार के लोगों से अलग होकर पूरब की तरफ़ आयीं।

[1] तीन मौक़े इंसान के लिए बहुत डरावने होते हैं १- जब इंसान माँ के गर्भ से बाहर आता है, २- जब मौत का पंजा उसे अपनी पकड़ में लेता है, ३- जब उसे क़ब्र से ज़िन्दा करके उठाया जायेगा तो वह अपने को मैदान हश्र की भयानकता में घिरा हुआ पायेगा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया इन तीनों जगहों पर उस के लिये हमारी तरफ़ से हिफ़ाज़त और सुकून है।

فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۚ فَأَرْسَلْنَا إِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿17﴾

१७. और उन लोगों की तरफ़ से पर्दा कर लिया, फिर हम ने उस के पास अपनी रूह (जिब्रील ﷺ) को भेजा तो वह उस के सामने पूरा इंसान बनकर ज़ाहिर हुआ।

قَالَتْ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ﴿18﴾

१८. यह कहने लगीं मैं तुझ से रहमान (दयालु) की पनाह माँगती हूँ, अगर तू कुछ भी अल्लाह से डरने वाला है।

قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِأَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ﴿19﴾

१९. (उसने) कहा कि मैं अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ, तुझे एक पाक लड़का देने आया हूँ।

قَالَتْ أَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ أَكُ بَغِيًّا ﴿20﴾

२०. कहने लगी कि भला मेरे यहाँ लड़का कैसे हो सकता है? मुझे तो किसी मर्द का हाथ तक मस नहीं हुआ और न मैं बदकार हूँ।

قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ أَمْرًا مَّقْضِيًّا ﴿21﴾

२१. उस ने कहा बात तो यही है, (लेकिन) तेरे रब का हुक्म है कि वह मुझ पर बहुत आसान है, हम तो उसे लोगों के लिए एक निशानी बना देंगे[1] और अपनी ख़ास रहमत[2] यह तो एक निर्धारित (मुक़र्ररा) बात है।

فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿22﴾

२२. फिर वह गर्भवती (हामिला) हो गयीं और इसी वजह से वह यकसू होकर एक दूर जगह पर चली गयीं।

---

[1] यानी मैं आम साधनों (वसायलों) के लिए मजबूर नहीं हूँ, मेरे लिए यह बिल्कुल आसान है और हम उसे अपने क़ुदरत की एक निशानी बनाना चाहते हैं, इस से पहले हम ने तुम्हारे बाप आदम को बिना औरत और मर्द के पैदा किया और तुम्हारी माँ हव्वा को बिना औरत के केवल मर्द से, और सभी मख़लूक़ के जानदारों को औरत और मर्द के मिलाप से जन्म दिया, और अब ईसा को जन्म देकर चौथी हालत में भी पैदा करके अपनी क़ुदरत का प्रदर्शन (मुज़ाहिरा) करना चाहते हैं और वह है केवल औरत के गर्भ से बिना मर्द के पैदा कर देना, हम ख़िलक़त के चारों रूपों पर क़ुदरत रखते हैं।

[2] इस से मुराद नुबूवत है, जो अल्लाह की ख़ास रहमत है और उन के लिए भी जो इस नुबूवत पर ईमान लायेंगे।

فَأَجَاءَهَا الْمَخَاضُ إِلَىٰ جِذْعِ النَّخْلَةِ قَالَتْ يَا لَيْتَنِي مِتُّ قَبْلَ هَٰذَا وَكُنتُ نَسْيًا مَّنسِيًّا ﴿23﴾

२३. फिर उसे प्रसव पीड़ा (दर्द जिह) एक खजूर के पेड़ के तने के नीचे ले आयी, और मुँह से निकल गया कि हाय! मैं इस से पहले मर गयी होती और लोगों की याद से भूली बिसरी हो जाती।

فَنَادَاهَا مِن تَحْتِهَا أَلَّا تَحْزَنِي قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿24﴾

२४. इतने में उसे नीचे से ही आवाज़ दी कि मायूस न हो, तेरे रब ने तेरे पाँव के नीचे एक चश्मा जारी कर दिया है।

وَهُزِّي إِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسَاقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿25﴾

२५. और उस खजूर के तने को अपनी तरफ़ हिला, यह तेरे सामने ताज़ा पकी खजूरें गिरा देगा।

فَكُلِي وَاشْرَبِي وَقَرِّي عَيْنًا ۖ فَإِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ أَحَدًا فَقُولِي إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمَٰنِ صَوْمًا فَلَنْ أُكَلِّمَ الْيَوْمَ إِنسِيًّا ﴿26﴾

२६. अब बेख़ौफ होकर खा पी और आँखें ठंडी रख, अगर तुझे कोई इंसान दिखायी दे तो कह देना कि मैंने अल्लाह रहमान के नाम का रोज़ा रखा है, मैं आज किसी इंसान से बात न करूँगी।

فَأَتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُ ۖ قَالُوا يَا مَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا ﴿27﴾

२७. अब (हज़रत ईसा) को लिए हुए वह अपने क़ौम में आयीं, सब ने कहा कि मरियम तूने बहुत कुकर्म (बुरा काम) किया।

يَا أُخْتَ هَارُونَ مَا كَانَ أَبُوكِ امْرَأَ سَوْءٍ وَمَا كَانَتْ أُمُّكِ بَغِيًّا ﴿28﴾

२८. हे हारून की बहन![1] न तो तेरा बाप बुरा आदमी था न तेरी माँ बदकार थी।

فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ ۖ قَالُوا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَن كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿29﴾

२९. (मरियम ने) अपने बच्चे की तरफ़ इशारा किया, सब कहने लगे कि लो भला हम गोद के बच्चे से बातें कैसे करें?

قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ آتَانِيَ الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ﴿30﴾

३०. (बच्चा) बोल उठा कि मैं अल्लाह तआला का बंदा हूँ, उस ने मुझे किताब अता की है और मुझे अपना दूत (पैग़म्बर) बनाया है।

[1] हारून से मुराद मुमकिन है उनका कोई भाई हो, यह भी मुमकिन है कि हारून से मुराद हारून रसूल (मूसा के भाई) ही हों, और अरबों की तरह उनका रिश्ता हारून की तरफ़ कर दिया।

३१. और उस ने मुझे मुबारक बनाया है जहां भी मैं रहूं, और उसने मुझे नमाज और जकात का हुक्म दिया है, जब तक भी मैं ज़िन्दा रहूं।

وَّجَعَلَنِىۡ مُبٰرَكًا اَيۡنَ مَا كُنۡتُ وَاَوۡصٰنِىۡ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمۡتُ حَيًّا ﴿31﴾

३२. और उस ने मुझे अपनी मां का सेवक बनाया है, और मुझे सख़्त और बदबख़्त नहीं किया।

وَّبَرًّاۢ بِوَالِدَتِىۡ وَلَمۡ يَجۡعَلۡنِىۡ جَبَّارًا شَقِيًّا ﴿32﴾

३३. और मुझ पर मेरे जन्म के दिन और मेरी मौत के दिन, और जिस दिन कि मैं दोबारा ज़िन्दा खड़ा किया जाऊंगा, सलाम ही सलाम है।

وَالسَّلٰمُ عَلَىَّ يَوۡمَ وُلِدْتُّ وَيَوۡمَ اَمُوۡتُ وَيَوۡمَ اُبۡعَثُ حَيًّا ﴿33﴾

३४. यह है सच्ची कहानी ईसा इब्ने मरियम की, यही है वह सच बात जिस में लोग शक और शुब्हा में लिप्त (मुब्तिला) हैं।

ذٰلِكَ عِيۡسَى ابۡنُ مَرۡيَمَ‌ ۚ قَوۡلَ الۡحَـقِّ الَّذِىۡ فِيۡهِ يَمۡتَرُوۡنَ ﴿34﴾

३५. अल्लाह के लिए औलाद का होना जायेज़ नहीं वह तो बहुत पाक है, वह तो किसी काम के करने का इरादा करता है तो उसे कहता है कि हो जा, वह उसी वक़्त हो जाता है।

مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنۡ يَّتَّخِذَ مِنۡ وَّلَدٍ‌ ۙ سُبۡحٰنَهٗ ‌ؕ اِذَا قَضٰٓى اَمۡرًا فَاِنَّمَا يَقُوۡلُ لَهٗ كُنۡ فَيَكُوۡنُ ﴿35﴾

३६. और मेरा और तुम सब का रब अल्लाह तआला ही है, तुम सब उसी की इबादत करो, यही सीधा रास्ता है।

وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّىۡ وَرَبُّكُمۡ فَاعۡبُدُوۡهُ‌ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿36﴾

३७. फिर (ये) गुट आपस में इख़्तिलाफ़ करने लगे,[1] लेकिन काफ़िरों के लिए (वैल) दुख है एक बड़े दिन के आ जाने से।

فَاخۡتَلَفَ الۡاَحۡزَابُ مِنۡۢ بَيۡنِهِمۡ‌ۚ فَوَيۡلٌ لِّلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ مَّشۡهَدِ يَوۡمٍ عَظِيۡمٍ ﴿37﴾

---

[1] यहां الاحزاب से मुराद अहले किताब के गुट और ख़ुद इसाइयों के गुट हैं जिन्होंने हज़रत ईसा के बारे में आपस में इख़्तिलाफ़ किया। यहूदियों ने कहा कि वह जादूगर और बदकारी से जन्मा लड़का है यानी यूसुफ़ बढ़ई के बेटे हैं, इसाईयों के प्रोटेस्टेन्ट गुट ने कहा कि वह अल्लाह के बेटे हैं, कैथोलिक गुट ने कहा वह तीन माबूदों में से तीसरे हैं, और तीसरे आर्थोडक्स गुट ने कहा वह माबूद हैं। इस तरहन यहूदियों ने निन्दा (हक़ीर) और ज़लील किया और इसाईयों ने बहुत ग़ुलू से काम लिया। (ऐसरूत्तफ़ासीर और फ़तहुल क़दीर)

أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا لَٰكِنِ الظَّٰلِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ (38)

३८. क्या खूब देखने सुनने वाले होंगे उस दिन जबकि हमारे सामने हाज़िर होंगे, लेकिन आज तो ये ज़ालिम लोग खुली गुमराही में पड़े हुए हैं।

وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ (39)

३९. और तू उन्हे इस दुख और मायूसी के दिन का डर सुना दे जबकि काम अंजाम को पहुँचा दिया जायेगा, और ये लोग ग़फ़लत और बेईमानी में ही रह जायेंगे।

إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ (40)

४०. बेशक धरती के और धरती के रहने वालों के वारिस हम ही होंगे, और सब लोग हमारी तरफ़ लौटाकर लाये जायेंगे।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَٰبِ إِبْرَٰهِيمَ ۚ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَّبِيًّا (41)

४१. इस किताब में इब्राहीम (की कहानी) का बयान कर, बेशक वह बहुत सच्चे पैग़म्बर (ईशदूत) थे।

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَٰٓأَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنكَ شَيْـًٔا (42)

४२. जबकि उस ने अपने पिता से कहा के हे पिता! आप उनकी इबादत क्यों कर रहे हैं जो न सुन सकें न देखें न आप को कुछ फ़ायेदा पहुँचा सकें?

يَٰٓأَبَتِ إِنِّي قَدْ جَآءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِيٓ أَهْدِكَ صِرَٰطًا سَوِيًّا (43)

४३. हे (मेरे प्यारे) पिता! (आप देखिए) मेरे पास वह इल्म आया है, जो आप के पास आया ही नहीं, तो आप मेरी ही मान लीजिए मैं बिल्कुल सीधे रास्ते की तरफ़ आप का पथ-प्रदर्शन (रहनुमाई) करूँगा।

يَٰٓأَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَٰنَ ۖ إِنَّ الشَّيْطَٰنَ كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ عَصِيًّا (44)

४४. मेरे पिता ! आप शैतान की इबादत करने से रुक जायें, शैतान तो रहम और करम करने वाले अल्लाह की बहुत नाफ़रमानी करने वाला है।

يَٰٓأَبَتِ إِنِّيٓ أَخَافُ أَن يَمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمَٰنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَٰنِ وَلِيًّا (45)

४५. हे पिता ! मुझे डर लग रहा है कि कहीं आप पर अल्लाह का कोई अज़ाब न आ पड़े कि आप शैतान के दोस्त बन जायें।

قَالَ أَرَاغِبٌ أَنْتَ عَنْ آلِهَتِي يَا إِبْرَاهِيمُ ۚ لَئِن لَّمْ تَنتَهِ لَأَرْجُمَنَّكَ ۖ وَاهْجُرْنِي مَلِيًّا ﴿46﴾

४६. (उस ने) जवाब दिया कि हे इब्राहीम! क्या तू हमारे माबूदों से मुँह फेर रहा है, (सुन) अगर तू न रूका तो मैं तुझे पत्थरों से मार डालूँगा, जा एक लम्बी मुद्दत तक मुझ से अलग रह।

قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكَ ۖ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي ۖ إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا ﴿47﴾

४७. कहा अच्छा तुम पर सलाम हो,[1] मैं तो अपने रब से तुम्हारे लिए माफ़ी की दुआ करता रहूँगा[2] वह मुझ पर बहुत मेहरबानी कर रहा है।

وَأَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ وَأَدْعُو رَبِّي عَسَىٰ أَلَّا أَكُونَ بِدُعَاءِ رَبِّي شَقِيًّا ﴿48﴾

४८. और मैं तो तुम्हें भी और जिन-जिन को तुम अल्लाह के सिवाय पुकारते हो उन्हें भी (सब को) छोड़ रहा हूँ, केवल अपने रब को पुकारता रहूँगा, मुझे यक़ीन है कि मैं अपने रब से दुआ करने में नाकाम नहीं हूँगा।

فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ وَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۖ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿49﴾

४९. जब (इब्राहीम) उन सब को और अल्लाह के सिवाय उन के सब माबूदों को छोड़ चुके तो हम ने उन्हें इसहाक़ और याक़ूब अता किये और हर एक को नबी बना दिया।

وَوَهَبْنَا لَهُم مِّن رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿50﴾

५०. और उन सब को हम ने अपनी बहुत-सी रहमत अता की, और हम ने उन के सच्चे वादे को बुलन्द दर्जा कर दिया।[3]

---

[1] यह सलाम एहतेराम के रूप में नहीं है जो एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को करता है, बल्कि यह बात ख़त्म करने का इज़हार है। जैसे :

(وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا)

"जब बेवक़ूफ़ लोग उन से बातें करते हैं तो वह कह देते हैं कि सलाम है।" (सूर: अल-फ़ुरक़ान-६३)

में ईमानवालों और अल्लाह के बन्दों का तरीक़ा बताया गया है।

[2] यह उस वक़्त कहा था जब हज़रत इब्राहीम को मूर्तिपूजक के लिए मोक्ष (मग़फ़िरत) की दुआ करने के मना होने का इल्म नहीं था, जब यह मालूम हुआ तो आप ने यह दुआ करने का क्रम ख़त्म कर दिया। (सूर: अल-तौबा-११४)

[3] لِسَانَ صِدْقٍ सच्चे वादे से मुराद बड़ी बड़ाई और अच्छी बातें हैं।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰىۤ ۚ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿51﴾

५१. इस किताब में मूसा का भी बयान कर, जो चुना हुआ और रसूल और नबी था।

وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ﴿52﴾

५२. हम ने उसे तूर पहाड़ के दायें किनारे से पुकारा और सरगोशी करते हुए उसे क़रीब कर लिया।

وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَاۤ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ﴿53﴾

५३. और अपनी रहमत ख़ास से उस के भाई हारून को नबी बना कर अता किया।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۚ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿54﴾

५४.और इस किताब में इस्माईल (की कहानी) भी बयान कर, वह बड़ा ही वादे का पक्का था, और था भी रसूल और नवी।

وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۪ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿55﴾

५५. और वह अपने परिवार वालों को लगातार नमाज और ज़कात (धर्मदान) का हुक्म देता था, और था भी अपने रब के दरबार में प्यारा और मक़बूल।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۚ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿56﴾

५६. और इस किताब में इदरीस को भी बयान कर, वह भी सच्चा पैग़म्बर (ईशदूत) था।

وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿57﴾

५७. हम ने उसे ऊँचे मुक़ाम पर उठा लिया।[1]

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۗ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۫ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ ۫ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ؕ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ﴿58﴾

५८. यही वे नबी हैं जिन पर अल्लाह तआला ने दया और कृपा की, जो आदम की औलाद में से हैं और उन लोगों के वंश से हैं, जिन्हें हम ने नूह के साथ नाव पर चढ़ा लिया था और इब्राहीम और याक़ूब की औलाद से और हमारी तरफ़ से हिदायत याफ़्ता और हमारे प्यारे लोगों में से। इन के सामने जब अल्लाह रहमान की आयतें पढ़ी जाती थीं, ये सज्दा करते और रोते गिड़गिड़ाते गिर पड़ते थे।

[1] हज़रत इदरीस कहते हैं कि हज़रत आदम के बाद पहले नबी थे, और हज़रत नूह के या उन के बाप के दादा थे, उन्होंने सब से पहले कपड़ा सीना शुरू किया।

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿59﴾

५९. फिर उन के बाद ऐसे कपूत पैदा हुए कि उन्होंने नमाज़ बर्बाद कर दी और मनोकांक्षा (ख़्वाहिशात) के पीछे पड़ गये, इसलिए उनका नुक़सान उन के सामने आयेगा।

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ﴿60﴾

६०. सिवाय उन के जो माफ़ी माँग लें और ईमान ले आयें और नेकी के काम करें, ऐसे लोग जन्नत में जायेंगे और उन के हक़ों का ज़रा भी नुक़सान न किया जायेगा।

جَنّٰتِ عَدْنِ ِۨالَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿61﴾

६१. हमेशा रहने वाले स्वर्गों (जन्नतों) में जिन का ग़ैबी वादा अल्लाह रहमान ने अपने बंदों को दिया है। बेशक उसका वादा पूरा होने वाला ही है।

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا ؕ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿62﴾

६२. वे लोग वहाँ कोई बेकार बात न सुनेंगे केवल सलाम ही सलाम सुनेंगे, उन के लिए वहाँ सुबह और शाम उनकी रोज़ी होगी।[1]

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿63﴾

६३. यह है वह जन्नत जिसका वारिस हम अपने बंदों में से उन्हें बनाते हैं जो अल्लाह से डरते हों।

وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿64﴾

६४. हम तेरे रब के हुक्म के बिना उत्तर ही नहीं सकते, हमारे आगे-पीछे और उनके बीच की सभी चीज़ें उसी की क़ुदरत में हैं, और तेरा रब भूलने वाला नहीं।

[1] इमाम अहमद ने इसकी तफ़सीर में कहा है कि जन्नतों में रात और दिन नहीं होंगे, केवल रौशनी और रौशनी होगी। हदीस में है जन्नत में जाने वालों के पहले गुट के मुंह चौदहवीं के चाँद की तरह रौशन होंगे, वहाँ उन्हें थूक आयेगा न नाक बहेगी और न पेशाब होगा और न पाख़ाना ही होगा, उन के बर्तन और कंघियाँ सोने की होंगी, उनका शरीर ख़ुश्बूदार और उनका पसीना कस्तूरी (की तरह) ख़ुश्बूदार होगा। हर जन्नत में जाने वाले की दो बीवियाँ होंगी, उनकी पिंडलियों का गूदा उन के गोश्त के पीछे से दिखायी देगा, उनकी ख़ूबसूरती और सुन्दरता के सबब। उन में आपस में हसद और जलन नहीं होगी, सुबह और शाम अल्लाह की तारीफ़ करेंगे। (सहीह बुख़ारी, बदउल ख़लक़ बाब माजाअ फ़ी सिफ़तिल जन्न: व इन्नहा मख़लूक़तुन और सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्न: बाब फ़ी सिफ़ातिल जन्न: व अहलेहा)

रَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ ؕ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ﴿65﴾

६५. आकाशों का और धरती का और जो कुछ उन के बीच है सब का रब वही है, तू उसी की इबादत कर और उसकी इबादत पर मज़बूत हो जा, क्या तेरे इल्म में उसका हमनाम (और बराबर) कोई दूसरा भी है।

وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ ءَاِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ﴿66﴾

६६. और इंसान कहता है कि जब मैं मर जाऊँगा तो क्या फिर ज़िन्दा करके निकाला जाऊँगा?

اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْـًٔا ﴿67﴾

६७. क्या यह इंसान इतना भी याद नहीं रखता कि हमने उसे इससे पहले पैदा किया, हालाकि वह कुछ भी न था।

فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿68﴾

६८. तेरे रब की क़सम! हम उन्हें और शैतानों को जमा करके ज़रूर ही नरक के चारों तरफ़ घुटनों के बल गिरे हुए हाज़िर कर देंगे।

ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ﴿69﴾

६९. हम फिर हर गिरोह से उन्हें अलग निकाल खड़ा करेंगे, जो अल्लाह रहमान से बहुत अकड़े-अकड़े से फिरते थे।

ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا ﴿70﴾

७०. फिर हम उन्हें भी अच्छी तरह जानते हैं, जो नरक में दाख़िल होने के ज़्यादा लायक़ हैं।

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿71﴾

७१. और तुम में से हर एक वहाँ ज़रूर हाज़िर होने वाला है, यह तेरे रब के ज़िम्मे कतई फ़ैसला है।

ثُمَّ نُنَجِّى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ﴿72﴾

७२. फिर हम परहेज़गारों को बचा लेंगे और ज़ुल्म करने वालों को उसी में घुटनों के बल गिरा हुआ छोड़ देंगे।[1]

[1] इसकी तफ़सीर सहीह हदीसों में इस तरह बयान है कि नरक के ऊपर एक पुल बनाया जायेगा, जिस पर से हर ईमानवाले और काफ़िर को गुज़रना होगा, ईमान वाले अपने-अपने अमल के ऐतबार से जल्दी और देर से गुज़र जायेंगे, लेकिन काफ़िर उस पुल को पार करने में कामयाब नहीं होंगे और नरक में गिर जायेंगे।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَأَحْسَنُ نَدِيًّا (73)

७३. और जब उनके सामने हमारी रौशन आयतें पढ़ी जाती हैं तो काफ़िर मुसलमानों से कहते हैं (बताओ) हम तुम दोनों फ़रीक़ों में किसका मान (मर्तबा) ज़्यादा है और किस की बैठक (सभा) शानदार है?

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثَاثًا وَرِئْيًا (74)

७४. और हम तो उनसे पहले बहुत सी उम्मतों को हलाक कर चुके हैं, जो साज़ व सामान और नाम नमूद में इन से कहीं ज़्यादा थे।

قُلْ مَن كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمَٰنُ مَدًّا ۚ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضْعَفُ جُندًا (75)

७५. कह दीजिए कि जो भटकावे में होता है अल्लाह रहमान उस को बहुत लम्बा मौक़ा देता है, यहाँ तक कि वे उन चीज़ों को देख लें जिन के वादे किये जाते हैं, यानी अज़ाब या क़यामत को, उस वक़्त उन्हें ठीक तरह से मालूम हो जायेगा कि कौन बुरे पद वाला है और किसका जत्था कमज़ोर है।

وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى ۗ وَالْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِندَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَّرَدًّا (76)

७६. और हिदायत पाये हुए लोगों को हिदायत में अल्लाह और बढ़ाता है, और बाक़ी रहने वाली नेकी तेरे रब के क़रीब बदला के अनुरूप (लिहाज़ से) और नतीजा के अनुरूप बहुत अच्छी हैं।

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا (77)

७७. क्या तूने उसे भी देखा जिस ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र किया और कहा कि मुझे तो माल और औलाद तो ज़रूर दी जायेगी।

أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِندَ الرَّحْمَٰنِ عَهْدًا (78)

७८. क्या वह ग़ैब का इल्म रखता है या अल्लाह से कोई वादा ले चुका है?

كَلَّا ۚ سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا (79)

७९. कभी नहीं, यह जो कुछ कह रहा है हम उसे ज़रूर लिख लेंगे, और उस के लिए अज़ाब बढ़ाते चले जायेंगे।

وَنَرِثُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا (80)

८०. और यह जिन चीज़ों के बारे में कह रहा है, उसे हम उस के बाद ले लेंगे, और यह अकेला ही हमारे सामने हाज़िर होगा।

८१. उन्होंने अल्लाह के सिवाय दूसरे देवता बना रखें हैं कि वे उन के लिए इ़ज़्ज़त (सम्मान) का सबब हों।

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ﴿81﴾

८२. लेकिन ऐसा कभी होगा नही, वे तो इनकी इबादत से मुकर जायेंगे, और उल्टे इन के दुश्मन बन जायेंगे।

كَلَّا ؕ سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿82﴾

८३. क्या तूने नहीं देखा कि हम काफ़िरों के पास शैतानों को भेजते हैं, जो उन्हें ख़ूब उकसाते हैं।

اَلَمْ تَرَ اَنَّاۤ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿83﴾

८४. तू उन के बारे में जल्दी न कर, हम तो ख़ुद ही इन के वक़्त का शुमार कर रहे हैं।

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿84﴾

८५. जिस दिन हम परहेज़गारों को अल्लाह रहमान का मेहमान बनाकर जमा करेंगे।

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿85﴾

८६. और मुजरिमों को (बहुत प्यास की हालत में) नरक की तरफ़ हाँक ले जायेंगे।

وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿86﴾

८७. किसी को सिफ़ारिश का हक़ न होगा सिवाय उन के जिन्होंने अल्लाह तआला की तरफ़ से कोई वादा ले लिया है।

لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿87﴾

८८. और उनका क़ौल तो यह है कि अल्लाह रहमान ने भी औलाद बना रखी है।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿88﴾

८९. बेशक तुम बहुत (बुरी और) भारी चीज़ लाये हो।

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا اِدًّا ﴿89﴾

९०. क़रीब है कि इस क़ौल के सबब आकाश फट जायें और धरती में दरार हो जाये और पहाड़ कण-कण हो जायें।

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿90﴾

९१. कि वे रहमान की औलाद साबित करने बैठे हैं।

اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿91﴾

९२. और रहमान के यह लायक़ नहीं कि वह औलाद रखे।

وَمَا يَنْۢبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿92﴾

إِن كُلُّ مَن فِي السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ إِلَّآ آتِي الرَّحْمَٰنِ عَبْدًا ﴿93﴾

९३. आकाशों और धरती में जो भी हैं सब अल्लाह के गुलाम बनकर ही आने वाले हैं।

لَّقَدْ أَحْصَىٰهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿94﴾

९४. उन सब को उस ने घेर रखा है और सब की पूरी तरह गिन्ती भी कर रखा है।

وَكُلُّهُمْ آتِيهِ يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ فَرْدًا ﴿95﴾

९५. ये सारे के सारे क़यामत के दिन अकेले उस के सामने हाज़िर होने वाले हैं।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَٰنُ وُدًّا ﴿96﴾

९६. बेशक जो ईमान लाये हैं और जिन्होंने नेक अमल किये हैं, उन के लिए अल्लाह रहमान मुहब्बत पैदा कर देगा।

فَإِنَّمَا يَسَّرْنَٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنذِرَ بِهِ قَوْمًا لُّدًّا ﴿97﴾

९७. हम ने (क़ुरआन को) तेरी ज़ुबान में बहुत आसान कर दिया है[1] कि तू उस के ज़रिये परहेज़गारों (सदाचारियों) को ख़ुशख़बरी दे और झगड़ालू लोगों को बाख़बर कर दे।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُم مِّنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿98﴾

९८. और हम ने इस से पहले बहुत सी जमाअतें हलाक कर दी हैं, क्या उन में से एक की भी आहट तू पाता है या उनकी आवाज़ की भनक भी तेरे कान में पड़ती है।

सूरतु ताहा-२०

سُورَةُ طه

सूरः ताहा* मक्के में उतरी और इसकी एक सौ पैंतीस आयतें हैं और आठ रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

---

[1] क़ुरआन को आसान करने का मतलब उस ज़ुबान में उतारना है जिसको पैग़म्बर जानता था यानी अरबी ज़ुबान में, फिर इस के मज़ामीन का खुला हुआ वाज़ेह और साफ होना है।

* हज़रत उमर के दीने इस्लाम क़ुबूल करने के कई सबब बयान किये गये हैं, कुछ तारीख़ी क़ौल में अपनी बहन और बहनोई के घर में सूरः ताहा का सुनना और उस से प्रभावित (मुतास्सिर) होना भी बयान है। (फ़तहुल क़दीर)

१. ता॰ हा॰

طٰهٰ ⓵

२. हम ने यह कुरआन तुझ पर इसलिए नहीं उतारा कि तू कठिनाई में पड़ जाये।

مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ⓶

३. बल्कि उसकी नसीहत के लिए जो अल्लाह से डरता है।

اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ⓷

४. इसका उतारना उसकी तरफ़ से है जिस ने धरती को और ऊँचे आकाशों को पैदा किया है।

تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ⓸

५. जो रहमान है, अर्श पर क़ायम है।

اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ⓹

६. जिसकी मिल्कियत आकाशों और धरती और इन के बीच और धरती की सतह से नीचे हर चीज़ पर है।

لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ⓺

७. अगर तू ऊँची बात कहे तो वह हर छिपी, और छिपी से छिपी चीज़ को अच्छी तरह जानता है।

وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى ⓻

८. वही अल्लाह है, जिस के सिवाय कोई सच्चा माबूद नही, अच्छे नाम उसी के हैं।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ لَهُ الْاَسْمَاۗءُ الْحُسْنٰى ⓼

९. तुझे मूसा का वाक़ेआ भी मालूम है?

وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ⓽

१०. जबकि उस ने आग देखकर अपने परिवार से कहा कि थोड़ी देर ठहर जाओ मुझे आग दिखाई दे रही है, ज़्यादा मुमकिन है कि मैं उसका अँगारा तुम्हारे पास लाऊँ या आग के पास से रास्ते की ख़बर पाऊँ।[1]

اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّىْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّىْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ⓾

[1] यह उस समय का वाक़ेआ है जब मूसा عليه السلام मदयन से अपनी बीवी को लेकर (जो एक क़ौल के ऐतबार से हज़रत शुऐब की बेटी थी) अपनी माँ की तरफ़ वापस जा रहे थे, अंधेरी रात थी और रास्ता भी अजान था, और कुछ मुफ़स्सिरों के अनुसार उनकी बीवी के बच्चा जन्म देने का वक़्त क़रीब था और उन्हे गर्मी की ज़रूरत थी या ठंड के सबब गर्मी की ज़रूरत पड़ी हो, इतने में उन्हे दूर से आग के शोले उठते हुए दिखायी दिये, घरवालों से यानी बीवी से (या कुछ

فَلَمَّآ أَتٰىهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى ⑪

११. जब वह वहाँ पहुँचे तो आकाशवाणी (निदा) हुई कि हे मूसा!

إِنِّيٓ أَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۚ إِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ⑫

१२. बेशक मैं ही तेरा रब हूँ, तू अपने जूते उतार दे[1] क्योंकि तू पाक मैदान 'तोवा' में है।

وَأَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ⑬

१३. और मैंने तुझे चुन लिया हे, अब जो वह्यी (प्रकाशना) की जायेगी उसे ध्यानपूर्वक (तवज्जह से) सुन।

إِنَّنِيٓ أَنَا اللّٰهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنَا فَاعْبُدْنِيْ ۙ وَأَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ⑭

१४. बेशक मैं ही अल्लाह हूँ मेरे सिवाय इबादत (पूजा) के लायक दूसरा कोई नहीं, इसलिए तू मेरी ही इबादत कर और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम कर।[2]

إِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا تَسْعٰى ⑮

१५. क़यामत ज़रूर आने वाली है, जिसे मैं पोशीदा रखना चाहता हूँ ताकि हर इंसान को वह बदला दिया जाये जो उस ने कोशिश किया हो।

فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ⑯

१६. तो अब इस के ईमान से तुझे ऐसा इंसान रोक न दे, जो इस पर ईमान (विश्वास) न रखता हो और अपनी आरज़ूों के पीछे पड़ा हो, वर्ना तू नाश हो जायेगा।

وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ⑰

१७. और हे मूसा! तेरे दाहिने हाथ में क्या है।

मुफस्सिर कहते हैं कि नौकर और बच्चा भी था इसलिए बहुवचन (जमा) शब्द का इस्तेमाल किया) कहा तुम यहीं ठहरो! शायद मैं आग का कोई शोला वहाँ से साथ ले आऊँ या कम से कम वहाँ से रास्ते का इशारा मिल जाये।

[1] जूते उतारने का हुक्म इसलिए दिया कि इस में विनम्रता (आजिज़ी) का इज़हार और इज़्ज़त और एहतेराम का हक़ ज़्यादा है।

[2] इबादत के बाद नमाज़ का ख़ास तौर से हुक्म दिया, अगरचे इबादत में नमाज़ भी शामिल थी, ताकि उसकी वह अहमियत वाज़ेह हो जाये जैसाकि उसकी है।

१८. जवाब दिया कि यह मेरी लाठी है, जिस पर मैं टेक लगाता हू और जिस से मैं अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ लिया करता हू, और दूसरे भी इस में मुझे बहुत फायदे हैं।

قَالَ هِيَ عَصَايَ أَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلَىٰ غَنَمِي وَلِيَ فِيهَا مَآرِبُ أُخْرَىٰ ﴿18﴾

१९. कहा कि हे मूसा! उसे (हाथ से) नीचे डाल दे।

قَالَ أَلْقِهَا يَا مُوسَىٰ ﴿19﴾

२०. तो डालते ही सांप बन कर दौड़ने लगी।

فَأَلْقَاهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَىٰ ﴿20﴾

२१. कहा कि बैख़ौफ़ होकर उसे पकड़ ले, हम उसे उसी पहले की शक्ल में फिर ला देंगे।

قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۖ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولَىٰ ﴿21﴾

२२. और अपना हाथ अपनी बगल (कोख) में डाल ले, तो वह सफेद रौशन होता हुआ निकलेगा, लेकिन बिना किसी दोष (ऐब) और रोग के यह दूसरा मोजिज़ा है।

وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلَىٰ جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ آيَةً أُخْرَىٰ ﴿22﴾

२३. यह इसलिए कि हम तुझे अपनी बड़ी-बड़ी निशानियाँ दिखाना चाहते हैं।

لِنُرِيَكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى ﴿23﴾

२४. अब तू फ़िरऔन की तरफ़ जा, उस ने बड़ा फ़साद मचा रखा है।

اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿24﴾

२५. (मूसा ने) कहा कि हे मेरे रब! मेरा सीना मेरे लिए खोल दे।

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ﴿25﴾

२६. और मेरे काम को मुझ पर आसान कर दे।

وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ﴿26﴾

२७. और मेरी ज़ुबान की गाँठ खोल दे।

وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي ﴿27﴾

२८. ताकि लोग मेरी बात अच्छी तरह समझ सकें।

يَفْقَهُوا قَوْلِي ﴿28﴾

२९. और मेरा वज़ीर मेरे अहल में से बना दे।

وَاجْعَلْ لِي وَزِيرًا مِنْ أَهْلِي ﴿29﴾

३०. (यानी) मेरे भाई हारून को।

هَارُونَ أَخِي ﴿30﴾

३१. तू उस से मेरी कमर कस दे।

اشْدُدْ بِهِ أَزْرِي ﴿31﴾

وَأَشْرِكْهُ فِىٓ أَمْرِى ﴿32﴾

३२. और उस को मेरे काम में सहायक (मददगार) कर दे।

كَىْ نُسَبِّحَكَ كَثِيرًا ﴿33﴾

३३. ताकि हम दोनों बहुत तेरी तारीफ़ बयान करें।

وَنَذْكُرَكَ كَثِيرًا ﴿34﴾

३४. और बहुत तेरी याद करें।

إِنَّكَ كُنتَ بِنَا بَصِيرًا ﴿35﴾

३५. बेशक तू हमें अच्छी तरह से देखने-भालने वाला है।

قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يَٰمُوسَىٰ ﴿36﴾

३६. (अल्लाह तआला ने) कहा हे मूसा! तेरे सभी सवाल पूरे कर दिये गये।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَىٰٓ ﴿37﴾

३७. और हम ने तो तुझ पर एक बार और भी इस से भी बड़ा एहसान किया है।

إِذْ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰٓ أُمِّكَ مَا يُوحَىٰٓ ﴿38﴾

३८. जबकि हम ने तेरी माँ के दिल में वह उतारा, जिस का बयान अब किया जा रहा है।

أَنِ ٱقْذِفِيهِ فِى ٱلتَّابُوتِ فَٱقْذِفِيهِ فِى ٱلْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ ٱلْيَمُّ بِٱلسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّى وَعَدُوٌّ لَّهُۥ ۚ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّى وَلِتُصْنَعَ عَلَىٰ عَيْنِىٓ ﴿39﴾

३९. कि तू इसे सदूक में बंद करके नदी में छोड़ दे, फिर नदी इस को किनारे पर ले जायेगी और मेरा और ख़ुद उसका दुश्मन उसे ले लेगा,[1] और मैंने अपनी तरफ़ की ख़ास मुहब्बत और मक़बूलियत तुझ पर डाल दिया, ताकि तेरा पालन-पोषण मेरी आँखों के सामने किया जाये।[2]

---

[1] मुराद फ़िरऔन है जो अल्लाह का भी दुश्मन और हज़रत मूसा का भी दुश्मन था, यानी लकड़ी का वह संदूक तैरता हुआ जब राजभवन (शाही महल) के किनारे पहुँचा तो उसे बाहर निकाल कर देखा गया तो उस में एक मासूम बच्चा था, जिसे फ़िरऔन ने अपनी बीवी की तमन्ना पर पालन-पोषण के लिए राजभवन में रख लिया।

[2] इसलिए अल्लाह की क़ुदरत और उसकी हिफ़ाज़त और संरक्षण (निगरानी) का कमाल और मोजिज़ा देखिये कि जिस बच्चे के सबब फ़िरऔन अनगिनत बच्चों का क़त्ल करवा चुका है, ताकि वह बच्चा ज़िन्दा न रहे उसी बच्चे को अल्लाह तआला उसकी गोद मे पालन करवा रहा है, और माँ अपने बच्चे को दूध पिला रही है, लेकिन उसकी मज़दूरी भी उसी मूसा के दुश्मन से हासिल कर रही है।

إِذْ تَمْشِيٓ أُخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَن يَكْفُلُهُۥ ۖ فَرَجَعْنَٰكَ إِلَىٰٓ أُمِّكَ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنَٰكَ مِنَ ٱلْغَمِّ وَفَتَنَّٰكَ فُتُونًا ۚ فَلَبِثْتَ سِنِينَ فِىٓ أَهْلِ مَدْيَنَ ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ يَٰمُوسَىٰ ﴿40﴾

४०. (याद कर) जबकि तेरी बहन चल रही थी और कह रही थी कि अगर तुम कहो तो मैं उसे बता दूं जो उसका निगहबान बन सके, इस तरह से हम ने तुझे पुन: तेरी माँ के पास पहुँचाया कि उसकी आँखें ठंडी रहे और वह दुखी न हो, और तूने एक इंसान का क़त्ल कर दिया था, उस पर भी हम ने तुझे ग़म से बचा लिया, यानी हम ने तेरी अच्छी तरह आज़माईश कर ली, फिर तू कई साल तक मदयन के लोगों में ठहरा रहा, फिर अल्लाह के लिखे हुए नसीब के अनुसार हे मूसा! तू आया।

وَٱصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِى ﴿41﴾

४१. और मैंने तुझे ख़ास तौर से अपने लिए पसन्द कर लिया।

ٱذْهَبْ أَنتَ وَأَخُوكَ بِـَٔايَٰتِى وَلَا تَنِيَا فِى ذِكْرِى ﴿42﴾

४२. अब तू अपने भाई सहित मेरी निशानियाँ साथ ले जा, ख़बरदार! तुम दोनों मेरी याद में सुस्ती न करना।

ٱذْهَبَآ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُۥ طَغَىٰ ﴿43﴾

४३. तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ, उस ने बड़ी सरकशी की है।

فَقُولَا لَهُۥ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهُۥ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ﴿44﴾

४४. उसे नर्मी से[1] समझाओ, शायद वह समझ ले या डर जाये।

قَالَا رَبَّنَآ إِنَّنَا نَخَافُ أَن يَفْرُطَ عَلَيْنَآ أَوْ أَن يَطْغَىٰ ﴿45﴾

४५. दोनों ने कहा, हे हमारे रब ! हमें डर है कि कहीं फ़िरऔन हम पर कोई ज़ुल्म न करे या अपनी सरकशी में बढ़ न जाये।

قَالَ لَا تَخَافَآ ۖ إِنَّنِى مَعَكُمَآ أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ﴿46﴾

४६. जवाब मिला कि तुम दोनों कभी डर न करो मैं तुम्हारे साथ हूँ और सुनता-देखता रहूँगा।

[1] यह योग्यता (सलाहियत) भी अल्लाह की तरफ़ तब्लीग़ करने वालों के लिए बहुत ज़रूरी है। क्योंकि सख़्ती से लोग भागते हैं, आसानी और नर्मी से क़रीब आते और प्रभावित (मुतास्सिर) होते हैं, और वे हिदायत हासिल करने वाले होते हैं।

فَأْتِيَاهُ فَقُولَا إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ ۥ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۖ قَدْ جِئْنَٰكَ بِـَٔايَةٍ مِّن رَّبِّكَ ۖ وَٱلسَّلَٰمُ عَلَىٰ مَنِ ٱتَّبَعَ ٱلْهُدَىٰٓ ﴿47﴾

४७. तुम उस के पास जाकर कहो कि हम तेरे रब के पैग़म्बर (ईश्दूत) हैं, तू हमारे साथ इस्राईल की औलाद को भेज दे, उन के अज़ाब ख़त्म कर, हम तो तेरे पास तेरे रब की तरफ़ से निशानियाँ लेकर आये हैं, सलामती उसी के लिए है जो हिदायत को मज़बूती से अपनाये।

إِنَّا قَدْ أُوحِىَ إِلَيْنَآ أَنَّ ٱلْعَذَابَ عَلَىٰ مَن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿48﴾

४८. हमारी तरफ़ वह्यी (प्रकाशना) की गयी है कि जो झुठलाये और मुँह फेरे उस के लिए अज़ाब है।

قَالَ فَمَن رَّبُّكُمَا يَٰمُوسَىٰ ﴿49﴾

४९. (फ़िरऔन ने) पूछा कि हे मूसा! तुम दोनों का रब कौन है।

قَالَ رَبُّنَا ٱلَّذِىٓ أَعْطَىٰ كُلَّ شَىْءٍ خَلْقَهُۥ ثُمَّ هَدَىٰ ﴿50﴾

५०. जवाब दिया कि हमारा रब वह है जिस ने हर एक को उसका ख़ास रूप अता किया, फिर हिदायत भी दिया।[1]

قَالَ فَمَا بَالُ ٱلْقُرُونِ ٱلْأُولَىٰ ﴿51﴾

५१. उस ने कहा (अच्छा यह तो बताओ) पहले के लोगों की क्या हालत होनी है?

قَالَ عِلْمُهَا عِندَ رَبِّى فِى كِتَٰبٍ ۖ لَّا يَضِلُّ رَبِّى وَلَا يَنسَى ﴿52﴾

५२. जवाब दिया कि उनका इल्म मेरे रब के पास किताब में (मौजूद) है, न तो मेरा रब ग़लती करता है न भूलता है।

ٱلَّذِى جَعَلَ لَكُمُ ٱلْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَأَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً فَأَخْرَجْنَا بِهِۦٓ أَزْوَٰجًا مِّن نَّبَاتٍ شَتَّىٰ ﴿53﴾

५३. उसी ने तुम्हारे लिए धरती को बिस्तर बनाया है और उस में तुम्हारे चलने के लिए रास्ते बनाये हैं, और आकाश से वर्षा (बारिश) भी वही करता है, फिर उस वर्षा के सबब कई तरह की पैदावार भी हम ही पैदा करते हैं।

---

[1] जैसे जो शक्लो सूरत इंसान के लिए मुनासिब थी वह उसे, जो जानवरों के लायक़ थी वह जानवरों को अता किया, रास्ता दिखाया का मतलब हर जानदार को उसकी प्राकृतिक (फ़ितरी) ज़रूरतों के ऐतबार से रहन-सहन, खाने-पीने और चलने-फिरने का तरीक़ा समझा दिया, उसी के ऐतबार से हर जानदार अपनी जीवन सामग्री (सामान) जमा करता है और ज़िन्दगी के ये दिन गुज़ारता है।

كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النُّهَىٰ (54)

५४. तुम ख़ुद खाओ और अपने पशुओं को भी चराओ, बेशक इस में अक़्लमंदों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं।

مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَىٰ (55)

५५. उसी धरती में से हम ने तुम्हें पैदा किया और उसी में फिर वापस लौटायेंगे, और उसी से दोबारा तुम सबको[1] निकाल खड़ा करेंगे।

وَلَقَدْ أَرَيْنَاهُ آيَاتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَىٰ (56)

५६. और हम ने उसे अपनी सभी निशानियाँ दिखा दीं, लेकिन उस ने फिर भी झुठलाया और इंकार कर दिया।

قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ أَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يَا مُوسَىٰ (57)

५७. कहने लगा हे मूसा! क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि हमें अपने जादू की ताक़त से हमारे देश से निकाल दे।

فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهِ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنتَ مَكَانًا سُوًى (58)

५८. ठीक है, हम भी तेरा सामना करने के लिए इसी जैसा जादू ज़रूर लायेंगे, बस तू हमारे और अपने बीच वादा का वक़्त मुक़र्रर कर ले कि न हम उस के ख़िलाफ़ करें और न तू, खुले मैदान में मुक़ाबिला (प्रतियोगिता) हो।

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّينَةِ وَأَن يُحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى (59)

५९. (मूसा ने) जवाब दिया कि ज़ीनत और समारोह (जश्न) के दिन का वादा है, और यह कि लोग दिन चढ़े ही जमा हो जायें।

فَتَوَلَّىٰ فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهُ ثُمَّ أَتَىٰ (60)

६०. फिर फ़िरऔन लौट गया और उसने अपने हथकंडे जमा किये, फिर आ गया।

---

[1] कुछ क़ौल के ऐतबार से मय्यत को गाड़ने के बाद तीन लप मिट्टी डालते वक़्त इस आयत को पढ़ना नबी ﷺ से साबित है, लेकिन सुबूतों के ऐतबार से यह क़ौल ज़ईफ़ है, लेकिन आयत बिना तीन लप डालने वाला क़ौल जो इब्ने माजा में है सही है, इसलिए गाड़ने के बाद दोनों हाथों की लप से तीन-तीन बार मिट्टी डालने को उलमा ने सहीह कहा है। देखिये किताबुल जनायेज़, पेज १५२ और इरवाउल ग़लील नं॰ २५१, भाग ३, पेज २००।

قَالَ لَهُمْ مُّوسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ﴿61﴾

६१. मूसा ने उन से कहा कि तुम्हारी शामत हो, अल्लाह (तआला) पर झूठ और इल्जाम न लगाओ कि वह तुम्हें अजाब से नाश कर दे, याद रखो! वह कभी कामयाब न होगा जिस ने झूठी बात गढ़ी।

فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ﴿62﴾

६२. फिर ये लोग आपस में विचार-विमर्श (मश्विरों) में मुख्तलिफ़ राय हो गये और छुपकर सरगोशी करने लगे।

قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ﴿63﴾

६३. कहने लगे ये दोनों सिर्फ़ जादूगर हैं और इनका मजबूत इरादा है कि अपने जादू की ताक़त से तुम्हें तुम्हारे देश से निकाल दें और तुम्हारे बेहतरीन धर्म को नाश कर दें।

فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ﴿64﴾

६४. तो तुम भी अपना कोई दाँव उठा न रखो, फिर पंक्तिवद्ध (सफ़बंद) होकर आ जाओ, जो आज ग़ालिब हो गया वही कामयाबी ले गया।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿65﴾

६५. वे कहने लगे कि हे मूसा! या तो तू पहले डाल या हम पहले डालने वाले बन जायें।

قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿66﴾

६६. जवाब दिया नहीं तुम ही पहले डालो[1] अब तो मूसा को यह ख़्याल होने लगा कि उन की रस्सियाँ और लकड़ियाँ उन के जादू की ताक़त से दौड़ भाग रही हैं।[2]

---

[1] हजरत मूसा ने पहले उनको अपना खेल दिखाने को कहा ताकि उन पर यह वाजेह हो जाये कि वह जादूगरों की इतनी बड़ी तादाद से जो फ़िरऔन जमा करके लाया है, और उसी तरह उन के जादू के खेल से कभी डरे नहीं हैं। दूसरे उन के जादू के खेल-तमाशे जब अल्लाह के चमत्कार (मोजिज़े) से पलक झपकते ख़त्म और बर्बाद हो जायेंगे तो इसका बहुत अच्छा असर पड़ेगा और जादूगर यह सोचने पर मजबूर हो जायेंगे कि यह जादू नहीं है, हक़ीक़त में इसको अल्लाह की मदद हासिल है कि एक पल में इसकी एक लाठी हमारे सारे खेल तमाशे निगल गयी।

[2] कुरआन के इन लफ़्ज़ों से मालूम होता है कि रस्सियाँ और लाठियाँ हक़ीक़त में साँप नहीं बनी थीं, बल्कि जादू की ताक़त से ऐसा महसूस हो रहा था जैसे नज़रबन्द कर दी जाती है, इसका असर यह होता है कि आरज़ी और वक़्ती तौर से देखने वालों पर डर तारी हो जाता है, अगरचे

६७. इस से मूसा अपने मन ही मन में डरने लगे।

فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُوسَىٰ (67)

६८. हम ने कहा कि कुछ डर न कर, बेशक तू ही ग़ालिब और ऊँचा होगा।

قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَىٰ (68)

६९. और तेरे दाहिने हाथ में जो है उसे डाल दे कि उन की सारी कारीगरी को यह निगल जाये, उन्होंने जो कुछ बनाया है यह केवल जादूगरों के करतब हैं, और जादूगर कहीं से भी आये कामयाब नहीं होता।

وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا ۖ إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدُ سَاحِرٍ ۖ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ (69)

७०. अब तो सारे जादूगर सज्दा में हो गये और पुकार उठे कि हम तो हारून और मूसा के रब पर ईमान लाये।

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَىٰ (70)

७१. (फ़िरऔन) कहने लगा कि क्या मेरे हुक्म के पहले ही तुम उस पर ईमान ले आये? बेशक यही तुम्हारा वह बड़ा (गुरू) है जिस ने तुम सब को जादू सिखाया है, (सुन लो) मैं तुम्हारे हाथ-पाँव उल्टे कटवाकर तुम सब को खजूर के तनों में फांसी पर लटकवा दूँगा और तुम्हें पूरी तरह से मालूम हो जायेगा कि हम में से किस की मार ज़्यादा सख़्त और स्थाई (देर पा) है।

قَالَ آمَنْتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۖ فَلَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ فِي جُذُوعِ النَّخْلِ وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَىٰ (71)

७२. (उन्होंने) जवाब दिया कि नामुमकिन है कि हम तुम्हें प्रधानता (तरजीह) दें उन दलीलों पर जो हमारे सामने आ चुकीं और उस अल्लाह पर जिस ने हमें पैदा किया, अब तो तू जो कुछ करना चाहे कर ले, तू जो कुछ हुक्म चला सकता है वह इसी दुनियावी ज़िन्दगी में ही है।

قَالُوا لَنْ نُؤْثِرَكَ عَلَىٰ مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا ۖ فَاقْضِ مَا أَنْتَ قَاضٍ ۖ إِنَّمَا تَقْضِي هَٰذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا (72)

चीज़ की हक़ीक़त तब्दील न हो। दूसरी बात यह मालूम हुई कि जादू चाहे कितना बड़ा हो, वह चीज़ की वास्तविकता (हक़ीक़त) नहीं बदल सकता।

إِنَّآ ءَامَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطَٰيَٰنَا وَمَآ أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ ٱلسِّحْرِ ۗ وَٱللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰٓ ﴿73﴾

७३. हम (इस उम्मीद से) अपने रब पर ईमान लाये कि वह हमारी ग़लतियाँ माफ़ कर दे और ख़ास कर) जादूगरी (का पाप) जो कुछ तूने हम से मजबूर करके कराया है, अल्लाह ही सब से बेहतर और हमेशा रहने वाला है।

إِنَّهُۥ مَن يَأْتِ رَبَّهُۥ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُۥ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ﴿74﴾

७४. बात यही है कि जो भी मुजरिम बनकर अल्लाह (तआला) के यहाँ जायेगा, उस के लिए नरक है, जहाँ न मौत होगी और न जिन्दगी।

وَمَن يَأْتِهِۦ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ ٱلصَّٰلِحَٰتِ فَأُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمُ ٱلدَّرَجَٰتُ ٱلْعُلَىٰ ﴿75﴾

७५. और जो भी उस के पास ईमान वाला होकर आयेगा और उस ने नेक काम भी किये होंगे उस के लिए ऊँचे और अच्छे मरतबे (दर्जे) हैं।

جَنَّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَآءُ مَن تَزَكَّىٰ ﴿76﴾

७६. दायमी जन्नत जिन के नीचे नदियाँ बह रही होंगी जहाँ वे हमेशा रहेंगे, यही बदला है हर उस इंसान का जो पाक है।

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِى فَٱضْرِبْ لَهُمْ طَرِيقًا فِى ٱلْبَحْرِ يَبَسًا لَّا تَخَٰفُ دَرَكًا وَلَا تَخْشَىٰ ﴿77﴾

७७. और हम ने मूसा की तरफ़ वहयी (प्रकाशना) उतारी कि तू रातों-रात मेरे बंदों को ले चल, और उनके लिए समुद्र में सूखा रास्ता बना ले, फिर न तुझे किसी के आ पकड़ने का ख़ौफ़ होगा न डर।

فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِۦ فَغَشِيَهُم مِّنَ ٱلْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ﴿78﴾

७८. फ़िरऔन ने अपनी सेना सहित उनका पीछा किया, फिर तो समुद्र उन सब पर छा गया जैसा कुछ छा जाने वाला था।

وَأَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُۥ وَمَا هَدَىٰ ﴿79﴾

७९. और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम (समुदाय) को भटकावे में डाल दिया और सीधा रास्ता न दिखाया।

يَٰبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ قَدْ أَنجَيْنَٰكُم مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوَٰعَدْنَٰكُمْ جَانِبَ ٱلطُّورِ ٱلْأَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ ٱلْمَنَّ وَٱلسَّلْوَىٰ ﴿80﴾

८०. हे इस्राईल के पुत्रो ! (देखो) हम ने तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से आज़ाद कर दिया और तुम को तूर पहाड़ के दाहिनी तरफ़ का वादा दिया और तुम पर 'मन्न' और 'सलवा' उतारा।[1]

[1] 'मन्न' और 'सलवा' के उतरने का बयान सूर: अल-बक़र: के शुरू में गुज़र चुका है, 'मन्न' कोई मजेदार मीठी चीज़ थी जो आकाश से उतरती थी और 'सलवा' से मुराद बटेर पक्षी है जो

८१. तुम हमारी अता की हुई पाक रोजी खाओ, और उस में हद से तजावुज (उल्लघंन) न करो, वरना तुम पर मेरा अजाब उतरेगा, और जिस पर मेरा अजाब उतर जायेगा, वह बेशक नाश हुआ।

كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى ﴿81﴾

८२. और बेशक मैं उन्हें माफ़ कर देने वाला हूँ, जो माफ़ी माँगें, ईमान लायें, नेकी के काम करें और सीधे रास्ते पर भी रहें।[1]

وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ﴿82﴾

८३. और हे मूसा! तुझे अपनी क़ौम से (ग़ाफ़िल कर के) कौन सी बात जल्दी ले आयी?

وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ﴿83﴾

८४. कहा वह लोग भी मेरे पीछे ही पीछे हैं, और मैंने हे रब तेरी तरफ़ जल्दी इसलिए की कि तू ख़ुश हो जाये।

قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِيْ وَعَجِلْتُ اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى ﴿84﴾

८५. कहा हम ने तेरी क़ौम को तेरे पीछे आज़माईश में डाल दिया और उन्हें 'सामरी' ने भटका (कुमार्ग कर) दिया।[2]

قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْۢ بَعْدِكَ وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ﴿85﴾

ज़्यादा तादाद में उन के पास आते थे और वे ज़रूरत के ऐतबार से उन्हें पकड़ कर पकाते और खा लेते।

[1] यानी अल्लाह की माफ़ी का हक़दार होने के लिए चार बातें ज़रूरी हैं, कुफ़्र और विमुखता (शिर्क) से पश्चाताप (तौबा), ईमान, नेकी का काम और सच्चे रास्ते पर चलते रहना यानी सीधे रास्ते पर चलते हुए उसे मौत आये, नहीं तो वाज़ेह बात है कि माफ़ी माँगने और ईमान के बाद अगर उस ने फिर शिर्क और कुफ़्र का रास्ता अपनाया, यहाँ तक कि उसकी मौत हो गयी और वह कुफ़्र और शिर्क ही पर रहा तो अल्लाह की माफ़ी के बजाय अज़ाब का हक़दार होगा।

[2] हज़रत मूसा के बाद 'सामरी' नाम के इंसान ने इस्राईल की औलाद को बछड़ा पूजने पर लगा दिया, जिसकी ख़बर अल्लाह तआला ने तूर पर ही मूसा को दी कि 'सामरी' ने तेरे पैरोकारों को भटका दिया। परीक्षा (इम्तेहान) में डालने को अल्लाह ने अपने से सम्बन्धित (मंसूब) किया है इसलिए की ख़ालिक़ वही है नहीं तो भटकाने का सबब तो 'सामरी' ही था जैसाकि اضلهم السامري से वाज़ेह है।

फَرَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا ۚ قَالَ يَٰقَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ أَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ أَمْ أَرَدتُّمْ أَن يَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُم مَّوْعِدِي (86)

८६. तो मूसा बहुत गुस्सा और गमगीन होकर वापस लौटे, और कहने लगे कि हे मेरी क़ौम के लोगो! क्या तुम से तुम्हारे रब ने अच्छा वादा नहीं किया था ? क्या उसकी मुद्दत तुम्हें लम्बी मालूम हुई ? या तुम्हारा इरादा ही यह है कि तुम पर तुम्हारे रब का अज़ाब उतरे, इसलिए तुम ने मेरे वादे को तोड़ दिया।

قَالُوا مَا أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلَٰكِنَّا حُمِّلْنَا أَوْزَارًا مِّن زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنَاهَا فَكَذَٰلِكَ أَلْقَى السَّامِرِيُّ (87)

८७. (उन्होंने) जवाब दिया कि हम ने अपने अधिकार (इख़्तियार) से आप के साथ वादे को नहीं तोड़ा, बल्कि हम पर जो ज़ेवर क़ौम के लाद दिये गये थे उन्हें हम ने डाल दिया, और उसी तरह 'सामरी' ने भी डाल दिये।

فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ فَقَالُوا هَٰذَا إِلَٰهُكُمْ وَإِلَٰهُ مُوسَىٰ فَنَسِيَ (88)

८८. फिर उस ने लोगों के लिए एक बछड़ा निकाला, यानी बछड़े की मूर्ति जिसकी गाय जैसी आवाज़ थी, फिर कहने लगे कि यही तुम्हारा भी माबूद है और मूसा का भी, लेकिन मूसा भूल गया है।

أَفَلَا يَرَوْنَ أَلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا (89)

८९. क्या ये भटके हुए लोग यह भी नहीं देखते कि वह तो उनकी बात का जवाब भी नहीं दे सकता और न उन के किसी बुरे-भले का हक़ (इख़्तियार) रखता है?[1]

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَارُونُ مِن قَبْلُ يَٰقَوْمِ إِنَّمَا فُتِنتُم بِهِ ۖ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَٰنُ فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوا أَمْرِي (90)

९०. और हारून ने इस से पहले ही उन से कह दिया था कि हे मेरी क़ौम के लोगो ! इस बछड़े से तो तुम्हारा इम्तेहान किया गया है, तुम्हारा सच्चा रब तो अल्लाह रहमान ही है तो तुम सब मेरा अनुकरण (पैरवी) करो और मेरी बात मानते चले जाओ।

---

[1] अल्लाह तआला ने उनकी बेवकूफ़ी और कुबुद्धि (कमअक़्ली) का बयान करते हुए फ़रमाया कि इन अक़्ल के अंधों को इतना भी पता नहीं चला कि यह बछड़ा कोई जवाब दे सकता है, न फ़ायेदा-नुक़सान पहुँचाने का सामर्थ्य (क़ुदरत) रखता है, जबकि देवता तो वही हो सकता है जो हर इंसान की विनती सुनने, फ़ायेदा-नुक़सान पहुँचाने और ज़रूरत को पूरा करने का सामर्थ्य (क़ुदरत) रखता हो।

قَالُوا۟ لَن نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عَٰكِفِينَ حَتَّىٰ يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَىٰ ﴿91﴾

९१. (उन्होंने) जवाब दिया कि मूसा के आने तक हम तो इसी के पुजारी रहेंगे।

قَالَ يَٰهَٰرُونُ مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوٓا۟ ﴿92﴾

९२. (मूसा) कहने लगे हे हारून! इन्हें भटकता देखते हुए तुम्हें किस बात ने रोक रखा था?

أَلَّا تَتَّبِعَنِ ۖ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِى ﴿93﴾

९३. कि तू मेरे पीछे न आया, क्या तू भी मेरी इताअत का नाफ़रमान बन बैठा।

قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِى وَلَا بِرَأْسِىٓ ۖ إِنِّى خَشِيتُ أَن تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِى ﴿94﴾

९४. (हारून ने) कहा हे मेरे माँ जाये भाई! मेरी दाढ़ी न पकड़ और सिर के बाल न खींच, मुझे तो केवल यह ख़्याल आया कि कहीं आप यह न कहें कि तूने इस्राईल की औलाद में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) पैदा कर दिया और मेरी बात की प्रतीक्षा (इंतेज़ार) न की।

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يَٰسَٰمِرِىُّ ﴿95﴾

९५. (मूसा ने) पूछा, 'सामरी' तेरा क्या मुआमला है?

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا۟ بِهِۦ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ أَثَرِ ٱلرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَٰلِكَ سَوَّلَتْ لِى نَفْسِى ﴿96﴾

९६. (उस ने) जवाब दिया कि मुझे वह चीज़ दिखायी दी जो उन्हें न दिखायी दी तो मैंने अल्लाह के भेजे हुए के पदचिन्हों (नक़्शे क़दम) से एक मुट्ठी भर ली, उसे उस में डाल दिया।[1] इसी तरह मेरे दिल ने मेरे लिए यह बात बना दी।

قَالَ فَٱذْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِى ٱلْحَيَوٰةِ أَن تَقُولَ لَا مِسَاسَ ۖ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّن تُخْلَفَهُۥ ۖ وَٱنظُرْ إِلَىٰٓ إِلَٰهِكَ ٱلَّذِى ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ۖ لَّنُحَرِّقَنَّهُۥ ثُمَّ لَنَنسِفَنَّهُۥ فِى ٱلْيَمِّ نَسْفًا ﴿97﴾

९७. कहा ठीक है जा दुनियावी ज़िन्दगी में तेरी सज़ा यही है कि तू कहता रहे "मुझे न छूना" और एक दूसरा भी वादा तेरे साथ है जो तुझ से कभी न टलेगा, और अब तू अपने इस देवता को भी देख लेना, जिस पर पुजारी बना हुआ था, हम इसे जला देंगे फिर उसे नदी में कण-

---

[1] ज़्यादा व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) ने الرسول से मुराद जिब्रील लिए हैं और मतलब यह बयान किया है कि जिब्रील के घोड़े को गुज़रते हुए सामरी ने देखा और उस के पद चिन्हों के नीचे की मिट्टी उस ने सम्भाल कर रख ली जिस में ख़िलाफ़े फ़ितरत असर थे, इस मिट्टी को उसने पिघले हुए जेवरों और बछड़े में डाला तो उस में से एक तरह की आवाज़ निकलनी शुरू हो गई जो उनको भटकाने का सबब बनी।

कण (जर्रा-जर्रा) उड़ा देंगे ।[1]

إِنَّمَآ إِلَٰهُكُمُ ٱللَّهُ ٱلَّذِي لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿98﴾

९८. बेशक तुम सब का सच्चा माबूद केवल अल्लाह ही है, उस के सिवाय कोई माबूद नहीं उसका इल्म (ज्ञान) सभी चीजों पर हावी है ।

كَذَٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنۢبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ ءَاتَيْنَٰكَ مِن لَّدُنَّا ذِكْرًا ﴿99﴾

९९. इसी तरह हम तेरे सामने पहले के गुजरे वाक़ेआत को बयान करते हैं और बेशक हम तुझे अपने पास से नसीहत अता कर चुके हैं ।

مَّنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُۥ يَحْمِلُ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ وِزْرًا ﴿100﴾

१००. इस से जो मुँह फेरेगा वह बेशक क़यामत (प्रलय) के दिन अपना भारी बोझ लादे हुए होगा ।

خَٰلِدِينَ فِيهِ ۖ وَسَآءَ لَهُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ حِمْلًا ﴿101﴾

१०१. जिस में हमेशा ही रहेगा, और उन के लिए क़यामत के दिन (बड़ा) बुरा भार है ।

يَوْمَ يُنفَخُ فِي ٱلصُّورِ ۚ وَنَحْشُرُ ٱلْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ﴿102﴾

१०२. जिस दिन सूर (नरसिंघा) फूँका जायेगा और मुजरिमों को हम उस दिन (डर की वजह) नीली-पीली आँखों के साथ घेर लायेंगे ।

يَتَخَٰفَتُونَ بَيْنَهُمْ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ﴿103﴾

१०३. वे आपस में चुपके-चुपके कह रहे होंगे कि हम तो (संसार में) केवल दस दिन ही रहे ।

نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ﴿104﴾

१०४. जो कुछ वे कह रहे हैं उसकी हक़ीक़त की ख़बर हमें है, उन में सब से बेहतर रास्ते वाला कह रहा होगा कि तुम केवल एक ही दिन रहे ।

وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلْجِبَالِ فَقُلْ يَنسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ﴿105﴾

१०५. वे आप से पहाड़ों के बारे में सवाल करते हैं तो (आप) कह दें कि उन्हें मेरा रब कण-कण कर के उड़ा देगा ।

[1] इस से मालूम हुआ कि मूर्तिपूजा के चिन्ह ख़त्म करना बल्कि उन के अस्तित्व (वजूद) के चिन्ह मिटा डालना, चाहे उनका सम्बन्ध कितने ही पाक इंसान से हो अपमान नहीं, जैसाकि अहले बिदअत, क़ब्र पूजक और ताजिया पूजक बताते हैं, बल्कि यह तो तौहीद का उद्देश्य (मक़सद) और धार्मिक सम्मान (ग़ैरत) की बात है । जैसे इस घटना में उस أثر الرسول को नहीं देखा गया जिस से ज़ाहिरी तौर पर रूहानी बरकात का मुशाहदा भी किया गया, उस के बावजूद भी उसकी चिन्ता नहीं की गयी इसलिए कि वह मूर्तिपूजन का ज़रिया बन गया था ।

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿106﴾

१०६. और (धरती) को समतल चटियल मैदान करके छोड़ेगा।

لَّا تَرَىٰ فِيهَا عِوَجًا وَلَآ أَمْتًا ﴿107﴾

१०७. जिस में न तो कहीं मोड़ देखेगा, न ऊँच-नीच।

يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ ۖ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَٰنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ﴿108﴾

१०८. जिस दिन लोग पुकारने वाले के पीछे चलेंगे जिस में कोई कमी न होगी, और अल्लाह रहमान के सामने सभी आवाजें धीमी हो जायेंगी, सिवाय खुसर-फुसर के तुझे कुछ भी न सुनाई देगा।

يَوْمَئِذٍ لَّا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ﴿109﴾

१०९. उस दिन सिफ़ारिश कुछ काम न आयेगी, लेकिन जिसे रहमान (दयालु) हुक्म दे और उसकी बात को पसन्द करे।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ﴿110﴾

११०. जो कुछ उन के आगे और पीछे है, उसे (अल्लाह ही) जानता है, मख़लूक़ का इल्म (ज्ञान) उसे घेर नहीं सकता।

۞ وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿111﴾

१११. और सभी मुंह उस ज़िन्दा (हमेशा ज़िन्दा) और क़ायम-दायम अल्लाह के सामने आजिज़ी से (विनम्रतापूर्वक) झुके होंगे, बेशक वह नाकाम हो गया जिस ने ज़ुल्म लाद लिया।

وَمَن يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَافُ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ﴿112﴾

११२. और जो नेकी का काम करे, और ईमानदार भी हो तो न उसे ज़ुल्म का डर होगा न हक़तल्फ़ी का।[1]

وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا وَصَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿113﴾

११३. और इसी तरह हम ने तुझ पर अरबी (भाषा में) क़ुरआन उतारा है, और कई तरह से उस में डर का बयान किया है ताकि लोग परहेज़गार बन जायें या उन के दिलों में सोच-विचार पैदा करे।

[1] ज़ुल्म यह है कि उस पर दूसरे के पापों का बोझ भी डाल दिया जाये, और हक़तल्फ़ी यह है कि नेकी का बदला कम दिया जाये, यह दोनों बातें वहाँ नहीं होंगी।

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۡ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ﴿114﴾

११४. इस तरह अल्लाह (तआला) सब से बड़ा सच्चा और हक़ीक़ी मालिक है, तू क़ुरआन पढ़ने में जल्दी न कर इस से पहले कि तेरी तरफ़ जो वह्यी (प्रकाशना) की जाती है वह पूरी की जाये,[1] और यह कह कि रब ! मेरा इल्म बढ़ा ।[2]

وَلَقَدْ عَهِدْنَآ اِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿115﴾

११५. और हम ने आदम को पहले ही ताकीदी हुक्म दे दिया था, लेकिन वह भूल गया और हम ने उस में कोई निश्चय (अज़्म) नहीं पाया ।

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿116﴾

११६. और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो, तो इब्लीस के सिवाय सब ने किया, उस ने साफ़ इंकार कर दिया ।

فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ﴿117﴾

११७. तो हम ने कहा कि हे आदम ! यह तेरा और तेरी बीवी का दुश्मन है, (ध्यान रहे) ऐसा न हो कि वह तुम दोनों को जन्नत से निकलवा दे कि तू मुसीबत में पड़ जाये ।

اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿118﴾

११८. यहाँ तो तुझे यह सहूलत है कि न तू भूखा होता है न नंगा ।

وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿119﴾

११९. और न तू यहाँ प्यासा होता है न धूप से कष्ट उठाता है ।

---

[1] जिब्रील जब वह्यी लेकर आते और सुनाते तो नबी ﷺ भी जल्दी-जल्दी साथ ही साथ पढ़ते जाते कि कहीं कुछ हिस्सा भूल न जायें, अल्लाह तआला ने उस से मना किया और कहा कि ध्यान से पहले वह्यी को सुनें, उस के बाद याद कराना और दिल में बिठाना हमारा काम है, जैसाकि सूर: क़यामः में आयेगा ।

[2] यानी अल्लाह तआला से इल्म के ज़्यादा होने के लिए दुआ करते रहिये, इस में धर्मगुरूओं (आलिमों) के लिए भी नसीहत है कि धार्मिक फ़ैसले में तहक़ीक़ और ग़ौर से काम करें, जल्दी से बचें और ज्ञान के बढ़ाने के ज़रियों को अपनाने में कमी न करें, इसके सिवाय इल्म से मुराद क़ुरआन और हदीस का इल्म है । क़ुरआन में इसी को इल्म कहा गया है और उन के जानकार को विद्वान (आलिम) । दूसरी चीज़ों का इल्म जो इंसान ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए हासिल करता है, वह सभी कला हैं, शिल्प (हुनर) हैं और उद्योग हैं ।

१२०. लेकिन शैतान ने उसे वसवसे में डाला, कहने लगा कि हे आदम! क्या मैं तुझे स्थाई (दायमी) जीवन का पेड़ और वह राजपाट बतलाऊँ जो कभी पुराना न हो।

فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ الشَّيْطَٰنُ قَالَ يَٰٓـَٔادَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلَىٰ شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلَىٰ ﴿120﴾

१२१. इसलिए उन दोनों ने उस पेड़ से कुछ खा लिया फिर उन के गुप्तांग (शर्मगाह) खुल गये और जन्नत के पत्ते अपने ऊपर चिपकाने लगे, आदम ने अपने रब की नाफ़रमानी की और बहक गया।

فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْءَٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ عَلَيْهِمَا مِن وَرَقِ الْجَنَّةِ ۚ وَعَصَىٰٓ ءَادَمُ رَبَّهُۥ فَغَوَىٰ ﴿121﴾

१२२. फिर उस के रब ने उसे नवाज़ा, उसकी तौबा को क़ुबूल किया और उसका मार्गदर्शन (रहनुमाई) किया।[1]

ثُمَّ اجْتَبَٰهُ رَبُّهُۥ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَىٰ ﴿122﴾

१२३. कहा तुम दोनों यहाँ से उतर जाओ, तुम आपस में एक-दूसरे के दुश्मन हो, अब तुम्हारे पास जब कभी भी मेरी ओर से हिदायत पहुँचे, तो जो मेरी हिदायत का पालन करेगा, न वह बहकेगा न कठिनाई में पड़ेगा।

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيعًا ۖ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۖ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّى هُدًى فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَاىَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ ﴿123﴾

१२४. और जो मेरी याद से मुँह फेरेगा उसका जीवन तंग रहेगा और हम क़यामत के दिन उसे अंधा करके उठायेंगे।

وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِى فَإِنَّ لَهُۥ مَعِيشَةً ضَنكًا وَنَحْشُرُهُۥ يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ أَعْمَىٰ ﴿124﴾

---

[1] इस से कुछ लोग मतलब निकालते हुए कहते हैं कि हज़रत आदम से मज़कूरा (उक्त) भूल नबूअत से पहले हुई, और नबूअत से आप को उसके बाद मुज़य्यन किया गया, लेकिन हम ने पिछले पृष्ठ पर इस 'भूल' की जो हक़ीक़त बयान की है, वह ग़लती से महफ़ूज़ होने के ख़िलाफ़ नहीं, क्योंकि ऐसी भूल और ग़लती जिसका तआल्लुक़ दावत और अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने और शरीअत से नहीं, बल्कि व्यक्तिगत (शख़्सी) कर्म से हो और उस में भी उसका कमज़ोर इरादा हो, तो यह हक़ीक़त में वह पाप ही नहीं है जिस के सबब इंसान अल्लाह के ग़ज़ब का मजस्तहक़ बने। इस पर जो पाप शब्द बोला गया है वह सिर्फ़ उसकी बड़ाई और उँचे पद के सबब कि बड़ों की छोटी-सी ग़लती भी बड़ी समझ ली जाती है, इसलिए आयत का यह मतलब नहीं कि हम ने उसके बाद उसे नबूअत के लिए चुन लिया, बल्कि मतलब यह है कि शर्म और तौबा के बाद हम ने फिर उसे उँचे पद पर फ़ायेज़ कर दिया जो पहले उन्हें हासिल था, उनको धरती पर उतारने का फ़ैसला, हमारी इच्छा, इल्म व हिक्मत पर (मबनी) आधारित था, इस से यह न समझ लिया जाये कि यह हमारा ग़ज़ब है जो आदम पर उतरा।

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿125﴾

१२५. (वह) कहेगा रब ! मुझे तूने अंधा बनाकर क्यों उठाया? हालांकि मैं देखता भालता था।

قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿126﴾

१२६. जवाब मिलेगा कि इसी तरह होना चाहिए था, तूने मेरी आयी हुई आयतों को भुला दिया, इसी तरह आज तू भी भुला दिया जाता है।

وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ۭ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿127﴾

१२७. और हम ऐसा ही बदला हर इंसान को दिया करते हैं जो हद से तजावुज़ करे और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाये, और बेशक आख़िरत (परलोक) का अज़ाब बहुत कड़ा और स्थाई (दायमी) है।

اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿128﴾

१२८. क्या उनका मार्गदर्शन (हिदायत) इस बात ने भी न किया कि हम ने उन से पहले बहुत-सी बस्तियां हलाक कर दी हैं, जिन के रहने वालों की जगह पर ये चल फिर रहे हैं। बेशक इस में अक्लमंदों के लिए बहुत सी निशानियां हैं।

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿129﴾

१२९. और अगर तेरे रब की बात पहले से मुक़र्रर और समय निर्धारण (मुअय्यन) न होता तो इसी वक़्त कज़ा आ चिमटती।

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَاۗئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿130﴾

१३०. तो उनकी बातों पर सब्र कर और अपने रब की पाकी और बड़ाई को बयान करता रह, सूरज निकलने से पहले और उस के डूबने से पहले और रात के मुख़तलिफ़ हिस्सों में भी और दिन के हिस्सों में भी तस्बीह करता रह।[1]

---

[1] कुछ व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) के के नज़दीक तस्बीह से मुराद नमाज़ है और वह इस से पांच नमाज़ें समझते हैं। सूरज के निकलने से पहले फ़ज्र, सूरज के डूबने से पहले अस्र, रात के वक़्त मग़रिब और ईशा और दिन के किनारों से ज़ोहर की नमाज़ मुराद है, क्योंकि ज़ोहर का वक़्त यह दिन के पहले हिस्से का आख़िरी और दिन के आख़िरी हिस्से का पहला हिस्सा है, और कुछ के नज़दीक इन वक़्तों में वैसे ही अल्लाह की बड़ाई और तारीफ़ की जाती है जिस में नमाज़, क़ुरआन का पढ़ना, ज़िक्र, दुआ और ऐच्छिक (नफ़्ली) इबादत सब शामिल हैं। मतलब यह है कि आप (ﷺ) इन मूर्तिपूजकों के झुठलाने से मायूस न हों, अल्लाह की बड़ाई और तारीफ़ करते रहें, अल्लाह तआला जब चाहेगा उनको दबोच लेगा।

बहुत मुमकिन है कि तू ख़ुश हो जाये।

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِۦٓ أَزْوَٰجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ﴿131﴾

१३१. और अपनी निगाह कभी उन चीज़ों की तरफ़ न दौड़ाना, जो हम ने उन में से कई लोगों को दुनियावी शोभा (ज़ीनत) के लिये दे रखी हैं ताकि इस में उनकी आज़माईश कर लें, तेरे रब का दिया हुआ ही (बहुत अच्छा और बाक़ी रहने वाला है।

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۖ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكَ ۗ وَٱلْعَٰقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ﴿132﴾

१३२. और अपने परिवार के लोगों पर नमाज़ के लिए हुक्म दे और ख़ुद भी उस पर मज़बूत रह,[1] हम तुझ से रोज़ी नहीं माँगते बल्कि हम ख़ुद तुझे रोज़ी देते हैं, आख़िर में अच्छा नतीजा परहेज़गारों का ही होता है।

وَقَالُوا۟ لَوْلَا يَأْتِينَا بِـَٔايَةٍ مِّن رَّبِّهِۦٓ ۚ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةُ مَا فِى ٱلصُّحُفِ ٱلْأُولَىٰ ﴿133﴾

१३३. और (उन्होंने) कहा कि यह (नबी) हमारे लिए अपने रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं लाया? क्या उन के पास पहले की किताबों की वाज़ेह निशानियाँ नहीं पहुँचीं?

وَلَوْ أَنَّآ أَهْلَكْنَٰهُم بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِۦ لَقَالُوا۟ رَبَّنَا لَوْلَآ أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ ءَايَٰتِكَ مِن قَبْلِ أَن نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ ﴿134﴾

१३४. और अगर हम इस से पहले ही उन्हें अज़ाब से हलाक कर देते तो ज़रूर यह कह उठते कि हे हमारे रब! तूने हमारे पास अपना रसूल (ईशदूत) क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों का पालन करते, इस से पहले कि हम अपमानित (ज़लील) होते और धिक्कारे जाते।

قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوا۟ ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَٰبُ ٱلصِّرَٰطِ ٱلسَّوِىِّ وَمَنِ ٱهْتَدَىٰ ﴿135﴾

१३५. कह दीजिए कि हर एक नतीजे के इंतेज़ार में है तो तुम भी इंतेज़ार में रहो, अभी-अभी पूरे तौर से जान लोगे कि सीधे रास्ते वाले कौन हैं और कौन मार्ग (रास्ता) प्राप्त किये हुए हैं?

[1] इस ख़िताब में पूरी मुस्लिम क़ौम नबी ﷺ के मानने वाले है, यानी हर मुसलमान के लिए फ़र्ज़ है कि वह ख़ुद भी नमाज़ पाबंदी से पढ़े और अपने परिवार वालों को भी नमाज़ पढ़ने पर ज़ोर दे।

سُوْرَةُ الْأَنْبِيَاءِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ﴿1﴾

مَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿2﴾

لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ۗ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَأْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿3﴾

قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿4﴾

بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۚ فَلْيَأْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿5﴾

सूरतुल अम्बिया-२१

सूरः अल-अम्बिया मक्का में उतरी और इस में एक सौ बारह आयतें और सात रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. लोगों के हिसाब का वक़्त क़रीब आ गया है,[1] फिर भी वे गफ़लत (की हालत) में मुंह फेरे हुए हैं।

२. उन के पास उन के रब की तरफ़ से जो भी नई-नई शिक्षायें (तालिमात) आती हैं, उसे वे खेलकूद में ही सुनते हैं।

३. उन के दिल पूरी तरह गाफ़िल हैं और उन ज़ालिमों ने चुपके-चुपके काना-फूसीयां कीं कि वह तुम ही जैसा इंसान है, फिर क्या वजह है जो तुम आंखों देखे जादू में फंस जाते हो।

४. (पैग़म्बर ने) कहा, मेरा रब हर बात को जो आकाश और धरती में है अच्छी तरह से जानता है, वह बहुत सुनने वाला और जानने वाला है।

५. (इतना ही नहीं) बल्कि यह तो कहते हैं कि यह क़ुरआन परागन्दा ख़्वाबों का संग्रह (मजमूआ) है, बल्कि उस ने ख़ुद इसे गढ़ लिया है, बल्कि यह शायर है, वरना हमारे सामने यह कोई ऐसी निशानी लाते जैसे कि पहले ज़माने के पैग़म्बर भेजे गये थे।

---

[1] हिसाब के वक़्त का मतलब क़यामत है जो हर पल क़रीब हो रहा है, और हर वह चीज़ जो आने वाली है क़रीब है, हर इंसान की मौत ख़ुद उस के लिए क़यामत है, इस के सिवाय गुज़रे हुए वक़्त के मुक़ाबले क़यामत क़रीब है क्योंकि जितना वक़्त गुज़र चुका, बाक़ी रहने वाला वक़्त उस से कम है।

مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝6

६. इन से पहले जितनी वस्तियाँ हम ने हलाक कीं ईमान से ख़ाली थीं, तो क्या अब यह ईमान लायेंगे?

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝7

७. तुम से पहले भी जितने पैग़म्बर हम ने भेजे सभी इंसान थे,[1] जिन की तरफ़ हम वह्यी (प्रकाशना) नाज़िल करते थे, तो तुम इल्म[2] वालों से पूछ लो अगर ख़ुद तुम्हें इल्म न हो।

وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝8

८. और हम ने उन्हें ऐसे शरीर न बनाये कि वे भोजन न करें और न वह सदा ज़िन्दा रहने वाले थे।

---

[1] यानी सभी नबी मर्द थे, न कोई मानव जाति के सिवाय कोई नबी आया, और न कोई मर्द के सिवाय, यानी नबूअत इंसानों के साथ और इंसानों में मर्दों के साथ ख़ास तौर से रही है। इस से मालूम हुआ कि कोई औरत नबी नहीं हुई, इसलिए कि नबूअत भी उन कर्तव्यों (फ़रायेज़) में से है, जो औरत के फ़ितरी और तबई अमलों के दायरे से बाहर है।

[2] अहले ज़िक्र (ज्ञानी लोग) से मुराद किताब वाले लोग हैं, जो पहले की आसमानी किताबों का इल्म रखते थे, उन से पूछ लो कि पहले नबियों में जो गुज़र चुके हैं वह इंसान थे या दूसरे? वे तुम्हें बतायेंगे कि सभी इंसान थे। इस से कुछ लोग "अनुकरण (तक़लीद)" का सुबूत पेश करते हैं जो जायज़ नहीं। "तक़लीद" में क्या होता है? केवल एक ख़ास इंसान और उस से सम्बन्धित (मुताल्लिक़) एक निर्धारित (मुतअय्यिन) फ़िक्र को बुनियाद बनाया जाये और उसी के अनुसार काम किया जाये। दूसरा यह कि बिना किसी सुबूत के उसकी बात को क़ुबूल कर लिया जाये। जबकि आयत में "अहले ज़िक्र" से मतलब कोई ख़ास इंसान नहीं है बल्कि हर आलिम है जो तौरात और इंजील (बाईबिल) का इल्म रखता था। इस से व्यक्तिगत (शख़्सी) अनुकरण का खन्डन (तरदीद) होता है? इस में तो आलिमों से पूछने को कहा गया है जो आम लोगों के लिए ज़रूरी है, जिस से किसी को इंकार नहीं हो सकता न किसी एक इंसान के दामन को पकड़ लेने का हुक्म। इस के सिवाय तौरात और इंजील आसमानी किताबें थीं या किसी इंसान के अपने ख़्याल? अगर तौरात और इंजील आसमानी किताबें थीं तो मतलब यह हुआ कि आलिमों के ज़रिये आसमानी किताबों के नियम मालूम करें जो आयत का उचित (मुनासिब) मायेना है, और अगर वह किसी एक ख़ास इंसान, गुरू, और उस के शिष्यों के उपदेश (अक़वाल) की संग्रह (मजमूआ) थी तो फिर ज़रूर फ़िक़्ही (वैचारिक) तक़लीद (अनुकरणवाद) का मतलब इस आयत से निकल आता है, लेकिन क्या आसमानी किताबें और इंसानों के ज़रिये लिखी गई फ़िक़्ही किताबें दोनों एक ही जगह रखे जाने के लायक़ है?

ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ﴿9﴾

९. फिर हम ने उन से किये हुए सभी वादे सच कर दिखाये, उन्हें और जिन-जिन को हम ने चाहा नजात दी और हद से बढ़ने वालों को हलाक कर दिया।

لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿10﴾

१०. बेशक हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी है, जिस में तुम्हारे लिए शिक्षा (नसीहत) है। क्या फिर भी तुम अक़्ल का इस्तेमाल नहीं करते?

وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿11﴾

११. और बहुत सी बस्तियाँ हम ने हलाक कर दीं जो ज़ालिम थीं, और उन के बाद हम ने दूसरी क़ौम पैदा किया।

فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ﴿12﴾

१२. जब उन लोगों ने हमारे अज़ाब का एहसास कर लिया तो उस से (प्रकोप से) भागने लगे।

لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْئَلُوْنَ ﴿13﴾

१३. भाग-दौड़ न करो और जहाँ तुम्हें सुख अता किया गया था, वहीं वापस लौटो और अपने घरों की ओर जाओ ताकि तुम से सवाल तो कर लिया जाये।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿14﴾

१४. वे कहने लगे हमारा बुरा हो बेशक हम ज़ालिम थे।

فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ﴿15﴾

१५. फिर तो उनका यही क़ौल रहा, यहाँ तक कि हम ने उन्हें जड़ से कटी हुई खेती और बुझी पड़ी आग (की तरह) कर दिया।[1]

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿16﴾

१६. हम ने आकाश और धरती और उन के बीच की चीज़ों को खेल के लिए नहीं बनाया।

---

[1] حصيدا कटी हुई खेती और خمود आग के बुझ जाने को कहते हैं, आख़िर वे कटी हुई खेती की तरह हो गये और बुझी हुई आग की तरह राख का ढेर हो गये, कोई ताक़त, ज़ोर और संवेदन उन के अन्दर न रही।

لَوْ أَرَدْنَآ أَن نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنَٰهُ مِن لَّدُنَّآ إِن كُنَّا فَٰعِلِينَ ﴿17﴾

१७. अगर हम इसी तरह तमाशा खेल चाहते, तो उसे अपने पास से ही बना लेते, अगर हम ऐसा करने वाले ही होते।

بَلْ نَقْذِفُ بِٱلْحَقِّ عَلَى ٱلْبَٰطِلِ فَيَدْمَغُهُۥ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۚ وَلَكُمُ ٱلْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُونَ ﴿18﴾

१८. बल्कि हम सच को झूठ पर फेंक मारते हैं, तो सच, झूठ का सिर तोड़ देता है और वह उसी समय नाबूद हो जाता है, तुम जो बातें बनाते हो वे तुम्हारे लिए ख़राबी का सबब हैं।

وَلَهُۥ مَن فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ وَمَنْ عِندَهُۥ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِۦ وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ﴿19﴾

१९. और आकाशों और धरती में जो कुछ है, उसी (अल्लाह) का है, और जो उसके पास हैं[1] वे उसकी इबादत से न सरकशी करते और न थकते हैं।

يُسَبِّحُونَ ٱلَّيْلَ وَٱلنَّهَارَ لَا يَفْتُرُونَ ﴿20﴾

२०. वे दिन-रात उसकी पाकीज़गी का बयान करते हैं, और ज़रा भी सुस्ती नहीं करते।

أَمِ ٱتَّخَذُوٓا۟ ءَالِهَةً مِّنَ ٱلْأَرْضِ هُمْ يُنشِرُونَ ﴿21﴾

२१. उन लोगों ने धरती (की तख़्लीक़ में) से जिन्हें माबूद बना रखा है, क्या वह ज़िन्दा कर देते हैं?

لَوْ كَانَ فِيهِمَآ ءَالِهَةٌ إِلَّا ٱللَّهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحَٰنَ ٱللَّهِ رَبِّ ٱلْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿22﴾

२२. अगर आकाश और धरती में अल्लाह के सिवाय दूसरे भी माबूद होते तो यह दोनों उलट-पलट हो जाते।[2] बस अल्लाह अर्श का रब हर उस गुण (सिफ़त) से पाक है, जो ये मूर्तिपूजक बयान करते हैं।

---

[1] इस से मुराद फ़रिश्ते हैं, वे भी अल्लाह के दास और बंदे हैं। इन शब्दों से उनकी इज़्ज़त और एहतेराम ज़ाहिर होती है कि वे अल्लाह के क़रीब हैं। उसकी (अल्लाह की) पुत्रियाँ नहीं हैं, जैसाकि मुशरिक लोगों का अक़ीदा (विश्वास) था।

[2] यानी अगर हक़ीक़त में आकाश और धरती के दो ईश्वर होते तो इस दुनिया की हक़दार दो ताक़तें होतीं। दो का इरादा, अक़्ल और मर्ज़ी काम करती और जब दो की मर्ज़ी और फ़ैसला दुनिया में चलता तो यह दुनिया की व्यवस्था (तदबीर) रह ही नहीं सकती थी जो शुरू से बिना रुकावट के चली आ रही है। क्योंकि दोनों की मर्ज़ी में आपसी टकराव होता और दोनों की चाहत एक-दूसरे के विपरीत (मुख़ालिफ़) दिशा में इस्तेमाल होती, जिसका नतीजा बिखराव और बरबादी के रूप में पैदा होता, और अब तक ऐसा नहीं हुआ तो इसका साफ़ मतलब यह है कि दुनिया में केवल एक ही ताक़त है, जिसकी मर्ज़ी और हुक्म चलता है, जो कुछ भी होता है सिर्फ़ उसी के हुक्म पर होता है। उस के दिये हुए को कोई रोक नहीं सकता और जिस से वह अपनी दया रोक ले उसको देने वाला कोई नहीं।

لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُونَ ﴿23﴾

२३. वह अपने कामों के लिए (किसी के सामने) उत्तरदायी (जवाबदेह) नहीं और सभी (उस के सामने) उत्तरदायी हैं।

أَمِ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ آلِهَةً ۖ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ ۖ هَٰذَا ذِكْرُ مَن مَّعِيَ وَذِكْرُ مَن قَبْلِي ۗ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ ۖ فَهُم مُّعْرِضُونَ ﴿24﴾

२४. क्या उन लोगों ने अल्लाह के सिवाय दूसरे माबूद बना रखे हैं, उन से कह दो लाओ अपना सुबूत पेश करो, यह है मेरे साथ वालों की किताब और मुझ से पहले वालों का सुबूत। बात यह है कि उन में ज़्यादातर हक़ से अंजान हैं, इसी वजह से मुँह मोड़ें हैं।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ﴿25﴾

२५. और हम ने तुम से पहले जो रसूल (संदेशवाहक) भी भेजा, उसकी तरफ यही वह्यी (ईशवाणी) नाज़िल (अवतरित) की कि मेरे सिवाय कोई सच्चा माबूद नहीं, तो तुम सब मेरी ही इबादत (उपासना) करो।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَٰنُ وَلَدًا ۗ سُبْحَانَهُ ۚ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ﴿26﴾

२६. और (मुश्रिक) कहते हैं रहमान (कृपालु) की औलादें हैं (गलत है) वह पाक है। बल्कि वे (जिन्हें ये पुत्र समझ रहे हैं) उसके बाइज़्ज़त बंदे हैं।

لَا يَسْبِقُونَهُ بِالْقَوْلِ وَهُم بِأَمْرِهِ يَعْمَلُونَ ﴿27﴾

२७. उस के (अल्लाह के) सामने बढ़कर नहीं बोलते, और उस के हुक्म पर अमल करते हैं।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَىٰ وَهُم مِّنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ ﴿28﴾

२८. वह उन के पहले और बाद की सभी हालतों से अवगत (वाक़िफ़) है, और वे किसी की भी सिफ़ारिश नहीं करते सिवाय उस के जिस से वह (अल्लाह) ख़ुश हो[1] वे तो ख़ुद काँपते और डरते रहते हैं।

---

[1] इस से मालूम हुआ कि नबियों और स्वालेह लोगों (पुनीत लोग) के सिवाय फ़रिश्ते भी सिफ़ारिश करेंगे, सही हदीस से भी इसका समर्थन (ताईद) मिलता है, लेकिन यह सिफ़ारिशें उन्हीं के लिए होंगी जिन के लिए अल्लाह तआला चाहेगा। और ज़ाहिर बात है कि अल्लाह तआला यह सिफ़ारिश अपने नाफ़रमान बंदों के लिए नहीं बल्कि केवल पापी, लेकिन फ़रमाँबरदार लोगों यानी ईमान वालों व एकेश्वरवादियों के लिए पसन्द फ़रमायेगा।

२९. और उन में से कोई कह दे कि अल्लाह के सिवाय मैं इलाह (पूजनीय) हूँ, तो हम उसे नरक की सजा दें, हम जालिमों को इसी तरह सजा देते हैं।

وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ (29)

३०. क्या काफ़िरों ने यह नहीं देखा[1] कि (ये) आकाश और धरती (सब के सब) आपस में मिले हुए थे, फिर हम ने उन्हें अलग-अलग किया, और हर जानदार को हम ने पानी से पैदा किया।[2] क्या यह लोग फिर भी यक़ीन नहीं करते ?

اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ۭ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاۗءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۭ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ (30)

३१. और हम ने धरती पर पहाड़ बना दिये, ताकि वह मख़लूक़ को हिला न सके, और हम ने इस में उन के बीच चौड़े रास्ते बना दिये ताकि वह रास्ता हासिल कर सकें।

وَجَعَلْنَا فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ ۠ وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ (31)

३२. और आकाश को हम ने एक महफ़ूज़ (सुरक्षित) छत बनाया है, लेकिन वह लोग उसकी निशानियों पर ध्यान नहीं देते।

وَجَعَلْنَا السَّمَاۗءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ښ وَّهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ (32)

३३. और वही (अल्लाह) है जिस ने रात-दिन और सूरज-चाँद को बनाया[3] उन में से सभी अपने-अपने मदार (कक्ष) में तैर रहे हैं।[4]

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ كُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ (33)

---

[1] इसका मतलब आँख से देखना नहीं बल्कि दिल की आँखों से देखना है, यानी क्या उन्होंने सोच-विचार नहीं किया या उन्होंने जाना नहीं?

[2] इसका मतलब वर्षा और चश्मों (स्रोतों) के पानी है, तब भी वाजेह रहे कि इससे तरावट होती है और हर जानदार को नई ज़िन्दगी देता है और अगर इसका मतलब मनी है तो इस में भी कोई कठिनाई नहीं, क्योंकि हर जानदार के अस्तित्व (वजूद) का सबब वह पानी की बूँदें है, जो मर्द की पीठ से निकलता है और स्त्री के गर्भाशय (रिहम) में जाकर एक नये प्राणी (मख़लूक़) को जन्म देने का सबब बनता है।

[3] यानी रात को आराम और दिन को काम के लिए बनाया, सूरज को दिन की निशानी और चाँद को रात की निशानी बनाया, ताकि महीनों और सालों का हिसाब लगाया जा सके, जो इंसान के लिए ख़ास ज़रूरत है।

[4] जिस तरह से तैरने वाला पानी के ऊपर तैरता है, उसी तरह से चाँद और सूरज अपने मदार (कक्ष) में अपनी मुक़र्रर रफ़्तार से चलते हैं।

वَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۖ أَفَإِن مِّتَّ فَهُمُ الْخَالِدُونَ ﴿34﴾

३४. और आप से पहले हम ने किसी भी व्यक्ति को हमेशगी नहीं दी, फिर क्या अगर आप मर गये तो यह सदा के लिए रह जायेंगे?[1]

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَنَبْلُوكُم بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿35﴾

३५. हर नफ़्स (जीव) को मौत का मज़ा चखना है, और हम इम्तेहान के लिए तुम्हें बुराई-भलाई में डालते हैं[2] और तुम सब हमारी तरफ पलटकर आओगे।

وَإِذَا رَآكَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا أَهَٰذَا الَّذِي يَذْكُرُ آلِهَتَكُمْ وَهُم بِذِكْرِ الرَّحْمَٰنِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿36﴾

३६. और जिन लोगों ने कुफ्र (अविश्वास) किया वे जब तुम को देखते हैं तो बस तुम्हारी हँसी उड़ाते हैं, (कहते हैं) कि क्या यही वह है जो तुम्हारे देवताओं (पूज्यों) की चर्चा बुराई से करता है? और वह ख़ुद ही रहमान (कृपालु) का जिक्र (महिमा) करने से इंकार करते हैं।

خُلِقَ الْإِنسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۚ سَأُرِيكُمْ آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ﴿37﴾

३७. इंसान पैदाईशी उतावला है, मैं तुम्हें अपनी निशानियाँ (लक्षण) जल्द ही दिखाऊँगा, तुम मुझ से जल्दी न करो।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿38﴾

३८. और कहते हैं कि अगर सच्चे हो तो बताओ कि वह वादा (यातना) कब पूरा होगा।

---

[1] यह काफ़िरों के जवाब में है जो आप (ﷺ) के बारे में कहते थे कि एक दिन आप को मर ही जाना है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मौत तो हर इंसान को आनी ही है और इस के ऐतबार से बेशक मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ भी इस नियम से अलग नहीं, क्योंकि वह भी इंसान ही हैं, और हम ने किसी इंसान को हमेशा के लिए इस धरती पर जिन्दा रहने के लिए नहीं छोड़ दिया है। इसका मतलब यह तो नहीं कि क्या यह बात कहने वाले इस धरती पर जिन्दा रहेंगे? इस से मूर्तिपूजकों और क़ब्र पूजने वालों का भी खण्डन (तरदीद) हो गया, जो देवताओं, नबियों, बुजुर्गों के हमेशा जिन्दा रहने का भ्रम रखते हैं, इसी बिना पर उनको अपना दुखहारी, मुश्किल कुशा समझते हैं, इस ग़लत ख़्याल से हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं।

[2] यानी कभी दुख-दर्द में घेरकर, कभी दुनियावी आसानी से, कभी सेहत और ख़ुशहाली से, कभी तंगी और बीमारी से, कभी धन-दौलत देकर और कभी भूख-प्यास देकर हम इम्तेहान (परीक्षा) लेते हैं कि हम देखें कि कौन फिर भी शुक्रगुज़ार है और कौन नाशुकरा (कृतघ्न)? कौन सब्र करता है और कौन सहन नहीं करता? शुक्र व सब्र (धन्य और धैर्य) अल्लाह को ख़ुश करने वाले हैं और नाशुक्री और नासब्री उस रब के अज़ाब की वजह है।

३९. अगर ये काफ़िर जानते कि उस समय न तो ये आग को अपने चेहरों से हटा सकेंगे और न अपनी पीठों से, और न इन की मदद की जायेगी।

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكُفُّونَ عَن وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَن ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٣٩﴾

४०. हाँ, हाँ! वादा की घड़ी (क़यामत का दिन) उन के पास अचानक आ जायेगी और उन्हें वह हक्का बक्का कर देगी, फिर न तो यह लोग उसे टाल सकेंगे और न ही उन्हें तनिक भी समय दिया जायेगा।

بَلْ تَأْتِيهِم بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿40﴾

४१. और तुम से पहले रसूलों का भी मज़ाक़ किया गया तो जिन्होंने मज़ाक़ किया, उन्हें ही उस चीज़ ने आ घेरा जिसका वे मज़ाक़ करते थे।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٤١﴾

४२. उनसे पूछिये कि रहमान (कृपालु) से रात और दिन तुम्हारी रक्षा (हिफ़ाज़त) कौन कर सकता है? बल्कि यह अपने रब के ज़िक्र (महिमा) करने से फिरे हुए हैं।

قُلْ مَن يَكْلَؤُكُم بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمَٰنِ ۗ بَلْ هُمْ عَن ذِكْرِ رَبِّهِم مُّعْرِضُونَ ﴿42﴾

४३. क्या हमारे सिवाय उनके कोई और इलाह (पूजनीय) हैं जो उन्हें मुसीबत से बचाते हों? कोई भी ख़ुद अपनी मदद करने की ताक़त नहीं रखता, और न कोई हमारी तरफ़ से साथ दिया जाता है।

أَمْ لَهُمْ آلِهَةٌ تَمْنَعُهُم مِّن دُونِنَا ۚ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ أَنفُسِهِمْ وَلَا هُم مِّنَّا يُصْحَبُونَ ﴿43﴾

४४. बल्कि हम ने इन्हें और इनके बुज़ुर्गों को ज़िन्दगी की सामग्री (आसाईश) दी, यहाँ तक कि उनकी उम्र की सीमा ख़त्म हो गयी, क्या वह नहीं देखते कि हम ज़मीन को उस के किनारों से घटाते चले आ रहे हैं? तो अब क्या वही ग़ालिब हैं?

بَلْ مَتَّعْنَا هَٰؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۗ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ أَفَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿44﴾

४५. कह दो कि मैं तो केवल तुम्हें अल्लाह की वह्यी के ज़रिये बाख़बर करता हूँ, लेकिन बहरे इंसान पुकार को नहीं सुनते, जबकि उन्हे सचेत

قُلْ إِنَّمَا أُنذِرُكُم بِالْوَحْيِ ۚ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاءَ إِذَا مَا يُنذَرُونَ ﴿45﴾

किया जा रहा हो।

وَلَبِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿46﴾

४६. और अगर उन्हें तेरे रब के अज़ाब की भाप भी लग जाये तो पुकार उठें कि हाय हमारी बरबादी! बेशक हम ज़ालिम थे।

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ۭ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ۭ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ﴿47﴾

४७. और हम क़यामत के दिन उन के बीच ठीक-ठीक तौल की तराजू ला रखेंगे, फिर किसी पर किसी तरह का ज़ुल्म न किया जायेगा, और अगर एक सरसों के दाने के बराबर भी (अमल) होगा उसे हम सामने लायेंगे, और हम हिसाब करने के लिए काफी हैं।[1]

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَاۗءً وَّ ذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿48﴾

४८. और यह पूरी तरह से सच है कि हम ने मूसा और हारून को फ़ैसला करने वाली रौशन और नेक लोगों के लिए नसीहत वाली किताब अता की है।

الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ﴿49﴾

४९. वह लोग जो बिन देखे अपने रब से डरते हैं और जो क़यामत के (विचार) से कांपते रहते हैं।

وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ۭ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿50﴾

५०. और यह नसीहत व बरकत वाला क़ुरआन हम ने ही उतारा है, फिर भी तुम क्या इस से इंकार करते हो?

---

[1] ميزان - موازين (तराज़ू) का बहुवचन (जमा) है। अमलों को तौलने के लिए क़यामत के दिन या तो कई तराज़ू होंगी या तराज़ू एक ही होगी, लेकिन उसकी ख़ास अज़मत के लिए या अमल की तादाद के हिसाब से इसे बहुवचन के तौर पर इस्तेमाल किया गया है। इंसान के अमल तो भौतिक (जिस्मानी) नहीं यानी इनकी ख़ुले तौर से कोई शक्ल तो नहीं है, फिर उसको तौला किस तरह से जायेगा? यह सवाल आज से पहले तक तो शायद कोई अहमियत (विशेषता) रखता था, लेकिन आज के साइंसी अविष्कार (ईजाद) ने इसे मुमकिन बना दिया है। अब इन अविष्कारों के ज़रिये बिना शक्ल और बिना वज़न की चीज़ों को भी नापा तौला जाने लगा है। जब इंसान यह क़ुदरत रखता है तो अल्लाह तआला के लिए उन अमलों को जो बिना शक्ल हैं, तौलना कौन सा कठिन काम है, उसकी तो शान ही निराली है।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ (51)

५१. और बेशक हम ने इस से पहले इब्राहीम को समझ बूझ अता किया था,[1] और उसकी हालत से अच्छी तरह परिचित (वाक़िफ़) थे।

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ (52)

५२. जब उस ने अपने पिता और अपनी जाति वालों से कहा कि यह मूर्तियाँ, जिन के तुम पुजारी बने बैठे हो, ये क्या हैं ?

قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ (53)

५३. उन्होंने कहा, हम ने अपने बाप-दादा को इनकी इबादत (पूजा) करते पाया है।[2]

قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ (54)

५४. आप ने कहा फिर तो तुम और तुम्हारे बाप-दादा खुली गुमराही में थे।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ (55)

५५. उन्होंने कहा कि क्या आप हक़ीक़त में हक़ लाये हैं या यूँ ही मज़ाक़ कर रहे हैं।

قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ (56)

५६. आप ने कहा (नहीं) बल्कि हक़ीक़त में तुम्हारा रब आकाशों और धरती का रब है, जिस ने उन्हे पैदा किया है और मैं तो इसी बात का गवाह (और मानता) हूँ।

وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ (57)

५७. और अल्लाह की क़सम मैं तुम्हारी मूर्तियों का इलाज ज़रूर करूँगा जब तुम पीठ फेर कर चल दोगे।

---

[1] من قبل का मतलब या तो यह है कि हज़रत इब्राहीम को इल्म (नसीहत और अक़्ल) देने का क़िस्सा हज़रत मूसा को तौरात देने से पहले का है, या यह मतलब है कि हज़रत इब्राहीम को नबी होने से पहले ही इल्म अता कर दिया गया था।

[2] जिस तरह आज भी जिहालत और ग़लत अक़ीदे में फँसे हुए मुसलमानों को बिदअत (इस्लाम धर्म में नई बात पैदा करना, जिसका इस्लाम धर्म (दीन) के नियमों से कोई मतलब या सुबूत न मिलता हो) और बेकार की रस्मों से रोका जाता है तो जवाब देते हैं कि हम इन्हें किस तरह छोड़ दें, जबकि हमारे पूर्वजों (बुज़ुर्गों) को भी यही करते देखा है, और यही जवाब वह लोग भी देते हैं जो किताब व सुन्नत के हुक्म को छोड़कर आलिमों और उनकी तरफ़ सम्बन्धित फ़िक़्ह (धर्मबोध) से सम्बन्धित (मन्सूब) रहने को ही ज़रूरी समझते हैं।

५८. तो उस ने उन सब के टुकड़े-टुकड़े कर दिये, बस केवल बड़ी मूर्ति को छोड़ दिया, यह भी इसलिए कि वह लोग उसकी तरफ़ पलटें।[1]	فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ (58)
५९. वे कहने लगे कि हमारे देवताओं की यह दुर्गत किस ने की, ऐसा इंसान जरूर जालिम होगा।	قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ (59)
६०. बोले कि हम ने एक नौजवान को इन के बारे में बात करते हुए सुना था, जिसे इब्राहीम कहा जाता है।	قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ (60)
६१. उन्होंने कहा, तो उसे सब की आँखों के सामने ले आओ ताकि सब देखें।	قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ (61)
६२. कहने लगे हे इब्राहीम! क्या तूने ही हमारे देवताओं की यह दुर्गत बनाई है?	قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ (62)
६३. आप ने जवाब दिया, बल्कि यह काम तो उन के बड़े देवता ने किया है, तुम अपने देवताओं से पूछ लो अगर वह बोलते हों।	قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْــَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ (63)
६४. अतः उन्होंने अपने मन में मान लिया और (मन ही में) कहने लगे कि हकीकत में तुम खुद जालिम हो।	فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ (64)
६५. फिर औंधे सिर डालकर (कुछ सोच-समझ कर, अगरचे वे कुबूल कर चुके थे फिर भी वे बोले) कि यह तुम जानते हो कि यह नही बोलते।	ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ (65)

[1] तो जिस दिन अपनी ईद या कोई त्योहार मनाने के लिए सारी जाति के लोग बाहर चले गये तो हजरत इब्राहीम ने अच्छा समय जानकर मूर्तियों को तोड़-फोड़ डाला, केवल एक बड़ी मूर्ति रहने दी, कुछ आलिम कहते हैं कि उन्होंने कुल्हाड़ी उस बड़ी मूर्ति के हाथ में फंसा दी, ताकि उस मूर्ति से पूछें।

६६. (इब्राहीम ने) उसी समय कहा, हाय! क्या तुम उनकी इबादत करते हो जो न तुम्हें कुछ भी फ़ायेदा पहुँचा सकते हैं और न नुक़सान।

قَالَ اَفَتَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنۡفَعُكُمۡ شَيۡـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمۡ ﴿66﴾

६७. थू है तुम पर और उन पर जिनकी तुम अल्लाह के सिवाय इबादत करते हो, क्या तुम्हें इतनी भी अक़्ल नहीं ?

اُفٍّ لَّـكُمۡ وَلِمَا تَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿67﴾

६८. उन्होंने कहा कि इसे जला दो और अपने देवताओं की मदद करो, अगर तुम्हें कुछ करना है तो।[1]

قَالُوۡا حَرِّقُوۡهُ وَانۡصُرُوۡۤا اٰلِهَتَكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ فٰعِلِيۡنَ ﴿68﴾

६९. हम ने कहा, हे आग ! तू ठंडी हो जा और इब्राहीम के लिए सलामती [(शान्ति) और सुखदायी] बन जा।

قُلۡنَا يٰنَارُ كُوۡنِىۡ بَرۡدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبۡرٰهِيۡمَ ﴿69﴾

७०. अगरचे उन्होंने उस (इब्राहीम) का बुरा चाहा, लेकिन हम ने उन्हें ही नाकाम (असफल) कर दिया।

وَاَرَادُوۡا بِهٖ كَيۡدًا فَجَعَلۡنٰهُمُ الۡاَخۡسَرِيۡنَ ﴿70﴾

७१. और हम (इब्राहीम) और लूत को बचाकर उस ज़मीन की तरफ़ ले गये, जिस में हम ने सारी दुनिया के लिये बरकतें रखी थीं।[2]

وَنَجَّيۡنٰهُ وَلُوۡطًا اِلَى الۡاَرۡضِ الَّتِىۡ بٰرَكۡنَا فِيۡهَا لِلۡعٰلَمِيۡنَ ﴿71﴾

७२. और हम ने उसे इसहाक़ अता किया, और उस पर ज़्यादा याक़ूब, और हर एक को नेक बनाया।[3]

وَوَهَبۡنَا لَهٗۤ اِسۡحٰقَ ؕ وَيَعۡقُوۡبَ نَافِلَةً ؕ وَكُلًّا جَعَلۡنَا صٰلِحِيۡنَ ﴿72﴾

---

[1] हज़रत इब्राहीम ने जब अपनी दलील पेश कर दिया और उनकी गुमराही (विपथा) और बेवकूफ़ी को इस तरह से ज़ाहिर किया कि उन के पास कोई जवाब न रहा, तो चूँकि वे गुमराह थे और कुफ़्र और शिर्क ने उन के दिल में अँधेरा कर दिया था, इसलिए बजाय शिर्क छोड़ने के उलटे हज़रत इब्राहीम की मुख़ालफ़त में और कड़े हो गये और अपने देवताओं की दुहाई देकर उनको आग में डालने की तैयारी करने लगे।

[2] इस से मुराद बहुत से मुफ़स्सिरों ने सीरिया देश लिया है, जिसको हरियाली, फलों और नहरों की ज़्यादती और नबियों की रिहाईश होने के सबब बरकत (मंगलमय) कहा गया है।

[3] نافلة ज़्यादा को कहते हैं। हज़रत इब्राहीम ने तो केवल बेटे की तमन्ना की थी, उनकी तमन्ना के अलावा पौता भी प्रदान (अता) किया।

وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿73﴾

७३. और हम ने उन्हें इमाम बना दिया कि हमारे हुक्म से लोगों की रहनुमाई करें और हम ने उनकी तरफ नेक अमल करने और नमाज कायम करने और जकात देने की वह्यी (प्रकाशना) की और वे सब के सब हमारे पुजारी थे।

وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ۗ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ﴿74﴾

७४. और हम ने लूत को भी हिक्मत और इल्म अता किया, और उसे उस बस्ती से नजात दिया जहाँ के लोग गन्दे कामों में लिप्त (मुब्तिला) थे और हक़ीक़त में वे बुरे गुनहगार लोग थे।

وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ۗ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿75﴾

७५. और हम ने उसको (लूत को) अपनी रहमत (कृपा) में शामिल कर लिया, बेशक वह नेक लोगों में से था।[1]

وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿76﴾

७६. और नूह के उस समय को (याद करो) जब उस ने इस से पहले दुआ (विनय) की हम ने उस की दुआ (विनय) क़ुबूल की, और हम ने उस को और उस के परिवार को बड़े दुख से आज़ाद कर दिया।

وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۗ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿77﴾

७७. और उस क़ौम के मुक़ाबले में उसकी मदद की जिस ने हमारी आयतों को झुठलाया था, हक़ीक़त में वे बुरे लोग थे तो हम ने उन सब को डुबो दिया।

---

[1] हज़रत लूत हज़रत इब्राहीम के भाई के पुत्र (भतीजे) थे, और हज़रत इब्राहीम पर ईमान लाये थे और उन के साथ ईराक से यात्रा करके सीरिया जाने वालों में से थे, अल्लाह ने उनको भी इल्म व हिक्मत यानी नबूअत अता की थी, वह जिस इलाके के लिए नबी बनाकर भेजे गये थे, उसे अमूर: और सदूम कहा जाता है। यह फ़िलिस्तीन के मुर्दा सागर से लगा हुआ जार्डन की ओर उपजाऊ इलाका था, जिसका बड़ा हिस्सा अब मृत सागर का एक हिस्सा है, उनकी जाति वाले गुदा मैथुन (लिवातत) जैसे बुरे कामों, रास्तों पर बैठकर राहियों पर आवाजें कसने और उन्हें तंग करने, कंकरिया मारने में मशहूर थे, जिसे अल्लाह तआला ने ख़बाएस (कुकर्म) कहा है। आख़िर में हज़रत लूत और उसके पैरोकारों को अपनी रहमत में दाख़िल करके यानी उन को बचाकर क़ौम का सत्यानाश कर दिया।

وَدَاوُدَ وَسُلَيْمٰنَ إِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ إِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ﴿78﴾

७८. और दाऊद और सुलैमान को (याद कीजिए) जबकि वे खेत के बारे में फैसला (निर्णय) कर रहे थे कि कुछ लोगों की बकरियाँ रात को उस में चर गयी थीं और उन के फैसले में हम मौजूद थे।

فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۫ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ۭ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿79﴾

७९. तो हम ने उसका सहीह फैसला सुलैमान को समझा दिया,[1] बेशक हम ने हर एक को हिक्मत और इल्म दे रखा था, और दाऊद के अधीन (ताबे) हम ने पहाड़ कर दिये थे जो तस्बीह (महिमा) करते थे[2] और पक्षियों को भी,[3] ऐसा हम करने वाले ही थे।

وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَأْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ﴿80﴾

८०. और हम ने उसे तुम्हारे लिये कपड़ा (कवच) बनाना सिखाया, ताकि लड़ाई (के नुकसान) से तुम्हारा बचाव कर सके,[4] फिर क्या तुम अब

---

[1] टीकाकारों (मुफस्सिरों) ने यह कहानी इस तरह बयान किया है कि एक आदमी की बकरियाँ रात को दूसरे आदमी के खेत में चली गयीं और खेत को चर गयीं। हजरत दाऊद जो पैगम्बर (ईशदूत) के साथ-साथ हाकिम भी थे, उन्होंने फैसला दिया कि बकरियाँ खेत वाला ले ले ताकि उसका नुकसान पूरा हो सके। हजरत सुलैमान ने इस इंसाफ का विरोध किया और फैसला किया कि कुछ समय के लिए बकरियाँ खेत के मालिक को दे दी जायें ताकि वह इनका फायदा उठाए, और खेती बकरी वाले को दे दी जाये ताकि वह खेतों की सिंचाई और देखभाल करके उसे सुधारे, जब वह खेत उस हालत में आ जाये जैसा बकरियों के चरने से पहले था, तो खेत, खेत के मालिक को और बकरियाँ, बकरियों के मालिक को वापस कर दी जायें। पहले इंसाफ के मुक़ाबिले में दूसरा फैसला इस ऐतबार से उचित (मुनासिब) था कि किसी को अपनी चीज से हाथ नहीं धोना पड़ा, जबकि पहले फैसले में बकरी वाले को बकरियों से हाथ धोना पड़ा था, फिर भी अल्लाह ने हजरत दाऊद की तारीफ़ की कि हम ने हर एक को (यानी दाऊद और सुलैमान को) इल्म और हिक्मत अता किया था।

[2] इसका मतलब यह कभी नहीं कि पहाड़ उनकी तस्बीह (प्रशंसागान) की आवाज से गूँज उठते थे (क्योंकि इस में कोई चमत्कार की बात ही बाकी नहीं होती) हर एक छोटी-बड़ी रूह की ऊँची आवाज से गूँज पैदा हो सकती है (आवाज लौटने की शक्ल में)। बल्कि मतलब हजरत दाऊद के साथ पहाड़ों का भी तस्बीह पढ़ना है, यह कहने की बात नहीं थी हक़ीक़त में थी।

[3] पक्षी भी दाऊद की दर्द भरी आवाज को सुनकर अल्लाह की पाकी का बयान करते थे या पक्षी भी उन के अधीन (ताबे) कर दिये गये थे।

[4] यानी हम ने दाऊद के लिए लोहे को नरम बना दिया था जिस से वह लड़ाई के लिये कपड़ा

शुक्रगुजारी करोगे?

८१. और हम ने सुलैमान के अधीन (तावे) तेज तुन्द हवा कर दी जो उस के हुक्म पर उस धरती की तरफ़ चलती थी, जिस में हम ने बरकतें रखी थीं, और हम हर चीज को जानते हैं।

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿81﴾

८२. और (इसी तरह) बहुत से शैतानों को भी (उसका अधीनस्थ बनाया था) जो उस के हुक्म पर डुबकी लगाते थे और इस के सिवाय बहुत से काम करते थे, और उनकी हिफ़ाजत करने वाले हम ही थे।

وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿82﴾

८३. और अय्यूब (की उस हालत को याद करो) जबकि उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे यह रोग लग गया है, और तू सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है।

وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿83﴾

८४. तो हम ने उस की (गुहार) सुन ली और जो दुख उन्हें था उसे दूर कर दिया और उसे उस का परिवार अता किया, बल्कि उसे अपनी ख़ास रहमत से[1] उन के साथ वैसे ही और दिये ताकि इबादत करने वालों के लिए नसीहत का सबब (स्मरणीय) हो।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿84﴾

और कवचें बनाते थे जो लड़ाई के मैदान में तुम्हारी सुरक्षा (हिफ़ाजत) का सामान हैं। नबी के साथी कतादह का कहना है कि नबी दाऊद से पहले भी कवचें बनती थीं मगर वह सादी थीं उन में कड़ियाँ नही होती थीं, नबी दाऊद पहले इंसान हैं जिन्होंने कड़ियों और कुन्डे वाली कवचें तैयार की। (इब्ने कसीर)

[1] क़ुरआन मजीद में हजरत अय्यूब को साबिर (धैर्यवान) कहा गया है। (सूर: साद) इसका मतलब यह है कि उनका इम्तेहान लिया गया, जिस में उन्होंने कृतज्ञता और धैर्य (सब्र और शुक्र) का दामन हाथ से नहीं छोड़ा। वे इम्तेहान और कष्ट क्या थे, इसका कोई सहीह बयान नही मिलता। फिर भी क़ुरआन के बयान के ऐतबार से मालूम होता है कि अल्लाह तआला ने उन्हें धन-धान्य और पुत्र दे रखे थे, इम्तेहान के लिए अल्लाह तआला ने यह सभी छीन लिये थे, यहाँ तक कि जिस्मानी ताक़त भी कमजोर कर दी थी, इसलिए रोगों से पीड़ित थे। आख़िर में कहा जाता है कि १८ साल के इम्तेहान के बाद अल्लाह के सामने दुआ की, अल्लाह ने दुआ क़ुबूल की और सेहत (स्वास्थ) के साथ-साथ धन-धान्य और पुत्र पहले से दोगुने दिये। इसका कुछ बयान सहीह इब्ने हिब्बान के एक बयान में मिलता है।

وَإِسْمٰعِيلَ وَإِدْرِيسَ وَذَا الْكِفْلِ ۖ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِينَ ﴿85﴾

८५. और इस्माईल और इदरीस, और जुलकिफ्ल[1] ये सब सब्र करने वाले थे।

وَأَدْخَلْنٰهُمْ فِي رَحْمَتِنَا ۖ إِنَّهُم مِّنَ الصّٰلِحِينَ ﴿86﴾

८६. हम ने उन्हें अपनी रहमत (दया) में दाख़िल कर दिया, ये सब नेक लोग थे।

وَذَا النُّونِ إِذ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ أَن لَّن نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ أَن لَّا إِلٰهَ إِلَّا أَنتَ سُبْحٰنَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ الظّٰلِمِينَ ﴿87﴾

८७. और मछली वाले[2] (यूनुस ﷺ) को (याद करो)! जबकि वह नाराज (क्रोधित) होकर चल दिया और समझता था कि हम उसे न पकड़ेंगे। आख़िर में उस ने अंधेरों[3] में से पुकारा कि इलाही (पूजनीय) तेरे सिवाय कोई माबूद (पूज्य) नहीं है, तू पाक है। बेशक मैं ही ज़ालिमों में से हूं।

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ۚ وَكَذٰلِكَ نُـۨجِي الْمُؤْمِنِينَ ﴿88﴾

८८. तो हम ने उस की पुकार सुन ली और उसे दुखों से आज़ाद किया, और हम इसी तरह ईमान वालों को बचा लिया करते हैं।

وَزَكَرِيَّا إِذْ نَادٰى رَبَّهُ رَبِّ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا وَأَنتَ خَيْرُ الْوٰرِثِينَ ﴿89﴾

८९. और ज़करिया को (याद करो) जब उस ने अपने रब से दुआ की कि हे मेरे रब ! मुझे अकेला न छोड़, तू सब से अच्छा वारिस है।

---

[1] ज़ुलकिफ़्ल के बारे में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कि वह नबी थे या नहीं? कुछ उनकी नबूअत और कुछ विलायत के हक़ में हैं। इमाम इब्ने जरीर इन के बारे में ख़ामोश हैं, इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं: "क़ुरआन में नबियों के साथ उनका भी बयान उन के नबी होने को ज़ाहिर करता है।" अल्लाह अच्छी तरह जानता है।

[2] मछली वाले से मुराद हज़रत यूनुस हैं जो अपनी क़ौम से नाराज़ होकर अल्लाह के अज़ाब की धमकी देकर, अल्लाह के हुक्म के बिना ही वहाँ से चल दिये थे, जिस पर अल्लाह तआला ने पकड़ा और उन्हें मछली का भोजन (कौर) बना दिया, इसका कुछ बयान सूर: यूनुस में हो चुका है और कुछ सूर: साफ़्फ़ात में आयेगा।

[3] ظُلُمَات, ظُلْمَة का बहुवचन (जमा) है, जिसका मतलब अंधेरा होता है। हज़रत यूनुस अंधेरों मे घिरे हुए थे, रात का अंधेरा, समुद्र का अंधेरा और मछली के पेट का अंधेरा।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۚ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ۭ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ (90)

९०. तो हम ने उसकी दुआ क़ुबूल कर ली और उसे यहया अता किया, और उनकी पत्नी को उनके लिए सुधार दिया।[1] यह नेक लोग नेक अमल की तरफ़ जल्दी दौड़ते थे, और हमें रग़बत और डर के साथ पुकारते थे, और हमारे सामने विनम्र (आजिज़ी से) रहते थे।

وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ (91)

९१. और वह (पाकबाज़ औरत) जिस ने अपनी इस्मत (सतीत्व) की हिफ़ाज़त की, हम ने उस के अन्दर अपनी रूह (आत्मा) फूंकी और ख़ुद उसको और उस के पुत्र को सारी दुनिया के लिए निशानी (लक्षण) बना दिया।

اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ڮ وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ (92)

९२. यह तुम्हारा गिरोह है जो हक़ीक़त में एक ही गिरोह है, और मैं तुम सब का रब हूं। इसलिए तुम सब मेरी ही इबादत (उपासना) करो।[2]

وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ۭ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ (93)

९३. लेकिन लोगों ने आपस में अपने दीन में गुट बना लिये, सब को हमारी तरफ़ पलटकर आना है।[3]

[1] यानी वह बांझ और किसी बच्चे के जन्म देने लायक नहीं थी, हम ने उसके इस कमी को दूर करके उसे एक नेक बेटा अता किया।

[2] उम्मः (गिरोह) का मतलब यहां धर्म या मज़हबी जमाअत है, यानी तुम्हारा धर्म और गिरोह एक ही है और वह धर्म तौहीद का धर्म है, जिसकी दावत सभी नबियों ने दिया, और गिरोह इस्लाम का गिरोह है जो सभी नबियों का गिरोह रहा है। जिस तरह नबी ﷺ ने फ़रमाया : "हम नबियों की जमाअत अल्लाती औलाद (जिन का पिता एक और मातायें कई हों) हैं, हमारा धर्म एक ही है।" (इब्ने कसीर)

[3] यानी तौहीद (अद्वैत) और अल्लाह की इबादत (उपासना) छोड़कर कई जमाअतों और गिरोहों में बट गये। एक गिरोह मुशरिकों (मूर्तिपूजक वग़ैरह) और काफ़िरों का हो गया, और नबियों और रसूलों को मानने वाले भी पीढ़ियां बन गये, कोई यहूदी हो गया, कोई इसाई, और कोई कुछ! बदनसीबी से मुसलमानों में ख़ुद भी गिरोह बन्दी पैदा हो गयी, और यह भी बिसियों गिरोह में बट गये। इन सब का इंसाफ़ जब ये अल्लाह के सामने पेश होंगे तब वहीं होगा।

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿94﴾

९४. फिर जो भी नेक काम करे, और वह मॉमिन (एकेश्वरवादी) भी हो, तो उसकी कोशिश की कोई बेक़दरी (उपेक्षा) नहीं होगी। हम तो उस के लिखने वाले हैं।

وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿95﴾

९५. और जिस बस्ती को हम ने हलाक कर दिया, उस के लिए फ़र्ज़ है कि वहाँ के लोग पलटकर नहीं आयेंगे।

حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿96﴾

९६. यहाँ तक कि याजूज और माजूज खोल दिये जायेंगे और वे हर एक ढलवान से दौड़ते आयेंगे।[1]

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿97﴾

९७. और सच्चा वादा क़रीब आ लगेगा उस समय काफ़िरों की आँखें फटी की फटी रह जायेंगी कि हाय अफ़सोस! हम इस हाल से ग़ाफ़िल थे, बल्कि हक़ीक़त (वास्तव) में हम ज़ालिम थे।

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ۭ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿98﴾

९८. तुम और अल्लाह के सिवाय जिन-जिन की तुम इबादत (उपासना) करते हो, सब नरक के ईंधन बनोगे, तुम सब उस (नरक) में जाने वाले हो।

لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَاۗءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ۭ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿99﴾

९९. अगर वे (सच्चे) माबूद होते तो नरक में दाख़िल नहीं होते, और सब के सब उसी में हमेशा रहने वाले हैं।

---

[1] याजूज और माजूज का ज़रूरी बयान सूर: कहफ़ के आख़िर में गुज़र चुका है, हज़रत ईसा की मौजूदगी में क़यामत के क़रीब वे ज़ाहिर होंगे और इतनी तेज़ी से यह हर ओर फैल जायेंगे कि हर ऊँची जगह से ये दौड़ते हुए मालूम होंगे, उन के फ़साद और बुरे कामों से ईमान वाले तंग आ जायेंगे। फिर हज़रत ईसा के शाप से यह बरबाद हो जायेंगे, उनकी लाशों की बदबू हर तरफ़ फैलेगी, यहाँ तक कि अल्लाह तआला पक्षियों को भेजेगा जो उनकी लाशों को उठाकर समुद्र में फेकेंगे, फिर एक बहुत तेज़ वर्षा (बारिश) करेगा, जिस से सारी धरती साफ़ हो जायेगी। (यह पूरा वाक़ेआ सहीह हदीस में बयान है, तफ़सील के लिए तफ़सीर इब्ने कसीर देखें)

لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ﴿100﴾

१००. वे वहाँ चिल्ला रहे होंगे और वहाँ कुछ भी न सुन सकेंगे।

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُم مِّنَّا الْحُسْنَىٰ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴿101﴾

१०१. लेकिन जिन के लिए हमारी तरफ़ से पहले से ही नेकी मुक़र्रर है, वे सब नरक से दूर ही रखे जायेंगे।[1]

لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا ۖ وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنفُسُهُمْ خَالِدُونَ ﴿102﴾

१०२. वे तो नरक की आहट तक न सुन सकेंगे और अपनी मनचाही चीज़ों के साथ हमेशा रहने वाले होंगे।

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ هَٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ﴿103﴾

१०३. वह बड़ी घबराहट भी उन्हें उदासीन न कर सकेगी और फ़रिश्ते उन्हें हाथों-हाथ ले लेंगे कि यही तुम्हारा वह दिन है जिसका तुम को वादा दिया जाता रहा।

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۚ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيدُهُ ۚ وَعْدًا عَلَيْنَا ۚ إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ ﴿104﴾

१०४. जिस दिन हम आकाश को इस तरह लपेट देंगे जिस तरह रोल के कागज़ (पंजिका) लपेट दिये जाते हैं, जैसे हम ने पहली बार पैदा किया था उसी तरह दोबारा करेंगे, यह हमारा मज़बूत वादा है और यह हम ज़रूर करके ही रहेंगे।

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِن بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ﴿105﴾

१०५. और हम ज़बूर में आगाही और नसीहत के बाद यह लिख चुके हैं कि धरती के वारिस मेरे नेक बंदे ही होंगे।

إِنَّ فِي هَٰذَا لَبَلَاغًا لِّقَوْمٍ عَابِدِينَ ﴿106﴾

१०६. इबादत करने वाले बंदों के लिए तो इस में एक बड़ी ख़बर है।

---

[1] कुछ लोगों के मन में यह शक पैदा हो सकता था या मूर्तिपूजकों की तरफ़ से पैदा कराया जा सकता था, जैसाकि हक़ीक़त में हो रहा है कि इबादत (उपासना) तो हज़रत ईसा, उज़ैर, फ़रिश्तों और बहुत से बुज़ुर्गों की की जाती है। तो क्या यह भी अपने पुजारियों के साथ नरक (जहन्नम) में डाले जायेंगे? इस आयत में उसका भी बयान कर दिया गया है कि यह लोग तो अल्लाह के नेक बन्दे थे जिनकी नेकी की वजह से अल्लाह की तरफ़ से नेकी यानी हमेशा सुख या जन्नत की ख़ुशख़बरी तय कर दी गयी है, यह नरक से दूर ही रखे जायेंगे।

وَمَآ أَرْسَلْنَٰكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَٰلَمِينَ ﴿107﴾

१०७. और हम ने आप को पूरी दुनिया के लिए रहमत बनाकर ही भेजा है।[1]

قُلْ إِنَّمَا يُوحَىٰٓ إِلَىَّ أَنَّمَآ إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَٰحِدٌ ۖ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿108﴾

१०८. कह दीजिए कि मेरी तरफ़ तो बस वह्यी की जाती है कि तुम सब का अल्लाह एक ही है, तो क्या तुम भी उसको मानने वाले हो?

فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ ءَاذَنتُكُمْ عَلَىٰ سَوَآءٍ ۖ وَإِنْ أَدْرِىٓ أَقَرِيبٌ أَم بَعِيدٌ مَّا تُوعَدُونَ ﴿109﴾

१०९. फिर अगर वह मुंह मोड़ लें तो कह दीजिए कि मैंने तुम्हें समान रूप से आगाह कर दिया है, मुझे इल्म (ज्ञान) नहीं है कि जिसका वादा तुम से किया जा रहा है वह क़रीब है या दूर है।

إِنَّهُۥ يَعْلَمُ ٱلْجَهْرَ مِنَ ٱلْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ﴿110﴾

११०. बेशक (अल्लाह तआला) तो तुम्हारी खुली बातों को जानता है तथा जिसे तुम छुपाते हो उसे भी जानता है।

وَإِنْ أَدْرِى لَعَلَّهُۥ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَٰعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿111﴾

१११. और मुझे इसका भी इल्म नहीं, मुमकिन है कि यह तुम्हारा इम्तेहान (परीक्षा) हो और एक मुक़र्रर वक़्त (निर्धारित समय) तक का लाभ हो।

قُلْ رَبِّ ٱحْكُم بِٱلْحَقِّ ۗ وَرَبُّنَا ٱلرَّحْمَٰنُ ٱلْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿112﴾

११२. (नबी ने) ख़ुद कहा हे पालनहार! इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दे, और हमारा रब बहुत रहम करने वाला है, जिस से मदद मांगी जाती है उन बातों पर जो तुम बयान कर रहे हो।

[1] इसका मतलब यह है कि जो आप ﷺ की रिसालत पर ईमान ले आयेगा, उस ने मानों इस रहमत को क़ुबूल कर लिया और अल्लाह के इन एहसानों पर शुक्र अदा किया, वह नतीजतन दुनिया-आख़िरत के सुखों को हासिल करेगा, और चूँकि आप की रिसालत पूरी दुनिया के लिए है, इसलिए आप पूरी दुनिया के लिए रहमत बनकर यानी अपनी नसीहतों (शिक्षाओं) के ज़रिये दुनिया और आख़िरत के सुखों का भागी बनाने के लिए आये हैं।

सूरतुल हज्ज-२२

سُورَةُ الْحَجِّ

सूरतुल हज्ज* मदीने में उतरी और इसकी अठहत्तर आयतें और दस रुकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ ﴿1﴾

१. ऐ लोगो ! अपने रब से डरो, बेशक क़यामत का ज़लज़ला बहुत बड़ी चीज़ है।

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ﴿2﴾

२. जिस दिन तुम उसे देख लोगे, हर दूध पिलाने वाली मां अपने दूध पीते बच्चे को भूल जायेगी और सभी गर्भवतियों (हमल वालियों) के गर्भ (हमल) गिर जायेंगे, और तू देखेगा कि लोग मतवाले दिखायी देंगे, अगरचे वे हक़ीक़त में मतवाले नहीं होंगे, लेकिन अल्लाह का अज़ाब बड़ा सख़्त (कठोर) है।[1]

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ﴿3﴾

३. और कुछ लोग अल्लाह के बारे में बातें बनाते हैं वह भी जहालत के साथ, और हर सरकश शैतान की पैरवी करते हैं।

كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿4﴾

४. जिस पर अल्लाह का फ़ैसला लिख दिया गया है कि जो कोई भी उस की दोस्ती करेगा वह उसे भटका देगा और उसे आग के अज़ाब (यातना) की तरफ़ ले जायेगा।

* इस के मक्का और मदीना में उतरने में इख़्तिलाफ़ है, सही बात यही है इसका कुछ हिस्सा मक्का में और कुछ हिस्सा मदीने में उतरा। यह क़ुर्तबी का क़ौल है। (फ़तहुल क़दीर) यह क़ुरआन करीम की एक ही सूर: है जिस में दो सज्दे हैं।

[1] ऊपर आयत में जिस ज़लज़ला (भूकम्प) का बयान है, उस के नतीजे दूसरी आयतों में बयान किये गये हैं, जिस का मतलब लोगों पर बहुत भय, डर और घबराहट का होना है, यह क़यामत से पहले होगा और उस के साथ ही दुनिया की तबाही हो जायेगी, या यह क़यामत के बाद उस समय होगा, जब लोग क़ब्रों से उठकर हश्र के मैदान में जमा होंगे। ज़्यादातर मुफ़स्सिर (व्याख्याकार) पहले विचार से सहमत हैं जबकि कुछ मुफ़स्सिर दूसरे विचार के हक़ (पक्ष) में हैं।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِن كُنتُمْ فِى رَيْبٍ مِّنَ ٱلْبَعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنَٰكُم مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِن مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۚ وَنُقِرُّ فِى ٱلْأَرْحَامِ مَا نَشَآءُ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوٓا۟ أَشُدَّكُمْ ۖ وَمِنكُم مَّن يُتَوَفَّىٰ وَمِنكُم مَّن يُرَدُّ إِلَىٰٓ أَرْذَلِ ٱلْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۚ وَتَرَى ٱلْأَرْضَ هَامِدَةً فَإِذَآ أَنزَلْنَا عَلَيْهَا ٱلْمَآءَ ٱهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَأَنۢبَتَتْ مِن كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِيجٍ (5)

५. हे लोगो! अगर तुम्हें मरने के बाद जिन्दा होने में शक है, तो सोचो हम ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य (मनी) से, फिर ख़ून के थक्के से, फिर गोश्त के लोथड़े से जो रूप दिया गया था और बिना रूप था। यह हम तुम पर वाज़ेह कर देते है और हम जिसे चाहें एक मुक़र्रर वक़्त (निर्धारित समय) तक माँ के रिहम में रखते हैं फिर तुम्हें बच्चे के रूप में दुनिया में लाते हैं, फिर ताकि तुम अपनी पूरी जवानी को पहुँचो, तुम में से कुछ वे हैं जो मर जाते हैं और कुछ खूसट उम्र (जीर्ण आयु) की तरफ फिर से लौटा दिये जाते हैं कि वह एक चीज़ से परिचित होने के बाद दोबारा अंजान हो जाये। तू देखता है कि धरती बंजर और सूखी है, फिर जब हम उस पर वर्षा करते हैं तो वह उभरती है और फूलती है और हर तरह की सुन्दर वनस्पति उगाती है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْحَقُّ وَأَنَّهُۥ يُحْىِ ٱلْمَوْتَىٰ وَأَنَّهُۥ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ (6)

६. यह इसलिए कि अल्लाह ही हक़ है और वही मुर्दों को ज़िन्दा करता है और वह हर एक चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

وَأَنَّ ٱلسَّاعَةَ ءَاتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيهَا وَأَنَّ ٱللَّهَ يَبْعَثُ مَن فِى ٱلْقُبُورِ (7)

७. और यह कि क़यामत ज़रूर ही आने वाली है जिस में कोई शक और शुब्हा नहीं, और बेशक अल्लाह (तआला) क़ब्र वालों को दोबारा ज़िन्दा करेगा।

وَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يُجَٰدِلُ فِى ٱللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَٰبٍ مُّنِيرٍ (8)

८. और कुछ लोग अल्लाह के बारे में बिना इल्म के और बिना हिदायत के और बिना किसी रौशन किताब के झगड़ते हैं।

ثَانِىَ عِطْفِهِۦ لِيُضِلَّ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ ۖ لَهُۥ فِى ٱلدُّنْيَا خِزْىٌ ۖ وَنُذِيقُهُۥ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ عَذَابَ ٱلْحَرِيقِ (9)

९. अपनी पहलू मोड़ने वाला बनकर इसलिए कि अल्लाह के रास्ते से भटका (गुमराह कर) दे। वह दुनिया में भी अपमानित (ज़लील) होगा और क़यामत (प्रलय) के दिन भी हम उसे नरक में जलने का अज़ाब चखायेंगे।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿10﴾

१०. यह उन अमलों की वजह से जो तेरे हाथों ने आगे भेज रखे थे, यक़ीन (विश्वास) करो कि अल्लाह (तआला) अपने बंदों पर जुल्म करने वाला नहीं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ اِۨطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ اِۨنْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿11﴾

११. और कुछ लोग ऐसे भी हैं कि एक किनारे पर होकर अल्लाह की इबादत (उपासना) करते हैं, अगर कोई फ़ायेदा मिल जाये तो मुत्मईन होते हैं और अगर कोई दुख आ गया तो उसी समय विमुख हो जाते हैं।[1] उन्होंने दोनों लोक का नुक़सान उठा लिया, हक़ीक़त में यह साफ़ नुक़सान है।

يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿12﴾

१२. वह अल्लाह के सिवाय उन्हें पुकारते हैं जो न नुक़सान पहुँचा सकें न फ़ायेदा, यही तो दूर का भटकाव है।

يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗۤ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ۗ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ﴿13﴾

१३. उसे पुकारते हैं जिसका नुक़सान उस के फ़ायदे से क़रीब है, बेशक बुरे संरक्षक (निगराँ) हैं और बुरे दोस्त।

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿14﴾

१४. बेशक ईमान और नेक काम करने वालों को अल्लाह (तआला) लहरें लेती हुई नहरों वाले जन्नत में ले जायेगा। अल्लाह जो इरादा करे उसे कर के रहता है।

---

[1] حرف का मतलब है किनारा। इन किनारों पर खड़ा होने वाला स्थिर (मुस्तक़िल) नहीं होता यानी उसे सुकून और जमाव नहीं होता, उसी तरह जो इंसान दीन के बारे में शक और शुब्हा का शिकार रहता है, उसकी भी हालत इसी तरह होती है, उसे धर्म पर स्थिरता नहीं मिलती, उसका मक़सद केवल दुनियावी फ़ायेदा होता है, अगर मिलते रहें तो ठीक है, नहीं तो वह दोबारा अपने पुराने धर्म यानी कुफ़्र और शिर्क की तरफ़ लौट जाता है, इस के ख़िलाफ़ जो सच्चे मुसलमान होते हैं और ईमान और यक़ीन से भरपूर होते हैं, वे तंगी और देखे बिना दीन पर मज़बूत रहते हैं, अगर नेमतें हासिल हों तो शुक्रिया अदा करते हैं और अगर कष्टों से पीड़ित होते हैं तो सब्र और सहन करते हैं।

مَنْ كَانَ يَظُنُّ أَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ﴿15﴾

१५. जिसका यह ख़्याल हो कि अल्लाह (तआला) अपने रसूल की मदद दोनों जहां में न करेगा, वह ऊँचाई पर एक रस्सा बाँधकर (अपने गले में फंदा फांस ले) और गला घूंट ले फिर देख ले कि उसकी चालाकी से वह बात हट जाती है, जो उसे तड़पा रही है।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ﴿16﴾

१६. और हम ने इसी तरह इस क़ुरआन को खुली आयतों में उतारा है, और जिसे अल्लाह चाहे हिदायत अता करता है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـِٕيْنَ وَالنَّصٰرٰى وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا ۖ اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿17﴾

१७. ईमानवाले और यहूदी और विधर्मी (बद्दीन) और इसाई और आग के पुजारी[1] और मूर्तिपूजक उन सब के बीच क़यामत के दिन अल्लाह (तआला) ख़ुद फ़ैसला कर देगा, अल्लाह (तआला) हर चीज़ का गवाह है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَآبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ۗ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۗ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿18﴾ سجدة

१८. क्या तू नहीं देख रहा है कि अल्लाह के सामने सज्दे में हैं सभी आकाशों वाले और धरती वाले और सूरज और चाँद और सितारे और पहाड़ और पेड़ और जानदार[2] और बहुत से इंसान भी। हाँ बहुत से वे भी हैं जिन पर अज़ाब साबित हो चुका है, और जिसे रब बेइज़्ज़त कर दे उसे कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं, अल्लाह जो चाहता है करता है।

---

[1] مجوس से मुराद ईरान के अग्निपूजक हैं जो दो देवताओं में यक़ीन रखते हैं। एक अंधेरा पैदा करने वाला है दूसरा उजाले का, जिसे वे अहरमन और यज़दां कहते हैं।

[2] कुछ मुफ़स्सिरों ने इस सज्दे से उन सभी चीज़ों को अल्लाह के हुक्म के अधीन (ताबे) होने मतलब लिया है, किसी में ताक़त नहीं कि वह अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी कर सके, उन के क़रीब सज्दा और उपासना और इबादत (वंदना) के मतलब में नहीं जो केवल अक़्ल वाले ज़िंदों के लिए ख़ास है, जबकि कुछ मुफ़स्सिरों ने इसे ख़्याल के बजाये वास्तविक (हक़ीक़ी) मायेना में लिया है कि हर सृष्टि (मख़लूक़) अपने-अपने रूप से अल्लाह के सामने सज्दा कर रही है।

هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّن نَّارٍ يُصَبُّ مِن فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ ﴿19﴾

१९. ये दोनों अपने रब के बारे में इख़्तिलाफ़ रखने वाले है, तो काफ़िरों के लिए आग के कपड़े नाप कर काटे जायेंगे और उन के सिरों के ऊपर से गर्म पानी की धारा बहायी जायेगी।

يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ﴿20﴾

२०. जिस से उन के पेट की सब चीजें और खालें गला दी जायेंगी।

وَلَهُم مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيدٍ ﴿21﴾

२१. और उन की सजा के लिए लोहे के हथौड़े हैं।

كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿22﴾

२२. यह जब भी वहां के दुख से निकल भागने का इरादा करेंगे, वहीं लौटा दिये जायेंगे और (कहा जायेगा) जलने के अजाब का मजा चखो।

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿23﴾

२३. बेशक ईमानवालों और नेक काम करने वालों को अल्लाह (तआला) उन जन्नत में ले जायेगा जिन के नीचे से नहरें लहरे ले रही हैं, जहां उन्हें सोने के कंगन पहनाये जायेंगे और सच्चे मोती भी, वहां उनका कपड़ा शुद्ध (ख़ालिस) रेशम का होगा।

وَهُدُوا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ وَهُدُوا إِلَىٰ صِرَاطِ الْحَمِيدِ ﴿24﴾

२४. और उन्हें पाक कलाम का रास्ता दिखा दिया गया और तारीफ़ वाले (अल्लाह के) मार्गदर्शन दिया गया।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِ ۚ وَمَن يُرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿25﴾

२५. जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोकने लगे और वह इज़्ज़त वाली मस्जिद से भी[1] जिसे हम ने सभी लोगों के लिए बराबर कर दिया है, वहीं के वासी हों या बाहर के हों जो भी ज़ुल्म के साथ वहां गुमराह होने का विचार करेगा[2] हम उसे दुख वाले अज़ाब का

---

[1] रोकने वालों से मुराद मक्का के काफ़िर हैं, जिन्होंने ६ हिजरी में मुसलमानों को मक्का जाकर "उमरह" करने से रोक दिया था, मुसलमानों को हुदैबिया नाम की जगह से वापस आना पड़ा था।

[2] الحاد का शाब्दिक (लफ़्ज़ी) मायेना तो गुमराह होना है। यहां यह आम है कुफ़्र और शिर्क से लेकर हर तरह के पाप के लिए। यहां तक कि कुछ उलेमा क़ुरआनी लफ़्ज़ों की बुनियाद पर

मज़ा चखायेंगे।

وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْـًٔا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ (26)

२६. और जब कि हम ने इब्राहीम के लिए कआबा घर की जगह मुक़र्रर कर दिया[1] (इस शर्त के साथ) कि मेरे साथ किसी को शामिल न करना[2] और मेरे घर को तवाफ़ करने, खड़े होने, झुकने (रूकूअ) और सज्दा करने वालों के लिए शुद्ध (ख़ालिस) और पाक रखना।

وَاَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ (27)

२७. और लोगों में हज का एलान कर दे, लोग तेरे पास पैदल भी आयेंगे और दुबले-पतले ऊँटों पर भी दूर दराज के सभी रास्तों से आयेंगे।

لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ (28)

२८. अपना फ़ायेदा हासिल करने के लिए आ जायें और उन मुक़र्रर दिनों में अल्लाह के नाम को याद करें उन चौपायों पर जो पालतू हैं, तो तुम आप भी खाओ और भूखे फ़क़ीरों को भी खिलाओ।

इस बात का यक़ीन करते हैं कि हरम में अगर किसी तरह के गुनाह का इरादा बना लेगा (चाहे उसे अमली तौर पर करे या न करे) तो वह भी इस चेतावनी (तंबीह) में शामिल है। कुछ कहते हैं कि सिर्फ़ इरादे की वजह से पकड़ नहीं होगी, जैसाकि दूसरे क़ुरआन के लफ़्ज़ों से मालूम होता है, लेकिन अगर पक्का इरादा कर लिया हो तो पकड़ हो सकती है। (फ़तहुल क़दीर)

[1] यानी बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) का मुक़ाम बता दिया और वहाँ इब्राहीम की औलाद को बसा दिया। इस से मालूम होता है कि तूफ़ाने नूह की तबाही के बाद ख़ानये काबा की तामीर सब से पहले हज़रत इब्राहीम के हाथों हुई। जैसाकि सहीह हदीस से यह बात साबित है, जैसाकि नबी ﷺ ने फ़रमाया : "सब से पहले जो मस्जिद धरती पर बनायी गयी, मस्जिदे हराम है और उस के चालीस साल बाद मस्जिदे अक़्सा बनाई गई।" (मुसनद अहमद)

[2] यह ख़ानये काबा बनाने का मक़सद बयान किया गया है कि इस में केवल मेरी इबादत की जाये, इस से यह बताने का मक़सद है कि मूर्तिपूजकों ने इस में जो मूर्तियाँ सजा रखी हैं, जिनकी वह यहाँ आकर पूजा करते हैं, यह खुला ज़ुल्म है कि जहाँ केवल अल्लाह की इबादत की जानी चाहिए थी, वहाँ मूर्तियों की पूजा की जाती है।

ثُمَّ لْيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿29﴾

२९. फिर वे अपना मैल-कुचैल दूर करें[1] और अपनी मन्नत पूरी करें और अल्लाह के पुराने घर का तवाफ़ करें।

ذَٰلِكَ وَمَن يُعَظِّمْ حُرُمَاتِ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ عِندَ رَبِّهِ ۗ وَأُحِلَّتْ لَكُمُ الْأَنْعَامُ إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ ۖ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ ﴿30﴾

३०. यह है, और जो कोई अल्लाह की हुरमतों (निषेधाज्ञा) का एहतेराम करे, उसके अपने लिए उस के रब के पास अच्छाई है, और तुम्हारे लिए चौपाये जानवर हलाल (मान्य) कर दिये गये सिवाय उन के जो तुम्हारे सामने बयान किये गये हैं, तो तुम्हें मूर्तियों की गन्दगी से बचते रहना चाहिए[2] और झूठी बातों से भी परहेज़ करना चाहिये।

حُنَفَاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ أَوْ تَهْوِي بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِيقٍ ﴿31﴾

३१. अल्लाह की तौहीद (एकेश्वरवाद) को क़ुबूल करते हुए[3] उस के साथ किसी को न साझी बनाते हुए। (सुनो!) अल्लाह का साझी बनाने वाला जैसे आकाश से गिर पड़ा, अब या तो उसे पक्षी उचक ले जायेंगे या हवा किसी दूर दराज़ जगह पर फेंक देगी।[4]

---

[1] यानी १० ज़िलहिज्जा को बड़े जमरः को कंकरियाँ मारने के बाद पूरे बाल कटवा कर या छोटे करा कर एहराम खोल दिया जाता है और पत्नी से सहवास (जिमाअ) करने के सिवाय वे सभी काम उस के लिए जायेज़ हो जाते हैं जो एहराम की हालत में हराम थे। मैल-कुचैल दूर करने का मतलब यही है कि वह बालों और नाखूनों वग़ैरह को साफ़ कर लें, तेल ख़ुश्बू इस्तेमाल कर लें और सिले हुए कपड़े पहन लें आदि (वग़ैरह)।

[2] رجس का मतलब नापाकी और गन्दगी है, यहाँ इस से मुराद लकड़ी, लोहा या दूसरी किसी चीज़ की बनी हुई मूर्तियाँ हैं। मतलब यह है कि अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे की पूजा करना अपवित्रता (नापाकी) है और अल्लाह के ग़ज़ब और नाराज़गी की वजह है, इससे बचें।

[3] حنفاء बहुवचन (जमा) है حنيف का। जिसका शाब्दिक अर्थ (लफ़्ज़ी मायने) है आकर्षित (मुतविज्जह) होना, एक तरफ़ होना, एक पक्षीय (जानिब) होना, यानी शिर्क (मूर्तिपूजा) से तौहीद (एकेश्वरवाद) की तरफ़ और कुफ़्र और झूठ से इस्लाम और सच्चे दीन की तरफ़ आकर्षित होते हुए या एक पक्षीय होकर शुद्ध रूप से अल्लाह की इबादत (उपासना) करते हुए।

[4] यानी जिस तरह बड़े पक्षी, छोटे जीव को बहुत तेज़ी से झपटकर नोच खाते हैं, या हवायें किसी को दूर दराज़ जगहों पर ले जाकर फेंक दें और कभी को उसकी ख़बर न मिले, दोनों हालतों में बरबादी उस की तक़दीर में है। उसी तरह वह इंसान जो एक अल्लाह की इबादत करता है,

ذٰلِكَ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ﴿32﴾

३२. यह सुन लिया, (और सुनो) अल्लाह की निशानियों (प्रतीकों) का जो इज़्ज़त और एहतेराम (सम्मान और आदर) करे तो उस के दिल की परहेज़गारी की वजह यह है ।[1]

لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿33﴾

३३. उन में तुम्हारे लिए एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए फ़ायेदा है, फिर उन के क़ुर्बानी करने (बलि चढ़ाने) की जगह ख़ानये काबा है ।[2]

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ؕ فَاِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا ؕ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ﴿34﴾

३४. और हर उम्मत के लिए हम ने क़ुर्बानी का तरीक़ा मुक़र्रर किया है ताकि वे उन चौपाये जानवरों पर अल्लाह का नाम लें जो अल्लाह ने उन्हें दे रखा है । (समझ लो) तुम सब का सच्चा माबूद सिर्फ़ एक ही है, तुम उसी के ताबे और फ़रमाँबर्दार बन जाओ, आजिज़ी करने वालों को ख़ुशख़बरी दे दीजिए ।

वह सही बरताव और रूहानी पाकी के मुताबिक़ और इख़्लास पाकीज़गी के सिरे पर पहुँचा होता है और जैसे ही वह शिर्क का काम करता है तो जैसे कि अपने आप को ऊँची जगह से नीचे और सफ़ाई से गन्दगी और कीचड़ में गिरा लेता है ।

[1] شعائر बहुवचन (जमा) है شعيرة का, जिसका मतलब इशारा और निशानी है, जैसे लड़ाई में एक इशारा (मख़्सूस लफ़्ज़ निशानी और संकेत के रूप में) इस्तेमाल कर लिया जाता है, जिस से वे आपस में एक-दूसरे को पहचान लेते हैं । इस आधार पर अल्लाह की निशानियाँ वे हैं जो दीन के निशान यानी इस्लाम के वाज़ेह अहकाम हैं, जिस से एक मुसलमान का मुक़ाम और मर्तबा साबित होता है और दूसरे दीन के मानने वालों से अलग पहचान लिया जाता है । सफ़ा और मरवह पहाड़ों को भी इसीलिए अल्लाह की निशानियाँ कहा गया है कि मुसलमान हज और उमरह में इनके बीच सई करते (दौड़ते) हैं । यहाँ हज की दूसरी रीतियों (मनासिक) ख़ास तौर से क़ुर्बानी (बलि) के जानवरों को अल्लाह की निशानी कहा गया है, उन के एहतेराम का मतलब उनका अच्छा और मोटा करना है यानी सेहतमंद और मोटे जानवर की क़ुर्बानी देना । इस एहतेराम को अल्लाह का दिली ख़ौफ़ कहा गया है यानी यह दिल के उन अमलों में से है जिन की बुनियाद (संयम) अल्लाह का डर है ।

[2] हलाल (उचित) होने से मुराद जहाँ इनकी क़ुर्बानी करना (उचित) है, यानी यह जानवर हज के काम पूरे करने के बाद बैतुल्लाह और मक्का की हरम की सीमा में पहुँचते हैं और वहाँ अल्लाह के नाम पर क़ुर्बानी दे दिये जाते हैं, तो उपरोक्त (मज़कूर) फ़ायेदा भी ख़त्म हो जाता है, और अगर वे वैसे ही हरम के लिए क़ुर्बान होते हैं तो हरम पहुँचते ही क़ुर्बानी कर दिये जाते हैं और मक्का के ग़रीबों में उनका गोश्त बाँट दिया जाता है ।

الَّذِيْنَ إِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَآ أَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿35﴾

३५. उन्हें कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाये उन के दिल काँप जाते हैं, उन्हें जो मुसीबत पहुँचे उस पर सब्र करते हैं, नमाज़ क़ायम करने वाले हैं और जो कुछ हम ने उन्हें दे रखा है वे उस में से भी देते रहते हैं।

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۚ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿36﴾

३६. क़ुर्बानी के ऊँट को[1] हम ने तुम्हारे लिए अल्लाह (तआला) के निशान मुक़र्रर कर दिये हैं उन में तुम्हें फ़ायेदा है, तो उन्हें खड़ा कर के उन पर अल्लाह का नाम पढ़ो।[2] फिर जब उन के पहलु (पार्श्व) धरती से लग जायें तो उसे ख़ुद भी खाओ[3] और ग़रीब भिखारी और जो भिखारी न हो उसे भी खिलाओ, इसी तरह हम ने चौपाये को तुम्हारे तावेदार (अधीन) कर दिया है कि तुम शुक्रिया अदा करो।

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ۚ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ۗ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿37﴾

३७. अल्लाह (तआला) को क़ुर्बानी के गोश्त नहीं पहुँचते न उन के ख़ून, बल्कि उसे तो तुम्हारी दिली परहेज़गारी पहुँचती है। उसी तरह अल्लाह ने उन जानवरों को तुम्हारा आज्ञाकारी (तावे) कर दिया है कि तुम उस की हिदायत (के शुक्रिया) में उस की बड़ाई का बयान करो और नेक काम करने वालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।

---

[1] بُدْنٌ बहुवचन (जमा) है بدنة का। यह जानवर आम तौर से मोटा-ताज़ा होता है, इसलिए بدنة कहा जाता है मोटा-ताज़ा जानवर, भाषाविदों (लुग़त वालों) ने इसे केवल ऊँटों के साथ ख़ास तौर से इस्तेमाल किया है, लेकिन हदीस के अनुसार गाय के लिए भी بدنة लफ़्ज़ का इस्तेमाल ठीक है, मतलब यह है कि ऊँट और गाय जो क़ुर्बानी करने के लिये ले जायें, वह भी अल्लाह की निशानी है, यानी अल्लाह के उन हुक्मों में से है जो मुसलमानों के लिए ख़ास और उनकी निशानी हैं।

[2] صَوَآفَّ، مصفوفة (सफ़बंद यानी खड़े हुए) के मतलब में है, ऊँट को इसी तरह खड़े-खड़े ज़िब्ह किया जाता है कि बायाँ हाथ पैर उसका बँधा हुआ हो और तीन पैर पर वह खड़ा होता है।

[3] कुछ आलिमों के क़रीब यह हुक्म फ़र्ज़ है यानी क़ुर्बानी का गोश्त खाना, क़ुर्बानी करने वाले के लिए वाजिब (आवश्यक) है और ज़्यादातर आलिमों के क़रीब यह हुक्म अच्छाई के लिए है।

إِنَّ اللَّهَ يُدَافِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُورٍ ﴿٣٨﴾

३८. (सुन रखो!) बेशक सच्चे ईमानवालों के दुश्मनों को अल्लाह (तआला) ख़ुद हटा देता है, कोई ख़्यानत करने वाला (विश्वासघाती) नाशुक्रा अल्लाह (तआला) को प्यारा नहीं।

أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقَاتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ﴿39﴾

३९. जिन (मुसलमानों) से (काफ़िर) लड़ाई कर रहे हैं उन्हें भी लड़ने की इजाज़त दी जाती है क्योंकि वे मज़लूम हैं, बेशक उनकी मदद के लिए अल्लाह पूरी क़ुदरत रखता है।

الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِم بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَن يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَصَلَوَاتٌ وَمَسَاجِدُ يُذْكَرُ فِيهَا اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا ۗ وَلَيَنصُرَنَّ اللَّهُ مَن يَنصُرُهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿40﴾

४०. ये वे हैं जिन्हें बिला वजह अपने घरों से निकाला गया, केवल उन के इस कहने पर कि हमारा रब केवल अल्लाह है। अगर अल्लाह (तआला) लोगों को आपस में एक-दूसरे से न हटाता रहता तो इबादत की जगह और गिरजाघर, और मस्जिदें, और यहूदियों की इबादत और वे मस्जिदें भी ढा दी जातीं जहाँ अल्लाह का नाम बहुत ज़्यादा लिया जाता है, जो अल्लाह की मदद करेगा अल्लाह भी उस की ज़रूर मदद करेगा, बेशक अल्लाह (तआला) बहुत ताक़तवर और प्रभावशाली (ग़ालिब) है।

الَّذِينَ إِن مَّكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَأَمَرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنكَرِ ۗ وَلِلَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿41﴾

४१. ये वे लोग हैं कि अगर हम इन के पैर धरती पर मज़बूत कर दें तो यह पाबन्दी से नमाज़ अदा करेंगे और ज़कात देंगे और अच्छे कामों का हुक्म देंगे और बुरे कामों से मना करेंगे[1] और सभी कामों का नतीजा अल्लाह के अधिकार (इख़्तियार) में है।

وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَثَمُودُ ﴿42﴾

४२. और अगर ये लोग आप को झुठलायें (तो ताज्जुब की बात नहीं) तो इन से पहले नूह की क़ौम और आद और समूद।

---

[1] इस आयत में इस्लामी मुल्क के बुन्यादी मक़ासिद बयान किये गये हैं, जिन्हें ख़िलाफ़ते राशिदा और पहली सदी के दूसरे इस्लामी राज्यों में लागू किया गया और उन्होंने अपने दस्तूर में इन को प्राथमिकता (तरजीह) दी, जिस के सबब उन के राज्यों में शान्ति (अमन) थी, प्रेम भावना (ख़ैरख़ाही) और ख़ुशहाली भी रही और मुसलमानों के सिर ऊँचे और इज़्ज़त वाले भी थे।

وَقَوْمُ إِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ﴿43﴾

४३. और इब्राहीम की कौम और लूत की कौम।

وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿44﴾

४४. और मदयन वाले भी अपने-अपने नबियों को झुठला चुके हैं। मूसा भी झुठलाये जा चुके हैं, तो मैंने काफिरों को थोड़ा सा मौका दिया फिर धर पकड़ा,[1] फिर मेरा अजाब कैसा हुआ?

فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿45﴾

४५. बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने हलाक कर दिया इसलिए कि वे जालिम थी तो वे अपनी छतों के बल औंधी पड़ी हैं, और बहुत से आबाद कुऐं बेकार पड़े हैं और बहुत से पक्के और ऊँचे किले सुनसान पड़े हैं।

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِى الصُّدُوْرِ ﴿46﴾

४६. क्या उन्होंने धरती में सैर करके नहीं देखा, जो उन के दिल इन बातों को समझते या कानों से ही इन (घटनाओं) को सुन लेते, बात यह है कि केवल आँखें ही अंधी नहीं होती बल्कि वे दिल अंधे हो जाते हैं जो सीनों में हैं।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ۚ وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿47﴾

४७. और वे अजाब की आप से जल्दी माँग कर रहे हैं, अल्लाह (तआला) कभी अपना वादा नहीं टालेगा, हाँ बेशक आप के रब के करीब एक दिन आप की गिनती के अनुसार (मुताबिक) एक हजार साल का है।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَاِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿48﴾

४८. और बहुत सी जुल्म करने वाली बस्तियों को हम ने ढील दी, फिर आखिर में उन्हें पकड़ लिया और मेरी ही तरफ लौटकर आना है।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَآ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿49﴾

४९. एलान कर दो कि हे लोगो! मैं तुम्हें खुल्लम-खुल्ला सचेत (आगाह) करने वाला हूँ।

---

[1] इस में नबी ﷺ को सांत्वना (तसल्ली) दी जा रही है कि यह मक्का के काफिर अगर आप को झुठला रहे हैं तो यह कोई नई बात नहीं है। पहले की कौमें भी अपने पैगम्बरों के साथ ऐसा ही मुआमला (व्यवहार) करती रही हैं और मैं भी उन्हें मौका देता रहा और जब उन के मौका का समय खत्म हो गया तो उन्हें तबाह कर दिया गया।

فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿50﴾

५०. तो जो ईमान लाये है और उन्होंने नेक काम किये है उन्ही के लिए मोक्ष (मग़फ़िरत) है और सम्मानित जीविका (रोज़ी)।

وَالَّذِيْنَ سَعَوْا فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿51﴾

५१. और जो लोग हमारी आयतों को नीचा देखाने में लगे हैं, वही नरकवासी हैं।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّآ اِذَا تَمَنّٰٓى اَلْقَى الشَّيْطٰنُ فِيْٓ اُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِى الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿52﴾

५२. और हम ने आप से पहले जिस रसूल और नबी को भेजा, (उस के साथ यह हुआ कि) जब वह अपने दिल में कोई ख़्वाहिश करने लगा, शैतान ने उसकी कामना में कुछ मिला दिया तो शैतान की मिलावट को अल्लाह (तआला) दूर कर देता है, फिर अपनी बातें मज़बूत कर देता है, अल्लाह (तआला) जानने वाला और हिक्मत वाला है।

لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِى الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ۗ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ﴿53﴾

५३. यह इसलिए कि शैतानी मिलावट को अल्लाह (तआला) उन लोगों की परीक्षा (इम्तेहान) का सामान बना दे, जिन के दिलों में रोग है और जिन के दिल सख़्त हैं। बेशक ज़ालिम लोग घोर बिरोध (इख़्तिलाफ़) में हैं।

وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿54﴾

५४. और इसलिए भी कि जिन्हें इल्म अता किया गया है, वे विश्वास कर लें कि यह आप के रब ही की तरफ़ से पूरा सच है, फिर वे उस पर ईमान लायें और उन के दिल उस की तरफ़ झुक जायें। बेशक अल्लाह (तआला) ईमानवालों को सच्चे रास्ते की तरफ़ हिदायत करने वाला ही है।

وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ﴿55﴾

५५. और काफ़िर उस अल्लाह की वह्यी में हमेशा शक और शुब्हा ही करते रहेंगे यहाँ तक कि अचानक उन के सिर पर क़यामत (प्रलय) आ जाये, या उन के क़रीब उस दिन का अज़ाब आ जाये जो भलाई से ख़ाली है।[1]

---

[1] يوم عقيم (बाझ दिन) से मुराद क़यामत का दिन है, इसे बाझ इसलिए कहा गया है कि इस दिन के बाद कोई दिन नही होगा, जिस तरह बाझ उसको कहा जाता जिस के कोई औलाद न हो।

ٱلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۚ فَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ فِى جَنَّٰتِ ٱلنَّعِيمِ ﴿56﴾

५६. उस दिन केवल अल्लाह ही का राज होगा, वही उन के बीच फ़ैसला करेगा, ईमान वाले और नेक लोग तो सुखों से भरपूर जन्नत में होंगे।

وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَكَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا فَأُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿57﴾

५७. और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया, उन के लिए रुस्वा करने वाले अज़ाब हैं।

وَٱلَّذِينَ هَاجَرُوا۟ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ثُمَّ قُتِلُوٓا۟ أَوْ مَاتُوا۟ لَيَرْزُقَنَّهُمُ ٱللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَإِنَّ ٱللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ ٱلرَّٰزِقِينَ ﴿58﴾

५८. और जिन्होंने अल्लाह के रास्ते में देश छोड़ा फिर वे शहीद कर दिये गये या अपनी मौत से मर गये, अल्लाह (तआला) उन्हें बेहतर रोज़ी अता करेगा, और बेशक अल्लाह (तआला) सब से अच्छा रिज़्क़ अता करने वाला है।

لَيُدْخِلَنَّهُم مُّدْخَلًا يَرْضَوْنَهُۥ ۗ وَإِنَّ ٱللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿59﴾

५९. उन्हें अल्लाह (तआला) ऐसी जगह पर पहुँचायेगा कि वे उस से ख़ुश हो जायेंगे। बेशक अल्लाह (तआला) जानने वाला और बरदाश्त करने वाला है।

۞ ذَٰلِكَ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِۦ ثُمَّ بُغِىَ عَلَيْهِ لَيَنصُرَنَّهُ ٱللَّهُ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ ﴿60﴾

६०. बात यही है, और जिस ने बदला लिया उसी की तरह जो उस के साथ किया गया था, फिर अगर उस के साथ ज़्यादती की जाये तो बेशक अल्लाह (तआला) ख़ुद उसकी मदद करेगा।[1] बेशक अल्लाह (तआला) छोड़ देने

या इसलिए कि काफ़िरों के लिए उस दिन कोई दया नहीं होगी, यानी उन के लिए भलाई से ख़ाली होगा, जिस तरह तेज़ चाल की हवाओं को जो अज़ाब के तौर पर आती रही हैं 'बाँझ हवा' कहा गया है।

[1] عقوبت उस सज़ा या बदले को कहते हैं जो किसी अमल का बदला हो। मतलब यह है कि किसी ने किसी के साथ ज़्यादती की हो तो जिस से ज़्यादती की गयी है, उसे ज़्यादती के समान बदला लेने का हक़ है, लेकिन बदला लेने के बाद जबकि ज़ालिम और मज़लूम (नृशंसित) दोनों समान हो चुके हों, ज़ालिम मज़लूम पर दोबारा ज़ुल्म करे तो अल्लाह तआला उस मज़लूम की ज़रूर मदद करेगा। यानी यह शक न हो कि मज़लूम ने माफ़ करने के बजाय बदला लेकर ग़लत काम किया है, नहीं, बल्कि उसकी भी इजाज़त अल्लाह ने दिया है, इसलिए भविष्य (आइन्दा) में भी वह अल्लाह की मदद का हक़दार रहेगा।

वाला और माफ़ करने वाला है।[1]

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ (61)

६१. यह इसलिए कि अल्लाह रात को दिन में प्रवेश (दाख़िल) कराता है और दिन को रात में ले जाता है, और बेशक अल्लाह (तआला) सुनने वाला देखने वाला है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِىُّ الْكَبِيْرُ (62)

६२. यह सब इसलिए कि अल्लाह ही सच है, और उस के सिवाय जिसे भी यह पुकारते हैं वे झूठे (बातिल) हैं, और बेशक अल्लाह (तआला) बुलन्द बड़ाई वाला है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۡ فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ (63)

६३. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) आकाश से पानी बरसाता है तो धरती हरी-भरी हो जाती है। बेशक अल्लाह (तआला) मेहरबान और जानने वाला है।

لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ (64)

६४. आकाशों और धरती में जो कुछ है उसी का है, और बेशक अल्लाह वही है बेनियाज़ तरीफ़ों वाला।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِىْ فِى الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ؕ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ (65)

६५. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ही ने धरती की सभी चीज़ें तुम्हारे वश में कर दी हैं, और उस के हुक्म से समुद्र में चलती हुई नावें भी। वही आकाश को थामे हुए है कि धरती पर उस के हुक्म के बिना गिर न पड़े। बेशक अल्लाह (तआला) लोगों पर शफ़क़त करने वाला रहम करने वाला है।

وَهُوَ الَّذِىْٓ اَحْيَاكُمْ ۡ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ (66)

६६. और उसी ने तुम्हें जिन्दा किया है फिर वही तुम्हें मारेगा, फिर वही तुम्हें जिन्दा करेगा, बेशक इंसान बड़ा नाशुक्रा है।

[1] इस में माफ़ कर देने की फिर शिक्षा (तालीम) दी गयी है कि अल्लाह माफ़ करने वाला है, तुम भी माफ़ी से काम लो। एक दूसरा मतलब यह भी हो सकता है कि बदला लेने में जितना ज़ालिम का ज़ुल्म होगा उतना ज़ुल्म किया जायेगा, इसकी इजाज़त चूंकि अल्लाह की तरफ़ से है, इसलिए इस पर पकड़ नहीं होगी बल्कि वह माफ़ी के क़ाबिल है, इसे ज़ुल्म और बुराई उस के समरूप (मुशाबिह) होने की वजह से कहा जाता है, वरन् इन्तिक़ाम या बदला असल में ज़ुल्म और ग़लती है ही नहीं।

لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْأَمْرِ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُّسْتَقِيمٍ (67)

६७. हर एक उम्मत के लिए हम ने इबादत का एक तरीक़ा मुक़र्रर कर दिया है, जिस का वह पालन करने वाले हैं, तो उन्हें आप से इस सम्बंध (मुआमले) में झगड़ा नहीं करना चाहिए। आप अपने रब की तरफ़ लोगों को बुलायें, बेशक आप सीधे सच्चे रास्ते पर ही हैं।

وَإِن جَادَلُوكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ (68)

६८. और फिर भी अगर ये लोग आप से उलझने लगें तो आप कह दें कि तुम्हारे अमलों से अल्लाह अच्छी तरह वाक़िफ़ है।

اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ (69)

६९. तुम्हारे सभी के इख़्तिलाफ़ का फ़ैसला क़यामत के दिन अल्लाह (तआला) ख़ुद करेगा।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّ ذَٰلِكَ فِي كِتَابٍ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ (70)

७०. क्या आप ने नही जाना कि आकाश और धरती की हर चीज़ अल्लाह के इल्म में है, यह सब लिखी हुई किताब में महफ़ूज है, अल्लाह (तआला) के लिए यह काम बड़ा आसान है।[1]

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُم بِهِ عِلْمٌ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِن نَّصِيرٍ (71)

७१. और ये अल्लाह (तआला) के सिवाय उन्हें पूज रहे हैं जिसका कोई आसमानी सुबूत नहीं, और न वे ख़ुद ही इसका कोई इल्म (ज्ञान) रखते हैं, ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

---

[1] इस में अल्लाह तआला ने अपने सारे इल्म और मख़लूक़ को घेर रखने का बयान किया है, यानी उसकी सृष्टि (मख़लूक़) को जो कुछ करना था उसको इसका इल्म पहले से ही था, वह उनको जानता था। इसलिए उस ने अपने इल्म से यह बातें पहले ही से लिख दी और लोगों को यह बात चाहे कितनी ही कठिन लगे, अल्लाह के लिए यह बहुत आसान है, यह वही तक़दीर की समस्या (मसअला) है जिस पर ईमान रखना ज़रूरी है, जिसे हदीस में इस तरह बयान किया गया है: "अल्लाह तआला ने आकाश और धरती की पैदाईश से पचास हज़ार साल पहले जबकि उसका अर्श पानी पर था, सृष्टि की तक़दीर लिख दिये थे।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़द्र, बाब हिजाज आदम व मूसा) और सुनन के क़ौल में हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : "अल्लाह तआला ने सब से पहले क़लम पैदा किया, और उस से कहा लिख, उस ने कहा क्या लिखूं? अल्लाह तआला ने कहा जो कुछ होने वाला है सब लिख दे, इसलिए उस ने अल्लाह के हुक्म से क़यामत तक जो कुछ होने वाला था सब लिख दिया।" (अबू दाऊद, किताबुस सुन्नः बाबुन फ़िल क़द्र, तिर्मिज़ी अबवाबुल क़द्र तफ़सीर सूरः नून, मुसनद अहमद, भाग ५।३१७)

٧२. और जब उन के सामने हमारे कलाम की खुली आयतों की तिलावत (पाठ) किया जाता है, तो आप काफ़िरों के मुँह पर नाख़ुशी के आसार साफ़ तौर पर पहचान लेते हैं, वे तो क़रीब होते हैं कि हमारी आयतों के सुनाने वाले पर हमला कर बैठें। कह दीजिए क्या मैं तुम्हें इस से भी ज़्यादा बुरी ख़बर दूँ, वह आग है जिस का वादा अल्लाह ने काफ़िरों से कर रखा है, और वह बहुत बुरी जगह है।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا الْمُنكَرَ ۖ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۗ قُلْ أَفَأُنَبِّئُكُم بِشَرٍّ مِّن ذَٰلِكُمُ ۗ النَّارُ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿72﴾

७३. हे लोगो! एक मिसाल दी जा रही है, ज़रा ध्यान से सुनो, अल्लाह के सिवाय तुम जिन-जिन को पुकारते रहे हो वे एक मक्खी तो पैदा नहीं कर सकते अगर सारे के सारे जमा हो जायें, बल्कि अगर मक्खी उन से कोई चीज़ ले भागे तो यह तो उसे भी उस से छीन नहीं सकते। बड़ा कमज़ोर है माँगने वाला और बहुत कमज़ोर है जिस से माँगा जा रहा है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَن يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوِ اجْتَمَعُوا لَهُ ۖ وَإِن يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَّا يَسْتَنقِذُوهُ مِنْهُ ۚ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ ﴿73﴾

७४. उन्होंने अल्लाह की बड़ाई के अनुसार (मुताबिक़) उसका महत्व (अहमियत) जाना ही नहीं, बेशक अल्लाह (तआला) बड़ा ज़बरदस्त और प्रभावशाली (ग़ालिब) है।

مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿74﴾

७५. फ़रिश्तों में से और इंसानों में से रसूल को अल्लाह ही चुन लेता है,[1] बेशक अल्लाह (तआला) सुनने वाला देखने वाला है।

اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿75﴾

---

[1] رُسُلٌ रसूल (उतारा, भेजा हुआ संदेशवाहक) का बहुवचन (जमा) है। अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों से भी रिसालत का यानी संदेशवाहन का काम लिया है, जैसे हज़रत जिब्रील को अपनी वह्यी के लिए चुना कि वे रसूलों के पास वह्यी पहुँचायें, या अज़ाब लेकर क़ौमों के पास जायें और इंसानों में से जिन्हें चाहा रिसालत के लिए चुन लिया और उन्हें लोगों की हिदायत और नसीहत देने के लिए नियुक्त (मुंतख़ब) किया। सभी अल्लाह के बंदे थे, अगरचे चुने हुए थे, लेकिन किस लिए? अल्लाह के अधिकार (इख़्तियार) में साझीदार बनाने के लिए? जिस तरह कुछ लोगों ने उनको अल्लाह का साझी बना लिया है। नहीं, बल्कि केवल अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने के लिए।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿76﴾

७६. वह अच्छी तरह जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे है, और अल्लाह ही की तरफ़ सब काम लौटाये जाते हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا وَاعْبُدُوا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿77﴾

७७. हे ईमानवालो! रूकूअ, सज्दा करते रहो, और अपने रब की इबादत में लगे रहो और नेकी के काम करते रहो, ताकि तुम सफल हो जाओ।

وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ ۚ هُوَ اجْتَبَاكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ ۚ مِلَّةَ أَبِيكُمْ إِبْرَاهِيمَ ۚ هُوَ سَمَّاكُمُ الْمُسْلِمِينَ مِنْ قَبْلُ وَفِي هَٰذَا لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ ۚ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاعْتَصِمُوا بِاللَّهِ هُوَ مَوْلَاكُمْ ۖ فَنِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ﴿٧٨﴾

७८. और अल्लाह की राह में वैसे ही जिहाद करो जैसा जिहाद (धर्मयुद्ध) का हक़ है,[1] उसी ने तुम्हें निर्वाचित (मुंतख़ब) किया है और तुम पर दीन के बारे में कोई कमी नहीं की, दीन अपने पिता[2] इब्राहीम का (क़ायम रखो), उसी (अल्लाह) ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है। इस (क़ुरआन) से पहले और इसमें भी ताकि पैग़म्बर तुम पर गवाह हो जायें और तुम सभी लोगों के गवाह बन जाओ,[3] तो तुम्हें चाहिए कि नमाज़ें क़ायम करो और ज़कात (धर्मदान) अदा करते रहो और अल्लाह को मज़बूती से पकड़ लो, वही तुम्हारा संरक्षक (निगराँ) और मालिक है, और कितना अच्छा मालिक और कितना अच्छा मदद करने वाला है।

---

[1] इस जिहाद से मुराद कुछ ने वह जिहाद लिया है जो अल्लाह के नाम के फैलाने के लिए काफ़िरों और मूर्तिपूजकों से किया जाता है और कुछ ने अल्लाह के हुक्मों के पालन को कहा है, क्योंकि इस में ख़्वाहिशों और शैतान का सामना करना पड़ता है, और कुछ ने हर वह कोशिश लिया है जो सच और सच्चाई को ग़ालिब बनाने और झूठ को ख़त्म करने के लिए करना पड़ता है।

[2] अरब इस्माईल की औलाद में से थे, इस बिना पर हज़रत इब्राहीम अरबों के पिता थे और ग़ैर अरब भी हज़रत इब्राहीम की एक महान व्यक्ति (अज़ीम इंसान) के रूप में इज़्ज़त करते थे, जिस तरह बेटा बाप का करते हैं, इसलिए वह सभी लोगों के पिता थे, इस के सिवाय मुसलमानों के पैग़म्बर के (अरब होने के नाते) हज़रत इब्राहीम पिता थे, इसलिए मुसलमानों के भी पिता हुए। इसलिए कहा गया कि यह दीन इस्लाम जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए चुन लिया है, तुम्हारे पिता इब्राहीम का दीन है, उसी की इत्तेबा (अनुसरण) करो।

[3] यह गवाही क़यामत के दिन होगी जैसाकि हदीस में है। (देखिये सूर: बक़र: आयत १४३ की तफ़सीर)

सूरतुल मोमीनून-२३

سُوْرَةُ الْمُؤْمِنُوْنَ

सूरः मोमीनून मक्का में नाज़िल हुई और इस में एक सौ अट्ठारह आयतें और छः रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. बेशक ईमानवालों ने कामयाबी हासिल कर ली।[1]

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ①

२. जो अपनी नमाज में ख़ुशूअ (विनम्रता) करते हैं।

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ②

३. जो बेकार बातों से मुँह मोड़ लेते हैं।[2]

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ③

४. जो ज़कात (धर्मदान) अदा करने वाले हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ④

५. जो अपने गुप्तांगों (शर्मगाहों) की हिफ़ाज़त (रक्षा) करने वाले हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ⑤

६. सिवाय अपनी बीवियों और मिल्कियत (स्वामित्व) की दासियों (लौंडियों) के, बेशक यह निन्दा किये जाने वालों में से नहीं हैं।

اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ⑥

७. इस के सिवाय जो दूसरे ढूँढें वही सीमा उल्लंघन (हद से तजावुज़) कर जाने वाले हैं।[3]

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ⑦

---

[1] فلاح का शाब्दिक अर्थ (लफ़्ज़ी मायने) है चीरना, काटना, किसान को भी فلاح कहा जाता है कि वह धरती को चीर-फाड़कर उस में बीज बोता है। مُفلِح (कामयाब) भी वह होता है जो दुखों को काटता हुआ निशाने तक पहुँच जाता है।

[2] لغو हर वह काम और हर वह बात है जिसका कोई फ़ायेदा न हो या उस में दुनियावी या धार्मिक नुक़सान हों। इन से बचने का मतलब है कि उनकी तरफ़ ध्यान भी न दिया जाये न कि उन्हें अपनायें या उनको किया जाये।

[3] इस से मालूम हुआ कि متعہ (मुतआ) की इस्लाम में कभी इजाज़त नहीं है, और कामवासना (जिन्सी ज़रूरत) की पूर्ति के लिए केवल दो ही उचित (मुनासिब) तरीक़ा हैं। बीवी से सहवास (जिमा) कर के या दासियों से कामवासना की तृप्ति (तकमील) कर के, बल्कि अब केवल बीवी इस काम के लिए रह गयी है क्योंकि लौंडियों का रिवाज अभी ख़त्म है।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ﴿8﴾

८. जो अपनी अमानत और वादे की रक्षा (हिफाजत) करने वाले हैं ।[1]

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿9﴾

९. जो अपनी नमाजों की हिफ़ाजत करते हैं ।[2]

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ﴿10﴾

१०. यही वारिस (उत्तराधिकारी) हैं ।

الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿11﴾

११. जो फ़िरदौस (जन्नत का सब से ऊंचा दर्जा) के वारिस होंगे, जहाँ वे हमेशा रहेंगे ।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ﴿12﴾

१२. और बेशक हम ने इंसान को खनखनाती मिट्टी के सार (खुलासा) से पैदा किया ।[3]

ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿13﴾

१३. फिर उसे वीर्य (मनी) बनाकर सुरक्षित (महफूज) जगह में रख दिया ।[4]

ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ﴿14﴾

१४. फिर वीर्य को हम ने जमा हुआ ख़ून बना दिया, फिर उस ख़ून के लोथड़े को गोश्त का टुकड़ा बना दिया, फिर गोश्त के टुकड़े से हड्डियाँ बनायीं, फिर हड्डियों को गोश्त पहना दिया, फिर एक दूसरी शक्ल में उसे पैदा कर दिया । बाबरकत है वह अल्लाह जो सब से अच्छी पैदाईश करने वाला है ।

ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ﴿15﴾

१५. इस के बाद फिर तुम सब जरूर मर जाने वाले हो ।

---

[1] امانات से मुराद मुकर्रर डियुटी को पूरा करना, छिपी बातों और माल की हिफ़ाजत है और वचनों के पालन में अल्लाह से किये हुए वादे और इंसानों से किये वादे और सन्धि (मुआहदे) दोनों शामिल हैं ।

[2] आखिर में फिर नमाजों की हिफ़ाजत को सफलता के लिए जरूरी कहा है, जिस से नमाज की विशेषता (अहमियत) और महत्व (ख़ुसूसियत) वाजेह होती है, लेकिन आज मुसलमान के क़रीब दूसरे नेक कामों की तरह इसकी कोई ख़ास अहमियत (महत्व) नहीं रह गया है ।

[3] मिट्टी से पैदा करने का मतलब पहले आदमी आदम की मिट्टी से पैदाईश है या इंसान जो भोजन भी खाता है वह सब मिट्टी ही से पैदा होता है, इस बिना पर उस वीर्य की असल जो इंसान की उत्पत्ति (पैदाईश) की वजह बनती है, मिट्टी ही है ।

[4] सुरक्षित (महफूज) स्थान से मुराद माँ का गर्भाशय (रिहम) है, जहाँ नौ महीने बच्चा बड़ा महफ़ूज रहता और पलता है ।

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تُبْعَثُونَ (16)

१६. फिर क़यामत के दिन बेशक तुम सब उठाये जाओगे।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَافِلِينَ (17)

१७. और हम ने तुम्हारे ऊपर सात आकाश बना दिये हैं, और हम सृष्टि (मख़लूक़) से ग़ाफ़िल नहीं हैं।

وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنَّاهُ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّا عَلَىٰ ذَهَابٍ بِهِ لَقَادِرُونَ (18)

१८. और हम एक उचित मात्रा (तादाद) में आकाश से पानी बरसाते हैं, फिर उसे धरती के ऊपर रोक देते हैं,[1] और हम उस के ले जाने पर यक़ीनन क़ादिर हैं।

فَأَنْشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّاتٍ مِنْ نَخِيلٍ وَأَعْنَابٍ لَكُمْ فِيهَا فَوَاكِهُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ (19)

१९. इसी पानी के ज़रिये हम तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ उपजा देते हैं कि तुम्हारे लिए उन में बहुत से मेवे (फल) होते हैं, उन्हीं में से तुम खाते भी हो।

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُورِ سَيْنَاءَ تَنْبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِلْآكِلِينَ (20)

२०. और वह पेड़ जो सैना नाम के पहाड़ पर उगता है, जो तेल निकालता है और खाने वाले के लिए सालन है।[2]

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۖ نُسْقِيكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ (21)

२१. तुम्हारे लिए चौपाये जानवरों में भी बहुत बड़ी शिक्षा (नसीहत) है, उन के पेटों से हम तुम्हें (दूध) पिलाते हैं और दूसरे भी बहुत से फ़ायदे तुम्हारे लिए उन में हैं, उन में से कुछ को तुम खाते भी हो।

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ (22)

२२. और उन पर और नावों पर तुम सवार कराये जाते हो।

---

[1] यानी यह प्रबन्ध भी किया कि सारा पानी बरस कर बह न जाये बल्कि हम ने चश्मों (स्रोतों), नहरों, नदियों, तालाबों और कुओं के रूप में उसे महफ़ूज भी किया है, (क्योंकि उन सब की असल भी आसमानी बारिश ही है) ताकि उन दिनों में जब बारिश न हो या ऐसे इलाकों में जहाँ वर्षा कम होती हो और पानी की ज़्यादा ज़रूरत हो, उन से पानी ले लिया जाये।

[2] इस से जैतून का पेड़ मुराद है, जिसका रस तेल के रूप में, फल सालन के रूप में इस्तेमाल होता है। (सालन) को صبغ (रंग) कहा है क्योंकि रोटी रस में डूबो कर रंगी जाती है, तूर सीना (पहाड़) और उसका क़रीबी इलाक़ा ख़ास तौर से इसकी अच्छी पैदावार का इलाक़ा है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ (23)

२३. बेशक हम ने नूह को उसकी क़ौम की ओर (रसूल बनाकर) भेजा, उस ने कहा हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की इबादत करो और उस के सिवाय तुम्हारा कोई माबूद नहीं, क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते?

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُرِيدُ أَنْ يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً مَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ (24)

२४. उस के समाज के काफ़िर सरदारों ने साफ़ कह दिया कि यह तो तुम जैसा ही इंसान है, यह तुम पर फ़ज़ीलत (और ग़ल्बा) हासिल करना चाहता है।[1] अगर अल्लाह ही को क़ुबूल होता तो किसी फ़रिश्ते को उतारता, हम ने तो इसे अपने बुज़ुर्गों के समय में सुना ही नहीं।

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوا بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ (25)

२५. बेशक इस इंसान को जुनून है तो तुम उसे एक मुक़र्रर वक़्त तक ढील दो।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ (26)

२६. नूह ने दुआ की हे मेरे रब! इन के झुठलाने पर तू मेरी मदद कर।[2]

فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ ۙ فَاسْلُكْ فِيهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۖ وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ إِنَّهُمْ مُغْرَقُونَ (27)

२७. तो हम ने उनकी तरफ़ वह्यी भेजी कि तू हमारी आँखों के सामने हमारी वह्यी के अनुसार एक नाव बना, जब हमारा हुक्म आ जाये और तन्दूर उबल पड़े[3] तो तू हर तरह के एक-एक जोड़े उस में रख ले,[4] और अपने परिवार को भी, सिवाय उन के जिन के बारे में हमारी बात पहले गुज़र चुकी है। ख़बरदार! जिन लोगों ने

---

[1] यानी यह तो तुम्हारे जैसा ही इंसान है, यह किस तरह नबी और रसूल हो सकता है? और अगर यह नबूअत और रिसालत का दावा कर रहा है तो इसका असल मक़सद इस से तुम पर फ़ज़ीलत और उच्चता (बरतरी) हासिल करना है।

[2] साढ़े नौ सौ साल तक तबलीग़ करने और दावत देने के बाद आख़िर में रब से दुआ की।

[3] तन्दूर पर व्याख्या (तफ़सीर) सूर: हूद में गुज़र चुकी है कि मुनासिब बात यह है कि इस से मुराद हमारे समाज का मशहूर तन्दूर नहीं जिस में रोटी पकाई जाती है, बल्कि धरती मुराद है कि सारी धरती ही चश्मों (स्रोतों) में तबदील हो गयी, नीचे धरती से पानी चश्मों की तरह उबल पड़ा, नूह को हुक्म दिया जा रहा है कि जब पानी धरती से उबल पड़े ---

[4] यानी जानदार, नबातात और फल सब में से एक-एक जोड़ा (नर और मादा) नाव में रख ले ताकि सभी का वंश बाक़ी रहे।

ज़ुल्म किया है उनके बारे में मुझ से कोई बात न करना, वे तो सब डुबोये जायेंगे।

فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي نَجّٰنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿28﴾

२८. जब तू और तेरे साथी नाव में अच्छी तरह बैठ जाना तो कहना कि सभी तारीफ़ें अल्लाह के लिए ही हैं जिस ने हम लोगों को ज़ालिमों से छुटकारा दिलाया।

وَقُلْ رَّبِّ أَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّ أَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿29﴾

२९. और कहना हे मेरे रब! मुझे सुरक्षित (महफ़ूज़) उतारना और तू ही बेहतर तरीक़े से उतारने वाला है।

إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّإِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِيْنَ ﴿30﴾

३०. बेशक इस में बड़ी-बड़ी निशानियाँ हैं, और हम बेशक इम्तेहान लेने वाले हैं।

ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿31﴾

३१. फिर उन के बाद हम ने दूसरे समुदाय भी पैदा किये।[1]

فَأَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۚ أَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿32﴾

३२. फिर उन में ख़ुद उन में से ही रसूल भी भेजा कि तुम सब अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवाय तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तुम क्यों नहीं डरते?

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَأَتْرَفْنٰهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَأْكُلُ مِمَّا تَأْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ﴿33﴾

३३. और क़ौम के सरदारों ने जवाब दिया जो कुफ़्र करते थे और आख़िरत की मुलाक़ात को झुठलाते थे, और हम ने उन्हें दुनियावी ज़िन्दगी में सुखी रखा था कि यह तो तुम जैसा इंसान है, तुम्हारे खानों में से खाता है और तुम्हारे पीने का पानी ही यह भी पीता है।

وَلَئِنْ أَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿34﴾

३४. और अगर तुम ने अपने जैसे ही इंसान की इताअत क़ुबूल कर ली तो बेशक तुम नुक़सान (ख़सारे) में हो।

---

[1] ज़्यादातर मुफ़स्सिरों के नज़दीक नूह की क़ौम के बाद अल्लाह तआला ने जिस क़ौम को पैदा किया और उन में रसूल भेजा वह 'आद' की क़ौम है, क्योंकि ज़्यादातर जगह पर नूह की क़ौम के वारिस के रूप में 'आद' की क़ौम का ही बयान आया है।

३५. क्या यह तुम्हें इस बात का वादा देता है कि जब तुम मर कर केवल मिट्टी और हड्डी रह जाओगे, तो तुम फिर ज़िन्दा किये जाओगे?	أَيَعِدُكُمْ أَنَّكُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنتُمْ تُرَابًا وَعِظَامًا أَنَّكُم مُّخْرَجُونَ ﴿35﴾
३६. नहीं नहीं, दूर और बहुत दूर है वह जिस का तुम वादा दिये जाते हो।	هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوعَدُونَ ﴿36﴾
३७. ज़िन्दगी तो केवल दुनियावी ज़िन्दगी है जिस में हम मरते-जीते रहते हैं, यह नहीं कि हम फिर उठाये जायेंगे।	إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿37﴾
३८. यह तो बस वह इंसान है जिस ने अल्लाह पर झूठ गढ़ लिया है, हम तो इस पर ईमान लाने वाले नहीं हैं।	إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ﴿38﴾
३९. नबी ने दुआ की कि रब इन के झुठलाने पर तू मेरी मदद कर।	قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ﴿39﴾
४०. जवाब मिला कि यह बहुत ही जल्द अपने किये पर पछताने लगेंगे।	قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نَادِمِينَ ﴿40﴾
४१. आख़िर में इंसाफ़ के मुताबिक़ (नियमानुसार) चीख[1] ने उन्हें पकड़ लिया और हमने उन्हें कूड़ा करकट कर डाला[2] तो ज़ालिमों के लिए दूरी हो।	فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَاهُمْ غُثَاءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿41﴾
४२. फिर उन के बाद हम ने दूसरी भी क़ौम पैदा किये।	ثُمَّ أَنشَأْنَا مِن بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ ﴿42﴾
४३. न तो कोई क़ौम अपने वक़्त से आगे बढ़ी और न पीछे रही।	مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿43﴾

[1] यह "चीख" कहते हैं कि हज़रत जिब्रील की थी, कुछ आलिम कहते हैं कि वैसे ही कड़ी चीख थी जिस के साथ तेज़ आँधियाँ थीं, दोनों ने मिलकर उन को पल भर में तबाही के घाट उतार दिया।

[2] غثاء उस कूड़े करकट को कहते हैं जो बाढ़ के पानी के साथ होता है।

४४. फिर हम ने लगातार रसूल भेजे, जिस उम्मत के पास जब-जब उसका रसूल आया उस ने झुठलाया, तो हम ने एक को दूसरे के पीछे लगा दिया, और उन्हें कहानी बना दिया, उन लोगों के लिए दूरी हो जो ईमान क़ुबूल नहीं करते।

ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ۖ كُلَّمَا جَاءَ أُمَّةً رَّسُولُهَا كَذَّبُوهُ ۚ فَأَتْبَعْنَا بَعْضَهُم بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿44﴾

४५. फिर हम ने मूसा को और उस के भाई हारून को अपनी निशानियाँ और वाज़ेह दलील के साथ भेजा।

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿45﴾

४६. फ़िरऔन और उस की सेना की तरफ़, लेकिन उन्होंने तकब्बुर किया और थे ही वे घमन्ड करने वाले लोग।

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا عَالِينَ ﴿46﴾

४७. कहने लगे, क्या हम अपने जैसे दो इंसानों पर ईमान लायें? जबकि ख़ुद उनकी क़ौम हमारे ग़ुलाम है।

فَقَالُوا أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عَابِدُونَ ﴿47﴾

४८ तो उन्होंने उन दोनों को झुठलाया, आख़िर में वे लोग भी हलाक शुदा लोगों में शामिल हो गये।

فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ﴿48﴾

४९. और हम ने तो मूसा को किताब भी दी कि लोग सच्चे रास्ते पर आ जायें।[1]

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿49﴾

५०. और हम ने मरियम के बेटे और उसकी माता को एक निशानी बनाया,[2] और उन दोनों को ऊँचे, क़रार वाले और बहते पानी वाली जगह में पनाह दी।

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ آيَةً وَآوَيْنَاهُمَا إِلَىٰ رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَمَعِينٍ ﴿50﴾

---

[1] इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि हज़रत मूसा को तौरात फ़िरऔन और उस के मानने वालों को डुबाने के बाद अता की गयी और तौरात के उतरने के बाद अल्लाह तआला ने किसी क़ौम को सामूहिक रूप (मजमूई तौर) से अज़ाब के ज़रिये नाश नहीं किया बल्कि मुसलमानों को यह हुक्म दिया जाता रहा कि वह काफ़िरों से जिहाद (धर्मयुद्ध) करें।

[2] क्योंकि हज़रत ईसा का जन्म बिना पिता के हुआ जो रब की ताक़त का मज़हर (प्रतीक) है, जिस तरह आदम को बिना माता-पिता और हव्वा को बिना माता के हज़रत आदम से और दूसरे सभी इंसानों को माता-पिता के मिलन से पैदा करना उसकी निशानियों में से है।

يَاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿51﴾

५१. हे पैग़म्बरो! हलाल चीज़ें खाओ और नेकी के काम करो। तुम जो कुछ कर रहे हो उस को मैं अच्छी तरह जानता हूँ।

وَاِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿52﴾

५२. और बेशक तुम्हारा यह दीन एक ही दीन है[1] और मैं ही तुम सब का रब हूँ, तो तुम मुझ से डरते रहो।

فَتَقَطَّعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿53﴾

५३. फिर उन्होंने ख़ुद (ही) अपनी बात (धर्म) के आपस में टुकड़े-टुकड़े कर लिए, हर सम्प्रदाय (फ़िर्क़ा) उस के पास जो कुछ है उसी पर घमंड कर रहा है।

فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿54﴾

५४. तो आप भी उन्हें उनकी ग़फ़लत की हालत में कुछ वक़्त पड़ा रहने दें।

اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ﴿55﴾

५५. क्या ये (इस तरह) समझ बैठे हैं कि हम जो कुछ भी उनका माल और औलाद बढ़ा रहे हैं।

نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرٰتِ ؕ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿56﴾

५६. वे उनके लिए भलाईयों में जल्दी कर रहे हैं? नहीं, नहीं बल्कि ये समझते ही नहीं।

اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿57﴾

५७. बेशक जो लोग अपने रब के डर से डरते हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿58﴾

५८. और जो अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُوْنَ ﴿59﴾

५९. और जो अपने रब के साथ किसी को साझी नहीं बनाते।

---

[1] اُمّة से मुराद दीन है, और एक होने का मतलब यह है कि सभी नबियों ने एक अल्लाह की इबादत की दावत दी है, लेकिन लोग तौहीद को छोड़कर अलग-अलग गुटों और सम्प्रदायों (फ़िर्क़ों) में बट गये हैं, और हर गुट अपने ईमान और अमल पर ख़ुश है चाहे वह सच से कितना ही दूर हो।

६०. और जो लोग देते हैं जो कुछ देते हैं और उन के दिल कांपते हैं कि वे अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं।	وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّ قُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴿60﴾
६१. यही हैं जो जल्दी-जल्दी नेकी हासिल कर रहे हैं, और यही हैं जो उनकी तरफ़ दौड़ जाने वाले हैं।	اُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ﴿61﴾
६२. हम किसी जान को उसकी ताक़त से ज़्यादा भार नहीं देते, हमारे पास एक किताब है जो सच ही बोलती है, उन के ऊपर तनिक भी ज़ुल्म न होगा।	وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿62﴾
६३. बल्कि उन के दिल उस तरफ़ से ग़ाफ़िल हैं और उन के लिए इस के सिवाय भी बहुत से कर्म हैं जिन्हें वे करने वाले हैं।	بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِىْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ﴿63﴾
६४. यहां तक कि जब हम ने उन के ख़ुशहाल लोगों को अज़ाब में जकड़ लिया तो वे बिलबिलाने लगे।	حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْـَٔرُوْنَ ﴿64﴾
६५. आज मत बिलबिलाओ, बेशक तुम हमारे सामने मदद न किये जाओगे।	لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿65﴾
६६. मेरी आयतें तो तुम्हारे सामने पढ़ी जाती थीं, फिर भी तुम अपनी एड़ियों के बल उल्टे भागते थे।	قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِىْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿66﴾
६७. अकड़ते ऐंठते, कहानी बनाते उसे छोड़ देते थे।	مُسْتَكْبِرِيْنَ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿67﴾
६८. क्या उन्होंने इस बात पर ग़ौर और फ़िक्र नहीं किया? बल्कि इन के पास वह आया जो इन के पहलों के पास नहीं आया था?	اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿68﴾
६९. या इन्होंने अपने पैग़म्बर को पहचाना नहीं कि उस के इंकार करने वाले हो रहे हैं।	اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿69﴾

أَمْ يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ ۚ بَلْ جَاءَهُم بِالْحَقِّ وَأَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُونَ ⑦⓪

७०. या यह कहते हैं कि इसका माथा फिर गया है? बल्कि वह तो उन के पास सच लेकर आया है। हाँ, इन में से ज़्यादातर सच से चिढ़ने वाले हैं।

وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ وَمَن فِيهِنَّ ۚ بَلْ أَتَيْنَاهُم بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَن ذِكْرِهِم مُّعْرِضُونَ ⑦①

७१. अगर हक़ ही उनकी इच्छाओं का अनुयायी (पैरोकार) हो जाये, तो धरती और आकाश और उन के बीच जितनी चीज़ें हैं सब तहस-नहस हो जायें।[1] सच तो यह है कि हम ने उन्हें उन की नसीहत पहुँचा दी है, लेकिन वे अपनी शिक्षा (नसीहत) से मुँह मोड़ने वाले हैं।

أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ⑦②

७२. क्या आप उन से कोई उजरत (पारिश्रमिक) चाहते हैं? याद रखिये, आप के रब की उजरत बहुत बेहतर है, और वह सब से अच्छी रोज़ी पहुँचाने वाला है।

وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ⑦③

७३. बेशक आप तो उन्हें सीधे रास्ते की तरफ बुला रहे हैं।

وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنَاكِبُونَ ⑦④

७४. और बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वे सीधे रास्ते से मुड़ जाने वाले हैं।

وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِم مِّن ضُرٍّ لَّلَجُّوا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ⑦⑤

७५. और अगर हम उन पर रहमत (कृपा) करें और उनकी कठिनाई दूर कर दें तो यह तो अपनी-अपनी सरकशी पर ज़्यादा मज़बूत रहकर ज़्यादा भटकने लगेंगे।

وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُم بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُونَ ⑦⑥

७६. और हम ने उन्हें अज़ाब में भी जकड़ा, फिर भी ये लोग न तो अपने रब के सामने झुके और न विनती (आजिज़ी) का रास्ता अपनाया।[2]

---

[1] हक़ से मुराद दीन और दीनी क़ानून हैं, यानी अगर दीन उनकी इच्छानुसार नाज़िल हो तो वाज़ेह बात है कि धरती और आकाश का सारा प्रवन्ध (निज़ाम) ही छिन्न-भिन्न हो जाये, जैसे वह चाहते हैं कि एक देवता के बजाय बहुत से देवता हों, अगर ऐसा हक़ीक़त में हो तो क्या मख़लूक़ की तदबीर ठीक रह सकती है? और इसी तरह की दूसरी उनकी तमन्नायें हैं।

[2] अज़ाब से मुराद यहाँ वह हार है जो बद्र की लड़ाई में मक्का के काफ़िरों की हुई, जिस में उन

حَتّٰٓى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿77﴾

७७. यहाँ तक कि जब हम ने उन पर कड़े अज़ाब के दरवाज़े खोल दिया तो उसी वक़्त तुरन्त मायूस हो गये।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿78﴾

७८. वही (अल्लाह) है जिस ने तुम्हारे लिए कान, आँखें और दिल बनाया, लेकिन तुम बहुत कम शुक्रिया अदा करते हो।

وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿79﴾

७९. और वही है जिस ने तुम्हें (पैदा कर के) धरती पर फैला दिया और उसी की तरफ़ तुम जमा किये जाओगे।[1]

وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿80﴾

८०. और यह वही है जो जिलाता और मारता है और रात-दिन के फेरबदल करने का मालिक भी वही है, क्या तुम को समझ बूझ नहीं?

بَلْ قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿81﴾

८१. बल्कि उन लोगों ने भी वही बात कही जो पहले के लोग कहते चले आये हैं।

قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿82﴾

८२. कहा कि जब हम मर कर मिट्टी और हड्डी हो जायेंगे, क्या फिर भी हम ज़रूर खड़े किये जायेंगे?

لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَاۗؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿83﴾

८३. हम से और हमारे पूर्वजों (बुज़ुर्गों) से पहले ही से यह वादा होता चला आया है, कुछ नहीं, यह तो केवल अगले लोगों के ढकोसले हैं।

قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿84﴾

८४. पूछिये तो कि धरती और उस की कुल चीज़ें किस की हैं? बताओ अगर जानते हो।

के सत्तर आदमी मारे गये थे या वह सूखे का अज़ाब है जो नबी ﷺ के शाप (बद्दुआ) के नतीजे में आया था।

[1] इस में अल्लाह की बड़ाई का बयान है कि जिस तरह तुम्हें पैदा करके कई इलाक़ों में फैला दिया है, तुम्हारे रंग भी एक-दूसरे से अलग हैं, ज़बानें (भाषायें) भी अलग और मुआमला और संस्कृति (तहज़ीब) भी अलग। फिर एक वक़्त आयेगा कि तुम सब को ज़िंदा करके वह अपने दरबार में जमा करेगा।

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۚ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿85﴾

८५. वे तुरन्त जवाब देंगे कि अल्लाह की, कह दीजिए तो फिर तुम नसीहत हासिल क्यों नहीं करते।

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿86﴾

८६. पूछिये, सातों आकाशों का और बहुत सम्मानित (इज़्ज़त वाले) अर्श का रब कौन है?

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۚ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿87﴾

८७. वे लोग जवाब देंगे कि अल्लाह ही है। कह दीजिए कि फिर तुम क्यों नहीं डरते?[1]

قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿88﴾

८८. पूछिये कि सभी चीज़ों का अधिकार (हक़) किस के हाथ में है जो पनाह देता है, और जिस की तुलना में कोई पनाह नहीं दिया जाता, अगर तुम जानते हो तो बता दो?

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۚ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿89﴾

८९. यही जवाब देंगे कि अल्लाह ही है, कह दीजिए फिर तुम पर किधर से जादू हो जाता है?

بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿90﴾

९०. सच यह है कि हम ने उन्हें सच पहुँचा दिया है, और ये बेशक झूठे हैं।

مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿91﴾

९१. न तो अल्लाह ने किसी को बेटा बनाया और न उसके साथ दूसरा कोई माबूद है, वरना हर देवता अपनी मख़लूक़ को लिए-लिए फिरता और हर एक-दूसरे पर ऊँचा होने की कोशिश करता, जो गुण यह बताते हैं अल्लाह उन से पाक है।

عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿92﴾

९२. वह छिपी-ज़ाहिर का जानने वाला है और जो शिर्क यह करते हैं उस से बहुत ऊँचा है।

قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ﴿93﴾

९३. (आप) दुआ (प्रार्थना) करें कि हे मेरे रब! अगर तू मुझे वह दिखाये जिस का वादा इन्हें दिया जा रहा है।

---

[1] यानी जब तुम्हें क़ुबूल है कि धरती का और उस में मौजूद हर चीज का पैदा करने वाला सिर्फ एक अल्लाह ही है। आकाश और महान (अज़ीम) अर्श का मालिक भी वही है तो भी तुम्हें यह क़ुबूल करने में क्यों शक है कि इबादत के लायक़ भी वही एक अल्लाह है, फिर तुम उस के एक होने को क़ुबूल करके उस के अज़ाब से बचने की कोशिश क्यों नहीं करते?

९४. तो हे मेरे रब ! तू मुझे इन ज़ालिमों के गुट में न करना।

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِیْ فِی الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿94﴾

९५. और हम जो कुछ वादे उन्हें दे रहे हैं सब आप को दिखा देने की क़ुदरत रखते हैं।

وَاِنَّا عَلٰۤی اَنْ نُّرِیَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ﴿95﴾

९६. बुराई को इस तरह से दूर करें जो पूरी तरह भलाई वाला हो, जो कुछ ये बयान करते हैं, उसे हम अच्छी तरह जानते हैं।

اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ السَّیِّئَةَ ؕ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا یَصِفُوْنَ ﴿96﴾

९७. और दुआ करें कि हे मेरे रब ! मैं शैतानों की शंकाओं (वसवसों) से तेरी पनाह चाहता हूं।

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّیٰطِیْنِ ﴿97﴾

९८. और हे मेरे रब ! मैं तेरी पनाह चाहता हूं कि वे मेरे पास आ जायें।

وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ یَّحْضُرُوْنِ ﴿98﴾

९९. यहां तक कि जब उन में से किसी की मौत आने लगती है तो कहता है कि हे मेरे रब ! मुझे वापस लौटा दे।

حَتّٰۤی اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿99﴾

१००. कि अपनी छोड़ी हुई दुनिया में जाकर नेकी का काम करूं,[1] कभी ऐसा नहीं होने का, यह केवल एक क़ौल है जिस का यह कहने वाला है। उन के पीठ के पीछे तो एक पट है, उन के दोबारा ज़िन्दा होने वाले दिन तक।[2]

لَعَلِّیْۤ اَعْمَلُ صَالِحًا فِیْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰی یَوْمِ یُبْعَثُوْنَ ﴿100﴾

[1] यह तमन्ना (कामना) हर काफ़िर मौत के वक़्त फिर उठाये जाने के वक़्त, अल्लाह के दरबार में खड़े होते वक़्त और नरक में ढकेले जाने के वक़्त करता है और करेगा, लेकिन इसका कोई फ़ायेदा नहीं होगा, क़ुरआन करीम में इस विषय को कई जगहों पर बयान किया गया है।

[2] दो चीज़ों के बीच पर्दा और आड़ को برزخ कहा जाता है। दुनिया की ज़िन्दगी और आख़िरत की ज़िन्दगी के बीच की जो मुद्दत है, उसे यहां برزخ कहा गया है। क्योंकि मरने के बाद इंसान का नाता दुनिया से ख़त्म हो जाता है और आख़िरत की ज़िन्दगी की शुरूआत उस वक़्त होगी जब सभी लोगों को दोबारा ज़िन्दा किया जायेगा, यह बीच की ज़िन्दगी जो क़ब्र में या पक्षी के पेट में या जला देने की हालत में मिट्टी के कणों में गुज़रती है, बर्ज़ख़ की ज़िन्दगी है। इंसान का यह वजूद जहां भी और जिस रूप में भी होगा स्पष्टरूप (वाज़ेह तौर) से वह मिट्टी बन चुका होगा, या राख बनाकर हवाओं में उड़ा दिया गया या नदियों में बहा दिया गया होगा या किसी जानवर का भोजन बन गया होगा, लेकिन अल्लाह तआला सभी को एक नया रूप अता कर हश्र के मैदान में जमा करेगा।

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَآ أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَآءَلُونَ ﴿101﴾

१०१. तो जब नरसिंघा में फूँक मार दी जायेगी, उस दिन न तो आपस के सम्बन्ध ही रहेंगे, न आपस की पूछताछ।

فَمَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُۥ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿102﴾

१०२. तो जिनकी तराज़ू का पलड़ा भारी हो गया वे तो कामयाबी हासिल करने वाले हो गये।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُۥ فَأُو۟لَٰٓئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَٰلِدُونَ ﴿103﴾

१०३. और जिनकी तराज़ू का पलड़ा हल्का रह गया ये हैं वे जिन्होंने अपना नुक़सान ख़ुद कर लिया, जो हमेशा के लिए नरक में चले गये।

تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَٰلِحُونَ ﴿104﴾

१०४. उन के मुँह को आग झुलसाती रहेगी, वे वहाँ बद बने हुए होंगे।[1]

أَلَمْ تَكُنْ ءَايَٰتِى تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿105﴾

१०५. क्या मेरी आयतों का पाठ तुम्हारे सामने नहीं होता था? फिर भी तुम उन को झुठलाते थे।

قَالُوا۟ رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّينَ ﴿106﴾

१०६. वे कहेंगे कि हे मेरे रब! हमारी बदनसीबी हम पर प्रभावशाली (ग़ालिब) हो गयी, हक़ीक़त में हम भटके हुए थे।

رَبَّنَآ أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَٰلِمُونَ ﴿107﴾

१०७. हे मेरे रब! हम को यहाँ से निकाल दे, अगर अब हम ऐसा करें तो बेशक हम ज़ालिम हैं।

قَالَ اخْسَـُٔوا۟ فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ ﴿108﴾

१०८. (अल्लाह तआला) फ़रमायेगा फटकार है तुम पर यही पड़े रहो और मुझ से बात न करो।

إِنَّهُۥ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِى يَقُولُونَ رَبَّنَآ ءَامَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنتَ خَيْرُ الرَّٰحِمِينَ ﴿109﴾

१०९. मेरे बन्दों का एक गुट था जो लगातार यही कहता रहा कि हे मेरे रब! हम ईमान ला चुके हैं, तू हमें माफ़ कर दे और हम पर रहम कर तू सभी रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है।

---

[1] كَلَحٌ का मतलब है होंठ सिकुड़ कर दाँत निकल आयें, होंठ दाँतों के वस्त्र (लिबास) के रूप में हैं, जब यह नरक की आग से सिकुड़ और सिमट जायेंगे तो दाँत दिखायी देने लगेंगे, जिस से इंसान का रूप बद्सूरत और डरावना हो जायेगा।

११०. (लेकिन) तुम उनका मज़ाक ही उड़ाते रहे यहाँ तक कि (उन के पीछे) तुम मेरी याद भुला बैठे और तुम उन की हँसी ही उड़ाते रहे।

فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سِخْرِيًّا حَتَّىٰ أَنسَوْكُمْ ذِكْرِي وَكُنتُم مِّنْهُمْ تَضْحَكُونَ ﴿110﴾

१११. मैंने आज उन के सब्र (और तक़्वा) का बदला दे दिया है, कि वे अपनी मुराद को पहुँच चुके हैं।

إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا أَنَّهُمْ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿111﴾

११२. (अल्लाह तआला) पूछेगा कि तुम धरती पर वर्षों की गिनती से कितने दिन रहे?

قَالَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ ﴿112﴾

११३. (वे) कहेंगे एक दिन या एक दिन से भी कम, गिनती करने वालों से भी पूछ लीजिए।[1]

قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَاسْأَلِ الْعَادِّينَ ﴿113﴾

११४. (अल्लाह तआला) फ़रमायेगा हक़ीक़त यह है कि तुम वहाँ बहुत कम रहे हो, काश! इस को तुम पहले ही से जान लेते।

قَالَ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ۖ لَّوْ أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿114﴾

११५. क्या तुम यह समझ बैठे हो कि हम ने तुम्हें बेकार ही पैदा किया है, और यह कि तुम हमारी ओर लौटाये ही नहीं जाओगे?

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿115﴾

११६. अल्लाह तआला सच्चा बादशाह है, वह बुलन्द है, उस के सिवाय कोई माबूद नहीं, वही बाइज़्ज़त अर्श का रब है।

فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ﴿116﴾

११७. और जो इंसान अल्लाह के साथ किसी दूसरे देवता को पुकारे जिस का उस के पास कोई सुबूत नहीं तो उस का हिसाब उस के रब के ऊपर ही है। बेशक काफ़िर लोग कामयाबी से महरूम (वंचित) हैं।[2]

وَمَن يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِندَ رَبِّهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿117﴾

---

[1] इस से मुराद फ़रिश्ते हैं, जो इंसान के अमल और उम्र लिखने पर तैनात हैं, या वह इंसान मुराद है जो हिसाब-किताब में महारत रखते हैं। क़यामत की भयानकता उन के दिमाग़ से दुनिया की सुख-सुविधा को मिटा देगी और दुनिया की ज़िन्दगी उन्हें ऐसी लगेगी जैसे दिन या आधा दिन, इसलिए वह कहेंगे कि हम तो एक दिन या उस से भी कम वक़्त दुनिया में रहे। बेशक तू फ़रिश्तों से या गिनती करने वालों से पूछ ले।

[2] इस से मालूम हुआ कि भलाई और कामयाबी आख़िरत में अल्लाह के अज़ाब से बच जाना है, सिर्फ़ दुनिया के माल और आराम की ज़्यादती कामयाबी नहीं, यह तो दुनिया में काफ़िरों को भी मिली है, लेकिन अल्लाह तआला उन से भलाई को नकार रहा है, जिसका साफ़ मतलब है

११८. और कहो कि हे मेरे रब ! तू माफ़ कर और रहम (कृपा) कर और तू सभी रहम करने वालों से अच्छा रहम करने वाला है।

وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿118﴾

सूरतुन नूर-२४

سُوْرَةُ النُّوْرِ

सूर: नूर* मदीने में उतरी और इसकी चौसठ आयतें और नौ रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. यह है वह सूर: जो हम ने उतारी है[1] और मुकर्रर कर दी है और जिस में हम ने खुले हुक्म उतारे हैं ताकि तुम याद रखो।

سُوْرَةٌ أَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَأَنْزَلْنَا فِيْهَا اٰيٰتٍ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿1﴾

२. ज़िना करने वाली औरत-मर्द में से हर एक को सौ कोड़े लगाओ।[2] उन पर अल्लाह के नियमों के मुताबिक़ सज़ा देते हुए तुम्हें कभी तरस नहीं खानी चाहिए अगर तुम्हें अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान हो। उन की

اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۖ وَّلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَائِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿2﴾

कि असल तौर से भलाई आख़िरत की भलाई है, जो ईमानवालों के हिस्से में आयेगी न दुनियावी धन और साधन (वसायल) का ज़्यादा होना, जो कि बिना भेद के ईमानवालों और काफ़िर सब को ही मिलती है।

* सूर: नूर, सूर: अहज़ाब और सूर: निसा यह तीनों सूर: ऐसी है जिन में औरतों की ख़ास परेशानियाँ समाजिक जीवन के बारे में अहम तफ़सीली जानकारियों का बयान है।

[1] क़ुरआन करीम की सभी सूरतें अल्लाह की उतारी हुई हैं, लेकिन इस सूर: के बारे में जो यह कहा तो इस से इस सूर: में बयान किये गये हुक्मों की अहमियत को उजागर करना है।

[2] व्याभिचार (ज़िना) की शुरूआती सज़ा जो इस्लाम में वक़्ती तौर से बतायी गयी थी, वह सूर: निसा की आयत नं॰ १५ में गुज़र चुकी है, उस में कहा गया था कि जब तक इस के लिए कोई स्थाई दण्ड निर्धारित (मुस्तक़िल सज़ा मुक़र्रर) न कर लिया जाये, उन बदकार औरतों को घरों में बन्द रखो। फिर जब सूर: नूर की यह आयत उतरी तो नबी ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह ने जो वादा किया था, उस के ऐतबार से बदकार मर्द-औरत का स्थाई दण्ड निर्धारित कर दिया गया है वह तुम मुझ से सीख लो, और वह है कि अविवाहित मर्द-औरत के लिए हर एक को सौ-सौ कोड़े और विवाहित (शादी शुदा) मर्द-औरत को सौ-सौ कोड़े और पत्थरों से मार कर मार डालना। (सहीह मुस्लिम, किताबुल हुदूद)

सज़ा के वक़्त मुसलमानों का एक गुट मौजूद होना चाहिए।

ٱلزَّانِى لَا يَنكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَٱلزَّانِيَةُ لَا يَنكِحُهَآ إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذَٰلِكَ عَلَى ٱلْمُؤْمِنِينَ ③

३. व्याभिचारी (ज़िना) मर्द सिवाय बदकार औरत या मूर्तिपूजक औरत के दूसरे से विवाह नहीं करता और व्याभिचारिणी औरत भी सिवाय व्याभिचारी मर्द या मूर्तिपूजक मर्द के सिवाय दूसरे से विवाह नहीं करती। और ईमानवालों को यह हराम (निषेध) कर दिया गया।[1]

وَٱلَّذِينَ يَرْمُونَ ٱلْمُحْصَنَٰتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا۟ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَٱجْلِدُوهُمْ ثَمَٰنِينَ جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا۟ لَهُمْ شَهَٰدَةً أَبَدًا ۚ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْفَٰسِقُونَ ④

४. और जो लोग पवित्र स्त्री पर ज़िना का इल्ज़ाम लगायें, फिर चार गवाह पेश न कर सकें तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ और कभी भी उनकी गवाही क़ुबूल न करो, ये दुराचारी लोग हैं।[2]

إِلَّا ٱلَّذِينَ تَابُوا۟ مِنۢ بَعْدِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا۟ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑤

५. हाँ, जो लोग इस के बाद माफ़ी माँग कर सुधार कर लें तो अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।

وَٱلَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَٰجَهُمْ وَلَمْ يَكُن لَّهُمْ شُهَدَآءُ إِلَّآ أَنفُسُهُمْ فَشَهَٰدَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهَٰدَٰتٍۭ بِٱللَّهِ ۙ إِنَّهُۥ لَمِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ⑥

६. और जो लोग अपनी बीवियों पर व्याभिचार (बदकारी) का इल्ज़ाम लगायें और उन का गवाह सिवाय उन के दूसरे कोई न हो तो ऐसे लोगों में से हर एक का सबूत यह है कि चार बार अल्लाह की क़सम खा कर कहे कि वह सच्चों में से है।

---

[1] इस के मतलब में मुफ़स्सिरों में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है। कुछ कहते हैं कि यहाँ विवाह से मुराद मशहूर विवाह नहीं है बल्कि ज़िना के अर्थ (मायेना) में है और मक़सद व्याभिचार (ज़िना) के बुरे नतीजे और बुरा काम को बयान करना है।

[2] इस में قذف (इल्ज़ाम लगाने) की सज़ा बयान की गई है कि जो इंसान किसी पाक दामन औरत या मर्द पर व्याभिचार (ज़िना) का इल्ज़ाम लगाये (उसी तरह जो औरत किसी पवित्र पुरूष या औरत पर व्याभिचार का इल्ज़ाम लगाये) और सबूत में चार गवाह पेश न कर सके, तो उन के लिए तीन हुक्म बयान किये गये हैं (१) उन्हे अस्सी कोड़े लगाये जायें, (२) उनकी गवाही कभी क़ुबूल न की जायें और (३) वह अल्लाह के सामने और लोगों के सामने दुराचारी (फ़ासिक़) हैं।

وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ⑦

७. और पाँचवी बार यह कि उस पर अल्लाह की लानत हो अगर वह झूठों में से हो।[1]

وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهَادَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ⑧

८. और उस (औरत) से सज़ा इस तरह ख़त्म की जा सकती है कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खा कर कहे कि बेशक उसका पति झूठ बोलने वालों में से है।

وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهَا إِنْ كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ ⑨

९. और पाँचवी बार कहे कि उस पर अल्लाह का ग़ज़ब (क्रोध) हो अगर उस का पति सच्चों में से हो।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ ⑩

१०. और अगर अल्लाह (तआला) का फ़ज़्ल और रहमत (दया) तुम पर न होती (तो तुम पर दुख उतरते) और अल्लाह (तआला) माफ़ी को क़ुबूल करने वाला हिक्मत वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِنْكُمْ لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَكُمْ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَكُمْ لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ

११. जो लोग यह बहुत बड़ा बुहतान (आक्षेप) खड़ा कर लाये हैं[2] यह भी तुम में से एक गुट है[3] तुम उसे अपने लिए बुरा न समझो, बल्कि यह तो तुम्हारे हक़ में बेहतर है। हाँ, उन में से हर एक पर उतना गुनाह है जितना उस ने

[1] इस में لعان (लिआन) के मसअले का बयान है जिस का मतलब यह है कि किसी पति ने अपनी पत्नी को अपनी आँखों से किसी दूसरे के साथ बुरा काम करते हुए देखा, जिसका वह तो गवाह है, लेकिन चूँकि ज़िना के क़ानून को साबित करने के लिए चार गवाहों की ज़रूरत है, इसलिए जब तक वह अपने साथ दूसरे तीन गवाह न पेश करे, उसकी पत्नी पर ज़िना का क़ानून लागू नहीं हो सकता, लेकिन अपनी आँखों से देख लेने के बाद ऐसी ग़लत पत्नी को सहन करना भी नामुमकिन है। दीनी क़ानून ने इसका यह हल पेश किया है कि यह इंसान अदालत में या अदालत के हाकिम के सामने चार बार अल्लाह की क़सम खाकर यह कहेगा कि वह अपनी पत्नी पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाने में सच्चा है या यह बच्चा या गर्भ (हमल) उसका नहीं है, और पाँचवी बार कहेगा कि अगर वह झूठा है तो उस पर अल्लाह की लानत।

[2] إفك से मुराद वह इल्ज़ाम का वाक़ेआ है जिस में मुनाफ़िक़ों ने हज़रत आयेशा (رضي الله عنها) की इज़्ज़त और एहतेराम को कलंकित (दाग़दार) करना चाहा था, लेकिन अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में हज़रत आयेशा (رضي الله عنها) के ऊपर लगे इल्ज़ाम का खण्डन (तरदीद) करने के लिए आयत उतार के उन के पाक सतीत्व (इस्मत) और इज़्ज़त को और बहुत साफ़ कर दिया।

[3] एक गुट या समूह को عُصْبَة कहा जाता है क्योंकि वे एक-दूसरे की ताक़त और मदद की वजह से होते हैं।

مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ ۚ وَالَّذِي تَوَلَّىٰ كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ⑪

कमाया है, और उन में से जिस ने उस के बहुत बड़े हिस्से को अंजाम दिया है, उस के लिए सज़ा भी बहुत बड़ी है।[1]

لَّوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا هَٰذَا إِفْكٌ مُّبِينٌ ⑫

१२. उसे सुनते ही मुसलमान मर्दों और औरतों ने अपने हक़ में अच्छा ख़्याल क्यों नहीं किया और क्यों न कह दिया यह तो खुला इल्ज़ाम (आरोप) है।[2]

لَّوْلَا جَاءُوا عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ ۚ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا بِالشُّهَدَاءِ فَأُولَٰئِكَ عِندَ اللَّهِ هُمُ الْكَاذِبُونَ ⑬

१३. वह इस पर चार गवाह क्यो नही लाये? और जब गवाह नहीं लाये तो यह बुहतान लगाने वाले लोग बेशक अल्लाह के क़रीब केवल झूठे हैं।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِي مَا أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ⑭

१४. और अगर तुम पर अल्लाह (तआला) का फ़ज़्ल और रहमत दुनिया और आख़िरत में न होता तो बेशक तुम ने जिस बात के चर्चे शुरू कर रखे थे उस बारे में तुम्हें बहुत बड़ा अज़ाब पहुँचता।

إِذْ تَلَقَّوْنَهُ بِأَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُم مَّا لَيْسَ لَكُم بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسَبُونَهُ هَيِّنًا وَهُوَ عِندَ اللَّهِ عَظِيمٌ ⑮

१५. जबकि तुम अपने मुँह से इस की चर्चा लगातार करने लगे और अपने मुँह से वह बात निकालने लगे जिस की तुम को कभी ख़बर नहीं थी, अगरचे तुम उसे आसान बात समझते रहे, लेकिन अल्लाह के क़रीब वह बहुत बड़ी बात थी।

وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُم مَّا يَكُونُ لَنَا أَن نَّتَكَلَّمَ بِهَٰذَا سُبْحَانَكَ هَٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ ⑯

१६. और तुम ने बात सुनते ही क्यों न कह दिया कि हमें ऐसी बात मुँह से निकालनी भी अच्छी नहीं? हे अल्लाह! तू पाक है, यह तो बहुत बड़ा बुहतान है।

[1] इस से मुराद अब्दुल्लाह बिन उबैय मुनाफ़िकों का सरदार है जो इस साज़िश (षड़यन्त्र) का मुखिया था।

[2] यहाँ से प्रशिक्षण (तरबियत) का वह पहलू ज़ाहिर हो रहा है जो इस वाक़ेआ में छुपा है। इन में सब से पहली बात यह है कि ईमानवाले एक जान की तरह हैं, जब हज़रत आयेशा पर इल्ज़ाम लगाया गया तो तुम ने अपने ऊपर समझकर इसका खण्डन (तरदीद) क्यों नहीं किया और उसे खुला बुहतान (आक्षेप) क्यों नहीं कह दिया?

يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖۤ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ⑰

१७. अल्लाह (तआला) तुम्हें नसीहत करना है कि फिर कभी ऐसा काम न करना, अगर तुम सच्चे ईमानवाले हो।

وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ⑱

१८. और अल्लाह (तआला) तुम्हारे सामने अपनी आयतें बयान कर रहा है, और अल्लाह (तआला) जानने वाला हिक्मत वाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ⑲

१९. जो लोग मुसलमानों में बुराई फैलाने की आरज़ू रखते है, उन के लिए दुनियां और आख़िरत में दुखदायी अज़ाब है,[1] और अल्लाह (तआला) सब कुछ जानता है और तुम कुछ नहीं जानते।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ⑳

२०. और अगर तुम पर अल्लाह (तआला) का फ़ज़्ल और रहमत न होती, और यह भी कि अल्लाह (तआला) बहुत प्रेम करने वाला रहम करने वाला है (तो तुम पर अज़ाब आ जाता)।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّىْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ㉑

२१. हे ईमानवालो! शैतान के पदचिन्हों (निशाने क़दम) पर न चलो, जो इंसान शैतान के पदचिन्हों पर चले, तो वह बेहयाई और बुरे कामों का ही हुक्म देगा, और अगर अल्लाह (तआला) का फ़ज़्ल और रहमत तुम पर न होती तो तुम में से कोई भी कभी पाक और साफ़ न होता। लेकिन अल्लाह (तआला) जिसे पाक करना चाहे कर देता है, और अल्लाह (तआला) सब सुनने वाला और सब जानने वाला है।

---

[1] فاحشة का मतलब है निर्लज्जा (बेहयाई) और क़ुरआन ने ज़िना को बेहयाई कहा है (बनी इस्राईल) और यहाँ ज़िना के एक झूठी ख़बर के प्रचार को भी अल्लाह तआला ने बेहयाई कहा है और इसे दुनिया और आख़िरत के दुखदायी अज़ाबों का कारण (सबब) बताया है, जिस से असभ्यता (बेहयाई) के बारे में इस्लाम की प्रकृति (मिज़ाज) और अल्लाह तआला की मर्ज़ी का अंदाज़ा होता है कि सिर्फ़ असभ्यता (बेहयाई) की झूठी ख़बर का फैलाना अल्लाह के सामने कितना बड़ा गुनाह है, तो जो लोग रात-दिन एक इस्लामी समाज में अख़बारों, रेडियो, टी॰ वी॰ और फ़िल्मी ड्रामों के ज़रिये बेहयाई का प्रचार कर रहे हैं और घर-घर उसे पहुँचा रहे हैं अल्लाह के यहाँ ये लोग कितने बड़े गुनहगार होंगे?

وَلَا يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ (22)

२२. और तुम में से जो भी बड़े और कुशादगी वाले हैं, उन्हें अपने क़रीबी रिश्तेदारों और ग़रीबों और मुहाजिरों को अल्लाह के रास्ते में देने से क़सम न खा लेनी चाहिए, बल्कि माफ़ कर देना चाहिए और जाने देना चाहिए, क्या तुम नही चाहते कि अल्लाह (तआला) तुम्हारी ग़ल्तियों को माफ़ कर दे? अल्लाह (तआला) ग़ल्तियों को माफ़ करने वाला रहम करने वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لُعِنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ (23)

२३. जो लोग पाक दामन भोली-भाली ईमान-वाली औरतों पर इल्ज़ाम लगाते हैं वे दुनिया और आख़िरत में धिक्कारे जाने वाले लोग हैं और उन के लिए वहुत सख़्त अज़ाब है।

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (24)

२४. जब कि उनके सामने उन की ज़बान और उनके हाथ-पैर उन के अमलों की गवाही देंगे।

يَوْمَئِذٍ يُوَفِّيهِمُ اللَّهُ دِينَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ (25)

२५. उस दिन अल्लाह (तआला) उन्हें पूरा-पूरा बदला हक़ और इंसाफ़ के साथ अता करेगा और वे जान लेंगे कि अल्लाह (तआला) ही सच है, वही ज़ाहिर करने वाला है।

الْخَبِيثَاتُ لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ لِلْخَبِيثَاتِ ۖ وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ ۖ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ (26)

२६. ख़बीस औरतें ख़बीस मर्दों के लायक़ हैं और ख़बीस मर्द ख़बीस औरतों के लायक़ हैं और पाक औरतें पाक मर्दों के लायक़ हैं और पाक मर्द पाक औरतों के लायक़ हैं। ऐसे पाक लोगों के बारे में जो कुछ बकवास ये (आक्षेप धरने वाले) कर रहे हैं वह उन से निर्दोष हैं, उन के लिए बख़्शिश है और इज़्ज़त वाला रिज़्क़ है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّىٰ تَسْتَأْنِسُوا وَتُسَلِّمُوا عَلَىٰ أَهْلِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ (27)

२७. हे ईमानवालो! अपने घरों के सिवाय दूसरे घरों में न जाओ जब तक कि इजाज़त न ले लो, और वहाँ के निवासियों को सलाम न कर लो[1] यही तुम्हारे लिए बेहतर है ताकि तुम नसीहत हासिल करो।

पहले की आयतों में व्याभिचार (ज़िना) और उस की सज़ा का बयान हुआ, अब अल्लाह तआला घर में दाख़िल होने के क़ानूनों का बयान कर रहा है ताकि मर्द-औरत मिश्रण (इख़्तेलात) न हो जो हमेशा व्याभिचार (बेहयाई) और इल्ज़ाम का सबब बनता है।

فَإِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿28﴾

२८. अगर वहाँ तुम्हें कोई न मिल सके तो फिर इजाज़त मिले बिना अन्दर न जाओ, और अगर तुम से लौट जाने को कहा जाये तो तुम लौट ही जाओ, यही तुम्हारे लिए सुथराई है, जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿29﴾

२९. हाँ, जिन में लोग न रहते हों ऐसे घरों में जहाँ तुम्हारा कोई फ़ायेदा या सामान हो, जाने में कोई गुनाह नहीं,[1] तुम जो कुछ भी ज़ाहिर करते हो और जो छुपाते हो अल्लाह (तआला) सब कुछ जानता है।[2]

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ۭ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿30﴾

३०. मुसलमान मर्दों से कहो कि अपनी निगाह नीची रखें, और अपनी शर्मगाह (गुप्तांग) की हिफ़ाज़त करें, यही उन के लिए पाकीज़गी है, लोग जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह (तआला) सब जानता है।

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ

३१. और मुसलमान औरतों से कहो कि वे भी अपनी निगाह नीची रखें और अपने सतीत्व (इस्मत) की हिफ़ाज़त करें, और अपनी ज़ीनत का इज़हार न करें[3] सिवाय उस के जो ज़ाहिर

[1] इस से मुराद कौन से घर हैं, जिन में बिना इजाज़त लिये दाख़िल होने की इजाज़त दी जा रही है। कुछ आलिम कहते हैं कि इस से मुराद वे घर हैं जो ख़ास तौर से मेहमानों के लिए अलग तैयार किये गये हों, उन में घर के मालिक से पहली बार इजाज़त लेना ही काफ़ी है। कुछ कहते हैं कि इस से मुराद सराय (धर्मशाला) है, जो यात्रियों (मुसाफ़िरों) के लिए होता है या व्यापारिक घर हैं مَتَاعٌ का मतलब है फ़ायदेमंद, यानी जिन में तुम्हारा फ़ायेदा हो।

[2] इस में उन लोगों के लिए चेतावनी (तंबीह) है जो दूसरे लोगों के घरों में दाख़िल होते वक़्त बयान किये गये क़ानूनों की पैरवी करने पर ध्यान नहीं देते।

[3] ज़ीनत (शोभा) से मुराद कपड़ा और ज़ेवर है जो औरतें अपनी ख़ूबसूरती और सुन्दरता में निखार लाने के लिए पहनती हैं, जिसको अपने पति के लिए करने पर ज़ोर दिया गया है, जब कपड़ा और ज़ेवर का इज़हार दूसरे मर्दों के सामने औरतों के लिए हराम है तो शरीर नग्न (नंगा) और ज़ाहिर करने की इजाज़त इस्लाम में कब हो सकती है? यह तो बहुत हराम और नाजायेज़ होगा।

وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ
أَوْ آبَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَائِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِ بُعُولَتِهِنَّ
أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِنَّ
أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التَّابِعِينَ غَيْرِ
أُولِي الْإِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا
عَلَىٰ عَوْرَاتِ النِّسَاءِ ۖ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ
مَا يُخْفِينَ مِنْ زِينَتِهِنَّ ۚ وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا
أَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ (31)

है[1] और अपने गरेबान पर अपनी ओढ़नियों को पूरी तरह से फैलाये रहें[2] और अपनी ज़ीनत का इज़्हार किसी के सामने न करें सिवाय अपने शौहर के या अपने पिता के या अपने ससुर के या अपने बेटों के या अपने शौहर के बेटों के या अपने भाईयों के या भतीजों के या अपने भांजों के[3] या अपनी सखियों के[4] या ग़ुलामों के या नौकरों में ऐसे मर्दों के जिन को कामुकता (शहवत) न हो या ऐसे बच्चों के जो औरतों के पर्दे की बातों के बारे में न जानते हों[5] और इस तरह से ज़ोर-ज़ोर से पैर मार कर न चलें कि उन के छुपे सिंगार का पता लग जाये। और हे मुसलमानो! तुम सब के सब अल्लाह के दरबार में माफ़ी मांगो ताकि तुम कामयाबी पाओ।

---

[1] इस से मुराद वह ज़ीनत और जिस्म का अंग है जिसका छिपाना और पर्दा करना नामुमकिन हो, जैसे किसी को कोई चीज़ पकड़ाते या उस से लेते वक़्त हथेलियों का या देखते वक़्त आँखों का ज़ाहिर हो जाना। इस बारे में हाथ में जो अंगूठी पहने हुए या मेंहदी लगी हुई, आँखों में सुर्मा या काजल हो या कपड़ा और ज़ीनत को छिपाने के लिए जो नक़ाब या चादर ली जाती है वह भी एक ज़ीनत ही है, फिर भी यह ज़ीनतें ऐसी हैं जिनका इज़्हार ज़रूरत के वक़्त या ज़रूरत के सबब ठीक है।

[2] ताकि सिर, गर्दन और छाती का पर्दा हो जाये क्योंकि उन्हें भी नग्न करने की इजाज़त नहीं है।

[3] पिता में दादा, दादा के पिता, नाना और नाना के पिता और उस से ऊपर सभी शामिल हैं। इसी तरह ससुर में ससुर का पिता, दादा, दादा के पिता ऊपर तक। पुत्रों में पोता, परपोता, नाती, परनाती नीचे तक। पति के पुत्रों में पोतों और परपोतों नीचे तक, भाईयों में तीनों तरह के भाई (सगे पिता की तरफ़ से, माता की ओर से) और उनके पुत्र, पोते, परपोते, नाती, नीचे तक, भतीजों में उन के बेटे नीचे तक और भांजों मे तीनों तरह की बहनों की औलाद शामिल हैं।

[4] इन से मुराद मुसलमान औरतें हैं जिन को इस बात से रोक दिया गया है कि वह किसी औरत की ज़ीनत, ख़ूबसूरती, और सौन्दर्य और जिस्म की बनावट का अपने शौहर के सामने बयान करें। कुछ ने इस से वे ख़ास औरतें मुराद ली हैं जो ख़िदमत वग़ैरह के लिए हर वक़्त साथ रहती हैं जिन में दासियाँ भी शामिल हैं।

[5] उन से ऐसे लड़के अलग होंगे जो बालिग़ हों या बालिग़ होने के क़रीब हों, क्योंकि वे औरतों की शर्मगाह (गुप्तांग) को जानते हैं।

३२. और तुम में से जो मर्द-औरत जवानी को पहुँच गये हों उन का विवाह कर दो और अपने नेक दास-दासियों का भी, अगर वे ग़रीब भी होंगे तो अल्लाह (तआला) अपनी रहमत से धनवान बना देगा,[1] अल्लाह (तआला) कुशादगी वाला और इल्म (ज्ञान) वाला है।

وَأَنكِحُوا الْأَيَامَىٰ مِنكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ ۚ إِن يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُغْنِهِمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿32﴾

३३. और उन लोगों को पाक रहना चाहिए जो अपना विवाह करने का सामर्थ्य (कुदरत) नहीं रखते, यहाँ तक कि अल्लाह (तआला) अपने फ़ज़्ल से उन्हें धनवान बना दे, तुम्हारे दासों में से जो कोई तुम्हें कुछ देकर आज़ादी का लेख कराना चाहे तो तुम उन्हें ऐसा लेख दे दिया करो, अगर तुम को उन में कोई भलाई दिखती हो[2] और अल्लाह ने जो माल तुम्हें दे रखा है, उस में से उन्हें भी दो, तुम्हारी दासियाँ जो पाक रहना चाहती हैं, उन्हें दुनियावी ज़िन्दगी के फ़ायदे के सबब बुरे काम पर मजबूर न करो।[3] और जो उन्हें मजबूर कर दे तो अल्लाह (तआला) उन के मजबूर किये जाने के बाद माफ़ कर देने वाला और रहम करने वाला है।[4]

وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۗ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۖ وَآتُوهُم مِّن مَّالِ اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ ۚ وَلَا تُكْرِهُوا فَتَيَاتِكُمْ عَلَى الْبِغَاءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوا عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَن يُكْرِههُّنَّ فَإِنَّ اللَّهَ مِن بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿33﴾

---

[1] यानी सिर्फ़ ग़रीबी और धन की कमी विवाह में रूकावट नहीं होनी चाहिए, मुमकिन है कि विवाह के बाद अल्लाह उन की ग़रीबी को अपने फ़ज़्ल और रहमत से ख़ुशहाली में बदल दे।

[2] مُكَاتَب उस ग़ुलाम को कहा जाता है जो अपने मालिक से सुलह कर लेता है कि मैं इतनी राशि जमा करके भुगतान कर दूँगा तो आज़ादी का हक़दार हूँगा।

[3] अज्ञानकाल (जाहीलियत) में लोग सिर्फ़ दुनियावी माल जमा करने के लिए अपनी दासियों को व्याभिचार (ज़िना) पर मजबूर करते थे, चाहे न चाहे उसे यह अपमान का कलंक बरदाश्त करना पड़ता था, अल्लाह तआला ने मुसलमानों को ऐसा करने से रोका है।

[4] यानी जिन दासियों से ज़बरदस्ती व्याभिचार (ज़िना) करवाया जायेगा तो ज़ालिम मालिक होगा, यानी मजबूर करने वाला, न कि दासी जो अबला है। हदीस में आता है, मेरे सम्प्रदाय (उम्मत) से ग़लती, भूल और ऐसे काम जो ज़बरदस्ती कराये गये हों, माफ़ हैं। (इब्ने माजा, किताबुत तलाक़, बाब तलाक़िल मुकरहे वन्नासी)

وَلَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ وَّمَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿34﴾

३४. और हम ने तुम्हारी तरफ़ खुली और रोशन आयतें उतारी हैं और उन लोगों की कहावतें जो तुम लोगों से पहले गुजर चुके हैं और परहेजगारों के लिए नसीहत।

اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ۭ اَلْمِصْبَاحُ فِيْ زُجَاجَةٍ ۭ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْۗءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ۭ نُوْرٌ عَلٰي نُوْرٍ ۭ يَهْدِي اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿35﴾

३५. अल्लाह नूर है आकाशों का और धरती का उस के नूर की मिसाल एक ताक़ की है जिस पर दीप (चिराग़) है और दीप शीशे की झाड़ में हो और शीशा चमकते हुए रोशन सितारे की तरह हो और वह दीप पाक पेड़ जैतून के तेल से जलाया जाता हो, जो पेड़ न पूर्वी है न पश्चिमी और वह तेल ही क़रीब (मुमकिन) है कि रौशनी देने लगें, अगरचे उसको कभी आग न छुई हो, नूर पर नूर है, अल्लाह (तआला) अपने नूर की तरफ़ हिदायत करता है जिसे चाहे। लोगों को समझाने के लिए ये मिसाल अल्लाह (तआला) दे रहा है, और अल्लाह (तआला) हर चीज की हालत अच्छी तरह जानता है।

فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿36﴾

३६. उन घरों में जिन के ऊँचा करने का और वहाँ अपना नाम लिये जाने का अल्लाह ने हुक्म दिया है, वहाँ सुबह और शाम अल्लाह (तआला) की तस्बीह बयान करते हैं।[1]

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاۗءِ الزَّكٰوةِ ۽ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ﴿37﴾

३७. ऐसे लोग जिन्हें तिजारत और ख़रीदो फ़रोख़्त अल्लाह के ज़िक्र से और नमाज क़ायम करने और जकात अदा करने से गाफ़िल नहीं करती, उस दिन से डरते हैं जिस दिन बहुत से दिल और बहुत सी आँखें उलट-पलट हो जायेंगी।

---

[1] 'तस्बीह' से मुराद नमाज है। اصال बहुवचन (जमा) है أصيل का मतलब है शाम। यानी ईमानवाले, जिन के दिल ईमान और हिदायत से रोशन होते हैं, सुबह और शाम मस्जिदों में अल्लाह की ख़ुशी के लिए नमाज पढ़ते और उस की इबादत (उपासना) करते हैं।

३८. इस मकसद से कि अल्लाह तआला उन्हें उन के अमल का अच्छा बदला दे और अपने फ़ज़्ल से कुछ ज़्यादा ही अता करे, और अल्लाह (तआला) जिसे चाहे बेहिसाब रिज़्क (जीविका) देता है।

لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاۗءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿38﴾

३९. और काफ़िरों के अमल उस चमकती रेत की तरह हैं जो खुले मैदान में हो जिसे प्यासा इंसान दूर से पानी समझता है, लेकिन जब उस के क़रीब पहुँचता है तो उसे कुछ भी नहीं पाता। हाँ, अल्लाह को अपने क़रीब पाता है जो उस का हिसाब पूरा-पूरा चुका देता है। और अल्लाह (तआला) जल्द ही हिसाब कर देने वाला है।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍۢ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَاۗءً ۭ حَتّٰٓي اِذَا جَاۗءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـــًٔا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ۭ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿39﴾

४०. या उन अंधेरों की तरह है जो बहुत गहरे समुद्र में हों जिसे ऊपर-नीचे की धाराओं ने ढक लिया हो, फिर ऊपर से बादल छाये हों, यानी अंधेरे हैं जो ऊपर-नीचे एक के ऊपर एक हों। जब अपना हाथ निकाले तो उसे भी मुमकिन है न देख सके, और (बात यह है कि) जिसे अल्लाह (तआला) ही नूर न दे, उस के पास कोई नूर नहीं होता।

اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ۭ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۭ اِذَآ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ۭ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿40﴾

४१. क्या आप ने नहीं देखा कि आकाश और धरती की सभी मख़लूक और पंख फैलाये उड़ने वाले सभी पक्षी अल्लाह की तस्बीह में लीन हैं, हर एक की नमाज़ और तस्बीह उसे मालूम है, और लोग जो कुछ करें उसे अल्लाह अच्छी तरह जानता है।[1]

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰۗفّٰتٍ ۭ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿41﴾

[1] यानी धरती वाले और आकाश वाले जिस तरह अल्लाह के हुक्मों का पालन और उसकी तारीफ़ करते हैं सब उस के इल्म में है, यह जैसाकि इंसानों और जिन्नों को चेतावनी है कि तुम्हें अल्लाह ने अक़्ल और शऊर की आज़ादी दी है तो तुम्हें दूसरे मख़लूक के मुक़ाबिले ज़्यादा तस्बीह और तारीफ़ का बयान और उसकी पैरवी करना चाहिए, लेकिन हक़ीक़त इस के ख़िलाफ़ है। दूसरे मख़लूक तो अल्लाह की तस्बीह में लगे हैं, लेकिन अक़्ल और समझ से सुशोभित सृष्टि (मुज़य्यन मख़लूक) इस में सुस्ती कर रही है, जिस पर बेशक वे अल्लाह की पकड़ के

वَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿42﴾

४२. धरती और आकाश का मुल्क अल्लाह ही का है और अल्लाह (तआला) ही की तरफ़ लौट कर जाना है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ۭ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ﴿43﴾

४३. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) बादलों को चलाता है, फिर उन्हें मिलाता है, फिर उन्हें तह पर तह कर देता है। फिर आप देखते हैं कि उन के बीच से वर्षा होती है, वही आकाश की तरफ़ से ओलों के पहाड़ से ओले बरसाता है, फिर जिन्हें चाहे उन्हें उन के पास बरसाये और जिन से चाहे उन से उन्हें हटा दे। बादलों से ही निकलने वाली बिजली की चमक ऐसी होती है कि जैसे अब आँखों की नज़र ले चली।

يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿44﴾

४४. अल्लाह तआला ही दिन-रात का उलट-फेर करता रहता है,[1] आँखों वालों के लिए बेशक इस में बड़ी-बड़ी शिक्षायें (नसीहतें) हैं।

وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰٓى اَرْبَعٍ ۭ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿45﴾

४५. सभी के सभी चलने-फिरने वाले जानदार को अल्लाह (तआला) ने पानी से पैदा किया है, उन में से कुछ अपने पेट के बल चलते हैं,[2] कुछ दो पैर के बल चलते हैं[3] कुछ चार पैरों पर चलते हैं,[4] अल्लाह (तआला) जो चाहता है पैदा करता है।[5] बेशक अल्लाह (तआला) हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

हक़दार होंगे।

[1] यानी कभी दिन बड़े, रातें छोटी और कभी इस के ख़िलाफ़ या कभी दिन की रोशनी को बादलों के अंधेरे से और रात के अंधेरों को चाँद की रोशनी से बदल देता है।

[2] जिस तरह साँप, मछली और दूसरे धरती पर चलने वाले कीड़े मकोड़े हैं।

[3] जैसे इंसान और पक्षी हैं।

[4] जैसे सभी चौपाये और दूसरे जानदार हैं।

[5] यह इशारा इस बात की तरफ़ है कि कुछ जानदार ऐसे भी हैं जो चार से भी ज़्यादा पैर रखते हैं, जैसे केकड़े, मकड़ी, खंखजूरा और बहुत से धरती के कीड़े।

لَقَدْ أَنزَلْنَا آيَاتٍ مُّبَيِّنَاتٍ ۚ وَاللَّهُ يَهْدِي مَن يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ (46)

४६. बेशक हम ने रौशन और खुली आयतें नाज़िल की हैं। अल्लाह (तआला) जिसे चाहे सीधा रास्ता दिखा देता है।[1]

وَيَقُولُونَ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ (47)

४७. और कहते हैं कि हम अल्लाह (तआला) और रसूल पर ईमान लाये और फ़रमांबर्दार हुए, फिर उन में से एक गुट उस के बाद भी मुंह मोड़ लेता है, ये ईमानवाले हैं ही नहीं।[2]

وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُم مُّعْرِضُونَ (48)

४८. और जब ये इस बात की तरफ़ बुलाये जाते हैं कि अल्लाह और उस का रसूल (उन के झगड़ों) का फ़ैसला कर दे, तो भी उन का एक गुट मुंह मोड़ने वाला बन जाता है।

وَإِن يَكُن لَّهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ (49)

४९. और अगर उन्हीं को हक़ पहुंचता हो तो फ़रमांबर्दार होकर उस की तरफ़ चले आते हैं।

أَفِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَمِ ارْتَابُوا أَمْ يَخَافُونَ أَن يَحِيفَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُ ۚ بَلْ أُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ (50)

५०. क्या उन के दिलों में रोग है? या ये शक और शुब्हा में पड़े हुए हैं? या उन्हें इस बात का डर है कि अल्लाह (तआला) और उस का रसूल उन के हक़ का ख़ात्मा न कर दें? बात यह है कि ये लोग ख़ुद ही बड़े ज़ालिम हैं।

إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَن يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ (51)

५१. ईमानवालों का कहना तो यह है कि जब उन्हें इसलिए बुलाया जाता है कि अल्लाह और उस का रसूल उन में फ़ैसला कर दे तो वह कहते हैं कि हम ने सुना और मान लिया, यही लोग कामयाब होने वाले हैं।

---

[1] آيات مبينات से मुराद क़ुरआन करीम है, जिस में हर उस चीज़ का बयान है जिसका सम्बन्ध (तआल्लुक़) इंसान के धर्म (दीन) और अख़लाक़ से है, जिस पर उसकी भलाई और कामयाबी की बुनियाद है।

[2] यह मुनाफ़िक़ों (द्वयवादियों) का बयान है, जो मुंह से इस्लाम ज़ाहिर करते थे, लेकिन दिल में कुफ़्र और हसद रखते थे, यानी 'सच्चे ईमान' से महरूम (वंचित) थे, इसलिए मुंह से ईमान ज़ाहिर करने के बावजूद उन के ईमान का इंकार किया गया है।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ (52)

५२. और जो भी अल्लाह (तआला) और उस के रसूल के हुक्म की पैरवी करें, अल्लाह का डर रखें और (उस के अज़ाब से) डरते रहें, वही लोग कामयाबी हासिल करने वाले हैं।

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۭ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ (53)

५३. और वे बहुत मज़बूती के साथ अल्लाह (तआला) की क़सम खा-खाकर कहते हैं कि आप का हुक्म होते ही निकल खड़े होंगे, कह दीजिए कि बस क़सम न खाओ, तुम्हारी इताअत (की हक़ीक़त) मालूम है, जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह (तआला) उसे जानता है।

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ۭ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ۭ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ (54)

५४. कह दीजिए कि अल्लाह (तआला) के हुक्म की पैरवी करो, रसूल की पैरवी करो, फिर भी अगर तुम ने मुँह मोड़ा तो रसूल का कर्तव्य (फ़र्ज़) तो केवल वही है, जो उस पर वाजिब कर दिया गया है, और तुम पर उस की ज़िम्मेदारी है जो तुम पर रखी गयी है, हिदायत तो तुम्हें उसी वक़्त मिलेगी जब रसूल की इताअत क़ुबूल करोगे, (सुनो) रसूल का कर्तव्य केवल साफ़-साफ़ पहुँचा देना है।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۠ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ۭ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ۭ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ (55)

५५. तुम में से जो ईमान लाये हैं और नेकी का काम किया है अल्लाह (तआला) वादा कर चुका है कि उन्हें मुल्क (धरती) का अधिकारी बनायेगा, जैसाकि उन लोगों को अधिकारी बनाया था जो उन से पहले थे और बेशक उन के लिए उन के इस धर्म को मज़बूती के साथ क़ायम कर देगा जिसे उन के लिए वह पसन्द कर चुका है, और उन के इस डर और ख़ौफ़ को शान्ति व अमन में बदल देगा,[1] वे मेरी इबादत करेंगे, मेरे साथ

---

[1] कुछ ने इस अल्लाह के वादे को सहाबा केराम के साथ या ख़ुलफ़ाये राशदीन के साथ ख़ास तौर से सम्बन्धित किया है, लेकिन इसकी इस फ़ज़ीलत का कोई सुबूत नहीं है। क़ुरआन के लफ़्ज़ आम हैं और ईमान और नेकी के काम के साथ प्रतिबन्धित (मशरूत) हैं। लेकिन यह बात ज़रूर है कि ख़िलाफ़ते राशिदा के ज़माने में और नेकी के ज़माने में, यह अल्लाह का वादा ज़ाहिर हुआ, अल्लाह तआला ने मुसलमानों को ज़मीन पर ग़ालिब बनाया, अपने प्यारे दीन

किसी को शरीक नहीं करेंगे। उस के बाद भी जो लोग नाशुक्री करें और कुफ्र करें तो वे बेशक नाफ़रमान हैं।

وَأَقِيمُوا الصَّلَوٰةَ وَآتُوا الزَّكَوٰةَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿56﴾

५६. और नमाज़ क़ायम करो, ज़कात अदा करो और अल्लाह (तआला) के रसूल की पैरवी में लगे रहो ताकि तुम पर दया की जाये।

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ وَلَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿57﴾

५७. यह ख़्याल आप कभी न करना कि काफ़िर लोग धरती पर (इधर-उधर फैल कर) हमें पराजित कर देने वाले हैं, उनका मूल ठिकाना तो नरक है, जो बेशक बहुत बुरा ठिकाना है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنْكُمُ الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ۚ مِنْ قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ ثِيَابَكُمْ مِنَ الظَّهِيرَةِ وَمِنْ بَعْدِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ ۚ ثَلَاثُ عَوْرَاتٍ لَكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَهُنَّ ۚ طَوَّافُونَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿58﴾

५८. हे ईमान वालो! तुम से तुम्हारी मिल्कियत के दासों को और उन्हें भी जो तुम में से बुलूगत (वयस्क) उम्र को न पहुँचें हों (अपने आने के) तीन समयों में आज्ञा प्राप्त करना ज़रूरी है। फ़ज्र की नमाज़ से पहले और ज़ोहर (मध्यान्ह) के वक़्त जब तुम अपने कपड़े उतारे रखते हो और ईशा (रात) की नमाज़ के बाद[1] ये तीनों वक़्त तुम्हारे (अकेले) और पर्दे के हैं,[2] इन वक़्तों के सिवाय न तो तुम पर कोई गुनाह है न उन पर। तुम सब आपस में ज़्यादातर एक-दूसरे के पास आने-जाने वाले हो (ही) अल्लाह इस तरह

इस्लाम को तरक्की अता की और मुसलमानों के डर को शान्ति में बदल दिया।

[1] दासों से मुराद दास-दासियाँ दोनों हैं। ثلاث مرات का मतलब तीन वक़्त हैं, यह तीन वक़्त ऐसे हैं कि इंसान अपनी बीवी के साथ घर में ख़ास तौर से रहता या ऐसे कपड़े में हो सकता है कि जिस में किसी दूसरे का देखना जायेज़ नहीं, इसलिए इन तीन वक़्तों में घर के सेवकों को इस बात की इजाज़त नहीं है कि वह बिना इजाज़त लिये घर में दाख़िल हों।

[2] عورات बहुवचन है عورة का, जिसका असली मायना कमी और दोष के हैं, फिर इसका इस्तेमाल ऐसी चीज़ पर किया जाने लगा जिसका ज़ाहिर करना तथा देखना प्रिय न हो। स्त्री को भी इसी लिए औरत कहा जाता है कि उसका इज़हार और नग्न होना और देखना धार्मिक रूप से नापसन्द है। यहाँ बयान तीन वक़्तों को औरात कहा गया है यानी ये तुम्हारे पर्दे और तंहाई के वक़्त हैं, जिन में तुम अपने ख़ास कपड़ों और हालत के ज़ाहिर करने को प्रिय नहीं समझते हो।

खोल-खोल कर अपने हुक्म तुम से बयान कर रहा है, और अल्लाह (तआला) जानने वाला और हिक्मत वाला है।

وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿59﴾

५९. और तुम में से जो बच्चे बुलूगत (वयस्क) को पहुँच जायें तो जिस तरह उन से पहले के (बड़े) लोग इजाज़त माँगते हैं, उन्हें भी इजाज़त माँग कर आना चाहिए। अल्लाह (तआला) तुम से इसी तरह अपनी आयतों का बयान करता है। अल्लाह (तआला) ही जानने वाला और हिक्मत वाला है।

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ اللَّاتِي لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَن يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ ۖ وَأَن يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿60﴾

६०. और बड़ी बूढ़ी औरतें जिन्हें विवाह की उम्मीद (और मर्ज़ी) ही न रही हो वह अगर अपने कपड़े (पर्दे के लिए इस्तेमाल किये गये) उतार रखें तो उन पर कोई बुराई नहीं, अगर वह अपनी ज़ीनत दिखाने वाली न हों।[1] लेकिन उनसे भी बची रहें तो उन के लिए बहुत बेहतर है, और अल्लाह (तआला) सुनता और जानता है।

لَّيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ أَن تَأْكُلُوا مِن بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَّاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ

६१. अंधे पर, लंगड़े पर, रोगी पर और ख़ुद तुम पर कभी कोई हरज नहीं कि तुम अपने घरों से, खा लो या अपने पिताओं के घरों से, या अपनी माताओं के घरों से, या अपने भाईयों के घरों से, या अपनी बहनों के घरों से, या अपने चाचाओं के घरों से, या अपनी बुआओं के घरों से, या अपने मामाओं के घरों से, या अपनी मौसियों के घरों से, या उन घरों से जिन की चाभियों के मालिक तुम हो या अपने दोस्तों के

[1] इन से मुराद बूढ़ी औरतें और बाँझ औरतें हैं जिनका मासिक धर्म (हैज़) आना बन्द हो गया हो और विलादत के लायक़ न रह गयी हों। इस उम्र में आम तौर से औरत के अन्दर मर्द की तरफ़ ख़्वाहिश की प्राकृतिक (फ़ितरी) इच्छा ख़त्म हो चुकी होती है, न वह किसी मर्द से विवाह की इच्छा रखती है और न ही कोई मर्द इस भावना से उनकी तरफ़ आकर्षित (मायल) होता है, ऐसी औरतों को पर्दे में कमी के लिए इजाज़त दे दी गयी है।

اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗٓ اَوْ صَدِيْقِكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً طَيِّبَةً ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ (61)

घरों से। तुम पर इस में भी कोई गुनाह नहीं कि तुम सब साथ बैठकर खाना खाओ या अलग-अलग,[1] पर जब तुम घरों में जाने लगो तो अपने घर वालों को सलाम कर लिया करो,[2] शुभकामना है जो मुबारक और पाक अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल है। इसी तरह अल्लाह (तआला) खोल-खोल कर अपने हुक्मों को बयान कर रहा है ताकि तुम समझ लो।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰٓى اَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ فَاِذَا اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (62)

६२. ईमानवाले लोग तो वही हैं जो अल्लाह (तआला) पर और उस के रसूल पर ईमान रखते हैं, और जब ऐसे मसले में जिस में लोगों के जमा होने की ज़रूरत होती है नबी के साथ होते हैं, तो जब तक आप से इजाज़त न ले लें कहीं नहीं जाते, जो लोग (ऐसे मौक़ा पर) आप से इजाज़त ले लेते हैं, हक़ीक़त में वह यही हैं जो अल्लाह (तआला) पर और उस के रसूल पर ईमान ला चुके हैं, तो ऐसे लोग जब आप से अपने किसी काम के लिए इजाज़त मांगें तो आप उन में से जिसे चाहें इजाज़त दें और उन के लिए अल्लाह से मग़फ़िरत की दुआ करें, बेशक अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला रहम

[1] इस में एक परेशानी को हल किया गया है। कुछ लोग अकेले खाना खाना अच्छा नहीं समझते थे और किसी को साथ बिठाकर खाना खाना ज़रूरी समझते थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, जमा होकर खा लो या अलग-अलग, दोनों तरह से मान्य (जायेज़) है गुनाह किसी में नहीं, लेकिन जमा होकर खाना अधिक शुभ (ज़्यादा बरकत) का कारण है, जैसाकि कुछ हदीसों से मालूम होता है। (इब्ने कसीर)

[2] इस में अपने घरों में दाख़िल होने के आदाब का बयान है, और वह यह है कि दाख़िल होते वक़्त घर वालों को सलाम (अभिवादन) करो, इंसान के लिए अपनी बीवी और औलाद को सलाम करने में आम तौर से तकलीफ़ महसूस होती है, लेकिन ईमान वालों के लिए ज़रूरी है कि वे अल्लाह के हुक्म के अनुसार ऐसा करें, अपनी बीवी और औलाद को सलामती की दुआ से क्यों महरूम रखा जाये।

करने वाला है।

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ؕ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖۤ اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿63﴾

६३. तुम (अल्लाह के) नबी के बुलावे को ऐसा आम बुलावा न समझो जैसा आपस में एक का दूसरे को होता है, तुम में से उन्हें अल्लाह अच्छी तरह जानता है जो आँख बचा कर चुपके से निकल जाते हैं। (सुनो) जो लोग रसूल के हुक्म की मुख़ालफ़त करते हैं उन्हें डरते रहना चाहिए कि कहीं उन पर कोई बहुत सख़्त फ़ित्ना न आ पड़े[1] या उन्हें कोई दुख की मार न पड़े।

اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قَدْ يَعْلَمُ مَاۤ اَنْتُمْ عَلَيْهِ ؕ وَيَوْمَ يُرْجَعُوْنَ اِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿64﴾

६४. बाख़बर हो जाओ कि आकाश और धरती पर जो कुछ है सब अल्लाह (तआला) का ही है, जिस रास्ते पर तुम लोग हो वह उसे अच्छी तरह जानता है और जिस दिन यह सब उसी की तरफ़ लौटाये जायेंगे, उस दिन उन को उन के किये हुए से वह अवगत (आगाह) करा देगा, और अल्लाह (तआला) सब कुछ जानने वाला है।

---

[1] इस मुसीबत से मुराद दिलों का वह टेढ़ापन है जो इंसान को ईमान से महरूम करती है। यह नबी ﷺ के हुक्मों की नाफ़रमानी और उन की मुख़ालफ़त का नतीजा है, और ईमान से महरूम होकर कुफ़्र पर ख़ात्मा, नरक की स्थाई यातना (दायमी सज़ा) की वजह बनती है, जैसाकि आयत के अगले वाक्य (जुम्ले) में फ़रमाया, अत: नबी ﷺ के अख़लाक़ और सुन्नत (चरित्र) को हर वक़्त सामने रखना चाहिए, इसलिए जो कथनी और करनी उसके ऐतबार से होगी वही अल्लाह के दरबार में क़ुबूल और बाक़ी सभी नाक़ुबूल होंगी। आप ﷺ का क़ौल है:

«مَنْ عَمِلَ عَمَلاً لَيْسَ عَلَيْهِ أَمْرُنَا، فَهُوَ رَدٌّ»

"जिस ने ऐसा काम किया जो हमारे आदेश अनुरूप (मुताबिक़) नहीं है, वह बेकार है।" (अल-बुख़ारी, किताबुस्सुलह बाब इज़ा स्तलहू अला सुलहे जौरिन और मुस्लिम, किताबुल अक़ज़िया बाब नक़ज़िल अहकामिल बातिल: व रद्दि मुहदसातिल उमूर वस्सुनन)

بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ وَأَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ﴿11﴾

११. बात यह है कि लोग क़यामत को झूठ समझते हैं, और क़यामत को झुठलाने वालों के लिए हम ने भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है।

إِذَا رَأَتْهُم مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا ﴿12﴾

१२. जब वह इन्हें दूर से देखेगी तो यह उसका गुस्से से विफरना और चिंघाड़ना सुनेंगे।

وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا ﴿13﴾

१३. और जब यह नरक के किसी तंग जगह में बाँध कर फेंक दिये जायेंगे, तो वहाँ अपने लिए मौत ही मौत पुकारेंगे।

لَّا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا ثُبُورًا كَثِيرًا ﴿14﴾

१४. (उन से कहा जायेगा) आज एक ही मौत को न पुकारो बल्कि बहुत-सी मौतों को पुकारो।[1]

قُلْ أَذَٰلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۚ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمَصِيرًا ﴿15﴾

१५. आप कह दीजिए क्या यह अच्छा है[2] या वह दायमी जन्नत जिसका वादा परहेज़गारों (सदाचारियों) को दिया गया है, जो उन का बदला है और उनके लौटने का मूल स्थान है।

لَّهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْئُولًا ﴿16﴾

१६. वे जो चाहेंगे उन के लिए वहाँ मौजूद होगा हमेशा रहने वाले। यह तो आप के रब का वादा है जिस की माँग की जानी चाहिए।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ أَأَنتُمْ أَضْلَلْتُمْ عِبَادِي هَٰؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ﴿17﴾

१७. और जिस दिन अल्लाह (तआला) उन्हें और अल्लाह के सिवाय जिन्हें ये पूजते रहे उन्हें जमा करके पूछेगा, क्या मेरे इन बंदों को तुम ने

---

[1] यानी जहन्नमी जब जहन्नम के अज़ाब से घबरा कर तमन्ना करेंगें कि उन्हें मौत आ जाये, वे तबाही के घाट उतर जायें, तो उन से कहा जायेगा कि अब एक मौत को नहीं कई मौतों को पुकारो। मतलब यह है कि अब तुम्हारी तक़्दीर में कई तरह के अज़ाब हैं, यानी मौत ही मौत है, तुम कहाँ तक मौत की माँग करोगे!

[2] "यह" इशारा है नरक के बयान अज़ाबों की तरफ़, जिन में नरकवासी जकड़े हुए होंगे कि यह अच्छा है जो कुफ़्र और मूर्तिपूजा का बदला है, या वह स्वर्ग जिसका वादा अल्लाह से डरने वालों को उन के अल्लाह से डर और अल्लाह के हुक्म की पैरवी करने पर दिया गया है, यह सवाल जहन्नम में किया जायेगा, लेकिन उसे यहाँ इसलिए बयान किया गया है कि शायद नरकवासियों के इस नतीजे से नसीहत हासिल कर के लोग अल्लाह का डर और उस के हुक्म की पैरवी का रास्ता अपना लें और इस बुरे अंजाम से बच जायें जिस का ज़िक्र यहाँ किया गया है।

سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ

सूरतुल फ़ुरक़ान-२५

सूरः फ़ुरक़ान मक्का में नाज़िल हुई और इस में सतहत्तर आयतें और छः रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا ۝١

१. बड़ी बरकत वाला है वह (अल्लाह तआला) जिस ने अपने बंदे पर फ़ुरक़ान[1] नाज़िल किया ताकि वह सभी लोगों के लिए[2] सतर्क (आगाह) करने वाला बन जाये।

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ۝٢

२. उसी अल्लाह की मिल्कियत है आकाशों और धरती पर, और वह कोई औलाद नहीं रखता, न उस के मुल्क में उसका कोई साझीदार है, और हर चीज़ को उस ने पैदा कर के एक निर्धारित (मुनासिब) रूप दे दिया है।

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ۝٣

३. और उन लोगों ने अल्लाह के सिवाय जिन्हें अपने देवता (इलाह) बना रखे हैं, वे किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते बल्कि वे ख़ुद (किसी के ज़रिये) पैदा किये जाते हैं, यह ख़ुद अपने फ़ायदे-नुक़्सान का इख़्तियार नहीं रखते और न ज़िन्दगी-मौत का, और न दोबारा जी उठने के वे मालिक हैं।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ ِۨافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ

४. और काफ़िरों ने कहा यह तो बस उसका ख़ुद बनाया झूठ है, जिस पर दूसरे लोगों ने भी उस की मदद की है[3] हक़ीक़त में यह काफ़िर

[1] फ़ुरक़ान का मतलब है सच और झूठ, तौहीद व शिर्क और इंसाफ़-नाइंसाफ़ी के बीच फ़र्क़ करने वाला, इस क़ुरआन ने खोलकर इन बातों को वाज़ेह कर दिया है, इसलिए इसे फ़ुरक़ान कहा गया है।

[2] इस से भी मालूम हुआ कि नबी ﷺ की नबूअत सारी दुनिया के लिए है और आप ﷺ सभी इंसान और जिन के लिए पथप्रदर्शक (रहनुमा) और पैग़म्बर बनाकर भेजे गये।

[3] मूर्तिपूजक कहते थे कि मोहम्मद (ﷺ) ने यह किताब गढ़ने में यहूदियों या उन के कुछ आज़ाद किये हुए गुलाम (जैसे अबू फ़किहा यसार, अदास और जबर वग़ैरह) से मदद ली है, जैसाकि सूरः अन-नहल-१०३ में इस का ज़रूरी बयान गुज़र चुका है। यहाँ क़ुरआन ने इस इल्ज़ाम को ज़ालिम और झूठा बताया है, भला एक अनपढ़ इंसान दूसरों की मदद से ऐसी किताब पेश कर

فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ﴿4﴾

बड़े ही ज़ालिम और निरे झूठ के लाने वाले हुए हैं।

وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿5﴾

५. और यह भी कहा कि यह तो पहलों की झूठी कहानियाँ हैं जो उस ने लिख रखी हैं, बस वही सुबह-शाम उस के सामने पढ़ी जाती हैं।

قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿6﴾

६. कह दीजिए कि इसे तो उस अल्लाह ने नाज़िल किया है जो आकाश और धरती की सभी छिपी बातों को जानता है। बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला और रहम करने वाला है।

وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ ؕ لَوْلَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ﴿7﴾

७. और उन्होंने कहा कि यह कैसा रसूल है कि भोजन करता है और बाज़ारों में चलता फिरता है, उस के पास कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेजा जाता कि वह भी उस के साथ होकर डराने वाला बन जाता?

اَوْ يُلْقٰٓى اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا ؕ وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿8﴾

८. या उस के पास कोई ख़ज़ाना ही डाल दिया जाता, या उस का कोई बाग़ ही होता जिस में से यह खाता, और उन ज़ालिमों ने कहा कि तुम तो ऐसे इंसान के पीछे हो लिये जिस पर जादू कर दिया गया है।

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿9﴾

९. ज़रा सोचिए तो! ये लोग आप के बारे में कैसी-कैसी बातें करते हैं कि जिस से ख़ुद ही बहक रहे हैं, और किसी तरह से भी रास्ते पर नहीं आ सकते।

تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا ﴿10﴾

१०. अल्लाह (तआला) तो ऐसा बाबरकत है कि चाहे तो आप को बहुत से ऐसे बाग़ अता कर दे जो उनके कहे हुए बाग़ों से बहुत अच्छे हों, जिनके नीचे नदियाँ लहरें मार रही हों और आप को बहुत से पक्के महल भी अता कर दे।

सकता है जो सफ़ाई और भाषा शैली और फ़साहत में बेमिसाल हो। हक़ीक़त और मारफ़त के बयान में भी अकेला, इंसान की ज़िन्दगी के लिए आवश्यक हुक्म और नियम के तफ़सीली बयान में भी लाजवाब हो और भूत की ख़बरें और भविष्य (मुस्तक़बिल) में होने वाली घटनाओं (वाक़ेआत) का पता देने और बयान करने में भी उस की सच्चाई साबित हो।

قَالُوا سُبْحَانَكَ مَا كَانَ يَنْبَغِي لَنَا أَنْ نَتَّخِذَ مِنْ دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَٰكِنْ مَتَّعْتَهُمْ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوا قَوْمًا بُورًا ﴿18﴾

भटकाया या यह ख़ुद भटक गये।[1]

१८. वे जवाब देंगे तू पाक है, ख़ुद हमें यह मुनासिब नही था कि तेरे सिवाय दूसरों को अपना वली बनाते, हक़ीक़त यह है कि तूने इन्हें और इन के बुज़ुर्गों को ख़ुशहाली अता की, यहाँ तक कि यह नसीहतें भुला बैठे, यह लोग थे ही हलाकत के लायक़।

فَقَدْ كَذَّبُوكُمْ بِمَا تَقُولُونَ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ يَظْلِمْ مِنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ﴿19﴾

१९. तो उन्होंने तो तुम्हें तुम्हारी सारी बातों में झुठलाया, अब न तो तुम में अपनी सजा फेरने की ताक़त है न मदद करने की,[2] तुम में से जिस-जिस ने ज़ुल्म किया है[3] हम उसे सख़्त अज़ाब का मज़ा चखायेंगे।

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ ۗ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً أَتَصْبِرُونَ ۗ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ﴿20﴾

२०. और हम ने आप से पहले जितने भी रसूल भेजे सब के सब खाना भी खाते थे और बाज़ारों में भी चलते-फिरते थे, और हम ने तुम में से हर एक को दूसरे के इम्तेहान का ज़रिया बना दिया[4] क्या तुम सब्र करोगे? और तेरा रब सब कुछ देखने वाला है।

---

[1] दुनिया में अल्लाह के सिवाय जिनकी इबादत की जाती रही है और की जाती रहेगी, उन में खनिज पदार्थ (पत्थर, लकड़ी और दूसरे धातुओं की मूर्तियाँ) भी हैं, जो बेजान हैं और अल्लाह के नेक बन्दे भी हैं जो जानदार हैं, जैसे हज़रत उज़ैर और हज़रत मसीह और दूसरे नेक लोग। इसी तरह फ़रिश्तों और जिन्नातों के पुजारी भी होंगे। अल्लाह तआला बेजान चीज़ों को भी अक़्ल और समझ और बोलने की ताक़त अता करेगा, और उन सभी देवताओं से पूछेगा कि बताओ मेरे बंदों को तुम ने अपनी इबादत का हुक्म दिया था या ये अपनी मर्ज़ी से तुम्हारी इबादत करके भटके थे?

[2] यह अल्लाह तआला का क़ौल है जो मूर्तिपूजकों को मुख़ातिब करके अल्लाह तआला कहेगा कि तुम जिन को अपना देवता समझते थे उन्होंने तो तुम्हें तुम्हारी बातों में झूठा कह दिया है, और तुम ने देख लिया कि उन्होंने तुम से अलग होने का एलान कर दिया है, यानी जिन को तुम अपना समझते थे वे मददगार साबित नहीं हुए, अब क्या तुम्हारे अन्दर यह ताक़त है कि तुम मेरे अज़ाब को अपने ऊपर से टाल सको और अपनी मदद कर सको?

[3] ज़ुल्म से मुराद वही शिर्क (मिश्रणवाद) है, जैसाकि पहले क़ौल से वाज़ेह है, और क़ुरआन में दूसरी जगह पर शिर्क (अल्लाह से अलावा की इबादत को) बहुत बड़ा ज़ुल्म कहा गया है।

[4] यानी हम ने उन नबियों की और उन के ज़रिये उन पर ईमान लाने वालों का इम्तेहान लिया, ताकि खरे-खोटे में भेद स्पष्ट (वाज़ेह) हो जाये, जिन्होंने इम्तेहान में सब्र किया वे कामयाब और दूसरे नाकाम रहे। इसीलिए आगे फ़रमाया : "क्या तुम सब्र करोगे?"

२१. और जिन्हें हम से मिलने की उम्मीद नहीं उन्होंने कहा कि हम पर फ़रिश्ते क्यों नहीं उतारे जाते? या हम (अपनी आँखों से) अपने रब को देख लेते? उन लोगों ने ख़ुद अपने को ही बहुत बड़ा समझ रखा है और बहुत नाफ़रमानी कर ली है।

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْنَا الْمَلَائِكَةُ أَوْ نَرَىٰ رَبَّنَا ۗ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوا فِي أَنفُسِهِمْ وَعَتَوْا عُتُوًّا كَبِيرًا (21)

२२. जिस दिन ये फ़रिश्तों को देख लेंगे उस दिन इन पापियों को कोई ख़ुशी नहीं होगी[1] और कहेंगे कि ये वंचित (महरूम) ही वंचित किये गये।

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلَائِكَةَ لَا بُشْرَىٰ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِينَ وَيَقُولُونَ حِجْرًا مَّحْجُورًا (22)

२३. और उन्होंने जो-जो अमल किये थे हम ने उन की तरफ़ बढ़ कर उन्हें कणों (ज़र्रा) की तरह तहस-नहस कर दिया।

وَقَدِمْنَا إِلَىٰ مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَّنثُورًا (23)

२४. (लेकिन) उस दिन जन्नत में रहने वालों की जगह बहुत अच्छी होगी और ख़्वाबगाह भी सुखद होगा।[2]

أَصْحَابُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَأَحْسَنُ مَقِيلًا (24)

२५. और जिस दिन आकाश बादल सहित फट जायेगा और फ़रिश्ते लगातार उतारे जायेंगे।

وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَاءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلَائِكَةُ تَنزِيلًا (25)

२६. उस दिन उचित (सहीह) रूप से मुल्क केवल रहमान का ही होगा और यह दिन काफ़िरों पर बड़ा भारी होगा।

الْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ لِلرَّحْمَٰنِ ۚ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكَافِرِينَ عَسِيرًا (26)

२७. और उस दिन ज़ालिम अपने हाथों को चबा-चबा कर कहेगा कि हाय! अच्छा होता अगर मैंने रसूल का रास्ता अपनाया होता।

وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلَىٰ يَدَيْهِ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا (27)

---

[1] उस दिन से मुराद मौत का दिन है, यानी यह काफ़िर फ़रिश्तों को देखने की तमन्ना करते हैं, लेकिन मौत के वक़्त फ़रिश्तों को देखेंगे तो उन के लिए कोई ख़ुशी और शुभ नहीं होगा।

[2] कुछ ने इस से यह मतलब निकाला है कि ईमानवालों के लिए क़यामत का यह भयानक दिन इतना कम और उनका हिसाब इतना आसान होगा कि दोपहर तक यह आज़ाद हो जायेंगे और जन्नत में यह अपने परिवार वालों और हूरों के साथ दोपहर में आराम कर रहे होंगे, जिस तरह हदीस में है कि ईमानवालों के लिए वह दिन इतना आसान होगा कि जितने में दुनिया में एक फ़र्ज़ नमाज़ अदा कर लेना। (मुसनद अहमद, हिस्सा ४, पेज ७५)

يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿28﴾

२८. हाय अफ़सोस! काश मैंने फ़लाँ को दोस्त न बनाया होता ।[1]

لَقَدْ اَضَلَّنِىْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِىْ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿29﴾

२९. उस ने तो मुझे उस के बाद भटका दिया कि नसीहत मेरे पास आ पहुँची थी और शैतान तो इंसान को (वक़्त पर) धोखा देने वाला है ।

وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِى اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿30﴾

३०. और रसूल कहेगा कि हे मेरे रब! बेशक मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को छोड़ रखा था ।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِىٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿31﴾

३१. और इस तरह हम ने हर नबी के दुश्मन कुछ मुजरिमों को बना दिया है, और तेरा रब ही हिदायत देने वाला और मदद करने वाला काफ़ी है ।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۚ كَذٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ﴿32﴾

३२. और काफ़िरों ने कहा कि उस पर पूरा क़ुरआन एक साथ ही क्यों न उतारा गया? इसी तरह (हम ने थोड़ा-थोड़ा करके उतारा) ताकि इस से हम आप के दिल को मज़बूती अता करें, और हम ने उसे ठहर-ठहर कर ही पढ़ सुनाया है ।

وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ؕ ﴿33﴾

३३. और ये आप के पास जो कोई भी मिसाल लेकर आयेंगे हम उस का सच जवाब और ठीक तफ़सीर बता देंगे ।[2]

اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ ۙ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿34﴾

३४. जो लोग अपने मुँह के बल जहन्नम की तरफ़ जमा किये जायेंगे, वही बुरी जगह वाले और भटके हुए रास्ते वाले हैं ।

---

[1] इस से मालूम हुआ कि अल्लाह के नाफ़रमानों से रिश्ता और दोस्ती नहीं रखनी चाहिए, इसलिए कि सज्जन इंसान की संगत से इंसान सज्जन और बुरे इंसान की संगत इंसान को बुरा बनाती है ।

[2] यह क़ुरआन को ठहर-ठहर कर उतारे जाने की नीति (हिक्मत) और वजह को बयान किया जा रहा है कि ये मूर्तिपूजक जब भी कोई मिसाल या मुश्किल और शक पेश करेंगे तो क़ुरआन के ज़रिये हम उस का जवाब या वज़ाहत पेश करेंगे और इस तरह उन्हें लोगों को भटकाने का मौक़ा नहीं मिलेगा ।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ﴿35﴾

३५. और बेशक हम ने मूसा को किताब दी और उन के साथ उन के भाई हारून को उनका सहायक (वज़ीर) बनाया।

فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ﴿36﴾

३६. और कह दिया कि तुम दोनों उन लोगों की तरफ़ जाओ जो हमारी निशानियों को झुठला रहे हैं, फिर हम ने उन्हें बिल्कुल ही हलाक (ध्वस्त) कर दिया।

وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ۭ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿37﴾

३७. और नूह की क़ौम ने भी जब रसूलों को झूठा कहा तो हम ने उन्हें डुबो दिया और लोगों के लिए उन्हें शिक्षा (इबरत) हासिल करने का प्रतीक (मज़हर) बना दिया और हम ने ज़ालिमों के लिए सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है।

وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا۟ وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ﴿38﴾

३८. और 'आद' जाति और 'समूद' जाति और कुयें वालों को[1] और उन के बीच के बहुत से सम्प्रदाय (फ़िर्क़ों) को (नाश कर दिया)।

وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ۡ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ﴿39﴾

३९. और हम ने हर एक के सामने मिसालों को बयान किया, फिर हर एक को पूरी तरह से नाश कर दिया।

وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ۭ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ﴿40﴾

४०. और ये लोग उस बस्ती के पास से भी आते-जाते हैं जिन पर बुरी तरह की बारिश की गयी,[2] क्या यह फिर भी उसे देखते नहीं? हक़ीक़त यह है कि उन्हें मरकर दोबारा ज़िन्दा होकर खड़े होने पर यक़ीन ही नहीं।

---

[1] رس का मतलब है कुआँ, أصحاب الرس का मतलब हुआ कुएँ वाले। इस के निर्धारण (ताईन) में मुफ़स्सिरों में इख़्तेलाफ़ है, इमाम इब्ने जरीर तबरी ने कहा है, इस से मुराद खाई वाले हैं, जिनका बयान सूरः अल-बुरूज में है। (इब्ने कसीर)

[2] बस्ती से लूत की क़ौम की बस्तियाँ सदूम और अमूरा वग़ैरह मुराद हैं और बुरी बारिश से पत्थरों की बारिश मुराद है, इन बस्तियों को उलट दिया गया था, उस के बाद उन के ऊपर कंकड़-पत्थर की बारिश की गई थी, जैसाकि सूरः हूद-८२ में बयान किया गया है, ये बस्तियाँ सीरिया और फ़िलिस्तीन के रास्ते में पड़ती हैं, जिन से गुज़र कर मक्कावासी आते-जाते थे।

وَإِذَا رَأَوْكَ إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا ۖ أَهَٰذَا الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ﴿41﴾

४१. और तुम्हें जब कभी देखते हैं तो तुम से मज़ाक़ करने लगते हैं, कि क्या यही वह इंसान हैं जिन्हें अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है।

إِن كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ آلِهَتِنَا لَوْلَا أَن صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۚ وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿42﴾

४२. (वह तो कहिए) कि हम डटे रहे नहीं तो इन्होंने तो हमें हमारे देवताओं (माबूदों) से भटका देने में कोई कमी नहीं छोड़ी थी, और जब ये अज़ाबों को देखेंगे तो उन्हें वाज़ेह तौर से मालूम हो जायेगा कि पूरी तरह से रास्ते से भटका हुआ कौन था?

أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ أَفَأَنتَ تَكُونُ عَلَيْهِ وَكِيلًا ﴿43﴾

४३. क्या आप ने उसे भी देखा जो अपनी ख़्वाहिशात को अपना देवता बनाये हुए है, क्या आप उस के ज़िम्मेदार हो सकते हैं।

أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ ۚ إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ ۖ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿44﴾

४४. क्या आप इसी सोंच में हैं कि उन में से ज़्यादातर सुनते या समझते हैं, वह तो निरे जानवर की तरह हैं, बल्कि उन से भी ज़्यादा भटके हुए।[1]

أَلَمْ تَرَ إِلَىٰ رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ﴿45﴾

४५. क्या आप ने नहीं देखा कि आप के रब ने छाया को किस प्रकार वसीअ (विस्तृत) कर दिया है?[2] अगर चाहता तो उसे ठहरा हुआ कर देता, फिर हम ने सूरज को उस पर दलील बनाया।

ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا ﴿46﴾

४६. फिर हम ने उसे धीरे-धीरे अपनी तरफ़ खींच लिया।

---

[1] यानी ये चौपाये जिस मक़सद के लिए पैदा किये गये हैं, उसे वे समझते हैं। लेकिन इंसान जिसे एक अल्लाह की इबादत के लिए पैदा किया गया था, वह रसूलों के बाख़बर कर देने के बावजूद अल्लाह के साथ शिर्क करता है और दर-दर पर अपना माथा टेकता फिरता है, इस बिना पर ये बेशक चौपाये से भी ज़्यादा बुरे और भटके हुए हैं।

[2] यहाँ से दोबारा तौहीद के दलायल शुरू होते हैं। देखो, अल्लाह तआला ने दुनिया में किस तरह छाया फैलायी है जो सुबह के बाद से सूरज के निकलने तक रहती है, यानी उस वक़्त धूप नहीं होती धूप के साथ यह सिमटना और सिकुड़ना शुरू हो जाता है।

४७. और वही है जिस ने रात को तुम्हारे लिए लिबास बनाया और नींद सुखमय बनायी, और दिन को उठ खड़े होने का वक़्त।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَجَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ﴿47﴾

४८. और वही है जो रहमत (कृपा) की बारिश से पहले ख़ुशख़बरी देने वाली हवा को भेजता है और हम आकाश से पाक पानी बरसाते हैं।

وَهُوَ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۚ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ﴿48﴾

४९. ताकि उस के ज़रिये मरे हुए नगर को ज़िन्दा कर दें और उसे हम अपनी मख़लूक़ में से बहुत से जानवरों और इंसानों को पिलाते हैं।

لِنُحْيِيَ بِهِ بَلْدَةً مَيْتًا وَنُسْقِيَهُ مِمَّا خَلَقْنَا أَنْعَامًا وَأَنَاسِيَّ كَثِيرًا ﴿49﴾

५०. और बेशक हम ने इसे उन के बीच कई तरह से बयान किया ताकि वह नसीहत हासिल करें, लेकिन फिर भी ज़्यादातर लोगों ने नाशुक्री के सिवाय माना नहीं।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَاهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوا فَأَبَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ﴿50﴾

५१. और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते।

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ نَذِيرًا ﴿51﴾

५२. तो आप काफ़िरों का कहना न करें और क़ुरआन के ज़रिये उन से पूरी ताक़त से महा धर्मयुद्ध (जिहाद) करें।

فَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَجَاهِدْهُمْ بِهِ جِهَادًا كَبِيرًا ﴿52﴾

५३. और वही है जिस ने दो समुद्रों को आपस में मिला रखा है, यह है मीठा मज़ेदार और यह है खारी कड़ुवा,[1] और इन दोनों के बीच एक पर्दा और मज़बूत ओट कर दी।

وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هَٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَهَٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَحِجْرًا مَحْجُورًا ﴿53﴾

५४. और वह है वही जिस ने पानी से इंसान को पैदा किया, फिर उसे वंश वाला और ससुराली रिश्तों वाला कर दिया।[2] बेशक आप

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا وَصِهْرًا ۗ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ﴿54﴾

---

[1] मीठे पानी को فرات कहते हैं, فرات का मतलब है काट देना, तोड़ देना, मीठा पानी प्यास को काटता है यानी ख़त्म कर देता है, أجاج बहुत खारी या कड़ुवा पानी।

[2] वंश (नसब) से मुराद वह रिश्ता है, जो माता-पिता की तरफ़ से हो, और صهر से मुराद वह क़रीबी रिश्ता है जो विवाह के बाद बीवी की तरफ़ से हो, जिस को हमारे समाज में ससुराली रिश्ता कहा जाता है। इन दोनों रिश्तों का बयान सूर: अन-निसा-२३ और सूर: अन-निसा-२२

का रब हर चीज पर क़ादिर है।

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ ظَهِيرًا (55)

५५. और यह अल्लाह को छोड़ कर उन की इबादत करते हैं, जो न तो उन्हें कोई फ़ायेदा पहुँचा सकें न कोई नुक़सान पहुँचा सकें, काफ़िर तो है ही अपने रब के ख़िलाफ़ (शैतान) की मदद करने वाला।

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا (56)

५६. और हम ने तो आप को ख़ुशख़बरी और डर (त्रासिक) सुनाने वाला (नबी) बना कर भेजा है।

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَن شَاءَ أَن يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا (57)

५७. कह दीजिए कि मैं (क़ुरआन के पहुँचाने पर) तुम से कोई उजरत नही चाहता लेकिन जो इंसान अपने रब की तरफ़ रास्ता पकड़ना चाहे।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ ۚ وَكَفَىٰ بِهِ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا (58)

५८. और उस हमेशा रहने वाले अल्लाह (तआला) पर पूरा यक़ीन करें जिसे कभी मौत नहीं, और उसकी तारीफ़ के साथ पवित्रता (तस्बीह) का बयान करते रहें, वह अपने बंदों के गुनाहों को अच्छी तरह जानता है।

الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ الرَّحْمَٰنُ فَاسْأَلْ بِهِ خَبِيرًا (59)

५९. वही है जिस ने आकाशों और धरती और उनके बीच की चीज़ों को छः दिन में पैदा कर दिया, फिर अर्श पर बुलन्द हुआ, वह रहमान है, आप उस के बारे में किसी जानकार से पूछ लें।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَٰنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمَٰنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ۩ (60)

६०. और उन से जब भी कहा जाता है कि दयालु (रहमान) को सज्दा करो, तो वे कहते हैं कि रहमान है क्या? क्या हम उस को सज्दा करें जिस का तू हमें हुक्म दे रहा है और (इस दावत से) उन की नफ़रत ही बढ़ती है।

में बयान किया गया है, और एक ही औरत से दो के दूध पीने से जो रिश्ता होता है, हदीस के ऐतबार से वह वंशीय सम्बन्धों (नसबी रिश्तों) में शामिल है।

६१. बहुत बाबरकत (शुभ) है वह जिस ने आसमान में बुर्ज बनाये और उस में सूरज बनाया, और रौशन चाँद भी।

تَبٰرَكَ الَّذِيْ جَعَلَ فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ﴿61﴾

६२. और उसी ने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आने जाने वाला बनाया, उस इंसान की नसीहत के लिए जो नसीहत हासिल करने या शुक्रिया अदा करने का इरादा रखता हो।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ﴿62﴾

६३. और रहमान (दयालु) के सच्चे बंदे वह हैं जो धरती पर नरमी से चलते हैं और जब जाहिल लोग उन से बातें करने लगते हैं तो वह कह देते हैं कि सलाम है।[1]

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿63﴾

६४. और जो अपने रब के सामने सज्दा करते और खड़े होकर रात गुज़ारते हैं।

وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ﴿64﴾

६५. और जो ये दुआयें (विनय) करते हैं कि हे हमारे रब! हम से नरक (जहन्नम) का अज़ाब दूर ही रख क्योंकि उसका अज़ाब चिमट जाने वाला है।[2]

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿65﴾

६६. वह स्थाई (मुस्तक़िल) जगह और रहने के ऐतबार से बुरी जगह है।

اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿66﴾

६७. और जो ख़र्च करते वक़्त भी न तो इसराफ़ करते हैं, न कंजूसी, बल्कि इन दोनों के बीच का दरमियानी रास्ता होता है।

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿67﴾

---

[1] सलाम से मुराद यहाँ मुँह मोड़ना और विवाद को छोड़ देना है, यानी ईमानवाले जाहिल लोगों और कटबहस करने वालों से उलझते नहीं, बल्कि ऐसे मौक़े पर टाल जाते हैं और उन से बचने की कोशिश करते हैं और बिना फ़ायदे के बहस नहीं करते।

[2] इस से मालूम हुआ कि दयालु (रहमान) अल्लाह के बंदे वह हैं जो एक तरफ़ रातों को जागकर अल्लाह की इबादत करते हैं और दूसरी तरफ़ डरते भी हैं कि कहीं किसी गलती या सुस्ती की वजह से अल्लाह की पकड़ में न आ जायें इसीलिए वे नरक के अज़ाब से छुटकारा माँगते हैं। यानी अल्लाह की इबादत और आज्ञाकारिता (इताअत) पर किसी तरह का गर्व और घमण्ड नहीं होना चाहिए।

وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ يَلْقَ أَثَامًا (68)

६८. और जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे देवता (माबूद) को नहीं पुकारते और किसी ऐसे इंसान को जिस का क़त्ल करना अल्लाह तआला ने हराम किया हो, सिवाय हक़ के वह क़त्ल नहीं करते न वह बदकार होते हैं[1] और जो कोई यह अमल करे वह अपने ऊपर कड़ी यातना (वबाल) लेगा।

يُضَاعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدْ فِيهِ مُهَانًا (69)

६९. उसे क़यामत के दिन दुगुना अज़ाब दिया जायेगा और वह अपमान और अनादर (रुसवाई) के साथ हमेशा वहीं रहेगा।

إِلَّا مَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا (70)

७०. उन लोगों के सिवाय जो माफ़ी माँग लें और ईमान लायें और नेक काम करें[2] ऐसे लोगों के गुनाहों को अल्लाह (तआला) नेकी में बदल देता है, अल्लाह तआला बड़ा बख़्शने वाला और रहम करने वाला है।

وَمَن تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مَتَابًا (71)

७१. और जो इंसान माफ़ी माँग ले और नेकी के काम करे तो वह हक़ीक़त में अल्लाह (तआला) की तरफ़ सच प्रवृति (झुकाव) रखता है।

---

[1] हदीस में रसूलुल्लाह ﷺ से सवाल किया गया, कौन सा गुनाह सब से बड़ा है? आप ﷺ ने फ़रमाया: यह कि तू अल्लाह के साथ किसी को शामिल करे, जबकि हक़ीक़त में उस ने तुझे पैदा किया, उस ने पूछा कि उस के बाद कौन सा बड़ा गुनाह है? फ़रमाया अपनी औलाद को इस डर से क़त्ल करना कि वह तेरे साथ खायेगी। उस ने पूछा फिर कौन सा? आप ﷺ ने फ़रमाया यह कि तू अपने पड़ोसी की बीवी से व्याभिचार (ज़िना) करे। फिर आप ﷺ ने फ़रमाया कि इन बातों की तसदीक़ इस आयत से होती है। फिर आप ﷺ ने इसी आयत को पढ़ा। (अल-बुख़ारी, तफ़सीर सूर: अल-बक़र:, मुस्लिम किताबुल ईमान, बाबु कौनिश-शिर्के अक़बहुज़ ज़ुनूब)

[2] इस से मालूम हुआ कि दुनिया में साफ़ मन से माफ़ी माँगने से हर गुनाह से माफ़ी मिल सकती है, चाहे वह कितना बड़ा हो।

وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ﴿72﴾

७२. और जो लोग झूठी गवाही नहीं देते,[1] और जब वे किसी व्यर्थ (लग्व) के क़रीब से गुज़रते हैं तो इज़्ज़त से गुज़र जाते हैं।[2]

وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ﴿73﴾

७३. और जब उन्हें उन के रब (के क़ौल और वादे) की आयतें सुनाई जाती हैं तो वे अंधे-बहरे होकर उन पर नहीं गिरते।

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿74﴾

७४. और वह यह दुआ (विनय) करते हैं कि हे हमारे रब! तू हमें हमारी पत्नियों और सन्तानों से आँखों को ठंडक अता कर और हमें परहेज़गारों का अगुवा बना दे।

اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ﴿75﴾

७५. यही वे लोग हैं जिन्हें उन के सब्र (सहन) के बदले (जन्नत की ऊँची) अटारियाँ अता की जायेंगी, जहाँ उन्हें आशीवाद और सलाम पहुँचाया जायेगा।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿76﴾

७६. इस में वे हमेशा रहेंगे, वह बहुत ही अच्छी जगह और आराम की जगह है।

قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَاۗؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ﴿77﴾

७७. कह दीजिए! अगर तुम्हारी नर्म दुआ (प्रार्थना) न होती तो मेरा रब तुम्हारी कभी फ़िक्र न करता, तुम तो झुठला चुके अब जल्द ही उसकी सज़ा तुम्हें चिमट जाने वाली होगी।

---

[1] زور (ज़ूर) का मतलब है झूठ। हर झूठी चीज़ भी झूठ है, इसीलिए झूठी गवाही से लेकर कुफ़्र, शिर्क और हर तरह की ग़लत बातें जैसे खेल-कूद, गाना और दूसरे बेकार रीति-रिवाज इसी में शामिल है और अल्लाह की इबादत करने वालों की यह भी विशेषता (ख़ुसूसियत) है कि वे किसी भी झूठ में और झूठी सभा में उपस्थिति (हाज़िर) नहीं होते।

[2] बेकार (व्यर्थ) हर वह बात और काम है जिस में धर्मानुसार कोई फ़ायेदा न हो, यानी ऐसे कामों और बातों में भी वह हिस्सा नहीं लेते बल्कि शान्ति (ख़ामोशी) के साथ और इज़्ज़त के साथ निकल जाते हैं।

सूरतुश्शुअरा-२६

سُوْرَةُ الشُّعَرَاۗءِ

सूरः शुअरा मक्का में नाज़िल हुई और इस में दो सौ सत्ताईस आयतें और ग्यारह रूकूअ है।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. ता•सीन•मीम•

طٰسۗمّۗ ﴿1﴾

२. ये आयतें रौशन किताब की हैं।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿2﴾

३. उन के ईमान न लाने पर शायद आप तो अपना प्राण (जान) त्याग देंगे।

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿3﴾

४. अगर हम चाहते तो उन पर आकाश से कोई ऐसी निशानी उतारते कि जिस के सामने उन की गर्दनें झुक जातीं।

اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ﴿4﴾

५. और उन के पास रहमान की तरफ से जो भी नई शिक्षायें (नसीहतें) आयीं यह उस से मुंह फेरने वाले बन गये।

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا عَنْهُ مُعْرِضِيْنَ ﴿5﴾

६. उन लोगों ने झुठलाया है अब उन के पास जल्द ही उसकी ख़बरें आ जायेंगी, जिस के साथ वे मज़ाक कर रहे हैं।

فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰۗؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿6﴾

७. क्या उन्होंने धरती की तरफ नहीं देखा? कि हम ने उसमें हर तरह के ख़ूबसूरत जोड़े कितने उगाये हैं।

اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ﴿7﴾

८. बेशक उस में बड़ी निशानी है, और उन में के ज्यादातर लोग ईमान (विश्वास) वाले नही हैं।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿8﴾

९. और तेरा रब बेशक वही प्रभावशाली (ग़ालिब) और रहम करने वाला है।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿9﴾

وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ مُوسَىٰٓ أَنِ ٱئْتِ ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ (10)

१०. और जब आप के रब ने मूसा को पुकारा कि तू जालिम लोगों के पास जा ।[1]

قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۚ أَلَا يَتَّقُونَ (11)

११. फ़िरऔन की कौम के पास, क्या वह सदाचार (तक़्वा) न करेंगे ।

قَالَ رَبِّ إِنِّيٓ أَخَافُ أَن يُكَذِّبُونِ (12)

१२. मूसा ने कहा मेरे रब ! मुझे तो डर है कि कहीं वह मुझे झुठला (न) दें ।

وَيَضِيقُ صَدْرِى وَلَا يَنطَلِقُ لِسَانِى فَأَرْسِلْ إِلَىٰ هَٰرُونَ (13)

१३. और मेरा सीना (हृदय) तंग हो रहा है, मेरी जबान चल नहीं रही, इसलिए तू हारून की तरफ़ भी वह्यी (प्रकाशना) भेज ।

وَلَهُمْ عَلَىَّ ذَنۢبٌ فَأَخَافُ أَن يَقْتُلُونِ (14)

१४. और उन का मुझ पर मेरी एक गलती का (दावा) भी है, मुझे डर है कि कहीं वह मुझे मार न डालें ।

قَالَ كَلَّا ۖ فَٱذْهَبَا بِـَٔايَٰتِنَآ ۖ إِنَّا مَعَكُم مُّسْتَمِعُونَ (15)

१५. (बारी तआला ने) कहा कि कभी ऐसा न होगा, तुम दोनों हमारी निशानियाँ लेकर जाओ, हम ख़ुद सुनने वाले तुम्हारे साथ हैं ।

فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَآ إِنَّا رَسُولُ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ (16)

१६. तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाकर कहो कि बेशक हम सारी दुनिया के रब के भेजे हुए हैं ।

أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ (17)

१७. कि तू हमारे साथ इस्राईल की औलाद को भेज दे ।

قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ فِينَا وَلِيدًا وَلَبِثْتَ فِينَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِينَ (18)

१८. (फ़िरऔन ने) कहा कि क्या हम ने तुझे तेरे बचपन में अपने यहाँ पोषण (परवरिश) नहीं किया था? और तूने अपनी उम्र के बहुत से

[1] यह रब की उस वक़्त की पुकार है जब हज़रत मूसा मदयन से अपनी बीवी के साथ वापस आ रहे थे, रास्ते में उन्हें तापने के लिए आग की ज़रूरत महसूस हुई तो आग की खोज में तूर पहाड़ तक पहुँच गये, जहाँ से आकाशवाणी (आसमानी आवाज़) ने उनका स्वागत किया और उन्हें नबूअत के पद से सुशोभित (सरफ़राज़) किया गया और ज़ालिमों तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने का कर्तव्य (फ़र्ज़) उनको सौंपा गया ।

साल हम में नहीं गुज़ारे?[1]

وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِي فَعَلْتَ وَأَنْتَ مِنَ الْكَٰفِرِينَ ﴿19﴾

१९. और फिर तू अपना वह काम कर गया जो कर गया और तू नाशुक्रों में से है।

قَالَ فَعَلْتُهَا إِذًا وَأَنَا مِنَ الضَّآلِّينَ ﴿20﴾

२०. (हज़रत मूसा ने) जवाब दिया कि मैंने इस काम को उस वक़्त किया था, जबकि मैं रास्ता भूले हुए लोगों में से था।[2]

فَفَرَرْتُ مِنكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِي رَبِّي حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿21﴾

२१. फिर तुम से डर खाकर मैं तुम से भाग गया, फिर मुझे मेरे रब ने हुक्म और इल्म अता किया और मुझे अपने पैग़म्बरों में से कर दिया।

وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ أَنْ عَبَّدتَّ بَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ﴿22﴾

२२. और मुझ पर क्या तेरा यही वह एहसान है? जिसे तू ज़ाहिर कर रहा है कि तूने इस्राईल की औलाद को ग़ुलाम (दास) बना रखा है।

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَٰلَمِينَ ﴿23﴾

२३. फ़िरऔन ने कहा कि सारी दुनिया का रब क्या है?

قَالَ رَبُّ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَآ إِن كُنتُم مُّوقِنِينَ ﴿24﴾

२४. (हज़रत मूसा ने) कहा वह आकाशों और धरती और उन के बीच की सभी चीज़ों का रब है, अगर तुम ईमान रखने वाले हो।

قَالَ لِمَنْ حَوْلَهُۥٓ أَلَا تَسْتَمِعُونَ ﴿25﴾

२५. (फ़िरऔन ने) अपने निकटवर्तियों (क़रीबी लोगों) से कहा कि क्या तुम सुन नहीं रहे?

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ ءَابَآئِكُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿26﴾

२६. (हज़रत मूसा ने) कहा वह तुम्हारा और तुम्हारे पूर्वजों (पहलों) का रब है।

---

[1] कुछ कहते हैं कि १८ साल फ़िरऔन के महल में गुज़ारे, कुछ के क़रीब ३० और कुछ के क़रीब ४० वर्ष। यानी इतनी उम्र गुज़ारने के बाद कुछ साल इधर-उधर रहकर अब तू नबूअत का दावा करने लगा है?

[2] यानी यह क़त्ल की कोशिश नहीं थी बल्कि एक घूंसा ही था जो उसे मारा था, जिस से उस की मौत हो गई। इसके सिवाय यह वाक़ेआ (घटना) भी नबूअत से पहले की है, जबकि मुझे इल्म का यह नूर नहीं दिया गया था।

قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمُ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونٌ ﴿27﴾

२७. (फ़िरऔन ने) कहा (लोगो)! तुम्हारा यह रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है, यह तो बिल्कुल ही दीवाना है।

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِن كُنتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿28﴾

२८. (हजरत मूसा ने) कहा वही पूरब और पश्चिम का और उन के बीच की सभी चीजों का रब है, अगर तुम अक़्ल रखते हो।

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ إِلَٰهًا غَيْرِي لَأَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُونِينَ ﴿29﴾

२९. (फ़िरऔन) कहने लगा (सुन ले) अगर तूने मेरे सिवाय किसी को देवता (माबूद) बनाया तो मैं तुझे बन्दियों में डाल दूंगा।[1]

قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِينٍ ﴿30﴾

३०. (मूसा ने) कहा चाहे मैं तेरे पास कोई खुली चीज ले आऊँ?

قَالَ فَأْتِ بِهِ إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿31﴾

३१. (फ़िरऔन ने) कहा अगर तू सच्चों में से है तो उसे पेश कर।

فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿32﴾

३२. आप ने (उसी वक़्त) अपनी छड़ी डाल दी जो अचानक खुल्लम-खुल्ला (बहुत बड़ा) अजगर बन गई।[2]

وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّاظِرِينَ ﴿33﴾

३३. और अपना हाथ खींच निकाला तो वह भी उसी वक़्त हर देखने वाले को सफेद रोशनी वाला दिखायी देने लगा।

قَالَ لِلْمَلَإِ حَوْلَهُ إِنَّ هَٰذَا لَسَاحِرٌ عَلِيمٌ ﴿34﴾

३४. (फ़िरऔन) अपने निकटवर्ती (क़रीबी) सरदारों से कहने लगा कि यह तो कोई बहुत बड़ा माहिर जादूगर है।

---

[1] फ़िरऔन ने जब देखा कि मूसा ؑ कई तरह से सारी दुनिया और आख़िरत के रब के पूरे मालिक की वज़ाहत (स्पष्टीकरण) कर रहे हैं जिस का कोई ठीक जवाब उस से नहीं बन पा रहा है तो उस ने दलीलों को छोड़ कर धमकी देना शुरू कर दिया और मूसा को जेल में डालने के लिए डराया।

[2] कई जगह पर ثعبان (सांप) को حية (नाग) और कई जगह पर جان कहा गया है। ثعبان वह सांप होता है जो बड़ा हो और جان छोटे सांप को कहते हैं और حية छोटे-बड़े दोनों तरह के सांप को बोला जाता है। (फ़तहुल क़दीर) यानी यह मोजिज़ा देते वक़्त लाठी ने पहले छोटे सांप की शक्ल धारण (अख़्तियार) किया फिर देखते ही देखते अजगर बन गया। والله أعلم

يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِّنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِ ۖ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿35﴾

३५. यह तो चाहता है कि अपने जादू के बल से तुम्हें तुम्हारी धरती से निकाल दे, बताओ अब तुम क्या राय देते हो?

قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿36﴾

३६. उन सब ने कहा आप इसे और इस के भाई को स्थगित (मुहलत) दीजिए और सभी नगरों में जमा करने वालों को भेज दीजिए।

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيمٍ ﴿37﴾

३७. जो आप के पास माहिर जादूगरों को ले आयें।

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿38﴾

३८. फिर एक मुक़र्रर दिन के वक़्त पर सभी जादूगर जमा किये गये।

وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنتُم مُّجْتَمِعُونَ ﴿39﴾

३९. और आम लोगों से भी कह दिया गया कि तुम भी जमा हो जाओगे।

لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ إِن كَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ﴿40﴾

४०. ताकि अगर जादूगर ग़ालिब हो जायें तो हम उन्हीं की पैरवी करेंगे।

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ أَئِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿41﴾

४१. जादूगर आकर फ़िरऔन से कहने लगे कि अगर हम जीत गये तो हमें कुछ उपहार (इन्आम) भी मिलेगा।

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿42﴾

४२. (फ़िरऔन ने) कहा हाँ! (बड़ी ख़ुशी से) बल्कि ऐसी हालत में तुम मेरे ख़ास दरबारी बन जाओगे।

قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنتُم مُّلْقُونَ ﴿43﴾

४३. (हज़रत) मूसा ने जादूगरों से कहा जो कुछ तुम्हें डालना है डाल दो।

فَأَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ﴿44﴾

४४. उन्होंने अपनी रस्सियाँ और डन्डे डाल दिये और कहने लगे फ़िरऔन की इज़्ज़त की क़सम! हम ज़रूर विजयी (ग़ालिब) होंगे।

فَأَلْقَىٰ مُوسَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿45﴾

४५. अब (हज़रत) मूसा ने भी अपनी छड़ी डाल दी, जिस ने उसी पल उन के झूठ के बनाये खेल को निगलना शुरू कर दिया।

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ ﴿46﴾

४६. यह देखते ही जादूगर सज्दे में गिर गये।

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿47﴾

४७. और उन्होंने साफ़ तौर से कह दिया कि हम तो सारे लोक के रब पर ईमान ले आये।

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿48﴾

४८. यानी मूसा और हारून के रब पर।

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۥ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿49﴾

४९. (फ़िरऔन ने) कहा कि मेरी इजाज़त से पहले तुम उस पर ईमान ले आये। बेशक यही तुम्हारा सरदार (बड़ा गुरू) है जिस ने तुम सब को जादू सिखाया है[1] तो तुम्हें अभी-अभी मालूम हो जायेगा। क़सम है, मैं भी तुम्हारे हाथ-पैर उल्टे तौर से काट दूंगा और तुम सब को फांसी पर लटका दूंगा।

قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۡ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿50﴾

५०. उन्होंने कहा कि कोई फ़िक्र नहीं हम तो अपने रब की तरफ़ लौटकर जाने वाले ही हैं।

اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿51﴾

५१. इस बिना पर कि हम सब से पहले ईमान वाले बने हैं, हमें आशा है कि हमारा रब हमारी सभी ग़ल्तियां माफ़ कर देगा।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿52﴾

५२. और हम ने मूसा को वह्यी (प्रकाशना) की कि रातों-रात मेरे बंदों को निकाल ले जा, तुम सब पीछा किये जाओगे।[2]

[1] फ़िरऔन के लिए यह वाक़ेआ अजीब और बहुत आश्चर्यजनक (ताज्जुब वाला) था कि जिन जादूगरों के ज़रिये वह जीत और कामयाबी की उम्मीद लगाये बैठा था, वही न केवल हार गये बल्कि उसी समय वे उस रब पर ईमान ले आये जिस ने हज़रत मूसा और हारून को निशानी और मोजिज़ा देकर भेजा था, लेकिन बजाय इस के कि फ़िरऔन भी ग़ौर व फ़िक्र करके ईमान ले आता, उस ने तकब्बुर घमण्ड का रास्ता अपनाया और जादूगरों को डराना धमकाना शुरू कर दिया और कहा कि तुम सब के सब इस के शिष्य (चेले) हो।

[2] जब मिस्र देश में हज़रत मूसा का निवास ज़्यादा वक़्त तक हो गया और हर तरह से उन्होंने फ़िरऔन और उस के दरबारियों पर साबित कर दिया, लेकिन उस के बावजूद वे ईमान लाने के लिए तैयार नहीं हुए तो अब इसके सिवाय कोई रास्ता बाक़ी नहीं रह गया था कि उन्हें सज़ा और अज़ाब से पीड़ित (दोचार) किया जाये। इसलिए अल्लाह तआला ने मूसा को हुक्म दिया कि रातों-रात इस्राईल की औलाद को लेकर यहाँ से निकल जायें, और कहा कि फ़िरऔन तुम्हारे पीछे आयेगा, घबराना नहीं।

فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿53﴾

५३. फ़िरऔन ने नगरों में जमा करने वालों को भेज दिया।

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ﴿54﴾

५४. कि बेशक यह गुट बहुत ही कम तादाद में है।[1]

وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ﴿55﴾

५५. और उस पर ये हमें बहुत क्रोधित (ग़ज़बनाक) कर रहे हैं।

وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ﴿56﴾

५६. और बेशक हम बड़ी तादाद में हैं, उन से सावधान (चौकन्ना) रहने वाले।

فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّ عُيُوْنٍ ﴿57﴾

५७. आख़िरकार हम ने उन्हें बाग़ों और चश्मों से निकाल बाहर किया।

وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿58﴾

५८. और ख़ज़ानों से और अच्छे-अच्छे जगहों से।

كَذٰلِكَ ؕ وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿59﴾

५९. इसी तरह हुआ, और हम ने उन (सभी चीज़ों) का वारिस इस्राईल की औलाद को बना दिया।

فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ﴿60﴾

६०. इसलिए फ़िरऔन के पैरोकार सूरज निकलते ही उन का पीछा करने निकल पड़े।

فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ﴿61﴾

६१. इसलिए जब दोनों ने एक-दूसरे को देख लिया तो मूसा के साथियों ने कहा, हम तो बेशक पकड़ लिये गये।

قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ﴿62﴾

६२. (मूसा ने) कहा कभी नहीं। यक़ीन करो, मेरा रब मेरे साथ है जो ज़रूर मुझे रास्ता दिखायेगा।

فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ؕ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ﴿63﴾

६३. हम ने मूसा की तरफ़ वह्यी (प्रकाशना) भेजी कि समुद्र के पानी पर अपनी छड़ी मार, तो उसी वक़्त समुद्र फट गया और हर एक हिस्सा पानी के बड़े पहाड़ के बराबर हो गया।[2]

---

[1] यह बेइज़्ज़त करने के लिए कहा, वर्ना उनकी तादाद छ: लाख बतायी जाती है।

[2] فرق का मतलब है समुद्र का हिस्सा, طود का मतलब है पहाड़। यानी पानी का हर एक हिस्सा

وَأَزْلَفْنَا ثَمَّ الْآخَرِينَ ﴿64﴾

६४. और हम ने उसी जगह पर दूसरों को क़रीब ला खड़ा कर दिया।

وَأَنجَيْنَا مُوسَىٰ وَمَن مَّعَهُ أَجْمَعِينَ ﴿65﴾

६५. और मूसा को और उसके सभी साथियों को मुक्ति प्रदान (नजात अता) कर दी।

ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ﴿66﴾

६६. फिर दूसरे सभी को डुबो दिया।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿67﴾

६७. बेशक इसमें बड़ी शिक्षा (नसीहत) है, और उन में के ज़्यादातर लोग ईमान वाले नहीं।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿68﴾

६८. और बेशक आप का रब बड़ा प्रभावशाली (ग़ालिब) और रहम करने वाला है।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ إِبْرَاهِيمَ ﴿69﴾

६९. और उन्हें इब्राहीम का वाक़ेआ भी सुना दो।

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ﴿70﴾

७०. जबकि उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया कि तुम किस की इबादत करते हो।

قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عَاكِفِينَ ﴿71﴾

७१. उन्होंने जवाब दिया कि हम मूर्तियों की इबादत करते हैं, हम तो बराबर उन के पुजारी बने बैठे हैं।

قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ﴿72﴾

७२. आप (عليه السلام) ने फ़रमाया कि जब तुम उन्हें पुकारते हो तो क्या वह सुनते भी हैं?

أَوْ يَنفَعُونَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ ﴿73﴾

७३. या तुम्हें फ़ायेदा-नुक़सान भी पहुँचा सकते हैं।

قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿74﴾

७४. उन्होंने कहा यह (हम कुछ नहीं जानते) हम ने तो अपने पूर्वजों (बुज़ुर्गों) को इस तरह करते पाया।

बड़े पहाड़ के रूप में खड़ा हो गया। यह अल्लाह तआला की तरफ़ से मोजिज़ा का इज़हार था ताकि मूसा और उनकी क़ौम फ़िरऔन से छुटकारा पा ले, अल्लाह के इस समर्थन (ताइद) के बिना फ़िरऔन से छुटकारा मुमकिन नहीं था।

قَالَ أَفَرَءَيْتُم مَّا كُنتُمْ تَعْبُدُونَ (75)

७५. (आप ने) कहा कुछ जानते भी हो, जिन्हें तुम पूज रहे हो।

أَنتُمْ وَءَابَآؤُكُمُ ٱلْأَقْدَمُونَ (76)

७६. तुम और तुम्हारे अगले बाप-दादा,

فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّىٓ إِلَّا رَبَّ ٱلْعَٰلَمِينَ (77)

७७. वे सभी मेरे दुश्मन हैं सिवाय सच्चे अल्लाह (तआला) के जो सारे जहाँ का पालनहार है।

ٱلَّذِى خَلَقَنِى فَهُوَ يَهْدِينِ (78)

७८. जिस ने मुझे पैदा किया है और वही मेरी हिदायत करता है।

وَٱلَّذِى هُوَ يُطْعِمُنِى وَيَسْقِينِ (79)

७९. वही है जो मुझे खिलाता-पिलाता है।

وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ (80)

८०. तथा जब मैं रोगी हो जाऊँ तो मुझे निरोग (शिफ़ा अता) करता है।

وَٱلَّذِى يُمِيتُنِى ثُمَّ يُحْيِينِ (81)

८१. और वही मुझे मार डालेगा, फिर जिन्दा कर देगा।

وَٱلَّذِىٓ أَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لِى خَطِيٓـَٔتِى يَوْمَ ٱلدِّينِ (82)

८२. और जिस से उम्मीद बंधी हुई है कि वह बदला देने वाले दिन मेरे गुनाह को माफ़ कर देगा।

رَبِّ هَبْ لِى حُكْمًا وَأَلْحِقْنِى بِٱلصَّٰلِحِينَ (83)

८३. हे मेरे रब ! मुझे समझ अता कर[1] और मुझे पाक लोगों में मिला दे।

وَٱجْعَل لِّى لِسَانَ صِدْقٍ فِى ٱلْءَاخِرِينَ (84)

८४. और मेरी पाक याद आने वाले लोगों में भी बाक़ी रख।

وَٱجْعَلْنِى مِن وَرَثَةِ جَنَّةِ ٱلنَّعِيمِ (85)

८५. और मुझे सुखों वाली जन्नत के वारिसों में से बना दे।

وَٱغْفِرْ لِأَبِىٓ إِنَّهُۥ كَانَ مِنَ ٱلضَّآلِّينَ (86)

८६. और मेरे पिता को माफ़ कर दे, बेशक वह भटकने वालों मे से था।[2]

---

[1] हुक्म और हिक्मत से मुराद इल्म और समझ या नबूअत और रिसालत या अल्लाह के हुक्म और विधान (शरीअत) की जानकारी है।

[2] यह दुआ उस समय की थी, जब उनको मालूम नहीं था कि मुश्रिक (अल्लाह का दुश्मन) के लिए मग़फ़िरत की दुआ करना हराम है, जब अल्लाह तआला ने यह साफ़ कर दिया तो उन्होंने अपने पिता से भी अलगाव का इज़हार कर दिया। (सूर: अल-तौबा-११४)

وَلَا تُخۡزِنِي يَوۡمَ يُبۡعَثُونَ ﴿87﴾

८७. और जिस दिन कि लोग दोबारा जिन्दा किये जायें मुझे अपमानित (ज़लील) न कर।

يَوۡمَ لَا يَنفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ﴿88﴾

८८. जिस दिन कि माल और औलाद कुछ काम न आयेगा।

إِلَّا مَنۡ أَتَى ٱللَّهَ بِقَلۡبٍ سَلِيمٍ ﴿89﴾

८९. लेकिन (फ़ायदेमंद वही होगा) जो अल्लाह तआला के सामने निर्दोष (बेऐब) दिल लेकर जाये।[1]

وَأُزۡلِفَتِ ٱلۡجَنَّةُ لِلۡمُتَّقِينَ ﴿90﴾

९०. और परहेज़गारों (सदाचारियों) के लिए जन्नत बहुत क़रीब ला दी जायेगी।

وَبُرِّزَتِ ٱلۡجَحِيمُ لِلۡغَاوِينَ ﴿91﴾

९१. और भटके हुए लोगों के लिए नरक (जहन्नम) ज़ाहिर कर दिया जायेगा।

وَقِيلَ لَهُمۡ أَيۡنَمَا كُنتُمۡ تَعۡبُدُونَ ﴿92﴾

९२. और उन से पूछा जायेगा कि तुम जिन की इबादत करते रहे वह कहाँ हैं।

مِن دُونِ ٱللَّهِ هَلۡ يَنصُرُونَكُمۡ أَوۡ يَنتَصِرُونَ ﴿93﴾

९३. जो अल्लाह (तआला) के सिवाय थे, क्या वह तुम्हारी मदद करते हैं? या कोई बदला ले सकते हैं।

فَكُبۡكِبُواْ فِيهَا هُمۡ وَٱلۡغَاوُۥنَ ﴿94﴾

९४. इसलिए वह सभी और कुल भटके हुए लोग नरक में ऊपर-नीचे डाल दिये जायेंगे।

وَجُنُودُ إِبۡلِيسَ أَجۡمَعُونَ ﴿95﴾

९५. और इब्लीस की सभी की सभी सेना भी।

قَالُواْ وَهُمۡ فِيهَا يَخۡتَصِمُونَ ﴿96﴾

९६. वहाँ वे आपस में लड़ते-झगड़ते हुए कहेंगे।

تَٱللَّهِ إِن كُنَّا لَفِي ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ﴿97﴾

९७. अल्लाह की क़सम! बेशक हम तो खुली ग़लती पर थे।

إِذۡ نُسَوِّيكُم بِرَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ﴿98﴾

९८. जबकि तुम्हें सारी दुनिया के रब के बराबर समझ बैठे थे।

---

[1] साफ़ दिल या निर्दोष (बेऐब) दिल से मुराद वह दिल जो शिर्क से पाक हो, यानी ईमानवाला दिल, इसलिए कि काफ़िर और मुश्रिक का दिल रोगी होता है। कुछ कहते हैं : बिदअत से ख़ाली और सुन्नत से मुतमईन दिल, कुछ के क़रीब ख़्वाहिशात से पाक दिल और कुछ के क़रीब बेवक़ूफ़ी के अंधेरे और नैतिक पतन (अख़्लाक़ी गिरावट) से साफ़ दिल, यह सभी मतलब ठीक हो सकते हैं, क्योंकि ईमानवाले का दिल ऊपर बयान किए सभी बुराईयों से पाक होता है।

وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿99﴾

९९. और हमें तो सिवाय मुजरिमों के किसी दूसरे ने गुमराह नहीं किया था।

فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ ﴿100﴾

१००. अब तो हमारी कोई सिफ़ारिश करने वाला भी नहीं।

وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ﴿101﴾

१०१. और न कोई (सच्चा) ख़ैरख़ाह दोस्त।[1]

فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿102﴾

१०२. अगर हमें एक बार दोबारा जाने को मिलता तो हम पक्के सच्चे ईमान वाले बन जाते।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿103﴾

१०३. यह बात बेशक एक बहुत बड़ी निशानी है, उन में के ज़्यादातर लोग ईमान लाने वाले नहीं।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿104﴾

१०४. और बेशक आप का रब ही प्रभावशाली (ग़ालिब) रहम करने वाला है।

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ِۨ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿105﴾

१०५. नूह की क़ौम ने भी नबियों को झुठलाया।[2]

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿106﴾

१०६. जबकि उन के भाई नूह ने कहा कि क्या तुम्हें अल्लाह का डर नहीं?

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿107﴾

१०७. (सुनो) मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का अमानतदार रसूल हूं।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿108﴾

१०८. इसलिए तुम्हें अल्लाह से डरना चाहिए और मेरी बात माननी चाहिए।

---

[1] गुनाहगार मुसलमानों की सिफ़ारिश तो अल्लाह की इजाज़त के बाद अंबिया, नेक लोग ख़ास तौर से नबी करीम ﷺ करेंगे, लेकिन काफ़िर और मुश्रिक की सिफ़ारिश करने की इजाज़त किसी को भी न होगी और न वहाँ दोस्ती ही काम आयेगी।

[2] नूह की क़ौम ने अगरचे केवल अपने पैग़म्बर हज़रत नूह को झुठलाया था, लेकिन चूँकि एक नबी को झुठलाना सभी नबियों को झुठलाने के बराबर है, इसलिए फ़रमाया कि नूह की क़ौम ने पैग़म्बरों को झुठलाया।

१०९. और मैं तुम से उस पर कोई बदला नहीं चाहता, मेरा बदला तो केवल सारी दुनिया के रब के पास है।

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿109﴾

११०. इसलिए तुम अल्लाह का डर रखो और मेरी इताअत करो।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿110﴾

१११. (क़ौम ने) जवाब दिया कि क्या हम तुम पर ईमान लायें? तेरी इताअत करने वाले तो नीच लोग हैं।

قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْاَرْذَلُوْنَ ﴿111﴾

११२. आप ने फ़रमाया, मुझे क्या पता कि वह पहले क्या करते रहे?

قَالَ وَمَا عِلْمِيْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿112﴾

११३. उन का हिसाब तो मेरे रब के ऊपर है अगर तुम्हें समझ हो तो।

اِنْ حِسَابُهُمْ اِلَّا عَلٰى رَبِّيْ لَوْ تَشْعُرُوْنَ ﴿113﴾

११४. और मैं ईमानदारों को धक्के देने वाला नहीं।

وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿114﴾

११५. मैं तो वाजेह तौर से डरा देने वाला हूं।

اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿115﴾

११६. उन्होंने कहा कि हे नूह! अगर तू न रूका तो जरूर तुझे पत्थरों से मारकर मार दिया जायेगा।

قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ ﴿116﴾

११७. (आप ने) कहा हे मेरे रब! मेरी क़ौम ने मुझे झुठला दिया।

قَالَ رَبِّ اِنَّ قَوْمِيْ كَذَّبُوْنِ ﴿117﴾

११८. इसलिए तू मुझ में और उन में कोई निश्चित (कतई) फ़ैसला कर दे और मुझे और मेरे ईमानवाले साथियों को नजात अता कर दे।

فَافْتَحْ بَيْنِيْ وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَّنَجِّنِيْ وَمَنْ مَّعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿118﴾

११९. इसलिए हम ने उसे और उस के साथियों को भरी हुई नाव में (सवार कर के) नजात अता की।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿119﴾

१२०. फिर उस के बाद बाक़ी सभी लोगों को हम ने डुबो दिया।

ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبٰقِيْنَ ﴿120﴾

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿121﴾

१२१. बेशक इस में बहुत बड़ी नसीहत (शिक्षा) है, और उन में के ज़्यादातर लोग ईमान लाने वाले थे भी नहीं।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿122﴾

१२२. और बेशक आप का रब वही है बहुत रहम करने वाला।

كَذَّبَتْ عَادٌ الْمُرْسَلِينَ ﴿123﴾

१२३. 'आद' (क़ौम) ने भी रसूलों को झुठलाया।[1]

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿124﴾

१२४. जब कि उन से उन के भाई हूद[2] ने कहा कि क्या तुम डरते नहीं?

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿125﴾

१२५. मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर (संदेश-वाहक) हूँ।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿126﴾

१२६. इसलिए अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿127﴾

१२७. और मैं उस पर तुम से कोई उजरत नहीं माँगता, मेरी मज़दूरी सारी दुनिया के रब के पास ही है।

أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آيَةً تَعْبَثُونَ ﴿128﴾

१२८. क्या तुम एक-एक टीले पर खेल (क्रीडा) के रूप तमाशे का निशान (चिन्ह) बना रहे हो।

وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ ﴿129﴾

१२९. और बड़े उद्योग (सन्अत) वाले (मज़बूत महल निर्माण) कर रहे हो, जैसाकि तुम हमेशा यहीं रहोगे।

---

[1] 'आद' उन के पर दादा का नाम था, जिन के नाम पर उन की क़ौम का नाम पड़ा, यहाँ आद को क़बीला मानकर كَذَّبَتْ (स्त्रीलिंग रूप) लाया गया है।

[2] हूद को भी आद का भाई इसलिए कहा गया है कि हर नबी उस क़ौम का इंसान होता था और उसी बिना पर उन्हें उस क़ौम का भाई कहा गया है, जैसाकि आगे भी आयेगा और नबियों और रसूलों का यह इंसानी शक्ल भी उन के ईमान लाने में रुकावट रही है। उनका ख़्याल था कि नबी इंसान नहीं, इंसान से ऊँचा होना चाहिए। आज भी इस पूरे सच से अंजान लोग इस्लाम के पैग़म्बर नबी करीम ﷺ को इंसान से ऊँचा साबित करने पर तुले हैं, अगरचे वह भी क़ुरैश क़बीले के एक इंसान थे, जिनकी तरफ़ पहली बार उनको पैग़म्बर बनाकर भेजा गया था।

وَإِذَا بَطَشْتُم بَطَشْتُمْ جَبَّارِينَ (130)

१३०. और जब किसी पर हाथ डालते हो तो कड़ाई और सख़्ती से पकड़ते हो।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ (131)

१३१. तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।

وَاتَّقُوا الَّذِي أَمَدَّكُم بِمَا تَعْلَمُونَ (132)

१३२. और उस से डरो जिस ने उन चीज़ों से तुम्हारी मदद की जिन्हें तुम जानते हो।

أَمَدَّكُم بِأَنْعَامٍ وَبَنِينَ (133)

१३३. उस ने तुम्हारी मदद की माल और औलाद (सन्तान) से।

وَجَنَّاتٍ وَعُيُونٍ (134)

१३४. और बाग़ों से और चश्मों से।

إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ (135)

१३५. मुझे तो तुम्हारे ऊपर बड़े दिन के अज़ाब का डर है।

قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَظْتَ أَمْ لَمْ تَكُن مِّنَ الْوَاعِظِينَ (136)

१३६. (उन्होंने) कहा कि आप नसीहत करें या नसीहत करने वालों में न हों हम पर बराबर है।

إِنْ هَٰذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ (137)

१३७. यह तो पुराने ज़माने के लोगों का दीन है।

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ (138)

१३८. और हम कभी अज़ाब पाने वाले न होंगे।

فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَاهُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ (139)

१३९. चूंकि 'आद' की क़ौम ने (हज़रत) हूद को झुठलाया, इसलिए हम ने उन्हें हलाक कर दिया, बेशक उस में निशानी है, और उन में के ज़्यादातर ईमान वाले न थे।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ (140)

१४०. और बेशक आप का रब वही ग़ालिब रहम करने वाला है।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ (141)

१४१. 'समूद' के समुदाय वालों ने[1] भी पैग़म्बर को झुठलाया।

[1] समूद का निवास स्थान 'हिज्र' का इलाक़ा था जो हिजाज़ की उत्तर दिशा में है, आजकल उसे 'मदायन स्वालेह' कहते हैं। (ऐसरूत्तफ़ासीर) यह अरब थे। नबी ﷺ तबूक जाते वक़्त उन बस्तियों के बीच से गये थे, जैसाकि पहले बयान हो चुका है।

१४२. जब उन के भाई 'स्वालेह' ने उन से कहा कि क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते?

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صٰلِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ (142)

१४३. मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का अमानतदार पैग़म्बर हूँ।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ (143)

१४४. तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा करो।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيعُونِ (144)

१४५. और मैं उस पर तुम से कोई उजरत नहीं माँगता, मेरी उजरत तो सारी दुनिया के रब के ऊपर ही है।

وَمَا أَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِينَ (145)

१४६. क्या उन चीज़ों में जो यहाँ हैं तुम शान्ति के साथ छोड़ दिये जाओगे?

أَتُتْرَكُونَ فِي مَا هٰهُنَا اٰمِنِينَ (146)

१४७. (यानी) उन बाग़ों और उन चश्मों में।

فِي جَنّٰتٍ وَعُيُونٍ (147)

१४८. और उन खेतों और उन खजूरों के बाग़ों में जिन के गुच्छे (बोझ की वजह) टूटे पड़ते हैं।

وَزُرُوعٍ وَنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيمٌ (148)

१४९. और तुम पहाड़ों को काट-काट कर आकर्षक (सुन्दर) भवनों का निर्माण (तामीर) कर रहे हो।

وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا فٰرِهِينَ (149)

१५०. इसलिए अल्लाह से डरो और मेरी इत्तेबा करो।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيعُونِ (150)

१५१. और सीमा उल्लंघन (तजावुज़) करने वालों के अनुकरण (पैरवी) से रूक जाओ।

وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ (151)

१५२. जो धरती में फ़साद फैला रहे है और सुधार नहीं करते।

الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ (152)

१५३. (वे) बोले कि तू तो बस उन में से है जिन पर जादू कर दिया गया है।

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ (153)

مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚ فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿154﴾

१५४. तू तो हम जैसा ही इंसान है, अगर तू सच्चों में से है तो कोई मोजिज़ा ले आ।

قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿155﴾

१५५. (आप ने) कहा यह है ऊँटनी, पानी पीने की एक वारी इसकी और एक मुकर्रर दिन को पानी पीने की वारी तुम्हारी।[1]

وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿156﴾

१५६. (और ख़बरदार!) इसे बुराई से हाथ न लगाना, वरन् एक बड़े दिन का अज़ाब तुम्हें पकड़ लेगा।

فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ﴿157﴾

१५७. फिर भी उन्होंने उस के हाथ-पैर काट डाले, फिर वह पछताने वाले हो गये।

فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۗ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿158﴾

१५८. तो अज़ाब ने उन्हें आ दबोचा[2] बेशक इस में शिक्षा (नसीहत) है, और उनमें से ज़्यादातर लोग ईमानवाले न थे।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿159﴾

१५९. और बेशक आप का रब बहुत ग़ालिब (शक्तिशाली) और रहम करने वाला है।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ِۨالْمُرْسَلِيْنَ ﴿160﴾

१६०. लूत की क़ौम[3] ने भी नबियों को झुठलाया।

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿161﴾

१६१. जब उन से उन के भाई लूत ने कहा कि तुम अल्लाह से डर नहीं रखते?

---

[1] यह वही ऊँटनी थी, जो उनकी माँग पर पत्थर की चट्टान से मोजिज़े की शक्ल में निकली थी, एक दिन ऊँटनी के लिए और एक दिन उन के लिए पानी मुकर्रर कर दिया गया था, और उन से कह दिया गया था कि जो दिन तुम्हारा पानी लेने का होगा उस दिन ऊँटनी घाट पर नहीं आयेगी और जो दिन ऊँटनी के पानी पीने का होगा, तुम्हें घाट पर आने की इजाज़त नहीं है।

[2] यह अज़ाब धरती से भूकम्प (ज़लज़ला) और ऊपर से बहुत तेज़ चिंघाड़ के रूप में आया, जिस से सब मर गये।

[3] हज़रत लूत, हज़रत इब्राहीम के भाई हारान बिन आज़र के पुत्र थे, उनको हज़रत इब्राहीम की ज़िन्दगी में ही नबी बना कर भेजा गया था, उनकी क़ौम 'सदूम' और 'अमूरा' में निवास करती थी, यह बस्तियाँ सीरिया के इलाक़े में थीं।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ (162)

१६२. मैं तुम्हारी तरफ़ अमानतदार रसूल हूँ।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ (163)

१६३. इसलिए तुम अल्लाह (तआला) से डरो और मेरी इत्तेबा करो।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ (164)

१६४. और मैं तुम से उस का कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो केवल सारी दुनिया के रब पर है।

أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ (165)

१६५. क्या तुम दुनिया वालों में से मर्दों के पास जाया करते हो।

وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ (166)

१६६. और तुम्हारी जिन औरतों को अल्लाह (तआला) ने तुम्हारी बीवी बनाया है, उन को छोड़ देते हो, बात यह है कि तुम हो ही सीमा लाँघने वाले।

قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَا لُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ (167)

१६७. (उन्होंने) जवाब दिया कि हे लूत! अगर तू न रुका तो अवश्य निकाल दिया जायेगा।[1]

قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ (168)

१६८. (आप ने) कहा कि मैं तुम्हारे अमल से बहुत नाख़ुश हूँ।

رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ (169)

१६९. मेरे रब! मुझे और मेरे परिवार को इस (दुष्कर्म) से बचा ले, जो यह करते हैं।

فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ (170)

१७०. इसलिए हम ने उसे और उस के सम्बन्धियों को सभी को बचा लिया।

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ (171)

१७१. सिवाय एक बुढ़िया के कि वह पीछे रह जाने वालों में हो गयी।

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ (172)

१७२. फिर हम ने (बाक़ी) दूसरे सभी को नाश कर दिया।

---

[1] यानी हज़रत लूत की दावत और नसीहत के जवाब में उन्होंने कहा तू बड़ा पाक बना फिरता है, याद रख! अगर तू अपने इस काम से नहीं रुका तो हम तुझे बस्ती में नहीं रहने देंगे, आज भी कुकर्मियों का इतना असर है कि नेक लोग मुँह छिपाये फिरते हैं और नेक लोगों के लिए जिन्दगी गुज़ारना मुश्किल बना दिया गया है।

१७३. और हम ने उन के ऊपर एक ख़ास तरह की बारिश की, वह बड़ी बुरी बारिश थी जो डराये गये लोगों पर बरसी।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنذَرِينَ ﴿173﴾

१७४. बेशक इस में भी बड़ी निशानी है, उन में से भी ज़्यादातर मुसलमान नहीं थे।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿174﴾

१७५. बेशक तेरा रब वही है ग़ालिब रहम करने वाला।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿175﴾

१७६. एयका वालों ने भी रसूलों को झुठलाया।

كَذَّبَ أَصْحَابُ لْأَيْكَةِ الْمُرْسَلِينَ ﴿176﴾

१७७. जबकि उन से शुऐब ने कहा कि क्या तुम्हें (अल्लाह का) डर और भय नहीं?

إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿177﴾

१७८. मैं तुम्हारी तरफ़ अमानतदार रसूल हूं।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿178﴾

१७९. तो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿179﴾

१८०. और मैं उस पर तुम से कोई उजरत नहीं मांगता, मेरा बदला सारी दुनिया के रब पर है।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿180﴾

१८१. नाप-तौल पूरा करो और कम देने वालों में शामिल न हो।

أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ﴿181﴾

१८२. और सीधे (सही) तराज़ू से तौला करो।

وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ﴿182﴾

१८३. और लोगों को उनकी चीज़ें कमी से न दो, और (निर्भय होकर) धरती पर फ़साद मचाते न फिरो।

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿183﴾

१८४. और उस (अल्लाह) का डर रखो जिस ने ख़ुद तुम्हें और पहले की मख़्लूक़ को पैदा किया।

وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْأَوَّلِينَ ﴿184﴾

१८५. (उन्होंने) कहा तू तो उन में से है जिन पर जादू कर दिया जाता है।

قَالُوا إِنَّمَا أَنتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿185﴾

وَمَآ أَنتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَإِن نَّظُنُّكَ لَمِنَ ٱلْكَٰذِبِينَ (186)

१८६. और तू तो हम ही जैसा एक इंसान है और हम तो तुझे झूठ बोलने वालों में से ही समझते हैं।

فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ ٱلسَّمَآءِ إِن كُنتَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ (187)

१८७. अगर तुम सच्चे लोगों में से हो तो हम पर आकाश का कोई टुकड़ा गिरा दो।

قَالَ رَبِّىٓ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ (188)

१८८. (उन्होंने) कहा कि मेरा रब अच्छी तरह से जानने वाला है जो कुछ तुम कर रहे हो।

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ ٱلظُّلَّةِ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ (189)

१८९. इसलिए उन्होंने उसे झुठलाया तो उन्हें छाया वाले दिन के अज़ाब ने पकड़ लिया, वह बड़े भारी दिन का अज़ाब था।

إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ (190)

१९०. बेशक उस में बड़ी निशानी है और उन में के ज़्यादातर मुसलमान नहीं थे।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلرَّحِيمُ (191)

१९१. और बेशक तेरा रब वही ग़ालिब दया वाला है।

وَإِنَّهُۥ لَتَنزِيلُ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ (192)

१९२. और बेशक यह (क़ुरआन) पूरी दुनिया के रब का नाज़िल किया हुआ है।

نَزَلَ بِهِ ٱلرُّوحُ ٱلْأَمِينُ (193)

१९३. इसे अमानतदार फ़रिश्ता लेकर आया है।

عَلَىٰ قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ ٱلْمُنذِرِينَ (194)

१९४. आप के दिल पर (नाज़िल हुआ है) कि आप सतर्क (आगाह) कर देने वालों में से हो जायें।

بِلِسَانٍ عَرَبِىٍّ مُّبِينٍ (195)

१९५. साफ़ अरबी भाषा में है।

وَإِنَّهُۥ لَفِى زُبُرِ ٱلْأَوَّلِينَ (196)

१९६. और अगले नबियों की किताबों में भी इस (क़ुरआन) की चर्चा है।[1]

---

[1] यानी जिस तरह दुनिया के आख़िरी पैग़म्बर (रसूलुल्लाह ﷺ) के आने और आप ﷺ की सिफ़ात का बयान दूसरी किताबों में है, उसी तरह इस क़ुरआन के नाज़िल होने की ख़ुशख़बरी उन किताबों में दी गयी थी। एक दूसरा मायेना यह लिया गया है कि यह क़ुरआन मजीद उन हुक्मों के अनुसार जिन पर सभी शरीअतों में एकता रही है, पिछली किताबों मे भी मौजूद रहा है।

أَوَلَمْ يَكُن لَّهُمْ آيَةً أَن يَعْلَمَهُ عُلَمَٰٓؤُا بَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ (197)

१९७. क्या उन्हें यह निशानी काफी नहीं कि (कुरआन की सच्चाई को) तो इस्राईल की औलाद के विद्वान (आलिम) भी जानते हैं।

وَلَوْ نَزَّلْنَٰهُ عَلَىٰ بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ (198)

१९८. और अगर हम इसे किसी (अरबी भाषी के सिवाय) किसी अजमी पर नाज़िल करते।

فَقَرَأَهُ عَلَيْهِم مَّا كَانُوا بِهِۦ مُؤْمِنِينَ (199)

१९९. तो वह उन के सामने उस का पाठ करता तो यह उसे नहीं मानते।

كَذَٰلِكَ سَلَكْنَٰهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ (200)

२००. इसी तरह हम ने पापियों के दिलों में (इंकार) को दाख़िल कर दिया है।

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِۦ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ (201)

२०१. वे जब तक दुखदायी अज़ाब को देख न लेंगे ईमान न लायेंगे।

فَيَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ (202)

२०२. इसलिए वह (अज़ाब) अचानक आ जायेगा और उन्हें उसका अंदाज़ा भी न होगा।

فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنظَرُونَ (203)

२०३. उस समय कहेंगे कि क्या हमें कुछ मौक़ा दिया जायेगा?

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ (204)

२०४. तो क्या ये हमारे अज़ाब की जल्दी मचा रहे हैं?

أَفَرَءَيْتَ إِن مَّتَّعْنَٰهُمْ سِنِينَ (205)

२०५. अच्छा यह भी बताओ, कि अगर हम ने उन्हें सालों फ़ायेदा उठाने दिया।

ثُمَّ جَآءَهُم مَّا كَانُوا يُوعَدُونَ (206)

२०६. फिर उन्हें वह (अज़ाब) आ लगा जिस से उन्हें डराया जाता था।

مَآ أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يُمَتَّعُونَ (207)

२०७. तो जो कुछ भी यह फ़ायदे दिये जाते रहे उस में से कुछ भी उन्हें काम न दे सकेगा।

وَمَآ أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنذِرُونَ (208)

२०८. और हम ने किसी बस्ती को हलाक नहीं किया है, लेकिन उसी हालत में कि उस के लिए डराने वाले थे।

ذِكْرٰى ۛ وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿209﴾

२०९. शिक्षा (नसीहत) के रूप में, और हम ज़ुल्म करने वाले नहीं हैं।[1]

وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ﴿210﴾

२१०. और इस (कुरआन) को शैतान नहीं लाये।

وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿211﴾

२११. और न वह इस लायक़ है, न उन्हें इस की ताक़त है।

اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ ﴿212﴾

२१२. बल्कि वे तो सुनने से भी महरूम (वंचित) कर दिये गये हैं।

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ ﴿213﴾

२१३. इसलिए तू अल्लाह के साथ किसी दूसरे देवता को न पुकार कि तू भी सज़ा पाने वालों में से हो जाये।

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ﴿214﴾

२१४. और अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डरा दे।

وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿215﴾

२१५. और उस के साथ नरमी से पेश आ, जो भी ईमान लाने वाला होकर तेरे आधीन (ताबे) हो जाये।

فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّيْ بَرِيْۤءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿216﴾

२१६. अगर ये लोग तेरी नाफ़रमानी करें तो तू एलान कर दे कि मैं इन कामों से अलग हूं जो तुम कर हे हो।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿217﴾

२१७. और अपना पूरा भरोसा ग़ालिब रहीम अल्लाह पर रख।

الَّذِيْ يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿218﴾

२१८. जो तुझे देखता रहता है, जबकि तू खड़ा होता है।

وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ ﴿219﴾

२१९. और सज्दा (नमन) करने वालों के बीच तेरा घूमना-फिरना भी।

---

[1] यानी रसूल के भेजे और सावधान (ख़बरदार) किये बिना अगर हम किसी बस्ती को हलाक करते तो यह ज़ुल्म होता, हम ने ऐसा ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि इंसाफ़ के नियमानुसार (मुताबिक़) पहले उन्हें डराया और उस के बाद जब उन्होंने पैग़म्बर की बात नहीं मानी, तो हम ने उन्हें नाश कर दिया। यही विषय सूर: बनी इस्राईल-१८ और सूर: अल-क़सस-५९ वग़ैरह में भी बयान किया गया है।

إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ (220)

२२०. बेशक वह बड़ा सुनने वाला और बड़ा जानने वाला है।

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ (221)

२२१. क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतरते हैं।

تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ (222)

२२२. वह हर झूठे पापी पर उतरते हैं।[1]

يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَاذِبُونَ (223)

२२३. वे (उचटती हुई) सुनी सुनाई पहुँचा देते हैं और उन में के ज़्यादातर झूठे हैं।

وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ (224)

२२४. और कवियों (शायरों) की पैरवी वही करते हैं जो बहके हुए हों।

أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ (225)

२२५. क्या आप ने नहीं देखा कि कवि (शायर) एक-एक वादी में सिर टकराते फिरते हैं।[2]

وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ (226)

२२६. और वह कहते हैं जो करते नहीं।[3]

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانتَصَرُوا مِن بَعْدِ مَا ظُلِمُوا ۗ وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنقَلَبٍ يَنقَلِبُونَ (227)

२२७. सिवाय उन के जो ईमान लाये और नेकी के काम किये और ज़्यादा तादाद में अल्लाह तआला की प्रशंसा (तारीफ़) का बयान किया और अपनी मज़लूमी के बाद इन्तिक़ाम लिया, और जिन्होंने ज़ुल्म किया है वह भी अभी जान लेंगे कि किस करवट उलटते हैं।

---

[1] यानी इस क़ुरआन के नाज़िल होने में शैतान का कोई हाथ नहीं है, क्योंकि शैतान तो झूठे और पापियों (यानी काहिनों और नजूमियों वग़ैरह) पर उतरते हैं न कि नबियों और नेक काम करने वालों पर।

[2] ज़्यादातर कवि (शायर) ऐसे होते हैं जो प्रशंसा (तारीफ़) और भर्त्सना (मुज़म्मत) में नियम का पालन करने के बजाये मनमाने ख़्यालों का प्रदर्शन (इज़हार) करते हैं, इस के सिवाय उस में मुबालग़ा का इस्तेमाल करते हैं और कविता की कल्पना (तसव्वुर) में इधर-उधर भटकते हैं, इसलिए फ़रमाया कि इन के पीछे लगने वाले भी भटके हुए हैं।

[3] इस से उन कवियों (शायरों) को अलग कर दिया गया है, जिनकी कविता सच और सच्चाई पर आधारित (मबनी) है, और ऐसे लफ़्ज़ों से अलगाव किया है जिन से यह वाज़ेह हो जाता है कि ईमानदार, नेक और अल्लाह को ज़्यादातर याद करने वाला कवि बेकार कविता (शायरी) जिस में झूठ और मुबालग़ा की मिलावट हो, कर ही नहीं सकता, यह उन ही लोगों का काम है जो ईमान की सिफ़त से ख़ाली हो।

सूरतुन नमल-२७

سُوْرَةُ النَّمْلِ

सूर: नमल* मक्का में उतरी और इसकी तिरानवे आयतें और सात रूकुअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

طٰسٓ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ﴿1﴾

१. ता॰ सीन॰, ये आयतें हैं क़ुरआन की (यानी वाज़ेह) और रौशन किताब की।

هُدًى وَّ بُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿2﴾

२. हिदायत (मार्गदर्शक) और ख़ुशख़बरी ईमान वालों के लिए।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿3﴾

३. जो नमाज़ क़ायम (स्थापित) करते हैं, और ज़कात अदा करते हैं और आख़िरत पर ईमान रखते हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿4﴾

४. जो लोग क़यामत पर ईमान नहीं लाते हमने उन के लिए उन के आमाल को मुज़य्यन कर दिखाया है, इसलिए वे भटकते-फिरते हैं।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿5﴾

५. यही वह लोग हैं जिन के लिए बुरा अज़ाब है और आख़िरत में भी वह बहुत नुक़सान वाले हैं।

وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ﴿6﴾

६. और बेशक आप को क़ुरआन सिखाया जा रहा है अल्लाह हिक्मत वाले और जानने वाले की तरफ़ से।

اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖٓ اِنِّىْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ؕ سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿7﴾

७. (याद होगा) जबकि मूसा ने अपने परिवार वालों से कहा कि मैंने आग देखी है, मैं वहां से या तो कोई ख़बर लेकर या आग का कोई जलता हुआ अंगारा लेकर अभी तुम्हारे पास आ

---

* नमल अरबी भाषा (ज़बान) में चींटी को कहते हैं। इस सूर: में चींटियों के वाक़ेआ का बयान है, जिस की वजह से इस को सूर: नमल कहते हैं।

जाऊँगा, ताकि तुम सेंक-ताप कर लो ।[1]

فَلَمَّا جَآءَهَا نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿8﴾

८. जब वहाँ पहुँचे तो आवाज़ दी गयी कि मुबारक है वह जो उस आग में है और मुबारक है वह जो उस के आस-पास है, और पाक है अल्लाह जो सारी दुनिया का रब है ।[2]

يٰمُوْسٰۤى اِنَّهٗۤ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿9﴾

९. मूसा! (सुन) बात यह है कि मैं ही अल्लाह हूँ ज़बरदस्त और हिक्मत वाला ।

وَاَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰى لَا تَخَفْ ۫ اِنِّيْ لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿10﴾

१०. और तू अपनी छड़ी डाल दे, (मूसा ने) जब उसे हिलता-डुलता देखा, इस तरह कि जैसे साँप है, तो मुँह मोड़ कर पीठ फेरकर भागे और पलट कर भी न देखा, हे मूसा! डरो नहीं,[3] मेरे सामने पैग़म्बर डरा नहीं करते ।

اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًۢا بَعْدَ سُوْٓءٍ فَاِنِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿11﴾

११. लेकिन जो लोग ज़ुल्म करें, फिर उस के बदले नेकी करें उस बुराई के पीछे, तो मैं भी माफ़ करने वाला रहम करने वाला हूँ ।

وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۫ فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿12﴾

१२. और अपना हाथ अपनी जेब (गिरेबान) में डाल वह सफेद (और रौशनी वाला) होकर निकलेगा बिना किसी रोग के । (तू) नौ निशानियाँ लेकर फ़िरऔन और उस के पैरोकारों के पास (जा) बेशक वह फ़ासिकों का गुट है ।

[1] यह उस समय की घटना (वाक़ेआ) है जब आदरणीय (हज़रत) मूसा मदयन से अपनी पत्नी को साथ लेकर वापस लौट रहे थे, रात के अंधेरे में रास्ते का ज्ञान (इल्म) नहीं था और सर्दी से बचाव के लिए आग की ज़रूरत थी ।

[2] यहाँ अल्लाह की बड़ाई और पकीज़गी का मतलब यह है कि इस आसमानी पुकार से यह न समझ लिया जाये कि इस आग या पेड़ों में अल्लाह ने प्रवेश किया हुआ है, जिस तरह बहुत से मूर्तिपूजक समझते हैं, यह सत्य प्रदर्शन (मुशाहिदा) की एक क़िस्म है जिससे नबूअत के शुरू में नबियों को आम तौर पर सुशोभित (सरफ़राज़) किया जाता है, कभी फ़रिश्ते के ज़रिये और कभी ख़ुद अल्लाह तआला अपनी तजल्ली और ख़ुद बात से, जैसाकि मूसा के साथ घटित हुआ ।

[3] इस से मालूम हुआ कि पैग़म्बर को छिपी बातों का इल्म नहीं होता, वरना मूसा अपने हाथ की लाठी से न डरते दूसरी बात यह कि पैग़म्बर को भी प्राकृतिक (फ़ितरी) डर हो सकता है क्योंकि वह भी तो एक इंसान ही होते हैं ।

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ⑬

१३. इसलिए जब उन के पास आँखें खोल देने वाले हमारे मोजिज़े पहुँचे तो वह कहने लगे कि यह तो साफ (निरा) जादू है।

وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ۭ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ⑭

१४. और उन्होंने इंकार कर दिया, अगरचे उन के दिल यक़ीन कर चुके थे केवल ज़ुल्म और घमण्ड के कारण। अतः देख लीजिए उन फ़सादियों का अंजाम क्या कुछ हुआ।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰي كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ⑮

१५. और हम ने बेशक दाऊद और सुलेमान को इल्म दे रखा था, और दोनों ने कहा, सब तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है, जिस ने हमें अपने बहुत से ईमानवाले बंदों पर फ़ज़ीलत अता की है।

وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۭ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ⑯

१६. और दाऊद के वारिस सुलेमान हुए,[1] और कहने लगे हे लोगो! हमें पक्षियों की बोली सिखायी गयी है और हम सब कुछ में से दिये गये हैं। बेशक यह बड़ा खुला हुआ (अल्लाह का) उपकार (फ़ज़्ल) है।

وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ⑰

१७. और सुलेमान के सामने उनकी सभी सेना जिन्नात और इंसान और पक्षी जमा किये गये[2] (हर एक क़िस्म की) अलग-अलग खड़ा कर दिया गया।

---

[1] इस से मुराद नबूअत और मुल्क की विरासत है, जिस के वारिस केवल सुलेमान ही हुए, वरना हज़रत दाऊद के दूसरे पुत्र भी थे, जो इस विरासत से वंचित (महरूम) रहे, वैसे भी नबियों की विरासत इल्म में ही होती है, जो धन-सम्पत्ति वे छोड़ जाते हैं वह दान होता है, जैसाकि नबी ﷺ ने फ़रमाया। (अल-बुख़ारी, किताबुल फ़रायेज़ और मुस्लिम किताबुल जिहाद)

[2] इस में हज़रत सुलेमान की व्यक्तिगत विशेषता (ज़ाती ख़ुसूसियत) और अहमियत का बयान है, जिस में वह पूरे मानव इतिहास में सब से बेहतर हैं, कि उनका राज्य (मुल्क) केवल इंसानों पर ही नहीं था, बल्कि जिन्नातों, जानवरों और पक्षियों यहाँ तक कि हवा को भी उन के ताबे कर दिया गया था, इस में कहा गया है कि सुलेमान की पूरी सेना यानी जिन्नों, इंसानों और पक्षियों को जमा किया गया, यानी कहीं जाने के लिए यह सेना जमा की गयी।

حَتّٰٓى اِذَآ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰٓاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿18﴾

१८. जब वे चीटियों के मैदान में पहुँचे तो एक चींटी ने कहा, हे चीटियो! अपने-अपने घरों में घुस जाओ, (ऐसा न हो कि) बेख़बरी (असावधानी) की वजह से सुलेमान और उन की सेना तुम्हें रौंद डाले।

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿19﴾

१९. उस की इस बात पर (हज़रत सुलेमान) मुस्करा कर हँस दिये और दुआ करने लगे कि हे रब! तू मुझे तौफ़ीक़ अता कर कि मैं तेरे इन नेमतों (उपकारों) का शुक्रिया अदा करूँ जो तूने मुझ पर नेमत की हैं, और मेरे माता-पिता पर और मैं ऐसे नेकी के काम करता रहूँ जिस से तू ख़ुश रहे, और मुझे अपनी रहमत (कृपा) से अपने नेक बन्दों में शामिल कर ले।

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ مِنَ الْغَآئِبِيْنَ ﴿20﴾

२०. और आप ने पक्षियों का निरीक्षण (मुआयना) किया और कहने लगे यह क्या बात है कि मैं हुद हुद को नहीं देख रहा हूँ? क्या हक़ीक़त में वह मौजूद नहीं है?

لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاذْبَحَنَّهٗٓ اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿21﴾

२१. बेशक मैं उसे कड़ी सज़ा दूँगा, या उसे ज़िब्ह कर डालूँगा या मेरे सामने कोई उचित (मुनासिब) वजह बताये।

فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍ بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ ﴿22﴾

२२. कुछ ज़्यादा वक़्त नहीं बीता था कि (आकर) उस ने कहा मैं ऐसी चीज़ की ख़बर लाया हूँ कि तुझे उसकी ख़बर ही नहीं, मैं 'सबा'[1] की एक सच्ची ख़बर तेरे पास लाया हूँ।

اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَاُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ﴿23﴾

२३. मैंने देखा कि उन की बादशाहत एक औरत कर रही है, जिसे हर तरह की चीज़ से कुछ न कुछ अता किया गया है और उसका सिंहासन

[1] सबा एक इंसान के नाम पर एक क़ौम का नाम भी था और एक नगर का भी, यहाँ नगर मुराद है। यह सनआ (यमन) से तीन दिन की यात्रा (सफ़र) की दूरी पर है और मआरिब यमन के नाम से मशहूर है। (फ़तहुल क़दीर)

भी बड़ा अज़ीम (भव्य) है।

وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ (24)

२४. मैंने उसे और उसकी क़ौम को अल्लाह को छोड़ कर सूरज को सज्दा करते हुए पाया, शैतान ने उनके काम उन्हें भले करके दिखाकर सच्चे रास्ते से रोक दिया है, इसलिए वे हिदायत पर नहीं आते।

اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ (25)

२५. कि सिर्फ़ उसी अल्लाह को सज्दा करें जो आकाशों और धरती की छिपी चीज़ों को बाहर निकालता है, और जो कुछ तुम छिपा रखते हो और ज़ाहिर करते हो वह सभी कुछ जानता है।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ (26) السجدة

२६. (यानी) अल्लाह! उस के सिवाय कोई इबादत के लायक़ नहीं, वही विशाल (अज़ीम) अर्श का रब है।

قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ (27)

२७. (सुलेमान ने) कहा कि अब हम देखेंगे कि तूने सच कहा या तू झूठा है।

اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ (28)

२८. मेरे इस ख़त को ले जाकर उन्हें दे दे, फिर उन के पास से हट आ और देख कि वे क्या जवाब देते हैं।

قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْۤ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ (29)

२९. वह कहने लगी हे प्रमुखो (सरदारो)! मेरी तरफ़ एक अहम ख़त डाला गया है।

اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ (30)

३०. जो सुलेमान की तरफ़ से है, और जो रहम (दया) करने वाले बड़े मेहरबान अल्लाह के नाम से शुरू है।

اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ (31)

३१. यह कि तुम मेरे सामने सरकशी मत करो और मुसलमान बनकर मेरे पास आ जाओ।

قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْۤ اَمْرِيْ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ (32)

३२. उस ने कहा हे मेरे दरबारियो! तुम मेरी इस समस्या में मुझे मश्विरा दो, मैं किसी बात का आख़िरी फ़ैसला जब तक तुम्हारी मौजूदगी और राय न हो नहीं किया करती।

قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿33﴾

३३. उन सभी ने जवाब दिया कि हम मजबूत और ताक़त वाले बहुत लड़ने-भिड़ने वाले हैं, आगे आप को हक़ है आप ख़ुद ही विचार कीजिए कि आप हमें क्या हुक्म देती हैं।

قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْٓا اَعِزَّةَ اَهْلِهَآ اَذِلَّةً ۚ وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿34﴾

३४. उसने कहा कि बादशाह जब किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसे उजाड़ देते हैं, और वहाँ के बाइज़्ज़त लोगों को बेइज़्ज़त करते हैं, और ये लोग भी ऐसा ही करेंगे।

وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿35﴾

३५. और मैं उन्हें एक तोहफ़ा भेजने वाली हूँ, फिर देख लूँगी कि सफ़ीर (राजदूत) क्या जवाब लेकर लौटते हैं।[1]

فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ ۫ فَمَآ اٰتٰىنَِۦ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّآ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ﴿36﴾

३६. इसलिए (राजदूत) जब (हज़रत) सुलेमान के पास पहुँचा तो आप ने कहा, क्या तुम माल से मुझे मदद देना चाहते हो? मुझे तो मेरे रब ने इस से ज़्यादा दे रखा है जो उस ने तुम्हें दिया है, इसलिए तुम ही अपने तोहफ़े से ख़ुश रहो।

اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَآ اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿37﴾

३७. जा उनकी तरफ़ लौट जा हम उन के पास ऐसी सेना लायेंगे जिस के सामने आने की उन में ताक़त नहीं और हम उन्हें ज़लील और पराजित करके वहाँ से निकाल बाहर करेंगे।[2]

---

[1] इस से अंदाजा हो जायेगा कि सुलेमान कोई दुनियावी राजा है या अल्लाह के भेजे हुए नबी हैं, जिसका मक़सद अल्लाह के दीन का प्रभुत्व स्थापित (ग़लबा साबित) करना है, अगर तोहफ़ा क़ुबूल नहीं किया तो बेशक उसका दीन का प्रचार-प्रसार (दावत-तबलीग़) है, फिर हमें भी पैरवी किये बिना कोई उपाय नहीं होगा।

[2] हज़रत सुलेमान केवल मुल्क से सम्बन्धित नहीं थे, अल्लाह के पैग़म्बर भी थे। इसलिए उन की तरफ़ से लोगों को अपमानित करना मुमकिन नहीं था, लेकिन लड़ाई का नतीजा यही होता है क्योंकि लड़ाई नाम ही ख़ून-ख़राबा और बन्दी बनने बनाने का है, और अपमान और अनादर से मुराद यही है, वर्ना अल्लाह के पैग़म्बर लोगों को अचानक लज्जित और ज़लील नहीं करते। जिस प्रकार नबी ﷺ का मुआमला और अच्छा अख़लाक़ लड़ाई के मौक़े पर रहा।

قَالَ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ (38)

३८. (आप ने) कहा हे सरदारो! तुम में से कोई है जो उन के मुसलमान होकर पहुँचने से पहले ही उसका सिंहासन मुझे लाकर दे।

قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ (39)

३९. एक शक्तिशाली जिन्न कहने लगा, आप के अपने इस जगह से उठने से पहले ही मैं उसे आप के पास ला देता हूँ, यक़ीन कीजिए मैं इसकी ताक़त रखता हूँ और हूँ भी अमानतदार।

قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ۚ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۗ لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ۗ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ (40)

४०. जिस के पास किताब का इल्म था वह बोल उठा कि आप पलक झपकायें उस से भी पहले मैं उसे आप के पास पहुँचा सकता हूँ।[1] जब आप ने उसे अपने पास मौजूद पाया तो कहने लगे यह मेरे रब का उपकार (फ़ज़्ल) है, ताकि वह मुझे परखे कि मैं शुक्रिया अदा करता हूँ या नाशुक्री। शुक्रिया अदा करने वाला अपने फ़ायदे के लिए ही शुक्रिया अदा करता है, और जो नाशुक्री करे तो मेरा रब बेनियाज़ और महान (मेहरबान) है।

قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ (41)

४१. हुक्म दिया कि उस के सिंहासन में कुछ बदलाव कर दो, हम देखेंगे कि यह रास्ता पा लेती है या उन में से होती है जो रास्ता नहीं पाते।

فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ۗ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ (42)

४२. फिर जब वह आ गयी तो उस से पूछा गया कि ऐसा ही तेरा सिंहासन है? उस ने जवाब दिया कि यह जैसाकि वही है। हमें इस से पहले ही इल्म दिया गया था और हम मुसलमान थे।

---

[1] यह कौन इंसान था जिस ने यह कहा, यह किताब कौन सी थी, और यह इल्म क्या था जिसकी ताक़त पर यह दावा किया गया? इस में मुफ़स्सिरों के कई क़ौल हैं, इन तीनों की पूरी हक़ीक़त तो अल्लाह तआला ही जानता है। यहाँ क़ुरआन करीम के लफ़्ज़ों से जो मालूम होता है, वह इतना ही है कि वह कोई इंसान ही था, जिसके पास अल्लाह की किताब का इल्म था, अल्लाह तआला ने मोजिज़ा और अप्राकृतिक रूप (ग़ैरफ़ितरी) से उसे यह ताक़त अता की कि पलक झपकते ही वह सिंहासन ले आया।

وَصَدَّهَا مَا كَانَت تَّعْبُدُ مِن دُونِ اللَّهِ ۖ إِنَّهَا كَانَتْ مِن قَوْمٍ كَافِرِينَ (43)

४३. और उसे उन्होंने रोक रखा था जिन की वह अल्लाह के सिवाय पूजा करती रही थी। बेशक वह काफ़िर लोगों में से थी।

قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۖ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَكَشَفَتْ عَن سَاقَيْهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّن قَوَارِيرَ ۗ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ (44)

४४. उससे कहा गया कि महल में चली चलो जिसे देखकर यह समझकर कि जलाशय (हौज़) है उस ने अपनी पिंडलियाँ खोल दी, फ़रमाया यह तो शीशे से बना हुआ है, कहने लगी मेरे रब! मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया। अब मैं सुलेमान के साथ अल्लाह सारे जहाँ के रब की फ़रमाँबर्दार बनती हूँ।[1]

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقَانِ يَخْتَصِمُونَ (45)

४५. और बेशक हम ने 'समूद' की तरफ़ उन के भाई 'स्वालेह' को भेजा कि तुम सब अल्लाह की इबादत करो, फिर भी वे दो गुट बनकर आपस में लड़ने लग गये।

قَالَ يَا قَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۖ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ (46)

४६. (आप ने) कहा कि हे मेरी क़ौम के लोगो! तुम भलाई से पहले बुराई की जल्दी क्यों मचा रहे हो? तुम अल्लाह (तआला) से माफ़ी क्यों नही माँगते? ताकि तुम पर रहम किया जाये।

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَن مَّعَكَ ۚ قَالَ طَائِرُكُمْ عِندَ اللَّهِ ۖ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ (47)

४७. (वे) कहने लगे कि हम तो तुझ से और तेरे साथियों से अपशगुन (बदशगूनी) ले रहे हैं, (आप ने) जवाब दिया कि तुम्हारा अपशगुन अल्लाह के पास है, बल्कि तुम तो इम्तेहान में पड़े हुए लोग हो।

وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ (48)

४८. इस नगर में नौ (मुखिया) इंसान थे जो धरती में फ़साद फैला रहे थे और सुधार नही करते थे।

---

[1] महारानी सबा (बिलक़ीस) के मुसलमान होने के बाद क्या हुआ? क़ुरआन में या किसी सहीह हदीस में इसकी तफ़सीली जानकारी नही मिलती, तफ़सीरी रिवायत में ज़रूर मिलता है कि उन का आपस में विवाह हो गया था, लेकिन जब क़ुरआन और हदीस इस विषय में ख़ामोश है तो इस बारे में ख़ामोश रहना ही बेहतर है।

قَالُوا تَقَاسَمُوا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ وَاَهْلَهُ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿49﴾

४९. उन्होंने आपस में अल्लाह की क़सम खाकर अहद (प्रतिज्ञा) किया कि रात ही को 'स्वालेह' और उस के परिवार वालों पर हम छापा मारेंगे, और उस के उत्तराधिकारी (वली) से कह देंगे कि हम उस के परिवार के क़त्ल के वक़्त मौजूद न थे, और हम सच बोल रहे हैं।

وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿50﴾

५०. और उन्होंने चाल चली और हम ने भी और वह उसे समझते ही न थे।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿51﴾

५१. अब देख लो कि उनकी साजिश (षड्यन्त्र) का नतीजा (परिणाम) क्या हुआ? हम ने उन को और उन की क़ौम को सभी को हलाक कर दिया।

فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿52﴾

५२. यह हैं उन के घर जो उन के ज़ुल्म की वजह से उजड़े पड़े हैं, जो लोग इल्म रखते हैं उन के लिए उस में बड़ी निशानी है।

وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿53﴾

५३. और हम ने उन को जो ईमान लाये थे, और नेक काम करते थे बाल-बाल बचा लिया।

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿54﴾

५४. और लूत की (चर्चा कर) जबकि उस ने अपनी क़ौम से कहा कि देखने-भालने के बावजूद भी तुम कुकर्म (बदकारी) कर रहे हो?

اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَاۗءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿55﴾

५५. यह क्या बात है? कि तुम औरतों को छोड़कर मर्दों के पास काम वासना (शहवत) से आते हो? सच यह है कि तुम बड़ी जिहालत कर रहे हो।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِۦٓ إِلَّآ أَن قَالُوٓا۟ أَخْرِجُوٓا۟ ءَالَ لُوطٍ مِّن قَرْيَتِكُمْ ۖ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ﴿56﴾

५६. उन की क़ौम का जवाब इस कहने के अलावा दूसरा कुछ न था कि लूत के परिवार वालों को अपने नगर से निकाल दो, यह लोग तो बड़ी पाकी दिखा रहे हैं।

فَأَنجَيْنَٰهُ وَأَهْلَهُۥٓ إِلَّا ٱمْرَأَتَهُۥ قَدَّرْنَٰهَا مِنَ ٱلْغَٰبِرِينَ ﴿57﴾

५७. और हम ने उसे और उसके परिवार को, उसकी पत्नी के सिवाय सब को बचा लिया, इसका अंदाज़ा तो बाक़ी रह जाने वालों में हम लगा चुके थे।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَسَآءَ مَطَرُ ٱلْمُنذَرِينَ ﴿58﴾

५८. और उन के ऊपर एक (ख़ास तरह की) बारिश कर दी,[1] इसलिए उन डराये गये लोगों पर बुरी बारिश हुई।

قُلِ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَٰمٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ ٱلَّذِينَ ٱصْطَفَىٰٓ ۗ ءَآللَّهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿59﴾

५९. तो आप कह दें कि सारी तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है और उस के चुने हुए बन्दों पर सलाम है, क्या अल्लाह (तआला) बेहतर है या वह जिन्हें ये लोग साझीदार बना रहे हैं।

أَمَّنْ خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ وَأَنزَلَ لَكُم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً فَأَنۢبَتْنَا بِهِۦ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَّا كَانَ لَكُمْ أَن تُنۢبِتُوا۟ شَجَرَهَآ ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ ٱللَّهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَعْدِلُونَ ﴿60﴾

६०. (भला बताओ तो) आकाशों को और धरती को किसने पैदा किया? किसने आकाश से बारिश की, फिर उस से हरे-भरे बारौनक़ बाग़ उगाये? इन बाग़ों के पेड़ों को तुम कभी नहीं उगा सकते, क्या अल्लाह के सिवाय दूसरा कोई इबादत के लायक़ भी है? बल्कि ये लोग हट जाते हैं (सीधे रास्ते से)।

أَمَّن جَعَلَ ٱلْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَٰلَهَآ أَنْهَٰرًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَٰسِىَ وَجَعَلَ بَيْنَ ٱلْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ ٱللَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿61﴾

६१. क्या वह जिस ने धरती को निवासस्थल (क़रारगाह) बनाया, उस के बीच नदियाँ जारी कर दीं, उस के लिये पहाड़ बनाये और दो समुद्रों के बीच रोक बना दी, क्या अल्लाह के साथ कोई दूसरा इबादत के लायक़ भी है? बल्कि उन में से ज़्यादातर कुछ जानते ही नहीं।

[1] उन पर जो अज़ाब आया, उसकी तफ़सील पहले गुज़र चुकी है कि उन बस्तियों को उन पर पलट दिया गया और उस के बाद उन पर तह पर तह कंकड़-पत्थरों की बारिश हुई।

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْأَرْضِ ۗ ءَإِلَٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۚ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ (62)

६२. बेबस की पुकार को जबकि वह पुकारे कौन क़ुबूल करके तकलीफ़ को दूर कर देता है, और तुम्हें धरती का ख़लीफ़ा बनाता है?[1] क्या अल्लाह (तआला) के साथ दूसरा कोई इबादत के लायक़ है? तुम बहुत कम शिक्षा ग्रहण (हासिल) करते हो।

أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۗ ءَإِلَٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۚ تَعَٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ (63)

६३. कौन है वह जो तुम को थल और जल के अंधेरों में रास्ता दिखाता है और जो अपनी रहमत से पहले ही ख़ुशख़बरी देने वाली हवा चलाता है? क्या अल्लाह के साथ कोई दूसरा देवता भी है? जिन्हें ये साझी बनाते हैं, उन सब से अल्लाह (तआला) बुलन्द है।

أَمَّنْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ ۗ ءَإِلَٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۚ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ (64)

६४. कौन है वह जो मख़लूक़ की पहली बार पैदाईश करता है फिर उसे लौटायेगा और जो तुम्हें आकाश और धरती से रिज़्क़ अता कर रहा है, क्या अल्लाह के साथ दूसरा कोई देवता भी है? कह दीजिए कि अगर सच्चे हो तो अपना सुबूत लाओ।

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللّٰهُ ۚ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ (65)

६५. कह दीजिए कि आकाश वालों में से और धरती वालों में से अल्लाह के सिवाय कोई भी ग़ैब (की बातें) नहीं जानता[2] उन्हें तो यह भी

[1] यानी एक सम्प्रदाय के बाद दूसरा सम्प्रदाय, एक क़ौम के बाद दूसरी क़ौम और एक जाति के बाद दूसरी जाति पैदा करता है, वर्ना अगर वह सबको एक ही वक़्त में पैदा करता तो धरती भी तंगी की शिकायत करती, तिजारत में भी कठिनाई होती और ये सब एक-दूसरे की टाँग खींचने में ही व्यस्त (मश्ग़ूल) रहते। यानी एक के बाद दूसरे इंसानों को पैदा करना और एक को दूसरे का वारिस बनाना, यह भी उसकी अति कृपा (बड़ी रहमत) है।

[2] यानी जिस तरह ऊपरी विषयों में अल्लाह तआला अकेला (अद्वितीय) है, उसका कोई साझी नहीं उसी प्रकार ग़ैब के इल्म में भी वह अकेला है, उस के सिवाय किसी को भी ग़ैब का इल्म नहीं। नबियों और रसूलों को भी उतना ही इल्म (ज्ञान) होता है जितना अल्लाह तआला वह्यी और ईश्वरीय प्रेरणा (इल्हाम) के ज़रिये उनको बता देता है और जो इल्म किसी के बताने से हासिल हो उस के जानने वाला को ग़ैब का इल्म जानने वाला नहीं कहा जाता। ग़ैब का इल्म तो वह है जो बिना किसी माध्यम के ख़ुद हर एक चीज़ का इल्म रखे, हर हक़ीक़त को जानता हो और छिपी से छिपी चीज़ भी उस के इल्म के दायरे से बाहर न हो। यह विशेषता

मालूम नहीं कि वे कब दोबारा जिन्दा किये जायेंगे।

بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۚ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ (66)

६६. बल्कि आख़िरत के बारे में उनका इल्म ख़त्म हो चुका है, बल्कि यह उस की तरफ़ से शक में हैं बल्कि यह उस से अंधे हैं।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّ اٰبَآؤُنَآ اَئِنَّا لَمُخْرَجُوْنَ (67)

६७. काफ़िरों ने कहा कि क्या जब हम मिट्टी हो जायेंगे और हमारे बाप-दादा भी क्या हम फिर निकाले जायेंगे।

لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ (68)

६८. हमें और हमारे पूर्वजों (बुज़ुर्गों) को बहुत पहले से ये वादे दिये जाते रहे हैं। कुछ नहीं, यह तो सिर्फ़ पूर्वजों की काल्पनिक कथायें (ख़्याली अफ़साने) हैं।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ (69)

६९. कह दीजिए कि धरती में तनिक चल-फिर कर देखो तो सही कि मुजरिमों का कैसा अंजाम हुआ?

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ (70)

७०. और आप उन के बारे में फ़िक्रमंद न हों और उनकी साज़िशों से तंग दिल न हों।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (71)

७१. और कहते हैं कि यह वादा कब है, अगर सच्चे हो तो बतला दो।

قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ (72)

७२. जवाब दीजिए कि शायद कुछ वे चीज़ें जिन की तुम जल्दी मचा रहे हो, तुम से बहुत क़रीब हो गई हों।[1]

(ख़ुसूसियत) सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह ही की है, इसलिए केवल वही छिपी बातों (ग़ैब) का जानने वाला है, उस के सिवाय पूरी दुनिया में कोई भी छिपी बातों (ग़ैब) का जानने वाला नहीं है। हज़रत आयेशा (رضي الله عنها) फ़रमाती हैं कि जो इंसान यह ख़्याल रखता है कि नबी ﷺ भविष्य (मुस्तक़्बिल) में होने वाले वाक़ेआ (घटनाओं) का इल्म रखते हैं, उस ने अल्लाह पर बहुत बड़ा बुहतान लगाया, इसलिए कि वह फ़रमा रहा है कि "आकाश और धरती में ग़ैब (छिपी बातों) का इल्म केवल अल्लाह को है।" (सहीह बुख़ारी, नं॰ ४८५५, सहीह मुस्लिम नं॰ २८७, और अल-तिर्मिज़ी नं॰ ३०६८)

[1] इस से मुराद बद्र की लड़ाई का वह अज़ाब है, जो क़त्ल और क़ैद किये जाने के रूप में

وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿73﴾

७३. और बेशक आप का रब सभी लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल (कृपा) वाला है, लेकिन ज़्यादातर लोग शुक्रिया अदा नहीं करते हैं।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿74﴾

७४. और बेशक आप का रब उन बातों को भी जानता है जिन्हें वे अपने दिल में छिपा रहे हैं और जिन्हें ज़ाहिर कर रहे हैं।

وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿75﴾

७५. आकाश और धरती की कोई छिपी चीज भी ऐसी नहीं है जो रौशन खुली किताब में न हो।[1]

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَقُصُّ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿76﴾

७६. बेशक यह क़ुरआन इस्राईल की औलाद के सामने ज़्यादातर उन बातों का बयान कर रहा है जिन में ये इख़्तिलाफ़ (मतभेद) करते हैं।[2]

وَإِنَّهُ لَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿77﴾

७७. और यह (क़ुरआन) ईमानवालों के लिए बेशक हिदायत और रहमत है।

إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿78﴾

७८. आप का रब उन के बीच अपने हुक्म से (सभी) फ़ैसला कर देगा, वह बड़ा प्रभावशाली (ग़ालिब) और जानने वाला है।

काफ़िरों को पहुँचा और क़ब्र का अज़ाब है।

[1] इस से मुराद 'लौहे महफ़ूज़' (सुरक्षित पुस्तक) है। उन ही छिपी चीज़ों में उस अज़ाब का इल्म भी है जिस के लिए यह काफ़िर लोग जल्दी मचाते हैं, लेकिन उसका समय भी अल्लाह ने 'लौहे महफ़ूज़' में लिख रखा है, जिसे केवल वही जानता है और जब वह वक़्त आ जाता है जो उस ने किसी क़ौम की तबाही के लिए लिख रखा है तो फिर उसे नाश कर दिया जाता है, यह मुक़र्रर वक़्त के आने से पहले जल्दी क्यों करते हैं?

[2] अहले किताब यानी यहूदी और इसाई कई सम्प्रदायों और गुटों में बट गये थे, उन के विश्वास (ख़्याल) भी एक-दूसरे से अलग थे। यहूदी हज़रत ईसा का निरादर (ज़लील) और अपमान (बेइज़्ज़त) करते थे और इसाई उन के एहतेराम में ग़ुलू (अतिशयोक्ति), यहाँ तक कि उन्हें अल्लाह या अल्लाह का बेटा बना दिया। क़ुरआन करीम ने उन्ही के बारे में ऐसी बातें बयान की हैं, जिन से सच वाज़ेह हो जाता है और अगर वे क़ुरआन की बयान की हुई सच्चाई को क़ुबूल कर लें तो उनका अक़ीदा से सम्बन्धित विरोध का ख़ात्मा और उन के इख़्तिलाफ़ और फूट में कमी हो जाये।

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۖ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ﴿79﴾

७९. इसलिए आप अल्लाह पर ही भरोसा रखें, बेशक आप सच और खुले दीन पर हैं।

إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿80﴾

८०. बेशक आप न मुर्दों को सुना सकते हैं और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हैं[1] जब कि वे पीठ फेर कर मुंह मोड़े जा रहे हों।

وَمَا أَنتَ بِهَادِي الْعُمْيِ عَن ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِن تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُم مُّسْلِمُونَ ﴿81﴾

८१. और न आप अंधों को उन की गुमराही से हटाकर हिदायत दे सकते हैं, आप तो सिर्फ उन्हें सुना सकते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाये हैं फिर वे फ़रमाँबर्दार हो जाते हैं।

وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ﴿82﴾

८२. और जब उन के उपर अज़ाब का वादा साबित हो जायेगा, हम धरती से उन के लिए एक जानवर निकालेंगे जो उन से बातें करता होगा[2] कि लोग हमारी आयतों पर यक़ीन नहीं करते थे।[3]

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِن كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّن يُكَذِّبُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿83﴾

८३. और जिस दिन हम हर उम्मत में से उन लोगों के गुटों को जो हमारी आयतों को झुठलाते थे घेर-घार कर लायेंगे फिर वे सब

---

[1] यह उन काफ़िरों की फ़िक्र न करने और सिर्फ अल्लाह पर भरोसा न रखने की दूसरी वजह है, कि ये लोग मुर्दे हैं जो किसी की बात को सुन कर फ़ायेदा नहीं उठा सकते या बहरे हैं, जो न सुनते हैं न समझते हैं और न रास्ता पाने वाले हैं, यानी काफ़िरों की मिसाल मरे हुए इंसान से दी जिन में संवेदन (शऊर) नहीं होता है न अक़्ल और बहरों से, जो बात और नसीहत सुनते हैं न अल्लाह की तरफ़ दावत को क़ुबूल करते हैं।

[2] यह दाब्ब: (अजीब जानवर) वही है जो क़यामत के क़रीब होने की निशानी में से है, जैसाकि हदीस में है। नबी ﷺ ने फ़रमाया : "क़यामत उस वक़्त तक नहीं आयेगी जब तक तुम दस निशानियाँ न देख लो उन में एक जानवर का निकलना है।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ेतन, बाबु फ़ी आयातिल-लती तकूनु क़ब्लस्साअह) दूसरा क़ौल है, "सब से पहले जो निशानी ज़ाहिर होगी वह है सूरज का पूरब के बजाय पश्चिम से निकलना और दोपहर से पहले जानवर का निकलना।" इन दोनों में से जो पहले ज़ाहिर होगा दूसरा उस के फ़ौरन बाद ही ज़ाहिर हो जायेगा। (सहीह मुस्लिम)

[3] यह जानवर के निकलने की वजह है, यानी अल्लाह तआला अपनी यह निशानी इसलिए दिखायेगा कि लोग अल्लाह की निशानियों या आयतों (आदेशों) पर यक़ीन नहीं करते। कुछ कहते हैं कि यह वाक्य (कलाम) वह जानवर अपने मुंह से कहेगा, फिर भी उस जानवर के इंसानों से बात करने में कोई शक नहीं क्योंकि क़ुरआन ने इसको साफ़ तौर से कहा है।

के सब अलग कर दिये जायेंगे।

८४. जब सब के सब आ पहुँचेंगे तो अल्लाह (तआला) फ़रमायेगा कि तुम ने मेरी आयतों को इस के बावजूद कि तुम्हें उन का पूरा इल्म न था, क्यों झुठलाया? और यह भी बताओ कि तुम क्या कुछ करते रहे?

حَتّٰۤى اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِيْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّا ذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿84﴾

८५. और इसकी वजह कि उन्होंने जुल्म किया था, उन पर बात साबित हो जायेगी और वे कुछ न बोल सकेंगे।

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿85﴾

८६. क्या वे देख नहीं रहे हैं कि हम ने रात को इसलिए बनाया है कि वे इस में आराम कर सकें और दिन को हम ने दिखलाने वाला बनाया है, बेशक इस में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान (और विश्वास) रखते हैं।

اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿86﴾

८७. और जिस दिन नरसिंघा (सूर) फूंका जायेगा तो सब के सब आकाशों वाले और धरती वाले घबरा उठेंगे[1] लेकिन जिसे अल्लाह चाहे।[2] और सारे के सारे आजिज (और मजबूर) होकर उस के सामने हाज़िर होंगे।

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ﴿87﴾

---

[1] صور से मुराद वही नरसिंघा है जिस में इस्राफ़ील ﷺ अल्लाह के हुक्म से फूंक मारेंगे, यह फूंक दो या दो से ज़्यादा होंगी। पहली फूंक में सारी दुनिया घबराकर बेहोश हो जायेगी, दूसरी फूंक में मर जायेगी और तीसरी फूंक में सभी लोग क़ब्रों से जिन्दा होकर खड़े हो जायेंगे और कुछ के क़रीब चौथी फूंक होगी जिस से सभी लोग हश्र के मैदान में जमा हो जायेंगे। यहाँ कौन सी फूंक मुराद है? इमाम इब्ने कसीर के क़रीब यह पहली फूंक और इमाम शौकानी के क़रीब तीसरी फूंक है जब लोग क़ब्रों से उठेंगे।

[2] यह छूट हासिल करने वाले लोग कौन होंगे? कुछ के क़रीब नबी और शहीद, कुछ के क़रीब फ़रिश्ते और कुछ के क़रीब सभी ईमानवाले हैं। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि शायद सभी बयान किये गये लोग इस में शामिल हों, क्योंकि ईमानवाले वास्तविक (हक़ीक़ी) घबराहट से महफ़ूज होंगे। (जैसाकि आ रहा है)

८८. और आप पहाड़ों को अपनी जगह पर जमा हुआ समझते हैं लेकिन वे भी बादल (मेघ) की तरह उड़ते फिरेंगे। यह है पैदाईश अल्लाह की जिस ने हर चीज को मजबूत बनाया है, जो कुछ तुम करते हो उस से वह अच्छी तरह जानता है।

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ۗ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ۗ اِنَّهٗ خَبِيْرٌ ۢبِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿88﴾

८९. जो इंसान नेकी के काम लायेगा उसे उस से भी अच्छा बदला मिलेगा, और वह उस दिन की घबराहट से बेख़ौफ़ होंगे।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ﴿89﴾

९०. और जो बुराई लेकर आयेंगे वे औंधे मुंह आग में झोंक दिये जायेंगे, केवल वहीं बदला दिये जाओगे जो तुम करते रहे।

وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ۗ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿90﴾

९१. मुझे तो केवल यही हुक्म दिया गया है कि मैं इस नगर के रब की इबादत करता रहूँ जिसने इसे हुरमत (पवित्रता) वाला बनाया है[1] जिसकी मिल्कियत हर चीज है और मुझे यह भी हुक्म दिया गया है कि मैं आज्ञाकारियों (फ़रमांबरदारों) में हो जाऊँ।

اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ ۡ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿91﴾

९२. और मैं कुरआन की तिलावत करता रहूँ, तो जो हिदायत पर आ जाये वह अपने फ़ायदे के लिए हिदायत पर आयेगा, और जो भटक जाये तो कह दीजिए कि मैं तो केवल सतर्क (आगाह) करने वालों में से हूँ।

وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿92﴾

९३. और कह दीजिए कि सारी तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, वह तुम्हें क़रीब में ही अपनी निशानियाँ दिखायेगा जिन्हें तुम ख़ुद पहचान लोगे, और जो कुछ तुम कर रहे हो उस से आप का रब ग़ाफ़िल नहीं।

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ۗ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿93﴾

---

[1] इस से मुराद मक्का नगर है, इसका ख़ास तौर से बयान इसलिए किया गया है कि इस में ख़ानये कअबा है और यही रसूलुल्लाह ﷺ को भी बहुत प्यारा था। "हुरमत वाला" का मतलब है कि इस में ख़ून-ख़राबा करना, ज़ुल्म करना, शिकार करना, पेड़ काटना, यहाँ तक कि काँटा तोड़ना भी हराम है। (बुख़ारी, किताबुल जनायेज़, मुस्लिम किताबुल हज बाबु तहरीमे मक्का व सैदहा, व अलसुनन)

सूरतुल-क़सस-२८

سُوْرَةُ الْقَصَصِ

सूरः क़सस* मक्का में नाज़िल हुई और इस में अट्ठासी आयतें और नौ रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. ता॰ सीम॰ मीम॰

طٰسٓمّٓ ﴿1﴾

२. ये आयतें हैं रौशन वाली किताब की।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿2﴾

३. हम आप के सामने मूसा और फ़िरऔन का सच्चा वाक़ेआ बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं।

نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿3﴾

४. बेशक फ़िरऔन ने धरती पर फ़साद मचा रखा था, और वहाँ के लोगों का गुट बना रखा था, उन के एक गुट को कमज़ोर (दुर्बल) बना रखा था,[1] उन के बालकों को तो मार डालता था और लड़कियों को ज़िन्दा छोड़ देता था। बेशक वह था ही फ़सादियों में से।

اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِى الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿4﴾

५. और फिर हम ने चाहा कि उन पर दया करें जिन्हें धरती पर बेहद कमज़ोर (दुर्बल) कर दिया गया था और हम उन्हें ही प्रमुख और (धरती) का वारिस बनायें।

وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِى الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَىِٕمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿5﴾

---

* सूरः अल-क़सस की तफ़सीर :यह वाक़ेआ इस बात का सुबूत है कि आप अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर हैं, क्योंकि अल्लाह की वह्यी के बिना सदियों पहले के वाक़ेओं को ठीक उसी तरह से बयान कर देना जिस तरह हुआ नामुमकिन है। फिर भी उस के बावजूद इस से फ़ायेदा केवल ईमानवालों ही को होगा, क्योंकि वही आप की बातों को मानेंगे।

[1] इस से मुराद इस्राईल की औलाद है जो उस वक़्त की सब से अच्छी उम्मत थी, लेकिन इम्तेहान के रूप में फ़िरऔन की गुलामी और उस के ज़ुल्म और सख़्ती का निशान बनी हुई थी।

६. और यह भी कि उन्हें धरती पर ताक़त और इख़्तेयार अता करें[1] और फ़िरऔन और हामान और उन की सेनाओं को वह दिखायें जिस से वे डर रहे हैं।

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا مِنْهُمْ مَا كَانُوا يَحْذَرُونَ ⑥

७. और हम ने मूसा की माँ को वह्यी (प्रकाशना) की[2] कि उसे दूध पिलाती रह और जब तुझे उस के बारे में कोई डर महसूस हो तो उसे नदी में बहा देना, और कोई डर, ग़म और दुख न करना। हम बेशक उसे तेरी तरफ़ लौटाने वाले हैं और उसे अपने पैग़म्बरों में से बनाने वाले हैं।

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ أَنْ أَرْضِعِيهِ ۖ فَإِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَأَلْقِيهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِي وَلَا تَحْزَنِي ۖ إِنَّا رَادُّوهُ إِلَيْكِ وَجَاعِلُوهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ⑦

८. आख़िर में फ़िरऔन के लोगों ने उस बालक को उठा लिया[3] कि आख़िरकार यही बालक उन का दुश्मन हुआ और उन के दुखों का सबब बना, कोई शक नहीं कि फ़िरऔन और हामान और उन की सेना थे ही अपराधी।

فَالْتَقَطَهُ آلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَزَنًا ۗ إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا خَاطِئِينَ ⑧

९. और फ़िरऔन की बीवी (पत्नी) ने कहा कि यह तो मेरी और तेरी आँखों की ठंडक है, इस को क़त्ल न करो[4] ज़्यादा मुमकिन है कि यह हमें कोई फ़ायेदा पहुँचाये या हम इसे अपना ही

وَقَالَتِ امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِي وَلَكَ ۖ لَا تَقْتُلُوهُ ۖ عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ⑨

---

[1] यहाँ धरती से मुराद सीरिया की धरती है, जहाँ वे कनआनियों की धरती के वारिस बने, क्योंकि मिस्र से निकलने के बाद इस्राईल की औलाद मिस्र वापस नहीं गयी। والله أعلم

[2] वह्यी से मुराद यहाँ दिल में बात डालना है, वह वह्यी नहीं है जो नबियों पर फ़रिश्ते के ज़रिये नाज़िल की जाती थी, और अगर फ़रिश्ते के ज़रिये भी आयी हो तब भी मूसा की माँ का नबी होना साबित नहीं होता, क्योंकि फ़रिश्ते कई बार आम लोगों के पास भी आते हैं। जैसे हदीस में गंजे, कोढ़ी और अंधे के पास फ़रिश्तों का आना साबित है। (सहीह बुख़ारी, किताबु अहादीसिल अंबिया)

[3] यह सन्दूक बहता-बहता फ़िरऔन के राजमहल तक पहुँच गया जो नदी के तट ही पर था और वहाँ फ़िरऔन के कर्मचारियों ने पकड़ कर बाहर निकाला।

[4] यह उस वक़्त कहा जब उन्होंने सन्दूक में एक ख़ूबसूरत बच्चा देखा। कुछ कहते हैं कि यह उस वक़्त का क़ौल है जब मूसा ने फ़िरऔन की दाढ़ी के बाल नोच लिये थे तो फ़िरऔन ने उन को क़त्ल करने का हुक्म दे दिया था। (ऐसरूत्तफ़ासीर) बहुवचन (जमा) का शब्द (लफ़्ज़) या तो अकेले फ़िरऔन के लिए ऐहतराम के तौर पर कहा गया है या मुमकिन है कि वहाँ उस के कुछ दरबारी मौजूद रहे हों।

बेटा बना लें और यह लोग अक़्ल ही नहीं रखते थे।

وَاَصۡبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوۡسٰى فٰرِغًا ؕ اِنۡ كَادَتۡ لَـتُبۡدِىۡ بِهٖ لَوۡلَاۤ اَنۡ رَّبَطۡنَا عَلٰى قَلۡبِهَا لِتَكُوۡنَ مِنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿10﴾

१०. और मूसा (ﷺ) की माँ का दिल बेचैन हो गया, क़रीब था कि इस (हक़ीक़त) को बिल्कुल साफ़ (स्पष्ट) कर देतीं अगर हम उन के दिल को ढारस न देते, यह इस लिए कि वह यक़ीन करने वालों में रहे।[1]

وَقَالَتۡ لِاُخۡتِهٖ قُصِّيۡهِ ۫ فَبَصُرَتۡ بِهٖ عَنۡ جُنُبٍ وَّهُمۡ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ۙ‏ ﴿11﴾

११. मूसा (ﷺ) की माँ ने उस की बहन[2] से कहा कि तू इसके पीछे-पीछे जा, तो वह उसे दूर ही दूर से देखती रही[3] और फ़िरऔनियों को इसका एहसास भी न हुआ।

وَحَرَّمۡنَا عَلَيۡهِ الۡمَرَاضِعَ مِنۡ قَبۡلُ فَقَالَتۡ هَلۡ اَدُلُّكُمۡ عَلٰٓى اَهۡلِ بَيۡتٍ يَّكۡفُلُوۡنَهٗ لَـكُمۡ وَهُمۡ لَهٗ نٰصِحُوۡنَ ﴿12﴾

१२. और उस के पहुँचने से पहले हम ने मूसा पर दाईयों का दूध हराम (निषेध) कर दिया था,[4] यह कहने लगी कि क्या मैं तुम्हें[5] ऐसा परिवार बताऊँ जो इस बच्चे का पालन-पोषण (परवरिश) तुम्हारे लिए करें और हों भी इस बच्चे के शुभचिन्तक (ख़ैरख़्वाह)।

---

[1] यानी बहुत दुख की वजह से यह ज़ाहिर कर देतीं कि यह उनका पुत्र है, लेकिन अल्लाह (तआला) ने उन के दिल को मज़बूत कर दिया, जिस पर उन्होंने सब्र किया और यक़ीन कर लिया कि अल्लाह ने इस मूसा को सकुशल (ख़ैरियत से) वापस लौटाने का जो वादा दिया है वह पूरा होगा।

[2] मूसा की बहन का नाम मरियम बिन्ते इमरान था, जिस तरह हज़रत ईसा की माँ का नाम मरियम बिन्ते इमरान था, नाम और पिता के नाम दोनों में बराबर थी।

[3] इसलिए वह नदी के किनारे-किनारे देखती रही यहाँ तक कि उसने देख लिया कि उसका भाई फ़िरऔन के महल में चला गया है।

[4] यानी हम ने अपनी ताक़त और क़ुदरत के ज़रिये मूसा को अपनी माँ के सिवाय किसी दूसरी दाया का दूध पीने से रोक दिया, इसलिए बहुत कोशिश के बावजूद कोई दाया उन्हें दूध पिलाने और ख़ामोश करने में कामयाब नहीं हो सकी।

[5] यह सारा नज़ारा उनकी बहन ख़ामोशी से देख रही थीं, आख़िर में बोल पड़ीं कि मैं तुम्हें ऐसा परिवार बताऊँ जो इस बच्चे का तुम्हारे लिए पालन-पोषण (परवरिश) करे।

فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿13﴾

१३. तो हम ने उसे उस की मां की तरफ़ वापस पहुँचा दिया,[1] ताकि उस की आँखें ठंडी रहें और दुखी न हो और जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है,[2] लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿14﴾

१४. और जब मूसा (ﷺ) अपनी जवानी को पहुँच गये और पूरे ताक़तवर हो गये, हम ने उन्हें हिक्मत (बुद्धि) और इल्म अता किया, नेकी करने वालों को हम इसी तरह का बदला दिया करते हैं।

وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۫ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِىْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِىْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۫ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿15﴾

१५. और (मूसा) एक ऐसे वक़्त में नगर में आये जबकि नगर के लोग सोये हुए थे। यहां दो इंसानों को लड़ते हुए पाया, यह एक तो उस के गुटों में से था और यह दूसरा उस के दुश्मनों में से, उस की जमाअत वाले ने उस के ख़िलाफ़ जो उस के दुश्मनों में से था उस से मदद मांगी, जिस पर मूसा ने उसे घूँसा मारा जिस से वह मर गया, मूसा कहने लगे कि यह तो शैतानी काम है।[3] बेशक शैतान दुश्मन और खुले तौर से बहकाने वाला है।

---

[1] इसलिए उन्होंने मूसा की बहन से कहा कि जा उस औरत को ले आ, वह दौड़ी-दौड़ी गयी और अपनी मां को, जो मूसा की भी मां थीं साथ ले आयी।

[2] जब हज़रत मूसा ने अपनी मां का दूध पी लिया तो फ़िरऔन ने मूसा की मां से महल में रहने की गुज़ारिश की ताकि बच्चे का अच्छी तरह से परवरिश हो सके, लेकिन उन्होंने कहा कि मैं अपने पति और बच्चों को छोड़कर यहां नहीं रह सकती, आख़िर में यह तय हुआ कि वह अपने साथ बच्चे को अपने घर ले जायें और वहीं इसका परवरिश करें और इसकी उजरत (पारिश्रामिक) उन्हें राज्य ख़ज़ाने से दी जायेगी। अल्लाह की ही सारी तारीफ़ें हैं, अल्लाह की क़ुदरत का क्या कहना, दूध अपने पुत्र को पिलायें और वेतन फ़िरऔन से हासिल करें, अल्लाह ने मूसा को वापस लौटाने का वादा किस अच्छे तरीक़े से पूरा कर दिखाया।

[3] इसे शैतानी (दानव का) काम इसलिए कहा गया है कि क़त्ल एक बहुत बड़ा गुनाह है, और हज़रत मूसा का मक़सद कभी क़त्ल करने का नहीं था।

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿16﴾

१६. फिर वह दुआ करने लगे कि हे रब ! मैंने तो ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया, तू मुझे माफ़ कर दे[1] अल्लाह (तआला) ने उसे माफ़ कर दिया, वेशक वह माफ़ करने वाला और बड़ा रहम करने वाला है।

قَالَ رَبِّ بِمَاۤ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ﴿17﴾

१७. कहने लगे हे मेरे रव ! जैसे तूने मुझ पर यह नेमत की, मैं भी अव किसी मुजरिम का मददगार न वनूँगा।

فَاَصْبَحَ فِي الْمَدِيْنَةِ خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ يَسْتَصْرِخُهٗ ؕ قَالَ لَهٗ مُوْسٰۤى اِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِيْنٌ ﴿18﴾

१८. फिर सुबह ही सुबह डरते हुए ख़बर लेने को नगर में गये कि अचानक वही इंसान जिस ने कल उन से मदद माँगी थी उन से विनती कर रहा है। मूसा ने उस से कहा कि इस में शक नहीं कि तू तो ख़ुले तौर से गुमराह है।

فَلَمَّاۤ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ بِالَّذِيْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ يٰمُوْسٰۤى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِيْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًۢا بِالْاَمْسِ ۗ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِي الْاَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿19﴾

१९. फिर जब अपने और उस के दुश्मन को पकड़ना चाहा, वह फ़र्यादी कहने लगा कि हे मूसा! क्या जिस तरह तूने कल एक इंसान को क़त्ल कर दिया है मुझे भी मार डालना चाहता है, तू तो देश में ज़ालिम और फ़सादी बनना ही चाहता है और तेरा यह इरादा ही नहीं कि सुलह करने वालों में से हो।

وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ؗ قَالَ يٰمُوْسٰۤى اِنَّ الْمَلَاَ يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّيْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿20﴾

२०. और नगर के दूर के किनारे से दौड़ता हुआ एक इंसान आया[2] और कहने लगा कि हे मूसा! यहाँ के मुखिया तेरे क़त्ल का परामर्श (मश्‌विरा) कर रहे हैं, इसलिए तू (बहुत जल्द)

---

[1] यह अचानक क़त्ल अगरचे बहुत बड़ा गुनाह नहीं था, क्योंकि बहुत बड़े गुनाह से अल्लाह तआला अपने पैग़म्बर को महफ़ूज़ रखता है। फिर भी यह ऐसा गुनाह हर तरह से था जिस के लिये बहुत माफ़ी माँगना उन्होंने ज़रूरी समझा। दूसरे उन्हें डर था कि अगर फ़िरऔन को इसकी ख़बर मिली तो इस के वदले उन का क़त्ल न कर दे।

[2] यह आदमी कौन था? कुछ के क़रीब यह फ़िरऔन के वंश से था जो छिपे तौर से हज़रत मूसा का शुभचिन्तक (ख़ैरख़्वाह) था, और साफ़ बात है कि सरदारों के ख़्यालों की ख़बर ऐसे ही आदमी से आना ज़्यादा अनुमानित (मुनासिब) वात है, कुछ के क़रीब यह हज़रत मूसा का रिश्तेदार और इस्राईली था। दूर के किनारे से मुराद मुन्फ़ है जहाँ फ़िरऔन का महल और राजधानी थी और यह नगर के आख़िरी सिरे पर था।

चला जा, मुझे अपना शुभचिन्तक (ख़ैरख़्वाह) मान।

فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ؗ قَالَ رَبِّ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿21﴾

२१. इसलिए मूसा वहाँ से डर कर बचते-बचाते निकल भागे, कहने लगे हे रब! मुझे ज़ालिमों के गुट से बचा ले।

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿22﴾

२२. और जब 'मदयन' की तरफ़ जाने लगे तो कहने लगे कि मुझे यक़ीन है कि मेरा रब मुझे सीधा रास्ता ले चलेगा।

وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ؗ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ؕ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ٚ وَاَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿23﴾

२३. और 'मदयन' के पानी पर जब आप पहुँचे तो देखा कि लोगों का एक समूह वहाँ पानी पिला रहा है[1] और दो महिलायें (औरतें) अलग खड़ी (अपने जानवरों को) रोकती हुई दिखाई दीं, पूछा कि तुम्हारा क्या मसला है, वे बोलीं कि जब तक ये चरवाहे वापस न लौट जायें हम पानी नहीं पिलाते और हमारे पिता बहुत बूढ़े हैं।

فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّيْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿24﴾

२४. इसलिए आप ने ख़ुद उन (जानवरों) को पानी पिला दिया फिर छाया की तरफ़ हट आये और कहने लगे हे रब ! तू जो कुछ भलाई मेरी तरफ़ उतारे मैं उस का मुहताज हूँ।[2]

---

[1] यानी जब मदयन पहुँचे तो देखा कि उस के घाट (कुएं) पर लोगों की भीड़ है, जो अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं। मदयन यह क़बीले (प्रजाति) का नाम था और हज़रत इब्राहीम की औलाद में से था, जब कि हज़रत मूसा याक़ूब के ख़ानदान से थे जो हज़रत इब्राहीम के पोते (हज़रत इसहाक़ के बेटे) थे। इस तरह मदयनवासियों और मूसा के बीच ख़ानदानी सम्बन्ध भी था। (ऐसरूत्तफ़ासीर) और यही हज़रत शुऐब का निवास स्थान (मक़ाम) और नबूअत (दूतत्व) का इलाक़ा भी था।

[2] हज़रत मूसा इतनी लम्बी यात्रा (सफ़र) करके मिस्र से मदयन पहुँचे थे, खाने के लिए कुछ नहीं था जबकि यात्रा की थकान और भूख से निढाल थे। अत: जानवरों को पानी पिलाकर एक पेड़ की छाया में आकर दुआ करने लगे। خير कई बातों के लिए इस्तेमाल किया जाता है, खाने के लिये, अच्छे कामों के लिये, इबादत के लिये, ताक़त, बल और माल के लिये। (ऐसरूत्तफ़ासीर) यहाँ इसका इस्तेमाल खाने के लिये हुआ है, यानी मुझे इस वक़्त खाने की ज़रूरत है।

فَجَآءَتْهُ إِحْدٰىهُمَا تَمْشِىْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۡ قَالَتْ إِنَّ أَبِىْ يَدْعُوكَ لِيَجْزِيَكَ أَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ۭ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ۫ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿25﴾

२५. इतने में उन दोनों औरतों में से एक उन की तरफ़ शर्म के साथ चलती हुई आयी और कहने लगी कि मेरे पिता आप को बुला रहे हैं ताकि आप ने जो हमारे (जानवरों) को पानी पिलाया है उस की उजरत दें, जब (हज़रत मूसा) उन के पास पहुँचे और उन से अपनी सारी कहानी सुनाई तो वह कहने लगे कि अब न डर, तूने ज़ालिम (अत्याचारी) कौम से छुटकारा पा लिया।

قَالَتْ إِحْدٰىهُمَا يٰٓأَبَتِ اسْتَأْجِرْهُ ۡ إِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَأْجَرْتَ الْقَوِىُّ الْأَمِيْنُ ﴿26﴾

२६. उन दोनों में से एक ने कहा कि हे पिताजी! आप इन्हें मज़दूरी पर रख लीजिए क्योंकि जिन्हें आप मज़दूरी पर रखें उन में से सब से अच्छा वह है जो बलवान (ताक़तवर) और ईमानदार हो।

قَالَ إِنِّىْٓ أُرِيْدُ أَنْ أُنْكِحَكَ إِحْدَى ابْنَتَىَّ هٰتَيْنِ عَلٰٓى أَنْ تَأْجُرَنِىْ ثَمٰنِىَ حِجَجٍ ۚ فَإِنْ أَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَآ أُرِيْدُ أَنْ أَشُقَّ عَلَيْكَ ۭ سَتَجِدُنِىْٓ إِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿27﴾

२७. उस (बूढ़े) ने कहा कि मैं अपनी इन दो बेटियों में से एक को आप के विवाह में देना चाहता हूँ, इस [महर (स्त्रीधन)] पर कि आप आठ साल तक मेरा काम-काज करें। हाँ अगर आप दस साल तक करें तो यह आप की तरफ़ से एहसान के तौर पर है, मैं कभी यह नहीं चाहता कि आप पर किसी तरह का कष्ट डालूँ। अल्लाह को कुबूल हुआ तो आगे चलकर आप मुझे भला इंसान पायेंगे।

قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِىْ وَبَيْنَكَ ۭ أَيَّمَا الْأَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَىَّ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿28﴾

२८. (मूसा ﷺ ने) कहा कि ठीक है यह बात तो मेरे और आप के बीच मुक़र्रर (निर्धारित) हो गयी, मैं इन दोनों मुद्दतों में से जिसे पूरा कर लूँ मुझ पर ज़ुल्म न हो। हम यह जो कुछ कह रहे हैं उस पर अल्लाह (गवाह और) निगराँ है।

२९. जब (हज़रत) मूसा (ﷺ) ने मुद्दत पूरी कर ली और अपने परिवार वालों को लेकर चले तो 'तूर' नाम के पहाड़ की तरफ़ आग देखी, अपनी पत्नी से कहने लगे, ठहरो ! मैंने आग देखी है, ज़्यादा मुमकिन है कि मैं वहाँ से कोई ख़बर लाऊँ या आग का कोई अंगारा लाऊँ ताकि तुम ताप लो।

فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ آنَسَ مِن جَانِبِ الطُّورِ نَارًا قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّي آتِيكُم مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ﴿29﴾

३०. इसलिए जब वहाँ पहुँचे तो उस मुबारक धरती के मैदान के दायें किनारे के पेड़ में से आवाज़ दी गयी कि हे मूसा! बेशक मैं ही अल्लाह हूँ सारी दुनिया का रब।

فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ مِن شَاطِئِ الْوَادِ الْأَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبَارَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ أَن يَا مُوسَىٰ إِنِّي أَنَا اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿30﴾

३१. और यह (भी आवाज़ आयी) कि अपनी छड़ी डाल दे, फिर जब उसे देखा कि वह साँप की तरह फनफना रही है, तो पीठ फेर कर वापस हो लिये और मुड़कर मुँह भी नहीं किया, हम ने कहा कि हे मूसा ! आगे आ भयभीत (ख़ौफ़ज़दा) न हो, बेशक तू हर तरह से शान्ति वाला (सुरक्षित) है।[1]

وَأَنْ أَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ وَلَّىٰ مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ يَا مُوسَىٰ أَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ إِنَّكَ مِنَ الْآمِنِينَ ﴿31﴾

३२. अपने हाथ को अपनी जेब में डाल वह बिना किसी प्रकार के दाग़ के पूरा सफ़ेद चमकता हुआ निकलेगा, और डर से बचने के लिए अपनी बाँह अपनी तरफ़ मिला ले। बस ये दोनों मोजिज़े तेरे रब की तरफ़ से हैं फ़िरऔन

اسْلُكْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ وَاضْمُمْ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذَانِكَ بُرْهَانَانِ مِن رَّبِّكَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿32﴾

---

[1] यह मूसा (ﷺ) का वह मोजिज़ा है जो तूर पहाड़ पर नबूअत से सुशोभित (सरफ़राज़) किये जाने के बाद उन्हें मिला, चूँकि मोजिज़ा आदत (व्यवहार) के ख़िलाफ़ मामले को कहा जाता है यानी जो सामान्य (आम) आदत और ज़ाहिरी असबाब (साधनों) के ख़िलाफ़ हो, ऐसी बात चूँकि अल्लाह के हुक्म और मर्ज़ी से ज़ाहिर होती है किसी इंसान की ताक़त से नहीं चाहे वह बुज़ुर्ग पैग़म्बर और निकटवर्ती (मुक़र्रब) नबी ही क्यों न हो। इसलिए जब मूसा के अपने हाथ की लाठी धरती पर फेंकने से चलती, दौड़ती और फुँकारती साँप बन गई तो हज़रत मूसा भी डर गये, जब अल्लाह ने बताया और तसल्ली दी तो हज़रत मूसा का डर ख़त्म हुआ और यह वाज़ेह हुआ कि अल्लाह तआला ने सच्चाई के सबूत के तौर पर यह मोजिज़ा उन्हें अता किया है।

और उस के गुट की तरफ़, बेशक वे सब के सब नाफ़रमानी करने वाले नाफ़रमान लोग हैं।

३३. (मूसा عليه السلام ने) कहा कि हे रब ! मैंने उनका एक आदमी मार दिया था, अब मुझे डर है कि वे मुझे भी मार डालेंगे।

قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ﴿33﴾

३४. और मेरा भाई हारून मुझ से ज़्यादा साफ़ ज़बान वाला है, तू उसे भी मेरा सहायक (मददगार) बनाकर मेरे साथ भेज कि वह मुझे सच्चा माने, मुझे तो डर है कि वे सब मुझे झुठला देंगे।

وَأَخِي هَارُونُ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي لِسَانًا فَأَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْءًا يُصَدِّقُنِي إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ﴿34﴾

३५. (अल्लाह तआला ने) कहा कि हम तेरे भाई के ज़रिये तुझे मज़बूत बाज़ू अता करेंगे और तुम दोनों को प्रभावशाली (ग़ालिब) करेंगे तो फ़िरऔनी तुम तक पहुँच ही न सकेंगे। हमारी निशानियों के सबब तुम दोनों और तुम्हारे पैरोकार ही कामयाब रहेंगे।

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطَانًا فَلَا يَصِلُونَ إِلَيْكُمَا بِآيَاتِنَا أَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغَالِبُونَ ﴿35﴾

३६. इसलिए जब उन के पास मूसा (عليه السلام) हमारे दिये हुए खुले मोजिज़े लेकर पहुँचे तो वे कहने लगे कि यह तो केवल गढ़ा-गढ़ाया जादू है, हम ने अपने पहलों के ज़माने में कभी यह नहीं सुना।

فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُفْتَرًى وَمَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ﴿36﴾

३७. और (हज़रत) मूसा कहने लगे मेरा रब उसे अच्छी तरह जानता है जो उस के पास की हिदायत लेकर आता है, और जिस के लिए आख़िरत का अच्छा अंजाम (परिणाम) होता है।[1] बेशक ज़ालिमों का भला न होगा।

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ مِنْ عِنْدِهِ وَمَنْ تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿37﴾

[1] अच्छे अंजाम (परिणाम) से मुराद आख़िरत में अल्लाह की ख़ुशी और उस की माफ़ी और रहमत के मुस्तहिक़ हो जाना है, और यह सौभाग्य (ख़ुशनसीबी) केवल एकेश्वरवादियों (तौहीद वालों) के हिस्से में आयेगा।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ فَاَوْقِدْ لِيْ يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿38﴾

३८. और फ़िरऔन कहने लगा कि हे दरबारियो! मैं तो अपने सिवाय किसी को तुम्हारा माबूद नहीं जानता। सुन, हे हामान ! तू मेरे लिए मिट्टी को आग में पकवा, फिर मेरे लिए एक महल तैयार कर तो मैं मूसा के इलाह (देवता) को झाँक लूँ, उसे मैं तो झूठों में से ही समझ रहा हूँ।

وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ﴿39﴾

३९. उस ने और उस की सेना ने नाहक़ देश में घमण्ड किया,[1] और समझ लिया कि हमारी तरफ़ लौटाये ही नही जायेंगे।

فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿40﴾

४०. आख़िर में हम ने उसे और उस की सेना को पकड़ लिया और समुद्र में डूबो दिया, अब देख ले कि उन ज़ालिमों का अंजाम कैसा कुछ हुआ?

وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿41﴾

४१. और हम ने उन्हें ऐसे अगुवा बना दिये कि लोगों को नरक की ओर बुलायें और क़यामत के दिन भी मदद न किये जायें।

وَاَتْبَعْنٰهُمْ فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ﴿42﴾

४२. और हम ने इस दुनिया में भी उन के पीछे अपनी लानत लगा दिया, और क़यामत के दिन भी वह बुरी हालत वाले लोगों में से होंगे।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿43﴾

४३. और उन अगले ज़माने के लोगों को हलाक करने के बाद हम ने मूसा को ऐसी किताब अता की जो लोगों के लिए दलील और हिदायत और रहमत (कृपा) होकर आयी थी ताकि वे नसीहत हासिल कर लें।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَآ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿44﴾

४४. और तूर की पश्चिमी दिशा की तरफ़ जब कि हम ने मूसा को हुक्म की वह्यी (प्रकाशना) पहुँचायी थी, न तो तू मौजूद था न तू देखने वालों में से था।

---

[1] धरती से मुराद मिस्र की धरती है जहां फ़िरऔन राज्य करता था और घमंड का मतलब बिना हक़ के अपने को ऊँचा समझना है, यानी उन के पास कोई सुबूत ऐसा न था जो मूसा की दलीलों और मोजिज़ो का खण्डन (तरदीद) कर सकता, लेकिन घमंड बल्कि दुश्मनी का प्रदर्शन (इज़्हार) करते हुए उन्होंने हठधर्मी और इंकार का रास्ता अपनाया।

وَلٰكِنَّآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿45﴾

४५. लेकिन हम ने बहुत सी नसलों को पैदा किया[1] जिन पर लम्बी मुद्दत गुज़र गयी, और न तू मदयन का रहने वाला था कि उन के सामने हमारी आयतों का पाठ करता, बल्कि हम ही रसूलों को भेजने वाले रहे।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿46﴾

४६. और न तू तूर की तरफ़ था जबकि हम ने आवाज़ दी बल्कि यह तेरे रब की तरफ़ से एक रहमत है, इसलिए कि तू उन लोगों को सतर्क (आगाह) कर दे जिन के पास तुझ से पहले कोई डराने वाला नहीं पहुँचा,[2] क्या ताज्जुब कि वह नसीहत हासिल कर लें।

وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۢبِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿47﴾

४७. और अगर ये बात न होती कि उन्हें उन के अपने हाथों आगे भेजे हुए कर्मों (आमाल) के सबब कोई तक्लीफ़ पहुँचती तो यह कह उठते कि हे हमारे रब! तूने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों का पालन करते और ईमान वालों में हो जाते।

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى ۭ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۣ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ ﴿48﴾

४८. फिर जब उन के पास हमारी तरफ़ से सच आ पहुँचा, तो कहते हैं कि यह वह क्यों नहीं दिया गया जैसे दिये गये थे मूसा। अच्छा, तो क्या मूसा को इस से पहले जो कुछ दिया गया था उस के साथ लोगों ने कुफ़्र (इंकार) नहीं किया था? (खुलकर) कहा था कि ये दोनों जादूगर हैं, जो एक-दूसरे के मददगार हैं और हम तो उन सब को इंकार करने वाले हैं।

---

[1] قُرُوْنٌ (कुरून) बहुवचन (जमा) है قَرْنٌ (कर्न) का, जिसका मतलब है युग (ज़मान)। लेकिन यहाँ नसलों, जमाअतों के मतलब में है, यानी हे मोहम्मद (ﷺ)! आप के और मूसा के बीच जो ज़माना है उस में हम ने कई सम्प्रदाय पैदा किये।

[2] इस से मुराद मक्कावासी और अरब हैं जिनकी तरफ़ नबी ﷺ से पहले कोई नबी नही आया, क्योंकि हज़रत इब्राहीम के बाद नबूवत का सिलसिला इब्राहीम के परिवार ही में रहा और उनका नुज़ूल इस्राईल की औलाद की तरफ़ ही होता रहा। इस्माईल की औलाद यानी अरबों में नबी ﷺ पहले नबी थे और नबूअत के सिलसिले को पूरा करने वाले थे।

قُلْ فَأْتُوا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰى مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (49)

४९. कह दीजिए कि अगर सच्चे हो तो तुम भी अल्लाह के पास से कोई ऐसी किताब ले आओ जो इन दोनों से ज़्यादा हिदायत वाली हो, मैं उसी की इत्तेबा करूंगा।

فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ۭ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ (50)

५०. फिर अगर ये तेरी न मानें तो तू यक़ीन कर ले कि यह केवल अपनी इच्छाओं (ख़्वाहिशों) की पैरवी कर रहे हैं और उस से ज़्यादा भटका हुआ कौन है जो अपनी इच्छाओं के पीछे पड़ा हुआ हो बिना अल्लाह की हिदायत के? बेशक अल्लाह तआला ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता।

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ (51)

५१. और हम मुसल्सल लोगों के लिए अपना कलाम (वाणी) भेजते रहे ताकि वे शिक्षा ग्रहण (नसीहत हासिल) कर लें।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ (52)

५२. जिस को हम ने इस से पहले किताब अता की वह तो इस पर ईमान रखते हैं।[1]

وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ (53)

५३. और जब (उसकी आयतें) उन के सामने पढ़ी जाती हैं तो वे यह कह देते हैं कि इस के हमारे रब की तरफ़ से सच होने पर हमारा ईमान (विश्वास) है, हम तो इस से पहले ही मुसलमान हैं।[2]

---

[1] इस से मुराद वे यहूदी हैं जो मुसलमान हो गये थे, जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम वग़ैरह, या वे इसाई हैं जो इथोपिया से नबी ﷺ की सेवा में आये थे और आप के पाक मुंह से क़ुरआन करीम सुन कर मुसलमान हो गये थे। (इब्ने कसीर)

[2] यह उसी हक़ीक़त की तरफ़ इशारा है जिसे क़ुरआन करीम में कई जगहों पर बयान किया गया है कि हर ज़माने में अल्लाह के पैग़म्बरों ने जिस धर्म का प्रचार (तब्लीग़) किया है, वह इस्लाम ही था और उन नबियों की दावत पर ईमान लाने वाले मुसलमान ही कहलाते थे। यहूदी या इसाई वग़ैरह के कलिमात लोगों के अपने गढ़े हुए हैं जिन की खोज बाद में हुई। इसी बुनियाद पर नबी करीम ﷺ पर ईमान लाने वाले अहले किताब (यहूद या इसाईयों) ने कहा कि हम तो पहले से ही मुसलमान चले आ रहे हैं यानी पहले के नबियों के मानने वाले और उन पर ईमान रखने वाले हैं।

أُولَٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُم مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا
وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا
رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿54﴾

५४. यह अपने किये हुए सब्र के वदले में दो गुने बदले अता किये जायेंगे, यह नेकी से गुनाह को दूर कर देते हैं और हम ने जो इन्हें दे रखा है उस में से देते रहते हैं।

وَإِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ وَقَالُوا لَنَا
أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ
لَا نَبْتَغِي الْجَاهِلِينَ ﴿55﴾

५५. और जव बेकार बात कान में पड़ती है तो उस से अलग हो लेते हैं और कहते हैं कि हमारे अमल हमारे लिए और तुम्हारे अमल तुम्हारे लिए, तुम पर सलाम हो,[1] हम जाहिलों से (उलझना) नहीं चाहते।

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي
مَن يَشَاءُ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿56﴾

५६. आप जिसे चाहें हिदायत नहीं दे सकते, वल्कि अल्लाह तआला ही जिसे चाहे हिदायत देता है। हिदायत पाये लोगों को वही अच्छी तरह जानता है।

وَقَالُوا إِن نَّتَّبِعِ الْهُدَىٰ مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ
أَرْضِنَا ۚ أَوَلَمْ نُمَكِّن لَّهُمْ حَرَمًا آمِنًا يُجْبَىٰ
إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّن لَّدُنَّا
وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿57﴾

५७. और कहने लगे कि अगर हम आप के साथ होकर हिदायत के पैरोकार वन जायें तो हम अपने देश से उचक लिये जायें, क्या हम ने उन्हें शान्त और महफ़ूज और शान्ति-सम्मान (हुरमत) वाले 'हरम' में जगह नहीं दिया, जहाँ हर तरह के फल खिंचे चले आते हैं जो हमारे पास से रिज़्क के रूप में हैं?[2] लेकिन उन में से ज़्यादातर कुछ नहीं जानते।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ بَطِرَتْ مَعِيشَتَهَا ۖ فَتِلْكَ
مَسَاكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَن مِّن بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا ۖ
وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ﴿58﴾

५८. और हम ने बहुत सी वे वस्तियाँ हलाक कर दीं जो अपनी सुख-सुविधा में इतराने लगी थी। यह हैं उन के निवास स्थान जो उन के बाद वहुत ही कम आबाद किये गये, और हम ही हैं अन्तत: (आख़िरकार) सब कुछ के वारिस।

---

[1] यह सलाम एहतेराम वाला सलाम नहीं है बल्कि पीछा छुड़ाने वाला सलाम है, यानी हम तुम जैसे जाहिल नासमझ इंसानों से बातचीत करने को तैयार ही नहीं, जैसे हिन्दी में कहते हैं, "जाहिलों को दूर से सलाम", वाज़ेह है सलाम से मुराद बातचीत को टालना ही है।

[2] यह मक्का नगर की वह फ़ज़ीलत है जिसका हर साल लाखों हाजी और उमरा करने वाले प्रत्यक्ष दर्शन (मुशाहिदा) करते हैं कि मक्का नगर में पैदावार न होने के बावजूद ज़्यादा तादाद में हर तरह के फल बल्कि दुनिया भर के सामान सुलभ (मुहय्या) होते हैं।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ (59)

५९. और तेरा रब कसी एक बस्ती को भी उस वक़्त तक हलाक नहीं करता, जब तक कि उन की किसी बड़ी बस्ती में अपना कोई पैग़म्बर न भेज दे जो उन्हें हमारी आयतें पढ़कर सुना दे, और हम बस्तियों को उस वक़्त हलाक करते हैं जब कि वहाँ के रहने वाले ज़ालिम हो जायें।

وَمَا أُوتِيتُم مِّن شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَزِينَتُهَا ۚ وَمَا عِندَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ (60)

६०. और तुम्हें जो कुछ दिया गया है वह केवल दुनियावी ज़िन्दगी का सामान है और उसकी ज़ीनत (शोभा) है, हाँ, अल्लाह के पास जो है वह सब से अच्छा और बाक़ी रहने वाला है, क्या तुम नहीं समझते?

أَفَمَن وَعَدْنَاهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيهِ كَمَن مَّتَّعْنَاهُ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ الْمُحْضَرِينَ (61)

६१. क्या वह इंसान जिसे हम ने अच्छा वादा दिया है जिस को वह निश्चित (यक़ीनी) रूप से पाने वाला है, उस इंसान के बराबर हो सकता है जिसे हम ने दुनियावी ज़िन्दगी के कुछ सुख यूँ ही अता कर दिये, दोबारा आख़िर में वह क़यामत के दिन (पकड़ा बाँधा) हाज़िर किया जायेगा?

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ (62)

६२. और जिस दिन अल्लाह (तआला) उन्हें पुकार कर कहेगा कि तुम जिन्हें अपनी समझ से मेरा साझीदार ठहरा रहे थे कहाँ हैं?

قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَغْوَيْنَا أَغْوَيْنَاهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۖ تَبَرَّأْنَا إِلَيْكَ ۖ مَا كَانُوا إِيَّانَا يَعْبُدُونَ (63)

६३. जिन पर बात आ चुकी वे जवाब देंगे कि हे हमारे रब! यही वे हैं जिन्हें हम ने बहका रखा था,[1] हम ने उन्हें इसी तरह भटकाया जिस तरह हम भटके थे, हम तेरी सेवा में अपने आप को इन से अलग करते हैं, यह हमारी इबादत नहीं करते थे।

---

[1] यह उन जाहिल लोगों की तरफ़ इशारा है जिन को कुफ़्र और गुमराही के प्रचारकों और शैतानों ने भटका दिया था।

६४. और कहा जायेगा कि अपने साझीदारों को बुलाओ तो वे बुलायेंगे, लेकिन वे उन्हें जवाब तक नहीं देंगे और सब अज़ाब देख लेंगे, काश ये लोग हिदायत पा लेते !

وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ (64)

६५. और उस दिन उन्हें बुलाकर पूछेगा कि तुम ने नबियों को क्या जवाब दिया था?[1]

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ (65)

६६. फिर तो उस दिन उन के सारे समाचार (अख़बार) अंधे हो जायेंगे और एक-दूसरे से सवाल तक न करेंगे।

فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ (66)

६७. हाँ, जो इंसान माफ़ी माँग कर ईमान ले आये और नेकी के काम करे, यक़ीन है कि वह कामयाबी हासिल करने वालों में से हो जायेगा।

فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ (67)

६८. और आप का रब जो चाहता है पैदा करता है और जिसे चाहता है उन में से चुन लेता है, किसी को कोई हक़ नहीं, अल्लाह के लिए ही पाकी है, वह ऊंचा है हर उस चीज़ से जिसे लोग साझा करते हैं।

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ (68)

६९. और आप का रब सब कुछ जानता है जो कुछ वे अपने सीने में छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं।

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ (69)

[1] इस से पहले की आयतों (मंत्रों) में तौहीद से सम्बन्धित (मुतअल्लिक़) सवाल था। यह दूसरा एलान रिसालत के बारे में है यानी तुम्हारी तरफ़ हम ने रसूल भेजे थे, तुम ने उन के साथ क्या सुलूक किया, उन की दावत क़ुबूल किया था? जिस तरह क़ब्र में सवाल होता है कि तेरा पैग़म्बर कौन है और तेरा दीन कौन सा है? ईमान वाले तो ठीक जवाब दे देते हैं लेकिन काफ़िर कहता है هَاه هَاه لا أدري (हाय! मुझे तो कुछ मालूम नहीं)। उसी तरह क़यामत के दिन भी उन्हें इस सवाल का जवाब समझ में न आयेगा। इसीलिए आगे फ़रमाया उन पर सभी ख़बरें अंधी हो जायेंगी यानी कोई दलील उनकी समझ में न आयेगी जिसे वे पेश कर सकें, यहां दलीलों को ख़बरों से मुक़ाबला कर के इस तरफ़ इशारा किया गया है कि उनके झूठे ईमान के लिए हक़ीक़त में उन के पास कोई दलील है ही नहीं सिर्फ़ कहानियाँ और कहावतें हैं, जैसे आज भी क़ब्र पूजकों के पास मनगढ़न्त मोजिज़ों की कहानियों के सिवाय कुछ भी नहीं।

وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ ۡ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿70﴾

७०. और वही अल्लाह है उस के सिवाय इबादत के लायक़ कोई दूसरा नहीं, दुनिया और आख़िरत में उसी की तारीफ़ है, उसी के लिए हुक्म है और उसी की तरफ़ तुम सब लौटाये जाओगे।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِضِيَاۗءٍ ۭ اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ﴿71﴾

७१. कह दीजिए कि देखो तो सही, अगर अल्लाह तआला रात ही रात क़यामत तक मुसल्सल कर दे तो सिवाय अल्लाह के कौन माबूद है जो तुम्हारे पास दिन का प्रकाश (रौशनी) लाये? क्या तुम सुनते नहीं हो?

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ۭ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿72﴾

७२. पूछिये कि यह भी बता दो कि अगर अल्लाह (तआला) तुम पर लगातार क़यामत तक दिन ही दिन रखे तो भी सिवाय अल्लाह (तआला) के कोई माबूद है जो तुम्हारे पास रात लाये, जिस में तुम आराम कर सको, क्या तुम देख नहीं रहे हो?

وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿73﴾

७३. और उसी ने तो तुम्हारे लिए अपनी रहमत और मेहरबानी (दया) से दिन-रात मुक़र्रर कर दिये हैं कि रात को तुम आराम कर सको और दिन में उस की (भेजी हुई) रोज़ी की खोज करो।[1] यह इसलिए कि तुम शुक्रिया अदा करो।

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَاۗءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿74﴾

७४. और जिस दिन उन्हें पुकार कर अल्लाह (तआला) कहेगा कि जिन्हें तुम मेरा साझीदार समझते थे वे कहाँ हैं?

---

[1] दिन और रात, यह दोनों अल्लाह के बहुत बड़े वरदान (इंआम) से हैं, रात को अंधेरी बनाकर लोगों के लिए आराम का वक़्त अता किया, इस अंधेरे की वजह सारी सृष्टि (मख़लूक़) सोने और आराम करने के लिए मजबूर है, वर्ना अगर आराम करने और सोने के अपने-अपने वक़्त होते तो कोई भी पूरी तरह से सोने का मौक़ा न पाता, जबकि कारोबार और व्यवपार (तिजारत) को अच्छे ढंग से चलाने के लिए नींद का पूरा होना बहुत ज़रूरी है, इस के बिना चुस्ती हासिल नहीं होती।

७५. और हम हर उम्मत से एक गवाह अलग कर लेंगे[1] और कह देंगे कि अपनी दलील पेश करो, तो उस वक़्त जान लेंगे कि सच अल्लाह की तरफ़ है और जो कुछ झूठ वे गढ़ रहे थे सब उन के पास से खो जायेंगे।

وَنَزَعْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٧٥﴾

७६. क़ारून था तो मूसा की क़ौम से, लेकिन उन पर ज़ुल्म करने लगा था, हम ने उसे इतना ज़्यादा ख़ज़ाना दे रखा था कि कई-कई शक्तिशाली लोग कठिनाई से उसकी चाभियाँ उठा सकते थे। एक बार उस की क़ौम ने उस से कहा कि इतरा मत, अल्लाह (तआला) इतराने वालों से मुहब्बत नहीं करता।

إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِن قَوْمِ مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ ۖ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوءُ بِالْعُصْبَةِ أُولِي الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ﴿٧٦﴾

७७. और जो कुछ अल्लाह (तआला) ने तुझे अता कर रखा है उस में से आख़िरत के घर की खोज भी रख और अपने दुनियावी हिस्से को भी न भूल, और जैसाकि अल्लाह ने तेरे ऊपर एहसान किया है तू भी अच्छा सुलूक कर और देश में फ़साद की इच्छा न कर, यक़ीन कर कि अल्लाह तआला फ़सादियों से मुहब्बत नहीं रखता है।

وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ ۖ وَلَا تَنسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا ۖ وَأَحْسِن كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ ۖ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٧٧﴾

७८. क़ारून ने कहा कि यह सब कुछ मुझे मेरे अपने इल्म के सबब दिया गया है, क्या अब तक उसे यह नहीं मालूम हुआ कि अल्लाह (तआला) ने उस से पहले बहुत सी बस्ती वालों को हलाक कर दिया, जो उस से ज़्यादा शक्तिशाली और ज़्यादा धनवान थे,[2] और

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِندِي ۚ أَوَلَمْ يَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِن قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرُ جَمْعًا ۚ وَلَا يُسْأَلُ عَن ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٧٨﴾

---

[1] इस गवाह से मुराद पैग़म्बर हैं, यानी हर उम्मत के पैग़म्बर को उस उम्मत से अलग खड़ा कर देंगे।

[2] यानी क़ूवत और माल की ज़्यादती यह फ़ज़ीलत का सबब नहीं, अगर ऐसा होता तो पहले के लोग हलाक (नष्ट) न होते। इसलिए क़ारून का अपने धन पर घमण्ड करने और उसे अपनी फ़ज़ीलत का सबब बताने का कोई औचित्य (जवाज़) नहीं।

मुजरिमों से उन के गुनाहों की पूछताछ ऐसे वक़्त नहीं की जाती ।[1]

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِۦ فِى زِينَتِهِۦ ۖ قَالَ ٱلَّذِينَ يُرِيدُونَ ٱلْحَيَوٰةَ ٱلدُّنْيَا يَـٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ أُوتِىَ قَـٰرُونُ إِنَّهُۥ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ (79)

७९. इसलिए (क़ारून) पूरी ज़ीनत के साथ अपनी क़ौम के जमघट में निकला,[2] तो दुनियावी ज़िन्दगी के मतवालों ने कहा कि काश हमें किसी तरह वह मिल जाता जो क़ारून को दिया गया है, यह तो बड़ा ही नसीब वाला है ।

وَقَالَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ ٱللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنْ ءَامَنَ وَعَمِلَ صَـٰلِحًا وَلَا يُلَقَّىٰهَآ إِلَّا ٱلصَّـٰبِرُونَ (80)

८०. और आलिम लोग उन्हें समझाने लगे कि अफ़सोस की बात है, अच्छी चीज़ तो वह है जो नेकी के रूप में उन्हें मिलेगी जो अल्लाह पर ईमान लायें और नेकी के काम करें ।[3] यह बात उन्ही के दिल में डाली जाती है जो धैर्यवान (सब्र करने वाले) और सहनशील (बर्दाश्त करने वाले) हों ।

فَخَسَفْنَا بِهِۦ وَبِدَارِهِ ٱلْأَرْضَ فَمَا كَانَ لَهُۥ مِن فِئَةٍ يَنصُرُونَهُۥ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَمَا كَانَ مِنَ ٱلْمُنتَصِرِينَ (81)

८१. (आख़िरकार) हम ने उसे उस के महल के साथ धरती में धंसा दिया, और अल्लाह के सिवाय कोई गिरोह उसकी मदद के लिए तैयार नहीं हुआ न वह ख़ुद अपने को बचाने वालो में से हो सका ।

---

[1] यानी जब गुनाह इतनी ज़्यादा तादाद में हो कि उन के सबब वह अज़ाब का मुस्तहिक़ हो जाये तो उन से पूछताछ नहीं की जाती बस अचानक उनको पकड़ लिया जाता है ।

[2] ये कहने वाले कौन थे? कुछ के निकट ईमानवाले ही थे जो उस के धन और शान-शौकत के प्रदर्शन (इज़हार) से प्रभावित हो गये थे और कुछ के क़रीब काफ़िर थे ।

[3] यानी जिन के पास दीन का इल्म था और दुनिया और उस के प्रदर्शन (इज़हार) की असल हक़ीक़त जानते थे, उन्होंने कहा कि यह क्या है, कुछ भी नहीं । अल्लाह ने ईमानवालों और परहेज़गारों के लिए जो बदला और नेकी रखी है, वह इस से कहीं ज़्यादा अच्छा है । जैसे हदीस क़ुदसी में है, अल्लाह तआला फ़रमाता है : "मैंने अपने परहेज़गार बन्दों के लिए ऐसी-ऐसी चीज़ें तैयार कर रखी हैं जिन्हें किसी आँख ने नहीं देखा, किसी कान ने नहीं सुना और न किसी के ख़्याल में आया ।" (अल-बुख़ारी, किताबुत तौहीद, मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब अदना अहलिल जन्न: मंज़िलतन)

८२. और जो लोग कल तक उस के पद तक पहुँचने की उम्मीद कर रहे थे, वे आज कहने लगे कि क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह (तआला) ही अपने बंदों में से जिस के लिए चाहे रोज़ी ज़्यादा कर देता है और कम भी, अगर अल्लाह (तआला) हम पर एहसान न करता तो हमें भी धंसा देता, क्या देखते नहीं हो कि नाशुक्रों को कभी कामयाबी नहीं हासिल होती।

وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَنَّوْا مَكَانَهُ بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ وَيْكَأَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَوْلَا أَنْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا وَيْكَأَنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿82﴾

८३. आख़िरत का यह (भला) घर हम उन्हीं के लिए मुक़र्रर कर देते हैं जो धरती पर घमन्ड और ग़रूर नहीं करते, न फ़साद की तमन्ना रखते हैं, और परहेज़गारों (संयमियों) के लिए बहुत अच्छा बदला है।

تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿83﴾

८४. जो इंसान नेकी लायेगा उसे उस से बेहतर मिलेगा और जो बुराई लेकर आयेगा तो ऐसे पाप करने वालों को उन के उसी अमल का बदला अता किया जायेगा जो वे करते थे।[1]

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿84﴾

८५. जिस (अल्लाह) ने आप पर क़ुरआन नाज़िल किया है वह आप को दोबारा पहली जगह पर लाने वाला है। कह दीजिए कि मेरा रब उसे भी अच्छी तरह जानता है जो हिदायत पाये हैं और उसे भी जो खुले भटकावे में है।

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَى مَعَادٍ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَى وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿85﴾

८६. और आप ने तो कभी यह सोचा भी न था कि आप की तरफ़ किताब नाज़िल की जायेगी, लेकिन यह आप के रब की रहमत से (नाज़िल हुआ)। अब आप को कभी काफ़िरों का सहायक (मददगार) न होना चाहिए।

وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَنْ يُلْقَى إِلَيْكَ الْكِتَابُ إِلَّا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِلْكَافِرِينَ ﴿86﴾

[1] यानी भलाई का बदला तो बढ़ा-चढ़ाकर दिया जायेगा लेकिन बुराई का बदला बुराई के बराबर ही मिलेगा, यानी भलाई के बदले में अल्लाह की रहमत और नेमत का और बुराई के बदले मे उस के इंसाफ़ का प्रदर्शन (इज़हार) होगा।

وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٨٧﴾

८७. (ध्यान रहे कि) ये काफिर आप को अल्लाह तआला की आयतों के प्रचार (तबलीग़) करने से रोक न दें, उस के बाद कि यह आप की तरफ़ नाज़िल की गयी, तो अपने रब की तरफ़ बुलाते रहें और शिर्क करने वालों (मुश्रिकों) में से न हों।

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۣ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ۭ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٨﴾

८८. और अल्लाह (तआला) के साथ किसी दूसरे माबूद को न पुकारना,[1] सिवाय अल्लाह (तआला) के कोई दूसरा इबादत के लायक़ नहीं, हर चीज फ़ना होने वाली है, लेकिन उसी का मुँह[2] उसी का शासन है और तुम उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे।

سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ

सूरतुल अनकबूत-२९

सूर: अनकबूत मक्का में नाज़िल हुई और इस की उनहत्तर आयतें और सात रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

الٓمّٓ ﴿١﴾

१. अलिफ़• लाम• मीम•

---

[1] यानी किसी दूसरे की इबादत न करना, न दुआ के ज़रिये, न भोग-प्रसाद (नज़र) से, न क़ुर्बानी के ज़रिये, कि ये सभी इबादतें हैं, जो केवल एक अल्लाह के लिए ख़ास हैं। क़ुरआन करीम में कई जगहों पर अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे की इबादत को पुकारना कहा गया है, जिसका मक़सद इसी बिन्दु को वाजेह करना है कि अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे को माध्यमों (असबाब) से परे मानकर पुकारना, उन से मदद माँगना, विनय (फ़रियाद) और दुआयें करना यह उनकी इबादत ही है जिस से इंसान मुश्‍रिक (अनेकेश्‍वरवादी) बन जाता है।

[2] وَجْهَهٗ (उसका मुँह) से मुराद अल्लाह की ज़ात है, अंश बोल कर कुल मुराद है यानी अल्लाह के सिवाय हर चीज ख़त्म हो जाने वाली है।

﴿كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝ وَيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ﴾

"धरती पर जो हैं सब ख़त्म होने वाले है, सिर्फ़ तेरे रब का मुँह जो महानता (अज़मत) और सम्मान (इकराम) वाला है, बाक़ी रह जायेगा।" (सूर: अर्रहमान-२६, २७)

२. क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि उन के केवल इस क़ौल पर कि हम ईमान लाये हैं वे बिना इम्तेहान लिये हुए ही छोड़ दिये जायेंगे?[1]

أَحَسِبَ النَّاسُ أَن يُتْرَكُوا أَن يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ ﴿2﴾

३. उन से पहले के लोगों को भी हम ने अच्छी तरह जाँचा, बेशक अल्लाह (तआला) उन्हें भी जान लेगा जो सच कहते हैं और उन्हें भी जान लेगा जो झूठे हैं।

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَاذِبِينَ ﴿3﴾

४. क्या जो लोग बुरे काम कर रहे हैं, उन्होंने यह समझ रखा है कि वे हमारे क़ाबू से बाहर हो जायेंगे? यह लोग कैसा बुरा ख़्याल कर रहे हैं।

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ أَن يَسْبِقُونَا ۚ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿4﴾

५. जिसे अल्लाह से मिलने की उम्मीद हो तो अल्लाह का मुक़र्रर किया हुआ वक़्त ज़रूर आने वाला है,[2] वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।

مَن كَانَ يَرْجُو لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنَّ أَجَلَ اللَّهِ لَآتٍ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿5﴾

६. और हर कोशिश करने वाला अपने ही भले के लिए कोशिश करता है। बेशक अल्लाह (तआला) सभी दुनिया वालों से बेनियाज़ है।[3]

وَمَن جَاهَدَ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿6﴾

---

[1] **सूर: अल-अनकबूत की तफ़सीर** : यानी यह ख़्याल कि सिर्फ़ मुँह से ईमान ले आने के बाद बिना इम्तेहान लिए उन्हें छोड़ दिया जायेगा सही नहीं, बल्कि उन्हें जान और माल के दुख और दूसरी परीक्षाओं के ज़रिये जाँचा परखा जायेगा ताकि खरे खोटे का, झूठ-सच का, ईमानवाले और मुनाफ़िक़ का पता चल जाये।

[2] यानी जिसे आख़िरत पर यक़ीन है और वह बदले और नेकी की उम्मीद से नेक काम करता है अल्लाह तआला उसकी उम्मीदें पूरी करेगा और उसे उस के अमल का पूरा बदला अता करेगा, क्योंकि क़यामत यक़ीनी तौर से होकर रहेगी और अल्लाह की अदालत का क़याम (स्थापना) ज़रूर होगा।

[3] इसका मतलब वही है जो ﴿مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ﴾ (सूर: जासिया :१५) का है, यानी 'जो नेक काम करेगा उसका फ़ायेदा उसी को होगा,' वरन् अल्लाह तआला को तो बंदों के अमल की कोई ज़रूरत नहीं है। अगर सारी धरती के लोग अल्लाह से डर खाने वाले (परहेज़गार) हो जायें तो उस के राज्य में शक्ति (ज़्यादती) और विस्तार (इज़ाफ़ा) न होगा और सभी नाफ़रमानी करने वाले हो जायें तो उस के राज्य में तनिक भी कमी नहीं आयेगी। लफ़्ज़ों के बिना पर इन में

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿7﴾

७. और जिन लोगों ने यक़ीन किया और (सुन्नत के ऐतबार से) अच्छे अमल किये, हम उन के सभी गुनाहों को उन से दूर कर देंगे और उन की नेकी का अच्छा बदला देंगे।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ۖ وَإِنْ جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۚ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿8﴾

८. हम ने हर इंसान को अपने माता-पिता से अच्छा सुलूक करने की शिक्षा (तालीम) दी है[1] लेकिन अगर वे यह कोशिश करें कि तुम मेरे साथ उसे शामिल कर लो जिस का तुम को इल्म नहीं तो उनका कहना न मानो[2] तुम सब को लौटकर मेरी ही ओर आना है, फिर मैं हर उस बात से जो तुम करते थे, तुम्हें आगाह (अवगत) कराऊंगा।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ﴿9﴾

९. और जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और नेकी के काम किये, उन्हें हम अपने नेक बंदों में शामिल कर लेंगे।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللَّهِ ۖ وَلَئِنْ جَاءَ نَصْرٌ مِنْ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۚ أَوَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ الْعَالَمِينَ ﴿10﴾

१०. और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो (मुँह से) कहते हैं कि हम ईमान लाये हैं लेकिन जब अल्लाह के रास्ते में कोई दुख आ पड़ता है तो लोगों के कष्ट देने को अल्लाह तआला के अज़ाब के समान बना लेते हैं, लेकिन अगर अल्लाह की मदद आ जाये तो पुकार उठते हैं कि हम तो तुम्हारे साथी ही हैं, क्या सभी संसार (इंसानों) के दिलों में जो कुछ है उसे अल्लाह तआला जानता नहीं है?

काफ़िरों से जिहाद करने का भी हुक्म शामिल है कि वह भी एक तरह का नेक काम ही है।

[1] क़ुरआन करीम के कई जगहों पर अल्लाह तआला ने अपनी एकता और इबादत का हुक्म देने के साथ ही साथ माता-पिता के साथ अच्छा सुलूक करने पर ज़ोर दिया है, जिस से इस बात की वज़ाहत होती है कि एकेश्वरवाद (तौहीद) की माँगों को सही तरीक़े से वही समझ सकता और उन्हें निभा सकता है जो माता-पिता के हुक्म की पैरवी और सेवा (ख़िदमत) की माँगों को समझता है और निभाता है।

[2] यानी माता-पिता अगर शिर्क का हुक्म दें (और उसी में दूसरे गुनाहों का हुक्म भी शामिल है) और उस के लिए ख़ास कोशिश भी करें तो उनकी इताअत नहीं करनी चाहिए।

वَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ ﴿11﴾

११. और जो लोग ईमान लाये अल्लाह उन्हें भी जानकर (जाहिर कर के) रहेगा और मुनाफ़िकों को भी जानकर (जाहिर कर के) रहेगा।[1]

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿12﴾

१२. और काफ़िरों ने ईमानवालों से कहा कि तुम हमारे रास्ते की इत्तेबा करो तुम्हारे गुनाह हम उठा लेंगे, जबकि वह उन के गुनाहों में से कुछ भी नहीं उठाने वाले, यह तो केवल झूठे हैं।

وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ۡ وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿13﴾

१३. हाँ, ये अपने बोझ ढो लेंगे और अपने बोझों के साथ दूसरे बोझ भी[2] और जो कुछ झूठ गढ़ रहे हैं उन सब के लिए उन से पूछताछ होगी।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿14﴾

१४. और हम ने नूह (عليه السلام) को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा, वे उन के बीच साढ़े नौ सौ साल तक रहे, फिर तो उन्हें तूफ़ान ने धर पकड़ा और वे थे भी ज़ालिम।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿15﴾

१५. फिर हम ने उन्हें और नाव वालों को मुक्ति (नजात) दी और हम ने इस वाक़ेआ को पूरी दुनिया के लिये शिक्षा की निशानी बना दिया।

وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿16﴾

१६. और इब्राहीम (عليه السلام) ने भी अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह (तआला) की इबादत करो और उस से डरते रहो, अगर तुम में अक़्ल है तो यही तुम्हारे लिए बेहतर है।

---

[1] इसका मतलब है कि अल्लाह तआला सुख और दुख देकर इम्तेहान लेगा ताकि मुनाफ़िकों और ईमानवालों में फ़र्क़ वाज़ेह हो जाये, जो दोनों हालतों में अल्लाह के हुक्म की पैरवी करेगा वह ईमान वाला है और जो केवल ख़ुशी और सुख में आज्ञापालन करेगा तो इसका मतलब यह है कि वह केवल अपने मतलब को पूरा करने का ताबे है, अल्लाह का नहीं।

[2] यानी यह कुफ़्र के अगुवा और बेदीन के प्रचारक अपना ही बोझ नहीं उठायेंगे, बल्कि उन लोगों के गुनाहों का बोझ भी उन पर होगा जो उनकी कोशिशों की वजह से गुमराह हुए थे। यह विषय सूर: अन-नहल : २५ में भी गुज़र चुका है।

إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا عِندَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ ۖ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿17﴾

१७. तुम तो अल्लाह तआला के सिवाय मूर्तियों की पूजा कर रहे हो और झूठी बातें मन से गढ़ लेते हो। (सुनो!) जिन-जिन की तुम अल्लाह (तआला) के सिवाय पूजा-पाठ कर रहे हो, वे तो तुम्हारे रिज़्क़ के मालिक नहीं, इसलिए तुम्हें चाहिए कि अल्लाह तआला से ही रोज़ी माँगो और उसी की इबादत करो और उसी का शुक्रिया अदा करो, और उसी की तरफ़ तुम लौटाये जाओगे।

وَإِن تُكَذِّبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِّن قَبْلِكُمْ ۖ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿18﴾

१८. और अगर तुम झुठलाओ तो तुम से पहले के लोगों ने भी झुठलाया है,[1] और रसूल का कर्तव्य (फ़र्ज़) तो सिर्फ़ साफ़-साफ़ प्रकार से पहुँचा देना ही है।

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿19﴾

१९. क्या उन्होंने नहीं देखा कि मख़लूक़ की पैदाईश किस तरह अल्लाह ने की फिर अल्लाह उस को लौटायेगा, यह तो अल्लाह के लिए बहुत आसान है।

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ۚ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿20﴾

२०. कह दीजिए कि धरती पर चल-फिर कर देखो तो[2] कि किस तरह से अल्लाह (तआला) ने सब से पहले मख़लूक़ की पैदाईश की फिर अल्लाह तआला ही दूसरी नई पैदाईश करेगा। अल्लाह तआला हर चीज़ पर सामर्थ्य (क़ुदरत) रखने वाला है।

---

[1] यह हज़रत इब्राहीम ﷺ का भी क़ौल हो सकता है, जो उन्होंने अपने समुदाय (क़ौम) से कहा था या अल्लाह तआला का क़ौल है, जिस में मक्कावासियों को सम्बोधन (ख़िताब) है और इस में नबी ﷺ को तसल्ली दी जा रही है कि अगर मक्का के काफ़िर आप ﷺ को झुठला रहे हैं तो इससे घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है, पैग़म्बरों के साथ यही होता चला आया है। पहले की उम्मतें भी रसूल को झुठलाते और उसका नतीजा भी हलाकत और बर्बादी के रूप में भुगतते रहे हैं।

[2] यानी दुनिया में फैली हुई अल्लाह की निशानियाँ देखो धरती पर ध्यान दो, किस तरह उसे बिछाया, उस में पर्वत, घाटियाँ, नदियाँ और समुद्र बनाये। उसी से कई तरह की रोज़ी व फल पैदा किये, क्या यह सब चीज़ें इस बात का सुबूत नहीं है कि उन्हें पैदा किया गया है और उन का कोई बनाने वाला है?

يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ﴿21﴾

२१. जिसे चाहे अज़ाब दे, और जिस पर चाहे रहम करे, सब उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे।

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ۫ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿22﴾

२२. तुम न तो धरती पर अल्लाह (तआला) को मजबूर कर सकते हो न आकाश में, अल्लाह (तआला) के सिवाय तुम्हारा कोई संरक्षक (वली) है न सहयोगी (मददगार)।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖٓ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِىْ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿23﴾

२३. और जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों और उसकी मुलाकात को झुठलाते हैं, वे मेरी रहमत से निराश हो जायें[1] और उन के लिए दुखदायी अज़ाब है।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿24﴾

२४. उन की क़ौम का जवाब इस के सिवाय कुछ न था कि कहने लगे कि इसे मार डालो या इसे जला दो। आख़िरकार अल्लाह (तआला) ने उन्हें आग से बचा लिया, इस में ईमानवालों के लिए तो बहुत-सी निशानियाँ हैं।

وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۡ وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿25﴾

२५. (हज़रत इब्राहीम ﷺ ने) कहा कि तुम ने जिन मूर्तियों (देवताओं) की पूजा अल्लाह के सिवाय की है, उन्हें तुम ने अपनी दुनियावी दोस्ती का सबब बना लिया है, तुम सब क़यामत के दिन एक-दूसरे से इंकार करने लगोगे और एक-दूसरे को धिक्कारने लगोगे, और तुम सबका ठिकाना नरक में होगा और तुम्हारी कोई मदद करने वाला न होगा।

---

[1] अल्लाह तआला की रहमत (दया) दुनिया में आम लोगों के लिए है, जिस से काफ़िर और ईमानवाले, छली और मक्कार, अच्छे और बुरे सभी आम तौर से फ़ायेदा उठा रहे हैं। अल्लाह तआला सभी को दुनिया के सुख और धन-धान्य अता कर रहा है, यह अल्लाह तआला की रहमत की वह तफ़सील है जिसे अल्लाह तआला ने दूसरी जगह पर फ़रमाया :

﴿وَرَحْمَتِىْ وَسِعَتْ كُلَّ شَىْءٍ﴾

"मेरी रहमत ने हर चीज़ को घेर लिया है।" (सूर: अल-आराफ़-१५६)

लेकिन आख़िरत चूँकि बदला देने की जगह है, इसलिए वहाँ मुआमला दूसरा होगा।

فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّیْ مُهَاجِرٌ اِلٰی رَبِّیْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُ (26)

२६. तो उस (हजरत इब्राहीम عليه السلام पर) (हजरत) लूत (عليه السلام) ईमान लाये[1] और कहने लगे कि मैं अपने रब की तरफ हिजरत करने वाला हूं, वह बड़ा ग़ालिब (प्रभावशाली) और हिक्मत वाला है।

وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَیَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِیْ ذُرِّیَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْکِتٰبَ وَاٰتَیْنٰهُ اَجْرَهٗ فِی الدُّنْیَا ۚ وَاِنَّهٗ فِی الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِیْنَ (27)

२७. और हम ने उसे (इब्राहीम को) इसहाक़ और याक़ूब अता किये और हम ने नबूअत और किताब उनकी औलाद में ही कर दी[2] और हम ने दुनिया में भी उसे अच्छा बदला दिया, और आख़िरत में तो वह परहेजगारों में से हैं।

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اِنَّکُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ؗ مَا سَبَقَکُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِیْنَ (28)

२८. और (हजरत) लूत (عليه السلام) की भी (चर्चा करो) जब कि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम तो उस बेहयाई पर उतर आये हो[3] जिसे तुम से पहले पूरी दुनिया में से किसी ने भी नहीं किया।

اَئِنَّکُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ السَّبِیْلَ ۙ۬ وَتَاْتُوْنَ فِیْ نَادِیْکُمُ الْمُنْکَرَ ؕ فَمَا کَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ کُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ (29)

२९. क्या तुम मर्दों के पास (कुकर्म के लिए) आते हो और रास्ता बन्द करते हो और अपनी आम सभाओं (मजलिसों) में बेशर्मी का काम करते हो? तो उस के जवाब में उस की क़ौम ने इस के सिवाय कुछ नहीं कहा कि बस जा, अगर सच्चा है तो हमारे पास अल्लाह का अज़ाब ले आ।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِیْ عَلَی الْقَوْمِ الْمُفْسِدِیْنَ (30)

३०. (हजरत) लूत (عليه السلام) ने दुआ की कि रब!

---

[1] हजरत लूत, हजरत इब्राहीम عليه السلام के भाई के बेटे थे, यह हजरत इब्राहीम पर ईमान लाये, उस के बाद उन को भी 'सदूम' के इलाक़े में नबी बनाकर भेजा गया।

[2] यानी हजरत इसहाक़ से याक़ूब हुए, जिन से इस्राईल की औलाद का वंश चला और उन्हीं में सारे नबी हुए और किताबें आयीं। आख़िर में हजरत नबी करीम ﷺ हजरत इब्राहीम के दूसरे (बड़े) पुत्र हजरत इस्माईल के वंश में नबी हुए और आप ﷺ पर क़ुरआन नाज़िल हुआ।

[3] उस कुकर्म (बेहयाई) से मुराद वही मर्द से लिवात (सम्लिन) है जिसको लूत की क़ौम वालों ने सब से पहले किया, जैसाकि क़ुरआन ने वाज़ेह किया है।

इस फसादी क़ौम पर मेरी मदद कर।

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَآ إِبْرٰهِيمَ بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوٓا۟ إِنَّا مُهْلِكُوٓا۟ أَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۖ إِنَّ أَهْلَهَا كَانُوا۟ ظٰلِمِينَ ﴿31﴾

३१. और जब हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते (हज़रत) इब्राहीम (ﷺ) के पास ख़ुशख़बरी लेकर पहुँचे, कहने लगे कि हम इस बस्ती वालों को नाश करने वाले हैं।[1] बेशक यहाँ के निवासी ज़ालिम हैं।

قَالَ إِنَّ فِيهَا لُوطًا ۚ قَالُوا۟ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَن فِيهَا ۖ لَنُنَجِّيَنَّهُۥ وَأَهْلَهُۥٓ إِلَّا ٱمْرَأَتَهُۥ كَانَتْ مِنَ ٱلْغٰبِرِينَ ﴿32﴾

३२. (हज़रत इब्राहीम ने) कहा कि उस में तो लूत (ﷺ) हैं, फ़रिश्तों ने कहा कि यहाँ जो हैं हम उन्हें अच्छी तरह जानते हैं, लूत और उस के परिवार को सिवाय उसकी बीवी के हम बचा लेंगे, बेशक वह औरत पीछे रह जाने वालों में से है।

وَلَمَّآ أَن جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِىٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالُوا۟ لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۖ إِنَّا مُنَجُّوكَ وَأَهْلَكَ إِلَّا ٱمْرَأَتَكَ كَانَتْ مِنَ ٱلْغٰبِرِينَ ﴿33﴾

३३. और फिर जब हमारे भेजे हुए लूत (ﷺ) के पास पहुँचे तो वह उन के सबब दुखी हुए और दिल में ग़म करने लगे। संदेशवाहकों ने कहा कि आप डरें नहीं न दुखी हों, हम आप को आप के परिवार सहित महफ़ूज़ कर लेंगे, सिवाय आप की बीवी कि वह अज़ाब के लिए बाक़ी रह जाने वालों में से होगी।

إِنَّا مُنزِلُونَ عَلَىٰٓ أَهْلِ هٰذِهِ ٱلْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ ٱلسَّمَآءِ بِمَا كَانُوا۟ يَفْسُقُونَ ﴿34﴾

३४. हम इस बस्ती वालों पर आसमानी अज़ाब ढाने वाले हैं[2] इस वजह से कि ये फ़ासिक़ हो रहे हैं।

---

[1] यानी हज़रत लूत की दुआ क़ुबूल हुई और अल्लाह ने फ़रिश्तों को हलाक करने के लिए भेज दिया, वे फ़रिश्ते पहले हज़रत इब्राहीम ﷺ के पास गये और उन्हें इसहाक़ ﷺ और याक़ूब ﷺ की ख़ुशख़बरी दी और साथ ही बताया कि हम लूत ﷺ की बस्ती को नाश करने आये हैं।

[2] इस आसमानी अज़ाब से मुराद वही अज़ाब है जिस के ज़रिये लूत की क़ौम को धंसा दिया गया। कहा जाता है कि जिब्रील ﷺ उन की बस्तियों को धरती से उखाड़कर आकाश की ऊँचाई तक ले गये फिर उनको उन ही पर उलटा दिया गया, उस के बाद कंकड़-पत्थर की वर्षा की गयी और उस जगह को बहुत बदबूदार झील में बदल दिया गया। (इब्ने कसीर)

وَلَقَد تَّرَكۡنَا مِنۡهَآ ءَايَةَۢ بَيِّنَةٗ لِّقَوۡمٖ يَعۡقِلُونَ ﴿35﴾

३५. और हम ने इस बस्ती को खुली शिक्षा ग्रहण (हासिल) करने के लिए निशानी (लक्षण) बना दिया, उन लोगों के लिए जो अक़्ल रखते हैं।

وَإِلَىٰ مَدۡيَنَ أَخَاهُمۡ شُعَيۡبٗا فَقَالَ يَٰقَوۡمِ ٱعۡبُدُواْ ٱللَّهَ وَٱرۡجُواْ ٱلۡيَوۡمَ ٱلۡأٓخِرَ وَلَا تَعۡثَوۡاْ فِي ٱلۡأَرۡضِ مُفۡسِدِينَ ﴿36﴾

३६. और मदयन की[1] तरफ़ (हम ने) उन के भाई शुऐब (ﷺ) को (भेजा) उन्होंने कहा कि हे मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, क़यामत के दिन की उम्मीद रखो और धरती में फ़साद न फैलाते फिरो।

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتۡهُمُ ٱلرَّجۡفَةُ فَأَصۡبَحُواْ فِي دَارِهِمۡ جَٰثِمِينَ ﴿37﴾

३७. फिर भी उन्होंने उन्हें झुठलाया, आख़िर में उन्हें ज़लज़ला ने पकड़ लिया और वे अपने घरों में बैठे के बैठे मुर्दा होकर रह गये।

وَعَادٗا وَثَمُودَاْ وَقَد تَّبَيَّنَ لَكُم مِّن مَّسَٰكِنِهِمۡۖ وَزَيَّنَ لَهُمُ ٱلشَّيۡطَٰنُ أَعۡمَٰلَهُمۡ فَصَدَّهُمۡ عَنِ ٱلسَّبِيلِ وَكَانُواْ مُسۡتَبۡصِرِينَ ﴿38﴾

३८. और हम ने 'आद वालों' और 'समूद वालों' को भी (हलाक किया) जिन के कुछ खण्डहर तुम्हारे सामने मौजूद हैं[2] और शैतान ने उन के बुरे काम को सुसज्जित (मुज़य्यन) करके दिखाया था और उन्हें रास्ते से रोक दिया था, इस के बावजूद कि यह आँखों वाले और चालाक थे।

وَقَٰرُونَ وَفِرۡعَوۡنَ وَهَٰمَٰنَۖ وَلَقَدۡ جَآءَهُم مُّوسَىٰ بِٱلۡبَيِّنَٰتِ فَٱسۡتَكۡبَرُواْ فِي ٱلۡأَرۡضِ وَمَا كَانُواْ سَٰبِقِينَ ﴿39﴾

३९. और क़ारून, फ़िरऔन और हामान को भी, उन के पास (हज़रत) मूसा खुले-खुले मोजिज़े लेकर आये थे, फिर भी उन्होंने धरती पर घमण्ड किया, लेकिन हम से आगे बढ़ने वाले न हो सके।

[1] मदयन हज़रत इब्राहीम ﷺ के बेटे का नाम था, कुछ के क़रीब यह उन के पोते का नाम है, बेटे का नाम मदयान था, उन ही के नाम पर उस क़बीले (गोत्र) का नाम पड़ गया, जो उन ही के वंश पर शामिल था। इसी मदयन क़बीले की तरफ़ हज़रत शुऐब ﷺ को नबी बनाकर भेजा गया। कुछ कहते हैं कि मदयन नगर का नाम था यह क़बीला या नगर लूत ﷺ की बस्ती के क़रीब ही था।

[2] आद की क़ौम की बस्ती अहक़ाफ़, हद्रमूत (यमन के लाल सागर का तटीय भाग) के क़रीब और समूद की बस्ती हिज्र जिसे आजकल मदायन स्वालेह कहते हैं, हिजाज़ के उत्तर में है। इन इलाक़ों से अरबों की व्यवपारिक यात्रायें (तिजारती सफ़र) हुआ करती थीं, इसलिए ये बस्तियाँ उन के लिए अंजान नहीं बल्कि जानती थीं।

فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنۢبِهِۦ ۖ فَمِنْهُم مَّنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا وَمِنْهُم مَّنْ أَخَذَتْهُ ٱلصَّيْحَةُ وَمِنْهُم مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ ٱلْأَرْضَ وَمِنْهُم مَّنْ أَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ ٱللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِن كَانُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿40﴾

४०. फिर तो हम ने हर एक को उस के पाप की सजा में धर लिया, उन में से कुछ पर हम ने पत्थरों की बारिश की[1] उन में से कुछ को तेज चीख़ ने दबोच लिया,[2] उन में से कुछ को हम ने धरती में धंसा दिया[3] और उन में से कुछ को हम ने पानी में डुबो दिया[4] अल्लाह तआला ऐसा नहीं कि उन पर ज़ुल्म करे बल्कि वही लोग अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे।

مَثَلُ ٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُوا۟ مِن دُونِ ٱللَّهِ أَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ ٱلْعَنكَبُوتِ ٱتَّخَذَتْ بَيْتًا ۖ وَإِنَّ أَوْهَنَ ٱلْبُيُوتِ لَبَيْتُ ٱلْعَنكَبُوتِ ۖ لَوْ كَانُوا۟ يَعْلَمُونَ ﴿41﴾

४१. जिन लोगों ने अल्लाह (तआला) के सिवाय दूसरे को वली (देवता) मुक़र्रर कर रखा है, उन की मिसाल (उदाहरण) मकड़ी की तरह है कि वह भी एक घर बनाती है, अगरचे (यद्यपि) सभी घरों से ज़्यादा कमज़ोर घर मकड़ी का घर ही है,[5] काश, कि वे जान लेते।

---

[1] यह आद की क़ौम थी, जिस पर तेज चीख़ और हवाओं का अज़ाब आया, ये हवायें धरती से कंकरियां उड़ाकर उन पर बरसातीं, आख़िर में उन की तेज़ी इतनी बढ़ी कि उन्हें उड़ाकर आकाश तक ले जातीं और उन्हें सिर के बल दे मारतीं, जिस से उन के सिर अलग और धड़ अलग हो जाते जैसेकि वे खजूर के खोखले तने हैं। (इब्ने कसीर)

[2] यह हज़रत स्वालेह की क़ौम समूद है, जिन्हें उन के कहने पर पत्थर की एक चट्टान से ऊँटनी निकाल कर दिखायी गयी, लेकिन उन ज़ालिमों ने ईमान लाने के बजाये उस ऊँटनी को ही मार डाला, जिस के तीन दिन के बाद उन पर तेज चीख़ का अज़ाब आया, जिस ने उन की आवाज़ और चाल को शान्त (ख़ामोश) कर दिया।

[3] यह क़ारून है, जिसे दौलत के ख़ज़ाने अता किये गये थे, लेकिन यह इस घमंड में मगन हो गया कि वह धन-धान्य इस बात का सुबूत है कि मैं अल्लाह के यहाँ सम्मानित (बाइज़्ज़त) और आदरणीय (मुअज़्ज़िज़) हूँ, मुझे मूसा की बात को क़ुबूल करने की क्या ज़रूरत है? इसलिए उसे उस के ख़ज़ानों और महलों सहित धरती में धंसा दिया गया।

[4] यह फ़िरऔन है जो मिस्र देश का राजा था, लेकिन हद से तजावुज़ करके अपने आप को भगवान (उपास्य) एलान कर दिया, हज़रत मूसा पर ईमान लाने से और उन की क़ौम इस्राईल की औलाद को, जिसको उसने ग़ुलाम बना रखा था, आज़ाद करने से इंकार कर दिया, आख़िर में एक सुबह उस को उस की पूरी सेना सहित लाल सागर (कुल्ज़ुम) में डुबो दिया गया।

[5] यानी जिस तरह मकड़ी का जाला (घर) बहुत कमज़ोर और अस्थाई (आरज़ी) होता है, हाथ के ज़रा से इशारे से वह नष्ट हो जाता है, अल्लाह के सिवाय दूसरों को अपना वली और मददगार समझना भी बिल्कुल उसी की तरह है, यानी कमज़ोर और बेकार है, क्योंकि वे भी किसी के काम नहीं आ सकते, इसलिए अल्लाह के सिवाय दूसरों के सहारे भी मकड़ी के जाले के समान कमज़ोर और बेकार हैं, अगर यह मज़बूत और फ़ायदेमंद होते तो यह देवता पहले की उम्मतों

४२. अल्लाह (तआला) उन सभी चीज़ों को जानता है जिन्हें वह उस के सिवाय पुकार रहे हैं, और वह बड़ा जबरदस्त और हकीम है।

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِ مِن شَيْءٍ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿42﴾

४३. और हम इन मिसालों को लोगों के लिए बयान कर रहे हैं, और इन्हें केवल इल्म वाले ही समझते हैं।[1]

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۖ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ ﴿43﴾

४४. अल्लाह तआला ने आकाशों और धरती को हक़ और सच के साथ पैदा किया है, ईमान वालों के लिए तो इसमें बड़ी भारी निशानी है।

خَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿44﴾

४५. जो किताब आप की तरफ़ वह्यी की गयी है उसे पढ़िये[2] और नमाज़ क़ायम कीजिए (पाबन्दी से पढ़िये)[3] बेशक नमाज़ बेहयाई और बुराई से रोकती है[4] और बेशक अल्लाह का ज़िक्र बहुत बड़ी बात है। तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अल्लाह (तआला) जानता है।

اتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ ۖ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ ۗ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ ﴿45﴾

को बचा लेते लेकिन दुनिया ने देख लिया कि वे उन्हें नहीं बचा सके।

[1] इस इल्म से मुराद अल्लाह को, उस के धार्मिक विधानों (शरीअतों) का और उन आयतों और दलीलों का इल्म है जिन पर ख़्याल और सोच-फ़िक्र करने से इंसान को अल्लाह का इल्म हासिल होता है और हिदायत का रास्ता प्रशस्त (वाज़ेह) होता है।

[2] क़ुरआन करीम की तिलावत के कई मक़सद हैं, सिर्फ बदला और नेकी के लिए, उस के माने और मतलब पर ख़्याल और फ़िक्र के लिए, शिक्षा-दीक्षा (तालीम) के लिए और तफ़सीर के लिए, तिलावत के हुक्म में ये सभी क़िस्में शामिल हैं।

[3] क्योंकि नमाज़ से (अगर नमाज़ हो) इंसान का ख़ास तौर से सम्बन्ध अल्लाह से हो जाता है, जिस से इंसान को अल्लाह तआला की मदद हासिल होती है, जो ज़िन्दगी के हर मोड़ पर उसकी मज़बूती और स्थिरता (पायेदारी) का सबब और हिदायत का ज़रिया साबित होती है।

[4] यानी बेहयाई और बुराई को रोकने का ज़रिया बनती है, जिस तरह दवाओं के कई असर हैं, और कहा जाता है कि फ़्लां दवाई फ़्लां रोग को रोकती है और हक़ीक़त में ऐसा होता है, लेकिन कब? जब दो बातों को ध्यान में रखा जाये, एक तो दवाई को तरीक़े से उस नियम और शर्त के साथ इस्तेमाल किया जाये, जो वैद्य, हकीम या डाक्टर ने बताया है। दूसरा परहेज़ यानी ऐसी चीज़ों का इस्तेमाल न किया जाये जो उस दवा के असर को कम करे या ख़त्म कर दे। इसी तरह नमाज़ में भी अल्लाह तआला ने ऐसा असर रखा है कि यह इंसान को बेहयाई और बुराई से रोकती है, लेकिन उसी समय जब नमाज़ सुन्नते नबवी ﷺ के अनुसार उन तरीक़ों और शर्तों के साथ पढ़ी जाये जो उसकी क़ुबूलियत और मान्यता (सिहत) के लिए फ़र्ज़ हैं।

وَلَا تُجَادِلُوٓا۟ أَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ إِلَّا بِٱلَّتِى هِىَ أَحْسَنُ إِلَّا ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ مِنْهُمْ ۖ وَقُولُوٓا۟ ءَامَنَّا بِٱلَّذِىٓ أُنزِلَ إِلَيْنَا وَأُنزِلَ إِلَيْكُمْ وَإِلَٰهُنَا وَإِلَٰهُكُمْ وَٰحِدٌ وَنَحْنُ لَهُۥ مُسْلِمُونَ ﴿46﴾

४६. और अहले किताब के साथ बहुत अच्छे तरीके से वाद-विवाद करो,[1] सिवाय उन के साथ जो उन में ज़ालिम हैं। और साफ़ एलान कर दो कि हमारा तो उस किताब पर भी ईमान है, जो हम पर नाज़िल की गयी है और उस पर भी जो तुम पर नाज़िल की गयी। हमारा-तुम्हारा रब एक ही है, हम सब उसी के फ़रमाँबरदार हैं।

وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَآ إِلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ ۚ فَٱلَّذِينَ ءَاتَيْنَٰهُمُ ٱلْكِتَٰبَ يُؤْمِنُونَ بِهِۦ ۖ وَمِنْ هَٰٓؤُلَآءِ مَن يُؤْمِنُ بِهِۦ ۚ وَمَا يَجْحَدُ بِـَٔايَٰتِنَآ إِلَّا ٱلْكَٰفِرُونَ ﴿47﴾

४७. और हम ने उसी तरह आप की तरफ़ अपनी किताब नाज़िल की है, इसलिए जिन्हें हम ने किताब अता की है, वे उस पर ईमान लाते हैं[2] और उन में से कुछ उस पर ईमान रखते हैं, और हमारी आयतों का इंकार केवल काफ़िर ही करते हैं।

وَمَا كُنتَ تَتْلُوا۟ مِن قَبْلِهِۦ مِن كِتَٰبٍ وَلَا تَخُطُّهُۥ بِيَمِينِكَ ۖ إِذًا لَّٱرْتَابَ ٱلْمُبْطِلُونَ ﴿48﴾

४८. और इस से पहले तो आप कोई किताब पढ़ते न थे, और न किसी किताब को अपने हाथ से लिखते थे कि यह असत्य (बातिल) के पुजारी लोग शक और शुब्हे में पड़ते।

بَلْ هُوَ ءَايَٰتٌۢ بَيِّنَٰتٌ فِى صُدُورِ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْعِلْمَ ۚ وَمَا يَجْحَدُ بِـَٔايَٰتِنَآ إِلَّا ٱلظَّٰلِمُونَ ﴿49﴾

४९. वरन् यह (क़ुरआन) तो रौशन आयतें (सूत्र) हैं जो आलिमों (ज्ञानियों) के दिल में महफ़ूज हैं।[3] हमारी आयतों को इंकार करने वाला सिवाय ज़ालिमों के कोई दूसरा नहीं।

وَقَالُوا۟ لَوْلَآ أُنزِلَ عَلَيْهِ ءَايَٰتٌ مِّن رَّبِّهِۦ ۖ قُلْ إِنَّمَا ٱلْءَايَٰتُ عِندَ ٱللَّهِ وَإِنَّمَآ أَنَا۠ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿50﴾

५०. और उन्होंने कहा कि इस पर कुछ निशानियाँ इसके रब की तरफ़ से क्यों नहीं उतारी गयीं। (आप) कह दीजिए निशानियाँ तो सभी अल्लाह के पास हैं मेरी हैसियत तो केवल वाजेह तौर से सचेत (आगाह) कर देने वाले की है।

---

[1] इसलिए कि वे आलिम और अक़्लमंद हैं, बात को समझने की योग्यता और क्षमता (सलाहियत) रखते हैं, इस वजह से उन से बहस और बातचीत में सख़्ती और तेज़ी मुनासिब (उचित) नहीं।

[2] इस से मुराद अब्दुल्लाह बिन सलाम आदि (वग़ैरह) हैं। किताब देने से मुराद है उस के अनुसार अमल करना, जैसाकि उसके अनुसार जो अमल नहीं करते, उन्हें यह किताब दी ही नहीं गयी।

[3] यानी क़ुरआन मजीद के हाफ़िज़ों (ग़ैब याद करने वालों) के दिल में, यह क़ुरआन का मोजिज़ा है कि क़ुरआन मजीद हर्फ़-हर्फ़ दिल में महफ़ूज़ (सुरक्षित) हो जाता है।

أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّآ أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ فِى ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ (51)

५१. क्या उन्हें यह काफी नहीं कि हम ने आप पर अपनी किताब नाज़िल कर दी जो उन पर पढ़ी जा रही है। इस में रहमत (भी) है और नसीहत (भी) है, उन लोगों के लिए जो ईमान वाले हैं।

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِى وَبَيْنَكُمْ شَهِيدًا ۖ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا بِالْبٰطِلِ وَكَفَرُوا بِاللّٰهِ ۙ أُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ (52)

५२. कह दीजिए कि मुझ में और तुम में अल्लाह तआला का गवाह होना काफी है, वह आकाश और धरती की हर चीजों का जानने वाला है, जो लोग असत्य (बातिल) को मानने वाले हैं और अल्लाह (तआला) से कुफ्र करने वाले हैं, वे बहुत ज़्यादा नुक़सान में हैं।

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۚ وَلَوْلَآ أَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ۚ وَلَيَأْتِيَنَّهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ (53)

५३. और ये लोग आप से अज़ाब की जल्दी मचा रहे हैं, अगर मेरी तरफ़ से मुकर्रर वक़्त न होता, तो अभी तक उन के पास अज़ाब आ चुका होता, यह तय बात है कि अचानक उनके अनजाने में उन के पास अज़ाब आ पहुँचेगा।

يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۗ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌۢ بِالْكٰفِرِينَ (54)

५४. ये अज़ाब की जल्दी मचा रहे हैं और (इत्मिनान रखें) नरक काफिरों को घेर लेने वाला है।

يَوْمَ يَغْشٰىهُمُ الْعَذَابُ مِن فَوْقِهِمْ وَمِن تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ (55)

५५. उस दिन उनके ऊपर-नीचे से उन्हें अज़ाब ढाँक रहा होगा और अल्लाह महान कहेगा कि अब अपने बुरे कामों का मज़ा चखो।

يٰعِبَادِىَ الَّذِينَ ءَامَنُوٓا إِنَّ أَرْضِى وٰسِعَةٌ فَإِيّٰىَ فَاعْبُدُونِ (56)

५६. हे मेरे ईमानवाले बन्दो! मेरी धरती बहुत कुशादा है, तो तुम मेरी ही इबादत करो।

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۖ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ (57)

५७. हर जान को मौत का मज़ा चखना है और तुम सब हमारी ही तरफ़ लौटाये जाओगे।

وَالَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُم مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِى مِن تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا ۚ نِعْمَ أَجْرُ الْعٰمِلِينَ (58)

५८. और जो लोग ईमान लाये और नेकी के काम भी किये उन्हें हम यक़ीनी तौर से जन्नत के उन ऊँचे मकानों में जगह देंगे जिनके नीचे से नदियाँ बह रही हैं, जहाँ वे हमेशा रहेंगे। (अच्छे) काम करने वालों का क्या ही अच्छा बदला है।

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿59﴾

५९. वे जिन्होंने सब्र किया और अपने रब पर भरोसा रखते हैं।

وَكَأَيِّن مِّن دَابَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿60﴾

६०. और बहुत से जानवर हैं जो अपना रिज़्क़ लादे नहीं फिरते, उन सब को और तुम्हें भी अल्लाह तआला ही रिज़्क़ अता करता है। वह बड़ा सुनने जानने वाला है।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿61﴾

६१. और अगर आप उनसे पूछें कि धरती और आकाश का ख़ालिक़ और सूरज और चाँद को काम में लगाने वाला कौन है तो उन का जवाब यही होगा कि अल्लाह तआला,[1] तो फिर किधर उल्टे जा रहे हैं।

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿62﴾

६२. अल्लाह तआला अपने बंदों में से जिसे चाहे ज़्यादा रिज़्क़ (जीविका) अता करता है और जिसे चाहे कम, बेशक अल्लाह तआला हर चीज का जानने वाला है।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّن نَّزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِن بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿63﴾

६३. और अगर आप उन से सवाल करें कि आकाश से पानी बरसा कर धरती को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा करने वाला कौन है, तो बेशक उनका जवाब यही होगा कि अल्लाह तआला। आप कह दें कि सारी तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए है, बल्कि उन में ज़्यादा लोग नाअक़्ल (निर्बोध) हैं।[2]

وَمَا هَٰذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهْوٌ وَلَعِبٌ ۚ وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿64﴾

६४. और दुनिया की यह ज़िन्दगी तो सिर्फ़ मनोरंजन और खेल-कूद है, हाँ सच्ची ज़िन्दगी तो आख़िरत का घर है, अगर ये जानते होते।

---

[1] यानी ये मूर्तिपूजक मुसलमानों को सिर्फ़ एकेश्वरवाद (तौहीद) में यक़ीन करने के सबब तकलीफ़ें पहुँचा रहे हैं, उन से अगर पूछा जाये कि आकाश और धरती को नास्ति (अदम) से पैदा करने वाला और सूरज-चाँद को अपनी परिधि (दायरे) में चक्कर कराने वाला कौन है, तो वहाँ यह क़ुबूल करने के लिए मजबूर हैं कि ये सब कुछ करने वाला अल्लाह है।

[2] क्योंकि अक़्ल होती तो अपने रब के साथ पत्थरों को, मुर्दों को रब न बनाते, न उन के अन्दर यह सलाहियत होती कि अल्लाह तआला को ख़ालिक़ (स्रष्टा) और पैदा करने वाला और रब मानते हुए भी बुतों (मूर्तियों) को संकटहारी (मुश्किल कुशा) और पूज्य समझ रहे हैं।

فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ﴿65﴾

६५. जब यह लोग नाव में सवार होते हैं तो अल्लाह (तआला) को ही पुकारते हैं उस के लिए इबादत को ख़ास कर के, फिर जब वह उन्हें थल (ख़ुश्की) की तरफ़ महफ़ूज़ ले आता है तो उसी वक़्त शिर्क करने लगते हैं।

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ وَلِيَتَمَتَّعُوا ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿66﴾

६६. ताकि हमारे अता किये हुए उपकारों (एहसानों) से मुकरते रहें और फ़ायेदामंद होते रहें। अभी-अभी उन्हें पता चल जायेगा।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا آمِنًا وَيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ۚ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَةِ اللَّهِ يَكْفُرُونَ ﴿67﴾

६७. क्या ये नहीं देखते कि हम ने हरम को अमन की जगह बना दिया, जब कि उन के क़रीबी इलाक़े से लोग अपहृत (उचक) कर लिये जाते हैं[1] क्या ये असत्य (बातिल) पर तो यक़ीन रखते हैं और अल्लाह (तआला) की नेमतों पर नाशुक्री करते हैं।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِلْكَافِرِينَ ﴿68﴾

६८. और उस से बड़ा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह (तआला) पर झूठा बुहतान लगाये या जब हक़ उसके पास आ जाये, वह उसे झूठ बताये, क्या ऐसे काफ़िरों का ठिकाना नरक में न होगा?

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ ﴿69﴾

६९. और जो लोग हमारे रास्ते में दुख सहन करते हैं, हम उन्हें अपना रास्ता ज़रूर दिखा देंगे। बेशक अल्लाह (तआला) नेकी करने वालों का साथी है।[2]

---

[1] अल्लाह तआला उस नेमत का बयान कर रहा है जो मक्कावासियों पर उसने किया है कि हम ने उन के हरम को शान्ति वाला बनाया है, जिस के रहने वाले क़त्ल और अपहरण, लूटमार वग़ैरह से महफ़ूज़ हैं, जबकि अरब के दूसरे इलाक़े इस तरह की शान्ति-सुरक्षा (अमन व अमान) से महरूम हैं। लूट और क़त्ल उन के यहाँ आम और हर दिन का काम है।

[2] एहसान से मुराद अल्लाह को शाहिद मानकर हर नेकी के काम साफ़ दिल के साथ करना, नबी ﷺ की सुन्नत के अनुसार करना, बुराई के बदले एहसान करना, अपना हक़ छोड़ कर दूसरों को उन के हक़ से ज़्यादा देना, यह सब एहसान के परिधि (दायरे) में शामिल हैं।

सूरतुर्रूम-३०

سُورَةُ الرُّومِ

सूर: रूम मक्का में नाज़िल हुई, इस में साठ आयतें और ६ रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰

الٓمّٓ ﴿1﴾

२. रोमन पराजित (मग़लूब) हो गये।

غُلِبَتِ الرُّوْمُ ﴿2﴾

३. क़रीबी धरती पर और वह पराजित होने के बाद क़रीब मुस्तक़बिल में ग़ालिब हो जायेंगे।

فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ﴿3﴾

४. कुछ सालों में ही, इस से पहले और इस के बाद भी हक़ अल्लाह (तआला) ही का है, और उस दिन मुसलमान ख़ुश होंगे।

فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۬ۗ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ؕ وَيَوْمَئِذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿4﴾

५. अल्लाह (तआला) की मदद से,[1] वह जिसकी चाहता है मदद करता है, और असल फ़ातेह और प्रभावशाली (ग़ालिब) और रहीम वही है।

بِنَصْرِ اللّٰهِ ؕ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿5﴾

६. अल्लाह का वादा है, अल्लाह (तआला) अपने वादे तोड़ा नहीं करता, लेकिन बहुत लोग नहीं जानते।

وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿6﴾

[1] रिसालत के ज़माने में दो बड़ी ताक़तें थीं, एक फ़ारस (ईरान) की और दूसरी रोम की। पहला बयान किया गया मुल्क अग्निपूजक और दूसरा ईसाई यानी अहले किताब था। मक्का के मूर्तिपूजकों की हमदर्दी ईरान के साथ थीं, क्योंकि दोनों अल्लाह के सिवाय दूसरों के पुजारी थे, जबकि मुसलमानों की हमदर्दी रोम के इसाई राज्य के साथ थीं, इसलिए कि इसाई भी मुसलमानों की तरह अहले किताब थे। वहयी और रसूलों पर ईमान रखते थे, उनकी आपस में ठनी रहती थी। नबी ﷺ की नबूअत के एलान के कुछ समय बाद ऐसा हुआ कि ईरान का राज्य (मुल्क) रोम के इसाई राज्य के ऊपर विजयी (फ़ातेह) हो गया, जिस पर मूर्तिपूजकों को ख़ुशी हुई और मुसलमानों को दुख हुआ, उस मौक़ा पर क़ुरआन की ये आयतें नाज़िल हुईं, जिन में ये भविष्यवाणी (पेशीनगोई) की गयी कि कुछ साल के अन्दर रूमी दोबारा विजयी हो जायेंगे और विजयी पराजित और पराजित विजयी हो जायेंगे।

७. वह तो (केवल) दुनियावी ज़िन्दगी के ज़ाहिर को (ही) जानते हैं, और आख़िरत से तो बिल्कुल ही बेख़बर हैं।

يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا ۖ وَهُمْ عَنِ الْآخِرَةِ هُمْ غَٰفِلُونَ ﴿7﴾

८. क्या उन लोगों ने अपने दिल में यह ग़ौर नहीं किया कि अल्लाह (तआला) ने आकाशों को और धरती और उनके बीच जो कुछ है सबको बेहतर अंदाज़ा से[1] मुक़र्रर वक़्त तक के लिए (ही) पैदा किया है, हाँ ज़्यादातर लोग बेशक अपने रब की मुलाक़ात का इंकार करते हैं।

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِىٓ أَنفُسِهِم ۗ مَّا خَلَقَ اللَّهُ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ لَكَٰفِرُونَ ﴿8﴾

९. क्या उन्होंने धरती पर सैर करके नहीं देखा कि उनसे पहले के लोगों का परिणाम (अंजाम) कैसा (बुरा) हुआ? वे उन से ज़्यादा ताक़तवर (और बलवान) थे, और उन्होंने भी धरती जोती-बोयी थी और उन से ज़्यादा आबादी बनाई थी और उन के पास उन के रसूल मोजिज़े लेकर आये थे, यह तो नामुमकिन था कि अल्लाह (तआला) उन पर ज़ुल्म करता, लेकिन (हक़ीक़त में) वे ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे।

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِى الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوٓا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَآ أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوهَا وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَٰتِ ۖ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِن كَانُوٓا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿9﴾

१०. फिर आख़िर में बुरों का बुरा अंजाम हुआ, इसलिए कि वे अल्लाह की आयतों को झुठलाते थे और उनका मज़ाक़ उड़ाते थे।

ثُمَّ كَانَ عَٰقِبَةَ الَّذِينَ أَسَٰٓـُٔوا السُّوٓأَىٰٓ أَن كَذَّبُوا بِـَٔايَٰتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِءُونَ ﴿10﴾

[1] या एक मक़सद और सच के साथ पैदा किया है बेकार नहीं, और वह मक़सद यह है कि नेक लोगों को नेकियों का बदला और बुरे लोगों को उनकी बुराई की सज़ा दी जाये, यानी क्या वे अपने वजूद पर ख़्याल नहीं करते कि किस तरह उसे हक़ीर से बुलन्द किया और पानी की एक हक़ीर बूँद से उनकी तख़लीक़ (सृष्टि) की। फिर आकाश और धरती को एक ख़ास मक़सद के लिए लम्बा-चौड़ा किया, इसके अलावा उन सब के लिए एक वक़्त मुक़र्रर किया, यानी क़यामत का दिन जिस दिन ये सब कुछ ख़त्म हो जायेगा। मतलब यह है कि अगर वे इन सब बातों पर ख़्याल करते तो निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से अल्लाह के वजूद, उस के रब और लायक़े इबादत होने और उसकी क़ुदरत का उन्हें संवेदन (एहसास) और इल्म हो जाता और उस पर ईमान ले आते।

اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿11﴾

११. अल्लाह (तआला) ही मख़लूक को पैदा करता है, फिर वही उन्हें दोबारा पैदा करेगा,[1] फिर तुम सब उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे।

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿12﴾

१२. और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी तो मुजरिम हैरान रह जायेंगे।[2]

وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَكَانُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِيْنَ ﴿13﴾

१३. और उन के सभी साझीदारों में से एक भी उन की सिफ़ारिश नहीं करेगा[3] और ख़ुद ये भी अपने देवताओं (शरीकों) का इंकार करेंगे।

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ﴿14﴾

१४. और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी, उस दिन (सभी गुट) बँट जायेंगे।[4]

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ﴿15﴾

१५. फिर जो ईमान लाकर नेक काम करते रहे, वे तो जन्नत में ख़ुश कर दिये जायेंगे।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ﴿16﴾

१६. और जिन्होंने कुफ़्र किया था और हमारी आयतों को और आख़िरत के मिलन को झूठा ठहराया था, वे सब अज़ाब में पकड़ कर हाज़िर किये जायेंगे।

---

[1] जिस तरह अल्लाह तआला पहली बार पैदा करने की क़ुदरत रखता है, उसी तरह मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा करने की क़ुदरत रखता है, इसलिए कि दोबारा ज़िन्दा करना पहली बार पैदा करने से ज़्यादा कठिन नहीं।

[2] اِبْلَاس का मतलब है अपने हक़ की तसदीक़ के लिए कोई दलील पेश न कर सकना और हैरान होकर चुप खड़े रहना, और مُبْلِس वह होगा जो मायूस होकर चुप खड़ा हो और उसे कोई दलील समझ में न आ रही हो।

[3] साझीदारों से मुराद वे झूठे देवता हैं, जिन्हें मूर्तिपूजक यह समझकर पूजते थे कि यह अल्लाह के यहाँ उनकी सिफ़ारिश करेंगे और उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा लेंगे, लेकिन यहाँ अल्लाह ने वाज़ेह कर दिया कि अल्लाह के साथ साझीदार बनाने वालों के लिए अल्लाह के यहाँ कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं होगा।

[4] इस से मुराद हर एक इंसान का हर एक इंसान से अलग होना नहीं है बल्कि मतलब ईमानवालों का काफ़िरों से अलग होना है। ईमानवाले जन्नत में और काफ़िर और मूर्तिपूजक नरक में चले जायेंगे और उन के बीच स्थाई (मुस्तक़िल) अलगाव हो जायेगी और ये दोनों फिर कभी भी जमा न होंगे, यह हिसाब के बाद होगा, इस अलगाव की वज़ाहत (स्पष्टीकरण) अगली आयत में आ रहा है।

१७. तो अल्लाह (तआला) की तारीफ़ किया करो, जबकि तुम शाम करो और जब सुबह करो।

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿17﴾

१८. और सभी तारीफ़ों के लायक़ आकाश और धरती में वही है, तीसरे पहर और दोपहर के समय भी उसकी पकीज़गी को बयान करो।

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿18﴾

१९. वही ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है,[1] और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है, और वही धरती को उस की मौत के बाद ज़िन्दा करता है, इसी तरह तुम (भी) निकाले जाओगे।

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿19﴾

२०. और अल्लाह की निशानियों में से है कि तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर अब इंसान बनकर (चलते-फिरते) फैल रहे हो।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿20﴾

२१. और उसकी निशानियों में से है कि तुम्हारी ही जाति से पत्नियाँ पैदा कीं[2] ताकि तुम उन से सुख पाओ,[3] उस ने तुम्हारे बीच प्रेम और दया भाव पैदा कर दिये,[4] बेशक ग़ौर व फ़िक्र करने वालों के लिए इस में बहुत-सी निशानियाँ (लक्षण) हैं।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿21﴾

---

1 जैसे मुर्गी को अंडे से, अंडे को मुर्गी से, इंसान को वीर्य (मनी) से, वीर्य को इंसान से और ईमान वाले को काफ़िर से, काफ़िर को ईमानवालों से पैदा करता है।

2 यानी तुम्हारे ही लिंग (जाति) से औरतें पैदा कीं ताकि वे तुम्हारी बीवियाँ हों और तुम जोड़ा-जोड़ा हो जाओ, زوج अरबी भाषा में जोड़ा को कहते हैं। इस बिना पर मर्द, औरत के लिए और औरत, मर्द के लिए जोड़ा है, औरतों के मानव (इंसानी) लिंग होने का मतलब है कि दुनिया की पहली औरत हज़रत हव्वा को हज़रत आदम की बायें पहलू से पैदा किया गया, फिर उन दोनों से इंसानों का ख़ानदान चला।

3 मतलब यह है कि अगर मर्द और औरत की जाति एक-दूसरे से अलग होती, मिसाल के तौर पर औरतें जिन्नात या जानवरों में से होतीं तो उन से वह सुकून कभी हासिल न होता जो इस समय दोनों के एक ही जाति होने की वजह से होता है बल्कि एक-दूसरे से नफ़रत और डर होता, यह अल्लाह तआला की रहमत ही है कि इंसान की बीवियाँ इंसानों में से ही बनायीं।

4 مودة यह है कि पति, पत्नी से बहुत मुहब्बत करता है और ऐसे ही पत्नी, पति से। जैसाकि आम तौर से देखने में आया है, ऐसी मुहब्बत जो पति-पत्नी में होती है, दुनिया में किसी दो इंसानों के बीच नहीं होती।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ (22)

२२. और उस की (क़ुदरत) की निशानियों में से आकाशों और धरती की पैदाइश और तुम्हारी ज़ुबानों और रंगो का इख़्तिलाफ़ (भी) है[1] अक़्लमंदों के लिए अवश्य (यक़ीनन) उस में बड़ी निशानियां हैं।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاۗؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ (23)

२३. और (दूसरे भी) उसकी (क़ुदरत) की निशानियां तुम्हारे रात और दिन की नींद में है और उसका फ़ज़्ल (यानी रोज़ी) को तुम्हारा खोजना (भी) है, जो लोग कान लगाकर सुनने वाले हैं उन के लिए इसमें बड़ी निशानियां हैं।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ (24)

२४. और उसकी निशानियों में से एक निशानी यह भी है कि वह तुम्हें डराने और उम्मीद वाला बनाने के लिए तड़ित (बिजलियां) दिखाता है, और आकाश से बारिश करता है, और उस से मुर्दा धरती ज़िंदा करता है, इस में (भी) अक़्लमंदों के लिए बड़ी निशानियां हैं।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَاۗءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ۭ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ڰ مِّنَ الْاَرْضِ ڰ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ (25)

२५. और उसकी एक निशानी यह भी है कि आकाश और धरती उस के हुक्म से क़ायेम हैं, फिर वह जब तुम्हें आवाज़ देगा, केवल एक बार की आवाज से ही तुम सब धरती से निकल आओगे।

[1] दुनिया में इतनी ज़ुबानो का पाया जाना भी अल्लाह तआला की क़ुदरत की एक बहुत बड़ी निशानी है: अरबी है, तुर्की है, अंग्रेज़ी है, उर्दू है, हिन्दी है, पश्तो, फ़ारसी, सिन्धी, बलूची, तमिल, तेलगू और बंगला वग़ैरह हैं। फिर एक-एक ज़ुबान की आवाज़ और शैलियां हैं। एक इंसान अपनी ज़ुबान और उच्चारण (लहजे) के सबब लाखों की भीड़ में पहचान लिया जाता है कि फ़्लां देश के फ़्लां इलाक़े का रहने वाला है, सिर्फ़ ज़ुबान ही उसकी पूरी तारीफ़ करा देती है। इसी तरह एक ही माता-पिता (आदम और हव्वा) से होने के बावजूद भी रंग एक-दूसरे से अलग हैं, कोई काला है, कोई गोरा है तो कोई गेहुंआ रंग का, फिर काले और गोरे रंग में भी इतने दर्जे हैं कि ज़्यादातर आबादी दो रंगों में बटने के बावजूद भी उन की कई क़िस्में हैं, और एक-दूसरे से पूरी तरह से अलग-अलग। फिर उन के मुंह की बनावट, शारीरिक रचना (जिस्मानी रूप) और ढांचे में ऐसा फ़र्क़ रख दिया गया है कि एक-एक देश का इंसान अलग से पहचान लिया जाता है।

وَلَهٗ مَنۡ فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ‌ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوۡنَ ﴿26﴾

२६. और आकाश और धरती की सारी चीजों का वही मालिक है और हर एक उस के हुक्म के ताबेह (अधीन) हैं।

وَهُوَ الَّذِىۡ يَبۡدَؤُا الۡخَـلۡقَ ثُمَّ يُعِيۡدُهٗ وَهُوَ اَهۡوَنُ عَلَيۡهِ‌ؕ وَلَهُ الۡمَثَلُ الۡاَعۡلٰى فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ‌ۚ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ﴿27﴾

२७. और वही है जो पहली वार सृष्टि (मख़लूक़) को पैदा करता है, वही फिर से दोवारा पैदा करेगा और यह तो उस पर बहुत आसान है, उसी की अच्छी और उच्च विशेषता (सिफ़त) है[1] आकाशों में और धरती में भी, वही जवरदस्त हिक्मत वाला है।

ضَرَبَ لَكُمۡ مَّثَلًا مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ‌ؕ هَلۡ لَّـكُمۡ مِّنۡ مَّا مَلَكَتۡ اَيۡمَانُكُمۡ مِّنۡ شُرَكَآءَ فِىۡ مَا رَزَقۡنٰكُمۡ فَاَنۡتُمۡ فِيۡهِ سَوَآءٌ تَخَافُوۡنَهُمۡ كَخِيۡفَتِكُمۡ اَنۡفُسَكُمۡ‌ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الۡاٰيٰتِ لِقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ﴿28﴾

२८. अल्लाह तआला ने एक मिसाल ख़ुद तुम्हारी ही वयान की, जो कुछ हम ने तुम्हें अता कर रखा है क्या उस में तुम्हारे दासों (गुलामों) में से कोई तुम्हारा साझीदार है कि तुम और वह इस में बराबर पद के हो ?[2] और तुम उनका डर इस तरह रखते हो जैसे कि ख़ुद अपनों का, हम अक्लमंदों के लिए इसी तरह वाज़ेह तौर (स्पष्ट रूप) से आयतें वयान करते हैं।

---

[1] यानी इतने गुणों (सिफ़त) और महान सामर्थ्य (अज़ीम क़ुदरत) का मालिक, तमाम तुलनाओं (तश्बीहों) से महान (वेनियाज़) और ऊँचा है।

«لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ»

"उसकी कोई तुलना नहीं।" (सूर: शूरा-११)

[2] यानी जब तुम को यह प्यारा नहीं कि तुम्हारे दास और काम करने वाले जो तुम्हारे ही तरह इंसान हैं, वे तुम्हारे धन-दौलत के साझीदार और तुम्हारे बराबर हो जायें, तो फिर यह किस तरह हो सकता है कि अल्लाह के दास (भक्त), चाहे वे फ़रिश्ते हों, रसूल हों, वली, हों या पेड़ और पत्थर के बनाये हुए देवता, वे अल्लाह के साझीदार हो जायें, जबकि वे भी अल्लाह के दास हैं और उसकी मख़लूक़ हैं, यानी जिस तरह पहली बात नहीं हो सकती दूसरी भी नहीं हो सकती, इसलिए अल्लाह के साथ दूसरों की भी इबादत करना और उन्हें भी कष्टनिवारक (मुश्किलकुशा) और संकट-मोचन (फ़रियाद सुनने वाला) समझना हमेशा ग़लत है।

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَهْوَاءَهُم بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ فَمَن يَهْدِي مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ ۖ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ (29)

२९. सहीह बात यह है कि ये जालिम बिना इल्म के ख़्वाहिशात के पुजारी हैं उसे कौन रास्ता दिखाये जिसे अल्लाह रास्ते से हटा दे?[1] उनकी एक भी मदद करने वाला नहीं।

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ۚ لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ (30)

३०. तो आप एकाग्र (एकसू) होकर अपना मुँह दीन की तरफ़ केन्द्रित (मरकूज़) कर दें, अल्लाह (तआला) की वह फ़ितरत जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया है। अल्लाह तआला के बनाये को बदलना नहीं, यही सच्चा दीन है, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं समझते।

مُنِيبِينَ إِلَيْهِ وَاتَّقُوهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ (31)

३१. (लोगो!) अल्लाह (तआला) की तरफ़ आकर्षित होकर उससे डरते रहो और नमाज़ को क़ायम रखो और मूर्तिपूजकों में से न हो जाओ।

مِنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا ۖ كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ (32)

३२. उन लोगों में से जिन्होंने अपने दीन को छिन्न-भिन्न कर दिया और ख़ुद भी गुटों में बँट गये, हर गुट उस चीज़ पर जो उसके पास है मगन है।[2]

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُم مُّنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا أَذَاقَهُم مِّنْهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُم بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ (33)

३३. और लोगों को जब कोई दुख पहुँचता है तो अपने रब की तरफ़ यक्सू होकर दुआयें करते हैं और जब वह अपनी तरफ़ से रहमत का मज़ा चखा देता है, तो उन में का एक गुट अपने रब के साथ शिर्क करने लगता है।

---

[1] क्योंकि अल्लाह की तरफ़ से हिदायत उसे ही मिलती है, जिसके अन्दर हिदायत हासिल करने की इच्छा और कामना (ख़्वाहिश) होती है, जो इस इच्छा से महरूम होते हैं उन्हें गुमराही में भटकते छोड़ दिया जाता है।

[2] यानी हर गुट और गिरोह यह समझता है कि वह सच पर है और दूसरे झूठे, और जो सहारे उन्होंने खोज रखे हैं, जिन को वे दलील और सुबूत कहते है उन पर ख़ुश और मगन हैं। बदनसीबी से इस्लामी उम्मत का भी यही हाल हुआ कि वह भी कई गुटों में बँट गई और उनका भी हर गुट इसी झूठे ईमान पर मज़बूत है कि वह सच पर है, जबकि सच पर केवल एक ही गुट है, जिसकी पहचान नबी ﷺ ने बतायी है कि मेरे और मेरे सहाबा के रास्ता पर चलने वाला होगा।

३४. ताकि वे उस चीज की नाशुक्री जाहिर करें जो हम ने उन्हें अता की है, अच्छा, तुम फायेदा उठा लो, बहुत जल्दी तुम्हें मालूम हो जायेगा।

لِيَكْفُرُوا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوا ٙ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿34﴾

३५. क्या हम ने उन पर कोई प्रमाण (सबूत) नाजिल किया है, जो उसे बयान करता है जिसे ये अल्लाह के साथ साझीदार बना रहे हैं।

اَمْ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ يُشْرِكُوْنَ ﴿35﴾

३६. और जब हम लोगों को रहमत का मजा चखाते हैं तो वे बहुत खुश हो जाते हैं, और अगर उन्हें अपने हाथों के करतूत के सबब कोई दुख पहुँचे तो अचानक वे मायूस हो जाते हैं।

وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوْا بِهَا ؕ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ﴿36﴾

३७. क्या उन्होंने यह नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) जिसे चाहे बहुत रिज़्क देता है और जिसे चाहे कम, इस में भी उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं, निशानियाँ हैं।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿37﴾

३८. तो क़रीबी रिश्तेदार को, गरीब को, मुसाफिर को, हर एक को उसका हक़ दो, यह उन के लिए बेहतर है,जो अल्लाह (तआला) के मुँह की जियारत (दर्शन) करना चाहते हों, ऐसे ही लोग नजात हासिल करने वाले हैं।

فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿38﴾

३९. और तुम जो ब्याज पर देते हो कि लोगों के माल में बढ़ता रहे, वह अल्लाह (तआला) के यहाँ नहीं बढ़ता[1] और जो कुछ (सदका और) जकात तुम अल्लाह (तआला) के मुँह देखने

وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَا فِيْٓ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿39﴾

[1] यानी ब्याज से खुले तौर से बढ़ोत्तरी तो दिखायी देती है लेकिन हक़ीक़त में ऐसा नहीं होता, बल्कि उसकी बदनसीबी आख़िर में इस दुनिया और आख़िरत में तबाही का सबब है। हजरत इब्ने अब्बास और कई सहाबा और ताबईन ने इस आयत में ربا से मुराद ब्याज नहीं बल्कि वह उपहार (तोहफ़ा) लिया है जो कोई गरीब किसी धनवान को या जनता का कोई इंसान राजा या राजा के अधिकारी (मुलाजिम) को या एक सेवक अपने मालिक को इस इरादे से देता है कि वह उस के बदले में उस से ज़्यादा देगा, उसे ربا इसलिए कहा गया है कि देते समय ज़्यादती का ध्यान होता है। यह अगरचे ठीक है फिर भी अल्लाह के यहाँ इसका बदला नहीं मिलेगा, "فلا يربو عند الله" से उसी आख़िरत के बदले का खण्डन (तरदीद) होता है। इस बिना पर तर्जुमा होगा "जो तुम तोहफ़ा दो इस इरादे से कि वापसी की हालत में ज़्यादा मिले तो अल्लाह के यहाँ उसका अज्र नहीं।" (इब्ने कसीर, ऐसरूत्तफासीर)

(रिज़ा) के लिए दो, तो ऐसे ही लोग हैं अपना बढ़ाने वाले।

اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ یُمِیْتُكُمْ ثُمَّ یُحْیِیْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ شُرَكَآىِٕكُمْ مَّنْ یَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَیْءٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ﴿40﴾

४०. अल्लाह (तआला) वह है जिस ने तुम्हें पैदा किया, फिर रिज़्क़ दिया, फिर मार डालेगा, दोबारा ज़िन्दा कर देगा, बताओ! तुम्हारे साझीदारों में से कोई भी ऐसा है जो इन में से कुछ भी कर सकता हो। अल्लाह (तआला) के लिए पाकीज़गी और फ़ज़ीलत (विशेषता) है हर उस साझीदार से जो यह लोग गढ़ते हैं।

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِی الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَیْدِی النَّاسِ لِیُذِیْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِیْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿41﴾

४१. जल-थल में लोगों के कुकर्मों (बुरे कामों) के सबब फ़साद फैल गया, इसलिए कि उन्हें उन के कुछ करतूतों का फल अल्लाह (तआला) चखा दे, (बहुत) मुमकिन है कि वह रूक जायें।[1]

قُلْ سِیْرُوْا فِی الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِیْنَ ﴿42﴾

४२. आप कह दीजिए, धरती में चल-फिर कर देखो तो सही कि पहले के लोगों का अंजाम क्या हुआ जिन में ज़्यादातर लोग मूर्तिपूजक थे।[2]

فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّیْنِ الْقَیِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ یَّاْتِیَ یَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ یَوْمَىِٕذٍ یَّصَّدَّعُوْنَ ﴿43﴾

४३. तो आप अपना मुँह उस सीधे और सच्चे दीन की तरफ़ ही रखें, पहले इस के कि वह दिन आ जाये जिसकी वापसी अल्लाह (तआला) की तरफ़ से है ही नहीं, उस दिन सब अलग-अलग हो जायेंगे।

مَنْ كَفَرَ فَعَلَیْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ یَمْهَدُوْنَ ﴿44﴾

४४. कुफ़्र करने वालों पर उनका कुफ़्र होगा और नेक काम करने वाले अपने ही विश्रामगृह (आरामगाह) को सुन्दर (ख़ूबसूरत) बना रहे हैं।

---

[1] थल से मुराद इंसानी आबादियाँ और पानी से मुराद समुद्र और समुद्री रास्ते और समुद्र के किनारों की आबादियाँ हैं। फ़साद से मुराद हर वह फ़साद है जिस से इंसान के समाज और बस्तियों में अमनो अमान बरबाद और उन के सुख-चैन में रूकावट पैदा हो।

[2] शिर्क का ख़ास तौर से बयान किया गया है कि यह सब से बड़ा गुनाह है। इस के सिवाय इस में दूसरे गुनाह और ग़ल्तियाँ भी आ जाती हैं क्योंकि इनका इस्तेमाल भी इंसान अपनी ख़्वाहिशों की ग़ुलामी को क़ुबूल करके ही करता है, इसीलिए कुछ लोग इसे अमली शिर्क कहते हैं।

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ (45)

४५. ताकि अल्लाह (तआला) अपने फ़ज़्ल (कृपा) से उन्हें फल दे, जो ईमान लाये और नेक काम किये, वह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता है।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ يُرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرَاتٍ وَلِيُذِيقَكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ (46)

४६. और उसकी निशानियों में ख़ुशख़बरी देने वाली हवाओं को चलाना भी है, इसलिए कि तुम्हें अपनी रहमत का मज़ा चखाये, और इसलिए कि उस के हुक्म से नावें चलें और इसलिए कि उस के फ़ज़्ल को तुम खोजो और इसलिए कि तुम शुक्रिया अदा करो।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءُوهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ أَجْرَمُوا ۖ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ (47)

४७. और हम ने आप से पहले भी (अपने) रसूलों को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा वे उन के पास प्रमाण (दलायेल) लाये, फिर हम ने पापियों से बदला लिया। हम पर ईमानवालों की मदद फ़र्ज़ है।

اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَاحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۖ فَإِذَا أَصَابَ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ (48)

४८. वह अल्लाह (तआला) है जो हवायें चलाता है, वे बादलों को उठाती हैं फिर अल्लाह (तआला) अपनी मर्ज़ी से उसे आसमान में फैला देता है, और उस के टुकड़े-टुकड़े कर देता है, फिर आप देखते हैं कि उस के अंदर से बूँदें निकलती हैं,[1] और जिन्हें अल्लाह चाहता है उन बंदों पर वह बारिश करता है तो वे ख़ुश हो जाते हैं।

وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ يُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِنْ قَبْلِهِ لَمُبْلِسِينَ (49)

४९. और यक़ीन (विश्वास) करना कि बारिश (वर्षा) उन पर बरसने से पहले तो वे मायूस हो रहे थे।

---

[1] وَدق का मतलब बारिश है, यानी उन बादलों से अल्लाह अगर चाहता है तो बारिश हो जाती है, जिस से बारिश के चाहने वाले ख़ुश हो जाते हैं।

فَانْظُرْ إِلَىٰ أَثَرِ رَحْمَتِ اللَّهِ كَيْفَ يُحْيِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتَىٰ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (50)

५०. तो आप अल्लाह की रहमत के निशान देखें कि धरती की मौत के बाद किस तरह अल्लाह तआला उसे जिन्दा कर देता है। बेशक वही मुर्दों को जिन्दा करने वाला है,[1] और वह हर चीज पर क़ादिर है।

وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا لَظَلُّوا مِنْ بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ (51)

५१. और अगर हम तेज हवा चला दें और ये लोग उन्हीं खेतियों को (मुरझायी हुई) पीली पड़ी देख लें, तो फिर उस के बाद कृतघ्नता (नाशुक्री) जाहिर करने लगें।

فَإِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ (52)

५२. बेशक आप मुर्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों को (अपनी) आवाज सुना सकते हैं, जबकि वे पीठ फेरकर मुड़ गये हों।

وَمَا أَنْتَ بِهَادِ الْعُمْيِ عَنْ ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِنْ تُسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ (53)

५३. और न आप अंधों को उनकी गुमराही से मार्गदर्शन (हिदायत) देने वाले हैं। आप तो केवल उन्हीं लोगों को सुनाते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान रखते है और हैं भी वे फ़रमाँबरदार।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْبَةً ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۖ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ (54)

५४. अल्लाह (तआला) वह है, जिस ने तुम्हें कमजोर हालत में पैदा किया,[2] फिर उस कमजोरी के बाद ताक़त अता (प्रदान) किया, फिर उस ताक़त के बाद कमजोरी और बुढ़ापा कर दिया,[3] जो चाहता है पैदा करता है, वह

[1] آثار رحمت से मुराद वे अनाज, पैदावार और मेवे हैं जो बारिश से पैदा होते हैं और सुख-सुविधा और खुशहाली के सबब होते हैं। देखने से मुराद नसीहत हासिल करने की नजर से देखना है ताकि इंसान अल्लाह की ताक़त और क़ुदरत और इस बात को क़ुबूल कर ले कि वह क़यामत के दिन उसी तरह मुर्दों को जिन्दा करेगा।

[2] यहाँ से अल्लाह (तआला) अपनी क़ुदरत का एक दूसरा मोजिज़ा बयान कर रहा है, और वह है कई तरीक़ों से इंसान की पैदाईश। निर्बल (कमजोरी की हालत) से मुराद वीर्य (मनी) यानी पानी की बूँद है या बचपन।

[3] कमज़ोरी से मुराद उम्र की वह हालत है जब दिमाग़ी और जिस्मानी कमज़ोरी की शुरूआत होती है और बुढ़ापे से मुराद उम्र की वह मुद्दत है जिस में कमज़ोरी बढ़ जाती है।

सभी को अच्छी तरह जानता और सभी पर पूरी क़ुदरत रखता है।

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ ۙ مَا لَبِثُوا غَيْرَ سَاعَةٍ ۚ كَذَٰلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ﴿٥٥﴾

५५. और जिस दिन क़यामत आ जायेगी[1] पापी लोग क़सम खायेंगे कि (दुनिया में) एक पल के सिवाय नहीं ठहरे, इसी तरह ये वहके हुए ही रहे।

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَىٰ يَوْمِ الْبَعْثِ ۖ فَهَٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلَٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٥٦﴾

५६. और जिन लोगों को इल्म और ईमान अता किया गया, वे जवाब देंगे कि तुम तो जैसाकि अल्लाह की किताब में है क़यामत (प्रलय) के दिन तक ठहरे रहे। आज का यह दिन क़यामत का ही दिन है, लेकिन तुम तो यक़ीन ही नहीं करते थे।

فَيَوْمَئِذٍ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٥٧﴾

५७. तो उस दिन ज़ालिमों को उनकी दलील कुछ काम न आयेगी और न उन से माफ़ी मँगवायी जायेगी न अमल मांगा जायेगा।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِآيَةٍ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ﴿٥٨﴾

५८. और बेशक हम ने इस क़ुरआन में लोगों के सामने सब मिसालें बयान की हैं। आप उन के पास कोई भी निशानी लायें, ये काफ़िर तो यही कहेंगे कि तुम (बकवासी) झूठे हो।

كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٩﴾

५९. अल्लाह (तआला) उन के दिलों पर जो समझ नहीं रखते, इसी तरह मोहर लगा देता है।

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ وَلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ ﴿٦٠﴾

६०. तो आप सब्र करें, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, आप को वे लोग हल्का (अधीर) न करें जो यक़ीन नहीं करते।

---

[1] साअत का मतलब है घड़ी, पल (क्षण), मुराद क़यामत है, उसको पल इसलिए कहा गया है कि उसका घटित (वाक़ेअ) होना जब अल्लाह चाहेगा एक पल में हो जायेगा, या इसलिए कि यह उस पल में होगी जो दुनिया का आख़िरी पल होगा।

سُورَةُ لُقْمَانَ

सूरतु लुक़मान-३१

सूरः लुक़मान मक्का में नाज़िल हुई, इस में चौंतीस आयतें और चार रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

الٓمّٓ ﴿1﴾

१. अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿2﴾

२. यह हिक्मत (दिव्यज्ञान) वाली किताब की आयतें हैं।

هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ﴿3﴾

३. जो परहेज़गारों के लिए हिदायत और (सर्वथा) रहमत हैं।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿4﴾

४. जो लोग पाबन्दी से नमाज़ पढ़ते हैं और ज़कात (धर्मदान) देते हैं और आख़िरत पर (पूरा) यक़ीन करते हैं।[1]

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿5﴾

५. यही लोग हैं जो अपने रब की तरफ़ से हिदायत पर हैं और यही लोग नजात हासिल करने वाले हैं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۗ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿6﴾

६. और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अनायास (लग्व) बातों को मोल लेते हैं कि अज्ञानता (जिहालत) के साथ लोगों को अल्लाह के रास्ते से भटकायें और उसे मज़ाक़ बनायें,[2] यही वे लोग हैं जिनके लिए अपमानित (ज़लील) करने वाला अज़ाब है।

---

[1] नमाज़, ज़कात और परलोक (आख़िरत) पर ईमान, ये तीनों बहुत अहम हैं, इसलिए इनका ख़ास तौर से बयान किया, वर्ना नेक, सदाचारी और अल्लाह से डरने वाले सभी अनिवार्य आदेश (वाजिबात) और सुन्नत बल्कि नेक काम तक लगातार मज़बूती से पूरा करते हैं।

[2] इन सभी चीज़ों से निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से इंसान अल्लाह के रास्ते से भटक जाते हैं और दीन को मज़ाक़ और हँसी का निशाना भी बनाते हैं।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ءَايَٰتُنَا وَلَّىٰ مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا كَأَنَّ فِىٓ أُذُنَيْهِ وَقْرًا ۖ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ⑦

७. और जब उस के सामने हमारी आयतों का पाठ (तिलावत) किया जाता है तो घमंड के साथ इस तरह मुंह फेर लेता है कि जैसे उस ने सुना ही नही, जैसे कि उस के दोनों कानों में डाट हैं।[1] आप उसे कठिन अज़ाब की ख़बर दीजिए।

إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ لَهُمْ جَنَّٰتُ ٱلنَّعِيمِ ⑧

८. बेशक जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल कर लिया और काम भी नेक (सुन्नत के अनुसार) किया उन के लिए सुखों वाली जन्नत हैं।

خَٰلِدِينَ فِيهَا ۖ وَعْدَ ٱللَّهِ حَقًّا ۚ وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ⑨

९. जहां वे हमेशा रहेंगे, अल्लाह का सच्चा वादा है, वह बड़ा महिमा (ग़ल्बा) वाला और पूरा हिक्मत वाला है।

خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ۖ وَأَلْقَىٰ فِى ٱلْأَرْضِ رَوَٰسِىَ أَن تَمِيدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ دَآبَّةٍ ۚ وَأَنزَلْنَا مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً فَأَنۢبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ⑩

१०. उसी ने आकाशों को बिना खंभे (स्तम्भ) के बनाया है, तुम उन्हें देख रहे हो, और उस ने धरती पर पहाड़ों को डाल दिया ताकि वे तुम्हें कंपित (जुम्बिश) न कर सकें, और हर तरह के जानदार धरती में फैला दिये, और उस ने आकाश से बारिश करके धरती से हर तरह के सुन्दर जोड़े उपजा दिये।[2]

هَٰذَا خَلْقُ ٱللَّهِ فَأَرُونِى مَاذَا خَلَقَ ٱلَّذِينَ مِن دُونِهِۦ ۚ بَلِ ٱلظَّٰلِمُونَ فِى ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ⑪

११. यह है अल्लाह की सृष्टि (मख़लूक़) अब तुम मुझे इस के सिवाय दूसरे किसी की कोई सृष्टि तो दिखाओ (कुछ नहीं), यह ज़ालिम खुली गुमराही में हैं।

---

[1] यह उस इंसान की हालत है जो ऊपर बयान किये गये खेलकूद के साधनों (वसायलों) में मग्न रहता है, वह क़ुरआन की आयतों (सूत्रों) और अल्लाह के रसूल की बातों को सुनकर बहरा बन जाता है, जबकि वह बहरा नहीं होता और इस तरह मुंह फेर लेता है जैसे उस ने सुना ही नहीं, क्योंकि उस के सुनने से वह तकलीफ़ महसूस करता है, इसलिए उसे इस से कोई फ़ायेदा नही होता।

[2] زوج यहां क़िस्म के मतलब में है, यानी हर तरह के अनाज और मेवे (फल) पैदा किये, इनका अच्छी सिफ़त, इन के रंग की ख़ूबसूरती और ज़्यादा फ़ायदे की तरफ़ इशारा करता है।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ۭ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿12﴾

१२. और हम ने बेशक लुक़मान को हिक्मत दिया[1] कि तू अल्लाह (तआला) का शुक्रिया अदा कर, हर शुक्र करने वाला अपने ही फ़ायदे के लिए शुक्रिया अदा करता है, जो भी नाशुक्री करे वह जान ले कि अल्लाह (तआला) बेनियाज़ तारीफ़ वाला है।

وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴿13﴾

१३. और जब लुक़मान ने नसीहत करते हुए अपने पुत्र से कहा कि हे मेरे प्रिय पुत्र! अल्लाह (तआला) के साथ साझीदार न बनाना, बेशक अल्लाह का साझीदार बनाना बहुत बड़ा ज़ुल्म है।

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰي وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ۭ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿14﴾

१४. हम ने इंसान को उस के माता-पिता के बारे में शिक्षा (तालीम) दी है[2] उसकी माता ने तकलीफ़ों पर तकलीफ़ उठाकर[3] उसे गर्भ में रखा और उसकी दूध छुड़ायी दो साल में है कि तू मेरी और अपने माता-पिता का शुक्रिया अदा कर, मेरी ही तरफ़ लौटकर आना है।

---

[1] हज़रत लुक़मान अल्लाह के परहेज़गार बंदे थे, जिन्हें अल्लाह तआला ने अक़्ल और हिक्मत और धार्मिक मुआमले में ऊँचा मुक़ाम अता किया था, उन से किसी ने पूछा कि तुम्हें यह इल्म और अक़्ल किस तरह हासिल हुआ, उन्होंने फ़रमाया: सीधे रास्ते पर रहने, ईमानदारी को अपनाने और बेकार बातों से बचने से और ख़ामोश रहने के सबब। यह ग़ुलाम थे, उन के मालिक ने कहा कि बकरी काट कर के उस के सब से अच्छे दो हिस्से लाओ, आख़िर में वह ज़ुबान और दिल निकालकर ले गये। एक दूसरे मौक़ा पर मालिक ने उन से कहा कि बकरी काट कर के उस के सब से बुरे दो हिस्से लाओ, वह फिर वही ज़ुबान और दिल लेकर चले गये, पूछने पर उन्होंने बताया कि ज़ुबान और दिल अगर ठीक हों तो यह सब से बेहतर हैं, और अगर बिगड़ जायें तो उन से बुरी कोई चीज़ नहीं। (इब्ने कसीर)

[2] तौहीद और अल्लाह की इबादत के साथ ही माता-पिता के साथ अच्छा सुलूक करने पर ज़ोर दिया गया है, इस से इस शिक्षा (तालीम) की अहमियत मालूम होती है।

[3] इसका मतलब यह है कि माता के गर्भ में बच्चा जिस तरह बढ़ता है, माँ पर बोझ बढ़ता जाता है, जिस से माँ कमज़ोर होती चली जाती है, माँ की इन तकलीफ़ों के बयान से उस तरफ़ भी इशारा मिलता है कि माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक करते वक़्त माँ को प्राथमिकता (तरजीह) दी जाये जैसाकि हदीस में भी है।

وَإِنْ جَاهَدَاكَ عَلَىٰٓ أَن تُشْرِكَ بِى مَا لَيْسَ لَكَ بِهِۦ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۖ وَصَاحِبْهُمَا فِى ٱلدُّنْيَا مَعْرُوفًا ۖ وَٱتَّبِعْ سَبِيلَ مَنْ أَنَابَ إِلَىَّ ۚ ثُمَّ إِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ⑮

१५. और अगर वे दोनों तुझ पर इस बात का दवाव डालें कि तू मेरे साथ साझीदार बना जिसका तुझे इल्म न हो तो तू उनका कहना न मानना, लेकिन दुनिया में उन के साथ भलाई से निर्वाह (बसर) करना और उस के रास्ते पर चलना जो मेरी तरफ़ झुका हुआ हो। तुम्हारा सब का लौटना मेरी ही तरफ़ है, तुम जो कुछ करते हो उस से फिर मैं तुम्हें बाख़बर कर दूँगा।

يَٰبُنَىَّ إِنَّهَآ إِن تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُن فِى صَخْرَةٍ أَوْ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ أَوْ فِى ٱلْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا ٱللَّهُ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ⑯

१६. प्यारे बेटे! अगर कोई चीज़ राई के दाने के बराबर हो, फिर वह भी अगर किसी पत्थर के नीचे हो या आकाशों में हो या धरती में हो, उसे अल्लाह (तआला) ज़रूर लायेगा, अल्लाह (तआला) बड़ा बारीक देखने वाला और जानने वाला है।

يَٰبُنَىَّ أَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَ وَأْمُرْ بِٱلْمَعْرُوفِ وَٱنْهَ عَنِ ٱلْمُنكَرِ وَٱصْبِرْ عَلَىٰ مَآ أَصَابَكَ ۖ إِنَّ ذَٰلِكَ مِنْ عَزْمِ ٱلْأُمُورِ ⑰

१७. हे मेरे प्यारे बेटे! तू नमाज़ क़ायम रखना, अच्छे कामों के लिए हुक्म देना और बुरे कामों से रोकना, अगर तुम पर मुसीबत आये तो सब्र करना, (यक़ीन करो) कि यह बड़े ताकीदी कामों में से है।

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِى ٱلْأَرْضِ مَرَحًا ۖ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ⑱

१८. और लोगों के सामने अपने गाल न फुला,[1] और धरती पर अकड़ कर घमंड से न चल, किसी अहंकारी (तकब्बुर) घमंडी इंसान को अल्लाह (तआला) पसन्द नहीं करता।

---

[1] यानी घमंड न करो कि लोगों को तुच्छ (हक़ीर) समझो, और जब वे तुझ से बात करना चाहें तो तुम उन से मुँह फेर लो या बातचीत करते वक़्त उन से मुँह फेरे रखो। صعر एक रोग है, जो ऊँट के सिर या गर्दन में होता है, जिस से उसकी गर्दन मुड़ जाती है, यहाँ घमंड के रूप में मुँह फेर लेने के अर्थ (मायेना) में इस्तेमाल हुआ है।

१९. और अपनी चाल में दरमियानापन रख,[1] और अपनी आवाज़ धीमी रख,[2] बेशक बहुत बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है।

وَاقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ۭ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ⑲

२०. क्या तू नहीं देखता कि अल्लाह (तआला) ने धरती और आकाश की हर चीज़ को हमारी सेवा में लगा रखा है और तुम्हें अपनी खुले और छिपे एहसान पूरे तौर पर कर रखी हैं, और कुछ लोग अल्लाह के बारे में बिना इल्म, बिना हिदायत और बिना रौशन किताब के झगड़ा करते हैं।

اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ۭ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ⑳

२१. और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह (तआला) की नाज़िल की हुई वह्यी (प्रकाशना) की पैरवी करो, तो कहते हैं कि हम ने तो जिस रास्ते पर अपने बुज़ुर्गों को पाया है उसी की इत्तेबा करेंगे, चाहे शैतान उन के बुज़ुर्गों को नरक के अज़ाब की तरफ़ बुलाता हो।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَاۗءَنَا ۭ اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ㉑

२२. और जो इंसान अपने चेहरे को (ख़ुद को) अल्लाह के ताबे कर दे और वह है भी परहेज़गार, तो बेशक उस ने मज़बूत कड़ा थाम लिया, सभी अमल का नतीजा अल्लाह की तरफ़ है।

وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۭ وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ㉒

२३. और काफ़िरों के कुफ़्र से आप दुखी न हों, आख़िर में उन सभी का लौटना हमारी तरफ़ ही है, उस समय उन के किये को हम उन्हें बता देंगे, बेशक अल्लाह दिलों कि भेदों (राज़) तक जानता है।

وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ۭ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ㉓

---

[1] यानी चाल इतनी धीमी न हो कि जैसे कोई रोगी हो और न इतनी तेज़ चाल से हो कि मान-सम्मान के ख़िलाफ़ हो।

[2] यानी चीख़-चिल्लाकर बात न कर, इसलिए कि अगर ऊँची आवाज़ में बात करना प्यारा होता तो गधे की आवाज़ सब से अच्छी समझी जाती, लेकिन ऐसा नहीं है, बल्कि गधे की आवाज़ सब से बुरी और घृणित (नापसंदीदा) है। इसलिए हदीस में आता है कि गधे की आवाज़ सुनों तो शैतान से पनाह माँगो (बुख़ारी, किताब बदयिल ख़लकि और मुस्लिम वग़ैरह)

२४. हम उन्हें कुछ यूँ ही फ़ायेदा पहुँचा देते हैं, लेकिन आख़िर हम उन्हें बहुत मजबूरी की हालत में सख़्त अज़ाब की तरफ़ हाँक ले जायेंगे।

نُمَتِّعُهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيظٍ (24)

२५. और अगर आप उन से पूछें कि आकाश और धरती का पैदा करने वाला कौन है? तो ये ज़रूर जवाब देंगे अल्लाह, तो कह दीजिए कि सारी तारीफ़ों के लायक़ अल्लाह ही है, लेकिन उन में से ज़्यादातर लोग अंजान हैं।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ (25)

२६. आकाशों में और धरती में जो कुछ है वह सब अल्लाह ही का है, बेशक अल्लाह (तआला) बड़ा बेनियाज और महिमा (हम्द) और तारीफ़ के लायक़ है।

لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ (26)

२७. और सारी धरती के पेड़ों की अगर क़लमें हो जायें और सारे समुद्रों की स्याही हो, और उन के बाद सात समुद्र दूसरे हों फिर भी अल्लाह की तारीफ़ ख़त्म नहीं हो सकती।[1] बेशक अल्लाह (तआला) प्रभावशाली और हिक्मत वाला है।

وَلَوْ أَنَّمَا فِي الْأَرْضِ مِن شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِن بَعْدِهِ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمَاتُ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (27)

२८. तुम सब की पैदाईश और मरने के बाद ज़िन्दा करना ऐसा ही है, जैसे एक जान का, बेशक अल्लाह (तआला) सुनने देखने वाला है।

مَّا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ إِلَّا كَنَفْسٍ وَاحِدَةٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ (28)

---

[1] इस में अल्लाह तआला की तारीफ़, बड़ाई, जलाल, उस के सब से अच्छे नामों, सब से अच्छे गुणों (अवसाफ़) और उस के वे कलिमा जो उसकी तारीफ़ से आगाह कराते हैं उनका बयान हैं, वे इतने हैं कि किसी के लिए उनका घेरना या उनकी जानकारी या उन के असल और हक़ीक़त तक पहुँच पाना मुमकिन नही है। अगर कोई इसकी गिनती करना और लिखित तौर में लाना चाहे तो दुनिया के सभी पेड़ के कलम बना लिये जायें और सारे समुद्र के पानी की स्याही बनाकर लिखना चाहें और वे ख़त्म हो जायें, लेकिन अल्लाह के इल्म, उसकी तख़लीक़ और सिफ़त की ज़्यादती और उसकी अज़मत और जलाल के प्रतीकों (मज़ाहिर) की गिनती नहीं की जा सकती। सात समुद्र अतिश्योक्ति (गुलू) के रूप में है, दायरे में लेने का मक़सद नहीं है, इसीलिए कि अल्लाह की आयतों और कलिमा को सीमित (महदूद) कर लेना मुमकिन ही नहीं है। (इब्ने कसीर) इस मायना की आयत सूर: कहफ़ के आख़िर में गुज़र चुकी है।

२९. या आप नहीं देखते कि अल्लाह (तआला) रात को दिन में और दिन को रात में खपा देता है ।[1] सूरज और चाँद को उसी ने फ़रमाँबर्दार बना रखा है कि हर एक मुक़र्रर वक़्त (निर्धारित समय) तक चलता रहे, अल्लाह (तआला) हर उस अमल को जो तुम करते हो जानता है ।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۡ كُلٌّ يَّجْرِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿29﴾

३०. यह सब (इन्तिज़ाम) इस सबब है कि अल्लाह (तआला) सच है और उस के सिवाय जिन-जिन को लोग पुकारते हैं सब झूठ (बातिल) हैं, और बेशक अल्लाह (तआला) बहुत आला (ऊंचा) और बहुत बड़ा है ।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿30﴾

३१. क्या तुम इस पर ख़्याल नहीं करते कि पानी में नावें अल्लाह की नेमत से चल रही हैं, इसलिए कि वह तुम्हें अपने निशान दिखा दे, बेशक इस में हर सब्र करने वाले और शुक्रगुज़ार के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं ।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِى الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿31﴾

३२. और जब उन पर धारायें उन छत्रों (साइबानों) की तरह छा जाती हैं, तो वे (बहुत) यक़ीन कर के अल्लाह (तआला) ही को पुकारते हैं और जब अल्लाह (तआला) उन्हें छुटकारा दिलाकर थल (ख़ुश्की) की तरफ़ पहुँचाता है, तो कुछ उन में से संतुलित (ऐतदाल पर) रहते हैं, और हमारी आयतों का इंकार वही करते हैं, जो वादा तोड़ने वाले और नाशुक्रे हों ।

وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۭ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ﴿32﴾

[1] यानी रात का कुछ भाग लेकर दिन में शामिल करता है, जिस से दिन बड़ा और रात छोटी हो जाती है, जैसे गर्मी के मौसम में होता है, फिर दिन का कुछ भाग लेकर रात में शामिल कर देता है जिस से दिन छोटे और रात बड़ी हो जाती है, जैसे सर्दी के मौसम में होता है ।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱتَّقُواْ رَبَّكُمْ وَٱخْشَوْاْ يَوْمًا لَّا يَجْزِى وَالِدٌ عَن وَلَدِهِۦ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَازٍ عَن وَالِدِهِۦ شَيْـًٔا ۚ إِنَّ وَعْدَ ٱللَّهِ حَقٌّ ۖ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ ٱلْحَيَوٰةُ ٱلدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِٱللَّهِ ٱلْغَرُورُ ﴿33﴾

३३. लोगो! अपने रब का भय (डर) रखो और उस दिन का भय करो, जिस दिन पिता अपने पुत्र को कोई लाभ (फ़ायेदा) न पहुँचा सकेगा और न पुत्र अपने पिता को तनिक भी लाभ पहुँचाने वाला होगा, याद रखो! अल्लाह का वादा सच्चा है, देखो! तुम्हें सांसारिक जीवन धोखे में न डाले और न धोखेबाज़ (शैतान) तुम्हें धोखे में डाल दे।

إِنَّ ٱللَّهَ عِندَهُۥ عِلْمُ ٱلسَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ ٱلْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِى ٱلْأَرْحَامِ ۖ وَمَا تَدْرِى نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۖ وَمَا تَدْرِى نَفْسٌۢ بِأَىِّ أَرْضٍ تَمُوتُ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌۢ ﴿34﴾

३४. बेशक अल्लाह (तआला) ही के पास क़यामत का इल्म है, वही बारिश करता है और माँ के गर्भ में जो है उसे जानता है। कोई (भी) नहीं जानता कि कल क्या कुछ कमायेगा? न किसी को यह मालूम है कि किस धरती पर मरेगा।[1] याद रखो! अल्लाह (तआला) ही पूरे ज्ञान (इल्म) वाला और सच्चाई जानने वाला है।

---

[1] हदीस में आता है कि पाँच चीजें अप्रत्यक्ष (ग़ैब) की कुंजियाँ हैं, जिन्हें अल्लाह के सिवाय कोई नहीं जानता। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: लुक़मान और किताबुल इस्तिस्क़ा) (१) क़यामत के क़रीब होने की निशानी तो नबी ﷺ ने बयान किये हैं, लेकिन क़यामत के आने का निश्चित ज्ञान (यक़ीनी इल्म) अल्लाह के सिवाय किसी को नहीं, किसी फ़रिश्ते को नहीं और किसी भेजे गये रसूल को नहीं। (२) बारिश का मसअला ऐसा ही है, निशानी और इशारे से अंदाज़ा तो लगाया जा सकता है लेकिन यह बात हर इंसान के अनुभव (तर्जुबा) और दर्शन में है कि यह अंदाज़े कभी सही होते हैं कभी ग़लत। यहाँ तक मौसम विभाग का एलान भी ठीक नहीं होता, जिस से मालूम होता है कि बारिश का भी निश्चित ज्ञान (इल्म) अल्लाह के सिवाय किसी को नहीं। (३) माँ के गर्भ में मशीन के ज़रिये लिंग (जिन्स) का अधूरा अंदाज़ा तो शायद मुमकिन है कि लड़का है या लड़की? लेकिन माँ के गर्भ में पलने वाला यह बच्चा नसीब वाला है या बदनसीब और पूरा है या अधूरा, ख़ूबसूरत होगा या बदसूरत, काला होगा या गोरा वग़ैरह बातों का इल्म अल्लाह के सिवाय किसी को नहीं। (४) इंसान कल क्या करेगा? वे दीनी काम होगा या दुनियावी? किसी को आने वाले कल के बारे में इल्म नहीं है कि वह उस की ज़िन्दगी में आयेगा भी या नहीं? और अगर आया भी तो वह उस में क्या कुछ करेगा? (५) मौत कहाँ आयेगी? घर में या घर से बाहर, अपने देश में या परदेश में, जवानी में आयेगी या बुढ़ापे में, अपने दिल की तमन्ना (इच्छा) पूरी होने के बाद या पहले? किसी को इल्म नहीं।

सूरतुस्सज्दा-३२

سُوْرَةُ السَّجْدَةِ

सूरः सज्दा* मक्का में नाज़िल हुई और इस में तीस आयतें और तीन रूकुऊ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰

الٓمّٓ ﴿1﴾

२. बेशक इस किताब का नाज़िल करना सारी दुनिया के रब की तरफ़ से है।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿2﴾

३. क्या यह कहते हैं कि इस ने उसे गढ़ लिया है?[1] नहीं-नहीं, बल्कि यह तेरे रब की तरफ़ से सच है, ताकि आप उन्हें डरायें जिन के पास आप से पहले कोई डराने वाला नहीं[2] आया, मुमकिन (संभव) है कि वे सच्चे रास्ते पर आ जायें।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿3﴾

---

* **सूरः अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰ अस्सज्दा** : हदीस में आता है कि नबी ﷺ जुमे (शुक्रवार) के दिन फ़ज्र (भोर) की नमाज में अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰ अस्सज्दा (और दूसरी रकअत में) सूरः दहर पढ़ा करते थे। (सहीह बुख़ारी और मुस्लिम किताबुल जुमा) उसी तरह यह भी सहीह सनद से साबित है कि नबी ﷺ रात को सोने से पहले सूरः अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰ अस्सज्दा और सूरः मुल्क पढ़ा करते थे। (तिर्मिज़ी नं॰ ८९२ और मुसनद अहमद ३४०\३)

[1] यह फटकार के तौर पर है कि क्या सारी दुनिया के रब की उतारी हुई इस अहम किताब (ग्रन्थ) के बारे में कहते हैं कि इसे ख़ुद (मोहम्मद ﷺ) ने गढ़ लिया है।

[2] यह कुरआन के नाज़िल होने का सबब है, उस से भी मालूम हुआ (जैसाकि पहले भी बयान गुजर चुका है) कि अरबों में नबी ﷺ पहले नबी थे। कुछ लोगों ने हज़रत शुऐब को भी अरबों में भेजा हुआ माना है, इस बिना पर उम्मत से मुराद फिर ख़ास तौर से कुरैश होंगे जिनकी तरफ़ कोई नबी आप ﷺ से पहले नहीं आया।

४. अल्लाह (तआला) वह है जिस ने आकाशों और धरती को और जो कुछ उन के बीच है सब कुछ छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर बुलन्द हुआ, तुम्हारे लिए उस के सिवाय कोई मदद करने वाला सिफ़ारिशी नहीं,[1] क्या फिर भी तुम नसीहत हासिल नहीं करते?

५. वह आकाश से धरती तक कामों का इंतेज़ाम करता है, फिर (वह काम) एक ऐसे दिन में उसकी तरफ़ चढ़ जाता है जिसका अंदाज़ा तुम्हारे हिसाब के एक हज़ार साल के बराबर है।

६. यही है हाज़िर और ग़ैब का जानने वाला ज़बरदस्त ग़ालिब, बड़ा मेहरबान।

७. जिस ने बड़ी ख़ूबसूरत बनाई जो चीज़ भी बनायी और इंसान की पैदाईश मिट्टी से शुरू की।[2]

८. फिर उसका वंश एक तुच्छ (हक़ीर) पानी के निचोड़ से बनाया।[3]

९. जिसे ठीक-ठाक करके उस में अपना प्राण (रूह) फूंका, और उसी ने तुम्हारे कान, आँखें और दिल बनाये, (उस पर भी) तुम बहुत ही थोड़ा शुक्रिया करते हो।

اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَیْنَهُمَا فِیْ سِتَّةِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِیٍّ وَّلَا شَفِیْعٍ ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿4﴾

یُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَی الْاَرْضِ ثُمَّ یَعْرُجُ اِلَیْهِ فِیْ یَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗۤ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿5﴾

ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ﴿6﴾

الَّذِیْۤ اَحْسَنَ كُلَّ شَیْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِیْنٍ ﴿7﴾

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِیْنٍ ﴿8﴾

ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِیْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِیْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿9﴾

---

[1] यानी वहाँ कोई ऐसा दोस्त नहीं होगा जो तुम्हारी मदद कर सके और तुम उस के ज़रिये अल्लाह के अज़ाब को टाल सको, न वहाँ कोई सिफ़ारिश करने वाला ही ऐसा होगा जो तुम्हारी सिफ़ारिश कर सके।

[2] यानी पहले इंसान आदम को मिट्टी से बनाया, जिन से इंसानों का आग़ाज़ हुआ और उनकी बीवी हज़रत हौवा को आदम की बायीं पसली से पैदा किया, जैसाकि हदीस से मालूम होता है।

[3] यानी वीर्य (मनी) की बूँद से। मतलब यह है कि एक इंसान का जोड़ा बनाने के बाद, उस के ख़ानदान के लिए यह तरीक़ा मुक़र्रर किया कि औरत-मर्द आपस में विवाह (शादी) करें, उन के मिलन से जो पानी की बूँद, स्त्री के गर्भाशय (रिहम) में जायेगी, उस से हम एक इंसान का जिस्म बनाकर बाहर भेजते रहेंगे।

وَقَالُوٓا۟ ءَإِذَا ضَلَلْنَا فِى ٱلْأَرْضِ ءَإِنَّا لَفِى خَلْقٍ جَدِيدٍۭ ۚ بَلْ هُم بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ كَـٰفِرُونَ ﴿10﴾

१०. और उन्होंने कहा कि क्या हम जब धरती में खो जायेंगे क्या फिर नये जीवन में आ जायेंगे? वल्कि (बात यह है) कि उन लोगों को अपने रब के मिलन का यक़ीन ही नहीं।

قُلْ يَتَوَفَّىٰكُم مَّلَكُ ٱلْمَوْتِ ٱلَّذِى وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ﴿11﴾

११. कह दीजिए ! कि तुम्हें मौत का फ़रिश्ता (यमदूत) मारेगा जो तुम पर तैनात किया गया है, फिर तुम सब अपने रब की तरफ़ लौटाये जाओगे।

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذِ ٱلْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا۟ رُءُوسِهِمْ عِندَ رَبِّهِمْ رَبَّنَآ أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَٱرْجِعْنَا نَعْمَلْ صَـٰلِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ﴿12﴾

१२. और काश कि आप देखते जब कि पापी लोग अपने रब के सामने सिर झुकाये हुए होंगे, कहेंगे कि हे हमारे रब! हम ने देख लिया और सुन लिया, अब तू हमें वापस लौटा दे तो नेकी के काम करेंगे, हम ईमान वाले हैं।

وَلَوْ شِئْنَا لَـَٔاتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدَىٰهَا وَلَـٰكِنْ حَقَّ ٱلْقَوْلُ مِنِّى لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ ٱلْجِنَّةِ وَٱلنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿13﴾

१३. और अगर हम चाहते तो हर इंसान को हिदायत दे देते, लेकिन मेरी यह बात पूरी तरह सच हो चुकी है कि मैं जरूर जहन्नम को इंसानों और जिन्नों से भर दूंगा।

فَذُوقُوا۟ بِمَا نَسِيتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هَـٰذَآ إِنَّا نَسِينَـٰكُمْ ۖ وَذُوقُوا۟ عَذَابَ ٱلْخُلْدِ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿14﴾

१४. अब तुम अपने उस दिन के मिलन को भूल जाने का मजा चखो, हम ने भी तुम्हें भुला दिया, अपने किये हुए अमल के (बुरे नतीजे) से स्थाई यातना (मुस्तकिल अजाब) का मजा लो।

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِـَٔايَـٰتِنَا ٱلَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا۟ بِهَا خَرُّوا۟ سُجَّدًا وَسَبَّحُوا۟ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۩ ﴿15﴾

१५. हमारी आयतों पर वही ईमान लाते है, जिन्हें जब कभी शिक्षा (नसीहत) दी जाती है तो सज्दे में गिर पड़ते हैं, और अपने रब की तारीफ़ के साथ उसकी महिमागान (तस्बीह) करते हैं और तकब्बुर से अलग रहते हैं।

تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ ٱلْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَـٰهُمْ يُنفِقُونَ ﴿16﴾

१६. उनकी करवटें अपने बिस्तरों से अलग रहती हैं, अपने रब को डर और उम्मीद के साथ पुकारते हैं,[1] और जो कुछ हम ने उन्हें दे

---

[1] यानी उसकी रहमत और नेमत के साथ उसके एहसान और इंआम की उम्मीद भी रखते हैं और

रखा है, वह ख़र्च करते हैं।[1]

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَآءً بِمَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿17﴾

१७. कोई प्राणी (नफ़्स) नहीं जानता जो कुछ हम ने उनकी आँखों की ठंडक उन के लिए छिपा रखी है,[2] जो कुछ करते थे यह उसका बदला है।

أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا كَمَن كَانَ فَاسِقًا ۚ لَّا يَسْتَوُۥنَ ﴿18﴾

१८. क्या वह जो ईमानवाला हो उसके बराबर है जो भ्रष्टाचारी (फ़ासिक़) हो?[3] ये बराबर नहीं हो सकते।

أَمَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ فَلَهُمْ جَنَّٰتُ ٱلْمَأْوَىٰ نُزُلًۢا بِمَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿19﴾

१९. जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और नेकी के काम किये, उन के लिए दायमी जन्नत है, मेहमानी है, उन के अमल के बदले जो वह करते थे।

وَأَمَّا ٱلَّذِينَ فَسَقُوا۟ فَمَأْوَىٰهُمُ ٱلنَّارُ ۖ كُلَّمَآ أَرَادُوٓا۟ أَن يَخْرُجُوا۟ مِنْهَآ أُعِيدُوا۟ فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا۟ عَذَابَ ٱلنَّارِ ٱلَّذِى كُنتُم بِهِۦ تُكَذِّبُونَ ﴿20﴾

२०. और लेकिन जिन्होंने हुक्म की नाफ़रमानी की उनका ठिकाना नरक है, जब कभी भी उस से निकलना चाहेंगे उसी में लौटा दिये जायेंगे, और कह दिया जायेगा कि अपने झुठलाने के बदले आग का मज़ा चखो।

उस के ग़ज़ब और अज़ाब और पकड़ और सज़ा से डरते भी हैं, सिर्फ़ उम्मीद ही उम्मीद नहीं रखते हैं, कि अमल से बेफ़िक्र हो जायें (जैसाकि बे अमल और बेअमलों का काम है) और न अज़ाब का इतना डर ही रखते हैं कि उसकी रहमत और नेमत से मायूस हो जायें क्योंकि यह मायूसी भी कुफ़्र और गुमराही की सूचक (निशानी) है।

[1] ख़र्च में ज़कात (आवश्यक दान) आम सदक़ा (सत्कार) नेकी दोनों शामिल हैं, ईमानवाले दोनों का अपनी ताक़त भर प्रयोजन (इस्तेमाल) करते हैं।

[2] यानी उस को अल्लाह के सिवाय कोई नहीं जानता, उन उपहारों (इंआमों) को जो उक्त ईमान वाले के लिए छिपा रखी हैं, जिन से उनकी आँखें ठंडी हो जायेंगी। इसकी तफ़सीर में नबी ﷺ ने यह हदीस क़ुदसी बयान की है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैंने अपने नेक बंदों के लिए वे चीज़ें तैयार कर रखी हैं जो किसी आँख ने देखी और न किसी कान ने सुनी, न किसी इंसान के ध्यान में आयी। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: सज्दा)

[3] यह प्रश्न नकारात्मक (मन्फ़ी) है, यानी अल्लाह के सामने ईमान वाले और काफ़िर बराबर नहीं हो सकते हैं, बल्कि उन के बीच बहुत फ़ासला और दूरी होगी, ईमान वाले अल्लाह के मेहमान होंगे और मान-सम्मान (इज़्ज़त-एहतेराम) के हक़दार होंगे।

وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿21﴾

२१. और बेशक हम उन्हें क़रीब के छोटे से कुछ अज़ाबों को[1] उस बड़े अज़ाब के अलावा चखायेंगे ताकि वह लौट आयें।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ﴿22﴾

२२. और उस से बढ़कर ज़ालिम कौन है जिसे अल्लाह की आयतों से भाषण (वाज़) दिया गया, फिर भी उस ने उन से मुख फेर लिया, निश्चय हम भी पापियों से बदला लेने वाले हैं।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُن فِي مِرْيَةٍ مِّن لِّقَائِهِ ۖ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿23﴾

२३. और हक़ीक़त में हम ने मूसा को किताब (ग्रन्थ) अता की, तो आप को कभी उस के मिलन में शक नहीं करनी चाहिए, और हम ने उसे इस्राईल की औलाद की हिदायत का ज़रिया बनाया।

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا ۖ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ﴿24﴾

२४. और हम ने उन में से, चूंकि उन लोगों ने सब्र किया, ऐसे अगुवा बनाये जो हमारे हुक्म से लोगों की हिदायत करते थे और हमारी आयतों पर यक़ीन रखते थे।[2]

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿25﴾

२५. बेशक आप का रब उन सब के बीच इन सारी बातों का फैसला क़यामत के दिन करेगा, जिन में वे इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं।

---

[1] क़रीबी अज़ाब (निकट की कुछ यातनाओं) से दुनियावी अज़ाब या दुनियावी दुख और रोग वग़ैरह मुराद हैं, कुछ के क़रीब वे क़त्ल इस से मुराद हैं, जिस से बद्र के युद्ध में काफ़िर पीड़ित हुए, या वह सूखा है जो मक्कावासियों पर पड़ा था। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं ये सारी हालतें और परिस्थितियाँ (क़वाएफ़) इस में शामिल हो सकती हैं।

[2] इस आयत से सब्र की अहमियत ज़ाहिर होती है, सब्र और तक़वा का मतलब है कि अल्लाह के हुक्म का पालन करने और पाप को छोड़ने में और अल्लाह के रसूलों की तसदीक़ और उन की पैरवी में जो कष्ट सहन करने पड़ें, उन्हें ख़ुशी से सहन करना। अल्लाह ने फ़रमाया: उन के सब्र करने और अल्लाह की आयतों पर यक़ीन करने के सबब हम ने उन्हें इमामत और प्रतिनिधित्व (पेशवाई) की जगह पर नियुक्त (मुतअय्यन) कर दिया, लेकिन जब उन्होंने उस के ख़िलाफ़ परिवर्तन (तहरीफ़) और संशोधन (तावील) का काम शुरू कर दिया तो उन से यह पद छीन लिये गये। इसलिए उस के बाद उन के दिल कड़े हो गये, फिर न उनका अमल सदाचारी (तक़वा वाला) रहा न उनका ईमान ठीक।

२६. क्या इस बात ने भी उन्हें मार्गदर्शन प्रदान (हिदायत) न किया कि हम ने उन से पहले के बहुत सी जमाअतों को हलाक कर दिया, जिन के आवासों में ये चल फिर रहे हैं। उस में तो बड़ी-बड़ी नसीहतें हैं, क्या फिर भी यह नहीं सुनते।

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسَاكِنِهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ ۖ أَفَلَا يَسْمَعُونَ (26)

२७. क्या यह नहीं देखते कि हम पानी को उसर (निर्जन) धरती की तरफ़ बहाकर ले जाते हैं, फिर उस से हम खेतियाँ उपजाते हैं जिसे उन के जानवर और वे ख़ुद खाते हैं,[1] क्या फिर भी यह नहीं देखते?

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنفُسُهُمْ ۖ أَفَلَا يُبْصِرُونَ (27)

२८. और कहते हैं कि यह फ़ैसला कब होगा? अगर तुम सच्चे हो तो बतलाओ?[2]

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْفَتْحُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ (28)

२९. जवाब दे दो कि फ़ैसले के दिन ईमान लाना बेईमानों को कुछ काम न आयेगा और न उन्हें ढील दी जायेगी।[3]

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِيمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ (29)

३०. अब आप इनका ख़्याल भी छोड़ दीजिए और इंतेज़ार में रहें यह भी इंतेज़ार कर रहे हैं।

فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانتَظِرْ إِنَّهُم مُّنتَظِرُونَ (30)

---

[1] पानी से मुराद आकाशीय वारिश और श्रोतों (चश्मों), नालों और घाटियों का पानी है, जिसे अल्लाह तआला बंजर और बेजान जगह की तरफ़ बहाकर ले जाता है और उस से पैदावार होती है जो इंसान खाता है, और जो भूसा और चारा होता है वह जानवर खा लेते हैं। इस से मुराद कोई ख़ास इलाक़ा और ज़मीन नहीं है, बल्कि आम है जो हर बेजान, बंजर समतल ज़मीन को शामिल करता है।

[2] इस फ़ैसले (विजय) से मुराद अल्लाह तआला का वह अज़ाब है जो मक्का के काफ़िर नबी ﷺ से माँगा करते थे और कहा करते थे कि ऐ मोहम्मद (ﷺ) तेरे अल्लाह की मदद तेरे लिए कब आयेगी, जिस से तू हमें डराता रहता है? अभी तो हम यही देख रहे हैं कि तुझ पर ईमान लाने वाले छुपे फिरते हैं।

[3] इस फ़ैसले के दिन से मुराद आख़िरत के फ़ैसले का दिन है, जहाँ ईमान क़ुबूल किया जायेगा और न मौक़ा दिया जायेगा, मक्का फ़त्ह का दिन नहीं है, क्योंकि उस दिन طلقاء का इस्लाम क़ुबूल कर लिया गया था जिनकी तादाद लगभग दो हज़ार थी। (इब्ने कसीर)

सूरतुल अहज़ाब-३३

سُوْرَةُ الْأَحْزَابِ

सूरः अहज़ाब मदीने में नाज़िल हुई और इस में तिहत्तर आयतें और नौ रूकुऊ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ﴿1﴾

१. हे नबी! अल्लाह तआला से डरते रहना और काफ़िर और मुनाफ़िक़ों की बातों में न आ जाना, अल्लाह तआला बहुत इल्म वाला बहुत हिक्मत वाला है।

وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۙ﴿2﴾

२. और जो कुछ आप की तरफ़ आप के रब की तरफ़ से वह्यी (प्रकाशना) की जाती है[1] उसकी इत्तेबा करें (यक़ीन करो) कि अल्लाह तुम्हारे हर अमल से वाक़िफ़ है।

وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿3﴾

३. और आप अल्लाह ही पर भरोसा रखें अल्लाह काम बनाने के लिए काफ़ी है।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓـِٔيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ اَبْنَآءَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيْلَ ﴿4﴾

४. किसी इंसान के सीने में अल्लाह ने दो दिल नहीं रखे, और अपनी जिन बीवियों को तुम माता कह बैठते हो उन्हें अल्लाह ने तुम्हारी (सचमुच) मातायें नहीं बनाया और न तुम्हारे गोद लिये हुए बालकों को (हक़ीक़त में) तुम्हारे पुत्र बनाये हैं। यह तो तुम्हारे अपने मुँह की बातें हैं,[2] अल्लाह (तआला) सच बात कहता है[3]

[1] यानी क़ुरआन की और हदीसों की भी, इसलिए कि हदीसों के शब्द यद्यपि (अगरचे) नबी ﷺ के पाक मुँह से निकले हुए हैं, लेकिन उसका मतलब और तफ़सीर अल्लाह की तरफ़ से ही हैं, इसीलिए उनको गुप्त प्रकाशना (वह्यी ग़ैर मतलू) या पाठ न की जाने वाली (अपाठ्य) वह्यी कहा जाता है।

[2] यानी किसी को माँ कह देने से वह माँ नहीं बन जायेगी, न पुत्र कहने से पुत्र बन जायेगा, यानी उन पर माँ और बेटे का धार्मिक विधान (शरई क़ानून) लागू नहीं होंगे।

[3] इसलिए उसकी पैरवी करो और मुँह बोली औरत को माँ और गोद लिए बच्चे को पुत्र न कहो, ध्यान रहे कि किसी को प्यार-मोहब्बत में पुत्र कहना अलग बात है और गोद लिये बच्चे को हक़ीक़ी बेटा मान कर बेटा कहना दूसरी बात है, पहली बात मान्य है, यहाँ मक़सद दूसरी बात का हराम करना है।

और वही (सीधी) राह सुझाता है।

ادْعُوهُمْ لِآبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ ۚ فَإِنْ لَمْ تَعْلَمُوا آبَاءَهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ ۚ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُمْ بِهِ وَلَٰكِنْ مَا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ⑤

५. गोद लिए बच्चों को उन के (हक़ीक़ी) पिताओं की तरफ़ मंसूब करके बुलाओ, अल्लाह के क़रीब पूरा इंसाफ़ यही है,[1] फिर अगर तुम्हें उन के (हक़ीक़ी) पिता का इल्म ही न हो तो वे तुम्हारे दीनी भाई और दोस्त हैं। तुम से भूल चूक से जो कुछ हो जाये उस में तुम पर कोई गुनाह नहीं, लेकिन गुनाह वह है जिसका तुम इरादा करो और इरादा दिल से करो। अल्लाह (तआला) बड़ा माफ़ करने वाला रहम करने वाला है।

النَّبِيُّ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ ۖ وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ ۗ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَنْ تَفْعَلُوا إِلَىٰ أَوْلِيَائِكُمْ مَعْرُوفًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ⑥

६. पैग़म्बर ईमानवालों पर ख़ुद उन से भी ज़्यादा हक़ रखने वाले हैं,[2] और पैग़म्बर की बीवियाँ ईमानवालों की मातायें हैं[3] और रिश्तेदार अल्लाह की किताब के आधार पर दूसरे ईमानवालों और मुहाजिरों के मुक़ाबले ज़्यादा हक़दार हैं। (हाँ) तुम्हें अपने दोस्तों के साथ अच्छा सुलूक करने की इजाज़त है। यह हुक्म 'सुरक्षित पुस्तक' (लौहे महफ़ूज़) में लिखा हुआ है।

---

[1] इस हुक्म से उस रीति को हराम कर दिया गया जो जाहिलियत से चली आ रही थी और इस्लाम के शुरूआती दौर में मौजूद थी कि गोद लिये हुए बच्चे को हक़ीक़ी बेटा समझा जाता था। सहाबा केराम का क़ौल है कि हम ज़ैद बिन हारिसा को जिन्हें रसूल अल्लाह ﷺ ने आज़ाद करके पुत्र बना लिया था। ज़ैद बिन मोहम्मद कहकर पुकारा करते थे, यहाँ तक कि क़ुरआन की आयत ادعوهم لآبائهم नाज़िल हो गयी।

[2] नबी ﷺ अपनी उम्मत के जितने ख़ैरख़्वाह और भलाई चाहने वाले थे, स्पष्टीकरण (वज़ाहत) की ज़रूरत नहीं। अल्लाह तआला ने आप ﷺ की इस मुहब्बत और ख़ैरख़्वाही को देखकर इस आयत में आप (ﷺ) को ईमानवालों को अपनी जानों से भी ज़्यादा मुहब्बत करने लायक़ और आप ﷺ की मुहब्बत दूसरी सभी मुहब्बत से बड़ी और आप का हुक्म अपनी सभी इच्छाओं से बेहतर बताया है, इसलिए मुसलमानों के लिए ज़रूरी है कि आप ﷺ जिस माल की माँग अल्लाह के लिए करें, वह आप ﷺ पर निछावर कर दें, चाहे उन्हें ख़ुद कितनी ही ज़रूरत हो, आप ﷺ को अपनी जान से भी ज़्यादा प्यार करें। (जैसे हज़रत उमर का वाक़ेआ है)

[3] यानी इज़्ज़तो एहतेराम के करने में और उन से विवाह (शादी) न करने में मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतों की मातायें भी हैं।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّنَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنكَ وَمِن نُّوحٍ وَإِبْرَٰهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ٱبْنِ مَرْيَمَ ۖ وَأَخَذْنَا مِنْهُم مِّيثَٰقًا غَلِيظًا ﴿7﴾

७. और जबकि हम ने सभी नबियों से अहद लिया (ख़ास तौर से) आप से और नूह से और इब्राहीम से और मूसा से और मरियम के बेटे ईसा से और हम ने उन से वादा भी पक्का और मजबूत लिया ।[1]

لِّيَسْـَٔلَ ٱلصَّٰدِقِينَ عَن صِدْقِهِمْ ۚ وَأَعَدَّ لِلْكَٰفِرِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿8﴾

८. ताकि अल्लाह तआला सच्चों से उनकी सच्चाई के बारे में पूछे, और न मानने वालों के लिए हम ने दुखद सज़ायें तैयार कर रखी हैं ।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱذْكُرُوا۟ نِعْمَةَ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ﴿9﴾

९. हे ईमानवालो! अल्लाह तआला ने जो उपकार तुम पर किया, उसे याद करो जबकि तुम्हारा सामना करने के लिए सेनाओं पर सेनायें आयीं फिर हम ने उन पर तेज़ गति वाली आँधी और ऐसी सेना भेजी जिन्हें तुम ने देखा ही नहीं,[2] और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह (तआला) सबको देखता है ।

إِذْ جَآءُوكُم مِّن فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ ٱلْأَبْصَٰرُ وَبَلَغَتِ ٱلْقُلُوبُ ٱلْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ بِٱللَّهِ ٱلظُّنُونَا۠ ﴿10﴾

१०. जबकि (दुश्मन) तुम्हारे ऊपर से और नीचे से आ गये[3] और जबकि आँखें पथरा गयीं और कलेजा मुँह को आने लगा, और तुम अल्लाह के बारे में मुख़्तलिफ़ विचार करने लगे ।[4]

---

[1] इस वादे से क्या मुराद है? कुछ के क़रीब यह वह वादे है जो एक-दूसरे की मदद और तसदीक़ का रसूलों से लिया गया था, जैसाकि सूर: आले इमरान की आयत नं॰ ८१ में है । कुछ के नज़दीक यह वह वादा है जिसका बयान सूर: शूरा की आयत नं॰ १३ में है कि दीन को क़ायम करना और उस में भेद (इख़्तिलाफ़) न डालना, यह वादा अगरचे सभी नबियों से लिया गया था, लेकिन यहाँ पर ख़ास तौर से पाँच रसूलों का नाम है, जिन से उन की अहमियत और फ़ज़ीलत का अंदाज़ा होता है और उन में भी नबी ﷺ का बयान सब से पहले है, जबकि रसूलों के बिना पर आप ﷺ आख़िरी हैं, इस से आप ﷺ की इज़्ज़त और एहतेराम की जिस तरह वज़ाहत हो रही है, उसकी व्याख्या (तफ़सील) करने की ज़रूरत नहीं है ।

[2] इस आयत में अहज़ाब की लड़ाई की मुख़्तसर जानकारी है जो ५ हिजरी में वाक़ेअ हुई, इसे अहज़ाब इसलिए कहते हैं कि इस मौक़ा पर सभी इस्लाम के दुश्मन इकट्ठा होकर मुसलमानों के केन्द्र मदीने पर हमला करने के लिए आये । अहज़ाब अरबी ज़ुबान में हिज़ब (गिरोह) का बहुवचन है, इसे ख़न्दक की जंग भी कहते हैं, इसलिए कि मुसलमानों ने मदीने के बचाओ के लिए मदीने की तरफ़ ख़न्दक़ (खाई) खोद दी थी, ताकि दुश्मन मदीने के अन्दर न आ सकें ।

[3] इस से मुराद यह है कि हर तरफ़ से दुश्मन आ गये या ऊपर से मुराद ग़त्फ़ान हवाज़िन और दूसरे नज्द के मूर्तिपूजक हैं और नीचे के तरफ़ से क़ुरैश और उन के साथी और सहयोगी ।

[4] यह मुसलमानों की उस हालत का बयान है जिस से वे उस वक़्त परेशान थे ।

هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا زِلْزَالًا شَدِيدًا ⑪

११. यहीं ईमानवालों का इम्तेहान लिया गया और पूरी तरह से वे झिंझोड़ दिये गये।

وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ⑫

१२. और उस वक़्त द्वयवादी (मुनाफ़िक़) और रोगी दिल वाले कहने लगे कि अल्लाह (तआला) और उस के रसूल ने हम से सिर्फ़ छल और कपट के ही वादे किये थे।

وَإِذْ قَالَت طَّائِفَةٌ مِّنْهُمْ يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا ۚ وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۖ إِن يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ⑬

१३. और उन ही के एक गुट ने आवाज़ लगायी कि हे यथरिब वालो ![1] तुम्हारे ठहरने का (यह) मुक़ाम नहीं चलो लौट चलो, और उनका एक दूसरा गुट यह इजाज़त नबी से माँगने लगा कि हमारे घर ख़ाली और असुरक्षित (ग़ैर महफ़ूज़) हैं। हक़ीक़त में वे (खुले हुए) असुरक्षित न थे, (लेकिन) उनका मज़बूत इरादा भाग खड़े होने का हो चुका था।

وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِم مِّنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَآتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوا بِهَا إِلَّا يَسِيرًا ⑭

१४. और अगर मदीने के चारों तरफ़ से उन पर (सेनायें) दाख़िल करायी जातीं, फिर उन से फ़साद की माँग की जाती तो ये ज़रूर फ़साद मचा देते और कुछ लड़ते भी तो थोड़ी सी।

وَلَقَدْ كَانُوا عَاهَدُوا اللَّهَ مِن قَبْلُ لَا يُوَلُّونَ الْأَدْبَارَ ۚ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ مَسْئُولًا ⑮

१५. और इस से पहले तो उन्होंने अल्लाह से वादा किया था कि पीठ न फेरेंगे और अल्लाह (तआला) से किये गये वादे की पूछताछ ज़रूर है।

قُل لَّن يَنفَعَكُمُ الْفِرَارُ إِن فَرَرْتُم مِّنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذًا لَّا تُمَتَّعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ⑯

१६. कह दीजिए कि अगर तुम मौत या क़त्ल के डर से भागो तो यह भागना तुम्हें कुछ काम न आयेगा, और उस वक़्त तुम बहुत कम लाभान्वित (फ़ायदेमंद) किये जाओगे।

---

[1] यथरिब उस पूरे इलाक़े का नाम था, मदीना उसी का एक हिस्सा था, जिसे यहाँ यथरिब का नाम दिया गया है। कहा जाता है कि इसका नाम यथरिब इसलिए पड़ा कि किसी वक़्त अमालिका में से किसी ने यहाँ पड़ाव डाला था जिसका नाम यथरिब बिन अमील था। (फ़तहुल क़दीर)

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ سُوٓءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۚ وَلَا يَجِدُونَ لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿17﴾

१७. पूछिये तो कि अगर अल्लाह (तआला) तुम्हें कोई बुराई पहुँचाना चाहे या तुम पर कोई रहमत (कृपा) करना चाहे तो कौन है जो तुम्हें बचा सके (या तुम से रोक सके)? अपने लिए अल्लाह (तआला) के सिवाय न कोई वली पायेगा न मदद करने वाला।

قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمُعَوِّقِينَ مِنكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا ۖ وَلَا يَأْتُونَ الْبَأْسَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿18﴾

१८. अल्लाह (तआला) तुम में से (अच्छी तरह) जानता है जो दूसरों को रोकते हैं और अपने भाई-बन्धुओं से कहते हैं कि हमारे पास चले आओ और कभी-कभी ही लड़ाई में आ जाते हैं।

أَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۖ فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُم بِأَلْسِنَةٍ حِدَادٍ أَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ۚ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿19﴾

१९. तुम्हारी मदद में (पूरे) कंजूस हैं, फिर जब डर, भय का मौक़ा आ जाये तो आप उन्हें देखेंगे कि वह आप की तरफ़ नज़र जमा देते हैं और उन की आँखें इस तरह घूमती हैं, जैसे उस इंसान की जिस पर मौत की बेहोशी हो। फिर जब डर जाता रहता है तो तुम पर अपनी तेज़ ज़बान से बड़ी बातें बनाते हैं। माल के बड़े लालची हैं, यह लोग ईमान लाये ही नहीं हैं।[1] अल्लाह (तआला) ने उन के सारे अमल बेकार कर दिये हैं,[2] और अल्लाह (तआला) पर यह बड़ा आसान है।

يَحْسَبُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا ۖ وَإِن يَأْتِ الْأَحْزَابُ يَوَدُّوا لَوْ أَنَّهُم بَادُونَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنبَائِكُمْ ۖ وَلَوْ كَانُوا فِيكُم مَّا قَاتَلُوا إِلَّا قَلِيلًا ﴿20﴾

२०. समझते हैं कि अब तक सेनायें चली नहीं गयीं और अगर सेनायें आ जायें तो ये तमन्ना करते हैं कि काश कि वह वनवासियों में बंजारों के साथ होते कि तुम्हारी ख़बर लेते रहते,[3] अगर वे तुम में मौजूद होते (तब भी क्या)? यूँ ही बात

---

[1] यानी दिल से बल्कि ये फ़सादी हैं, क्योंकि उनके दिल कुफ़्र और बैर से भरे हुए हैं।

[2] इसलिए कि वे मूर्तिपूजक और नास्तिक (बेदीन) ही हैं, और नास्तिक और मूर्तिपूजक के अमल बेकार हैं, जिन पर कोई बदला या नेकी नहीं।

[3] यानी अगर मान भी लिया कि अगर वे काफ़िरों के गिरोह दोबारा लड़ाई के इरादे से वापस आ जायें तो फ़सादियों की इच्छा यही होगी कि वे मदीना नगर में आने के बजाय, बाहर रेगिस्तान में बद्दुओं के साथ हों और वहाँ लोगों से तुम्हारे बारे में पूछते रहें कि मोहम्मद (ﷺ) और उसके साथी नाश हुए या नहीं? या काफ़िरों की सेना कामयाब रही या नाकाम।

रखने के लिए तनिक लड़ लेते ।[1]

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا (21)

२१. यक़ीनन तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह में अच्छा नमूना हैं ।[2] हर उस इंसान के लिए जो अल्लाह (तआला) की और क़यामत के दिन की उम्मीद रखता है और बहुत ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र करता है ।[3]

وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ قَالُوا هَٰذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا (22)

२२. और जब ईमानवालों ने (काफ़िरों की) सेनाओं को देखा तो (अचानक) कह उठे कि इन्हीं का वादा हमें अल्लाह ने और उस के रसूल ने दिया था और अल्लाह (तआला) और उस के रसूल सच्चे हैं, और उस (चीज़) ने उन के ईमान में और इताअत में और भी बढ़ोत्तरी कर दी ।

---

[1] सिर्फ़ अपमान के डर से या स्वदेशी (हमवतनी) के हक़ की वजह से, इस में उन लोगों के लिए घोर (सख़्त) चेतावनी है जो जिहाद से पीठ मोड़ते हैं या उस से पीछे हटते रहते हैं ।

[2] यानी हे मुसलमानों और मुनाफ़िक़ो! तुम सब के लिए रसूल अल्लाह ﷺ में नामूना है तो तुम जिहाद में और सब्र और तक़वा में उसकी पैरवी करो । हमारा रसूल जिहाद के वक़्त भूखा रहा यहाँ तक कि पेट पर पत्थर बाँधने पड़े, उसका मुँह ज़ख़्मी हो गया उसका दाँत टूट गया, ख़ंदक अपने हाथों से खोदी और लगभग एक महीने दुश्मन के सामने डटा रहा । यह आयत अगरचे अहज़ाब की लड़ाई के बारे में नाज़िल हुई है, जिस में लड़ाई के मौक़े पर ख़ास तौर से रसूलुल्लाह ﷺ की सीरत को सामने रखने और पैरवी करने का हुक्म दिया गया है । लेकिन यह हुक्म आम है यानी आप ﷺ की सारी कथनी, करनी हर हालत में मुसलमानों के लिए पैरवी फ़र्ज़ है चाहे उसका सम्बन्ध इबादत से हो या सामाजिक, अर्थव्यवस्था (मआशियत) से या राजनीति (सियासी) से, ज़िन्दगी के हर मोड़ में आप ﷺ की हिदायत की पैरवी फ़र्ज़ है ।

[3] इस से यह वाज़ेह हो गया कि रसूल के इख़लाक़ की पैरवी वही करेगा जो आख़िरत में अल्लाह के मिलन पर ईमान रखता और बहुत ज़्यादा अल्लाह का बयान और ज़िक्र करता है । आज मुसलमान भी आम तौर से इन दोनों गुणों (अवसाफ़) से वंचित (महरूम) हैं, इसलिए रसूलुल्लाह ﷺ के अख़लाक़ की भी कोई अहमियत उनके दिलों में नहीं है, उन में जो धार्मिक (दीनी) लोग हैं उन के नेता, मुखिया, गुरू और आलिम हैं और जो दुनियावी लोग और राजनैतिक (सियासी) लोग हैं उन के गुरू और नेता पश्चिमी देश के स्वामी हैं । रसूल अल्लाह ﷺ से मुहब्बत के मौखिक (ज़ुबानी) दावे बड़े हैं, लेकिन आप ﷺ को मुखिया और गुरू मानने के लिए उन में से कोई तैयार नहीं है ।

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ﴿23﴾

२३. ईमानवालों में (ऐसे) लोग भी हैं जिन्होंने जो अहद अल्लाह (तआला) से की थी, उन्हें सच्चा कर दिखाया,[1] कुछ ने तो अपना वादा पूरा कर दिया[2] और कुछ (मौक़ा की) इंतेज़ार में हैं और उन्होंने कोई बदलाव नहीं किया।

لِيَجْزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿24﴾

२४. ताकि अल्लाह (तआला) सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे दे और अगर चाहे तो मुनाफ़िक़ों को सज़ा दे या उन की भी तौबा क़ुबूल करे, अल्लाह (तआला) बड़ा क्षमाशील (बख़्शने वाला) और बड़ा रहम करने वाला है।

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ۗ وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿25﴾

२५. और अल्लाह (तआला) ने काफ़िरों को ग़ुस्से में भरे हुए ही (नाकाम) लौटा दिया कि उनकी कोई कामना (तमन्ना) पूरी न हुई।[3] और उस लड़ाई में अल्लाह (तआला) ख़ुद ही ईमानवालों को काफ़ी हो गया। अल्लाह (तआला) बड़ा ताक़तवर और ग़ालिब है।

وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ﴿26﴾

२६. और जिन अहले किताब ने उन के साथ साठ-गांठ कर ली थी उन्हें (भी) अल्लाह तआला ने क़िलों से निकाल दिया और उन के दिलों में (भी) डर डाल दिया कि तुम उन के एक गुट को क़त्ल कर रहे हो और एक गुट को बंदी बना रहे हो।

---

[1] यह आयत उन कुछ सहाबा के बारे में नाज़िल हुई है, जिन्होंने इस मौक़े पर अपनी जानों की क़ुर्बानी देने के अजीब और आश्चर्यजनक (ताज्जुब ख़ेज़) करतब दिखाये थे और उन्हीं में वे सहाबा भी शामिल थे जो बद्र की लड़ाई में शामिल न हो सके थे, लेकिन उन्होंने यह प्रतिज्ञा (अहद) कर रखी थी कि अगर अब दोबारा कोई मौक़ा आया तो जिहाद में भरपूर हिस्सा लेंगे, जैसे नज़र बिन अनस वग़ैरह जो आख़िर में लड़ते हुए ओहद की लड़ाई में शहीद हुए, उन के शरीर पर तलवार, भाले और तीरों के ८० से ऊपर घाव थे, शहादत के बाद उनकी बहन ने उन्हें उनकी ऊँगली के पोर से पहचाना (मुसनद अहमद, हिस्सा ४, पेज नं॰ १९३)

[2] نحب का मतलब वादा, मनौती (मन्नत) और मौत किये गये हैं। मतलब यह है कि उन नेक लोगों में से कुछ अपना वादा या मन्नत पूरी करते हुए शहीद हो गये।

[3] यानी मूर्तिपूजक जो कई इलाक़े से जमा होकर आये थे ताकि मुसलमानों का वजूद ही ख़त्म कर दें। अल्लाह ने उन्हें अपने ग़ज़ब और बुरे इरादे के साथ वापस लौटा दिया न तो दुनियावी धन दौलत उन के हाथ लगी और न आख़िरत में बदला या नेकी हासिल करने के हक़दार होंगे, किसी भी तरह की नेकी उन्हें हासिल न होगी।

وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَـُٔوْهَا ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿27﴾

२७. और उस[1] ने तुम्हें उनकी भूमि का और उन के घरों का और धन-सम्पत्ति का मालिक बना दिया[1] और उस भूमि का भी जिस पर तुम्हारे पग ही नहीं गये,[2] अल्लाह तआला सब कुछ कर सकने की क़ुदरत रखता है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿28﴾

२८. हे नबी! अपनी बीवियों से कह दो कि अगर तुम्हारी इच्छा दुनियावी ज़िन्दगी और दुनियावी ज़ीनत की है, तो आओ मैं तुम्हें कुछ दे दिला दूँ और तुम्हें अच्छाई के साथ छोड़ दूँ।

وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿29﴾

२९. और अगर तुम्हारी इच्छा अल्लाह और उसका रसूल और आख़िरत का घर है तो (यक़ीन करो कि) तुम में से नेकी का काम करने वालियों के लिए अल्लाह (तआला) ने बड़ा अच्छा बदला रख छोड़ा है।[3]

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۗ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿30﴾

३०. हे नबी की बीवियो! तुम में से जो भी खुली बेहयाई करेगी उसे दुगुना अज़ाब दिया जायेगा,[4] अल्लाह तआला के क़रीब यह बड़ी आसान बात है।

---

[1] इस में बनी क़ुरैज़ा की लड़ाई का बयान है।

[2] कुछ ने इस से ख़ैबर की ज़मीन मुराद लिया है, क्योंकि उसके बाद ही हुदैबिया सुलह के बाद मुसलमानों ने ख़ैबर पर फ़त्ह हासिल की है, कुछ ने कहा कि मक्का की ज़मीन है और कुछ ने फ़ारस और रोम की ज़मीन को इसका मतलब बताया है और कुछ ने उन सारी धरती को बताया जो मुसलमान क़यामत तक फ़त्ह के ज़रिये हासिल करेंगे। (फ़तहुल क़दीर)

[3] फ़त्ह हासिल होने के नतीजे में जब मुसलमानों की हालत पहले के मुक़ाबिले कुछ सुधर गयी थी तो अंसार और मुहाजिरों की महिलाओं को देखकर पाक पत्नियों ने भी अपने घरेलू ख़र्च को बढ़ाने की माँग की। चूँकि नबी ﷺ सादगी वाले थे, इसीलिए पाक पत्नियों की इस माँग पर बहुत दुखी हुए और पत्नियों से अलग रहने लगे, जो एक महीने तक लगातार रहा आख़िर में अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल की। इसके बाद आप ने सब से पहले हज़रत आयेशा को यह आयत सुनाकर उन्हें हक़ दिया फिर भी उन्हें कहा कि ख़ुद फ़ैसले करने के बजाय अपने माता-पिता से राय के बाद ही कोई फ़ैसला लेना। हज़रत आयेशा ने कहा कि यह कैसे हो सकता है कि मैं आप के बारे में मशिवरा करूँ, बल्कि मैंने अल्लाह और रसूल ﷺ को छोड़ कर दुनियावी सुख-सुविधा को तरजीह नहीं दिया। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: अहज़ाब)

[4] क़ुरआन में الفاحشة को व्याभिचार (बदकारी) के अर्थ (मायना) में इस्तेमाल किया गया है लेकिन فاحشة को बुराई के लिए, यहाँ इसका मतलब बुराई और बुरा सुलूक के हैं।

وَمَن يَقْنُتْ مِنكُنَّ لِلَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَتَعْمَلْ صَٰلِحًا نُّؤْتِهَآ أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا ﴿31﴾

३१. और तुम में से जो कोई भी अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमांबरदारी करेगी और नेक काम करेगी हम उसे दोगुना बदला देंगे, और उस के लिए हम ने बेहतरीन रोज़ी (जीविका) तैयार कर रखी है।

يَٰنِسَآءَ ٱلنَّبِىِّ لَسْتُنَّ كَأَحَدٍ مِّنَ ٱلنِّسَآءِ ۚ إِنِ ٱتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِٱلْقَوْلِ فَيَطْمَعَ ٱلَّذِى فِى قَلْبِهِۦ مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ﴿32﴾

३२. हे नबी की बीवियो! तुम आम औरतों की तरह नहीं हो,[1] अगर तुम परहेज़गारी बरतो तो नर्म लहजे से बात न करो कि जिस के दिल में रोग हो वह कोई बुरा इरादा करे, लेकिन क़ायदे के मुताबिक़ बात करो।

وَقَرْنَ فِى بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ ٱلْجَٰهِلِيَّةِ ٱلْأُولَىٰ ۖ وَأَقِمْنَ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتِينَ ٱلزَّكَوٰةَ وَأَطِعْنَ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥٓ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ ٱللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ ٱلرِّجْسَ أَهْلَ ٱلْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا ﴿33﴾

३३. और अपने घरों में क़रार से रहो,[2] और पहले की जाहीलियत के ज़माने की तरह अपने श्रृंगार (सौंदर्य) का इज़हार न करो, और नमाज़ क़ायम करती रहो और ज़कात देती रहो और अल्लाह और उस के रसूल के हुक्म की पैरवी करो, अल्लाह (तआला) यही चाहता है कि हे नबी की घरवालियो[3] तुम से वह हर

---

[1] यानी तुम्हारी हालत और मुक़ाम आम औरतों की तरह नहीं है बल्कि अल्लाह ने तुम्हें रसूल ﷺ की पत्नी होने की जो ख़ुशनसीबी अता की है, उस के सबब तुम्हें ख़ास मुक़ाम हासिल है और रसूलुल्लाह ﷺ की तरह तुम्हें भी मुसलमानों के लिए नमूना बनना है, इसलिए उन्हें उन के मुक़ाम और पद से बाख़बर करके उन्हें कुछ अहकाम (निर्देश) दिये जा रहे हैं, इस से सम्बोधित (मुख़ातिब) अगरचे पाक बीवियाँ हैं, जिन्हे ईमानवालों की माताऐं कहा गया है लेकिन शैली (जुमले) के अनुसार साफ़ ज़ाहिर है कि मक़सद सभी मुसलमानों की औरतों को समझाना और चेतावनी (आगाही) देना है, इसलिए यह निर्देश सभी मुसलमान औरतों के लिए है।

[2] यानी टिक कर रहो और बिला सबब घर से बाहर न निकलो, इस में वाज़ेह कर दिया कि औरत के काम का दायरा सियासत और हुकूमत नहीं, आर्थिक (मआशी) झमेले भी नहीं बल्कि घर के अन्दर रहकर गृहस्थी के काम पूरा करना है।

[3] अहले बैत से मुराद कौन हैं? इस बारे में कुछ इख़्तिलाफ़ है, कुछ ने पाक बीवियाँ मुराद लिया है, जैसाकि यहाँ क़ुरआन करीम के लफ़्ज़ों से वाज़ेह हो रहा है, क़ुरआन ने यहाँ पाक बीवियों को ही अहले बैत कहा है। क़ुरआन के दूसरे मुक़ाम पर भी बीवी को अहले बैत कहा है, जैसे सूर: हूद आयत नं॰ ७३ में, इसलिए पाक बीवियों का अहले बैत होना क़ुरआन के लफ़्ज़ों से वाज़ेह है। कुछ लोग, कुछ क़ौल के बिना पर अहले बैत का सम्बन्ध (तआल्लुक़) केवल हज़रत

(तरह की) नापाकी को दूर कर दे और तुम्हें बहुत पाक कर दे।

وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا (34)

३४. और तुम्हारे घरों में अल्लाह (तआला) की जो आयतें और रसूल की हदीसें पढ़ी जाती हैं उन को याद करती रहो,[1] बेशक अल्लाह (तआला) लतीफ़ बाख़बर हैं।

اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّاۗىِٕمِيْنَ وَالصّٰۗىِٕمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا (35)

३५. बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें, ईमानदार मर्द और ईमानदार औरतें, इताअत (आज्ञापालन) करने वाले मर्द और इताअत करने वाली औरतें, सच्चे मर्द और सच्ची औरतें, सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें, विनती करने वाले मर्द और विनती करने वाली औरतें, दान (सदक़ा) करने वाले मर्द और दान करने वाली औरतें, रोज़े (व्रत) रखने वाले मर्द और रोज़े रखने वाली औरतें, अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करने वाली औरतें, और बहुत ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र करने वाले और करने

अली, हज़रत फ़ातिमा और हज़रत हसन और हुसैन से मानते हैं और पाक बीवियों को इस से अलग समझते हैं, जबकि पहले लोग इन चार सहचरों (सहाबा) को इस से अलग समझते हैं जबकि दरमियानी रास्ता और संतुलित (मुनासिब) बात यह है कि दोनों ही अहले बैत हैं। पाक बीवियाँ तो पाक क़ुरआन के इन लफ़्ज़ों के सबब और दामाद और औलाद उन क़ौल के बिना पर जो सहीह हदीस से साबित हैं, जिन में नबी ﷺ ने उनको अपनी चादर में लेकर फ़रमाया कि हे अल्लाह! ये मेरे अहले बैत हैं, जिसका मतलब यह होगा कि यह भी मेरे अहले बैत से हैं या यह दुआ है कि हे अल्लाह इन्हें भी पाक बीवियों की तरह मेरे अहले बैत में शामिल कर ले। इस तरह सभी दलीलों और सुबूतों में मुवाफ़िक़त हो जाती है। (और जानकारी के लिए देखिए फ़तहुल क़दीर शौकानी)

[1] यानी इन के ऐतबार से अमल करो। हिक्मः से मुराद हदीस हैं, इस आयत से दलील देते हुए ज्ञानियों (आलिमों) ने कहा है कि हदीस भी क़ुरआन की तरह नेकी के इरादे से पढ़ी जा सकती है, इस के सिवाय यह आयत पाक बीवियों के अहले बैत होने को साबित करती है, इसलिए कि वह्यी का नुज़ूल जिसकी चर्चा इस आयत में है पाक बीवियों के घरों में ही होता था, ख़ास तौर से हज़रत आयेशा के घर में, जैसाकि हदीस में है।

वालियाँ, इन सब के लिए अल्लाह (तआला) ने बड़ी मग़फ़िरत और बड़ा अज्र (पुण्य) तैयार कर रखा है।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ۗ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿36﴾

३६. और (देखो) किसी मुसलमान मर्द और औरत को अल्लाह और उस के रसूल के फ़ैसले के बाद अपनी किसी बात का कोई हक़ बाक़ी नहीं रह जाता ।[1] (याद रखो!) अल्लाह (तआला) और उस के रसूल की जो भी नाफ़रमानी करेगा वह खुली गुमराही में पड़ेगा।

وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ ۗ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْٓ اَزْوَاجِ اَدْعِيَاۤىِٕهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ۗ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿37﴾

३७. और (याद करो) जबकि तू उस इंसान से कह रहा था जिस पर अल्लाह ने भी नेमत किया और तूने भी कि तू अपनी पत्नी को अपने पास रख और अल्लाह से डर, और तू अपने दिल में वह बात छिपाये हुए था जिसे अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था और तू लोगों से डर खाता था, हालांकि अल्लाह (तआला) इस का ज़्यादा हक़दार था कि तू उस से डरे, तो जबकि ज़ैद ने उस औरत से अपनी ज़रूरत पूरी कर ली, हम ने उसे तेरे विवाह में दे दिया ताकि मुसलमानों पर अपने लेपालकों की बीवियों के बारे में किसी

[1] यह आयत हज़रत ज़ैनब के विवाह के बारे में नाज़िल हुई थी। हज़रत ज़ैद बिन हारिसा असल में अरब थे, लेकिन किसी ने उन्हें बचपन में ही पकड़ कर ग़ुलाम (दास) बनाकर बेच दिया था। नबी ﷺ से हज़रत ख़दीजा के विवाह (शादी) के बाद हज़रत ख़दीजा ने उन्हें ख़रीद कर रसूलुल्लाह ﷺ को तोहफ़ा के तौर पर दिया था, आप ﷺ ने उन्हें आज़ाद करके अपना पुत्र बना लिया था। नबी ﷺ ने उनके विवाह का मुआमला अपनी फूफी की पुत्री हज़रत ज़ैनब के साथ रखा था, जिस पर उन्हें और उन के भाई को अपने ख़ानदानी इज़्ज़त के बिना पर संकोच (तरद्दुद) हुआ कि ज़ैद एक आज़ाद किये हुए ग़ुलाम हैं और उनका रिश्ता एक ऊँचे इज़्ज़तदार घराने से है। इस पर यह आयत नाज़िल हुई, जिसका मतलब यह है कि अल्लाह और रसूल ﷺ के फ़ैसले के बाद किसी ईमानवाले मर्द और औरत को यह हक़ नहीं कि वह अपने हक़ का इस्तेमाल करे बल्कि उस के लिये यह है कि वह अपनी स्वीकृति (रज़ामंदी) दे दे, इसलिए इस आयत को सुनने के बाद हज़रत ज़ैनब वग़ैरह ने अपने इरादों पर हठ (ज़िद) नहीं किया और उनका विवाह हो गया।

तरह का संकोच (तरद्दुद) न रहे, जबकि वह अपनी ज़रूरत उन से पूरी कर लें,[1] अल्लाह का (यह) आदेश होकर ही रहने वाला था।

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ ۖ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلُ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا مَّقْدُورًا (38)

३८. जो चीज़ें अल्लाह (तआला) ने अपने नबी के लिए जायेज़ (मान्य) की हैं, उन में नबी पर कोई हर्ज नहीं। (यही) अल्लाह का क़ानून उन में भी रहा जो पहले हुए और अल्लाह (तआला) के काम अंदाज़े से निर्धारित (मुक़र्रर) किये हुए हैं।

الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا (39)

३९. ये सब ऐसे थे कि अल्लाह (तआला) के आदेश (अहकाम) पहुँचाया करते थे और अल्लाह ही से डरते थे और अल्लाह के सिवाय किसी से भी नहीं डरते थे, और अल्लाह (तआला) हिसाब लेने के लिए काफ़ी है।

مَّا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا (40)

४०. (लोगो), तुम्हारे मर्दों में से किसी के पिता मोहम्मद (ﷺ) नहीं,[2] लेकिन आप अल्लाह (तआला) के रसूल हैं और सारे नबियों में आख़िरी हैं,[3] और अल्लाह (तआला) हर चीज़ को

---

[1] यह हज़रत ज़ैनब से नबी ﷺ के विवाह की वजह है कि भविष्य (मुस्तक़बिल) में कोई मुसलमान इस बारे में संकोच का एहसास न करे और ज़रूरत पड़ने पर गोद लिये पुत्र की तलाक़ दी हुई बीवी से विवाह किया जा सके।

[2] इसलिए वह ज़ैद बिन हारिसा के भी पिता नहीं हैं, जिस पर उन्हें निन्दा (मज़म्मत) का निशाना बनाया जा सके कि उन्होंने अपनी बहू से विवाह क्यों कर लिया ? बल्कि एक ज़ैद ही क्या वह किसी भी मर्द के पिता नहीं हैं, क्योंकि ज़ैद तो हारिसा के पुत्र थे, आप ﷺ ने तो उन्हें मुँह बोला पुत्र बना रखा था और जाहिलियत के रिवाज के अनुसार उन्हें ज़ैद बिन मोहम्मद कहा जाता था। हक़ीक़त में वह आप ﷺ के सगे पुत्र नहीं थे। इसीलिए (اُدْعُوهُمْ لِآبَائِهِمْ) के नाज़िल होने के बाद उन्हें ज़ैद पुत्र हारिसा ही कहा जाता था, इसके सिवाय हज़रत ख़दीजा رضي الله عنها से आप ﷺ के दो पुत्र क़ासिम और अब्दुल्लाह हुए और एक इब्राहीम मारिया क़िब्तिया के पेट से हुए। लेकिन ये सभी बचपन में ही मर गये, उन में से कोई भी पूरी जवानी को नहीं पहुँचा, इस बिना पर आप ﷺ की अपनी औलाद में कोई भी मर्द नहीं रहा जिस के आप ﷺ पिता हों। (इब्ने कसीर)

[3] خَاتَمْ अरबी ज़ुबान में मोहर (मुद्रा) को कहते हैं और मोहर आख़िरी काम को कहा जाता है आप ﷺ पर नबूअत और रिसालत का ख़ात्मा हो गया, आप ﷺ के बाद जो भी नबूअत या रिसालत का दावा करेगा वह झूठा और दज्जाल होगा। हदीसों में इस बारे में तफ़सील से बयान किया गया है और इस पर सारी उम्मत राज़ी है। क़यामत के क़रीब हज़रत ईसा धरती पर आयेंगे

अच्छी तरह जानने वाला है।

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ﴿41﴾

४१. हे मुसलमानो! अल्लाह तआला का ज़िक्र बहुत ज़्यादा करो।

وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿42﴾

४२. और सुबह-शाम उसकी पकीज़गी का बयान करो।

هُوَ الَّذِي يُصَلِّي عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ﴿43﴾

४३. वही है जो तुम पर अपनी रहमत भेजता है और उस के फ़रिश्ते (तुम्हारे लिए दया की दुआ करते हैं) ताकि वह तुम्हें अंधेरे से नूर की तरफ़ ले जाये, और अल्लाह (तआला) मुसलमानों पर बड़ा रहम करने वाला है।

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ۚ وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ﴿44﴾

४४. जिस दिन ये अल्लाह (तआला) से मिलेंगे उनका स्वागत (इस्तेक़्बाल) सलाम से होगा,[1] उन के लिए अल्लाह (तआला) ने बाइज़्ज़त बदला तैयार कर रखा है।

يَاأَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿45﴾

४५. हे नबी! हक़ीक़त में हम ने ही आप को (रसूल) गवाह, ख़ुशख़बरी देने वाला और बाख़बर करने वाला बनाकर भेजा है।[2]

وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُّنِيرًا ﴿46﴾

४६. और अल्लाह के हुक्म से उसकी तरफ़ बुलाने वाला और रौशन चिराग़।[3]

जो सही और निरन्तर (मुसल्सल) हदीस से साबित है, वह नबी के रूप में नही आयेंगे बल्कि नबी ﷺ के पैरोकार बनकर आयेंगे, इसलिए उनका धरती पर आना नबूअत के ख़ात्मा के ख़िलाफ़ नही है।

[1] यानी जन्नत में फ़रिश्ते ईमानवालों को या ईमानवाले एक-दूसरे को सलाम करेंगे।

[2] कुछ लोग شاهد (शाहिद) का मतलब मौजूद करते हैं जो क़ुरआन के मायेना में तबदीली है। नबी ﷺ अपनी उम्मत की गवाही देंगे, उनकी भी जो आप पर ईमान लाये और उनकी भी जो आप को झुठलाते रहे। आप ﷺ ईमानवालों को उन के वज़ू के अंगों से पहचान लेंगे जो चमकते होंगे, इसी तरह आप ﷺ अन्य नबियों (सन्देष्टाओं) की गवाही देंगे कि उन्होंने अपनी-अपनी उम्मत को अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया था और यह गवाही अल्लाह के दिये हुए यक़ीनी इल्म की बिना पर होगी, इसलिए नहीं कि आप ﷺ सभी रसूलों को अपनी नज़र से देखते रहे हैं, यह ईमान तो क़ुरआन के सूत्रों (आयतों) के ख़िलाफ़ है।

[3] जिस तरह चिराग़ से अंधेरा दूर हो जाता है, उसी तरह आप ﷺ के ज़रिये कुफ़्र और शिर्क (मूर्तिपूजा) के अंधेरे दूर हुए, इस के सिवाय इस चिराग़ से रौशनी ले कर जो इज़्ज़त व

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُم مِّنَ اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ﴿47﴾

४७. और आप ईमानवालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए कि उन के लिए अल्लाह (तआला) की तरफ़ से बहुत बड़ा फ़ज़्ल (अनुग्रह) है।

وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ وَدَعْ أَذَاهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿48﴾

४८. और काफ़िरों व मुनाफ़िक़ों का कहना न मानिए, और जो दुख (उन की तरफ़ से) पहुँचे उसकी फ़िक्र न कीजिए, अल्लाह पर भरोसा रखिये, अल्लाह काम बनाने के लिए काफ़ी है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِن قَبْلِ أَن تَمَسُّوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّونَهَا ۖ فَمَتِّعُوهُنَّ وَسَرِّحُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ﴿49﴾

४९. हे मुसलमानो! जब तुम मुसलमान औरतों से शादी करो, फिर उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दो तो उन पर तुम्हारा कोई (हक़) इद्दत (तलाक़ के बाद मुक़र्रर वक़्त तक की मना की हुई मुद्दत) का नहीं जिसकी तुम गिन्ती करो।[1] तो तुम उन्हें कुछ न कुछ दे दो और अच्छी तरह उन्हें विदा कर दो।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ اللَّاتِي آتَيْتَ أُجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمِّكَ وَبَنَاتِ عَمَّاتِكَ وَبَنَاتِ خَالِكَ وَبَنَاتِ

५०. हे नबी ! हम ने तेरे लिए तेरी वे बीवियाँ हलाल (वैध) कर दी हैं, जिन्हें तू उनकी मेहर (स्त्री-दान) दे चुका है, और वे दासियाँ भी जो अल्लाह (तआला) ने लड़ाई में तुझे दी हैं और तेरे चाचा की पुत्रियाँ, फूफी की पुत्रियाँ, तेरे मामा की पुत्रियाँ और तेरे मौसी की पुत्रियाँ भी जिन्होंने तेरे साथ हिजरत की हैं, और वह ईमानवाली औरत जो ख़ुद को नबी को दान कर दे, यह उस हालत में कि ख़ुद अगर नबी भी उस से विवाह करना चाहे,[2] यह ख़ास तौर से

एहतेराम हासिल करना चाहे कर सकता है, इसलिए कि यह चिराग़ क़यामत तक रौशन है।

[1] शादी के बाद जिन औरतों से सहवास (जिमाअ) किया जा चुका हो और वह अभी जवान हो, ऐसी औरतों को अगर तलाक़ मिल जाये तो उनकी "इद्दत" तीन माहवारी है। (अल-बक़र:-२२८) यहाँ उन औरतों का क़ानून बताया जा रहा है जिनका विवाह हुआ हो लेकिन पति-पत्नी के बीच जिमाअ नहीं हुआ, उनको अगर तलाक़ मिल जाये तो कोई इद्दत नहीं है। यानी ऐसी बिना जिमाअ तलाक़ शुदा औरत बिना इद्दत गुज़ारे, तुरन्त कहीं विवाह करना चाहे तो कर सकती है। हाँ, अगर सहवास से पहले पति की मौत हो जाये तो फिर उसे चार महीने दस दिन इद्दत गुज़ारनी पड़ेगी।

[2] यानी अपने आप को दान करने वाली औरत, अगर आप ﷺ उस से विवाह करना चाहें तो बिना महर के आप ﷺ के लिए उसे अपने निकाह में लेना जायेज़ है।

خٰلٰتِكَ الّٰتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ وَامْرَأَةً مُّؤْمِنَةً إِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْٓ أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا (50)

तेरे लिए ही है और दूसरे मुसलमानों के लिए नहीं ।[1] हम उसे अच्छी तरह जानते हैं जो हम ने उन पर उनकी बीवियों और दासियों के बारे में (आदेश) मुक़र्रर कर रखे हैं,[2] यह इसलिए कि तुझ पर कोई मुसीबत पैदा न हो । अल्लाह (तआला) बड़ा माफ़ करने वाला और बड़ा रहम करने वाला है ।

تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيْٓ إِلَيْكَ مَنْ تَشَآءُ ۗ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۗ ذٰلِكَ أَدْنٰٓى أَنْ تَقَرَّ أَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَآ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا (51)

५१. उन में से जिसे तू चाहे दूर रख दे और जिसे चाहे पास रख ले, और अगर तू उन में से भी किसी को अपने पास बुला ले जिन्हें तूने अलग कर रखा था तो तुझ पर कोई हर्ज नहीं, इस में इस बात की अधिक उम्मीद है कि इन (औरतों) की आंखें ठंडी रहें और वे दुखी न हों और जो कुछ भी तू उन्हें दे दे उस से वे सब ख़ुश रहें, तुम्हारे दिलों में जो कुछ है उसे अल्लाह (अच्छी तरह) जानता है ।[3] अल्लाह (तआला) ज़्यादा इल्म वाला सहनशील (हलीम) है ।

---

[1] यह इजाज़त केवल आप ﷺ के लिए है, दूसरे मुसलमानों को लाज़िम है कि वे महर के हक़ अदा करें तब विवाह (शायद) जायेज़ होगा ।

[2] यानी विवाह के जो हक़ूक़ और शर्तें हैं जो हम ने फ़र्ज़ किये हैं, जैसे चार से ज़्यादा बीवियाँ एक ही समय में कोई इंसान नहीं रख सकता, विवाह के लिए वली, गवाह और महर ज़रूरी है, लेकिन दासियाँ जितनी भी कोई चाहे रख सकता है, किन्तु दासियों का प्रचलन (रिवाज) अब ख़त्म हो गया ।

[3] यानी तुम्हारे दिल में जो कुछ है उन में यह बात भी निश्चित रूप से है कि सब पत्नियों का प्रेम दिल में बराबर नहीं है, क्योंकि दिल पर किसी का बस नहीं है, इसलिए पत्नियों के बीच बारी में, पालन-पोषण और दूसरे जीवन हेतु (उमूर ज़िन्दगी) और सुविधाओं में बराबरी ज़रूरी है, जिसका एहतेमाम इंसान कर सकता है । दिलों के झुकाव में बराबरी चूंकि बस ही में नहीं है, इसलिए अल्लाह तआला उस पर पकड़ भी नहीं करेगा अगर दिली मुहब्बत किसी एक बीवी से उसके साथ ख़ास सुलूक की वजह न हो । इसीलिए नबी ﷺ फ़रमाया करते थे "हे अल्लाह! यह जो मेरा बटवारा है जो मेरे बस में है, लेकिन जिस पर तेरा बस है मैं उस पर बस नहीं रखता, उस में मुझे लज्जित (शर्मिन्दा) न करना ।" (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसाई, इब्ने माजा और मुसनद अहमद ६\१४४)

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ رَقِيبًا ﴿52﴾

५२. इसके बाद दूसरी औरतें आप के लिए हलाल नहीं और न यह (जायेज़ है) कि उन्हें छोड़कर दूसरी औरतों से (विवाह करें) अगरचे उन का रूप अच्छा भी लगता हो[1] लेकिन जो तेरी दासियाँ हों, अल्लाह हर चीज़ का (पूरा) निगराँ है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ غَيْرَ نَاظِرِينَ إِنَاهُ وَلَٰكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ لِحَدِيثٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيِي مِنْكُمْ ۖ وَاللَّهُ لَا يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ ۚ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَاسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ۚ ذَٰلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ ۚ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تَنْكِحُوا أَزْوَاجَهُ مِنْ بَعْدِهِ أَبَدًا ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ﴿53﴾

५३. हे मुसलमानो ! जब तक तुम्हें इजाज़त न दी जाये तुम नबी के घरों में न जाया करो, खाने के लिए ऐसे समय में कि खाना पकने का इंतेज़ार करते रहे, बल्कि जब बुलाया जाये तो जाओ और जब खा चुको तो निकल खड़े हो, वहीं बातों में मश्गूल न हो जाओ। नबी को तुम्हारे इस काम से कष्ट होता है, लेकिन वह तुम्हारा आदर (एहतेराम) कर जाते हैं और अल्लाह (तआला) सच का बयान करने में किसी की फ़िक्र नहीं करता,[2] और जब तुम नबी की बीवियों से कोई चीज़ माँगो तो पर्दे के पीछे से माँगो।[3] तुम्हारे और उन के दिलों के लिए पूरी

---

[1] इख़्तियार की आयत के नाज़िल होने के बाद पाक बीवियों ने दुनियावी सुख-सुविधा (ऐश-आराम) के साधनों (ज़रिया) को छोड़कर कठिनाई से नबी ﷺ के साथ रहना पसन्द किया था। इसका बदला अल्लाह ने यह दिया कि उन पाक बीवियों के अलावा (जिनकी तादाद उस समय नौ थी) दूसरी औरतों के साथ विवाह करने या उन में से किसी को तलाक़ दे कर उस की जगह पर किसी दूसरे से विवाह करने से रोक दिया। कुछ कहते हैं कि बाद में आप ﷺ को यह हक़ दे दिया गया था, लेकिन आप ﷺ ने कोई विवाह नहीं किया। (इब्ने कसीर)

[2] इस आयत के नाज़िल होने की वजह यह है कि नबी ﷺ की दावत पर सहाबा केराम हाज़िर हुए, जिन में से कुछ खाने के बाद भी बैठे हुए बातें करते रहे जिस से आप ﷺ को ख़ास तकलीफ़ हुई, लेकिन आप ﷺ ने आदाब और अख़लाक़ के सबब उन्हें जाने के लिए नहीं कहा। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरतुल अहज़ाब) इसलिए इस आयत में खाने के आदाब सिखाये गये कि पहले तो तब जाओ जब खाना तैयार हो जाये, पहले ही से धरना देकर न बैठे रहो। दूसरे खाना ख़त्म करने के तुरन्त बाद घरों को चले जाओ, वहाँ बैठे हुए बातें न करो, खाने का बयान तो नाज़िल होने के सबब किया गया है, नहीं तो मतलब यह है कि जब भी तुम्हें बुलाया जाये चाहे खाने के लिए या किसी दूसरे काम के लिये इजाज़त के बिना घर में दाख़िल न हो।

[3] यह हुक्म हज़रत उमर की मर्ज़ी के मुताबिक़ नाज़िल हुआ। हज़रत उमर ने रसूलुल्लाह ﷺ से दरख़ास्त किया कि हे रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप ﷺ के पास अच्छे बुरे बहुत से लोग आते हैं, काश आप ﷺ पाक बीवियों को पर्दे का हुक्म दें तो क्या अच्छा हो। इस तरह यह हुक्म अल्लाह ने

पाकीजगी यही है,[1] न तुम्हें मुनासिब है कि तुम अल्लाह के रसूल को तकलीफ़ दो और न तुम्हें यह वैध (उचित) है कि आप के बाद किसी वक्त भी आप की पत्नियों से विवाह करो। (याद रखो) अल्लाह के नजदीक यह बहुत बड़ा (पाप) है।

إِنْ تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿54﴾

५४. अगर तुम किसी चीज को जाहिर करो या छिपाये रखो तो अल्लाह हर चीज का अच्छी तरह इल्म रखने वाला है।

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِي آبَائِهِنَّ وَلَا أَبْنَائِهِنَّ وَلَا إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءِ إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءِ أَخَوَاتِهِنَّ وَلَا نِسَائِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ وَاتَّقِينَ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ﴿55﴾

५५. उन औरतों पर कोई गुनाह नहीं कि वह अपने पिताओं, अपने पुत्रों और भाईयों, अपने भतीजों, भांजों और अपनी (मेलजोल की) औरतों और जिन के वे मालिक हैं (दासी, दास) के सामने हों[2] (औरतो!) अल्लाह से डरती रहो, अल्लाह तआला बेशक हर चीज पर गवाह है।

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿56﴾

५६. अल्लाह (तआला) और उस के फ़रिश्ते इस नबी पर दरूद भेजते हैं। हे ईमानवालो! तुम (भी) इन पर दरूद भेजो और ज़्यादा सलाम (भी) भेजते रहा करो।[3]

नाजिल किया (सहीह बुखारी, किताबुस्सलात व तफ़सीर सूर: अल-बकर:, मुस्लिम बाबु फ़जाईले उमर बिन ख़त्ताब)

[1] यह पर्दे का राज़ और सबब है कि इस से औरत-मर्द दोनों के दिल शक और शुब्हा से और लगातार फ़साद में पड़ने से महफ़ूज रहेंगे।

[2] जब औरतों के लिए पर्दे का हुक्म नाज़िल हुआ, तो फिर घर में मौजूद क़रीबी या हर समय आने-जाने वाले रिश्तेदारों के बारे में सवाल हुआ कि उन से पर्दा किया जाये या नहीं? इस आयत में उन रिश्तेदारों का बयान है जिन से पर्दे की जरूरत नहीं है। इसका तफ़सीली बयान सूर: नूर की आयत ३१ (وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ) में भी गुजर चुका है, उसे देख लीजिए।

[3] इस आयत में नबी ﷺ के उस मर्तबा का वयान है, जो आकाशों में आप ﷺ को हासिल है, और वह यह है कि अल्लाह (तआला) फ़रिश्तों में आप ﷺ की तारीफ़ और बड़ाई करता और शांति (रहमत) भेजता है और फ़रिश्ते भी आप ﷺ के लिए ऊंचे मुक़ाम की दुआ करते हैं, साथ ही साथ अल्लाह तआला ने धरती वालों को हुक्म दिया कि वह भी आप ﷺ पर सलात व सलाम भेजें ताकि आप ﷺ की तारीफ़ में धरती और आकाश दोनों शामिल हो जायें।

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿57﴾

५७. जो लोग अल्लाह और उस के रसूल को तकलीफ़ देते हैं उन पर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह की लानत है और उन के लिए बड़ा अपमानित (ज़लील) करने वाला अज़ाब है।[1]

وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدِ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿58﴾

५८. और जो लोग ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली औरतों को तकलीफ़ दें बिना किसी अपराध (जुर्म) के जो उन से हुआ हो, वह (बड़ा) आक्षेप (बुहतान) और खुले गुनाह का बोझ उठाते हैं।[2]

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُل لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِن جَلَابِيبِهِنَّ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَن يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿59﴾

५९. हे नबी! अपनी बीवियों से और अपनी बेटियों से और मुसलमानों की औरतों से कह दो कि वह अपने ऊपर अपनी चादरें लटका लिया करें,[3] इस से तुरन्त उनकी पहचान हो जाया करेगी फिर न कष्ट पहुँचायी जायेंगी,[4]

---

[1] अल्लाह को तकलीफ़ देने का मतलब उन सभी कामों का करना है जिसको उसने नापसन्दीदा कहा है, वर्ना अल्लाह को तकलीफ़ देने की कौन क़ुदरत रखता है ? जैसे मूर्तिपूजक, यहूदी और इसाई वगैरह अल्लाह के लिए औलाद साबित करते हैं या जिस तरह हदीस क़ुदसी में है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है : "आदम की औलाद मुझे तकलीफ़ देती हैं, ज़माना को गाली देती है जबकि मैं ही ज़माना हूँ, उस के दिन और रात का चक्र मेरे ही हुक्म से चलता है।" (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: अल-जासिया)

[2] यानी उन को बदनाम करने के लिए उन पर बुहतान लगाना, उन की इज़्ज़त घटाना और अपमान (ज़लील) करना, जैसे कुछ गुमराह लोग सुबह-शाम सहाबा केराम को गालियाँ देते हैं और उन से ऐसी बातें सम्बन्धित करते है जिन को उन्होंने किया ही नहीं।

[3] جَلَابِيب वहुवचन (जमा) है جِلْبَاب का जो ऐसी बड़ी चादर को कहते हैं जिससे पूरा शरीर (जिस्म) छिप जाये। अपने ऊपर चादर लटकाने से मुराद यह है कि अपने मुँह पर इस प्रकार घूँघट निकाला जाये कि जिस से मुँह का ज़्यादातर हिस्सा छिप जाये और आँखें झुकाकर चलने पर उसे रास्ता भी दिखायी दे।

[4] यह पर्दे के राज़ और उस के फ़ायदे का बयान है कि इस से एक सम्मानित (बाइज़्ज़त) और सभ्य (बावक़ार) औरत और बेहया औरत के बीच पहचान होगी। पर्दे से मालूम होगा कि यह सम्मानित परिवार की औरत है जिस से छेड़छाड़ की किसी को हिम्मत नहीं होगी, इस के विपरीत, बेपर्दा औरतें ग़लत लोगों की निगाह का केन्द्र (मरकज़) और उनकी कामवासना (ख़्वाहिशात) का निशाना बनेंगी।

और अल्लाह (तआला) बड़ा माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।

لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُوْنَ فِي الْمَدِيْنَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَآ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿60﴾

६०. अगर (अब भी) ये मुनाफ़िक़ (मिथ्याचारी) और वे जिन के दिलों में रोग है और मदीना के वे वासी जो गलत अफ़वाहें उड़ाने वाले हैं, रूक न जायें तो हम आप को उन के (हलाक करने) पर लगा देंगे फिर तो वे कुछ ही दिन आप के साथ इस (नगर) में रह सकेंगे।

مَّلْعُوْنِيْنَ ۚ اَيْنَمَا ثُقِفُوْٓا اُخِذُوْا وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا ﴿61﴾

६१. उन पर धिक्कार (लानत) बरसायी गयी, जहाँ भी मिल जायें पकड़े जायें और ख़ूब टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायें।[1]

سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿62﴾

६२. उन से पहले के लोगों में भी अल्लाह का यही क़ानून लागू रहा, और तू अल्लाह के क़ानून में कभी भी बदलाव नहीं पायेगा।

يَسْـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۭ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوْنُ قَرِيْبًا ﴿63﴾

६३. लोग आप से क़यामत के बारे में सवाल करते हैं, (आप) कह दीजिए कि इसका इल्म तो अल्लाह ही को है आप को क्या पता, बहुत मुमकिन है कि क़यामत बहुत क़रीब हो।

اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ وَاَعَدَّ لَهُمْ سَعِيْرًا ﴿64﴾

६४. अल्लाह (तआला) ने काफ़िरों पर लानत (धिक्कार) भेजी है, और उन के लिए भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿65﴾

६५. जिस में वे हमेशा रहेंगे, वह कोई पक्षधर (वली) और मदद करने वाला न पायेंगे।

[1] यह हुक्म नहीं है कि उनको पकड़-पकड़ कर मार डाला जाये बल्कि यह शाप (बद्दुआ) है कि वे अपने गुमराह ख़्यालात और इन गतिविधियों (हरकात) से न रूके तो उनका बड़ा नसीहत वाला अंजाम होगा। कुछ कहते हैं कि यह हुक्म है, लेकिन ये मुनाफ़िक़ आयत के नाज़िल होने के बाद रूक गये थे, इसलिए उन के ख़िलाफ़ यह कार्यवाही नहीं की गयी जिसका हुक्म इस आयत में दिया गया था। (फ़तहुल क़दीर)

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَٰلَيْتَنَآ أَطَعْنَا ٱللَّهَ وَأَطَعْنَا ٱلرَّسُولَا ﴿66﴾

६६. उस दिन उन के मुंह आग में उलटे-पलटे जायेंगे। (पछतावा और अफ़सोस से) कहेंगे कि काश! हम अल्लाह (तआला) और रसूल के हुक्म की इताअत करते।

وَقَالُوا رَبَّنَآ إِنَّآ أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا فَأَضَلُّونَا ٱلسَّبِيلَا ﴿67﴾

६७. और वे कहेंगे, हे हमारे रब! हम ने अपने सरदारों और बड़ों की मानी जिन्होंने हमें सीधे रास्ते से भटका दिया।[1]

رَبَّنَآ ءَاتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ ٱلْعَذَابِ وَٱلْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا ﴿68﴾

६८. हे हमारे रब! तू उन्हें दोगुना अज़ाब दे और उन पर बहुत बड़ी लानत भेज।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تَكُونُوا كَٱلَّذِينَ ءَاذَوْا مُوسَىٰ فَبَرَّأَهُ ٱللَّهُ مِمَّا قَالُوا ۚ وَكَانَ عِندَ ٱللَّهِ وَجِيهًا ﴿69﴾

६९. हे ईमानवालो! उन लोगों जैसे न बन जाओ जिन्होंने मूसा को तकलीफ़ दी, तो जो बात उन्होंने कही थी अल्लाह ने उन्हें उस से आज़ाद कर दिया,[2] और वह अल्लाह के पास बाइज़्ज़त थे।

---

[1] यानी हम ने तेरे संदेष्टाओं (रसूलों) और उलमा के बजाय अपने उन बड़ों और बुज़ुर्गों की पैरवी किया, लेकिन आज हमें मालूम हुआ कि उन्होंने हमें तेरे संदेष्टाओं से दूर रखकर सीधे रास्ते से भटकाये रखा। बुज़ुर्गों का अनुसरण और बाप-दादा के अनुकरण (पैरवी) आज भी लोगों में भटकावे की वजह है। काश! मुसलमान अल्लाह की आयतों पर ग़ौर करके इन पगडंडियों से निकलें और क़ुरआन व हदीस के सीधे रास्ते को अपना लें कि नजात केवल अल्लाह और अल्लाह के रसूलुल्लाह ﷺ के अनुसरण में ही है न कि धर्मगुरूओं (मज़हबी पेशवाओं) और बड़ों के अनुसरण में या बुज़ुर्गों की पुराने रीति-रिवाजों को अपनाने में।

[2] इसकी तफ़सीर हदीस में इस तरह आई है कि हज़रत मूसा ﷺ बहुत शर्मीले थे, अत: अपना शरीर कभी उन्होंने किसी के सामने नंगा नहीं किया। इस्राईली वंश के लोग कहने लगे कि शायद मूसा के शरीर पर सफ़ेद दाग़ या दूसरा इसी तरह का रोग है, इसलिए हर समय कपड़े पहनकर ढका-छिपा रहता है। एक बार अकेले में हज़रत मूसा ग़ुस्ल करने लगे, कपड़े उतार कर एक पत्थर पर रख दिये, पत्थर (अल्लाह के हुक्म से) कपड़े लेकर भाग खड़ा हुआ, हज़रत मूसा उस के पीछे-पीछे दौड़े यहाँ तक कि इस्राईलियों की एक मजलिस में पहुँच गये, उन्होंने हज़रत मूसा को नग्नवस्था में देखा तो उन के सारे शक दूर हो गये, मूसा बहुत ख़ूबसूरत, जवान और हर तरह के दाग़ से पाक थे। इस तरह अल्लाह तआला ने मोजिज़ाती तौर से पत्थर के ज़रिये उन के इस इल्ज़ाम और शक को दूर कर दिया जो इस्राईल की औलाद की तरफ़ से उन पर लगाया जाता था। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ﴿70﴾

७०. हे ईमानवालो! अल्लाह (तआला) से डरो और सीधी-सीधी (सच) बातें किया करो।

يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿71﴾

७१. ताकि अल्लाह (तआला) तुम्हारे काम सुधार दे और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दे, और जो भी अल्लाह और उस के रसूल के हुक्म की इत्तेबा करेगा उस ने बड़ी कामयाबी हासिल कर ली।

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَن يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنسَانُ ۖ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿72﴾

७२. हम ने अपनी अमानत को आकाशों पर और धरती पर और पहाड़ों पर पेश किया (लेकिन) सभी ने उस के उठाने से इंकार कर दिया और उस से डर गये, (लेकिन) इंसान ने उसे उठा लिया, वह बड़ा ज़ालिम और जाहिल है।

لِّيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿73﴾

७३. (यह इसीलिए) कि अल्लाह (तआला) मुनाफ़िक मर्दों और मुनाफ़िक औरतों और मूर्तिपूजक मर्दों और मूर्तिपूजक औरतों को सज़ा दे और ईमानवाले मर्द और ईमानवाली औरतों की तौबा क़ुबूल कर ले, और अल्लाह तआला बड़ा माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।

سُورَةُ سَبَإٍ

सूरतु सबा-३४

सूरः सबा मक्का में नाज़िल हुई इस में चौवन आयतें और छः रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْآخِرَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ﴿1﴾

१. सारी तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जिसकी (मिल्कियत में) वह सब कुछ है जो आकाशों और धरती में है और आख़िरत में भी तारीफ़ उसी के लिये है, वह (बड़ा) हिक्मत वाला और (पूरी) ख़बर रखने वाला है।

يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۚ وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ ﴿2﴾

२. जो धरती में जाये और जो उस से निकले, जो आकाश से उतरे और जो चढ़ कर उस में जाये वह सब से बाख़बर है, और वह बड़ा रहम करने वाला बड़ा माफ़ करने वाला है।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ ۖ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ عَالِمِ الْغَيْبِ ۖ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿3﴾

३. और काफ़िर कहते हैं कि हम पर क़यामत क़ायेम नहीं होगी। आप कह दीजिए कि मुझे मेरे रब की क़सम! जो ग़ैब का जानने वाला है कि वह बेशक तुम पर क़ायेम होगी, अल्लाह (तआला) से एक कण (ज़र्रा) की तरह की चीज़ भी छिपी नहीं, न आकाशों में और न धरती में, बल्कि उस से भी छोटी और बड़ी सभी चीज़ खुली किताब में मौजूद है।

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿4﴾

४. ताकि वह ईमानवालों और नेक लोगों को अच्छा बदला अता करे,[1] यही लोग हैं जिन के लिए बख़्शिश और बाइज़्ज़त रिज़्क़ है।

وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِنْ رِجْزٍ أَلِيمٌ ﴿5﴾

५. और हमारी आयतों को नीचा दिखाने में जिन्होंने कोशिश किया है ये वे लोग हैं जिन के लिए बड़ी बुरी तरह का सख़्त अज़ाब है।

وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقَّ وَيَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ﴿6﴾

६. और जिन्हें इल्म है वे देख लेंगे कि जो कुछ आप की तरफ़ आप के रब की तरफ़ से नाज़िल हुआ है वह (सरासर) सच है,[2] और अल्लाह प्रभावशाली तारीफ़ वाले के रास्ते की हिदायत करता है।

---

[1] यह क़यामत होने का सबब है, यानी क़यामत इसलिए क़ायम होगी और सभी इन्सानों को अल्लाह इसलिये दोबारा ज़िन्दा करेगा कि उन की नेकी का बदला अता करे, क्योंकि बदला ही के लिए उसने यह दिन रखा है अगर यह बदले का दिन न हो तो फिर इसका मतलब यह होगा कि नेक लोग और पापी बराबर हैं, और यह बात इंसाफ़ के बहुत ख़िलाफ़ है और बन्दों ख़ास तौर से परहेज़गारों पर ज़ुल्म होगा। (وما ربك بظلام للعبيد)

[2] यहाँ देखने से मुराद दिल से देखना यानी यक़ीनी इल्म है, सिर्फ़ आँख से देखना नहीं आलिमों से मुराद सहाबा (नबी के सहाबा) या सभी मुसलमान हैं, यानी ईमानवाले इस बात को जानते और इस पर यक़ीन करते हैं।

७. और काफ़िरों ने कहा, आओ हम तुम्हें एक ऐसा इंसान बतायें जो तुम्हें यह ख़बरें पहुँचा रहा है कि जब तुम पूरी तरह से कण-कण (ज़र्रा-ज़र्रा) हो जाओगे तो तुम फिर से एक नई ज़िन्दगी में आओगे।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ⑦

८. (हम नहीं कहते) कि ख़ुद उसने ही अल्लाह पर झूठ गढ़ लिया है या उसे जुनून हो गया है, बल्कि (हक़ीक़त यह है) कि आख़िरत पर ईमान न रखने वाले ही अज़ाब में और दूर के भटकावे में हैं।

اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ۭ بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ ⑧

९. तो क्या वे अपने आगे-पीछे आकाश और धरती को देख नहीं रहे हैं? अगर हम चाहें तो उन्हें धरती में धँसा दें या उन पर आकाश के टुकड़े गिरा दें,[1] बेशक इस में पूरा सबूत है हर उस बंदे के लिए जो (दिल से) ध्यानमग्न (मुतविज्जह) हो।

اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنْ نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَاۗءِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ⑨

१०. और हम ने दाऊद पर अपना फ़ज़्ल किया,[2] हे पहाड़ो! उस के साथ मेरी तस्बीह किया करो और पक्षियों को भी (यही हुक्म है) और हम ने उस के लिए लोहे को मुलायम कर दिया।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ۭ يٰجِبَالُ اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ ⑩

---

[1] यानी यह आयत दो बातों पर आधारित (मबनी) है, एक अल्लाह की पूरी क़ुदरत की चर्चा पर जिसका अभी बयान हुआ। दूसरी, कुफ़्फ़ार के लिए चेतावनी (तंबीह) और धमकी पर कि जो अल्लाह आकाश और धरती की रचना पर इस तरह क़ुदरत वाला है कि उन पर और उन के बीच हर चीज़ पर उस का हक़ और क़ुदरत है, वह जब चाहे उन पर अपना अज़ाब भेजकर उन को बरबाद कर सकता है, धरती में धँसाकर भी, जैसे क़ारून को धँसाया या आकाश के टुकड़े गिरा कर, जैसे ऐका वालों को तबाह कर दिया गया।

[2] यानी नबूअत के साथ मुल्क और दूसरे कई ख़ास सिफ़तों से सम्मानित (बाइज़्ज़त) किया।

أَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِي السَّرْدِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ۭ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿11﴾

११. कि तू पूरी-पूरी कवचें बना और जोड़ों में अंदाजा रख, और तुम सब नेकी के काम करो, (यक़ीन करो) मैं तुम्हारे अमल देख रहा हूँ।

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ۭ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۭ وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿12﴾

१२. और हम ने सुलैमान के लिए हवा को (वश में कर दिया) कि सुबह की मंजिल उसकी एक महीने की होती थी और शाम की मंजिल भी[1] और हम ने उन के लिए तांबे का चश्मा जारी कर दिया,[2] और उस के रब के हुक्म से कुछ जिन्नात भी जो उस के अधीन (ताबे) उस के पास काम करते थे, और उन में से जो भी हमारे हुक्म (आदेश) की नाफ़रमानी करे हम उसे भड़कती हुई आग के अजाब का मजा चखायेंगे।[3]

يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَاۤءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ۭ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ۭ وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿13﴾

१३. जो कुछ सुलैमान चाहते वह (जिन्नात) तैयार कर देते, जैसे क़िला, चित्र (स्मारक), तालाब के समान लगन (तगाड़) और चूल्हों पर क़ायम मजबूत देगें (बड़े पतीले)। हे दाऊद की औलाद! उसका शुक्रिया अदा करने के लिए नेकी के काम करो, मेरे बन्दों में से शुक्रगुजार बन्दे कम ही होते हैं।

---

[1] यानी हजरत सुलैमान मुल्क के सरदारों और फ़ौज के साथ सिंहासन पर आसीन हो जाते और जिधर आप का हुक्म होता हवा उसे इतनी तेज चाल से ले जाती कि एक महीने की दूरी सुबह से दोपहर तक और इसी तरह एक महीने की दूरी दोपहर से रात तक पूरी कर ली जाती, इस तरह एक दिन में दो महीनों की यात्रा (सफ़र) पूरी हो जाती।

[2] यानी हम ने जैसे दाऊद के लिए लोहा नर्म कर दिया था, हजरत सुलैमान के लिए तांबे का चश्मा जारी कर दिया ताकि तांबे की धात से जो चाहें बनायें।

[3] ज्यादातर भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) के ख़्याल से यह सजा क़यामत के दिन दी जायेगी, लेकिन कुछ के क़रीब यह दुनियावी सजा है। वह कहते हैं कि अल्लाह ने एक फ़रिश्ता तैनात कर दिया था जिस के हाथ में आग का कोड़ा होता था, जो जिन्न हजरत सुलैमान की हुक्म से बेरूख़ी करता फ़रिश्ता वह सोंटा उसे मारता जिस से वह जलकर भस्म हो जाता।

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنسَأَتَهُ ۖ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ أَن لَّوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿14﴾

१४. फिर जब हम ने उन पर मौत का हुक्म भेज दिया तो उनकी ख़बर (जिन्नात को) किसी ने न दी सिवाय घुन के कीड़े के जो उनकी लकड़ी को खा रहा था, तो जब (सुलैमान) गिर पड़े उस समय जिन्नों ने जान लिया कि अगर वे ग़ैब का इल्म रखते तो इस अपमान (जिल्लत) के अज़ाब में न फंसे रहते।[1]

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكَنِهِمْ آيَةٌ ۖ جَنَّتَانِ عَن يَمِينٍ وَشِمَالٍ ۖ كُلُوا مِن رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ ۚ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَرَبٌّ غَفُورٌ ﴿15﴾

१५. सबा की क़ौम के लिए अपनी बस्तियों में (अल्लाह के क़ुदरत की) निशानी थी,[2] उन के दायें-बायें दो बाग़ थे। (हम ने उन को हुक्म दिया था कि) अपने रब की अता की हुई रिज़्क़ को खाओ और उसका शुक्रिया अदा करो, यह साफ़ नगर है और रब माफ़ करने वाला है।

فَأَعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنَاهُم بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ أُكُلٍ خَمْطٍ وَأَثْلٍ وَشَيْءٍ مِّن سِدْرٍ قَلِيلٍ ﴿16﴾

१६. लेकिन उन्होंने मुख फेरा तो हम ने उन पर तेज़ बाढ़ का (पानी) भेज दिया और उन के (हरे-भरे) बाग़ों के बदले दो (ऐसे) बाग़ दिये जो मज़े में कड़वे-कसैले और ज़्यादातर झाऊ और कुछ बेरी के पेड़ों वाले थे।

ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُم بِمَا كَفَرُوا ۖ وَهَلْ نُجَازِي إِلَّا الْكَفُورَ ﴿17﴾

१७. हम ने उनकी नाशुक्री का यह बदला उन्हें दिया, हम (ऐसे सख़्त) सज़ा बड़े-बड़े नाशुक्रों को ही देते हैं।

---

[1] हज़रत सुलैमान के ज़माने में जिन्नात के बारे में यह मशहूर हो गया था कि यह ग़ैब की बातें जानते हैं, अल्लाह ने हज़रत सुलैमान की मौत के ज़रिये इस भ्रम की ग़लती को ज़ाहिर कर दिया।

[2] सबा वही समुदाय (क़ौम) है जिस सबा की रानी मशहूर है, जो हज़रत सुलैमान के ज़माने में मुसलमान हो गई थी। समुदाय ही के नाम पर देश का नाम भी सबा था, इस समय यह इलाक़ा यमन के नाम से मशहूर है, यह बड़ा सम्पन्न (ख़ुशहाल) देश था, यह देश ज़मीनी और समुद्री तिजारत में भी ख़ास था और खेती और उपज में मशहूर। यह दोनों ही चीज़ें किसी देश और समुदाय की ख़ुशहाली की वजह होती हैं, इसी धन-दौलत की ज़्यादती को यहाँ अल्लाह की क़ुदरत का लक्षण (निशानी) कहा गया है।

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي بٰرَكْنَا فِيهَا
قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيهَا السَّيْرَ ۖ سِيرُوا
فِيهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ﴿18﴾

१८. और हम ने उन के और उन बस्तियों के बीच जिन में हम ने बरकत (सुख-सुविधा) अता कर रखी थी, कुछ बस्तियाँ दूसरी रखी थीं जो रास्ते पर दिखायी देती थीं[1] और उन में चलने के मुक़ाम मुक़र्रर कर दिये थे, उन में रातों और दिनों में अमन व अमान से चलते-फिरते रहो।

فَقَالُوا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۭ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿19﴾

१९. लेकिन उन्होंने दोबारा दुआ की कि हे हमारे रब! हमारी यात्रायें दूर तक कर दे, और चूँकि ख़ुद उन्होंने अपने हाथों अपना बुरा किया इसलिए हम ने उन्हें (पुरानी) कहानी के रूप में कर दिया[2] और उन के टुकड़े-टुकड़े कर दिये,[3] बेशक हर सब्र और शुक्रिया अदा करने वाले के लिए इस (घटना) में बहुत सी नसीहतें हैं।

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا
فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿20﴾

२०. और शैतान ने उन के बारे में अपना इरादा (अनुमान) सच कर दिखाया, ये लोग (सब के सब) उस के पैरोकार बन गये सिवाय ईमानवालों के एक गुट के।

وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ
يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ۭ وَرَبُّكَ عَلٰي
كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿21﴾

२१. और शैतान का उन पर कोई दबाव (और बल) न था, लेकिन इसलिए कि हम उन लोगों को जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं उन लोगों में (अच्छी तरह से) ज़ाहिर कर दें जो उस से शक में है, और आप का रब हर चीज़ का रक्षक (मुहाफ़िज़) है।

---

[1] बरकतों वाली बस्तियों से मुराद शाम (सीरिया) की बस्तियाँ हैं, यानी हम ने सबा देश (यमन) और शाम के बीच सड़क के किनारे बस्तियाँ आबाद की थी।

[2] यानी इन को इस तरह नापैद किया कि इन की बरबादी की कहानी हर ज़ुबान पर हो गयी और बैठकों और मजलिसों में चर्चा का विषय बन गया।

[3] यानी उन्हें विभाजित (तक़सीम) और छिन्न-भिन्न कर दिया, जैसाकि सबा की मशहूर जातियाँ कई जगहों पर जा आबाद हुईं, कोई यसरिब और मक्का आ गया कोई सीरिया के इलाक़ों में चला गया, कोई कहीं, कोई कहीं।

२२. कह दीजिए कि अल्लाह के सिवाय जिन-जिन का तुम्हें भ्रम है (सब को) पुकार लो, न उन में से किसी को आकाशों और धरती में से एक कण (ज़र्रा) का हक़ है, न उन का उन में कोई हिस्सा है और न उन में से कोई अल्लाह का शरीक है।

قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ ۖ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِن شِرْكٍ وَمَا لَهُ مِنْهُم مِّن ظَهِيرٍ ﴿22﴾

२३. और सिफ़ारिश (की दुआ) भी उसके सामने कोई फ़ायेदा नहीं देती सिवाय उन के जिन के लिए इजाज़त हो जाये, यहाँ तक कि जब उन के दिलों से घबराहट दूर कर दी जाती है तो पूछते हैं तुम्हारे रब ने क्या कहा? जवाब देते हैं कि सच कहा और वह बड़ा ऊंचा और बहुत बड़ा है।

وَلَا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ عِندَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ ۚ حَتَّىٰ إِذَا فُزِّعَ عَن قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ ۖ قَالُوا الْحَقَّ ۖ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿23﴾

२४. पूछिये कि तुम्हें आकाशों और धरती से रिज़्क़ कौन पहुँचाता है? (ख़ुद) जवाब दीजिए कि अल्लाह (महान)। (सुनो), हम या तुम या तो बेशक हिदायत पर हैं या खुली गुमराही में है।[1]

قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ وَإِنَّا أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلَىٰ هُدًى أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿24﴾

२५. कह दीजिए कि हमारे किये हुए गुनाहों के बारे में तुम से कुछ न पूछा जायेगा और न तुम्हारे कर्मों की पूछताछ हम से होगी।

قُل لَّا تُسْأَلُونَ عَمَّا أَجْرَمْنَا وَلَا نُسْأَلُ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿25﴾

२६. (उन्हें) ख़बरदार कर दीजिए कि हम सब को हमारा रब जमा करके फिर हम में सच्चा फ़ैसला कर देगा,[2] और वह फ़ैसला करने वाला सब कुछ जानने वाला है।

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ﴿26﴾

---

[1] साफ़ बात है कि गुमराह वही होगा जो ऐसी चीज़ों को माबूद समझता है जिनका आकाश और धरती से जीविका (रिज़्क़) पहुँचाने में कोई हिस्सा नहीं, न वह बारिश कर सकते हैं न कुछ उगा सकते हैं, इसलिए सच पर हक़ीक़त में तौहीद वाले ही हैं, न कि दोनों।

[2] यानी उस के हिसाब से फल देगा, अच्छों को स्वर्ग (जन्नत) में और बुरों को नरक (जहन्नम) में दाख़िल करेगा।

قُلْ أَرُونِيَ الَّذِينَ أَلْحَقْتُم بِهِ شُرَكَاءَ كَلَّا بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (27)

२७. कह दीजिए कि अच्छा मुझे भी उन्हें दिखा दो जिन्हें तुम अल्लाह का साझीदार बनाकर उस के साथ शामिल कर रहे हो, ऐसा कभी नहीं, बल्कि वही अल्लाह है जबरदस्त और हिक्मत वाला।

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ (28)

२८. और हम ने आप को सभी लोगों के लिए ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और होशियार करने वाला बनाकर भेजा है, लेकिन (यह सच है कि) लोगों में ज़्यादातर नावाक़िफ़ हैं।[1]

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ (29)

२९. और पूछते हैं कि वह वादा है कब? अगर सच हो तो बता दो।

قُل لَّكُم مِّيعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ (30)

३०. जवाब दीजिए कि वादे का दिन ठीक मुक़र्रर है जिस से एक क्षण न तुम पीछे हट सकते हो न आगे बढ़ सकते हो।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن نُّؤْمِنَ بِهَٰذَا الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِندَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ الْقَوْلَ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لَوْلَا أَنتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ (31)

३१. और काफ़िरों ने कहा कि हम न तो इस क़ुरआन को मानें न इस से पहले की किताबों को, और हे देखने वाले, काश कि तू इन ज़ालिमों को उस समय देखता जबकि ये अपने रब के सामने खड़े हुए एक-दूसरे पर इल्ज़ाम दे रहे होंगे,[2] नीचे दर्जे के लोग ऊँचे दर्जे के लोगों से कहेंगे[3] कि अगर तुम न होते तो हम ईमान वाले होते।

[1] इस आयत में अल्लाह ने एक तो नबी (मोहम्मद ﷺ) की उमूमी रिसालत का बयान किया है कि आप को पूरी इंसानियत का रहनुमा और हादी बनाकर भेजा गया है, दूसरा यह बयान किया गया कि आप की मर्ज़ी और कोशिश के बावजूद भी ज़्यादातर लोग ईमान (आस्था) से वंचित (महरूम) रहेंगे।

[2] यानी दुनिया में यह कुफ़्र और शिर्क में आपसी साथी और इस नाते एक-दूसरे के ख़ैरख़्वाह थे, लेकिन आख़िरत में आपसी दुश्मन और एक-दूसरे को इल्ज़ाम देंगे।

[3] यानी दुनिया में यह लोग जो बिना सोचे समझे रस्मो रिवाज पर चलते हैं अपने उन नेताओं से कहेंगे जिन के वे दुनिया में पैरोकार बने रहे।

३२. ये ऊँचे लोग उन कमज़ोर लोगों को जवाब देंगे कि क्या तुम्हारे पास हिदायत आ चुकने के बाद हम ने तुम्हें उस से रोका था। (नहीं) बल्कि तुम (ख़ुद) मुजरिम थे।

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا أَنَحْنُ صَدَدْنَاكُمْ عَنِ الْهُدَىٰ بَعْدَ إِذْ جَاءَكُمْ ۖ بَلْ كُنتُم مُّجْرِمِينَ ﴿32﴾

३३. (और इस के जवाब में) यह दुर्बल (कमज़ोर) लोग उन घमन्डियों से कहेंगे, (नहीं, नहीं) बल्कि दिन-रात छल-कपट से हमें अल्लाह के साथ कुफ़्र करने और उस के साथ साझीदार मुक़र्रर करने का तुम्हारा हुक्म देना हमारी बेईमानी का सबब हुआ,[1] और अज़ाब को देखते ही सब के सब दिल ही दिल में शर्मिंदा हो रहे होंगे, और काफ़िरों की गर्दनों में हम तौक़ डाल देंगे, उन्हें केवल उन के किये हुए अमल का बदला दिया जायेगा।[2]

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ إِذْ تَأْمُرُونَنَا أَن نَّكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَندَادًا ۚ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ۚ وَجَعَلْنَا الْأَغْلَالَ فِي أَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿33﴾

३४. और हम ने तो जिस बस्ती में जो भी आगाह करने वाला भेजा, वहाँ के ख़ुशहाल लोगों ने यही कहा कि जिस चीज़ के साथ तुम भेजे गये हो हम उस के साथ कुफ़्र करने वाले हैं।[3]

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ كَافِرُونَ ﴿34﴾

३५. और कहा कि हम माल और औलाद में ज़्यादा हैं, यह नहीं हो सकता कि हमें यातना (अज़ाब) दिया जाये।

وَقَالُوا نَحْنُ أَكْثَرُ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿35﴾

---

[1] यानी हम मुजरिम तो उस वक़्त होते जब अपने मन से पैग़म्बरों का इंकार करते, जबकि हक़ीक़त यह है कि तुम रात-दिन हमें गुमराह करने और अल्लाह का इंकार करने और उसका साझी बनाने पर तैयार करते रहे, जिस से अन्ततः (आख़िरकार) हम तुम्हारे पैरोकार बनकर ईमान (आस्था) से महरूम रहे।

[2] यानी दोनों को उन के अमलों की सज़ा मिलेगी, सरदारों को उन के अनुसार और उन के पैरोकारों को उन के अनुसार।

[3] यह नबी ﷺ को सांत्वना (तसल्ली) दी जा रही है कि मक्का के धनवान और सरदार आप ﷺ पर यक़ीन नहीं कर रहे हैं और आप ﷺ को दुख पहुँचा रहे हैं तो यह कोई नई बात नहीं है, हर ज़माने के ख़ुशहाल लोगों ने पैग़म्बरों को नकारा ही है और हर पैग़म्बर पर ईमान लाने वाले सब से पहले समाज के दरिद्र और ग़रीब तबक़े के लोग ही होते थे।

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿36﴾

३६. कह दीजिए कि मेरा रब जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ को कुशादा कर देता है और तंग भी कर देता है,[1] लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।

وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُم بِالَّتِي تُقَرِّبُكُمْ عِندَنَا زُلْفَىٰ إِلَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرُفَاتِ آمِنُونَ ﴿37﴾

३७. और तुम्हारे माल और औलाद ऐसे नही कि तुम्हें हमारे पास (पदों से) क़रीब कर दें, लेकिन जो ईमान लायें और नेकी के काम करें[2] तो उन के लिए उन के नेकी का दुगुना बदला है, और वे बेख़ौफ़ और मुत्मइन होकर ऊंचे भवनों में रहेंगे।

وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ﴿38﴾

३८. और जो लोग हमारी आयतों को नीचा दिखाने की दौड़-धूप में लगे रहते हैं, यही हैं जो अज़ाब में (पकड़कर) हाज़िर किये जायेंगे।

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ وَمَا أَنفَقْتُم مِّن شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿39﴾

३९. कह दीजिए कि मेरा रब अपने बन्दों में जिस के लिए चाहे रिज़्क़ कुशादा करता है और जिस के लिए चाहे नाप (तंग) कर देता है,[3] और तुम जो कुछ भी अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करोगे अल्लाह उसका (पूरा-पूरा) बदला देगा

---

[1] इस में काफ़िरों के भ्रम और शंका (शक) का बयान किया जा रहा है कि रिज़्क़ की कुशादगी और तंगी अल्लाह की ख़ुशी और नाख़ुशी का द्योतक (मज़हर) नहीं, बल्कि इस का सम्बन्ध (तआल्लुक़) अल्लाह की हिक्मत और मर्ज़ी से है, इसलिए वह धन उसे भी देता है जिसे पसन्द करता है और उसे भी जिसे नापसन्द करता है और जिसे चाहता है धनी करता है और जिसे चाहता है फ़क़ीर रखता है।

[2] यानी हमारी मुहब्बत और क़ुरबत हासिल करने का ज़रिया तो सिर्फ़ ईमान और नेक अमल है, जैसे हदीस में फ़रमाया गया : "अल्लाह तुम्हारी शक्ल व सूरत और तुम्हारे धन-दौलत नही देखता वह तो तुम्हारे दिलों और अमलों को देखता है।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र, बाब तहरीमे ज़ुल्मिल मुस्लिम)

[3] अत: वह काफ़िर को भी ख़ूब धन देता है, लेकिन किसलिये? ढील देने के लिए और कभी ईमानदार को ग़रीब रखता है, किसलिये? उसकी नेकी और बदला को बढ़ाने के लिए। इसलिए केवल माल की ज़्यादती उसकी ख़ुशी का, और कमी उसकी नाख़ुशी का सबूत नहीं है, यह बार-बार कहना सिर्फ़ बल (ज़ोर) देने के लिये है।

और वह सब से बेहतर रिज़्क़ अता करने वाला है।

४०. और उन सब को अल्लाह उस दिन जमा करके फ़रिश्तों से पूछेगा कि क्या ये लोग तुम्हारी इबादत करते थे।[1]

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَٰٓئِكَةِ أَهَٰٓؤُلَآءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا۟ يَعْبُدُونَ ﴿40﴾

४१. वे कहेंगे कि तू पाक है और हमारा संरक्षक (निगराँ) तो तू है न कि ये, ये लोग जिन्नों की इबादत करते थे, इनमें से ज़्यादातर को उन्हीं पर ईमान था।

قَالُوا۟ سُبْحَٰنَكَ أَنتَ وَلِيُّنَا مِن دُونِهِم ۖ بَلْ كَانُوا۟ يَعْبُدُونَ ٱلْجِنَّ ۖ أَكْثَرُهُم بِهِم مُّؤْمِنُونَ ﴿41﴾

४२. तो आज तुम में से कोई (भी) किसी के लिए (भी किसी तरह के) फ़ायदे-नुक़सान का मालिक न होगा, और हम ज़ालिमों[2] से कह देंगे कि उस आग का अज़ाब चखो जिसे तुम झुठलाते रहे।

فَٱلْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَلَا ضَرًّا وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ ذُوقُوا۟ عَذَابَ ٱلنَّارِ ٱلَّتِى كُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿42﴾

४३. और जब उन के सामने हमारी साफ़-साफ़ आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं कि यह ऐसा इंसान है जो तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों (बुज़ुर्गों) के देवताओं से रोक देना चाहता है (इस के सिवाय कोई बात नहीं) और कहते हैं कि यह तो गढ़ा हुआ बुहतान है, और सच उन के पास आ चुका फिर भी काफ़िर यही कहते रहे कि

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ءَايَٰتُنَا بَيِّنَٰتٍ قَالُوا۟ مَا هَٰذَآ إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَن يَصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ ءَابَآؤُكُمْ وَقَالُوا۟ مَا هَٰذَآ إِلَّآ إِفْكٌ مُّفْتَرًى ۚ وَقَالَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ إِنْ هَٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿43﴾

---

[1] यह मुशरिकों को ज़लील करने के लिए अल्लाह फ़रिश्तों से सवाल करेगा, जैसे रसूल ईसा के बारे में आता है कि अल्लाह उन से भी सवाल करेगा, "क्या तूने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माँ (मरियम) को अल्लाह के सिवाय माबूद बना लेना?" (अल-मायेदः-११६) हज़रत ईसा जवाब देंगे, हे अल्लाह तू पाक है, जिसका मुझे हक़ नहीं था वह बात मैं क्यों कर कह सकता था? जैसे कि सूरः अल-फ़ुरक़ान-१७ में भी बयान हुआ, कि क्या यह तुम्हारे कहने पर तुम्हारी इबादत करते थे ?

[2] ज़ालिमों से मुराद अल्लाह के सिवाय दूसरे के पुजारी हैं, क्योंकि शिर्क (द्वैत) बड़ा ज़ुल्म है और मुशरिक (मिश्रणवादी) सब से बड़े ज़ालिम।

यह तो खुला हुआ जादू है।

وَمَآ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَّذِيْرٍ ﴿44﴾

४४. और इन (मक्कावासियों को) न तो हम ने किताबें अता कर रखी हैं जिन्हें ये पढ़ते हों और न उन के पास आप से पहले कोई सतर्क (आगाह) करने वाला आया।

وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۣ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿45﴾

४५. और इन से पहले के लोगों ने भी हमारी बातों को झुठलाया था और उन्हें हम ने जो दे रखा था ये तो उस के दसवें हिस्से को भी नहीं पहुँचे, तो उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया, (फिर देख) कि मेरे अजाब की क्या (कठोर) हालत हुई।[1]

قُلْ اِنَّمَآ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَفُرَادٰى ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا ۣ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ﴿46﴾

४६. कह दीजिए कि मैं तुम्हें केवल एक ही बात की नसीहत करता हूँ कि तुम अल्लाह के लिए (ख़ालिस तौर से जिद को छोड़कर) दो-दो मिल कर या अकेले-अकेले खड़े होकर ख़्याल तो करो, तुम्हारे इस साथी को कोई जुनून नहीं। वह तो तुम्हें एक बड़े (कड़े) अजाब के आने से पहले आगाह करने वाला है।

قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿47﴾

४७. कह दीजिए कि जो बदला मैं तुम से माँगू वह तुम्हारे लिये है,[2] मेरा बदला तो अल्लाह पर है, वह हर चीज को अच्छी तरह जानता है।

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿48﴾

४८. कह दीजिए कि मेरा रब हक़ (सच्ची वहयी) नाजिल करता है, वह हर छिपी बात (ग़ैब) का जानने वाला है।

---

[1] यह मक्का के मूर्तिपूजकों को बाख़बर किया जा रहा है कि तुम ने झुठलाने और इंकार का जो रास्ता अपनाया है वह बहुत नुक़सानदह है, तुम से पहले की उम्मत भी इसी रास्ते पर चलकर तबाह और बरबाद हुए हैं, जबकि यह उम्मत माल-दौलत, ताक़त-क़ूवत और उम्र में तुम से बढ़कर थे, तुम तो उन के दसवें हिस्से को भी नहीं पहुँचते। इस के बावजूद वह अल्लाह के अजाब से नहीं बच सके, इस बारे में सूर: अहकाफ़ की आयत २६ में बयान किया गया है।

[2] इस में अपनी बेगरज़ी और दुनियावी धन-साधन से अरूचि (बेरग़बती) को जाहिर किया है ताकि उन के दिलों में अगर यह शक पैदा हो कि इस नबूअत के दावे से इसका मतलब कहीं मायामोह (दुनिया की तमन्ना) तो नहीं, तो वह दूर हो जाये।

قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ﴿49﴾

४९. कह दीजिए, सच आ चुका, झूठ न तो पहली बार उभरा न दोबारा उभर सकेगा ।[1]

قُلْ إِن ضَلَلْتُ فَإِنَّمَآ أَضِلُّ عَلَىٰ نَفْسِي ۖ وَإِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوحِيٓ إِلَيَّ رَبِّيٓ ۚ إِنَّهُۥ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ﴿50﴾

५०. कह दीजिए कि अगर मैं भटक जाऊँ तो मेरे भटकने (का भार) मुझ पर ही है और अगर मैं सच्चे रास्ते पर हूँ तो उस वह्यी के सबब जो मेरा रब मुझ पर करता है, वह बड़ा सुनने वाला बड़ा क़रीब है ।

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ فَزِعُوا فَلَا فَوْتَ وَأُخِذُوا مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿51﴾

५१. और अगर आप (वह समय) देखें जबकि ये काफ़िर घबराये फिरेंगे, फिर निकल भागने की कोई हालत न होगी, और क़रीब की जगह से पकड़ लिये जायेंगे ।

وَقَالُوٓا ءَامَنَّا بِهِۦ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿52﴾

५२. और उस वक़्त कहेंगे कि हम इस (क़ुरआन) पर ईमान लाये, लेकिन इतनी दूर जगह से (मतलूब चीज़) कैसे हाथ आ सकती है ।[2]

وَقَدْ كَفَرُوا بِهِۦ مِن قَبْلُ ۖ وَيَقْذِفُونَ بِالْغَيْبِ مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿53﴾

५३. और इस से पहले तो उन्होंने इस से कुफ़्र किया था और दूर-दूर से बिना देखे ही फेंकते रहे ।

وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِم مِّن قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُّرِيبٍ ﴿54﴾

५४. और उनकी इच्छाओं और उन के बीच पर्दा डाल दिया गया जैसेकि इस से पहले भी इन जैसों के साथ किया गया,[3] वे भी (इन्ही की तरह) शक और शुब्हा में (पड़े हुए) थे ।

[1] हक़ से मुराद क़ुरआन और बातिल (अनृत) से मुराद कुफ़्र (अविश्वास) और शिर्क (अनेकेश्वरवाद है) । मतलब है अल्लाह की तरफ़ से अल्लाह का दीन और उसकी किताब क़ुरआन आ गयी है, जिससे बातिल (असत्य) तंग और ख़त्म हो गया है, अब वह सर उठाने लायक़ नहीं रहा ।

[2] تناوش का मतलब पकड़ना है, अब आख़िरत में उन्हें ईमान किस तरह मिल सकता है जबकि दुनिया में उस से भागते रहे, मानो आख़रित ईमान के लिए दुनिया के मुक़ाबले दूर की जगह है, जैसे दूर की चीज़ को पकड़ना मुमकिन नहीं, आख़िरत में ईमान लाने का मौक़ा नहीं ।

[3] यानी पिछले समुदायों (उम्मतों) का ईमान भी उस वक़्त क़ुबूल नहीं किया गया जब वह अज़ाब को देखने के बाद ईमान लाये ।

सूरतु फ़ातिर-३५

سُوْرَةُ فَاطِرٍ

सूरः फ़ातिर मक्का में नाज़िल हुई, इस में पैंतालीस आयतें और पाँच रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. उस अल्लाह के लिए सारी तारीफ़ें हैं जो (सब से पहले) आकाशों और धरती का पैदा करने वाला[1] और दो-दो, तीन-तीन और चार-चार परों वाले फ़रिश्तों को अपना रसूल बनाने वाला है,[2] सृष्टि (मख़लूक़) में जो चाहे ज़्यादा करता है[3] अल्लाह (तआला) बेशक हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۭ يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ①

२. अल्लाह (तआला) जो दया (रहमत) लोगों के लिए खोल दे तो उस का कोई बन्द करने वाला नहीं, और जिस को बन्द करदे उस के बाद उस को कोई शुरू करने वाला नहीं, और वही ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।

مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ②

---

[1] فاطر (फ़ातिर) का मतलब है खोज करने वाला, शुरू में पैदा करने वाला, यह अल्लाह की क़ुदरत की तरफ़ इशारा है कि उस ने आकाश और धरती सब से पहले बिना नमूने के बनाये तो उस के लिये दोबारा इन्सानों को पैदा करना कौन सा कठिन है?

[2] मुराद जिब्रील, मीकाईल, इस्राफ़ील और इज़्राईल फ़रिश्ते हैं जिनको अल्लाह रसूलों (अम्बिया) की तरफ़ या कई बहुत अहम कामों के लिए रसूल बनाकर भेजता है, इन में से किसी के दो, किसी के तीन और किसी के चार पंख हैं जिन के ज़रिये वह धरती पर आते और धरती से आकाश पर जाते हैं।

[3] यानी कुछ फ़रिश्तों के इस से भी ज़्यादा पंख हैं। जैसे कि हदीस में नबी ﷺ ने फ़रमाया मैंने मेराज की रात जिब्रील को उन की हक़ीक़ी शक्ल में देखा, उन के छः सौ पर थे। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरः नजम, बाबु फकान क़ाब क़ौसैने औ अदना) कुछ ने इसे आम रखा है, जिस में आँख, मुँह, नाक और रूप सब की ख़ूबसूरती शामिल है।

يَاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۭ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ڮ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ③

३. हे लोगो! तुम पर जो उपहार (नेमत) अल्लाह (तआला) ने किये हैं उन्हें याद करो। क्या अल्लाह के सिवाय कोई दूसरा भी ख़ालिक है जो तुम्हें आकाश और धरती से रिज़्क़ पहुँचाये? उस के सिवाय कोई माबूद (पूज्य) नहीं तो तुम कहाँ उल्टे जाते हो?

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ④

४. और अगर वे आप को झुठलायें तो आप से पहले के (सभी) रसूल भी झुठलाये जा चुके हैं, और सभी काम अल्लाह ही की तरफ़ लौटाये जाते हैं।

يَاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ⑤

५. हे लोगो! अल्लाह (तआला) का वादा सच्चा है, तुम्हें दुनियावी ज़िन्दगी धोखे में न डाले, और न धोखेबाज (छली शैतान) तुम्हें ग़फ़लत (निश्चिन्तता) में मशगूल (लिप्त) करे।[1]

اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ۭ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۭ ⑥

६. (याद रखो)! शैतान तुम्हारा दुश्मन है तुम उसे दुश्मन जानो, वह तो अपने गिरोह को केवल इसलिए बुलाता है कि वे सब जहन्नम में जाने वाले हो जायें।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ڛ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۧ ⑦

७. जो लोग काफ़िर हुए उन के लिए सख़्त सज़ा है, और जो लोग ईमान लाये और नेकी के काम किये उन के लिए माफ़ी और (अति) अच्छा बदला है।[2]

---

[1] उस के दाव और छल से बचकर रहो, इसलिए कि वह बड़ा धोखेबाज़ है, और उसका मक़सद ही तुम्हें धोखे में रखकर जन्नत से महरूम (वंचित) करना है, यही लफ़्ज़ सूर: लुक़मान ३३ में भी गुज़र चुके हैं।

[2] अल्लाह तआला ने दूसरी जगहों की तरह यहाँ भी ईमान के साथ नेकी के काम की चर्चा करके उस की अहमियत ज़ाहिर किया है ताकि ईमानवाले नेकी के काम से किसी पल बेफ़िक्र न रहें, क्योंकि बड़े बदले का वादा उस ईमान पर ही है जिस के साथ नेक काम होगा।

اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۖ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿8﴾

८. क्या वह इंसान जिस के लिए उस के बुरे काम सुशोभित (मुज़य्यन) कर दिये गये हैं तो वह उन्हें अच्छा समझता है, (क्या वह हिदायत पाने वाले इंसान जैसा है?) (यक़ीन करो) अल्लाह जिसे चाहे भटका देता है और जिसे चाहे हिदायत देता है, तो आप को उन पर दुखी होकर अपनी जान को तकलीफ़ में न डालना चाहिये, ये जो कुछ कर रहे हैं उसे बेशक अल्लाह अच्छी तरह जानता है।

وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ﴿9﴾

९. और अल्लाह ही हवायें चलाता है जो बादलों को उठाती हैं, फिर हम बादलों को सूखी धरती की तरफ़ ले जाते हैं और उस से उस धरती को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा कर देते हैं। इसी तरह दोबारा ज़िन्दा होकर उठना (भी) है।[1]

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ؕ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ؕ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَمَكْرُ اُولٰٓئِكَ هُوَ يَبُوْرُ ﴿10﴾

१०. जो इंसान इज़्ज़त हासिल करना चाहता हो तो अल्लाह (तआला) के लिये ही सारी इज़्ज़त है। तमाम पाक कलिमे उसी की तरफ़ चढ़ते हैं, और नेक अमल उन को ऊँचा करता है, और जो लोग बुराई के दाँव-घात में लगे रहते हैं[2] उन के लिए बड़ा सख़्त अज़ाब है और उन का यह पाखण्ड (मकर) नाश हो जायेगा।

[1] यानी जिस तरह बारिश करके हम सूखी धरती को हरी कर देते हैं, इसी तरह क़यामत के दिन तमाम मुर्दा इन्सानों को भी हम ज़िन्दा कर देंगे। हदीस में आता है कि इंसान का पूरा शरीर (जिस्म) गल जाता है सिर्फ़ रीढ़ की हड्डी का एक छोटा हिस्सा महफ़ूज़ रहता है, इसी से उसकी दोबारा पैदाईश और तख़लीक़ (रचना) होगी। (सहीह बुख़ारी)

[2] छिपे तौर से किसी को नुक़सान पहुँचाने के तरीक़े को मक्र कहते हैं, कुफ़ और शिर्क करना भी मक्र है कि इस तरह से अल्लाह के रास्ते को नुक़सान पहुँचाया जाता है, नबी ﷺ के क़त्ल की जो योजना (प्लान) मक्का के काफ़िर करते रहे वह भी मक्र है, पाखंड (दिखावा) भी मक्र है यह लफ़्ज़ आम है, मक्र के सभी रूपों को शामिल है।

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا ۚ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثٰى وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهٖ ۚ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ إِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ۚ إِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿11﴾

११. (लोगो!) अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से फिर वीर्य (मनी) से पैदा किया,[1] फिर तुम्हें जोड़े-जोड़े (नर-नारी) बना दिया है, नारियों का गर्भ धारण (हामिला) करना और बच्चे का जन्म लेना सभी उस के इल्म में है, और जो लम्बी उम्र वाली उम्र दी जाये और जिस किसी की उम्र घटे वह सब किताब में मौजूद है। अल्लाह (महान) पर यह बात बड़ी आसान है।

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ وَهٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ۚ وَمِنْ كُلٍّ تَأْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿12﴾

१२. और बराबर नहीं दो समुद्र। यह मीठा है प्यास बुझाता है पीने में अच्छा, और वह दूसरा खारी है कड़ुवा, तुम इन दोनों से ताज़ा गोश्त खाते हो और वह गहने निकालते हो जिन्हें तुम पहनते हो, और तुम देखते हो कि बड़ी-बड़ी नवकायें जल को चीरने-फाड़ने वाली[2] उन समुद्रों में हैं ताकि तुम उसकी कृपा (फ़ज़्ल) की खोज करो और ताकि तुम उसका शुक्रिया अदा करो।

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۙ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ﴿13﴾

१३. वह रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल कराता है, और सूरज और चाँद को उसी ने काम में लगा दिया है, हर एक मुक़र्रर मुद्दत तक चल रहे हैं। यही है अल्लाह तुम सबका रब, इसी का मुल्क है और जिन्हें तुम उस के सिवाय पुकार रहे हो वह तो खजूर की गुठली के छिलके के भी मालिक नहीं।[3]

---

[1] यानी तुम्हारे पिता आदम को मिट्टी से फिर इस के बाद तुम्हारी जाति (वंशधारा) को बाक़ी रखने के लिए इन्सान की पैदाइश को वीर्य से सम्बन्धित (मुतअल्लिक़) कर दिया, जो मर्द की पीठ से निकल कर औरत के गर्भाशय (रिहम) में जाता है।

[2] مواخر (मवाख़िर) वह नवकायें जो आते-जाते पानी को चीरते गुज़रती हैं। आयत में बयान दूसरे विषयों का बयान सूरः अल-फ़ुरक़ान में गुज़र चुका है।

[3] यानी इतनी हक़ीर चीज़ के भी मालिक नहीं, न उसे पैदा करने पर क़ुदरत रखते है। قطمير (क़ितमीर) उस झिल्ली को कहते हैं जो खजूर और उस के बीज के बीच होती है, यह पतला सा छिलका गुठली पर लिफ़ाफ़ा (वेष्टन) की तरह चढ़ा रहता है।

إِن تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ ۚ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ ﴿14﴾

१४. अगर तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार सुनते ही नहीं[1] और अगर (मान लिया कि) सुन भी लें तो क़ुबूल नहीं करेंगे, बल्कि क़यामत के दिन तुम्हारे शिर्क का साफ़ नकार देंगे ।[2] और आप को कोई भी (अल्लाह तआला) जैसा जानकार ख़बरें न देगा ।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿15﴾

१५. हे लोगो! तुम अल्लाह के भिखारी हो और अल्लाह ही बेनियाज़ तारीफ़ वाला है ।

إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿16﴾

१६. अगर वह चाहे तो तुम को बरबाद कर दे और एक नयी मख़लूक़ पैदा कर दे ।

وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿17﴾

१७. और यह बात अल्लाह (तआला) के लिए कुछ कठिन नहीं ।

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ وَإِن تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۗ إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۚ وَمَن تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿18﴾

१८. और कोई भी बोझ उठाने वाला दूसरों का बोझ नही उठायेगा, और अगर कोई भारी बोझ वाला अपना भार उठाने के लिए किसी दूसरे को बुलायेगा तो वह उसमें से कुछ भी न उठा सकेगा चाहे क़रीबी रिश्तेदार ही हो, तू सिर्फ़ उन्हीं को आगाह कर सकता है जो बिन देखे ही अपने रब से डरते हैं और नमाज़ नियमित रूप से पढ़ते हैं, और जो पाक हो जाये वह अपने ही फ़ायदे के लिए पाक होगा, और लौटना अल्लाह ही की तरफ़ है ।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ﴿19﴾

१९. और अंधा और आँखों वाला बराबर नहीं ।

[1] यानी अगर तुम उन्हें कठिनाईयों में पुकारो तो वह तुम्हारी गुहार सुनते ही नहीं हैं, क्योंकि वह जड़ हैं या मनों मिट्टी के नीचे गड़े हुए ।

[2] इस आयत से यह भी मालूम होता है कि अल्लाह के सिवाय जिन की इबादत की जाती है वह सब पत्थर की मूर्तियाँ ही नहीं होंगी बल्कि उन में समझ वाले (फ़रिश्ते, जिन्न, शैतान और नेक लोग) भी होंगे, तब ही तो वे इंकार करेंगे, और यह भी मालूम हुआ कि उन्हें ज़रूरत के पूरा करने के लिए पुकारना शिर्क है ।

२०. और न अंधेरे और न रौशनी।

وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ﴿20﴾

२१. और न छाया और न धूप।

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ﴿21﴾

२२. और जिन्दा व मुर्दा बराबर नहीं हो सकते, और अल्लाह (तआला) जिस को चाहता है सुनवा देता है, और आप उन लोगों को नहीं सुना सकते जो क़ब्रों में हैं।[1]

وَمَا يَسْتَوِي الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُوْرِ ﴿22﴾

२३. आप तो केवल डराने वाले हैं।

اِنْ اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ ﴿23﴾

२४. हम ने ही आप को हक़ देकर ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है, और कोई उम्मत ऐसी नहीं हुई जिस में कोई डराने वाला न गुज़रा हो।

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۭ وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ﴿24﴾

२५. और अगर ये लोग आप को झुठला दें तो जो लोग इनसे पहले गुज़रे हैं उन्होंने भी झुठलाया था, उन के पास भी उन के पैग़म्बर मोजिज़े, सहीफ़े और वाजेह किताबें लेकर आये थे।

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿25﴾

२६. फिर मैंने उन काफ़िरों को पकड़ लिया तो मेरा अज़ाब कैसा हुआ।

ثُمَّ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿26﴾

२७. क्या आप ने इस बात की तरफ़ ध्यान नहीं दिया कि अल्लाह (तआला) ने आकाश से पानी उतारा फिर हम ने उस के ज़रिये कई रंगों के फल निकाले,[2] और पहाड़ों के कई हिस्से हैं,

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهَا ۭ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ﴿27﴾

---

[1] यानी जिस तरह समाधियों (क़ब्रों) में मुर्दा लोगों को कोई बात सुनाई नहीं जा सकती, इसी तरह जिन के दिलों को कुफ़्र ने मुर्दा कर दिया है, हे रसूल! (ﷺ) तू उन्हें हक़ की बात नहीं सुना सकता। मतलब यह हुआ कि जिस तरह मरने और गड़ने के बाद मुर्दा कोई फ़ायेदा नहीं उठा सकता, इसी तरह काफ़िर और मुशरिक जिन के नसीब में बदनसीबी लिखी है, दावत और सच बात से उन्हें फ़ायेदा नहीं होता।

[2] यानी जिस तरह ईमानदार और काफ़िर, नेक लोग और बुरे लोग दोनों तरह के लोग हैं, इसी तरह दूसरे मख़लूक़ में भी क़िस्म और नौईयत है। मिसाल के तौर पर फलों के रंग भी कई हैं, मज़ा और ख़ुश्बू में भी आपस में मुख़्तलिफ़, यहाँ तक कि एक ही फल के भी कई-कई रंग और मज़े हैं, जैसे खजूर है, अंगूर है, सेब है और दूसरे कुछ फल हैं।

सफेद और लाल कि उन के भी रँग कई है और बहुत गहरे काले।

وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ۗ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ (28)

२८. और इसी तरह इंसानों और जानवरों और चौपायों में भी कुछ ऐसे हैं कि उन के रंग अलग-अलग हैं, अल्लाह से उस के वही बंदे डरते हैं जो इल्म रखते हैं। हक़ीक़त (वास्तव) में अल्लाह (तआला) बहुत बड़ा माफ़ करने वाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ (29)

२९. जो लोग अल्लाह की किताब का पाठ (तिलावत) करते है और नमाज़ नियमित रूप (पाबन्दी) से पढ़ते हैं,[1] और जो कुछ हम ने उन्हें अता (प्रदान) किया है उस में से छिपे और खुले तौर से ख़र्च करते हैं, वे ऐसे कारोबार के उम्मीदवार हैं जो कभी भी नुक़सान (हनि) में न होगा।

لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۗ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ (30)

३०. ताकि उन के बदले पूरी तरह से उन को दे और उन को अपनी कृपा (फ़ज़्ल) से और ज़्यादा अता करे। बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला क़द्रदान है।

وَالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ (31)

३१. और यह किताब जो हम ने आप के पास वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा (ज़रिये) भेजी है यह पूरी तरह से सच है जो अपने से पहले की किताबों की भी पुष्टि (तसदीक़) करती है। बेशक अल्लाह (तआला) अपने बंदों की पूरी जानकारी रखने वाला अच्छी तरह देखने वाला है।

---

[1] नमाज़ के क़ायम करने से मुराद होता है नमाज़ उस ढंग से पढ़ना जो मतलूब (उसका मक़सद) है, यानी मुक़र्रर (निर्धारित) वक़्त और उसके वाजिबात, अरकान, ख़ुशूअ-ख़ुज़ूअ के साथ पढ़ना।

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۖ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ وَمِنْهُم مُّقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿32﴾

३२. फिर (इस) किताब[1] का वारिस हम ने उन लोगों को बनाया जिन को हम ने अपने बन्दों में से चुन लिया। फिर कुछ तो अपनी जानों पर जुल्म करने वाले हैं[2] और कुछ औसत दर्जे के हैं और कुछ उन में से अल्लाह की तौफ़ीक़ से नेकी में तरक़्क़ी करते चले जाते हैं, यह बड़ी कृपा (फ़ज़्ल) है।

جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿33﴾

३३. हमेशा रहने के वे बाग़ हैं जिन में ये लोग प्रवेश (दाख़िल) करेंगे, उस में वे सोने के कंगन और मोती पहनाये जायेंगे और कपड़े वहाँ उन के रेशम के होंगे।[3]

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۖ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ﴿34﴾

३४. और कहेंगे कि अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है जिस ने हम से ग़म दूर किया। बेशक हमारा रब बड़ा माफ़ करने वाला और क़दर करने वाला है।

الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِن فَضْلِهِ لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ وَلَا يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوبٌ ﴿35﴾

३५. जिसने हमें अपनी कृपा (फ़ज़्ल) से हमेशा रहने वाली जगह में ला उतारा, जहाँ न हम को कोई कठिनाई पहुँचेगी और न हम को कोई थकान पहुँचेगी।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُم مِّنْ عَذَابِهَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ ﴿36﴾

३६. और जो लोग काफ़िर हैं उन के लिए नरक की आग है, न तो उनकी मौत ही आयेगी कि मर ही जायें और न नरक की सज़ा ही उन से कम की जायेगी। हम हर काफ़िर को ऐसी ही

[1] किताब से मुराद पाक क़ुरआन और चुने हुए बन्दों से मोहम्मद ﷺ की उम्मत है, यानी हम ने इस क़ुरआन का वारिस मोहम्मद ﷺ के पैरोकारों को बनाया है।

[2] मोहम्मद ﷺ के पैरोकारों के तीन क़िस्में बताई गई हैं, यह पहली क़िस्म है, जिस से मुराद ऐसे लोग हैं जो कुछ फ़राईज़ में सुस्ती और कुछ हराम काम कर लेते हैं, या कुछ के यहाँ मुराद वे हैं जो छोटी-छोटी ग़ल्तियाँ कर जाते हैं, उन्हें अपने ऊपर ज़ुल्म करने वाला इसलिए कहा कि वह अपने कुछ सुस्ती के सबब ख़ुद को उस ऊँचे पद से महरूम कर लेंगे जो बाक़ी दो क़िस्मों को हासिल होंगे।

[3] हदीस में आता है कि रेशम और दीबाज दुनिया में न पहनो, इसलिए कि जो इसे दुनिया में पहनेगा वह उसे आख़िरत (परलोक) में नहीं पहनेगा। (सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम, किताबुल लिबास)

यातना देते हैं।

وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ فِيهَا ۚ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۚ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُم مَّا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَن تَذَكَّرَ وَجَاءَكُمُ النَّذِيرُ ۖ فَذُوقُوا فَمَا لِلظَّالِمِينَ مِن نَّصِيرٍ ﴿37﴾

३७. और वे लोग उस में चिल्लायेंगे कि हमारे रब! हम को निकाल ले हम अच्छे अमल करेंगे उन आमाल के अलावा जो किया करते थे। (अल्लाह तआला कहेगा) कि क्या हम ने तुम्हें इतनी उम्र नहीं दी थी कि जिस को समझना होता[1] वह समझ सकता और तुम्हारे पास डराने वाला भी पहुँचा था[2] तो मज़ा चखो कि (ऐसे) ज़ालिमों का कोई मदद करने वाला नहीं है।

إِنَّ اللَّهَ عَالِمُ غَيْبِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿38﴾

३८. बेशक अल्लाह (तआला) जानने वाला है आकाशों और धरती की छिपी चीज़ों का, बेशक वही जानने वाला है सीनों की बातों का।

هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ ۚ فَمَن كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ﴿39﴾

३९. वही ऐसा है जिस ने तुम्हें धरती पर बसाया, तो जो इंसान कुफ़्र (इंकार) करेगा उस के कुफ़्र का बोझ उसी पर पड़ेगा, और काफ़िरों के लिए उन का कुफ़्र उन के रब के क़रीब क्रोध ही बढ़ने की वजह बनता है, और काफ़िरों के लिए उनका कुफ़्र नुक़सान ही को बढ़ाने का सबब होता है।

---

[1] इस से मुराद कितनी उम्र है? भाष्यका ! (मुफ़स्सिरों) ने अलग-अलग उम्र का बयान किया है। कुछ ने कुछ हदीसों से दलील देते हुए कहा है कि ६० साल की उम्र मुराद है। (इब्ने कसीर) लेकिन हमारे ख़्याल से उम्र का त ...न सही नहीं है, इसलिए कि उम्र कई होती है, कोई जवानी में, कोई अधेड़ उम्र में और को: वुढ़ापे में मरता है, फिर यह समय भी गुज़रे पल की तरह कम नहीं होते बल्कि हर मुद्दत ख़: । तौर से लम्बी होती है। मिसाल के तौर पर जवानी का ज़माना व्यस्क (बालिग़) होने से अधेड़ होने तक और अधेड़ होने का समय वुढ़ापे तक और वुढ़ापे का मौत तक रहता है। वि ... सोच-विचार, नसीहत हासिल करने और प्रभावित (मुतास्सिर) होने के लिए कुछ साल, ...सी को उस से ज़्यादा और किसी को इस से भी ज़्यादा वक़्त मिलता है, और सब से यह स... कहना सही होगा कि हम ने तुझे इतनी उम्र दी फिर तूने सच (हक़) को समझने और उसे ह... करने की कोशिश क्यों नहीं की?

[2] इस से मुराद आख़िरी रसूल मोहम्मद ﷺ

قُلْ أَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ ٱلَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ أَرُونِى مَاذَا خَلَقُوا۟ مِنَ ٱلْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ أَمْ ءَاتَيْنَٰهُمْ كِتَٰبًا فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ إِن يَعِدُ ٱلظَّٰلِمُونَ بَعْضُهُم بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا (40)

४०. (आप) कहिए कि तुम अपने (मुक़र्रर किये हुए) साझीदारों का हाल तो बताओ जिन को तुम अल्लाह के सिवाय पुकारा करते हो, यानी मुझ को यह बताओ कि उन्होंने धरती का कौन-सा (हिस्सा) बनाया है या उनका आकाश में कुछ साझा है, या हम ने उन को कोई किताब दी है कि यह उस के सबूत पर मज़बूत हों, बल्कि यह ज़ालिम एक-दूसरे से केवल धोखे की बातों का वादा करते आते हैं।

إِنَّ ٱللَّهَ يُمْسِكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ أَن تَزُولَا ۚ وَلَئِن زَالَتَآ إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّنۢ بَعْدِهِۦٓ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا (41)

४१. यक़ीनी बात है कि अल्लाह (तआला) आकाशों और धरती को थामे हुए है कि वह टल न जायें और अगर वह टल जायें तो फिर अल्लाह के अलावा कोई उनको थाम भी नहीं सकता। वह बड़ा सहनशील माफ़ करने वाला है।

وَأَقْسَمُوا۟ بِٱللَّهِ جَهْدَ أَيْمَٰنِهِمْ لَئِن جَآءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ إِحْدَى ٱلْأُمَمِ ۖ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا (42)

४२. और इन काफ़िरों ने बड़ी पक्की क़सम खायी थी कि अगर उन के पास कोई डराने वाला आया तो वह हर उम्मत से ज़्यादा हिदायत हासिल करने वाले बनेंगे।[1] फिर जब उन के पास एक पैग़म्बर आ पहुँचा तो उनकी नफ़रत में ही प्रगति (तरक़्क़ी) हुई।

ٱسْتِكْبَارًا فِى ٱلْأَرْضِ وَمَكْرَ ٱلسَّيِّئِ ۚ وَلَا يَحِيقُ ٱلْمَكْرُ ٱلسَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِۦ ۚ فَهَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ ٱلْأَوَّلِينَ ۚ فَلَن تَجِدَ لِسُنَّتِ ٱللَّهِ تَبْدِيلًا ۖ وَلَن تَجِدَ لِسُنَّتِ ٱللَّهِ تَحْوِيلًا (43)

४३. दुनिया में अपने को बड़ा समझने के कारण और उन के बुरे प्रयत्नों (तदबीरों) के कारण, और बुरी तदबीर करने वालों की सज़ा उन तदबीर करने वालों को ही भुगतना पड़ता है, तो क्या ये उसी सुन्नत के इंतेज़ार में हैं जो पहले के लोगों के साथ होती रही है, तो आप

[1] इस में अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि मोहम्मद ﷺ के नबी बनाकर भेजे जाने से पहले यह मूर्तियों के पुजारी क़समें खा खाकर कह रहे थे कि अगर हमारी तरफ़ कोई नबी आया तो हम उसका स्वागत (इस्तक़बाल) करेंगे और उस पर ईमान लाने में एक नमूना (आदर्श) पेश करेंगे। यह विषय दूसरी जगहों पर भी बयान है, जैसे सूर: अंआम-१५६, १५७ और सूर: अस्साफ़्फ़ात-१६७-१७०।

अल्लाह की रीति में कभी बदलाव नहीं पायेंगे, और आप अल्लाह की रीति को कभी तबदील होती हुई न पायेंगे।

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِن شَيْءٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ﴿44﴾

४४. क्या ये लोग धरती में चले-फिरे नहीं जिस में वह देखते-भालते कि जो लोग उन से पहले गुज़रे हैं उनका नतीजा क्या हुआ, यद्यपि (अगरचे) ताक़त में वे लोग इन से ज़्यादा थे, और अल्लाह ऐसा नहीं है कि कोई चीज उसे हरा दे न आकाशों में और न धरती में, वह बड़ा इल्म (ज्ञान) वाला क़ुदरत वाला है।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَىٰ ظَهْرِهَا مِن دَابَّةٍ وَلَٰكِن يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا ﴿45﴾

४५. और अगर अल्लाह (तआला) लोगों को उन के अमल की वजह से तुरन्त पकड़ने लगता तो सारी धरती पर एक जान भी न छोड़ता,[1] लेकिन अल्लाह (तआला) उनको एक नियमित (महदूद) समय तक मौक़ा दे रहा है, तो जब उनका समय आ पहुँचेगा तो अल्लाह (तआला) अपने बन्दों को ख़ुद देख लेगा।

सूरतु यासीन-३६

سُورَةُ يسٓ

सूरः यासीन* मक्का में नाज़िल हुई, इस में तिरासी आयतें और पाँच रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

---

[1] इन्सानों को तो उन के पापों के बदले और जानवरों को इन्सानों के साथ रहने के सबब, या मतलब यह है कि सारी दुनिया वालों को नाश कर देता, इन्सानों को भी और जिन जानवरों और रोज़ी के वे मालिक हैं, उनको भी, या मतलब यह है कि आकाश से वर्षा का क्रम (सिलसिला) बन्द कर देता जिससे धरती पर चलने वाले सभी जानदार मर जाते।

* सूरः यासीन की विशेषता (फ़ज़ीलत) में बहुत सी रवायतें प्रसिद्ध (मशहूर) हैं। इन्हीं में जैसे, यह क़ुरआन का दिल है, इसे उस पर पढ़ो जो मौत के क़रीब हो, इत्यादि (वग़ैरह)। लेकिन बयान क्रम (सनद) के आधार पर कोई सही नहीं, कुछ पूरी तरह बनावटी हैं या कुछ कमज़ोर हैं। "क़ुरआन के दिल" वाली रिवायत (बयान) को हदीस के आलिम अलबानी ने बनावटी (गढ़ी हुई) कहा है। (अद-दईफ़ा हदीस नम्बर १६९)

यٰسٓ ﴿1﴾

१. यासीन ।[1]

وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ﴿2﴾

२. क़सम है हिक्मत वाले (और मज़बूत) क़ुरआन की।

اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿3﴾

३. कि यक़ीनन आप पैग़म्बरों में से हैं।[2]

عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿4﴾

४. सीधे रास्ते पर हैं।

تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿5﴾

५. (यह क़ुरआन अल्लाह) ज़बरदस्त बड़े रहम करने वाले की तरफ़ से नाज़िल किया गया है।

لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿6﴾

६. ताकि आप ऐसे लोगों को आगाह करें जिन के बाप-दादा नहीं डराये गये थे, तो (उसी सबब से) ये लोग ग़ाफ़िल हैं।

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿7﴾

७. उन में से ज़्यादातर लोगों पर (यह) बात साबित हो चुकी है, अत: ये लोग ईमान नहीं लायेंगे।[3]

---

[1] कुछ ने इसका मतलब 'हे इंसान' या हे मानव किया है, कुछ ने इसे नबी ﷺ का अच्छे नाम और कुछ ने उसे अल्लाह के अच्छे नामों में से बताया है, लेकिन यह सभी क़ौल बिना दलील के (अप्रमाणित) हैं। यह भी उन हरूफ़े मुक़त्तआत (विभिन्न अक्षरों) में ही से है जिसका मतलब और मानी अल्लाह के सिवाय कोई नहीं जानता।

[2] मुश्रेकीन (मूर्तिपूजक) नबी ﷺ की रिसालत (आप के रसूल होने) का इंकार करते थे और कहते थे कि (لَسْتَ مُرْسَلًا) (अर्रअद-४३) "तू तो अल्लाह की तरफ़ से रसूल ही नहीं है" अल्लाह ने उन के जवाब में पाक क़ुरआन की क़सम लेकर फ़रमाया : "आप बेशक उस के पैग़म्बरों में से हैं।" इस में आप ﷺ की इज़्ज़त और अज़मत का इज़हार है, यह भी आप के सिफ़्तों और फ़ज़ीलतों में से है कि अल्लाह ने आप ﷺ की रिसालत को साबित करने के लिए क़सम खाई ﷺ।

[3] जैसे अबू जेहल, अबू लहब, उतबा और शैबा वग़ैरह। बात साबित होने का मतलब अल्लाह तआला का यह वादा है कि "मैं नरक को जिन्नों और इन्सानों से भर दूँगा।" (अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰अस्सज्दा-१३) शैतान को भी सम्बोधित (मुख़ातिब) करते हुए अल्लाह ने फ़रमाया था : "मैं नरक को तुझ से और तेरे अनुगामियों (मानने वालों) से भर दूँगा।" (साद-८४) यानी इन लोगों ने शैतान के पीछे लगकर ख़ुद को नरक का पात्र बना लिया, अल्लाह ने तो उन्हें इच्छा का अधिकार (हक़) और आज़ादी दी थी, उन्होंने इस का ग़लत इस्तेमाल किया और यूँ नरक का ईंधन बन गये यह नहीं कि अल्लाह ने बलपूर्वक उन को ईमान से वंचित (महरूम) रखा क्योंकि मजबूर करने की हालत में तो वह सज़ा के हक़दार ही न हो पाते।

إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُم مُّقْمَحُونَ ﴿8﴾

८. हम ने उनकी गर्दनों में तौक डाल दिये हैं फिर वह ठुड्डियों तक हैं, जिससे उन के सिर ऊपर की तरफ़ उलट गये हैं।

وَجَعَلْنَا مِن بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿9﴾

९. और हम ने एक आड़ उन के सामने कर दी और एक आड़ उन के पीछे कर दी, जिस से हमने उनको ढांक दिया तो वे नहीं देख सकते।

وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿10﴾

१०. और उन के बारे में आप का डराना या न डराना दोनों बराबर है, ये ईमान नहीं लायेंगे।[1]

إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ﴿11﴾

११. बस आप तो केवल ऐसे इंसान को डरा सकते हैं जो नसीहत पर चले और रहमान (अल्लाह) से बिन देखे डरे, तो आप उसको माफ़ और अच्छे प्रतिदान (अज्र) की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ ﴿12﴾

१२. बेशक हम मुर्दों को जिन्दा करेंगे,[2] और हम लिखते जाते हैं वे अमल भी जिनको लोग आगे भेजते हैं[3] और उन के वह अमल भी जिन को पीछे छोड़ जाते हैं, और हर बात को हमने एक खुली किताब में संकलन (ज़ब्त) कर रखा है।[4]

وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ إِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿13﴾

१३. और आप उन के सामने एक मिसाल (यानी एक) बस्ती वालों की कहानी (उस समय की) बयान कीजिए, जबकि उस बस्ती में कई रसूल आये।

---

[1] जो अपने करतूतों की वजह से गुमराही के उस जगह पर पहुँच जायें, उनको होशियार करना बेकार होता है।

[2] यानी क़यामत के दिन। यहाँ मुर्दों को जिन्दा करने की चर्चा से यह इशारा करना मक़सद है कि अल्लाह तआला काफ़िरों में जिस का दिल चाहता है जिन्दा कर देता है जो कुफ़्र और गुमराह होने के सबब मुर्दा हो चुके होते हैं, फिर वह हिदायत और ईमान को अपना लेते हैं।

[3] مَا قَدَّمُوا से वह अमल मुराद है जो इंसान अपने जीवन में करता है और آثَارَهُم से वह अमल जिन के अमली नमूने (अच्छे व बुरे) वह दुनिया में छोड़ जाता है और उस की मौत के बाद उस की पैरवी में लोग वे अमल करते हैं।

[4] इस से मुराद लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तक) है और कुछ ने आमालनामा मुराद लिया है।

१४. जबकि हम ने उन के पास दो को भेजा, तो उन लोगों ने (पहले) उन दोनों को झुठलाया फिर हम ने तीसरे से समर्थन (ताईद) दिया तो उन तीनों ने कहा कि हम तुम्हारे पास भेजे गये हैं ।[1]

إِذْ أَرْسَلْنَآ إِلَيْهِمُ ٱثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوٓا۟ إِنَّآ إِلَيْكُم مُّرْسَلُونَ ﴿14﴾

१५. उन लोगों ने कहा कि तुम तो हमारी तरह साधारण (आम) इंसान हो, और रहमान (दयालु) ने कोई चीज नाज़िल नहीं की, तुम तो केवल झूठ बोलते हो ।

قَالُوا۟ مَآ أَنتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَمَآ أَنزَلَ ٱلرَّحْمَٰنُ مِن شَىْءٍ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ ﴿15﴾

१६. उन रसूलों ने कहा कि हमारा रब जानता है कि बेशक हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गये हैं ।

قَالُوا۟ رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّآ إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ ﴿16﴾

१७. और हमारा फ़र्ज तो केवल वाज़ेह तौर से पहुँचा देना है ।

وَمَا عَلَيْنَآ إِلَّا ٱلْبَلَٰغُ ٱلْمُبِينُ ﴿17﴾

१८. उन्होंने कहा कि हम तो तुम्हें अशुभ समझते हैं, अगर तुम न रूके तो हम तुम्हें पत्थरों से मार कर तुम्हारा काम ख़त्म कर देंगे और तुम को हमारी तरफ़ से कड़ा अज़ाब पहुँचेगा ।

قَالُوٓا۟ إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۖ لَئِن لَّمْ تَنتَهُوا۟ لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُم مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿18﴾

१९. उन (रसूलों) ने कहा कि तुम्हारी नहूसत तो तुम्हारे साथ ही लगी हुई है, क्या उसको (अशुभ समझते हो) कि तुम को शिक्षा दी जाये, बल्कि तुम तो हद से तजावुज़ करने वाले हो ।

قَالُوا۟ طَٰٓئِرُكُم مَّعَكُمْ ۚ أَئِن ذُكِّرْتُم ۚ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ﴿19﴾

२०. और एक इंसान उस नगर के आख़िरी छोर से दौड़ता हुआ आया, कहने लगा कि हे मेरी क़ौम (समुदाय) के लोगो! इन रसूलों (संदेष्टाओं) के रास्ते पर चलो ।[2]

وَجَآءَ مِنْ أَقْصَا ٱلْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ قَالَ يَٰقَوْمِ ٱتَّبِعُوا۟ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿20﴾

---

[1] यह तीन रसूल कौन थे? भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) ने उन के कई नाम बयान किये हैं, लेकिन नाम सहीह सनद से साबित नहीं हैं । कुछ मुफ़स्सिरों का ख़्याल है कि यह पैग़म्बर ईसा के भेजे हुए दूत थे जो उन्होंने अल्लाह के हुक्म से एक बस्ती में दीन की दावत-तबलीग़ के लिए भेजे थे, बस्ती का नाम अंताकिया था ।

[2] यह इंसान मुसलमान था, जब उसे पता चला कि जाति पैग़म्बरों की दावत को नही अपना रही है तो उस ने आकर रसूलों का पक्ष लिया और उन की इत्तेबा पर प्रोत्साहित (आमादा) किया ।

२१. ऐसे लोगों के रास्ते पर चलो जो तुम से कोई बदला नहीं माँगते और वे सच्चे रास्ते पर हैं।

اتَّبِعُوا مَن لَّا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَهُم مُّهْتَدُونَ (21)

२२. और मुझे क्या हो गया है कि मैं उसकी इबादत न करूँ, जिस ने मुझे पैदा किया और तुम सब उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे।

وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ (22)

२३. क्या मैं उसे छोड़ ऐसों को माबूद बना लूँ कि अगर (अल्लाह) दयालु (रहमान) मुझे कोई नुक़सान पहुँचाना चाहे, तो उनकी सिफ़ारिश मुझे कुछ भी फ़ायेदा न पहुँचा सके और न वह मुझे बचा सकें।[1]

أَأَتَّخِذُ مِن دُونِهِ آلِهَةً إِن يُرِدْنِ الرَّحْمَٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنقِذُونِ (23)

२४. फिर तो मैं निश्चय (यक़ीनी) खुली गुमराही में हूँ।

إِنِّي إِذًا لَّفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ (24)

२५. मेरी सुनो! मैं तो (साफ़ दिल से) तुम सब के रब पर ईमान ला चुका।

إِنِّي آمَنتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ (25)

२६. (उससे) कहा गया कि जन्नत में चला जा, कहने लगा, काश कि मेरी जाति को भी ज्ञान (इल्म) हो जाता।

قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۖ قَالَ يَا لَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ (26)

२७. कि मुझे मेरे रब ने माफ़ कर दिया और मुझे इ़ज़्ज़तदार इंसानों में से कर दिया।[2]

بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ (27)

---

[1] यह उन झूठे माबूदों की मजबूरी का स्पष्टीकरण (वज़ाहत) है, जिनकी पूजा उसकी जाति करती थी और शिर्क की इस गुमराही से निकालने के लिए रसूल उनकी तरफ़ भेजे गये थे। "न बचा सकें" का मतलब है कि अगर अल्लाह मुझे नुक़सान वाला करना चाहे तो यह बचा नहीं सकते।

[2] यानी जिस ईमान और तौहीद की वजह से मुझे रब ने माफ़ कर दिया, काश मेरी जाति इस बात को जान ले ताकि वे भी ईमान और तौहीद (अद्वैतवाद) को अपनाकर अल्लाह की क्षमा और उसकी नेमतों के पात्र (मुसतहिक़) हो जाये। इस तरह वह मरने के बाद भी अपनी जाति का ख़ैरख़्वाह रहा। एक सच्चे मोमिन को ऐसा ही होना चाहिए कि वह हर पल लोगों का भला करे, उनको सही हिदायत दे गुमराह न करे, लोग उसे जो चाहें कहें और जैसा व्यवहार (सुलूक) चाहें करें यहाँ तक कि उसे मार डालें।

२८. और उस के बाद हम ने उसकी जाति पर आकाश से कोई सेना नहीं नाज़िल की, और न इस तरह हम नाज़िल करते हैं।

وَمَآ أَنزَلْنَا عَلَىٰ قَوْمِهِۦ مِنۢ بَعْدِهِۦ مِن جُندٍ مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنزِلِينَ (28)

२९. वह तो केवल एक जोरदार चीख़ थी कि अचानक वह सब के सब बुझ-बुझा गये।

إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَٰحِدَةً فَإِذَا هُمْ خَٰمِدُونَ (29)

३०. (ऐसे) बन्दों पर अफ़सोस! कभी भी कोई रसूल उन के पास नहीं आया जिसका मज़ाक उन्होंने न उड़ाया हो।

يَٰحَسْرَةً عَلَى ٱلْعِبَادِ ۚ مَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا۟ بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ (30)

३१. क्या उन्होंने नहीं देखा कि उन से पहले बहुत से समुदायों को हम ने हलाक कर दिया कि वे उनकी तरफ़[1] नहीं लौटेंगे।

أَلَمْ يَرَوْا۟ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ ٱلْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ (31)

३२. और नहीं है कोई समूह लेकिन यह कि वह जमा होकर हमारे सामने पेश किया जायेगा।

وَإِن كُلٌّ لَّمَّا جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ (32)

३३. और उन के लिए एक निशानी मुर्दा (सूखी) धरती है जिसको हम ने जिन्दा कर दिया और उस से अन्न (दाना) निकाल दिया जिस में से वे खाते हैं।

وَءَايَةٌ لَّهُمُ ٱلْأَرْضُ ٱلْمَيْتَةُ أَحْيَيْنَٰهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ (33)

३४. और हम ने उस में खजूरों के और अंगूरों के बाग़ात पैदा कर दिये,[2] और जिन में हम ने चश्मे भी जारी कर दिये हैं।

وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّٰتٍ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَٰبٍ وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ ٱلْعُيُونِ (34)

---

[1] इस में मक्का के रहने वालों के लिये चेतावनी (तंबीह) है कि रिसालत को झुठलाने की वजह से पिछली जातियों की तबाही हुई, यह भी तबाह हो सकते हैं।

[2] यानी बेजान धरती को जिन्दा करके हम ने खाने के लिये केवल अन्न ही नहीं उगाये बल्कि मज़ा के लिए कई तरह के फल भी ज़्यादा तादाद से पैदा करते हैं, यहाँ सिर्फ़ दो फलों की चर्चा इसलिए की गई कि यह बहुत फ़ायदेमंद है और अरबों को रूचिकर (मरग़ूब) भी, और इनकी उपज (पैदाइश) भी अरब में ज़्यादा है, फिर अन्न की चर्चा पहले की, क्योंकि उसकी उपज भी ज़्यादा है और खाद्यान्न (गिज़ा) होने की वजह से उसका फ़ायेदा भी मुत्तफ़क़। जब तक इन्सान रोटी, चावल वग़ैरा खाद्यान्न से अपना पेट नहीं भरता सिर्फ़ फल से उसकी खाने की ज़रूरत पूरी नहीं होती।

لِيَأْكُلُوا مِن ثَمَرِهِ ۙ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿35﴾

३५. ताकि (लोग) इस के फल खायें,[1] और उन के हाथों ने उसको नहीं बनाया। फिर क्यों शुक्रिया अदा नहीं करते।

سُبْحَانَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ﴿36﴾

३६. वह पाक ज़ात है जिस ने हर चीज के जोड़े पैदा किये, चाहे वह धरती से उगायी हुई चीजें हों, चाहे ख़ुद उनकी अपनी जाति (वजूद) हो, चाहे वे (चीजें) हों जिन्हें ये जानते भी नहीं।[2]

وَآيَةٌ لَّهُمُ اللَّيْلُ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُم مُّظْلِمُونَ ﴿37﴾

३७. और उन के लिए एक निशानी रात है, जिस से हम दिन को खींच देते हैं तो अचानक वे अंधेरे में रह जाते हैं।

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿38﴾

३८. और सूरज के लिए जो मुक़र्रर (निर्धारित) रास्ते है वह उसी पर चलता रहता है।[3] यह है मुक़र्रर किया हुआ ज़बरदस्त आलिम (ज्ञानी) (अल्लाह तआला) का।

وَالْقَمَرَ قَدَّرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ﴿39﴾

३९. और चाँद की हम ने मंज़िलें मुक़र्रर कर रखी हैं,[4] यहाँ तक कि वह घूम फिर कर पुरानी डाली की तरह हो जाती है।

---

[1] यानी कुछ जगह पर चश्मा (स्रोत) भी जारी करते हैं जिस के पानी से पैदा होने वाले फल लोग खायें।

[2] यानी इन्सानों के बराबर धरती की हर पैदावार में हम ने नर-मादा दोनों बनाया है, इन के सिवाय आकाशों में और धरती की गहराईयों में भी जो चीजें तुम से छिपी हैं, जिनका इल्म तुम नहीं रखते, उन में भी जोड़ा (नर-मादा) की यह व्यवस्था (एहतेमाम) हम ने रखी है। इसलिए सभी मख़लूक़ जोड़ा-जोड़ा है, वनस्पति (नबातात) में भी नर-मादे की व्यवस्था है यहाँ तक कि दुनियावी जीवन परलोक (आख़िरत) के जीवन के लिये जोड़ा की तरह है और यह आख़िरत के जीवन के लिए एक अक़्ली दलील भी है, केवल एक अल्लाह है जो मख़लूक़ की इस विशेषता (ख़ुसूसियत) और दूसरी सभी कमियों से पाक है, वह अकेला है जोड़ा नहीं।

[3] यानी अपनी धुरी (मदार) पर चलता रहता है जो अल्लाह ने उसके लिए निर्धारित (मुक़र्रर) किया है, इसी से अपनी यात्रा शुरू करता और वहीं ख़त्म करता है, इससे इधर-उधर नहीं होता कि किसी ग्रह से टकरा जाये।

[4] चाँद की २८ मंज़िलें हैं, नित्य दिन एक मंज़िल पार करता है, फिर दो रात ग़ायब रहकर तीसरी रात निकलता है।

لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِىْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۭ وَكُلٌّ فِىْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ (40)

४०. न सूरज के वश में है कि चाँद को पकड़े और न रात दिन से आगे बढ़ जाने वाली है, और सब के सब आकाश में तैरते फिरते हैं।

وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ (41)

४१. और उन के लिए एक निशानी (यह भी) है कि हम ने उनकी औलाद को भरी हुई नाव में सवार किया।

وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ (42)

४२. और इन के लिए उसी जैसी दूसरी चीजें पैदा कीं जिन पर ये सवार होते हैं।[1]

وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ (43)

४३. और अगर हम चाहते तो उन्हें डुबा देते फिर न कोई उनका मदद करने वाला होता और न बचाये जाते।

اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ (44)

४४. लेकिन हम अपनी तरफ़ से दया (रहमत) करते हैं और एक मुद्दत तक के लिए उन्हें फ़ायेदा दे रहे हैं।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ (45)

४५. और उन से जब (कभी) कहा जाता है कि अगले-पिछले (पापों) से बचो ताकि तुम पर दया (रहम) की जाये।

وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ (46)

४६. और उन के पास उन के रब की तरफ़ से कोई निशानी ऐसी नहीं आती जिस से ये मुँह न फेरते हों।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ (47)

४७. और उनसे जब कहा जाता है कि अल्लाह (तआला) के दिये हुए में से कुछ ख़र्च करो तो ये काफ़िर ईमानवालों को जवाब देते हैं कि हम उन्हें क्यों खिलायें जिन्हें अगर अल्लाह (तआला) चाहता तो ख़ुद खिला-पिला देता? तुम तो हो ही खुली गुमराही में।

---

[1] इस से मुराद ऐसी सवारियाँ हैं जो नाव की तरह इंसान और तिजारती सामान को एक जगह से दूसरी जगह ले जाती हैं, इस में क़यामत (प्रलय) तक पैदा होने वाली चीजें आ गईं, जैसे हवाई जहाज, पानी का जहाज, रेलें, बसें, कारें और दूसरे सवारी के साधन (ज़रिया)।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿48﴾

४८. और वह कहते हैं कि यह वादा (क़यामत की धमकी) कब आयेगा, सच्चे हो तो बताओ।

مَا يَنظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ﴿49﴾

४९. उन्हें केवल एक ज़ोरदार चीख़ का इंतेज़ार है जो उन्हें आ पकड़ेगी, और ये आपसी लड़ाई-झगड़े में ही होंगे।[1]

فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿50﴾

५०. उस समय ये न तो वसीयत कर सकेंगे और न अपने परिवार की तरफ़ लौट सकेंगे।

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُم مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنسِلُونَ ﴿51﴾

५१. और नरसिंघा (सूर) के फूंके जाते ही सब के सब अपनी क़ब्रों से अपने रब की तरफ़ (तेज़ चाल) से चलने लगेंगे।

قَالُوا يَا وَيْلَنَا مَن بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا ۜ ۗ هَٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ﴿52﴾

५२. कहेंगे कि हाय-हाय हमें हमारी आरामगाहों से किस ने उठा दिया,[2] यही है जिसका वादा दयालु (रहमान) ने किया था और रसूलों ने सच-सच कह दिया था।

إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿53﴾

५३. यह नहीं है लेकिन एक तेज़ आवाज़ कि अचानक सारे के सारे जमा होकर हमारे सामने हाज़िर कर दिये जायेंगे।

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿54﴾

५४. तो आज किसी इंसान पर ज़रा भी ज़ुल्म न किया जायेगा, और तुम्हें नहीं वदला दिया जायेगा लेकिन उन्हीं कामों का जो तुम किया करते थे।

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فَاكِهُونَ ﴿55﴾

५५. बेशक जन्नत वाले लोग आज के दिन अपने (मनोरंजन) कामों में व्यस्त (मश्ग़ूल)

---

[1] यानी लोग बाज़ारों में क्रय-विक्रय (ख़रीद-फ़रोख़्त) और वाद-विवाद में व्यस्त (मसगूल) होंगे कि अचानक नरसिंघा (सूर) फूंक दिया जायेगा और क़यामत हो जायेगी, यह पहली फूंक होगी, इस को نفخہ فزع (घबराहट की फूंक) भी कहते हैं।

[2] क़ब्र को आरामगाह कहने से मुराद यह नहीं कि क़ब्र में उनको सज़ा नहीं होगी, वल्कि उस के बाद जो भयानक दृश्य (मंज़र) और अज़ाब की कठोरता को देखेंगे उसकी तुलना (मुक़ाविल) में उन्हें क़ब्र का जीवन एक ख़्वाब ही प्रतीत (महसूस) होगा।

ख़ुश और आनन्दित (मसरूर) हैं।

هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلَالٍ عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَّكِئُونَ (56)

५६. वह और उनकी पत्नियाँ छाओं में मसहरियों पर तकिया लगाये बैठे होंगे।

لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُم مَّا يَدَّعُونَ (57)

५७. उन के लिए जन्नत में हर तरह के मेवे होंगे और दूसरे भी जो कुछ वे माँगेंगे।

سَلَامٌ قَوْلًا مِّن رَّبٍّ رَّحِيمٍ (58)

५८. रहम करने वाले रब की तरफ़ से उनको 'सलाम' कहा जायेगा।[1]

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ (59)

५९. और हे पापियो (मुजरिमो)! आज तुम अलग हो जाओ।

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَا بَنِي آدَمَ أَن لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ ۖ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ (60)

६०. हे आदम की औलाद! क्या मैंने तुम से वादा नहीं लिया था कि तुम शैतान की इबादत न करना, वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है।

وَأَنِ اعْبُدُونِي ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ (61)

६१. और मेरी ही इबादत (उपासना) करना, सीधा रास्ता यही है।

وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا ۖ أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ (62)

६२. और शैतान ने तो तुम में से ज़्यादातर गिरोहों को बहका दिया, क्या तुम अक़्ल नहीं रखते।[2]

هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ (63)

६३. यही वह नरक है जिसका तुम्हें वादा किया जाता था।

اصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ (64)

६४. अपने कुफ़्र का बदला हासिल करने के लिए आज उस में दाख़िल हो जाओ।

---

[1] अल्लाह का यह सलाम फ़रिश्ते जन्नत वालों को पहुँचायेंगे, कुछ कहते हैं कि अल्लाह तआला (परमेश्वर) ख़ुद सलाम कहेगा।

[2] यानी इतनी भी अक़्ल तुम में नहीं कि शैतान तुम्हारा दुश्मन है, उसकी बात नहीं माननी चाहिए, और मैं तुम्हारा रब हूँ, मैं ही तुम्हें रोज़ी देता हूँ और मैं ही तुम्हारी रात-दिन रक्षा (हिफ़ाज़त) करता हूँ, इसलिए तुम्हें मेरा हुक्म मानना चाहिए, तुम शैतान की दुश्मनी और मेरी इबादत के हक़ को न समझ कर वेअक़्ली और बेवक़ूफ़ी का इज़हार कर रहे हो।

६५. हम आज के दिन उन के मुंह पर मुद्रायें (मोहरें) लगा देंगे और उन के हाथ हम से बात करेंगे और उन के पैर गवाही देंगे, उन के कामों की जो वे करते थे ।[1]

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿65﴾

६६. और अगर हम चाहते तो उन की आंखें अंधी कर देते, फिर ये रास्ते की तरफ़ दौड़ते भागते लेकिन उन्हें कैसे दिखाई देता?

وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ﴿66﴾

६७. और अगर हम चाहते तो उन की जगह ही पर उन के मुंह विकृत (मसख़) कर देते, फिर न वे चल-फिर सकते और न लौट सकते ।

وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ﴿67﴾

६८. और जिसे हम बूढ़ा करते हैं उसे जन्म के समय की हालत की तरफ़ दोबारा लौटा देते हैं, क्या फिर भी वह नहीं समझते?

وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِى الْخَلْقِ ۗ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿68﴾

६९. और न तो हम ने इस पैग़म्बर को शायरी सिखाया और न यह इस के लायक़ है, यह तो केवल शिक्षा और वाज़ेह क़ुरआन है ।[2]

وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِىْ لَهٗ ۗ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿69﴾

---

[1] यह मुद्रा (मोहर) लगाने की ज़रूरत इसलिए होगी कि शुरू में मुश्रेकीन (द्वैतवादी) क़यामत के दिन भी झूठ बोलेंगे और कहेंगे ।

﴿وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ﴾

"अल्लाह की क़सम! जो हमारा रब है, हम मिश्रणवादी (मुशरिक) नहीं थे ।" (अल-अन्आम-२३)

तो अल्लाह उन के मुंह पर मोहर लगा देगा, जिस से वह तो ख़ुद बोलने की ताक़त से वंचित (महरूम) हो जायेंगे । हां, अल्लाह तआला (परमेश्वर) इंसानी अंगों को बोलने की ताक़त देगा, हाथ बोलेंगे कि हम से इस ने फ़लां-फ़लां काम लिया था और पांव गवाही देंगे, यूं मानो इक़रार और गवाही दोनों समस्याओं (मसलों) का हल हो जायेगा । इस के सिवाय बोलने वाले के विपरीत न बोलने वाली चीज़ों का गवाही देना दलील में ज़्यादा असरअंदाज़ है कि इस में एक चमत्कारी (मोजिज़ाना) हालत पायी जाती है (फ़तहुल क़दीर) । इस विषय को अहादीस में भी बयान किया गया है । (देखिये सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद)

[2] मक्का के मूर्तिपूजक नबी ﷺ के बारे में अलग-अलग बातें कहते रहते थे, उन में एक बात यह भी थी कि आप कवि (शायर) हैं और यह पाक क़ुरआन आप की कविता की तुकबन्दी है । अल्लाह ने उसका खण्डन (तरदीद) किया कि आप कवि (शायर) हैं न पाक क़ुरआन कविता का

لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿70﴾

७०. ताकि वह हर उस इंसान को सावधान (आगाह) कर दे जो जिन्दा है और काफिरों पर सच (तर्क) सावित हो जाये।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَآ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿71﴾

७१. क्या वह नहीं देखते कि हम ने अपने हाथों बनायी हुई चीजों में से उन के लिए चौपाये (पशु भी) पैदा कर दिये, जिन के ये मालिक हो गये हैं।[1]

وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَمِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ﴿72﴾

७२. और उन (जानवरों) को हम ने उन के वश में कर दिया है[2] जिन में से कुछ तो उन की सवारियाँ हैं और कुछ (का गोश्त) खाते हैं।

وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ۭ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿73﴾

७३. और उन्हें उन से दूसरे भी बहुत से फ़ायदे हैं[3] और पीनें की चीजें। क्या फिर (भी) ये शुक्रिया अदा नहीं करते?

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿74﴾

७४. और वह अल्लाह के सिवाय दूसरों को माबूद बनाते हैं कि उनकी मदद की जाये।

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ ۙ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ﴿75﴾

७५. (यद्यपि) उन में उनकी मदद की ताक़त नहीं फिर भी (मूर्तिपूजक) उनकी मौजूद सेना हैं।

संग्रह (मजमुआ) है, बल्कि यह सिर्फ़ नसीहत और शिक्षा है। शायरी में आम तौर से मुबालगा और सिर्फ कल्पनाओं (ख़्यालात) की विचित्रता होती है, यूँ मानो वह झूठ पर आधारित (मबनी) होती है, इस के सिवा शायर सिर्फ़ बात के बहादुर होते हैं काम के नहीं। इसलिए अल्लाह तआला (परमेश्वर) ने फ़रमाया कि हम ने अपने पैग़म्बर को शायरी नहीं सिखाई न कविता की उसकी तरफ़ प्रकाशना (वह्यी) की।

[1] यानी जैसे चाहते हैं उन से काम लेते हैं। हम अगर उन में जंगलीपन रख देते (जैसाकि कुछ जानवरों में है) वह उन से दूर भागते और उन की मिल्कियत और बस में न आते।

[2] यानी इन जानवरों से वह जैसा चाहते हैं फ़ायेदा हासिल करते हैं वे इंकार नहीं करते, यहाँ तक की उन्हें क़त्ल कर देते हैं और छोटे बच्चे भी उन्हें खींचते फिरते हैं।

[3] यानी सवारी और खाने के सिवाय भी बहुत से फ़ायदे हासिल किये जाते हैं, जैसे उन के ऊन और बालों से कई चीजें बनती हैं। उनकी चर्बी (वसा) से तेल मिलता है और यह भारवाहन और खेती-बाड़ी के भी काम आते हैं।

فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ (76)

७६. इसलिए आप को उनकी बात ग़मगीन न करे, हम उन की छिपी और ज़ाहिर सभी बातों को (अच्छी तरह) जानते हैं।

أَوَلَمْ يَرَ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُبِينٌ (77)

७७. क्या इन्सान को इतना भी इल्म नहीं कि हम ने उसे वीर्य (नुतफ़ा) से पैदा किया है? फिर भी यह खुला झगड़ालू बन बैठा।

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ (78)

७८. और उस ने हमारे लिये मिसाल बयान की और अपनी (मूल) पैदाईश को भूल गया, कहने लगा कि इन सड़ी-गली हड्डियों को कौन ज़िन्दा कर सकता है।

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنْشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ (79)

७९. कह दीजिए कि उन्हें वह ज़िन्दा करेगा जिस ने उन्हें पहली बार पैदा किया,[1] जो सब प्रकार (तरह) की पैदाईश को अच्छी तरह जानने वाला है।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ مِنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنْتُمْ مِنْهُ تُوقِدُونَ (80)

८०. वही है जिस ने तुम्हारे लिए हरे पेड़ से आग पैदा कर दी जिस से तुम आग सुलगाते हो।

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ بَلَىٰ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ (81)

८१. जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया है, क्या वह इन जैसों के पैदा करने पर क़ादिर नहीं? यक़ीनन क़ादिर है और वही तो पैदा करने वाला जानने वाला है।

إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ (82)

८२. जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है उसे इतना कह देना (बस) है कि हो जा, वह फ़ौरन हो जाती है।

[1] यानी जो अल्लाह एक हक़ीर वीर्य (नुतफ़ा) से इन्सान को पैदा करता है, वह उसे दोबारा ज़िन्दा करने पर क़ादिर नहीं है? उस के मुर्दों को ज़िन्दा करने की एक कहानी हदीस में बयान है कि एक इंसान ने मौत के वक़्त यह वसीयत की कि मरने के बाद उसे जलाकर आधी राख समुद्र में और आधी राख तेज़ हवा के दिन ज़मीन में उड़ा दी जाये। अल्लाह ने सभी राख जमा करके उसे ज़िन्दगी अता किया और उस से पूछा कि तूने ऐसा क्यों किया? उस ने कहा तेरे डर से, अल्लाह ने उसे माफ़ कर दिया। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया)

فَسُبْحٰنَ الَّذِىْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَىْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿83﴾

८३. तो पाक है वह अल्लाह जिस के हाथ में हर चीज का मुल्क है और जिसकी तरफ तुम सब लौटाये जाओगे ।[1]

سُوْرَةُ الصّٰٓفّٰتِ

सूरतुस्साफ़्फ़ात-३७

सूरः साफ़्फ़ात मक्का में नाज़िल हुई, इस में एक सौ बयासी आयतें और पाँच रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ﴿1﴾

१. क़सम है पंक्तिवद्ध (सफ़बस्ता) होने वाले (फ़रिश्तों) की।

فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ﴿2﴾

२. फिर पूरी तरह से डांटने वालों की।

فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ﴿3﴾

३. फिर अल्लाह का पाठ करने वालों की।

اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ﴿4﴾

४. वेशक तुम सब का पूज्य (माबूद) एक ही है।

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ﴿5﴾

५. आकाशों और धरती और उन के वीच की सभी चीज़ों और सारी पूर्वी दिशाओं का वही रब है।

اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ الْكَوَاكِبِ ﴿6﴾

६. हमने संसार के (निकट) आकाश को सितारों से सुशोभित (सजाया) और मुज़य्यन किया है।

وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ﴿7﴾

७. और (हम ने ही उसकी) सुरक्षा (हिफ़ाज़त) की है हर सरकश शैतान से ।[2]

---

[1] यानी यह नहीं होगा कि मिट्टी में घुल-मिलकर तुम्हारा वजूद सदा के लिये ख़त्म हो जाये। नहीं, बल्कि फिर जिन्दगी अता की जायेगी, यह भी नहीं होगा कि तुम भाग कर किसी दूसरे के पास पनाह लो, तुम्हें हर हालत में अल्लाह ही के दरबार में हाज़िर होना होगा, जहाँ वह अमल के ऐतवार से अच्छा-बुरा बदला देगा।

[2] यानी दुनिया के आकाश पर, ज़ीनत के अलावा तारों का दूसरा मक़सद यह है कि सरकश शैतानों से सुरक्षा (हिफ़ाज़त) हो, तो जब शैतान आकाश पर कोई बात सुनने के लिए जाते हैं, तो तारे उन पर टूट कर गिरते हैं, जिस से आम तौर से शैतान जल जाते हैं, जैसाकि आगे की

لَا يَسَّمَّعُونَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ وَيُقْذَفُونَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ⑧

८. उच्च संसार (आलमे बाला) के फ़रिश्तों (की बातों) को सुनने के लिए वे कान भी नहीं लगा सकते बल्कि चारों तरफ़ से वे मारे जाते हैं।

دُحُورًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ⑨

९. भगाने के लिए और उन के लिए स्थाई (मुस्तक़िल) अज़ाब है।

إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ⑩

१०. लेकिन जो एक-आध बात उचक ले भागे तो (तुरन्त ही) उसके पीछे दहकता हुआ शोला लग जाता है।

فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ مَنْ خَلَقْنَا ۚ إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِنْ طِينٍ لَازِبٍ ⑪

११. इन काफ़िरों से पूछो तो कि उनका पैदा करना ज़्यादा कठिन है या जिन्हें हम ने पैदा किया है? हम ने तो इंसानों को लस्सेदार मिट्टी से पैदा किया है।

بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ⑫

१२. बल्कि तू ताज्जुब कर रहा है, और ये मज़ाक कर रहे हैं।

وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ ⑬

१३. और जब उन्हें नसीहत की जाती है तो ये नहीं मानते।

وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ ⑭

१४. और जब किसी मोजिज़े को देखते हैं तो मज़ाक उड़ाते हैं।

وَقَالُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ⑮

१५. और कहते हैं कि यह तो पूरी तरह से खुला जादू ही है।

أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ⑯

१६. क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी और हड्डी हो जायेंगे फिर क्या (हक़ीक़त में) हम ज़िन्दा किये जायेंगे?

أَوَآبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ⑰

१७. या हम से पहले के हमारे बाप-दादा भी?

आयत और हदीसों से साफ़ है। तारों का एक तीसरा मक़सद (उद्देश्य) रात के अंधेरे में रास्ता दिखाना भी है, जैसाकि क़ुरआन में दूसरी जगह पर बयान किया गया है, इन तीनों मक़सदों के अलावा तारों का कोई और मक़सद नहीं बताया गया है।

قُلْ نَعَمْ وَأَنتُمْ دَاخِرُونَ (18)

१८. (आप) जवाब दीजिए कि हाँ, और तुम ज़लील (भी) होगे।

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنظُرُونَ (19)

१९. वह तो केवल एक ज़ोरदार डाँट होगी कि अचानक ये देखने लगेंगे।

وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَٰذَا يَوْمُ الدِّينِ (20)

२०. और कहेंगे कि हाय रे हमारा विनाश, (हलाकत) यही बदले का दिन है।

هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ (21)

२१. यही फ़ैसले का दिन है जिसे तुम झुठलाते रहे।[1]

احْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ (22)

२२. ज़ालिमों को और उन के साथियों को और जिन-जिन की वे (अल्लाह के सिवाय इबादत करते थे।

مِن دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطِ الْجَحِيمِ (23)

२३. (उन सब को) जमा करके उन्हें नरक का रास्ता दिखा दो।

وَقِفُوهُمْ إِنَّهُم مَّسْئُولُونَ (24)

२४. और उन्हें ठहरा लो[2] (इसलिए) कि उन से ज़रूरी सवाल किये जाने वाले हैं।

مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ (25)

२५. क्या वजह है कि (इस समय) तुम एक-दूसरे की मदद नहीं करते।

بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ (26)

२६. बल्कि वे (सब के सब) आज आज्ञाकारी (फ़रमाँबरदार) बन गये।

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ (27)

२७. और वे एक-दूसरे को सम्बोधित (मुख़ातिब) करके सवाल-जवाब करने लगेंगे।

قَالُوا إِنَّكُمْ كُنتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ (28)

२८. कहेंगे कि तुम तो हमारे पास हमारी दायीं

[1] وَيْل (वैल) लफ़्ज़ बरबादी के मौक़ा पर बोला जाता है, यानी अज़ाब को देखने के बाद उन्हें अपनी तबाही खुले तौर से दिख रही होगी, और इस से मुराद शर्म का प्रदर्शन (इज़हार) और अपने गुनाहों का इक़रार (स्वीकार) है, लेकिन इस समय नदामत और क़ुबूल का कोई फ़ायेदा न होगा, इसलिए इस के जवाब में फ़रिश्ते और ईमानवाले कहेंगे कि यह वही फ़ैसले का दिन है जिसे तुम मानते नहीं थे, यह भी मुमकिन है कि आपस में एक-दूसरे से कहेंगे।

[2] यह हुक्म नरक में ले जाने से पहले होगा, क्योंकि वह हिसाब के बाद ही नरक में जायेंगे।

तरफ़ से आते थे।

قَالُوا بَل لَّمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿29﴾

२९. वह जवाब देंगे कि नहीं, बल्कि तुम ही ईमान वाले न थे।[1]

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُم مِّن سُلْطَانٍ ۖ بَلْ كُنتُمْ قَوْمًا طَاغِينَ ﴿30﴾

३०. और कुछ हमारा ज़ोर तुम पर था (ही) नहीं, बल्कि तुम लोग (ख़ुद) सरकश लोग थे।[2]

فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۖ إِنَّا لَذَائِقُونَ ﴿31﴾

३१. अब तो हम (सब) पर हमारे रब की यह बात साबित हो चुकी कि हम (अज़ाब का) मज़ा चखने वाले हैं।

فَأَغْوَيْنَاكُمْ إِنَّا كُنَّا غَاوِينَ ﴿32﴾

३२. तो हम ने तुम्हें गुमराह किया, हम तो ख़ुद भी गुमराही में थे।

فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿33﴾

३३. तो अब आज के दिन (सब के सब) अज़ाब में हिस्सेदार हैं।

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ﴿34﴾

३४. हम पापियों के साथ इसी तरह किया करते हैं।

إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ﴿35﴾

३५. ये वे (लोग) हैं कि जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह के सिवाय कोई पूज्य (माबूद) नहीं, तो यह घमंड करते थे।

وَيَقُولُونَ أَئِنَّا لَتَارِكُو آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُونٍ ﴿36﴾

३६. और कहते थे कि क्या हम अपने देवताओं को एक दीवाने शायर की बात पर छोड़ दें।

بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ ﴿37﴾

३७. (नहीं, नहीं) बल्कि नबी तो हक़ (सच्चा दीन) लाये हैं और सभी रसूलों को सच्चा जानते हैं।

إِنَّكُمْ لَذَائِقُو الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ﴿38﴾

३८. बेशक तुम कष्टदायी अज़ाबों (के मज़े) चखने वाले हो।

[1] अगुवा कहेंगे कि ईमान तुम अपनी मर्ज़ी से नहीं लाये और आज इल्ज़ाम हमें दे रहे हो?

[2] अगुवा और पैरोकारों का यह आपसी झगड़ा पाक क़ुरआन के कई जगहों में चर्चित है। उन की यह निन्दा (मलामत) महशर के मैदान में होगी और नरक में जाने के बाद नरक में भी, देखो अल-मोमिन-४७,४८, सूर: सबा-३१,३२, अल-आराफ़-३८, ३९ आदि आयतें।

وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿39﴾

३९. और तुम्हें उसी का बदला दिया जायेगा जो तुम करते थे ।[1]

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿40﴾

४०. लेकिन अल्लाह (तआला) के मुख़्लिस बन्दे।

أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَعْلُومٌ ﴿41﴾

४१. उन्हीं के लिए मुक़र्रर रोज़ी है ।

فَوَاكِهُ ۖ وَهُمْ مُكْرَمُونَ ﴿42﴾

४२. (हर तरह के) मेवे और वह बाइज़्ज़त और आदरणीय (मोहतरम) होंगे ।

فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿43﴾

४३. सुखों वाली जन्नतों में ।

عَلَىٰ سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿44﴾

४४. आसनों पर एक-दूसरे के सामने बैठे होंगे।

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِنْ مَعِينٍ ﴿45﴾

४५. जारी शराब के प्यालों का उन पर दौर चल रहा होगा ।[2]

بَيْضَاءَ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ ﴿46﴾

४६. जो साफ सफेद और पीने में मज़ेदार होंगी।

لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ ﴿47﴾

४७. न उस से सिर दर्द होगा और न उस के पीने से बहकें ।

وَعِنْدَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ عِينٌ ﴿48﴾

४८. और उन के क़रीब नीची और बड़ी-बड़ी आँखों वाली (हूरें) होंगी ।

كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَكْنُونٌ ﴿49﴾

४९. ऐसी जैसे छिपाये हुए अण्डे ।[3]

---

[1] यह नरकवासियों से उस समय कहा जायेगा जब वह खड़े आपस में सवाल कर रहे होंगे, और साथ ही स्पष्ट (वाज़ेह) कर दिया जायेगा कि यह ज़ुल्म नहीं हमेशा इंसाफ़ है, क्योंकि सब तुम्हारे अपने करतूतों का बदला है ।

[2] كأس (कास) शराब भरे प्याले को और قدح (क़दह) ख़ाली प्याले को कहते हैं, معين का मतलब है बहते चश्मे, मतलब यह है कि बहते चश्मे की तरह जन्नत में शराब हर समय मिलेगी ।

[3] यानी शुतुरमुर्ग़ के पंखों के नीचे छुपाये हुए हों, जिसकी वजह से वह हवा व गर्द व ग़ुबार से सुरक्षित (महफ़ूज़) हों, कहते हैं कि शुतुरमुर्ग़ के अंडे बड़े ख़ूबसूरत रंग के होते हैं, जो पीले सफेद होते हैं, और ऐसी रंग ख़ूबसूरती की दुनिया में सबसे अच्छा माना जाता है, इस बिना पर यह मिसाल केवल सफेदी में नहीं है बल्कि सुन्दर रंग और रूप और दृश्य (मंज़र) में है ।

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿50﴾

५०. (जन्नत वाले) एक-दूसरे की तरफ़ मुंह करके पूछेंगे ।[1]

قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ﴿51﴾

५१. उन में से एक कहने वाला कहेगा कि मेरा एक निकट (साथी) था।

يَقُولُ أَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِينَ ﴿52﴾

५२. जो (मुझ से) कहा करता था कि क्या तू (क़यामत के आने का) यक़ीन करने वालों में से है।

أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَدِينُونَ ﴿53﴾

५३. क्या जब कि हम मरकर मिट्टी और हड्डी हो जायेंगे क्या उस समय हम बदला दिये जाने वाले हैं?

قَالَ هَلْ أَنتُم مُّطَّلِعُونَ ﴿54﴾

५४. कहेगा, तुम चाहते हो कि झांककर देख लो?

فَاطَّلَعَ فَرَآهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿55﴾

५५. झांकते ही उसे बीचों-बीच नरक में (जलता हुआ) देखेगा।

قَالَ تَاللَّهِ إِن كِدتَّ لَتُرْدِينِ ﴿56﴾

५६. कहेगा: अल्लाह की क़सम! क़रीब था कि तू मुझे भी बरबाद कर दे।

وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ﴿57﴾

५७. और अगर मेरे रब की नेमत न होती तो मैं भी नरक में हाज़िर किये जाने वालों में होता।

أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ﴿58﴾

५८. क्या (यह सही है कि) हम मरने वाले ही नहीं?

إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿59﴾

५९. सिवाय पहले एक मौत के, और न हम अज़ाब दिये जाने वाले हैं।

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿60﴾

६०. फिर तो (वाज़ेह बात है कि) यह बड़ी कामयाबी है।

لِمِثْلِ هَٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ ﴿61﴾

६१. ऐसी (कामयाबी) के लिए अमल करने वालों को अमल करना चाहिए।

---

[1] जन्नत वाले जन्नत में एक-दूसरे के साथ बैठे हुए दुनिया के वाक़ेआत याद करेंगे और आपस में सुनायेंगे।

أَذَٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ ﴿62﴾

६२. क्या यह मेहमानी अच्छी है या ज़क़्क़ूम (सेंढे) का पेड़?[1]

إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِّلظَّالِمِينَ ﴿63﴾

६३. जिसे हम ने ज़ालिमों के लिए कठिन परीक्षा बना रखी है।

إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ﴿64﴾

६४. बेशक वह पेड़ की जड़ से निकलता है।

طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيَاطِينِ ﴿65﴾

६५. जिस के गुच्छे शैतानों के सिरों जैसे होते हैं।[2]

فَإِنَّهُمْ لَآكِلُونَ مِنْهَا فَمَالِئُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ﴿66﴾

६६. नरकवासी इसी पेड़ को खायेंगे और इसी से पेट भरेंगे।

ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ ﴿67﴾

६७. फिर उस पर खौलता पानी पीना पड़ेगा।

ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَإِلَى الْجَحِيمِ ﴿68﴾

६८. फिर उन सबका लौटना नरक की (आग के ढेर की) तरफ़ होगा।

إِنَّهُمْ أَلْفَوْا آبَاءَهُمْ ضَالِّينَ ﴿69﴾

६९. यक़ीन करो कि उन्होंने अपने बुज़ुर्गों को बहका हुआ पाया।

فَهُمْ عَلَىٰ آثَارِهِمْ يُهْرَعُونَ ﴿70﴾

७०. और यह उन्हीं के पद-चिन्हों (निशाने क़दम) पर दौड़ते चलते रहे।

وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ﴿71﴾

७१. और उन से पहले भी बहुत से अगले लोग बहक चुके हैं।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِم مُّنذِرِينَ ﴿72﴾

७२. और जिन में हम ने सावधान करने वाले (रसूल) भेजे थे।

---

[1] زَقُّوم यह تَزَقُّم से बना है, जिसका मतलब बद्बूदार और घृणित (मकरूह) चीज़ निगलने के हैं। इस पेड़ का फल खाना भी नरकवासियों के लिए बड़ा नापसन्द होगा, क्योंकि यह बहुत बद्बूदार, कड़ुवा और बड़ा घृणित होगा। कुछ कहते हैं कि यह दुनियावी पेड़ों में से है, कुछ कहते हैं कि यह दुनियावी पेड़ नहीं और दुनियावालों के लिए नामालूम है (फ़तहुल क़दीर)। लेकिन पहला क़ौल ज़्यादा सही है, और यह वही पेड़ है जिसे उर्दू ज़ुबान में सेंध या थोहर कहते हैं।

[2] उसे बुराई और अशुभ (क़बाहत) में शैतान के सरों से तश्बीह दी, जैसे अच्छी चीज़ के बारे में कहते हैं कि मानो वह फ़रिश्ता है।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿73﴾

७३. अब तू देख ले कि जिन्हें धमकाया गया था उनका नतीजा कैसा हुआ।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿74﴾

७४. सिवाय अल्लाह के मुख़लिस बंदों के।

وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ﴿75﴾

७५. हमें नूह ने पुकारा तो देख लो कि हम कैसे अच्छे दुआ क़ुबूल करने वाले हैं।[1]

وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿76﴾

७६. और हम ने उसे और उस के घर वालों को[2] उस सख़्त मुसीबत से बचा लिया।

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ﴿77﴾

७७. और उसकी औलाद को हम ने बाक़ी रहने वाली बना दिया।[3]

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿78﴾

७८. और हम ने उसकी (अपनी चर्चा) पिछलों में बाक़ी रखा।

سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعٰلَمِيْنَ ﴿79﴾

७९. नूह (ﷺ) पर सारे जहाँ में सलाम (सुरक्षा) हो!

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿80﴾

८०. हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं।

---

[1] साढ़े नौ सौ साल दीन की तबलीग़ (प्रचार) के बावजूद भी जब समुदाय के ज़्यादातर लोगों ने उन्हें झुठलाया ही और उन्होंने अंदाज़ा कर लिया कि ईमान लाने की कोई आशा नहीं है तो अपने रब को पुकारा : ﴿فَدَعَا رَبَّهٗ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ﴾ (अल-क़मर-१०) "अल्लाह मैं परास्त (मग़लूब) हूँ मेरी मदद कर" तो हम ने नूह की दुआ क़ुबूल की और उनकी जाति को तूफ़ान भेजकर नाश कर दिया।

[2] (अहल) اهل से मुराद नूह पर ईमान लाने वाले हैं, जिन में उन के परिवार के मोमिन (ईमानदार) सदस्य (अफ़राद) भी थे। कुछ मुफ़स्सिरों के क़रीब उनकी तादाद ८० थी जिन में उनकी पत्नी और एक पुत्र शामिल नहीं, जो ईमानवाले नहीं थे। वह भी तूफ़ान में डूब गये, كرب عظيم सख़्त मुसीबत से मुराद वही भारी बाढ़ है जिस में यह जाति डूब गई।

[3] ज़्यादातर मुफ़स्सिरों के क़ौल के ऐतबार से हज़रत नूह के तीन पुत्र थे। हाम, साम और याफिस, इन्हीं से बाद का इंसानी वंश चला, इसी वजह से नूह को दूसरा आदम भी कहा जाता है, यानी आदम की तरह उन के बाद यह मानव जाति के दूसरे परम पिता हैं। हाम के वंश से सूडान (पूरब से पश्चिम तक) यानी सिन्ध, भारत, नौब, जंज, हबशा, क़िब्त और बर्बर वग़ैरह हैं और यासिफ के वंश से सक़ालिबा, तुर्क, ख़ज़र, याजूज और माजूज वग़ैरह हैं। साम के वंश से अरब, फ़ारस, रूम, यहूद और इसाई हैं (फ़तहुल क़दीर)। والله اعلم

إِنَّهُۥ مِنْ عِبَادِنَا ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿81﴾

८१. वह हमारे ईमानदार बन्दों में से था।

ثُمَّ أَغْرَقْنَا ٱلْـَٔاخَرِينَ ﴿82﴾

८२. फिर हम ने दूसरे लोगों को डुबो दिया।

وَإِنَّ مِن شِيعَتِهِۦ لَإِبْرَٰهِيمَ ﴿83﴾

८३. और उस (नूह) के पीछे आने वालों में से ही इब्राहीम भी थे।[1]

إِذْ جَآءَ رَبَّهُۥ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿84﴾

८४. जब कि अपने रब के पास साफ़ (निर्दोष) दिल लाये।

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِۦ مَاذَا تَعْبُدُونَ ﴿85﴾

८५. उन्होंने अपने पिता और अपनी क़ौम से कहा कि तुम क्या पूज रहे हो।

أَئِفْكًا ءَالِهَةً دُونَ ٱللَّهِ تُرِيدُونَ ﴿86﴾

८६. क्या तुम अल्लाह के सिवाय गढ़े हुए माबूद चाहते हो?

فَمَا ظَنُّكُم بِرَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿87﴾

८७. तो यह (बताओ कि) तुम ने सारी दुनिया के रब को क्या समझ रखा है?

فَنَظَرَ نَظْرَةً فِى ٱلنُّجُومِ ﴿88﴾

८८. अब (इब्राहीम ने) एक नज़र तारों की तरफ़ उठाई।

فَقَالَ إِنِّى سَقِيمٌ ﴿89﴾

८९. और कहा कि मैं तो रोगी हूँ।[2]

فَتَوَلَّوْا۟ عَنْهُ مُدْبِرِينَ ﴿90﴾

९०. इस पर सब उस से मुँह मोड़े हुए वापस चले गये।

فَرَاغَ إِلَىٰٓ ءَالِهَتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿91﴾

९१. आप (चुपके) उन के माबूदों के क़रीब गये और कहने लगे तुम खाते क्यों नहीं?

مَا لَكُمْ لَا تَنطِقُونَ ﴿92﴾

९२. तुम्हें क्या हो गया कि बात तक नहीं करते हो?

---

[1] شِيعَة (शीअ:) का मतलब गरोह और पैरोकार है, यानी इब्राहीम भी नेकों और तौहीद वालों के इसी गरोह से हैं, जिनको हज़रत नूह ही की तरह अल्लाह ने अपनी तरफ़ मुतवज्जिह होने का ख़ास नसीब अता किया।

[2] आकाश की तरफ़ ग़ौर-फ़िक्र के लिए देखा जैसाकि कुछ लोग ऐसा करते हैं, या अपनी जाति के लोगों को भ्रम में डालने के लिए ऐसा किया जो ग्रहों की चाल को दुनिया की घटनाओं (वाक़ेआत) में असरअंदाज़ मानते थे। यह वाक़ेआ उस समय का है जब उनकी जाति का वह दिन आया जिसे वह बाहर जाकर ईद और मेले के रूप में मनाया करती थी।

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ﴿93﴾

९३. फिर तो (पूरी ताक़त के साथ) दायें हाथ से उन्हें मारने पर पिल पड़े।

فَأَقْبَلُوٓا إِلَيْهِ يَزِفُّونَ ﴿94﴾

९४. वे (मूर्तिपूजक) दौड़े-भागे आप की तरफ़ आये।

قَالَ أَتَعْبُدُونَ مَا تَنْحِتُونَ ﴿95﴾

९५. तो आप ने कहा कि तुम उन्हें पूजते हो जिन्हें तुम ख़ुद बनाते हो।

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ﴿96﴾

९६. हालाँकि तुम्हें और तुम्हारी बनाई हुई चीज़ों को अल्लाह ही ने पैदा किया है।[1]

قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ ﴿97﴾

९७. वे कहने लगे कि इस के लिए एक मकान (आग की जगह) बनाओ और उस (दहकती) आग में इसे डाल दो।

فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَٰهُمُ الْأَسْفَلِينَ ﴿98﴾

९८. उन्होंने तो (इब्राहीम) के साथ चाल चलना चाहा, लेकिन हम ने उन्हीं को नीचा कर दिया।

وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿99﴾

९९. और (इब्राहीम ने) कहा कि मैं तो (हिजरत करके) अपने रब की तरफ़ जाने वाला हूँ,[2] वह ज़रूर मेरा मार्गदर्शन (रहनुमाई) करेगा।

رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّٰلِحِينَ ﴿100﴾

१००. हे मेरे रब! मुझे नेक पुत्र अता कर।

فَبَشَّرْنَٰهُ بِغُلَٰمٍ حَلِيمٍ ﴿101﴾

१०१. तो हम ने उसको एक सहनशील (बुर्दबार) पुत्र की ख़ुशख़बरी दी।[3]

---

[1] यानी वह मूर्तियाँ और चित्र भी जिन्हें तुम अपने हाथों से बनाते हो और उन्हें माबूद समझते हो या तुम्हारा आम अमल जो भी तुम करते हो, उन का पैदा करने वाला भी अल्लाह है जैसाकि अहले सुन्नत की आस्था (अक़ीदा) है।

[2] पैग़म्बर इब्राहीम का यह वाक़ेआ बाबिल (इराक़) में पेश आया, आख़िर में यहाँ से हिजरत (स्थानान्तरण) की और शाम (सीरिया) चले गये और वहाँ जाकर पुत्र के लिए दुआ की। (फ़तहुल क़दीर)

[3] حَلِيم (धैर्यवान) कहकर इशारा कर दिया कि बच्चा बड़ा होकर सहनशील (बुर्दबार) होगा।

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ اِنِّيْٓ اَرٰى فِي الْمَنَامِ اَنِّيْٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ۭ قَالَ يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۡ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَاۗءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ (102)

१०२. फिर जब (बालक) इस उम्र को पहुँचा कि उस के साथ चले-फिरे[1] तो उस (इब्राहीम) ने कहा मेरे प्यारे बेटे! मैं ख़्वाब में अपने आप को तेरी क़ुर्बानी करते हुए देख रहा हूँ, अब तू बता कि तेरा क्या ख़्याल है?[2] बेटे ने जवाब दिया कि पिताजी! जो हुक्म दिया जा रहा है उसकी पैरवी कीजिए, अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे सब्र करने वालों में पायेंगे।

فَلَمَّآ اَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ (103)

१०३. यानी जब दोनों ने क़ुबूल (स्वीकार) कर लिया और उस (पिता) ने उस (पुत्र) को माथे के बल गिरा दिया।

وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰٓاِبْرٰهِيْمُ (104)

१०४. तो हम ने आवाज़ दी कि हे इब्राहीम!

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ (105)

१०५. बेशक तूने ख़्वाब को सच्चा कर दिखाया, बेशक हम भलाई करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰۗـؤُا الْمُبِيْنُ (106)

१०६. हक़ीक़त में यह खुली आज़माईश थी।[3]

وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ (107)

१०७. और हम ने एक बड़ा ज़बीहा उस के फ़िदिया के रूप मे दे दिया।[4]

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ (108)

१०८. और हम ने उनकी शुभ चर्चा पिछलों में बाक़ी रखा।

---

[1] यानी दौड़धूप के लायक़ हो गया या जवानी के क़रीब हो गया। कुछ कहते हैं कि उस समय यह लड़का १३ साल का था।

[2] पैग़म्बर (ईशदूत) का ख़्वाब, अल्लाह की वह्यी और हुक्म से होता है, जिस के ऐतबार से अमल करना ज़रूरी होता है, बेटे से विचार-विमर्श (राय-मशविरा) का मक़सद यह जानना था कि बेटा भी अल्लाह का हुक्म पूरा करने के लिए कितना तैयार है।

[3] यानी लाडले बेटे को क़ुर्बानी देने का हुक्म, यह एक बड़ा इम्तेहान था जिस में तू कामयाब रहा।

[4] यह बड़ी क़ुरबानी एक मेंढा था जो अल्लाह ने जन्नत से हज़रत जिब्रील के द्वारा भेजा, (इब्ने कसीर) जो इस्माईल की जगह पर ज़िब्ह किया गया, और फिर इस इब्राहीमी सुन्नत (यादगार) को क़यामत तक अल्लाह की समीपता (क़ुरबत) का एक साधन और ईदे अज़्हा का सब से अच्छा असल बना दिया गया।

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿109﴾

१०९. इब्राहीम पर सलाम हो।

كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿110﴾

११०. हम नेक काम करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं।

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿111﴾

१११. निश्चय (यक़ीनन) ही वह हमारे ईमानदार बन्दों में से था।

وَبَشَّرْنٰهُ بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿112﴾

११२. और हम ने उसे इसहाक़ नबी की ख़ुशख़बरी दी जो नेक लोगों में से होगा।[1]

وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ۭ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ﴿113﴾

११३. और हम ने इब्राहीम और इसहाक़ पर बरकतें (विभूतियाँ) नाज़िल किया, और इन दोनों की औलाद में कुछ तो ख़ुशक़िस्मत हैं और कुछ अपनी जानों पर खुला ज़ुल्म करते हैं।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿114﴾

११४. और यक़ीनन हम ने मूसा और हारून पर बड़ा एहसान किया।

وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿115﴾

११५. और उन्हें और उन की क़ौम को बहुत बड़े दुख-दर्द से मुक्ति (नजात) दे दी।

وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿116﴾

११६. और उनकी मदद की तो वही ग़ालिब (विजयी) रहे।

وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿117﴾

११७. और हम ने उन्हें (साफ़ और) रौशन किताब अता की।

وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿118﴾

११८. और उन दोनों को सीधे रास्ते पर स्थिर (बाक़ी) रखा।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿119﴾

११९. और हम ने उन दोनों के लिए पीछे आने वालों में यह बात बाक़ी रखी।

---

[1] हज़रत इब्राहीम की ऊपर वाली कहानी के बाद अब एक पुत्र इसहाक़ की और उस के नबी होने की ख़ुशख़बरी देने से मालूम होता है कि इस से पहले जिस पुत्र को क़ुर्बानी देने का हुक्म किया गया था वह इस्माईल थे जो उस समय इब्राहीम (ﷺ) के इकलौते पुत्र थे। इसहाक़ की पैदाईश उस के बाद हुई।

१२०. कि मूसा और हारून पर सलाम हो।

سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿120﴾

१२१. बेशक हम नेक काम करने वालों को इसी तरह बदला दिया करते हैं।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿121﴾

१२२. बेशक ये दोनों हमारे मोमिन बन्दों में से थे।

اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿122﴾

१२३. और बेशक इलियास भी पैग़म्बरों में से थे।[1]

وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿123﴾

१२४. जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम अल्लाह से डरते नहीं हो।

اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿124﴾

१२५. क्या तुम 'बअ्ल' नाम की मूर्ति को पुकारते हो और सब से अच्छे ख़ालिक़ को छोड़ देते हो?

اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخَالِقِيْنَ ﴿125﴾

१२६. अल्लाह जो तुम्हारा और तुम्हारे पहले के सभी बाप-दादों का रब है।

اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿126﴾

१२७. लेकिन समुदाय ने उन्हें झुठलाया, तो वे ज़रूर (अज़ाबों में) हाज़िर रखे जायेंगे।

فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿127﴾

१२८. सिवाय अल्लाह (तआला) के मुख़लिस बंदों के।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿128﴾

१२९. और हम ने (इलियास की) शुभ चर्चा पिछले लोगों में बाक़ी रखा।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿129﴾

१३०. कि इलियास पर सलाम हो।[2]

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ ﴿130﴾

---

[1] यह हज़रत हारून की औलाद में से इस्राईली नबी थे, यह जिस इलाक़े में भेजे गये उसका नाम बअ्लबक था। कुछ कहते हैं कि उस जगह का नाम सामरह है जो फ़िलस्तीन का पश्चिम का दरम्यानी इलाक़ा है, यहाँ के लोग बअ्ल नामी मूर्ति (देवता) के पुजारी थे, कुछ कहते हैं कि यह देवी का नाम था।

[2] इल्यासीन, इलियास ही का एक उच्चारण (तलफ़्फ़ुज़) है, जैसे तूरे सीना को तूरे सीनीन भी कहते हैं। हज़रत इलियास को दूसरी दीनी (धर्मग्रन्थों) किताबों में 'इलिया' भी कहा गया है।

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ (131)

१३१. हम नेक काम करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं।

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ (132)

१३२. बेशक वह हमारे ईमानदार बन्दों में से थे।[1]

وَإِنَّ لُوطًا لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ (133)

१३३. बेशक लूत (ﷺ) भी पैग़म्बरों में से थे।

إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ (134)

१३४. हम ने उनको और उन के घर वालों को सब को मुक्ति प्रदान (नजात अता) की।

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ (135)

१३५. सिवाय उस बुढ़िया के जो पीछे रह जाने वालों में रह गयी।[2]

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ (136)

१३६. फिर हम ने दूसरों को तहस-नहस कर दिया।

وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِم مُّصْبِحِينَ (137)

१३७. और तुम तो सुबह होने पर उनकी बस्तियों से गुज़रते हो।

وَبِاللَّيْلِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ (138)

१३८. और रात को भी, क्या फिर भी नहीं समझते?[3]

---

[1] आख़िरी आसमानी किताब क़ुरआन ने नबियों और रसूलों की चर्चा कर के उन के लिए ज़्यादातर जगह पर यह लफ़्ज़ इस्तेमाल किये हैं कि वह हमारे मोमिन (ईमानवाले) बन्दों में से थे, जिसके दो मतलब हैं, एक उनके चरित्र (किरदार) और अमल की फ़ज़ीलत का प्रदर्शन (इज़हार) जो ईमान का ज़रूरी हिस्सा है, ताकि उन लोगों का खण्डन (तरदीद) हो जाये जो बहुत से पैग़म्बरों के बारे में अख़लाक़ी कमज़ोरियों को साबित करते हैं, जैसे तौरात और इंजील के मौजूद नुस्ख़ों में कई पैग़म्बरों के बारे में ऐसी मन गढ़न्त कहानियाँ दर्ज हैं। दूसरा मक़सद उन लोगों का खण्डन (तरदीद) है जो कुछ अम्बिया के बारे में अति (ग़ुलू) करके उन में ख़ुदाई गुण (सिफ़त) और इख़्तियार साबित करते हैं, यानी वह ईशदूत (पैग़म्बर) ज़रूर थे लेकिन थे फिर भी अल्लाह के बन्दे न कि ख़ुद अल्लाह या उस का हिस्सा या साझी।

[2] इस से मुराद हज़रत लूत की पत्नी है जो काफ़िर थी, यह ईमानवालों के संग उस नगरी से बाहर नहीं गई थी क्योंकि उसे अपनी जाति के साथ हलाक होना था, इसलिए वह भी नाश हो गई।

[3] यह मक्कावासियों से संबोधन (ख़िताब) है जो व्यापारिक यात्रा में इन हलाक हुए इलाक़ों से गुज़रते थे, इन से कहा जा रहा है कि तुम सुबह और शाम के समय भी इन बस्तियों से गुज़रते हो जहाँ अब मृत सागर है, जो देखने में बड़ा मकरूह (घृणित) है और बड़ा दुर्गन्धित और बदबूदार। क्या तुम उन्हें देखकर यह बात नहीं समझते कि रसूलों को झुठलाने की वजह से उनका यह बुरा अंजाम हुआ तो तुम्हारे काम का नतीजा इससे अलग क्यों होगा? जब तुम भी

وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ (139)

१३९. और यक़ीनन ही यूनुस नबियों में से थे।

إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ (140)

१४०. जब वह भागकर पहुँचे भरी नवका पर।

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ (141)

१४१. फिर नाम निकाला गया तो यह पराजित (मग़लूब) हो गये।

فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ (142)

१४२. तो फिर उन्हें मछली ने निगल लिया और वह ख़ुद अपने आप को धिक्कारने लग गये।

فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ (143)

१४३. तो अगर वह तस्बीह करने वालों में से न होते।

لَلَبِثَ فِي بَطْنِهِ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ (144)

१४४. तो लोगों के उठाये जाने के दिन तक मछली के पेट में रहते।

فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ (145)

१४५. तो हम ने उसे समतल मैदान में डाल दिया तथा वह उस समय रोगी था।

وَأَنبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّن يَقْطِينٍ (146)

१४६. और उसके ऊपर छाया करने वाला एक लता वाला पेड़ हम ने उगा दिया।[1]

وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ (147)

१४७. और हम ने उन्हें एक लाख बल्कि उस से भी ज़्यादा आदमियों की तरफ़ भेजा।

فَآمَنُوا فَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ (148)

१४८. तो वे ईमान लाये और हमने एक मुद्दत तक उन्हें सुख-सुविधा (ऐशो-आराम) अता की।

فَاسْتَفْتِهِمْ أَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُونَ (149)

१४९. उन से पूछिये कि क्या आप के रब की तो पुत्रियाँ हैं और उन के पुत्र हैं?

أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ (150)

१५०. या ये उस समय मौजूद थे जब हम ने फ़रिश्तों को नारियाँ पैदा किया।

वही काम कर रहे हो जो उन्होंने किया तो फिर तुम अल्लाह के अज़ाब से क्योंकर महफ़ूज़ रहोगे?

[1] يَقْطِين (यक़तीन) हर उस लता को कहते हैं जो अपने तने पर खड़ी नहीं होती, जैसे लौकी, कद्दू की लता, यानी उस चटियल भूमि में जहाँ पेड़ था न घर, एक छायादार लता उगाकर उनकी रक्षा की।

أَلَآ إِنَّهُم مِّنْ إِفْكِهِمْ لَيَقُولُونَ ﴿151﴾

१५१. ख़बरदार रहो कि ये लोग अपनी मनगढ़न्त से कह रहे हैं।

وَلَدَ ٱللَّهُ وَإِنَّهُمْ لَكَٰذِبُونَ ﴿152﴾

१५२. कि अल्लाह की औलाद है, बेशक ये केवल झूठे हैं।

أَصْطَفَى ٱلْبَنَاتِ عَلَى ٱلْبَنِينَ ﴿153﴾

१५३. क्या अल्लाह (तआला) ने अपने लिए पुत्रियों को पुत्र पर तरजीह (प्राथमिकता) दी?

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿154﴾

१५४. तुम्हें क्या हो गया है, कैसे हुक्म लगाते फिरते हो?

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿155﴾

१५५. क्या तुम इतना भी नहीं समझते?

أَمْ لَكُمْ سُلْطَٰنٌ مُّبِينٌ ﴿156﴾

१५६. या तुम्हारे पास (उसका) कोई वाज़ेह सुबूत है?

فَأْتُوا بِكِتَٰبِكُمْ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿157﴾

१५७. तो जाओ अगर सच्चे हो तो अपनी ही किताब ले आओ।

وَجَعَلُوا بَيْنَهُۥ وَبَيْنَ ٱلْجِنَّةِ نَسَبًا ۚ وَلَقَدْ عَلِمَتِ ٱلْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿158﴾

१५८. और उन लोगों ने तो अल्लाह के और जिन्नात के बीच भी नाता क़ायम किया है, और जबकि जिन्नात ख़ुद इल्म रखते हैं कि वे (इस अक़ीदा के लोग अज़ाब के सामने) पेश किये जायेंगे।

سُبْحَٰنَ ٱللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿159﴾

१५९. जो कुछ ये (अल्लाह के बारे में) बयान कर रहे हैं उस से अल्लाह (तआला) पाक है।

إِلَّا عِبَادَ ٱللَّهِ ٱلْمُخْلَصِينَ ﴿160﴾

१६०. सिवाय अल्लाह (तआला) के पाक बन्दों के।

فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ ﴿161﴾

१६१. यक़ीन करो कि तुम सब और तुम्हारे (झूठे) देवता।

مَآ أَنتُمْ عَلَيْهِ بِفَٰتِنِينَ ﴿162﴾

१६२. किसी एक को भी बहका नहीं सकते।

إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ ٱلْجَحِيمِ ﴿163﴾

१६३. सिवाय उन के जो नरक में जाने वाले ही हैं।

وَمَا مِنَّآ إِلَّا لَهُۥ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ ﴿164﴾

१६४. (फ़रिश्तों का कौल है) कि हम में से हर एक का मुक़ाम मुक़र्रर है।

وَإِنَّا لَنَحْنُ ٱلصَّآفُّونَ ﴿165﴾

१६५. और हम (अल्लाह की इताअत में) पंक्तिबद्ध (सफ़बस्ता) खड़े हुए हैं।

وَإِنَّا لَنَحْنُ ٱلْمُسَبِّحُونَ ﴿166﴾

१६६. और उसकी तस्बीह (पवित्रता का गान) कर रहे हैं।[1]

وَإِن كَانُوا۟ لَيَقُولُونَ ﴿167﴾

१६७. और काफ़िर तो कहा करते थे।

لَوْ أَنَّ عِندَنَا ذِكْرًا مِّنَ ٱلْأَوَّلِينَ ﴿168﴾

१६८. कि अगर हमारे पास अगले लोगों का ज़िक्र (स्मृति) होता।

لَكُنَّا عِبَادَ ٱللَّهِ ٱلْمُخْلَصِينَ ﴿169﴾

१६९. तो हम भी अल्लाह के चुने हुए बन्दे हो जाते।[2]

فَكَفَرُوا۟ بِهِۦ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿170﴾

१७०. लेकिन फिर इस (क़ुरआन) से कुफ़्र (इंकार) कर गये तो जल्द ही जान लेंगे।[3]

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿171﴾

१७१. और बेशक हमारा वादा पहले ही अपने रसूलों के लिए लागू हो चुका है।

إِنَّهُمْ لَهُمُ ٱلْمَنصُورُونَ ﴿172﴾

१७२. कि बेशक वे लोग ही मदद किये जायेंगे।

وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ ٱلْغَٰلِبُونَ ﴿173﴾

१७३. और हमारी सेना ग़ालिब (और श्रेष्ठतम) रहेगी।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿174﴾

१७४. अब आप कुछ दिनों तक इन से मुँह फेर लीजिए।

---

[1] मुराद यह है कि फ़रिश्ते भी अल्लाह की मख़लूक़ और उस के ख़ास ग़ुलाम हैं जो हर समय उसकी इबादत और उसकी तस्बीह और तक़दीस (पवित्रतागान) में लीन रहते हैं, न कि वह अल्लाह की पुत्रियाँ हैं जैसाकि मिश्रणवादी (मुशरेकीन) कहते हैं।

[2] ذکر (स्मृति) से मुराद कोई अल्लाह की किताब या पैग़म्बर है, यानी मूर्तिपूजक पाक क़ुरआन के नाज़िल होने से पहले कहा करते थे कि हमारे पास भी कोई आसमानी किताब होती जिस तरह पहले लोगों पर धार्मिक किताब तौरात वग़ैरह नाज़िल हुई, या कोई पैग़म्बर या सचेत (आगाह) करने वाला हमें शिक्षा देने वाला होता तो हम भी अल्लाह के ख़ालिस बंदे बन जाते।

[3] यह चेतावनी और धमकी है कि इस झुठलाने का बुरा अंजाम जल्द उनको मालूम हो जायेगा।

وَّ أَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ (175)

१७५. और उन्हें देखते रहिए, और ये भी आगे चलकर देख लेंगे।

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ (176)

१७६. क्या ये हमारी यातनाओं की जल्दी मचा रहे हैं?

فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ (177)

१७७. (सुनो!) जब हमारा अज़ाब उनके मैदानों में आयेगा उस समय उनकी जिन को सावधान (आगाह) कर दिया गया था[1] बड़ी बुरी सुबह होगी।

وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ (178)

१७८. और आप कुछ समय तक उनका ध्यान छोड़ दीजिए।

وَّأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ (179)

१७९. और देखते रहिए यह भी अभी-अभी देख लेंगे।

سُبْحَٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ (180)

१८०. पाक है आप का रब जो बड़ी इज़्ज़त वाला है, हर उस बात से जो (मूर्तिपूजक) कहा करते हैं।[2]

وَسَلَٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ (181)

१८१. और पैग़म्बरों पर सलाम है।

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَٰلَمِينَ (182)

१८२. और सभी तारीफ़ें अल्लाह सारी दुनिया के रब के लिए हैं।[3]

---

[1] जब मुसलमान ख़ैबर फ़त्ह (विजय) करने गये तो यहूदी उन्हें देखकर घबरा गये, जिस पर नबी ﷺ ने भी الله اكبر अल्लाहु अकबर, (अल्लाह बड़ा है) कह कर फ़रमाया :
(خربت خيبر، إنا إذا نزلنا بساحة قوم فساء صباح المنذرين) (सहीह बुख़ारी, किताबुस्सलात, बाब मा युज़करू फ़िल फ़ख़िज़े, किताबुल जिहाद बाब ग़ज़वति ख़ैबर)

[2] इस में उन कमियों और ऐब से अल्लाह के पाक होने की चर्चा है जो मुश्रिक अल्लाह के लिए बयान करते हैं, जैसे उसकी औलाद या उसका कोई साझी है, यह बुराई बन्दों में है और औलाद व साझीदारों की ज़रूरत भी उन्हीं को है, अल्लाह इन सब बातों से बहुत बड़ा और ऊँचा है, क्योंकि वह बेनियाज़ है, उसे किसी औलाद व साझी की ज़रूरत नहीं।

[3] यह बन्दों को समझाया जा रहा है कि अल्लाह ने तुम पर एहसान किया है, रसूल भेजे, शरीअत नाज़िल की और पैग़म्बरों ने तुम्हें अल्लाह का पैग़ाम सुनाया, इसलिए तुम अल्लाह का शुक्रिया अदा करो। कुछ कहते हैं कि काफ़िरों का सत्यानाश करके ईमानवालों और रसूलों को बचाया, उस पर अल्लाह के आभारी (शुक्रिया) बनो। حمد (हम्द) का मतलब है बड़ाई के इरादे से तारीफ़, गुणगान (तौसीफ़) और महानता (अज़मत) का बयान करना।

سُوْرَةُ صٓ

सूरतु साद-३८

सूर: साद मक्का में नाज़िल हुई, इसमें अट्ठासी आयतें और पाँच रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِى الذِّكْرِ ﴿1﴾

१. साद, इस नसीहत वाले क़ुरआन की क़सम!

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِىْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ﴿2﴾

२. बल्कि काफ़िर घमंड और विरोध (मुख़ालफ़त) में पड़े हुए हैं।[1]

كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ﴿3﴾

३. हम ने इन से पहले भी बहुत सी क़ौमों को नाश कर डाला, उन्होंने हर तरह की चीख़-पुकार की लेकिन वह समय छुटकारे का न था।

وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿4﴾

४. और काफ़िरों को इस बात पर ताज्जुब हुआ कि उन्हीं में से एक डराने वाला आ गया, और कहने लगे कि यह जादूगर और झूठा है।

اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عُجَابٌ ﴿5﴾

५. क्या इस ने इतने सारे देवताओं (माबूदों) को एक ही देवता कर दिया, हक़ीक़त में यह बड़ी अजीब बात है।

وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ يُّرَادُ ﴿6﴾

६. उन के सरदार यह कहते हुए चले कि जाओ अपने देवताओं (माबूदों) पर मज़बूत रहो, बेशक इस बात में कोई मक़सद (स्वार्थ) है।

مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِى الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۚ اِنْ هٰذَآ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ﴿7﴾

७. हम ने तो यह बात पुराने धर्मों में भी नहीं सुनी,[2] कुछ नहीं, यह तो केवल मनगढ़न्त है।

---

[1] यानी यह क़ुरआन तो निश्चय (यक़ीनन) ही शक से पाक और उन के लिए नसीहत है जो नसीहत हासिल करें, हाँ काफ़िरों को इस से फ़ायेदा इसलिए नहीं पहुँच सकता कि उन के दिमाग़ में अहंकार (तकब्बुर) और घमंड भरा हुआ है और दिलों में मुख़ालफ़त और दुश्मनी। عِزَّتٌ (इज़्ज़त) का मतलब होता है सच की मुख़ालफ़त में अकड़ना।

[2] पिछले धर्म से मुराद या तो क़ुरैश ही का अपना धर्म है या फिर इसाई धर्म, यानी यह जिस तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत दे रहा है उसके बारे में तो हम ने किसी धर्म में नहीं सुना।

ءَأُنزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنۢ بَيْنِنَا ۚ بَلْ هُمْ فِى شَكٍّ مِّن ذِكْرِى ۖ بَل لَّمَّا يَذُوقُوا۟ عَذَابِ ﴿8﴾

८. क्या हम सभी में से उसी पर (अल्लाह की) वहयी नाज़िल की गई है? हक़ीक़त में यह लोग मेरी प्रकाशना (वहयी) की तरफ़ से शक में हैं[1] बल्कि (ठीक यह है कि) उन्होंने मेरे अज़ाब का मज़ा अभी चखा ही नहीं।

أَمْ عِندَهُمْ خَزَآئِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ﴿9﴾

९. क्या उन के पास तेरे ग़ालिब देने वाला रब की रहमत के ख़ज़ाने हैं।

أَمْ لَهُم مُّلْكُ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ فَلْيَرْتَقُوا۟ فِى الْأَسْبَٰبِ ﴿10﴾

१०. या आकाश और धरती और उन के बीच की हर चीज़ का राज्य (मुल्क) उन्ही का है, तो फिर ये रस्सियाँ तानकर चढ़ जायें।

جُندٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ مِّنَ الْأَحْزَابِ ﴿11﴾

११. यह भी (विशाल) सेनाओं में से पराजित (छोटी सी) सेना है।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ﴿12﴾

१२. उन से पहले नूह की क़ौम और आद और कीलों वाले फ़िरऔन[2] ने झुठलाया था।

وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَٰبُ لْـَٔيْكَةِ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ الْأَحْزَابُ ﴿13﴾

१३. और समूदियों और लूत की क़ौम ने और जंगल के रहने वालों ने भी, यही (विशाल) सेनायें थीं।

إِن كُلٌّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ﴿14﴾

१४. इन में से एक भी ऐसा न था जिस ने रसूलों को झुठलाया न हो, तो मेरा अज़ाब उन पर साबित हो गया।

---

[1] यानी उनका इंकार इस वजह से नहीं है कि उन्हें मोहम्मद ﷺ की सच्चाई का इल्म नहीं, या आप के अच्छे शऊर (सुबोध) से उन्हें इंकार है बल्कि यह उस प्रकाशना (वहयी) के बारे में ही शक और शुब्हा में ग्रस्त (मुब्तेला) है जो आप पर नाज़िल हुई, जिस में सब से खुली तौहीद (अद्वैत) की दावत है।

[2] फ़िरऔन को खूँटों वाला इसलिए कहा कि वह ज़ालिम जब किसी पर क्रोधित (ग़ज़बनाक) होता तो उस के हाथों, पैरों और सर में कीलें गाड़ देता, यानी कीलों से जिस तरह किसी चीज़ को मज़बूत कर दिया जाता है उसी तरह उसकी भारी सेना और उस के पैरोकार भी, उस के मुल्क की ताक़त और मज़बूती का सबब थे।

१५. और उन्हें केवल एक तेज चीख़ का इंतेजार है, जिस में कोई रुकावट (और ढील) नहीं है।[1]	وَمَا يَنْظُرُ هٰٓؤُلَاۤءِ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ﴿15﴾
१६. और (उन्होंने) कहा कि हे हमारे रब! हमारा लेखा-जोखा तू हमें हिसाब के दिन से पहले ही अता कर दे।[2]	وَقَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ﴿16﴾
१७. आप उनकी बातों पर सब्र करें और हमारे बंदे दाऊद को याद करें जो बड़ा शक्तिशाली था, बेशक वह बहुत लौटने वाला था।	اِصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا الْاَيْدِ ۚ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿17﴾
१८. हम ने पहाड़ों को उस के अधीन (ताबे) कर दिया था कि उस के साथ सुबह और शाम को तस्बीह करें।	اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِشْرَاقِ ﴿18﴾
१९. और (उड़ते) पक्षियों को भी जमा होकर, सब के सब उस के अधीन होते।[3]	وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً ۭ كُلٌّ لَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿19﴾
२०. और हम ने उस के मुल्क को मजबूत कर दिया था, और उसे हिक्मत अता किया था और बात का फ़ैसला (सुझा दिया था)।	وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿20﴾
२१. और क्या तुझे झगड़ा करने वालों की ख़बर मिली जबकि वे दीवार फांदकर मेहराब	وَهَلْ اَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ ۘ اِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿21﴾

[1] दूध दुहने वाला एक बार कुछ दूध दुहकर बच्चे को ऊँटनी या गाय, भैंस के पास छोड़ देता है ताकि उस के दूध पीने से थनों में दूध उतर आये, फिर थोड़े समय बाद बच्चे को ताक़त के ज़ोर पर पीछे हटाकर ख़ुद दूध दूहना शुरू कर देता है, यह दो बार दूध दूहने के बीच जो फ़र्क़ है यह فواق (फ़वाक़) कहलाता है, यानी सूर फूंकने के बाद इतना भी मौक़ा नहीं मिलेगा बल्कि सूर (नरसिंघा) फूंकने की देर होगी कि क़यामत का भूकम्प (ज़लज़ला) शुरू हो जायेगा।

[2] قط (क़ित्त) का मतलब है, हिस्सा, मतलब यहां आमालनामा या लेखा-जोखा है, यानी हमारे आमालनामा के ऐतबार से हमारे हिस्सा में अच्छी व बुरी सज़ा जो भी हो हिसाब का दिन आने से पहले हमें दुनिया ही में दे दो।

[3] यानी पौ फटने के समय और आख़िर दिन को पहाड़ भी दाऊद के संग तस्बीह में लीन होते और उड़ते पक्षी भी ज़बूर का पाठ सुनकर हवा में ही जमा हो जाते और उन के साथ तस्बीह (पवित्रतागान) करते।

में (इबादत की जगह पर) आ गये?[1]

२२. जब ये दाऊद के पास पहुँचे तो ये उन से डर गये, (उन्होंने) कहा डरिये नहीं, हमारा आपसी झगड़ा है, हम में से एक ने दूसरे पर ज़ुल्म किया है, तो आप हमारे बीच इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दीजिए और नाइंसाफ़ी न कीजिए और हमें सीधा रास्ता बता दीजिए।

إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُودَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوا لَا تَخَفْ ۖ خَصْمَانِ
بَغَىٰ بَعْضُنَا عَلَىٰ بَعْضٍ فَاحْكُم بَيْنَنَا بِالْحَقِّ
وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَا إِلَىٰ سَوَاءِ الصِّرَاطِ ﴿22﴾

२३. (सुनिये!) यह मेरा भाई है[2] इस के पास निन्नानवे भेड़ें हैं और मेरे पास एक ही है, लेकिन यह मुझ से कह रहा है कि अपनी यह एक भी मुझे दे दे और मुझ पर बात में बड़ा सख़्त मुआमला करता है।

إِنَّ هَٰذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً وَلِيَ نَعْجَةٌ
وَاحِدَةٌ فَقَالَ أَكْفِلْنِيهَا وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ﴿23﴾

२४. (आप ने) कहा, उस का अपनी भेड़ों के साथ तेरी एक भेड़ शामिल करने का सवाल ज़रूर तेरे ऊपर एक ज़ुल्म है, और ज़्यादातर भागीदार और साझीदार (ऐसे ही होते हैं कि) एक-दूसरे पर ज़ुल्म और नाइंसाफ़ी करते हैं, सिवाय उन के जो ईमान लाये और जिन्होंने नेकी के काम किये और ऐसे लोग बहुत ही कम हैं[3] और दाऊद (عليه السلام) जान गये कि हम ने उनकी परीक्षा ली है फिर तो अपने रब से तौबा करने लगे और आजिज़ी के साथ गिर पड़े,[4] और

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلَىٰ نِعَاجِهِ ۖ
وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْخُلَطَاءِ لَيَبْغِي بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ
إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ مَّا هُمْ ۗ وَظَنَّ
دَاوُودُ أَنَّمَا فَتَنَّاهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ وَخَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ ۩ ﴿24﴾

---

[1] مِحْرَاب (मेहराब) से मुराद वह कमरा है जिस में सब से अलग होकर एकाग्रता (एकसूई) के साथ अल्लाह की इबादत करते थे, दरवाज़े पर दरबान होते ताकि कोई भीतर जाकर इबादत में रुकावट न हो, झगड़ा करने वाले पीछे से दीवार फाँद कर भीतर आ गये।

[2] भाई से मुराद यहाँ दीनी भाई या व्यवसाय (तिजारत) का साझी है या दोस्त है, सब को भाई कहना सही है।

[3] हाँ, इस अख़लाक़ी (नैतिक) ऐब से ईमानवाले महफ़ूज़ रहते हैं, क्योंकि उन के दिलों में अल्लाह का डर होता है और वह नेकी पर जमे होते हैं, इसलिए वह दूसरों पर ज़ुल्म और दूसरों के माल को हड़पने की कोशिश नहीं करते, लेकिन इस स्वभाव (अख़लाक़) के लोग कम ही होते हैं।

[4] وَخَرَّ رَاكِعًا का मुराद यहाँ सज्दे में गिर पड़ना है।

(पूरी तरह से) मुतवज्जिह हो गये।

فَغَفَرْنَا لَهُ ذَٰلِكَ ۖ وَإِنَّ لَهُ عِندَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآبٍ ﴿25﴾

२५. तो हम ने भी उनकी यह (बुराई) माफ़ कर दिया, बेशक वह हमारे क़रीब बड़े ऊँचे मुक़ाम और सब से अच्छे ठिकाने वाले हैं।

يَٰدَاوُۥدُ إِنَّا جَعَلْنَٰكَ خَلِيفَةً فِى ٱلْأَرْضِ فَٱحْكُم بَيْنَ ٱلنَّاسِ بِٱلْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ ٱلْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ ۚ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَضِلُّونَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌۢ بِمَا نَسُوا۟ يَوْمَ ٱلْحِسَابِ ﴿26﴾

२६. हे दाऊद! हम ने तुम्हें धरती में ख़लीफ़ा बना दिया तो तुम लोगों के बीच इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करो और अपने मन की इच्छाओं की अनुसरण (पैरवी) न करो, बल्कि वह तुम्हें अल्लाह के रास्ते से हटा देगी। बेशक जो लोग अल्लाह के रास्ते से भटक जाते हैं उन के लिए सख़्त अज़ाब हैं, इसलिए कि उन्होंने हिसाब के दिन को भुला दिया है।

وَمَا خَلَقْنَا ٱلسَّمَآءَ وَٱلْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَٰطِلًا ۚ ذَٰلِكَ ظَنُّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا۟ مِنَ ٱلنَّارِ ﴿27﴾

२७. और हम ने आकाश और धरती और उन के बीच की चीज़ों को बेकार (और बिला वजह) पैदा नहीं किया।[1] यह शक तो काफ़िरों का है, तो काफ़िरों के लिए आग की ख़राबी है।

أَمْ نَجْعَلُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ كَٱلْمُفْسِدِينَ فِى ٱلْأَرْضِ أَمْ نَجْعَلُ ٱلْمُتَّقِينَ كَٱلْفُجَّارِ ﴿28﴾

२८. क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाये और नेकी के काम किये, उन के बराबर कर देंगे जो (रोज़) धरती पर फ़साद मचाते रहे, या परहेज़गारों को बदकारों जैसा कर देंगे?

كِتَٰبٌ أَنزَلْنَٰهُ إِلَيْكَ مُبَٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوٓا۟ ءَايَٰتِهِۦ وَلِيَتَذَكَّرَ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ ﴿29﴾

२९. यह मुबारक किताब है जिसे हम ने आप की तरफ़ इसलिए नाज़िल किया है कि लोग इसकी आयतों पर ध्यान दें और ख़्याल करें और अक़्लमंद इस से नसीहत हासिल करें।

وَوَهَبْنَا لِدَاوُۥدَ سُلَيْمَٰنَ ۚ نِعْمَ ٱلْعَبْدُ ۖ إِنَّهُۥٓ أَوَّابٌ ﴿30﴾

३०. और हम ने दाऊद को सुलैमान (नाम का बेटा) अता किया जो बड़ा अच्छा बन्दा था और बड़ा ध्यान लगाने वाला था।

---

[1] बल्कि एक ख़ास मक़सद के लिए पैदा किया है और वह यह कि मेरे बन्दे मेरी इबादत करें। जो ऐसा करेगा उसे अच्छा बदला अता करूँगा और जो मेरी इबादत और फ़रमांबरदारी से मुंह फेरेगा, उस के लिये नरक का अज़ाब है।

إِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصَّافِنَاتُ الْجِيَادُ ﴿31﴾

३१. जब उन के सामने शाम के समय तेज चलने वाले ख़ास घोड़े पेश किये गये।

فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَن ذِكْرِ رَبِّي حَتَّىٰ تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿32﴾

३२. तो कहने लगे कि मैंने अपने रब की याद पर इन घोड़ों के प्रेम को प्राथमिकता (तरजीह) दी यहाँ तक कि सूरज डूब गया।

رُدُّوهَا عَلَيَّ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ وَالْأَعْنَاقِ ﴿33﴾

३३. इन घोड़ों को दोबारा मेरे सामने लाओ, फिर पिंडलियों और गरदनों पर हाथ फेरने लगे।

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَأَلْقَيْنَا عَلَىٰ كُرْسِيِّهِ جَسَدًا ثُمَّ أَنَابَ ﴿34﴾

३४. और हम ने सुलैमान की परीक्षा ली और उन के सिंहासन पर एक धड़ डाल दिया,[1] फिर वह ध्यानमग्न (मुतवज्जिह) हो गये।

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَّا يَنبَغِي لِأَحَدٍ مِّن بَعْدِي إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ ﴿35﴾

३५. कहा कि हे मेरे रब मुझे माफ़ कर और मुझे ऐसा मुल्क अता कर जो मेरे सिवाय किसी (इंसान) के लायक न हो, तू बड़ा ही दाता है।

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُخَاءً حَيْثُ أَصَابَ ﴿36﴾

३६. तो हम ने हवा को उन के वश में कर दिया, वह आप के हुक्म से जहाँ आप चाहते नर्मी से पहुँचा दिया करती थी।[2]

---

[1] यह परीक्षा (इम्तेहान) क्या थी, कुर्सी पर डाला गया धड़ किस चीज़ का था और इस का मतलब क्या है? इसकी भी कोई तफ़सील क़ुरआन व हदीस में नहीं मिलती। हाँ, कुछ भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) ने सहीह हदीस से साबित एक कहानी से इस को सम्बन्धित किया है, जो यह है कि हज़रत सुलैमान ने एक बार कहा कि मैं आज रात अपनी सभी बीवियों से (जिन की तादाद ७० या ९० थी) संभोग करूँगा ताकि उन से बहादुर घुड़सवार पैदा हों जो अल्लाह के रास्ते में धर्मयुद्ध (जिहाद) करें और इस पर إن شاء الله (अगर अल्लाह ने चाहा) नहीं कहा (यानी केवल अपनी युक्ति (सलाहियत) पर पूरा भरोसा कर लिया)। नतीजा यह हुआ कि सिवाय एक के कोई पत्नी गर्भवती (हामला) नहीं हुई और गर्भवती बीवी ने भी जो बच्चा जना वह भी अपूर्ण यानी आधा था। नबी ﷺ ने कहा, अगर सुलैमान إن شاء الله कह लेते तो सब बहादुर पैदा होते (सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया, सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाबुल इस्तिसना)। इन व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) के ख़्याल में शायद إن شاء الله न कहना या केवल अपने तरीक़े पर मुत्मईन होना, यही परीक्षा हो जिस में हज़रत सुलैमान ग्रस्त (मुब्तेला) हुए और कुर्सी पर डाला जाने वाला बच्चा यही नाक़िस बच्चा हो। والله أعلم

[2] यानी हम ने सुलैमान की यह दुआ सुन ली और ऐसा मुल्क अता किया कि हवा भी उन के अधीन (मातहत) थी। यहाँ हवा को कोमलता (धीमीगति) से चलती बताया, जबकि सूर:

३७. और (शक्तिशाली) जिन्नात को भी (उन के अधीन कर दिया) और हर घर बनाने वाले को और डुबकी लगाने वाले को।

وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّغَوَّاصٍ (37)

३८. और दूसरे (जिन्नात) को भी जो जंजीरों में जकड़े रहते।

وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ (38)

३९. यह है हमारा वरदान (अतिया) अब तू एहसान कर या रोक रख कुछ हिसाब नहीं।

هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ (39)

४०. और उन के लिए हमारे पास बड़ी क़ुर्बत (निकटता) है और बहुत अच्छा ठिकाना है।

وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ (40)

४१. और हमारे बन्दे अय्यूब की (भी) चर्चा कर जबकि उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे शैतान ने तकलीफ़ और दुख पहुँचाया है।[1]

وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ (41)

४२. अपना पैर मारो, यह गुस्ल का ठंडा और पीने का पानी है।

اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ (42)

४३. और हम ने उसे उसका पूरा परिवार अता किया, बल्कि उतना ही और भी उसी के साथ अपनी ख़ास रहमत से, और अक़्लमंदों की शिक्षा के लिए।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ (43)

४४. और अपने हाथ में तीलियों की एक झाड़ लेकर मार दे और क़सम न तोड़,[2] सच तो यह

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ۗ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ۗ نِعْمَ الْعَبْدُ ۗ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ (44)

अम्बिया आयत नं॰ ८१ में उसे तीव्र और तेज कहा। इसका मतलब यह है कि हवा की स्वाभाविक (आम) गति तेज है किन्तु सुलैमान के लिए उसे धीमी कर दिया गया या ज़रूरत के ऐतबार से वह कभी तेज होती कभी धीमी जैसे सुलैमान चाहते। (फ़तहुल क़दीर)

[1] हज़रत अय्यूब (عليه السلام) का रोग और उस में उनका सब्र मशहूर है, जिस के अनुसार अल्लाह तआला ने परिवार और माल को तबाह किया और रोग के ज़रिये उनका इम्तेहान लिया, जिस में वह कई साल ग्रस्त (मुब्तिला) रहे।

[2] रोग के दिनों में सेविका पत्नी से किसी बात पर नाराज़ होकर हज़रत अय्यूब ने उसे सौ कोड़े मारने की क़सम खाली थी, स्वस्थ (सेहतयाब) होने के बाद अल्लाह तआला (परमेश्वर) ने कहा कि सौ तिंकों के झाडू से एक बार उसे मार दे, तेरी कसम पूरी हो जायेगी।

है कि हम ने उसे बड़ा सब्र वाला बन्दा पाया, वह बड़ा नेक बन्दा था, और बड़ा ही ध्यान करने वाला।

وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِي الْاَيْدِيْ وَالْاَبْصَارِ ﴿45﴾

४५. और हमारे बंदों इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब का भी (लोगों से) बयान करो जो हाथों और आँखों वाले थे।

اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ﴿46﴾

४६. हम ने उन्हें एक ख़ास बात यानी आख़िरत की याद के साथ ख़ास तौर से सम्बन्धित कर दिया था।

وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ﴿47﴾

४७. और यह सभी हमारे क़रीब चुने हुए और सब से अच्छे लोगों में थे।

وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ۗ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ﴿48﴾

४८. और इस्माईल, यसअ और ज़ुलकिफ़्ल का भी बयान कीजिए, यह सब से अच्छे लोग थे।

هٰذَا ذِكْرٌ ۗ وَاِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿49﴾

४९. यह नसीहत है, और यक़ीन करो कि नेक लोगों के लिए सब से अच्छी जगह है।

جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ﴿50﴾

५०. यानी हमेशा रहने वाली जन्नत जिन के दरवाज़े उन के लिए खुले हुए हैं।

مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ﴿51﴾

५१. जिन में (चैन से) तकिया लगाये बैठे हुए तरह-तरह के मेवे (फल) और कई तरह की पीने वाली चीज़ों की माँग कर रहे हैं।

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ﴿52﴾

५२. और उन के पास नीची निगाहों वाली बराबर उम्र वाली हूरें होंगी।[1]

هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿53﴾

५३. यह है जिसका वादा तुम से हिसाब के दिन के लिए किया जाता था।

[1] यानी जिनकी निगाहें अपने पति से आगे नहीं जायेंगी। أتراب यह ترب का बहुवचन (जमा) है, बराबर उम्र या लगातार ज़ीनत और हुस्न से सुशोभित मुज़य्यन। (फ़तहुल क़दीर)

إِنَّ هَٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِن نَّفَادٍ ﴿54﴾

५४. निश्चय ही यह रिज़्क़ हमारा (ख़ास) उपहार (इंआम) हैं जिनका कभी अन्त ही नहीं ।[1]

هَٰذَا ۚ وَإِنَّ لِلطَّاغِينَ لَشَرَّ مَآبٍ ﴿55﴾

५५. यह तो हुआ बदला, (याद रखो कि) सरकशों के लिए बड़ी बुरी जगह है ।

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿56﴾

५६. नरक है जिस में वे जायेंगे, (आह!) कैसा बुरा बिस्तर है ।

هَٰذَا فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ﴿57﴾

५७. यह है, तो उसे चखें, गर्म पानी और पीप ।

وَآخَرُ مِن شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ ﴿58﴾

५८. और कुछ दूसरी तरह की कई सजायें ।

هَٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۖ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ صَالُو النَّارِ ﴿59﴾

५९. यह एक समुदाय (मजमूआ) है जो तुम्हारे संग (आग में) जाने वाला है, उन के लिए कोई स्वागत नहीं, यही तो नरक में जाने वाले हैं ।

قَالُوا بَلْ أَنتُمْ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ۖ أَنتُمْ قَدَّمْتُمُوهُ لَنَا ۖ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿60﴾

६०. (वे) कहेंगे कि बल्कि तुम ही हो जिन के लिए कोई स्वागत नहीं, तुम ही ने तो इसे पहले ही से हमारे सामने ला रखा था, तो रहने की बड़ी बुरी जगह है ।

قَالُوا رَبَّنَا مَن قَدَّمَ لَنَا هَٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ﴿61﴾

६१. (वे) कहेंगे कि हे हमारे रब ! जिस ने उसे (कुफ्र की रीति) हमारे लिए सब से पहले निकाली हो, उस के हक़ में नरक की दोगुनी सज़ा कर दे ।

وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَىٰ رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُم مِّنَ الْأَشْرَارِ ﴿62﴾

६२. और (नरकवासी) कहेंगे कि क्या बात है कि वह लोग हमें दिखाई नहीं देते, जिनकी गिन्ती हम बुरे लोगों में करते थे ।[2]

---

[1] رزق (जीविका) का मतलब वरदान (अतिया) है, और هذا (यह) से हर तरह की ऊपर बयान की गई नेमतें और वह इज़्ज़त-एहतेराम मुराद है जिन के जन्नत वाले मज़े ले रहे होंगे । نفاد का मतलब आख़िर और बिला रुकावट है, यह नेमतें भी कभी न ख़त्म होने वाली और इज़्ज़त-एहतेराम भी स्थाई (मुस्तक़िल) ।

[2] أشرار (दुष्टों) से मतलब ग़रीब मुसलमान हैं, जैसे अम्मार, ख़ब्बाब, सुहैब, बिलाल, सलमान (رضی اللہ عنہم) वग़ैरह । उन्हें मक्का के सरदार दुश्मनी से 'बुरे लोग' कहते थे, अब भी दुराचारी सच्चे लोगों और नेक लोगों को कट्टरपंथी, आतंकवादी और उग्रवादी जैसे उप नाम देते हैं ।

أَتَّخَذْنَٰهُمْ سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ ٱلْأَبْصَٰرُ ﴿63﴾

६३. क्या हम ने ही उनका मजाक बना रखा था या हमारी आँखें उन से बहक गई हैं।

إِنَّ ذَٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ أَهْلِ ٱلنَّارِ ﴿64﴾

६४. यक़ीन करो कि नरकवासियों का यह झगड़ा जरूर ही होगा।

قُلْ إِنَّمَآ أَنَا۠ مُنذِرٌ ۖ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا ٱللَّهُ ٱلْوَٰحِدُ ٱلْقَهَّارُ ﴿65﴾

६५. कह दीजिए कि मैं तो केवल होशियार कर देने वाला हूँ और सिवाय एक अल्लाह जबरदस्त के दूसरा कोई इबादत (उपासना) के लायक़ नहीं।

رَبُّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ٱلْعَزِيزُ ٱلْغَفَّٰرُ ﴿66﴾

६६. जो रब है आकाशों का और धरती का और जो कुछ उन के बीच है, वह जबरदस्त (महान) और बड़ा माफ़ करने वाला है।

قُلْ هُوَ نَبَؤٌا۟ عَظِيمٌ ﴿67﴾

६७. (आप) कह दीजिए कि यह बहुत बड़ी ख़बर है।

أَنتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ﴿68﴾

६८. जिस से तुम मुँह फेर रहे हो।

مَا كَانَ لِىَ مِنْ عِلْمٍۭ بِٱلْمَلَإِ ٱلْأَعْلَىٰٓ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿69﴾

६९. मुझे उन उच्च पद वाले फ़रिश्तों (की बातचीत) का तनिक भी इल्म ही नहीं जबकि वे तक़रार कर रहे थे।[1]

إِن يُوحَىٰٓ إِلَىَّ إِلَّآ أَنَّمَآ أَنَا۠ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿70﴾

७०. मेरी तरफ़ सिर्फ़ यही वह्यी की जाती है कि मैं तो साफ़ तौर से सावधान (आगाह) कर देने वाला हूँ।

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَٰٓئِكَةِ إِنِّى خَٰلِقٌۢ بَشَرًا مِّن طِينٍ ﴿71﴾

७१. जब कि आप के रब ने फ़रिश्तों से कहा[2] कि मैं मिट्टी से इंसान को बनाने वाला हूँ।

---

[1] ملاأعلى से मुराद फ़रिश्ते हैं, यानी वे किस बात पर वाद-विवाद (तक़रार) कर रहे हैं मैं नहीं जानता? मुमकिन है इस तक़रार से मुराद वह बातचीत है जो आदम की पैदाईश के समय हुई जैसा कि आगे इसकी चर्चा आ रही है।

[2] यह कहानी इस से पहले सूर: बक़र:, सूर: आराफ़, सूर: हिज्र, सूर: बनी इस्राईल और सूर: कहफ़ में बयान हो चुकी है, अब यहाँ भी संक्षेप (मुख़्तसर) में बयान किया जा रहा है।

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ﴿72﴾

७२. तो जब मैं उसे ठीक-ठाक कर लूं और उस में अपनी रूह फूंक दूं[1] तो तुम सब उस के सामने सज्दे में गिर जाना ।[2]

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿73﴾

७३. तो सभी फ़रिश्तों ने सज्दा किया ।

إِلَّا إِبْلِيسَ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿74﴾

७४. लेकिन इब्लीस ने (नहीं किया) उस ने घमंड किया और वह था काफ़िरों में से ।

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَن تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۖ أَسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنتَ مِنَ الْعَالِينَ ﴿75﴾

७५. (अल्लाह तआला ने) कहा कि हे इब्लीस तुझे उसको सज्दा करने से किस चीज ने रोका जिसे मैंने अपने हाथों से बनाया ।[3] क्या तू कुछ तकब्बुर में आ गया है या तू ऊंचे दर्जे वालों में से है?

قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۖ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ ﴿76﴾

७६. (उस ने) जवाब दिया कि मैं इस से बेहतर हूं, तूने मुझे आग से बनाया और इसे मिट्टी से बनाया है ।[4]

---

[1] यानी वह आत्मा (रूह) जिसका मैं मालिक हूं, मेरे सिवाय इसका कोई हक नहीं रखता, और जिसके फूंकते ही यह मिट्टी का पुतला जिन्दगी और ताक़त से युक्त (बहरावर) हो जायेगा मानव जाति की श्रेष्ठता (फ़ज़ीलत) और प्रतिष्ठा (इज़्ज़त) के लिए यही बहुत है कि उस में वह रूह फूंकी गई है जिसे अल्लाह ने अपनी रूह कहा है ।

[2] यह सज्दा (नतमस्तक होना) शुक्रिया या एहतेराम का सज्दा है इबादत का सज्दा नहीं । यह सम्मान का सज्दा पहले जायेज था, इसीलिए अल्लाह ने आदम के लिए फ़रिश्तों को इसका हुक्म दिया, अब इस्लाम में सम्मान का सज्दा भी किसी के लिए जायेज नहीं । हदीस में आता है, नबी ﷺ ने फ़रमाया : "अगर यह जायेज होता तो मैं पत्नी को हुक्म देता कि अपने पति को सज्दा करे ।" (मिश्कात, किताबुन्निकाह, बाबु इश्रतिन्निसाए ससंदर्भ (माख़ूज) तिर्मिज़ी, अलबानी ने कहा कि अपने गवाहों के सबब यह हदीस सही है) ।

[3] यह भी इंसान की इज़्ज़त और बड़ाई को जाहिर करने ही के लिए फ़रमाया नहीं तो हर चीज का विधाता अल्लाह ही है ।

[4] यानी शैतान ने अपने भ्रम में यह समझा कि आग मिट्टी से बेहतर है, हालांकि यह सभी एक जैसे हैं, इन में से किसी को दूसरे पर प्रधानता (फ़ज़ीलत) किसी सबब से ही हासिल होती है और यह सबब आग के सामने मिट्टी के हिस्से में आई है कि अल्लाह ने उसी से आदम को अपने हाथों से बनाया, फिर उस में अपनी रूह फूंकी, इस वजह से मिट्टी ही को आग के मुक़ाबिल इज़्ज़त और फ़ज़ीलत हासिल है, इस के सिवाय आग का काम जलाकर राख बना देना है जबकि मिट्टी उस के ख़िलाफ़ कई तरह की पैदावार का ज़रिया है ।

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿77﴾

७७. कहा कि तू यहाँ से निकल जा, तू तिरस्कृत (मरदूद) हुआ।

وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ﴿78﴾

७८. और तुझ पर क़यामत के दिन तक मेरी लानत और धित्कार है।

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿79﴾

७९. कहने लगा कि हे मेरे रब! मुझे लोगों के उठ खड़े होने के दिन तक मुहलत अता कर।

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿80﴾

८०. (अल्लाह तआला ने) कहा कि तू मुहलत दिये जाने वालों में से है।

إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿81﴾

८१. मुक़र्रर वक़्त के दिन तक।

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿82﴾

८२. कहने लगा, फिर तो तेरी इज़्ज़त की क़सम! मैं इन सब को ज़रूर भटकाऊँगा।

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿83﴾

८३. सिवाय तेरे उन बन्दों के जो चुने हुए [और प्यारे (पाक)] हों।

قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ أَقُولُ ﴿84﴾

८४. कहा कि सच तो यह है, और मैं सच ही कहा करता हूँ।

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿85﴾

८५. कि तुझ से और तेरे सभी पैरोकारों से मैं (भी) नरक को भर दूँगा।

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ﴿86﴾

८६. कह दीजिए कि मैं इस पर तुम से कोई बदला नहीं माँगता और न मैं बनावट करने वालों में से हूँ।

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿87﴾

८७. यह तो सभी दुनिया वालों के लिए सरासर नसीहत और ज़िक्र है।

وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِينٍ ﴿88﴾

८८. बेशक तुम इसकी हक़ीक़त (वास्तविकता) को कुछ ही समय के बाद (सही ढंग से) जान लोगे।

सूरतुज़्ज़ुमर-३९

سُوْرَةُ الزُّمَر

सूर: ज़ुमर* मक्का में नाज़िल हुई और इस में पचहत्तर आयतें और आठ रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. इस किताब का नाज़िल करना अल्लाह (तआला) ग़ालिब (प्रभावशाली) और हिक्मत वाले की तरफ़ से है।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿1﴾

२. बेशक हम ने इस किताब को हक़ के साथ आप की तरफ़ नाज़िल किया है[1] तो आप केवल अल्लाह ही की इबादत करें उसी के लिए दीन को शुद्ध (ख़ालिस) करते हुए।[2]

اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ﴿2﴾

३. सुनो! अल्लाह (तआला) ही के लिए ख़ालिस इबादत करना है[3] और जिन लोगों ने उसके सिवाय औलिया बना रखें हैं (और कहते हैं) कि हम इनकी इबादत केवल इसलिए करते हैं कि यह (बुज़ुर्ग) अल्लाह के क़रीब हम को पहुँचा

اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ۭ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ﴿3﴾

---

* **तफ़सीर सूर: अज़्ज़ुमर** : हदीस में आता है कि रसूलुल्लाह ﷺ हर रात सूर: बनी इस्राईल और सूर: ज़ुमर का पाठ (तिलावत) करते थे (सहीह तिर्मिज़ी में इसको अलबानी ने सहीह कहा है)।

[1] यानी इस में तौहीद (अद्वैत) और रिसालत (दूतत्व), मआद (पुनर्जीवन) और हुक्म और अनिवार्य कर्तव्यों (फ़राइज़) को जो साबित किया गया है, वह सब सच है और इन्हीं के मानने और पैरवी करने में इंसान की नजात है।

[2] दीन دين का मतलब यहाँ इबादत (आराधना) और इताअत है और إخلاص का मतलब सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशी के लिए नेकी का काम करना है।

[3] यह उसी इबादत को ख़ालिस करने पर ज़ोर दिया गया है, जिसका हुक्म इस के पहले की आयत में है कि इबादत और इताअत एक सिर्फ़ अल्लाह ही का हक़ है, न उसकी इबादत में किसी को साझी बनाना वैध (जायेज़) है, न इताअत ही का उसके सिवा कोई हक़दार है। हाँ, रसूल ﷺ की इताअत को ख़ुद अल्लाह ही ने अपनी इताअत कहा है, अत: रसूल ﷺ का फ़रमाँबर्दार अल्लाह ही का फ़रमाँबर्दार है किसी दूसरे का नहीं, फिर इबादत में यह बात भी नहीं, इसलिए कि इबादत अल्लाह के सिवाय किसी बड़े से बड़े रसूल की भी जायेज़ नहीं तो कहाँ आम इंसानों की, जिनको लोगों ने मनमानी अल्लाह के हुक़ूक़ का मालिक बना रखा है। ﴿مَّا أَنزَلَ اللهُ بِهَا مِن سُلْطَانٍ﴾ "अल्लाह की तरफ़ से इस पर कोई दलील नहीं।"

दें,[1] ये लोग जिस बारे में इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं उसका (इंसाफ़ वाला) फ़ैसला अल्लाह (तआला) ख़ुद कर देगा, झूठे और नाशुक्रे (लोगों) को अल्लाह (तआला) रास्ता नहीं दिखाता।

लَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَن يَتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ سُبْحَانَهُ ۖ هُوَ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ④

४. अगर अल्लाह (तआला) का इरादा औलाद ही का होता तो अपनी मख़लूक़ (सृष्टि) में से जिसे चाहता चुन लेता (लेकिन) वह तो पाक है, वह वही अल्लाह (तआला) है एक और ताक़तवाला

خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ يُكَوِّرُ اللَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى اللَّيْلِ ۖ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ أَلَا هُوَ الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ⑤

५. बड़े अच्छे तरीक़े से उस ने आकाशों और धरती को बनाया, वह रात को दिन पर और दिन को रात पर लपेट देता है,[2] और उस ने सूरज और चाँद को काम पर लगा रखा है। हर एक मुक़र्रर मुद्दत तक चल रहा है, यक़ीन करो कि वही ग़ालिब और गुनाहों का माफ़ करने वाला है।

خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَأَنزَلَ لَكُم مِّنَ الْأَنْعَامِ ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ ۚ يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ خَلْقًا مِّن بَعْدِ خَلْقٍ فِي ظُلُمَاتٍ ثَلَاثٍ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُصْرَفُونَ ⑥

६. उस ने तुम सब को एक ही जान से पैदा किया, फिर उसी से उसका जोड़ा पैदा किया और तुम्हारे लिए जानवरों में से आठ जोड़े (नर-मादा) उतारे, वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भों में एक रूप के बाद दूसरे रूप में बनाता है।[3] तीन-तीन अंधेरों में,[4] यही अल्लाह (तआला)

---

[1] इस से वाज़ेह है कि मक्के के मूर्तिपूजक अल्लाह ही को विधाता, रोज़ी देने वाला और दुनिया का चलाने वाला मानते थे, फिर दूसरों की इबादत क्यों करते थे ? इसका जवाब वह यह देते थे जो क़ुरआन ने यहाँ नक़ल किया है कि शायद उन के ज़रिया हमें अल्लाह की नज़दीकी मिल जाये या अल्लाह के क़रीब हमारी सिफ़ारिश कर दें, जैसे दूसरे मुक़ाम पर फ़रमाया :

﴿هَٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِندَ اللَّهِ﴾

"यानी ये अल्लाह के क़रीब हमारे सिफ़ारिशी हैं।" (यूनुस-१८)

[2] تكوير (तकवीर) का मतलब है, एक चीज़ को दूसरी चीज़ पर लपेटना, रात को दिन पर लपेटने का मतलब है, रात का दिन को ढाँपना, यहाँ तक की उसका नूर ख़त्म हो जाये और दिन को रात पर लपेटने का मतलब दिन का रात को ढाँपना है, यहाँ तक कि उसका अंधेरा ख़त्म हो जाये। यह वही मतलब है जो يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ (अल-आराफ़-५४) का है।

[3] यानी माँ के गर्भाशय (रिहम) में कई रूपों से गुज़रता है। पहले मनी, फिर जमा ख़ून, फिर गोश्त का टुकड़ा, फिर हड्डियों का ढाँचा, जिस के ऊपर गोश्त का कपड़ा इन सभी रूपों से गुज़रने के बाद पूरा इंसान तैयार होता है।

[4] एक माँ के पेट का अंधेरा, दूसरे गर्भाशय (रिहम) का अंधेरा और तीसरा उस झिल्ली या पर्दे का अंधेरा जिस में बच्चा लिपटा हुआ होता है।

तुम्हारा रब है, उसी के लिए मुल्क है, उस के सिवाय कोई माबूद नहीं, फिर तुम कहाँ भटक रहे हो?

إِن تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنكُمْ ۖ وَلَا يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۖ وَإِن تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ ۗ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۗ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ⑦

७. अगर तुम नाशुक्री करो तो (याद रखो कि) अल्लाह (तआला) तुम (सब से) बेनियाज़ है, और वह अपने बन्दों की नाशुक्री से ख़ुश नहीं और अगर तुम शुक्रिया अदा करो तो वह उसे तुम्हारे लिए पसन्द करेगा[1] और कोई किसी का बोझ नहीं उठाता, फिर तुम सबका लौटना तुम्हारे रब ही की तरफ़ है, तुम्हें वह बतला देगा जो तुम करते थे, बेशक वह दिलों तक की बातों को जानता है।

وَإِذَا مَسَّ الْإِنسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُو إِلَيْهِ مِن قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَندَادًا لِّيُضِلَّ عَن سَبِيلِهِ ۚ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ⑧

८. और इंसान को जब कभी दुख पहुँचता है तो वह ख़ूब मुतवज्जिह होकर अपने रब को पुकारता है, फिर जब अल्लाह (तआला) अपने पास से सुख दे देता है तो वह उस से पहले जो दुआ करता था उसे (पूरी तरह) भूल जाता है, और अल्लाह (तआला) के साझीदार मुक़र्रर करने लगता है, जिस से (दूसरों को भी) उस के रास्ते से भटकाये। (आप) कह दीजिए कि अपने कुफ़्र का फ़ायेदा कुछ दिन और उठा लो, (आख़िर में) तू नरकवासियों में होने वाला है।

أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُو رَحْمَةَ رَبِّهِ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ⑨

९. भला वह इंसान जो रातों के समय सज्दा और खड़े होने की हालत में इबादत (उपासना) में गुज़ारता हो, आख़िरत से डरता हो और अपने रब की रहमत की उम्मीद रखता हो, (और जो उसके ख़िलाफ़ हो, बराबर हो सकते हैं), बताओ तो आलिम और जाहिल क्या

[1] यानी कुफ़्र अगरचे इन्सान अल्लाह की चाहत ही से करता है, क्योंकि उसके चाहे बिना कुछ नहीं होता न हो ही सकता है फिर भी अल्लाह तआला कुफ़्र को पसंद नहीं करता, उसकी ख़ुशी हासिल करने का रास्ता तो शुक्रिया ही है न कि नाशुक्री, यानी उसकी चाहत और चीज़ है और उसकी ख़ुशी दूसरी चीज़ है, जैसा कि पहले भी इस नुक़ते की तफ़सीर कुछ जगहों पर की जा चुकी है। देखिए सूरः बक़रः की आयत नं॰ २५३ की तफ़सीर।

बराबर है? बेशक नसीहत वही हासिल करते हैं जो अक़्लमंद हों ।[1]

قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۭ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۭ وَاَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ ۭ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ⑩

१०. कह दो कि हे मेरे ईमानवाले बंदो! अपने रब से डरते रहो जो इस दुनिया में नेकी करते हैं उन के लिए बेहतर बदला है, और अल्लाह (तआला) की धरती बड़ी कुशादा है,[2] सब्र करने वालों को ही उनका पूरा-पूरा अनगिनत बदला दिया जाता है।

قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ⑪

११. (आप) कह दीजिए कि मुझे हुक्म दिया गया है कि अल्लाह (तआला) की इस तरह इबादत करूँ कि उसी के लिए इबादत को ख़ालिस कर लूँ।

وَاُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ⑫

१२. और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं पहले आज्ञाकारी (फ़रमांबरदार) बन जाऊँ।

قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ⑬

१३. कह दीजिए कि मुझे तो अपने रब की नाफ़रमानी करते हुए बड़े दिन के अज़ाब का डर लगता है।

قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهُ دِيْنِيْ ⑭

१४. कह दीजिए कि मैं तो ख़ालिस तौर से सिर्फ़ अल्लाह ही की इबादत करता हूँ।

فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ۭ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ⑮

१५. तुम उस के सिवाय जिसकी चाहो इबादत करते रहो, कह दीजिए कि हक़ीक़त में घाटे में वही हैं जो ख़ुद अपने आप को और अपने परिवार को क़यामत के दिन नुक़सान में डाल देंगे, याद रखो कि खुला घाटा यही है।

[1] और यह ईमान वाले ही हैं न कि काफ़िर। अगरचे वह ख़ुद को अक़्लमंद और आलिम ही समझते हों, लेकिन जब वह अपनी नीति और अक़्ल का इस्तेमाल करके ग़ौर-फ़िक्र ही नहीं करते और शिक्षा-दिक्षा (इबरत) नहीं हासिल करते तो वह जानवर की तरह अक़्ल और इल्म से महरूम हैं।

[2] यह इशारा है उस बात की तरफ़ कि अगर अपने देश में ईमान और तक़वा पर अमल करना कठिन हो तो वहाँ रहना अच्छा नहीं, बल्कि वहाँ से हिजरत (स्थानान्तरण) करके ऐसे इलाक़े में चले जाना चाहिए, जहाँ इन्सान अल्लाह के हुक्म के ऐतबार से ज़िन्दगी गुज़ार सके और जहाँ ईमान और तक़वा के रास्ते में रूकावट न हो।

लَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ۭ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ ۭ يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ﴿16﴾

१६. उन्हें नीचे-ऊपर से आग की लपटें छत की तरह ढांक रही होंगी, यही अज़ाब है जिन से अल्लाह (तआला) अपने बंदों को डरा रहा है। हे मेरे बन्दो! मुझ से डरते रहो।

وَالَّذِيْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ يَّعْبُدُوْهَا وَاَنَابُوْٓا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿17﴾

१७. और जो लोग अल्लाह के सिवाय तागूत (दूसरों) की इबादत से बचते रहे और तन-मन से अल्लाह (तआला) की तरफ़ आकर्षित (मायल) रहे, वे ख़ुशख़बरी के हक़दार हैं, तो मेरे बन्दों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।

الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿18﴾

१८. जो बात को कान लगा कर सुनते हैं फिर जो बड़ी अच्छी बात हो[1] उस के अनुसार काम करते हैं, यही हैं जिनको अल्लाह (तआला) ने हिदायत दिया है और यही अक़्लमंद भी हैं।[2]

اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ۭ اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ ﴿19﴾

१९. भला जिस इंसान पर अज़ाब की बात साबित हो चुकी है[3] तो क्या आप उसे जो नरक में है छुड़ा सकते हैं।

لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ڛ وَعْدَ اللّٰهِ ۭ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِيْعَادَ ﴿20﴾

२०. हां, वे लोग जो अपने रब का डर रखते रहे उन के लिए ऊँचे घर हैं, जिन के ऊपर भी बनी अटारियां हैं[4] और उन के नीचे पानी के चश्में बह रहे हैं। अल्लाह का वादा है और वह वादा नही तोड़ता।

---

1 أَحْسَنَ (सब से अच्छा) से मज़बूत और पक्की बात मुराद है, या अहकाम बातों में सब से अच्छा या अज़ीमत और हुक्म में से निश्चय, या सज़ा के मुक़ाबिल माफ़ी को पसंद करते हैं।

2 क्योंकि उन्होंने अपनी अक़्ल से फ़ायेदा उठाया है, जबकि दूसरों ने अपनी अक़्लों से फ़ायेदा नहीं उठाया।

3 यानी तक़दीर और क़िस्मत के बिना पर उस के अज़ाब का हक़ साबित हो चुका है। इस तरह के ज़ुल्म, कुफ़्र, गुनाह में अपनी आख़िरी हद को पहुँच गया जहां से उसकी वापसी मुमकिन नहीं, जैसे अबूजहल और आस पुत्र वाएल वग़ैरह, और गुनाहों ने उसको पूरी तरह घेर लिया और वह नरकवासी हो गया।

4 इसका मतलब यह है कि जन्नत में दर्जे होंगे एक के ऊपर एक। जैसे यहां कई मंज़िला इमारत (भवन) हैं जन्नत में भी दर्जों के हिसाब से एक-दूसरे के ऊपर अटारियां होंगी, जिन के बीच जन्नतियों की मर्ज़ी से दूध, शहद, शराब और पानी की नहरें जारी रहेंगी।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿21﴾

२१. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) आकाश से पानी उतारता है और उसे धरती के चश्मों में पहुँचाता है, फिर उसी के जरिये कई तरह की खेतियाँ उगाता है फिर वे सूख जाती हैं और आप उन्हें पीले रंग में देखते हैं फिर उन्हें चूरा-चूरा कर देता है। इस में अक़्लमंदों के लिए बड़ी नसीहत है।

أَفَمَن شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّن رَّبِّهِ ۚ فَوَيْلٌ لِّلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُم مِّن ذِكْرِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿22﴾

२२. क्या वह इंसान जिसका सीना अल्लाह (तआला) ने इस्लाम के लिए खोल दिया है तो वह अपने रब की तरफ़ से एक नूर पर है,[1] और हलाकत है उन के लिए जिन के दिल अल्लाह की याद से (असर नहीं लेते बल्कि) कठोर हो गये हैं, यह लोग पूरी तरह से भटकावे में पड़े हुए हैं।

اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿23﴾

२३. अल्लाह (तआला) ने सब से बेहतर बात नाज़िल की है, जो ऐसी किताब है कि आपस में मिलती-जुलती और बार-बार दोहराई हुई आयतों की है,[2] जिस से उन लोगों के शरीर काँप उठते हैं जो अपने रब का डर रखते हैं, आख़िर में उन के जिस्म और दिल अल्लाह (तआला) के ज़िक्र की तरफ़ (नरम होकर) झुक जाते हैं।[3] यह है अल्लाह (तआला) की हिदायत,

---

[1] यानी जिसको सच को मानने और भलाई का रास्ता अपनाने की ख़ुशनसीबी अल्लाह की तरफ़ से मिल जाये तो वह इस सीना खोल दिये जाने के सबब अल्लाह के प्रकाश (नूर) पर हो, क्या वह उस के बराबर हो सकता है जिसका दिल इस्लाम के लिए कठोर और उस का सीना तंग हो और वह गुमराही के अंधकारों में भटक रहा हो।

[2] أحسنُ الحديث (बेहतरीन बात) से मुराद वह्यी पाक क़ुरआन है। मिलती-जुलती का मतलब अच्छी भाषा, मोजिज़े और असर और अच्छे मायने में उस के सारे हिस्से एक-दूसरे से मिलते हैं, यानी यह भी आसमानी किताबों से मिलता है यानी उन के सदृश (तरह) है।

[3] यानी जब अल्लाह की दया और रहमत और मेहरबानी की उम्मीद उन के दिलों में जागती है तो उन में तपन और नर्मी पैदा हो जाती है और वह अल्लाह के ज़िक्र में लीन हो जाते हैं। हज़रत क़तादह ﷺ कहते हैं कि इस में अल्लाह के दोस्तों के गुणों (सिफ़त) का बयान किया गया है कि अल्लाह के डर से उन के दिल काँप जाते हैं, उनकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं और उन के दिलों को अल्लाह की याद से इत्मिनान होता है।

जिस के ज़रिये जिसे चाहे सच्चे रास्ते पर लगा देता है, और जिसे अल्लाह (तआला) ही रास्ता भुला दे उसका मार्गदर्शक (रहनुमा) कोई नहीं।

२४. भला जो इंसान क़यामत के दिन की बहुत ज़्यादा बुरे अज़ाबों की ढाल अपने मुँह को बनायेगा (ऐसे) ज़ालिमों से कहा जायेगा कि अपने किये हुए अमलों का (मज़ा) चखो।[1]

أَفَمَن يَتَّقِي بِوَجْهِهِۦ سُوٓءَ ٱلْعَذَابِ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ۚ وَقِيلَ لِلظَّٰلِمِينَ ذُوقُوا۟ مَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿24﴾

२५. उन से पहले वालों ने भी झुठलाया फिर उन पर वहाँ से अज़ाब आ पड़ा जहाँ से उनको अंदाज़ा भी न था।

كَذَّبَ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَىٰهُمُ ٱلْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿25﴾

२६. और अल्लाह (तआला) ने उन्हें दुनियावी ज़िन्दगी में अपमान का मज़ा चखाया[2] और अभी आख़िरत का तो बहुत सख़्त अज़ाब है। काश! ये लोग समझ लें।

فَأَذَاقَهُمُ ٱللَّهُ ٱلْخِزْىَ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ ٱلْءَاخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا۟ يَعْلَمُونَ ﴿26﴾

२७. निश्चय ही हम ने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर तरह की मिसाल बयान कर दी है, हो सकता है कि वे नसीहत (शिक्षा) हासिल कर लें।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِى هَٰذَا ٱلْقُرْءَانِ مِن كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿27﴾

२८. अरबी भाषा में क़ुरआन है जिस में कोई टेढ़ापन नहीं, हो सकता है कि वह संयम (तक़्वा) इख़्तियार कर लें।[3]

قُرْءَانًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِى عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿28﴾

[1] यानी क्या यह इंसान उस इंसान के बराबर हो सकता है जो क़यामत के दिन बेख़ौफ़ और शांत (मुतमईन) होगा?

[2] यह मक्का के काफ़िरों को चेतावनी (तंबीह) है कि पहले की क़ौमों ने पैग़म्बरों को झुठलाया तो उनकी यह बुरी हालत हुई और तुम सब से अच्छे रसूल तथा सब से अच्छे इंसान को झुठला रहे हो तो तुम्हें भी इस झुठलाने के बुरे नतीजे से डरना चाहिए।

[3] यानी पाक क़ुरआन साफ़ अरबी भाषा में है, जिस में कोई टेढ़ापन, विमुखता (इश्काल) और भ्रम नहीं ताकि लोग उस में बयान की गई चेतावनियों (वईदों) से डरें और उस में बयान किये वादों के पात्र (मुस्तहक़) बनने के लिए अमल करें।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيهِ شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۚ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (29)

२९. अल्लाह (तआला) मिसाल बयान कर रहा है कि एक वह इंसान जिस में बहुत से आपस में भिन्नता (इख़्तिलाफ़) रखने वाले साझीदार हैं और दूसरा वह इंसान जो सिर्फ़ एक ही का (दास) है, क्या ये दोनों सिफ़त (गुणों) में एक बराबर हैं।[1] सारी तारीफ़ें अल्लाह (तआला) के लिए हैं। बात यह है कि उन में से ज़्यादातर लोग जाहिल हैं।

اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ (30)

३०. बेशक ख़ुद आप को भी मौत आयेगी और ये सब भी मरने वाले हैं।

ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ (31)

३१. फिर तुम सब के सब क़यामत के दिन अपने रब के सामने झगड़ोगे।[2]

---

[1] इस में मुशरिक (अल्लाह का साझी बनाने वाले) और मुख़लिस (सिर्फ़ अल्लाह के लिए इबादत करने वाले) की मिसाल दी गई है, यानी एक ग़ुलाम है जो कई इंसानों के साझे का है जो आपस में झगड़ते रहते हैं और एक दूसरा ग़ुलाम है जिसका मालिक केवल एक ही इंसान है और उसकी मिल्कियत में उसका कोई साझी नहीं, क्या यह दोनों ग़ुलाम बराबर हो सकते हैं? नहीं, बेशक नहीं। इसी तरह वह मुशरिक जो अल्लाह के साथ दूसरे माबूदों की भी इबादत करता है और वह ख़ालिस ईमान वाला जो केवल एक अल्लाह की इबादत करता है और उस के साथ किसी को साझी नहीं बनाता, बराबर नहीं हो सकते।

[2] यानी हे पैग़म्बर, आप भी और आप के विरोधी (मुख़ालिफ़) भी मरकर इस दुनिया से हमारे पास आख़िरत (परलोक) में आयेंगे। दुनिया में तो एकेश्वरवाद (तौहीद) और मिश्रणवाद (शिर्क) का फ़ैसला तुम्हारे बीच नहीं हो सका और तुम इसके बारे में झगड़ते ही रहे, लेकिन यहाँ मैं इसका फ़ैसला कर दूँगा और ख़ालिस तौहीद वालों को जन्नत में और नकारने वाले झूठे मुश्रिकों को नरक में दाख़िल कराउँगा, इस आयत से भी नबी ﷺ की मौत का सुबूत मिलता है, जिस तरह सूर: आले-इमरान की आयत १४४ से भी मिलता है और इन्हीं आयतों से मतलब निकालकर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने आप (ﷺ) की मौत को साबित किया था। इसलिए नबी ﷺ के बारे में यह अक़ीदा रखना कि आप को बरज़ख़ (मौत के बाद से क़यामत तक के बीच की मुद्दत) में उसी तरह ज़िन्दगी मिली है जिस तरह दुनिया में मिली थी, पाक क़ुरआन के विपरीत (मुख़ालिफ़) है। आप को भी दूसरे इंसानों जैसे मौत हुई, इसलिए आप को गाड़ दिया गया, क़ब्र में आप को बर्ज़ख़ी (मध्य) की ज़िन्दगी तो ज़रूर मिली है जिसकी हालत का हमें ज्ञान (इल्म) नहीं, लेकिन क़ब्र में आप को दोबारा दुनियावी ज़िन्दगी नहीं दी गई।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ﴿32﴾

३२. उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन है जो अल्लाह (तआला) पर झूठ बोले और सच (दीन) उस के पास आये तो उसे झूठा बताये? क्या ऐसे काफ़िरों का ठिकाना नरक (जहन्नम) नहीं है?

وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿33﴾

३३. और जो लोग सच (धर्म) लाये[1] और जो उसे सच जाने[2] यही लोग परहेज़गार हैं।

لَهُم مَّا يَشَاءُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿34﴾

३४. उन के लिए उन के रब के पास (हर) वह चीज़ है जो ये चाहें, परहेज़गारों का यही बदला है।

لِيُكَفِّرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿35﴾

३५. ताकि अल्लाह (तआला) उन से उन के बुरे कर्मों को मिटा दे और जो नेक काम उन्होंने किये हैं उन का अच्छा बदला अता करे।

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۖ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِن دُونِهِ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿36﴾

३६. क्या अल्लाह (तआला) अपने बन्दों के लिए काफ़ी नहीं?[3] ये लोग आप को अल्लाह के सिवाय दूसरों से डरा रहे हैं, और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे उसकी हिदायत करने वाला कोई नहीं।

وَمَن يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّضِلٍّ ۗ أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انتِقَامٍ ﴿37﴾

३७. और जिसे अल्लाह हिदायत अता कर दे उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या अल्लाह (तआला) प्रभावशाली (ग़ालिब) और बदला लेने वाला नहीं है?

---

[1] इस से मुराद इस्लाम के रसूल हज़रत मोहम्मद ﷺ हैं जो सच्चा दीन लेकर आये, कुछ के क़रीब यह आम है, और इस से हर वह इंसान मुराद है जो तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत देता और अल्लाह के धर्म-विधान (शरीअत) की ओर लोगों की हिदायत करता है।

[2] कुछ ने इस से मुराद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ رضي الله عنه लिया है जिन्होंने सब से पहले रसूलुल्लाह ﷺ की तसदीक़ की और उन पर ईमान लाये, कुछ ने इसे भी आम रखा है जिस में सभी ईमानवाले शामिल हैं जो रसूलुल्लाह ﷺ की रिसालत (ईशदूत होने पर) विश्वास (ईमान) रखते हैं और आप ﷺ को सच्चा मानते हैं।

[3] इस से मुराद हज़रत नबी ﷺ हैं, कुछ के ख़्याल में यह आम है, सभी अम्बिया (ईशदूत) और ईमान वाले इस में शामिल हैं, मतलब यह है कि आप को अल्लाह के सिवाय दूसरे से डराते हैं लेकिन जब अल्लाह आप का मददगार और पक्षधर (वली) है तो आप का कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता, वह उन सब के मुक़ाबले में आप को काफ़ी है।

३८. अगर आप इन से पूछें कि आकाश और धरती को किस ने पैदा किया है तो बेशक ये यही जवाब देंगे कि अल्लाह ने। आप उन से कहिए कि भला यह तो बताओ कि जिन्हें तुम अल्लाह के सिवाय पुकारते हो अगर अल्लाह तआला मुझे नुक़सान पहुँचाना चाहे तो क्या ये उस के नुक़सान को हटा सकते हैं या अल्लाह तआला मुझ पर कृपा (रहमत) करना चाहता हो तो क्या ये उसकी रहमत को रोक सकते हैं, (आप) कह दें कि अल्लाह (महान) मुझे क़ाफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं।

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللّٰهُ ۚ قُلْ أَفَرَءَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهِ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهِ ۚ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ (38)

३९. कह दीजिए कि हे मेरी उम्मत के लोगो! तुम अपनी जगह पर अमल किये जाओ मैं भी अमल कर रहा हूँ,[1] जल्द ही तुम जान लोगे।

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عٰمِلٌ ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ (39)

४०. कि किस पर अपमानित (रूस्वा) करने वाला अज़ाब आता है और किस पर (स्थाई मार और) स्थाई (मुस्तक़िल) अज़ाब होता है?

مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُقِيمٌ (40)

४१. बेशक आप पर हम ने हक़ के साथ यह किताब लोगों के लिए नाज़िल की है, तो जो इंसान सीधे रास्ते पर आ जाये उसके अपने लिए (फ़ायेदा) है और जो भटक जाये उसके भटकने का (भार) उसी पर है, आप उन के ज़िम्मेदार नहीं।

إِنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۖ فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ (41)

४२. अल्लाह ही जानों को उन की मौत के समय और जिन की मौत नहीं आयी उन्हें उनकी नींद के समय क़ब्ज़ा कर लेता है, फिर जिन पर मौत का हुक्म हो चुका है उन्हें तो रोक लेता है और दूसरे (आत्माओं) को एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए छोड़ देता है,[2] फ़िक्र

اللّٰهُ يَتَوَفَّى الْأَنْفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَالَّتِي لَمْ تَمُتْ فِي مَنَامِهَا ۖ فَيُمْسِكُ الَّتِي قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْأُخْرٰى إِلٰى أَجَلٍ مُسَمًّى ۚ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيٰتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ (42)

---

[1] यानी अगर तुम मेरी तौहीद (अद्वैत) की दावत (आमन्त्रण) को क़ुबूल नहीं करते जिस के साथ अल्लाह ने मुझे भेजा है तो ठीक है, तुम्हारी इच्छा, तुम अपनी हालत पर रहो जिस पर तुम हो, मैं उस हालत पर रहता हूँ जिस पर मुझे अल्लाह ने रखा है।

[2] यानी जब तक उन का मुक़र्रर वक़्त नहीं आता उस वक़्त तक के लिए उनकी रूहें वापस होती

करने वालों के लिए इस में यक़ीनी तौर से बहुत-सी निशानियाँ हैं।

أَمِ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ شُفَعَاءَ ۚ قُلْ أَوَلَوْ كَانُوا لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ (43)

४३. क्या उन लोगों ने अल्लाह तआला के सिवाय (दूसरों को) सिफ़ारिशी मुक़र्रर कर रखा है? (आप) कह दीजिए कि चाहे वे कुछ भी हक़ न रखते हों और न अक़्ल रखते हों।

قُل لِّلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ۖ لَّهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ (44)

४४. कह दीजिए कि सभी सिफ़ारिशों का मालिक अल्लाह ही है। सारे आकाशों और धरती का मुल्क उसी के लिए है, फिर तुम सब उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे।

وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۖ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِن دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ (45)

४५. और जब अल्लाह अकेले का बयान किया जाये तो उन लोगों के दिल नफ़रत करने लगते हैं जो आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते, और जब उस के सिवाय (दूसरों) का बयान किया जाये तो उन के दिल वाज़ेह तौर से ख़ुश हो जाते हैं।[1]

قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ (46)

४६. (आप) कह दीजिए कि हे अल्लाह आकाशों और धरती के पैदा करने वाले, छिपी और ज़ाहिर के जानने वाले, तू ही अपने बंदों में उन बातों का फ़ैसला करेगा जिन में वे उलझ रहे थे।

रहती हैं, यह छोटी मौत है। यही विषय सूर: अन्आम ६० और ६१ में बयान किया गया है, फिर भी वहाँ छोटी मौत की चर्चा पहले और बड़ी मौत की बाद में है जबकि यहाँ उस के उल्टा है।

[1] हाँ, जब यह कहा जाता कि फ़लाँ-फ़लाँ भी माबूद हैं या वह भी तो अल्लाह के नेक बन्दे हैं, वह भी तो कुछ हक़ रखते हैं, वह भी मुश्किलकुशा हैं और ज़रूरत पूरी करते हैं तो यह मुश्रिकीन ख़ुश हो जाते हैं। गुमराहों की आज यही हालत है, जब उन से कहा जाता है कि केवल "हे अल्लाह मदद" कहो, क्योंकि अल्लाह के सिवाय कोई मदद करने वाला नहीं तो ग़ुस्सा हो जाते हैं, यह बात उन्हें बहुत बुरी लगती है, लेकिन जब "या अली मदद" या "या रसूल मदद" कहा जाये, इसी तरह दूसरे मुर्दों से मदद माँगी और गुहार की जाये, जैसे "या शेख़ अब्दुल क़ादिर शैअन लिल्लाह" वग़ैरह तो फिर उन के दिल की कलियाँ खिल जाती हैं।

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ مِن سُوءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ وَبَدَا لَهُم مِّنَ اللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ﴿47﴾

४७. और अगर ज़ालिमों के पास वह सब कुछ हो जो धरती पर है और उस के साथ उतना ही और हो, तो भी बुरे दण्ड (सज़ा) के बदले में क़यामत के दिन ये सब कुछ दे दें, और उन के सामने अल्लाह की तरफ़ से वह ज़ाहिर होगा जिसका अंदाज़ा भी उन्हें न था ।[1]

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿48﴾

४८. और जो कुछ उन्होंने किया था उस की बुराईयाँ उन पर खुल जायेंगी और जिसके साथ वे मज़ाक़ करते थे वह उन्हें आ घेरेगा ।

فَإِذَا مَسَّ الْإِنسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا خَوَّلْنَاهُ نِعْمَةً مِّنَّا قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ ۚ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿49﴾

४९. इंसान को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो हमें पुकारता है[2] फिर जब हम उसे अपनी तरफ़ से कोई सुख दे दें तो कहने लगता है कि यह तो मैं सिर्फ़ अपनी अक़्ल की वजह से अता किया गया हूँ[3] बल्कि यह परीक्षा (इम्तेहान) है, लेकिन उन में से ज़्यादातर लोग अन्जान हैं ।

قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿50﴾

५०. इन से पहले के लोग भी यही बात कह चुके हैं तो उनकी कार्यवाही उन के कुछ काम न आयी ।

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۚ وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ هَٰؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَمَا هُم بِمُعْجِزِينَ ﴿51﴾

५१. फिर उन की सभी बुराईयाँ उन पर आ पड़ी, और इन में से भी जो पापी हैं उन की की हुई बुराई भी अब उन पर आ पड़ेगी, ये (हमें) पराजित (आजिज़) कर देने वाले नहीं ।

[1] यानी अज़ाब की सख़्ती और उसका डर और उस की क़िस्में और रूप ऐसे होंगे कि कभी उन के ध्यान में न आये होंगे ।

[2] यह जाति के मुताबिक़ इंसान की चर्चा है, यानी इन्सानों की बहुसंख्यक (अकसरियत) की हालत यह है कि जब उनको रोग, भूक या कोई दूसरा दुख पहुँचता है तो उस से मुक्ति (नजात) पाने के लिए अल्लाह से दुआयें करता है और उस के आगे गिड़गिड़ाता है ।

[3] यानी सुख मिलते ही सरकशी और ज़्यादती का रास्ता अपना लेता है और कहता है कि इस में अल्लाह का क्या एहसान, यह तो मेरी चतुराई का नतीजा है या जो इल्म और सिफ़्त मेरे पास है उस की वजह से यह सुख-सुविधायें (ऐशो-आराम) मिली हैं या मुझे यह जानकारी थी कि यह चीज़ें मुझे मिलेंगी क्योंकि अल्लाह के क़रीब मेरा बहुत स्थान (मुक़ाम) है ।

५२. क्या उन्हें यह ज्ञान (इल्म) नहीं कि अल्लाह (तआला) जिस के लिए चाहे जीविका (रिज़्क़) बढ़ा देता है और तंग (भी), ईमानवालों के लिए इस में बड़ी-बड़ी निशानियाँ हैं।

أَوَلَمْ يَعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَـَٔايَٰتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ (52)

५३. (मेरी तरफ़ से) कह दो कि हे मेरे बन्दो! जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किये हैं तुम अल्लाह की कृपा (रहमत) से निराश न हो जाओ, बेशक अल्लाह (तआला) सभी पापों को माफ़ कर देता है। हक़ीक़त में वह बड़ा माफ़ करने वाला बड़ा रहम करने वाला है।[1]

قُلْ يَٰعِبَادِىَ ٱلَّذِينَ أَسْرَفُوا۟ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا۟ مِن رَّحْمَةِ ٱللَّهِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ يَغْفِرُ ٱلذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ (53)

५४. और तुम सब अपने रब की तरफ़ झुक पड़ो और उसका आज्ञापालन (पैरवी) किये जाओ, इस से पहले कि तुम्हारे पास अज़ाब आ जाये और फिर तुम्हारी मदद न की जाये।

وَأَنِيبُوٓا۟ إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا۟ لَهُۥ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَكُمُ ٱلْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ (54)

५५. और पैरवी करो उस सब से बेहतर की जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब की तरफ़ से नाज़िल की गयी है, इस से पहले कि तुम पर अचानक अज़ाब आ जाये और तुम्हें ख़बर भी न हो।

وَٱتَّبِعُوٓا۟ أَحْسَنَ مَآ أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَكُمُ ٱلْعَذَابُ بَغْتَةً وَأَنتُمْ لَا تَشْعُرُونَ (55)

५६. (ऐसा न हो कि) कोई इंसान कहे कि हाय अफ़सोस इस बात पर कि मैंने अल्लाह (तआला) के बारे में सुस्ती की, बल्कि मैं मज़ाक उड़ाने वालों में ही रहा।

أَن تَقُولَ نَفْسٌ يَٰحَسْرَتَىٰ عَلَىٰ مَا فَرَّطتُ فِى جَنۢبِ ٱللَّهِ وَإِن كُنتُ لَمِنَ ٱلسَّٰخِرِينَ (56)

५७. या कहे कि अगर अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं भी परहेज़गार लोगों में होता।

أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ ٱللَّهَ هَدَىٰنِى لَكُنتُ مِنَ ٱلْمُتَّقِينَ (57)

---

[1] इस आयत में अल्लाह की माफ़ी के विस्तार (कुशादगी) का बयान है। إسراف (इसराफ़) का मतलब है पापों की अधिकता और उस में ज़्यादती। "अल्लाह की दया (रहमत) से निराश न हो" का मतलब है कि ईमान लाने या तौबा (क्षमा-याचना) से पहले जितने भी पाप किये हों इन्सान यह न समझे कि मैं तो बड़ा पापी हूँ, मुझे अल्लाह कैसे माफ़ करेगा? बल्कि सच्चे दिल से अगर ईमान को क़ुबूल करेगा या ख़ालिस तौबा करेगा तो अल्लाह तआला (परमेश्वर) सब पापों को माफ़ कर देगा।

५८. या अज़ाबों को देखकर कहे, काश! किसी तरह मेरा लौट जाना हो जाता तो मैं भी नेक लोगों में हो जाता।

أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً فَأَكُونَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ (58)

५९. हां (हां) बेशक तुम्हारे पास मेरी आयतें पहुँच चुकी थीं जिन्हें तूने झुठलाया और घमंड (और गर्व) किया, और तू था ही काफ़िरों में।

بَلَىٰ قَدْ جَاءَتْكَ آيَاتِي فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ (59)

६०. और जिन लोगों ने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है तो आप देखेंगे कि क़यामत के दिन उन के मुँह काले हो गये होंगे। क्या घमंड करने वालों का ठिकाना नरक में नहीं?[1]

وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَى اللَّهِ وُجُوهُهُمْ مُسْوَدَّةٌ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِلْمُتَكَبِّرِينَ (60)

६१. और जिन लोगों ने संयम (तक़वा) किया उन्हे अल्लाह (तआला) उनकी कामयाबी के साथ बचा लेगा, उन्हें कोई दुख छू भी न सकेगा और वे न किसी तरह दुखी होंगे।

وَيُنَجِّي اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (61)

६२. अल्लाह सभी चीज़ों का जन्मदाता है, और वही हर चीज़ का संरक्षक (निगरां) है।

اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ (62)

६३. आकाशों और धरती की कुंजियों का मालिक वही है।[2] जिन-जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इंकार किया है वही नुक़सान उठाने वाले हैं।

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ (63)

६४. (आप) कह दीजिए कि हे मूर्खो! क्या तुम मुझ से अल्लाह के सिवाय दूसरों की इबादत के लिए कहते हो।

قُلْ أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَأْمُرُونِّي أَعْبُدُ أَيُّهَا الْجَاهِلُونَ (64)

---

[1] हदीस में है «الكِبْرُ بَطَرُ الحَقِّ وَغَمْطُ النَّاسِ» "सच का इंकार और लोगों को हीन (हक़ीर) समझना घमंड है।" यह सवाल सकारात्मक (मुस्बत) है यानी अल्लाह की इताअत से इन्कार करने वालों की जगह नरक है।

[2] مَقَالِيد यह مِقْلِيد और مِقْلَاد (मिक़लाद) का बहुवचन (जमा) है। (फ़तहुल क़दीर) जिसका मतलब कुंजियाँ है। कुछ ने 'ख़ज़ाना' किया है, मतलब दोनों तरह एक ही है कि सभी विषय की बागडोर उसी के हाथ में है।

وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿65﴾

६५. और बेशक तेरी तरफ़ भी और तुझ से पहले (के सभी नबियों) की तरफ़ भी वह्यी की गयी है कि अगर तूने शिर्क किया तो बेशक तेरा अमल बरबाद हो जायेगा और निश्चित (यक़ीनी) रूप से तू नुक़सान उठाने वालों में से हो जायेगा।[1]

بَلِ اللَّهَ فَاعْبُدْ وَكُن مِّنَ الشَّاكِرِينَ ﴿66﴾

६६. बल्कि तू अल्लाह ही की इबादत कर और शुक्रिया अदा करने वालों में से हो जा।

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿67﴾

६७. और उन लोगों ने जैसा सम्मान अल्लाह का करना चाहिए था नहीं किया, सारी धरती क़यामत के दिन उसकी मुट्ठी में होगी और सारा आकाश उस के दायें हाथ में लपेटे हुए होंगे। वह पाक और बुलन्द है हर उस चीज़ से जिसे लोग उसका साझीदार बनायें।

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَن شَاءَ اللَّهُ ۖ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنظُرُونَ ﴿68﴾

६८. और सूर (नरसिंघा) फूंक दिया जायेगा तो आकाशों और धरती वाले सभी बेहोश होकर गिर पड़ेंगे लेकिन जिसे अल्लाह चाहे,[2] फिर दोबारा सूर फूंका जायेगा तो वे अचानक खड़े होकर देखने लग जायेंगे।[3]

---

[1] "अगर तूने शिर्क किया" का मतलब यह है कि अगर मौत शिर्क पर आई और उस से तौबा (क्षमा-याचना) न की। संबोधन (ख़िताब) अगरचे मोहम्मद ﷺ से है जो शिर्क से पाक (पवित्र) भी थे और भविष्य (मुस्तक़बिल) के लिए महफ़ूज़ भी, क्योंकि पैग़म्बर अल्लाह की हिफ़ाज़त और संरक्षण (पनाह) में होता है, उनसे शिर्क होने की कोई उम्मीद न थी लेकिन यह हक़ीक़त में पैरोकारों की तरफ़ इशारा और उनको समझाना मक़सद था।

[2] यानी जिन को अल्लाह चाहेगा उन्हें मौत नहीं आयेगी, जैसे जिब्रील, मीकाईल और इस्राफ़ील फ़रिश्ते। कुछ कहते हैं कि रिज़वान फ़रिश्ता यानी अर्श को उठाने वाले फ़रिश्ते और स्वर्ग और नरक पर तैनात अधिकारी।

[3] चार नफ़ख़ों (फूंकों) के मानने वालों के क़रीब यह चौथा, तीन मानने वालों के क़रीब तीसरा और दो मानने वालों के क़रीब यह दूसरा नफ़ख़ा है। जो भी हो, इस फूंक से सब जिन्दा होकर मैदाने महशर में सारी दुनिया के रब के दरबार में हाज़िर हो जायेंगे जहाँ हिसाब-किताब होगा।

وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿69﴾

६९. और धरती अपने रब की दिव्य ज्योति (नूर) से जगमगा उठेगी,[1] आमालनामा (कर्मपत्र) पेश किये जायेंगे, नबियों और गवाहों को लाया जायेगा और लोगों के बीच इंसाफ़ के साथ फैसले कर दिये जायेंगे और उन पर ज़ुल्म न किया जायेगा।

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿70﴾

७०. और जिस इंसान ने जो कुछ किया है पूरी तरह से दे दिया जायेगा, और जो कुछ भी लोग कर रहे हैं, वह अच्छी तरह जानने वाला है।

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۭ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿71﴾

७१. और काफ़िरों के झुंड के झुंड नरक की तरफ़ हाँके जायेंगे,[2] जब वे उस के क़रीब पहुँच जायेंगे उस के दरवाज़े उन के लिए खोल दिये जायेंगे और वहाँ के रक्षक (निगराँ) उन से पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम में से रसूल (संदेशवाहक) नहीं आये थे? जो तुम पर तुम्हारे रब की आयतें पढ़ते थे और तुम्हें इस दिन की भेंट से सावधान (आगाह) करते थे, ये जवाब देंगे कि हाँ, क्यों नहीं! लेकिन अज़ाब का हुक्म काफ़िरों पर साबित हो गया।

قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿72﴾

७२. कहा जायेगा कि अब नरक के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ जहाँ वे हमेशा रहेंगे, बस नाफ़रमानों का ठिकाना बड़ा बुरा है।

---

[1] इस नूर (प्रकाश) से कुछ ने इंसाफ़ और कुछ ने हुक्म मुराद लिया है, लेकिन इसे वास्तविक अर्थ (हक़ीक़ी मायने) में लेने में कोई चीज़ रूकावट नहीं है, क्योंकि अल्लाह आकाशों और धरती का नूर है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] (ज़ुमर) زُمَرٌ यह زُمْرٌ (ज़म्र) से बना है जिसका मतलब स्वर है। हर गिरोह या समूह में शोर और आवाज़ें ज़रूर होती हैं, इसलिए यह गिरोह और समूह के लिए भी इस्तेमाल होता है। मतलब यह है कि काफ़िरों को नरक की ओर समूहों में ले जाया जायेगा, एक के पीछे एक गिरोह।

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ﴿73﴾

७३. और जो लोग अपने रब से डरते थे उन के गुट के गुट जन्नत की तरफ़ भेज दिये जायेंगे, यहाँ तक कि जब उस के क़रीब आ जायेंगे और दरवाज़े खोल दिये जायेंगे[1] और वहाँ के रक्षक (निगराँ) उन से कहेंगे कि तुम पर सलाम हो, तुम ख़ुश रहो! बस तुम इन में हमेशा के लिए चले जाओ।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ ۖ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ﴿74﴾

७४. और यह कहेंगे कि अल्लाह का शुक्र है जिस ने अपना वादा पूरा किया और हमें इस धरती का वारिस बना दिया कि स्वर्ग में जहाँ चाहें निवास करें, तो नेकी करने वालों का क्या ही अच्छा बदला है।

وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِّينَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿75﴾

७५. और तू फ़रिश्तों को अल्लाह के अर्श के चारों तरफ़ घेरा बनाये हुए अपने रब की तारीफ़ और तस्बीह करते हुए देखेगा[2] और उन में इंसाफ़ वाला फ़ैसला किया जायेगा और कह दिया जायेगा कि सभी तारीफ़ें (प्रशंसायें) अल्लाह ही के लिए हैं जो सारी दुनिया का रब है।

---

[1] हदीस में आता है कि जन्नत के आठ दरवाज़े हैं। उन में एक का नाम 'रय्यान' है जिस से केवल व्रत रखने वाले (रोज़ेदार) दाख़िल होंगे। (सहीह बुख़ारी न॰ २२५७, मुस्लिम न॰ ८०८) इसी तरह दूसरे दरवाज़ों के भी नाम होंगे, जैसे नमाज़ का दरवाज़ा, ज़कात का दरवाज़ा, जिहाद (धर्मयुद्ध) का दरवाज़ा वग़ैरह। (सहीह बुख़ारी, किताबुस सेयाम, मुस्लिम-किताबुज़ ज़कात)। दरवाज़े की चौड़ाई चालीस साल की दूरी के बराबर होगी, फिर भी वे भरे हुए होंगे। (सहीह मुस्लिम, किताबुज़ ज़ोहद) सब से पहले जन्नत का दरवाज़ा खटखटाने वाले नबी ﷺ होंगे। (मुस्लिम, किताबुल ईमान)

[2] अल्लाह के फ़ैसले के बाद जब ईमानवाले जन्नत में और काफ़िर व मुशरिक नरक में चले जायेंगे। आयत में उस के बाद का बयान किया गया है कि फ़रिश्ते अल्लाह के अर्श (आसन) को घेरे हुए अल्लाह की तारीफ़ और तस्बीह में लीन होंगे।

सूरतुल-मोमिन-४०

سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ

सूरः मोमिन मक्का में नाज़िल हुई और इस में पच्चासी आयतें और नौ रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. हा॰ मीम॰।

حٰمٓ ﴿1﴾

२. इस किताब का नाज़िल करना उस अल्लाह की तरफ़ से है जो ग़ालिब और जानने वाला है।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿2﴾

३. गुनाहों को माफ़ करने वाला और तौबा को क़ुबूल करने वाला, सख़्त अज़ाब वाला, एहसान और क़ुदरत वाला, जिस के सिवाय कोई माबूद नहीं, उसी की तरफ़ वापस लौटना है।

غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿3﴾

४. अल्लाह (तआला) की आयतों में वही लोग झगड़ते हैं जो काफ़िर हैं, तो उन लोगों का नगरों में चलना-फिरना आप को धोखे में न डाल दे।[1]

مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِى الْبِلَادِ ﴿4﴾

५. उन से पहले नूह की क़ौम ने और उन के बाद की दूसरी क़ौमों ने भी झुठलाया था, और हर उम्मत ने अपने रसूल को क़ैदी बनाने का इरादा किया, और झूठ के ज़रिये हठधर्मी की ताकि उन से सच को नाश कर दें, बस मैंने उनको पकड़ लिया, तो मेरी तरफ़ से कैसा दण्ड हुआ।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۢ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿5﴾

६. और इसी तरह आप के रब का हुक्म काफ़िरों पर साबित हो गया कि वे नरकवासी हैं।[2]

وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿6﴾

[1] यानी यह काफ़िर और मुश्रिक जो तिजारत करते हैं और उस के लिए कई नगरों में आते जाते और भारी फ़ायेदा हासिल करते हैं, यह अपने कुफ़्र के सबब जल्द ही अल्लाह की पकड़ में आ जायेंगे, यह मौक़ा ज़रूर दिये जा रहे हैं लेकिन उन्हें बेकार नहीं छोड़ा जायेगा।

[2] इस से मक़सद इस बात का स्पष्टीकरण (वज़ाहत) करना है कि जैसे पिछली उम्मतों पर तेरे रब का अज़ाब साबित हुआ और बरबाद कर दिये गये, अगर यह मक्का के नागरिक भी तुझे झुठलाने और विरोध (मुख़ालफ़त) करने से न रूके और झूठ झगड़े को न छोड़ा तो यह भी इसी तरह अल्लाह के अज़ाब में पकड़ लिये जायेंगे, फिर कोई उन्हें बचाने वाला न होगा।

الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ⑦

७. अर्श के उठाने वाले और उस के आस-पास के फ़रिश्ते अपने रब की तस्बीह तारीफ़ के साथ-साथ करते हैं और उस पर ईमान रखते हैं, और ईमानवालों के लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं; (कहते हैं) कि हे हमारे रब तूने हर चीज़ को अपनी दया (रहमत) और ज्ञान (इल्म) से घेर रखा है, तो तू उन्हें माफ़ कर दे जो माफ़ी मांगें और तेरे रास्ते की पैरवी करें और तू उन्हें नरक के अज़ाब से भी सुरक्षित (महफ़ूज़) रख।[1]

رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑧

८. हे हमारे रब! तू उन्हें हमेशा रहने वाले स्वर्ग में ले जा, जिनका तूने उनको वादा दिया है, और उन के बुज़ुर्गों और पत्नियों और सन्तानों में से (भी) उन सबको जो नेक हैं। बेशक तू ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है।

وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ ۚ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ⑨

९. और उन्हें कुकर्मों से भी महफ़ूज़ रख, (सच तो यह है कि) उस दिन तूने जिसे बुरे कामों (अशुभ) से बचा लिया उस पर तूने रहमत कर दी, और सब से बड़ी कामयाबी तो यही है।[2]

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللَّهِ أَكْبَرُ مِنْ مَقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ ⑩

१०. बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया उन्हें यह आवाज़ दी जायेगी कि निश्चय अल्लाह का तुम पर नाराज़ होना उस से बहुत ज़्यादा है, जो तुम नाराज़ होते थे अपने मन से जब तुम ईमान की तरफ़ बुलाये जाते थे, फिर कुफ़्र करने लगते थे।[3]

---

[1] इस में निकटता प्राप्त (मुक़र्रब) फ़रिश्तों के एक ख़ास गिरोह की चर्चा है और वे जो कुछ करते हैं, उसका स्पष्टीकरण (वज़ाहत) है। यह वह फ़रिश्ते हैं जो अर्श उठाने वाले हैं और वह फ़रिश्ते हैं जो अर्श के चारों तरफ़ हैं।

[2] यानी आख़िरत के अज़ाब से बच जाना और जन्नत में दाख़िला हो जाना यही सब से बड़ी कामयाबी है, क्योंकि इस जैसी कामयाबी कोई नहीं और इसके बराबर कोई कामयाबी नहीं।

[3] مَقْت (मक़्त) सख़्त ग़ुस्सा को कहते हैं, नरकवासी ख़ुद को नरक में झुलसते देखकर बहुत नाराज़ होंगे, उस समय उन से कहा जायेगा कि दुनिया में जब तुम्हें ईमान का आमन्त्रण (दावत) दिया जाता था और तुम इंकार करते थे तो अल्लाह तआला इस से कहीं ज़्यादा तुम पर नाराज़ होता था जितने आज तुम ख़ुद अपने ऊपर नाराज़ हो रहे हो, यह अल्लाह के उस ग़ुस्सा का ही नतीजा है कि आज तुम नरक में हो।

قَالُوا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿11﴾

११. (वे) कहेंगे कि हे हमारे रब! तूने हमें दोबारा मारा और दोबारा ही जिन्दा किया, अब हम अपने पापों को क़ुबूल करते हैं तो क्या अब कोई रास्ता निकलने का भी है?

ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗٓ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ۭ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ﴿12﴾

१२. यह (अज़ाब) तुम्हें इसलिए है कि जब केवल अकेले अल्लाह की तरफ़ बुलाया जाता तो तुम इंकार कर देते थे; और अगर उस के साथ किसी को शामिल कर लिया जाता था तो तुम क़ुबूल कर लेते थे,[1] तो अब फ़ैसला अल्लाह सब से बुलन्द और बड़े का ही है।

هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ رِزْقًا ۭ وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ﴿13﴾

१३. वही है जो तुम्हें अपनी निशानियाँ (चिन्ह) दिखाता है और तुम्हारे लिए आसमान से जीविका (रिज़्क़) उतारता है। नसीहत तो वही हासिल करते हैं जो (अल्लाह की तरफ़) झुकते हैं।

فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿14﴾

१४. तुम अल्लाह को पुकारते रहो उस के लिए दीन (धर्म) को ख़ालिस करके, यद्यपि (अगरचे) काफ़िर बुरा मानें।[2]

رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ يُلْقِي الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰي مَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿15﴾

१५. बुलन्द दर्जों वाला अर्श का मालिक! वह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है वह्यी (प्रकाशना) नाज़िल करता है[3] ताकि वह भेंट (मुलाक़ात) के दिन से डराये।

---

[1] यह उन के नरक से न निकाले जाने का सबब बताया है कि तुम दुनिया में अल्लाह की तौहीद (एकता) का इंकार करते थे और शिर्क तुम्हें पसन्द था, इसलिए अब नरक के स्थायी (मुस्तक़िल) अज़ाब के सिवाय तुम्हारे लिये कुछ नहीं।

[2] यानी जब सब कुछ अल्लाह अकेला ही करने वाला है तो काफ़िरों को कितना ही बुरा लगे, केवल उसी एक अल्लाह को पुकारो उसके लिए इबादत और इताअत को ख़ालिस करते हुए।

[3] روح (रूह) आत्मा से मुराद वह्यी (प्रकाशना) है जो बन्दों ही में से किसी को रिसालत (ईशदूतत्व) के लिए चुन कर नाज़िल करता है। वह्यी (प्रकाशना) को रूह (आत्मा) इसलिए कहा गया है कि जिस तरह रूह में इंसानी ज़िन्दगी के वजूद और हिफ़ाज़त का भेद (राज़) छिपा है, उसी तरह वह्यी से भी उन इन्सानी दिलों में जीवन की लहर दौड़ जाती है जो पहले कुफ़्र और शिर्क के सबब मुर्दा होते हैं।

१६. जिस दिन (सब) लोग ज़ाहिर हो जायेंगे,[1] उन की कोई चीज़ अल्लाह से छिपी न रहेगी। आज किस का राज्य (मुल्क) है?[2] सिर्फ़ अल्लाह एक और ज़बरदस्त का।

يَوْمَ هُم بَٰرِزُونَ ۖ لَا يَخْفَىٰ عَلَى ٱللَّهِ مِنْهُمْ شَىْءٌ ۚ لِّمَنِ ٱلْمُلْكُ ٱلْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ ٱلْوَٰحِدِ ٱلْقَهَّارِ ﴿16﴾

१७. आज हर जान को उसकी करनी का फल दिया जायेगा, आज (किसी तरह का) जुल्म नहीं, बेशक अल्लाह (तआला) जल्द ही हिसाब करने वाला है।

ٱلْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ ۚ لَا ظُلْمَ ٱلْيَوْمَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ سَرِيعُ ٱلْحِسَابِ ﴿17﴾

१८. और उन्हें बहुत क़रीब आने वाली[3] (क़यामत) से आगाह कर दें जबकि दिल गले तक पहुँच जायेंगे और सब शान्त (चुप) होंगे। ज़ालिमों का कोई वली (मित्र) होगा न सिफ़ारिश करने वाला कि जिसकी बात मानी जायेगी।

وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ ٱلْءَازِفَةِ إِذِ ٱلْقُلُوبُ لَدَى ٱلْحَنَاجِرِ كَٰظِمِينَ ۚ مَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ﴿18﴾

१९. वह आँखों की बेईमानी को और सीने की छिपी बातों को (अच्छी तरह) जानता है।[4]

يَعْلَمُ خَآئِنَةَ ٱلْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِى ٱلصُّدُورُ ﴿19﴾

२०. और अल्लाह (तआला) ठीक-ठीक फ़ैसला कर देगा, और उस के सिवाय जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे किसी बात का भी फ़ैसला नहीं कर सकते, बेशक अल्लाह तआला अच्छी तरह

وَٱللَّهُ يَقْضِى بِٱلْحَقِّ ۖ وَٱلَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِۦ لَا يَقْضُونَ بِشَىْءٍ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْبَصِيرُ ﴿20﴾

---

[1] यानी ज़िन्दा होकर क़ब्रों से बाहर निकल खड़े होंगे।

[2] यह क़यामत के दिन अल्लाह तआला (परमेश्वर) पूछेगा जब सभी इन्सान उसके आगे महशर के मैदान (जमा होने की जगह) में खड़े होंगे। अल्लाह तआला धरती को अपनी मुट्ठी और आकाश को अपने दायें हाथ में लपेट लेगा और कहेगा, "राजा मैं हूँ, धरती के राजा कहाँ हैं?" (सहीह बुख़ारी, सूर: ज़ुमर)

[3] أَزِفَةٌ (आज़िफ़:) का मतलब है क़रीब आने वाली, यह क़यामत (प्रलय) का नाम है, इसलिए की वह भी क़रीब आने वाली है।

[4] इस में अल्लाह तआला के पूरे इल्म का बयान है कि उसे सभी चीज़ों का इल्म है, छोटी हो या बड़ी, बारीक हो या मोटी, ऊँचे दर्जे की हो या नीचे दर्जे की। इसलिए इन्सान को चाहिए कि उस के इल्म और इहाता की यह हालत है तो उसकी नाफ़रमानी से बचे और सही मानों में उसका डर अपने भीतर पैदा करे, आँखों की बेईमानी चोरी से देखना है, जैसे रास्ता चलते किसी सुंदरी को कंखियों से देखना, सीनों की बातों में वे शक भी आ जाते हैं जो इन्सान के मन में पैदा होती रहती हैं, वह जब तक शक ही रहते हैं यानी एक पल के लिये आते-जाते रहते हैं तब तक तो वह पकड़ के लायक़ नहीं होंगे किन्तु वह जब इरादा का रूप धारण कर लें तो फिर उन पर पकड़ हो सकती है, चाहे उन्हें करने का मौक़ा इन्सान को मिले या न मिले।

सुनने वाला और अच्छी तरह देखने वाला है।

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ لَهُم مِّنَ اللَّهِ مِن وَاقٍ (21)

२१. क्या यह लोग धरती पर चले-फिरे नहीं कि देखते कि जो लोग इन से पहले थे उनका नतीजा कैसा कुछ हुआ? वे ताक़त और क़ूवत और धरती पर अपनी यादगारों की बुनियाद पर इन की अपेक्षा (मुक़ाबिल) ज़्यादा थे, फिर भी अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों की वजह से पकड़ लिया, और कोई न हुआ जो उन्हें अल्लाह के अज़ाबों से बचा लेता।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَت تَّأْتِيهِمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ (22)

२२. यह इस वजह से कि उन के पास उन के पैग़म्बर चमत्कार (मोजिज़े) ले-ले कर आते थे तो वे इंकार कर देते थे, तो अल्लाह उन्हें पकड़ लेता था। बेशक वह बड़ा ताक़तवर और सख़्त सज़ाओं वाला है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ (23)

२३. और हम ने मूसा (عليه السلام) को अपनी आयतों (चिन्हों) और वाज़ेह दलीलों के साथ भेजा।[1]

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا سَاحِرٌ كَذَّابٌ (24)

२४. फ़िरऔन और हामान और क़ारून की तरफ़ तो उन्होंने कहा कि (यह तो) जादूगर और झूठा है।[2]

فَلَمَّا جَاءَهُم بِالْحَقِّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ ۚ وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ (25)

२५. तो जब उन के पास मूसा (عليه السلام) हमारी तरफ़ से सच्चा (धर्म) लेकर आये तो उन्होंने कहा कि इस के साथ जो ईमानवाले हैं उन के पुत्रों को तो मार डालो और पुत्रियों को ज़िन्दा रखो,[3] और काफ़िरों का जो बहाना है वह

---

[1] आयात से मुराद वह नौ निशानियाँ हैं जिनका बयान पहले किया जा चुका है, या लाठी और रौशन हाथ वाले दो बड़े खुले मोजिज़े हैं। سُلطان مبین से मुराद वाज़ेह सबूत और खुली दलीलें (तर्क) हैं जिनका कोई जवाब मुमकिन नहीं था सिवाय ढीटाई और बेशर्मी के।

[2] फ़िरऔन मिश्र (इजिप्ट) के निवासी क़िब्त नाम के जाति का राजा था, बड़ा सख़्त और बेरहम और परमेश्वर होने का दावेदार। उस ने हज़रत मूसा की जाति को दास (ग़ुलाम) बना रखा था और उन पर कई तरह के ज़ुल्म करता था, जैसाकि क़ुरआन की कई जगहों पर उसका बयान है। हामान, फ़िरऔन का मंत्री और ख़ास परामर्श (मश्विरा) देने वाला था और क़ारून वक़्त का बड़ा धनी पुरूष था, उन सभों ने पहले लोगों की तरह अल्लाह के रसूल मूसा को झुठलाया और उन्हें जादूगर और झूठा कहा।

[3] फ़िरऔन यह काम पहले ही कर रहा था ताकि वह बच्चा पैदा ही न हो जो ज्योतिषियों

गुमराही पर ही है।

वَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِي الْاَرْضِ الْفَسَادَ ﴿26﴾

२६. और फ़िरऔन ने कहा कि मुझे छोड़ो कि मैं मूसा को मार डालूं और इसे चाहिए कि अपने रब को पुकारे,[1] मुझे तो डर है कि यह कहीं तुम्हारा दीन न बदल डाले या देश में कोई बहुत बड़ा फ़साद न पैदा कर दे।

وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿27﴾

२७. और मूसा (ﷺ) ने कहा कि मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह में आता हूं, हर उस घमंडी इंसान (की बुराई) से जो हिसाब (लेखा-जोखा) के दिन पर ईमान नहीं रखता।[2]

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ۖ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ۭ وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿28﴾

२८. और एक ईमानवाले इंसान ने जो फ़िरऔन के परिवार में से था और अपना ईमान छिपाये हुए था, कहा कि क्या तुम एक इंसान को सिर्फ़ इस बात पर क़त्ल करते हो कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और तुम्हारे रब की तरफ़ से वाज़ेह सुबूत लेकर आया है, अगर वह झूठा है तो उसका झूठ उसी पर है और अगर सच्चा है तो वह जिन (अज़ाबों) का तुम को वादा दे रहा है उस में से कोई न कोई तुम पर आ पड़ेगा। अल्लाह (तआला) उन को मार्गदर्शन (हिदायत) नहीं करता जो हद से

(नजूमियों) की भविष्यवाणी (पेशीनगोई) के ऐतबार से उस के मुल्क के लिए ख़तरा हो सकता था, यह दोबारा हुक्म उस ने हज़रत मूसा के अपमान और बेइज़्ज़ती के लिए दिया।

[1] यह फ़िरऔन की अकड़ का प्रदर्शन (इज़हार) है कि मैं देखूंगा उस का रब उसे कैसे बचाता है, उसे पुकार कर देख ले या रब ही का इंकार है कि उसका कौन सा रब है जो बचा लेगा, क्योंकि वह रब तो ख़ुद ही को कहता था।

[2] ईशदूत मूसा ﷺ को जब यह पता लगा कि फ़िरऔन मुझे क़त्ल कर देना चाहता है तो उन्होंने उसकी बुराई से बचने के लिए अल्लाह से दुआ की। नबी ﷺ को जब दुश्मन से डर होता तो यह दुआ (प्रार्थना) करते।

«اللَّهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِي نُحُورِهِمْ وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شُرُورِهِمْ»

"हे अल्लाह! हम तुझ को उन के मुक़ाबिले में करते हैं और उनकी सरकशी से तेरी पनाह चाहते हैं।" (मुसनद अहमद : ४\४१५)

तजावुज़ करने वाले और झूठे हों।[1]

२९. हे मेरी क़ौम के लोगो! आज तो राज तुम्हारा है कि इस धरती पर तुम ग़ालिब हो, लेकिन अगर अल्लाह (तआला) का अज़ाब हम पर आ गया, तो कौन हमारी मदद करेगा? फ़िरऔन बोला कि मैं तो तुम्हें वही सलाह दे रहा हूँ जो ख़ुद देख रहा हूँ और मैं तो तुम्हें भलाई का रास्ता ही बता रहा हूँ।

يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ فِي الْاَرْضِ ؗ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ؕ قَالَ فِرْعَوْنُ مَاۤ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَاۤ اَرٰى وَمَاۤ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿29﴾

३०. और उस ईमानवाले ने कहा कि हे मेरी क़ौम के लोगो! मुझे तो डर है कि तुम पर भी वैसा ही दिन (अज़ाब) न आये जो दूसरे समुदायों (क़ौमों) पर आया।

وَقَالَ الَّذِيْۤ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ ﴿30﴾

३१. जैसे नूह की क़ौम और आद और समूद और उन के बाद वालों का (हाल हुआ),[2] और अल्लाह अपने बंदों पर किसी तरह का ज़ुल्म करना नहीं चाहता।[3]

مِثْلَ دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿31﴾

३२. और हे मेरी क़ौम के लोगो! मुझे तो तुम पर हाँक पुकार के दिन का भी डर है।

وَيٰقَوْمِ اِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ﴿32﴾

३३. जिस दिन तुम पीठ फेर कर लौटोगे, तुम्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा; और जिसे अल्लाह भटका दे उसका रहनुमा कोई नहीं।

يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿33﴾

---

[1] इसका मतलब यह है कि अगर वह झूठा होता (जैसाकि तुम यक़ीन दिलाते हो) तो अल्लाह उसे दलीलों और चमत्कारों (मोजिज़े) से सरफ़राज़ न करता, जबकि उस के पास यह चीज़ें मौजूद हैं। दूसरा मतलब है कि अगर वह झूठा है तो अल्लाह तआला ख़ुद ही उसे ज़लील और उसको हलाक कर देगा, तुम्हें उस के विरोध (ख़िलाफ़) में कुछ करने की ज़रूरत नहीं।

[2] यह बात उस ईमानवाले इंसान ने समझाई और अपनी क़ौम को दोबारा डराया कि अगर अल्लाह के रसूल को झुठलाने पर हम अड़े रहे तो ख़तरा है कि पिछली उम्मतों की तरह अल्लाह के अज़ाब की पकड़ में आ जायेंगे।

[3] यानी अल्लाह ने जिन्हें भी बरबाद किया उन के गुनाहों के बदले में और रसूलों को झुठलाने और उन के विरोध (मुख़ालफ़त) के सबब ही किया, नहीं तो वह मेहरबान और रहीम रब अपने बंदों पर ज़ुल्म का इरादा ही नहीं करता। क़ौमों की हलाकत (विनाश) बदला के नियम का ज़रूरी नतीजा है जिस से कोई उम्मत या इंसान अलग नहीं है।

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوسُفُ مِن قَبْلُ بِالْبَيِّنَٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِى شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُم بِهِۦ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَن يَبْعَثَ ٱللَّهُ مِنۢ بَعْدِهِۦ رَسُولًا ۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ ٱللَّهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابٌ ﴿34﴾

३४. और उस से पहले तुम्हारे पास यूसुफ निशानियाँ ले कर आये[1] फिर भी तुम उनकी लायी हुई निशानियों में शक व शुब्हा ही करते रहे, यहाँ तक कि जब उन की मौत हो गयी तो तुम कहने लगे कि उन के बाद तो अल्लाह किसी रसूल को भेजेगा ही नहीं, इसी तरह अल्लाह भटकाता है हर उस इंसान को जो हद से तजावुज़ करने वाला और शक व शुब्हा करने वाला हो।

ٱلَّذِينَ يُجَٰدِلُونَ فِىٓ ءَايَٰتِ ٱللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَٰنٍ أَتَىٰهُمْ ۖ كَبُرَ مَقْتًا عِندَ ٱللَّهِ وَعِندَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ۚ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ ٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿35﴾

३५. जो बिना किसी सुबूत के जो उन के पास आया हो अल्लाह की आयतों के बारे में झगड़ते हैं,[2] अल्लाह के क़रीब और ईमानवालों के क़रीब यह तो बहुत नाराज़गी की चीज़ है। अल्लाह (तआला) इसी तरह हर घमंडी, नाफ़रमानी करने वाले इंसान के दिल पर मोहर लगा देता है।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَٰهَٰمَٰنُ ٱبْنِ لِى صَرْحًا لَّعَلِّىٓ أَبْلُغُ ٱلْأَسْبَٰبَ ﴿36﴾

३६. और फ़िरऔन ने कहा कि हे हामान, मेरे लिए एक ऊँची अटारी बना, शायद मैं उन दरवाज़ों तक पहुँच जाऊँ।

أَسْبَٰبَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ فَأَطَّلِعَ إِلَىٰٓ إِلَٰهِ مُوسَىٰ وَإِنِّى لَأَظُنُّهُۥ كَٰذِبًا ۚ وَكَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوٓءُ عَمَلِهِۦ وَصُدَّ عَنِ ٱلسَّبِيلِ ۚ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِى تَبَابٍ ﴿37﴾

३७. जो आकाश के दरवाज़े हैं और मूसा के इलाह (ईश्वर) को झाँक लूँ और मुझ को तो पूरा यक़ीन है कि वह झूठा है, और इसी तरह फ़िरऔन के बुरा काम उसे भले दिखाये गये और रास्ते से रोक दिया गया, और फ़िरऔन का (हर) षड्यन्त्र (साज़िश) तबाही में ही रहा।

وَقَالَ ٱلَّذِىٓ ءَامَنَ يَٰقَوْمِ ٱتَّبِعُونِ أَهْدِكُمْ سَبِيلَ ٱلرَّشَادِ ﴿38﴾

३८. और उस ईमान वाले इंसान ने कहा कि हे मेरी क़ौम (के लोगो)! तुम (सब) मेरी पैरवी

---

[1] यानी हे मिश्र के निवासियों ईशदूत (पैग़म्बर) मूसा से पहले इसी इलाक़े में जिस में तुम बस रहे हो, ईशदूत यूसुफ़ भी सुबूतों और दलीलों के साथ आये थे जिस में तुम्हारे बुज़ुर्गों को ईमान की दावत दी गई थी। यानी جاءكم (तुम्हारे पास आये) से मुराद جاء إلى آبائكم (तुम्हारे बुज़ुर्गों के पास आये) हैं।

[2] अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल कोई सुबूत उस के पास नहीं है, इस के बावजूद भी अल्लाह की तौहीद और उस के हुक्मों में झगड़ते हैं, जैसाकि हर ज़माने में अंधे पैरोकारों का तरीक़ा रहा है।

करो, मैं नेकी के रास्ते की तरफ़ तुम्हारी हिदायत करूँगा।[1]

يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ؗ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ﴿39﴾

३९. हे मेरे गिरोह के लोगो! यह दुनियावी जिन्दगी फ़ना होने वाले सामान है (यक़ीन करो कि शान्ति) और मुस्तक़िल घर तो आख़िरत ही है।

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰۤى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿40﴾

४०. जिस ने गुनाह किया है, उस को तो बराबर का बदला ही है; और जिस ने नेकी की है चाहे वह मर्द हो या औरत और वह ईमानदार हो, तो ये लोग[2] जन्नत में जायेंगे और वहाँ वे हिसाब रोजी (जीविका) पायेंगे।

وَيٰقَوْمِ مَا لِيْۤ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَى النَّارِ ﴿41﴾

४१. और हे मेरी जाति के लोगो! यह क्या बात है कि मैं तुम्हें नजात की तरफ़ बुला रहा हूँ, और तुम मुझे नरक की तरफ़ बुला रहे हो।

تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ؗ وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ﴿42﴾

४२. तुम मुझे यह दावत दे रहे हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ़्र करूँ और उस के साथ शिर्क करूँ जिसका कोई इल्म मुझे नहीं; और मैं तुम्हें प्रभावशाली (ग़ालिब), माफ़ करने वाले (उपास्य) की तरफ़ दावत दे रहा हूँ।

لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿43﴾

४३. यह निश्चित (यक़ीनी) बात है कि तुम मुझे जिसकी तरफ़ दावत दे रहे हो वह न तो दुनिया में पुकारने के लायक़ है और न आख़िरत में, और यह (भी निश्चित बात है) कि हम सबका लौटना अल्लाह ही की तरफ़ है और हद से गुज़र जाने वाले बेशक नरक वाले हैं।

---

[1] फ़िरऔन की जाति में से ईमान लाने वाला फिर बोला और कहा कि दावा तो फ़िरऔन भी करता है कि मैं तुम्हें सीधे रास्ते पर चला रहा हूँ, लेकिन हक़ीक़त यह है कि फ़िरऔन रास्ते से गुमराह है। मैं जिस रास्ते का निशान बता रहा हूँ वह सीधा रास्ता है, जिसकी तरफ़ तुम्हें ईशदूत मूसा (अलैहिस्सलाम) बुला रहे हैं।

[2] यानी वह जो ईमानदार भी होंगे और अच्छे आमाल (कर्मों) के पालन करने वाले भी, उसका खुला मतलब यह है कि नेकी के बिना ईमान या ईमान के बिना नेकी का अल्लाह के क़रीब कोई मूल्य (क़ीमत) नहीं होगा। अल्लाह के पास कामयाबी के लिए ईमान के साथ नेकी और नेकी के साथ ईमान ज़रूरी है।

४४. तो आगे चलकर तुम मेरी बातों को याद करोगे, मैं अपना मामला अल्लाह के हवाले करता हूं। बेशक अल्लाह (तआला) बन्दों को देखने वाला है।

فَسَتَذْكُرُونَ مَآ أَقُولُ لَكُمْ ۚ وَأُفَوِّضُ أَمْرِىٓ إِلَى ٱللَّهِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ بَصِيرٌۢ بِٱلْعِبَادِ ﴿44﴾

४५. तो उसे अल्लाह (तआला) ने सभी बुराईयों से महफ़ूज रख लिया जो उन लोगों ने सोच रखा था, और फ़िरऔन के पैरोकारों पर बुरी तरह का अजाब टूट पड़ा।

فَوَقَىٰهُ ٱللَّهُ سَيِّـَٔاتِ مَا مَكَرُوا۟ ۖ وَحَاقَ بِـَٔالِ فِرْعَوْنَ سُوٓءُ ٱلْعَذَابِ ﴿45﴾

४६. आग है जिस के सामने ये हर सुबह और शाम को लाये जाते हैं;[1] और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी (हुक्म होगा कि) फ़िरऔन के पैरोकारों को बहुत सख़्त अजाब में डालो।[2]

ٱلنَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا ۖ وَيَوْمَ تَقُومُ ٱلسَّاعَةُ أَدْخِلُوٓا۟ ءَالَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ ٱلْعَذَابِ ﴿46﴾

---

[1] इस आग पर «बर्जख़» में यानी क़ब्रों में वे लोग हमेशा सुबह और शाम पेश किये जाते हैं, जिस से क़ब्र का अजाब साबित होता है, जिसका कुछ लोग इंकार करते हैं। हदीसों में तो बड़ी तफ़सील से क़ब्र के अजाब पर रौशनी डाली गई है। जैसे हजरत आयेशा (رضى الله عنها) के सवाल के जवाब में नबी ﷺ ने फ़रमाया :

«نَعَمْ، عَذَابُ الْقَبْرِ حَقٌّ»

«हाँ, क़ब्र का अजाब सच है।» (सहीह बुख़ारी, किताबुल जनायज, बाबु माजाअ फ़ी अज़ाबिल क़ब्रे)

इसी तरह एक दूसरी हदीस में फ़रमाया गया :

«जब तुम में से कोई मरता है तो (क़ब्र में) सुबह-शाम उसका स्थान पेश किया जाता है।» यानी अगर वह जन्नत का हक़दार है तो जन्नत और जहन्नम का हक़दार हो तो जहन्नम उस के सामने पेश की जाती है और कहा जाता है कि यह तेरा मुस्तक़िल मकान है, जहाँ क़यामत के दिन अल्लाह तआला तुझे भेजेगा। (सहीह बुख़ारी, बाबुल मय्यते युअ्रजु अलैहि मक़अदोहू बिल ग़दाते वल अशीये, मुस्लिम किताबुल जन्नते, बाबु अर्जे मक़अदिल मय्यते)

इसका मतलब यह है कि जो क़ब्र के अजाब का इंकार करते हैं, वह क़ुरआन और हदीस दोनों की व्याख्या (तफ़सीर) को नहीं मानते।

[2] इससे पहले साफ़ है कि आग पर पेश किये जाने का मामला जो सुबह-शाम होता है, क़यामत के पहले बर्जख़ व क़ब्र ही की जिन्दगी है, क़यामत के दिन उनको क़ब्र से निकालकर कड़े अजाब यानी नरक में डाल दिया जायेगा। 'आले फ़िरऔन' से मुराद ख़ुद फ़िरऔन, उसकी क़ौम और उस के सभी पैरोकार हैं। यह कहना कि हमें तो क़ब्र में मुर्दा आराम से पड़ा दिखाई देता है, उसे अगर अजाब हो तो इस हालत में दिखाई न दे, बकवास है क्योंकि अजाब के लिए यह जरूरी नहीं कि हमें दिखाई भी पड़े, अल्लाह हर तरह से अजाब देने पर क़ादिर है। क्या हम देखते नहीं कि एक इंसान सपने में बहुत दुखद दृश्य (मंजर) देख कर बड़ी बेचैनी और दुख का एहसास करता है, लेकिन देखने वाले को जरा एहसास नहीं होता कि यह सोया इंसान सख़्त दुख में है।

وَإِذْ يَتَحَاجُّونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضُّعَفَٰٓؤُا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوٓا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنتُم مُّغْنُونَ عَنَّا نَصِيبًا مِّنَ النَّارِ ﴿47﴾

४७. और जबकि नरक में एक-दूसरे से झगड़ेंगे तो कमजोर लोग बड़े लोगों से (जिन के ये ताबे थे) कहेंगे कि हम तो तुम्हारे पैरोकार थे तो क्या अब तुम हम से इस आग का कोई हिस्सा हटा सकते हो?

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوٓا إِنَّا كُلٌّ فِيهَآ إِنَّ اللَّهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿48﴾

४८. वे बड़े लोग जवाब देंगे कि हम तो सभी इसी आग में हैं, अल्लाह (तआला) अपने बंदों के बीच फ़ैसला कर चुका है।

وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿49﴾

४९. और सभी नरकवासी (जमा होकर) नरक के रक्षकों (मुहाफ़िज़ों) से कहेंगे कि तुम ही अपने रब से दुआ करो कि वह किसी दिन भी हमारे अज़ाब में कमी कर दे।

قَالُوٓا أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمْ رُسُلُكُم بِالْبَيِّنَٰتِ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۚ قَالُوا فَادْعُوا ۗ وَمَا دُعَٰٓؤُا الْكَٰفِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَٰلٍ ﴿50﴾

५०. वे जवाब देंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल चमत्कार (मोजिज़े) लेकर नहीं आये थे, वे कहेंगे कि क्यों नहीं। वे कहेंगे कि फिर तुम ही दुआ करो और काफ़िरों की दुआ सिर्फ़ (बेअसर और) बेकार है।

إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ ءَامَنُوا فِي الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَٰدُ ﴿51﴾

५१. यक़ीनन हम अपने रसूलों की और ईमान वालों की दुनियावी ज़िन्दगी में भी मदद करेंगे और उस दिन भी जब गवाही देने वाले खड़े होंगे।

يَوْمَ لَا يَنفَعُ الظَّٰلِمِينَ مَعْذِرَتُهُمْ ۖ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوٓءُ الدَّارِ ﴿52﴾

५२. जिस दिन ज़ालिमों की विवशता (बहाना) कुछ फ़ायेदा न देगी और उन के लिए धिक्कार (लानत) ही होगी और उन के लिए बुरा घर होगा।

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَى الْهُدَىٰ وَأَوْرَثْنَا بَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ الْكِتَٰبَ ﴿53﴾

५३. और हम ने मूसा को हिदायत अता की और इस्राईल की औलाद को इस किताब का उत्तराधिकारी (वारिस) बनाया।

هُدًى وَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَٰبِ ﴿54﴾

५४. कि वह हिदायत और नसीहत थी बुद्धिमानों (अक़्लमंदों) के लिए।

इस के बावजूद भी क़ब्र के अज़ाब का इंकार सिर्फ़ हठधर्मी है, बल्कि बेदारी की हालत में भी इंसान को जो तकलीफ़ें होती हैं वह ख़ुद ज़ाहिर नहीं होती बल्कि केवल इंसान का तड़पना और तिलमिलाना ज़ाहिर होता है, और यह भी उस हालत में जब वह तड़पे और तिलमिलाये।

५५. तो (हे नबी!) तू सब्र कर। अल्लाह का वादा (बेशक) सच्चा ही है, तू अपने गुनाहों की माफ़ी माँगता रह[1] और सुबह-शाम[2] अपने रब की तस्बीह और महिमागान करता रह।

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ﴿55﴾

५६. बेशक जो लोग अपने पास किसी सुबूत के न होने के बावजूद अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं; उन के दिलों में बड़ाई के सिवाय दूसरे कुछ नहीं जो इस बड़ाई तक पहुँचने वाले नहीं, तो तू अल्लाह की पनाह माँगता रह, बेशक वह पूरी तरह से सुनने वाला और सब से ज़्यादा देखने वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ ۙ إِنْ فِي صُدُورِهِمْ إِلَّا كِبْرٌ مَا هُمْ بِبَالِغِيهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿56﴾

५७. आकाशों और धरती की पैदाईश बेशक इंसानों की पैदाईश से बहुत बड़ा काम है, लेकिन (यह दूसरी बात है कि) ज़्यादातर लोग जानते नहीं हैं।

لَخَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿57﴾

५८. और अंधा और देखने वाला बराबर नहीं; न वे लोग जो ईमान लाये और भले काम किये कुकर्मियों के (समान हैं)[3] तुम (बहुत) कम नसीहत हासिल कर रहे हो।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَلَا الْمُسِيءُ ۚ قَلِيلًا مَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿58﴾

५९. क़यामत निश्चय (यक़ीनन) और बेशक आने वाली है, लेकिन (यह दूसरी बात है कि) ज़्यादातर लोग ईमान नहीं लाते।

إِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيهَا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿59﴾

---

[1] गुनाह से मुराद वह तनिक-तनिक सी भूल-चूक है जो इंसानी फ़ितरत (प्रकृति) के सबब हो जाती है, जिसका सुधार भी अल्लाह की तरफ़ से कर दिया जाता है या इस्तिग़फ़ार (क्षमा माँगना) भी एक इबादत ही है। नेकी और बदला में अधिकता के लिए (क्षमा माँगने) का हुक्म दिया गया है, या मुराद पैरोकारों को हिदायत देना है कि वह तौबा से बेपरवाह न हों।

[2] عَشِي (अशी) से दिन का आख़िर और रात का शुरूआती हिस्सा और إبكار (इबकार) से रात का आख़िरी और दिन का शुरूआती हिस्सा मुराद है।

[3] मतलब यह है कि जिस तरह अंधा और आँख वाला बराबर नहीं, उसी तरह ईमानदार और काफ़िर, नेक लोग और बुरे लोग बराबर नहीं, बल्कि क़यामत के दिन उन के बीच जो बड़ा फ़र्क होगा वह बिल्कुल खुल कर सामने आ जायेगा।

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِيٓ أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ﴿60﴾

६०. और तुम्हारे रब का हुक्म (लागू हो चुका) है कि मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआवों को क़ुबूल करूँगा। यक़ीन करो कि जो लोग मेरी इबादत से तकब्बुर करते हैं वे जल्द ही रुस्वा (अपमानित) होकर नरक में पहुँच जायेंगे।[1]

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿61﴾

६१. अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए रात बना दी है कि तुम उस में आराम कर सको और दिन को दिखलाने वाला बना दिया। बेशक अल्लाह (तआला) लोगों पर उपकार (फ़ज़्ल) और रहम करने वाला है, लेकिन ज़्यादातर लोग शुक्रिया अदा नहीं करते।

ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿62﴾

६२. यही अल्लाह है तुम सबका पालन-पोषण करने वाला, हर चीज का ख़ालिक़ (सृष्टा), उस के सिवाय कोई सच्चा माबूद नहीं; फिर किस तरफ़ तुम फिरे जाते हो?

كَذَٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿63﴾

६३. उसी तरह वे लोग भी फेरे जाते रहे जो अल्लाह की आयतों का इंकार करते थे।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۖ فَتَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿64﴾

६४. अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए धरती को रहने की जगह और आकाश को छत बना दिया, और तुम्हारा रूप दिया और बहुत अच्छा बनाया[2] और तुम्हें बहुत अच्छी चीजें खाने के लिए दीं।[3] वही अल्लाह तुम्हारा रब है; तो बहुत शुभ (बाबरकत) अल्लाह है सारी दुनिया का रब।

هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿65﴾

६५. वह ज़िन्दा है जिस के सिवाय कोई सच्चा माबूद नहीं तो तुम इख़्लास से उसी की इबादत करते हुए उसे पुकारो, सभी तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जो सारी दुनिया का रब है।

---

[1] यह अल्लाह की इबादत से इंकार और मुँह मोड़ने और उस में दूसरों को भी साझी बनाने वालों का बुरा नतीजा है।

[2] जितने भी ज़मीन पर प्राणी (जानदार) हैं उन सब में तुम इन्सानों को सब से सुन्दर और संतुलित अंगों (मुनासिब जिस्म) का बनाया।

[3] कई तरह के खाने तुम्हारे लिए सुलभ (मुहय्या) कराये जो मज़ेदार भी हैं और ताक़त वाले भी।

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِيَ الْبَيِّنَاتُ مِن رَّبِّي وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ (66)

६६. (आप) कह दीजिए कि मुझे उनकी इबादत करने से रोक दिया गया है जिन्हें तुम अल्लाह के सिवाय पुकार रहे हो,[1] इस बिना पर कि मेरे पास मेरे रब के सुबूत पहुँच चुके हैं, मुझे यह हुक्म दिया गया है कि मैं सारी दुनिया के रब के हुक्म के अधीन (मातहत) हो जाऊँ।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا شُيُوخًا وَمِنكُم مَّن يُتَوَفَّىٰ مِن قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوا أَجَلًا مُّسَمًّى وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ (67)

६७. वही है जिस ने तुम्हें मिट्टी से, फिर वीर्य (नुतफ़ा) से, फिर ख़ून के लोथड़े से पैदा किया, फिर तुम्हें बच्चा बनाकर निकालता है, फिर (तुम्हें बढ़ाता है कि) तुम अपनी पूरी ताक़त को पहुँच जाओ फिर बूढ़े बन जाओ,[2] और तुम में से कुछ की इस से पहले ही मौत हो जाती है,[3] (और वह तुम्हें छोड़ देता है) ताकि तुम मुक़र्रर उम्र तक पहुँच जाओ[4] और ताकि तुम सोच समझ लो।

هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ فَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ (68)

६८. वही है जो ज़िन्दगी और मौत देता है,[5] फिर जब वह किसी काम के करने का फ़ैसला करता है तो उसे केवल यह कहता है कि 'हो जा' बस वह हो जाता है।

---

[1] चाहे वह पत्थर की मूर्तियाँ हो, अम्बिया और औलिया हों और समाधियों (क़ब्रों) में गड़े इंसान हों, मदद के लिए किसी को न पुकारो, उन के नामों के चढ़ावे न चढ़ाओ, उन का वज़ीफ़ा न पढ़ो, उन का डर न खाओ और न उन से उम्मीदें बाँधो, क्योंकि यह इबादत के भेद (क़िस्म) हैं जो सिर्फ़ एक अल्लाह का हक़ है।

[2] यानी इन सभी हालतों और अवस्थाओं (मरहलों) से गुज़ारने वाला वही है जिसका कोई साझी नहीं।

[3] यानी माँ के गर्भाशय (रिहम) में कई अवस्थाओं से गुज़र कर बाहर आने से पहले ही माँ के पेट में कुछ बचपन में, कुछ जवानी में और कुछ बुढ़ापे से पहले अधेड़ उम्र में मर जाते हैं।

[4] यानी अल्लाह तआला (परमेश्वर) यह इसलिए करता है ताकि जिसकी जितनी उम्र अल्लाह ने लिख दी है, वह उसको पहुँच जाये और दुनिया में उतनी ज़िन्दगी गुज़ारे।

[5] ज़िन्दगी देना और मारना उसी के हाथ में है, वह एक निर्जीव वीर्य (बेजान नुतफ़ा) को कई हालतों से गुज़ार कर एक ज़िन्दा इंसान के रूप में ढाल देता है और फिर एक मुक़र्रर वक़्त के बाद इंसान को मारकर मौत की वादियों में सुला देता है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ أَنَّىٰ يُصْرَفُونَ (69)

६९. क्या तूने उन्हें नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं, कि वे कहाँ फेर दिये जाते हैं।

الَّذِينَ كَذَّبُوا بِالْكِتَابِ وَبِمَا أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ (70)

७०. जिन लोगों ने किताब को झुठलाया और उसे भी जो हम ने अपने रसूलों के साथ भेजा, उन्हें बहुत जल्द हकीक़त का इल्म (ज्ञान) हो जायेगा।

إِذِ الْأَغْلَالُ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلَاسِلُ يُسْحَبُونَ (71)

७१. जबकि उनकी गर्दनों में तौक होंगे और जंजीरें होंगी, घसीटे जायेंगे।

فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ (72)

७२. खौलते हुए पानी में, और फिर नरक की आग में जलाये जायेंगे।

ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنتُمْ تُشْرِكُونَ (73)

७३. फिर उन से पूछा जायेगा कि जिन्हें तुम साझीदार ठहराते थे वे कहाँ हैं?

مِن دُونِ اللَّهِ ۖ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَل لَّمْ نَكُن نَّدْعُو مِن قَبْلُ شَيْئًا ۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ (74)

७४. जो अल्लाह (तआला) के सिवाय थे, वे कहेंगे कि वे हम से खो गये बल्कि हम तो इस से पहले किसी को भी पुकारते ही न थे। अल्लाह (तआला) काफ़िरों को इसी तरह भटकाता है।

ذَٰلِكُم بِمَا كُنتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ تَمْرَحُونَ (75)

७५. यह (बदला) है उस चीज का जो तुम धरती पर नाहक (अनुचित) फूले न समाते थे और (बेकार) इतराते फिरते थे।

ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ (76)

७६. (अब आओ) नरक में हमेशा रहने के लिए (उस के) दरवाज़ों में चले जाओ; क्या ही बुरी जगह है अहंकार (तकब्बुर) करने वालों के लिए।

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ فَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ (77)

७७. तो आप सब्र करें, अल्लाह का वादा पूरी तरह से सच्चा है, उन्हें हम ने जो वादा दे रखे हैं उन में से कुछ हम आप को दिखायें, या उस से पहले आप को मौत देंगे, उनका लौटाया जाना तो हमारी ही तरफ़ है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ مِنْهُم مَّن قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُم مَّن لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَن يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ ﴿78﴾

७८. बेशक हम आप से पहले भी बहुत से रसूल भेज चुके हैं, जिन में से कुछ के (वाक़ेआत) हम आप को सुना चुके हैं और उन में से कुछ की कथायें तो हम ने आप को सुनायी ही नहीं, और किसी रसूल के (वश में यह) न था कि कोई मोजिज़ा अल्लाह की इजाज़त के बिना ला सके,[1] फिर जिस समय अल्लाह का हुक्म आयेगा सच्चाई के साथ फ़ैसला कर दिया जायेगा और उस जगह पर असत्यवादी (झूठे) लोग नुक़सान में रह जायेंगे।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ لِتَرْكَبُوا مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿79﴾

७९. अल्लाह वह है जिस ने तुम्हारे लिए पशु (चौपाये) पैदा किये[2] जिन में से कुछ पर तुम सवार होते हो और कुछ को तुम खाते हो।

وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿80﴾

८०. और दूसरे भी तुम्हारे लिए उस में बहुत से फ़ायदे हैं ताकि अपने दिल में छिपी हुई ज़रूरतों को उन्हीं पर सवारी कर के तुम हासिल कर लो, और इन जानवरों पर और नावों पर तुम सवार कराये जाते हो।

وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَأَيَّ آيَاتِ اللَّهِ تُنكِرُونَ ﴿81﴾

८१. और (अल्लाह) तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता जा रहा है, तो तुम अल्लाह की किन-किन निशानियों को इंकार करते रहोगे।

---

[1] آیت (आयत) से मुराद यहाँ मोजिज़ा और ख़िलाफ़ आदत वाक़िआ है जो पैग़म्बर की सच्चाई को साबित करे। काफ़िर रसूलों से माँग करते रहे कि हमें फ़्लाँ-फ़्लाँ चीज़ दिखाओ, जैसे ख़ुद आख़िरी रसूल (ﷺ) से मक्का के काफ़िरों ने कई चीज़ों की माँग की, जिसका बयान सूर: बनी इस्राईल ९० से ९३ तक में मौजूद है। अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि किसी पैग़म्बर के बस में यह नहीं था कि वह अपनी जातियों की माँग पर ख़ुद कोई मोजिज़ा बनाकर दिखा सके, यह सिर्फ़ हमारे अधिकार (बस) में था।

[2] अल्लाह अपने अनगिनत नेमतों में से कुछ की चर्चा कर रहा है। चौपाये (पशु) से मुराद ऊँट, गाय, बकरी और भेड़ हैं। यह नर-मादा मिलकर आठ हैं, जैसा कि सूर: अल-अन्आम -१४३ और १४४ में है।

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ (82)

८२. या उन्होंने धरती पर सैर करके अपने से पहले के लोगों का नतीजा नहीं देखा जो इन से तादाद में ज़्यादा थे, ताक़त में सख़्त और धरती में बहुत सारी यादगारें छोड़ी थीं। (लेकिन) उन के किये कामों ने उन्हें ज़रा भी फ़ायेदा नहीं पहुँचाया।

فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا بِمَا عِنْدَهُمْ مِنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ (83)

८३. तो जब कभी उन के पास उन के रसूल वाज़ेह निशानियाँ लेकर आये तो यह अपने पास के ज्ञान (इल्म) पर इतराने लगे, आख़िर में जिस चीज़ को मज़ाक़ में उड़ा रहे थे वही उन पर उलट पड़ी।

فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَحْدَهُ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ (84)

८४. फिर हमारी यातना (अज़ाब) देखते ही कहने लगे कि अल्लाह एक पर हम ईमान लाये और जिन-जिन को हम उसका साझीदार बना रहे थे, हम ने उन सब से इंकार किया।

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا ۖ سُنَّتَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادِهِ ۖ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكَافِرُونَ (85)

८५. लेकिन हमारी यातना (अज़ाब) को देख लेने के बाद उन के ईमान ने उन्हें फ़ायेदा न दिया। अल्लाह ने अपना यही क़ानून मुक़र्रर कर रखा है जो उस के बन्दों में लगातार चला आ रहा है;[1] और उस जगह पर काफ़िर ख़राब (और कमज़ोर) हुए।

सूरतु हा॰ मीम॰ अस्सज्द:-४१

سُورَةُ حم السَّجْدَة

सूर: हा॰मीम॰अस्सज्द:* मक्का में नाज़िल हुई और इन में चौवन आयतें और छ: रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

حم (1)

१. हा॰मीम॰,

---

[1] यानी यह अल्लाह का क़ानून चला आ रहा है कि अज़ाब देखने के बाद तौबा (पश्चाताप) और ईमान क़ुबूल नहीं। यह विषय क़ुरआन के कई मुक़ामों में बयान हुआ है।

* इस सूर: का दूसरा नाम "फ़ुस्सेलत" है, इस के नाज़िल होने के बारे में मक्का के सरदार उत्बा बिन रबीआ के साथ आप (ﷺ) की मशहूर घटना (वाक़ेआ) है। (इब्ने कसीर)

تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿2﴾

२. उतरी है बड़े कृपालु (रहमान) बड़े दयालु (रहीम) की तरफ़ से।

كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿3﴾

३. (ऐसी) किताब है जिसकी आयतों (सूत्रों) की वाजेह तफ़सील की गयी है, (इस हालत में कि) क़ुरआन अरबी भाषा (ज़बान) में है उस क़ौम के लिए जो जानती है।

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿4﴾

४. ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला है, फिर भी उन के ज़्यादातर ने मुँह मोड़ लिया और वे सुनते ही नहीं।

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ﴿5﴾

५. और उन्होंने कहा कि तू जिसकी तरफ़ हमें बुला रहा है हमारे दिल तो उस से पर्दे में हैं,[1] हमारे कानों में बोझ है (या कुछ सुनायी नही देता)[2] और हम में और तुझ में एक पर्दा (आड़) है। अच्छा, तू अब अपना काम किये जा हम भी बेशक काम करने वाले हैं।

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ﴿6﴾

६. (आप) कह दीजिए कि मैं तो तुम ही जैसा इंसान हूँ, मुझ पर वह्यी की जाती है कि तुम सबका माबूद सिर्फ़ एक अल्लाह ही है, तो तुम उस की तरफ़ ध्यान केन्द्रित (मरकूज़) कर लो और उस से गुनाहों की माफ़ी चाहो, और उन मूर्तिपूजकों के लिए (बड़ी ही) ख़राबी है।

الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿7﴾

७. जो ज़कात नहीं देते[3] और आख़िरत का भी इंकार करने वाले ही रहते हैं।

---

[1] اَكِنَّة (अकिन्नह) كِنَان (किनान) का बहुवचन (जमा) है पर्दा, यानी हमारे दिल इस बात से पर्दों में हैं कि हम तेरी तौहीद (अद्वैत) और ईमान की दावत को समझ सकें।

[2] وَقْر (वक़्र) का लफ़्ज़ी मायेना बोझ है, यहां मुराद बहरापन है जो सच सुनने में रूकावट था।

[3] यह सूर: मक्का में नाज़िल हुई। ज़कात (धर्मदान) हिजरत के दूसरे साल फ़र्ज़ हुई, इसलिए इस से मुराद या तो दान है जिसका हुक्म मुसलमानों को मक्के में भी दिया जाता रहा, जिस तरह पहले सिर्फ़ सुबह और शाम की नमाज़ों का हुक्म था, दोबारा हिजरत से डेढ़ साल पहले मेराज की रात को पाँच फ़र्ज़ नमाज़ों का हुक्म हुआ, या ज़कात से यहां मुराद कलमए शहादत है जिस से इंसानी मन शिर्क की गन्दगियों से पाक हो जाता है। (इब्ने कसीर)

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿8﴾

८. बेशक जो लोग ईमान लायें और अच्छे अमल करें उन के लिए बेइन्तेहा बदला है।

قُلْ أَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُونَ بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ أَندَادًا ۚ ذَٰلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿9﴾

९. (आप) कह दीजिए कि क्या तुम उस (अल्लाह) का इंकार करते हो और तुम उस के साझीदार मुक़र्रर करते हो जिस ने दो दिन में धरती को पैदा किया, सारे जहाँ का रब वही है।

وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ مِن فَوْقِهَا وَبَارَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا أَقْوَاتَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ سَوَاءً لِّلسَّائِلِينَ ﴿10﴾

१०. और उस ने धरती में उस के ऊपर से ही पहाड़ गाड़ दिये, उस में बरकत अता कर दी और उस में रहने वालों के आहार (रिज़्क़) का भी अंदाजा उसी में कर दिया[1] केवल चार दिन में ही, सवाल करने वालों के लिये बराबर तरीक़े से।[2]

ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ ﴿11﴾

११. फिर आकाश की तरफ़ बुलन्द हुआ और वह धुँआ (सा) था, तो उसे और धरती को हुक्म दिया कि तुम दोनों आओ, चाहो यह न चाहो[3] दोनों ने निवेदन (अर्ज़) किया कि हम ख़ुशी-ख़ुशी हाज़िर हैं।

---

[1] أقوات (अक़्वात) قوت कूत (रोजी, खाद्य) का बहुवचन (जमा) है, यानी धरती पर सभी बसने वाली मख़लूक़ की रोज़ी उस में रख दिया या उसकी व्यवस्था (एहतेमाम) कर दी। अल्लाह की इस योजना और व्यवस्था का काम इतना बड़ा है कि कोई ज़ुबान उसका बयान नहीं कर सकती, कोई कलम उसे लिख नहीं सकता कोई कलकूलेटर उसे गिन नहीं सकता। कुछ ने इसका मतलब यह लिया है कि हर इलाक़े में ऐसी चीज़ें पैदा कर दीं जो दूसरे इलाक़े में नहीं पैदा हो सकतीं ताकि हर इलाक़े की यह ख़ास पैदावार उन इलाक़ों का व्यवपार और रिज़्क़ का जरिया बन जायें, यह मतलब भी अपनी जगह पर सही और बिल्कुल हक़ीक़त है।

[2] سواء (सवाअ) का मतलब है पूरे चार दिन में, यानी सवाल करने वालों को बता दो कि पैदाईश और फैलाव का काम चार दिन में हुआ या पूरा या बराबर. यह जवाब है सवालियों के लिए।

[3] यह आना किस तरह था इसकी हालत नहीं बताई जा सकती? यह दोनों अल्लाह के पास आये जैसे उस ने चाहा, कुछ ने इसका मतलब लिया है कि मेरे हुक्म का पालन करो, उन्होंने कहा ठीक है हम हाज़िर हैं। अल्लाह ने आसमान को हुक्म किया कि सूरज, चाँद और सितारे निकाल दे और धरती से कहा कि चश्मा जारी कर दे और फल उगा दे। (इब्ने कसीर) या मतलब है कि तुम दोनों वजूद में आ जाओ।

فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ؕ وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ⑫

१२. तो दो दिन में सात आकाश वना दिये, हर आकाश में उसके मुनासिब अहकाम की वह्यी भेज दी, और हमने दुनियावी आकाश को तारों से सजाया और हिफ़ाज़त की, यह योजना (तदबीर) अल्लाह जबरदस्त जानने वाले की है।

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ ؕ ⑬

१३. अब भी ये विमुख हों तो कह दीजिए कि मैं तुम्हें उस कड़क (आसमानी अज़ाब) से डरा देता हूँ जो आद क़ौम और समूद क़ौम के कड़क के समान होगा।

اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ⑭

१४. उन के पास जब उन के आगे-पीछे से पैग़म्बर आये कि तुम अल्लाह के सिवाय किसी की इबादत न करो, तो उन्होंने जवाब दिया कि अगर हमारा रब चाहता तो फ़रिश्तों को भेजता; हम तो तेरी रिसालत का पूरे तौर से इंकार करते हैं।

فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ؕ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ⑮

१५. तो जब आद ने बिला वजह धरती पर तकब्बुर शुरू कर दिया और कहने लगे कि हम से ताक़त वाला कौन है, क्या उन्हें यह नहीं दिखायी दिया कि जिस ने उन्हें पैदा किया वह उन से ज़्यादा ताक़त वाला है। वे (आख़िर तक) हमारी आयतों का इंकार ही करते रहे।

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ⑯

१६. तो आख़िर में हम ने उन पर एक तेज़ गति वाली आँधी, अशुभ (मन्हूस) दिनों में[1] भेज दी कि उन्हें दुनियावी ज़िन्दगी में अपमान वाले अज़ाब का मज़ा चखा दें। (यक़ीन करो) कि आख़िरत का अज़ाब इस से ज़्यादा रुस्वा करने वाला है और वे मदद नहीं किये जायेंगे।

---

1 نَحِسَاتٍ का अनुवाद (तर्जुमा) कुछ ने लगातार किया है क्योंकि यह हवा सात रातें और आठ दिन तक लगातार चलती रही, कुछ ने तेज़, कुछ ने धूल-धप्पड़ वाली और कुछ ने मन्हूस किया है। आख़िरी तर्जुमा का मतलब यह होगा कि यह दिन जिन में उन पर कड़ी हवा की आँधी आयी, उन के लिए बड़े मन्हूस साबित हुए, यह नहीं कि दिन ही ख़ुद मन्हूस (अशुभ) हैं।

وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ (17)

१७. और रहे समूद, तो हम ने उनका भी मार्गदर्शन (रहनुमाई) किया फिर भी उन्होंने मार्गदर्शन पर अंधेपन को महत्व (अहमियत) दिया, जिसके सबब उन्हें (पूरे तौर से) अपमान वाली यातना (अज़ाब) की कड़क ने उन के करतूतों के सबब पकड़ लिया।[1]

وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ (18)

१८. और ईमानदार और परहेज़गारों को हम ने (बाल-बाल) बचा लिया।

وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ (19)

१९. और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन नरक की तरफ़ लाये जायेंगे और उन (सब) को जमा कर दिया जायेगा।

حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (20)

२०. यहां तक कि जब नरक के बहुत क़रीब आ जायेंगे उन पर उन के कान और उनकी आँखें और उनकी खालें उन के अमल की गवाही देंगे।

وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ۭ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ (21)

२१. और ये अपनी खालों से कहेंगे कि तुम ने हमारे ख़िलाफ़ गवाही क्यों दी, वह जवाब देंगे कि हमें उस अल्लाह ने बोलने की ताक़त दी जिस ने हर चीज़ को बोलने की ताक़त अता की है, उसी नें पहली बार तुम्हें पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम सब लौटाये जाओगे।

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَآ اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ (22)

२२. और तुम (अपने करतूत) इस वजह से छिपा कर रखते ही न थे कि तुम पर तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारी खालें गवाही देंगी[2] और तुम यह समझते रहे कि तुम जो कुछ भी कर रहे हो उस में से बहुत से कर्मों से अल्लाह अंजान है।

---

[1] صاعقة (साइक:) सख़्त अज़ाब को कहते हैं, यह कड़ा अज़ाब उन पर चिंघाड़ और भूकम्प (ज़लज़ला) के रूप में आया, जिस ने ज़िल्लत और रुस्वाई के साथ उन्हें तहस-नहस कर दिया।

[2] इसका मतलब है कि तुम पाप का अमल करते हुए तो लोगों से छुपने की कोशिश करते थे लेकिन तुम्हें इसका कोई डर नहीं था कि तुम्हारे ख़िलाफ़ ख़ुद तुम्हारे अंग भी गवाही देंगे कि जिन से छुपने की ज़रूरत का आभास करते, इसका सबब उनका दोबारा ज़िन्दगी से इंकार और कुफ़्र था।

وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِىْ ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿23﴾

२३. और तुम्हारे इसी कुविचार (वदगुमानी) ने जो तुम ने अपने रव के बारे में कर रखे थे, तुम्हें नाश कर दिया, और आख़िर में तुम नुक़सान उठाने वालों में से हो गये।

فَاِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ ﴿24﴾

२४. अब अगर ये सब्र करें तो भी उनका ठिकाना नरक ही है और अगर ये तौवा भी करना चाहें तो भी माफ़ नहीं किये जायेंगे।

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِىْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿25﴾

२५. और हम ने उन के कुछ साथी निर्धारित (मुक़र्रर) कर रखे थे जिन्होंने उन के अगले-पिछले कर्मों को उनकी नजर में ख़ूबसूरत बना रखे थे,[1] और उन के हक़ में भी अल्लाह का वादा उन क़ौमों के साथ पूरा हुआ जो उन से पहले जिन्नों और इंसानों की गुजर चुकी हैं। बेशक वे नुक़सान उठाने वाले साबित हुए।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ﴿26﴾

२६. और काफ़िरों ने कहा कि इस क़ुरआन को सुनो ही मत (उन के पाठ करने के समय) और बेहूदा बातें करो, क्या अजब कि तुम ग़ालिब हो जाओ।

فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِىْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿27﴾

२७. तो बेशक हम उन काफ़िरों को सख़्त अज़ाब का मज़ा चखायेंगे और उन्हें उन के बहुत बुरे अमल का बदला (ज़रूर) देगें।

ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ ؕ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿28﴾

२८. अल्लाह के दुश्मनों का बदला (दण्ड) यही नरक की आग है, जिस में उनका हमेशा का घर है, (यह) बदला है हमारी आयतों के इंकार करने का।[2]

[1] इन से मुराद वह शैतान, इंसान और जिन्न हैं जो झूठ पर इसरार (दुराग्रह) करने वालों के संग लग जाते हैं, जो उन्हें कुफ़्र और गुनाहों को अच्छा बनाकर दिखाते हैं तो वह इस गुमराही के दलदल में फंसे रहते हैं यहाँ तक कि उनकी मौत आ जाती है और वह सदा के नुक़सान के लायक़ बन जाते हैं।

[2] आयतों से मुराद जैसाकि पहले भी बताया गया है कि वह खुले सुबूत और दलीलें हैं जो अल्लाह

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذَيْنِ أَضَلَّانَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ﴿29﴾

२९. और काफिर लोग कहेंगे कि हे हमारे रब! हमें जिन्नों और इंसानों के उन (दोनों गिरोहों) को दिखा, जिन्होंने हमें भटकाया (ताकि) हम उन को अपने पैरों के नीचे डाल दें ताकि वे बहुत नीचे (सख़्त अज़ाब में) हो जायें।

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ﴿30﴾

३०. हक़ीक़त में जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है फिर उसी पर जमे रहे,[1] उन के पास फ़रिश्ते (यह कहते हुए) आते हैं कि तुम कुछ भी भयभीत (ख़ौफ़ज़दा) और दुखी न हो (बल्कि) उस जन्नत की ख़ुशख़बरी सुन लो जिसका तुम्हें वादा दिया गया है।

نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ﴿31﴾

३१. तुम्हारी दुनियावी ज़िन्दगी में भी हम तुम्हारे मददगार थे और आख़िरत में भी रहेंगे, जिस चीज़ को तुम्हारा मन चाहे और जो कुछ माँगो सब तुम्हारे लिये [जन्नत में मौजूद (उपस्थित)] है।

نُزُلًا مِّنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ ﴿32﴾

३२. बड़ा माफ़ करने वाला बड़े मेहरबान की तरफ़ से ये सब कुछ मेहमानी के रूप में है।

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّن دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿33﴾

३३. और उस से ज़्यादा अच्छी बात वाला कौन है जो अल्लाह की तरफ़ बुलाये, नेकी के काम करे और कहे कि मैं यक़ीनी तौर से मुसलमानों

तआला अम्बिया (ईशदूतों) पर उतारता है, या वह मोजिज़ा हैं जो उनको दिये जाते हैं, या पैदाईश के वे सुबूत हैं जो दुनिया और प्राणियों (मख़लूक़ात) में फैले हुए हैं। काफ़िर इन सब ही का इंकार करते हैं जिस के सबब वह ईमान से वंचित (महरूम) रहते हैं।

[1] यानी कठिन से कठिन हालत में भी ईमान पर क़ायम रहे, उस से फिरे नहीं। कुछ ने क़ायम रहने का मतलब इख़्लास लिया है, यानी सिर्फ़ एक अल्लाह ही की इबादत और इताअत की। जिस तरह हदीस में आता है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से कहा। "मुझे ऐसी बात बतला दें कि आप के बाद मुझे किसी से सवाल करने की ज़रूरत न हो।" आप ने फ़रमाया :

«قُلْ آمَنْتُ بِاللهِ ثُمَّ اسْتَقِمْ»

"कह, मैं अल्लाह पर ईमान लाया, फिर इस पर अडिग रह।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाबु जामिअ औसाफ़िल इस्लाम)

में से हूँ।

३४. और नेकी और बुराई बराबर नहीं होते, बुराई को भलाई से दूर करो, फिर वही जिस के और तुम्हारे बीच दुश्मनी है ऐसा हो जायेगा जैसे जिगरी दोस्त ।[1]

وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ﴿34﴾

३५. और यह बात उन्हीं की ख़ुशनसीबी में होती है जो सब्र करें, और उसे बड़े ख़ुशनसीब के सिवाय कोई नहीं हासिल कर सकता ।[2]

وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿35﴾

३६. और अगर शैतान की तरफ़ से कोई शक पैदा हो जाये तो अल्लाह की पनाह चाहो। बेशक वह बड़ा सुनने वाला जानने वाला है।

وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿36﴾

३७. और दिन-रात और सूरज और चाँद भी उसी की निशानियों में से हैं, तुम सूरज और चाँद के सामने सिर न झुकाओ बल्कि सिर उस अल्लाह के सामने झुकाओ जिस ने उन सबको पैदा किया है, अगर तुम्हें उसी की इबादत करनी है।

وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۚ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿37﴾

३८. फिर भी अगर वे तकब्बुर करें तो वे (फ़रिश्ते) जो आप के रब के क़रीब हैं, वे तो रात-दिन उसकी महिमा (तस्बीह) का बयान करते हैं और (किसी समय भी) नहीं थकते।

فَإِنِ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْأَمُونَ ۩ ﴿38﴾

---

[1] यह एक बहुत ही अहम अख़लाक़ी (नैतिक) हिदायत है कि बुराई को अच्छाई के साथ टालो, यानी बुराई का बदला एहसान के साथ, ज़ुल्म का माफ़ी से, गुस्सा का सब्र से और अप्रिय (बेहूदा) बातों का समझा कर जवाब दिया जाये। इसका असर यह होगा कि तुम्हारा दुश्मन दोस्त बन जायेगा, दूर, क़रीब और ख़ून का प्यासा तुम्हारा चाहने वाला और जान निछावर करने वाला हो जायेगा।

[2] حَظٍّ عَظِيمٍ (बड़ा सौभाग्य) से मुराद जन्नत है, यानी ऊपरी गुण (अवसाफ़) उनको हासिल होते हैं जो बड़े भाग्यशाली (नसीब वाला) होते हैं, यानी जन्नती, जिनका जन्नत में जाना लिख दिया गया हो।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿39﴾

३९. और उस (अल्लाह) की निशानियों में से (यह भी) है कि तू धरती को दबी दबायी (शुष्क) देखता है, फिर जब हम उस पर वर्षा करते हैं तो वह तरो-ताज़ा होकर उभरने लगती है। जिस ने उसे ज़िन्दा कर दिया वही निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से मुर्दों को भी ज़िन्दा करने वाला है।[1] बेशक वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ؕ اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿40﴾

४०. बेशक जो लोग हमारी आयतों में टेढ़ापन करते हैं[2] वह (कुछ) हम से छिपे नहीं, (बताओ तो) जो आग में डाला जाये वह अच्छा है या वह जो अमन व अमान से (शान्तिपूर्वक) क़यामत के दिन आये? तुम जो चाहो करते जाओ; वह तुम्हारा सब किया कराया देख रहा है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ﴿41﴾

४१. जिन लोगों ने अपने पास पाक क़ुरआन पहुँच जाने के बावजूद उस से कुफ़्र किया (वह भी हम से छिपे नहीं), यह बहुत अज़ीम (सम्मानित) किताब है।

لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ﴿42﴾

४२. जिस के पास असत्य (बातिल) फटक भी नहीं सकता न उस के आगे से और न उस के पीछे से, यह है नाज़िल की हुई (अल्लाह) हिक्मत वाले और गुणों वाले की तरफ़ से।

---

[1] मुर्दा ज़मीन को बारिश के ज़रिये इस तरह जीवन प्रदान कर देना और उस से उपज (खेती) के लायक बनाना इस बात का सुबूत है कि वह मुर्दों को भी बेशक ज़िन्दा करेगा।

[2] यानी उसको मानते नहीं बल्कि उस से मुँह फेरते और झुठलाते हैं। हज़रत इब्ने अब्बास ने إلحاد (इल्हाद) का तर्जुमा किया है وضع الكلام على غير مواضعه, इस बिना पर इस में वह झूठा गिरोह भी आ जाते हैं जो अपने झूठे यक़ीन और सिद्धान्त (उसूल) की सिद्धि (साबित) करने के लिए अल्लाह की आयतों के मतलब में परिवर्तन (बदलाव) करते और धोखे-धड़ी से काम लेते हैं।

مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ (43)

४३. आप से वही कहा जाता है जो आप से पहले के रसूलों से भी कहा गया है। बेशक आप का रब माफ़ करने वाला और दुखदायी अज़ाब देने वाला है।

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا أَعْجَمِيًّا لَقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ آيَاتُهُ ۖ أَأَعْجَمِيٌّ وَعَرَبِيٌّ ۗ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ ۖ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي آذَانِهِمْ وَقْرٌ وَهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ۚ أُولَٰئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ (44)

४४. और अगर हम उसे ग़ैर अरबी भाषा (ज़ुबान) का क़ुरआन बनाते तो कहते कि इसकी आयतें साफ़ तौर से बयान क्यों नहीं की गईं? यह क्या कि किताब ग़ैर अरबी और आप अरबी रसूल? (आप) कह दीजिए कि यह ईमानवालों के लिए हिदायत और शिफ़ा है, और जो ईमान नहीं लाते तो उन के कानों में (बहरापन) बोझ है और यह उन पर अंधापन है, ये वे लोग हैं जो किसी दूर जगह से पुकारे जा रहे हैं।[1]

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتُلِفَ فِيهِ ۗ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ (45)

४५. और बेशक हम ने मूसा (عليه السلام) को किताब अता की थी तो उस में भी मतभेद (इख़्तिलाफ़) किया गया और अगर (वह) बात न होती जो आप के रब की तरफ़ से पहले ही मुक़र्रर हो चुकी है तो उन के बीच (कभी का) फ़ैसला हो चुका होता, यह लोग तो उस के बारे में सख़्त बेचैन करने वाली शक में हैं।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۗ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِلْعَبِيدِ (46)

४६. जो इंसान नेकी के काम करेगा वह अपने फ़ायदे के लिए और जो बुरा काम करेगा उसका भार भी उसी पर है, और आप का रब बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं।[2]

---

[1] यानी जिस तरह दूर का इंसान दूरी की वजह से पुकारने वाले की आवाज़ सुनने से मजबूर रहता है, इसी तरह इन लोगों की अक़्ल और हवास में क़ुरआन नहीं आता।

[2] इसलिए कि वह सज़ा सिर्फ़ उसी को देता है जो पापी होता है, न कि जिसे चाहे बिला वजह ही अज़ाब में ग्रस्त (मुब्तिला) कर दे।

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِن ثَمَرَاتٍ مِّنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي قَالُوا آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِن شَهِيدٍ (47)

४७. क़यामत का इल्म अल्लाह ही की तरफ़ लौटाया जाता है, और जो-जो फल अपने गाभों में से निकलते हैं और जो मादा गर्भवती (हामला) होती है और जो बच्चा वह जन्म देती है, सब का इल्म उस को है,[1] और जिस दिन अल्लाह (तआला) उन (मूर्तिपूजकों) को बुलाकर पूछेगा कि मेरे साझीदार कहाँ हैं; वे जवाब देंगे कि हम ने तो तुझ से कह दिया कि हम में से कोई उसका गवाह नहीं।

وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَدْعُونَ مِن قَبْلُ ۖ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ (48)

४८. और ये (जिन) जिन की पूजा इस से पहले करते थे वे उनकी नज़र से ओझल हो गये, और उन्होंने समझ लिया कि अब उन के लिए कोई बचाव (का रास्ता) नहीं।

لَّا يَسْأَمُ الْإِنسَانُ مِن دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِن مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ (49)

४९. भलाई माँगने से इंसान थकता नहीं, और अगर उसे कोई तकलीफ़ पहुँच जाये तो हताश (मायूस) और नाउम्मीद हो जाता है।[2]

وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَٰذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن رُّجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِندَهُ لَلْحُسْنَىٰ ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ (50)

५०. और जो कष्ट उसे पहुँच चुका है, उस के बाद अगर हम उसे किसी दया का मज़ा चखा दें तो वह कह उठता है कि मैं तो इसका हक़दार ही था, और मैं तो विचार नहीं कर सकता कि क़यामत क़ायम होगी और अगर मैं अपने रब की ओर लौटाया गया, तो भी बेशक उसके पास

---

[1] यह अल्लाह के पूरा और व्यापक ज्ञान (वसीअ इल्म) का बयान है, और उस के इस ज्ञान गुण (अवसाफ़) में कोई उसका साझी नहीं, यहाँ तक कि अम्बिया (عليهم السلام) भी नहीं। उन्हें भी इतना ही ज्ञान होता है जितना अल्लाह तआला (परमेश्वर) उन्हें वह्यी के ज़रिये अता कर देता है।

[2] यानी मुसीबत पहुँचने पर तो तुरन्त मायूस हो जाता है, जबकि अल्लाह के नि:स्वार्थी (मुख़लिस) बन्दों की हालत इस से अलग होती है, एक तो वह दुनिया के लालची नहीं होते, उन के सामने हर पल आख़िरत ही होती है। दूसरे, दुख पहुँचने पर भी वे अल्लाह की नेमत और रहमत से निराश (मायूस) नहीं होते बल्कि इम्तेहानों को भी गुनाहों का बदला और पदोन्नति (तरक़्क़ी) का सबब मानते हैं, मानो निराशा (मायूसी) उन के क़रीब भी नहीं आती।

भी मेरे लिए भलाई होगी,[1] बेशक हम उन काफिरों को उन के अमल से बाख़बर (अवगत) करेंगे और उन्हें सख़्त (कठोर) अज़ाब का मज़ा चखायेंगे।

وَإِذَآ أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنسَانِ أَعْرَضَ وَنَا بِجَانِبِهِۦ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَآءٍ عَرِيضٍ ﴿51﴾

५१. और जब हम इंसान पर अपना उपकार करते हैं तो वह विमुख (गुमराह) हो जाता है और पहलू बदल लेता है; और जब उस पर दुख आता है तो बड़ी लम्बी-चौड़ी दुआयें करने वाला बन जाता है।[2]

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ اللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُم بِهِۦ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِى شِقَاقٍۭ بَعِيدٍ ﴿52﴾

५२. (आप) कह दीजिए कि भला यह तो बताओ कि अगर यह (क़ुरआन) अल्लाह की तरफ़ से आया हुआ हो फिर तुम ने उसे न माना तो उस से बढ़कर बहका हुआ कौन होगा जो (सच से) विरोध (मुख़ालफ़त) में दूर चला जाये।

سَنُرِيهِمْ ءَايَٰتِنَا فِى الْءَافَاقِ وَفِىٓ أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ ۗ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُۥ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ شَهِيدٌ ﴿53﴾

५३. जल्द ही हम उन्हें अपनी निशानियाँ दुनिया के किनारों में भी दिखायेंगे और ख़ुद उन के अपने वजूद में भी, यहाँ तक कि उन पर खुल जाये कि सच यही है। क्या आप के रब का हर चीज़ से अवगत (बाख़बर) होना काफ़ी नहीं।

أَلَآ إِنَّهُمْ فِى مِرْيَةٍ مِّن لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ۗ أَلَآ إِنَّهُۥ بِكُلِّ شَىْءٍ مُّحِيطٌۢ ﴿54﴾

५४. यक़ीन करो कि यह लोग अपने रब के सामने पेश होने में सशंकित (शक में) हैं। याद रखो कि अल्लाह तआला हर चीज़ को घेरे हुए है।

[1] यह कहने वाला मुनाफ़िक़ (द्वयवादी) या काफ़िर है कोई ईमानवाला ऐसी बात नहीं कह सकता। काफ़िर ही यह समझता है कि मेरी दुनिया सुख से गुज़र रही है तो आख़िरत भी मेरे लिए ऐसी ही होगी।

[2] यानी अल्लाह के दरबार में रोता गिड़गिड़ाता है ताकि वह मुसीबत को दूर कर दे, यानी दुख में अल्लाह को याद करता है, सुख में भूल जाता है। मुसीबत आने के समय गुहार (फ़रियाद) करता है, ख़ुशी के समय उसे वह याद नहीं रहता।

سُوْرَةُ الشُّوْرٰى

सूरतुश्शूरा-४२

सूर: शूरा मक्का में नाज़िल हुई और इस में तिरपन आयतें और पाँच रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

حٰمٓ ﴿1﴾

१. हा॰मीम॰।

عٓسٓقٓ ﴿2﴾

२. ऐन॰सीन॰क़ाफ़।

كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَ اِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿3﴾

३. अल्लाह तआला जो ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है, इसी तरह तेरी तरफ़ और तुझ से पहले के लोगों की तरफ़ वह्यी भेजता रहा है।[1]

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿4﴾

४. आकाशों की (सभी) चीजें और जो कुछ धरती में है सब उसी का है, और वह सब से बलन्द और बड़ा है।

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿5﴾

५. क़रीब है कि आकाश अपने ऊपर से फट पड़ें और सारे फ़रिश्ते अपने रब की पाकीज़गी (महिमागान) (हम्द) के साथ बयान कर रहे हैं और धरती वालों के लिए क्षमा-याचना (इस्तिग़फ़ार) कर रहे हैं। ख़ूब समझ रखो कि अल्लाह (तआला) ही माफ़ करने वाला रहम करने वाला है।

---

[1] यानी जिस तरह यह क़ुरआन तेरी तरफ़ नाज़िल किया गया उसी तरह तुझ से पहले अम्बिया पर ग्रन्थ (सहीफ़े) और किताब नाज़िल की गई, प्रकाशना (वह्यी) वह ईश्वाणी है जो फ़रिश्तों द्वारा अल्लाह तआला अपने पैग़म्बरों (संदेशवाहकों) के पास भेजता रहा। एक सहाबी (सहचर) ने रसूलुल्लाह ﷺ से वह्यी की हालत पूछी तो आप ने फ़रमाया : कभी घंटी की आवाज़ की तरह आती है और यह मुझ पर सब से भारी होती है, जब यह ख़त्म हो जाती है तो मुझे याद हो चुकी होती है, और कभी फ़रिश्ता इंसानी रूप (शक्ल) में आता है और मुझ से बात करता है और वह जो कहता है मैं याद कर लेता हूं। हज़रत आयेशा رضی الله عنها कहती हैं कि मैंने कड़े जाड़े में देखा कि जब वह्यी की हालत ख़त्म होती तो आप पसीने से भीग जाते और आप की पेशानी से पसीने की बूंदें गिर रही होतीं। (सहीह बुख़ारी, बाबु बदइल वह्यी)

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ اللَّهُ حَفِيظٌ عَلَيْهِمْ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِوَكِيلٍ ﴿6﴾

६. और जिन लोगों ने उस के सिवाय दूसरों को औलिया बना लिया है। अल्लाह (तआला) उन्हें अच्छी तरह देख रहा है, और आप उन के उत्तरदायी (जवाबदेह) नहीं हैं।[1]

وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِّتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ﴿7﴾

७. और उसी तरह हम ने आप की तरफ़ अरबी क़ुरआन की वह्यी की है ताकि आप मक्का-वासियों को और उसके क़रीबी इलाक़े के लोगों को सावधान (आगाह) कर दें[2] और जमा होने के दिन से[3] जिस के आने में कोई शक नहीं, डरा दें, एक गुट जन्नत में होगा और एक गुट नरक में होगा।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِن يُدْخِلُ مَن يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُم مِّن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿8﴾

८. अगर अल्लाह (तआला) चाहता तो उन सब को एक ही उम्मत बना देता, लेकिन वह जिसे चाहता है अपनी दया (रहमत) में शामिल कर लेता है, और ज़ालिमों का पक्षधर (वली) और सहायक (मददगार) कोई नहीं।

أَمِ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۖ فَاللَّهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿9﴾

९. क्या उन लोगों ने अल्लाह (तआला) के सिवाय दूसरे वली बना लिये हैं, (हक़ीक़त में तो) अल्लाह (तआला) ही वली (संरक्षक) है, वही मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और वही हर चीज़ पर क़ादिर है।

[1] यानी आप इस बात के उत्तरदायी नहीं कि उन को संमार्ग (हिदायत) पर चला दें या पापों पर उन की पकड़ करें बल्कि यह काम हमारे हैं, आप का काम सिर्फ़ संदेश (पैग़ाम) पहुँचा देना है।

[2] أم القرى (उम्मुल क़ुरा) मक्के का नाम है। इसे 'बस्तियों की माँ' इसलिए कहा गया कि यह अरब की सब से पुरानी बस्ती है, जैसेकि यह सभी बस्तियों की माँ है जिन्होंने इसी से जन्म लिया है, मुराद मक्का के निवासी हैं। ومن حولها में उस के पश्चिम और पूरब के सभी इलाक़े शामिल हैं, यानी उन सब को डराये कि अगर वे कुफ़्र और शिर्क से न फिरे तो अल्लाह के अज़ाब के पात्र (मुस्तहक़) होंगे।

[3] क़यामत के दिन को जमा होने का दिन इसलिए कहा कि उस में अगले-पिछले सभी इंसान जमा होंगे। इस के सिवाय, ज़ालिम, मज़लूम, ईमानदार और काफ़िर सब जमा होंगे और अपने-अपने अमल के एतबार से बदला या सज़ा पायेंगे।

१०. और जिस-जिस बात में तुम्हारा मतभेद (इख़्तिलाफ़) हो उसका फैसला अल्लाह (तआला) ही की ओर है,[1] यही अल्लाह मेरा रब है जिस पर मैंने भरोसा कर रखा है, और जिसकी तरफ़ मैं झुकता हूँ।

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِن شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ﴿10﴾

११. वह आकाश और धरती को पैदा करने वाला है। उस ने तुम्हारे लिए तुम्हारी जाति के जोड़े बना दिये हैं और चौपायों के जोड़े बनाये हैं; तुम्हें वह उस में फैला रहा है, उस जैसी कोई चीज़ नहीं; वह सुनने वाला देखने वाला है।

فَاطِرُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ جَعَلَ لَكُم مِّنْ أَنفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَمِنَ الْأَنْعَامِ أَزْوَاجًا ۖ يَذْرَؤُكُمْ فِيهِ ۚ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿11﴾

१२. आकाशों और धरती की चाभियाँ उसी की हैं, जिसकी चाहे रोज़ी कुशादा कर दे और तंग कर दे, बेशक वह हर चीज़ का जानने वाला है।

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿12﴾

१३. अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए वही दीन मुक़र्रर कर दिया है जिसको क़ायम करने का उस ने नूह (عليه السلام) को हुक्म दिया था, जो (वह्यी के द्वारा) हम ने तेरी तरफ़ भेज दिया है और जिस का विशेष (ख़ास) हुक्म हम ने इब्राहीम और मूसा और ईसा (عليهم السلام) को दिया था।[2] कि इस दीन को क़ायम रखना और इसमें फूट न डालना,[3]

شَرَعَ لَكُم مِّنَ الدِّينِ مَا وَصَّىٰ بِهِ نُوحًا وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَىٰ ۖ أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ ۚ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ ۚ اللَّهُ يَجْتَبِي إِلَيْهِ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَن يُنِيبُ ﴿13﴾

[1] इस मतभेद (इख़्तिलाफ़) से मुराद दीन का इख़्तिलाफ़ है। जैसे यहूदियत, इसाईयत और इस्लाम वग़ैरह में आपसी इख़्तिलाफ़ है और हर धर्म वाला लम्बा दावा करता है कि उसका धर्म सच्चा है, जबकि सभी धर्म एक समय में सही नहीं हो सकते। सच्चा दीन तो सिर्फ़ एक ही है और एक ही हो सकता है, दुनिया में सच्चे धर्म और सच्चे रास्ते की पहचान के लिए अल्लाह का क़ुरआन मौजूद है, लेकिन दुनिया में लोग इस ईशवाणी को अपना फ़ैसला करने वाला और हाकिम मानने को तैयार नहीं। आख़िर में फिर क़यामत (प्रलय) का दिन ही रह जाता है जिस में अल्लाह इस मतभेद का फ़ैसला करेगा और सच्चों को स्वर्ग में और दूसरों को नरक में दाख़िल करेगा।

[2] شَرَعَ का मतलब है बयान किया, वाज़ेह किया और मुक़र्रर किया, لَكُمْ तुम्हारे लिये। यह मोहम्मद (ﷺ) की उम्मत से संबोधन (ख़िताब) है। मतलब है कि तुम्हारे लिये वही शरीअत मुक़र्रर किया है जिसका हुक्म इस से पहले सभी अंबिया को दिया जाता रहा है, इस संदर्भ (तअल्लुक़ से) में कुछ श्रेष्ठ (अफ़ज़ल) अंबिया के नाम का बयान किया।

[3] सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत और उसी की इताअत (या उस के रसूल की पैरवी जो हक़ीक़त में अल्लाह ही की इताअत है) एकता और मेल-जोल का आधार (बुनियाद) है और उसकी

जिस चीज़ की तरफ़ आप उन्हें बुला रहे हैं वह तो (उन) मुश्रिकों पर भारी होती है। अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपना चुना हुआ बनाता है और जो भी उसकी तरफ़ ध्यानमग्न होता है वह उनकी ठीक हिदायत करता है।

وَمَا تَفَرَّقُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ۭ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۭ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿14﴾

१४. और उन लोगों ने अपने पास इल्म आ जाने के बाद इख़्तिलाफ़ किया (और वह भी) आपसी हठधर्मी से, और अगर आप के रब की बात एक निश्चित (मुक़र्रर) समय तक के लिए पहले ही से मुक़र्रर की गयी हुई न होती तो बेशक उनका फ़ैसला हो चुका होता, और जिन लोगों को उन के बाद किताब दी गयी है वे भी उसकी तरफ़ से शक और शुब्हा में पड़े हुए हैं।[1]

فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاۗءَهُمْ ۚ وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ۭ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۭ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۭ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ۭ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿15﴾

१५. तो आप लोगों को उसी तरफ़ बुलाते रहें, और जो कुछ आप से कहा गया है उस पर मज़बूती से रहें, और उनकी इच्छाओं पर न चलें,[2] और कह दें कि अल्लाह तआला ने जितनी किताबें नाज़िल की हैं मेरा उन पर ईमान है, और मुझे हुक्म दिया गया है कि तुम में न्याय करता रहूँ, हमारा और तुम सब का रब अल्लाह ही है, हमारे अमल हमारे लिए हैं और तुम्हारे अमल तुम्हारे लिए हैं, हम तुम में कोई झगड़ा नहीं, अल्लाह (तआला) हम सब को जमा करेगा और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है।

इबादत और इताअत से भागना या इन में दूसरों को साझी बनाना फूट और विच्छिन्नता (इन्तिशार) का सबब है, "जिस से फूट न डालना" कह कर रोका गया है।

[1] इस से मुराद यहूदी और इसाई हैं जो अपने से पहले के यहूदियों और इसाईयों के बाद किताब यानी धर्मशास्त्र तौरात और इंजील के उत्तराधिकारी (वारिस) बनाये गये, या अरबवासी मुराद हैं जिन में अल्लाह तआला ने अपना पाक क़ुरआन नाज़िल किया और उन्हें क़ुरआन का वारिस बनाया।

[2] यानी उन्होंने अपनी इच्छा से जो चीज़ें गढ़ ली हैं, जैसे मूर्तियों की पूजा आदि (वग़ैरह), इस में उन की आकांक्षा (ख़्वाहिशों) के पीछे न चलें।

وَالَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ⑯

१६. और जो लोग अल्लाह (तआला) की बातों में झगड़ा डालते हैं इस के बाद कि (सृष्टि) उसे मान चुकी है, उन का विवाद (झगड़ा) अल्लाह के करीब झूठ है[1] और उन पर क्रोध (गज़ब) है और उन के लिए सख़्त अज़ाब है।

اَللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ؕ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ⑰

१७. अल्लाह (तआला) ने हक़ के साथ किताब नाज़िल की है और तराज़ू भी (उतारी है) और आप को क्या पता कि शायद क़यामत क़रीब ही हो।

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ؕ اَلَآ اِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ فِي السَّاعَةِ لَفِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ⑱

१८. उसकी जल्दी उन्हें पड़ी है जो उस पर ईमान नहीं रखते और जो उस पर ईमान रखते हैं वे तो उस से डर रहे हैं और उन्हें उसे सच होने का पूरा ज्ञान (इल्म) है। याद रखो, जो लोग क़यामत के बारे में लड़-झगड़ रहे हैं[2] वे दूर की गुमराही में पड़े हुए हैं।

اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ⑲

१९. अल्लाह (तआला) अपने बंदों पर बड़ा ही कृपा करने वाला है, जिसे चाहता है ज़्यादा जीविका (रिज़्क) देता है, और वह बड़ा ताक़तवर, बड़ा ज़बरदस्त है।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۙ وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ⑳

२०. जिसका इरादा आख़िरत की खेती का हो हम उसे उसकी खेती में और वृद्धि (इज़ाफ़ा) करेंगे,[3] और जो दुनियावी खेती की कामना करता हो हम उसे उसमें से ही कुछ दे देंगे।[4] ऐसे इंसान

---

[1] داحضة का मतलब, कमज़ोर, बातिल के हैं जिसका टिकना नहीं।

[2] يُمارون (युमारून) مُمارَاة से बना है। जिसका मतलब लड़ना-झगड़ना है या مِرْيَة (मिर्यतुन) से है जिसका मतलब शक और शुब्हा है।

[3] حَرْث का मतलब बीज बोना है, यहाँ रूपक (इस्तेआरा) के रूप में कर्मों (अमल) के फल और फ़ायदे पर बोला गया है, मतलब यह है कि जो इंसान संसार में अपने अमल और मेहनत के द्वारा आख़िरत की नेकी और बदला का चाहने वाला है तो अल्लाह उसकी आख़िरत की खेती में इस तरह बढ़ायेगा कि एक नेकी का पुण्य (सवाब) दस गुना से लेकर सात सौ गुना तक भी प्रदान (अता) करेगा।

[4] यानी दुनिया के चाहने वाले को दुनिया तो मिलती है लेकिन इतनी नहीं जितनी वह चाहता है,

का आख़िरत (परलोक) में कोई हिस्सा नहीं है ।[1]

اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ۭ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۭ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿21﴾

२१. क्या उन लोगों ने ऐसे (अल्लाह के) साझीदार (मुक़र्रर कर रखे) हैं जिन्होंने ऐसे धार्मिक हुक्म मुक़र्रर कर दिये हैं, जो अल्लाह के कहे हुए नहीं हैं, अगर फ़ैसले के दिन का वादा न होता तो (अभी ही) उन में फ़ैसला कर दिया जाता । बेशक (उन) ज़ालिमों के लिए ही कष्टदायी यातनायें (अज़ाब) हैं ।

تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۭ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَاۗءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿22﴾

२२. आप देखेंगे कि (ये) ज़ालिम अपने अमल से डर रहे होंगे जो निःसंदेह (बेशक) उन पर घटित होने वाला है, और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेकी के काम भी किये वे स्वर्ग के बाग़ों में होंगे, वे जो इच्छा (तमन्ना) करेंगे अपने रब के पास मौजूद पायेंगे, यही है बड़ा फ़ज़्ल ।

ذٰلِكَ الَّذِيْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۭ قُلْ لَّآ اَسْـَٔــلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ۭ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿23﴾

२३. यही वह है जिसकी ख़ुशख़बरी अल्लाह (तआला) अपने उन बंदों को दे रहा है जो ईमान लाये और (सुन्नत के अनुसार) अमल किये, तो कह दीजिए कि मैं उस पर तुम से कोई बदला नहीं चाहता लेकिन नातेदारी की मुहब्बत और जो इंसान नेकी करे हम उस की नेकी को और ज़्यादा बढ़ा देंगे । निश्चय ही अल्लाह (तआला) बड़ा माफ़ करने वाला बड़ा क़द्रदान है ।

बल्कि उतनी ही मिलती है जितनी अल्लाह की मर्जी और भाग्य-लेख के अनुसार होती है ।

[1] यह वही विषय है जो सूर: बनी इस्राईल १८ में भी बयान हुआ है । मतलब यह है कि दुनिया तो अल्लाह हर एक को ज़रूर देता है जितनी उस ने लिख दी है, क्योंकि उसने सब की जीविका (रोज़ी) का भार ले रखा है, दुनिया के इच्छुक (तलबगार) का भी और आख़िरत के इच्छुक का भी, फिर भी जो आख़िरत का काम और मेहनत करेगा तो क़यामत के दिन अल्लाह उसे कई गुना नेकी और प्रतिफल (अज्र) प्रदान करेगा, जब कि दुनिया के चाहने वाले के लिए आख़िरत में नरक के अज़ाब के अलावा कुछ नहीं होगा । अब यह इंसान को ख़ुद सोच लेना चाहिए कि उसका फ़ायेदा मायामोह में है या आख़िरत का इच्छुक बनने में ।

२४. क्या ये कहते हैं (कि पैग़म्बर ने) अल्लाह पर झूठा इल्ज़ाम धर लिया है, अगर अल्लाह (तआला) चाहे तो आप के दिल पर मुहर लगा दे और अल्लाह (तआला) अपनी बातों से झूठ को मिटा देता है और सच को बाक़ी रखता है। वह सीने की बातों का जानने वाला है।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۖ فَإِن يَشَإِ اللَّهُ يَخْتِمْ عَلَىٰ قَلْبِكَ ۗ وَيَمْحُ اللَّهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ (24)

२५. और वही है जो अपने बन्दों की तौबा को क़ुबूल करता है[1] और पापों को माफ़ करता है, और जो कुछ तुम कर रहे हो सब जानता है।

وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ (25)

२६. और ईमानवालों और नेक लोगों की सुनता है और उन्हें अपनी कृपा (फ़ज़्ल) से और ज़्यादा देता है, और काफ़िरों के लिए सख़्त अज़ाब है।

وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُم مِّن فَضْلِهِ ۚ وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ (26)

२७. और अगर अल्लाह (तआला) अपने सब बन्दों की रोज़ी कुशादा कर देता तो वे धरती पर फ़साद मचा[2] देते, लेकिन वह अंदाज़ा से जो कुछ चाहता है नाज़िल करता है। वह अपने बंदों से अच्छी तरह बाख़बर है और अच्छी तरह देखने वाला है।

وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلَٰكِن يُنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ (27)

२८. और वही है जो लोगों के निराश (मायूस) हो जाने के बाद वर्षा करता है और अपनी रहमत को विस्तार (कुशादा) कर देता है। वही है वली और बड़ाई और तारीफ़ के लायक़।

وَهُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِن بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَيَنشُرُ رَحْمَتَهُ ۚ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ (28)

---

[1] तौबा का मतलब है गुनाह पर पश्चाताप (नादिम) और शर्मिन्दा होना और भविष्य (मुस्तक़बिल) में उस को न करने का इरादा, केवल मुँह से तौबा-तौबा कर लेना या उस पाप और नाफ़रमानी के अमल को तो न छोड़ना और तौबा का दिखावा करना तौबा नहीं है, यह हँसी और मज़ाक़ है, फिर भी ख़ालिस और सच्ची तौबा अल्लाह ज़रूर क़ुबूल करता है।

[2] यानी अगर अल्लाह हर इंसान को आवश्यकता (हाजत) और ज़रूरत से ज़्यादा एक बराबर रोज़ी के साधन (वसायल) प्रदान कर देता तो उसका नतीजा यह होता कि कोई किसी की अधीनता (ताबेदारी) क़ुबूल न करता, हर इंसान फ़साद, बुराई और ज़ुल्म की हद तोड़ने में एक से बढ़ कर एक होता और दुनिया फ़साद से भर जाती।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ﴿29﴾

२९. और उसकी निशानियों में से आकाश और धरती का पैदा करना और उन में जीवधारियों का फैलाना है। वह इस पर भी क़ादिर है कि जब चाहे उन्हें जमा कर दे।[1]

وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ﴿30﴾

३०. और जो कुछ भी कष्ट तुम्हें पहुँचते हैं वह तुम्हारे अपने हाथों के करतूत का (बदला) है, और वह बहुत-सी बातों को माफ़ कर देता है।

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۖۚ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿31﴾

३१. और तुम हमें धरती पर विवश (आजिज़) करने वाले नहीं हो, और तुम्हारे लिए अल्लाह (तआला) के सिवाय कोई वली नहीं है और न मदद करने वाला।

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِى الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿32﴾

३२. और समुद्र में चलने वाली पर्वतों जैसी नावें उसकी निशानियों में से हैं।[2]

اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿33﴾

३३. अगर वह चाहे तो हवा बन्द कर दे और ये नवकायें समुद्र में रुकी रह जायें। बेशक इस में हर सब्र करने वाले शुक्र करने वाले के लिए निशानियां हैं।

اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيْرٍ ﴿34﴾

३४. या उन्हें उन के करतूतों के सबब बरबाद कर दे।[3] वह तो बहुत-सी गलतियों को माफ़ कर देता है।

---

[1] دَآبَّة (धरती पर चलने-फिरने वाला) का शब्द साधारण (आम) है, जिस में जिन्न और इन्सान के सिवाय सभी जीव शामिल हैं, जिन के रूप, रंग, बोलियां, आदतें, क़िस्में और जाति एक दूसरे से हमेशा अलग हैं और वह धरती में फैले हुए हैं, इन सभी को अल्लाह तआला क़यामत के दिन एक ही मैदान में जमा करेगा।

[2] الجوار (अलजेवार) या الجواري (अलजवारी) جارية जारियह (चलने वाली) का बहुवचन (जमा) है, मतलब है नवकायें, जहाज़। यह अल्लाह की पूरी क़ुदरत का सुबूत है कि सागरों में पर्वतों की तरह नवकायें और जहाज़ उसकी इजाज़त से चलते हैं नहीं तो वह इजाज़त दे तो यह सागरों में खड़े रह जायें।

[3] यानी समुद्र को हुक्म दे और उसकी लहरों में बाढ़ आ जाये और यह उन में डूब जायें।

وَيَعْلَمَ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ﴿35﴾

३५. और ताकि जो लोग हमारी निशानियों में झगड़ते हैं वे मालूम कर लें कि उन के लिए कोई छुटकारा नहीं।

فَمَا أُوتِيتُم مِّن شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَمَا عِندَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿36﴾

३६. तो तुम्हें जो कुछ दिया गया है वह दुनियावी ज़िन्दगी का कुछ थोड़ा-सा साधन (ज़रिया) है और अल्लाह (तआला) के पास जो है वह उस से कई गुना बेहतर[1] और बाक़ी रहने वाला है, वह उन के लिए है जो ईमान लाये और केवल अपने रब पर ही भरोसा रखते हैं।

وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَائِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ ﴿37﴾

३७. और वे बड़े गुनाहों से और बेहयाई की बातों से बचते हैं और ग़ुस्सा के समय (भी) माफ़ कर देते हैं।

وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿38﴾

३८. और अपने रब के हुक्म को क़ुबूल करते हैं, और नमाज़ को पाबन्दी से क़ायम करते हैं[2] और उनका हर काम आपसी राय-मशविरे से होता है[3] और जो कुछ हम ने उन्हें अता कर रखा है, उस में से (हमारे नाम पर) देते हैं।

وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنتَصِرُونَ ﴿39﴾

३९. और जब उन पर ज़ुल्म (और क्रूरता) हो तो वे केवल बदला ले लेते हैं।[4]

---

[1] यानी अच्छे अमल का जो फल अल्लाह के पास मिलेगा वह दुनिया के सामानों से कहीं ज़्यादा बेहतर है और बाक़ी रहने वाला भी, क्योंकि उस का अन्त और तबाही नहीं। मतलब यह है कि दुनिया को आख़िरत पर प्रधानता (फ़ज़ीलत) न दो, ऐसा करोगे तो पछताओगे।

[2] नमाज़ की पाबन्दी और इक़ामत का ख़ास करके बयान किया गया है कि उपासना (एबादात) में इसकी सब से ज़्यादा अहमियत है।

[3] شُورى यह ذِكرى और بُشرى के समान مفاعلة से धातु है। यानी ईमानवाले हर महत्वपूर्ण (अहम) काम आपसी राय-मशविरे से करते हैं, अपने ही ख़्याल को आख़िरी फ़ैसला नहीं समझते। ख़ुद नबी ﷺ को भी अल्लाह ने हुक्म दिया कि मुसलमानों से परामर्श (मश्विरा) करो। (आले इमरान-१५९)

[4] यानी बदला लेने से वह मजबूर नहीं हैं, अगर बदला लेना चाहें तो ले सकते हैं, फिर भी क़ुदरत होते हुए वह माफ़ी को प्रधानता (तरजीह) देते हैं। जैसे नबी ﷺ ने मक्का विजय के दिन अपने ख़ून के प्यासों के लिए आम माफ़ी का एलान कर दिया। हुदैबिया में आप ने ८० इंसानों को

وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿40﴾

४०. और बुराई का बदला उसी जैसी बुराई है, और जो माफ़ कर दे और सुधार कर ले तो उसका बदला अल्लाह के ऊपर है। हक़ीक़त में अल्लाह (तआला) जालिमों से मुहब्बत नहीं करता।

وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿41﴾ؕ

४१. और जो इंसान अपने मज़लूम होने के बाद (बराबर) बदला ले ले तो ऐसे इंसान पर (मज़म्मत का) कोई रास्ता नहीं।

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿42﴾

४२. यह रास्ता केवल उन लोगों पर है जो ख़ुद दूसरे पर ज़ुल्म करें और धरती पर नाहक़ फ़साद मचाते फिरें, यही लोग हैं जिन के लिए कष्टदायी यातनायें (अज़ाब) हैं।

وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿43﴾ؑ

४३. और जो इंसान सब्र कर ले और माफ़ कर दे, तो बेशक यह एक बड़े हिम्मत के कामों में से (एक काम) है।

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْ بَعْدِهٖ ؕ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿44﴾ۚ

४४. और जिसे अल्लाह (तआला) भटका दे उसका उस के बाद कोई वली नहीं, और तू देखेगा कि ज़ालिम लोग अज़ाबों को देखकर कह रहे होंगे कि क्या वापस लौटने का कोई रास्ता है?

وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿45﴾

४५. और तू उन्हें देखेगा कि वे (नरक के) सामने ला खड़े किये जायेंगे, अपमान के कारण झुके जाते होंगे और कनखियों से देख रहे होंगे, ईमान वाले वाज़ेह तौर से कहेंगे कि हक़ीक़त में नुक़सान उठाने वाले वे हैं, जिन्होंने आज क़यामत के दिन अपने आप को और अपने परिवार को नुक़सान में डाल दिया। याद रखो कि बेशक ज़ालिम लोग हमेशा रहने वाले अज़ाब में हैं।

माफ़ कर दिया जिन्होंने आप के विरोध में साजिश रचा था। लबीद बिन आसिम यहूदी से बदला नहीं लिया जिसने आप पर जादू किया था, उस यहूदी नारी को आप ने कुछ नहीं कहा जिसने आप के खाने में ज़हर मिला दिया था, जिसका दर्द आप सारी ज़िन्दगी महसूस करते रहे ﷺ। (इब्ने कसीर)

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ أَوْلِيَاءَ يَنصُرُونَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ ۗ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن سَبِيلٍ ﴿46﴾

४६. और उनकी कोई मदद करने वाला नहीं, जो अल्लाह (तआला) से अलग उनकी मदद कर सकें, और जिसे अल्लाह भटका दे तो उस के लिए कोई रास्ता ही नहीं।

اسْتَجِيبُوا لِرَبِّكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ ۚ مَا لَكُم مِّن مَّلْجَإٍ يَوْمَئِذٍ وَمَا لَكُم مِّن نَّكِيرٍ ﴿47﴾

४७. अपने रब का हुक्म मान लो इस से पहले कि अल्लाह की तरफ़ से वह दिन आ जाये जिसका हट जाना नामुमकिन है। तुम्हें उस दिन न तो कोई पनाह की जगह मिलेगी और न छिप कर अन्जान बन जाने की।

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۖ إِنْ عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَإِنَّا إِذَا أَذَقْنَا الْإِنسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَإِنَّ الْإِنسَانَ كَفُورٌ ﴿48﴾

४८. अगर वे विमुख हो जायें तो हम ने आप को उन पर रक्षक (निगराँ) बना कर नहीं भेजा। आप का फ़र्ज तो केवल संदेश (पैग़ाम) पहुँचा देने का है और जब हम इंसान को अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं, तो वह उस पर इतराने लग जाता है, और अगर उन्हें उन के अमल की वजह से कोई कठिनाई आती है तो निश्चय इंसान बड़ा नाशुक्रा है।

لِّلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ يَهَبُ لِمَن يَشَاءُ إِنَاثًا وَيَهَبُ لِمَن يَشَاءُ الذُّكُورَ ﴿49﴾

४९. आकाशों और धरती का मुल्क अल्लाह (तआला) ही के लिए है, वह जो चाहता है पैदा करता है, जिसको चाहता है पुत्रियाँ देता है और जिसे चाहता है पुत्र देता है।

أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَإِنَاثًا ۖ وَيَجْعَلُ مَن يَشَاءُ عَقِيمًا ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿50﴾

५०. या उन्हें जमा कर देता है[1] पुत्र भी और पुत्रियाँ भी, और जिसे चाहे बाँझ कर देता है, वह बड़े इल्म वाला और क़ुदरत वाला है।

---

[1] यानी जिसको चाहता है पुत्र-पुत्री दोनों देता है। इस जगह पर अल्लाह ने लोगों का चार दर्जा बयान किया है, एक वह जिन को केवल पुत्र देता है, दूसरे वह जिन को केवल पुत्रियाँ देता है, तीसरे वह जिनको पुत्र-पुत्रियाँ दोनों देता है और चौथे वह जिनको पुत्र न पुत्री। लोगों में यह फ़र्क और भेद (राज़) अल्लाह की क़ुदरत की निशानियों में से है। इस क़ुदरती फ़र्क को दुनिया की कोई ताक़त बदल नहीं सकती, यह बटवारा औलाद के हिसाब से है, पिता के हिसाब से भी इंसानों के चार क़िस्में हैं। आदम عليه السلام को केवल मिट्टी से बनाया, उन के न पिता हैं न माता २- हव्वा को आदम यानी मर्द से पैदा किया, उनकी माता नहीं ३- हज़रत ईसा को केवल औरत से पैदा किया, उन के पिता नहीं, ४- और बाक़ी सभी इंसानों को नर-नारी दोनों के मिलान से, उन के पिता भी है और माता भी। فسبحان الله العليم القدير (इब्ने कसीर)

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿51﴾

५१. और नामुमकिन है कि किसी बंदे से अल्लाह (तआला) कलाम करे, लेकिन वह्यी के रूप में या पर्दे के पीछे से या किसी फ़रिश्ते को भेजे, और वह अल्लाह के हुक्म से जो वह चाहे वह्यी करे।[1] बेशक वह सबसे बड़ा और हिक्मत वाला है।

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ؕ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ؕ وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْۤ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿52﴾

५२. और इसी तरह हम ने आप की तरफ़ अपने हुक्म से रूह (आत्मा) को नाज़िल किया है,[2] आप उस से पहले यह भी नहीं जानते थे कि किताब और ईमान क्या चीज़ है? लेकिन हम ने उसे नूर बनाया, उस के ज़रिये अपने बंदों में से जिसे चाहते हैं हिदायत देते हैं। बेशक आप सच्चे रास्ते की हिदायत करा रहे हैं।

صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ﴿53﴾

५३. उस अल्लाह के रास्ते की[3] जिसकी मिल्कियत में आकाशों और धरती की हर चीज़ है। ख़बरदार रहो, सभी काम अल्लाह ही की तरफ़ लौटते हैं।

सूरतुज़ ज़ुख़रुफ़-४३

سُوْرَةُ الزُّخْرُفِ

सूर: ज़ुख़रुफ़ मक्का में नाज़िल हुई और इस में नवासी आयतें और सात रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

---

[1] इस आयत में अल्लाह की वह्यी के तीन रूप बताये गये हैं। पहला यह कि दिल में कोई बात डाल देना या ख़्वाब में बतला देना, इस यक़ीन के साथ कि यह अल्लाह ही की तरफ़ से है। दूसरा, पर्दे के पीछे से बात करना, जैसे ईशदूत मूसा से तूर पहाड़ पर की गई। तीसरा, फ़रिश्ते द्वारा अपनी वह्यी भेजना, जैसे जिब्रील عليه السلام अल्लाह का पैग़ाम लेकर आते और पैग़म्बरों को सुनाते थे।

[2] यहाँ رُوْح से मुराद ईशवाणी (कलामे इलाही) पाक क़ुरआन है, यानी जैसे आप से पहले दूसरे रसूलों पर हम वह्यी करते रहे, वैसे ही हम ने आप पर क़ुरआन की वह्यी की है। पाक क़ुरआन को रूह (आत्मा) कहा गया है कि क़ुरआन से दिलों को जीवन मिलता है, जैसे रूह में इंसानी ज़िन्दगी का भेद (राज़) छिपा है।

[3] यह صراط مستقيم (सिराते मुस्तक़ीम) सीधा रास्ता इस्लाम है, उसे अल्लाह ने अपनी तरफ़ सम्बन्धित (मंसूब) किया है जिस से इस रास्ते की सच्चाई और प्रतिष्ठा (अज़मत) वाज़ेह (स्पष्ट) होती है और उस के एक अकेले नजात का रास्ता होने की तरफ़ इशारा भी है।

حٰمٓ ﴿1﴾

१. हा॰मीम॰।

وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿2﴾

२. क़सम है इस खुली किताब की।

اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿3﴾

३. हम ने इस को अरबी भाषा का क़ुरआन बनाया है कि तुम समझ लो।

وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿4﴾

४. और बेशक यह सुरक्षित (महफ़ूज़) किताब में है और हमारे नज़दीक ऊँचे दर्जे की है, हिक्मत से भरी है।[1]

اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ﴿5﴾

५. क्या हम इस सदुपदेश (ज़िक्र) को तुम से इस आधार पर हटा लें कि तुम सीमा (हद) तोड़ने वाले लोग हो।

وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْاَوَّلِيْنَ ﴿6﴾

६. और हम ने पिछली जातियों में भी बहुत से नबी भेजे।

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿7﴾

७. और जो नबी उन के पास आया उन्होंने उसका मज़ाक़ उड़ाया।

فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿8﴾

८. तो हम ने उन से ज़्यादा बलवानों को[2] बरबाद कर डाला और अगलों की मिसाल गुज़र चुकी है।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ﴿9﴾

९. और अगर आप उन से पूछें कि आकाशों और धरती को किस ने पैदा किया तो बेशक उनका जवाब होगा कि उन्हें सब से ज़बरदस्त और सब से ज़्यादा जानने वाले (अल्लाह ही) ने पैदा किया है।

---

[1] इस में क़ुरआन की उस महानता (अज़मत) और प्रधानता (फ़ज़ीलत) का बयान है जो उच्च लोक (आलमे बाला) में उसे हासिल है, ताकि दुनिया वाले भी उसकी महानता और मर्यादा (इज़्ज़त) को ध्यान में रखते हुए उसे महत्व (अहमियत) दें और उस से हिदायत का वह मक़सद हासिल करें जिस के लिए उसे संसार में उतारा गया है। أم الكتاب (मूलग्रंथ) से मुराद लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) है।

[2] यानी मक्कावासियों से ज़्यादा बलवान थे, जैसे दूसरी जगह पर फ़रमाया: ﴿كَانُوٓا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً﴾ "वह तादाद और बल (क़ूवत) में कहीं उन से ज़्यादा थे।" (अलमोमिन-८२)

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿10﴾

१०. (वही है) जिस ने तुम्हारे लिये धरती को फ़र्श (और बिछौना) बनाया[1] और उस में तुम्हारे लिए रास्ता बना दिये ताकि तुम रास्ता पा लिया करो।

وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَنْشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَيْتًا كَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ ﴿11﴾

११. और उसी ने आकाश से एक अंदाज़े के अनुसार वर्षा की, तो हम ने उस से मुर्दा नगर को ज़िन्दा कर दिया। उसी तरह तुम निकाले जाओगे।

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ﴿12﴾

१२. और जिस ने सभी चीज़े के जोड़े[2] बनाये और तुम्हारी (सवारी के) लिए नवकायें बनायीं और चौपाये जानवर पैदा किये जिन पर तुम सवार होते हो।

لِتَسْتَوُوا عَلَىٰ ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ﴿13﴾

१३. ताकि तुम उन की पीठ पर जमकर सवार हुआ करो, फिर अपने रब के (दिये हुए) उपहार (नेमतों) को याद करो जब उस पर ठीक-ठाक बैठ जाओ और कहो कि पाक ताक़त है उसकी जिस ने उसे हमारे वश में कर दिया, यद्यपि (अगरचे) हमें उसे वश में करने की ताक़त नहीं थी।

وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ﴿14﴾

१४. और निश्चित (यक़ीनी) रूप से हम अपने रब की तरफ़ लौटकर जाने वाले हैं।[3]

---

[1] ऐसा बिस्तर जिस में ठहराव और सुकून हो, तुम इस पर चलते हो, खड़े होते हो और सोते हो, जहाँ चाहते चलते-फिरते हो, उस ने उसको पहाड़ो के ज़रिये स्थिर (साकिन) कर दिया ताकि उस में गति (हरकत) और कंपन न हो।

[2] हर चीज़ को जोड़ा-जोड़ा बनाया, नर-मादा, वनस्पतियाँ-खेतियाँ, फल-फूल और प्राणी सब में नर-मादा का अमल है। कुछ कहते हैं कि इस से मुराद एक-दूसरे की प्रतिकूल (मुख़ालिफ़) चीज़ें हैं, जैसे उजाला और अंधेरा, रोग और सेहत, इंसाफ़ और ज़ुल्म, भलाई और बुराई, ईमान (विश्वास) और कुफ़्र (इंकार) नरमी और सख़्ती वग़ैरह। कुछ कहते हैं कि जोड़ा, क़िस्म के मायने में है यानी सभी क़िस्मों का बनाने वाला अल्लाह है।

[3] नबी ﷺ जब सवारी पर सवार होते तो तीन बार الله اكبر (अल्लाहु अकबर) कहते और سبحان الذى से لمنقلبون तक आयत पढ़ते। इसके सिवाय भलाई और कामयाबी के लिए दुआ करते जो दुआओं की किताबों में देख ली जाये। (सहीह मुस्लिम, किताबुल हज्ज, बाबु मायक़ूलु इज़ा रकिब .....)

وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا ۚ إِنَّ الْإِنسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ﴿15﴾

१५. और उन्होंने अल्लाह के कुछ वन्दों को उसका हिस्सा वना दिया, वेशक इंसान वाज़ेह तौर से नाशुक्रा है।

أَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنَاتٍ وَأَصْفَاكُم بِالْبَنِينَ ﴿16﴾

१६. क्या अल्लाह (तआला) ने अपनी मख़लूक में से पुत्रियाँ तो ख़ुद रख लीं और तुम्हें पुत्रों से सुशोभित (मुज़य्यन) किया?

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿17﴾

१७. (यद्यपि) उन में से किसी को जव उस चीज़ की ख़वर दी जाती है जिसकी मिसाल उस ने अल्लाह दयालु (रहमान) के लिए बयान किया है तो उसका मुँह काला पड़ जाता है और वह ग़मगीन हो जाता है।

أَوَمَن يُنَشَّأُ فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ﴿18﴾

१८. या क्या (अल्लाह की औलाद पुत्रियाँ हैं) जो गहनों में पलें और झगड़े में (अपनी वात) साफ़ न कर सकें?[1]

وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَٰنِ إِنَاثًا ۚ أَشَهِدُوا خَلْقَهُمْ ۚ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ﴿19﴾

१९. और उन्होंने दयालु (रहमान) की इबादत करने वाले फ़रिश्तों को औरत वना दिया। क्या उनकी पैदाईश के समय वे मौजूद थे? उनकी यह गवाही लिख ली जायेगी और उन से उसकी पूछताछ की जायेगी।

وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَٰنُ مَا عَبَدْنَاهُم ۗ مَّا لَهُم بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿20﴾

२०. और कहते हैं कि अल्लाह (तआला) चाहता तो हम उनकी इवादत न करते, उन्हें उसका

---

[1] औरतों के दो गुणों (सिफ़्तों) का वयान यहाँ ख़ास तौर से किया गया है। १- उनका पालन-पोषण गहनों और ज़ीनत में होता है, यानी वोध (शउर) की आँखें खुलते ही उनका ध्यान शोभा (ज़ीनत) और ख़ूबसूरती की चीज़ों की तरफ़ हो जाता है, इस वयान से मतलव यह है कि जिनकी हालत यह है, वे अपनी शख़सियत का सुधार करने की भी योग्यता और क्षमता नहीं रखतीं। २- अगर किसी से वाद-विवाद हो तो वह अपनी वात भी सही ढंग से (प्राकृतिक (फ़ितरी) शर्म की वजह से) स्पष्ट (वाज़ेह) नहीं कर सकती, न अपने प्रतिद्वंदी (मुक़ाविल) के दलील की तोड़ ही कर सकती हैं, यह औरत की वह दो फ़ितरी कमज़ोरियाँ हैं जिन की वजह से पुरूष स्त्री पर एक गुणा प्रधानता (फ़ज़ीलत) रखते हैं। जुमले के ऐतवार से भी पुरूष की प्रधानता साफ़ है, क्योंकि बात इसी धारे में यानी नर-नारी में जो असली फ़र्क है, जिस के कारण (सबब) बच्ची के मुक़ाविले में बच्चे के जन्म को ज़्यादा पसन्द किया जाता था, हो रही है।

कुछ ज्ञान (इल्म) नहीं, यह तो केवल अटकल वाली (झूठी बातें) कहते हैं।

اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ مُسْتَمْسِكُوْنَ ﴿21﴾

२१. क्या हम ने इस से पहले उन्हें (दूसरी) कोई किताब अता की है, जिसे ये मज़बूती से पकड़े हुए हैं?

بَلْ قَالُوْٓا اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿22﴾

२२. (नहीं-नहीं) बल्कि ये तो कहते हैं कि हम ने अपने पूर्वजों (बुज़ुर्गों) को एक धर्म पर पाया और हम उन्हीं के निशाने क़दम पर चल कर संमार्ग (हिदायत) प्राप्त हैं।

وَكَذٰلِكَ مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ﴿23﴾

२३. और इसी तरह आप से पहले भी हम ने जिस बस्ती में कोई डराने वाला भेजा, वहाँ के ख़ुशहाल लोगों ने यही जवाब दिया कि हम ने अपने पूर्वजों (बुज़ुर्गों) को (एक डगर पर और) एक धर्म पर पाया और हम तो उन्हीं के पद चिन्हों (निशाने क़दम) की पैरवी करने वाले हैं।

قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ۭ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿24﴾

२४. (नबी ने) कहा भी कि यद्यपि (अगरचे) मैं उस से बहुत बेहतर (मक़सद तक पहुँचाने वाला) रास्ता लेकर आया हूँ जिस पर तुम ने अपने पूर्वजों (बुज़ुर्गों) को पाया, तो उन्होंने जवाब दिया कि हम उसे नहीं मानने वाले हैं जिसे देकर तुम्हें भेजा गया है।[1]

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿25﴾

२५. तो हम ने उन से इन्तिक़ाम लिया और देख ले झुठलाने वालों का क्या नतीजा हुआ?

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِيْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿26﴾

२६. और जबकि इब्राहीम (عليه السلام) ने अपने पिता से और अपनी क़ौम से कहा कि मैं इन बातों से अलग हूँ जिन की तुम इबादत करते हो।

[1] यानी अपने बुज़ुर्गों की पैरवी में इतने पक्के थे कि पैग़म्बर का स्पष्टीकरण (वज़ाहत) और दलील भी उन्हें फेर नहीं सकी। यह आयत अन्धी पैरवी के खंडन (तरदीद) और उसकी निंदा (मुज़म्मत) पर बहुत बड़ा सुबूत है। (देखिये शौकानी की फ़तहुल क़दीर)

إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ (27)

२७. सिवाय उस ताक़त के जिस ने मुझे पैदा किया है और वही मेरी हिदायत भी करेगा ।[1]

وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ (28)

२८. और इब्राहीम (عليه السلام) उसी को अपनी औलाद में भी बाक़ी रहने वाली बात क़ायम कर गये ताकि लोग (शिर्क से) बचते रहें ।[2]

بَلْ مَتَّعْتُ هَٰؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ مُبِينٌ (29)

२९. बल्कि मैंने उन लोगों को और उन के पूर्वजों को सामान (और ज़रिया) अता किया यहाँ तक कि उन के पास सच और वाज़ेह तौर से सुनाने वाला रसूल आ गया ।

وَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَٰذَا سِحْرٌ وَإِنَّا بِهِ كَافِرُونَ (30)

३०. और सच के पहुँचते ही ये बोल पड़े कि यह तो जादू है, और हम इस का इंकार करने वाले हैं ।

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَٰذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ مِنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيمٍ (31)

३१. और कहने लगे कि यह क़ुरआन इन दोनों बस्तियों में से किसी ख़ुशहाल इंसान पर क्यों नाज़िल नहीं किया गया ।[3]

أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ۚ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ۗ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِمَّا يَجْمَعُونَ (32)

३२. क्या आप के रब की रहमत को ये तक़सीम करते हैं? हम ने ही उनकी दुनियावी ज़िन्दगी का रिज़्क़ उन में तक़सीम किया है और एक को दूसरे से बेहतर किया है ताकि एक-दूसरे को अधीन (ताबे) कर ले, और जिसे ये लोग जमा करते फिरते हैं, उस से आप के रब

---

[1] यानी जिस ने मुझे पैदा किया है, वह अपने धर्म की समझ भी मुझे देगा और उस पर क़ायम भी रखेगा, मैं सिर्फ़ उसी की इबादत करूँगा ।

[2] यानी इब्राहीम की औलाद में यह एकेश्वरवादी (मुवहिहद) इसलिए पैदा किये ताकि उन की तौहीद (अद्वैत) की नसीहत से लोग शिर्क (मिश्रणवाद) से रूकते रहें । لعلهم में ज़मीर मक्कावासियों की तरफ़ फिरता है । यानी शायद मक्कावासी इस धर्म की तरफ़ लौट आयें जो ईशदूत हज़रत इब्राहीम का दीन था जो ख़ालिस तौहीद पर आधारित (मबनी) था न कि शिर्क (बहुदेववाद) पर ।

[3] दोनों नगरों से मुराद मक्का और ताएफ़ है, और बड़े व्यक्तियों से मुराद ज़्यादातर भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) के क़रीब मक्का का वलीद पुत्र मुग़ीरह और ताएफ़ का उरवह पुत्र मसऊद सक़फ़ी है । कुछ ने और दूसरे लोगों के नाम उल्लेख (ज़िक्र) किये हैं ।

की रहमत बहुत बेहतर है ।[1]

وَلَوْلَآ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ﴿33﴾

३३. और अगर यह बात नहीं होती कि सभी लोग एक ही तरीके पर हो जायेंगे तो दयालु (रहमान) के साथ कुफ़्र करने वालों के घरों की छतों को हम चाँदी की बना देते और सीढ़ियों को भी जिन पर वे चढ़ा करते ।

وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿34﴾

३४. और उन के घरों के दरवाज़ों और तख़्त (आसन) तक भी जिन पर वे तकिया लगा-लगा कर बैठते ।

وَزُخْرُفًا ۭ وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿35﴾

३५. और सोने के भी, और ये सब कुछ यूं ही सा दुनियावी फ़ायेदा है और आख़िरत तो आप के रब के क़रीब केवल परहेज़गारों के लिए (ही) है ।

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ﴿36﴾

३६. और जो इंसान अल्लाह की याद से सुस्ती करे हम उस पर एक शैतान निर्धारित (मुक़र्रर) कर देते हैं; वही उसका साथी रहता है ।

وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿37﴾

३७. और वह उन्हें रास्ते से रोकते हैं और यह उसी ख़्याल में रहते हैं कि यह हिदायत याफ़्ता हैं ।

حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ﴿38﴾

३८. यहाँ तक कि जब वह हमारे पास आयेगा तो कहेगा कि काश मेरे और तेरे बीच पूरब और पश्चिम की दूरी होती, तू बड़ा बुरा साथी है ।

وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿39﴾

३९. और जबकि तुम ज़ालिम साबित हो चुके तो तुम्हें आज कभी भी तुम सब के अज़ाब में शरीक होना कोई फ़ायदेमंद न होगा ।

اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ وَمَنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿40﴾

४०. तो क्या तू बहरे को सुना सकता है या अंधे को रास्ता दिखा सकता है और उसे जो खुली गुमराही में हो ।

[1] इस رحمت रहमत (दया) से मुराद आख़िरत के वह वरदान हैं जो अल्लाह ने अपने नेक बंदों के लिए तैयार कर रखे हैं ।

فَإِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَإِنَّا مِنْهُم مُّنتَقِمُونَ (41)

४१. फिर अगर हम तुझे यहाँ से ले भी जायें तो भी हम उन से बदला लेने वाले हैं।

أَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ فَإِنَّا عَلَيْهِم مُّقْتَدِرُونَ (42)

४२. या जो कुछ उन से वादा किया है वह तुझे दिखा दें; हम उन पर भी क़ुदरत रखते हैं।

فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِي أُوحِيَ إِلَيْكَ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ (43)

४३. तो जो वह्यी आप की तरफ़ की गयी है उसे मज़बूती से थामे रहें। बेशक आप सीधे रास्ते पर हैं।

وَإِنَّهُ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۖ وَسَوْفَ تُسْأَلُونَ (44)

४४. और बेशक यह (ख़ुद) आप के लिए और आप की जाति के लिए नसीहत है और क़रीब भविष्य (मुस्तक़बिल) में तुम लोग पूछे जाओगे।

وَاسْأَلْ مَنْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رُّسُلِنَا أَجَعَلْنَا مِن دُونِ الرَّحْمَٰنِ آلِهَةً يُعْبَدُونَ (45)

४५. और हमारे उन नबियों से मालूम करो जिन्हें हम ने[1] आप से पहले भेजा था कि क्या हम ने रहमान के सिवाय दूसरे माबूद निर्धारित (मुक़र्रर) किये थे जिन की इबादत की जाये?

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ (46)

४६. और हम ने मूसा (ﷺ) को अपनी निशानियाँ देकर फ़िरऔन और उसके दरबारियों के पास भेजा तो (मूसा ने जाकर) कहा कि मैं सारे जहाँ के रब का रसूल (संदेशवाहक) हूँ।

فَلَمَّا جَاءَهُم بِآيَاتِنَا إِذَا هُم مِّنْهَا يَضْحَكُونَ (47)

४७. तो जब वह हमारी निशानियाँ लेकर उन के पास आये तो वे अचानक उन पर हँसने लगे।

وَمَا نُرِيهِم مِّنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا ۖ وَأَخَذْنَاهُم بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ (48)

४८. और हम जो निशानी उनको दिखाते थे, वे दूसरों से बढ़ी-चढ़ी होती थी[2] और हम ने उन्हें अज़ाब में पकड़ा ताकि वे रूक जायें।

---

[1] पैग़म्बरों से यह सवाल या तो इस्रा और मेराज के मौक़ा पर बैतुल मोक़द्दस में हुआ या आसमान पर किया गया, जहाँ अम्बिया (ईशदूतों) से नबी ﷺ की भेंट हुई। या أتباع का शब्द छिपा है, यानी उनके पैरोकारों (अहले किताब यहूदियों और ईसाईयों) से पूछो, क्योंकि वे उनकी शिक्षाओं (तालीमात) से परिचित (वाक़िफ़) हैं और उन के ऊपर नाज़िल किताब उन के पास मौजूद हैं।

[2] इन निशानियों से वह निशानियाँ मुराद हैं जो तूफ़ान, टिड्डी दल, जुयें, मेढक और ख़ून वग़ैरह के रूप में दिखायी गयीं, जिनकी चर्चा सूर: आराफ़ आयत नं॰ १३३-१३५ में आ चुकी है। बाद की हर निशानी पहली निशानी से बढ़ कर होती, जिस से हज़रत मूसा की सच्चाई स्पष्ट (वाज़ेह) से स्पष्टतम (वाज़ेह तर) हो जाती।

وَقَالُوا يَا أَيُّهَ السَّاحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ إِنَّنَا لَمُهْتَدُونَ (49)

४९. और उन्होंने कहा कि हे जादूगर! हमारे लिए अपने रब से उसकी दुआ कर जिसका उस ने तुझे वादा दे रखा है। यक़ीन कर कि हम रास्ते पर लग जायेंगे।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ (50)

५०. फिर जब हम ने उन पर से वह अज़ाब हटा लिया तो उन्होंने उसी समय अपना वादा और अहद (प्रतिज्ञा) तोड़ दिया।

وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهَٰذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِي أَفَلَا تُبْصِرُونَ (51)

५१. और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम में एलान कराया और कहा, कि हे मेरी जाति के लोगो! क्या मिस्र का देश मेरा नहीं और मेरे राजमहलों के नीचें जो ये नहरें बह रही हैं ?[1] क्या तुम देखते नहीं?

أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ مَهِينٌ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ (52)

५२. बल्कि मैं बेहतर हूं इसकी अपेक्षा (मुक़ाबिले) जो हीन (हक़ीर) है और साफ बोल भी नहीं सकता।

فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِنْ ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلَائِكَةُ مُقْتَرِنِينَ (53)

५३. अच्छा, इस पर सोने के कंगन क्यों नहीं उतरे[2] या उसके साथ झुण्ड और घटा बांधकर फ़रिश्ते ही आ जाते।

فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ فَأَطَاعُوهُ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ (54)

५४. तो उस ने अपनी जाति के लोगों को फुसलाया और उन्होंने उसी की मान ली। बेशक वे सारे ही फ़ासिक लोग थे।

فَلَمَّا آسَفُونَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ (55)

५५. फिर जब उन्होंने हमें क्रोधित किया तो हम ने उन से बदला लिया और सब को डुबो दिया।

---

[1] इससे मुराद नील नदी या उसकी कुछ शाखायें हैं जो उस के राजमहल के नीचे से गुज़रती थीं।

[2] उस ज़माने में मिश्र और ईरान के राजा अपनी विशेषता (ख़ुसूसियत) दिखाने के लिए सोने के कंगन पहनते थे और गले में सोने का तौक़ और सिकड़ी डालते थे जो उनकी बड़ाई की निशानी समझी जाती थी, इसी वजह से फ़िरऔन ने हज़रत मूसा के बारे में कहा कि अगर उसकी कोई मर्यादा (इज़्ज़त) की विशेषता होती और कोई जगह होती तो उसके हाथ में सोने के कंगन होने चाहिये थे।

فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّمَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ (56)

५६. तो हम ने उन्हें गया-गुज़रा कर दिया और बाद वालों के लिए नमूना बना दिया।

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ (57)

५७. और जब मरियम के बेटे की मिसाल बयान की गई तो उस से तेरी क़ौम (ख़ुशी से) पुकार उठी।

وَقَالُوْٓا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ۭ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ۭ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ (58)

५८. और उन्होंने कहा कि हमारे देवता (माबूद) अच्छे हैं या वह? तुझ से उनका यह कहना सिर्फ़ झगड़े के मक़सद से है, बल्कि यह लोग हैं ही झगड़ालू।

اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ (59)

५९. वह (ईसा عليه السلام) भी केवल बंदा (भक्त) ही है, जिस पर हम ने एहसान किया और उसे इस्राईल की औलाद के लिए (अपने क़ुदरत की) निशानी बनाया।

وَلَوْ نَشَاۗءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰۗىِٕكَةً فِي الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ (60)

६०. अगर हम चाहते तो तुम्हारे बदले फ़रिश्ते कर देते जो धरती पर एक-दूसरे के वारिस का काम करते।

وَاِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوْنِ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ (61)

६१. और बेशक वह (ईसा عليه السلام) क़यामत की निशानी है, तो तुम क़यामत के बारे में शक न करो और मेरी बात मान लो, यही सीधा रास्ता है।

وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ (62)

६२. और शैतान तुम्हें रोक न दे, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

وَلَمَّا جَاۗءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِاُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ (63)

६३. और जब ईसा (عليه السلام) मोजिज़े लाये तो कहा कि मैं तुम्हारे पास हिक्मत (ज्ञान) लाया हूँ और इसलिए आया हूँ कि जिन कुछ बातों में तुम मतभेद (इख़्तिलाफ़) करते हो, उन्हें स्पष्ट (वाज़ेह) कर दूँ, तो तुम अल्लाह (तआला) से डरो और मेरा कहा मानो।

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ (64)

६४. मेरा और तुम्हारा रब सिर्फ़ अल्लाह (तआला) ही है तो तुम सब उसकी इबादत करो, सीधा रास्ता यही है।

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ أَلِيمٍ (65)

६५. फिर (इस्राईल की औलाद के) गुटों ने आपस में इख़्तिलाफ़ किया, तो ज़ालिमों के लिए ख़राबी है दुख वाले दिन के अज़ाब से।

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَن تَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ (66)

६६. ये लोग सिर्फ़ क़यामत के इंतेज़ार में हैं कि वह अचानक उन पर आ पड़े और उन्हें ख़बर भी न हो।

الْأَخِلَّاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ (67)

६७. उस दिन (घनिष्ठ) दोस्त भी एक-दूसरे के दुश्मन बन जायेंगे सिवाय परहेज़गारों के।

يَا عِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنتُمْ تَحْزَنُونَ (68)

६८. हे मेरे बंदो! आज तो तुम पर कोई भय और डर है और न तुम ग़मगीन होगे।[1]

الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ (69)

६९. जो हमारी आयतों पर ईमान लाये और थे भी वे (आज्ञाकारी) मुसलमान।

ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ (70)

७०. तुम और तुम्हारी पत्नियाँ आनंदित (मसरूर) और ख़ुश होकर जन्नत में चले जाओ।

يُطَافُ عَلَيْهِم بِصِحَافٍ مِّن ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ ۖ وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ۖ وَأَنتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (71)

७१. उन के चारों तरफ़ सोने के थालों और सोने के गिलासों का दौर चलाया जायेगा, उन के मन जिस चीज़ को चाहें और जिस से उन की आँखें लज़्ज़त हासिल करें, सब वहाँ होगा और तुम उस में हमेशा रहोगे।

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ (72)

७२. और यही वह जन्नत है कि तुम अपने अमल के बदले इस के उत्तराधिकारी (वारिस) बनाये गये हो।

لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِّنْهَا تَأْكُلُونَ (73)

७३. यहाँ तुम्हारे लिए बहुत मेवे हैं जिन्हें तुम खाते रहोगे।

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابِ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ (74)

७४. बेशक पापी (मुजरिम) लोग नरक के अज़ाब में हमेशा रहेंगे।

[1] यह क़यामत के दिन उन नेक लोगों से कहा जायेगा जो संसार में सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशी के लिए आपस में प्रेम रखते थे, जैसाकि हदीसों में भी उसकी महत्ता (फ़ज़ीलत) आयी है, बल्कि अल्लाह के लिए दोस्ती और दुश्मनी को पूरे ईमान का आधार (बुनियाद) बताया गया है।

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿75﴾

७५. यह (यातना) कभी भी उन से हल्की न की जायेगी और वे उसी में निराश (मायूस) पड़े होंगे।

وَمَا ظَلَمْنَٰهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا هُمُ الظَّٰلِمِينَ ﴿76﴾

७६. और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वे ख़ुद ही ज़ालिम थे।

وَنَادَوْا يَٰمَٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ إِنَّكُم مَّٰكِثُونَ ﴿77﴾

७७. और वे पुकार-पुकार कर कहेगें कि हे मालिक,[1] तेरा रब हमारा काम ही तमाम कर दे, वह कहेगा कि तुम्हें तो (हमेशा) रहना है।

لَقَدْ جِئْنَٰكُم بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَٰرِهُونَ ﴿78﴾

७८. हम तो तुम्हारे पास हक़ ले आये, लेकिन तुम में से ज़्यादातर लोग हक़ से नफ़रत करने वाले थे।

أَمْ أَبْرَمُوا أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ﴿79﴾

७९. क्या उन्होंने किसी काम का मज़बूत इरादा कर लिया है? तो यक़ीन करो कि हम भी मज़बूत काम करने वाले हैं।

أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَىٰهُم ۚ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ﴿80﴾

८०. क्या उनका यह इरादा है कि हम उनकी छिपी बातों को और उनकी काना-फूसी को नहीं सुनते। (बेशक हम बराबर सुन रहे हैं) बल्कि हमारे भेजे हुए उन के पास ही लिख रहे हैं।

قُلْ إِن كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدٌ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَٰبِدِينَ ﴿81﴾

८१. (आप) कह दीजिए कि अगर मान लिया जाये कि रहमान की औलाद हो, तो मैं सब से पहले इबादत करने वाला होता।

سُبْحَٰنَ رَبِّ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿82﴾

८२. आकाशों और धरती और अर्श का रब जो कुछ (ये) कहते हैं उस से (बहुत) पाक है।

فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَٰقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿83﴾

८३. अब आप उन्हें इसी वाद-विवाद और खेल-कूद में छोड़ दीजिए, यहाँ तक कि उन्हें उस दिन से पाला पड़ जाये, जिनका ये वादा दिये जाते हैं।

[1] मालिक, नरक के दरोग़ा का नाम है।

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَٰهٌ وَفِي الْأَرْضِ إِلَٰهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿84﴾

८४. और वही आकाशों पर भी पूज्य (माबूद) है और धरती पर भी वही इबादत के लायक़ है,[1] और वह बड़ा हिक्मत वाला और पूरा जानने वाला है।

وَتَبَارَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِندَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿85﴾

८५. और वह बड़ी बाबरकत ज़ात है जिस के पास आकाशों और धरती और उन के बीच का राज्य है, और क़यामत का इल्म भी उसी के पास है और उसी की तरफ़ तुम सब लौटाये जाओगे।

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَن شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿86﴾

८६. और जिन्हें ये लोग अल्लाह के सिवाय पुकारते हैं वे सिफ़ारिश करने का हक़ नहीं रखते, हाँ, (सिफ़ारिश के लायक़ वे हैं) जो सच बात को क़ुबूल करें और उन्हें इल्म भी हो।[2]

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿87﴾

८७. और अगर आप उन से पूछें कि उन्हें किस ने पैदा किया है तो ज़रूर यह जवाब देंगे कि अल्लाह ने, फिर ये कहाँ उल्टे जाते हैं?

وَقِيلِهِ يَا رَبِّ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿88﴾

८८. और उनका (पैग़म्बरों का ज़्यादातर) यह कहना कि हे मेरे रब! बेशक यह वे लोग हैं जो ईमान नहीं लाते।

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿89﴾

८९. तो आप उन से मुँह फेर लें और (विदाई का) सलाम कह दें। उन्हें (ख़ुद ही) जल्द मालूम हो जायेगा।

---

[1] यह नहीं कि आकाश का पूज्य कोई और हो और धरती का कोई और, बल्कि जैसे इन दोनों का बनाने वाला एक है, पूज्य भी एक ही है। इसी के समानार्थ (मिस्ल) यह आयत है।

﴿وَهُوَ اللهُ فِي السَّمَاوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ﴾

"और वही है सच्चा माबूद आकाशों में भी और धरती में भी, वह तुम्हारी छिपी और ज़ाहिर हालतों को भी जानता है और तुम जो कुछ अमल करते हो उसको भी जानता है।" (अल-अंआम-३)

[2] सच बात से मुराद कलिमा 'ला इलाहा इल्लल्लाह' है, और यह क़ुबूल करना सूझबूझ के बिना पर हो, केवल रीति-रिवाज और बुज़ुर्गों की रसम के रूप में न हो, यानी मुँह से कलमा तौहीद के अदा करने वाले को पता हो कि इस में केवल एक अल्लाह का इक़रार और दूसरे सभी उपास्यों (माबूदों) का इंकार है, फिर उस के मुताबिक अमल हो। ऐसे लोगों के हक़ में सिफ़ारिश करने वाले की सिफ़ारिश फ़ायदेमंद होगी, या यह मुराद है कि सिफ़ारिश करने का हक़ सिर्फ़ ऐसे लोगों को मिलेगा जो सच का इक़रार करने वाले होंगे, जैसे अम्बिया, औलिया और फ़रिश्ते, न कि झूठे माबूदों को जिन्हें मुश्रिक अपना सिफ़ारिशी समझते हैं।

सूरतुद दुख़ान-४४

سُوْرَةُ الدُّخَانِ

सूर: दुख़ान मक्का में नाज़िल हुई और इस में उनसठ आयतें और तीन रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. हा॰मीम॰।

حٰمٓ ﴿1﴾

२. क़सम है इस खुली किताब की।

وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿2﴾

३. बेशक हम ने इसे मुबारक रात[1] में नाज़िल किया है। बेशक हम बाख़बर कर देने वाले हैं।

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ﴿3﴾

४. उसी रात में हर अहम काम का फ़ैसला किया जाता है।

فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ﴿4﴾

५. हमारे पास से आदेश होकर, हम ही हैं रसूल बनाकर भेजने वाले।

اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۭ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿5﴾

---

[1] शुभ रात्रि (मुबारक रात) से मुराद (लैलतुल क़द्र है), जैसाकि दूसरे मुक़ाम पर बयान (वर्णन) है। (اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ) (सूरतुल क़द्र) "हम ने यह क़ुरआन शबे क़द्र में नाज़िल किया।" यह मुबारक रात रमज़ान के आख़िरी दस रात की विषम (ताक़) रातों में कोई एक रात होती है। यहाँ क़द्र (सम्मान) की इस रात को मुबारक रात कहा गया है। इस के मुबारक होने में क्या शक हो सकता है, एक तो इस में क़ुरआन का अवतरण (नुज़ूल) हुआ। दूसरे, इस में फ़रिश्तों और जिब्रील का नुज़ूल होता है। तीसरे, इस में पूरे साल होने वाले मामले का फ़ैसला किया जाता है (जैसाकि आगे आ रहा है)। चौथे, इस रात की इबादत (उपासना) हज़ार महीने (यानी ८३ साल ४ महीने) की इबादत से बेहतर है, शबे क़द्र या "लैलये मुबारकह" में क़ुरआन के नुज़ूल का मतलब यह है कि इस रात नबी ﷺ पर पाक क़ुरआन नाज़िल होना शुरू हुआ या यह मुराद है कि लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) से इसी रात बैतुल इज़्ज़त (सम्मान गृह) में नाज़िल किया गया जो दुनिया के आकाश पर है, फिर वहाँ से ज़रूरत के ऐतबार से २३ सालों तक अलग-अलग वक़्त में नबी ﷺ पर नाज़िल होता रहा। कुछ ने लैलये मुबारकह से शाबान महीने की पंद्रहवीं रात मुराद लिया है लेकिन यह सही नहीं है, जब क़ुरआन के खुले शब्दों से क़ुरआन का शबे क़द्र में नाज़िल होना साबित है तो इस से "शबे बराअत" मुराद लेना कभी भी सही नहीं, इस के अलावा "शबेबराअत" (शाबान महीने की पंद्रहवीं रात) के बारे में जितनी रिवायतें (वर्णन) है जिन में उसकी महत्ता (फ़ज़ीलत) का बयान है या उन में उसे फ़ैसले की रात कहा गया है, यह सभी बयान सुबूत के आधार पर कमज़ोर और ज़ईफ़ हैं, यह क़ुरआन के खुले शब्दों का मुक़ाबला किस तरह कर सकती हैं?

६. आप के रब की कृपा (रहमत) से, वही है सुनने वाला और जानने वाला।

رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ⑥

७. जो रब है आकाशों का और धरती का और जो कुछ उनके बीच है, अगर तुम यक़ीन करने वाले हो।

رَبِّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَآ ۖ إِن كُنتُم مُّوقِنِينَ ⑦

८. कोई इबादत के लायक़ नहीं उसके सिवाय, वही ज़िन्दा करता है और मारता है, वही तुम्हारा रब है और तुम्हारे पिछले पूर्वजों का।

لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِۦ وَيُمِيتُ ۖ رَبُّكُمْ وَرَبُّ ءَابَآئِكُمُ ٱلْأَوَّلِينَ ⑧

९. वल्कि वे शक में पड़े खेल रहे हैं।

بَلْ هُمْ فِى شَكٍّ يَلْعَبُونَ ⑨

१०. आप उस दिन के इंतेज़ार में रहें जबकि आकाश खुला हुआ धुआँ लायेगा।

فَٱرْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِى ٱلسَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ⑩

११. जो लोगों को घेर लेगा, यह दुखदायी अज़ाब है।

يَغْشَى ٱلنَّاسَ ۖ هَٰذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑪

१२. (कहेंगे कि) हे हमारे रब! यह अज़ाब हम से दूर कर हम ईमान क़ुबूल करते हैं।

رَّبَّنَا ٱكْشِفْ عَنَّا ٱلْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ⑫

१३. उन के लिए नसीहत कहाँ है? साफ़ तौर से बयान करने वाले पैग़म्बर उन के पास आ चुके।

أَنَّىٰ لَهُمُ ٱلذِّكْرَىٰ وَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ⑬

१४. फिर भी उन्होंने उन से मुँह फेरा और कह दिया कि यह सिखाया-पढ़ाया हुआ दीवाना है।

ثُمَّ تَوَلَّوْا۟ عَنْهُ وَقَالُوا۟ مُعَلَّمٌ مَّجْنُونٌ ⑭

१५. हम अज़ाब को थोड़ी दूर कर देंगे तो तुम फिर अपनी उसी हालत में आ जाओगे।

إِنَّا كَاشِفُوا۟ ٱلْعَذَابِ قَلِيلًا ۚ إِنَّكُمْ عَآئِدُونَ ⑮

१६. जिस दिन हम बड़ी कड़ी पकड़ पकड़ेंगे[1] यक़ीनी तौर से हम बदला लेने वाले हैं।

يَوْمَ نَبْطِشُ ٱلْبَطْشَةَ ٱلْكُبْرَىٰٓ إِنَّا مُنتَقِمُونَ ⑯

[1] इस से मुराद बद्र के जंग की पकड़ है, जिस में सत्तर काफ़िर मारे गये और सत्तर क़ैदी बना लिये गये। दूसरी व्याख्या (तफ़सीर) के अनुसार यह कड़ी पकड़ क़यामत (प्रलय) के दिन होगी। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि यह उस पकड़ की ख़ास चर्चा है जो बद्र के जंग में हुई, क्योंकि क़ुरैश ही के बारे में इसकी चर्चा है, यद्यपि (अगरचे) क़यामत के दिन भी अल्लाह तआला कड़ी पकड़ करेगा, फिर भी वह पकड़ सामान्य (आम) होगी जिस में हर बुरे लोग शामिल होंगे।

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ ﴿17﴾

१७. और बेशक हम इस से पहले फ़िरऔन की जाति की (भी) परीक्षा ले चुके हैं,[1] जिन के पास (अल्लाह का) सम्मानित (बावक़ार) रसूल आया।

اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿18﴾

१८. कि अल्लाह (तआला) के बंदों को मुझे दे दो[2] यक़ीन करो कि मैं तुम्हारे लिए ईमानदार रसूल हूँ।

وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّيْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿19﴾

१९. और तुम अल्लाह तआला के सामने सरकशी न दिखाओ, मैं तुम्हारे सामने खुला सुबूत लाने वाला हूँ।

وَاِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ﴿20﴾

२०. और मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह में आता हूँ, इस से कि तुम मुझे पत्थरों से मार डालो।

وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ ﴿21﴾

२१. और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझ से अलग ही रहो।

فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ﴿22﴾

२२. फिर उन्होंने अपने रब से दुआ की कि ये सब पापी लोग हैं।

فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿23﴾

२३. (हम ने कह दिया) कि रातों-रात तू मेरे बंदों को लेकर निकल, बेशक तेरा पीछा किया जायेगा।

وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ؕ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ﴿24﴾

२४. और तू सागर को ठहरा हुआ छोड़कर चला जा, बेशक यह सेना डूबो दी जायेगी।

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿25﴾

२५. वे बहुत से बाग़ और जलस्रोत (चश्मे) छोड़ गये।

---

[1] परीक्षा (इम्तेहान) लेने का मतलब है कि हम ने उन्हें दुनियावी सुख-सुविधा और सम्पन्नता (ख़ुशहाली) दी, और फिर अपना पैग़म्बर भी उनकी तरफ़ भेजा, लेकिन न उन्होंने अल्लाह के वरदानों (नेमतों) का शुक्रिया अदा किया और न पैग़म्बर पर ईमान लाये।

[2] عِبَادَ اللّٰهِ (अल्लाह के बंदों) से मुराद यहाँ मूसा ﷺ की जाति इस्राईल की औलाद है, जिसे फ़िरऔन ने ग़ुलाम बना रखा था, हज़रत मूसा ﷺ ने अपनी जाति की आज़ादी की माँग की।

२६. और खेतियाँ और अच्छी रिहाईश।

وَّ زُرُوْعٍ وَّ مَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿26﴾

२७. और वे सुखदायी चीजें जिन में सुख भोग रहे थे।

وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ﴿27﴾

२८. इसी तरह हो गया, और हम ने उन सब का वारिस दूसरी क़ौम को बना दिया।[1]

كَذٰلِكَ ۖ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿28﴾

२९. तो उन पर न तो आकाश और धरती रोये[2] और न उन्हें मौक़ा मिला।

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ﴿29﴾

३०. और हम ने (ही) इस्राईल की औलाद को (बहुत) जिल्लत वाली सजा से मुक्ति (नजात) दी।

وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿30﴾

३१. (जो) फ़िरऔन की तरफ़ से (हो रही) थी। हक़ीक़त में वह सरकश और सीमा (हद) पार करने वालों में से था।

مِنْ فِرْعَوْنَ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿31﴾

३२. और हम ने जान बूझकर इस्राईल की औलाद को दुनिया वालों पर फ़जीलत अता की।[3]

وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿32﴾

३३. और हम ने उन्हें ऐसी निशानियाँ अता कीं, जिन में खुली परीक्षा (इम्तेहान) थी।

وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ ﴿33﴾

[1] कुछ के क़रीब इस से मुराद इस्राईल की औलाद हैं, लेकिन कुछ के ख़्याल से इस्राईली वंश का दोबारा मिश्र आना तारीख़ी ऐतबार से साबित नहीं, इसलिए मिश्र देश की उत्तराधिकारी (वारिस) कोई दूसरी जाति बनी, इस्राईल की औलाद नहीं।

[2] यानी इन फ़िरऔनियों के नेक काम थे ही नहीं जो आकाश पर चढ़ते और उन के सिलसिले के टूटने (तबाह होने) पर आकाश रोते, न धरती ही पर वह अल्लाह की इबादत करते थे कि उस से वंचित (महरूम) होने पर धरती रोती। मुराद यह है कि आकाश और धरती में से कोई उन के तबाह होने पर रोने वाला नहीं था। (फ़तहुल क़दीर)

[3] इस दुनिया से मुराद इस्राईल की औलाद के जमाने की दुनिया है। आम तौर से सारी दुनिया नहीं है, क्योंकि पाक क़ुरआन में मोहम्मद ﷺ की उम्मत को (كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ) की उपाधि (लक़ब) से सम्मानित (नवाज़ा) किया गया है, यानी इस्राईल की औलाद अपने जमाने में दुनिया वालों पर फ़जीलत रखती थी, उनकी यह फ़जीलत उस योग्यता (क़ाबलियत) के सबब थी जिसे अल्लाह ही जानता है।

३४. यह लोग तो यही कहते हैं।

إِنَّ هَٰٓؤُلَآءِ لَيَقُولُونَ ﴿34﴾

३५. कि (आख़िरी चीज़) यही हमारा पहली बार (दुनिया से) मर जाना है और हम दोबारा उठाये नहीं जायेंगे।

إِنْ هِىَ إِلَّا مَوْتَتُنَا ٱلْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ﴿35﴾

३६. अगर तुम सच्चे हो तो हमारे पूर्वजों (बुज़ुर्गों) को ले आओ।

فَأْتُوا۟ بِـَٔابَآئِنَآ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿36﴾

३७. क्या ये लोग बेहतर हैं या तुब्बअ की क़ौम के लोग और जो उन से भी पहले थे? हम ने उन सब को बरबाद कर दिया, बेशक वे पापी थे।[1]

أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ أَهْلَكْنَٰهُمْ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ مُجْرِمِينَ ﴿37﴾

३८. और हम ने धरती और आकाशों और उन के बीच की चीज़ों को खेल के रूप में पैदा नहीं किया।

وَمَا خَلَقْنَا ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَٰعِبِينَ ﴿38﴾

३९. बल्कि हम ने उन्हें सही मक़सद के साथ ही पैदा किया है, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।

مَا خَلَقْنَٰهُمَآ إِلَّا بِٱلْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿39﴾

४०. बेशक फ़ैसले का दिन उन सबका निश्चित (मुक़र्रर) समय है।

إِنَّ يَوْمَ ٱلْفَصْلِ مِيقَٰتُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿40﴾

४१. उस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ भी काम न आयेगा और न उनकी मदद की जायेगी।

يَوْمَ لَا يُغْنِى مَوْلًى عَن مَّوْلًى شَيْـًٔا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿41﴾

४२. लेकिन जिस पर अल्लाह की दया (रहमत) हो जाये, वह बड़ा शक्तिशाली (ग़ालिब) और दया (रहम) करने वाला है।

إِلَّا مَن رَّحِمَ ٱللَّهُ ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلرَّحِيمُ ﴿42﴾

---

[1] यानी यह मक्का के काफ़िर तुब्बअ और उन से पहले की जातियाँ आद और समूद आदि (वग़ैरह) से शक्तिशाली और अच्छे हैं। जब हम ने उनको पापों के बदले में उन से ज़्यादा शक्ति और बल रखने पर भी नाश कर दिया तो यह क्या महत्व (अहमियत) रखते हैं? तुब्बअ से मुराद सबा की जाति है, सबा में हिम्यर जाति थी, यह अपने राजा को तुब्बअ कहते थे, जैसे रूम के राजा को कैसर, ईरान के राजा को किसरा, मिश्र के राजा को फ़िरऔन और हब्शा के राजा को नजाशी कहा जाता था।

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ﴿43﴾

४३. बेशक ज़क्कूम (थूहड़) का पेड़।

طَعَامُ الْأَثِيمِ ﴿44﴾

४४. पापी का खाना है।

كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ﴿45﴾

४५. जो तलछट की तरह है और पेट में खौलता रहता है।

كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ﴿46﴾

४६. तेज गर्म पानी (के खौलने) की तरह।

خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿47﴾

४७. उसे पकड़ लो फिर घसीटते हुए नरक के बीच तक पहुँचाओ।

ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ﴿48﴾

४८. फिर उस के सिर पर बहुत गर्म पानी की यातना (अज़ाब) बहाओ।

ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ﴿49﴾

४९. (उस से कहा जायेगा) चखता जा, तू तो बड़ी इज़्ज़त और एहतेराम (सम्मान) वाला था।

إِنَّ هَٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ﴿50﴾

५०. यही वह चीज़ है जिस में तुम संदेह (शक) किया करते थे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ﴿51﴾

५१. बेशक (अल्लाह से) डरने वाले शान्ति की जगह में होंगे।

فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿52﴾

५२. बागों और जल स्रोतों (चश्मों) में।

يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿53﴾

५३. बारीक और मुलायम रेशमी कपड़े पहने हुए आमने-सामने बैठे होंगे।

كَذَٰلِكَ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ﴿54﴾

५४. यह उसी तरह है, और हम बड़ी-बड़ी आँखों वाली अप्सराओं (हूरों) से उनका विवाह कर देंगे।

يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿55﴾

५५. निश्चिन्तता (बेख़ौफ़ी) से वहाँ हर तरह के मेवों की माँगें कर रहे होंगे।

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۖ وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿56﴾

५६. वहाँ वे मौत का मज़ा चखने वाले नहीं सिवाय पहली मौत के, (जो वे मर चुके) उन्हें अल्लाह (तआला) ने नरक के अज़ाब से बचा दिया।

فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿57﴾

५७. यह केवल तेरे रब की कृपा (रहमत) है।[1] यही है बड़ी कामयाबी।

فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿58﴾

५८. हम ने इस (क़ुरआन) को तेरी भाषा में आसान कर दिया ताकि वे नसीहत हासिल करें।

فَارْتَقِبْ إِنَّهُم مُّرْتَقِبُونَ ﴿59﴾

५९. अब तू प्रतीक्षा (इंतेज़ार) कर ये भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

सूरतुल जासियः-४५

سُورَةُ الْجَاثِيَةِ

सूरः जासियः मक्के में नाज़िल हुई, इस में सैंतीस आयतें और चार रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

حم ﴿1﴾

१. हा॰मीम॰।

تَنزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿2﴾

२. यह किताब अल्लाह ज़बरदस्त हिक्मत वाले की तरफ़ से नाज़िल हुई है।

إِنَّ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿3﴾

३. आकाशों और धरती में ईमानवालों के लिए बेशक बहुत सी निशानियाँ हैं।

وَفِي خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِن دَابَّةٍ آيَاتٌ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿4﴾

४. और ख़ुद तुम्हारे जन्म में और जानवरों को फैलाने में यक़ीन रखने वाले समुदाय (क़ौम) के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं।

وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِن رِّزْقٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيفِ الرِّيَاحِ آيَاتٌ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿5﴾

५. और रात-दिन के बदलने में और जो कुछ जीविका (रिज़्क़) अल्लाह (तआला) आकाश से नाज़िल करके धरती को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा कर देता है, उस में और हवाओं के बदलने में भी उन लोगों के लिए जो अक़्ल

[1] जिस तरह हदीस में भी है। फ़रमाया : यह बात जान लो कि तुम में से किसी का अमल उसे जन्नत में नहीं ले जायेगा। सहाबा (आप के साथियों) ने सवाल किया, "अल्लाह के रसूल! आप को भी?" फ़रमाया, "हाँ मुझे भी, लेकिन यह कि अल्लाह मुझे अपनी दया (रहमत) और करूणा (शफ़क़त) में ढाँप लेगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबर्रिक़ाक़, बाबुल क़स्दे वल मुदावमते अलल अमल और मुस्लिम ऊपरी किताब)

रखते हैं, निशानियाँ हैं ।[1]

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ⑥

६. यह हैं अल्लाह (तआला) की आयतें जिन्हें हम आप को हक़ के साथ सुना रहे हैं, तो अल्लाह (तआला) और उस की आयतों के बाद ये किस बात पर ईमान लायेंगे ।

وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ⑦

७. धिक्कार (और खेद है) हर झूठे पापी पर ।[2]

يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ⑧

८. जो अल्लाह की आयतें अपने सामने पढ़ी जाती हुई सुने फिर भी गर्व करता हुआ इस प्रकार अड़ा रहे जैसेकि सुनी ही नहीं, तो ऐसे लोगों को कष्टदायी अज़ाब की ख़बर (पहुँचा) दें ।

وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْـًٔا ۨاتَّخَذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ⑨

९. और वह जब हमारी आयतों में से किसी आयत की ख़बर पा लेता है तो उसका मज़ाक उड़ाता है, यही लोग हैं जिन के लिए अपमान (ज़िल्लत) वाला अज़ाब है ।

مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ ۚ وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْـًٔا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ⑩

१०. उन के पीछे नरक है, जो कुछ उन्होंने हासिल किया था वह उन्हें कुछ भी फ़ायेदा न देगा और न वह (कुछ काम आयेंगे) जिन को उन्होंने अल्लाह के सिवाय वली (और कार्यक्षम) बना रखा था, उनके लिए तो बड़ा भारी अज़ाब है ।

هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ⑪

११. यह (सरासर) हिदायत है[3] और जिन लोगों ने अपने रब की आयतों को न माना उन के लिए बड़ा कठिन अज़ाब है ।

---

[1] कभी हवा का रूख उत्तर और दक्षिण को, कभी पूरब और पश्चिम को होता है, कभी पानी वाली हवायें, कभी थलीय हवायें, कभी रात को, कभी दिन को, कुछ वर्षा वाली, कुछ फ़ायदेमंद, कुछ हवायें आत्मा (रूह) का आहार (गिज़ा) और कुछ सब कुछ झुलसा देने वाली और केवल धूल धप्पड़ का तूफ़ान । हवा की इतनी क़िस्में भी प्रमाणित (साबित) करते हैं कि इस दुनिया का कोई चलाने वाला है जो सिर्फ़ एक है, दो या ज़्यादा नहीं । सभी इख़्तियार का मालिक वही एक है, उन में कोई उसका साझी नहीं, हर तरह का निज़ाम वही चलाता है, किसी और के पास तनिक भी हक़ नहीं । इसी मायने की आयत सूर: बक़र: की आयत नं॰ १६४ भी है ।

[2] اَفَّاك (अफ़्फ़ाक) كَذَّاب के मतलब में, اَثِيْم (महापापी) । وَيْل विनाश (हलाक) या नरक की एक वादी का नाम ।

[3] यानी क़ुरआन, क्योंकि उसके नुज़ूल का मक़सद ही यह है कि लोगों को कुफ़्र और शिर्क के अंधेरों से निकालकर ईमान की रौशनी में लाया जाये, इसलिए उस के सरासर हिदायत होने में तो कोई शक नहीं, लेकिन हिदायत मिलेगी तो उसे ही जो उस के लिए अपना सीना खोल देगा ।

اَللّٰهُ الَّذِیْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِیَ الْفُلْكُ فِیْهِ بِاَمْرِهٖ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿12﴾

१२. अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए समुद्र को तावे बना दिया ताकि उस के हुक्म से उस में नावें चलें और तुम उसका फ़ज़्ल ढूंढो, और ताकि तुम उसका शुक्रिया अदा करो।

وَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا مِّنْهُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿13﴾

१३. और आकाश और धरती की हर चीज को भी उस ने अपनी तरफ़ से तुम्हारे वश में कर दिया है,[1] जो लोग ख़्याल करें, बेशक वे इस में बहुत सी निशानियां पायेंगे।

قُلْ لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا یَغْفِرُوْا لِلَّذِیْنَ لَا یَرْجُوْنَ اَیَّامَ اللّٰهِ لِیَجْزِیَ قَوْمًۢا بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿14﴾

१४. आप ईमानवालों से कह दें कि वह उन लोगों को माफ़ कर दिया करें जो अल्लाह के दिनों की उम्मीद नहीं रखते, ताकि अल्लाह तआला एक क़ौम को उन के करतूतों का बदला दे।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ اَسَآءَ فَعَلَیْهَا ؗ ثُمَّ اِلٰی رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿15﴾

१५. जो नेकी करेगा वह अपने ख़ुद के भले के लिए और जो बुराई करेगा उसका बुरा नतीजा उसी पर है; फिर तुम सब अपने रब की तरफ़ लौटाये जाओगे।

وَ لَقَدْ اٰتَیْنَا بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ الْكِتٰبَ وَ الْحُكْمَ وَ النُّبُوَّةَ وَ رَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ وَ فَضَّلْنٰهُمْ عَلَی الْعٰلَمِیْنَ ﴿16﴾

१६. और बेशक हम ने इस्राईल की औलाद को किताब, मुल्क[2] और नबूवत दिया था, और हम ने उन्हें पाक (और अच्छी) रोजी दी थी, और उन्हें दुनिया वालों पर श्रेष्ठता (फ़ज़ीलत) दी थी।

وَ اٰتَیْنٰهُمْ بَیِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْۤا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْیًۢا بَیْنَهُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ یَقْضِیْ بَیْنَهُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ فِیْمَا كَانُوْا فِیْهِ یَخْتَلِفُوْنَ ﴿17﴾

१७. और हम ने उन्हें धर्म की खुली निशानियां (दलील) अता कीं, फिर उन्होंने अपने पास इल्म के पहुंच जाने के बाद आपस के द्वेष-विवाद (ज़िद-बहस) के सबब ही इख़्तिलाफ़ कर डाला, ये जिन-जिन बातों में इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं उन

---

[1] वश में करने से मुराद यही है कि उनको तुम्हारी सेवा के लिए नियुक्त (मुतअय्यन) कर दिया है, तुम्हारे अपने फ़ायदे तुम्हारी रोजी सब इन्हीं से संबंधित है, जैसे चांद, सूरज, जगमगाते तारे, वर्षा, बादल और हवा आदि हैं, और अपनी तरफ़ से का मतलब अपनी ख़ास रहमत और दया से।

[2] किताब से मुराद धर्मग्रंथ तौरात, حكم (हुक्म) से मुल्क और शासन या अक़्ल और फ़ैसले की वह योग्यता (क़ाबलियत) है जो झगड़ों और लोगों के बीच फैसला करने के लिए जरूरी है।

का फ़ैसला क़यामत के दिन उन के बीच तेरा रब (ख़ुद) करेगा।

ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿18﴾

१८. फिर हम ने आप को धर्म के (वाज़ेह) रास्ता पर क़ायम कर दिया,[1] तो आप उसी पर लगे रहें और नादानों की इच्छाओं का अनुगमन (पैरवी) न करें।

اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿19﴾

१९. (याद रखें) कि ये लोग कभी अल्लाह के सामने आप के कुछ काम नहीं आ सकते। (समझ लो कि) ज़ालिम लोग आपस में एक-दूसरे के साथी होते हैं और परहेज़गारों का साथी (संरक्षक) अल्लाह (महान) है।

هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿20﴾

२०. यह (क़ुरआन) लोगों के लिए सूझ की बातें और हिदायत और रहमत है, उस गिरोह के लिए जो यक़ीन रखता है।

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿21﴾

२१. क्या उन लोगों का जो बुरे काम करते हैं, यह ख़्याल है कि हम उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे जो ईमान लाये और नेकी के काम किये कि उनका मरना-जीना बराबर हो जाये, बुरा फ़ैसला है वह जो वे कर रहे हैं।

وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿22﴾

२२. और आकाशों और धरती को अल्लाह ने बहुत ही इंसाफ़ के साथ पैदा किया है और ताकि हर इंसान को उसके किये हुए काम का पूरा बदला दिया जाये और वे ज़ुल्म न किये जायेंगे।[2]

---

[1] شریعت (शरीअत) का लफ़्ज़ी मायना है रास्ता, जमाअत और रिवाज। बड़े रास्ते को भी शारेअ कहा जाता है कि वह मक़सद और लक्ष्य तक पहुँचाता है, इसलिए यहाँ शरीअत से मुराद वह धर्म (दीन) है जो अल्लाह ने अपने बंदों के लिए नियुक्त (मुक़र्रर) किया है ताकि लोग उस पर चल कर अल्लाह की मर्ज़ी का लक्ष्य हासिल कर लें। आयत का मतलब है कि हम ने आप को धर्म के एक साफ़ रास्ता और रिवाज पर क़ायम कर दिया है जो आप को सच तक पहुँचायेगा।

[2] और यही इंसाफ़ है कि क़यामत के दिन बेलाग फ़ैसला होगा और हर एक को उस के अमल के ऐतबार से अच्छा या बुरा बदला मिलेगा। यह नहीं होगा कि अच्छे बुरे दोनों के साथ बराबर सुलूक करे, जैसाकि काफ़िरों का भ्रम है, जिसका खंडन (तरदीद) पिछली कई आयतों में किया

اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَ قَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿23﴾

२३. क्या आप ने उसे भी देखा जिस ने अपनी मनोकांक्षा को अपना पूज्य (माबूद) बना रखा है, और समझ-बूझ के बावजूद भी अल्लाह ने उसे गुमराह कर दिया है, और उसके कान और दिल पर मुहर लगा दी है और उसकी आंख पर भी पर्दा डाल दिया है? अब ऐसे इंसान को अल्लाह के बाद कौन मार्गदर्शन (रहनुमाई) करा सकता है। क्या अब भी तुम नसीहत हासिल नहीं करते?

وَقَالُوْا مَا هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَآ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿24﴾

२४. और उन्होंने कहा कि हमारा जीवन केवल दुनियावी जीवन ही है; हम मरते हैं और जीते हैं और हमें केवल काल (ज़माना) ही मार डालता है। (हक़ीक़त में) उन्हें उसका कुछ ज्ञान (इल्म) ही नहीं; ये तो केवल अंदाज़ा और अटकल से ही काम ले रहे हैं।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿25﴾

२५. और जब उन के सामने हमारी वाज़ेह आयतों का पाठ (तिलावत) किया जाता है तो उन के पास इस क़ौल के सिवाय कोई दलील नही होती कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप-दादों को लाओ।

قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿26﴾

२६. (आप) कह दीजिए कि अल्लाह ही तुम्हें ज़िन्दा करता है फिर तुम्हें मार डालता है, फिर तुम्हें क़यामत के दिन जमा करेगा जिस में कोई शक नहीं, लेकिन ज़्यादातर लोग नही जानते।

وَ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ يَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿27﴾

२७. और आकाशों और धरती का मुल्क अल्लाह ही का है, और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी उस दिन असत्यवादी (बातिल परस्त) बड़े नुक़सान में पड़ेंगे।

गया है। क्योंकि दोनों को बराबरी के स्तर पर रखना नाइंसाफी है। इसलिए जिस तरह कांटा बो कर अंगूर की पैदावार हासिल नहीं की जा सकती इसी तरह बुराई करके वह मुक़ाम हासिल नहीं हो सकता जो अल्लाह ने ईमान वालों के लिए रखा है।

وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۫ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (28)

२८. और आप देखेंगे कि हर क़ौम घुटनों के बल गिरी होगी, हर गिरोह अपने कर्मपत्र (आमालनामा) की तरफ़ बुलाया जायेगा, आज तुम्हें अपने किये का बदला दिया जायेगा।

هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (29)

२९. यह है हमारी किताब जो तुम्हारे बारे में सच-सच बोल रही है, हम तुम्हारे कर्म (अमल) लिखवाते जाते थे।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِىْ رَحْمَتِهٖ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ (30)

३०. तो जो ईमान लाये और उन्होंने नेकी के काम किये[1] तो उनको उन का रब अपनी कृपा (रहमत) के साये में ले लेगा, यही स्पष्ट (वाज़ेह) कामयाबी है।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۫ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِىْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ (31)

३१. लेकिन जिन लोगों ने कुफ़्र किया तो (मैं उन से कहूँगा) कि क्या मेरी आयतें तुम्हें सुनायी नहीं जाती थीं? फिर भी तुम गर्व (फ़ख़्र) करते रहे और तुम थे ही पापी लोग।

وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِىْ مَا السَّاعَةُ ۙ اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ (32)

३२. और जब कभी कहा जाता कि अल्लाह का वादा यक़ीनी तौर से सच है और क़यामत के आने में कोई शक नहीं तो तुम जवाब देते थे कि हम नहीं जानते कि क़यामत क्या (चीज़) है? हमें कुछ यों ही सोच-विचार हो जाता है लेकिन हमें यक़ीन नहीं।

[1] यहाँ भी ईमान के साथ नेकी के काम की चर्चा करके उसकी अहमियत दिखा दिया और नेकी के अमल वह अमल हैं जो सुन्नत के मुताबिक़ किये जायें, न कि हर वह अमल जिसे इंसान अपने मन से अच्छा समझ ले और उसे बड़ी पाबन्दी और रूचि से करे, जैसे बहुत सी बिदआत (नई बातें) धार्मिक गिरोहों में प्रचलित (राईज) हैं और जो उनके क़रीब फ़र्ज़ और ज़रूरी धार्मिक कर्मों से भी ज़्यादा महत्व रखती हैं, इसलिए वाजिबात और सुन्नत का छोड़ना तो उन के यहाँ आम है, लेकिन बिदअत ऐसी ज़रूरत है कि उन में किसी तरह की सुस्ती की सोच ही नहीं है, जब कि नबी ﷺ ने उसे सब से ज़्यादा बुरा काम बताया है।

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿33﴾

३३. और उन पर अपने कर्मों (अमल) की बुराईयाँ खुल गयीं और जिसे वे मजाक में उड़ा रहे थे, उस ने उन्हें घेर लिया।

وَقِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿34﴾

३४. और कह दिया गया कि आज हम तुम्हें भुला देंगे जैसाकि तुम ने अपने इस दिन के मिलने को भुला दिया था,[1] तुम्हारा ठिकाना नरक है और तुम्हारी मदद करने वाला कोई नहीं।

ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿35﴾

३५. यह इसलिए है कि तुमने अल्लाह (तआला) की आयतों का मजाक उड़ाया था और दुनिया के जीवन ने तुम्हें धोखे में डाल रखा था, तो आज के दिन न तो ये (नरक) से निकाले जायेंगे और न उनसे मजबूरी और बहाना क़ुबूल किया जायेगा।[2]

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿36﴾

३६. तो अल्लाह के लिए सब तारीफ़ है, जो आकाशों और धरती और सारी दुनिया का रब है।

وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۪ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿37﴾

३७. और सारी (तारीफ़ और) बड़ाई आकाशों और धरती में उसी की है, और वही प्रभावशाली (गालिब) और हिक्मत वाला है।

---

[1] जैसे हदीस में आता है कि अल्लाह अपने कुछ बंदों से कहेगा : "क्या मैंने तुझे पत्नी नहीं दी थी, क्या मैंने तुझे इज़्ज़त नहीं दी थी, क्या मैंने घोड़े और बैल इत्यादि (वगैरह) तेरे अधीन (मातहत) में नहीं किये थे ? तू सरदारी भी करता और चुंगी भी लेता रहा।" वह कहेगा "हाँ यह ठीक है मेरे रब !" अल्लाह तआला उस से सवाल करेगा, "क्या तुझे मुझ से मिलने का यकीन था?" वह कहेगा, "नहीं।" अल्लाह फ़रमायेगा «فَالْيَوْمَ أَنْسَاكَ كَمَا نَسِيتَنِي» (तो आज मैं तुझे नरक में डालकर भूल जाऊँगा जैसे तू मुझे भूला रहा।) (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद)

[2] यानी अल्लाह तआला की निशानियों और हुक्म का मज़ाक और दुनिया के धोखे में लिप्त (मशगूल) रहना, यह दो गुनाह ऐसे हैं जिन्होंने तुम्हें नरक के अज़ाब का पात्र (मुस्तहिक़) बना दिया। अब उस से निकलने की उम्मीद नहीं और न इस बात की उम्मीद कि किसी मौक़ा पर तुम्हें तौबा और क्षमा-याचना का मौक़ा दे दिया जाये और तुम माफ़ी (क्षमा) मांगकर अल्लाह को मना लो।

سُورَةُ الأَحْقَافِ

सूरतुल अहक़ाफ़-४६

सूर: अहकाफ़ मक्का में नाज़िल हुई और इस में पैंतीस आयतें और चार रुकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

حٰمٓ ﴿١﴾

१. हा॰मीम॰ ।[1]

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾

२. इस किताब का नाज़िल करना अल्लाह ज़बरदस्त हिक्मत वाले की तरफ़ से है।

مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ﴿٣﴾

३. हम ने आकाशों और धरती और उन दोनों के बीच की सारी चीज़ों को बेहतरीन तदबीर के साथ ही एक निर्धारित (मुक़र्रर) समय के लिए बनाया है, और काफ़िर लोग जिस चीज़ से डराये जाते हैं मुंह मोड़ लेते हैं।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۭ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤﴾

४. (आप) कह दीजिए कि भला देखो तो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवाय पुकारते हो, मुझे भी तो दिखाओ कि उन्होंने धरती का कौन-सा हिस्सा बनाया है या आकाशों में कौन-सा उनका हिस्सा है? अगर तुम सच्चे हो तो इस से पहले ही की कोई किताब या कोई ज्ञान (इल्म) ही जो उद्धृत (नक़ल) किया जाता हो, मेरे पास लाओ।

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَاۗىِٕهِمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٥﴾

५. और उस से बढ़कर ज़्यादा गुमराह दूसरा कौन होगा जो अल्लाह के सिवा ऐसों को पुकारता है, जो क़यामत तक उसकी दुआ न क़ुबूल कर सकें बल्कि उन के पुकारने से केवल ग़ाफ़िल हों।[2]

---

[1] यह सूरह के शुरूआती अक्षर (हुरूफ़) उन मुतशाबिहात (अनुरूपों) में से हैं जिनका ज्ञान (इल्म) सिर्फ़ अल्लाह को है इसलिए उन के मायने और मतलब में पड़ने की ज़रूरत नहीं।

[2] यानी यही सब से बड़े गुमराह हैं जो पत्थर की मूर्तियों या मुर्दा इंसानों को मदद के लिए पुकारते हैं, जो क़यामत तक जवाब देने में मजबूर हैं और मजबूर ही नहीं बल्कि पूरी तरह से बेख़बर हैं।

وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كَافِرِينَ ⑥

६. और जब लोगों को जमा किया जायेगा तो ये उनके दुश्मन हो जायेंगे और उनकी इबादत से साफ इंकार कर देंगे ।[1]

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ هَٰذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ⑦

७. और उन्हें जब हमारी स्पष्ट (वाज़ेह) आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो काफ़िर लोग सच्च बात[2] को जब कि उन के पास आ चुकी, कह देते हैं कि यह तो खुला जादू है ।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ ۖ كَفَىٰ بِهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۖ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ⑧

८. क्या वे कहते हैं कि उसे तो उस ने ख़ुद बना लिया है । (आप) कह दीजिए कि अगर मैं ही उसे बना लाया हूं तो तुम मेरे लिए अल्लाह की तरफ़ से किसी चीज का हक़ नहीं रखते । तुम इस क़ुरआन के बारे में जो कुछ कह सुन रहे हो, उसे अल्लाह अच्छी तरह जानता है । मेरे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए वही काफ़ी है और वह माफ़ करने वाला बड़ा रहीम है ।

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ⑨

९. (आप) कह दीजिए कि मैं कोई बिल्कुल नया पैग़म्बर तो नहीं[3] और न मुझे यह मालूम है कि मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या किया जायेगा । मैं तो सिर्फ़ उसी की पैरवी करता हूं जो मेरी

[1] यह विषय पाक क़ुरआन में कई जगहों पर बयान है, दुनिया में इन उपास्यों (माबूदों) की दो क़िस्में हैं, एक तो बेजान पत्थर, पेड़-पौधे और सूरज, चांद वग़ैरह हैं । अल्लाह उन को जीवन और बोलने की ताक़त अता करेगा और हमें यह वस्तुयें (चीजें) बोल कर बतलायेंगी कि हमें कभी भी इस का ज्ञान (इल्म) नहीं कि यह हमारी इबादत करते और तेरी इबादत में साझी बनाते थे । कुछ कहते हैं कि बोल कर नही उनकी हालत अपनी भावना (एहसास) ज़ाहिर करेगी والله أعلم । माबूदों की दूसरी क़िस्म वह है, जिस में अम्बिया, फ़रिश्ते और धर्मात्मा हैं, जैसे हज़रत ईसा और उज़ैर और अल्लाह के दूसरे नेक बंदे । यह अल्लाह के दरबार में उसी तरह जवाब देंगे जैसे ईसा (ﷺ) का जवाब क़ुरआन में लिखा है ।

[2] इस सच से मुराद जो उन के पास आया, पाक क़ुरआन है । इस के मोजिज़े और प्रभावशक्ति (तासीर की ताक़त) को देखकर वह इसे जादू कहते, फिर उस से भी हट कर या उस से भी बात न बनती तो कहते कि यह तो मोहम्मद (ﷺ) का अपना गढ़ा हुआ कथन (क़ौल) है ।

[3] यानी पहला और अनोखा रसूल तो नहीं हूं बल्कि मुझ से पहले भी कई रसूल आ चुके हैं ।

तरफ़ की जाती है और मैं तो केवल वाज़ेह तौर से सावधान (बाख़बर) कर देने वाला हूँ।

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَكَفَرْتُمْ
بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ بَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ عَلٰى
مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ۭ إِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى
الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿10﴾

१०. (आप) कह दीजिए कि अगर यह (क़ुरआन) अल्लाह ही की तरफ़ से हो और तुम ने उसे न माना हो और इस्राईल की औलाद का एक गवाह उस जैसी की गवाही भी दे चुका हो और वह ईमान भी ला चुका हो और तुम ने सरकशी की हो,[1] तो बेशक अल्लाह (तआला) ज़ालिम गुट को राह नहीं दिखाता।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ
خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَآ إِلَيْهِ ۭ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ
فَسَيَقُوْلُوْنَ هٰذَآ إِفْكٌ قَدِيْمٌ ﴿11﴾

११. और काफ़िरों ने ईमानवालों के बारे में कहा कि अगर यह (धर्म) अच्छा होता तो यह लोग उसकी तरफ़ हम से पहल न कर पाते और चूँकि उन्होंने क़ुरआन से हिदायत नहीं पाया तो यह कह देंगे कि यह पुराना झूठ है।

وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى إِمَامًا وَّرَحْمَةً ۭ وَهٰذَا
كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا ۖ وَبُشْرٰى لِلْمُحْسِنِيْنَ ﴿12﴾

१२. और इस से पहले मूसा की किताब रहनमा और रहमत थी, और यह किताब है तसदीक़ करने वाली अरबी भाषा (ज़ुबान) में ताकि ज़ालिमों को डराये और परहेज़गारों के लिए ख़ुशख़बरी हो।

إِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا
فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿13﴾

१३. बेशक जिन लोगो ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है फिर उस पर मज़बूत रहे तो उन पर न तो कोई डर होगा और न वे शोकग्रस्त (ग़मगीन) होंगे।

أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ
جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿14﴾

१४. यह तो जन्नत में जाने वाले लोग हैं जो हमेशा उसी में रहेंगे उन अमलों के बदले जो वे किया करते थे।

[1] इस इस्राईली संतान (औलाद) के गवाह से कौन मुराद है? कुछ कहते हैं कि यह सामान्य (आम) है, इस्राईल की औलाद में से जो भी ईमान लाये वह मुराद है, कुछ कहते हैं कि मक्का का कोई इस्राईली निवासी मुराद है, क्योंकि यह सूर: मक्का में नाज़िल हुई।

وَوَصَّيْنَا الْإِنسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۖ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۖ إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿15﴾

१५. और हम ने इंसान को अपने माता-पिता के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म दिया है, उसकी माता ने उसे दुख झेलकर पेट में रखा और दुख सहन करके उसे जन्म दिया।[1] उस के गर्भ धारण (हमल) और उस के दूध छुड़ाने की मुद्दत तीस महीने की है[2] यहां तक कि जब वह अपनी पूरी व्यस्कता (रुश्द) को और चालीस साल की उम्र को पहुँचा तो कहने लगा हे मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरे उस उपकार (नेमत) का शुक्रिया अदा कर सकूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माता-पिता पर उपकार किया है, और यह कि मैं ऐसे नेकी के काम करूँ जिन से तू ख़ुश हो जाये और तू मेरी औलाद भी नेक बना, मैं तेरी तरफ़ ध्यान करता हूँ और मैं मुसलमानों में से हूँ।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ عَن سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿16﴾

१६. यही वे लोग हैं जिन के नेकी के काम हम क़ुबूल कर लेते हैं और जिन के बुरे कामों को माफ़ कर देते हैं, (ये) स्वर्ग में जाने वाले लोगों में हैं, उस सच्चे वादे के अनुसार जो उन से किया जाता था।

---

[1] इस दुख और तकलीफ़ की चर्चा करके माता-पिता के साथ अच्छा सुलूक करने पर ख़ास ज़ोर दिया है, जिस से यह भी मालूम होता है कि माता इस अच्छे सुलूक के हुक्म में पिता से पहले है, क्योंकि नौ महीने तक लगातार गर्भ की तकलीफ़ और फिर पैदाईश का दुख सिर्फ़ माँ ही झेलती है, ऐसे ही दूध पिलाने की पीड़ा भी अकेले माँ ही सहन करती है, बाप इस में हिस्सा नहीं लेता। इसीलिए हदीस में भी माँ के साथ अच्छे सुलूक को फ़ज़ीलत दी गई है और बाप का पद (मुक़ाम) उसके बाद बताया गया है। एक सहाबी ने नबी ﷺ से पूछा, 'मेरे अच्छे सुलूक का सब से ज़्यादा हक़्दार कौन है?' आप ﷺ ने फ़रमाया : 'तुम्हारी माँ।' उस ने फिर यही पूछा, 'आप ने यही जवाब दिया।' तीसरी बार भी यही जवाब दिया। चौथी बार सवाल करने पर आप ने फ़रमाया: 'तुम्हारा बाप।' (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्रे व स्सिला पहला अध्याय)

[2] فِصَال (फ़िसाल) का मतलब दूध छुड़ाना है। इस से कुछ सहाबा ने यह साबित किया है कि कम से कम गर्भ की मुद्दत छः महीने है, यानी अगर छः महीने के बाद किसी औरत को बच्चा पैदा हो जाये तो वह बच्चा सही है नाजायज़ नहीं, इसलिए कि क़ुरआन ने दूध पिलाने की अवधि (मुद्दत) दो साल (चौबीस महीने) बताई है (सूर: लुक़मान-१४, सूर: बक़र: २३३) इस हिसाब से गर्भ की मुद्दत सिर्फ़ छः महीने ही बाक़ी रह जाती है।

१७. और जिस ने अपने माता-पिता से कहा कि उफ़ है तुम दोनों पर (तुम से मैं तंग हो गया) तुम मुझ से यही कहते रहोगे कि (मैं मरने के बाद दोबारा) जिन्दा किया जाऊंगा, मुझ से पहले भी समुदाय गुज़र चुके हैं, वह दोनों अल्लाह के दरबार में विनती (फ़रियाद) करते हैं (और कहते हैं) कि तुझे ख़राबी हो, तू ईमानदार बन जा, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, वह जवाब देता है कि ये तो केवल पहले के लोगों के क़िस्से हैं।[1]

وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَّكُمَا أَتَعِدَانِنِي أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِن قَبْلِي وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ آمِنْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَيَقُولُ مَا هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿17﴾

१८. (यही) वह लोग हैं जिन पर अल्लाह (के अज़ाब) का वादा सच हो गया, उन जिन्नों और इंसानों के गिरोहों के साथ जो उन से पहले गुज़र चुके हैं, यह निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से घाटे में थे।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿18﴾

१९. और हर एक को अपने-अपने अमलों के ऐतबार से मुक़ाम मिलेंगे ताकि उन्हें उन के अमलों के पूरे बदले दे और वे ज़ुल्म न किये जायेंगे।

وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِّمَّا عَمِلُوا وَلِيُوَفِّيَهُمْ أَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿19﴾

२०. और जिस दिन काफ़िर नरक के किनारे लाये जायेंगे (कहा जायेगा) कि तुम ने अपनी नेकी दुनिया के जीवन में ही नष्ट कर दिये और उन से फ़ायेदा उठा चुके तो आज तुम्हें अपमान के अज़ाब का दण्ड दिया जायेगा, इस वजह से कि तुम धरती पर अहंकार (तकब्बुर) करते थे और इस वजह से भी कि तुम हुक्म की पैरवी (पालन) नहीं करते थे।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُم بِهَا فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ تَفْسُقُونَ ﴿20﴾

---

[1] माँ-बाप मुसलमान हों और औलाद काफ़िर तो वहाँ औलाद और माँ-बाप के बीच इसी तरह इख़्तिलाफ़ होता है, जिसकी एक मिसाल आयत में दी गई है।

وَاذْكُرْ اَخَا عَادٍ ۭ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖٓ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ (21)

२१. और आद के भाई को याद करो जबकि उस ने अपनी क़ौम वालों को अहक़ाफ़ में (रेत के टीले पर) डराया[1] और बेशक उस से पहले भी डराने वाले गुज़र चुके हैं और उस के बाद भी कि तुम अल्लाह (तआला) के सिवाय दूसरों की इबादत न करो। बेशक मैं तुम पर बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ।[2]

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ (22)

२२. समुदाय (क़ौम) ने जवाब दिया कि क्या आप हमारे पास इसलिए आये हैं कि हमें अपने देवताओं (की पूजा) से रोक दें, तो अगर आप सच्चे हैं तो जिन अज़ाबों का आप वादा करते हैं उन्हें हम पर ला डालें।

قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ڮ وَاُبَلِّغُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ (23)

२३. (हज़रत हूद ने) कहा कि (इसका) इल्म तो अल्लाह ही के पास है, मैं तो जो संदेश देकर भेजा गया था वह तुम्हें पहुँचा रहा हूँ, लेकिन मैं देख रहा हूँ कि तुम लोग मूर्खता (बेवक़ूफ़ी) कर रहे हो।

فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ ۙ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ۭ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ۭ رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ (24)

२४. फिर जब उन्होंने अज़ाब को बादल के रूप में देखा अपने मैदानों की तरफ़ आते हुए तो कहने लगे कि यह बादल हम पर बरसने वाला है, (नहीं) बल्कि हक़ीक़त (वास्तव) में यह बादल वह (प्रकोप) है जिसकी तुम जल्दी मचा रहे थे, हवा है जिस में कष्टदायी यातनायें (अज़ाब) हैं।

---

[1] أحقاف (अहक़ाफ़) حِقف (हिक़फ़) का बहुवचन (जमा) है यानी रेत का ऊँचा लम्बा टीला, कुछ ने इसका मायने पहाड़ और गुफ़ा किया है। यह ईश्दूत हूद (عليه السلام) कि जाति, पहले आद के इलाके का नाम है जो हज़्रमूत (यमन) के क़रीब था। मक्का के काफ़िरों के झुठलाने की वजह से नबी ﷺ की तसल्ली के लिए पिछले अम्बिया की घटनाओं की चर्चा की जा रही है।

[2] يوم عظيم (बड़े दिन) से मुराद क़यामत का दिन है, जिसे उसकी भयानकता की वजह से उचित (मुनासिब) रूप से बड़ा दिन कहा गया है।

تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍۭ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا لَا يُرَىٰٓ إِلَّا مَسَٰكِنُهُمْ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي ٱلْقَوْمَ ٱلْمُجْرِمِينَ (25)

२५. जो अपने रब के हुक्म से हर चीज को ध्वस्त (हलाक) कर देगी, तो वे ऐसे हो गये कि उन के घरों के सिवाय कुछ दिखाई न देता था, पापियों के गिरोह को हम इसी तरह सजा देते हैं।

وَلَقَدْ مَكَّنَّٰهُمْ فِيمَآ إِن مَّكَّنَّٰكُمْ فِيهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَأَبْصَٰرًا وَأَفْـِٔدَةً فَمَآ أَغْنَىٰ عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَآ أَبْصَٰرُهُمْ وَلَآ أَفْـِٔدَتُهُم مِّن شَيْءٍ إِذْ كَانُوا يَجْحَدُونَ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ (26)

२६. और निश्चित (यक़ीनी) रूप से हम ने (आद के समुदाय) को वह ताक़त दी थी जो तुम्हें दिया ही नहीं, और हम ने उन्हें कान, आँखें और दिल भी दे रखे थे, लेकिन उन के कानों, आँखों और दिलों ने उन्हें कुछ भी फ़ायेदा नहीं पहुँचाया[1] जबकि वह अल्लाह (तआला) की आयतों का इंकार करने लगे और जिस बात का वे मज़ाक (उपहास) उड़ाया करते थे, वही उन पर उलट पड़ी।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُم مِّنَ ٱلْقُرَىٰ وَصَرَّفْنَا ٱلْءَايَٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ (27)

२७. और बेशक हम ने तुम्हारे क़रीबी (इलाके की) बस्तियाँ ध्वस्त (हलाक) कर दीं[2] और (कई तरह की) हम ने निशानियाँ बयान कर दी ताकि वे वापस आ जायें।

فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ ٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُوا مِن دُونِ ٱللَّهِ قُرْبَانًا ءَالِهَةًۢ ۖ بَلْ ضَلُّوا عَنْهُمْ ۚ وَذَٰلِكَ إِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ (28)

२८. तो अल्लाह की निकटता (क़ुरबत) हासिल करने के लिए उन्होंने जिन-जिन को देवता बना रखा था उन्होंने उनकी मदद क्यों न की, बल्कि वह तो उन से खोये गये, (बल्कि हक़ीक़त में) यह उन का सिर्फ़ झूठ और (पूरी तरह) इल्ज़ाम था।

---

[1] यह मक्कावासियों को संबोधित (मुख़ातिब) करके कहा जा रहा है कि तुम क्या हो? तुम से पहली जातियाँ जिन्हें हम ने ध्वस्त (हलाक) किया, शक्ति, बल और मान-मर्यादा में तुम से कहीं ज़्यादा थीं, लेकिन जब उन्होंने अल्लाह की दी हुई चीज़ों (कान, आँख और दिल) को सच सुनने, देखने और समझने के लिए प्रयोग (इस्तेमाल) नहीं किया तो आख़िर हम ने उन्हें बरबाद कर दिया और यह चीज़ें उन के कुछ काम न आ सकीं।

[2] समीपवर्ती (क़रीब) से आद, समूद और लूत की वह बस्तियाँ मुराद हैं जो हिजाज़ के क़रीब ही थीं और यमन, शाम और फ़िलिस्तीन की तरफ़ आते जाते उन से उनका गुज़र होता था।

وَإِذْ صَرَفْنَآ إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ ۖ فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوٓا أَنصِتُوا ۖ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا إِلَىٰ قَوْمِهِم مُّنذِرِينَ ﴿29﴾

२९. और याद करो, जबकि हम ने जिनों के एक गिरोह को तुम्हारी तरफ़ फेर दिया कि वे क़ुरआन सुनें, तो जब वे नबी के पास पहुँच गये तो (एक-दूसरे) से कहने लगे कि चुप हो जाओ,[1] फिर जब पाठ पूरा हो गया तो अपने समुदाय (क़ौम) को सावधान (आगाह) करने के लिए वापस लौट गये।

قَالُوا يَٰقَوْمَنَآ إِنَّا سَمِعْنَا كِتَٰبًا أُنزِلَ مِنۢ بَعْدِ مُوسَىٰ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيٓ إِلَى الْحَقِّ وَإِلَىٰ طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿30﴾

३०. कहने लगे, हे हमारे समुदाय (क़ौम) के लोगो! हम ने निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से वह किताब सुनी है, जो मूसा (ﷺ) के बाद नाज़िल की गयी है, जो अपने से पहले की किताबों की पुष्टि (तसदीक़) करने वाली है, जो सच्चे दीन और सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत करती है।

يَٰقَوْمَنَآ أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِۦ يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُجِرْكُم مِّنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿31﴾

३१. हे हमारी क़ौम के लोगो! अल्लाह की तरफ़ दावत देने वाले का कहा मानो, उस पर ईमान लाओ,[2] तो (अल्लाह) तुम्हारे कुछ पाप माफ़ कर देगा और तुम्हें दुखद अज़ाब से पनाह देगा।[3]

---

[1] सहीह मुस्लिम की हदीस से मालूम होता है कि यह घटना (वाक़ेआ) मक्का के क़रीब वादिये नख़ला में घटी, जहाँ आप ﷺ अपने साथियों को फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे। जिन्नों को यह खोज थी कि आकाश पर हम पर बहुत कड़ाई कर दी गई है और अब वहाँ जाना लगभग नामुमकिन हो गया है, कोई ख़ास घटना ज़रूर हुई है जिस की वजह से ऐसा हुआ है। इसलिए पूरब और पश्चिम की कई दिशाओं में जिन्नों की टोलियाँ कारण (वजह) की खोज में फैल गईं, उन में से एक गिरोह ने यह क़ुरआन सुना और समझ लिया कि नबी ﷺ के भेजे जाने की घटना ही हम पर आकाश में रोक की वजह है और जिन्नों का यह गिरोह आप पर ईमान लाया और जाकर अपनी क़ौम को भी ख़बर किया।

[2] यह जिन्नों ने अपनी जाति को नबी ﷺ की रिसालत (दूतत्व) पर ईमान लाने की दावत दी, इस से पहले पाक क़ुरआन के बारे में बतलाया कि यह तौरात के बाद एक और आसमानी किताब है जो सच्चे दीन और हिदायत की तरफ़ मार्गदर्शन (हिदायत) कराता है।

[3] इस विषय में विद्वानों (आलिमों) के बीच इख़्तिलाफ़ है कि अल्लाह तआला ने जिन्नात में जिन्नों में से रसूल (संदेष्टा) भेजे या नहीं। प्रत्यक्ष (वाज़ेह) क़ुरआनी आयतों से यही मालूम होता है कि जिन्नात में कोई रसूल (ईशदूत) नहीं हुआ, सभी अम्बिया और रसूल इंसानों ही में हुए हैं।

३२. और जो इंसान अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले का कहा न मानेगा तो वह धरती पर कहीं (भागकर अल्लाह को) विवश (मजबूर) नहीं कर सकता, और न अल्लाह के सिवाय उसकी कोई मदद करने वाला होगा, यह लोग खुली गुमराही में हैं।

وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ
فِي الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ۭ
اُولٰۗىِٕكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿32﴾

३३. क्या वह नहीं देखते कि जिस अल्लाह ने आकाशों और धरती को पैदा किया और उन के पैदा करने से वह न थका, वह बेशक मुर्दों को जिन्दा करने की क़ुदरत रखता है, क्यों न हो? वह बेशक हर चीज पर क़ुदरत रखता है।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓي اَنْ يُّحْيِۦَ
الْمَوْتٰى ۭ بَلٰٓي اِنَّهٗ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿33﴾

३४. और वे लोग जिन्होंने कुफ़्र किया, जिस दिन नरक के सामने लाये जायेंगे (और उन से कहा जायेगा) कि यह सच नहीं है? तो जवाब देंगे कि हाँ, क्यों नहीं। क़सम है हमारे रब की! (सच है)। (अल्लाह तआला) कहेगा कि अब अपने कुफ़्र के बदले अज़ाब का मज़ा (स्वाद) चखो।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَي النَّارِ ۭ اَلَيْسَ
هٰذَا بِالْحَقِّ ۭ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۭ قَالَ فَذُوْقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿34﴾

३५. तो (हे पैग़म्बर) तुम ऐसा सब्र (धैर्य) करो जैसा सब्र साहसी (बुलन्द हिम्मत) रसूलों ने किया, और उन के लिए (अज़ाब माँगने में) जल्दी न करो,[1] यह जिस रोज़ उस अज़ाब को देख लेंगे जिसका वादा दिये जाते हैं तो (यह महसूस होने लगेगा कि) दिन की एक घड़ी ही (दुनिया में) ठहरे थे,[2] यह है संदेश (पैग़ाम) पहुँचा देना, कुकर्मियों (बदकारों) के सिवाय कोई नष्ट (हलाक) न किया जायेगा।

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا
تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ۭ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ
لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ۭ بَلٰغٌ ۚ
فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿35﴾

---

[1] यह मक्का के काफ़िरों के बुरे काम के मुक़ाबले में नबी ﷺ को तसल्ली दी जा रही है और सब्र करने का उपदेश दिया जा रहा है।

[2] क़यामत का भयानक दृश्य (मंज़र) देखने के बाद उन्हें दुनिया का जीवन ऐसे ही लगेगा जैसे दिन की सिर्फ़ एक घड़ी यहाँ गुज़ारकर गये हैं।

सूरतु मुहम्मद-४७

سُوۡرَةُ مُحَمَّدٍ

सूर: मुहम्मद* (ﷺ) मदीने में नाज़िल हुई इस में अड़तालीस आयतें और चार रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

१. जिन लोगों ने कुफ्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका[1] अल्लाह ने उन के अमल बेकार कर दिये।

اَلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَصَدُّوۡا عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعۡمَالَهُمۡ ﴿1﴾

२. और जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये और उस पर भी यक़ीन किया जो मुहम्मद (ﷺ) पर नाज़िल की गयी है और हक़ीक़त में उन के रब की तरफ़ से सच (धर्म) भी वही है, अल्लाह ने उनके गुनाह मिटा दिये[2] और उनकी हालत का सुधार कर दिया।

وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوۡا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الۡحَقُّ مِنۡ رَّبِّهِمۡ‌ۙ كَفَّرَ عَنۡهُمۡ سَيِّاٰتِهِمۡ وَاَصۡلَحَ بَالَهُمۡ ﴿2﴾

३. यह इसलिए कि काफ़िरों ने असत्य (बातिल) का अनुकरण (इत्तेबा) किया और ईमानवालों ने उस सच (धर्म) की इत्तेबा की, जो उन के रब की तरफ़ से है। अल्लाह (तआला) लोगों को उन के हाल इसी तरह बताता है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الۡبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الۡحَقَّ مِنۡ رَّبِّهِمۡ‌ؕ كَذٰلِكَ يَضۡرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمۡثَالَهُمۡ ﴿3﴾

४. तो जब काफ़िरों से तुम्हारी मुठभेड़ हो तो गर्दनों पर वार करो। यहां तक कि जब उन को अच्छी तरह कुचल डालो तो अब ख़ूब मज़बूत बन्दीगृह (जेल) में क़ैद करो। फिर (इख़्तियार है

فَاِذَا لَقِيۡتُمُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا فَضَرۡبَ الرِّقَابِؕ حَتّٰٓى اِذَاۤ اَثۡخَنۡتُمُوۡهُمۡ فَشُدُّوا الۡوَثَاقَ ۙ فَاِمَّا مَنًّۢا بَعۡدُ وَاِمَّا فِدَآءً حَتّٰى تَضَعَ الۡحَرۡبُ اَوۡزَارَهَا ۛۚ ذٰلِكَ ۛؕ

---

* इसका दूसरा नाम 'अलकिताल' (जंग करना) भी है।

[1] कुछ ने इस से मुराद कुरैश के काफ़िर लिये हैं और कुछ ने अहले किताब (यहूदियों और इसाईयों) को लिया है, लेकिन यह आम है, इन के साथ सभी काफ़िर इस में शामिल हैं।

[2] यानी ईमान लाने के पहले की ग़ल्तियों और सुस्ती को माफ़ कर दिया, जैसाकि नबी ﷺ का भी क़ौल है कि इस्लाम पहले के सभी पापों को मिटा देता है। (सहीह जामे सग़ीर, अलबानी)

وَلَوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ ۚ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا۟ بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿4﴾

कि) उपकार कर के आज़ाद कर दो,[1] या कुछ अर्थदण्ड (फ़िदिया) लेकर जब तक कि जंग (करने वाले) अपने हथियार रख दे, यही हुक्म है और अगर अल्लाह चाहता तो ख़ुद ही उन से बदला ले लेता, लेकिन (उसकी इच्छा यह है) कि तुम में से एक की परीक्षा (इम्तेहान) दूसरे से ले ले और जो लोग अल्लाह की राह में शहीद कर दिये जाते हैं अल्लाह उन के अमल कभी बरबाद नहीं करेगा।

سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ﴿5﴾

५. उनकी हिदायत करेगा और उनकी हालत का सुधार कर देगा।

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ﴿6﴾

६. और उन्हें उस जन्नत में ले जायेगा जिस से उन्हें परिचित (पहचान) कर दिया गया है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ﴿7﴾

७. हे ईमानवालो! अगर तुम अल्लाह (के धर्म) की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा[2] और तुम्हारे क़दम मज़बूत रखेगा।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿8﴾

८. और जो लोग काफ़िर हो गये उनका विनाश (तबाही) हो, अल्लाह ने उन के अमल को बरबाद कर दिया।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿9﴾

९. यह इसलिए कि वह अल्लाह की नाज़िल की हुई चीज़ से नाराज़ हुए, तो अल्लाह (तआला) ने भी उन के अमल बरबाद कर दिये।

---

[1] مَنّ (मन्न) का मतलब है बिना अर्थदण्ड (फ़िदिया) लिए एहसान करके आज़ाद कर देना और فداء (फ़िदाअ) का मतलब है कुछ बदला लेकर आज़ाद करना। क़ैदियों के बारे में हक़ दिया गया कि हालात को देखते हुए जो बात इस्लाम और मुसलमानों के लिए ज़्यादा बेहतर हो वह अपनाई जाये।

[2] अल्लाह की मदद करने का मतलब अल्लाह के दीन की मदद है, क्योंकि वह साधनों (ज़रियों) के ख़िलाफ़ अपने धर्म की मदद मोमिन बंदों के द्वारा ही करता है। यह मोमिन बंदे अल्लाह के धर्म की रक्षा और उसका प्रचार-प्रसार (दावत-तबलीग़) करते हैं तो अल्लाह उनकी मदद करता है यानी उन्हें काफ़िरों पर विजय (फ़तह) और प्रभुत्व (ग़लबा) देता है।

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ دَمَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۖ وَلِلْكَافِرِينَ أَمْثَالُهَا ﴿10﴾

१०. क्या उन लोगों ने धरती में चल-फिर कर इसका निरीक्षण (मुआईना) नहीं किया कि उन से पहले के लोगों का क्या नतीजा हुआ? अल्लाह ने उन्हें बरबाद कर दिया और काफ़िरों के लिए इसी तरह की सजा हैं।[1]

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَأَنَّ الْكَافِرِينَ لَا مَوْلَىٰ لَهُمْ ﴿11﴾

११. वह इसलिए कि ईमानवालों का संरक्षक (मुहाफ़िज़) ख़ुद अल्लाह (तआला) है और इसलिए कि काफ़िरों का कोई संरक्षक नहीं।

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ﴿12﴾

१२. जो लोग ईमान लाये और नेकी के काम किये, उन्हें अल्लाह (तआला) यक़ीनी तौर से ऐसे बाग़ों में प्रवेश (दाख़िल) देगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं और जो लोग काफ़िर हुए वह (सांसारिक ही) फ़ायेदा उठा रहे हैं और जानवर की तरह खा रहे हैं, उनका (मूल) ठिकाना नरक है।

وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً مِّن قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجَتْكَ أَهْلَكْنَاهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿13﴾

१३. और हम ने कितनी बस्तियों को जो ताक़त में तेरी इस बस्ती से ज़्यादा थीं, जिस से तुझे निकाला। हम ने उन्हें नष्ट (हलाक) कर दिया है, जिनकी मदद करने वाला कोई न उठा।

أَفَمَن كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ كَمَن زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُم ﴿14﴾

१४. क्या तो वह इंसान जो अपने रब की ओर से दलील पर हो उस इंसान के बराबर हो सकता है, जिस के लिए उस के बुरे काम अच्छे बना दिये गये हों और वह अपनी इच्छाओं का अनुसरण (पैरवी) करता हो?[2]

---

[1] यह मक्कावासियों को डराया जा रहा है कि तुम कुफ़्र से न रूके तो तुम्हें भी ऐसी ही यातना (अज़ाब) हो सकती है और पिछले काफ़िर समुदायों (क़ौमों) की तरह तुम्हें भी तबाह किया जा सकता है।

[2] बुरे अमल से मुराद शिर्क और पाप है। मुराद वही है जो पहले कई जगहों पर गुज़र चुका है कि मोमिन, काफ़िर, मुश्रिक, एकेश्वरवादी, नेक लोग और बुरे लोग बराबर नहीं हो सकते, एक के लिये अल्लाह के दरबार में अच्छा बदला और जन्नत के सुख हैं, जबकि दूसरे के लिए नरक की भयानक सज़ा है। आगामी आयत में दोनों का नतीजा बताया जा रहा है, पहले उस जन्नत की अच्छाईयाँ और फ़ज़ीलतें हैं जिनका वादा सदाचारियों (परहेज़गारों) से है।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِىْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ فِيْهَاۤ اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ؕ وَلَهُمْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِى النَّارِ وَسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ﴿15﴾

१५. उस जन्नत की विशेषता (फ़ज़ीलत) जिस का वादा परहेज़गारों से किया गया है, यह है कि उस में (शीतल) जल की नहरें बह रही हैं जो बदबूदार नहीं और दूध की नदियाँ हैं जिनका मज़ा नहीं बदला[1] और मदिरा की नहरें हैं, जिन में पीने वालों के लिए बहुत मज़ा है और बहुत साफ़ शहद की नहरें हैं [2] और उनके लिए वहाँ पर हर तरह के मेवे (फल) हैं और उन के रब की तरफ़ से माफ़ी है, क्या ये उस के बराबर हैं जो हमेशा आग में रहने वाले हैं और जिन्हें गर्म उबलता हुआ पानी पिलाया जायेगा, जो उनकी आँतों को टुकड़े-टुकड़े कर देगा।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ حَتّٰۤى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۟ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْۤا اَهْوَآءَهُمْ ﴿16﴾

१६. और उन में कुछ (ऐसे भी हैं कि) तेरी ओर कान लगाते हैं, यहाँ तक कि जब तेरे पास से जाते हैं तो इल्म वालों से (सुस्ती और भोंदेपन की वजह से) पूछते हैं कि उस ने अभी क्या कहा था?[3] यही लोग हैं जिन के दिलों पर अल्लाह ने मोहर लगा दी है और वे अपनी इच्छाओं का अनुगमन (पैरवी) करते हैं।

---

[1] जिस तरह संसार में वह दूध कभी ख़राब हो जाता है जो गायों, भैंसों और बकरियों वग़ैरह के थनों से निकलता है, जन्नत का दूध चूँकि इस तरह जीवों के थनों से नहीं निकलेगा बल्कि उसकी नहरें होंगी, इसलिए जैसे वह बहुत मज़ेदार होगा ख़राब होने से भी सुरक्षित (महफ़ूज़) रहेगा।

[2] यानी शहद में जिन चीज़ों की मिलावट की उम्मीद होती है जिसे दुनिया में आम तौर से देखा जाता है, जन्नत में ऐसी कोई उम्मीद न होगी, बहुत पाक और साफ़ होगा, क्योंकि यह दुनिया की तरह शहद की मक्खियों से नहीं मिलेगा और उसकी भी नहरें होंगी। इसी वजह से हदीस में आता है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया : जब तुम दुआ करो तो "जन्नतुल फ़िरदौस" के लिए दुआ करो, इसलिए कि यह जन्नत का मध्यम (दरमियाना) और सब से ऊँचा दर्जा है और वहीं से जन्नत की नहरें फूटती हैं और उस के ऊपर रहमान का अर्श है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाबु दर्जातिल मुजाहिदीन फ़ी सबीलिल्लाह)

[3] यह मुनाफ़िक़ीन (द्वयवादियों) का बयान है, चूँकि उनका इरादा सही नहीं होता था, इसलिए नबी ﷺ की बातें भी उन्हें समझ में नहीं आती थीं। वह सभा से बाहर आकर सवाल करते कि आप ﷺ ने क्या फ़रमाया?

وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَآتَاهُمْ تَقْوَاهُمْ ⑰

१७. और जो लोग सन्मार्ग (हिदायत) हासिल कर चुके हैं, अल्लाह (तआला) ने उन्हें संमार्ग में और बढ़ा दिया है और उन्हें उन का सदाचार (तक़्वा) अता किया है।

فَهَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَن تَأْتِيَهُم بَغْتَةً ۖ فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا ۚ فَأَنَّىٰ لَهُمْ إِذَا جَاءَتْهُمْ ذِكْرَاهُمْ ⑱

१८. तो क्या यह क़यामत का इंतेज़ार कर रहे हैं कि वह उन के पास अचानक आ जाये। बेशक उस के लक्षण (निशानियाँ) तो आ चुके हैं, फिर जब उन के पास क़यामत आ जाये उन्हें नसीहत हासिल करना कहाँ होगा?

فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوَاكُمْ ⑲

१९. तो (हे नबी), आप यक़ीन कर लें कि अल्लाह के सिवाय कोई (सच्चा) उपास्य (माबूद) नहीं और अपने पापों की माफ़ी माँगा करें और ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली औरतों के पक्ष (हक़) में भी।[1] अल्लाह (तआला) तुम्हारे आने-जाने और निवास स्थान (रहने की जगह) को अच्छी तरह जानता है।

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُورَةٌ ۖ فَإِذَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَذُكِرَ فِيهَا الْقِتَالُ ۙ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَأَوْلَىٰ لَهُمْ ⑳

२०. और जो लोग ईमान लाये वे कहते हैं कि कोई सूरः क्यों नाज़िल नहीं की गई, फिर जब कोई स्पष्ट (वाज़ेह) अर्थ वाली सूरः नाज़िल की जाती है और उस में जिहाद का बयान किया जाता है, तो आप देखते हैं कि जिन के दिलों में रोग है, वे आप की तरफ़ इस तरह देखते हैं कि जैसे उस इंसान की नज़र होती है जो मौत से बेहोश हो गया हो, बस बहुत बेहतर था उन के लिये।

---

[1] इस में नबी ﷺ को माफ़ी माँगने का हुक्म दिया गया है अपने लिए भी और ईमान वालों के लिए भी। इस्तिग़फ़ार (क्षमा माँगने) का बड़ा महत्व (अहमियत) और प्रधानता (फ़ज़ीलत) है। हदीसों में इस पर बड़ा ज़ोर दिया गया है। एक हदीस (कथन) में नबी ﷺ ने फ़रमाया :

«يَا أَيُّهَا النَّاسُ! تُوبُوا إِلَى رَبِّكُمْ فَإِنِّي أَسْتَغْفِرُ اللهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ فِي الْيَوْمِ أَكْثَرَ مِنْ سَبْعِينَ مَرَّةً»

"लोगों, अल्लाह से तौबा और इस्तिग़फ़ार (क्षमा-याचना) किया करो, मैं भी अल्लाह से प्रतिदिन (रोज़आना) सत्तर बार से ज़्यादा तौबा-इस्तिग़फ़ार करता हूँ।" (सहीह बुख़ारी, बाबु इस्तिग़फ़ारिन नबीये फ़िल यौमि वल लैलति)

طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿21﴾

२१. आज्ञापालन (इताअत) करना और अच्छी बातें कहना, फिर जब काम निर्धारित (मुक़र्रर) हो जाये, तो अगर वे अल्लाह के साथ सच्चे रहें, तो उन के लिए अच्छाई है।

فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ﴿22﴾

२२. और तुम से यह भी दूर (नामुमकिन) नहीं कि अगर तुम को राज्य मिल जाये तो तुम धरती पर फ़साद पैदा कर दो और रिश्ते-नाते तोड़ डालो।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ ﴿23﴾

२३. यह वही लोग हैं जिन पर अल्लाह की धिक्कार (लानत) है और (अल्लाह ने) जिनकी सुनने की ताक़त और आंखों की रोशनी छीन ली है।

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ﴿24﴾

२४. क्या यह क़ुरआन में चिन्तन-मनन (ग़ौर-फ़िक्र) नहीं करते? या उन के दिलों पर उन के ताले लग गये हैं?

اِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ وَاَمْلٰى لَهُمْ ﴿25﴾

२५. जो लोग अपनी पीठ के बल फिर गये इस के बाद कि उन के लिए हिदायत स्पष्ट (वाज़ेह) हो चुकी,[1] बेशक शैतान ने उन के लिए (उन के कामों को) शोभनीय (मुज़य्यन) कर दिया है और उन्हें ढील दे रखी है।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ﴿26﴾

२६. यह इसलिए[2] कि उन्होंने उन लोगों से जिन्होंने अल्लाह की नाज़िल की हुई (वह्यी) को बुरा समझा, यह कहा कि हम भी क़रीब भविष्य (मुस्तक़बिल) में कुछ कामों में तुम्हारा कहा मानेंगे, और अल्लाह उनकी छिपी बातों को अच्छी तरह जानता है।

[1] इस से मुराद मुनाफ़िक़ीन (द्वयवादी) ही हैं, जिन्होंने जिहाद (धर्मयुद्ध) से भाग कर अपने कुफ़्र और धर्म परिवर्तन (बदलाव) को ज़ाहिर कर दिया।

[2] 'ये' से तात्पर्य (मुराद) उनका इस्लाम धर्म से फिर जाना है।

فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَٰٓئِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَٰرَهُمْ ﴿27﴾

२७. तो उनकी कैसी (दुर्गत) होगी, जब फ़रिश्ते उन की जान निकालते हुए उन के मुँह और कमर पर मारेंगे।[1]

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوا مَآ أَسْخَطَ اللَّهَ وَكَرِهُوا رِضْوَٰنَهُۥ فَأَحْبَطَ أَعْمَٰلَهُمْ ﴿28﴾

२८. यह इस वजह से कि ये उस रास्ते पर चले जिस से (उन्होंने) अल्लाह (तआला) को नाराज़ कर दिया और उन्होंने उसकी ख़ुशी को बुरा जाना तो अल्लाह ने उन के अमल को अकारत कर दिया।

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَن لَّن يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَٰنَهُمْ ﴿29﴾

२९. क्या उन लोगों ने जिन के दिलों में रोग है, यह समझ रखा है कि अल्लाह उन के कपट को ज़ाहिर ही न करेगा।[2]

وَلَوْ نَشَآءُ لَأَرَيْنَٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُم بِسِيمَٰهُمْ ۚ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِى لَحْنِ الْقَوْلِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَٰلَكُمْ ﴿30﴾

३०. और अगर हम चाहते तो उन सबको तुझे दिखा देते तो तू उन के मुँह से ही उनको पहचान लेता, और बेशक तू उन्हें उनकी बात के ढंग से पहचान लेगा, तुम्हारे सारे काम अल्लाह को मालूम हैं।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ الْمُجَٰهِدِينَ مِنكُمْ وَالصَّٰبِرِينَ ۙ وَنَبْلُوَا۟ أَخْبَارَكُمْ ﴿31﴾

३१. और बेशक हम तुम्हारी परीक्षा लेंगे ताकि तुम में से जिहाद करने वालों और सब्र करने वालों को देख लें, और हम तुम्हारी हालतों की भी जाँच कर लें।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَشَآقُّوا الرَّسُولَ مِنۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ ۙ لَن يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْـًٔا ۗ وَسَيُحْبِطُ أَعْمَٰلَهُمْ ﴿32﴾

३२. बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से लोगों को रोका और रसूल की मुख़ालफ़त की, इस के बाद कि उन के लिए हिदायत वाज़ेह हो चुकी, यह कभी भी अल्लाह का कोई नुक़सान न करेंगे, जल्द ही उन के अमल वह बरबाद कर देगा।

---

[1] यह काफ़िरों की उस समय की हालत बयान की गई है जब फ़रिश्ते (यमदूत) उनकी जान निकालते हैं। जान फ़रिश्तों से बचने के लिए शरीर में छुपते और इधर-उधर भागते हैं तो फ़रिश्ते कड़ाई से उसे पकड़ते, खींचते और मारते हैं। यह विषय इस से पहले सूरः अन्आम-९३ और सूरः अंफाल-५० में भी गुज़र चुका है।

[2] أضغان (अज़ग़ान) ضغن (ज़िग्न) का बहुवचन (जमा) है। जिसका मतलब द्वेष (हसद), कपट और वैर है। मुनाफ़िक़ों के दिलों में इस्लाम और मुसलमानों के विरोध (मुख़ालफ़त) में जो ईर्ष्या और हसद था, उस के हवाले से कहा जा रहा है कि क्या यह समझते हैं कि अल्लाह तआला उसे ज़ाहिर करने पर समर्थ (क़ादिर) नहीं है?

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ أَطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَأَطِيعُوا۟
ٱلرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوٓا۟ أَعْمَٰلَكُمْ ﴿33﴾

३३. हे ईमानवालो! अल्लाह की इताअत करो और रसूल का कहा मानो और अपने अमल को वरबाद न करो।

إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَصَدُّوا۟ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ ثُمَّ
مَاتُوا۟ وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَن يَغْفِرَ ٱللَّهُ لَهُمْ ﴿34﴾

३४. बेशक जिन लोगों ने कुफ्र किया और अल्लाह के रास्ते से (दूसरों को) रोका, फिर कुफ्र की हालत में ही मर गये (यक़ीन कर लो कि) अल्लाह उन को कभी माफ़ न करेगा।

فَلَا تَهِنُوا۟ وَتَدْعُوٓا۟ إِلَى ٱلسَّلْمِ وَأَنتُمُ ٱلْأَعْلَوْنَ
وَٱللَّهُ مَعَكُمْ وَلَن يَتِرَكُمْ أَعْمَٰلَكُمْ ﴿35﴾

३५. तो तुम कमज़ोर वन कर सुलह की दर्ख़ास्त पर न उतर आओ जवकि तुम ही (विजयी और) ग़ालिव रहोगे,[1] और अल्लाह तुम्हारे साथ है। (अपने इल्म के ज़रिये) नामुमकिन है कि वह तुम्हारे अमल बरबाद कर दे।

إِنَّمَا ٱلْحَيَوٰةُ ٱلدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۚ وَإِن تُؤْمِنُوا۟
وَتَتَّقُوا۟ يُؤْتِكُمْ أُجُورَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ أَمْوَٰلَكُمْ ﴿36﴾

३६. हक़ीक़त में दुनियावी जीवन तो खेलकूद है, और अगर तुम ईमान लाओगे और संयम (तक़वा) अपनाओगे तो अल्लाह तुम्हें तुम्हारे आमाल का वदला देगा और वह तुम से तुम्हारे धन नहीं माँगता।

إِن يَسْـَٔلْكُمُوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوا۟ وَيُخْرِجْ
أَضْغَٰنَكُمْ ﴿37﴾

३७. अगर वह तुम से तुम्हारा माल माँगे और वल देकर माँगे तो तुम उस से कंजूसी करने लगोगे और वह तुम्हारे खोट को ज़ाहिर कर देगा।

---

[1] मुराद यह है कि जब तुम तादाद और ताक़त में दुश्मन पर प्रभुत्वशाली (ग़ालिव) और बुलन्द हो तो ऐसी हालत में काफ़िरों के साथ सुलह और कमज़ोरी का प्रदर्शन (इज़हार) न करो, वल्कि कुफ्र पर ऐसी कड़ी मार लगाओ कि अल्लाह का धर्म ऊँचा हो जाये, ग़ालिव और भारी होते हुए कुफ्र के साथ सुलह का मतलब कुफ्र के असर को बढ़ाने में मदद देना है, यह एक बड़ा गुनाह है। इसका मतलब यह नहीं कि काफ़िरों के साथ सुलह करने की इजाज़त नहीं है, यह इजाज़त निश्चित रूप से है लेकिन हर समय नहीं, सिर्फ़ उस समय जब मुसलमान तादाद में कम और साधनों में नीचे हों, ऐसी हालत में लड़ाई के मुक़ाबिले सुलह में ज़्यादा फ़ायेदा है ताकि इस मौक़ा का फ़ायेदा हासिल कर के मुसलमान भरपूर तैयारी कर लें, जैसे नबी ﷺ ने मक्का के काफ़िरों से जंग न करने का दस साल के लिए समझौता किया था।

هَٰٓأَنتُمْ هَٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنفِقُوا۟ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ فَمِنكُم مَّن يَبْخَلُ ۖ وَمَن يَبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَن نَّفْسِهِۦ ۚ وَٱللَّهُ ٱلْغَنِىُّ وَأَنتُمُ ٱلْفُقَرَآءُ ۚ وَإِن تَتَوَلَّوْا۟ يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوٓا۟ أَمْثَٰلَكُم (38)

३८. ख़बरदार! तुम वह लोग हो कि अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के लिए वुलाये जाते हो तो तुम में से कुछ कंजूसी करने लगते हैं, और जो कंजूसी करता है वह बेशक अपने आप से कंजूसी करता है। अल्लाह (तआला) बेनियाज़ है और तुम मुहताज हो,[1] और अगर तुम मुंह फेरने वाला हो जाओ तो वह तुम्हारे वदले तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को लायेगा जो फिर तुम जैसे न होंगे।

سُورَةُ الفَتْحِ

सूरतुल फ़त्ह-४८

सूर: फ़त्ह* मदनी सूर: है, इस में उन्तीस आयतें और चार रूकूअ हैं।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

---

[1] यानी अल्लाह तुम्हें ख़र्च करने की तरग़ीब (प्रोत्साहन) इसलिए नहीं देता कि उसे तुम्हारे माल की ज़रूरत है। नहीं, वह तो ग़नी है, बेनियाज़ है, वह तो तुम्हारे ही फ़ायदे के लिए यह हुक्म देता है कि एक तो तुम्हारे अपने मनों की पाकी हो। दूसरे, ग़रीबों की ज़रूरत पूरी हो। तीसरे, तुम दुश्मन पर ग़ालिब और उच्च रहो, इसलिए अल्लाह की मदद और दया (रहमत) की ज़रूरत तुम को है न कि अल्लाह को।

* ६ हिज्री में रसूलुल्लाह ﷺ और लगभग एक हज़ार चार सौ सहाबा उमरे के लिए मक्का गये, लेकिन मक्का के निकट हुदैबिया के मुक़ाम पर काफ़िरों ने आप को रोक दिया और उमरा नहीं करने दिया। आप ने हज़रत उस्मान ؓ को अपना नुमाईंदा बनाकर मक्का भेजा ताकि वह क़ुरैश के सरदारों से बात कर के उन्हें मुसलमानों को उमरा करने की इजाज़त देने पर तैयार करें, लेकिन हज़रत उस्मान ؓ के मक्का जाने के बाद उनकी शहादत (क़त्ल) की अफ़वाह फैल गई, जिस पर आप ﷺ ने सहाबा से हज़रत उस्मान ؓ का बदला लेने के लिए "बैअत" प्रतिज्ञा करायी जो 'बैअते रिज़्वान' कहलाती है। हुदैबिया से मदीने की तरफ़ वापस आते हुए मार्ग में यह सूर: नाज़िल हुई, जिस में सुलह को खुली विजय कहा गया, क्योंकि यह सुलह मक्का के विजय का आधार साबित हुई और इस के दो साल बाद ही मुसलमानों ने मक्का में विजेता के रूप में प्रवेश किया। इसी वजह से कुछ सहाबा कहते थे कि तुम मक्का के विजय को विजय मानते हो और हम हुदैबिया के समझौते को विजय गिनते हैं, और नबी ﷺ ने इस सूर: के बारे में फ़रमाया कि आज की रात मुझ पर वह सूरत नाज़िल हुई है जो मुझे दुनिया और उसकी हर चीज़ से ज़्यादा प्यारी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी)

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ﴿1﴾

१. बेशक (हे नबी)! हम ने आप को एक खुली फ़त्ह (विजय) अता की है।

لِّيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿2﴾

२. ताकि जो कुछ तेरे पाप पहले हुए और जो पीछे हुए सबको अल्लाह (तआला) माफ़ कर दे और तुझ पर अपनी नेमत पूरी कर दे और तुझे सीधे रास्ते पर चलाये।

وَيَنصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَزِيزًا ﴿3﴾

३. और आप को एक भरपूर मदद अता करे।

هُوَ الَّذِي أَنزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَّعَ إِيمَانِهِمْ ۗ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿4﴾

४. वही है जिस ने मुसलमानों के दिल में सुकून (और आत्मविश्वास) डाल दिया, ताकि वे अपने ईमान के साथ ही साथ और भी ईमान में बढ़ जायें, और आकाशों और धरती की (सारी) सेनायें अल्लाह ही की हैं, और अल्लाह (तआला) जानने वाला हिक्मत वाला है।

لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عِندَ اللَّهِ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿5﴾

५. ताकि मुसलमान मर्दों और औरतों को उन स्वर्गों में ले जाये, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जहाँ वे हमेशा रहेंगे और उन से उन के पाप को मिटा दे और अल्लाह के क़रीब यह बहुत बड़ी कामयाबी है।

وَيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ الظَّانِّينَ بِاللَّهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۖ وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿6﴾

६. और ताकि उन मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को और मूर्तिपूजक मर्दों और मूर्तिपूजक औरतों को अज़ाब दे जो अल्लाह (तआला) के बारे में बदगुमानी रखने वाले हैं। (हक़ीक़त में) उन्हीं पर बुराई का फेरा है। अल्लाह उन पर नाराज़ हुआ और उन्हें धिक्कारा और उन के लिए नरक तैयार किया, और वह लौटने की (बड़ी) बुरी जगह है।

وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿7﴾

७. और अल्लाह ही के लिए आकाशों और धरती की सेनायें हैं और अल्लाह शक्तिशाली (ग़ालिब) और हिक्मत वाला है।

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿8﴾

८. बेशक हम ने तुझे गवाही देने वाला और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और बाख़बर करने वाला बनाकर भेजा है।

لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ⑨

९. ताकि (हे मुसलमानो!) तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ और उसकी मदद करो और उसका आदर करो, और अल्लाह की पवित्रता (तस्बीह) को सुबह-शाम बयान करो।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ؕ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ⑩

१०. बेशक जो लोग तुझ से बैअत (अल्लाह और उस के रसूल की इताअत और पैरवी का वादा ताकीद से ज़ाहिर करना) करते हैं वह बेशक अल्लाह ही से बैअत करते हैं।[1] उन के हाथों पर अल्लाह का हाथ है,[2] तो जो इंसान वादा तोड़े वह अपने आप पर ही वादा तोड़ता है[3] और जो इंसान उस वादा को पूरा करे जो उस ने अल्लाह के साथ किया है तो उसे जल्द ही अल्लाह बहुत बड़ा बदला (नेकी) देगा।

سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ؕ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ⑪

११. देहातियों में से जो पीछे छोड़ दिये गये थे वे अब तुझ से कहेंगे कि हम अपने माल और औलाद में लगे रह गये तो आप हमारे लिए माफ़ी की दुआ कीजिए,[4] ये लोग अपने मुहों से वह कहते हैं जो उन के दिल में नहीं है।[5] आप जवाब दे दीजिए कि तुम्हारे लिए अल्लाह की तरफ़ से किसी बात का भी हक़ कौन रखता है अगर वह तुम्हें नुक़सान पहुँचाना चाहे, या तुम्हें कोई फ़ायेदा पहुँचाना चाहे, बल्कि तुम जो कुछ कर रहे हो

---

[1] यह बैअत हक़ीक़त में अल्लाह ही की है, क्योंकि उसी ने जिहाद (धर्मयुद्ध) का हुक्म दिया है। जैसे दूसरी जगह पर फ़रमाया कि यह अपनी जानों और मालों का जन्नत के बदले अल्लाह से सौदा है। (अत्तौबा-१११) यह इसी तरह है, जैसे ﴿مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ﴾ (अन-निसाअ :८०)

[2] आयत से वही 'बैअते रिज़्वान' मुराद है जो नबी ﷺ ने हज़रत उस्मान की शहादत (क़त्ल) की ख़बर सुनकर उनका बदला लेने के लिए हुदैबिया में मौजूद १४ या १५ सौ मुसलमानों से ली थी।

[3] نَكَثَ (वादा तोड़ने) से मुराद यहाँ बैअत तोड़ देना यानी वादा के मुताबिक़ लड़ाई में हिस्सा न लेना है, यानी जो इंसान ऐसा करेगा तो उसका वबाल उसी पर पड़ेगा।

[4] इससे मदीने के आसपास आबाद जातियाँ गिफ़ार, मुज़ैनह, जुहैनह, अस्लम और दूसरी जातियाँ मुराद हैं।

[5] यानी मुँह पर तो यह है कि हमारे पीछे हमारे घरों और बाल-बच्चों का संरक्षक (वली) कोई नहीं था। इसलिए हमें ख़ुद ही रूकना पड़ा, किन्तु हक़ीक़त में उनका पीछे रहना निफ़ाक़ (अवसरवाद) और मौत के डर के कारण (सबब) था।

उसे अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है।

१२. (नहीं) बल्कि तुम ने तो यह समझ रखा था कि पैग़म्बर और मुसलमानों का अपने घरों की तरफ़ लौट आना बिल्कुल नामुमकिन है और यही ख़्याल तुम्हारे दिलों में बस गया था; तुम ने बुरा ख़्याल कर रखा था। (हक़ीक़त में) तुम लोग हो भी नष्ट (हलाक) होने वाले।

بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُوْرًا ﴿12﴾

१३. और जो इंसान अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान न लाये तो हम ने भी ऐसे काफ़िरों के लिए दहकती (प्रज्वलित) आग तैयार कर रखी है।

وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ﴿13﴾

१४. और आकाशों और धरती का राज्य (मुल्क) अल्लाह ही के लिए है, जिसे चाहे माफ़ कर दे और जिसे चाहे अज़ाब दे, और अल्लाह तआला बड़ा माफ़ करने वाला रहम करने वाला है।[1]

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿14﴾

१५. जब तुम (लड़ाई से मिले) परिहार (ग़नीमत) लेने जाने लगोगे तो तुरन्त ये पीछे छोड़े हुए लोग कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने की आज्ञा दीजिए[2] वे चाहते हैं कि अल्लाह (तआला) के कथन (क़ौल) को बदल दें।[3] (आप) कह दें कि अल्लाह (तआला) पूर्व ही में कह

سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ۭ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ۭ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿15﴾

---

[1] इस में पिछड़ने वालों के लिए माफ़ी माँगने और अल्लाह की तरफ़ ध्यान करने का प्रलोभन (तरग़ीब) है कि अगर वह निफ़ाक़ से तौबा कर लें तो अल्लाह तआला उन्हें माफ़ कर देगा, वह बहुत माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।

[2] इस में ख़ैबर के युद्ध (जंग) की चर्चा है, जिसकी विजय की ख़ुशख़बरी अल्लाह ने हुदैबियह में दी थी, और अल्लाह ने यह भी फ़रमाया था कि यहाँ से जितना भी माल मिलेगा वह केवल हुदैबियह में शामिल लोगों का हिस्सा है। जैसाकि हुदैबियह से वापसी के बाद जब आप ने यहूदियों के लगातार वादा तोड़ने की वजह से ख़ैबर पर चढ़ाई की योजना बनाई तो उन पिछड़ों ने भी मात्र युद्ध-धन (माले ग़नीमत) हासिल करने के लिए साथ जाने का इरादा ज़ाहिर किया, जिसे क़ुबूल नहीं किया गया। आयत में मग़ानिम से मुराद ख़ैबर में मिला माल ही है।

[3] अल्लाह के वादे से मुराद अल्लाह का ख़ैबर से मिले माल (ग़नीमत) को हुदैबियह वालों के लिए विशेष करने का वादा है। मुनाफ़िक़ीन (अवसरवादी) इस में हिस्सा लेकर अल्लाह के वादे को बदलना चाहते थे।

चुका है कि तुम कभी हमारा अनुगमन (पैरवी) न करोगे तो वे उसका जवाब देंगे (नहीं-नहीं) बल्कि तुम हम से हसद रखते हो। (हक़ीक़त बात यह है) कि वे लोग बहुत ही कम समझते है।

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿16﴾

१६. (आप) पीछे छोड़े हुए देहातियों से कह दीजिए कि जल्द ही तुम एक बड़ी बहादुर क़ौम की तरफ़ बुलाये जाओगे कि तुम उन से लड़ाई करोगे या वे मुसलमान हो जायेंगे, तो अगर तुम आज्ञापालन (इताअत) करोगे तो अल्लाह (तआला) तुम्हें बहुत अच्छा बदला देगा, और अगर तुम ने मुख फेर लिया जैसाकि तुम इस से पहले मुँह फेर चुके हो, तो वह तुम्हें कष्टदायी यातना (अज़ाब) देगा।

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿17﴾

१७. अन्धे पर कोई पाप नहीं, न लंगड़े पर कोई पाप है और न रोगी पर कोई पाप है।[1] और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल के हुक्म का पालन (पैरवी) करे, उसे अल्लाह ऐसे स्वर्ग में दाख़िल करेगा जिस के (पेड़ों के) नीचे से नहरें बह रही है, और जो मुँह फेर ले उसे कष्टदायी यातनायें (अज़ाब) देगा।

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿18﴾

१८. बेशक अल्लाह (तआला) ईमानवालों से ख़ुश हो गया जब वे पेड़ के नीचे तुझ से बैअत (प्रतिज्ञा) कर रहे थे।[2] उन के दिलों में जो कुछ था उसे उस ने मालूम कर लियाऔर उन पर

---

[1] अंधेपन और लंगड़ेपन की वजह से चल फिर न सकना, यह दोनों तो ज़रूरी मजबूरी है, ऐसे मजबूर या उनकी तरह दूसरे लाचारों को जिहाद से अलग कर दिया गया। حرج (हरज) का मायने बुराई है, इन के अलावा जो रोग हैं वह सामयिक (वक़्ती) मजबूरी हैं, जब तक वह हक़ीक़त में रोगी हैं जिहाद में हिस्सा लेने से अलग हैं, रोग दूर होते ही वह जिहाद में दूसरे मुसलमानों के साथ भाग (हिस्सा) लेंगे।

[2] यह उन बैअते रिज़्वान में शामिल सहाबा के लिए अल्लाह की ख़ुशी और उन के पक्के-सच्चे मोमिन होने का प्रमाण (सुबूत) है, जिन्होंने हुदैबियह में एक पेड़ के नीचे इस बात पर बैअत (प्रतिज्ञा) की कि वह मक्का के क़ुरैश से लड़ेंगे और भागेंगे नहीं।

शान्ति (सुकून) उतारा और उन्हें क़रीब की विजय प्रदान (अता) की।

وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّأْخُذُوْنَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿19﴾

१९. और बहुत से परिहार (ग़नीमत) जिन्हें वे हासिल करेंगे, और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है।

وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَأْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿20﴾

२०. अल्लाह तआला ने तुम से बहुत सारी ग़नीमतों (परिहारों) का वादा किया है जिन्हें तुम प्राप्त (हासिल) करोगे, बस यह तो तुम्हें जल्द ही अता कर दी और लोगों के हाथ तुम से रोक दिये[1] ताकि ईमानवालों के लिए यह एक निशानी हो जाये, और ताकि वह तुम्हें सीधे रास्ते पर चलाये।

وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿21﴾

२१. और तुम्हें दूसरे (ग़नीमतें) भी देगा जिन पर अब तक तुम ने क़ाबू नहीं पाया। अल्लाह (तआला) ने उन्हें अपने क़ाबू में रखा है, और अल्लाह (तआला) हर चीज़ पर क़ादिर है।

وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿22﴾

२२. और अगर तुम से काफ़िर लड़ाई करते तो बेशक उल्टे पीठ दिखाकर भागते, फिर न तो कोई कार्यक्षम (वली) पाते, न मदद करने वाला।[2]

سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۖۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿23﴾

२३. अल्लाह के उस नियम के अनुसार जो पहले से चला आया है,[3] और तू कभी भी अल्लाह के नियम को बदला हुआ न पाओगे।

---

[1] हुदैबियह में काफ़िरों के हाथ और ख़ैबर में यहूदियों के हाथ अल्लाह ने रोक दिये, यानी उन के हौसले पस्त कर दिया और वे मुसलमानों से लड़ न सके।

[2] यह हुदैबियह में संभावित (इमकानी) लड़ाई के बारे में कहा जा रहा है कि अगर यह मक्का के कुरैश सुलह न करते बल्कि लड़ने का रास्ता अपनाते तो यह पीठ फेर कर भाग जाते, कोई उनका सहायक (मददगार) न होता। मतलब यह है कि हम वहाँ तुम्हारी मदद करते और हमारे मुक़ाबिले में किसे ठहरने की ताक़त है?

[3] यानी यह अल्लाह की रीति पहले से चली आ रही है कि जब कुफ़्र और ईमान के बीच निर्णायक (फ़ैसलाकुन) लड़ाई का मौक़ा आता है तो अल्लाह ईमानवालों की मदद करके सच को ऊँचा करता है, जैसे इस रीति के अनुसार बद्र में तुम्हारी मदद की गई।

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُم بِبَطْنِ مَكَّةَ مِن بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ﴿24﴾

२४. वही है जिस ने खास मक्का में काफ़िरों के हाथों को तुम से और तुम्हारे हाथों को उन से रोक लिया, इस के बाद कि उस ने तुम्हें उन पर विजयी कर दिया था, और तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह (तआला) उसे देख रहा है।

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوفًا أَن يَبْلُغَ مَحِلَّهُ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ مُّؤْمِنَاتٌ لَّمْ تَعْلَمُوهُمْ أَن تَطَئُوهُمْ فَتُصِيبَكُم مِّنْهُم مَّعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ لِّيُدْخِلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿25﴾

२५. यही वे लोग हैं जिन्होंने कुफ्र किया और तुम को मस्जिदे हराम से रोका और बलि (क़ुर्बानी) के लिए रूके हुए जानवरों को उस की जगह तक पहुँचने से (रोका),[1] और अगर ऐसे (बहुत-से) मुसलमान मर्द और (बहुत-सी) मुसलमान औरतें न होतीं, जिन की तुम को ख़बर न थी कि तुम उनको रौंद दोगे जिस पर उन की वजह से तुम को भी अनजाने में हानि पहुँचती (तो तुम्हें लड़ने की इजाज़त दे दी जाती, लेकिन ऐसा नहीं किया गया) ताकि अल्लाह (तआला) अपनी कृपा (रहमत) में जिस को चाहे शामिल कर ले और अगर ये अलग-अलग होते तो उन में जो काफ़िर थे, हम उन को कष्टदायी दण्ड (अज़ाब) देते।

إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ وَكَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿26﴾

२६. जबकि उन काफ़िरों ने अपने दिलों में हमिय्यत (पक्षपात भावना) को जगह दिया और पक्षपात भी जाहीलियत का, तो अल्लाह (तआला) ने अपने रसूल पर और ईमान वालों पर अपनी तरफ़ से शान्ति नाज़िल किया और मुसलमानों को संयम (तक़्वा) की बात पर दृढ़ (मज़बूत)

---

[1] هَدْيٌ (हदी) उस जानवर को कहा जाता है जिसे हज या उमरा करने वाला अपने साथ मक्का ले जाता है। مَحِلّ (महिल्ल) से मुराद क़ुर्बानी की जगह है जहाँ उनको ले जाकर ज़िब्ह किया जाता है। यह जगह उमरा करने वालों के लिए अज्ञानताकाल (जाहीलियत) में 'मर्वह' पहाड़ी के पास और हाजियों के लिए 'मिना' था। इस्लाम में क़ुर्बानी की जगह मक्का, मिना और पूरा हरम है। مَعْكُوفًا (माकूफ़न) हाल है, यानी यह जानवर इस इंतेज़ार में रूके थे कि मक्के में प्रवेश (दाख़िल) करें ताकि उन्हें वध (ज़िब्ह) किया जाये। मुराद यह है कि इन काफ़िरों ने ही तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका था और जो जानवर तुम्हारे साथ थे उन्हें भी क़ुर्बानी की जगह तक नहीं पहुँचने दिया।

रखा[1] और वे इस के लायक़ और ज़्यादा हक़दार थे, और अल्लाह (तआला) हर चीज़ को अच्छी तरह जानता है।

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَ مُقَصِّرِيْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ؕ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿27﴾

२७. हक़ीक़त में अल्लाह ने अपने रसूल को ख़्वाब सच दिखाया कि अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम ज़रूर पूरे अमन व अमान के साथ मस्जिदे हराम में दाख़िल होगे, सिर मुंडवाते हुए और सिर के बाल कटवाते हुए (शान्ति के साथ) निर्भीक (बेख़ौफ़) होकर,[2] वह उन बातों को जानता है जिन्हें तुम नहीं जानते, तो उस ने उस से पहले एक क़रीब की जीत तुम्हें दी।[3]

هُوَ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَ دِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿28﴾

२८. वही है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे धर्म (दीन) के साथ भेजा ताकि उसे हर धर्म पर ग़ालिब[4] करे और अल्लाह (तआला) काफ़ी है गवाही देने वाला।

---

[1] इस से मुराद तौहीद और रिसालत का कलिमा "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसुलुल्लाह" है। जिसे हुदैबियह के दिन मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) ने इंकार किया। (इब्ने कसीर) या वह सब्र और शान्ति (सम्मान) है जिसका प्रदर्शन (इज़हार) उन्होंने हुदैबियह में किया, या वह प्रतिज्ञा (अहद) का पालन और उस पर मज़बूती है, जो संयम (तक़्वा) का नतीजा है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] हुदैबिया की घटना (वाक़िआ) से पहले रसूलुल्लाह ﷺ को स्वप्न में मुसलमानों के साथ बैतुल्लाह (अल्लाह के घर काबा) में जाकर तवाफ़ और उमरा करते दिखाया गया। नबी का सपना प्रकाशना (वह्यी) के बराबर होता है, फिर भी इस सपने में यह निश्चित नहीं था कि यह इसी साल होगा, किन्तु नबी ﷺ और मुसलमान इसे बड़ी ख़ुशख़बरी समझते हुए उमरे के लिए तुरन्त तैयार हो गये, इसके लिए लोगों में एलान करा दिया और चल पड़े, आख़िर में हुदैबिया में वह समझौता हुआ, जिसका विवरण अभी गुज़रा जबकि अल्लाह के ज्ञान (इल्म) में यह स्वप्न आगामी साल पूरा होना था, जैसाकि आगामी वर्ष मुसलमानों ने बहुत सुकून के साथ यह उमरा किया और अल्लाह ने अपने पैग़म्बर के सपने को सच कर दिया।

[3] इस से ख़ैबर और मक्का की फ़त्ह के अलावा सुलह के नतीजे में जो ज़्यादातर मुसलमान हुए वह भी मुराद है, क्योंकि वह भी फ़त्ह का एक महान रूप है। हुदैबिया समझौते के मौक़ा पर मुसलमान डेढ़ हज़ार थे, इस के दो साल बाद जब मुसलमान मक्के में विजेता (फ़ातेह) की हैसियत से दाख़िल हुए तो उन की संख्या (तादाद) दस हज़ार थी।

[4] इस्लाम का यह असर तो दूसरे धर्मों पर सुबूतों के बिना पर तो हर समय मान्य है, फिर भी दुनियावी और फ़ौजी आधार पर भी पहले ज़माने में और उस के बाद जब तक मुसलमान अपने धर्म पर काम करते रहे उनका प्रभुत्व (ग़लबा) रहा, और आज भी यह माद्दी (भौतिक) ग़लबा संभव (मुमकिन) है जबकि मुसलमान, मुसलमान बन जायें।

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّاۗءُ
عَلَي الْكُفَّارِ رُحَمَاۗءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا
يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ۡ سِيْمَاهُمْ
فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ۭ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ
فِي التَّوْرٰىةِ ښ وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ښ كَزَرْعٍ
اَخْرَجَ شَطْــَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰي
سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۭ
وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ
مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا (29)

२९. मोहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उन के साथ हैं काफ़िरों पर कठोर हैं आपस में रहम दिल हैं, तू उन्हें देखेगा कि रूकूअ और सज्दे कर रहे हैं, अल्लाह (तआला) की कृपा (फ़ज़्ल) और ख़ुशी की कामना में हैं। उनका निशान उन के मुंह पर सज्दों के असर से है, उनका यही गुण (उदाहरण) तौरात में है और उनका उदाहरण (मिसाल) इंजील में है उस खेती के तरह जिसने अपना कोंपल निकाला, फिर उसे मज़बूत किया और वह मोटा हो गया, फिर अपने तने पर सीधा खड़ा हो गया और किसानों को ख़ुश करने लगा[1] ताकि उन की वजह से काफ़िरों को चिढ़ायें, और ईमानवालों और नेक लोगों से अल्लाह ने माफ़ी का और बहुत बड़ी नेकी का वादा किया है।[2]

سُوْرَةُ الْحُجُرَاتِ

सूरतुल हुजुरात-४९

सूर: हुजुरात* मदीने में नाज़िल हुई, इस में अट्ठारह आयतें और दो रूकूअ हैं।

[1] यह सहाबा केराम का दृष्टान्त (मिसाल) बयान किया गया है। शुरू में वह कम थे, फिर ज़्यादा और शक्तिशाली हो गये, जैसे खेती शुरू में कमज़ोर होती है, फिर दिन प्रतिदिन मज़बूत होती जाती है यहाँ तक कि दृढ़ (मज़बूत) तने पर खड़ी हो जाती है।

[2] इस पूरी आयत का एक-एक भाग सहाबा केराम की अज़मत, फ़ज़ीलत और बड़े पुण्य (अज्र) को वाज़ेह कर रहा है। इस के बाद भी सहाबा (नबी के साथियों) के ईमान में शक करने वाला मुसलमान होने का दावा करे तो उसे मुसलमान होने के दावे में कैसे सच्चा समझा जा सकता है ?

* यह तिवाले मुफ़स्सल (विस्तृत) की पहली सूरह है, हुजुरात से नाज़िआत तक की सूरतें तिवाले मुफ़स्सल कहलाती हैं, कुछ ने सूरह 'क़ाफ़' को पहली सूरह कहा है। (इब्ने कसीर, फ़तहुल क़दीर) इन का फ़ज्र (भोर) की नमाज़ में पढ़ना मस्नून और मुस्तहब (उत्तम) है। सूरह अबस से सूरहतुश्शम्स तक औसाते मुफ़स्सल (मध्यम) और सूरह ज़ुहा से अन्नास तक क़िसारे मुफ़स्सल (छोटी) हैं। ज़ोहर और ईशा में औसात और मग़रिब में क़िसार पढ़नी मुस्तहब (उत्तम) हैं। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ①

१. हे ईमानवालो! अल्लाह और उस के रसूल से आगे न बढ़ो[1] और अल्लाह से डरते रहा करो। बेशक अल्लाह (तआला) सुनने जानने वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ②

२. हे ईमानवालो! अपनी आवाज़ को नबी की आवाज़ से ऊँचा न करो और उन से ऊँची आवाज़ में बात करो जैसे आपस में एक-दूसरे से करते हो। (कहीं ऐसा न हो) कि तुम्हारे अमल बेकार हो जायें और तुम्हें पता भी न हो।[2]

اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ۭ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ③

३. हक़ीक़त में जो लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने अपनी आवाज़ धीमी रखते हैं, यही वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने सदाचार (तक़्वा) के लिए जाँच लिया है, उन के लिए माफ़ी है और बड़ा पुण्य (अज्र) है।[3]

اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَاۗءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ④

४. बेशक जो लोग आप को कमरों के पीछे से पुकारते हैं उन में से ज़्यादातर (पूरी तरह से) बुद्धिहीन (बेअक़्ल) हैं।[4]

---

[1] इसका मतलब है कि धर्म के बारे में ख़ुद कोई फ़ैसला न करो, न अपनी समझ और विचार को तरजीह (प्रधानता) दो, बल्कि अल्लाह और रसूल के हुक्म का पालन (पैरवी) करो, अपनी तरफ़ से धर्म में अधिकता (इज़ाफ़ा) या बिदआत (नई बातें) बनाना अल्लाह और रसूल से आगे बढ़ने की जुरअत है, जो किसी भी ईमान वाले के लिए लायक़ नहीं। इसी तरह कोई फ़तवा क़ुरआन और हदीस में विचार किये बिना न दिया जाये और देने के बाद अगर शरीअत के नुसूस (क़ुरआन और हदीस) के ख़िलाफ़ होना वाज़ेह हो जाये तो उस पर अड़े रहना भी इस आयत में दी गई इजाज़त के ख़िलाफ़ है। मुसलमान का आचरण (अख़लाक़) तो अल्लाह और रसूल के हुक्म के आगे समर्पण और अनुपालन (पैरवी) के लिए सिर झुका देना है, न कि उन के मुक़ाबले में अपनी बात या किसी इमाम के विचार (ख़्याल) पर अड़े रहना।

[2] इस में रसूलुल्लाह ﷺ के लिये आदर-सम्मान का बयान है, जिसकी हर मुसलमान से माँग है।

[3] इस में उन लोगों की तारीफ़ है जो रसूलुल्लाह ﷺ की मान-मर्यादा का ध्यान रखते हुए अपनी आवाज़ धीमी रखते थे।

[4] यह आयत क़बीला बनू तमीम के कुछ आराबियों (गँवार लोगों) के बारे में नाज़िल हुई, जिन्होंने एक दिन दोपहर के समय जो रसूलुल्लाह ﷺ के आराम का समय था, कमरे से बाहर

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّىٰ تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥﴾

५. और अगर ये लोग यहाँ तक सब्र करते कि आप (ख़ुद) उन के पास आ जाते तो यही उन के लिए बेहतर होता, और अल्लाह (तआला) माफ करने वाला रहम करने वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوا أَن تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ ﴿٦﴾

६. हे ईमानवालो! अगर तुम्हें कोई फासिक ख़बर दे तो तुम उसकी अच्छी तरह छानबीन कर लिया करो,[1] (ऐसा न हो) कि जानकारी न होने की वजह से किसी समुदाय (क़ौम) को नुक़सान पहुँचा दो, फिर अपने किये पर पछतावो।

وَاعْلَمُوا أَنَّ فِيكُمْ رَسُولَ اللَّهِ ۚ لَوْ يُطِيعُكُمْ فِي كَثِيرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الرَّاشِدُونَ ﴿٧﴾

७. और जान रखो कि तुम में अल्लाह के रसूल मौजूद हैं, अगर वह बहुत-सी बातों में तुम्हारा कहा करते रहें तो तुम कठिनाई में पड़ जाओ, लेकिन अल्लाह (तआला) ने ईमान को तुम्हारे लिए प्यारा बना दिया है और उसे तुम्हारे दिल में सुशोभित (मुज़य्यन) कर दिया है और कुफ्र को और बुराईयों को और नाफ़रमानी को तुम्हारी नज़र में नापसन्द बना दिया है, यही लोग रास्ता पाये हुए हैं।

فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَنِعْمَةً ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٨﴾

८. अल्लाह के उपकार (फ़ज़्ल) और अनुग्रह (नेमत) से,[2] और अल्लाह जानने वाला और हिक्मत वाला है।

खड़े होकर जन-साधारण (आम लोगों) के अंदाज़ में हे मुहम्मद, हे मुहम्मद की आवाज़ लगायी, ताकि आप ﷺ बाहर आयें। (मुसनद अहमद ३\४८८-६\३९४) अल्लाह ने फ़रमाया कि इन में ज़्यादातर बुद्धिहीन (बेअक़्ल) हैं, इसका मतलब यह हुआ कि नबी ﷺ के प्रताप (जलाल) और आप की मान-मर्यादा की माँगों का ध्यान न रखना बेवकूफ़ी है।

[1] यह आयत ज़्यादातर भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) के विचार में हज़रत वलीद बिन उक़्बा के बारे में उतरी है, जिन्हें नबी ﷺ ने बनू मुस्तलिक के सदके (धर्मदान) वसूल करने के लिए भेजा था, लेकिन उन्होंने आकर ख़बर दी कि उन्होंने ज़कात देने से इंकार कर दिया है, जिस पर आप ने उन पर हमला करने का इरादा किया, फिर पता लग गया कि यह बात ग़लत थी और वलीद ﷺ वहाँ गये ही नहीं।

[2] यह आयत भी सहाबा ﷺ की इज़्ज़त और उन के ईमान और सुधार और संमार्ग (हिदायत) पर होने का खुला सुबूत है।

९. और अगर मुसलमानों के दो गुट आपस में लड़ पड़ें तो उन में मेल-मिलाप करा दिया करो ।[1] फिर अगर उन में से एक-दूसरे पर ज़ुल्म करे तो तुम (सब) उस गुट से जो ज़ुल्म करता है लड़ो, यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ़ लौट आये,[2] अगर लौट आये तो इंसाफ़ के साथ उन के बीच सुलह करा दो और इंसाफ़ करो । बेशक अल्लाह (तआला) इंसाफ़ करने वालों से मुहब्बत करता है ।

وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ⑨

१०. (याद रखो) सभी मुसलमान भाई-भाई हैं, तो अपने दो भाईयों में मिलाप करा दिया करो, और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम पर कृपा (रहम) की जाये ।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ⑩

११. हे ईमानवालो ! मर्द दूसरे मर्दों का मज़ाक़ न करें, मुमकिन है कि यह उन से बेहतर हों[3] और न औरतें औरतों का मज़ाक करें, मुमकिन है कि ये उन से बेहतर हों, और आपस में एक-दूसरे पर आक्षेप (ऐब) न लगाओ और न किसी को बुरी उपाधि (लक़ब) दो । ईमान के बाद फ़िस्क़ (बुरा लफ़्ज़) बुरा नाम है,[4] और जो

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ۭ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ⑪

---

[1] इस संधि (सुलह) का ढंग यह है कि उन्हें क़ुरआन और हदीस की तरफ़ बुलाया जाये यानी उन की रौशनी में उन के मतभेद (इख़्तिलाफ़) का हल किया जाये ।

[2] यानी अल्लाह और रसूल के हुक्म के मुताबिक़ अपना इख़्तिलाफ़ दूर करने को तैयार न हो और फ़साद की नीति अपनाये तो दूसरे मुसलमानों की ज़िम्मेदारी है कि सब मिलकर फ़सादियों से लड़ाई करें यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक्म को मानने के लिए तैयार हो जाये ।

[3] एक इंसान दूसरे किसी इंसान का मज़ाक उस समय करता है जब वह अपने को उससे बेहतर और उसे हीन और गिरा समझता है, हालांकि अल्लाह के सामने कौन कर्म और ईमान में बेहतर है और कौन नहीं, इस को सिर्फ़ अल्लाह ही जानता है, इसलिए ख़ुद को अच्छा और दूसरों को गिरा समझने का कोई औचित्य (तुक) ही नहीं है, इस वजह से आयत में उससे रोका गया है ।

[4] यानी इस तरह नाम बिगाड़ कर, या बुरे नाम रखकर बुलाना, या इस्लाम लाने और तौबा कर लेने के बाद उसे पहले धर्म या पाप से मंसूब करके संबोधित (मुख़ातिब) करना, जैसे हे काफ़िर, हे व्याभिचारी (ज़ानी), हे शराबी आदि, बुरा काम है । हाँ, कुछ वह नाम जो ख़ास गुण (सिफ़त) के कारण हों, कुछ के क़रीब इस से अलग हैं जो किसी के लिए मशहूर हो जायें और वह इस पर अपने मन में दुखी न हों, जैसे लंगड़ा होने के कारण किसी का नाम लंगड़ा पड़ जाये, काला रंग होने के कारण कालिया या कालू मशहूर हो जाये आदि । (क़ुर्तबी)

माफ़ी न माँगे वही ज़ालिम लोग हैं।

१२. हे ईमानवालो! बहुत बदगुमानियों से बचो; यकीन करो कि कुछ बुरे गुमान पाप हैं,[1] और भेद (राज़) न टटोला करो[2] और न तुम में से कोई किसी की बुराई (पीठ पीछे चुगली) करे।[3] क्या तुम में से कोई भी अपने मरे भाई का गोश्त खाना अच्छा समझता है? तुम को उस से घृणा (नफ़रत) होगी[4] और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह (तआला) माफ़ी क़ुबूल करने वाला कृपालु (रहीम) है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱجْتَنِبُوا۟ كَثِيرًا مِّنَ ٱلظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ ٱلظَّنِّ إِثْمٌ ۖ وَلَا تَجَسَّسُوا۟ وَلَا يَغْتَب بَّعْضُكُم بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ﴿12﴾

---

1 ظَنّ (ज़न्न) का मतलब है गुमान करना। मतलब है कि परहेज़गारों और नेक लोगों के बारे में ऐसे गुमान रखना जो बेअसल हों और इल्ज़ाम और तुहमत के अंतर्गत (दायरे) आते हों, इसीलिए इसका अनुवाद बुरा गुमान किया जाता है और इसे हदीस में «أَكْذَبُ الْحَدِيثِ» (सब से बड़ा झूठ) कहकर इस से बचने पर बल दिया गया है।

2 यानी (अर्थात) इस खोज में रहना कि कोई बुराई मिल जाय ताकि उसे बदनाम किया जाये, यह तजस्सुस है जिस से रोका गया है। हदीस में भी इस से रोका गया है, बल्कि कहा गया है कि अगर किसी की बुराई या ग़लती तुम्हारे इल्म (ज्ञान) में आ जाये तो उसे छिपाओ, न कि लोगों से चर्चा करते फिरो। आज के ज़माने में आज़ादी और स्वाधीनता की बहुत चर्चा है इस्लाम ने भी टटोलने से रोक कर इंसान की आज़ादी और स्वाधीनता को क़ुबूल किया है, लेकिन उस समय तक जब तक कि वह आम तौर से बेशर्मी का काम न करे या जब तक दूसरों के लिए दुख का कारण न बने। पश्चिम ने खुली स्वाधीनता की शिक्षा (नसीहत) देकर लोगों को साधारण (आम) बिगाड़ की इजाज़त दे दी है जिस से सामाजिक शान्ति का विनाश (बरबाद) हो गया है।

3 غيبت (ग़ीबत) का मतलब है दूसरे लोगों के सामने किसी की बुराईयों और दोषों की चर्चा की जाये, जिसे वह बुरा समझे, अगर उस से ऐसी बातें जोड़ी जायें जो उस में हों ही नहीं तो वह आरोप (तुहमत) है, अपनी-अपनी जगह दोनों ही बहुत बड़ा गुनाह हैं।

4 यानी किसी मुसलमान भाई की किसी के सामने बुराई करना ऐसे ही है जैसे मुर्दार भाई का गोश्त खाना। मुर्दा भाई का गोश्त खाना तो कोई पसन्द नहीं करता लेकिन ग़ीबत लोगों का बहुत पसंदीदा खाना है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَٰكُم مِّن ذَكَرٍ وَأُنثَىٰ وَجَعَلْنَٰكُمْ شُعُوبًا وَقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوٓا۟ ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ ٱللَّهِ أَتْقَىٰكُمْ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿13﴾

१३. हे लोगो ! हम ने तुम्हें एक (ही) मर्द और औरत से पैदा किया है[1] और इसलिए कि तुम आपस में एक-दूसरे को पहचानो, जातियाँ और प्रजातियाँ बना दी हैं, अल्लाह की नज़र में तुम सब में वह इज़्ज़त वाला है जो सब से ज़्यादा डरने वाला है।[2] यक़ीन करो कि अल्लाह जानने वाला अच्छी तरह जानता है।

قَالَتِ ٱلْأَعْرَابُ ءَامَنَّا ۖ قُل لَّمْ تُؤْمِنُوا۟ وَلَٰكِن قُولُوٓا۟ أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ ٱلْإِيمَٰنُ فِى قُلُوبِكُمْ ۖ وَإِن تُطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ لَا يَلِتْكُم مِّنْ أَعْمَٰلِكُمْ شَيْـًٔا ۚ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿14﴾

१४. ग्रामीण लोग कहते हैं कि हम ईमान लाये। (आप) कह दीजिए कि तुम ईमान नहीं लाये लेकिन तुम यों कहो कि हम इस्लाम लाये (विरोध छोड़कर फ़रमांबरदार हो गये) हालांकि अभी तक ईमान तुम्हारे दिल में दाख़िल ही नहीं हुआ,[3] तुम अगर अल्लाह और उस के रसूल के हुक्म का पालन (पैरवी) करने लगोगे तो अल्लाह तुम्हारे अमलों में से कुछ भी कम न करेगा। बेशक अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला दयालु (रहीम) है।

إِنَّمَا ٱلْمُؤْمِنُونَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا۟ وَجَٰهَدُوا۟ بِأَمْوَٰلِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلصَّٰدِقُونَ ﴿15﴾

१५. ईमानवाले तो वे हैं जो अल्लाह पर और उस के रसूल पर (मज़बूत) ईमान लायें, फिर शंका-संदेह न करें और अपने माल से और अपनी जान से अल्लाह के रास्ते में धर्मयुद्ध (जिहाद) करते रहें। (अपने ईमान के दावे में) यही सच्चे हैं।

---

[1] यानी आदम और हव्वा (अलैहिमुस्सलाम) से। यानी तुम सब का मूल एक ही है, एक ही माँ-बाप की औलाद हो। मतलब यह है कि किसी के मात्र जाति और वंश के बिना पर कोई गर्व करने का हक़दार नहीं, क्योंकि हर एक के नसब का सिलसिला हज़रत आदम ही से मिलता है।

[2] यानी अल्लाह के सामने प्रधानता (फ़ज़ीलत) का माप परिवार, जाति और वंशक्रम नहीं, जो किसी इंसान के अधिकार (इख़्तियार) ही में नहीं है बल्कि यह माप तक़्वा (संयम) है, जिसे अपनाना इन्सान के इरादे और वश में है। यही आयत उन आलिमों की दलील है जो विवाह में जाति और वंश की बराबरी को ज़रूरी नहीं समझते और सिर्फ़ धर्म (दीन) के आधार पर विवाह को पसंद करते हैं। (इब्ने कसीर)

[3] कुछ भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) के ख़्याल से इन أعراب (आराब) से मुराद बनू असद और ख़ुज़ैमा के अवसरवादी (मुनाफ़िक़) हैं, जिन्होंने अकाल में सदक़ों (दानों) को पाने के लिए या क़त्ल और क़ैदी होने के डर से मुँह से इस्लाम क़ुबूल किया था। उन के दिल ईमान, सच्चे यक़ीन और साफ़ मन से ख़ाली थे। (फ़तहुल क़दीर)

१६. कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह को अपनी दीनदारी से परिचित (आगाह) करा रहे हो? अल्लाह हर उस चीज़ को जो आकाशों में और धरती में है अच्छी तरह जानता है, और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।

قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ⑯

१७. वे अपने मुसलमान होने का आप पर एहसान जताते हैं, (आप) कह दीजिए कि अपने मुसलमान होने का एहसान मुझ पर न रखो, बल्कि अल्लाह का तुम पर एहसान है कि उस ने तुम्हें ईमान की तरफ़ हिदायत की अगर तुम सच्चे हो।

يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا ؕ قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ⑰

१८. यक़ीन करो कि आकाशों और धरती की छिपी हुई बातें अल्लाह अच्छी तरह जानता है, और जो कुछ तुम कर रहे हो उसे अल्लाह अच्छी तरह देख रहा है।

اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ ۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ⑱

सूरतु क़ाफ़-५०

سُوْرَةُ قٓ

सूरः क़ाफ़* मक्का में नाज़िल हुई और इस में पैंतालीस आयतें और तीन रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. क़ाफ़! बहुत बड़ी शान (गरिमा) वाले इस क़ुरआन की क़सम है।

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ①

२. बल्कि उन्हें ताज्जुब हुआ कि उन के पास उन्हीं में से एक डराने वाला आया तो काफ़िरों ने कहा कि यह एक अजीब चीज़ है।

بَلْ عَجِبُوْا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ②

* नबी ﷺ ईद की नमाज़ में सूरह क़ाफ़ और इक़तरबतिस्साअ: पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम, बाबु मा युक़रअ बिहि फी सलातिल ईदैन) हर जुमे के ख़ुतबे (भाषण) में भी पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमअ:, बाबु तख़फ़ीफ़िस्सलाते वल ख़ुत्बा) इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि दोनों ईदों और जुमे में पढ़ने का मतलब यह है कि बड़े जनसमूहों में आप यह सूरह पढ़ा करते थे, क्योंकि इस में मख़लूक़ की इब्तेदा, दोबारा ज़िन्दगी, परलोक (आख़िरत), हिसाब, स्वर्ग-नरक, नेकी-अज़ाब, प्रोत्साहन (तरग़ीब) और तंबीह का बयान है।

ءَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۖ ذَٰلِكَ رَجْعٌ بَعِيدٌ ﴿3﴾

३. क्या जब हम मर कर मिट्टी हो जायेंगे। फिर यह वापसी दूर की बात है।

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ ۖ وَعِندَنَا كِتَابٌ حَفِيظٌ ﴿4﴾

४. धरती जो कुछ उन में से घटाती है वह हमें मालूम है और हमारे पास सब याद रखने वाली किताब है।

بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَّرِيجٍ ﴿5﴾

५. बल्कि उन्होंने सच बात को झूठ कहा, जबकि वह उन के पास पहुँच चुकी तो वे एक उलझन में पड़ गये हैं।[1]

أَفَلَمْ يَنظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا لَهَا مِن فُرُوجٍ ﴿6﴾

६. क्या उन्होंने आकाश को अपने ऊपर नहीं देखा कि हम ने उसे किस तरह बनाया है और उसे शोभा (ज़ीनत) दी है? उस में कोई दरार नहीं।

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ﴿7﴾

७. और धरती को हम ने बिछा दिया है और उस पर हम ने पहाड़ डाल दिये हैं और उस में हम ने तरह-तरह की सुन्दर चीजें उगा दी हैं।[2]

تَبْصِرَةً وَذِكْرَىٰ لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ﴿8﴾

८. ताकि हर (अल्लाह की तरफ़) लौटने वाले बंदे के लिए देखने और समझने का ज़रिया हो।

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبَارَكًا فَأَنبَتْنَا بِهِ جَنَّاتٍ وَحَبَّ الْحَصِيدِ ﴿9﴾

९. और हम ने आकाश से शुभ (मुबारक) पानी बरसाया और उस से बाग़ और कटने वाले खेत के अन्न पैदा किये।[3]

---

[1] हक़ (सच बात) से मतलब पाक क़ुरआन, इस्लाम या मोहम्मद ﷺ की नबूवत (दूतत्व) है। मायने सबका एक ही है। مَّرِيجٍ (मरीज) का मतलब उलझाव, असमंजस्य (कशमकश) या शक है, यानी ऐसा विषय जो उन पर उलझ गया है, जिस से वे उलझाव में हैं कभी उसे जादूगर कहते हैं, कभी कवि (शायर) और कभी भविष्यवक्ता (नजूमी)।

[2] कुछ ने زَوْجٍ (जौज) का मतलब जोड़ा लिया है, यानी सभी तरह की वनस्पतियाँ और चीजें जोड़ा-जोड़ा (नर-मादा) बनाया है। بَهِيجٍ (बहीज) का मायने अच्छा मंजर, हरी-भरी और ख़ूबसूरत।

[3] कटने वाले अन्न से मुराद वह खेतियाँ हैं जिन से गेहूँ, मकई, ज्वार, बाजरा, दालें और चावल आदि (वग़ैरह) उगाते हैं और फिर उनका भंडार कर लिया जाता है।

وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ﴿10﴾

१०. और खजूरों के ऊँचे-ऊँचे पेड़ जिन के गुच्छे तह पर तह हैं।

رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ؕ كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ ﴿11﴾

११. बंदों की जीविका (रोज़ी) के लिए, और हम ने पानी से मृत नगर को ज़िन्दा कर दिया। इसी तरह (क़ब्रों से) निकलना है।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ﴿12﴾

१२. उन से पहले नूह के समुदाय (क़ौम) ने और 'रस्स' वालों ने[1] और समूदियों ने झुठलाया था।

وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ﴿13﴾

१३. और आद ने और फ़िरऔन ने और लूत के भाईयों ने।

وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ؕ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ﴿14﴾

१४. और ऐका वालों[2] ने और तुब्बअ के समुदाय (क़ौम) ने[3] (भी झुठलाया था)। सब ने पैग़म्बरों को झुठलाया तो मेरी सज़ा का वादा उन पर सच हो गया।

اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ؕ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿15﴾

१५. क्या हम पहली वार पैदा करने से थक गये? बल्कि ये लोग नये जीवन की तरफ़ से शक में हैं।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۖۚ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ﴿16﴾

१६. हम ने इंसान को पैदा किया है और उस के दिल में जो विचार पैदा होते हैं हम उन्हें जानते हैं,[4] और हम उस के प्राणनाड़ी (शहरग) से भी

---

[1] रस्स के रहने वालों के निर्धारण के बारे में भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) में बड़ा इख़्तिलाफ़ है। इमाम इब्ने जरीर तबरी ने इस कथन को अधिमान (तरजीह) दिया है जिस में उन्हें अस्हाबे उख़दूद (खाईयों वाले) कहा गया है, जिन की चर्चा सूरह बुरूज में है। (तफ़सील के लिये देखिए तफ़सीर इब्ने कसीर और फ़तहुल क़दीर, सूरः अल-फ़ुरक़ान-३८)।

[2] أَصْحَابُ الأَيْكَة (अस्हाबुल ऐका) के लिए देखिये सूरतुश्शुअरा आयत १७६ का हाशिया।

[3] तुब्बअ जाति के लिए देखिये सूरः अद्दुख़ान आयत ३७ का हाशिया (तटलेख)।

[4] यानी इंसान जो कुछ छिपा रखता और मन में छिपा रखता है वह सब हम जानते हैं। वस्वसा दिल में आने वाले विचारों को कहा जाता है जिसका इल्म उस इंसान के सिवा किसी को नहीं होता, लेकिन अल्लाह इन विचारों को भी जानता है। इसीलिए हदीस क़ुदसी में आता है : "मेरे अनुगामियों (पैरोकारों) के दिल में आने वाले विचारों को अल्लाह ने माफ़ कर दिया है, यानी उन पर पकड़ नहीं करेगा जब तक उसे मुँह से ज़ाहिर न करे या उसके अनुसार अमल न

ज़्यादा उस के क़रीब हैं।

१७. जिस समय दो लेने वाले जो लेते हैं, एक दायीं तरफ़ और दूसरा बायीं तरफ़ बैठा हुआ है।

إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ⑰

१८. (इंसान) मुंह से कोई शब्द (लफ़्ज़) निकाल नहीं पाता लेकिन उस के क़रीब रक्षक (पहरेदार) तैयार है।

مَا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ⑱

१९. और मौत की बेहोशी सत्य (हक़) लेकर आ पहुँची,[1] यही है जिस से तू कतराता फिरता था।

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۖ ذَٰلِكَ مَا كُنتَ مِنْهُ تَحِيدُ ⑲

२०. और नरसिंघा (सूर) फूंक दिया जायेगा, यातना (अज़ाब) के वादे का दिन यही है।

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ⑳

२१. और हर इंसान इस तरह आयेगा कि उस के साथ एक हाँक लाने वाला होगा और एक गवाही देने वाला।

وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ㉑

२२. बेशक तू इस से असावधान (ग़ाफ़िल) था, लेकिन हम ने तेरे सामने से पर्दा हटा दिया तो आज तेरी नज़र बहुत तेज़ है।

لَّقَدْ كُنتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَٰذَا فَكَشَفْنَا عَنكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ㉒

२३. उस के साथ रहने वाले (फ़रिश्ते) कहेंगे यह हाज़िर है जो कि मेरे पास था।[2]

وَقَالَ قَرِينُهُ هَٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ ㉓

२४. दोनों डाल दो नरक में हर काफ़िर उद्दण्ड (सरकश) को।

أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ㉔

२५. जो नेक काम से रोकने वाला, सीमा (हद)

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيبٍ ㉕

करो।" (अल-बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाबु इज़ा हनस नासियन फ़िल ऐमान, मुस्लिम बाबु तजावुज़िल्लाहे अन हदीसिन नफ़्से वल ख़्वातिरे बिल क़ल्बे इज़ा लम तस्तक़िर्र)

[1] इसका दूसरा मायने 'मौत की कठिनाई सत्य (हक़) के साथ आयेगी' है यानी मौत के समय सच ज़ाहिर और उन वादों की सच्चाई स्पष्ट (वाज़ेह) हो जाती है जो क़यामत (प्रलय) और स्वर्ग और नरक के बारे में अम्बिया अलैहिमुस्सलाम करते रहे हैं।

[2] यानी फ़रिश्ता इंसान का पूरा रिकार्ड सामने रख देगा कि यह तेरा कर्मपत्र (आमालनामा) है जो कि मेरे पास था।

तोड़ने वाला और शक करने वाला था।

الَّذِیْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِیٰهُ فِی الْعَذَابِ الشَّدِیْدِ ﴿26﴾

२६. जिस ने अल्लाह के साथ दूसरा माबूद (देवता) बना लिया था, तो उसे कठोर अज़ाब में डाल दो।

قَالَ قَرِیْنُهٗ رَبَّنَا مَاۤ اَطْغَیْتُهٗ وَ لٰكِنْ كَانَ فِیْ ضَلٰلٍۭ بَعِیْدٍ ﴿27﴾

२७. उसका साथी (शैतान) कहेगा कि हे हमारे रब! मैंने इसे रास्ते से भटकाया नहीं था, बल्कि यह ख़ुद ही दूर के भटकावे में था।

قَالَ لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَیَّ وَ قَدْ قَدَّمْتُ اِلَیْكُمْ بِالْوَعِیْدِ ﴿28﴾

२८. (अल्लाह तआला) कहेगा कि बस मेरे सामने झगड़े की बात न करो, मैं तो पहले ही तुम्हारी तरफ़ अज़ाब का वादा भेज चुका था।

مَا یُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَیَّ وَ مَاۤ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِیْدِ ﴿29﴾

२९. मेरे पास बात बदलती नहीं और न मैं अपने भक्तों (बन्दों) पर तनिक भी ज़ुल्म करने वाला हूँ।

یَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَاْتِ وَ تَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِیْدٍ ﴿30﴾

३०. जिस दिन हम नरक से पूछेंगे कि क्या तू भर चुकी? वह जवाब देगी कि क्या कुछ और ज़्यादा भी है?

وَ اُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِیْنَ غَیْرَ بَعِیْدٍ ﴿31﴾

३१. और जन्नत सदाचारियों (परहेज़गारों) के लिए बिल्कुल क़रीब कर दी जायेगी, तनिक भी दूर न होगी।

هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِیْظٍ ﴿32﴾

३२. यह है जिसका वादा तुम से किया जाता था हर उस इंसान के लिए जो ध्यानमग्न और पाबन्दी करने वाला हो।[1]

مَنْ خَشِیَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَیْبِ وَ جَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِیْبٍ ﴿33﴾

३३. जो दयालु (रहमान) का छिपे तौर से डर रखता हो और आकर्षित (मुतवज्जिह) होने वाला दिल लाया हो।

ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ؕ ذٰلِكَ یَوْمُ الْخُلُوْدِ ﴿34﴾

३४. तुम इस जन्नत में शान्ति (सलामती) के साथ दाख़िल हो जाओ, यह हमेशा रहने का दिन

---

[1] यानी जब ईमान वाले जन्नत और उसकी सुख-सुविधाओं (ऐशो आराम) को क़रीब से देखेंगे तो कहा जायेगा कि यही वह स्वर्ग है जिसका वादा हर अल्लाह में ध्यानमग्न और उसकी आज्ञापालन (इताअत) करने वाले से किया गया था।

है।

३५. ये वहाँ जो कुछ चाहें उन्हें मिलेगा (बल्कि) हमारे पास और भी ज़्यादा है।[1]

لَهُم مَّا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ﴿35﴾

३६. और उन से पहले भी हम बहुत से समुदायों को बरबाद कर चुके हैं, जो उन से ताक़त में बहुत ज़्यादा थे, वे नगरों में फिरते ही रह गये कि कोई भागने का ठिकाना है?

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُم بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِن مَّحِيصٍ ﴿36﴾

३७. इस में हर उस इंसान के लिये नसीहत है जिस के दिल हो या कान धरे और वह हाज़िर हो।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ﴿37﴾

३८. बेशक हम ने आकाशों और धरती और दोनों के बीच की जो कुछ चीज़ें हैं, सब को (सिर्फ़) छः दिन में पैदा कर दिया और हमें थकान ने स्पर्श (छुआ) तक नहीं किया।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا مِن لُّغُوبٍ ﴿38﴾

३९. इसलिए आप उन बातों पर सब्र करें और अपने रब का पवित्रतागान (तस्बीह) तारीफ़ के साथ सूरज निकलने से पहले भी और डूबने से पहले भी करें।

فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ﴿39﴾

४०. और रात के किसी समय भी महिमागान (तस्बीह) करें और नमाज़ के बाद भी।[2]

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ﴿40﴾

---

[1] इस से अभिप्राय (मुराद) अल्लाह का दर्शन (ज़ियारत) है जो जन्नत वालों को मिलेगा, जैसा कि ﴿لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ﴾ (यूनुस-२६) की तफ़सीर (व्याख्या) में गुज़रा।

[2] यानी अल्लाह की तस्बीह करें। कुछ ने इस से वह तस्बीहें मुराद ली हैं, जिन के पढ़ने पर फ़र्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ों के वाद नबी ﷺ ने ज़ोर दिया है जैसे سُبْحَانَ الله (सुब्हानल्लाहे) ३३ बार, اَلْحَمْدُ لله (अल्हम्दो लिल्लाहे) ३३ बार, الله أَكْبَر (अल्लाहो अकबर) ३४ बार आदि। (अल-बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाबुज़ ज़िक्रे बादस सलाति, मुस्लिम बाबु इस्तिहबाबिज़्ज़िक्रे, बादस सलाति व बयानु सिफ़तिही) कुछ ने कहा है कि أدبار السجود से मुराद मग़रिब की नमाज़ के बाद की दो रकअतें हैं, कुछ ने कहा कि उपर बयान की गई तस्बीहें आयत के उतरने के बहुत समय बाद बताई गई थीं।

وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿41﴾

४१. और सुन रखें कि जिस दिन एक पुकारने[1] वाला क़रीब ही की जगह से पुकारेगा ।[2]

يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ﴿42﴾

४२. जिस दिन उस कड़ी आवाज़ को यक़ीन के साथ सुनेंगे, यही निकलने का दिन होगा ।[3]

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ﴿43﴾

४३. हम ही ज़िन्दा करते और मारते हैं और हमारी तरफ़ ही फिर कर आना है ।

يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ۚ ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ﴿44﴾

४४. जिस दिन धरती फट पड़ेगी और यह दौड़ते हुए (निकल पड़ेंगे), यह जमा कर लेना हम पर बहुत ही आसान है ।

نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ ۖ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِجَبَّارٍ ۖ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَن يَخَافُ وَعِيدِ ﴿45﴾

४५. हम अच्छी तरह जानते हैं जो कुछ यह कह रहे हैं और आप उन्हें बलपूर्वक (ताक़त के ज़ोर पर) मनवाने वाले नहीं, बस आप उन्हें क़ुरआन के द्वारा समझाते रहें जो मेरी धमकी से डरते हों ।[4]

---

[1] यह पुकारने वाला इस्राफ़ील फ़रिश्ता होगा या जिब्रील और यह वह पुकार होगी जिस से लोग मैदाने महशर में जमा हो जायेंगे, यानी दूसरी फूँक ।

[2] इस से कुछ ने बैतुल मोक़द्दस के क़रीब का सख़र: (चट्टान) मुराद लिया है । कहते हैं कि यह आकाश से बहुत क़रीब की जगह है । कुछ के क़रीब इसका मतलब यह है कि हर इंसान यह आवाज़ इस तरह सुनेगा जैसे उस के क़रीब ही से आवाज़ आ रही है । (फ़तहुल क़दीर) और यही सही लगता है ।

[3] यह चीख़ यानी यह क़यामत की फूँक ज़रूर होगी, जिस में वह दुनिया में शक करते थे, और यही दिन क़ब्रों से निकलने का दिन होगा ।

[4] यानी आप की दावत और सदुपदेश (नसीहत) से वही नसीहत हासिल करेगा जो अल्लाह और उसकी धमकियों से डरता और उस के वादे पर यक़ीन रखता होगा, इसीलिए हज़रत क़तादा यह दुआ किया करते थे ।

«اللَّهُمَّ اجْعَلْنَا مِمَّنْ يَخَافُ وَعِيدَكَ وَيَرْجُو مَوْعُودَكَ، يَا بَارُّ! يَا رَحِيمُ!»

"हे अल्लाह हमें उनमें से कर जो तेरी धमकियों से डरते और तेरे वादों से उम्मीद रखते हैं । हे एहसान करने वाले, हे रहम करने वाले ।" (इब्ने कसीर)

सूरतुज़ ज़ारियात-५१

سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ

सूरः ज़ारियात मक्का में नाज़िल हुई और इस में साठ आयतें और तीन रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ﴿1﴾

१. क़सम है उड़ाकर बिखेरने वालियों की,

فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ﴿2﴾

२. फिर बोझ उठाने वालियों की,

فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ﴿3﴾

३. फिर धीमी चाल से चलने वालियों की,[1]

فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ﴿4﴾

४. फिर काम का बटवारा करने वालियों की।

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ﴿5﴾

५. यक़ीन करो कि तुम से जो वचन (वादे) दिये जाते हैं (सब) सच हैं।

وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ﴿6﴾

६. और बेशक इंसाफ़ होने वाला है।

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ﴿7﴾

७. क़सम है रास्तों वाले आकाश की।[2]

اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ﴿8﴾

८. निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से तुम मुख़्तलिफ़ बातों में पड़े हुए हो।

يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ﴿9﴾

९. उस से वही फेरा (रोका) जाता है जो फेर दिया गया हो।

قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ﴿10﴾

१०. निर्मूल (अटकल) बातें करने वाले नाश कर दिये गये।

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ﴿11﴾

११. जो अचेत (ग़ाफ़िल) हैं और भूले हुए हैं।

يَسْئَلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿12﴾

१२. पूछते हैं कि बदले का दिन कब होगा?

---

[1] جاريات (जारियात) पानी में चलने वाली नवकायें, يُسْرًا (युस्रन) आसानी से सरलता से।

[2] दूसरा अनुवाद (तर्जुमा) ख़ूबसूरत और मुजय्यन किया गया है, चाँद, सूरज, नक्षत्र और जगमगाते तारे उसकी ऊँचाई और फैलाव, यह सब आसमान की ज़ीनत और ख़ूबसूरती की वजह हैं।

يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُونَ ⑬

१३. (हाँ) यह वह दिन है कि ये आग पर तपाये जायेंगे।

ذُوقُوا فِتْنَتَكُمْ ۖ هَٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ⑭

१४. मज़ा चखो, यही है जिस की तुम जल्दी मचा रहे थे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ⑮

१५. बेशक अल्लाह से डर रखने वाले स्वर्गों और (शीतल) जल स्रोतों (चश्मों) में होंगे।

آخِذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَٰلِكَ مُحْسِنِينَ ⑯

१६. उन के रब ने जो कुछ उन को दिया है उसे ले रहे होंगे, वे तो उस से पहले ही नेकी करने वाले थे।

كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ ⑰

१७. वे रात को बहुत कम सोया करते थे।

وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ⑱

१८. और वे रात के आख़िरी पहर (भोर) में इस्तिग़फ़ार किया करते थे।[1]

وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ⑲

१९. और उनके माल में माँगने वालों का और सवाल करने से बचने वालों का हक़ था।[2]

وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِّلْمُوقِنِينَ ⑳

२०. और यक़ीन करने वालों के लिए तो धरती में बहुत सी निशानियाँ हैं।

وَفِي أَنفُسِكُمْ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ㉑

२१. और ख़ुद तुम्हारे अस्तित्व (वजूद) में भी, तो क्या तुम नहीं देखते हो।

وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ㉒

२२. और तुम्हारी जीविका (रिज़्क़) और जो तुम

---

[1] भोर का समय दुआ के क़ुबूल होने का बहुत अच्छा वक़्त है। हदीस में आता है कि जब रात का तिहाई हिस्सा बाक़ी रह जाता है तो अल्लाह दुनिया के आकाश पर उतर आता है और आवाज़ देता है कि कोई तौबा करने वाला है कि उसकी तौबा क़ुबूल करूँ, कोई माफ़ी माँगने वाला है कि मैं उसे माफ़ करूँ, कोई भिखारी है कि मैं उसकी माँग पूरी कर दूँ, यहाँ तक कि फ़ज्र (प्रभात) हो जाती है। (सहीह मुस्लिम, किताबु सलातिल मुसाफ़िरीन बाबुत तरग़ीबे फ़िद दुआये वज़ ज़िक्रे फ़ी आख़िरिल लैले वल एजाबति फ़ीहि)

[2] محروم (महरूम) से मुराद वह है जो ज़रूरत होने पर भी नहीं माँगता, तो उस के लायक़ होते हुए भी उसे लोग नहीं देते, या वह इंसान है जिसका सब कुछ आकाश और धरती की आपदा (आफ़त) की वजह से नाश हो जाये।

को वादा दिया जाता है सब आकाश में है।

فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَا أَنَّكُمْ تَنطِقُونَ ﴿23﴾

२३. तो आकाश और धरती के रब की क़सम! यह बिल्कुल सच है ऐसा ही जैसे कि तुम बातें करते हो।

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ الْمُكْرَمِينَ ﴿24﴾

२४. क्या तुझे इब्राहीम (ﷺ) के सम्मानित मेहमानों की ख़बर भी पहुँची है?

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ سَلَامٌ قَوْمٌ مُّنكَرُونَ ﴿25﴾

२५. वे जब उनके यहाँ आये तो सलाम किया, (इब्राहीम) ने सलाम का जवाब दिया (और कहा ये तो) अंजान लोग हैं।

فَرَاغَ إِلَىٰ أَهْلِهِ فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ ﴿26﴾

२६. फिर (चुपचाप जल्दी-जल्दी) अपने परिवार वालों की तरफ़ गये और एक मोटे बछड़े का (गोश्त) लाये।

فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿27﴾

२७. और उसे उनके पास रखा और कहा आप खाते क्यों नहीं?

فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ ۖ وَبَشَّرُوهُ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ﴿28﴾

२८. फिर दिल ही दिल में उन से डर गये[1] उन्होंने कहा कि आप डरे नहीं[2] और उन्होंने (हज़रत) इब्राहीम को एक ज्ञानी (आलिम) पुत्र के होने की ख़ुशख़बरी दी।

فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُ فِي صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ ﴿29﴾

२९. तो उनकी पत्नी ने तअज्जुब में आकर[3] अपने मुँह पर हाथ मार कर कहा कि मैं तो बुढ़िया हूँ, साथ ही बाँझ।

قَالُوا كَذَٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿30﴾

३०. उन्होंने कहा कि हाँ तेरे रब ने इसी तरह कहा है, बेशक वह हिक्मत वाला और जानने वाला है।[4]

---

[1] डर का एहसास इसलिए किया कि हज़रत इब्राहीम ने सोचा कि यह आने वाले किसी अच्छे विचार (इरादे) से नहीं आये हैं बल्कि बुरे इरादे से आये हैं।

[2]- हज़रत इब्राहीम ﷺ के मुँह पर डर के चिन्ह देखकर फ़रिश्तों ने कहा।

[3] صَرَّةٍ (सर्रतिन) का दूसरा मायने है चीख़ और पुकार यानी चीख़ते हुए कहा।

[4] यानी जैसे हम ने तुझ से कहा है, यह हम ने अपनी तरफ़ से नहीं कहा है बल्कि तेरे रब ने इसी तरह कहा है, जिस से हम तुझे ख़बर कर रहे हैं, इसलिए इस में न आश्चर्य (ताज्जुब) की ज़रूरत है न शक की, क्योंकि जो अल्लाह चाहता है ज़रूर होकर रहता है।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿31﴾

३१. (हज़रत इब्राहीम عليه السلام ने) कहा कि अल्लाह के भेजे हुए (फ़रिश्तो!) तुम्हारा क्या उद्देश्य (मक़सद) है?

قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُجْرِمِينَ ﴿32﴾

३२. उन्होंने जवाब दिया कि हम पापी लोगों की तरफ़ भेजे गये हैं।[1]

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِنْ طِينٍ ﴿33﴾

३३. ताकि हम उन पर मिट्टी के कंकरियों की वर्षा करें।

مُسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ﴿34﴾

३४. जो तेरे रब की तरफ़ से नामांकित (नामज़द) हो चुकी हैं उन सीमा (हद) तोड़ने वालों के लिए।

فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿35﴾

३५. तो जितने ईमान वाले वहाँ थे, हम ने उन्हें निकाल दिया।

فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿36﴾

३६. और हम ने वहाँ मुसलमानों का सिर्फ़ एक ही घर पाया।[2]

وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿37﴾

३७. और वहाँ हम ने उन के लिए जो कष्टदायी अज़ाब का डर रखते हैं, एक पूरी निशानी छोड़ी।

وَفِي مُوسَىٰ إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ﴿38﴾

३८. और मूसा की कथा में (भी हमारी तरफ़ से चेतावनी है) जबकि हम ने उसे फ़िरऔन की तरफ़ साफ़ प्रमाण (सुबूत) देकर भेजा।

فَتَوَلَّىٰ بِرُكْنِهِ وَقَالَ سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿39﴾

३९. तो उस ने अपने बल बूते पर मुँह मोड़ा[3] और कहने लगा कि यह जादूगर है या दीवाना है।

---

[1] इस से अभिप्राय (मुराद) लूत की क़ौम है, जिस का सब से बड़ा गुनाह लिवातत (समलैंगिक मैथुन) था।

[2] और यह अल्लाह के पैग़म्बर (संदेष्टा) हज़रत लूत عليه السلام का घर था, जिस में उनकी दो पुत्रियाँ और कुछ ईमान वाले थे।

[3] मज़बूत पहलू को रुक्न कहते हैं, यहाँ मुराद उसकी अपनी ताक़त और सेना है।

فَأَخَذْنَٰهُ وَجُنُودَهُۥ فَنَبَذْنَٰهُمْ فِى ٱلْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿40﴾

४०. आख़िर हम ने उसे और उसकी सेना को अपनी यातना (अज़ाब) में पकड़ कर समुद्र में डाल दिया, वह था ही निंदनीय (मलामत के लायक़)।

وَفِى عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ ٱلرِّيحَ ٱلْعَقِيمَ ﴿41﴾

४१. उसी तरह आदियों में भी (हमारी तरफ़ से तंबीह है) जब कि हम ने उन पर बांझ (अशुभ) आंधी भेजी।[1]

مَا تَذَرُ مِن شَىْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ كَٱلرَّمِيمِ ﴿42﴾

४२. वह जिस-जिस चीज़ पर आती थी उसे जीर्ण अस्थियों (बोसीदा हड्डियों) की तरह चूर-चूर कर देती थी।[2]

وَفِى ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا۟ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿43﴾

४३. और समूद (की कथा) में भी (नसीहत है) जब उन से कहा गया कि तुम कुछ दिनों तक फ़ायेदा उठा लो।[3]

فَعَتَوْا۟ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ ٱلصَّٰعِقَةُ وَهُمْ يَنظُرُونَ ﴿44﴾

४४. लेकिन उन्होंने अपने रब के हुक्म की नाफ़रमानी की, जिस पर उन्हें उन के देखते-देखते (तेज़) कड़क ने बरबाद कर दिया।

فَمَا ٱسْتَطَٰعُوا۟ مِن قِيَامٍ وَمَا كَانُوا۟ مُنتَصِرِينَ ﴿45﴾

४५. फिर न तो वह खड़े हो सके और न बदला ले सके।

وَقَوْمَ نُوحٍ مِّن قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ قَوْمًا فَٰسِقِينَ ﴿46﴾

४६. और नूह (अलैहिस्सलाम) की क़ौम का भी इस से पहले (यही हाल हो चुका था) वे भी बड़े अवज्ञाकारी (नाफ़रमान) लोग थे।

---

[1] ٱلرِّيحَ ٱلْعَقِيمَ (बांझ हवा) जिस में ख़ैर व बरकत नहीं थी। वह हवा पेड़ों को फलदार करने वाली थी न वर्षा (बारिश) की ख़बर देने वाली, बल्कि केवल तबाही और अज़ाब की हवा थी।

[2] यह उस हवा का असर था जो आद की क़ौम पर प्रकोप (अज़ाब) के रूप में भेजी गई, यह तेज़ हवा सात रातें और आठ दिन लगातार चलती रही। (अल-हाक़्क़:-७)

[3] यानी जब उन्होंने अपने ही माँग किये चमत्कार (मोजिज़े) से प्रकट ऊँटनी को क़त्ल कर दिया तो उन से कह दिया गया कि अब तीन दिन तुम और दुनिया का मज़ा ले लो। तीन दिन के बाद तुम तबाह कर दिये जाओगे, यह इसी तरफ़ इशारा है। कुछ ने इसे सालेह (अलैहिस्सलाम) की नबूअत के शुरू का वादा माना है, लफ़्ज़ों का यह मायने भी हो सकता है बल्कि पहले वाक्य-क्रम (स्याक़) से यही मायने ज़्यादा ठीक है।

४७. और आकाश को हम ने (अपने) हाथों से बनाया है और बेशक हम विस्तार (कुशादगी) करने वाले हैं।

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْىدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ﴿47﴾

४८. और धरती को हम ने फ़र्श बना दिया है[1] तो हम बहुत अच्छे बिछाने वाले हैं।

وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ﴿48﴾

४९. और हर चीज़ को हम ने जोड़ा-जोड़ा पैदा किया है[2] ताकि तुम नसीहत हासिल करो।

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿49﴾

५०. तो तुम अल्लाह की तरफ़ दौड़-भाग (यानी ध्यान) करो। बेशक मैं तुम्हें उसकी तरफ़ से साफ़ तौर से आगाह करने वाला हूँ।

فَفِرُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۭ اِنِّىْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿50﴾

५१. और अल्लाह के साथ किसी दूसरे को देवता (माबूद) न बनाओ। बेशक मैं तुम्हें उसकी तरफ़ से स्पष्ट (वाज़ेह) रूप से सचेत (आगाह) करने वाला हूँ।

وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ ۭ اِنِّىْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿51﴾

५२. इसी तरह जो लोग उन से पहले गुज़रे हैं, उन के पास जो भी रसूल आया उन्होंने कह दिया कि या तो यह जादूगर है या दीवाना है।

كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿52﴾

५३. क्या ये इस बात की एक-दूसरे को वसीयत करते गये हैं, नहीं बल्कि ये सभी सरकश हैं।

اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿53﴾

५४. तो आप उनसे मुँह फेर लें, आप पर कोई मलामत (इल्ज़ाम) नहीं।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ﴿54﴾

५५. और शिक्षा (नसीहत) देते रहें, बेशक ये शिक्षा ईमानवालों को फ़ायेदा देगी।[3]

وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿55﴾

---

[1] यानी बिस्तर की तरह उसे बिछा दिया।

[2] यानी हर चीज़ को जोड़ा-जोड़ा नर और मादा या उस के मुक़ाबिल और विलोम (ज़िद) को भी पैदा किया है। जैसे अंधेरा-उजाला, थल-जल, चाँद-सूरज, मीठा-कड़ुवा, रात-दिन, भला-बुरा, जीवन-मृत्यु, ईमान-कुफ़्र, सौभाग्य-दुर्भाग्य, स्वर्ग-नरक, जिन्न-इंसान, आदि (वग़ैरह)। यहाँ तक कि जानदार के मुक़ाबले में बेजान। इसलिए ज़रूरी है कि दुनिया का भी जोड़ा हो यानी परलोक (आख़िरत), दुनिया के मुक़ाबिले में दूसरी ज़िंदगी।

[3] इसलिए कि नसीहत से फ़ायेदा उन्हीं को पहुँचता है, या मतलब यह है कि आप शिक्षा

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿56﴾

५६. मैंने जिन्नात और इंसानों को सिर्फ इसीलिए पैदा किया है कि वे केवल मेरी इबादत करें।[1]

مَا أُرِيدُ مِنْهُم مِّن رِّزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَن يُطْعِمُونِ ﴿57﴾

५७. न मैं उन से जीविका (रिज़्क) चाहता हूँ, न मेरी यह इच्छा है कि ये मुझे खिलायें।

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ﴿58﴾

५८. यक़ीनन अल्लाह (तआला) तो ख़ुद रोज़ी देने वाला ताक़त वाला और बलवान है।

فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذَنُوبًا مِّثْلَ ذَنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ﴿59﴾

५९. तो जिन लोगों ने ज़ुल्म किया है उन्हें भी उन के साथियों के हिस्से के बराबर हिस्सा मिलेगा, इसलिए वे मुझ से जल्दी न मांगें।

فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِن يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿60﴾

६०. तो ख़राबी है काफ़िरों को उन के उस दिन की जिसका वह वादा दिये जाते हैं।

سُورَةُ الطُّورِ

सूरतुत्तूर-५२

सूरः तूर मक्का में नाज़िल हुई और इस में उन्चास आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَالطُّورِ ﴿1﴾

१. क़सम है तूर की।[2]

(नसीहत) देते रहें, इस से वह ज़रूर फ़ायेदा हासिल करेंगे, जिन के बारे में अल्लाह के ज्ञान (इल्म) में है कि वह ईमान लायेंगे।

[1] इस में अल्लाह के उस इरादे (मशीयत) को ज़ाहिर किया गया जो शरीअत के अनुसार वह बंदों से चाहता है कि सारे इंसान और जिन्न सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करें और आज्ञापालन (इताअत) भी उसी एक की करें, अगर इसका सम्बन्ध उत्पत्ति (तक्वीन) के इरादे से होता तो सब उसकी इबादत और आज्ञापालन के लिए मजबूर होते और कोई उस से फिरने की क़ुदरत न रखता, यानी इस में इंसानों और जिन्नों को उन के जीवन का मक़सद याद कराया गया है, जिसे अगर उन्होंने भूलाये रखा तो आख़िरत में कड़ी पूछ होगी और वह उस इम्तेहान में नाकाम माने जायेंगे जिस में अल्लाह ने उन्हें इरादे और पसंद की आज़ादी दे रखी है।

[2] तूर वह पहाड़ है जिस पर मूसा (ﷺ) से अल्लाह ने बात की। उसे तूर सीना भी कहा जाता है, अल्लाह ने उस के इसी महत्व (अहमियत) की वजह से उसकी क़सम ली है।

وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ﴿2﴾

२. और लिखी हुई किताब की।

فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ﴿3﴾

३. जो झिल्ली के खुले हुए पन्नों में है।

وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ﴿4﴾

४. और आबाद घर की।[1]

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ﴿5﴾

५. और ऊँची छत की।

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ﴿6﴾

६. और भड़काए हुए सागर की।

اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ﴿7﴾

७. बेशक आप के रब का अज़ाब होकर रहने वाला है।

مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ﴿8﴾

८. उसे कोई रोकने वाला नहीं।

يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ﴿9﴾

९. जिस दिन आकाश थरथराने लगेगा।[2]

وَّتَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ﴿10﴾

१०. और पहाड़ चलने-फिरने लगेंगे।

فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿11﴾

११. उस दिन झुठलाने वालों की (पूरी) ख़राबी है।

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ﴿12﴾

१२. जो अपनी बेहूदा बातों में उछल-कूद कर रहे हैं।

---

[1] यह بيت معمور (बैतें मअमूर) सातवें आसमान पर वह इबादत घर है, जिस में फ़रिश्ते इबादत करते हैं, यह इबादत घर फ़रिश्तों से इस तरह भरा रहता है कि रोज़ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इबादत के लिए आते हैं, जिनकी फिर क़यामत तक दोबारा बारी नहीं आयेगी, जैसाकि मेराज की हदीसों में बयान किया गया है, कुछ ने बैते मअमूर से ख़ानये काबा मुराद लिया है जो इबादत के लिए आने वाले इंसानों से हर समय भरा रहता है। मअमूर का मतलब है आबाद और भरा हुआ।

[2] مور (मौर) का मतलब है गति और उथल-पुथल, क़यामत के दिन आकाश के प्रबंध (निज़ाम) में जो उथल-पुथल और तारों की टूट-फूट की वजह से जो बिखराव पैदा होगा, उसको इन शब्दों से व्यंजित (ताबीर) किया गया है, और यह उपर बयान किये गये अज़ाब के लिए समय है, यानी यह अज़ाब उस दिन होगा जब आकाश थरथरायेगा और पहाड़ अपनी जगह छोड़कर रूई के गालों की तरह और रेत के कणों (ज़र्रों) की तरह उड़ जायेंगे।

يَوْمَ يُدَعُّونَ إِلَىٰ نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ﴿13﴾

१३. जिस दिन वे धक्के दे-देकर जहन्नम की आग की तरफ़ लाये जायेंगे।

هَٰذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿14﴾

१४. यही (नरक की) वह आग है जिसे तुम झूठ कहते थे।

أَفَسِحْرٌ هَٰذَا أَمْ أَنتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ﴿15﴾

१५. (अब बताओ) क्या यह जादू है? या तुम देखते ही नहीं हो।

اصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ ۖ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿16﴾

१६. इस में जाओ, (नरक में) अब तुम्हारा धैर्य (सब्र) रखना और न रखना तुम्हारे लिए बराबर है, तुम्हें केवल तुम्हारे कर्मों (अमल) का बदला दिया जायेगा।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَعِيمٍ ﴿17﴾

१७. बेशक सदाचारी (परहेज़गार) लोग जन्नत में और सुखों में हैं।

فَاكِهِينَ بِمَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقَاهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿18﴾

१८. उन्हें जो उन के रब ने दे रखी हैं, उस पर ख़ुश हैं, और उन्हें उनके रब ने नरक के अज़ाब से भी बचा लिया है।

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿19﴾

१९. तुम मज़े से ख़ाते-पीते रहो उन अमलों के बदले जो तुम करते थे।

مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ ۖ وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ﴿20﴾

२०. बराबर बिछे हुए ख़ूबसूरत तख़्त पर तकिये लगाये हुए।[1] और हम ने उन की शादी बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरों से कर दिये हैं।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُم مِّنْ عَمَلِهِم مِّن شَيْءٍ ۚ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ﴿21﴾

२१. और जो लोग ईमान लाये और उन की औलाद ने भी ईमान में उन का अनुगमन (पैरवी) किया हम उन की औलाद को उन तक पहुँचा देंगे और उन के कर्मों से हम कुछ कम न करेंगे, हर इंसान अपने-अपने कर्मों (अमल) का गिरवी है।

---

[1] مَصْفُوفَةٍ (मस्फ़ूफ़:) एक-दूसरे से मिले हुए, जैसेकि वह पंक्तिवद्ध (सफ़बस्ता) हैं, या कुछ ने उसका मतलब बयान किया है कि वह आपस में आमने-सामने होंगे, जैसे मैदाने जंग में सेनायें (फ़ौजें) आमने-सामने होती हैं।

وَأَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿22﴾

२२. और हम उन के लिए मेवे और मज़ेदार (मरग़ूब) गोश्त की रेल-पेल कर देंगे।

يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَّا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأْثِيمٌ ﴿23﴾

२३. (ख़ुशी के साथ) वे एक-दूसरे से (शराब के) प्याले की छीना-झपटी करेंगे, जिस शराब के मज़े में न बेहूदा कलाम निकलेंगे और न पाप होगा।[1]

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُونٌ ﴿24﴾

२४. और उन के चारों तरफ़ सेवा के लिए (सेवक) बालक चल-फिर रहे होंगे, जैसेकि वे मोती थे जो छिपाकर रखे थे।

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿25﴾

२५. और वे आपस में एक-दूसरे की तरफ़ मुंह करके सवाल करेंगे।

قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿26﴾

२६. कहेंगे कि इस से पहले हम अपने घर वालों में बहुत डरा करते थे।

فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَانَا عَذَابَ السَّمُومِ ﴿27﴾

२७. तो अल्लाह (तआला) ने हम पर बड़ा उपकार (एहसान) किया, और हमें तेज़ गर्म हवाओं के प्रकोप (अज़ाब) से बचा लिया।[2]

إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلُ نَدْعُوهُ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ﴿28﴾

२८. हम इस के पहले ही उस को पुकारा करते थे[3] बेशक वह बड़ा एहसान करने वाला और बड़ा दयालु (रहम करने वाला) है।

فَذَكِّرْ فَمَا أَنتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ﴿29﴾

२९. तो आप समझाते रहें, क्योंकि आप अपने रब की नेमत से न तो काहिन (ज्योतिषी) हैं न दीवाना।

أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهِ رَيْبَ الْمَنُونِ ﴿30﴾

३०. क्या (काफ़िर) इस तरह कहते हैं कि यह शायर है, हम उस पर कालचक्र (यानी मौत) का इंतेज़ार कर रहे हैं।

---

[1] उस शराब में दुनियावी शराब का असर नहीं होगा, उसे पीकर न कोई बहकेगा कि अपशब्द कहे, न इतना बेसुध होगा कि गुनाह करे।

[2] سَمُوم (समूम) लू, झुलसाने वाली गर्म हवा को कहते हैं, नरक के नामों में से एक नाम भी है।

[3] यानी केवल उसी एक की वंदना (इबादत) करते थे, उस के साथ किसी को साझी नहीं करते थे, या यह मतलब है कि उसी से जहन्नम के अज़ाब से बचने की दुआ करते थे।

३१. (आप) कह दीजिए कि तुम इंतेजार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतेजार करने वालों में हूं।

قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُتَرَبِّصِينَ ﴿31﴾

३२. क्या उनकी बुद्धियाँ (अक्लें) उन्हें यही सिखाती हैं? या ये लोग ही उद्दण्ड (सरकश) हैं।

أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُم بِهَٰذَا ۚ أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿32﴾

३३. क्या ये कहते हैं कि इस (नबी) ने (कुरआन) खुद गढ़ लिया है, हकीकत यह है कि वे ईमान नहीं लाते।

أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُ ۚ بَل لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿33﴾

३४. अच्छा, अगर यह सच्चे हैं तो भला इस जैसी एक (ही) बात यह (भी) तो ले आयें।[1]

فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِن كَانُوا صَادِقِينَ ﴿34﴾

३५. क्या ये बिना किसी (पैदा करने वाले) के खुद ही पैदा हो गये हैं, या ये खुद पैदा करने वाले हैं?

أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ﴿35﴾

३६. क्या उन्होंने ने ही आसमानों और जमीन को पैदा किया है? बल्कि ये यकीन न करने वाले लोग हैं।

أَمْ خَلَقُوا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ ۚ بَل لَّا يُوقِنُونَ ﴿36﴾

३७. या क्या इन के पास तेरे रब के खजाने हैं? या (उन खजानों के) ये रक्षक (मुहाफिज) हैं।

أَمْ عِندَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُونَ ﴿37﴾

३८. या क्या इन के पास कोई सीढ़ी है, जिस पर चढ़कर सुनते हैं? (अगर ऐसा है) तो उनका सुनने वाला कोई वाजेह सुबूत पेश करे।

أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ ۖ فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعُهُم بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿38﴾

३९. क्या अल्लाह की तो सब पुत्रियाँ हैं और तुम्हारे लिए पुत्र हैं?

أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ﴿39﴾

४०. क्या तू इन से कोई मजदूरी माँगता है कि ये उसके बोझ से दबे जा रहे हैं?

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ﴿40﴾

४१. क्या इन के पास परोक्ष (ग़ैब) का इल्म है जिसे ये लिख लेते हैं?

أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿41﴾

---

[1] यानी अगर यह अपने दावे में सच्चे हैं कि यह कुरआन मोहम्मद (ﷺ) ने खुद गढ़ लिया है तो फिर यह भी इस जैसी किताब बनाकर पेश कर दें, जो बलागत, मोजिजे और असर, उसलूब, इजहारे हकीकत और मसलों (समस्याओं) के हल में इसका मुकाबला कर सके।

أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ﴿42﴾

४२. क्या ये लोग कोई छल करना चाहते हैं? तो (यक़ीन कर लें) कि छल करने वाला गुट काफ़िरों का है।

أَمْ لَهُمْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿43﴾

४३. क्या अल्लाह के सिवाय उनका कोई दूसरा माबूद है? (कभी नहीं) अल्लाह (तआला) उन के शिर्क से (शुद्ध) और पाक है।

وَإِن يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَّرْكُومٌ ﴿44﴾

४४. अगर ये लोग आकाश के किसी टुकड़े को गिरता हुआ देख लें, तब भी कह दें कि यह तह पर तह बादल है।[1]

فَذَرْهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ﴿45﴾

४५. तो आप उन्हें छोड़ दें यहाँ तक कि वे अपने उस दिन से मिल जायें जिस में ये बेहोश कर दिये जायेंगे।

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿46﴾

४६. जिस दिन उन्हें उनकी चाल कुछ काम न आयेगी और न वे मदद किये जायेंगे।

وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَٰلِكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿47﴾

४७. बेशक ज़ालिमों के लिए इस के सिवाय दूसरे अज़ाब भी हैं, लेकिन उन लोगों में से ज़्यादातर लोग अंजान हैं।

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا ۖ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ﴿48﴾

४८. तू अपने रब के हुक्म की इंतेज़ार में सब्र से काम ले, बेशक तू हमारी आँखों के सामने है, और सुबह जब तू उठे[2] अपने रब की पाकी और प्रशंसा (हम्द) का ज़िक्र कर।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ﴿49﴾

४९. और रात को भी उसकी तस्बीह[3] कर, और तारों के डूबते समय भी।

---

[1] मुराद यह है कि अपने कुफ़्र और उदण्डता (सरकशी) से फिर भी नहीं रुकेंगे, बल्कि ढीठाई करते हुए कहेंगे कि यह प्रकोप (अज़ाब) नहीं बल्कि एक पर एक बादल चढ़ा आ रहा है। जैसाकि कुछ मौक़ों पर ऐसा होता है।

[2] इस खड़े होने से कौन-सा खड़ा होना मुराद है ? कुछ कहते हैं कि जब नमाज़ के लिए खड़े हों, जैसाकि नमाज़ के शुरू में «سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ» पढ़ी जाती है। कुछ कहते हैं कि जब जाग कर खड़े हों, उस समय भी अल्लाह की तस्बीह महिमागान और तारीफ़ मस्नून (उचित) है, कुछ कहते हैं कि जब किसी बैठक (सभा) से खड़े हों।

[3] इस से अभिप्राय (मुराद) क़्यामुल्लैल यानी तहज्जुद की नमाज़ है, जो ज़िन्दगी भर नबी ﷺ का नियम रहा।

سُوْرَةُ النَّجْمِ

सूरतुन नज्म-५३

सूर: नज्म* मक्का में नाज़िल हुई, इसमें बासठ आयतें और तीन रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ۙ (1)

१. क़सम है सितारे की जब वे गिरे।[1]

مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ۚ (2)

२. कि तुम्हारे साथी ने न रास्ता खोया है न वह टेढ़े रास्ते पर है।

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ۗ (3)

३. और न वह अपनी मर्ज़ी से कोई बात कहते हैं।

اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ۙ (4)

४. वह तो केवल वह्यी (आकाशवाणी) है जो नाज़िल की जाती है।

عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ۙ (5)

५. उसे पूरी ताक़त वाले फ़रिश्ते ने सिखाया है।

ذُوْ مِرَّةٍ ؕ فَاسْتَوٰى ۙ (6)

६. जो ताक़तवर है[2] फिर वह सीधा खड़ा हो गया।

وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ؕ (7)

७. और वह उच्च आकाश के किनारों (उफ़ुक़) पर था।

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ۙ (8)

८. फिर क़रीब हुआ और उतर आया।

---

* यह पहली सूर: है जिस को रसूलुल्लाह ﷺ ने काफ़िरों के जन-समूह (मजमे) में सुनाया। इस के बाद जितने लोग आप के पीछे थे सब ने सज्दा किया सिवाये उमय्या बिन ख़लफ़ के, उस ने अपनी मुट्ठी में मिट्टी ले कर उस पर सज्दा किया, आख़िर में वह कुफ़्र ही की दशा (हालत) में मारा गया। (सहीह बुख़ारी)

[1] कुछ भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) ने तारा से सुरय्या (कृतिका नक्षत्र) मुराद लिया है और कुछ ने ज़ोहरा तारा लिया है, और कुछ ने साधारण (आम) तारा लिया है।

[2] इस से अभिप्राय (मुराद) जिब्रील फ़रिश्ता है जो बलवान और बहुत ज़्यादा ताक़त वाला है। पैग़म्बर पर वह्यी लाने और उसे शिक्षा देने वाला यही फ़रिश्ता है।

९. तो वह दो कमान के बराबर दूरी पर रह गया, बल्कि उस से भी कम ।[1]	فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ﴿9﴾
१०. तो उस ने अल्लाह के बंदे को संदेश (पैगाम) पहुँचाया जो भी पहुँचाया ।	فَاَوْحٰٓى اِلٰى عَبْدِهٖ مَآ اَوْحٰى ﴿10﴾
११. दिल ने झूठ नहीं कहा जिसे (रसूल ने) देखा।	مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ﴿11﴾
१२. क्या तुम झगड़ा करते हो उस पर जो (पैगम्बर-संदेष्टा) देखते हैं ।	اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ﴿12﴾
१३. उसे तो एक वार और भी देखा था ।	وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ﴿13﴾
१४. सिदरतुल मुन्तहा के क़रीब ।[2]	عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ﴿14﴾
१५. उसी के क़रीब जन्नतुल मावा है ।[3]	عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ﴿15﴾
१६. जबकि सिदरह को छिपाये लेती थी वह चीज जो उस पर छा रही थी ।	اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ﴿16﴾
१७. न तो नज़र बहकी, न सीमा (हद) से बढ़ी ।	مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ﴿17﴾
१८. निश्चय (यक़ीनन) उस ने अपने रब की बड़ी-बड़ी निशानियों में से कुछ निशानियाँ देख लीं ।	لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ﴿18﴾
१९. क्या तुम ने लात और उज्ज़ा को देखा ।	اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ﴿19﴾

[1] कुछ ने अनुवाद (तर्जुमा) किया है, दो हाथों के बराबर, यह नबी ﷺ और जिब्रील ﷺ की आपस में समीपता (क़ुरबत) का बयान है । अल्लाह तआला और नबी ﷺ के क़रीब होने का बयान नहीं, जैसाकि कुछ लोग यक़ीन दिलाते हैं ।

[2] यह मेराज की रात में जब जिब्रील को असली रूप (शक्ल) में देखा, उसका बयान है । यह सिद्रतुल मुन्तहा एक बैरी का पेड़ है, जो छठें या सातवें आकाश पर है और यह आख़िरी हद है, उस से ऊपर कोई फ़रिश्ता नहीं जा सकता, फ़रिश्ते अल्लाह का हुक्म भी यहीं से हासिल करते हैं ।

[3] इसे "जन्नतुल मावा" इसलिए कहते हैं कि आदम ﷺ का आवास और निवास यही था, कुछ कहते हैं कि आत्मायें (रूहें) यहीं आकर जमा होती हैं ।

وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْأُخْرٰى ﴿20﴾

२०. और तीसरे आख़िरी मनात को ।[1]

اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ﴿21﴾

२१. क्या तुम्हारे लिए पुत्र और उस (अल्लाह) के लिए पुत्रियां हैं?

تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ﴿22﴾

२२. यह तो अब बड़ी नाइंसाफ़ी का बटवारा है ।

اِنْ هِيَ اِلَّآ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْاَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ﴿23﴾

२३. असल में ये केवल नाम हैं जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने उन के रख लिये हैं, अल्लाह ने उनका कोई सुबूत नहीं उतारा । ये लोग तो केवल अटकल और अपनी मनोकांक्षाओं (ख़्वाहिशात) के पीछे पड़े हुए हैं, और बेशक उन के रब की तरफ़ से उनके पास मार्गदर्शन (हिदायत) आ चुका है ।

اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ﴿24﴾

२४. क्या हर इंसान जो कामना (तमन्ना) करे उसे सुलभ (हासिल) है?

فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ﴿25﴾

२५. अल्लाह ही के लिए है यह लोक और वह आख़िरत ।

وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا مِنْ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ﴿26﴾

२६. और बहुत से फ़रिश्ते आकाशों में हैं जिन की सिफ़ारिश कोई लाभ नहीं दे सकती, लेकिन यह दूसरी बात है कि अल्लाह (तआला) अपनी इच्छा से और अपनी ख़ुशी से जिसे चाहे आज्ञा (इजाज़त) दे दे ।[2]

---

[1] यह मुश्रेकीन (बहुदेववादियों) को फटकारने के लिए कहा जा रहा है कि अल्लाह तो वह है जिस ने जिब्रील ﷺ जैसे महान फ़रिश्तों को पैदा किया । मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ जैसे उस के संदेशवाहक (रसूल) हैं, जिन्हें उस ने आकाशों पर बुलाकर अपनी बड़ी-बड़ी निशानियों को भी दिखाया और उन पर प्रकाशना (वह्यी) भी उतारता है, क्या तुम जिन पूज्यों (माबूदों) की इबादत करते हो उन में भी यह या इस तरह के गुण (सिफ़्त) हैं?

[2] यानी फ़रिश्ते जो अल्लाह की क़रीबी मख़लूक़ (सृष्टि) हैं उनको भी सिफ़ारिश का हक़ केवल उन्हीं लोगों के लिये होगा जिन के लिये अल्लाह पसन्द करेगा । जब यह बात है तो फिर यह पत्थर की मूर्तियां कैसे सिफ़ारिश कर सकेंगी जिन से तुम उम्मीद लगाये बैठे हो? फिर अल्लाह मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) के लिए किसी को सिफ़ारिश करने का हक़ ही कहां देगा जब कि शिर्क उस के यहां माफ़ होने वाला नहीं है, जिसे वह कभी माफ़ नहीं करेगा?

२७. बेशक जो लोग आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते, वे फ़रिश्तों को देवियों का नाम देते हैं।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ لَيُسَمُّونَ الْمَلَائِكَةَ تَسْمِيَةَ الْأُنْثَىٰ (27)

२८. अगरचे उन्हें इसका कोई ज्ञान (इल्म) नहीं, वे केवल अपने गुमान के पीछे पड़े हुए हैं, और बेशक वहम (और अनुमान) सच के सामने कुछ काम नहीं देता।

وَمَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ ۖ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا (28)

२९. तो आप उस से मुँह मोड़ लें जो हमारी याद से मुख मोड़े और जिनका उद्देश्य (मक़सद) केवल दुनियावी जीवन के अलावा कुछ न हो।

فَأَعْرِضْ عَنْ مَنْ تَوَلَّىٰ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا (29)

३०. यही उन के ज्ञान (इल्म) की हद है, आप का रब उसे अच्छी तरह जानता है जो उस के रास्ते से भटक गया है, और वही अच्छी तरह जानता है उसे भी जो संमार्ग (हिदायत) प्राप्त है।

ذَٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدَىٰ (30)

३१. और अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, ताकि वह (अल्लाह तआला) बुरे काम करने वालों को उन के कर्मों (अमल) का बदला दे और नेक लोगों को अच्छा बदला दे।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ أَسَاءُوا بِمَا عَمِلُوا وَيَجْزِيَ الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَى (31)

३२. उन लोगों को जो बड़े गुनाहों से बचते हैं और बेशर्मी से भी[1] सिवाय किसी छोटे से पाप के, बेशक तेरा रब उदार (कुशादा) माफ़ करने वाला है, वह तुम्हें अच्छी तरह जानता है जबकि उस ने तुम्हें धरती से पैदा किया और जबकि तुम अपनी माताओं के गर्भ में बच्चे थे, तो तुम अपनी पाकी ख़ुद बयान न करो, वही

الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَائِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّمَمَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۚ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجِنَّةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ ۖ فَلَا تُزَكُّوا أَنْفُسَكُمْ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَىٰ (32)

---

[1] كَبَائِرُ (कवायेर) كَبِيرَةٌ (कबीरह) का बहुवचन (जमा) है। महापाप की तारीफ़ में मतभेद (इख़्तिलाफ़) है। ज़्यादातर धर्म ज्ञानियों (आलिमों) के क़रीब हर वह पाप महापाप है जिस पर नरक की चेतावनी है या जिस के करने पर कड़ी निंदा क़ुरआन और हदीस में की गई है, और धर्मज्ञानी यह भी कहते हैं कि छोटे पाप भी बार-बार और हमेशा करने से महापाप बन जाते हैं।

नेक लोगों को अच्छी तरह जानता है।

أَفَرَءَيْتَ الَّذِي تَوَلَّىٰ ﴿33﴾

३३. क्या आप ने उसे देखा जिस ने मुंह मोड़ लिया।

وَأَعْطَىٰ قَلِيلًا وَأَكْدَىٰ ﴿34﴾

३४. और बहुत कम दिया और हाथ रोक लिया।

أَعِندَهُۥ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَىٰ ﴿35﴾

३५. क्या उसे परोक्ष (ग़ैब) का ज्ञान है कि वह (सब कुछ) देख रहा है?

أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَىٰ ﴿36﴾

३६. क्या उसे उस बात की ख़बर नहीं दी गयी जो मूसा (ﷺ) के सहीफ़े (ग्रन्थ) में थी।

وَإِبْرَٰهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰٓ ﴿37﴾

३७. और वफ़ादार इब्राहीम (ﷺ) के ग्रन्थ में थी?

أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ﴿38﴾

३८. कि कोई इंसान किसी दूसरे का बोझ न उठायेगा।

وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنسَٰنِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ﴿39﴾

३९. और यह कि हर इंसान के लिए केवल वही है जिस की कोशिश ख़ुद उस ने की।[1]

وَأَنَّ سَعْيَهُۥ سَوْفَ يُرَىٰ ﴿40﴾

४०. और यह कि बेशक उसकी कोशिश जल्द देखी जायेगी।[2]

ثُمَّ يُجْزَىٰهُ الْجَزَآءَ الْأَوْفَىٰ ﴿41﴾

४१. फिर उसे पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा।

وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنتَهَىٰ ﴿42﴾

४२. और यह कि आप के रब ही की तरफ़ पहुँचना है।

وَأَنَّهُۥ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ ﴿43﴾

४३. और यह कि वही हँसाता है और वही रुलाता है।

وَأَنَّهُۥ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا ﴿44﴾

४४. और यह कि वही मारता है और वही जिन्दा करता है।

---

[1] यानी जिस तरह कोई किसी दूसरे के पाप का ज़िम्मेदार नहीं होगा, इसी तरह उसे आख़िरत में फल भी उसी चीज़ का मिलेगा, जिस में उस ने अपनी मेहनत की होगी।

[2] यानी उस ने दुनिया में अच्छा या बुरा जो कुछ भी किया, छिपे या खुले तौर से किया, क़यामत के दिन आगे आ जायेगा और उस पर उसे पूरा बदला दिया जायेगा।

४५. और यह कि उसी ने जोड़ा यानी नर-मादा पैदा किया है।	وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ﴿45﴾
४६. वीर्य (नुतफ़ा) से जबकि वह टपकाया जाता है।	مِن نُّطْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ ﴿46﴾
४७. और यह कि दोबारा ज़िन्दा करना उसी की ज़िम्मेदारी है।	وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْأُخْرَىٰ ﴿47﴾
४८. और यह कि वही धनवान बनाता है और धन देता है।[1]	وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ﴿48﴾
४९. और यह कि वही शेअ्रा (तारे) का रब है।[2]	وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ الشِّعْرَىٰ ﴿49﴾
५०. और यह कि उसी ने पहले आद को नष्ट (हलाक) किया है।	وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ﴿50﴾
५१. और समूद को भी (जिन में से) एक को भी बाक़ी न रखा।	وَثَمُودَا فَمَا أَبْقَىٰ ﴿51﴾
५२. और उससे पहले नूह की क़ौम को, बेशक वे बड़े ज़ालिम और उद्दण्ड (सरकश) थे।	وَقَوْمَ نُوحٍ مِّن قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ وَأَطْغَىٰ ﴿52﴾
५३. और मूतफ़िका (नगर या उल्टी हुई बस्तियों को) उसी ने उलट दिया।	وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَىٰ ﴿53﴾
५४. फिर उस पर छा दिया जो छा दिया।	فَغَشَّاهَا مَا غَشَّىٰ ﴿54﴾
५५. तो हे इंसान ! तू अपने रब के किस-किस उपहार (नेमत) पर झगड़ेगा?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكَ تَتَمَارَىٰ ﴿55﴾
५६. यह (नबी) डराने वाले हैं, पहले के डराने वालों में से।	هَٰذَا نَذِيرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْأُولَىٰ ﴿56﴾

[1] अर्थात (यानी) किसी को इतना धन देता है कि उसे किसी की ज़रूरत नहीं होती और उसकी सभी ज़रूरतें पूरी हो जाती हैं। किसी को इतना धन दे देता है कि उस के पास ज़रूरत से ज़्यादा बच जाता है और उसे जमा कर के रखता है।

[2] पालनहार तो वह हर चीज़ का है, यहाँ इस तारे का नाम इसलिए लिया है कि अरब के कुछ क़बीले उसकी उपासना (इबादत) करते थे।

أَزِفَتِ الْآزِفَةُ ﴿57﴾

५७. आने वाली घड़ी क़रीब आ गयी है।

لَيْسَ لَهَا مِن دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ﴿58﴾

५८. अल्लाह के सिवाय उसका (मुक़र्रर समय पर खोल) दिखाने वाला दूसरा कोई नहीं।

أَفَمِنْ هَٰذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ﴿59﴾

५९. तो क्या तुम इस बात पर आश्चर्य (ताज्जुब) करते हो?

وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ ﴿60﴾

६०. और हँस रहे हो, रोते नहीं?

وَأَنتُمْ سَامِدُونَ ﴿61﴾

६१. (बल्कि) तुम खेल रहे हो।

فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ﴿62﴾

६२. अब अल्लाह के सामने सज्दे करो (नत्-मस्तक हो जाओ) और (उसी की) इबादत करो।

سُورَةُ الْقَمَرِ

सूरतुल क़मर-५४

सूर: क़मर* मक्का में नाज़िल हुई, इस में पचपन आयतें और तीन रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانشَقَّ الْقَمَرُ ﴿1﴾

१. क़यामत क़रीब आ गई और चाँद फट गया।[1]

وَإِن يَرَوْا آيَةً يُعْرِضُوا وَيَقُولُوا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ﴿2﴾

२. ये अगर कोई चमत्कार (मोजिज़े) देखते हैं तो मुँह फेर लेते हैं और कह देते हैं कि ये पहले से चला आता हुआ जादू है।

---

* यह भी उन सूरतों में से है जिसे रसूलुल्लाह ﷺ ईद की नमाज़ में पढ़ा करते थे, जैसाकि पहले बयान हो चुका।

[1] यह वह चमत्कार (मोजिज़ा) है जो मक्कावासियों की माँग पर दिखाया गया, चाँद के दो हिस्से हो गये यहाँ तक कि लोगों ने हिरा पहाड़ को उस के बीच देखा, यानी उसका एक हिस्सा पहाड़ के उस तरफ और एक हिस्सा इस तरफ हो गया। (सहीह बुख़ारी, मनाक़िबुल अंसार) सभी पहले और बाद के विद्वानों (आलिमों) की यही राय है। (फ़तहुल क़दीर) इमाम इब्ने कसीर लिखते हैं: "आलिमों के क़रीब इस बात पर इत्तेफ़ाक़ है कि चाँद के दो हिस्से नबी ﷺ के युग में हुए और यह आप ﷺ के स्पष्ट (वाज़ेह) चमत्कारों में से है, सही हदीस इसको वाज़ेह करती है।"

وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّ أَمْرٍ مُسْتَقِرٌّ ③

३. और उन्होंने झुठलाया और अपनी इच्छाओं का अनुसरण (इत्तेबा) किया और हर काम निश्चित समय पर ही निर्धारित (मुक़र्रर) है।

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْأَنْبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ④

४. बेशक उन के पास वे ख़बरें आ चुकी हैं जिन में डांट-फटकार (वाली शिक्षा) है।

حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ⑤

५. और पूरी हिक्मत की बात है, लेकिन इन डरावनी बातों ने भी कोई फ़ायेदा न दिया।[1]

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ نُكُرٍ ⑥

६. (तो हे नबी!) तुम उन से मुंह फेर लो जिस दिन एक पुकारने वाला नापसन्द चीज़ की तरफ़ पुकारेगा।

خُشَّعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُنْتَشِرٌ ⑦

७. ये झुकी आंखों से क़ब्रों से इस तरह उठ खड़े होंगे कि जैसे वह फैला हुआ टिड्डी दल है।[2]

مُهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ⑧

८. पुकारने वाले की तरफ़ दौड़ते होंगे और काफ़िर कहेंगे कि यह दिन तो बड़ा कठिन है।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَازْدُجِرَ ⑨

९. उन से पहले नूह की क़ौम ने भी हमारे बंदे को झुठलाया था और पागल बताकर झिड़क दिया था।

فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ ⑩

१०. तो उस ने अपने रब से दुआ की कि मैं बेसहारा हूं तू मेरी मदद कर।

فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُنْهَمِرٍ ⑪

११. तो हमने आकाश के दरवाज़ों को मूसलाधार बारिश से खोल दिया।[3]

---

[1] यानी अल्लाह ने जिस के लिए दुर्भाग्य (बदबख़्ती) लिख दिया है और उस के दिल पर मोहर लगा दी है, उसे पैग़म्बरों की चेतावनी (तम्बीह) क्या फ़ायेदा दे सकती है? इसे तो डराना न डरना बराबर वाली बात है।

[2] यानी क़ब्रों से निकलकर वह ऐसे फैलेंगे और हिसाब की जगह की तरफ़ इतनी तेज़ चाल से जायेंगे कि जैसे टिड्डी दल हो जो फ़ौरन अंतरिक्ष में फैल जाता हैं।

[3] مُنْهَمِرٍ यानी बहुत बहुत ज़्यादा ज़ोरदार هَمْرٌ बहने के मतलब में आता है। कहते हैं कि चालीस दिन तक लगातार घोर वर्षा होती रही।

१२. और धरती से चश्मों को जारी कर दिया तो उस काम के लिये जो तक़्दीर में लिख दिया गया था (दोनों) पानी जमा हो गया।

وَّفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰٓى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ⑫

१३. और हम ने उसे पटरों और कीलों वाली नाव पर सवार कर लिया।[1]

وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ⑬

१४. जो हमारी आँखों के सामने चल रही थी। बदला उसकी तरफ़ से जिस का कुफ़्र किया गया था।

تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ⑭

१५. और बेशक हम ने इस घटना (वाक़ेआ) को निशानी बनाकर बाक़ी रखा, तो है कोई नसीहत हासिल करने वाला।

وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ⑮

१६. तो (बताओ) मेरा अज़ाब और मेरी डराने वाली बातें कैसी रहीं?

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ⑯

१७. और बेशक हम ने क़ुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया है,[2] तो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ⑰

१८. आद के समुदाय ने भी झुठलाया तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब और मेरी डराने वाली बातें।

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ⑱

---

[1] دُسُرٌ (दुसुर) دِسَارٌ (दिसार) का बहुवचन (जमा) है, वह रस्सियाँ जिन से नवका के तख़्ते बाँधे गये या वह कीलें और खूँटियाँ जिन से नवका को जोड़ा गया।

[2] यानी उस के मायने और मतलब को समझना, उस से नसीहत हासिल करना और उसे याद करना हम ने आसान बना दिया है। हक़ीक़त यह है कि पाक क़ुरआन अपने चमत्कार, (मोजिज़े) असर और भाषा शैली के बिना पर सब से ऊँची किताब होने के बावजूद कोई इंसान तनिक भी ध्यान दे तो वह अरबी व्याकरण (ग्रामर) और भाषा शैली की किताबें पढ़े बिना भी उसे आसानी से समझ लेता है। इसी तरह यह दुनिया की सिर्फ़ एक किताब है जो एक-एक शब्द (लफ़्ज़) याद कर ली जाती है, नहीं तो छोटी से छोटी किताब को भी इस तरह याद कर लेना और उसे याद रखना बड़ा कठिन है, अगर इंसान अपने मन और दिमाग़ के दरवाज़े खोलकर उसे नसीहत की आँखों से पढ़े, नसीहत के कानों से सुने और समझने वाले दिल से उस पर विचार करे तो लोक-परलोक (दुनिया-आख़िरत) की ख़ुशनसीबी के दरवाज़े उस पर खुल जाते हैं और यह उस के दिल की गहराईयों में उतरकर कुफ़्र और पाप की सभी गंदगियों को साफ़ कर देता है।

إِنَّآ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِى يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ⑲

१९. हम ने उन पर तेज लगातार चलने वाली हवा एक लगातार मन्हूस दिन में भेज दी।

تَنزِعُ ٱلنَّاسَ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنقَعِرٍ ⑳

२०. जो लोगों को उठा-उठाकर पटक देती थी, जैसेकि वे जड़ से कटे खजूर के पेड़ हैं।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِى وَنُذُرِ ㉑

२१. तो कैसा रहा मेरा अजाब और मेरा डराना?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا ٱلْقُرْءَانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ㉒

२२. और बेशक हम ने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला?

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِٱلنُّذُرِ ㉓

२३. समूद के समुदाय ने (भी) डराने वालों को झुठलाया।

فَقَالُوٓا۟ أَبَشَرًا مِّنَّا وَٰحِدًا نَّتَّبِعُهُۥٓ إِنَّآ إِذًا لَّفِى ضَلَٰلٍ وَسُعُرٍ ㉔

२४. और कहने लगे कि क्या हमीं में से एक इंसान का हम अनुगमन (पैरवी) करने लगें? तब तो हम जरूर बुराई और पागलपन में पड़े हुए होंगे।

أَءُلْقِىَ ٱلذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ ㉕

२५. क्या हम सब के बीच सिर्फ उसी पर प्रकाशना (वह्यी) नाज़िल की गयी? नहीं, बल्कि वह झूठा गर्व (फ़ख़) करने वाला है।

سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَّنِ ٱلْكَذَّابُ ٱلْأَشِرُ ㉖

२६. अब सब जान लेंगे कल को कि कौन झूठा और घंमडी था?

إِنَّا مُرْسِلُوا۟ ٱلنَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَٱرْتَقِبْهُمْ وَٱصْطَبِرْ ㉗

२७. बेशक हम उनकी परीक्षा के लिए ऊँटनी भेजेंगे, तो (हे स्वालेह!) तू उनका इंतेजार कर और सब्र कर।

وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ ٱلْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ ۖ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ㉘

२८. और उन्हें ख़बर कर दे कि पानी उन में बटवारा है, हर एक अपने फेरे पर हाज़िर होगा।[1]

فَنَادَوْا۟ صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ ㉙

२९. तो उन्होंने अपने साथी को पुकारा, जिस ने (ऊँटनी पर) हमला किया और (उसकी) कोचें काट दीं।

[1] मुराद है कि हर एक का हिस्सा उस के साथ ही ख़ास है जो अपनी-अपनी बारी पर हाज़िर होकर हासिल करे, दूसरा उस दिन न आये, شِرْب (शिर्ब) पानी का हिस्सा।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿30﴾

३०. तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब और मेरा डराना।

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿31﴾

३१. हम ने उन पर एक चीख़ (तेज़ आवाज़) भेजी तो वे ऐसे हो गये जैसे बाड़ बनाने वाले की रौंदी हुई घास।[1]

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿32﴾

३२. और हम ने नसीहत हासिल करने के लिए क़ुरआन को आसान कर दिया है, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला?

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ﴿33﴾

३३. लूत के समुदाय (क़ौम) ने भी डराने वालों को झुठलाया।

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ نَّجَّيْنَاهُم بِسَحَرٍ ﴿34﴾

३४. बेशक हम ने उन पर पत्थर की बारिश करने वाली हवा भेजी, सिवाय लूत (ﷺ) के परिवार वालों के, उन्हें सुबह के वक़्त[2] हम ने सुरक्षा (मुक्ति) अता कर दी।[3]

نِّعْمَةً مِّنْ عِندِنَا كَذَٰلِكَ نَجْزِي مَن شَكَرَ ﴿35﴾

३५. अपनी कृपा (फ़ज़्ल) से ! हर शुक्रगुज़ार को हम इसी तरह बदला देते हैं।

وَلَقَدْ أَنذَرَهُم بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ﴿36﴾

३६. बेशक उस (लूत) ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया था, लेकिन उन्होंने डराने वालों के बारे में शक और शुब्हा और झगड़ा किया।

وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَن ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿37﴾

३७. और लूत (ﷺ) को उन के मेहमानों के बारे में बहलाना चाहा तो हम ने उनकी आँखे अंधी कर दीं, (और कह दिया) मेरा अज़ाब और मेरा डराना चखो।

---

[1] حظيرة (हज़ीरह) محظورة (महज़ूरह) के मतलब में है, यानी बाड़ जो सूखी लकड़ियों और झाड़ियों से जानवरों के लिए बनाई जाती है। هشيم (हशीम) सूखी घास या कटी हुई सूखी खेती यानी जैसे एक बाड़ बनाने वाले की सूखी लकड़ियाँ और झाड़ियाँ लगातार रौंदे जाने से चूरा-चूरा हो जाती हैं ऐसे ही वह हमारे अज़ाब से चूर-चूर हो गये।

[2] आले लूत से मुराद ख़ुद ईशदूत लूत ﷺ और उन पर ईमान लाने वाले लोग हैं, जिन में लूत की पत्नी शामिल नहीं, क्योंकि वह ईमान नहीं लाई थी। हाँ, लूत की दो बेटियाँ उन के साथ थीं, जिनको नजात दी गई। سحر (सहर) से मुराद रात का आख़िरी हिस्सा है।

[3] यानी उनको अज़ाब से बचाना हमारी दया (रहमत) और अनुग्रह (फ़ज़्ल) था जो उन पर हुआ।

وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ﴿38﴾

३८. और तय बात है कि उन्हें सुबह ही एक जगह पर पकड़ने वाले निर्धारित (मुक़र्रर) अज़ाब ने बरबाद कर दिया।

فَذُوْقُوا عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿39﴾

३९. तो मेरे अज़ाब और मेरे डराने (चेतावनी) का मज़ा चखो।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿40﴾

४०. और बेशक हम ने क़ुरआन को शिक्षा और नसीहत के लिए आसान कर दिया है,[1] तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला?

وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿41﴾

४१. और फ़िरऔनियों के पास भी डराने वाले आये।

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿42﴾

४२. उन्होंने हमारी सभी निशानियों को झुठलाया, तो हम ने उन्हें बड़ा ज़बरदस्त और शक्तिशाली पकड़ने वाले की तरह पकड़ लिया।

اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِي الزُّبُرِ ﴿43﴾

४३. (हे मक्कावालो!) क्या तुम्हारे काफ़िर उन काफ़िरों से कुछ बेहतर हैं? या तुम्हारे लिए पहले की किताबों में छुटकारा लिखा हुआ है?[2]

اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ﴿44﴾

४४. क्या यह कहते हैं कि हम ग़ालिब होने वाले लोग (जमाअत) हैं।

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿45﴾

४५. क़रीब ही यह समूह पराजित किया जायेगा और पीठ दिखाकर भागेगा।

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ ﴿46﴾

४६. बल्कि क़यामत (प्रलय) की घड़ी उन के वादा का समय है, और क़यामत बहुत कठिन और बड़ी कड़वी चीज़ है।[3]

---

[1] इस सूरह में पाक क़ुरआन को आसान बनाने की चर्चा बार-बार करने से उद्देश्य (मक़सद) यह है कि क़ुरआन को याद कर लेना और समझने को आसान कर देना अल्लाह का बड़ा अनुग्रह (एहसान) है। उस के शुक्रिये से इंसान को कभी मुंह फेरने वाला नहीं होना चाहिए।

[2] زُبُرٌ (ज़ुबुर) से मुराद पिछले अम्बिया (ईश्दूतों) पर नाज़िल किताबें (धर्मशास्त्र) हैं, यानी क्या तुम्हारे बारे में पहले की नाज़िल किताबों में साफ़ कर दिया गया है कि यह अरब या क़ुरैश जो इच्छा हो करते रहें, उन पर कोई प्रभावशाली (ग़ालिब) नहीं होगा।

[3] ادهى (अदहा) دَهَاءٌ (दहाअ) से बना है, घोर अपमानकारी (सख़्त ज़लील करने वाला)। أَمَرُّ (अमर्र)

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَٰلٍ وَسُعُرٍ (47)

४७. बेशक पापी (मुजरिम) भटकावे में और यातना में हैं।

يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ ط ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ (48)

४८. जिस दिन वे अपने मुंह के बल आग में घसीटे जायेंगे (और उन से कहा जायेगा) नरक की आग लगने का मजा चखो।[1]

إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَٰهُ بِقَدَرٍ (49)

४९. बेशक हम ने हर चीज़ को एक (निर्धारित) अंदाजा पर पैदा किया है।[2]

وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَٰحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ (50)

५०. और हमारा हुक्म केवल एक बार (का एक लफ़्ज) ही होता है, जैसे पलक का झपकना।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ (51)

५१. और हम ने तुम जैसे बहुतों को हलाक कर दिया है, तो कोई है नसीहत हासिल करने वाला।

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ (52)

५२. और जो कुछ उन्होंने (कर्म) किये हैं सब कर्मपत्र (आमाल नामा) में लिखे हुए हैं।

وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُّسْتَطَرٌ (53)

५३. (इसी तरह) हर छोटी-बड़ी बात लिखी हुई है।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّٰتٍ وَنَهَرٍ (54)

५४. बेशक परहेज़गार लोग जन्नत और नहरों में होंगे।

فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ عِندَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ (55)

५५. सच्चाई और इज़्ज़त की बैठक में सामर्थ्य (क़ुदरत) वाले मालिक के पास।

مُرَارَةً (मरारह) से है, बहुत कड़ुवा, यानी यह दुनिया में जो क़त्ल किये गये, बंदी बनाये गये आदि, उन का आख़िरी अज़ाब नहीं, बल्कि और भी कड़ी यातनायें उन्हें क़यामत के दिन दी जायेंगी जिस का उन से वादा किया जाता है।

[1] سَقَرَ (सक़र) भी नरक का नाम है, यानी उसकी गर्मी और अज़ाब की कड़ाई का मज़ा चखो।

[2] अइम्मये सुन्नत (इस्लामी धर्म के विशेषज्ञों) ने इस आयत और इस तरह की दूसरी आयतों से अल्लाह के क़दर (क़िस्मत के लिखे) को साबित किया है, जिसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला को सृष्टि (मख़लूक़) के पैदा करने से पहले ही सबका इल्म था और उस ने सब की तक़दीर लिख दिया है और क़दिया सम्प्रदाय (फ़िर्क़ा) का खण्डन (तरदीद) किया है जो सहाबा के युग (दौर) के आख़िर में ज़ाहिर हुआ।

सूरतुर्रहमान-५५

سُوۡرَةُ الرَّحۡمٰنِ

सूरः रहमान* मदीने में नाज़िल हुई, इस में अट्ठहत्तर आयतें और तीन रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

१. दयालु (रहमान) ने।

اَلرَّحۡمٰنُ ﴿1﴾

२. क़ुरआन सिखाया।

عَلَّمَ الۡقُرۡاٰنَ ﴿2﴾

३. उसी ने इंसान को पैदा किया।

خَلَقَ الۡاِنۡسَانَ ﴿3﴾

४. उसे बोलना सिखाया।

عَلَّمَهُ الۡبَيَانَ ﴿4﴾

५. सूरज और चाँद (निर्धारित) हिसाब से हैं।[1]

اَلشَّمۡسُ وَالۡقَمَرُ بِحُسۡبَانٍ ﴿5﴾

६. और तारे और पेड़ दोनों सज्दा करते हैं।

وَّالنَّجۡمُ وَالشَّجَرُ يَسۡجُدٰنِ ﴿6﴾

७. उसी ने आसमान को ऊँचा किया और उसी ने तराज़ू रखी।

وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الۡمِيۡزَانَ ﴿7﴾

८. ताकि तुम तौलने में हद पार (उलंघन) न करो।

اَلَّا تَطۡغَوۡا فِى الۡمِيۡزَانِ ﴿8﴾

९. और इंसाफ़ के साथ तौल सही रखो और तौल में कम न दो।

وَاَقِيۡمُوا الۡوَزۡنَ بِالۡقِسۡطِ وَلَا تُخۡسِرُوا الۡمِيۡزَانَ ﴿9﴾

१०. और उसी ने सृष्टि (मख़लूक़) के लिए धरती बिछायी।

وَالۡاَرۡضَ وَضَعَهَا لِلۡاَنَامِ ﴿10﴾

---

* इस सूरः को लोगों ने मदनी (मदीने में नाज़िल) माना है, लेकिन सही यह है कि यह मक्की (मक्के में नाज़िल) है। (फ़तहुल क़दीर)

[1] यानी अल्लाह के मुक़र्रर किये हिसाब से अपनी-अपनी जगहों पर चल रहे हैं, उसके ख़िलाफ़ नहीं करते।

फ़ीहा फ़ाकिहतुंव वन्नख़्लु ज़ातुल अक्माम (11)

११. जिस में मेवे हैं और गुच्छे वाले खजूर के पेड़ हैं।[1]

فِيهَا فَاكِهَةٌ وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ (11)

१२. और भूसा वाला अनाज है[2] और सुगन्धित (ख़ुश्बूदार) फूल हैं।

وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ (12)

१३. तो (हे इंसानों और जिन्नो!) तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।[3]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ (13)

१४. उस ने इंसान को खंखनाती मिट्टी से पैदा किया जो ठिकरी की तरह थी।[4]

خَلَقَ الْإِنسَانَ مِن صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ (14)

१५. और जिन्नात को आग की लपट से पैदा किया।

وَخَلَقَ الْجَانَّ مِن مَّارِجٍ مِّن نَّارٍ (15)

१६. तो (हे इंसानों और जिन्नो!) तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।[5]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ (16)

१७. वह रब है दोनों पूरबों और दोनों पश्चिमों का।[6]

رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ (17)

---

[1] أَكْمَام (अकमाम) كِمّ (किम्म) का बहुवचन (जमा) है, खजूर पर चढ़ा हुआ आवरण (पर्दा)।

[2] حَبّ हब्ब (दाना) से मुराद हर वह खाने वाली चीज है जो इंसान और जानवर खाते हैं, सूखकर उसका पौधा भूसा बन जाता है जो जानवरों के काम आता है।

[3] यह इंसान और दानव (जिन्न) दोनों से संबोधन (ख़िताब) है। अल्लाह अपने एहसानों को गिना कर उन से सवाल कर रहा है। यह बार-बार कहना उस इंसान की तरह है जो किसी पर लगातार एहसान करे, किन्तु वह उस के एहसान का इंकार करता हो, जैसे कहे कि मैंने तेरा अमुक-अमुक (फ़्लाँ-फ़्लाँ) काम किया, क्या तू इंकार करता है? अमुक-अमुक चीज तुझे दी, क्या तुझे याद नहीं? तुझ पर अमुक एहसान किया, क्या तुझे हमारा तनिक भी ध्यान नहीं? (फ़तहुल क़दीर)

[4] صَلْصَال (सल्साल) सूखी मिट्टी जिस में आवाज हो। فَخَّار (फ़ख़्ख़ार) आग में पकी मिट्टी, जिसे ठीकरी कहते हैं। उस इंसान से मुराद हजरत आदम हैं, जिनका पहले मिट्टी से पुतला बनाया गया और फिर अल्लाह ने उस में आत्मा (रूहें) फूँकी, फिर उनकी बायीं पसली से 'हव्वा' को पैदा किया, फिर इन दोनों से इंसानी वंश चला।

[5] यानी तुम्हारी यह पैदाईश और फिर तुम से ज़्यादा वंशों की पैदाईश और अधिकता भी अल्लाह के एहसानों में से है, क्या तुम इस एहसान का इंकार करोगे?

[6] एक गर्मी का पूरब और एक जाड़े का पूरब, इसी तरह पश्चिम है। इसलिए दोनों को द्विवचन

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (18)

१८. तो (हे इंसानों और जिन्नो!) तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ (19)

१९. उस ने दो दरिया प्रवाहित (जारी) कर दिये जो एक-दूसरे से मिल जाते हैं।

بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ (20)

२०. उन दोनों के बीच एक आड़ है कि उस से बढ़ नहीं सकते।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (21)

२१. तो (हे इंसानों और जिन्नो!) तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ (22)

२२. उन दोनों में से मोती और मूँगे निकलते हैं।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (23)

२३. तो (हे इंसानों और जिन्नो!) तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ (24)

२४. और अल्लाह ही की (मिल्कियत में) हैं वह (जहाज) जो समुद्रों में पहाड़ की तरह ऊँचे (खड़े हुए) चल रहे हैं।[1]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (25)

२५. तो (हे इंसानों और जिन्नो!) तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।[2]

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ (26)

२६. धरती पर जो कुछ भी है सब नश्वर (फ़ानी) है।

وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ (27)

२७. केवल तेरे रब का मुँह (वजूद) जो महान और बाइज़्ज़त है, बाक़ी रह जायेगा।

(तसनीया) बयान किया है। ऋतुओं (मौसम) के अनुसार पूरब और पश्चिम के भिन्न होने में भी इस में जिन्नों और इंसानों के बहुत से फ़ायदे हैं, इसलिए इसे भी एहसान कहा गया है।

[1] الجَوارِ (अलजवार) جَارِيَةٌ (जारियह) चलने वाली का बहुवचन (जमा) है और छिपे मौसूफ़ السُّفُن (नवकायें) का विशेषण (सिफ़त) है। مُنْشَآتٌ का मतलब مرفوعات है, ऊँची की हुई, मतलब पाल (बादबान) है, जो हवा पोतों में झंडों के बराबर ऊपर और ऊँची बनाई जाती हैं। कुछ ने इसका मतलब निर्मित (मस्नूअ) किया है, यानी अल्लाह की बनाई हुई जो समुद्रों में चलती हैं।

[2] इन के द्वारा (ज़रिये) भी यातायात और भारवाहन की जो सहूलतें हासिल हैं उसे बताने की ज़रूरत नहीं, इसलिए यह भी अल्लाह की बड़ी अनुकम्पा (नेमत) है।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿28﴾

२८. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

يَسْأَلُهُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ﴿29﴾

२९. सब आकाश और धरती वाले उसी से माँगते हैं, हर दिन वह एक काम में है।[1]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿30﴾

३०. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ الثَّقَلَانِ ﴿31﴾

३१. (हे जिन्नों और इंसानों के गिरोहो!) जल्द ही हम तुम्हारी तरफ़ पूरी तरह आकर्षित (मुतवज्जिह) हो जायेंगे।[2]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿32﴾

३२. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَن تَنفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانفُذُوا ۚ لَا تَنفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ ﴿33﴾

३३. (हे जिन्नों और इंसानों के गिरोह!) अगर तुम में आकाशों और धरती के किनारों से निकलने की ताक़त है तो निकल भागो, बिना ग़ल्बा (और ताक़त) के तुम नही निकल सकते।[3]

---

[1] प्रतिदिन (हर दिन) का मायने हर पल (क्षण)। شان (शान) का मतलब काम और विषय, यानी हर समय वह कुछ न कुछ करता रहता है, किसी को रोगी बना रहा है तो किसी को सेहतमंद, किसी को अमीर बना रहा है तो किसी अमीर को ग़रीब, किसी को रंक (भिखारी) से राजा तो किसी को राजा से रंक, किसी को ऊँचा मनसब (पदासीन) दे रहा है तो किसी को नीचे गिरा रहा है और किसी को फ़ना (नास्ति) और फ़ना को बक़ा (आस्ति) दे रहा है आदि (वग़ैरह)। संक्षेप (मुख़्तसर) में दुनिया में यह सब बदलाव उसी के हुक्म और मर्ज़ी से हो रहे हैं और रात दिन का कोई ऐसा पल नहीं जो उसकी शान से ख़ाली हो।

[2] इसका मतलब यह नहीं कि अल्लाह को फ़रागत (अवकाश) नहीं, बल्कि यह मुहावरे के रूप में कहा गया है, जिसका मक़सद (उद्देश्य) धमकी देना और फटकारना है। ثقلان सक़लान (जिन्न और इंसान को) इसलिए कहा गया है कि उन्हें शरीअत के पालन का पाबंद किया गया है, इस रुकावट और भार से दूसरी मख़्लूक़ (सृष्टि) अलग है।

[3] अल्लाह की लिखी तक़दीर और फ़ैसले से बचकर तुम कहीं भाग सकते हो तो चले जाओ, लेकिन यह ताक़त किस में है, और भाग कर जायेगा कहाँ? कोई जगह ऐसी है जो अल्लाह के अधिकार से बाहर हो? यह भी धमकी है जो उपर बयान की गई धमकी की तरह एहसान है। कुछ ने कहा कि यह महशर के मैदान में कहा जायेगा जब फ़रिश्ते हर तरफ़ से लोगों को घेर रखे होंगे, दोनों ही मायने अपनी जगह पर सही हैं।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ (34)

३४. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّن نَّارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنتَصِرَانِ (35)

३५. तुम पर आग के शोले और धुआँ छोड़ा जायेगा फिर तुम मुक़ाबला न कर सकोगे।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ (36)

३६. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ (37)

३७. फिर जबकि आकाश फटकर लाल हो जायेगा, जैसा कि लाल (मुलायम) चमड़ा हो।[1]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ (38)

३८. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْأَلُ عَن ذَنبِهِ إِنسٌ وَلَا جَانٌّ (39)

३९. उस दिन किसी इंसान और किसी जिन्न से उस के पापों की पूछताछ न की जायेगी।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ (40)

४०. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

يُعْرَفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ (41)

४१. पापी केवल अपने हुलिया से ही पहचान लिये जायेंगे[2] और उन के माथों के बाल और पैर पकड़ लिए जायेंगे।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ (42)

४२. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُونَ (43)

४३. यह है वह नरक जिसे अपराधी (मुजरिम) झूठा मानते थे।

---

1 क़यामत (प्रलय) के दिन आसमान फट जायेगा, ज़मीन पर फ़रिश्ते उतर आयेंगे, उस दिन यह आसमान जहन्नम की आग की सख़्त तपिश (ताप) से पिघलकर लाल चमड़े की तरह हो जायेगा, دهان लाल चमड़ा।

2 यानी जिस तरह ईमानवालों का निशान होगा कि उन के वज़ू के अंग चमकते होंगे, उसी तरह पापियों के मुँह काले होंगे, आँखें नीली और वे डरे हुए होंगे।

يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ اٰنٍ ﴿44﴾

४४. उस के और गर्म उबलते पानी के बीच चक्कर खायेंगे।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿45﴾

४५. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿46﴾

४६. और उस इंसान के लिए जो अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा, दो जन्नत हैं।[1]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿47﴾

४७. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ﴿48﴾

४८. दोनों जन्नतें बहुत डालियों (और शाखाओं) वाली हैं।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿49﴾

४९. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ﴿50﴾

५०. उन दोनों (स्वर्गों) में दो बहने वाले चश्मे (जलस्रोत) हैं।[2]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿51﴾

५१. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ﴿52﴾

५२. उन दोनों (स्वर्गों) में हर तरह के मेवों के जोड़े (दो तरह) होंगे।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿53﴾

५३. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

مُتَّكِـِٔيْنَ عَلٰى فُرُشٍۭ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ۭ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿54﴾

५४. जन्नत में रहने वाले ऐसे फ़र्शों पर तकिये लगाये हुए होंगे जिन के अस्तर मोटे रेशम के होंगे, और उन दोनों जन्नतों के मेवे बहुत क़रीब होंगे।

---

[1] हदीस में आता है कि दो बाग़ चाँदी के हैं जिन के बर्तन और सभी चीज़ें चाँदी की होंगी और दो बाग़ सोने के हैं और उस के बर्तन और सब चीज़ें सोने ही की होंगी। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: अर्रहमान) कुछ कथनों (हदीसों) में है कि सोने के बाग़ ख़ास ईमानवालों (समीपवर्तियों) के लिए होंगे और चाँदी के बाग़ आम ईमानवालों के लिए होंगे। (इब्ने कसीर)

[2] एक का नाम 'तस्नीम' और दूसरे का 'सल्सबील' है।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿55﴾

५५. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فِيهِنَّ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ﴿56﴾

५६. वहाँ (शर्मीली) नीची निगाहें वाली हूरें हैं, जिन्हें उन से पहले किसी जिन्न और इंसान ने हाथ न लगाया होगा।[1]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿57﴾

५७. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿58﴾

५८. वे (हूरें) मणि (याक़ूत) और मूँगे की तरह होंगी।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿59﴾

५९. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ﴿60﴾

६०. एहसान का बदला एहसान (प्रतिफल) के सिवाय क्या है।[2]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿61﴾

६१. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

وَمِن دُونِهِمَا جَنَّتَانِ ﴿62﴾

६२. और उन के सिवाय दो जन्नतें और हैं?[3]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿63﴾

६३. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

مُدْهَامَّتَانِ ﴿64﴾

६४. जो दोनों गाढ़े हरे रंग की स्याही मायल हैं।

---

[1] यानी कुँवारी होंगी, इस से पहले वह किसी के विवाह में नहीं रही होंगी, यह आयत और इस से पहले की कुछ आयतों से साफ़ तौर से मालूम होता है कि जो जिन्न ईमानवाले होंगे वे भी ईमान वाले इंसानों की तरह जन्नत में जायेंगे, और उन के लिए भी वही होगा जो दूसरे ईमानवालों के लिए होगा।

[2] पहले एहसान से मुराद नेक काम और अल्लाह के हुक्म का पालन (पैरवी) है और दूसरे एहसान से उसका बदला यानी जन्नत और उसकी सुख-सुविधायें (ऐशो आराम) हैं।

[3] دُونِهِمَا से यह मतलब भी निकाला गया है कि यह दो बाग़ फ़ज़ीलत और अज़मत में पहले दो बाग़ों से, जिनकी चर्चा आयत न॰ ४६ में गुज़री, कमतर होंगे।

६५. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।	فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿65﴾
६६. उन में दो (तेज़ चाल से) उबलने वाले जलस्रोत (चश्में) हैं।	فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿66﴾
६७. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।	فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿67﴾
६८. उन दोनों में मेवे और खजूर और अनार होंगे।	فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿68﴾
६९. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।	فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿69﴾
७०. उन में अच्छे चरित्र (किरदार) वाली ख़ूबसूरत औरतें हैं।[1]	فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ﴿70﴾
७१. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।	فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿71﴾
७२. (गोरे रंग की) हूरें (अप्सरायें) जन्नत के खेमों में रहने वाली हैं।	حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِى الْخِيَامِ ﴿72﴾
७३. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।	فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿73﴾
७४. उन (हूरों) को कोई इंसान और जिन्न ने इस से पहले हाथ नहीं लगाया (उन से नहीं मिला)।	لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿74﴾
७५. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।	فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿75﴾

[1] خَيْرٰتٌ से मुराद अख़लाक़ (आचरण) और किरदार (स्वभाव) की अच्छाईयां है और حِسَانٌ का मतलब ख़ूबसूरती और ज़ीनत (शोभा) में बेमिसाल।

مُتَّكِـِٔينَ عَلَىٰ رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿76﴾

७६. हरे गद्दों और सुन्दर बिछौनों पर तकिये लगाये होंगे ।[1]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿77﴾

७७. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।[2]

تَبَارَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿78﴾

७८. बड़ा शुभ है तेरे प्रतापवान (जलाल वाले) और इज़्ज़त वाले रब का नाम ।

سُورَةُ الْوَاقِعَةِ

सूरतुल वाक़िअ:-५६

सूर: वाक़िअ:* मक्का में नाज़िल हुई और इस में छियानवे आयतें और तीन रूकूअ हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿1﴾

१. जब क़यामत (प्रलय) क़ायम हो जायेगी ।

لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿2﴾

२. जिस के घटित होने में कोई झूठ नहीं ।

خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ﴿3﴾

३. वह ऊँच-नीच करने वाली होगी ।

إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ﴿4﴾

४. जबकि धरती भूकम्प (ज़लज़ला) के साथ हिला दी जायेगी ।

---

[1] رَفْرَف (रफ़रफ़) गद्दा, ग़ालीचा या इस तरह का अच्छा बिछौना, عَبْقَرِي (अबक़री) हर अच्छी और क़ीमती चीज़ को कहा जाता है । नबी ﷺ ने यह शब्द हज़रत उमर के लिये इस्तेमाल किया । «فَلَمْ أَرَ عَبْقَرِيًّا يَفْرِي فَرِيَّهُ» "मैंने कोई अबक़री (श्रेष्ठ) ऐसा नहीं देखा जो उमर की तरह काम करता हो ।" (सहीह अल-बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब)

[2] यह आयत इस सूर: में ३१ बार आई है, अल्लाह ने इस आयत में अपने कई तरह के उपहारों (नेमतों) की चर्चा की है, और हर एक या कुछ उपहारों की चर्चा के बाद यह सवाल किया है ।

* इस सूर: के बारे में मशहूर है कि यह सूरतुल ग़िना (सम्पन्नता की सूर:) है और जो इंसान इसे हर रात को पढ़ेगा उसे कभी भूखमरी नहीं आयेगी । किन्तु हक़ीक़त में इस सूर: के महत्व (अहमियत) में कोई सहीह हदीस नहीं है, हर रात पढ़ने तथा बच्चों को सिखाने की हदीसें भी ज़ईफ़ बल्कि बनावटी हैं । देखिये (अल-अहादीसुज़ ज़ईफ़ा, लिल अलबानी हदीस न॰ २८९, २९०, भाग १\४५७)

وَّ بُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ⑤

५. और पहाड़ बिल्कुल कण-कण (रेज़ा-रेज़ा) कर दिये जायेंगे।

فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ⑥

६. फिर वह बिखरी धूल की तरह हो जायेंगे।

وَّ كُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ⑦

७. और तुम तीन गुटों में बंट जाओगे।

فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ⑧

८. तो दाहिने हाथ वाले कैसे अच्छे हैं, दाहिने हाथ वाले।[1]

وَاَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ⑨

९. और बायें हाथ वाले, क्या हाल है बायें हाथ वालों का।[2]

وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ⑩

१०. और जो आगे वाले हैं वे तो आगे वाले ही हैं।[3]

اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ⑪

११. वह बिल्कुल नज़दीकी हासिल (प्राप्त) किये हुए हैं।

فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ⑫

१२. ऐश्व व आराम वाले स्वर्गों में हैं।

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ⑬

१३. (बहुत बड़ा) गुट तो पहले लोगों में से होगा।

وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ⑭

१४. और थोड़े से पिछले लोगों में से।[4]

عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ⑮

१५. (ये लोग) सोने के तारों से बुने हुए तख़्तों पर।

---

[1] इस से साधारण (आम) ईमानवाले मुराद हैं जिन को उन के कर्मपत्र (आमालनामा) दायें हाथ में दिये जायेंगे, जो उनकी ख़ुशनसीबी का निशान होगा।

[2] इस से अभिप्राय (मुराद) काफ़िर हैं, जिनको उन के आमालनामा बायें हाथ में दिये जायेंगे।

[3] इन से मुराद ख़ास ईमान वाले हैं। यह तीसरा प्रकार (क़िस्म) है, जो ईमान लाने में आगे और नेकी के कामों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने वाले हैं, अल्लाह उन्हें ख़ास समीपता (नज़दीकी) देगा। यह वाक्य (जुमला) ऐसा ही है जैसे बोलते हैं कि तू तू है और ज़ैद ज़ैद, इस में जैसाकि ज़ैद की अहमियत और उसकी प्रधानता (अज़मत) का बयान है।

[4] ثُلَّةٌ (सुल्ल:) उस बड़े गिरोह को कहा जाता है जिसकी गिनती असंभव (नामुमकिन) हो।

مُتَّكِـِٔينَ عَلَيْهَا مُتَقَٰبِلِينَ ﴿16﴾

१६. एक-दूसरे के सामने तकिया लगाये बैठे होंगे ।[1]

يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَٰنٌ مُّخَلَّدُونَ ﴿17﴾

१७. उन के क़रीब ऐसे लड़के जो हमेशा (लड़के ही) रहेंगे, आया-जाया करेंगे।

بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقَ وَكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ﴿18﴾

१८. प्याले और सुराही लेकर और मदिरा का प्याला लेकर जो छलकते मदिरा से भरा हो।

لَّا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنزِفُونَ ﴿19﴾

१९. जिस से न सिर में चक्कर हो और न अक़्ल ख़राब हो ।[2]

وَفَٰكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ﴿20﴾

२०. और ऐसे मेवे लिए हुए जिसे वे पसन्द करें।

وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿21﴾

२१. और पक्षियों के गोश्त जो उन्हें (बहुत) मज़ेदार हों।

وَحُورٌ عِينٌ ﴿22﴾

२२. और बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरें।

كَأَمْثَٰلِ ٱللُّؤْلُؤِ ٱلْمَكْنُونِ ﴿23﴾

२३. जो छिपे हुए मोतियों की तरह हैं।

جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿24﴾

२४. यह बदला है उन के कर्मों (अमल) का।

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ﴿25﴾

२५. न (वे) वहाँ बेकार की बात सुनेंगे और न पाप की बात।

إِلَّا قِيلًا سَلَٰمًا سَلَٰمًا ﴿26﴾

२६. केवल सलाम ही सलाम (शान्ति ही शान्ति) की आवाज़ होगी ।[3]

---

[1] مَوضُونَة बुने और जड़े हुए, यानी उक्त (मज़कूरा) जन्नती सोने के तारों से बुने और जवाहरों से जड़े हुए तख़्तों पर एक-दूसरे के सामने तकियों पर बैठे होंगे।

[2] صُدَاع (सुदाअ) सिर के ऐसे दर्द को कहते हैं जो शराब के नशे के सबब हो। إِنزَاف (इनज़ाफ़) का मतलब वह अक़्ल का बिगाड़ है जो नशे की वजह से हो। दुनिया की शराब से यह दोनों बातें होती हैं। परलोक (आख़िरत) की शराब में ख़ुशी और मज़ा तो ज़रूर होगा लेकिन यह ख़राबियाँ नहीं होंगी। مَعِين (मअीन) बहते स्रोत (चश्मा) जो सूखता न हो।

[3] यानी दुनिया में तो आपस में लड़ाई-झगड़े होते हैं, यहाँ तक कि बहन-भाई भी इससे सुरक्षित (महफ़ूज़) नहीं। इस मतभेद (इख़्तिलाफ़) और झगड़े से दिलों में मैल और दुश्मनी पैदा होती है, जो एक-दूसरे के ख़िलाफ़ बुरे शब्द, गाली-गलोज और चुगली वग़ैरह पर इंसान को उकसाती

२७. और दाहिने हाथ वाले क्या ही अच्छे हैं, दाहिने हाथ वाले।

وَاَصۡحٰبُ الۡيَمِيۡنِ ۙ مَاۤ اَصۡحٰبُ الۡيَمِيۡنِ (27)

२८. वे बिना काँटों के बैर,

فِىۡ سِدۡرٍ مَّخۡضُوۡدٍ (28)

२९. और तह पर तह क़िलों,

وَّطَلۡحٍ مَّنۡضُوۡدٍ (29)

३०. और लम्बी-लम्बी छाओं,

وَّظِلٍّ مَّمۡدُوۡدٍ (30)

३१. और बहता पानी,

وَّمَآءٍ مَّسۡكُوۡبٍ (31)

३२. और बहुत ज़्यादा फलों में,

وَّفَاكِهَةٍ كَثِيۡرَةٍ (32)

३३. जो न ख़त्म हों, न रोक लिये जायें,

لَّا مَقۡطُوۡعَةٍ وَّلَا مَمۡنُوۡعَةٍ (33)

३४. और ऊँचे-ऊँचे फ़र्शों पर होंगे।

وَّ فُرُشٍ مَّرۡفُوۡعَةٍ (34)

३५. हम ने उन (की पत्नियों) को ख़ास तौर से बनाया है।

اِنَّاۤ اَنۡشَاۡنٰهُنَّ اِنۡشَآءً (35)

३६. और हम ने उन्हें कुंवारियाँ बना दिया है।

فَجَعَلۡنٰهُنَّ اَبۡكَارًا (36)

३७. प्रेम करने वालियाँ बराबर उम्र की हैं।[1]

عُرُبًا اَتۡرَابًا (37)

है। जन्नत इन तमाम नैतिक (अख़लाक़ी) गंदगियों और बुराई से न केवल पाक होगी बल्कि वहाँ सलाम ही सलाम की अवाजें सुनने में आयेगी, फ़रिश्तों की तरफ़ से भी और एक-दूसरे जन्नतियों की तरफ़ से भी, जिसका मतलब यह है कि वहाँ सलाम और एहतेराम तो होगा लेकिन मन और क़ौल की वह ख़राबियाँ नहीं होंगी, जो दुनिया में आम हैं यहाँ तक कि बड़े-बड़े मजहबी पेशवा भी इन से महफ़ूज नहीं।

[1] عُرُبٌ यह عَرُوبَةٌ का बहुवचन (जमा) है, यानी ऐसी नारी जो अपनी ख़ूबसूरती, ज़ीनत और दूसरे गुणों (सिफ़त) की वजह से अपने पति की बहुत प्रिय हो। اَتْرَابٌ यह تِرْبٌ का बहुवचन है हम उम्र यानी जन्नतियों की पत्नियाँ सभी एक उम्र की होंगी, जैसा कि हदीस में बयान किया गया है कि सब जन्नती ३३ साल की उम्र के होंगे। (तिर्मिज़ी, बाबु माजाअ फी सिन्ने अहलिल जन्नते) यह भी मतलब हो सकता है कि अपने पतियों के उम्र के बराबर होंगी, दोनों का मतलब एक ही है।

لِّأَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿38﴾

३८. दाहिने हाथ वालों के लिए हैं।

ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ﴿39﴾

३९. (बहुत) बड़ा गिरोह है पहले लोगों में से।

وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿40﴾

४०. और (बहुत) बड़ा गिरोह है पिछलों में से।

وَاَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ﴿41﴾

४१. और बायें हाथ वाले क्या हैं; बायें हाथ वाले।[1]

فِيْ سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍ ﴿42﴾

४२. गरम हवा और गरम पानी में (होंगे)।

وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ﴿43﴾

४३. और काले धुयें की छाया में।

لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ﴿44﴾

४४. जो न ठंडी है, न सुखद।

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ﴿45﴾

४५. बेशक ये लोग इससे पहले बहुत खुशहाली में पले हुए थे।

وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ﴿46﴾

४६. और महापापों पर इसरार करते थे।

وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۙ اَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿47﴾

४७. और कहते थे कि क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी और हड्डी हो जायेंगे, तो क्या हम दोबारा जिन्दा करके खड़े किये जायेंगे।

اَوَ اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿48﴾

४८. और क्या हमारे बाप-दादा भी?[2]

قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ﴿49﴾

४९. (आप) कह दीजिए कि बेशक सब अगले और पिछले।

---

[1] इस से अभिप्राय (मुराद) नरकवासी हैं, जिनको उन के कर्मपत्र (आमालनामा) बायें हाथ में पकड़ाये जायेंगे, जो उन की बदक़िस्मती की अलामत होगी।

[2] इस से मालूम हुआ कि परलोक (आख़िरत) के ईमान का इंकार ही कुफ़्र, शिर्क और पापों में लीन रहने की असल वजह है। यही बात है कि जब आख़िरत का तसव्वुर (कल्पना) उस के मानने वालों के विचार में धुंधला जाती है तो उन में दुराचार और बुराई बहुत हो जाती है, जैसे आजकल आम तौर से मुसलमानों की हालत है।

لَمَجْمُوعُونَ إِلَىٰ مِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ (50)

५०. जरूर जमा किये जायेंगे एक निर्धारित (मुक़र्रर) दिन के समय।

ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيُّهَا الضَّالُّونَ الْمُكَذِّبُونَ (51)

५१. फिर तुम हे भटके लोगो, झुठलाने वालो!

لَآكِلُونَ مِن شَجَرٍ مِّن زَقُّومٍ (52)

५२. जरूर खाने वाले हो ज़क़्क़ूम (थूहड़) का पेड़।

فَمَالِئُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ (53)

५३. और उसी से पेट भरने वाले हो।

فَشَارِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ (54)

५४. फिर उस पर गर्म उबलता हुआ पानी पीने वाले हो।

فَشَارِبُونَ شُرْبَ الْهِيمِ (55)

५५. फिर पीने वाले भी प्यासे ऊँटों की तरह।[1]

هَٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّينِ (56)

५६. क़यामत के दिन उनकी मेहमानी यही है।[2]

نَحْنُ خَلَقْنَاكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُونَ (57)

५७. हम ने ही तुम सब को पैदा किया है, फिर तुम क्यों नहीं मनाते?

أَفَرَأَيْتُم مَّا تُمْنُونَ (58)

५८. अच्छा फिर यह तो बताओ कि जो वीर्य (मनी) तुम टपकाते हो।

أَأَنتُمْ تَخْلُقُونَهُ أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ (59)

५९. क्या उस से (इंसान) तुम बनाते हो या स्रष्टा (ख़ालिक़) हम ही हैं?[3]

---

[1] هيم (हीम) أهيم का बहुवचन (जमा) है, उन प्यासे ऊँटों को कहा जाता है जो एक ख़ास बीमारी की वजह से पानी पर पानी पीते जाते हैं लेकिन उनकी प्यास नहीं जाती। मतलब यह है कि ज़क़्क़ूम खाकर पानी भी वैसे ही नहीं पियोगे जो साधारण (आम) ढंग से होता है, बल्कि एक तो सज़ा के रूप में तुम्हें पीने के लिए खौलता पानी मिलेगा, दूसरे तुम उसे प्यासे ऊँट की तरह पीते ही चले जाओगे लेकिन तुम्हारी प्यास दूर नहीं होगी।

[2] यह मज़ाक़ के तौर पर फ़रमाया : नहीं तो मेहमानी तो वह होती है जो मेहमान के एहतेराम के लिये किया जाता है। जैसे कुछ जगहों पर फ़रमाया :

﴿فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ﴾

"उन को दुखदायी अज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दो।" (आले इमरान-२१)

[3] यानी तुम्हारी पत्नियों से संभोग (जिमाअ) के नतीजे में तुम्हारे वीर्य (मनी) की जो बूँदे स्त्रियों के गर्भाशय (रिहम) में जाती हैं, उन से इंसानी रूप रेखा बनाने वाले हम हैं या तुम?

نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿60﴾

६०. हम ही ने तुम में मौत को मुक़द्दर कर दिया है और हम उस से हारे हुए नहीं हैं।

عَلَىٰ أَن نُّبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿61﴾

६१. कि तुम्हारी जगह पर तुम जैसे दूसरे पैदा कर दें और तुम्हें नये रूप से (उस दुनिया में) पैदा करें जिस से तुम (हमेशा) अन्जान हो।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ﴿62﴾

६२. और तुम्हें निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से पहले जन्म का ज्ञान (इल्म) भी है, फिर नसीहत क्यों नहीं हासिल करते?

أَفَرَأَيْتُم مَّا تَحْرُثُونَ ﴿63﴾

६३. अच्छा फिर यह भी बताओ कि तुम जो कुछ बोते हो।

أَأَنتُمْ تَزْرَعُونَهُ أَمْ نَحْنُ الزَّارِعُونَ ﴿64﴾

६४. उसे तुम ही उगाते हो या हम उगाने वाले हैं।[1]

لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ﴿65﴾

६५. अगर हम चाहें तो उसे कण-कण कर दें और तुम ताज्जुब के साथ बातें बनाते ही रह जाओ।

إِنَّا لَمُغْرَمُونَ ﴿66﴾

६६. कि हम पर तो दण्ड (सज़ा) ही पड़ गया।

بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿67﴾

६७. बल्कि हम तो पूरी तरह से वंचित (महरूम) ही रह गये।

أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ﴿68﴾

६८. अच्छा यह बताओ कि जिस पानी को तुम पीते हो।

أَأَنتُمْ أَنزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنزِلُونَ ﴿69﴾

६९. उसे बादलों से भी तुम ही ने उतारा है या हम बारिश करते हैं।

لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ﴿70﴾

७०. अगर हमारी इच्छा हो तो हम उसे कड़ुवा (ज़हर) कर दें फिर तुम हमारा शुक्रिया क्यों नहीं अदा करते?[2]

---

[1] यानी ज़मीन में तुम जो बीज बोते हो वह एक पौधा बनकर उगता है। अन्न के एक बेजान दाने को फाड़कर और धरती की छाती को चीरकर इस तरह पेड़ उपजाने वाला कौन है? यह भी वीर्य (मनी) की बूँद से इंसान बना देने की तरह हमारे ही सामर्थ्य (क़ुदरत) की कलाकारी है या तुम्हारी किसी कोशिश या छू मंतर का नतीजा है?

[2] यानी इस अनुग्रह (नेमत) पर हमारे हुक्म का पालन (पैरवी) करके हमारा व्यवहारिक (अमली) शुक्रिया क्यों अदा नहीं करते?

أَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ﴿71﴾

७१. अच्छा यह भी बताओ कि जो आग तुम सुलगाते हो।

ءَأَنتُمْ أَنشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنشِـُٔونَ ﴿72﴾

७२. उस के पेड़ को तुम ने पैदा किया है या हम उस के पैदा करने वाले हैं ?

نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذْكِرَةً وَمَتَاعًا لِّلْمُقْوِينَ ﴿73﴾

७३. हम ने उसे नसीहत हासिल करने का साधन (ज़रिया) और यात्रियों के फ़ायेदा की चीज़ बनाई है।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿74﴾

७४. तो अपने महान (अज़ीम) रब के नाम की तस्बीह बयान किया करो।

فَلَا أُقْسِمُ بِمَوَاقِعِ النُّجُومِ ﴿75﴾

७५. तो मैं क़सम खाता हूं सितारों के गिरने की।[1]

وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ﴿76﴾

७६. और अगर तुम्हें इल्म हो तो यह बहुत बड़ी क़सम है।

إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ﴿77﴾

७७. कि बेशक यह क़ुरआन बड़ी इज़्ज़त वाला है।

فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ﴿78﴾

७८. जो एक महफ़ूज़ किताब में (लिखित) है।

لَّا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ ﴿79﴾

७९. जिसे केवल पाक लोग ही छू सकते हैं।[2]

تَنزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿80﴾

८०. यह सारी दुनिया के रब की तरफ़ से नाज़िल किया गया है।

أَفَبِهَٰذَا الْحَدِيثِ أَنتُم مُّدْهِنُونَ ﴿81﴾

८१. तो क्या तुम ऐसी बात को साधारण (और हक़ीर) समझ रहे हो?

---

[1] فلا أقسم में 'ला' ज़्यादा है, जो बल देने के लिये है या यह ज़्यादा नहीं है बल्कि पहले की किसी चीज़ को नकारने के लिए है, यानी यह क़ुरआन ज्योतिष (कहानत) या शायरी नहीं, बल्कि मैं तारों के गिरने की क़सम लेकर कहता हूं कि यह क़ुरआन इज़्ज़त वाला है। مواقع النجوم से मुराद तारों के निकलने और डूबने की जगह और मदार (धुव्र) हैं।

[2] لا يمسه में सर्वनाम (ज़मीर) लौहे महफ़ूज़ की तरफ़ फिरता है, पाक लोगों से मुराद फ़रिश्ते हैं। कुछ ने उसको क़ुरआन की तरफ़ फिराया है यानी उसे फ़रिश्ते ही छूते हैं, यानी आकाश पर फ़रिश्तों के सिवा किसी की भी पहुंच क़ुरआन तक नहीं होती। मतलब मुश्रेकीन का खंडन (तरदीद) है जो कहते थे कि क़ुरआन शैतान लेकर उतरते हैं, अल्लाह ने फ़रमाया यह कैसे मुमकिन है, यह क़ुरआन शैतानी असर से हमेशा महफ़ूज़ है।

وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ﴿82﴾

८२. और अपने हिस्से में यही लेते हो कि झुठलाते फिरो।

فَلَوْلَآ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ﴿83﴾

८३. तो जब कि (जान) गले तक पहुँच जाये।

وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ﴿84﴾

८४. और तुम उस समय (आँखों से) देखते रहो।

وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ﴿85﴾

८५. और हम उस इंसान से तुम्हारे मुक़ाबले में ज़्यादा क़रीब होते हैं,[1] लेकिन तुम नहीं देख सकते।

فَلَوْلَآ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ﴿86﴾

८६. तो अगर तुम किसी की आज्ञा (इताअत) के अधीन (मातहत) नहीं।

تَرْجِعُوْنَهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿87﴾

८७. और उस क़ौल में सच्चे हो तो तनिक उस प्राण (रूह) को तो लौटाओ।

فَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿88﴾

८८. तो जो कोई भी (अल्लाह के दरबार में) क़रीब होगा।[2]

فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿89﴾

८९. उसे तो सुख है और खाना है और सुखदायी जन्नत है।

وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿90﴾

९०. और जो इंसान दाहिने हाथ वालों में से है।[3]

---

[1] यानी मरने वाले के हम तुम से भी ज़्यादा क़रीब होते हैं, अपने इल्म, क़ुदरत और दर्शन (बसीरत) की बुनियाद पर, या हम से मुराद अल्लाह के कार्यकर्त्ता (कारकुन) यानी मौत के फ़रिश्ते हैं जो उसका प्राण (रूह) निकालते हैं।

[2] सूर: के शुरू में कर्मों (अमल) के अनुसार इंसानों के जो तीन भेद (क़िस्म) बयान किये गये थे, उनका दोबारा बयान किया जा रहा है, यह उनकी पहली क़िस्म है जिन्हें मुक़र्रबीन के सिवा साबिक़ीन (अग्रणि) भी कहा जाता है, क्योंकि वह नेकी के हर काम में आगे होते हैं, ईमान लाने में भी दूसरों से आगे होते हैं और अपने इन्हीं गुणों (सिफ़तों) की वजह से वह अल्लाह के दरबार के समीपवर्तियों (मुक़र्रबीन) में होते हैं।

[3] यह दूसरा दर्जा है, साधारण (आम) ईमानवाले। यह भी नरक से बचकर जन्नत में जायेंगे लेकिन पदों (ओहदों) में साबिक़ीन (पहले के लोगों) से कमतर होंगे। मौत के समय उनको भी फ़रिश्ते शान्ति (सलामती) की ख़ुशख़बरी देते हैं।

فَسَلَٰمٌ لَّكَ مِنْ أَصْحَٰبِ ٱلْيَمِينِ ﴿91﴾

९१. तो भी सलाम है तेरे लिए कि तू दाहिने वालों में से है।

وَأَمَّآ إِن كَانَ مِنَ ٱلْمُكَذِّبِينَ ٱلضَّآلِّينَ ﴿92﴾

९२. लेकिन अगर कोई झुठलाने वाले पथभ्रष्टों (गुमराहों) में से है।[1]

فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيمٍ ﴿93﴾

९३. तो खौलते हुए पानी से मेहमानी है।

وَتَصْلِيَةُ جَحِيمٍ ﴿94﴾

९४. और नरक में जाना है।

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ حَقُّ ٱلْيَقِينِ ﴿95﴾

९५. यह (ख़बर) सरासर हक़ और बिल्कुल निश्चित (यक़ीनी) है।

فَسَبِّحْ بِٱسْمِ رَبِّكَ ٱلْعَظِيمِ ﴿96﴾

९६. तो तू अपने (बड़े अजीम) रब के नाम की पवित्रता (पाकीज़गी) बयान कर।[2]

سُورَةُ الحَدِيد

सूरतुल हदीद-५७

सूरः हदीद मदीने में नाज़िल हुई और इस में उन्तीस आयतें और चार रूकूअ हैं।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿1﴾

१. आकाशों और धरती में जो कुछ है (सभी) अल्लाह की तस्बीह (महिमागान) कर रहे हैं, और वह शक्तिशाली (ग़ालिब) हिक्मत वाला है।

لَهُۥ مُلْكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ يُحْىِۦ وَيُمِيتُ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿2﴾

२. आकाशों और धरती का राज्य (मुल्क) उसी का है, वही ज़िंदगी देता है और मौत भी, और वह सभी चीज़ पर क़ादिर है।

---

[1] यह तीसरा दर्जा है जिन्हें सूरह के शुरू में أَصْحَابُ الْمَشْئَمَةِ "असहाबुल मश्अमः" कहा गया था, बायें हाथ वाले या अशुभ (नहूसत) वाले। यह अपने कुफ़्र और पाखंड (सरकशी) की सज़ा या उसका अशुभ, नरक की यातना (अज़ाब) के रूप में भुगतेंगे।

[2] हदीस में आता है कि दो शब्द (कलिमा) अल्लाह को बहुत प्यारे हैं, बोलने में हल्के और तौल में भारी हैं। «سبحان الله و بحمده سبحان الله العظيم» (सहीह बुख़ारी, आख़िरी हदीस और सहीह मुस्लिम, किताबुज़ ज़िक्र, बाबु फ़ज़लित तहलील वत्तस्बीह वद्दुआ)

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ③

३. वही पहला है और वही आख़िरी, वही खुला है और वही छिपा,[1] और वह हर चीज़ को अच्छी तरह जानने वाला है।

هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۖ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ④

४. वही है जिसने आकाशों और धरती को छ: दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर बलंद हुआ, वह (अच्छी तरह) जानता है उस चीज़ को जो धरती में जाये और जो उस से निकले, और जो आकाश से नीचे आये और जो कुछ चढ़कर उस में जाये और जहाँ कहीं तुम हो वह तुम्हारे साथ है[2] और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह देख रहा है।

لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَإِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ⑤

५. आकाशों और धरती का राज्य उसी का है, और सभी काम उसी की ओर लौटाये जाते हैं।

يُولِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۚ وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ⑥

६. वही रात को दिन में दाख़िल कराता है और वही दिन को रात में दाख़िल कराता है, और सीनों में छिपी हुई बातों का वह पूरा इल्म (ज्ञान) रखने वाला है।

اٰمِنُوا بِاللّٰهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ۖ فَالَّذِينَ اٰمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ⑦

७. अल्लाह पर और उस के रसूल (सन्देष्टा) पर ईमान ले आओ और उस माल में से ख़र्च करो जिस में अल्लाह ने तुम्हें (दूसरों का) वारिस बनाया है,[3] तो तुम में से जो ईमान लायें और ख़र्च करें उन्हें बहुत बड़ा पुण्य (अज्र) मिलेगा।

---

[1] वही पहला है यानी उस से पहले कुछ न था, वही आख़िरी है, जिस के बाद कोई चीज़ नहीं होगी। वही ज़ाहिर है यानी सब पर प्रभुत्वशाली (ग़ालिब) है, उस पर कोई प्रभुत्व (ग़ल्बा) नहीं रखता। वही बातिन है, यानी बातिन की सभी बातें केवल वही जानता है या लोगों की आँखों और बुद्धियों (अक़्लों) से छिपी है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] यानी तुम जल में हो या थल में, रात हो या दिन, घरों में हो या जंगलों में, हर जगह पर हर समय वह अपने ज्ञान (इल्म) और क़ुदरत के आधार (बुनियाद) पर तुम्हारे साथ है, यानी तुम्हारे एक-एक कर्म (अमल) को देखता है, तुम्हारी एक-एक बात जानता और सुनता है। यही विषय सूर: हूद-३, सूर: रअ्द-१० और दूसरी आयतों में भी बयान किया गया है।

[3] यानी यह माल इस से पहले किसी दूसरे के पास था, इस में इस बात की तरफ़ इशारा है कि तुम्हारे पास भी यह धन नहीं रहेगा, दूसरे उस के वारिस बनेंगे, अगर तुम ने उसे अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं किया तो बाद में इस के वारिस उसे अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करके तुम से ज़्यादा सौभाग्य (सआदत) प्राप्त कर सकते हैं और अगर वह नाफ़रमानी में ख़र्च करेंगे तो तुम भी मदद करने के अपराध (जुर्म) में पकड़े जाओगे। (इब्ने कसीर)

وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿8﴾

८. तुम अल्लाह पर ईमान क्यों नहीं लाते? जबकि खुद रसूल तुम्हें अपने रब पर ईमान लाने की दावत दे रहा है और अगर तुम ईमानवाले हो तो वह तुम से मजबूत वादा भी ले चुका है।

هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖٓ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿9﴾

९. वह (अल्लाह) ही है जो अपने बंदे पर स्पष्ट (वाज़ेह) आयतें नाज़िल करता है ताकि वह तुम्हें अंधेरे से उजाले की तरफ़ ले जाये। बेशक अल्लाह (तआला) तुम पर शफ़क़त, रहम करने वाला है।

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ۗ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ۗ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿10﴾

१०. और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं करते? हक़ीक़त में आकाशों और धरती की (सभी) मीरास (चीज़ों) का मालिक (अकेला) अल्लाह ही है। तुम में से जिन लोगों ने फ़त्ह से पहले अल्लाह के रास्ते में दिया है और जिहाद किया है वह (दूसरों के) बराबर नहीं,[1] बल्कि उन से बहुत ऊँचे पद के है, जिन्होंने फ़त्ह के बाद दान किया और जिहाद किया। हाँ, भलाई का वादा तो अल्लाह तआला का उन सब से है,[2] और जो कुछ तुम (लोग) कर रहे हो उसे अल्लाह जानता है।

---

[1] फ़त्ह (विजय) से मुराद ज़्यादातर मुफ़स्सिरों के क़रीब मक्का की विजय (फ़त्ह) है। कुछ ने हुदैबिया की सुलह को खुली विजय (फ़त्हे मोबीन) मानकर उसे ही मुराद लिया है, जो भी हो, हुदैबिया सुलह या मक्का की विजय से पहले मुसलमान तादाद और ताक़त में कम थे और मुसलमानों की माली हालत भी बहुत कमज़ोर थी। इन हालतों में अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना और जिहाद में हिस्सा लेना बहुत कठिन और बड़े हिम्मत का काम था, जबकि मक्का विजय के बाद यह हालत बदल गई। मुसलमान ताक़त और तादाद में भी बढ़ते चले गये और उनकी आर्थिक दशा (माली हालत) भी पहले से कहीं अच्छी हो गई, इस में अल्लाह तआला ने दोनों ज़मानों के मुसलमानों के बारे में फ़रमाया कि यह नेकी में बराबर नहीं हो सकते।

[2] इस में साफ़ कर दिया कि सहाबा ﷺ के बीच प्रतिष्ठा (फ़ज़ीलत) और दर्जों में फ़र्क़ ज़रूर है, किन्तु दर्जों में फ़र्क़ का मतलब यह नहीं कि बाद के मुसलमान होने वाले सहाबा ﷺ ईमान और नैतिकता (अख़लाक़) में गये गुज़रे थे, जैसाकि कुछ लोग हज़रत मुआविया ﷺ और उन के पिता और दूसरे ऐसे ही अज़मत वाले सहाबा के बारे में बुरा कलाम या उन्हें 'तुलक़ा' कहकर उनकी तौहीन और अपमान (बेइज़्ज़त) करते हैं। नबी ﷺ ने सभी सहाबा के बारे में फ़रमाया : ((لا تَسُبُّوا أصحابي)) "मेरे सहाबा को अपशब्द (बुरा कलाम) न कहो, क़सम है उस शक्ति (ज़ात) की जिस के हाथ में मेरी जान है, अगर तुम में से कोई ओहुद पहाड़ जितना सोना भी अल्लाह की राह में ख़र्च कर दे तो वह मेरे सहाबा के एक मुद्द बल्कि आधे मुद्द (वज़न) के बराबर भी नहीं।" (सहीह बुख़ारी, मुस्लिम, किताबु फ़ज़ाएलिस् सहाबा)

مَنْ ذَا الَّذِىْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗٓ اَجْرٌ كَرِيْمٌ (11)

११. कौन है? जो अल्लाह (तआला) को अच्छी तरह से क़र्ज़ दे, फिर अल्लाह (तआला) उस के लिए उस को बढ़ाता चला जाये और उसका अच्छा बदला साबित हो जाये।[1]

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (12)

१२. [क़्यामत (प्रलय) के] दिन तू देखेगा कि ईमानवाले मर्दों और औरतों का प्रकाश (नूर) उन के आगे-आगे और उन के दायें दौड़ रहा होगा।[2] आज तुम्हें उन स्वर्गों की ख़ुशख़बरी है, जिन के नीचे (ठंडे पानी) की नहरें बह रही हैं, जिनमें हमेशा रहेंगे, यह है बड़ी कामयाबी।

يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ۗ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ۗ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ (13)

१३. उस दिन द्वयवादी (मुनाफ़िक़) पुरूष और महिलायें ईमानवालों से कहेंगे कि हमारा इंतेज़ार तो करो कि हम भी तुम्हारी रौशनी से कुछ रौशनी ले लें[3] जवाब दिया जायेगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ और रौशनी की खोज करो, फिर उन के और उन के बीच एक दीवार क़ायम कर दी जायेगी, जिस में दरवाज़ा भी होगा, उस के भीतरी भाग में कृपा (रहमत) होगी और बाहरी भाग में यातना (अज़ाब) होगी।

يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۗ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِىُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ (14)

१४. ये चिल्ला-चिल्ला कर उन से कहेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे? वे कहेंगे कि हाँ थे तो ज़रूर, लेकिन तुम ने अपने आप को भटकावे में डाल रखा था, और इंतेज़ार में ही रहे और शक व शुब्हा करते रहे और तुम्हें तुम्हारी (बेकार) आकांक्षाओं (आरज़ूओं) ने धोखे में ही रखा, यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म आ पहुँचा और तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा देने वाले ने धोखे में ही रखा।

---

[1] अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ देने का मतलब यह है कि अल्लाह के रास्ते में दान और नेकी करना।

[2] यह क़यामत में पुल सिरात पर होगा, यह प्रकाश (नूर) उन के ईमान और नेकी के कर्मों (अमल) का बदला होगा, जिस के प्रकाश में वह जन्नत का रास्ता आसानी से तय कर लेंगे।

[3] यह मुनाफ़िक़ कुछ दूर ईमानवालों के साथ उन के प्रकाश में चलेंगे, फिर अल्लाह तआला मुनाफ़िक़ों पर अंधेरा आच्छादित (मुसल्लत) कर देगा, उस समय वे ईमानवालों से यह कहेंगे।

१५. तो आज न तुम से फ़िदिया (और न बदला) क़ुबूल किया जायेगा और न काफ़िरों से, तुम सब का ठिकाना नरक है, वही तुम्हारा साथी है[1] और वह बुरा ठिकाना है।

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مَأْوٰىكُمُ النَّارُ ۖ هِيَ مَوْلٰىكُمْ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿15﴾

१६. क्या अब तक ईमानवालों के लिए समय नहीं आया कि उन के दिल अल्लाह की याद से और जो हक़ नाज़िल हो चुका है, उस से कोमल हो जायें, और उन लोगों की तरह न हो जायें जिन्हें इनसे पहले किताब दी गयी थी, फिर जब उन पर एक लम्बी मुद्दत ख़त्म हो गई तो उन के दिल कठोर हो गये, और उन में ज़्यादातर फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) हैं।

أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُونَ ﴿16﴾

१७. यक़ीन करो कि अल्लाह ही धरती को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा कर देता है, हम ने तो तुम्हारे लिए अपनी निशानियाँ बयान कर दीं ताकि तुम समझो।

اعْلَمُوا أَنَّ اللّٰهَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿17﴾

१८. बेशक दान देने वाले पुरूष और महिलायें और जो अल्लाह को प्रेम (शुद्धता) के साथ क़र्ज़ दे रहे हैं, उनके लिए यह बढ़ाया जायेगा,[2] और उन के लिए अच्छा (प्रतिफल एवं) अज्र है।

إِنَّ الْمُصَّدِّقِينَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَأَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ﴿18﴾

१९. अल्लाह और उसके रसूल (संदेष्टा) पर जो ईमान रखते हैं, वही लोग अपने रब के क़रीब सच्चे और शहीद हैं, उन के लिए उनका बदला और उन की दिव्य ज्योति (नूर) है, और जो कुफ़्र करते हैं और हमारी निशानियों को झुठलाते हैं वे नरकवासी (जहन्नमी) हैं।

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهِ أُولٰئِكَ هُمُ الصِّدِّيقُونَ ۖ وَالشُّهَدَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيٰتِنَا أُولٰئِكَ أَصْحٰبُ الْجَحِيمِ ﴿19﴾

---

[1] مَولى उसको कहते हैं जो किसी के काम का संरक्षक (निगराँ) यानी ज़िम्मेदार बने, मानो अब नरक ही इस बात की ज़िम्मेदार है कि उन्हें कड़ी से कड़ी यातना का मज़ा चखाये। कुछ कहते हैं कि सदा साथ रहने वाले को भी मौला कह लेते हैं, यानी अब नरक की आग ही हमेशा के लिए उनकी साथी तथा संगी होगी। कुछ कहते हैं कि अल्लाह नरक को भी अक़्ल और समझ देगा और वह काफ़िरों के ख़िलाफ़ ग़ुस्सा और ताव दिखायेगा, यानी उनका साथी बनेगा और उन्हें दुखदायी यातना (अज़ाब) से दोचार करेगा।

[2] यानी एक के बदले कम से कम दस गुना और उससे ज़्यादा सात सौ गुना, बल्कि उस से भी ज़्यादा। यह अधिकता (इज़ाफ़ा) मन की पाकी, ज़रूरत, जगह और वक़्त के ऐतबार से हो सकती है। जैसे पहले बयान हुआ कि जिन लोगों ने मक्का विजय (फ़त्ह) से पहले ख़र्च किया वह नेकी और अज्र में उन से ज़्यादा होंगे जिन्होंने उस के बाद ख़र्च किया।

إِعْلَمُوٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ۭ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطٰمًا ۭ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ⑳

२०. याद रखो कि दुनियावी जीवन केवल खेल और तमाशा और ज़ीनत और आपस में फ़ख़ (और अहंकार) और माल और औलाद में एक-दूसरे से अपने आप को ज़्यादा बतलाना है, जैसे वर्षा और उसकी पैदावार किसानों[1] को अच्छी लगती है, फिर जब वह सूख जाती है तो पीले रंग में उस को तुम देखते हो, फिर वह बिल्कुल चूरा-चूरा हो जाती है,[2] और आख़िरत (परलोक) में सख़्त अज़ाब और अल्लाह की माफ़ी और ख़ुशी है, और दुनियावी ज़िन्दगी केवल धोखे के सामान के सिवाय कुछ भी तो नहीं।

سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ㉑

२१. (आओ) दौड़ो अपने रब की माफ़ी की तरफ़ और उस जन्नत की तरफ़ जिसकी चौड़ाई आकाश और धरती की चौड़ाई के बराबर है। यह उन के लिए बनायी गयी है जो अल्लाह पर और उस के रसूलों (सन्देष्टाओं) पर ईमान रखते हैं, यह अल्लाह की कृपा (रहमत) है जिसे चाहे अता करे, और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है।

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ۭ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ㉒

२२. न कोई कठिनाई (संकट) दुनिया में आती है[3] न विशेष तुम्हारी जानों पर,[4] लेकिन इस से पहले कि हम उस को पैदा करें वह एक ख़ास किताब में लिखी हुई है।[5] बेशक यह काम

---

[1] 'कुफ़्फ़ार' किसानों को कहा गया है, इसलिए कि इसका शाब्दिक अर्थ (लफ़्ज़ी मायने) है छिपाने वाला। काफ़िरों के दिलों में अल्लाह और आख़िरत का इंकार छिपा होता है, इस वजह से उसे काफ़िर कहा जाता है, किसानों के लिए यह शब्द इस वजह से प्रयोग (इस्तेमाल) किया गया है कि वह भी धरती में बीज बोते यानी उन्हें छिपा देते हैं।

[2] यहाँ दुनियावी जीवन के जल्द ख़त्म हो जाने को खेती से मिसाल दी गई है कि जिस तरह खेती हरी होती है तो भली लगती है जिसे देखकर किसान बहुत ख़ुश होते हैं, लेकिन वह जल्द ही सूखी और पीली होकर चूर-चूर हो जाती है। इसी तरह दुनिया की शोभा (ज़ीनत) और सुन्दरता (ख़ूबसूरती), धन, औलाद और दूसरी चीज़ें इंसान का मन लुभाती हैं, लेकिन यह जीवन कुछ दिन ही का है, इसे भी स्थायित्व (हमेशगी) और क़रार नहीं।

[3] जैसे सूखा, बाढ़ और दूसरी धरती और आकाश की मुसीबतें।

[4] जैसे रोग, थकान, ग़रीबी वग़ैरह।

[5] यानी अल्लाह ने अपने इल्म के मुताबिक़ पूरी मख़लूक़ को पैदा करने से पहले ही यह सब बातें लिख दी, जैसे हदीस में है, नबी ﷺ ने फ़रमाया : "अल्लाह ने आकाश और धरती के पैदा करने से पचास

अल्लाह (तआला) पर (बड़ा) आसान है।

२३. ताकि तुम अपने से छिन जाने वाली चीज़ पर दुखी न हो जाया करो और न अता (प्रदान) की हुई चीज़ पर गर्व करने लगो[1] और इतराने वाले फ़ख़ करने वालों से अल्लाह प्रेम नहीं करता।

لِّكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿23﴾

२४. जो (ख़ुद भी) कंजूसी करें और दूसरों को (भी) कंजूसी की शिक्षा (तालीम) दें। (सुनो!) जो भी मुँह फेरे, अल्लाह बेनियाज़ और प्रशंसा (तारीफ़) के लायक़ है।

الَّذِينَ يَبْخَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۗ وَمَن يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿24﴾

२५. बेशक हम ने अपने संदेष्टाओं (रसूलों) को खुली निशानियाँ दे कर भेजा और उन के साथ किताब और न्याय (तराज़ू) नाज़िल किया[2] ताकि लोग इंसाफ़ पर बाक़ी रहें, और हम ने लोहे को भी नाज़िल किया[3] जिस में बड़ी (हैबत और) ताक़त है और लोगों के लिए दूसरे भी बहुत से फ़ायदे हैं,[4] और इसलिए भी कि अल्लाह जान ले

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۖ وَأَنزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَنصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿25﴾

हज़ार साल पहले ही सभी तक़दीर लिख दिया था।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़द्र)

[1] यहाँ जिस ग़म और ख़ुशी से रोका गया है, यह वह ग़म और ख़ुशी है जो इंसानों को नाजायेज़ कामों तक पहुँचाती है, नहीं तो दुख पर ग़म और सुख पर ख़ुशी एक फ़ितरी बात है, लेकिन मोमिन दुख पर सब्र करता है कि अल्लाह की मर्ज़ी और तक़दीर का लिखा है, रोने-चिल्लाने से बदल नहीं सकता और सुख पर इतराता नहीं। अल्लाह का कृतज्ञ (शुक्रगुज़ार) होता है कि यह सिर्फ़ उस की कोशिश का फल नहीं बल्कि अल्लाह की दया और उसका एहसान है।

[2] ميزان मीज़ान (तुला) से मुराद इंसाफ़ है और मतलब यह है कि हम ने लोगों को इंसाफ़ करने का हुक्म दिया है, कुछ ने इसका अनुवाद (तर्जुमा) तराज़ू किया है, तराज़ू उतारने से अभिप्राय (मुराद) है कि हम ने तराज़ू की ओर लोगों को रास्ता दिखाया कि उस के द्वारा (ज़रिये) लोगों को तौलकर उनका पूरा-पूरा हक़ दो।

[3] यहाँ भी उतारा का मायने है पैदा करना और उसकी कला सिखाना। लोहे से अनगिनत चीज़ें बनती हैं, यह सब अल्लाह के उस निर्देश (इल्हाम) और इरशाद का नतीजा है जो उस ने इंसान को किया है।

[4] अस्त्र-शस्त्र (हथियार) के अलावा लोहे से और भी बहुत से सामान बनते हैं जो घरों और बहुत से उद्योगों में काम आते हैं, जैसे छुरी, चाक़ू, कैंची, हथौड़ा, सुई, खेती, बढ़ई और निर्माण (तामीर) आदि के सामान और छोटी बड़ी अनगिनत मशीनें और सामान।

कि उसकी और रसूलों की मदद बिना देखे कौन करता है। बेशक अल्लाह (तआला) शक्तिशाली और सामर्थ्यवान (ग़ालिब) है।

२६. बेशक हमने नूह और इब्राहीम (عليهما السلام) को (सन्देष्टा बनाकर) भेजा और हम ने उन दोनों की औलाद में पैग़म्बरी (दूतत्व) और किताब जारी रखी, तो उन में से कुछ रास्ते पर आये और उन में से बहुत ज़्यादा नाफ़रमान रहे।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَٰهِيمَ وَجَعَلْنَا فِى ذُرِّيَّتِهِمَا ٱلنُّبُوَّةَ وَٱلْكِتَٰبَ فَمِنْهُم مُّهْتَدٍ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَٰسِقُونَ (26)

२७. उन के बाद फिर भी हम लगातार अपने सन्देष्टाओं (रसूलों) को भेजते रहे और उनके बाद हम ने ईसा पुत्र मरियम को भेजा और उन्हें इंजील दी और उन के पैरोकारों के दिल में प्रेम और दया (रहम) का जज़बा रख दिया,[1] हाँ बैराग तो उन्होंने ख़ुद खोज लिया था[2] हम ने उन पर फ़र्ज़ नहीं किया था[3] सिवाय अल्लाह की

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰٓ ءَاثَٰرِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى ٱبْنِ مَرْيَمَ وَءَاتَيْنَٰهُ ٱلْإِنجِيلَ وَجَعَلْنَا فِى قُلُوبِ ٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً وَرَهْبَانِيَّةً ٱبْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَٰهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ٱبْتِغَآءَ رِضْوَٰنِ ٱللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا فَـَٔاتَيْنَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَٰسِقُونَ (27)

---

[1] رَأْفَةً (राफ़:) का मतलब है कोमलता, और रहमत का मतलब है दया। पैरोकारों से मुराद ईसा عليه السلام के साथी हवारी हैं, यानी उन के दिलों में एक-दूसरे के लिए प्यार और मुहब्बत का जज़बा पैदा कर दिया, जैसे सहाबा केराम رضي الله عنهم एक-दूसरे से प्रेम मुहब्बत करने वाले थे। رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ यहूदी इस तरह आपस में हमदर्दी नहीं रखते थे जैसे हज़रत ईसा के मानने वाले थे।

[2] رَهْبَانِيَّةً (रहबानियत) رَهْبٌ रहब (डर) से बना है या رُهْبَان रूहबान (फ़क़ीर) से संबन्धित (मुताल्लिक़) है। रहबानियत का मतलब बैराग है, यानी दुनिया से संबंध (ताल्लुक़) तोड़ कर जंगल में जाकर अल्लाह की इबादत करना, इसकी पृष्ठभूमि (पसमंज़र) यह है कि ईशदूत ईसा के बाद ऐसे राजा हुए जिन्होंने तौरात और इंजील में बदलाव कर दिया जिसको एक गिरोह ने नहीं माना और राजा के डर से पहाड़ों और गुफ़ा में पनाह लिया, यह उसका आरम्भ था, जिसका आधार मजबूरी थी। लेकिन बाद के लोगों ने अपने बड़ों के अंधे अनुसरण (तक़लीद) में इस नगर त्याग को इबादत का एक नया ढंग बना लिया और ख़ुद को गिरजाघरों और पूजा स्थलों (इबादतगाहों) में बंद कर लिया और उस के लिये दुनिया के त्याग और बैराग को फ़र्ज़ कर लिया, उसी को अल्लाह ने ابتداع (ख़ुद गढ़ना) कहा है।

[3] यह पिछली बात ही की पुष्टि (तसदीक़) है कि यह बैराग उनका ख़ुद बनाया हुआ था, अल्लाह ने उसकी इजाज़त नहीं दी।

ख़ुशी की खोज के[1] तो उन्होंने उस का पूरा पालन (इताअत) न किया, फिर भी हम ने उन में से जो ईमान लाये थे उन्हें उनका बदला दिया, और उन में ज़्यादातर लोग अवज्ञाकारी (फ़ासिक़) हैं।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿28﴾

२८. हे लोगो जो ईमान लाये हो, अल्लाह से डरते रहा करो और उस के संदेष्टा (रसूल) पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हें अपनी दया (रहमत) का दुगुना हिस्सा देगा[2] और तुम्हें दिव्य ज्योति (नूर) देंगा, जिस की रौशनी में तुम चलो-फिरोगे और (तुम्हारे पाप भी) माफ़ कर देगा, अल्लाह माफ़ (क्षमा) करने वाला दयावान (रहीम) है।

لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿29﴾

२९. यह इसलिए कि अहले किताब (ग्रन्थ वाले) जान लें कि अल्लाह की कृपा (फ़ज़्ल) के किसी हिस्से पर भी उन्हें हक़ नहीं और यह कि सारी कृपा अल्लाह के हाथ में ही है, वह जिसे चाहे दे और अल्लाह (तआला) ही बड़ा फ़ज़्ल वाला (कृपालु) है।

[1] यानी हम ने तो उन पर अनिवार्य (फ़र्ज़) किया था कि हमारी ख़ुशी की खोज करें। दूसरा अनुवाद यह किया गया है कि उन्होंने यह काम अल्लाह को ख़ुश करने के लिए किया था, लेकिन अल्लाह ने साफ़ कर दिया कि अल्लाह की ख़ुशी दीन में अपनी तरफ़ से नई बातें बनाने से हासिल नहीं हो सकती, चाहे वह कितनी ही अच्छी क्यों न हों, अल्लाह की ख़ुशी तो उस की इताअत ही से मिलती है।

[2] यह दुगुना प्रतिफल (अज्र) उन ईमानवालों को मिलेगा जो नबी ﷺ से पहले के नबी पर ईमान रखते थे फिर आप ﷺ पर भी ईमान लाये, जैसाकि हदीस में बयान किया गया है। (सहीह-अल-बुख़ारी, किताबुल इल्म, सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान) एक दूसरी व्याख्या (तफ़सीर) के अनुसार जब अहले किताब ने इस बात पर गर्व (फ़ख़) का प्रदर्शन (इज़्हार) किया कि उन्हें दुगुना पुण्य (अज्र) मिलेगा तो अल्लाह ने मुसलमानों के पक्ष (हक़) में यह आयत उतारी। (तफ़सील के लिये तफ़सीर इब्ने कसीर देखिये)

सूरतुल मुजादिल:-५८

سُوْرَةُ الْمُجَادَلَةِ

सूर: मुजादिल: मदीना में नाज़िल हुई और इस में बाईस आयतें और तीन रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. निश्चय (यक़ीनन) अल्लाह (तआला) ने उस औरत की बात सुनी जो तुझ से अपने पति के बारे में विवाद (तकरार) कर रही थी और अल्लाह के सामने शिकायत कर रही थी, अल्लाह (तआला) तुम दोनों की बातचीत (वाद-विवाद) सुन रहा था।[1] बेशक अल्लाह (तआला) सुनने देखने वाला है।

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ①

२. तुम में से जो लोग अपनी पत्नियों से ज़िहार करते हैं (यानी उन्हें मां कह बैठते हैं) वह हक़ीक़त में उनकी मातायें नहीं हैं, उनकी मातायें तो वही हैं जिन के गर्भ से उन्होंने जन्म लिया है,[2] बेशक ये लोग एक अनुचित (मुन्कर) और झूठी बात कहते हैं। बेशक अल्लाह (तआला) क्षमाशील (बख़्शने वाला) और माफ़ करने वाला है।

اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۭ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰۗىِٔيْ وَلَدْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ②

---

[1] यह इशारा है हज़रत ख़ौल: رضي الله عنها की घटना (वाक़ेआ) की तरफ़, जिन के पति हज़रत औस पुत्र सामित ने उन से ज़िहार कर लिया था, ज़िहार का मायने है अपनी पत्नी (बीवी) से कह देना «أَنْتِ عَلَيَّ كَظَهْرِ أُمِّي» (तू मुझ पर मेरी मां की पीठ के बराबर है) जेहालत के दौर में ज़िहार को तलाक़ (विवाह-विच्छेद) समझा जाता था। हज़रत ख़ौल: बहुत परेशान हुई, उस समय तक इस बारे में कोई हुक्म नहीं उतरा था, इसलिए वह नबी ﷺ के पास आयीं तो आप भी कुछ रूके रहे, वह आप से झगड़ा और तकरार करती रहीं जिस पर यह आयतें उतरीं, जिन में ज़िहार की समस्या (सूरत) और उसका हुक्म और प्रायश्चित (कफ़्फ़ारा) को बयान कर दिया गया। (अबू दाऊद, किताबुत्तलाक़)

[2] यह ज़िहार का हुक्म बताया कि तुम्हारे कह देने से तुम्हारी पत्नी (बीवी) तुम्हारी मां नहीं बन जायेगी।

وَالَّذِينَ يُظٰهِرُونَ مِن نِّسَآئِهِمْ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا قَالُوا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مِّن قَبْلِ أَن يَتَمَآسَّا ۚ ذٰلِكُمْ تُوعَظُونَ بِهِۦ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ③

३. और जो लोग अपनी पत्नियों से ज़िहार करें फिर अपनी कही हुई बात वापस लें तो उन के ऊपर आपस में एक-दूसरे को हाथ लगाने से पहले एक दास (गुलाम) को आज़ाद करना है, इस के ज़रिये तुम उपदेश (नसीहत) दिये जाते हो और अल्लाह (तआला) तुम्हारे सभी अमलों को जानता है।

فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِن قَبْلِ أَن يَتَمَآسَّا ۖ فَمَن لَّمْ يَسْتَطِعْ فَإِطْعَامُ سِتِّينَ مِسْكِينًا ۚ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِۦ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۗ وَلِلْكٰفِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ④

४. हाँ, जो इंसान न पाये तो उस के ऊपर दो महीने का लगातार रोज़ा है इस से पहले कि एक-दूसरे को हाथ लगायें, और जिस इंसान की यह भी ताक़त न हो उस पर साठ ग़रीबों को खाना खिलाना है, यह इसलिए कि तुम अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ। यह अल्लाह (तआला) की मुक़र्रर की हुई सीमायें (हदें) हैं और काफ़िरों के लिए ही दुखदायी अज़ाब है।

إِنَّ الَّذِينَ يُحَآدُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُۥ كُبِتُوا كَمَا كُبِتَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ وَقَدْ أَنزَلْنَآ ءَايٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۚ وَلِلْكٰفِرِينَ عَذَابٌ مُّهِينٌ ⑤

५. बेशक जो लोग अल्लाह और उस के रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं वे अपमानित (ज़लील) किये जायेंगे, जैसे उन से पहले के लोग ज़लील किये गये,[1] और बेशक हम खुली आयतें नाज़िल कर चुके हैं और काफ़िरों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوٓا ۚ أَحْصٰىهُ اللَّهُ وَنَسُوهُ ۚ وَاللَّهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيدٌ ⑥

६. जिस दिन अल्लाह (तआला) उन सब को उठायेगा, फिर उन्हें उन के किए हुए अमल से बाख़बर करायेगा, (जिसे) अल्लाह ने गिन रखा है और जिसे ये भूल गये थे[2] और अल्लाह (तआला) हर चीज़ से अवगत (बाख़बर) है।

---

[1] इस से अभिप्राय (मुराद) पिछली क़ौमें हैं जो इसी मुख़ालफ़त की वजह से बरबाद हो गईं।

[2] यह दिल में पैदा होने वाले शक का जवाब है कि पापों की इतनी अधिकता और इतने रूप हैं कि उनकी गिनती ज़ाहिरी तौर से नामुमकिन है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम्हारे लिए बेशक नामुमकिन है, बल्कि तुम्हें तो अपने किये सब कर्म भी याद नहीं होंगे, लेकिन यह अल्लाह के लिए कोई कठिन नहीं, उस ने एक-एक का कर्म सुरक्षित (महफ़ूज़) कर रखा है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ مَا يَكُونُ مِن نَّجْوَىٰ ثَلَٰثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنَىٰ مِن ذَٰلِكَ وَلَا أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ۖ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿7﴾

७. क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह आकाशों और धरती की हर चीज़ जानता है, तीन इंसानों की कानाफूसी नहीं होती, लेकिन अल्लाह उनका चौथा होता है और न पाँच की लेकिन वह उनका छठा होता है और न उस से कम की और न ज़्यादा की, लेकिन वह उन के साथ ही होता है जहाँ भी वे हों फिर क़्यामत (प्रलय) के दिन उन्हें उन के अमल से बाख़बर करायेगा, बेशक अल्लाह (तआला) हर चीज़ का जानकार है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نُهُوا عَنِ النَّجْوَىٰ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَٰجَوْنَ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَٰنِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ وَيَقُولُونَ فِي أَنفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ ۚ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ يَصْلَوْنَهَا ۖ فَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿8﴾

८. क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें कानाफूसी से रोक दिया गया था? वे फिर भी उस मना किये हुए काम को दोबारा करते हैं,[1] और आपस में पाप की और नाइंसाफ़ी की और रसूलों की नाफ़रमानी की, कानाफूसियाँ करते हैं और जब तेरे पास आते हैं तो तुझे उन शब्दों (लफ़्ज़ों) में सलाम करते हैं, जिन शब्दों में अल्लाह (तआला) ने नहीं कहा, और अपने दिल में कहते हैं कि अल्लाह (तआला) हमें हमारे इस कहने पर सज़ा क्यों नहीं देता? उन के लिए नरक (दण्ड) काफ़ी है, जिसमें ये जायेंगे[2] तो वह कितना बुरा ठिकाना है।

[1] इस से मदीने के यहूदी और मुनाफ़िक़ मुराद हैं, जब मुसलमान उन के पास से गुज़रते तो यह आपस में सिर जोड़ कर ऐसे कानाफूसी करते कि मुसलमान समझते कि शायद उन के ख़िलाफ़ कोई षड़यंत्र (साज़िश) रच रहे हैं, या मुसलमानों की किसी सेना पर हमला करके दुश्मन ने नुक़सान पहुँचाया है, जिसकी ख़बर उन्हें मिल गई है। मुसलमान इन बातों से डर जाते, इसलिए नबी ﷺ ने इस तरह की कानाफूसियों से रोक दिया, लेकिन कुछ ही समय बाद उन्होंने फिर यह बुरा काम शुरू कर दिया, आयत में उन के इसी काम की चर्चा की जा रही है।

[2] अल्लाह ने फ़रमाया कि अगर अल्लाह ने अपनी इच्छा और हिक्मत की वजह से दुनिया में तुरन्त पकड़ नहीं की तो क्या वह आख़िरत में भी नरक के अज़ाब से बच जायेंगे? नहीं, निश्चय (यक़ीनन) नहीं, नरक उन के इंतेज़ार में है जिस में वह दाख़िल होंगे।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا تَنَٰجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَٰجَوْا۟ بِٱلْإِثْمِ وَٱلْعُدْوَٰنِ وَمَعْصِيَتِ ٱلرَّسُولِ وَتَنَٰجَوْا۟ بِٱلْبِرِّ وَٱلتَّقْوَىٰ ۖ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ٱلَّذِىٓ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ⑨

९. हे ईमानवालो! तुम जब कानाफूसी करो तो ये कानाफूसी पाप, उद्दण्डता (सरकशी) और रसूल की नाफ़रमानी की न हो, बल्कि नेकी और तक़्वा की बातों पर कानाफूसी करो, और उस अल्लाह से डरते रहो जिस के पास तुम सब जमा किये जाओगे।

إِنَّمَا ٱلنَّجْوَىٰ مِنَ ٱلشَّيْطَٰنِ لِيَحْزُنَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْـًٔا إِلَّا بِإِذْنِ ٱللَّهِ ۚ وَعَلَى ٱللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ ٱلْمُؤْمِنُونَ ⑩

१०. (बुरी) कानाफूसी शैतान का काम है, जिस से ईमानवालों को दुख हो,[1] यद्यपि (अगरचे) अल्लाह तआला की मर्जी के बिना वह उन्हें कोई नुक़्सान नहीं पहुँचा सकता, और ईमानवालों को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा रखें।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا۟ فِى ٱلْمَجَٰلِسِ فَٱفْسَحُوا۟ يَفْسَحِ ٱللَّهُ لَكُمْ ۖ وَإِذَا قِيلَ ٱنشُزُوا۟ فَٱنشُزُوا۟ يَرْفَعِ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنكُمْ وَٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْعِلْمَ دَرَجَٰتٍ ۚ وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ⑪

११. हे ईमानवालो! जब तुम से कहा जाये कि सभाओं (मजलिसों) में तनिक खुल कर बैठो, तो तुम जगह कुशादा कर दो,[2] अल्लाह (तआला) तुम्हें कुशादगी (विस्तार) अता करेगा, और जब कहा जाये कि उठकर खड़े हो जाओ, तो तुम उठकर खड़े हो जाओ, अल्लाह (तआला) तुम में से उन लोगों के जो ईमान लाये हैं और जो इल्म दिये गये हैं पद ऊँचे कर देगा,[3] और अल्लाह

---

[1] गुनाह, बुरे काम और रसूल ﷺ की नाफ़रमानी पर आधारित (मबनी) कानाफूसियाँ शैतानी काम हैं, क्योंकि शैतान ही इन पर उकसाता है ताकि वह इस के द्वारा मोमिनों को दुखी और शोकग्रस्त (ग़मगीन) कर दे।

[2] इस में मुसलमानों को सभा के शिष्टचार (आदाब) बताये जा रहे हैं। मजलिस शब्द आम है जो हर उस मजलिस को शामिल है जिस में मुसलमान भलाई और नेकी हासिल करने के लिए जमा हों, शिक्षा-दिक्षा (तालीम-नसीहत) के लिये मजलिस हो या जुमा की हो। (तफ़सीर अल कुर्तबी) "खुल कर बैठो" का मतलब है कि सभा (मजलिस) का दायरा कुशादा रखो ताकि बाद में आने वालों के लिये भी जगह मिले। दायरा तंग न रखो कि जो बाद में आये खड़ा रहे या दूसरे को हटाकर अपनी जगह बनाये, यह दोनों बातें मुनासिब नहीं हैं। जैसे कि नबी ﷺ ने फ़रमाया कि कोई इंसान दूसरे को हटाकर उस जगह पर न बैठे, इसलिए मजलिस का दायेरा कुशादा कर लो। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जुमअ:, बाबु मुस्लिम, किताबुस सलाम)

[3] यानी ईमान वालों के दर्जे ईमान न लाने वालों पर और ज्ञानियों (आलिमों) के दर्जे अज्ञानियों (जाहिलों) पर ऊँचा करेगा। जिसका मतलब यह हुआ कि ईमान के साथ धार्मिक ज्ञान (इल्म) की जानकारी दर्जे को ज़्यादा ऊँचा करती है।

(तआला) (हर उस काम को) जो तुम कर रहे हो (अच्छी तरह) जानता है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (12)

१२. हे मुसलमानो! जब तुम रसूल से अकेले में बात करना चाहो, तो अपनी इस अकेले में बात करने से पहले कुछ दान (सदक़ा) कर दिया करो, यह तुम्हारे हक़ में अच्छा और पाक है, हाँ, अगर न पाओ तो बेशक अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला रहम करने वाला है।

ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ؕ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ (13)

१३. क्या तुम अपनी अकेले की बातों (काना-फूसी) से पहले दान (सदक़ा) करने से डर गये तो जब तुम ने यह न किया और अल्लाह (तआला) ने भी तुम्हें माफ़ कर दिया तो अब (सही तरीक़े से) नमाज़ों को क़ायम रखो, ज़कात देते रहा करो और अल्लाह (तआला) और उस के रसूल के हुक्म का पालन (पैरवी) करते रहो और तुम जो कुछ भी करते रहो उन सब से अल्लाह (अच्छी तरह) परिचित (बाख़बर) है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ (14)

१४. क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने उस समुदाय (क़ौम) से दोस्ती की जिन पर अल्लाह नाराज़ हो चुका है, न ये (भ्रष्टाचारी) तुम्हारे ही हैं, न उन के हैं, और इल्म होने के बावजूद भी झूठ पर क़समें खा रहे हैं।

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (15)

१५. अल्लाह (तआला) ने उन के लिए कठोर अज़ाब तैयार कर रखा है, यक़ीनी तौर से जो कुछ ये कर रहे हैं बुरा कर रहे हैं।

اِتَّخَذُوْۤا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ (16)

१६. इन लोगों ने तो अपनी क़समों को ढाल बना रखा है[1] और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं तो उन के लिए अपमानकारी अज़ाब है।

---

[1] أيمان (ऐमान) يمين (यमीन) का बहुवचन (जमा) है, मायने है क़सम। यानी जैसे ढाल से दुश्मन के हमले को रोक कर अपना बचाव कर लिया जाता है, इसी तरह उन्होंने अपनी क़समों को मुसलमानों की तलवार से बचने के लिए ढाल बना रखा है।

لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْئًا ۚ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ (17)

१७. उनका माल और उनकी औलाद अल्लाह के सामने कुछ काम न आयेगी, यह तो नरक में जाने वाले हैं, हमेशा ही उस में रहेंगे।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ ۖ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلٰى شَيْءٍ ۚ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُونَ (18)

१८. जिस दिन अल्लाह (तआला) उन सबको उठा खड़ा करेगा तो यह जिस तरह तुम्हारे सामने क़सम खाते हैं, अल्लाह (तआला) के सामने भी क़सम खाने लगेंगे और समझेंगे कि वे भी किसी (दलील) पर हैं, यक़ीन करो कि बेशक वही झूठे हैं।

اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَأَنْسٰهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ۚ أُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ۚ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُونَ (19)

१९. उन पर शैतान ने प्रभाव (ग़लबा) हासिल कर लिया है[1] और उन्हें अल्लाह की याद से भुला दिया है, ये शैतान की सेना है। सुनो! शैतान की सेना ही नुक़सान उठाने वाली है।

إِنَّ الَّذِينَ يُحَآدُّونَ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ أُولٰٓئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ (20)

२०. बेशक अल्लाह (तआला) का और उस के रसूल का जो लोग विरोध करते हैं,[2] वही लोग सब से ज़्यादा अपमानितों (ज़लीलों) में हैं।

كَتَبَ اللّٰهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي ۚ إِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ (21)

२१. अल्लाह (तआला) लिख चुका है कि बेशक मैं और मेरे रसूल ग़ालिब (विजयी) रहेंगे। बेशक अल्लाह तआला ताक़तवर और ग़ालिब (प्रभावशाली) है।

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَآدُّونَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوٓا آبَآءَهُمْ أَوْ أَبْنَآءَهُمْ أَوْ

२२. अल्लाह (तआला) पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखने वालों को आप अल्लाह और उस के रसूल के विरोधियों (मुख़ालिफ़ों) से

---

[1] اِسْتَحْوَذَ का मतलब 'घेर लिया', 'जमा कर लिया' है, इसलिए उसका तर्जुमा 'प्रभुत्व (ग़ल्बा) हासिल कर लिया' किया जाता है, क्योंकि ग़ल्बा में यह सभी मायने आ जाते हैं।

[2] مُحَادَّة (मुहाद्दत) ऐसे कड़े विरोध (मुख़ालफ़त), दुश्मनी और झगड़े को कहते हैं कि दोनों पक्षों का मेल बहुत मुश्किल हो। मानो दोनों दो किनारों (सीमा) पर हैं जो एक-दूसरे के ख़िलाफ़ हैं। इसी से यह 'रोकने' के मायने में इस्तेमाल होता है और इसीलिए पहरेदार को भी 'हद्दाद' कहा जाता है।

إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ ۚ أُولَٰئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُمْ بِرُوحٍ مِنْهُ ۖ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ أُولَٰئِكَ حِزْبُ اللَّهِ ۚ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿22﴾

प्रेम करते हुए कभी न पायेंगे,[1] चाहे वे उन के पिता या उन के पुत्र या उन के भाई या उन के सम्बन्धी (परिवार के क़रीब) ही क्यों न हों,[2] यही लोग हैं जिन के दिल में अल्लाह (तआला) ने ईमान लिख दिया है और जिनकी पुष्टि (ताईद) अपनी आत्मा (रूह) से की है और जिन को उन स्वर्गों में प्रवेश (दाख़िला) देगा जिन के नीचे (ठंडे) पानी की नहरें बह रही हैं, जहाँ ये हमेशा रहेंगे, अल्लाह उन से ख़ुश है और ये अल्लाह से ख़ुश हैं,[3] यह अल्लाह की सेना है, जान लो कि बेशक अल्लाह के गिरोह वाले ही कामयाब लोग हैं।

سُورَةُ الْحَشْرِ

सूरतुल हश्र-५९

सूर: हश्र* मदीने में नाज़िल हुई, इसमें चौबीस आयतें और तीन रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

[1] इस आयत में अल्लाह तआला ने साफ़ किया है कि जो अल्लाह पर अक़ीदा (आस्था) और आख़िरत पर ईमान मे पूरे होते हैं, वह अल्लाह और रसूल ﷺ के दुश्मनों से मुहब्बत और दिली लगाव नहीं रखते, मानो ईमान और अल्लाह और रसूल ﷺ के दुश्मनों से मुहब्बत और समर्थन (ताईद) एक दिल में जमा नहीं हो सकते। यह विषय पाक क़ुरआन के दूसरे भी कई जगहों पर बयान किया गया है, जैसे आले-इमरान-२८, सूर: तौबा-२४, वग़ैरह।

[2] इसलिए कि उनका ईमान उनको उन के प्रेम से रोकता है और ईमान का तक़ाज़ा पिता, पुत्र, भाई और वंश और परिवार के प्रेम और पक्ष से ज़्यादा ज़रूरी होता है, जैसाकि सहाबये केराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम ने यह करके दिखाया।

[3] यानी जब पहला मुसलमान, सहाबये केराम ईमान के बिना पर अपने संबन्धियों और रिश्तादारों पर खिन्न हो गये, यहाँ तक कि उन्हें अपने हाथों क़त्ल करने में भी संकोच नहीं किया तो उस के बदले अल्लाह ने उन्हें अपनी ख़ुशी दे दी और उन पर इस तरह अपने अनुग्रह (नेमत) की वर्षा की कि वह अल्लाह से ख़ुश हो गये।

* यह सूरह यहूद के एक क़बीले बनू नजीर के बारे में नाज़िल हुई है। इसलिए इसको सूरतुन्नजीर भी कहते हैं। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरतिल हश्र)

१. आकाशों और धरती की हर चीज अल्लाह तआला की पवित्रता (तस्बीह) बयान करती है, और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है।

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿1﴾

२. वही है जिस ने अहले किताब में से काफ़िरों को उन के घरों से पहला हश्र (जमाव) के समय निकाला,[1] तुम्हारा अंदाजा (भी) न था कि वे निकलेंगे और वह ख़ुद (भी) समझ रहे थे कि उन के (मजबूत) क़िले उन्हें अल्लाह (के अज़ाब) से बचा लेंगें, तो उन पर अल्लाह (का अज़ाब) ऐसे स्थान से आ पड़ा कि उन्हें अंदाजा भी न था और उन के दिलों में अल्लाह (तआला) ने डर डाल दिया, वे अपने घरों को अपने ही हाथों उजाड़ रहे थे और मुसलमानों के हाथों (बरबाद करवा रहे थे) तो हे आँखों वालो! नसीहत हासिल करो।

هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيٰرِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ ۚ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخْرُجُوا وَظَنُّوا أَنَّهُمْ مَانِعَتُهُمْ حُصُونُهُمْ مِنَ اللَّهِ فَأَتٰىهُمُ اللَّهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُونَ بُيُوتَهُمْ بِأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِينَ فَاعْتَبِرُوا يٰأُولِي الْأَبْصٰرِ ﴿2﴾

३. और अगर अल्लाह (तआला) ने उन पर देश निकाला न लिख दिया होता तो यक़ीनी तौर से उन्हें दुनिया में ही अज़ाब देता,[2] और आख़िरत में (तो) उन के लिए आग का अज़ाब है ही।

وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَاءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۖ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ﴿3﴾

४. यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह (तआला) और उस के रसूल का विरोध किया, और जो भी अल्लाह का विरोध करेगा तो अल्लाह (तआला) भी कठोर अज़ाब देने वाला है।

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ وَمَنْ يُشَاقِّ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿4﴾

---

[1] मदीने के आसपास यहूदियों के तीन क़बीले आबाद थे, बनू नज़ीर, बनू क़ुरैज़ा और बनू क़ैनुक़ाअ। मदीना आने के बाद नबी ﷺ ने उन से सुलह भी किया था, लेकिन यह लोग अन्दर से षड़यन्त्र (साजिश) करते रहे और मक्का के काफ़िरों से भी मुसलमानों के ख़िलाफ़ सम्पर्क (राबेता) रखा।

[2] यानी अल्लाह के लेख में इसी तरह उनका देश निकाला पहले से लिखा न होता तो उनको इस दुनिया ही में घोर यातना (अज़ाब) दे दी जाती, जैसाकि बाद में उन के भाई यहूद के एक-दूसरे क़बीले (क़ुरैज़ा) को ऐसी ही यातना में डाला गया कि उन के जवानों को क़त्ल कर दिया गया और दूसरों को क़ैदी बना लिया गया और उनका माल मुसलमानों के लिये ग़नीमत बना दिया गया।

مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿5﴾

५. तुम ने खजूरों के जो पेड़ काट डाले और जिन्हें तुम ने उन की जड़ों पर बाक़ी रहने दिया, यह सब अल्लाह (तआला) के हुक्म से था और इसलिए भी कि कुकर्मियों (फ़ासिकों) को अल्लाह (तआला) अपमानित (ज़लील) करे।[1]

وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿6﴾

६. और उनका जो माल अल्लाह (तआला) ने अपने रसूल के हाथ लगाया है जिस पर तुम ने न घोड़े दौड़ाये हैं और न ऊँट, वल्कि अल्लाह (तआला) अपने रसूल को जिस पर चाहे प्रभावशाली (ग़ालिब) कर देता है[2] और अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है।

مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ۭ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۤ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿7﴾

७. बस्तियों वालों का जो (धन) अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लड़ाई किये बिना ही अपने रसूल के हाथ लगाया, वह अल्लाह का है और रसूल का, क़रीबी रिश्तेदारों का, यतीमों का, ग़रीबों का और यात्रियों का है, ताकि तुम्हारे धनवानों के हाथों में ही यह धन चक्कर लगाता न रह जाये,[3] और तुम्हें जो कुछ रसूल दें तो ले

---

[1] لِيْنَة (लीन:) खजूर की एक क़िस्म है, जैसे अज्वा, बर्नी आदि (वग़ैरह) खजूरों की क़िस्में हैं।

[2] वनू नज़ीर का यह इलाक़ा जो मुसलमानों के अधिकार में आया, मदीने से तीन-चार मील की दूरी पर था, यानी मुसलमानों को इस के लिए लम्बी यात्रा की ज़रूरत नहीं हुई, मुसलमानों को ऊँट, घोड़े नहीं दौड़ाने पड़े, ऐसे ही लड़ना भी नहीं पड़ा और सुलह के ज़रिये यह इलाक़ा फ़त्ह हो गया, इसलिए यहाँ से मिले माल को 'फै' माना गया जिसका हुक्म ग़नीमत (परिहार) से अलग है। मानो वह माल 'फै' है, जो दुश्मन बिना लड़े छोड़ कर भाग जाये या समझौता से मिले और जो धन ग़नीमत रूप से लड़ाई और प्रभुत्व (ग़ल्बा) हासिल करने से मिले, वह 'ग़नीमत' है। 'ग़नीमत' का क़ानून यह है कि उस के पाँच हिस्से किये जायें, चार हिस्से मुजाहिदों में बाँटा जायेगा और पाँचवाँ हिस्सा अल्लाह के रसूल के लिए यानी मुसलमानों के वैतुलमाल (कोष गृह) के लिए हैं, लेकिन फ़ै का माल मुजाहिदों में बाँटा नहीं जायेगा, सभी माल अल्लाह के रसूल का है, यानी मुसलमानों के वैतुलमाल में रखा जायेगा।

[3] دُوْلَة (दूलह) उस चीज़ को कहते हैं जो कुछ लोगों के बीच फिरती रहे, उन से बाहर न निकले। यह माले फ़ै के इस्तेमाल की वजह बताया है, उसे मुजाहिदीन में बाँटने की जगह बैतुल माल का हिस्सा इसलिए क़रार दिया है कि यह धन धनवानों के बीच ही न फिरता रहे वल्कि समाज के दूसरे लोग भी उस से फ़ायेदा हासिल करें।

लो और जिस से रोकें रुक जाओ और अल्लाह (तआला) से डरते रहा करो, बेशक अल्लाह (तआला) कठोर अज़ाब वाला है।

लِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ⑧

८. (फ़ै का धन) उन ग़रीब मुहाजिरों के लिए है जो अपने घरों से और अपने धनों से निकाल दिये गये हैं, वे अल्लाह की रहमत और ख़ुशी के इच्छुक हैं और अल्लाह (तआला) की और उस के रसूल की मदद करते हैं, यही सच्चे लोग हैं।[1]

وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۭ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ⑨

९. और (उन के लिए) जिन्होंने इस घर में (यानी मदीने में) और ईमान में उन से पहले जगह बना लिया है[2] और अपनी तरफ़ हिजरत कर के आने वालों से मुहब्बत करते हैं और मुहाजिरों को जो कुछ दे दिया जाये, उस से वे अपने सीनों में कोई संकोच नहीं करते, बल्कि ख़ुद अपने ऊपर उनको प्राथमिकता (तरजीह) देते हैं चाहे ख़ुद उनको कितनी ही ज़्यादा ज़रूरत हो[3] (बात यह है) कि जो भी अपनी मनोकांक्षा (नफ़्स की कंजूसी) से बचाया गया वही कामयाब (और मुराद पाया हुआ) है।[4]

---

[1] इस में फ़ै के माल का एक सही ख़र्च बताया गया है और साथ ही मुहाजिरीन की श्रेष्ठता (फ़ज़ीलत) का इज़हार है, जिस के बाद उन के ईमान में शक करना मानो क़ुरआन का इंकार करना है।

[2] इस से मुराद मदीना के अंसार हैं जो मुहाजिरीन के मदीने आने से पहले मदीने में आबाद थे और मुहाजिरीन के हिजरत करके आने से पहले ईमान भी उन के दिलों में रच-बस गया था। यह मुराद नहीं है कि मुहाजिरीन के ईमान लाने से पहले यह अंसार ईमान ला चुके थे, क्योंकि उनकी ज़्यादा तादाद मुहाजिरीन के ईमान लाने के बाद ईमान लाई है।

[3] यानी अपने मुक़ाबले में मुहाजिरीन की ज़रूरत को प्राथमिकता (तरजीह) देते हैं, ख़ुद भूखे रहते हैं, लेकिन मुहाजिरीन को खिला देते हैं।

[4] हदीस में है कि मनोकांक्षा (आरज़ूओं) से बचो, क्योंकि इस मनोकांक्षा ने ही पहले लोगों को बरबाद किया, उसी ने उन्हें ख़ून-ख़राबा पर तैयार किया और उन्होंने निषेधित (हराम) को वैध (उचित) बना लिया। (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्रे, बाबु तहरीमिज़् ज़ुल्मे)

१०. और (उन के लिए) जो उन के बाद आयें, जो कहेंगे कि हे हमारे रब ! हमें माफ़ कर दे और हमारे उन भाईयों को भी जो हम से पहले ईमान ला चुके हैं और ईमानवालों की तरफ़ से हमारे दिल में कपट (और दुश्मनी) न डाल, हे हमारे रब ! बेशक तू प्रेम और दया (रहम) करने वाला है ।

وَالَّذِينَ جَاءُو مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ (10)

११. क्या तूने मुनाफ़िकों को नहीं देखा जो अपने अहले किताब काफ़िर भाईयों से कहते हैं कि अगर तुम देश से निकाल दिये गये तो हम भी ज़रूर तुम्हारे साथ देश छोड़ देंगे और तुम्हारे बारे में हम कभी भी किसी की बात क़बूल न करेंगे, और अगर तुम से युद्ध (जंग) किया जायेगा तो ज़रूर हम तुम्हारी मदद करेंगे, लेकिन अल्लाह (तआला) गवाही देता है कि ये बिल्कुल झूठे हैं ।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِنْ قُوتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ (11)

१२. अगर वे देश से निकाल दिये गये तो ये उन के साथ न जायेंगे और अगर उन से युद्ध छिड़ गया तो ये उनकी मदद (भी) नहीं करेंगे, और अगर यह (मान भी लिया जाये कि) मदद पर आ भी गये तो पीठ दिखाकर (भाग खड़े) होंगे, फिर मदद न किये जायेंगे ।[1]

لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِنْ قُوتِلُوا لَا يَنْصُرُونَهُمْ وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُونَ (12)

१३. (मुसलमानो! यक़ीन करो) कि तुम्हारा डर उन के सीनों में अल्लाह के डर के मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा है, यह इसलिए कि ये समझते नहीं।[2]

لَأَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ (13)

---

[1] मतलब यहूदी हैं, यानी जब उन के सहयोगी मुनाफ़िक़ ही हार कर भाग खड़े होंगे तो यहूद कैसे विजयी और कामयाब होंगे? कुछ ने इस से मुराद मुनाफ़िक़ लिये हैं कि वह मदद नहीं किये जायेंगे, बल्कि अल्लाह उन्हें अपमानित (ज़लील) करेगा और उनका निफ़ाक़ (द्वयवाद) उन के लिए फ़ायदेमंद नहीं होगा ।

[2] यानी तुम्हारा यह डर उन के दिलों में उनकी नासमझी की वजह से है, नहीं तो अगर वह समझ रखेते तो समझ जाते कि मुसलमानों का प्रभुत्व (ग़ल्बा) और विजय अल्लाह की तरफ़ से है, इसलिए डरना अल्लाह ही से चाहिए न कि मुसलमानों से ।

لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرًى مُّحَصَّنَةٍ أَوْ مِن وَرَاءِ جُدُرٍ ۚ بَأْسُهُم بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ ۚ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُونَ ﴿14﴾

१४. ये सब मिलकर भी तुम से लड़ नहीं सकते, लेकिन यह अलग बात है कि किला से घिरे जगहों में हों या दीवारों की ओट में हों, उनकी लड़ाई तो आपस में ही बहुत कठोर है, यद्यपि (अगरचे) आप उनको एकमत समझ रहे हैं, लेकिन हक़ीक़त में उन के दिल आपस में अलग हैं, यह इसलिए कि ये बेअक़्ल लोग हैं।

كَمَثَلِ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ۖ ذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿15﴾

१५. उन लोगों की तरह जो उन से कुछ ही पहले गुज़रे हैं, जिन्होंने अपने पापों का मज़ा चख लिया और जिन के लिए दुखदायी अज़ाब (तैयार) है।

كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿16﴾

१६. शैतान की तरह कि उसने इंसान से कहा, कुफ़्र कर, जब वह कुफ़्र कर चुका तो कहने लगा कि मैं तो तुझ से अलग हूँ,[1] मैं तो सारी दुनिया के रब से डरता हूँ।

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿17﴾

१७. तो दोनों का नतीजा यह हुआ कि (नरक की) आग में सदा के लिए गये और ज़ालिमों की यही सज़ा है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿18﴾

१८. हे ईमानवालो! अल्लाह से डरते रहो,[2] और हर इंसान देख-भाल ले कि कल (क़यामत यानी प्रलय) के लिए उस ने कर्मों (अमल) का क्या (भण्डार) भेजा है,[3] और (हर वक़्त) अल्लाह से डरते रहो, अल्लाह तुम्हारे सारे कर्मों से परिचित (वाक़िफ़) है।

---

[1] यह यहूद और मुनाफ़िक़ों की एक और मिसाल दी है कि मुनाफ़िक़ों ने यहूदियों को ऐसे ही बिना मदद के छोड़ दिया जैसे शैतान इंसान के साथ सुलूक करता है, पहले वह इंसान को गुमराह करता है और जब इंसान शैतान का अनुसरण (पैरवी) करके कुफ़्र कर लेता है तो शैतान उस से अपनी निर्दोषता (बराअत) दिखाने लगता है।

[2] ईमानवालों को संबोधित (मुख़ातिब) करके उन्हें उपदेश (नसीहत) दिया जा रहा है, अल्लाह से डरने का मतलब है उसने जिन चीज़ों का हुक्म दिया है उन्हें पूरा करो, जिन से रोका है उन से रुक जाओ। आयत में यह बल देने के लिए दो बार फ़रमाया है, क्योंकि यह 'तक़वा' (अल्लाह का डर) ही इंसान को नेकी करने और बुराई से रुकने पर तैयार करता है।

[3] कल से मुराद क़यामत (प्रलय) है, उसे कल से व्यंजित (ताबीर) करके इस तरफ़ भी इशारा कर दिया कि उसका होना बहुत दूर नहीं क़रीब ही है।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنسٰهُمْ أَنفُسَهُمْ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفٰسِقُونَ ﴿19﴾

१९. और तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन लोगों ने अल्लाह (के हुक्म) को भुला दिया तो अल्लाह ने उन्हें अपने आप से भुला दिया, ऐसे ही लोग नाफ़रमान होते हैं।

لَا يَسْتَوِي أَصْحٰبُ النَّارِ وَأَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿20﴾

२०. नरक वाले और स्वर्ग वाले, (आपस में) बराबर नहीं,[1] जो स्वर्ग वाले हैं वही कामयाब हैं।

لَوْ أَنزَلْنَا هٰذَا الْقُرْآنَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَّرَأَيْتَهُ خٰشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۚ وَتِلْكَ الْأَمْثٰلُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿21﴾

२१. अगर हम इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर नाज़िल करते[2] तो तू देखता कि अल्लाह के डर से वह झुक कर कण-कण (रेज़ा-रेज़ा) हो जाता। हम इन मिसालों को लोगों के सामने बयान करते हैं ताकि वे चिन्तन-मनन (सोच-फ़िक्र) करें।

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهٰدَةِ ۖ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيمُ ﴿22﴾

२२. वही अल्लाह है जिस के सिवाय कोई (सच्चा) पूज्य नहीं, छिपी और खुली का जानने वाला, वही माफ़ और दया (रहम) करने वाला।

---

[1] जिन्होंने अल्लाह को भुला कर यह बात भी भुलाये रखी, इस तरह वह ख़ुद अपनी ही जानों पर ज़ुल्म कर रहे हैं और एक दिन आयेगा कि इस के फलस्वरूप (नतीजे में) उन के यह शरीर, जिन के लिए वह दुनिया में बड़े-बड़े पापड़ बेलते थे, नरक की आग का ईंधन बनेंगे, और उन के मुक़ाबले में दूसरे वह लोग थे जिन्होंने अल्लाह को याद रखा, उस के आदेशानुसार (हुक्म के मुताबिक़) जिन्दगी गुज़ारा। एक समय आयेगा कि अल्लाह तआला उन्हें उसका अच्छा बदला (अज्र) देगा और अपने स्वर्ग में उन्हें दाख़िल करेगा, जहाँ उन के आराम के लिए हर तरह का ऐश व आराम होगा। यह दोनों गिरोह यानी नरक वाले और स्वर्ग वाले बराबर नहीं होंगे, भला यह बराबर हो भी कैसे सकते हैं? एक ने अपने अंत (नतीजा) को याद रखा और उस के लिए तैयारी करता रहा, दूसरा अपने अंत से निश्चिन्त (बेख़बर) रहा इसलिए उस के लिए तैयारी में भी विमुखता (ग़फ़लत) अपनायी।

[2] यानी हम ने पाक क़ुरआन में जो असर, सफ़ाई, शक्ति, दलील, शिक्षा और उपदेश (नसीहत) के ऐसे पक्ष बयान किये हैं कि उन्हें सुनकर पहाड़ भी इतनी कड़ाई, फैलाव और ऊँचाई के बावजूद अल्लाह के डर से कण-कण (रेज़ा-रेज़ा) हो जाते। यह इंसान को बतलाया और समझाया जा रहा है कि तुझे समझ-बूझ की योग्यता (क़ाबलियत) दी गई है, लेकिन अगर क़ुरआन सुन कर तेरे दिल पर कोई असर नहीं पड़ता तो तेरा नतीजा अच्छा नहीं होगा।

هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَیْمِنُ الْعَزِیْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ﴿23﴾

२३. वही अल्लाह है जिसके सिवाय कोई (सच्चा) पूज्य नहीं, मालिक, बहुत पाक, सभी बुराईयों से आज़ाद, शान्ति अता करने वाला, रक्षक (निगराँ), ग़ालिब, ताक़तवर, अज़ीम, पाक है अल्लाह उन चीज़ों से जिन्हें ये उसका साझीदार बनाते हैं।

هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ یُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿24﴾

२४. वही अल्लाह है पैदा करने वाला, बनाने वाला, रूप देने वाला, उसी के लिए (बहुत) अच्छे नाम हैं, हर चीज़ चाहे आकाशों में हों या धरती में हो उसकी पाकी बयान करती हैं, और वही ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है।

سُورَةُ الْمُمْتَحِنَة

सूरतुल मुम्तहिनः-६०

सूरः मुम्तहिनः मदीने में नाज़िल हुई और इस में तेरह आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّیْ وَ عَدُوَّكُمْ اَوْلِیَآءَ تُلْقُوْنَ اِلَیْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَ قَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ یُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَ اِیَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِیْ سَبِیْلِیْ وَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِیْ ۖۗ تُسِرُّوْنَ اِلَیْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖۗ وَ اَنَا اَعْلَمُ بِمَاۤ اَخْفَیْتُمْ وَ مَاۤ اَعْلَنْتُمْ ؕ وَ مَنْ یَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِیْلِ ﴿1﴾

१. हे वे लोगो जो ईमान लाये हो ! मेरे और अपने दुश्मनों को अपना दोस्त न बनाओ,[1] तुम तो दोस्ती से उनकी ओर संदेश भेजते हो, और वे उस सच का जो तुम्हारे पास आ चुका है इंकार करते हैं, रसूल को और ख़ुद तुम को भी सिर्फ़ इस वजह से निकालते हैं कि तुम अपने रब पर ईमान रखते हो, अगर तुम मेरे रास्ते में जिहाद के लिए और मेरी ख़ुशी की खोज में निकले हो (तो उन से दोस्ती न करो) तुम उन के पास प्रेम का संदेश छिपा-छिपा कर भेजते हो और मुझे अच्छी तरह मालूम है जो तुम ने छिपाया और

[1] मक्का के काफ़िरों और नबी ﷺ के बीच हुदैबिया में जो समझौता हुआ था मक्का वालों ने उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी की। इसलिए रसूलुल्लाह ﷺ ने भी छिपे तौर से मुसलमानों को लड़ाई की तैयारी का हुक्म दे दिया, जिसकी ख़बर हातिब पुत्र अबू बल्तआ जो एक बद्री मुहाजिर सहाबी थे जिनको कुरैश के साथ कोई नाता नहीं था, लेकिन उनकी पत्नी और बच्चे मक्का ही में थे, उन्होंने यह संदेश एक औरत के माध्यम (ज़रिये) से लिखित रूप में मक्कावासियों की तरफ़ भेज दिया, जिसकी ख़बर नबी ﷺ को वह्यी द्वारा दे दी गई। उसी समय यह आयतें उतारीं ताकि भविष्य (मुस्तक़बिल) में कोई मुसलमान किसी काफ़िर के साथ ऐसी दोस्ती क़ायम न करे। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरतिल मुम्तहिनः, मुस्लिम, किताबु फ़ज़ायेलिस सहाबा)

वह भी जो तुम ने ज़ाहिर किया, तुम में से जो भी इस काम को करेगा वह बेशक सीधे रास्ते से भटक जायेगा।

إِن يَثْقَفُوكُمْ يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَيَبْسُطُوا
إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَلْسِنَتَهُم بِالسُّوءِ وَوَدُّوا
لَوْ تَكْفُرُونَ ﴿2﴾

२. अगर वे तुम पर कहीं क़ाबू पा लें तो वे तुम्हारे (खुले) दुश्मन हो जायें और बुराई के साथ तुम पर हाथ उठाने लगें और बुरे शब्द (लफ़्ज़) कहने लगें और (दिल से) चाहने लगें कि तुम भी कुफ़्र करने लगो।[1]

لَن تَنفَعَكُمْ أَرْحَامُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿3﴾

३. तुम्हारी नातेदारियाँ (और रिश्ते) और औलाद तुम्हें क़यामत (प्रलय) के दिन काम न आयेंगे[2] अल्लाह (तआला) तुम्हारे बीच फ़ैसला कर देगा और तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अल्लाह अच्छी तरह देख रहा है।

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ
وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَآءُ
مِنكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا
بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ
أَبَدًا حَتَّىٰ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحْدَهُ إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ
لِأَبِيهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ
مِن شَيْءٍ ۖ رَّبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا
وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿4﴾

४. (मुसलमानो!) तुम्हारे लिए (हज़रत) इब्राहीम में और उन के साथियों में बहुत अच्छा नमूना है, जबकि उन सब ने अपनी क़ौम से साफ़ शब्दों में कह दिया कि हम तुम से और जिन-जिन की तुम अल्लाह के सिवाय पूजा करते हो, उन सब से पूरी तरह से विमुख (बरी) हैं। हम तुम्हारे (अक़ीदे का) इंकार करते हैं, और जब तक तुम अल्लाह के एक होने पर ईमान न लाओ हम में तुम में हमेशा के लिए कपट और बैर पैदा हो गई[3] लेकिन इब्राहीम की इतनी बात तो अपने पिता से हुई थी कि मैं तुम्हारे लिए क्षमा-

[1] यानी तुम्हारे विरोध (मुख़ालफ़त) में उन के दिलों में तो इस तरह बैर है और तुम हो कि उन के साथ प्रेम की पींगें बढ़ा रहे हो।

[2] यानी जिस संतान (औलाद) के लिए तुम काफ़िरों के साथ प्रेम दिखाते हो, यह तुम्हारे कुछ काम नहीं आयेगी, फिर उस की वजह से तुम काफ़िरों से दोस्ती करके क्यों अल्लाह को नाख़ुश करते हो? क़यामत के दिन जो चीज़ काम आयेगी वह तो अल्लाह और उस के रसूल ﷺ का आज्ञापालन (इताअत) है, इसका प्रबन्ध (इन्तेज़ाम) करो।

[3] यानी यह बिलगाव और विमुखता (बराअत) उस समय तक रहेगी जब तक तुम कुफ़्र और शिर्क को छोड़ कर तौहीद (अद्वैत) को न अपना लो। हाँ, जब तुम एक अल्लाह को मानने लगोगे तो फिर यह बैर प्रेम से बदल जायेगा और दुश्मनी प्रेम भाव में।

याचना (इस्तिग़फ़ार) ज़रूर करूँगा और तुम्हारे लिए मुझे अल्लाह के सामने कोई हक़ भी नहीं। हे हमारे रब! तुझ पर ही हमने भरोसा किया है,[1] और तेरी ही तरफ़ हम आकर्षित (मुतवज्जह) होते हैं और तेरी ही तरफ़ फिर आना है।

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ⑤

५. हे हमारे रब! तू हमें काफ़िरों के इम्तेहान में न डाल, और हे हमारे रब! हमारी ग़ल्तियों को माफ़ कर, बेशक तू ही प्रभावशाली (ग़ालिब) और हिक्मत वाला है।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ⑥

६. बेशक तुम्हारे लिए उन मे अच्छे आदर्श (उसवा) (और अच्छी पैरवी है ख़ास कर) हर उस इंसान के लिए जो अल्लाह और क़यामत के दिन की मुलाक़ात पर यक़ीन रखता हो, और अगर कोई विमुख (मुँह फेरने वाला) हो जाये तो अल्लाह (तआला) पूरी तरह से बेनियाज़ है और बड़ाई और तारीफ़ के योग्य (लायक़) है।

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ۭ وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑦

७. क्या ताज्जुब कि क़रीब ही अल्लाह (तआला) तुम में और तुम्हारे दुश्मनों में प्रेम पैदा कर दे,[2] अल्लाह (तआला) को सभी क़ुदरत है और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला और रहम करने वाला (दयालु) है।

---

[1] توكل (भरोसा) का मतलब है, ज़ाहिरी संसाधनों (असबाब) को अपनाने के बाद मामला अल्लाह के हवाले कर दिया जाये, यह मतलब नहीं कि असबाब को अपनाये बिना ही अल्लाह पर भरोसा दिखाया जाये, इससे हम को रोका गया है। एक व्यक्ति नबी ﷺ की सेवा में हाज़िर हुआ और ऊँट को बाहर खड़ा करके भीतर आ गया, आप ﷺ ने पूछा तो कहा कि मैं ऊँट अल्लाह के हवाले कर के आया हूँ। आप ने फ़रमाया कि यह भरोसा नहीं। اعقل و توكل "पहले उसे बाँध फिर अल्लाह पर भरोसा कर।" (तिर्मिज़ी)

[2] यानी उन्हें मुसलमान बनाकर तुम्हारा भाई और साथी बना दे, जिस से तुम्हारे बीच की दुश्मनी दोस्ती और प्रेम में बदल जायेगी, और ऐसा ही हुआ, मक्का विजय (फ़त्ह) के बाद लोग गिरोहों में मुसलमान होना शुरू हो गये और उन के मुसलमान होते ही नफ़रतें प्रेम में बदल गईं, जो मुसलमानों के ख़ून के प्यासे थे वह हाथ पाँव बन गये।

لَا يَنْهٰكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ⑧

८. जिन लोगों ने तुम से धर्म के बारे में युद्ध नहीं किया और तुम्हें देश से नहीं निकाला, उन के साथ अच्छा सुलूक और एहसान करने और इंसाफ़ वाला बर्ताव करने से अल्लाह (तआला) तुम्हें नहीं रोकता, (बल्कि) बेशक अल्लाह (तआला) तो इंसाफ़ करने वालों से प्रेम करता है ।[1]

اِنَّمَا يَنْهٰكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا عَلٰٓي اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ⑨

९. अल्लाह (तआला) तुम्हें केवल उन लोगों से प्रेम करने से रोकता है, जिन्होंने तुम से धर्म के बारे में लड़ाई किया और तुम्हें देश से निकाला और देश से निकालने वालों की मदद की, जो लोग ऐसे काफ़िरों से प्रेम करें वही (यक़ीनी तौर से) ज़ालिम हैं ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَاۗءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ۭ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ۭ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ۭ وَاٰتُوْهُمْ مَّآ اَنْفَقُوْا ۭ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۭ وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْـَٔــلُوْا مَآ اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْــَٔــلُوْا مَآ اَنْفَقُوْا ۭ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ۭ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ⑩

१०. हे ईमानवालो! जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें हिजरत करके आयें तो तुम उनकी परीक्षा (इम्तेहान) ले लिया करो, हक़ीक़त में उन के ईमान को अच्छी तरह जानने वाला तो अल्लाह ही है, लेकिन अगर वे तुम्हें ईमान वाली मालूम हों तो अब तुम उन्हें काफ़िरों की तरफ़ वापस न करो, यह उन के लिए हलाल (वैध) नहीं और न वे इन के लिए हलाल हैं, और जो ख़र्च उन काफ़िरों का हुआ हो वह उन्हें अदा कर दो,उन औरतों को उनकी महर देकर उन से विवाह कर लेने में तुम पर कोई पाप नहीं,[2] और

[1] इस में इंसाफ़ करने की तरग़ीब (प्रोत्साहन) है यहाँ तक कि काफ़िरों के साथ भी ।

[2] यह मुसलमानों से कहा जा रहा है कि यह औरतें जो ईमान के लिए अपने पतियों को छोड़कर तुम्हारे पास आ गई हैं, तुम उन से विवाह कर सकते हो, शर्त यह है कि उनकी महर उन्हें दे दो, किन्तु यह विवाह सुन्नत के अनुसार ही होगा, यानी एक तो इद्दत पूरी हो जाने (रिहम की सफ़ाई) के बाद होगा, दूसरे उस में वली (संरक्षक) की इजाज़त और दो न्यायी गवाहों की मौजूदगी भी फ़र्ज़ है । हाँ, अगर औरत से पति ने सहवास (जिमाअ) नहीं किया है तो फिर बिना मुद्दत तुरन्त विवाह (शादी) भी जायेज़ है ।

काफ़िर औरतों के विवाह बन्धन को अपने क़ब्ज़े में न रखो[1] और जो कुछ तुम ने ख़र्च किया हो माँग लो, और जो कुछ उन काफ़िरों ने ख़र्च किया हो, वह भी माँग लें, यह अल्लाह का फ़ैसला है जो तुम्हारे बीच कर रहा है, और अल्लाह (तआला) जानने वाला (और) हिक्मत वाला है।

وَإِن فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَآتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُم مِّثْلَ مَا أَنفَقُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنتُم بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿11﴾

११. और अगर तुम्हारी कोई पत्नी तुम्हारे हाथ से निकल जाये और काफ़िरों के पास चली जाये, फिर तुम्हें बदले का समय मिल जाये तो जिनकी पत्नियाँ चली गयी हैं उन्हें उन के ख़र्च के समान अदा कर दो, और उस अल्लाह से डरते रहो जिस पर तुम ईमान रखते हो।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَىٰ أَن لَّا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِينَكَ فِي مَعْرُوفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿12﴾

१२. हे रसूल! (संदेष्टा) जब मुसलमान औरतें आप से इन बातों पर बैअत करने आयें कि वह अल्लाह के साथ किसी को साझीदार नहीं बनायेंगी, चोरी न करेंगी, व्याभिचार (बदकारी) न करेंगी, अपनी औलाद को न मार डालेंगी और न कोई ऐसा आक्षेप (बुह्तान) लगायेंगी जो ख़ुद अपने हाथों-पैरों के सामने गढ़ लें और किसी नेकी के काम में तेरी नाफ़रमानी न करेंगी, तो आप उन से बैअत कर लिया करें[2]

---

[1] عِصَمٌ (एसम) عِصْمَةٌ (इस्मत) का बहुवचन (जमा) है, यहाँ इस से मुराद विवाह बंधन है। मतलब यह है कि अगर पति मुसलमान हो जाये और पत्नी उसी तरह काफ़िर और मुश्रिक रहे तो पत्नी को अपने विवाह में रखना जायेज नहीं है, उसे तुरन्त तलाक़ देकर अपने से अलग कर दिया जाये, और इस हुक्म के बाद हज़रत उमर ﷺ ने अपनी दो मुश्रिक पत्नियों को और हज़रत तलहा पुत्र उबैदुल्लाह ने अपनी पत्नी को तलाक़ दे दिया। (इब्ने कसीर) हाँ, अगर पत्नी किताबिया (यहूदी और ईसाई) हो तो उसे तलाक़ देना ज़रूरी नहीं है, क्योंकि उन से विवाह उचित (जायज़) है। इसलिए अगर वह पहले ही से बीवी के रूप में तुम्हारे पास है तो इस्लाम क़ुबूल करने के बाद उसे अलग करने की ज़रूरत नहीं है।

[2] यह बैअत (प्रतिज्ञा) उसी समय लेते जब औरतें हिजरत करके आतीं, जैसाकि सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरह मुम्तहिना में है। इस के अलावा मक्का विजय के दिन भी आप ने क़ुरैश की औरतों से बैअत ली। बैअत (प्रतिज्ञा) लेते समय आप ﷺ केवल ज़ुबानी वादा लेते। किसी औरत के हाथ को नहीं छूते।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَوَلَّوْا۟ قَوْمًا غَضِبَ ٱللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوا۟ مِنَ ٱلْءَاخِرَةِ كَمَا يَئِسَ ٱلْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَٰبِ ٱلْقُبُورِ ﴿13﴾

और उनके लिए अल्लाह से माफ़ी माँगे, बेशक अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला दयालु है।

१३. हे मुसलमानो ! तुम उस क़ौम से दोस्ती न रखो,[1] जिन पर अल्लाह का अज़ाब आ चुका है जो आख़िरत से इस तरह निराश हो चुके हैं जैसेकि मुर्दे क़ब्र वालों से काफ़िर मायूस हैं।

سُورَةُ ٱلصَّفِّ

सूरतुस सफ़्फ़-६१

सूर: सफ़्फ़* मदीने में नाज़िल हुई, इस में चौदह आयतें और दो रूकुअ हैं।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ۖ وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿1﴾

१. आकाशों और धरती की हर चीज़ अल्लाह (तआला) की पवित्रता (पाकीज़गी) बयान करती है और वही प्रभावशाली (ग़ालिब) और हिक्मत वाला है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ﴿2﴾

२. हे ईमानवालो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं?

كَبُرَ مَقْتًا عِندَ ٱللَّهِ أَن تَقُولُوا۟ مَا لَا تَفْعَلُونَ ﴿3﴾

३. तुम जो करते नहीं, उसका कहना अल्लाह (तआला) को नापसन्द है।

---

[1] इस से कुछ ने यहूद, कुछ ने अवसरवादी (मुनाफ़िक़) और कुछ ने काफ़िर मुराद लिया है। यह आख़िरी बात ही ज़्यादा सही है, क्योंकि इस में यहूद और द्वयवादी (मुनाफ़िक़) भी आ जाते हैं। इस के सिवा सभी काफ़िर ही अल्लाह के अज़ाब के मुस्तहिक़ हैं, इसलिए मतलब यह होगा कि किसी भी काफ़िर से दोस्ती का रिश्ता न रखो, जैसाकि यह विषय क़ुरआन के कई जगहों पर बयान किया गया है।

* इस सूर: के अवतरण (नुज़ूल) की वजह में आता है कि कुछ सहाबा (नबी के सहचर) आपस में बातें कर रहे थे कि अल्लाह को जो अमल सब से ज़्यादा प्यारा है वह रसूलुल्लाह ﷺ से पूछने चाहिए ताकि उस के मुताबिक़ अमल किया जाये, किन्तु आप के पास जाकर पूछने की हिम्मत कोई नहीं कर रहा था, इस पर अल्लाह ने यह सूरह उतारी। (मुसनद अहमद ५\४५२, तिर्मिज़ी तफ़सीर सुरतुस्सफ़्फ़)

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَأَنَّهُم بُنْيَانٌ مَّرْصُوصٌ ④

४. बेशक अल्लाह (तआला) उन लोगों को प्रिय रखता है जो उस के रास्ते में पंक्तिबद्ध (सफ़बस्ता) होकर जिहाद करते हैं, जैसेकि वे सीसा पिलाई हुई इमारत हैं।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ لِمَ تُؤْذُونَنِي وَقَد تَّعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ ۖ فَلَمَّا زَاغُوا أَزَاغَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ⑤

५. और (याद करो) जब मूसा ने अपने समुदाय (क़ौम) से कहा कि हे मेरी क़ौम के लोगो! तुम मुझे क्यों पीड़ित कर रहे हो जबकि तुम्हें अच्छी तरह मालूम है कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ,[1] तो जब वे लोग टेढ़े ही रहे तो अल्लाह ने उन के दिलों को और टेढ़ा कर दिया, और अल्लाह (तआला) नाफ़रमान क़ौम को मार्गदर्शन (हिदायत) नहीं देता।

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُم مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَاةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِن بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُم بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَٰذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ⑥

६. और जब मरियम के पुत्र ईसा ने कहा कि हे (मेरी क़ौम) इस्राईल की औलाद! मैं तुम सब की तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ, मुझ से पहले की किताब तौरात की पुष्टि (तसदीक़) करने वाला हूँ,[2] और अपने बाद आने वाले एक रसूल की ख़ुशख़बरी सुनाने वाला हूँ जिनका नाम अहमद है,[3] फिर जब वह उन के सामने साफ़ निशानियाँ लाये तो वे कहने लगे कि यह तो खुला जादू है।

---

[1] यह जानते हुए भी कि हज़रत मूसा ﷺ अल्लाह के सच्चे रसूल हैं, इस्राईल की औलाद उन्हें अपने मुँह (बात) से कष्ट देती थी, यहाँ तक कि कुछ जिस्मानी ऐब उन से संबन्धित (मंसूब) करती थी जबकि वह रोग उन में नहीं था।

[2] ईश्दूत ईसा ﷺ की कहानी का बयान इसलिए किया कि इस्राईल की औलाद ने जैसे ईश्दूत मूसा ﷺ की नाफ़रमानी की, वैसे ही उन्होंने हज़रत ईसा का भी इंकार किया, इस में नबी ﷺ को तसल्ली दी जा रही है कि यह यहूद आप ﷺ ही के साथ ऐसा नहीं कर रहे हैं, बल्कि इनका तो पूरा इतिहास ही ईश्दूतों को झुठलाने से भरा है।

[3] यह हज़रत ईसा ﷺ ने अपने बाद आने वाले आख़िरी रसूल हज़रत मोहम्मद ﷺ की ख़ुशख़बरी सुनाई। जैसेकि नबी ﷺ ने फ़रमाया :

"मैं अपने पिता इब्राहीम की दुआ और ईसा की ख़ुशख़बरी का चरितार्थ (मिस्दाक़) हूँ।" (ऐसरूत्तफ़ासीर)

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ⑦

७. और उस इंसान से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह (तआला) पर झूठ गढ़े? जबकि वह इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता है, और अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता।

يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ⑧

८. वे चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपनी फूंक से बुझा दें,[1] और अल्लाह अपनी दिव्य ज्योति (नूर) को उच्च पदों तक ले जाने वाला है, चाहे काफ़िर बुरा मानें।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ⑨

९. वही है जिस ने अपने रसूल (संदेष्टा) को मार्गदर्शन (हिदायत) और सच्चा दीन (धर्म) दे कर भेजा ताकि उसे दूसरे सभी धर्मों पर प्रभावशाली (ग़ालिब) कर दे, चाहे मूर्तिपूजक नाखुश हों।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰي تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ⑩

१०. हे ईमानवालो! क्या मैं तुम्हें वह व्यापार बताऊँ[2] जो तुम्हें कष्टदायी (तक़लीफ़देह) अज़ाब से बचा ले?

تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ⑪

११. अल्लाह (तआला) पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह के रास्ते में अपने तन, मन और धन से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम में ज्ञान (इल्म) हो।

---

[1] प्रकाश (नूर) से मुराद पाक क़ुरआन, इस्लाम, मोहम्मद ﷺ, दलील और सुबूत हैं। मुँह से बुझा दें का मतलब वह व्यंग (तंज़) और कटाक्ष (तंक़ीद) हैं जो उन के मुँह से निकलते थे।

[2] इस कर्म (यानी ईमान और जिहाद) को व्यापार से व्यंजित (ताबीर) किया, इसलिए कि इस में भी इन्हें व्यापार की तरह फ़ायेदा होगा और वह फ़ायेदा क्या है? स्वर्ग में प्रवेश और नरक से आज़ादी, इस से बड़ा फ़ायेदा और क्या होगा? इस बात को दूसरी जगह पर इस तरह बयान किया है।

﴿إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُم بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ﴾

"अल्लाह ने मोमिनों से उनकी जानों और मालों का सौदा जन्नत के बदले में कर लिया है।" (अत्तौबा-१११)

يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنّٰتِ عَدْنٍ ۚ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ⑫

१२. (अल्लाह तआला) तुम्हारे पाप माफ़ कर देगा और तुम्हें उन स्वर्गों में पहुँचायेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी और (शुद्ध) साफ़ घरों में जो «अदन» के स्वर्ग में होंगे, यह बहुत बड़ी कामयाबी है।

وَأُخْرٰى تُحِبُّونَهَا ۖ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيبٌ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ⑬

१३. और तुम्हें एक दूसरा (उपहार) भी देगा जिसे तुम चाहते हो, वह अल्लाह की मदद और जल्द फ़त्ह है, और ईमानवालों को ख़ुशख़बरी दे दो।

يٰأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا كُونُوا أَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيِّينَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللّٰهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّائِفَةٌ مِّنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَكَفَرَتْ طَّائِفَةٌ ۖ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ اٰمَنُوا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظٰهِرِينَ ⑭

१४. हे ईमानवालो! तुम अल्लाह (तआला) की मदद करने वाले बन जाओ,[1] जिस तरह (हज़रत) मरियम के पुत्र (हज़रत) ईसा ने हवारियों (मित्रों) से कहा कि कौन है जो अल्लाह के रास्ते में मेरा मददगार बने। (उन के) मित्रों ने कहा कि हम अल्लाह के रास्ते में मददगार हैं तो इस्राईल की औलाद में से एक गुट तो ईमान लाया और एक गुट ने कुफ़्र किया[2] तो हम ने ईमानवालों की उन के दुश्मनों की तुलना में मदद की, तो वे विजयी हो गये।

---

[1] सभी हालतों में अपने वादों और अमलों के ज़रिये भी और धन और जान के द्वारा भी, जब भी जिस समय भी और जिस हालत में भी अल्लाह और उसका रसूल अपने धर्म की सहायता (मदद) के लिए पुकारे तुम तुरन्त उनकी पुकार पर कहो कि हम मौजूद हैं, जैसे हवारियों ने ईसा की पुकार पर कहा।

[2] यह यहूदी थे जिन्होंने ईसा ﷺ की नबूअत (दूतत्व) का इंकार ही नहीं किया बल्कि उन पर और उन की माँ पर लांछन (इल्ज़ाम) भी लगाया। कुछ कहते हैं कि यह मतभेद (इख़्तिलाफ़) और बिखराव उस समय हुआ जब हज़रत ईसा को आसमान पर उठा लिया गया। एक ने कहा कि ईसा के रूप में अल्लाह (प्रभु) ही धरती पर प्रकट हुआ था (जैसे सनातन धर्म में ईशदूतों को अवतार मानते हैं) अब वह फिर आकाश पर चला गया, यह सम्प्रदाय (फ़िर्क़ा) «याक़ूबिया» कहलाता है, नस्तूरिया फ़िर्क़ा ने कहा कि वह अल्लाह के पुत्र थे, पिता ने पुत्र को आकाश पर बुला लिया। तीसरे ने कहा कि वह अल्लाह के भक्त (बंदे) और उसके संदेष्टा (रसूल) थे, यही फ़िर्क़ा सही था।

सूरतुल जुमअ:-६२

سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ

सूर: जुमअ:* मदीने में नाज़िल हुई, इस में ग्यारह आयतें और दो रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. आकाशों और धरती की सभी चीज़े अल्लाह (तआला) की पवित्रता (तस्बीह) बयान करती हैं, जो बादशाह और बड़ा पाक (है) ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿1﴾

२. वही है जिस ने अनपढ़ लोगों में उन ही में से एक रसूल भेजा, जो उन्हें उस की आयतें पढ़ कर सुनाता है और उन को पाक करता है और उन्हें किताब और ज्ञान (हिक्मत) सिखाता है, बेशक ये उस से पहले साफ़ (स्पष्ट) भटकावे में थे।

هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْأُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿2﴾

३. और दूसरों के लिए भी उन्हीं में से जो अब तक उन से नहीं मिले, और वही ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है।

وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿3﴾

४. यह अल्लाह की कृपा (फ़ज़्ल) है जिसे चाहे अपनी कृपा अता करे और अल्लाह (तआला) बड़ा कृपालु (फ़ज़्ल वाला) है।

ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿4﴾

* नबी ﷺ जुमअ: -की नमाज़ में सूर: जुमअ: और मुनाफ़िक़ून पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमअ:, बाबु मा युकरउ फ़ी सलातिल जुमअ:) फिर भी इन का जुमअ: की रात को ईशा की नमाज़ में पढ़ना सहीह रिवायत से सिद्ध (साबित) नहीं। हां, एक कमज़ोर रिवायत में ऐसा आता है। (लिसानुल मीज़ान ले इब्ने हजर, तर्जुमा सईद बिन सम्माक बिन हरब)

مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا ۚ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِينَ ﴿5﴾

५. जिन लोगों को तौरात के (अनुसार) काम करने का हुक्म दिया गया फिर उन्होंने उस पर काम नहीं किया, उनकी मिसाल उस गधे जैसी है जो बहुत सी किताब लादे हो।[1] अल्लाह की बातों को झुठलाने वालों की बहुत बुरी मिसाल है, और अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को मार्गदर्शन (हिदायत) नहीं देता।

قُلْ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوٓا إِنْ زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ أَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ﴿6﴾

६. कह दीजिए कि ऐ यहूदियो! अगर तुम्हारा दावा है कि तुम अल्लाह के दोस्त हो दूसरे लोगों के सिवाय, तो तुम मौत की कामना (तमन्ना) करो अगर तुम सच्चे हो।

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهُٓ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيمٌۢ بِالظّٰلِمِينَ ﴿7﴾

७. यह मौत की तमन्ना कभी नहीं करेंगे उन अमलों की वजह से जो अपने हाथों अपने पहले भेज रखे हैं[2] और अल्लाह (तआला) ज़ालिमों को अच्छी तरह जानता है।

قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُۥ مُلٰقِيكُمْ ۖ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهٰدَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿8﴾

८. कह दीजिए कि जिस मौत से तुम भाग रहे हो वह तो तुम तक ज़रूर पहुँचेगी, फिर तुम सब छिपी और खुली बातों के जानने वाले (अल्लाह) की तरफ़ लौटाये जाओगे और फिर वह तुम्हें तुम्हारे किये हुए सभी अमलों को बता देगा।

---

[1] أَسْفَار (अस्फ़ार) سِفْر (सिफ़र) का बहुवचन (जमा) है, मायने है बड़ी किताब। किताब जब पढ़ी जाती है तो इंसान उस के मायनों में यात्रा (सफ़र) करता है, इसलिए किताब को भी यात्रा कहा जाता है, (फ़तहुल क़दीर)। यह निष्कर्म (बेअमल) यहूदियों की मिसाल दी गई है कि जिस तरह गधे को ज्ञान (इल्म) नहीं होता कि उस के ऊपर जो किताबें लदी हुई हैं उन में क्या लिखा है? या उस पर किताबें लदी हैं या कूड़ा-करकट। इसी तरह यह यहूदी हैं, यह तौरात तो लिये फिरते हैं, उसे पढ़ने और याद करने की बातें भी करते हैं, लेकिन उसे समझते हैं न उसके आदेशानुसार (अहकाम के मुताबिक़) कर्म (अमल) करते हैं, बल्कि उस में फेर-बदल और तहरीफ़ से काम लेते हैं, इसीलिए हक़ीक़त में यह गधे से भी बुरे है।

[2] यानी कुफ़्र, नाफ़रमानी और अल्लाह की किताब में जो हेर-फेर और बदलाव ये करते रहे हैं, उन की वजह से कभी भी यह मौत की कामना (तमन्ना) नही करेंगे।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا إِذَا نُودِىَ لِلصَّلَوٰةِ مِن يَوْمِ ٱلْجُمُعَةِ فَٱسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ ٱللَّهِ وَذَرُوا ٱلْبَيْعَ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٩﴾

९. हे वह लोगो जो ईमान लाये हो! जुमअ: के दिन (शुक्रवार को) नमाज की अजान दी जाये तो तुम अल्लाह की याद की तरफ़ जल्द आ जाया करो और क्रय-विक्रय (ख़रीद-फ़रोख़्त) छोड़ दो,[1] यह तुम्हारे पक्ष (हक) में बहुत अच्छा है अगर तुम जानते हो।

فَإِذَا قُضِيَتِ ٱلصَّلَوٰةُ فَٱنتَشِرُوا فِى ٱلْأَرْضِ وَٱبْتَغُوا مِن فَضْلِ ٱللَّهِ وَٱذْكُرُوا ٱللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٠﴾

१०. फिर जब नमाज हो जाये तो धरती पर फैल जाओ और अल्लाह की कृपा (फ़ज़्ल) को खोजो,[2] और अल्लाह का बहुत ज़्यादा वर्णन (ज़िक्र) करो ताकि तुम कामयाबी हासिल कर लो।

وَإِذَا رَأَوْا تِجَٰرَةً أَوْ لَهْوًا ٱنفَضُّوٓا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ قَآئِمًا ۚ قُلْ مَا عِندَ ٱللَّهِ خَيْرٌ مِّنَ ٱللَّهْوِ وَمِنَ ٱلتِّجَٰرَةِ ۚ وَٱللَّهُ خَيْرُ ٱلرَّٰزِقِينَ ﴿١١﴾

११. और जब कोई सौदा बिकता देखें या कोई तमाशा दिखायी पड़ जाये तो उसकी तरफ़ दौड़ जाते हैं और आप को खड़ा ही छोड़ देते हैं। (आप) कह दीजिए कि अल्लाह के पास जो कुछ है वह खेल और व्यापार (तिजारत) से अच्छा है, और अल्लाह (तआला) सब से अच्छा जीविका (रिज़्क़) देने वाला है।

सूरतुल मुनाफ़िकून-६३

سُورَةُ ٱلْمُنَافِقُونَ

सूर: मुनाफ़िक़ून मदीने में नाज़िल हुई, इस में ग्यारह आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

[1] यह «अज़ान» कैसे दी जाये और इस के शब्द (अलफ़ाज़) क्या हों? यह क़ुरआन में कहीं नहीं है, हाँ! हदीस में है, जिस से मालूम हुआ कि क़ुरआन बिना हदीस के समझना मुमकिन है न उस पर कार्यरत (अमल) होना ही। जुमअ: को जुमअ: इसलिए कहते हैं कि उस दिन अल्लाह हर सृष्टि (मख़लूक़) को पैदा कर के पैदाईश के काम से फ़ारिग़ हो गया था, ऐसे मानो उस दिन पूरी मख़लूक़ जमा हो गई, या नमाज के लिये लोग जमा होते हैं।

[2] इस से मुराद कारोबार और व्यापार है, यानी जुमअ: की नमाज पढ़कर फिर अपने काम-धंधे में लग जाओ। उद्देश्य (मक़सद) यह बताना है कि जुमअ: के दिन कारोबार बंद रखने की ज़रूरत नहीं, सिर्फ़ नमाज के समय ऐसा करना आवश्यक (फ़र्ज़) है।

إِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ۗ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١﴾

१. तेरे पास जब मुनाफ़िक़ आते हैं तो कहते हैं कि हम इस बात के गवाह हैं कि बेशक आप अल्लाह के रसूल हैं,[1] और अल्लाह (तआला) जानता है कि आप बेशक उस के रसूल हैं, और अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से झूठे हैं।

اِتَّخَذُوْٓا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ إِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢﴾

२. उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है तो अल्लाह के रास्ते से रुक गये[2] बेशक बुरा है वह काम जिसे ये कर रहे हैं।

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٣﴾

३. यह इस वजह से है कि ये ईमान लाकर दोबारा काफ़िर हो गये,[3] तो उन के दिलों पर मोहर लगा दी गई, अब ये नहीं समझते।

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۖ وَإِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ۖ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ۖ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۚ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۚ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۖ أَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٤﴾

४. और जब आप उन्हें देख लें तो उन के शरीर (जिस्म) आप को आकर्षक (लुभावना) मालूम हों, और जब ये बातें करने लगें तो उनकी बातों पर आप (अपना) कान लगायें, जैसाकि ये लकड़ियाँ हैं दीवार के सहारे से लगायी हुई,[4] (वे) हर (ऊँची) आवाज़ को अपने ख़िलाफ़ समझते हैं। वही वास्तविक (हक़ीक़ी) दुश्मन हैं, उन से बचो, अल्लाह उन्हें नाश करे! कहाँ फिरे जाते हैं।

---

[1] मुनाफ़िक़ून से मुराद अब्दुल्लाह बिन उबैय और उस के साथी हैं, ये जब नबी ﷺ की सेवा (ख़िदमत) में हाज़िर होते तो क़समें खा-खाकर कहते कि आप ﷺ अल्लाह के रसूल हैं।

[2] दूसरा अनुवाद (तर्जुमा) यह है कि इन्होंने शक और शुब्हा पैदा करके अल्लाह के रास्ते से रोका।

[3] इस से मालूम हुआ कि अवसरवादी (मुनाफ़िक़) भी वाज़ेह काफ़िर हैं।

[4] यानी अपने जिस्मानी डील-डौल और ज़ाहिरी शक्ल व सूरत और भलाई की कमी में ऐसे हैं जैसे दीवार पर लगाई लकड़ियाँ हों, जो देखने में तो भली लगती हैं लेकिन किसी को फ़ायेदा नहीं पहुँचा सकतीं या यह मुब्तिदा है और इसका विषय लुप्त (पोशीदा) है और मतलब यह है कि यह रसूलुल्लाह ﷺ की सभा में ऐसे बैठते हैं जैसे दीवार से लगी लकड़ियाँ हैं, जो कोई बात समझती हैं न जानती हैं। (फ़तहुल क़दीर)

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُم مُّسْتَكْبِرُونَ ⑤

५. और जब उन से कहा जाता है कि आओ तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल तौबा करें तो अपने सिर मोड़ लेते हैं, और आप उन्हें देखेंगे कि वे गर्व (फख़) करते हुए रूक जाते हैं।

سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ⑥

६. उन के पक्ष (हक़) में आप का माफ़ी की प्रार्थना (दुआ) करना और न करना दोनों बराबर है, अल्लाह (तआला) उनको कभी माफ़ न करेगा,[1] बेशक अल्लाह (तआला ऐसे) फ़ासिकों (अवज्ञाकारियों) को रास्ता नहीं दिखाता।

هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنفِقُوا عَلَىٰ مَنْ عِندَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنفَضُّوا وَلِلَّهِ خَزَائِنُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ⑦

७. यही वे हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं, उन पर कुछ ख़र्च न करो, यहाँ तक कि वे इधर-उधर हो जायें, हालाँकि आकाशों और धरती के सारे ख़ज़ाने अल्लाह ही का स्वामित्व (मिल्कियत) है लेकिन ये मुनाफ़िक़ समझते नहीं।

يَقُولُونَ لَئِن رَّجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ⑧

८. ये कहते हैं कि अगर हम अब लौटकर मदीने जायेंगे तो इज़्ज़त वाला वहाँ से बेइज़्ज़त को निकाल देगा।[2] (सुनो!) सम्मान तो केवल अल्लाह (तआला) के लिए और उस के रसूल के लिए और ईमानवालों के लिए है,[3] लेकिन ये

---

[1] अगर इसी निफ़ाक़ की हालत में मर गये तो उन के लिए माफ़ी नहीं। हाँ, अगर वह जीवन में कुफ़्र और निफ़ाक़ से तौबा कर लें तो और बात है, फिर उन के लिए क्षमा मुमकिन है।

[2] इसका कहने वाला मुनाफ़िक़ों का प्रमुख (सरदार) अब्दुल्लाह बिन उबैय था, बाइज़्ज़त से उसका मक़सद था वह ख़ुद और उस के साथी और बेइज़्ज़त से (अल्लाह की पनाह!) रसूलुल्लाह ﷺ और मुसलमान।

[3] यानी इज़्ज़त और प्रभुत्व (ग़ल्बा) केवल अल्लाह के लिए है, वह अपनी तरफ़ से जिसको चाहे इज़्ज़त और ग़ल्बा दे, जैसे कि वह अपने रसूलों और उन पर ईमान लाने वालों को इज़्ज़त और कामयाबी अता करता है, न कि उन को जो नाफ़रमान हों। यह मुनाफ़िक़ों के क़ौल का खंडन (तरदीद) किया है कि इज़्ज़त का मालिक केवल अल्लाह तआला है और बाइज़्ज़त (सम्मानित) भी वही है जिसे वह बाइज़्ज़त समझे, न कि वह जो ख़ुद को बाइज़्ज़त या जिसे दुनिया वाले बाइज़्ज़त समझें। अल्लाह के क़रीब बाइज़्ज़त सिर्फ़ और सिर्फ़ ईमानवाले होंगे, काफ़िर और मुनाफ़िक़ नहीं।

द्वयवादी (मुनाफ़िक़ीन) जानते नहीं।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿9﴾

९. हे ईमानवालो! तुम्हारा धन और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दें,[1] और जो ऐसा करें वे बड़े ही नुक़सान उठाने वाले लोग हैं।

وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَآ اَخَّرْتَنِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿10﴾

१०. और जो कुछ हम ने तुम्हें अता कर रखा है, उस में से (हमारे रास्ते में) उस से पहले ख़र्च करो[2] कि तुम में से किसी को मौत आ जाये, तो कहने लगे कि हे मेरे रब! मुझे तू थोड़ी देर की छूट क्यों नहीं देता ?[3] कि मैं दान दूं और सदाचारी (सालेहीन) लोगों में से हो जाऊँ।

وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿11﴾

११. और जब किसी का निर्धारित (मुक़र्रर) समय आ जाता है फिर उसे अल्लाह (तआला) कभी मौक़ा नहीं देता, और जो कुछ तुम करते हो, उसे अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है।

---

[1] यानी माल और औलाद की मुहब्बत का तुम पर इतना असर न हो जाये कि तुम अल्लाह के वतलाये हुए हुक्मों और कर्तव्यों से बेफ़िक्र हो जाओ और अल्लाह की मुक़र्रर की हुई हलाल (वैध) और हराम (अवैध) की सीमाओं (हदों) की फ़िक्र न करो। मुनाफ़िक़ों की चर्चा के बाद तुरन्त इस चेतावनी (तंबीह) का मक़सद यह है कि यह मुनाफ़िक़ों का तरीक़ा है, जो इंसान को नुक़सान में डालने वाला है। ईमानवालों का तरीक़ा इस के उल्टा होता है और वह यह है कि वह हर पल अल्लाह को याद रखते हैं, यानी उसके हुक्मों और अनिवार्यताओं (वाजिबों) का पालन और हलाल और हराम में अन्तर (फ़र्क़) करते हैं।

[2] ख़र्च करने का मतलब ज़कात देने और दूसरे अच्छे कामों में ख़र्च करना है।

[3] इस से मालूम हुआ कि ज़कात (धर्मदान) देने और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने और इसी तरह अगर हज करने का सामर्थ्य (क़ुदरत) हो तो उसे अदा करने में देर नहीं करनी चाहिए, इसलिए की मौत पता नहीं कब आ जाये और यह फ़र्ज़ उस के ऊपर रह जाये, मौत के समय कामना (तमन्ना) करने का कोई फ़ायेदा नहीं होगा।

सूरतुत तग़ाबुन-६४

سُوْرَةُ التَّغَابُنِ

सूर: तग़ाबुन मदीने में नाज़िल हुई और इस में अट्ठारह आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۖ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ①

१. आकाशों और धरती की हर चीज़ अल्लाह की पवित्रता (तस्बीह) बयान करती हैं, उसी का राज्य (मुल्क) है और उसी की प्रशंसा (तारीफ़) है और वह हर चीज़ पर सामर्थ्यवान (क़ादिर) है।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ②

२. उसी ने तुम्हें पैदा किया है, तो तुम में से कुछ तो काफ़िर हैं और कुछ ईमानवाले हैं, और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह (तआला) अच्छी तरह देख रहा है।[1]

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَإِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ③

३. उसी ने आकाशों को और धरती को हक़ के साथ (दानाई और हिक्मत) से पैदा किया, उसी ने तुम्हारे रूप बनाये और बहुत सुन्दर बनाये और उसी की तरफ़ लौटना है।

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ④

४. वह आसमानों और ज़मीन की सभी चीज़ों का ज्ञान (इल्म) रखता है और जो कुछ तुम छिपा रखो और जो ज़ाहिर करो वह (सब को) जानता है। अल्लाह तो सीनों तक की बातों को जानने वाला है।

---

[1] यानी इंसान के लिए नेकी, पाप, भलाई, बुराई, कुफ़्र और ईमान के रास्तों को साफ़ करने के बाद अल्लाह ने इंसान को इच्छा और पसन्द का अधिकार (इख़्तियार) दिया, जिस के अनुसार किसी ने कुफ़्र और किसी ने ईमान का रास्ता अपनाया है, उस ने किसी पर दबाव नहीं डाला, अगर वह दबाव डालता तो कोई कुफ़्र और पाप का रास्ता अपनाने पर क़ादिर ही नहीं होता, लेकिन इस तरह से इंसान का इम्तेहान मुमकिन (संभव) नहीं था, जबकि अल्लाह की मर्ज़ी इंसान का इम्तेहान लेना था।

५. क्या तुम्हारे पास इस से पहले के काफ़िरों की ख़बर नहीं पहुँची, जिन्होंने अपने अमलों के नतीजा का मज़ा चख लिया और जिन के लिए कष्टदायी (तक्लीफ़देह) अज़ाब है?

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَبْلُ فَذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿5﴾

६. यह इसलिए कि उन के पास उन के रसूल वाज़ेह दलायल (चमत्कार) लेकर आये तो उन्होंने कह दिया कि क्या इंसान हमारी हिदायत करेगा?[1] तो इंकार कर दिया और मुँह फेर लिया और अल्लाह ने भी बेनियाज़ी की, और अल्लाह तो है ही बड़ा बेनियाज़ सभी गुणों (सिफ़्तों) वाला।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُ كَانَت تَّأْتِيهِمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالُوا أَبَشَرٌ يَهْدُونَنَا فَكَفَرُوا وَتَوَلَّوا وَّاسْتَغْنَى اللَّهُ ۚ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ﴿6﴾

७. उन काफ़िरों ने भ्रम (गुमान) किया है कि दोबारा ज़िन्दा न किये जायेंगे, आप कह दीजिए कि क्यों नहीं, अल्लाह की क़सम ! तुम ज़रूर फिर से ज़िन्दा किये जाओगे,[2] फिर जो कुछ तुम ने किया है उस की ख़बर दिये जाओगे, और अल्लाह (तआला) के लिए यह बहुत ही आसान है।

زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن لَّن يُبْعَثُوا ۚ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۚ وَذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿7﴾

८. तो तुम अल्लाह पर और उस के रसूल पर और उस ज्योति (नूर) पर जिसे हम ने नाज़िल किया है ईमान लाओ, और अल्लाह तआला तुम्हारे हर अमल से बाख़बर है।

فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي أَنزَلْنَا ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿8﴾

---

[1] यह उन के कुफ़्र की वजह है कि उन्होंने यह कुफ़्र, जो दोनों लोक में उनकी यातना (सज़ा) की वजह बना, इसलिए अपनाया कि उन्होंने एक इंसान को अपना मार्गदर्शक (रहनुमा) मानने से इंकार कर दिया, यानी एक इंसान का रसूल बनकर लोगों की रहनुमाई और हिदायत के लिए आना उन के लिए नाक़ाबिले क़ुबूल (अस्वीकार्य) था, जैसाकि आज भी बिदअतियों के लिये रसूल को इंसान मानना बड़ा भारी और कठिन है। هداهم الله تعالى

[2] पाक क़ुरआन की तीन जगहों पर अल्लाह तआला ने अपने रसूल को यह हुक्म दिया है कि अल्लाह की क़सम लेकर यह एलान करो कि अल्लाह ज़रूर दोबारा ज़िन्दगी देगा, उन में से एक यह स्थान (जगह) है और इस से पहले एक जगह सूरह यूनुस आयत ५३ और दूसरा सूरह सबा आयत ३ है।

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۗ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ⑨

९. जिस दिन तुम सब को उस जमा होने के दिन[1] जमा करेगा, वही दिन है हार और जीत का, और जो (इंसान) अल्लाह पर ईमान लाकर नेक काम करे अल्लाह उस से उसकी बुराईयाँ दूर कर देगा और उसे स्वर्गो में ले जायेगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जिस में वे हमेशा रहेंगे, यही बहुत बड़ी कामयाबी है।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ⑩

१०. और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया वे सभी नरक में जाने वाले हैं, जिस में वे हमेशा रहेंगे, वह बहुत बुरी जगह है।

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ۗ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ⑪

११. कोई मुसीबत अल्लाह की आज्ञा (इजाज़त) के बिना नहीं पहुँच सकती, और जो अल्लाह पर ईमान लाये अल्लाह उस के दिल को मार्गदर्शन (हिदायत) देता है[2] और अल्लाह हर चीज़ को अच्छी तरह जानने वाला है।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ⑫

१२. (लोगो!) अल्लाह के हुक्म की पैरवी करो और रसूल के हुक्म का पालन करो, फिर अगर तुम विमुख (मुँह फेरने वाले) हुए तो हमारे रसूल का फ़र्ज़ केवल साफ़ तौर से पहुँचा देना है।

---

[1] क़यामत को यौमुल जमअ (जमा होने का दिन) इसलिए कहा कि उस दिन शुरू से आख़िर तक के सभी लोग एक ही मैदान में जमा होंगे। फ़रिश्ता पुकारेगा तो सब उसकी पुकार सुनेंगे, हर एक की नज़र आख़िर तक पहुँच जायेगी, क्योंकि बीच में कोई चीज़ आड़ न बनेगी, जैसे दूसरी जगह पर फ़रमाया :

﴿قُلْ إِنَّ الأَوَّلِينَ وَالآخِرِينَ ۝ لَمَجْمُوعُونَ إِلَى مِيقَاتِ يَوْمٍ مَعْلُومٍ﴾

"आप (ﷺ) कह दीजिए कि बेशक सभी अगले और पिछले ज़रूर जमा किये जायेंगे, एक निर्धारित (मुक़र्रर) दिन के समय।" (अल-वाक़ेअ: ४९, ५०)

[2] यानी वह जान लेता है कि जो कुछ उसे पहुँचता है अल्लाह के चाहने ही से पहुँचता है, इसलिए वह सब्र और तक़दीर पर ख़ुशी ज़ाहिर करता है। इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि उस के दिल में पक्का यक़ीन कर देता है जिस से वह जान लेता है कि उसको पहुँचने वाली चीज़ उससे चूक नहीं सकती और जो चूक जाने वाली है उसे पहुँच नहीं सकती। (इब्ने कसीर)

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ⑬

१३. अल्लाह के सिवाय कोई सच्चा माबूद नहीं और ईमानवालो को केवल अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।[1]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑭

१४. हे ईमानवालो! तुम्हारी कुछ पत्नियाँ और कुछ सन्तानें (औलादें) तुम्हारे दुश्मन हैं[2] तो उन से होशियार रहना और अगर तुम माफ़ कर दो और छोड़ दो और माफ़ कर दो तो अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला रहीम है।[3]

اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۭ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ⑮

१५. तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद (तो बिल्कुल) तुम्हारी परीक्षा (इम्तेहान) हैं[4] और बहुत बड़ा बदला अल्लाह के पास है।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ۭ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ⑯

१६. तो जहाँ तक तुम से हो सके अल्लाह से डरते रहो और सुनते और आज्ञापालन (इताअत) करते चलो और (अल्लाह के रास्ते में) दान करते रहो जो तुम्हारे लिए बेहतर है, और जो लोग अपने नफ़्स की लालच से सुरक्षित (महफ़ूज) रखे गये वही कामयाब हैं।

---

[1] यानी सभी मामले अल्लाह को समर्पित (सिपुर्द) करें, उसी पर यक़ीन करें और केवल उसी से दुआ करें, क्योंकि उस के सिवा कोई कारसाज़ और संकटहारी (मुश्किलकुशा) नहीं है।

[2] यानी जो तुम्हें नेकी के कामों और अल्लाह के आज्ञापालन (इताअत) से रोके, समझ लो कि वह तुम्हारे हितकारी नहीं दुश्मन हैं।

[3] इस के अवतरित (नाज़िल) होने की वजह यह बताई गई है कि मक्का में मुसलमान होने वाले कुछ मुसलमानों ने मक्का छोड़कर मदीना आने का इरादा किया, जैसाकि उस समय हिजरत का हुक्म बलपूर्वक दिया गया था, लेकिन उनकी पत्नियाँ और बच्चे रुकावट बन गये और उन्होंने उन्हें हिजरत नहीं करने दिया, फिर जब बाद में वह रसूलुल्लाह ﷺ के पास आ गये तो देखा कि उन से पहले आने वालों ने धर्म में बहुत समझ प्राप्त (हासिल) कर ली है तो उन्हें अपनी पत्नियों और बच्चों पर ग़ुस्सा आया, जिन्होंने उन्हें हिजरत से रोका था, इसलिए उन्हें सज़ा देने की सोची, अल्लाह ने इस में उन्हें माफ़ कर देने और छोड़ देने का हुक्म दिया। (तिर्मिज़ी, तफ़सीर सूरह तग़ाबुन)

[4] जो तुम्हें हराम कमाई पर उभारते हैं और अल्लाह का हक़ पूरा करने से रोकते हैं, तो इस इम्तेहान में तुम उसी समय सफल हो सकते हो जब तुम अल्लाह की अवज्ञा (नाफ़रमानी) में उनका अनुसरण (इत्तेबा) न करो। मतलब यह हुआ कि माल और औलाद जहाँ अल्लाह के तोहफ़े हैं, वहीं यह इंसान के इम्तिहान के साधन (ज़रिया) भी हैं, इस ढंग से अल्लाह देखता है कि मेरा आज्ञाकारी (फ़रमाँबरदार) कौन है और अवज्ञाकारी (नाफ़रमान) कौन?

إِنْ تُقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ﴿17﴾

१७. अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज दोगे (यानी उस के रास्ते में ख़र्च करोगे) तो वह उसे तुम्हारे लिए बढ़ाता जायेगा और तुम्हारे गुनाह भी माफ़ कर देगा और अल्लाह बड़ा क़द्रदान और सहन करने वाला है।

عَٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَٰدَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿18﴾

१८. वह छिपी और खुली का जानने वाला, ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है।

سُورَةُ الطَّلَاقِ

सूरतुत्तलाक़-६५

सूर: तलाक़ मदीने में नाज़िल हुई, इसमें बारह आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

يَٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ ۖ لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ إِلَّآ أَنْ يَأْتِينَ بِفَٰحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ

१. हे नबी![1] (अपनी उम्मत से कहो) जब तुम अपनी पत्नियों को तलाक़ देना चाहो तो उनकी इद्दत (मुद्दत के शुरू) में उन्हें तलाक़ दो और इद्दत की गिनती रखो,[2] और अल्लाह से जो तुम्हारा रब है डरते रहो, न तुम उन्हें उन के घरों से निकालो,[3] और न वे (ख़ुद) निकलें,[4] हां, यह दूसरी बात है कि वह खुली बुराई कर बैठें। यह अल्लाह की मुक़र्रर की हुई सीमायें (हदें) हैं, और जो इंसान अल्लाह की हदों को

---

[1] नबी ﷺ से संबोधन आप की श्रेष्ठता (फ़ज़ीलत) और प्रतिष्ठा (शरफ़) की वजह है, नहीं तो हुक्म तो पैरोकारों को दिया जा रहा है, या आप ही को ख़ास तौर से संबोधित (मुख़ातिब) किया गया है और बहुवचन (जमा) का इस्तेमाल इज़्ज़त की वजह से है और पैरोकारों के लिए आप का नमूना ही काफ़ी है। طَلَّقْتُم का मतलब है जब तलाक़ देने का पक्का इरादा कर लो।

[2] यानी उस के शुरू और आख़िर का ध्यान रखो, ताकि स्त्री उस के बाद दूसरा विवाह कर सके, या अगर तुम ही फिर रखना चाहो (पहली और दूसरी तलाक़ की हालत में) तो इद्दत (अवधि) के भीतर फिर रख सको।

[3] यानी तलाक़ देते ही स्त्री को अपने घर से न निकालो, बल्कि इद्दत तक उसे घर ही में रहने दो, और उस समय तक रहने और खाने और कपड़े का ख़र्च तुम्हारी ज़िम्मेदारी है।

[4] यानी इद्दत (अवधि) के भीतर स्त्री ख़ुद भी बाहर निकलने से परहेज़ करे, लेकिन यह कि कोई बहुत ज़रूरी मामला हो।

ظَلَمَ نَفْسَهُ ۚ لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللَّهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذَٰلِكَ أَمْرًا ﴿١﴾

तोड़े उस ने यक़ीनी तौर से अपने ऊपर ज़ुल्म किया, तुम नहीं जानते कि शायद उस के बाद अल्लाह (तआला) कोई नई बात पैदा कर दे।[1]

فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنكُمْ وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ۚ ذَٰلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ مَن كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَمَن يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَل لَّهُ مَخْرَجًا ﴿٢﴾

२. तो जब ये (महिलायें) अपनी अवधि (मुद्दत) पूरी करने के क़रीब पहुँच जायें तो उन्हें बाक़ायदा अपने विवाह में रहने दो या बाक़ायदा उन्हें अलग कर दो[2] और आपस में से दो इंसाफ़ करने वाले इंसानों को गवाह बना लो, और अल्लाह की ख़ुशी के लिए ठीक-ठाक गवाही दो,[3] यही है वह जिसकी शिक्षा (नसीहत) उन्हें दी जाती है, जो अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखते हों, और जो इंसान अल्लाह से डरता है अल्लाह उस के लिए छुटकारे का रास्ता निकाल देता है।

وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ ۚ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ﴿٣﴾

३. और उसे ऐसी जगह से रोज़ी उपलब्ध (मुहैय्या) कराता है जिसका उसे अंदाज़ा भी न हो, और जो इंसान अल्लाह पर भरोसा करेगा, अल्लाह उस के लिए काफ़ी होगा। अल्लाह (तआला) अपना काम पूरा करके ही रहेगा, अल्लाह (तआला) ने हर चीज़ का एक अंदाज़ा

---

[1] यानी पति के मन में तलाक़ दी हुई औरत की रूचि (रग़बत) पैदा कर दे और वह फिर से रखने पर तैयार हो जाये, जैसाकि पहली और दूसरी तलाक़ के बाद पति को अवधि (इद्दत) के भीतर फिर से रखने का हक़ है। इसलिए कुछ भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) का विचार है कि अल्लाह ने इस आयत में सिर्फ़ एक तलाक़ देने की शिक्षा (तालीम) दी है और एक समय में तीन तलाक़ देने से रोका है, क्योंकि अगर वह एक ही समय (वक़्त) में तीन तलाक़ दे डाले [और धर्म-विधान (शरीअत) उसे जायेज़ करके लागू भी कर दे] तो फिर यह कहना बेकार है कि शायद अल्लाह तआला कोई नई बात पैदा कर दे। (फ़तहुल क़दीर)

[2] मुतल्लक़ा मदख़ूला (जिस स्त्री से पति ने संभोग किया हो और उसे तलाक़ दिया है तो) उसकी अवधि (इद्दत) तीन माहवारी है, अगर उसे फिर से रख लेने का इरादा हो तो इद्दत (अवधि) पूरी होने से पहले-पहले रुजूअ कर लो, नहीं तो उन्हें बाक़ायदा अपने से अलग कर दो।

[3] यह गवाहों को कहा गया है कि बिना पक्षपात (जानिबदारी) और बिना लालच के सही-सही गवाही दें।

निर्धारित (मुक़र्रर) कर रखा है।

وَالّٰٓـِٔيْ يَىِٕسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآىِٕكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ۭ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۭ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ④

४. तुम्हारी औरतों में से जो औरतें माहवारी से मायूस हो गयी हों, अगर तुम्हें शक हो तो उनकी इद्दत तीन माह है और उनकी भी जिन्हें अभी माहवारी (हैज) शुरू ही न हुआ हो,[1] और गर्भवती (हामला) औरतों की इद्दत (अवधि) उनका बच्चे को जन्म देना है,[2] और जो इंसान अल्लाह तआला से डरेगा, अल्लाह उस के (हर) काम में आसानी पैदा कर देगा।

ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗٓ اِلَيْكُمْ ۭ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗٓ اَجْرًا ⑤

५. यह अल्लाह का हुक्म है जो उसने तुम्हारी तरफ़ उतारा है, और जो इंसान अल्लाह से डरेगा अल्लाह उस के गुनाह मिटा देगा और उसे बहुत भारी बदला देगा।

اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ

६. तुम अपनी ताक़त के अनुसार जहाँ रहते हो वहाँ उन (तलाक़ वाली) औरतों को रखो[3] और

[1] यह उन की इद्दत (अवधि) है जिनकी माहवारी ज़्यादा उम्र की वजह से रूक गई हो या जिन्हें माहवारी आना शुरू ही नहीं हुई। मालूम है कि ऐसा कभी-कभी होता है कि स्त्री बड़ी होकर पति के साथ रहती है परन्तु उसे माहवारी नहीं आती।

[2] मुतल्लक़ा (तलाक़ शुदा औरत) अगर गर्भवती (हामला) हो तो उसकी अवधि प्रसव (विलादत) है, चाहे दूसरे दिन ही विलादत हो जाये, इस के सिवा आयत से ज़ाहिर यही है कि हर गर्भवती की यही इद्दत है चाहे वह तलाक़ शुदा हो या उसका पति मर गया हो, हदीसों से भी इसे समर्थन मिलता है (देखिए सहीह बुख़ारी, मुस्लिम और दूसरी सुनन, किताबुत तलाक़) दूसरी स्त्रियाँ जिन के पति मर जायें उनकी इद्दत ४ महीना १० दिन है। (सूर: बक़र:-२३४)

[3] मुतल्लक़ा रजइया को (यानी दो तलाक़ तक जिस में पत्नी को मुद्दत के भीतर फिर से रख सकता है) इसलिए कि जो बायेन: है (पूरी तीन तलाक़ कई मौक़ा पर दे दिया है) उस के लिए आवास (रिहाईश) और ख़र्च ज़रूरी ही नहीं है, जैसाकि पिछले पन्नों में बयान किया गया, अपनी ताक़त के अनुसार रखने का मतलब यह है कि अगर घर बड़ा हो और उस में कई कमरे हों तो एक कमरा उस के लिए ख़ास कर दिया जाये, नहीं तो अपना कमरा उस के लिए ख़ाली कर दें। इस में हिक्मत यही है कि पास रह कर अवधि (इद्दत) पूरी करेगी तो हो सकता है कि पति को तरस आ जाये और उसे फिर से रखने की रूचि (रग़बत) मन में पैदा हो जाये, ख़ास कर के अगर बच्चे भी हों तो फिर चाहत और फिर से रख लेने की ज़्यादा उम्मीद है। लेकिन अफ़सोस की बात है कि मुसलमान इस निर्देश (हिदायत) के अनुसार काम नहीं करते जिस की वजह से इस हुक्म के फ़ायदे और ख़ूबी से भी वह वंचित (महरूम) हैं। हमारे समाज

وَلَا تُضَآرُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا۟ عَلَيْهِنَّ ۚ وَإِن كُنَّ أُو۟لَٰتِ حَمْلٍ فَأَنفِقُوا۟ عَلَيْهِنَّ حَتَّىٰ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَـَٔاتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۖ وَأْتَمِرُوا۟ بَيْنَكُم بِمَعْرُوفٍ ۖ وَإِن تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهُۥٓ أُخْرَىٰ ﴿6﴾

उन्हें तंग करने के लिए कष्ट न दो और अगर वे हामिला हों तो जब तक बच्चा जन्म ले ले उन्हें ख़र्च देते रहा करो, फिर अगर तुम्हारे कहने से वही दूध पिलायें तो तुम उन्हें उनका पारिश्रमिक (उजरत) दे दो[1] और आपस में अच्छी तरह राय-मशविरा कर लिया करो और अगर तुम आपस में तनाव रखो तो उस के कहने से कोई दूसरी दूध पिलायेगी।

لِيُنفِقْ ذُو سَعَةٍ مِّن سَعَتِهِۦ ۖ وَمَن قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُۥ فَلْيُنفِقْ مِمَّآ ءَاتَىٰهُ ٱللَّهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ ٱللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَآ ءَاتَىٰهَا ۚ سَيَجْعَلُ ٱللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ﴿7﴾

७. धन वाले को अपने धन के अनुसार ख़र्च करना चाहिए और जिसकी जीविका (रिज़्क़) उस के लिए कम की गयी हो तो उस को चाहिए कि जो कुछ अल्लाह (तआला) ने उसे दे रखा है, उसी में से (अपनी ताक़त के अनुसार) दे, किसी इंसान पर अल्लाह बोझ नहीं रखता लेकिन इतना ही जितनी ताक़त उसे दे रखी है।[2] अल्लाह (तआला) ग़रीबी के बाद माल भी अता (प्रदान) करेगा।[3]

में तलाक़ (विवाह-विच्छेद) के साथ ही जिस तरह औरत को तुरन्त अछूत बनाकर घर से निकाल दिया जाता है या कई बार लड़की वाले उसे अपने घर ले जाते हैं, यह रिवाज क़ुरआन करीम की खुली शिक्षा (तालीम) के ख़िलाफ़ है।

[1] यानी तलाक़ देने के बाद अगर वह तुम्हारे बच्चे को दूध पिलाये तो उसका पारिश्रमिक (उजरत) तुम्हारे ऊपर है।

[2] इसलिए वह ग़रीब और दरिद्र को यह हुक्म नहीं देता कि वह दूध पिलाने वाली को ज़्यादा ही पारिश्रमिक (उजरत) दे। मतलब इन निर्देशों (हिदायत) का यह है कि बच्चे की माँ और उसका बाप ऐसा उचित (मुनासिब) ढंग अपनायें कि एक-दूसरे को तकलीफ़ न पहुँचे और बच्चे को दूध पिलाने का मामला खटाई में न पड़े। जैसे दूसरी जगह पर फ़रमाया :

﴿لَا تُضَارَّ وَالِدَةٌ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُودٌ لَهُ بِوَلَدِهِ﴾

"न माँ को बच्चे की वजह से दुख पहुँचाया जाये और न बाप को।" (अल-बक़र:-२३३)

[3] इसलिए जो अल्लाह पर यक़ीन और भरोसा करते हैं, अल्लाह उन के लिए आसानी और विस्तार (कुशादगी) भी देता है।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا
وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا شَدِيْدًا ۙ
وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ﴿8﴾

८. और बहुत सी बस्ती (वालों) ने अपने रब के हुक्म से और उस के रसूलों की नाफ़रमानी की तो हम ने भी उन से कड़ा हिसाब लिया और अनदेखा (कठोर) अज़ाब उन पर डाल दिया।

فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ
اَمْرِهَا خُسْرًا ﴿9﴾

९. तो उन्होंने अपने करतूतों का मज़ा चख लिया और परिणाम स्वरूप (नतीजतन) उन का नुक़सान ही हुआ।

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ
يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ۚۛ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚۛ قَدْ اَنْزَلَ
اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ﴿10﴾

१०. उन के लिए अल्लाह तआला ने सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा हैं, तो अल्लाह से डरो हे अक़्लमंद ईमानवालो! निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ शिक्षा (नसीहत) भेज दी है।

رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ
اِلَى النُّوْرِ ۗ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا
يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ
رِزْقًا ﴿11﴾

११. (यानी) रसूल जो तुम्हें अल्लाह के स्पष्ट (वाज़ेह) हुक्म पढ़ कर सुनाता है ताकि उन लोगों को जो ईमान लायें और नेक काम करें, वह अंधेरे से उजाले की तरफ़ ले आये[1] और जो इंसान अल्लाह पर ईमान लाये और नेक काम करे अल्लाह उसे ऐसे स्वर्ग में प्रवेश (दाख़िला) देगा जिस के नीचे नहरें बह रही हैं, जिस में वे हमेशा-हमेश रहेंगे। बेशक अल्लाह ने उसे सब से अच्छी जीविका (रिज़्क़) दे रखी है।

[1] यह रसूल की ज़िम्मेदारी और फ़र्ज़ बयान किया गया है कि वह क़ुरआन के द्वारा (ज़रिये) लोगों को अख़लाक़ी गिरावट और शिर्क (बहुदेववाद) और गुमराही के अंधकारों से निकाल कर ईमान और नेकी के उजाले की तरफ़ लाता है। यहाँ رسول रसूल (संदेष्टा) से मुराद الرسول यानी मोहम्मद ﷺ हैं।

اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّ مِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۭ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ڏ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ⑫

१२. अल्लाह वह है जिसने सात आकाश बनाये और उसी की तरह धरती भी।[1] उस का हुक्म उन के बीच नाज़िल होता है[2] ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है, और अल्लाह (तआला) ने हर चीज़ को अपने ज्ञान (इल्म) की परिधि (इहाते) में घेर रखा है।[3]

سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ

सूरतुत्तहरीम-६६

सूरः तहरीम मदीने में नाज़िल हुई, इसमें बारह आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ①

१. हे नबी ! जिस चीज़ को अल्लाह ने आप के लिए वैध (हलाल) कर दिया है, उसे आप अवैध (हराम) क्यों करते हैं?[4] (क्या) आप अपनी

---

[1] أي خلق من الأرض مثلهن यानी सात आकाशों की तरह अल्लाह ने सात धरतियाँ भी पैदा की हैं। कुछ ने इस से सात महाद्वीप (बर्रे आज़म) मुराद लिया है, लेकिन यह सही नहीं, नहीं तो जिस तरह ऊपर तले सात आकाश हैं उसी तरह सात धरतियाँ हैं, जिन के बीच फ़र्क और दूरी है और हर धरती में अल्लाह की सृष्टि (मख़लूक़) आबाद है। (अल कुर्तबी)

[2] यानी जैसे हर आकाश पर अल्लाह का हुक्म लागू और ग़ालिब है, इसी तरह हर धरती पर उसका हुक्म चलता है, आकाशों की तरह वह सभी धरतियों की भी व्यवस्था (तदबीर) करता है।

[3] तो उस के ज्ञान (इल्म) से कोई चीज़ बाहर नहीं चाहे वह कैसी ही हो।

[4] नबी ﷺ ने जिस चीज़ को अपने लिये हराम कर लिया था वह क्या थी? जिस पर अल्लाह ने अपनी अप्रियता (नापसंदी) ज़ाहिर की, इस मामले में एक तो वह मशहूर वाक़ेआ है जो बुख़ारी और सहीह मुस्लिम वग़ैरह में रिवायत हुई है कि आप ﷺ हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश के पास कुछ देर रूकते और वहाँ शहद पीते। हज़रत हफ़सा और आयेशा (رضي الله عنهما) दोनों ने वहाँ आप ﷺ को ज़्यादा देर तक ठहरने से रोकने के लिए यह योजना बनाई कि उन में से जिस के पास भी रसूलुल्लाह ﷺ जायें तो वह उन से यह कहे कि आप के मुँह से मग़ाफ़ीर (एक तरह का फूल जिस में नापसंद बू होती है) की गंध आ रही है और उन्होंने ऐसा ही किया। आप ने फ़रमाया कि मैंने तो ज़ैनब के घर केवल शहद पिया है। अब मैं क़सम खाता हूं कि यह नहीं पिऊँगा, लेकिन यह बात तुम किसी को बतलाना नहीं। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरतुत तहरीम) इस से यह बात भी साफ़ हो जाती है कि अल्लाह की हलाल चीज़ों को हराम करने का हक़ किसी को भी नहीं, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह ﷺ भी यह अधिकार (हक़) नहीं रखते।

पत्नियों की ख़ुशी हासिल करना चाहते हैं और अल्लाह माफ़ करने वाला बड़ा रहीम है।

قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ②

२. बेशक अल्लाह (तआला) ने आप के लिए क़समों से निकलने का तरीक़ा मुक़र्रर कर दिया है और अल्लाह आप का कार्यक्षम (कारसाज़) है और वही (पूरा) इल्म वाला और हिक्मत वाला है।

وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ۗ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ③

३. और (याद करो) जब नबी ने अपनी कुछ पत्नियों से एक बात चुपके से कही[1] तो जब उस ने उस बात की ख़बर कर दी[2] और अल्लाह ने अपने नबी को उस पर अवगत (आगाह) कर दिया तो नबी ने कुछ बात तो बता दी और कुछ टाल गये, फिर जब नबी ने अपनी उस पत्नी को यह बात बता दी तो वह कहने लगी कि इस की ख़बर आप को किसने दी,[3] कहा कि सब कुछ जानने वाले पूरी ख़बर रखने वाले अल्लाह ने मुझे बता दिया है।[4]

اِنْ تَتُوْبَاۤ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ④

४. (हे नबी की दोनों पत्नियो!) अगर तुम अल्लाह से माफ़ी माँग लो (तो बहुत अच्छा है) बेशक तुम्हारे दिल झुक गये हैं, और अगर तुम रसूल के ख़िलाफ़ एक-दूसरे की मदद करोगी तो बेशक उसका संरक्षक (वली) अल्लाह है और जिब्रील और नेक ईमानवाले और उन के सिवाय फ़रिश्ते भी मदद करने वाले हैं।

---

[1] वह छिपी बात मधु (शहद) या दासी मारिया को हराम करने वाली बात थी, जो आप ﷺ ने हज़रत हफ़सा से की थी।

[2] यानी हफ़सा ने वह बात आयेशा रज़ि अल्लाहु अन्हा को बता दी।

[3] जब नबी ﷺ ने हज़रत हफ़सा को बतलाया कि तुम ने मेरा भेद खोल दिया है तो वह हैरत में हुई, क्योंकि उन्होंने हज़रत आयेशा के सिवा किसी को यह बात नहीं बतलाई थी और आयेशा से उन्हें उम्मीद न थी कि वह आप ﷺ को बतला देंगी, क्योंकि वह मामले में साझी थीं।

[4] इस से मालूम हुआ कि क़ुरआन के सिवाय भी आप ﷺ पर प्रकाशना (वह्यी) का अवतरण (नुज़ूल) होता था।

عَسٰى رَبُّهٗٓ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗٓ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ⑤

५. अगर वह (रसूल) तुम्हें तलाक़ दे दें तो बहुत जल्द उन्हें उन का रब तुम्हारे बदले तुम से अच्छी बीवियाँ अता करेगा, जो इस्लाम वालियाँ, ईमान वालियाँ, अल्लाह के सामने झुकने वालियाँ, माफ़ी माँगने वालियाँ, इबादत करने वालियाँ, व्रत (रोज़े) रखने वालियाँ होंगी विधवायें (बेवायें) और कुंवारियाँ।[1]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ⑥

६. हे ईमानवालो! तुम ख़ुद अपने को और अपने परिवार वालों को उस आग से बचाओ[2] जिस का ईंधन इंसान हैं और पत्थर, जिस पर कठोर दिल वाले सख़्त फ़रिश्ते तैनात हैं, जिन्हें जो हुक्म अल्लाह (तआला) देता है उसकी नाफ़रमानी नहीं करते बल्कि जो हुक्म दिया जाये उसका पालन (पैरवी) करते हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ۭ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ⑦

७. हे काफ़िरो! आज तुम (मजबूरी और) बहाना मत जाहिर करो, तुम्हें केवल तुम्हारे कुकर्मों (बुरे आमाल) का बदला दिया जा रहा है।

[1] ثَيِّبَات (सैयेबात) ثَيِّب (सय्यिब) का बहुवचन (जमा) है (लौट आने वाली) विधवा (बेवा) औरत को सय्यिब इसलिए कहा जाता है कि वह पति से वापस लौट आती है, फिर इसी तरह बिना पति के रह जाती है जैसे पहले थी। اَبْكَار (अबकार) بِكْر (बिक्र) का बहुवचन है कुंवारी स्त्री को बिक्र (नई) इसलिए कहते हैं कि यह अभी अपनी पहली हालत पर होती है जिस पर पैदा हुई है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] इस में ईमान वालों को उन की एक बहुत अहम जिम्मेदारी की तरफ़ ध्यान दिलाया गया है और वह यह है कि अपने साथ अपने घर वालों का भी सुधार और उनकी इस्लामी शिक्षा-दीक्षा (तालीम) की व्यवस्था (तदबीर) करें, ताकि यह सब नरक का ईंधन बनने से बच जायें। इसीलिए रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया है कि जब बच्चा सात साल का हो जाये तो उसे नमाज़ का हुक्म दो और दस साल की उम्र में नमाज़ में सुस्ती देखो तो उन्हें मारो। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, किताबुस सलात) धर्मविदों (आलिमों) ने कहा है कि इसी तरह रोज़े भी उन से रखवाये जायें और दूसरे धार्मिक आदेशों (शरई अहकाम) के पालन का निर्देश (हिदायत) दिया जाये ताकि जब वह बोध (शउर) की उम्र को पहुँचें तो उन में धार्मिक बोध (शरई शउर) भी मिल चुका हो। (इब्ने कसीर)

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يَوْمَ لَا يُخْزِى اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٨﴾

८. हे ईमानवालो ! तुम अल्लाह के आगे (सच और) ख़ालिस माफ़ी माँगो[1] मुमकिन है कि तुम्हारा रब तुम्हारे पाप मिटा दे और तुम्हें ऐसी जन्नत में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जिस दिन अल्लाह (तआला) नबी (संदेष्टा) को और ईमानवालों को जो उन के साथ हैं अपमानित (रुस्वा) न करेगा, उनकी ज्योति (नूर) उन के आगे और उन के दायें दौड़ रही होगी, ये दुआयें करते होंगे कि हे हमारे रब ! हमें पूरा नूर अता कर[2] और हमें माफ कर दे, बेशक तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٩﴾

९. हे नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से धर्मयुद्ध (जिहाद) करें, और उन पर कड़ाई करें, उन का ठिकाना नरक है, और वह बहुत बुरी जगह है।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا

१०. अल्लाह (तआला) ने काफ़िरों के लिए नूह की और लूत की पत्नियों की मिसाल दिया है। ये दोनों हमारे बन्दों में से दो नेक बन्दों के परिवार में थीं, फिर उन्होंने उन के साथ ख़्यानत (विश्वासघात) किया[3] तो वे दोनों (भक्त) उन से

---

[1] विशुद्ध (ख़ालिस) तौबा यह है : १- जिस पाप से माफ़ी माँग रहा है उसे छोड़ दे, २- उस पर अल्लाह के सामने लज्जित (शर्मिन्दा) हो, ३- भविष्य (मुस्तक़बिल) में उसे न करने का मज़बूत इरादा करे ४- और उसका संबन्ध (ताल्लुक़) बंदों के हक़ से है जिस का हक़ मारा है तो उसकी क्षतिपूर्ति (हरजाना) करे, जिस के साथ ज़ुल्म किया है उस से माफ़ी माँगे, केवल मुँह से तौबा-तौबा कर लेना कोई मायने नहीं रखता।

[2] यह दुआ ईमानवाले उस समय करेंगे जब मुनाफ़िक़ों का प्रकाश (नूर) बुझा दिया जायेगा, जैसाकि सूरह हदीद में बयान गुज़रा। ईमानवाले कहेंगे कि जन्नत में जाने तक हमारा यह नूर बाक़ी रख और इसे पूरा कर दे।

[3] यहाँ विश्वासघात (ख़्यानत) से मुराद सतीत्व (इस्मत) में ख़्यानत नहीं, क्योंकि इस बात पर 'इजमाअ' (सहमति) है कि किसी नबी की पत्नी (बीवी) बदकार नहीं होती। (फ़तहुल क़दीर) ख़्यानत का मतलब यह है कि यह अपने पतियों (शौहरों) पर ईमान नहीं लायीं, निफ़ाक़ (दुविधा) में पड़ी रहीं और उनकी हमदर्दियाँ अपनी काफ़िर जाति के साथ रहीं, जैसाकि नूह की पत्नी हज़रत नूह عليه السلام के बारे में लोगों से कहती कि यह दीवाना है और लूत की पत्नी अपने सम्प्रदाय (क़ौम) को घर में आने वाले मेहमानों की ख़बर पहुँचाती थी, कुछ लोग कहते हैं कि यह दोनों अपनी जाति के लोगों में अपने पतियों की चुगलियाँ खाती थीं।

عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ⑩

अल्लाह की (किसी अज़ाब को) न रोक सके[1] और हुक्म दे दिया गया कि (औरतो!) नरक में जाने वालों के साथ तुम दोनों भी चली जाओ।[2]

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ⑪

११. और अल्लाह (तआला) ने ईमानवालों के लिए फ़िरऔन की बीवी की मिसाल बयान की, जबकि उस ने दुआ की, हे मेरे रब! मेरे लिए अपने पास जन्नत में घर बना और मुझे फ़िरऔन से और उस के कर्म (अमल) से बचा और मुझे ज़ालिमों से मुक्ति (नजात) दे।

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ⑫

१२. और (मिसाल बयान किया) मरियम पुत्री इमरान की,[3] जिसने अपने सतीत्व (इस्मत) की हिफ़ाज़त की, फिर हम ने अपनी तरफ़ से उस में प्राण (रूह) फूंके और (मरियम) ने अपने रब की बातों[4] और उस की किताबों की तसदीक़ की और वह इबादत करने वालियों में से थी।[5]

---

[1] यानी नूह और लूत दोनों अल्लाह के पैग़म्बर (संदेष्टा) थे, जो अल्लाह के क़रीबी बंदे होते हैं, फिर भी अपनी पत्नियों (बीवियों) को अल्लाह के अज़ाब से नहीं बचा सके।

[2] यह उन से क़यामत के दिन कहा जायेगा या मौत के समय उन्हें कहा गया, काफ़िरों की मिसाल यहाँ ख़ास तौर से बयान करने का मतलब पाक पत्नियों को यह चेतावनी (तंबीह) देनी है कि वह बेशक उस रसूल के घर की शोभा (ज़ीनत) हैं, जो पूरी सृष्टि (मख़लूक़) में सब से अच्छे हैं। लेकिन उन्हें याद रखना चाहिए कि अगर उन्होंने रसूल के ख़िलाफ़ किया या उन्हें दुख पहुँचाया तो वह भी अल्लाह की पकड़ में आ सकती हैं, और अगर ऐसा हो गया तो कोई उनको बचाने वाला नहीं होगा।

[3] हज़रत मरियम की चर्चा से उद्देश्य (मक़सद) यह बयान करना है कि यद्यपि (अगरचे) वह एक बिगड़ी जाति के बीच रहती थीं, किन्तु अल्लाह ने उन्हें दुनिया और आख़िरत की इज़्ज़त और चमत्कार से बाइज़्ज़त किया और पूरी दुनिया की औरतों पर उन्हें श्रेष्ठता (फ़ज़ीलत) दी।

[4] रब के शब्दों (लफ़्ज़ों) से मुराद अल्लाह के धर्म-विधान (शरीअतें) हैं।

[5] यानी ऐसे लोगों या परिवार में से थी जो फ़रमांबर्दार, इबादत गुज़ार, सुधार और इताअत में मशहूर था, हदीस में है कि जन्नती औरतों में सब से अच्छी हज़रत ख़दीजा, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत मरियम और फ़िरऔन की पत्नी हज़रत आसिया ﷺ हैं। (मुसनद अहमद १\२९३, मजमउज़्ज़वायेद ९\२२३, अस्सहीह लिल अलबानी न॰ १५०८) एक दूसरी हदीस में है कि मर्दों में तो मुकम्मल बहुत हुए हैं, किन्तु औरतों में मुकम्मल सिर्फ़ फ़िरऔन की पत्नी आसिया, मरियम पुत्री इमरान और ख़दीजा पुत्री ख़ुवैलिद हैं, आयेशा रज़ि अल्लाहु अन्हा की प्रधानता (फ़ज़ीलत) औरतों पर ऐसे है जैसे सरीद (खाने) को तमाम खानों पर फ़ज़ीलत हासिल है। (बुख़ारी, किताबु बदइल ख़ल्क़, मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, बाबु फ़ज़ाइलि ख़दीजा)

सूरतुल मुल्क-६७

سُورَةُ المُلْكِ

सूर: मुल्क* मक्का में नाज़िल हुई, इस में तीस आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ (1)

१. बड़ी बरकत वाला है वह (अल्लाह) जिसके हाथ में राज्य (मुल्क) है और जो हर चीज पर क़ुदरत रखने वाला है।

الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ (2)

२. जिस ने ज़िन्दगी और मौत को इसलिए पैदा किया कि तुम्हारा इम्तेहान ले कि तुम में से अच्छे अमल कौन करता है,[1] और वह ग़ालिब और माफ़ करने वाला है।

الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ؕ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ (3)

३. जिस ने सात आकाश ऊपर-नीचे पैदा किये (तो हे देखने वाले! अल्लाह) रहमान की पैदाइश में कोई असंगति (बेज़ाबतगी) न देखेगा, दोबारा पलट कर देख ले कि कि क्या कोई चीज़ भी दिखाई दे रही है।

---

* इस की प्रधानता (फ़ज़ीलत) में कई हदीसें आयी हैं, जिन में से कुछ सहीह या हसन हैं, एक में रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : "अल्लाह की किताब में एक सूरह है जिस में सिर्फ़ ३० आयतें हैं, यह इंसान की सिफ़ारिश करेगी यहां तक कि उसे माफ़ कर दिया जायेगा।" (तिर्मिजी, अबु दाऊद, इब्ने माजा और मुसनद अहमद २\२९९, ३२१) एक रिवायत अल्लामा अलबानी ने अस-सहीहा में नक़ल की है «سُورَةُ تَبَارَكَ هِيَ الْمَانِعَةُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ» "सूरह मुल्क क़ब्र के अज़ाब से रोकने वाली है।" (न॰ ११४०, भाग ३, पेज १३१) यानी जो उसे पढ़ता रहेगा उम्मीद है कि क़ब्र के अज़ाब से सुरक्षित (महफ़ूज़) रहेगा, शर्त यह है कि वह इस्लाम के हुक्म और वाजिबात (अनिवार्यताओं) का पालन करता रहे।

[1] आत्मा (रूह) एक ऐसी दिखाई न देने वाली चीज़ है कि जिस शरीर से उसका रिश्ता और लगाव हो जाये वह ज़िन्दा कहलाता है और जिस शरीर से उसका रिश्ता टूट जाये वह मौत से मिल जाता है। अल्लाह ने यह वक़्ती ज़िंदगी का सिलसिला इसलिए क़ायम किया है ताकि वह इम्तेहान ले कि इस ज़िन्दगी का सही इस्तेमाल कौन करता है? जो उसे ईमान और हुक्म की पैरवी के लिए इस्तेमाल करेगा उस के लिए अच्छा फल है और दूसरों के लिए अज़ाब।

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ④

४. फिर दोहराकर दो-दो बार देख ले, तेरी निगाह तेरी तरफ़ जलील (और मजबूर) होकर थकी हुई लौट आयेगी।

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيرِ ⑤

५. और बेशक हम ने दुनियावी आसमान को दीपों (तारों) से सुशोभित (मुजय्यन) किया और उन्हें शैतानों को मारने का साधन (जरिया) बना दिया[1] और शैतानों के लिए हम ने (जहन्नम में जलाने वाला) अज़ाब तैयार कर दिया।

وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ⑥

६. और अपने रब के साथ कुफ़्र करने वालों के लिए नरक (जहन्नम) का अज़ाब है, और वह क्या ही बुरी जगह है।

إِذَا أُلْقُوا فِيهَا سَمِعُوا لَهَا شَهِيقًا وَهِيَ تَفُورُ ⑦

७. जब उस में ये डाले जायेंगे तो उसकी बड़े ज़ोर की आवाज़ सुनेंगे और वह उबाल खा रहा होगा।[2]

تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۖ كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ⑧

८. (ज़ाहिर होगा कि अभी) गुस्से के मारे फट पड़ेगा,[3] जब कभी उस में कोई गिरोह डाला जायेगा उस से नरक (जहन्नम) के दरोग़ा पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था?

---

[1] यहाँ तारों के दो मक़सद बताये गये हैं, एक आकाशों की शोभा (ज़ीनत) क्योंकि वह चिरागों की तरह जलते दिखाई देते हैं। दूसरे अगर शैतान आकाशों की तरफ़ जाने की कोशिश करते हैं तो यह आग बनकर उन पर गिरते हैं। तीसरे उनका यह मक़सद है जिसे दूसरी जगह पर बयान किया गया है कि उन से जल-थल में रास्ते का इशारा मिलता है।

[2] شَهِيق उस आवाज़ को कहते हैं जो गधा पहली बार निकालता है, यह बहुत बुरी आवाज़ होती है। जहन्नम भी गधे की तरह चीख चिल्ला रही और आग पर रखी हाँडी के समान खौल रही होगी।

[3] यानी गुस्सा और गज़ब के मारे उस के एक हिस्से एक-दूसरे से अलग हो जायेंगे, यह जहन्नम काफ़िरों को देखकर गुस्सा हो जायेगी, जिसकी समझ अल्लाह तआला उस के भीतर पैदा कर देगा, अल्लाह तआला के लिए जहन्नम के भीतर बोध (शुउर) और संवेदन (एहसास) पैदा कर देना कोई कठिन नहीं है।

قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ۬ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۚۖ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ⑨

९. वे जवाब देंगे कि बेशक आया तो था, लेकिन हम ने उसे झुठलाया और कहा कि अल्लाह (तआला) ने कुछ भी नाज़िल नहीं किया, तुम बहुत बड़ी गुमराही में ही हो।

وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ أَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ⑩

१०. और कहेंगे कि अगर हम सुनते होते या समझते होते तो नरकवासियों में (शामिल) न होते।

فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّأَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ⑪

११. तो उन्होंने अपने गुनाह को क़ुबूल कर लिया, अब ये नरकवासी (जहन्नमी) हट जायें (दूर हों)।

إِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّأَجْرٌ كَبِيْرٌ ⑫

१२. बेशक जो लोग अपने रब से बिना देखे ही डरते रहते हैं, उन के लिए माफ़ी है और बड़ा बदला है।

وَأَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ۭ إِنَّهٗ عَلِيْمٌ ۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ⑬

१३. और तुम अपनी बातों को चुपके से कहो या ऊँची आवाज़ में, वह तो सीनों में (छिपी हुई) बातों को भी अच्छी तरह जानता है।

أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ۭ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ⑭

१४. क्या वही न जाने जिस ने पैदा किया? फिर वह बारीक देखने और जानने वाला भी हो।[1]

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ۭ وَإِلَيْهِ النُّشُوْرُ ⑮

१५. वह वही है जिस ने तुम्हारे लिए धरती को पस्त (और कोमल) बनाया,[2] ताकि तुम उस के रास्तों पर आना-जाना (आवागमन) करते रहो और उस की दी हुई जीविका (रिज़्क़) को खाओ-पिओ, उसी की तरफ़ (तुम्हें) जीकर उठ खड़ा होना है।

---

[1] لَطِيْفٌ का मतलब है बारीक देखने वाला, "यानी जिसका ज्ञान (इल्म) इतना बारीक है कि दिल की बातों को भी वह जानता है।" (फ़तहुल क़दीर)

[2] ذَلُوْل का मतलब है पस्त, जो तुम्हारे आगे झुक जाये, सिर न फेरे, यानी धरती को तुम्हारे लिए कोमल और आसान कर दिया है, उसे इतनी कड़ी नहीं बनाया कि तुम्हारा उस पर आबाद होना और यातायात (सफ़र) कठिन हो।

ءَاَمِنۡتُمۡ مَّنۡ فِى السَّمَآءِ اَنۡ يَّخۡسِفَ بِكُمُ الۡاَرۡضَ فَاِذَا هِىَ تَمُوۡرُ ۙ﴿16﴾

१६. क्या तुम इस बात से निडर हो गये हो कि आकाशों वाला तुम्हें धरती में धंसा दे और अचानक धरती कपकपा उठे।

اَمۡ اَمِنۡتُمۡ مَّنۡ فِى السَّمَآءِ اَنۡ يُّرۡسِلَ عَلَيۡكُمۡ حَاصِبًا ؕ فَسَتَعۡلَمُوۡنَ كَيۡفَ نَذِيۡرِ ﴿17﴾

१७. या क्या तुम इस बात से निर्भीक (बेख़ौफ़) हो गये हो कि आकाशों वाला तुम पर पत्थर बरसा दे?[1] फिर तो तुम्हें मालूम हो ही जायेगा कि मेरा डराना कैसा था।

وَلَقَدۡ كَذَّبَ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ فَكَيۡفَ كَانَ نَكِيۡرِ ﴿18﴾

१८. और उन से पहले के लोगों ने भी झुठलाया था (तो देखो) उन पर मेरा अज़ाब कैसा कुछ हुआ?

اَوَلَمۡ يَرَوۡا اِلَى الطَّيۡرِ فَوۡقَهُمۡ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقۡبِضۡنَ ؔۘ مَا يُمۡسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحۡمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَىۡءٍۢ بَصِيۡرٌ ﴿19﴾

१९. क्या ये अपने ऊपर कभी पंख खोले हुए और (कभी-कभी) समेटे हुए (उड़ने वाले) पंक्षियों को नहीं देखते,[2] उन्हें (अल्लाह) रहमान ही (फ़िज़ा और आकाश में) थामे हुए है। बेशक हर चीज़ उसकी निगाह में है।

اَمَّنۡ هٰذَا الَّذِىۡ هُوَ جُنۡدٌ لَّكُمۡ يَنۡصُرُكُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ الرَّحۡمٰنِ ؕ اِنِ الۡكٰفِرُوۡنَ اِلَّا فِىۡ غُرُوۡرٍ ۚ﴿20﴾

२०. अल्लाह के सिवाय तुम्हारी कौन सी सेना है जो तुम्हारी मदद कर सके, काफ़िर तो पूरी तरह से धोखे ही में हैं।

اَمَّنۡ هٰذَا الَّذِىۡ يَرۡزُقُكُمۡ اِنۡ اَمۡسَكَ رِزۡقَهٗ ۚ بَلۡ لَّجُّوۡا فِىۡ عُتُوٍّ وَّنُفُوۡرٍ ﴿21﴾

२१. अगर अल्लाह (तआला) अपनी रोज़ी रोक लें, तो (बताओ) कौन है, जो फिर तुम्हारी रोज़ी देगा? बल्कि (काफ़िर) तो सरकशी और बिदकने पर मज़बूत हो गये हैं।

اَفَمَنۡ يَّمۡشِىۡ مُكِبًّا عَلٰى وَجۡهِهٖۤ اَهۡدٰٓى اَمَّنۡ يَّمۡشِىۡ سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿22﴾

२२. अच्छा वह इंसान ज़्यादा हिदायत पर है जो अपने मुँह के बल औंधा होकर चले[3] या वह जो सीधा (पैरों के बल) सीधे रास्ते पर चल रहा हो?

---

[1] जैसे उस ने लूत की जाति (क़ौम) और असहाबुल फ़ील (हाथी वाले अबरहा और उसकी सेना) पर बरसाये और पत्थरों की बारिश से उनका विनाश (हलाक) कर दिया।

[2] यानी पंक्षी जब हवा में उड़ता है तो वह पंख फैला लेता है और कभी उड़ने के बीच पंखों को सिकोड़ लेता है, यह फैलाना صَفّ (सफ़्फ़) और सिकोड़ना قَبْض (क़ब्ज़) है।

[3] मुँह के बल औंधे चलने वाले को दायें-बायें और आगे कुछ नहीं दिखता, न वह ठोकरों से सुरक्षित (महफ़ूज़) रहता है, क्या ऐसा इंसान अपने मक़सद तक पहुँच सकता है? बेशक (निश्चय) वह नहीं पहुँच सकता। इसी तरह दुनिया में अल्लाह के हुक्म को न मानने वाला इंसान आख़िरत (परलोक) की कामयाबी से महरूम (वंचित) रहेगा।

قُلْ هُوَ الَّذِيٓ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿23﴾

२३. कह दीजिए कि वही (अल्लाह) है जिस ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे कान, आँखें और दिल बनाये,[1] तुम बहुत ही कम शुक्रिया अदा करते हो।

قُلْ هُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿24﴾

२४. कह दीजिए कि वही है जिसने तुम्हें धरती पर फैला दिया और उसकी तरफ तुम जमा किये जाओगे।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿25﴾

२५. और (काफिर) पूछते हैं कि वह वादा कब जाहिर होगा अगर तुम सच्चे हो (तो बताओ)?

قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۠ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿26﴾

२६. (आप) कह दीजिए कि इसका ज्ञान (इल्म) तो अल्लाह ही को है, मैं तो साफ तौर से आगाह कर देने वाला हूँ।[2]

فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْۗـــَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿27﴾

२७. जब ये लोग उस (वादे) को क़रीब पा लेंगे, उस समय इन काफ़िरों के मुँह बिगड़ जायेंगे[3] और कह दिया जायेगा कि यही है जिसे तुम माँगा करते थे।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِيَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿28﴾

२८. (आप) कह दीजिए! कि ठीक है अगर मुझे और मेरे साथियों को अल्लाह (तआला) हलाक कर दे या हम पर रहम करे, (जो भी हो, यह तो बताओ) कि काफ़िरों को कष्टदायी (तक़लीफ़दह) अज़ाब से कौन बचायेगा?[4]

---

[1] जिन से तुम सुन सको, देख सको और अल्लाह की रचना (तख़लीक़) में ग़ौर-फ़िक्र कर उसका इल्म हासिल (प्राप्त) कर सको। तीन ताक़तों की चर्चा किया है, जिन से इंसान देखने, सुनने और समझने की चीजों का इल्म हासिल कर सकता है। यह एक तरह से दलील की तकमील (पूर्ति) भी है और अल्लाह के इन एहसानों पर शुक्रिया न करने की निन्दा (मज़म्मत) भी। इसी तरह आगे फ़रमाया : "तुम बहुत ही कम शुक्रिया अदा करते हो।"

[2] यानी मेरा काम तो उस नतीजा से डराना है जो मुझे झुठलाने की वजह तुम्हारा होगा, दूसरे लफ़्ज़ों में मेरा काम सावधान (आगाह) करना है, ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरें बताना नहीं, लेकिन यह कि जिस के बारे में अल्लाह ख़ुद मुझे बता दे।

[3] यानी ज़िल्लत, दहशत और डर से उन के चेहरों पर हवाईयाँ उड़ रही होंगी, जिस को दूसरी जगहों पर चेहरों के काले होने से व्यंजित (ताबीर) किया गया है। (आले-इमरान : १०६)

[4] मतलब यह है कि इन काफ़िरों को तो अल्लाह के अज़ाब से कोई बचाने वाला नहीं है, चाहे अल्लाह अपने रसूल और उस पर ईमान लाने वालों को मौत या क़त्ल द्वारा बरबाद कर दे या उन्हें मौक़ा दे दे, या यह मतलब है कि हम ईमान लाकर भी डर और उम्मीद के बीच हैं "तो तुम्हारे कुफ़्र के बावजूद तुम्हें अज़ाब से कौन बचायेगा"?

قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿29﴾

२९. (आप) कह दीजिए कि वही रहमान है, हम तो उस पर ईमान ला चुके और उसी पर हम ने भरोसा किया, तुम्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा कि साफ़ भटकावे में कौन है?

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ﴿30﴾

३०. (आप) कह दीजिए ठीक है, यह तो बताओ कि अगर तुम्हारे (पीने का) पानी धरती चूस जाये, तो कौन है, जो तुम्हारे लिए निथरा हुआ साफ़ पानी लाये।[1]

سُوْرَةُ الْقَلَمِ

सूरतुल क़लम-६८

सूर: क़लम मक्के में नाज़िल हुई, इस में बावन आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ﴿1﴾

१. नून[2] क़सम है क़लम की[3] और उस की जो कुछ कि वे (फ़रिश्ते) लिखते हैं।

---

[1] غَوْر (गौर) का मतलब है सूख जाना या इतनी गहराई में चला जाना कि वहाँ से पानी निकालना मुमकिन न हो, यानी अगर अल्लाह तआला पानी सुखा दे कि उसका अस्तित्व (वजूद) ही न रह जाये या इतनी गहराई में कर दे कि पानी निकालने की सब मशीनें नाकाम हो जायें तो बताओ फिर कौन है जो बहते हुए, साफ़, निथरा पानी सुलभ (मुहैय्या) करा दे? यानी कोई नहीं है, यह अल्लाह की दया (रहमत) है कि तुम्हारी नाफ़रमानी के बावजूद भी वह तुम्हें पानी से महरूम (वंचित) नहीं करता।

[2] ن उसी तरह के अलग अक्षरों (हुरूफ़) में से है, जैसे इस से पहले ص, ق और दूसरी सूरतों के शुरूआती अक्षर (हरफ़) गुज़र चुके हैं।

[3] क़लम की क़सम खाई जिसकी इसलिए एक अहमियत है कि इस के द्वारा (ज़रिये) बयान और तफ़सीर होती है। कुछ कहते हैं कि इस से मुराद वह ख़ास क़लम है, जिसे अल्लाह ने सब से पहले पैदा किया और उसे तक़दीर लिखने का हुक्म दिया, इसलिए उस ने आख़िर तक सभी होने वाली चीज़ों को लिख दिया। (तिर्मिज़ी, तफ़सीर सूरह नून वल क़लम और अलबानी ने इसे सहीह कहा है)

مَآ اَنۡتَ بِنِعۡمَةِ رَبِّكَ بِمَجۡنُوۡنٍ ﴿2﴾

२. आप अपने रब की कृपा (नेमत) से पागल नहीं हैं।[1]

وَاِنَّ لَكَ لَاَجۡرًا غَيۡرَ مَمۡنُوۡنٍ ﴿3﴾

३. और बेशक आप के लिए न ख़त्म होने वाला बदला है।[2]

وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيۡمٍ ﴿4﴾

४. और बेशक आप बहुत (अच्छे) स्वभाव (अख़लाक़) पर हैं।[3]

فَسَتُبۡصِرُ وَيُبۡصِرُوۡنَ ﴿5﴾

५. तो अब आप भी देख लेंगे और यह भी देख लेंगे।

بِاَيِّٮكُمُ الۡمَفۡتُوۡنُ ﴿6﴾

६. कि तुम में से फ़ित्ना में पड़ा कौन है।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعۡلَمُ بِمَنۡ ضَلَّ عَنۡ سَبِيۡلِهٖ ۖ وَهُوَ اَعۡلَمُ بِالۡمُهۡتَدِيۡنَ ﴿7﴾

७. बेशक तेरा रब अपनी राह से भटकने वालों को अच्छी तरह जानता है, और वह हिदायत पाये को भी अच्छी तरह जानता है।

فَلَا تُطِعِ الۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿8﴾

८. तो आप झुठलाने वालों की (बात) क़ुबूल न करें।

وَدُّوۡا لَوۡ تُدۡهِنُ فَيُدۡهِنُوۡنَ ﴿9﴾

९. वे तो चाहते हैं कि आप तनिक ढीले हों तो ये भी ढीले पड़ जायें।[4]

---

[1] यह क़सम का जवाब है, जिस में काफ़िरों के क़ौल का खण्डन (तरदीद) है, वह आप को दीवाना कहते थे।

[2] नबूवत (दूतत्व) के फ़रायेज को पूरा करने के लिए जो भी दुख आप ने सहन किये और दुश्मनों के ताने आप ने सुने हैं उस पर अल्लाह की तरफ़ से कभी न ख़त्म होने वाला बदला आप के लिए है, مَنّ का मतलब काटना है।

[3] خُلُقٍ عَظِيمٍ से मुराद दीने इस्लाम या पाक क़ुरआन है, मतलब यह है कि तू उस तरीक़ा पर है जिसका हुक्म तुझे अल्लाह ने क़ुरआन में या दीने इस्लाम में दिया है, या इस से मुराद वह सभ्यता, शिष्टाचार (आदाब), नर्मी, शफ़क़त, अमानत, सच्चाई, संजीदगी, श्रेष्ठता (फ़ज़ीलत) और दूसरे अख़लाक़ी सिफ़ात हैं, जिन में आप ﷺ नबी होने से पहले फ़ज़ीलत रखते थे और नबी होने के बाद भी उन में ज़्यादा ऊँचाई और फैलाव हुआ। इसीलिए जब आयेशा रज़ि अल्लाहु अन्हा से आप के अख़लाक़ के बारे में सवाल किया गया तो फ़रमाया: «كَانَ خُلُقُهُ القرآنَ» (मुस्लिम, किताबुल मुसाफ़िरीन, बाबु जामेए सलातिल लैले व मन नाम अन्हु औ मरेज़) हज़रत आयेशा का जवाब ख़ुल्के अज़ीम «خُلُقٍ عَظِيمٍ» के मज़कूरा दोनों मायनों को घेरे हुए है।

[4] यानी वह तो चाहते हैं कि तू उन के पूज्यों के बारे में नर्म तरीक़ा अपनाये, लेकिन झूठ के साथ नर्म तरीक़ा का नतीजा यह होगा कि बातिल के पुजारी अपनी बातिल की पूजा छोड़ने में ढीले

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِينٍ ﴿10﴾

१०. और आप किसी ऐसे इंसान का भी कहना न मानें जो ज़्यादा क़समें खाने वाला हीन (ज़लील) हो।

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِيمٍ ﴿11﴾

११. कमीना, ऐब निकालने वाला और चुगली करने वाला हो।

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيمٍ ﴿12﴾

१२. भलाई से रोकने वाला, हद से बढ़ जाने वाला पापी हो।

عُتُلٍّ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيمٍ ﴿13﴾

१३. घमंडी फिर साथ ही कुवंश (बेनसब) हो।

اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِينَ ﴿14﴾

१४. (उसकी सरकशी) केवल इसलिए है कि वह धनवान और पुत्रों वाला है।

اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيرُ الْاَوَّلِينَ ﴿15﴾

१५. जब उस के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो यह कह देता है कि ये तो पहले के लोगों की कथायें (क़िस्से) हैं।

سَنَسِمُهُ عَلَى الْخُرْطُومِ ﴿16﴾

१६. हम भी उसकी सूँड (नाक) पर दाग देंगे।[1]

اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اِذْ اَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ﴿17﴾

१७. बेशक हम ने उनकी उसी तरह परीक्षा (इम्तेहान) ली,[2] जिस तरह हम ने बाग़ वालों की परीक्षा ली थी।[3] जबकि उन्होंने क़सम खायी

हो जायेंगे, इसलिए सच के बारे में सुस्ती, धर्म के प्रचार (तबलीग़) के लिए और नबूवत (दूतत्व) के काम के लिए बहुत नुक़सान दायक है।

[1] कुछ के नजदीक इस का तआल्लुक़ दुनिया से है, कहा जाता है कि बद्र की लड़ाई में उन काफ़िरों की नाकों को तलवारों का निशाना बनाया गया। कुछ कहते हैं कि यह क़यामत के दिन नरकवासियों का निशान होगा कि उनकी नाकों को दाग दिया जायेगा, या इसका मतलब चेहरों की कालिमा (स्याही) है, जैसाकि काफ़िरों के चेहरे उस दिन काले होंगे। कुछ कहते हैं कि काफ़िरों का यह नतीजा लोक-परलोक (दुनिया-आख़िरत) दोनों जगह मुमकिन है।

[2] मतलब मक्कावासी हैं, उन्हें माल और औलाद दिया ताकि वह अल्लाह का शुक्र करें, लेकिन उन्होंने नाशुक्री और घमण्ड का रास्ता अपनाया तो हम ने उन्हें भूख और सूखा के इम्तेहान में डाल दिया, जिस में वह नबी ﷺ के शाप (बद्दुआ) की वजह से कुछ दिन फंसे रहे।

[3] बाग़ वालों की कथा अरबों में मशहूर थी। यह बाग़ सन्आ (यमन) से दो फरसंग (छः मील) की दूरी पर था, उसका मालिक उसकी पैदावार में से कुछ हिस्सा ग़रीबों और फ़क़ीरों पर भी ख़र्च करता था जब उसकी औलाद उसकी वारिस बनी तो उन्होंने कहा कि हमारा ख़र्च ही कठिनाई से पूरा होता है तो हम उसकी आय (आमदनी) ग़रीबों और फ़क़ीरों को कैसे दें इसलिए अल्लाह

कि सुबह होते ही उस (बाग़) के फल तोड़ लेंगे।

وَلَا يَسْتَثْنُونَ ⑱

१८. और इंशा अल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) न कहा।

فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُونَ ⑲

१९. तो उस पर तेरे रब की तरफ़ से एक बला चारों तरफ़ से घूम गयी और वे सो ही रहे थे।

فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ⑳

२०. तो वह (बाग़) ऐसा हो गया जैसे कटी हुई खेती।[1]

فَتَنَادَوْا مُصْبِحِينَ ㉑

२१. अब सुबह होते ही उन्होंने एक-दूसरे को आवाज़ें दीं।

أَنِ اغْدُوا عَلَىٰ حَرْثِكُمْ إِن كُنتُمْ صَارِمِينَ ㉒

२२. कि अगर तुम्हें फल तोड़ना है तो अपनी खेती पर सुबह ही चल पड़ो।

فَانطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَافَتُونَ ㉓

२३. फिर ये सब चुपके-चुपके बातें करते हुए चले।

أَن لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُم مِّسْكِينٌ ㉔

२४. कि आज के दिन कोई ग़रीब तुम्हारे पास न आये।

وَغَدَوْا عَلَىٰ حَرْدٍ قَادِرِينَ ㉕

२५. और जल्दी-जल्दी सुबह ही पहुँच गये (समझ रहे थे) कि हम क़ाबू पा गये।

فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَضَالُّونَ ㉖

२६. फिर जब उन्होंने बाग़ देखा तो कहने लगे कि बेशक हम रास्ता भूल गये।

بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ㉗

२७. नहीं-नहीं, बल्कि हम महरूम (वंचित) कर दिये गये।

قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ㉘

२८. उन सब में जो अच्छा था उस ने कहा कि मैं तुम सब से न कहता था कि तुम (अल्लाह की) तस्बीह क्यों नहीं करते?[2]

ने उस बाग़ ही को तबाह कर दिया। कहते हैं कि यह घटना (वाक़ेआ) हज़रत ईसा ﷺ के आकाश पर उठाये जाने के कुछ समय बाद ही हुई। (फ़तहुल क़दीर) यह सभी बयान तफ़सीर वाली रिवायतों का है।

[1] यानी जैसे खेती कटने के बाद सूख जाती है, उसी तरह पूरा बाग़ उजड़ गया। कुछ ने अनुवाद (तर्जुमा) किया है, 'काली रात की तरह हो गया' यानी जलकर।

[2] कुछ ने यहाँ तस्बीह का मायने "इन्शा अल्लाह" कहना लिया है।

२९. (तो) सब कहने लगे कि हमारा रब पाक है, बेशक हम ही ज़ालिम थे ।[1]	قَالُوا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ (29)
३०. फिर वे एक-दूसरे की तरफ़ मुंह करके बुरा-भला कहने लगे ।	فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ (30)
३१. कहने लगे हाय अफ़सोस! बेशक हम सरकश थे ।	قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ (31)
३२. क्या विचित्र (अजब) है कि हमारा रब हमें इस से अच्छा बदला दे दे, बेशक हम अब अपने रब से ही उम्मीद रखते हैं ।	عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ (32)
३३. इसी तरह अज़ाब आता है, और आख़िरत का अज़ाब बहुत बड़ा है। काश! उन्हें अक़्ल होती ।	كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ (33)
३४. बेशक परहेज़गारों के लिए उन के रब के पास उपहारों (नेमतों) वाली जन्नतें हैं ।	اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ (34)
३५. क्या हम मुसलमानों को मुजरिमों के बराबर कर देंगे ।	اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ (35)
३६. तुम्हें क्या हो गया, कैसे फ़ैसले कर रहे हो?	مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ (36)
३७. क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिस में तुम पढ़ते हो?	اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ (37)
३८. कि उस में तुम्हारी मनमानी बातें हों?	اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ (38)
३९. या हम से तुम ने कुछ ऐसी क़समें ली हैं जो क़यामत (प्रलय के दिन) तक बाक़ी रहें कि तुम्हारे लिए वह सब है, जो तुम अपनी तरफ़ से	اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُوْنَ (39)

[1] यानी अब उन्हें मालूम हुआ कि हम ने अपने बाप के तरीक़े के उल्टा काम करके ग़लती की है, जिसकी सज़ा अल्लाह ने हम को दिया है। इस से यह भी मालूम हुआ कि पाप का इरादा और उस के लिए शुरूआती काम भी पाप ही के तरह गुनाह है जिस पर पकड़ हो सकती है, केवल वह इरादा माफ़ है जो दिल की सीमा (हद) तक रहता है ।

निर्धारित (मुक़र्रर) कर लो?

سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ⁽⁴⁰⁾

४०. उन से पूछो कि उन में से कौन इस बात का ज़िम्मेदार (और दावेदार) है।

اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ۚ فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ⁽⁴¹⁾

४१. क्या उन के कुछ साझीदार हैं? तो चाहिए कि अपने-अपने साझीदारों को ले आयें अगर ये सच्चे हैं।

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ⁽⁴²⁾

४२. जिस दिन पिंडली खोल दी जायेगी और सज्दा करने के लिए बुलाये जायेंगे तो (सज्दा) न कर सकेंगे।[1]

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۗ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ⁽⁴³⁾

४३. उन की आँखें नीची होंगी और उन पर ज़िल्लत (और रुसवाई) छा रही होगी, हालांकि ये सज्दे के लिए (उस समय भी) बुलाये जाते थे जब भले-चंगे थे।

فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ۗ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ⁽⁴⁴⁾

४४. तो मुझे और इस बात के झुठलाने वाले को छोड़ दे, हम उन्हें इस तरह धीरे-धीरे खींचेंगे कि उन्हें मालूम भी न होगा।[2]

---

[1] कुछ ने पिंडली खोलने का मायने क़यामत की कठिनाईयाँ और भयानकता ली है, लेकिन एक सहीह हदीस में इसकी व्याख्या (तफ़सीर) इस तरह बयान हुई है कि क़यामत के दिन अल्लाह अपनी पिंडली खोलेगा (जैसे उसकी शान के लायक़ है) तो हर मोमिन मर्द और औरत उस के आगे सज्दे में गिर जायेंगे। हाँ, वह लोग बाक़ी रह जायेंगे जो दिखावे और नाम के लिए सज्दे किया करते थे, वह सज्दा करना चाहेंगे तो उनकी रीढ़ की हड्डी तख़्ते की तरह बन जायेगी जिस की वजह से उनका झुकना नामुमकिन हो जायेगा। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरह नून वल क़लम) अल्लाह यह पिंडली कैसे खोलेगा और यह कैसी होगी? यह हम न जान सकते हैं न बयान कर सकते हैं, इसलिए जिस तरह किसी उपमा (तश्बीह) के बिना हम उसके कान, आँख और हाथ वग़ैरह पर यक़ीन रखते हैं, ऐसे ही पिंडली की बात भी क़ुरआन और हदीस में है, जिस पर बिना तश्बीह के यक़ीन रखना ज़रूरी है। यही सलफ़ और मुहद्देसीन (हदीस के आलिमों) की राय है।

[2] यह उसी ढील देने का बयान है जिसे क़ुरआन में कई जगहों पर बयान किया गया है और हदीस में भी साफ़ किया गया है कि नाफ़रमानी के बावजूद माल और साधन का ज़्यादा होना अल्लाह की दया (रहमत) नहीं है, उस के मौक़ा देने के क़ानून का नतीजा है, फिर जब वह पकड़ने पर आता है तो कोई बचाने वाला नहीं होता।

४५. और मैं उन्हें ढील दूँगा, बेशक मेरी योजना (तदबीर) बड़ी मज़बूत है।

وَأُمْلِي لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ﴿45﴾

४६. क्या तू उन से कोई पारिश्रमिक (उजरत) चाहता है, जिस के भार से ये दबे जाते हों।

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ﴿46﴾

४७. या क्या उनके पास परोक्ष (ग़ैब) का इल्म है जिसे वे लिखते हों।

أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿47﴾

४८. तो तू अपने रब के हुक्म का सब्र से (इंतेज़ार कर) और मछली वाले की तरह न हो जा,[1] जबकि उस ने दुख की हालत (अवस्था) में पुकारा।[2]

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُن كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ﴿48﴾

४९. अगर उसे उस के रब की नेमत (कृपा) न पा लेती तो बेशक वह बुरी हालत में ऊसर धरती पर डाल दिया जाता।

لَّوْلَا أَن تَدَارَكَهُ نِعْمَةٌ مِّن رَّبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ﴿49﴾

५०. तो उसे उस के रब ने फिर निर्वाचित किया[3] और उसको सदाचारियों (सालेहीनों) में कर दिया।[4]

فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿50﴾

---

[1] जिन्होंने अपनी जाति के झुठलाने के रवय्या को देखते हुए उतावलेपन से काम लिया और अल्लाह के फ़ैसले के बिना ही अपने-आप अपनी जाति को छोड़कर निकल गये।

[2] जिस के परिणामस्वरूप (नतीजतन) उन्हें मछली के पेट में जबकि वह शोक (ग़म) और चिन्ता से भरे हुए थे, अपने रब को सहायता (मदद) के लिए पुकारना पड़ा। जैसाकि बयान पहले गुज़र चुका है।

[3] इसका मतलब यह है कि उन्हें अच्छा और स्वस्थ (सेहतमंद) करने के बाद फिर रिसालत से सम्मानित (सरफ़राज़) करके उन्हें अपनी जाति (क़ौम) की तरफ़ भेजा गया, जैसा कि सूरह साफ़्फ़ात १४६ से भी स्पष्ट (वाज़ेह) है।

[4] इसलिए रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि कोई यह न कहे कि मैं यूनुस पुत्र मत्ता से बेहतर हूँ। (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाएल बाबुन फ़ी ज़िक्रे यूनुस ...) और ख़ास देखिये सूरः बक़रः की आयत न॰ २५३ की तफ़सीर।

وَإِنْ يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ (51)

५१. और क़रीब है कि (ये) काफ़िर अपनी (तेज़) निगाह से आप को फिसला दें,[1] जब कभी क़ुरआन सुनते हैं और कह देते हैं कि यह तो यक़ीनी तौर से दीवाना है।

وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ (52)

५२. और हक़ीक़त में यह (क़ुरआन) तो सारी दुनिया वालों के लिए पूरी शिक्षा ही है।[2]

سُورَةُ الْحَاقَّةِ

सूरतुल हाक़्क़:-६९

सूर: हाक़्क़: मक्का में नाज़िल हुई, इस में बावन आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

الْحَاقَّةُ (1)

१. साबित (सिद्ध) होने वाली।[3]

مَا الْحَاقَّةُ (2)

२. क्या है साबित (सिद्ध) होने वाली।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ (3)

३. और तुझे क्या पता है कि वह साबित होने वाली क्या है?

---

[1] यानी अगर तुझे अल्लाह की मदद और सुरक्षा न मिलती तो इन काफ़िरों की हसद (ईर्ष्या) वाली निगाहों से तू बुरी नज़र का शिकार हो जाता, यानी उनकी नज़र तुझे लग जाती। इमाम इब्ने कसीर ने इसका यही मतलब बयान किया है, फिर लिखते हैं कि यह इस बात का सुबूत है कि नज़र का लग जाना और अल्लाह की इजाज़त से उसका दूसरों पर प्रभावकारी (असरअंदाज़) होना सच है। जैसाकि कई हदीसों से भी साबित है और हदीसों में उस से बचने के लिए दुआओं का बयान भी है, और यह भी कहा गया है कि तुम्हें कोई चीज़ अच्छी लगे तो ماشاء الله (माशा अल्लाह) या بارك الله (बारकल्लाह) कहा करो ताकि उसे नज़र न लगे। ऐसे ही किसी को नज़र लग जाये तो फ़रमाया कि उसे स्नान (ग़ुस्ल) करा कर उसका पानी उस पर डाला जाये जिसको उसकी नज़र लगी है। (तफ़सील के लिये देखिए तफ़सीर इब्ने कसीर और हदीस की किताबें) कुछ ने इसका मायने यह लिया है कि यह तुझे धर्म का प्रचार (तब्लीग़) करने से फेर देते।

[2] जब सच यह है कि यह क़ुरआन जिन्नों और इंसानों की हिदायत और निर्देश (रहनुमाई) के लिए आया है तो फिर इस को लाने और बयान करने वाला उन्मत्त (दीवाना) कैसे हो सकता है?

[3] यह क़यामत के नामों में से एक नाम है। इस में अल्लाह का हुक्म साबित होगा और यह ख़ुद भी होने वाला है, इसलिए इसे अलहाक़्क़: से व्यंजित (ताबीर) किया।

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ﴿4﴾

४. उस खड़का देने वाली को समूदियों और आदियों ने झुठला दिया था।

فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ﴿5﴾

५. (जिसके नतीजे में) समूद तो बड़ी तेज़ (और भयानक ऊँची) ध्वनि (चीख़) से हलाक कर दिये गये।[1]

وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿6﴾

६. और आद बड़ी तेज़ गति की पाले वाली आँधी से बरबाद कर दिये गये।[2]

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ﴿7﴾

७. जिसे उन पर लगातार सात रात और आठ दिन तक (अल्लाह ने) लगाये रखा[3] तो तुम देखते कि ये लोग धरती पर इस तरह पछाड़े गये हैं जैसे खजूर के खोखले तने हों।[4]

فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْ بَاقِيَةٍ ﴿8﴾

८. तो क्या उन में से कोई भी तुझे बाक़ी दिखायी दे रहा है ?

وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ﴿9﴾

९. फ़िरऔन और उस से पहले के लोग और जिनकी बस्तियाँ उलट दी गयीं, उन्होंने भी ग़लतियाँ (पाप) कीं।

فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ﴿10﴾

१०. और अपने रब के रसूल की नाफ़रमानी की, (आख़िर में) अल्लाह ने उन्हें (भी) पकड़ में ले लिया।

اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِى الْجَارِيَةِ ﴿11﴾

११. जब पानी में बाढ़ आ गयी तो उस समय हम ने तुम्हें नाव पर चढ़ा लिया।

---

[1] طَاغِيَة ऐसी चीख़ जो सीमा पार कर जाये, यानी बड़ी भयानक और ऊँची चीख़ से समूद के समुदाय को विनष्ट (हलाक) किया गया, जैसाकि पहले कई जगहों पर गुज़रा।

[2] صَرْصَر (सरसर) पाले की हवा, عَاتِيَة (आतियह) सरकश, किसी के वश में न आने वाली, यानी बड़ी तेज़ और प्रचंड, आँधी के ज़रिये नबी हूद ﷺ की क़ौम आद को बरबाद किया गया।

[3] حُسُوْم (हसूम) का मतलब काटना और अलग-अलग कर देना है और कुछ ने حُسُوْمًا का मतलब निरन्तर (मुसल्सल) किया है।

[4] इस से उन के शारीरिक (जिस्मानी) लम्बाई की तरफ़ भी इशारा है خَاوِيَة (ख़ावेयह) । खोखले, बेजान शरीर (जिस्म) को खोखले तने से मिसाल दी है।

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَا أُذُنٌ وَاعِيَةٌ ﴿12﴾

१२. ताकि उसे तुम्हारे लिये नसीहत (और यादगार) बना दें और (ताकि) याद रखने वाले कान उसे याद रखें।

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ﴿13﴾

१३. तो जब नरसिंघा (सूर) में एक फूंक फूंकी जायेगी।

وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ﴿14﴾

१४. और धरती तथा पहाड़ उठा लिये जायेंगे और एक ही चोट में कण-कण (ज़र्रा-ज़र्रा) बना दिये जायेंगे।

فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿15﴾

१५. उस दिन हो पड़ने वाली घटना (क़यामत) हो पड़ेगी।

وَانشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ﴿16﴾

१६. और आसमान फट जायेगा तो उस दिन बड़ा कमज़ोर हो जायेगा।

وَالْمَلَكُ عَلَىٰ أَرْجَائِهَا ۚ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَانِيَةٌ ﴿17﴾

१७. और उसके किनारों पर फ़रिश्ते होंगे[1] और तेरे रब का अर्श (आसन) उस दिन आठ फ़रिश्ते अपने ऊपर उठाये हुए होंगे।[2]

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنكُمْ خَافِيَةٌ ﴿18﴾

१८. उस दिन तुम सब सामने पेश किये जाओगे, तुम्हारा कोई राज़ छिपा न रहेगा।

فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَيَقُولُ هَاؤُمُ اقْرَءُوا كِتَابِيَهْ ﴿19﴾

१९. तो जिस का कर्मपत्र (आमालनामा) उस के दाहिने हाथ में दिया जायेगा तो वह कहने लगेगा कि लो मेरा कर्मपत्र पढ़ो।

[1] यानी आसमान तो टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे फिर आसमानी सृष्टि (मख़लूक़) फ़रिश्ते कहाँ रहेंगे? फ़रमाया : वह आकाशों के किनारों पर होंगे। इसका एक मतलब तो यह हो सकता है कि फ़रिश्ते आकाश के फटने के पहले अल्लाह के हुक्म से धरती पर आ जायेंगे तो मानो वे धरती के किनारे पर होंगे, या यह मतलब हो सकता है कि आकाश टूट-फूटकर कई टुकड़ों में होगा तो उन टुकड़ों पर जो धरती के किनारों में और अपनी जगह स्थित (क़ायम) होंगे उन पर होंगे। (फ़तहुल क़दीर)

[2] यानी इन ख़ास फ़रिश्तों ने अल्लाह के अर्श (आसन) को अपने सिरों पर उठाया होगा, यह भी मुमकिन है कि इस अर्श से मुराद वह अर्श हो जो फ़ैसले के लिए धरती पर रखा जायेगा जिस पर अल्लाह का अवतरण (नुज़ूल) होगा। (इब्ने कसीर)

إِنِّي ظَنَنتُ أَنِّي مُلَٰقٍ حِسَابِيَهْ ﴿20﴾

२०. मुझे तो पूरा यक़ीन था कि मैं अपना हिसाब पाने वाला हूँ।

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿21﴾

२१. तो वह एक सुखद (ख़ुशहाल) जीवन में होगा।

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿22﴾

२२. ऊँचे (और ख़ूबसूरत) जन्नत में।[1]

قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ﴿23﴾

२३. जिस के फल झुके पड़े होंगे।

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿24﴾

२४. (उन से कहा जायेगा) कि मज़े से खाओ पियो, अपने उन कर्मों (अमल) के बदले जो तुम ने पिछले ज़माने में किये।

وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَٰبَهُۥ بِشِمَالِهِۦ فَيَقُولُ يَٰلَيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَٰبِيَهْ ﴿25﴾

२५. लेकिन जिसे उस का कर्मपत्र (आमालनामा) बायें हाथ में दिया जायेगा, वह तो कहेगा कि हाय मुझे मेरा कर्मपत्र दिया ही न जाता।

وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ﴿26﴾

२६. और मैं जानता ही नहीं कि हिसाब क्या है।

يَٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ﴿27﴾

२७. काश! मौत (मेरा) काम ही ख़त्म कर देती।

مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَالِيَهْ ﴿28﴾

२८. मेरे धन ने भी मुझे कोई फ़ायेदा (लाभ) न दिया।

هَلَكَ عَنِّي سُلْطَٰنِيَهْ ﴿29﴾

२९. मेरा राज्य भी मुझ से जाता रहा।

خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ﴿30﴾

३०. (हुक्म होगा) उसे पकड़ लो फिर उसे तौक़ पहना दो।

ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ ﴿31﴾

३१. फिर उसे नरक (जहन्नम) में डाल दो।

---

[1] स्वर्ग (जन्नत) में कई दर्जे होंगे, हर दर्जे के बीच बड़ी दूरी होगी, जैसे मुजाहिदीन के बारे में नबी ﷺ ने फ़रमाया : "स्वर्ग (जन्नत) में सौ दर्जे हैं जो अल्लाह ने मुजाहिदीन के लिए तैयार किये हैं, दो दर्जे के बीच आकाश और धरती जितनी दूरी होगी।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल इमार:, सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद)

ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ﴿32﴾

३२. फिर उसे ऐसी ज़ंजीर में जिस की नाप सत्तर हाथ की है, जकड़ दो ।[1]

إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ﴿33﴾

३३. बेशक यह अल्लाह महान पर ईमान न रखता था ।

وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ﴿34﴾

३४. और ग़रीब को खिलाने पर नहीं उभरता था ।[2]

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هَاهُنَا حَمِيمٌ ﴿35﴾

३५. तो आज यहाँ उसका न कोई दोस्त है,

وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ ﴿36﴾

३६. और न पीप के सिवाय उसका कोई खाना है ।

لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ﴿37﴾

३७. जिसे पापियों के सिवाय उसको कोई नही खायेगा ।[3]

فَلَا أُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُونَ ﴿38﴾

३८. तो मुझे क़सम है उन चीज़ों की जिन्हें तुम देखते हो ।

وَمَا لَا تُبْصِرُونَ ﴿39﴾

३९. और उन चीज़ों कि जिन्हें तुम नहीं देखते ।

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿40﴾

४०. कि बेशक यह (क़ुरआन) प्रतिष्ठित (बाइज़्ज़त) रसूल का क़ौल है ।[4]

---

[1] यह ذراع जिराअ (हाथ) किसका हाथ होगा और कितना होगा? इसकी तफ़सीर मुमकिन नहीं । फिर भी इस से इतना मालूम हुआ कि जंजीर की लम्बाई सत्तर हाथ होगी ।

[2] यानी इबादत और अनुपालन (इताअत) के ज़रिये अल्लाह का हक़ अदा न करता था न हक़ जो बंदों का बंदों पर है । मानो ईमानवालों में यह बात होती है कि वह अल्लाह के हक़ और बंदों के हक़ दोनों को पूरा करते हैं ।

[3] خاطئون से मुराद नरकवासी (जहन्नमी) हैं, जो कुफ्र और शिर्क की वजह से जहन्नम में दाख़िल होंगे, क्योंकि यही ऐसे पाप हैं जो नरक में सदा रहने की वजह हैं ।

[4] प्रतिष्ठित (बाइज़्ज़त) रसूल से मुराद मोहम्मद ﷺ हैं और क़ौल (कथन) से मुराद पढ़ना है, यानी सम्मानित (बाइज़्ज़त) रसूल का पढ़ना, या क़ौल से मुराद ऐसा क़ौल है जो यह बाइज़्ज़त रसूल अल्लाह की तरफ़ से तुम्हें पहुँचाता है, क्योंकि क़ुरआन रसूल या जिब्रील का क़ौल नहीं है बल्कि अल्लाह का क़ौल है जो उस ने फ़रिश्ते के द्वारा (ज़रिये) पैग़म्बर पर उतारा है, फिर पैग़म्बर उसे लोगों तक पहुँचाता है ।

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيلًا مَّا تُؤْمِنُونَ ﴿41﴾

४१. यह किसी शायर का क़ौल नहीं, (अफ़सोस) तुम बहुत कम यक़ीन रखते हो।

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ﴿42﴾

४२. और न किसी ज्योतिषी (काहिन) का क़ौल है, (अफ़सोस) तुम बहुत कम नसीहत हासिल कर रहे हो।

تَنزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿43﴾

४३. (यह तो) सारी दुनिया के रब का नाज़िल किया हुआ है।

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ ﴿44﴾

४४. और अगर यह हम पर कोई भी बात गढ़ लेता।[1]

لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ﴿45﴾

४५. तो ज़रूर हम उसका दाहिना हाथ पकड़ लेते,[2]

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ﴿46﴾

४६. फिर उस के दिल की नस काट लेते।[3]

فَمَا مِنكُم مِّنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ﴿47﴾

४७. फिर तुम में से कोई भी (मुझे) उस से रोकने वाला न होता।

وَإِنَّهُ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ﴿48﴾

४८. बेशक यह (क़ुरआन) परहेज़गारों के लिए शिक्षा (नसीहत) है।

وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنكُم مُّكَذِّبِينَ ﴿49﴾

४९. और हमें पूरा इल्म (ज्ञान) है कि तुम में से कुछ उस के झुठलाने वाले हैं।

---

[1] यानी अपनी तरफ़ से गढ़कर हम से संबन्धित (मंसूब) कर देता, या उस में कमी-बेशी कर देता तो तुरन्त हम उसकी पकड़ करते और उसे ढील न देते जैसाकि अगली आयतों में फ़रमाया।

[2] या दायें हाथ से उसकी पकड़ करते, क्योंकि दायें हाथ से पकड़ कड़ी होती है और अल्लाह के तो दोनों हाथ ही सीधे हैं, जैसाकि हदीस में है।

[3] ध्यान रहे कि यह सज़ा ख़ास कर नबी ﷺ के बारे में आई है जिसका मक़सद आप की सच्चाई दिखाना है, इस में यह नियम नहीं बताया गया है कि जो भी नबूवत का झूठा दावा करेगा तो नबूवत के झूठे दावेदार को हम तुरन्त सज़ा देंगे, इसलिए इस से किसी झूठे नबी कोसच्चा नहीं कहा जा सकता कि वह दुनिया में अल्लाह के अज़ाब से सुरक्षित (महफ़ूज़) रहा। घटनायें (वाक़ेआत) भी गवाह हैं कि कई लोगों ने नबूवत के झूठे दावे किये और अल्लाह ने उन्हें ढील दी और वह दुनियावी पकड़ से आम तौर से महफ़ूज़ ही रहे, इसलिए अगर इसे नियम मान लिया जाये तो फिर बहुत से नबूवत के झूठे दावेदारों को 'सच्चा नबी' मानना पड़ेगा।

وَ إِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ (50)

५०. बेशक (यह झुठलाना) काफ़िरों के लिए पछतावा है।

وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ (51)

५१. और बेशक यह यक़ीनी सच है।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ (52)

५२. तो तू अपने महिमावान (अज़ीम) रब की पवित्रता (तस्बीह) बयान कर।

سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ

सूरतुल मआरिज-७०

सूर: मआरिज मक्का में नाज़िल हुई, इस में चव्वालिस आयतें और दो रूकूअ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ (1)

१. एक माँग करने वाले ने उस अज़ाब की माँग की जो (वाक़े) होने वाला है।

لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ (2)

२. काफ़िरों पर जिसे कोई हटाने वाला नहीं।

مِّنَ اللّٰهِ ذِى الْمَعَارِجِ (3)

३. उस अल्लाह की तरफ़ से जो सीढ़ियों वाला है।

تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ (4)

४. जिस की तरफ़ फ़रिश्ते और रूह चढ़ते हैं[1] एक दिन में जिसकी अवधि (मुद्दत) पचास हज़ार साल की है।[2]

---

[1] रूह (आत्मा) से मतलब जिब्रील (फ़रिश्ता) है, उनकी प्रधानता (फ़ज़ीलत) की वजह से उनका अलग ख़ास तौर से बयान किया गया है, नहीं तो फ़रिश्तों में वह भी शामिल हैं, या रूह से मतलब इंसानी रूहें है जो मौत के बाद आसमान पर ले जाई जाती हैं, जैसाकि कुछ रिवायतों (हदीसों) में है।

[2] उस दिन के निर्धारण (तअय्युन) में बहुत मतभेद (इख़्तिलाफ़) है, एक कथन (क़ौल) यह है कि यह क़यामत के दिन की तादाद है, यानी काफ़िरों पर हिसाब का दिन पचास हज़ार साल की तरह भारी होगा, किन्तु मोमिन के लिए दुनिया में एक फ़र्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ पढ़ने से भी संक्षिप्त (मुख़्तसर) होगा। (मुसनद अहमद ३\७५) इमाम इब्ने कसीर ने इसी क़ौल को प्राथमिकता (तरजीह) दी है, क्योंकि हदीसों से भी इसे ताईद (समर्थन) मिली है। जैसाकि एक हदीस में ज़कात (देयदान) न चुकाने वाले को क़यामत के दिन जो अज़ाब दिया जायेगा उसकी

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ⑤

५. तो तू अच्छी तरह से सब्र कर।

اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ۙ⑥

६. बेशक ये उस (अजाब) को दूर समझ रहे हैं।

وَّنَرٰىهُ قَرِيْبًا ۭ⑦

७. और हम उसे क़रीब ही देखते हैं।

يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَاۗءُ كَالْمُهْلِ ۙ⑧

८. जिस दिन आसमान तेल की तलछट की तरह हो जायेगा।

وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۙ⑨

९. और पहाड़ रंगीन ऊन की तरह हो जायेंगे।

وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ⑩

१०. और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा।

يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ۭ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِيْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِىِٕذٍۢ بِبَنِيْهِ ۙ⑪

११. (अगरचे) एक-दूसरे को दिखा दिये जायेंगे, पापी उस दिन के अजाब के बदले (फ़िदये) में अपने पुत्रों को देना चाहेगा।

وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ۙ⑫

१२. अपनी पत्नी को और अपने भाई को।

وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُـــْٔوِيْهِ ۙ⑬

१३. और अपने परिवार को जो उसे पनाह देता था।

وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِ ۙ⑭

१४. और धरती के सभी लोगों को, ताकि यह उसे मुक्ति (नजात) दिला दे।

كَلَّا ۭ اِنَّهَا لَظٰى ۙ⑮

१५. (लेकिन) कभी यह न होगा, बेशक वह शोले वाली (आग) है।

نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ⑯

१६. जो (मुंह और सिर की) खाल खींच लेने वाली है।

चर्चा करते हुए रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :

«حَتّٰى يَحْكُمَ اللهُ بَيْنَ عِبَادِهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِيْنَ أَلْفَ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّوْنَ»

«यहाँ तक कि अल्लाह अपने बन्दों के बीच फ़ैसला कर देगा, ऐसे दिन में जिसकी मुद्दत तुम्हारी गिनती के अनुसार पचास हजार साल होगी।» (सहीह मुस्लिम, किताबुज जकात, बाबु इस्मे मानेइज जकात)

१७. वह हर उस इंसान को पुकारेगी जो पीछे हटता और मुँह मोड़ता है।

تَدْعُوا مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّىٰ ﴿17﴾

१८. और जमा करके संभाल रखता है।[1]

وَجَمَعَ فَأَوْعَىٰ ﴿18﴾

१९. बेशक इंसान बड़े कच्चे दिल वाला बनाया गया है।[2]

إِنَّ الْإِنسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ﴿19﴾

२०. जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है तो हड़बड़ा जाता है।

إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ﴿20﴾

२१. और जब सुख हासिल होता है तो कंजूसी करने लगता है।

وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ﴿21﴾

२२. लेकिन वह नमाज़ी।

إِلَّا الْمُصَلِّينَ ﴿22﴾

२३. जो अपनी नमाज़ पर पाबंदी रखने वाले हैं।[3]

الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ﴿23﴾

२४. और जिन के धन में मुक़र्रर हिस्सा है।

وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ﴿24﴾

२५. माँगने वालों का भी और सवाल करने से बचने वालों का भी।

لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ﴿25﴾

२६. और जो इंसाफ़ के दिन पर यक़ीन रखते हैं।

وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿26﴾

---

[1] यानी जो दुनिया में सच्चाई से पीठ फेरता और मुँह मोड़ता है और धन जमा करके ख़ज़ानों में सैंत-सैंत कर रखता था, उसे अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करता था न उस में से ज़कात (धर्मदान) निकालता था, अल्लाह तआला नरक को बोलने की ताक़त देगा और वह अपने मुँह से बोलेगी और ऐसे लोगों को पुकार कर कहेगी जिन के कर्मों के बदले नरक अनिवार्य (वाजिब) होगा।

[2] बड़ा लालची और बहुत रोने वाले को هَلُوعٌ (हलूअ) कहा जाता है, जिसे अनुवाद (तर्जुमा) में बड़े कच्चे दिल वाला कहा गया है, क्योंकि ऐसा इंसान ही कंजूस, लालची और बड़ा रोने चिल्लाने वाला होता है, आगे उसका गुण (सिफ़त) बताया गया है।

[3] मतलब हैं पूरे मोमिन एकेश्वरवादी (मुवह्हिद)। उन में उपर बयान की गई कमज़ोरी नहीं होती बल्कि इस के ख़िलाफ़ वह अच्छे गुणों (सिफ़त) के रूप होते हैं, रोज़ नमाज़ पढ़ने का मतलब है वह नमाज़ में सुस्ती नहीं करते, वह हर नमाज़ उस के समय पर बड़ी पाबंदी से पढ़ते हैं, कोई काम उन्हें नमाज़ से नहीं रोकता और कोई दुनियावी फ़ायेदा उन्हें नमाज़ से विमुख (ग़ाफ़िल) नहीं करता।

२७. और जो अपने रब के अज़ाब से डरते रहते हैं।

وَالَّذِينَ هُم مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ (27)

२८. बेशक उन के रब का अज़ाब बेख़ौफ़ होने की बात नहीं।

إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ (28)

२९. और जो लोग अपने गुप्तांगों (शर्मगाहों) की (हराम से) हिफ़ाज़त करते हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ (29)

३०. लेकिन उनकी पत्नियों और दासियों के बारे में जिन के वे मालिक हैं वे मलामत वाले (निन्दित) नहीं।[1]

إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ (30)

३१. अब जो कोई इस के सिवाय (रास्ता) ढूँढेगा, तो ऐसे लोग हद (सीमा) पार करने वाले होंगे।

فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ (31)

३२. और जो अपनी अमानतों का और अपने वादे और प्रतिज्ञा (अहद) का ध्यान रखते हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ (32)

३३. और जो अपनी गवाहियों पर सीधे (और अडिग) रहते हैं।

وَالَّذِينَ هُم بِشَهَادَاتِهِمْ قَائِمُونَ (33)

३४. और जो अपनी नमाज़ों की सुरक्षा (हिफ़ाज़त) करते हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ (34)

३५. यही लोग जन्नत में इज़्ज़त (और सम्मान) वाले होंगे।

أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَمُونَ (35)

३६. तो काफ़िरों को क्या हो गया है कि वे तेरी तरफ़ दौड़ते आते हैं।

فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا قِبَلَكَ مُهْطِعِينَ (36)

---

[1] यानी इंसान की ख़्वाहिश की तकमील (तृप्ति) के लिए अल्लाह ने दो हलाल रास्ते रखे हैं, एक पत्नी, और दूसरा दासी। आज के दौर में दासी का मामला इस्लाम की बतलाई नीति (तदबीर) के मुताबिक़ लगभग ख़त्म हो गया है, फिर भी क़ानूनी तौर से उसे इसलिए ख़त्म नहीं किया गया है कि भविष्य (मुस्तक़बिल) में यदि ऐसी हालत पैदा हो जाये तो इस से फ़ायेदा उठाया जा सकता है, जो भी हो ईमानवालों की एक विशेषता (फ़ज़ीलत) यह भी है कि ख़्वाहिश की तकमील को पूरा करने के लिए हराम रास्ता नहीं अपनाते।

عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِيْنَ ﴿37﴾

३७. दायें और बायें से गुट के गुट ।[1]

اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيْمٍ ﴿38﴾

३८. क्या उन में से हर एक की इच्छा यह है कि वे ऐशो-आराम वाले स्वर्ग में प्रवेश (दाख़िला) पा जायेंगे?

كَلَّا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿39﴾

३९. (ऐसा) कभी न होगा, हम ने उन्हें उस (चीज़) से पैदा किया है जिसे वे जानते हैं।

فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ﴿40﴾

४०. तो मुझे क़सम है पूर्वों और पश्चिमों[2] के रब की (कि) हम यक़ीनी तौर से क़ादिर हैं।

عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿41﴾

४१. इस पर कि उन के बदले में उन से अच्छे लोग ले आयें, और हम मजबूर नहीं हैं।

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿42﴾

४२. तो आप उन्हें झगड़ता खेलता छोड़ दें यहाँ तक कि ये अपने उस दिन से जा मिलें, जिस का उन से वादा किया जाता है।

يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ﴿43﴾

४३. जिस दिन क़ब्रों से ये दौड़ते हुए निकलेंगे, जैसेकि वह किसी थान (जगह) की तरफ़ तेज़ चाल से जा रहे हैं।

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿44﴾

४४. उन की आँखें झुकी हुई होंगी, उन पर अपमान (ज़िल्लत) छा रहा होगा, यह है वह दिन जिसका उन से वादा किया जाता था।

---

[1] यह नबी ﷺ के दौर के काफ़िरों की चर्चा है कि वह आप ﷺ की मजलिस (सभा) में दौड़े-दौड़े आते, लेकिन आप की बातें सुनकर अमल करने की जगह उनका मज़ाक करते और टोलियों में बँट जाते, और दावा यह करते कि अगर मुसलमान जन्नत में गये तो हम उन से पहले जन्नत में जायेंगे, अल्लाह ने आगामी आयत में उनके इस गुमान का खंडन (तरदीद) किया।

[2] हर दिन सूरज अलग-अलग जगह से निकलता है और अलग-अलग जगह में डूबता है। इस बिना पर पूरब भी बहुत हैं और पश्चिम भी उतने ही। विवरण (तफ़सील) के लिए सूरह साफ़्फ़ात ५ देखिये।

सूरतु नूह-७१

سُورَةُ نُوحٍ

सूर: नूह मक्का में नाज़िल हुई और इस में अटठाईस आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

إِنَّآ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِۦٓ أَنْ أَنذِرْ قَوْمَكَ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿1﴾

१. बेशक हम ने नूह (عليه السلام) को उन के समुदाय (क़ौम) की ओर भेजा[1] कि अपनी क़ौम को डरा दो (और आगाह कर दो) इस से पहले कि उन के पास कष्टदायी (सख़्त) अज़ाब आ जाये।

قَالَ يَٰقَوْمِ إِنِّى لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿2﴾

२. (नूह عليه السلام ने) कहा कि हे मेरे समुदाय (क़ौम) के लोगो! मैं तुम्हें स्पष्ट (वाज़ेह) रूप से डराने वाला हूं।

أَنِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ وَٱتَّقُوهُ وَأَطِيعُونِ ﴿3﴾

३. कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उसी से डरो और मेरा कहना मानो।[2]

يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ ٱللَّهِ إِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۖ لَوْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿4﴾

४. तो वह तुम्हारे पाप माफ़ कर देगा और तुम्हें एक मुक़र्रर वक़्त तक छोड़ देगा,[3] बेशक अल्लाह का वादा जब आ जाता है तो रुकता नहीं, काश! तुम्हें मालूम होता।

---

[1] हज़रत नूह महान ईशदूतों (रसूलों) में से है, सहीह मुस्लिम वग़ैरह की शफ़ाअत (अभिस्तावना) वाली हदीस में है कि यह पहले रसूल हैं, यह भी कहा जाता है कि उन्ही की क़ौम से शिर्क शुरू हुआ। अल्लाह तआला ने उन्हें अपनी जाति के मार्गदर्शन (हिदायत) के लिए भेजा।

[2] यानी मैं तुम्हें जिन बातों का हुक्म दूं, उस में मेरा अनुपालन (इताअत) करो, क्योंकि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल और उसका प्रतिनिधि (नुमाइन्दा) बनकर आया हूं।

[3] इसका मतलब यह है कि ईमान लाने की हालत में तुम्हारी मौत की अवधि (मुद्दत) जो मुक़र्रर है, उसे टालकर तुम्हें ज़्यादा उम्र देगा और वह अज़ाब तुम से दूर कर देगा जो ईमान न लाने की हालत में तुम्हारा नसीब था। इस आयत से दलील (तर्क) निकालते हुए कहा गया है कि आज्ञापालन (इताअत), सदाचार (नेकी) और रिश्तेदारों के साथ अच्छे सुलूक से हक़ीक़त में उम्र बढ़ती है। हदीस में भी है «صِلَةُ الرَّحِمِ تَزِيدُ فِي الْعُمُرِ» "रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक उम्र के बढ़ने की वजह है।" (इब्ने कसीर) कुछ कहते हैं टालने का मतलब बरकत है, ईमान से उम्र में बरकत होगी, ईमान नहीं लाओगे तो इस बरकत (शुभ) से वंचित (महरूम) रहोगे।

قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ﴿5﴾

५. (नूह ने) कहा कि हे मेरे रब! मैंने अपनी क़ौम को रात-दिन तेरी तरफ़ बुलाया है।

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَاءِي إِلَّا فِرَارًا ﴿6﴾

६. लेकिन मेरे बुलाने से ये लोग भागने में और बढ़ते ही गये।[1]

وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ﴿7﴾

७. और मैंने जब कभी उन्हें तेरे माफ़ कर देने के लिए बुलाया उन्होंने अपनी उँगलियाँ अपने अपने कानों में डाल लीं और अपने कपड़ों को ओढ़ लिया[2] और अड़ गये और बड़ा अहंकार (तकब्बुर) किया।

ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ﴿8﴾

८. फिर मैं ने उन्हें ऊँची आवाज़ से बुलाया।

ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ﴿9﴾

९. और बेशक मैंने उन से खुल कर भी कहा और चुपके-चुपके भी।

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ﴿10﴾

१०. और मैं ने कहा कि अपने रब से अपने गुनाहों की माफ़ी करवा लो। (और क्षमा माँगो) बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला है।

يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ﴿11﴾

११. वह तुम पर आकाश को ख़ूब वर्षा करता हुआ छोड़ देगा।[3]

---

[1] यानी मेरी पुकार की वजह से यह ईमान से और ज़्यादा दूर हो गये हैं, जब कोई समुदाय (क़ौम) गुमराही के आख़िरी कगार पर पहुँच जाये तो उसकी यही हालत होती है, उसे जितना अल्लाह की तरफ़ बुलाओ वह उतना ही दूर भागता है।

[2] ताकि मेरा मुँह न देख सकें या अपने सिरों पर कपड़े डाल लिये ताकि मेरी बात न सुन सकें। यह उनकी तरफ़ से कड़ी दुश्मनी का और नसीहत से नफ़रत का प्रदर्शन (इज़हार) है, कुछ कहते हैं कि अपने को कपड़ों से ढाँक लेने का मक़सद यह था कि पैग़म्बर (संदेष्टा) उनको पहचान न सके और उन्हें दावत क़ुबूल करने पर मजबूर न करे।

[3] कुछ विद्वानों (आलिमों) ने इसी आयत की वजह से इस्तिसक़ा (वर्षा के लिये) नमाज़ में सूरह नूह पढ़ने को अच्छा कहा है। रिवायत है कि हज़रत उमर ﷺ भी एक बार इस्तिसक़ा की नमाज़ के लिये मंच (मिम्बर) पर चढ़े तो केवल आयाते इस्तिग़फ़ार, (क्षमा-याचना वाली आयतें) पढ़ कर मिम्बर से उतर आये, और फ़रमाया कि मैंने वर्षा (बारिश) को वर्षा के उन रास्तों से माँगा है जो आकाशों में हैं, जिन से वर्षा धरती पर उतरती है। (इब्ने कसीर)

وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَل لَّكُمْ جَنَّٰتٍ وَيَجْعَل لَّكُمْ أَنْهَٰرًا ⑫

१२. और तुम्हें खूब माल और औलाद में बढ़ा देगा और तुम्हें बाग़ देगा और तुम्हारे लिए नहरें निकाल देगा।

مَّا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ⑬

१३. तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की बरतरी पर यक़ीन नहीं करते।

وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ⑭

१४. हालांकि उस ने तुम्हें कई तरह से पैदा किया है।

أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَٰوَٰتٍ طِبَاقًا ⑮

१५. क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह (तआला) ने किस तरह ऊपर तले सात आकाश पैदा कर दिये हैं।[1]

وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ⑯

१६. और उनमें चाँद को खूब जगमगाता बनाया है और सूरज को रौशन चिराग़ बनाया है।

وَاللَّهُ أَنۢبَتَكُم مِّنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ⑰

१७. और तुम को धरती से (एक ख़ास तरीक़े से) उगाया है[2] (और पैदा किया है)।

ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ⑱

१८. फिर तुम्हें उसी में लौटा ले जायेगा और (एक ख़ास तरीक़े से) फिर तुम्हें निकालेगा।

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا ⑲

१९. और तुम्हारे लिये धरती को अल्लाह (तआला) ने फ़र्श बनाया है।

لِّتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ⑳

२०. ताकि तुम उस के विस्तृत (कुशादा) रास्तों में चलो फिरो।[3]

---

[1] जो उस के सामर्थ्य (क़ुदरत) और कारीगरी के कमाल को ज़ाहिर करते और इस बात की तरफ़ इशारा करते हैं कि माबूद सिर्फ़ वही एक अल्लाह है।

[2] यानी तुम्हारे बाप आदम عليه السلام को जिन्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर उस में अल्लाह ने आत्मा (रूह) फूंकी, या अगर सभी मानव जाति को संबोधित (मुख़ातिब) समझा जाये तो मतलब यह होगा कि तुम जिस वीर्य (मनी) से पैदा होते हो वह उसी रिज़्क़ से बनता है जो धरती से मिलता है इस बिना पर सभी की पैदाइश इसी धरती से साबित होती है।

[3] سُبُل बहुवचन (जमा) है سَبِيل का और فِجَاج बहुवचन (जमा) है فَجّ (कुशादा रास्ता) का, यानी उस ने धरती पर बड़े-बड़े कुशादा रास्ता बना दिये हैं ताकि इंसान एक जगह से दूसरी जगह, एक नगर से दूसरे नगर और एक देश से दूसरे देश में जा सके, इसलिए यह रास्ता भी इंसान की कारोबारी और सामाजिक ज़रूरत है, जिस की व्यवस्था (तदबीर) करके अल्लाह ने इंसान पर एक बड़ा अनुग्रह (नेमत) किया है।

قَالَ نُوحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَن لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَدُهُ إِلَّا خَسَارًا ﴿21﴾

२१. नूह (ﷺ) ने कहा कि हे मेरे रब! उन लोगों ने मेरी नाफ़रमानी की और ऐसों का आज्ञापालन (इताअत) किया जिन के माल और औलाद ने उन को (बेशक) नुक़सान ही में बढ़ाया।

وَمَكَرُوا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿22﴾

२२. और उन लोगों ने बहुत बड़ा धोखा किया।[1]

وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا ﴿23﴾

२३. और उन्होंने कहा कि कभी अपने देवताओं को न छोड़ना और न वद्द, सुवाअ, यगूस, यऊक और नस्र को (छोड़ना)।[2]

وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۖ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ﴿24﴾

२४. और उन्होंने बहुत से लोगों को भटकाया, (हे रब!) तू उन ज़ालिमों के भटकावे को और बढ़ा दे।

---

[1] यह धोखा और छल क्या था? कुछ ने कहा कि उनका कुछ लोगों को नूह ﷺ के क़त्ल करने पर उभारना था, कुछ कहते हैं कि माल और औलाद की वजह से जिस स्वार्थ (नफ़्स) के धोखे में वह ग्रस्त (मुब्तिला) हुए, यहाँ तक कि उन में से कुछ ने कहा कि अगर यह सच पर न होते तो इन को यह सुख-सुविधायें (ऐशो-आराम) क्यों हासिल होतीं? कुछ के ख़्याल में उन के सरदारों का यह कहना था कि तुम अपने देवताओं की उपासना (इबादत) न छोड़ना और कुछ के ख़्याल में उनका कुफ़्र (इंकार) ही बड़ा धोखा था।

[2] यह नूह ﷺ की क़ौम के "पाँच सदाचारी (नेक) आदमी" थे जिनकी वह इबादत करते थे, और उन की इतनी शुहरत हुई कि अरब में भी उन की पूजा-अर्चना होती रही, जैसे 'वद्द' दूमतुल जनदल (जगह) में क़बीला कल्ब का, 'सुवाअ' समुद्र तट के क़बीला हुज़ैल का, 'यगूस' सबा के क़रीब जुर्फ़ नाम की जगह में मुराद और बनू ग़ुतैफ़ का। 'यऊक' हमदान क़बीले का और 'नस्र' हिम्यर जाति का क़बीला ज़ुल कलाअ का उपास्य (माबूद) रहा। (इब्ने कसीर, फ़तहुल क़दीर) यह पाँचों नूह की जाति के नेक लोगों के नाम थे, जब यह मर गये तो शैतान ने उन के श्रृद्धालुओं (अक़ीदतमंदों) से कहा कि उन के चित्र (फ़ोटो) बनाकर अपने घरों और दूकानों में रख लो ताकि वह याद रहें और उन का ध्यान कर के तुम भी नेक काम करते रहो, जब यह चित्र बनाकर रखने वाले मर गये तो उन के वंश को शैतान ने यह कहकर शिर्क में लिप्त (मुब्तिला) कर दिया कि तुम्हारे पूर्वज (बुज़ुर्ग) तो इनकी उपासना करते थे, जिन के चित्र तुम्हारे घरों में लटक रहे हैं, इसलिए उन्होंने उनकी पूजा शुरू कर दी। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरह नूह)

مِمَّا خَطِيٓـَٔـٰتِهِمْ أُغْرِقُوا۟ فَأُدْخِلُوا۟ نَارًا فَلَمْ يَجِدُوا۟ لَهُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ أَنصَارًا ﴿25﴾

२५. ये लोग अपने पापों की वजह से (पानी में) डुवो दिये गये और जहन्नम में पहुँचा दिये गये और अल्लाह के सिवाय उन्होंने अपना कोई मदद करने वाला न पाया।

وَقَالَ نُوحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى ٱلْأَرْضِ مِنَ ٱلْكَـٰفِرِينَ دَيَّارًا ﴿26﴾

२६. और नूह (ﷺ) ने कहा कि हे मेरे रब! तू धरती पर किसी काफ़िर को रहने-सहने वाला न छोड़ ![1]

إِنَّكَ إِن تَذَرْهُمْ يُضِلُّوا۟ عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوٓا۟ إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿27﴾

२७. अगर तू उन्हें छोड़ देगा तो बेशक ये तेरे दूसरे बंदों को भी भटका देंगे और ये कुकर्म (बुरे काम) करने वाले काफ़िरों ही को जन्म देंगे।

رَّبِّ ٱغْفِرْ لِى وَلِوَٰلِدَىَّ وَلِمَن دَخَلَ بَيْتِىَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَٱلْمُؤْمِنَـٰتِ ۖ وَلَا تَزِدِ ٱلظَّـٰلِمِينَ إِلَّا تَبَارًۢا ﴿28﴾

२८. हे मेरे रब! तू मुझे और मेरे माता-पिता और जो भी ईमान लाकर मेरे घर में आये और सभी ईमानवाले मर्दों और सभी ईमानवाली औरतों को माफ़ कर दे और काफ़िरों को बर्बादी के अलावा दूसरी किसी बात में न बढ़ा।

सूरतुल जिन्न-७२

سُورَةُ الْجِنِّ

सूर: जिन्न मक्का में नाज़िल हुई और इस में अट्ठाईस आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَـٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

قُلْ أُوحِىَ إِلَىَّ أَنَّهُ ٱسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ ٱلْجِنِّ فَقَالُوٓا۟ إِنَّا سَمِعْنَا قُرْءَانًا عَجَبًا ﴿1﴾

१. (हे मोहम्मद ﷺ) आप कह दें कि मुझे वह्यी (प्रकाशना) की गयी है कि जिन्नों के एक गिरोह ने (क़ुरआन) सुना,[2] और कहा कि हम ने अजीब क़ुरआन सुना है।

---

[1] यह शाप (बद्दुआ) उस वक़्त दिया जब ईशदूत (नबी) नूह ﷺ उन के ईमान लाने से बहुत मायूस हो गये और अल्लाह ने भी ख़बर कर दिया कि अब उन में से कोई ईमान नहीं लायेगा।

[2] यह घटना (वाक़ेआ) सूरह अहक़ाफ़ २९ में गुज़र चुकी है कि नबी ﷺ वादिये नख़ला में सहाबा केराम को फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे कि कुछ जिन्नों का वहाँ से गुज़र हुआ तो उन्होंने आप का क़ुरआन सुना, जिस से वे प्रभावित (मुतास्सिर) हुए। यहाँ बतलाया जा रहा है कि उस समय जिन्नों के क़ुरआन सुनने का ज्ञान (इल्म) आप को नहीं हुआ, बल्कि वह्यी के ज़रिये आप को इस से सूचित (बाख़बर) किया गया।

يَّهۡدِيۡۤ اِلَى الرُّشۡدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنۡ نُّشۡرِكَ بِرَبِّنَاۤ اَحَدًا ۙ﴿2﴾

२. जो सच्चे रास्ते की तरफ मार्गदर्शन (हिदायत) देता है हम तो उस पर ईमान ला चुके, (अब) हम कभी अपने रब का किसी दूसरे को साझीदार न बनायेंगे।

وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۙ﴿3﴾

३. और बेशक हमारे रब की शान बुलन्द है, न उस ने किसी को (अपनी) पत्नी बनाया है और न औलाद।

وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوۡلُ سَفِيۡهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۙ﴿4﴾

४. और बेशक हम में का बेवकूफ़ अल्लाह के बारे में झूठी बातें कहता था।[1]

وَّاَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنۡ لَّنۡ تَقُوۡلَ الۡاِنۡسُ وَالۡجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۙ﴿5﴾

५. और हम तो यही समझते रहे कि नामुमकिन है कि इंसान और जिन्नात अल्लाह पर झूठी बातें लगायें।[2]

وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الۡاِنۡسِ يَعُوۡذُوۡنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الۡجِنِّ فَزَادُوۡهُمۡ رَهَقًا ۙ﴿6﴾

६. हक़ीक़त यह है कि कुछ इंसान कुछ जिन्नों से पनाह माँगते थे,[3] जिस से जिन्नात अपनी उद्दण्डता (सरकशी) में और बढ़ गये।

وَّاَنَّهُمۡ ظَنُّوۡا كَمَا ظَنَنۡتُمۡ اَنۡ لَّنۡ يَّبۡعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۙ﴿7﴾

७. और (इंसानों) ने भी जिन्नों की तरह ये समझ लिया था कि अल्लाह कभी किसी को नहीं भेजेगा। (या किसी को दोबारा ज़िन्दा न करेगा)

---

[1] سَفِيۡهُنَا (हमारे बेवकूफ़) से मतलब कुछ ने शैतान लिया है, कुछ ने उनके साथी जिन्न और कुछ ने आम तौर से हर वह इंसान लिया है, जो यह ग़लत भ्रम (गुमान) रखता है कि अल्लाह की औलाद है। شَطَطًا के कई मायने किये गये हैं, ज़ुल्म, झूठ, बातिल और कुफ़्र में बढ़ा हुआ वग़ैरह। मक़सद दरमियानी रास्ता से दूरी और सीमा (हद) पार कर जाना है। मतलब यह है कि यह बात कि अल्लाह की औलाद है, उन बेवकूफ़ों की बात है जो दरमियानी और सीधे रास्ता से दूर, सीमा से परे, झूठ और इल्ज़ाम लगाने वाले हैं।

[2] इसलिए हम उसकी पुष्टि (तसदीक़) करते रहे और अल्लाह के बारे में यह आस्था (अक़ीदा) रखे रहे यहाँ तक कि हम ने क़ुरआन सुना तो फिर हम पर इस अक़ीदा का झूठा होना खुल गया।

[3] अज्ञानकाल (जाहिलियत) में एक प्रथा (रिवाज) यह भी थी कि वे कहीं यात्रा (सफ़र) पर जाते तो जिस वादी में रुकते वहाँ जिन्नों से पनाह माँगते, जैसे इलाके के सरदार और बड़े से पनाह माँगी जाती है। इस्लाम ने इस को ख़त्म किया और सिर्फ़ एक अल्लाह से पनाह माँगने पर ज़ोर दिया।

وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ﴿8﴾

८. और हम ने आसमान को टटोल कर देखा तो उस को सख़्त चौकीदारों और तेज शोलों (ज्वालाओं) से भरा पाया।

وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۭ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ﴿9﴾

९. और इस से पहले हम बातें सुनने के लिए आकाश में जगह-जगह पर बैठ जाया करते थे, अब जो भी कान लगाता है वह एक शोले को अपनी ताक (घात) में पाता है।

وَّاَنَّا لَا نَدْرِيْٓ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ﴿10﴾

१०. और हम नहीं जानते कि धरती वालों के साथ किसी बुराई का इरादा किया गया है या उनके रब का इरादा उनके साथ भलाई का है।

وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ۭ كُنَّا طَرَاۗىِٕقَ قِدَدًا ﴿11﴾

११. और यह कि (बेशक) कुछ तो हम में से नेक हैं और कुछ उस के उल्टा भी हैं। हम कई तरह से बटे हुए हैं।[1]

وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِي الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ﴿12﴾

१२. और हमें पूरा यक़ीन हो गया[2] कि हम अल्लाह तआला को धरती में कभी मजबूर नहीं कर सकते और न हम भाग कर उसे हरा सकते हैं।

وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ ۭ فَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ﴿13﴾

१३. और हम हिदायत की बात सुनते ही उस पर ईमान ला चुके, और जो भी अपने रब पर ईमान लायेगा उसे न किसी नुक़सान का डर है न ज़ुल्म (और दुख) का।

وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ۭ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰۗىِٕكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ﴿14﴾

१४. और हम में से कुछ मुसलमान हैं और कुछ बेइंसाफ़ हैं,[3] तो जो मुसलमान हो गये उन्होंने सीधे रास्ते की खोज कर ली।

---

[1] قِدَدٌ (चीज के टुकड़े) صَارَ الْقَوْمُ قِدَدًا उस वक़्त बोलते हैं जब उनकी हालत एक-दूसरे से अलग हों, यानी हम कई समूहों (ग्रुपों) और कई ख़्यालों में बँटे हुए हैं, यानी जिन्नों में भी मुसलमान, काफ़िर, यहूदी, इसाई, मजूसी वग़ैरह हैं। कुछ कहते हैं कि उन में भी मुसलमानों की तरह क़दरिया, मुरजिया, राफ़िज़ा आदि (वग़ैरह) हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[2] यहाँ ظَنَّ यक़ीन के मायने में है, जैसे कि और भी कुछ जगहों पर है।

[3] यानी जो मोहम्मद (ﷺ) की नबूवत (दूतत्व) पर ईमान ले आये वह मुसलमान और जिन्होंने इंकार किया वह नाइंसाफ़ (अन्यायी) हैं।

१५. और जो ज़ालिम हैं वे नरक का ईंधन बन गये ।[1]	وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿15﴾
१६. और यह कि अगर ये लोग सीधे रास्ते पर मजबूत रहते तो ज़रूर हम उन्हें बहुत ज़्यादा पानी पिलाते ।	وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً غَدَقًا ﴿16﴾
१७. ताकि हम उस में उन का इम्तेहान ले लें और जो इंसान अपने रब के स्मरण (ज़िक्र) से मुँह मोड़ लेगा तो अल्लाह (तआला) उसे कठोर अज़ाब में डाल देगा ।	لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿17﴾
१८. और यह कि मस्जिदें केवल अल्लाह ही के लिए (ख़ास) हैं, तो अल्लाह (तआला) के साथ किसी दूसरे को न पुकारो ।[2]	وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ﴿18﴾
१९. और जब अल्लाह का बंदा (भक्त) उसकी इबादत के लिए खड़ा हुआ तो क़रीब था कि वे भीड़ की भीड़ बनकर उस पर पिल पड़ें ।[3]	وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿19﴾
२०. (आप) कह दीजिए कि मैं तो केवल अपने रब को ही पुकारता हूँ और उस के साथ किसी को साझीदार नहीं बनाता ।[4]	قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ﴿20﴾

---

[1] इस से मालूम हुआ कि इंसानों की तरह जिन भी स्वर्ग और नरक में जायेंगे, उन में से काफ़िर नरक में और मुसलमान स्वर्ग में, यहाँ तक जिन्नों की बात पूरी हो गई । अब आगे फिर अल्लाह का क़ौल है ।

[2] مسجد का मतलब सज्दे की जगह है, सज्दा भी नमाज़ का एक रुक्न (स्तम्भ, फ़र्ज़ अमल) है इसीलिए नमाज़ पढ़ने की जगह को मस्जिद कहा जाता है, आयत का मतलब साफ़ है कि मस्जिदों का मक़सद सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत है, इसलिए मस्जिदों में किसी दूसरे की इबादत, किसी दूसरे से दुआ, फ़रियाद और किसी और से गुहार या उसे मदद के लिए पुकारना वैध (जायज़) नहीं । अगर यहाँ भी अल्लाह के सिवा किसी को पुकारा जाने लगे तो यह बहुत बुरा और बहुत ज़ुल्म होगा, लेकिन बदक़िस्मती से नाम के मुसलमान अब मस्जिदों में भी अल्लाह के साथ दूसरों को मदद के लिए पुकारते हैं, बल्कि मस्जिद में ऐसे शिला लेख (लौहे) लटकायें हुए हैं जिन में अल्लाह को छोड़कर दूसरों को मदद के लिए पुकारा गया है ।

[3] عَبْدُ اللّٰه (अल्लाह के दास) से मतलब रसूलुल्लाह ﷺ हैं, और मतलब यह है कि जिन्न और इंसान मिलकर चाहते हैं कि अल्लाह के इस प्रकाश (नूर) को अपनी फूँकों से बुझा दें, इस के दूसरे मायने भी बयान किये गये हैं लेकिन इमाम इब्ने कसीर ने इसे प्रधानता (फ़ज़ीलत) दी है ।

[4] यानी जब सभी आप की दुश्मनी पर एक मत हो गये और तुल गये हैं तो आप कह दीजिए कि मैं तो सिर्फ़ अपने रब की इबादत करता हूँ, उसी से पनाह माँगता और उसी पर भरोसा करता हूँ ।

قُلْ إِنِّي لَآ أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ﴿21﴾

२१. कह दीजिए कि मुझे तुम्हारे लिए किसी फ़ायदे-नुक़सान का अधिकार (हक़) नहीं ।[1]

قُلْ إِنِّي لَن يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ ۙ وَّلَنْ أَجِدَ مِن دُونِهِ مُلْتَحَدًا ﴿22﴾

२२. कह दीजिए कि मुझे कभी कोई अल्लाह से नहीं बचा सकता और मैं कभी उस के सिवाय पनाह की जगह भी नहीं पा सकता ।

إِلَّا بَلَاغًا مِّنَ اللَّهِ وَرِسَالَاتِهِ ۚ وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ﴿23﴾

२३. लेकिन (मेरा काम) तो केवल अल्लाह की बात और उसका सन्देश (लोगों को) पहुँचा देना है, (अब) जो भी अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़रमानी करेगा उस के लिए नरक की आग है जिस में ऐसे लोग हमेशा रहेंगे ।

حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا وَأَقَلُّ عَدَدًا ﴿24﴾

२४. यहाँ तक कि जब उसे देख लेंगे जिसका उन को वादा दिया जाता है, तो क़रीब भविष्य (मुस्तक़बिल) में जान लेंगे कि किसका सहायक (मददगार) कमज़ोर और किसका गिरोह कम है ।[2]

قُلْ إِنْ أَدْرِي أَقَرِيبٌ مَّا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُ رَبِّي أَمَدًا ﴿25﴾

२५. (आप) कह दीजिए कि मुझे इल्म नहीं कि जिस का वादा तुम से किया जाता है वह क़रीब है या मेरा रब उस के लिए दूर की मुद्दत निर्धारित (मुक़र्रर) करेगा ।

عَالِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ أَحَدًا ﴿26﴾

२६. वह ग़ैब का जानने वाला है और अपने ग़ैब पर वह किसी को अवगत (बाख़बर) नहीं कराता ।

---

[1] यानी मुझे तुम्हारी हिदायत और गुमराही और फ़ायदे-नुक़सान का हक़ नही, मैं तो सिर्फ़ एक का बन्दा हूँ, जिसे अल्लाह ने प्रकाशना (वह्यी) और रिसालत के लिये चुन लिया है ।

[2] यानी उस वक़्त उनको पता लगेगा कि मुसलमानों का सहायक (मददगार) कमज़ोर है या मुशरिकों (बहुदेववादियों) का, और तौहीद वालों (एकेश्वरवादियों) की तादाद कम है या अल्लाह के अलावा के पुजारियों की? मतलब यह है कि मुशरिकों का तो सिरे से कोई मददगार ही नहीं होगा और अल्लाह की असंख्य (बेशुमार) सेना के आगे इन मुशरिकों की तादाद भी आटे में नमक के बराबर ही होगी ।

إِلَّا مَنِ ارْتَضَىٰ مِن رَّسُولٍ فَإِنَّهُ يَسْلُكُ مِنۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِۦ رَصَدًا ﴿27﴾

२७. सिवाय उस रसूल के जिसे वह पसंदीदा बना ले,[1] इसलिए कि उस के भी आगे-पीछे पहरेदार मुक़र्रर (निर्धारित) कर देता है।[2]

لِّيَعْلَمَ أَن قَدْ أَبْلَغُوا۟ رِسَٰلَٰتِ رَبِّهِمْ وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَحْصَىٰ كُلَّ شَىْءٍ عَدَدًۢا ﴿28﴾

२८. ताकि मालूम हो जाये कि उन्होंने अपने रब के संदेश पहुँचा दिये,[3] अल्लाह (तआला) ने उन के क़रीबी चीज़ों को घेर रखा है और हर चीज़ की तादाद की गिनती कर रखी है।

سُورَةُ الْمُزَّمِّلِ

सूरतुल मुज़्ज़म्मिल-७३

सूर: मुज़्ज़म्मिल मक्का में नाज़िल हुई और उस में बीस आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

يَٰٓأَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ﴿1﴾

१. हे चादर में लिपटने वाले ![4]

---

[1] यानी अपने पैग़म्बर (संदेष्टा) को कुछ परोक्ष (ग़ैब) की बातों से ख़बर कर देता है, जिस का तआल्लुक़ या तो संदेश पहुँचाने से होता है या उन के रसूल होने का सुबूत होते हैं, और खुली बात है कि अल्लाह के ख़बर करने से रसूल ग़ैब का जानने वाला नहीं हो सकता, क्योंकि अगर पैग़म्बर को भी ग़ैब का ज्ञान (इल्म) होता तो फिर अल्लाह की तरफ़ से उसे ग़ैब से बाख़बर करने का कोई मतलब ही नहीं रह जाता। अल्लाह तआला अपना ग़ैब उसी वक़्त अपने रसूल पर ज़ाहिर करता है जब उसे पहले से इस ग़ैब का इल्म नहीं होता, इसलिए ग़ैब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह ही को है, जैसाकि यहाँ भी इसे साफ़ किया गया है।

[2] यानी वह्यी उतरने के समय पैग़म्बर के आगे-पीछे फ़रिश्ते होते हैं जो जिन्नों और शैतानों को प्रकाशना (वह्यी) की बातें नहीं सुनने देते।

[3] لِيَعْلَمَ में ज़मीर किसकी तरफ़ फिरता है? कुछ के ख़्याल में रसूल ﷺ हैं, ताकि आप जान लें कि आप से पहले रसूलों ने भी अल्लाह का संदेश इसी तरह पहुँचाया जिस तरह आप ने पहुँचाया, या पहरेदार फ़रिश्तों ने अपने रब का पैग़ाम पैग़म्बर को पहुँचा दिया है। कुछ ने उसे अल्लाह की तरफ़ फिराया है, इस हालत में मतलब यह होगा कि अल्लाह अपने फ़रिश्तों के ज़रिये (द्वारा) अपने पैग़म्बरों की हिफ़ाज़त करता है ताकि वह रिसालत (संदेश पहुँचाने) के काम को अच्छी तरह से कर सकें, वह उस वह्यी की भी हिफ़ाज़त करता है जो पैग़म्बरों को भेजी जाती है ताकि वह जान ले कि उन्होंने अपने रब के पैग़ाम लोगों तक सही-सही पहुँचा दिये हैं।

[4] जिस वक़्त इन आयतों का अवतरण (नुज़ूल) हुआ, नबी ﷺ चादर ओढ़ कर लेटे हुए थे, अल्लाह ने आप की इसी हालत की चर्चा करते हुए मुख़ातिब किया, मतलब यह है कि अब चादर छोड़ दें और रात में थोड़ा खड़े रहें यानी तहज्जुद की नमाज़ पढ़ें। कहा जाता है कि इस हुक्म के एतबार से आप ﷺ पर तहज्जुद की नमाज़ अनिवार्य (फ़र्ज़) थी। (इब्ने कसीर)

قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿2﴾

२. रातों को उठ खड़े हो जाओ, (तहज्जुद की नमाज़ के लिए) लेकिन थोड़ी देर।

نِّصْفَهٗٓ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ﴿3﴾

३. आधी रात या उस से भी कुछ कम।

اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ﴿4﴾

४. या उस पर बढ़ा दे और क़ुरआन को ठहर-ठहर कर (साफ़) पढ़ा कर।

اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ﴿5﴾

५. बेशक हम तुझ पर बहुत भारी बात जल्द ही नाज़िल करेंगे।[1]

اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ﴿6﴾

६. बेशक रात का उठना मन की यकसूई (एकाग्रता) के लिए बहुत मुनासिब है और बात को बहुत मुनासिब (उचित) करने वाला है।[2]

اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ﴿7﴾

७. बेशक तुझे दिन में बहुत से काम होते हैं।

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ﴿8﴾

८. और तू अपने रब के नाम का ज़िक्र किया कर और सभी सृष्टि (मख़्लूक़) से अलग होकर उसकी तरफ़ ध्यानमग्न (मुतवज्जिह) हो जा।[3]

---

[1] रात का (क़याम) खड़ा रहना चूँकि इन्सानी मन के लिए आम तौर पर कठिन है, इसलिए यह दरमियानी बात के रूप में कहा कि हम इस से भी भारी बात तुम पर नाज़िल करेंगे, यानी क़ुरआन। जिस के हुक्मों और कर्तव्यों (वाजिबात) पर कार्यरत (आमिल) होना, इसकी हदों की पाबंदी और उसका प्रचार-प्रसार (दावत-तबलीग़) एक भारी और मुश्किल काम है। कुछ ने बोझ (भारीपन) से वह बोझ मलतब लिया है जो वह्यी के वक़्त रसूलुल्लाह ﷺ पर पड़ता था, जिस की वजह से कड़े जाड़े में भी आप पसीने से भीग जाते थे। (इब्ने कसीर)

[2] दूसरा मायने यह है कि दिन के मुक़ाबले रात को क़ुरआन पढ़ना ज़्यादा साफ और मन के लगाव के लिए ज़्यादा प्रभावशाली (असरअंदाज़) है, इसलिए कि उस वक़्त दूसरी आवाज़ें नहीं होतीं, माहौल शान्त (ख़ामोश) होता है, उस वक़्त नमाज़ी जो पढ़ता है वह आवाज़ों, शोर और दुनिया के कामों की भेंट (नज़र) नहीं होता, बल्कि नमाज़ी उस से महफ़ूज़ रहता है और उस के असर को महसूस करता है।

[3] تَبَتُّل का मतलब कटना और अलग होना है, यानी अल्लाह की इबादत और उस से दुआ और विनय (सरगोशी) के लिए अकेला और पूरी तरह से उसकी तरफ़ ध्यानमग्न (मुतवज्जिह) हो जा, यह रहबानियत (साधुत्व) से अलग चीज़ है, रहबानियत तो दुनियावी रिश्तों के छोड़ने और बैराग का नाम है। تَبَتُّل नाम है दुनियावी कामों के पूरा करने के बाद इबादत में लग जाना और अल्लाह से दुआ करना, जो इस्लाम में अच्छा है।

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ⑨

९. पूरब और पश्चिम का रब जिस के अलावा कोई पूज्य (इलाह) नहीं, तू उसी को अपना संरक्षक (वकील) बना ले।

وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيلًا ⑩

१०. और जो कुछ वे कहते हैं तू सहन करता रह और उन्हें अच्छी तरह से छोड़ रख।

وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا ⑪

११. और मुझे और उन झुठलाने वाले नेमत वाले लोगों को छोड़ दे और उन्हें तनिक मौक़ा दे।

إِنَّ لَدَيْنَآ أَنكَالًا وَجَحِيمًا ⑫

१२. बेशक हमारे यहाँ कठोर बेड़ियाँ हैं और सुलगता हुआ नरक है।

وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ⑬

१३. और गले में अटकने वाला खाना है और दर्द देने वाला अज़ाब है।

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ⑭

१४. जिस दिन धरती और पहाड़ थरथरा जायेंगे और पहाड़ भुरभुरी रेत के टीलों की तरह हो जायेंगे।

إِنَّآ أَرْسَلْنَآ إِلَيْكُمْ رَسُولًا ۥ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ أَرْسَلْنَآ إِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُولًا ⑮

१५. बेशक हम ने तुम्हारी तरफ़ भी तुम पर गवाही देने वाला रसूल भेज दिया है, जैसा कि हम ने फ़िरऔन की तरफ़ रसूल भेजा था।

فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنٰهُ أَخْذًا وَبِيلًا ⑯

१६. तो फ़िरऔन ने उस रसूल की नाफ़रमानी की तो हम ने उसे घोर मुसीबत में पकड़ लिया।

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ⑰

१७. तुम अगर काफ़िर रहे तो उस दिन किस तरह बचोगे, जो दिन बच्चों को बूढ़ा कर देगा।[1]

---

[1] شِيبٌ (शीब) أَشْيَبُ (अश्यब) का बहुवचन (जमा) है। क़यामत के दिन की भयानकता की वजह से हक़ीक़त में बच्चे बूढ़े हो जायेंगे, या मिसाल के तौर पर ऐसा कहा।

हदीस में भी आता है कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला आदम ﷺ से कहेगा कि अपनी औलाद में से जहन्नम के लिए अलग निकाल ले। हज़रत आदम कहेंगे कि हे अल्लाह! किस तरह? अल्लाह फ़रमायेगा कि हर हज़ार में से ९९९। इस वक़्त गर्भवती (हामला) औरतों के गर्भ गिर जायेंगे और बच्चे बूढ़े हो जायेंगे। (अलहदीस, अलबुख़ारी, तफ़सीर सूरतुल हज्ज)

१८. जिस दिन आकाश फट जायेगा, अल्लाह (तआला) का यह वादा पूरा होकर ही रहेगा।

السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ؕ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ﴿18﴾

१९. बेशक यह शिक्षा (नसीहत) है, तो जो चाहे अपने रब की तरफ़ के रास्ते को अपना ले।

اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿19﴾

२०. बेशक तेरा रब अच्छी तरह जानता है कि तू और तेरे साथ के लोगों का एक गुट लगभग दो तिहाई रात को और आधी रात को और एक तिहाई रात को (तहज्जुद की नमाज़ के लिए) खड़े होते हैं,[1] और रात-दिन का पूरा अंदाज़ा अल्लाह (तआला) को ही है, वह (अच्छी तरह) जानता है कि तुम उसे हरगिज़ न निभा सकोगे तो उस ने तुम पर कृपा की, इसलिए जितना क़ुरआन पढ़ना तुम्हारे लिए सरल हो उतना ही पढ़ो वह जानता है कि तुम में कुछ रोगी भी होंगे, कुछ दूसरे, धरती पर सैर करके अल्लाह तआला की कृपा (यानी रोज़ी भी) खोजेंगे और कुछ अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद भी करेंगे[2] तो तुम आसानी से जितना (क़ुरआन) पढ़ सकते हो पढ़ो, और नमाज़ पाबन्दी से पढ़ो

اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ ؕ وَاللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ؕ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِى الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖؗ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ

[1] जब सूरह के शुरू में आधी रात या उस से कम या ज़्यादा क़याम (नमाज़ के लिए खड़े होने) का हुक्म दिया गया तो आप और आप के साथियों का एक गिरोह रात में नमाज़ पढ़ने लगा, कभी दो तिहाई से कम, कभी आधी रात और कभी एक तिहाई रात जैसाकि यहाँ बयान है, लेकिन एक तो यह रात की लगातार नमाज़ बड़ी कठिन थी, दूसरे समय का यह अंदाज़ा आधी रात या तिहाई या दो तिहाई हिस्सा नमाज़ पढ़ना इस से भी बड़ा कठिन था, इसलिए अल्लाह ने इस आयत में हलका करने का हुक्म उतारा, जिसका मायने कुछ के ख़्याल में तहज्जुद की नमाज़ छोड़ने की इजाज़त है और कुछ के ख़्याल में यह है कि उसके फ़र्ज़ (अनिवार्य होने) को इस्तिहबाब (उत्तम होने) से बदल दिया गया, अब यह न आप के पैरोकारों के लिए फ़र्ज़ है न नबी ﷺ के लिए। कुछ का कहना है कि यह छूट केवल उम्मत के लिए है, नबी ﷺ के लिए इसका पढ़ना फ़र्ज़ था।

[2] इसी तरह जिहाद (धर्मयुद्ध) में भी कठिन यात्रायें (सफ़र) करनी पड़ती हैं, यह तीनों बातें रोग, यात्रा और जिहाद बारी-बारी सब के सामने आती हैं। इसलिए अल्लाह तआला ने तहज्जुद में छूट दे दी है, क्योंकि इन में कठिनाईयाँ हैं।

وَأَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُم مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِندَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَأَعْظَمَ أَجْرًا ۚ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ۖ إِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ (20)

और ज़कात (भी) देते रहा करो और अल्लाह तआला को अच्छा क़र्ज़ दो, और जो नेकी तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह (तआला) के यहाँ सब से अच्छे तरीक़े से बदले में ज़्यादा पाओगे ।[1] और अल्लाह तआला से माफ़ी माँगते रहो । बेशक अल्लाह तआला माफ़ करने वाला रहम करने वाला है ।

سُورَةُ الْمُدَّثِّرِ

सूरतुल मुद्दस्सिर-७४

सूरः मुद्दस्सिर मक्का में नाज़िल हुई और इस में छप्पन आयतें और दो रूकूअ हैं ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ (1)

१. हे कपड़ा ओढ़ने वाले ।[2]

قُمْ فَأَنذِرْ (2)

२. खड़ा हो जा और होशियार कर दे ।

وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ (3)

३. और अपने रब ही की महिमा (तकबीर) बयान कर ।

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ (4)

४. और अपने कपड़ों को पवित्र (पाक) रखा कर ।

---

[1] यानी नफ़िल नमाज़ें, सदक़ा, ख़ैरात और जो दूसरे नेक काम करोगे उसका अल्लाह के पास बेहतर बदला पाओगे । ज़्यादातर भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) ने इस सूरः के आधे हिस्से को मदनी और आधे हिस्से को मक्की माना है जिसकी वजह आयत न॰ २० है जो मदनी है ।

[2] सब से पहले जो वहयी उतरी वह اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ है । उस के बाद वहयी में देरी हो गई और नबी ﷺ बड़े बेचैन हो गये और परेशान रहने लगे । एक दिन अचानक वही फ़रिश्ता जो हिरा (पहाड़) की गुफ़ा में वहयी लेकर पहली बार आया था, आप ﷺ ने देखा कि ज़मीन और आसमान के बीच एक कुर्सी पर बैठा है, जिस से आप पर एक डर छा गया और घर जाकर घर वालों से कहा कि मुझे कपड़ा ओढ़ा दो, मुझे कपड़ा ओढ़ा दो, इसलिए उन्होंने आप को एक कपड़ा ओढ़ा दिया, इसी हालत में यह वहयी नाज़िल हुई । (सहीह बुख़ारी, मुस्लिम, सूरतुल मुद्दस्सिर और किताबुल ईमान) इस बिना पर यह दूसरी वहयी (प्रकाशना) और वहयी के देरी के बाद पहली वहयी है ।

وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ⑤

५. और अपवित्रता (नापाकी) को छोड़ दे ।[1]

وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ⑥

६. और एहसान करके ज़्यादा लेने की इच्छा (तमन्ना) न कर ।

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ⑦

७. और अपने रब के रास्ते में सब्र कर ।

فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُورِ ⑧

८. तो जब नरसिंघा (सूर) में फूँका जायेगा ।

فَذَٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ ⑨

९. तो वह दिन बहुत कठोर दिन होगा ।

عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُ يَسِيرٍ ⑩

१०. (जो) काफ़िरों पर आसान न होगा ।

ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ⑪

११. मुझे और उसे छोड़ दे, जिसे मैंने अकेला पैदा किया है ।[2]

وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَمْدُودًا ⑫

१२. और उसे बहुत धन दे रखा है ।

وَبَنِينَ شُهُودًا ⑬

१३. और हाज़िर रहने वाले पुत्र भी ।

وَمَهَّدْتُ لَهُ تَمْهِيدًا ⑭

१४. और मैंने उसे बहुत कुछ कुशादगी दे रखी है ।

ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ⑮

१५. फिर भी उसकी तमन्ना (कामना) है कि मैं उसे और ज़्यादा दूं ।

كَلَّا ۖ إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا عَنِيدًا ⑯

१६. नहीं-नहीं, वह हमारी आयतों का विरोधी (मुख़ालिफ़) है ।[3]

---

[1] यानी मूर्तियों की पूजा (इबादत) छोड़ दे, यह हक़ीक़त में लोगों को आप के माध्यम (ज़रिया) से हुक्म दिया जा रहा है ।

[2] यह शब्द चेतावनी (अलफ़ाज़ तम्बीह) और धमकी के लिए है कि उसे जिसे मैंने माँ के पेट से अकेला पैदा किया, उस के पास माल था न औलाद, और मुझे अकेला छोड़ दो, यानी मैं ख़ुद ही उस से निपट लूँगा । कहते हैं कि यह वलीद पुत्र मुग़ीरा की तरफ़ इशारा है, यह कुफ़्र और फ़साद में बहुत बढ़ा हुआ था, इसलिए ख़ास तौर से उसकी चर्चा की है ।

[3] यह كلا की वजह है । عنيد उस इंसान को कहते हैं जो सच को जानते हुए उसका विरोध (मुख़ालफ़त) करे और उसका खण्डन (तरदीद) करे ।

سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا (17)

१७. जल्द ही मैं उसे एक कठिन चढ़ाई चढ़ाऊंगा।

اِنَّهٗ فَكَّرَ وَ قَدَّرَ (18)

१८. उस ने सोंच करके अंदाजा किया।

فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ (19)

१९. उस का नाश हो! उस ने कैसे अंदाजा किया?

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ (20)

२०. वह फिर नष्ट हो! किस तरह अंदाजा किया?[1]

ثُمَّ نَظَرَ (21)

२१. उस ने फिर देखा।

ثُمَّ عَبَسَ وَ بَسَرَ (22)

२२. फिर मुँह सिकोड़ लिया और मुँह बना लिया।

ثُمَّ اَدْبَرَ وَ اسْتَكْبَرَ (23)

२३. फिर पीछे हट गया और गर्व (घमंड) किया।

فَقَالَ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثَرُ (24)

२४. और कहने लगा कि यह तो सिर्फ जादू है जो नक़ल किया जाता है।

اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ (25)

२५. (यह) इंसान के क़ौल के अलावा कुछ भी नहीं।

سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ (26)

२६. मैं जल्द ही उसे नरक में डालूँगा।

وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ (27)

२७. और तुझे क्या पता[2] कि नरक (जहन्नम) क्या चीज है?

لَا تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُ (28)

२८. न वह बाक़ी रखती है और न छोड़ती है।

لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ (29)

२९. खाल को झुलसा देती है।

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ (30)

३०. और उस पर उन्नीस (फ़रिश्ते तैनात) हैं।

---

[1] यह उस के बारे में बद्दुआ (अभिशाप) के लफ़्ज़ हैं कि नाश हो, मारा जाये, क्या बात उस ने सोची है?

[2] नरक के नामों और दर्जों में से एक का नाम «सक़र» भी है।

وَمَا جَعَلْنَآ أَصْحَٰبَ ٱلنَّارِ إِلَّا مَلَٰٓئِكَةً ۙ وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لِيَسْتَيْقِنَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ وَيَزْدَادَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِيمَٰنًا ۙ وَلَا يَرْتَابَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْمُؤْمِنُونَ ۙ وَلِيَقُولَ ٱلَّذِينَ فِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَٱلْكَٰفِرُونَ مَاذَآ أَرَادَ ٱللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا ۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ ٱللَّهُ مَن يَشَآءُ وَيَهْدِى مَن يَشَآءُ ۚ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ ۚ وَمَا هِىَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْبَشَرِ ﴿31﴾

३१. और हम ने नरक के रक्षक (निगराँ) केवल फ़रिश्ते रखे हैं, और हम ने उनकी तादाद केवल काफ़िरों की परीक्षा के लिए निर्धारित (मुक़र्रर) कर रखी है[1] ताकि अहले किताब यक़ीन कर लें और ईमान वाले ईमान में बढ़ जायें और अहले किताब और मुसलमान शक न करें, और जिन के दिल में रोग है वे और काफ़िर कहें कि इस मिसाल से अल्लाह तआला का क्या मुराद है?[2] इसी तरह अल्लाह तआला जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है और तेरे रब की सेनाओं को उस के सिवाय कोई नहीं जानता,[3] यह सारे इंसानों के लिए (सरासर) नसीहत (और भलाई) है।

كَلَّا وَٱلْقَمَرِ ﴿32﴾

३२. हरगिज नहीं ![4] चाँद की क़सम।

وَٱلَّيْلِ إِذْ أَدْبَرَ ﴿33﴾

३३. और रात की जब वह पीछे हटे।

وَٱلصُّبْحِ إِذَآ أَسْفَرَ ﴿34﴾

३४. और सुबह की जब वह रौशन हो जाये।

---

[1] यह क़ुरैश के मूर्तिपूजकों का खंडन (तरदीद) है, जब नरक के अधिकारियों (निगराँ) की अल्लाह ने चर्चा की तो अबूजहल ने क़ुरैश के समूह को मुख़ातिब करते हुए कहा कि तुम मे हर दस इंसानों का गिरोह एक-एक फ़रिश्ते के लिए काफ़ी नहीं होगा। कुछ कहते हैं कि किलदा नाम के इंसान ने जिसे अपने बल पर बड़ा घमन्ड था, कहा कि तुम सभी सिर्फ़ दो फ़रिश्ते संभाल लेना, १७ फ़रिश्तों को तो मैं अकेला ही देख लूँगा। कहते हैं कि उसी ने रसूलुल्लाह ﷺ को कुश्ती की भी कई बार चुनौती दी और हर बार हारा लेकिन ईमान नहीं लाया।

[2] दिल के रोगी से मुराद मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) हैं या फिर वह हैं जिन के दिलों में शक था, क्योंकि मक्का में मुनाफ़िक़ नहीं थे यानी यह पूछेंगे कि उनकी तादाद को यहाँ चर्चा करने में अल्लाह की क्या हिक्मत है ?

[3] यानी यह काफ़िर और मुश्रिक समझते हैं कि नरक में १९ फ़रिश्ते ही तो हैं, जिन पर क़ाबू पाना कौन सा बड़ा काम है? लेकिन उनको पता नहीं कि रब की सेना तो इतनी है जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई जानता ही नहीं, केवल फ़रिश्ते ही इतनी तादाद में हैं कि ७० हज़ार फ़रिश्ते रोज़ाना अल्लाह की उपासना (इबादत) के लिए "बैतुल मामूर" में दाख़िल होते हैं, फिर क़यामत तक उन की बारी नहीं आयेगी। (सहीह बुख़ारी और मुस्लिम)

[4] كَلَّا यह मक्कावासियों के गुमान का इंकार है, यानी जो वह यह समझते हैं कि हम फ़रिश्तों को हरा देंगे, कभी ऐसा न होगा, क़सम है चाँद की और रात की जब वह पीछे हटे यानी जाने लगे।

إِنَّهَا لَإِحْدَى الْكُبَرِ ﴿35﴾

३५. कि (बेशक वह जहन्नम) बड़ी चीज़ों में से एक है।

نَذِيرًا لِّلْبَشَرِ ﴿36﴾

३६. इंसान को डराने वाली।

لِمَن شَاءَ مِنكُمْ أَن يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ﴿37﴾

३७. उन इंसान के लिए जो तुम में से आगे बढ़ना चाहे या पीछे हटना चाहे।

كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ﴿38﴾

३८. हर इंसान अपने अमलों के बदले गिरवी है।[1]

إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ﴿39﴾

३९. लेकिन दायें हाथ वाले।

فِي جَنَّاتٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿40﴾

४०. (कि) वे जन्नतों में (बैठे हुए) सवाल करते होंगे।

عَنِ الْمُجْرِمِينَ ﴿41﴾

४१. पापियों (मुजरिमों) से।

مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرَ ﴿42﴾

४२. तुम्हें जहन्नम में किस बात ने डाला।

قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ﴿43﴾

४३. वे जवाब देंगे कि हम नमाज़ी न थे।

وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِينَ ﴿44﴾

४४. न भूखों को खाना खिलाते थे।[2]

وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَائِضِينَ ﴿45﴾

४५. और हम बेकार बात (इंकार) करने वालों के साथ बेकार बात में व्यस्त (मशग़ूल) रहा करते थे।

وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿46﴾

४६. और हम बदले के दिन को झुठलाते थे।

---

[1] رهن गिरवी रखने को कहते हैं, यानी हर इंसान अपने अमल का गिरवी है, वह अमल उसे अज़ाब से आज़ाद करा लेगा (अगर नेक होगा) या नष्ट (हलाक) कर देगा। (अगर बुरा होगा)

[2] नमाज़ अल्लाह के हक़ में से है और ग़रीबों का खिलाना बंदों के हक़ में से है। मतलब यह हुआ कि हम ने अल्लाह के हक़ पूरे किये न बंदों के।

حَتّٰىٓ اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ﴿47﴾

४७. यहां तक कि हमारी मौत आ गयी ![1]

فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ﴿48﴾

४८. तो उन्हें सिफारिश करने वालों की सिफारिश फ़ायेदा देने वाली न होगी ।[2]

فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ﴿49﴾

४९. उन्हें क्या हो गया है कि वे नसीहत से मुंह मोड़ रहे हैं?

كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ﴿50﴾

५०. जैसे कि वे भड़के हुए गधे हैं।

فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ﴿51﴾

५१. जो शेर से भागे हों।

بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿52﴾

५२. बल्कि उन में से हर इंसान चाहता है कि उसे स्पष्ट (वाज़ेह) किताबें दी जायें।

كَلَّا ۭ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿53﴾

५३. कभी ऐसा नहीं (हो सकता), बल्कि ये क़यामत (प्रलय) से बेख़ौफ़ हैं।

كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ﴿54﴾

५४. कभी नहीं! यह (क़ुरआन) एक नसीहत है।

فَمَنْ شَاۗءَ ذَكَرَهٗ ﴿55﴾

५५. अब जो चाहे उससे नसीहत हासिल करे।

وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَاۗءَ اللّٰهُ ۭ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿56﴾

५६. और वे उस समय नसीहत हासिल करेंगे, जब अल्लाह तआला चाहे, वह इसी लायक़ है कि उससे डरें और इस लायक़ भी कि वह माफ़ करे।

---

1 يقين (निश्चित) का मायने मौत है, जैसे अल्लाह ने दूसरी जगह पर फ़रमाया :

﴿وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَأْتِيَكَ الْيَقِيْنُ﴾

"अपने रब की इबादत मौत के आने तक करते रहो।" (अल-हिज्र : ९९)

2 यानी जो उपरोक्त (मज़कूरा) बुराईयों में मस्त होगा उसे किसी की सिफ़ारिश भी फ़ायेदा नहीं पहुंचायेगी, क्योंकि वह कुफ़्र की वजह से सिफ़ारिश के हक़दार नहीं होंगे, सिफ़ारिश तो सिर्फ़ उन के लिए फ़ायदेमंद होगी जो ईमान की वजह से सिफ़ारिश के हक़दार होंगे, अल्लाह की तरफ़ से सिफ़ारिश की इजाज़त भी उन्हीं के लिए मिलेगी न कि हर एक के लिए।

सूरतुल क़ियाम:-७५

سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ

सूर: क़ियाम: मक्का में नाज़िल हुई और इस में चालीस आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ﴿1﴾

१. मैं क़सम खाता हूँ क़यामत (प्रलय) के दिन की।[1]

وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ﴿2﴾

२. और क़सम खाता हूँ उस मन की जो धिक्कार (निन्दा) करने वाला हो।

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ﴿3﴾

३. क्या इंसान यह ख़्याल करता है कि हम उसकी हड्डियाँ जमा करेंगे ही नहीं।[2]

بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ﴿4﴾

४. हाँ ज़रूर करेंगे, हम को सामर्थ्य (क़ुदरत) है कि हम उसकी पोर-पोर को ठीक कर दें।

بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ﴿5﴾

५. बल्कि इंसान तो चाहता है कि आगे-आगे नाफ़रमानी (और अवहेलना) करता जाये।

يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ﴿6﴾

६. पूछता है कि क़यामत (प्रलय) का दिन कब आयेगा।

فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ﴿7﴾

७. तो जिस समय आँखें पत्थरा जायेंगी।

---

[1] لَا أُقْسِمُ में لَا ज़्यादा है जो अरबी की एक भाषा-शैली (अंदाज़) है जैसे ﴿مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسْجُدَ﴾ (अल-आराफ़-१२) और ﴿لِئَلَّا يَعْلَمَ أَهْلُ الْكِتَابِ﴾ (अल-हदीद-२९) और दूसरी बहुत सी जगह पर है। कुछ कहते हैं कि क़सम से पहले काफ़िरों की बात का इंकार है, वे कहते थे कि मौत के बाद कोई जीवन नहीं। لَا के द्वारा (ज़रिये) कहा गया कि जैसे तुम कहते हो बात ऐसी नहीं मैं क़यामत के दिन की क़सम खाता हूँ, क़यामत (प्रलय) के दिन की क़सम खाने से मक़सद उस के महत्व (अहमियत) और गंभीरता (संजीदगी) को स्पष्ट (वाज़ेह) करना है।

[2] यह क़सम का जवाब है। इंसान से मुराद यहाँ काफ़िर और नास्तिक इंसान है जो क़यामत (प्रलय) को नहीं मानता, उसकी सोच गलत है। अल्लाह तआला यक़ीनी तौर पर इंसानों के अंश (अंग) को जमा करेगा, यहाँ हड्डियों की ख़ास तौर से चर्चा है इसलिए कि हड्डियाँ ही पैदाईश का असल ढाँचा और क़ालिब (फ़र्मा) हैं।

وَخَسَفَ الْقَمَرُ ﴿8﴾

८. और चाँद प्रकाशहीन (बेनूर) हो जायेगा ।[1]

وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ﴿9﴾

९. और सूरज और चाँद इकट्ठा कर दिये जायेंगे ।[2]

يَقُولُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ﴿10﴾

१०. उस दिन इंसान कहेगा कि आज भागने की जगह कहाँ है?

كَلَّا لَا وَزَرَ ﴿11﴾

११. नहीं-नहीं, कोई पनाह की जगह नहीं ।

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ﴿12﴾

१२. आज तो तेरे रब की तरफ़ ही ठिकाना है ।

يُنَبَّأُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ﴿13﴾

१३. आज इंसान को उसके आगे भेजे हुए और पीछे छोड़े हुए से अवगत (ख़बर) कराया जायेगा ।

بَلِ الْإِنسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ﴿14﴾

१४. बल्कि इंसान ख़ुद अपने आप पर हुज्जत है ।[3]

وَلَوْ أَلْقَىٰ مَعَاذِيرَهُ ﴿15﴾

१५. यद्यपि (अगरचे) कितने ही बहाने पेश करे ।

لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ﴿16﴾

१६. (हे नबी) आप क़ुरआन को जल्दी (याद करने) के लिए अपनी ज़ुबान को न हिलायें ।[4]

إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ﴿17﴾

१७. उसको जमा करना और (आप के मुँह से) पढ़ाना हमारा फ़र्ज़ है ।[5]

---

1 जब चाँद को गहन लगता है तो उस समय भी वह बेनूर हो जाता है, लेकिन यह चाँद गहन जो क़यामत की निशानियों में से है जब होगा तो उस के बाद उस में प्रकाश (नूर) नहीं आयेगा ।

2 यानी बेनूर होने से मुराद है कि चाँद की तरह सूरज का भी नूर ख़त्म हो जायेगा ।

3 यानी उस के अपने हाथ, पाँव, ज़ुबान और दूसरे अंग गवाही देंगे, यानी यह मायने है कि इंसान अपनी बुराई ख़ुद जानता है ।

4 हज़रत जिब्रील जब वह्यी (प्रकाशना) लेकर आते तो नबी ﷺ भी उन के साथ जल्दी से पढ़ते जाते कि कहीं कोई शब्द भूल न जायें ! अल्लाह ने आप को फ़रिश्ते के साथ-साथ इस तरह पढ़ने से रोक दिया । (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरतूल क़ियामः)

5 यानी आप के सीने में उस को जमा कर देना और आप की ज़ुबान पर इसे जारी कर देना हमारी ज़िम्मेदारी है, ताकि उसका कोई हिस्सा आप के याद से न निकले और आप को न भूले ।

فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ﴿18﴾

१८. (इसलिए) हम जब उसे पढ़ लें, तो आप उस के पढ़ने का अनुकरण (इत्तेबा) करें।

ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ﴿19﴾

१९. फिर उसको स्पष्ट (वाज़ेह) कर देना हमारा काम है।[1]

كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ﴿20﴾

२०. नहीं-नहीं, तुम तो जल्द हासिल होने वाली (दुनिया) से मुहब्बत रखते हो।

وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿21﴾

२१. और परलोक (आख़िरत) को छोड़ बैठे हो।

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿22﴾

२२. उस दिन बहुत से मुंह ताज़ा (और रौशन) होंगे।

اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿23﴾

२३. अपने रब की तरफ़ देखते होंगे।[2]

وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍۢ بَاسِرَةٌ ﴿24﴾

२४. और कितने मुंह उस दिन (बद्सूरत और) उदास होंगे।[3]

تَظُنُّ اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿25﴾

२५. समझते होंगे कि उन के साथ कमर तोड़ देने वाला सुलूक किया जायेगा।

كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿26﴾

२६. नहीं-नहीं जब (जान) हंसुली तक पहुंच जायेंगे।[4]

---

[1] यानी उस के मुश्किल जगहों की तफ़सीर (व्याख्या), हलाल और हराम का स्पष्टीकरण (वज़ाहत) हमारी ज़िम्मेदारी है, इसका वाज़ेह मायने यह है कि नबी ﷺ ने क़ुरआन के संक्षेपों (इख़्तेसार) का जो बयान, मुब्हमों (गुढ़ों) की तफ़सीर और उस के आम विषयों की जो ख़ुसूसियत बताई है, जिसे हदीस कहा जाता है, यह भी अल्लाह की तरफ़ से वह्यी और सुझाई बातें हैं इसलिए उन्हें भी क़ुरआन की तरह मानना ज़रूरी है।

[2] यह ईमानवालों के चेहरे होंगे जो अपने अच्छे नतीजे की वजह से शान्त, ख़ुश और रौशन होंगे, फिर अल्लाह की ज़ियारत से भी ख़ुश होंगे, जैसाकि सहीह हदीसों से साफ़ है और अहले सुन्नत का अक़ीदा है।

[3] यह काफ़िरों के चेहरे होंगे। باسرة बदले हुए, पीले, ग़म और फ़िक्र से काले और बद्सूरत होंगे।

[4] تراقي यह ترقوة का बहुवचन (जमा) है, यह गरदन के क़रीब सीने और कंधे के बीच एक हड्डी है यानी जब मौत का पंजा तुम्हें अपनी जकड़ में ले लेगा।

وَقِيلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ﴿27﴾

२७. और कहा जायेगा कि कोई झाड़-फूंक करने वाला है।

وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿28﴾

२८. और उसने यक़ीन कर लिया कि यह जुदाई का समय है।

وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿29﴾

२९. और पिंडली से पिंडली लिपट जायेगी।[1]

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ﴿30﴾

३०. आज तेरे रब की तरफ़ चलना है।

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلَّىٰ ﴿31﴾

३१. तो उस ने न तो पुष्टि (तसदीक़) की न नमाज पढ़ी।[2]

وَلَٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿32﴾

३२. बल्कि झुठलाया और पलट गया।

ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَتَمَطَّىٰ ﴿33﴾

३३. फिर अपने घरवालों की तरफ़ इतराता हुआ गया।[3]

أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ﴿34﴾

३४. अफ़सोस है तुझ पर, पछतावा है तुझ पर।

ثُمَّ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ﴿35﴾

३५. फिर दुख है और ख़राबी है तेरे लिए।

أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُتْرَكَ سُدًى ﴿36﴾

३६. क्या इंसान यह समझता है कि उसे बेकार छोड़ दिया जायेगा।

أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِنْ مَنِيٍّ يُمْنَىٰ ﴿37﴾

३७. क्या वह एक गाढ़े पानी की बूंद न था, जो टपकाया जाता है?

ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّىٰ ﴿38﴾

३८. फिर वह ख़ून का लोथड़ा हो गया, फिर (अल्लाह ने) उसे पैदा किया और ठीक रूप से बना दिया।[4]

---

[1] इस से या तो मौत के वक़्त पिंडली का पिंडली से मिल जाना मुराद है या लगातार दुख। आम मुफ़स्सिरों (भाष्यकारों) ने दूसरा मायने लिया है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] यानी इस इंसान ने अल्लाह, रसूल और क़ुरआन को न माना और न नमाज पढ़ी, यानी अल्लाह की इबादत नहीं की।

[3] يَتَمَطَّىٰ इतराता और अकड़ता हुआ।

[4] فَسَوَّىٰ यानी उसे ठीक-ठाक किया, उसको पूरा किया और उस में रूह फूंकी।

فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنْثَىٰ ﴿39﴾

३९. फिर उस से जोड़े यानी नर-मादा बनाये।

أَلَيْسَ ذَٰلِكَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ﴿40﴾

४०. क्या (अल्लाह तआला) इस (बात) पर क़ादिर नहीं कि मुर्दा को जिन्दा कर दे।[1]

سُورَةُ الْإِنْسَانِ

सूरतुल इंसान-७६

सूर: इंसान* मदीने में नाज़िल हुई और इस में इक्तीस आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

هَلْ أَتَىٰ عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَذْكُورًا ﴿1﴾

१. यक़ीनन ही इंसान पर ज़माने का एक वह वक़्त भी गुज़र चुका है जबकि वह कोई बयान करने लायक़ चीज़ न था।

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿2﴾

२. बेशक हम ने इंसान को मिले जुले वीर्य (नुत्फ़े) से इम्तेहान के लिए पैदा किया, और उस को सुनने वाला देखने वाला बनाया।

إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ﴿3﴾

३. हम ने उसे रास्ता दिखाया, अब चाहे वह शुक्रगुज़ार बने या नाशुक्रा।[2]

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلَ وَأَغْلَالًا وَسَعِيرًا ﴿4﴾

४. बेशक हम ने काफ़िरों के लिए ज़ंजीरें और तौक़ और भड़कती आग तैयार कर रखी है।

---

[1] यानी जो अल्लाह इंसानों को इस तरह कई हालतों से गुज़ार कर पैदा करता है क्या मरने के बाद उन्हें दोबारा जिन्दा करने पर समर्थ (क़ादिर) नहीं है ?

* इस के मक्की और मदनी होने में मतभेद (इख़्तिलाफ़) है। आम आलिम (विद्वान) इसे मदनी मानते हैं, कुछ कहते हैं कि आख़िरी दस आयतें मक्की हैं बाक़ी मदनी हैं। (फ़तहुल क़दीर) रसूलुल्लाह ﷺ जुमअ: के दिन फ़ज्र की नमाज़ में الم تنزيل السجدة (अलिफ़• लाम• मीम तंज़ीलुस सज्दा) और सूरह इंसान (दहर) पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमुअ:) इस सूर: को सूर: दहर भी कहा जाता है।

[2] यानी ऊपर बयान की गई ताक़तों और सलाहियतों के अलावा हम ने ख़ुद भी अम्बिया अलैहिमुस्सलाम, अपनी किताबों और सच का प्रचार (तब्लीग़) करने वालों के ज़रिये सच्चाई के रास्ते को साफ़ कर दिया है, अब यह उसकी पसन्द है कि अल्लाह के हुक्म की पैरवी करके शुक्रगुज़ार बन्दा बन जाये या नाफ़रमानी का रास्ता अपनाकर नाशुक्रा बन जाये।

إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِن كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ⑤

५. बेशक सदाचारी (नेक) लोग उस प्याले से पियेंगे जिस में काफ़ूर की मिलावट है।

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ⑥

६. जो एक स्रोत (चश्मा) है, जिस से अल्लाह के बंदे पियेंगे, उसकी नहरें निकाल ले जायेंगे (जिधर चाहेंगे)

يُوفُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ⑦

७. जो मन्नत पूरी करते हैं[1] और उस दिन से डरते हैं जिसकी बुराई चारों तरफ़ फैल जाने वाली है।

وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ⑧

८. और अल्लाह (तआला) की मुहब्बत में खाना खिलाते हैं, ग़रीब, यतीम (अनाथ) और क़ैदियों को।

إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ⑨

९. हम तो तुम्हें केवल अल्लाह (तआला) की ख़ुशी के लिए खिलाते हैं, तुम से बदला चाहते हैं न शुक्रिया।

إِنَّا نَخَافُ مِن رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ⑩

१०. बेशक हम अपने रब से उस दिन का डर रखते हैं जो तंगी और कठोरता (सख़्ती) वाला होगा।

فَوَقَاهُمُ اللَّهُ شَرَّ ذَٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقَّاهُمْ نَضْرَةً وَسُرُورًا ⑪

११. तो उन्हें अल्लाह तआला ने उस दिन की बुराई से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और ख़ुशी पहुँचायी।[2]

---

[1] यानी सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करते हैं, मन्नत भी मानते हैं तो सिर्फ़ अल्लाह के लिए, और फिर उसे पूरी करते हैं, इस से मालूम हुआ कि मन्नत पूरी करना भी ज़रूरी है, शर्त यह है कि नाफ़रमानी की न हो। जैसाकि हदीस में है कि जिस ने मन्नत मानी हो कि वह अल्लाह का आज्ञापालन (इताअत) करेगा तो उसका पालन करे और जिस ने अल्लाह की नाफ़रमानी की मन्नत मानी हो तो वह अल्लाह की नाफ़रमानी न करे यानी उसे पूरी न करे। (सहीह बुख़ारी, किताबुल ऐमान, बाबुन नज़्रे फ़ित ताअते)

[2] ताज़गी चेहरों पर होगी और ख़ुशी दिलों में, जब इंसान का दिल ख़ुश होता है तो उस का चेहरा भी ख़ुशी से खिल जाता है। नबी ﷺ के बारे में आता है कि जब आप ﷺ ख़ुश होते तो आप का चेहरा ऐसे रौशन होता मानो चाँद का टुकड़ा है। (अलबुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी)

وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ﴿12﴾

१२. और उन्हें उन के सब्र के बदले[1] जन्नत और रेशमी कपड़ा अता किये।

مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآىِٕكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ﴿13﴾

१३. ये वहाँ तख़्तों (आसनों) पर तकिये लगाये हुए बैठेंगे, न वहाँ सूरज की गर्मी देखेंगे न जाड़े की कठोरता।[2]

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ﴿14﴾

१४. और उन (स्वर्ग) के साये उन पर झुके होंगे और उन के (मेवे) और गुच्छे नीचे लटकाये हुए होंगे।

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا۠ ﴿15﴾

१५. और उन पर चाँदी के बर्तनों और उन गिलासों का दौर चलाया जायेगा जो शीशे के होंगे।

قَوَارِيْرَا۠ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ﴿16﴾

१६. शीशे भी चाँदी के जिन को (पिलाने वालों ने) अंदाज़ा से नाप रखा होगा।

وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ﴿17﴾

१७. और उन्हें वहाँ वे पेय पदार्थ (मशरूब) पिलाये जायेंगे जिन में सोंठ की मिलावट होगी।[3]

عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ﴿18﴾

१८. जन्नत की एक नहर से, जिसका नाम सलसबील है।

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ﴿19﴾

१९. और उन के चारों तरफ़ वे कम उम्र बच्चे घूमते-फिरते होंगे जो हमेशा रहने वाले हैं, जब तू उन्हें देखे तो समझे कि वे बिखरे हुए (सच्चे) मोती हैं।

---

[1] सब्र का मतलब है दीन के रास्ते में जो तकलीफ़ आयें उन्हें ख़ुशी-ख़ुशी सहन करना, अल्लाह के रास्तों में मनोकांक्षा (तमन्ना) और ग़र्ज़ का छोड़कर और नाफ़रमानी से बचना।

[2] زَمْهَرِيْر कड़े जाड़े को कहते हैं, मुराद यह है कि वहाँ सदा एक ही ऋतु (मौसम) रहेगी, और वह है बसन्त ऋतु, न बहुत गर्मी न बहुत कड़ी सर्दी।

[3] زَنْجَبِيْل (सोंठ, सूखी अदरक) को कहते हैं। यह गर्म होती है, इस की मिलावट से एक मज़ेदार कड़ुवापन आ जाता है, इस के सिवा यह अरबों की पसंदीदा चीज़ है, इसलिए उनके क़हवे में भी अदरक की मिलावट होती है। मतलब है कि जन्नत में एक मदिरा वह होगी जो ठंडी होगी जिस में कपूर मिला होगा और दूसरी गर्म जिस में सूखी अदरक की मिलावट होगी।

وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا كَبِيرًا ﴿20﴾

२०. और तू वहाँ जिस तरफ़ भी नजर डालेगा पूरी नेमत और अजीम मुल्क ही देखेगा।

عَٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُندُسٍ خُضْرٌ وَإِسْتَبْرَقٌ ۖ وَحُلُّوٓا۟ أَسَاوِرَ مِن فِضَّةٍ وَسَقَىٰهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ﴿21﴾

२१. उन के (शरीर) पर हरे महीन और मोटे रेशमी कपड़े होंगे[1] और उन्हें चाँदी के कंगन का गहना पहनाया जायेगा और उन्हें उन का रब पाक और साफ शराब पिलायेगा।

إِنَّ هَٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَكَانَ سَعْيُكُم مَّشْكُورًا ﴿22﴾

२२. (कहा जायेगा) कि यह है तुम्हारे अमलों का बदला और तुम्हारी कोशिश की तारीफ़ की गई।

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ ٱلْقُرْءَانَ تَنزِيلًا ﴿23﴾

२३. बेशक हम ने तुझ पर धीरे-धीरे क़ुरआन नाज़िल किया है।[2]

فَٱصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ ءَاثِمًا أَوْ كَفُورًا ﴿24﴾

२४. तो तू अपने रब के हुक्म पर अटल रह और उन में से किसी पापी या नाशुक्रे का कहना न मान।[3]

وَٱذْكُرِ ٱسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿25﴾

२५. और अपने रब के नाम का सुबह और शाम वर्णन (जिक्र) किया कर।[4]

وَمِنَ ٱلَّيْلِ فَٱسْجُدْ لَهُۥ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ﴿26﴾

२६. और रात के समय उसके सामने सज्दे कर और बहुत रात तक उसकी महिमागान (तस्बीह) किया कर।[5]

---

[1] سُندُس (सुन्दुस) महीन रेशमी कपड़े और إِسْتَبْرَق (इस्तब्रक़) मोटा रेशम।

[2] यानी एक ही बार न उतार कर ज़रूरत के ऐतबार से कई समयों में उतारा। इसका दूसरा मायने यह भी हो सकता है कि यह क़ुरआन हम ने उतारा है, यह तेरा अपना गढ़ा हुआ नहीं है, जैसाकि मुशरिकीन दावा करते हैं।

[3] यानी अगर यह तुझे अल्लाह के नाज़िल किये अहकाम से रोकें तो उनका कहना न मान, बल्कि धर्मप्रचार (दीन की तबलीग़) और शिक्षा-दीक्षा (वाज़-नसीहत) का काम जारी रख और अल्लाह पर भरोसा रख वह लोगों से तेरी हिफ़ाज़त करेगा।

[4] सुबह और शाम से मुराद है, हर समय में अल्लाह का स्मरण (जिक्र) कर, या सुबह से मुराद फ़ज्र की नमाज़ और शाम से अस्र की नमाज़ है।

[5] 'रात में सज्दा कर' से मुराद कुछ ने मग़रिब और इशा की नमाज़ें ली हैं और تسبیح (तस्बीह) का मायने है कि जो बातें अल्लाह के लायक़ नहीं उन से उसकी पाकी बयान कर। कुछ ने इस से रात की नफ़िल नमाज़ तहज्जुद लिया है। امر (अहकाम) यहाँ अच्छाई और बेहतर के लिए है।

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ﴿27﴾

२७. बेशक ये लोग जल्द मिलने वाली (दुनिया) को चाहते हैं और अपने पीछे एक बड़े भारी दिन को छोड़ देते हैं।

نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ ۖ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَا أَمْثَالَهُمْ تَبْدِيلًا ﴿28﴾

२८. हम ने उन्हें पैदा किया और हम ने ही उन के जोड़ (और बंधन) मजबूत किये, और हम जब चाहें उन के बदले उन जैसे दूसरों को बदल लायें।

إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿29﴾

२९. बेशक यह तो एक नसीहत है, तो जो चाहे अपने रब का रास्ता हासिल कर ले।

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿30﴾

३०. और तुम न चाहोगे लेकिन यह कि अल्लाह तआला ही चाहे।[1] बेशक अल्लाह तआला जानने वाला और हिक्मत वाला है।

يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ وَالظَّالِمِينَ أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿31﴾

३१. जिसे चाहे अपनी कृपा (रहमत) में शामिल कर ले, और पापियों (जालिमों) के लिए उस ने कष्टदायी अजाब तैयार कर रखी है।

सूरतुल मुर्सलात-७७

سُورَةُ الْمُرْسَلَاتِ

सूर: मुर्सलात* मक्का में नाजिल हुई, इस में पचास आयतें और दो रूकूअ हैं।

[1] यानी तुम में से कोई इस बात पर समर्थ (क़ादिर) नहीं कि वह ख़ुद को सीधे रास्ते पर लगा ले, अपने लिए कोई फ़ायेदा हासिल कर ले। हाँ, अगर अल्लाह चाहे तो ऐसा मुमकिन है, उस के चाहे बिना तुम कुछ नहीं कर सकते। हाँ, सही इरादा पर वह बदला (प्रतिफल) जरूर देता है। «إِنَّمَا الأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ وَإِنَّمَا لِكُلِّ امْرِىءٍ مَا نَوَى» "अमल इरादे से होते हैं, हर इंसान के लिए वह है जिस का वह इरादा करे।" (सहीह बुख़ारी, पहली हदीस)

* यह सूरह मक्की है, जैसाकि सहीहैन (बुख़ारी और मुस्लिम) में रिवायत है : हजरत इब्ने मसऊद फ़रमाते हैं कि हम मिना की एक गुफ़ा में थे कि आप पर सूरह मुर्सलात नाजिल हुई, आप उसे पढ़ रहे थे और मैं उसको आप से हासिल कर रहा था कि अचानक एक नाग आ गया, आप ﷺ ने फ़रमाया कि इसे मार दो, किन्तु वह तेजी से भाग गया। आप ने फ़रमाया कि तुम उस की बुराई से और वह तुम्हारी बुराई से बच गया। (बुख़ारी, तफ़सीर सूरतिल मुर्सलात, मुस्लिम, किताबु कतलिल हय्याते व ग़ैरहा) कभी-कभी रसूलुल्लाह ﷺ ने मग़रिब की नमाज में भी यह सूरह पढ़ी है। (बुख़ारी, किताबुल अजाने, बाबुल क़िराअते फ़िल मग़रिब, मुस्लिम, किताबुस सलाते, बाबुल क़िराअते फ़िस सुबहे)

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَ الْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ﴿1﴾

१. दिल को मोहने वाली लगातार चलने वाली धीमी हवा की क़सम !

فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ﴿2﴾

२. फिर ज़ोर से झोंका देने वालियों की क़सम!

وَّ النّٰشِرٰتِ نَشْرًا ﴿3﴾

३. और (बादल को) उभार कर फैलाने वालियों की क़सम !

فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ﴿4﴾

४. फिर सच-झूठ को अलग-अलग करने वाले।

فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ﴿5﴾

५. और वह्यी (प्रकाशना) लाने वाले फ़रिश्तों की क़सम!

عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ﴿6﴾

६. जो (वह्यी) इल्ज़ाम उतारने या आगाह कर देने के लिए होती है।

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ﴿7﴾

७. बेशक जिस चीज़ का तुम से वादा किया जाता है वह निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से होने वाली है।[1]

فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ﴿8﴾

८. तो जब तारे प्रकाशहीन (बेनूर) कर दिये जायेंगे।

وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ﴿9﴾

९. और जब आकाश तोड़-फोड़ दिया जायेगा।

وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ﴿10﴾

१०. और जब पहाड़ टुकड़े-टुकड़े करके उड़ा दिये जायेंगे।[2]

---

[1] क़सम का मतलब जिसकी क़सम खाई जाये उसका महत्व (अहमियत) लोगों पर स्पष्ट (वाज़ेह) करना और उसकी सच्चाई को ज़ाहिर करना होता है। जिसकी क़सम ली जा रही है वह (या क़सम का जवाब) यह है कि तुम से क़यामत का जो वादा किया जा रहा है वह ज़रूर वाक़ेअ (घटित) होगी, यानी उस में शक करने की नहीं बल्कि उस के लिए तैयारी करने की ज़रूरत है, यह क़यामत कब आयेगी? आगे की आयतों में वाज़ेह किया जा रहा है।

[2] यानी उन्हें धरती से उखाड़कर कण-कण (ज़र्रा-ज़र्रा) कर दिया जायेगा और धरती पूरी तरह से साफ और बराबर हो जायेगी।

وَإِذَا الرُّسُلُ أُقِّتَتْ ⑪

११. और जब रसूलों को मुक़र्रर वक़्त पर लाया जायेगा।

لِأَيِّ يَوْمٍ أُجِّلَتْ ⑫

१२. किस दिन के लिए (उन्हें) ठहराया गया है?[1]

لِيَوْمِ الْفَصْلِ ⑬

१३. फ़ैसले के दिन के लिए।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ⑭

१४. और तुझे क्या मालूम कि फ़ैसले का दिन क्या है?

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ⑮

१५. उस दिन झुठलाने वालों के लिए ख़राबी है।[2]

أَلَمْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِينَ ⑯

१६. क्या हम ने पहले के लोगों को नष्ट नहीं किया?

ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْآخِرِينَ ⑰

१७. फिर हम उन के बाद पिछलों को लाये।[3]

كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ⑱

१८. हम पापियों (मुजरिमों) के साथ इसी तरह करते हैं।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ⑲

१९. उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत (विनाश) है।

أَلَمْ نَخْلُقْكُمْ مِنْ مَاءٍ مَهِينٍ ⑳

२०. क्या हम ने तुम्हें तुच्छ (हक़ीर) पानी से (नुतफ़े से) पैदा नहीं किया।

فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَكِينٍ ㉑

२१. फिर हम ने उसे मज़बूत (और सुरक्षित) जगह में रखा।

---

[1] यह सवाल बड़ाई और ताज्जुब के लिए है, यानी कैसे महान दिन के लिए, जिसकी सख़्ती और गंभीरता लोगों के लिए बड़ी ताज्जुब वाली होगी, इन पैग़म्बरों को जमा होने का वक़्त दिया गया है।

[2] यानी विनाश (हलाक) हो, कुछ कहते हैं कि وَيْل जहन्नम (नरक) की एक वादी का नाम है, यह आयत इस सूरह में बार-बार दुहराई गई है, इसलिए कि हर झुठलाने वाले का गुनाह दूसरे से अलग तरह का होगा और इसी हिसाब से अज़ाब भी कई तरह के होंगे, इस तबाही के कई प्रकार (क़िस्में) हैं, जिन्हें झुठलाने वालों के लिए अलग-अलग बयान किया गया है। (फ़तहुल क़दीर)

[3] यानी मक्का के काफ़िर और उन से सहमत लोग, जिन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को झुठलाया।

إِلَىٰ قَدَرٍ مَّعْلُومٍ ﴿22﴾

२२. एक निर्धारित (मुक़र्रर) समय तक।

فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ الْقَادِرُونَ ﴿23﴾

२३. फिर हम ने अंदाजा लगाया[1] तो हम क्या अच्छा अंदाजा लगाने वाले हैं।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿24﴾

२४. उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश (हलाकत) है।

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ﴿25﴾

२५. क्या हम ने धरती को समेटने वाली नहीं बनाया?

أَحْيَاءً وَأَمْوَاتًا ﴿26﴾

२६. जिन्दों को भी और मुर्दों को भी।

وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شَامِخَاتٍ وَأَسْقَيْنَاكُم مَّاءً فُرَاتًا ﴿27﴾

२७. और हम ने उसमें ऊँचे (और भारी) पहाड़ बना दिये और तुम्हें सींचने वाला मीठा पानी पिलाया।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿28﴾

२८. उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश (हलाकत) है।

انطَلِقُوا إِلَىٰ مَا كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿29﴾

२९. उस (जहन्नम) की तरफ़ जाओ जिसे तुम झुठलाते रहे थे।

انطَلِقُوا إِلَىٰ ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ﴿30﴾

३०. चलो तीन शाखाओं वाले साये की तरफ़।

لَّا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي مِنَ اللَّهَبِ ﴿31﴾

३१. जो हक़ीक़त में न छाया देने वाली है और न ज्वाला (शोले) से बचा सकती है।

إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿32﴾

३२. बेशक (जहन्नम) चिंगारियाँ फेंकती है जो महल की तरह हैं।

كَأَنَّهُ جِمَالَتٌ صُفْرٌ ﴿33﴾

३३. जैसे कि वे पीले ऊँट हैं।[2]

---

[1] यानी माँ के गर्भाशय (रिहम) में जिस्म (शरीर) की बनावट और बनावट का सहीह अंदाजा किया कि दोनों आँखों, दोनों कानों, दोनों हाथों और पाँवों के बीच कितनी दूरी रहनी चाहिए।

[2] صُفْرٌ यह أَصْفَرُ (पीला) का बहुवचन (जमा) है, किन्तु अरब में इसका इस्तेमाल काले के मायने में भी है। इस मायने के आधार पर मतलब यह है कि उसकी एक-एक चिंगारी इतनी बड़ी होगी जैसे महल या क़िला, फिर हर चिंगारी के इतने बड़े-बड़े टुकड़े हो जायेंगे जैसे ऊँट होते हैं।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿34﴾

३४. उस दिन झुठलाने वालों की दुर्गति (हलाकत) है।

هَٰذَا يَوْمُ لَا يَنطِقُونَ ﴿35﴾

३५. आज (का दिन) वह दिन है कि ये बोल भी न सकेंगे।[1]

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ﴿36﴾

३६. न उन्हें उज्र (बहाना) करने की इजाजत दी जायेगी।[2]

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿37﴾

३७. उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है।

هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۖ جَمَعْنَاكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ﴿38﴾

३८. यह है फ़ैसले का दिन, हम ने तुम्हें और पहले के लोगों को (सब को) जमा कर लिया है।[3]

فَإِن كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُونِ ﴿39﴾

३९. तो अगर तुम मुझ से कोई चाल चल सकते हो तो चल लो।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿40﴾

४०. दुख है उस दिन झुठलाने वालों के लिए।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلَالٍ وَعُيُونٍ ﴿41﴾

४१. बेशक सदाचारी (मुत्तक़ी) लोग साये में होंगे और बहते हुए चश्मों (स्रोतों) में।

وَفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿42﴾

४२. और उन फलों में जिनकी वे इच्छा (तमन्ना) करें।

---

[1] महशर में काफ़िरों की अलग-अलग हालतें होंगी, एक वक़्त वह होगा जब वे वहाँ भी झूठ बोलेंगे, फिर अल्लाह तआला उन के मुँह पर मुहर लगा देगा और उनके हाथ-पाँव गवाही देंगे, फिर जिस पल उनको नरक में ले जाया जा रहा होगा उस वक़्त बेचैनी और बेक़रारी की हालत में उन की ज़बानें गूँगी हो जायेंगी। कुछ कहते हैं कि बोलेंगे तो ज़रूर लेकिन उन के पास कोई तर्क (दलील) नहीं होगा, मानो उन्हें बात करनी ही नहीं आती, जैसे हम दुनिया में भी ऐसे इंसान के बारे में कहते हैं जिस के पास संतोषजनक (तसल्ली बख़्श) जवाब नहीं होता, वह तो हमारे आगे बोल ही नहीं सका।

[2] मतलब यह है कि उन के पास पेश करने के लिए कोई उचित तर्क (दलील) ही नहीं होगा जिसे वह पेश करके आज़ाद हो सकें।

[3] यह अल्लाह तआला बंदों को संबोधित (मुख़ातिब) करेगा कि हम ने तुम्हें अपने पूरी क़ुदरत से फ़ैसले करने के लिए एक ही मैदान में जमा कर लिया है।

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿43﴾

४३. (हे जन्नत वालो!) खाओ-पिओ मजे से अपने किये हुए कर्मों (अमल) के बदले।

إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿44﴾

४४. बेशक हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं।[1]

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿45﴾

४५. उस दिन झुठलाने वालों के लिए दुख (खेद) है।

كُلُوا وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ﴿46﴾

४६. (हे झुठलाने वालो!) तुम (दुनिया में) थोड़ा सा खा-पी लो और फ़ायेदा उठा लो, बेशक तुम पापी हो।[2]

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿47﴾

४७. उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश (हलाकत) है।

وَإِذَا قِيْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا لَا يَرْكَعُوْنَ ﴿48﴾

४८. उन से जब कहा जाता है कि रूकूअ कर लो तो नहीं करते।[3]

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿49﴾

४९. उस दिन झुठलाने वालों का विनाश (हलाकत) है।[4]

فَبِأَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿50﴾

५०. अब इस (कुरआन) के बाद किस बात पर ईमान लायेंगे?[5]

---

1 इस में भी इस बात का प्रलोभन (तरग़ीब) और निर्देश (हिदायत) है कि अगर आख़िरत (परलोक) में अच्छे नतीजे की इच्छा रखते हो तो दुनिया में नेकी (सत्कर्म) और भलाई का रास्ता अपनाओ।

2 यह क़यामत के झुठलाने वालों को संबोधित (मुख़ातिब) किया गया है, तथा यह हुक्म धमकी और चेतावनी (तंबीह) के लिए है। अच्छा कुछ दिन मजा ले लो, तुम जैसे अपराधियों के लिए यातना (अज़ाब) का शिकंजा तैयार है।

3 यानी उनको नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया जाता है तो नमाज़ नहीं पढ़ते।

4 यानी उन के लिए जो अल्लाह तआला के हुक्मों, आज्ञा (इजाज़त) और निषेधों (मना) को नहीं मानते।

5 यानी जब इस क़ुरआन पर यक़ीन नहीं करेंगे तो इस के बाद कौन सी वाणी है जिस पर ईमान लायेंगे? यहाँ भी "हदीस" क़ुरआन को कहा गया है।

सूरतुन नबा-७८

سُورَةُ النَّبَإِ

सूरतुन नबा* मक्का में नाज़िल हुई और इस में चालीस आयतें और दो रूकुअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

१. ये लोग किस चीज़ की पूछताछ कर रहे हैं?

عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ (1)

२. उस बड़ी ख़बर की?

عَنِ النَّبَإِ الْعَظِيمِ (2)

३. जिस में ये कई राय हैं।

الَّذِي هُمْ فِيهِ مُخْتَلِفُونَ (3)

४. यक़ीनी तौर से ये अभी जान लेंगे।

كَلَّا سَيَعْلَمُونَ (4)

५. फिर यक़ीनी तौर से उन्हें बहुत जल्द मालूम हो जायेगा।[1]

ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ (5)

६. क्या हम ने धरती को फ़र्श नहीं बनाया।

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهَادًا (6)

७. और पहाड़ों को खूंटा नहीं बनाया।[2]

وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا (7)

---

* **सूरतुन नबा** : जब नबी (ﷺ) को नबूअत से सम्मानित (सरफ़राज़) किया गया और आप ने तौहीद और क़यामत वग़ैरह की चर्चा की और पाक कलाम क़ुरआन सुनाया तो काफ़िरों और मुशरिकों ने एक-दूसरे से सवाल करना शुरू किया कि क्या यह मुमकिन है? जैसा कि यह दावा कर रहे हैं या यह क़ुरआन हक़ीक़त में अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल है, जैसा कि मोहम्मद (ﷺ) कहता है, सवाल के ज़रिये अल्लाह ने पहले इन चीज़ों की हक़ीक़त उजागर की जो उनकी है, फिर ख़ुद ही जवाब दिया।

[1] यह डांट फटकार है कि जल्द ही सब कुछ मालूम हो जायेगा, आगे अल्लाह अपनी कारीगरी और अज़ीम क़ुदरत की चर्चा कर रहा है। ताकि तौहीद की सच्चाई उन के आगे स्पष्ट (वाज़ेह) हो और ईशदूत उन्हें जिस चीज़ की दावत दे रहा है उस पर यक़ीन करना उन के लिये आसान हो जाये।

[2] أَوْتَادًا यह وَتَدٌ का बहुवचन (जमा) है। खूंटे यानी पहाड़ों को धरती के लिये खूंटे बनाये ताकि धरती क़ायम रहे हिले नहीं, क्योंकि हिलने-डोलने की हालत में धरती रहने लायक़ ही नहीं होती।

८. और हम ने तुम्हें जोड़े-जोड़े पैदा किये ।[1]

وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ﴿8﴾

९. और हम ने तुम्हारी नींद को तुम्हारे आराम की वजह बनाया ।[2]

وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ﴿9﴾

१०. और रात को हम नें पर्दा बनाया ।

وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ﴿10﴾

११. और दिन को हम ने रोज़ी हासिल करने का समय बनाया ।[3]

وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ﴿11﴾

१२. और तुम्हारे ऊपर हम ने सात मज़बूत आसमान बनाये ।

وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ﴿12﴾

१३. और एक चमकता हुआ रौशन चिराग़ पैदा किया ।

وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ﴿13﴾

१४. और बादलों से हम ने मूसलाधार पानी बरसाया ।[4]

وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ﴿14﴾

१५. ताकि उस से अन्न और वनस्पति (नवातात) उगायें ।[5]

لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ﴿15﴾

१६. और घने बाग़ भी (उगायें) ।[6]

وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ﴿16﴾

---

[1] पुरूष-स्त्री, नर-मादा, यानी أزواج का मतलब क़िस्म और वर्ण है यानी कई रूपों और रंगों में पैदा किया, (ख़ूबसूरत-बदसूरत), लम्बा, छोटा, गोरा, काला, आदि (वग़ैरह) ।

[2] سُبَاتً का मायने काटना है, रात भी जीव-जन्तुओं की सारी हरकतें कम कर देती है ताकि सुकून हो जाये और वे आराम से सो सकें, या मतलब यह है कि रात तुम्हारे कर्मों (अमलों) को ख़त्म कर देती है, काम ख़त्म होने का मतलब आराम है ।

[3] मतलब यह है कि दिन को प्रकाशमान (रौशन) बनाया ताकि लोग रोज़ी हासिल करने के लिये मेहनत कर सकें ।

[4] مُعْصِرَات वह बदलियाँ जो पानी से भरी हुई हो लेकिन अभी बरसी न हों । जैसे المرأة المُعْصِرَة उस औरत को कहते हैं जिसकी विलादत का वक़्त क़रीब हो, ثَجَّاجًا ज़्यादा मूसलाधार पानी ।

[5] حَبّ (दाना) वह अन्न जिसे खाने के लिये ढेर कर लिया जाता है, जैसे गेहूँ, चावल, जौ, मकाई वग़ैरह और वनस्पतियाँ, तरकारियाँ और चारे वग़ैरह जो जानवर खाते हैं ।

[6] ألفافا शाखाओं के ज़्यादा होने की वजह से एक-दूसरे से मिले पेड़ यानी घने बाग़ ।

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ﴿17﴾

१७. बेशक फ़ैसले का दिन निर्धारित (मुक़र्रर) है।

يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا ﴿18﴾

१८. जिस दिन कि नरसिंघ (सूर) फूंका जायेगा, फिर तुम सब दल के दल बन कर आओगे।[1]

وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ﴿19﴾

१९. और आकाश खोल दिया जायेगा तो उस में दरवाज़े-दरवाज़े हो जायेंगे।

وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿20﴾

२०. और पहाड़ चलाये जायेंगे तो वे सफ़ेद बालू हो जायेंगे।[2]

إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿21﴾

२१. बेशक नरक घात में है।

لِّلطَّاغِينَ مَآبًا ﴿22﴾

२२. उद्दण्डियों (सरकशों) की जगह वही है।

لَّابِثِينَ فِيهَا أَحْقَابًا ﴿23﴾

२३. उस में वे कई युगों (और सदियों) तक पड़े रहेंगे।[3]

لَّا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ﴿24﴾

२४. न कभी उस में ठंड का मज़ा चखेंगे न पानी का।

إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ﴿25﴾

२५. सिवाय गर्म पानी और बहती हुई पीप के।

جَزَاءً وِفَاقًا ﴿26﴾

२६. (उन को) पूरी तरह से बदला मिलेगा।

إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ﴿27﴾

२७. उन्हें तो हिसाब की उम्मीद ही न थी।

وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَّابًا ﴿28﴾

२८. वे बेबाकी से हमारी आयतों को झुठलाते थे।

---

[1] कुछ ने इस का मायने यह बयान किया है कि हर क़ौम अपने रसूल के साथ हश्र के मैदान में आयेगी यह दूसरा नफ़ख़ा (फूंक) होगा जिस में सब लोग क़ब्रों से ज़िन्दा होकर निकल आयेंगे।

[2] سَرَابٌ वह रेत जो दूर से पानी लगे, पहाड़ भी रेत के समान दूर से दिखने वाली चीज़ बनकर रह जायेंगे, और फिर बिल्कुल ख़त्म हो जायेंगे उनका निशान तक नहीं रह जायेगा।

[3] أَحْقَابٌ बहुवचन (जमा) है حُقُبٌ का मतलब है युग (ज़माना)। मतलब सदा और हमेशा है, वह सदा के लिये जहन्नम में रहेंगे, यह अज़ाब काफ़िरों और मुशरिकों के लिये है।

وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَٰهُ كِتَٰبًا (29)

२९. हम ने हर बात को लिख कर सुरक्षित (महफ़ूज़) रखा है।

فَذُوقُوا فَلَن نَّزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا (30)

३०. अब तुम (अपने किये का) मज़ा चखो, हम तुम्हारा अज़ाब ही बढ़ाते जायेंगे।

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا (31)

३१. बेशक परहेज़गारों के लिये कामयाबी है।

حَدَآئِقَ وَأَعْنَٰبًا (32)

३२. बाग़ात हैं और अंगूर हैं।

وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا (33)

३३. और नवयुवती कुंवारी हम उम्र औरतें हैं।

وَكَأْسًا دِهَاقًا (34)

३४. और छलकते हुए मदिरा के प्याले हैं।

لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَّٰبًا (35)

३५. वहाँ न तो वे अश्लील (लग़्व) बातें सुनेंगे और न झूठी बातें सुनेंगे।

جَزَآءً مِّن رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا (36)

३६. (उनको) तेरे रब की तरफ़ से (उनकी नेकियों का) यह बदला मिलेगा जो काफ़ी उपहार (इंआम) होगा।

رَّبِّ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمَٰنِ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا (37)

३७. (उस) रब की तरफ़ से मिलेगा जो कि आकाशों का धरती का और जो कुछ उस के बीच है उनका रब है और बड़ा दयालु (रहमान) है। किसी को उस से बातचीत करने का हक़ नहीं होगा।

يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلَٰٓئِكَةُ صَفًّا لَّا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَقَالَ صَوَابًا (38)

३८. जिस दिन रूह (आत्मा) और फ़रिश्ते सफ़ बाँध कर खड़े होंगे, तो कोई बात न कर सकेगा, लेकिन जिसे बड़ा दयालु (रहमान) आज्ञा दे और वह ठीक बात मुँह से निकाले।

ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَن شَآءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ مَـَٔابًا (39)

३९. यह दिन सच है, अब जो चाहे अपने रब के पास (नेक काम कर के) जगह बना ले।[1]

[1] उस आने वाले दिन को सामने रखते हुए ईमान और तक़्वा का जीवन अपनाये ताकि उस दिन उसे वहाँ अच्छी जगह मिल जाये।

إِنَّا أَنذَرْنَاكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ يَنظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكَافِرُ يَا لَيْتَنِي كُنتُ تُرَابًا ﴿40﴾

४०. हम ने तुम्हें क़रीब भविष्य (मुस्तक़बिल) में घटित (वाक़े) होने वाले अज़ाब से डरा दिया (और आगाह कर दिया) जिस दिन इंसान अपने हाथों की कमाई को देख लेगा, और काफ़िर कहेगा कि काश मैं मिट्टी बन जाता ।[1]

सूरतुन नाज़िआत-७९

سُورَةُ النَّازِعَاتِ

यह सूरत मक्का में नाज़िल हुई और इस में छियालीस आयतें और दो रूकूअ़ हैं ।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

وَالنَّازِعَاتِ غَرْقًا ﴿1﴾

१. डूबकर कठोरता (सख़्ती) से खीचनें वालों की क़सम ।[2]

وَالنَّاشِطَاتِ نَشْطًا ﴿2﴾

२. बंधन खोल कर छुड़ाने वालों की क़सम ।

وَالسَّابِحَاتِ سَبْحًا ﴿3﴾

३. और तैरने फिरने वालों की क़सम ।[3]

---

[1] जब वह अपने भयानक अंजाम का अवलोकन (मुशाहिदा) करेगा तो यह कामना (तमन्ना) करेगा । कुछ कहते हैं अल्लाह जानवरों के बीच भी इंसाफ़ से फ़ैसला करेगा, यहाँ तक कि एक सींग वाली बकरी ने बिना सींग की बकरी पर कोई ज़ुल्म किया होगा तो उस का भी बदला दिलायेगा । इस के बाद अल्लाह जानवरों को हुक्म देगा कि मिट्टी हो जाओ तो वह मिट्टी हो जायेंगे, उस समय काफ़िर भी तमन्ना करेंगे कि काश वह भी जानवर होते और आज मिट्टी बन जाते । (इब्ने कसीर)

[2] **सूरतुन नाज़िआत** : نَزْعٌ का मतलब है कड़ाई से खींचना । غَرْقًا डूब कर- यह जान निकालने वाले फ़रिश्तों का बयान है, फ़रिश्ते काफ़िरों का प्राण (रूह) बड़ी कड़ाई से निकालते हैं और शरीर में डूबकर ।

[3] سَبْحٌ का मतलब तैरना है । फ़रिश्ते जान निकालने के लिये इंसान के शरीर (जिस्म) में ऐसे तैरते फिरते हैं, जैसे गोताखोर मोती निकालने के लिये समुद्र की गहराईयों में तैरता है या यह मतलब है कि बहुत तेज़ गति से अल्लाह का हुक्म लेकर आकाशों से उतरते हैं, क्योंकि तेज़ रफ़्तार घोड़े को भी سَابِح कहते हैं ।

४. फिर दौड़ कर आगे बढ़ने वालों की क़सम।

فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ⓸

५. फिर कामों का इन्तेज़ाम करने वालों की क़सम।

فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ⓹

६. जिस दिन काँपने वाली काँपेंगी।[1]

يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ⓺

७. उस के बाद एक पीछे आने वाली (पीछे-पीछे) आयेगी।[2]

تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ⓻

८. (बहुत से) दिल उस दिन धड़कते होंगे।

قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ⓼

९. जिन के नेत्र (निगाहें) नीचे होंगे।

اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ⓽

१०. कहते हैं कि क्या हम पहले जैसी हालत में फिर लौटाये जायेंगे?

يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِى الْحَافِرَةِ ⑩

११. क्या उस समय जब हम कमज़ोर हड्डियों में हो जायेंगे।

ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ⑪

१२. कहते हैं कि यह लौटना फिर नुक़सान वाला है। (मालूम होना चाहिये)

قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ⑫

१३. वह तो केवल एक (भयानक) फटकार है कि (जिस के पैदा होते ही)।

فَاِنَّمَا هِىَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ⑬

१४. वह फ़ौरन मैदान में जमा हो जायेंगे।

فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ⑭

१५. क्या मूसा (عليه السلام) की कहानी भी तुम्हें मालूम है?

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ⑮

---

[1] यह पहला नफ़ख़ा (फूँक) होगा, जिसे विनाश (फ़ना) की फूँक कहते हैं, जिस से पूरी धरती काँपने लगेगी और हर चीज़ बरबाद हो जायेगी।

[2] यह दूसरा नफ़ख़ा होगा, जिस से सब ज़िन्दा हो जायेंगे और क़ब्रों से निकल आयेंगे। यह दूसरा नफ़ख़ा (फूँक) पहले नफ़ख़ा के चालीस साल बाद होगा, इसे رادفة इसलिये कहा जाता है कि यह पहली फूँक के बाद ही होगा यानी दूसरा नफ़ख़ा पहले नफ़ख़े के पीछे होगा।

إِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿16﴾

१६. जबकि उन के रब ने उन्हें पाक मैदान तुवा में पुकारा।[1]

اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿17﴾

१७. कि तुम फ़िरऔन के पास जाओ उस ने उद्दण्डता (सरकशी) अपना ली है।

فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰٓى اَنْ تَزَكّٰى ﴿18﴾

१८. उस से कहो कि क्या तू अपना सुधार और शोधन (इस्लाह) चाहता है।

وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ﴿19﴾

१९. और यह कि मैं तुझे तेरे रब का रास्ता दिखाऊँ ताकि तू (उस से) डरने लगे।

فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ﴿20﴾

२०. तो उसे बड़ी निशानी दिखायी।

فَكَذَّبَ وَعَصٰى ﴿21﴾

२१. तो उस ने झुठलाया और नाफ़रमानी की।

ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ﴿22﴾

२२. फिर पलटा कोशिश करते हुए।[2]

فَحَشَرَ فَنَادٰى ﴿23﴾

२३. फिर सब को जमा करके ऊँची आवाज़ में पुकारा।

فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ﴿24﴾

२४. कहा कि तुम सब का बड़ा रब मैं ही हूँ।

فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى ﴿25﴾

२५. तो (सब से बुलन्द और अज़ीम) अल्लाह ने भी उसे आख़िरत और इस दुनिया के अज़ाबों में घेर लिया।

---

[1] यह उस वक़्त की कहानी है जब मूसा (ﷺ) मदयन से वापसी पर आग की खोज में तूर पहाड़ पर पहुँच गये थे तो वहाँ एक पेड़ की आड़ से अल्लाह ने मूसा से बातचीत की, जैसा कि सविस्तार (तफ़सील) सूरत ताहा के शुरू में गुज़रा। طُوًى तुवा उस जगह का नाम है, बात करने से मुराद नबूअत और रिसालत (दूतत्व) से सम्मानित (सरफ़राज़) करना है यानी मूसा (ﷺ) आग लेने गये और अल्लाह ने उन्हें संदेशवाहक (रसूल) मुक़र्रर कर दिया, जैसे कि आगे फ़रमाया।

[2] यानी उस ने ईमान और हुक्म पालन (पैरवी) से इंकार ही नहीं किया बल्कि धरती में फ़साद फैलाने का और मूसा के मुक़ाबले की कोशिश करता रहा, और जादूगरों को जमा करके मूसा (ﷺ) से मुक़ाबला कराया ताकि उन को झूठा साबित किया जा सके।

२६. बेशक इस में उस इंसान के लिये इबरत (नसीहत) है, जो डरे ।[1]

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ﴿26﴾

२७. क्या तुम्हारा पैदा करना कठिन है या आकाश का? अल्लाह तआला ने उसे बनाया ।

ءَأَنتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ ۚ بَنَاهَا ﴿27﴾

२८. उस की ऊँचाई बढ़ायी फिर उसे ठीक-ठाक कर दिया ।[2]

رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوَّاهَا ﴿28﴾

२९. और उस की रात को अंधकारमय बनाया और उस के दिन को निकाला ।

وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ﴿29﴾

३०. और उस के बाद धरती को (बराबर) बिछा दिया ।[3]

وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَٰلِكَ دَحَاهَا ﴿30﴾

३१. उस में से पानी और चारा निकाला ।

أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا ﴿31﴾

३२. और पहाड़ों को (मजबूत) रूप से गाड़ दिया ।

وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ﴿32﴾

३३. ये सब तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के फ़ायदे के लिये (हैं) ।

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ﴿33﴾

३४. तो जब वह बड़ी मुसीबत (क़यामत) आ जायेगी ।

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَّةُ الْكُبْرَىٰ ﴿34﴾

---

[1] इस में नबी (ﷺ) के लिये सांत्वना (तसल्ली) है और मक्का के काफ़िरों को चेतावनी है कि अगर उन्होंने पिछले लोगों की घटनाओं (वाक़ेआत) से नसीहत हासिल न की तो उनका अंत फ़िरऔन की तरह हो सकता है ।

[2] कुछ ने سَمْكَ का मायने छत भी किया है, ठीक-ठाक करने का मतलब उसे ऐसी शक्ल में ढालना है जिस में कोई फ़र्क़, फटन और ऐब बाक़ी न रहे ।

[3] यह हा मीम अससज्दः ९ में गुजर चुका है कि خَلَق (पैदा करना) और चीज़ है और دَحَى (बराबर करना) दूसरा विषय है, धरती की रचना (बनाना) आकाश से पहले हुई है, लेकिन इस को बराबर आसमान बनाने के बाद किया गया है और यहाँ इसी हक़ीक़त का बयान है और बराबर करने और फैलाने का मतलब धरती को रहने लायक़ बनाने के लिये जिन चीज़ों की ज़रूरत है अल्लाह ने उनकी व्यवस्था (तदबीर) की, जैसे धरती से पानी निकाला उस में चारा और अनाज पैदा किया, पहाड़ों को कीलों की तरह मज़बूत गाड़ दिया ताकि धरती न डोले जैसाकि यहाँ आगे भी यही बयान है ।

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ مَا سَعَىٰ (35)

३५. जिस दिन कि इंसान अपने किये हुए कर्मों (अमल) को याद करेगा।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِمَن يَرَىٰ (36)

३६. और (हर) देखने वाले के सामने जहन्नम ज़ाहिर कर दी जायेगी।

فَأَمَّا مَن طَغَىٰ (37)

३७. तो जिस (इंसान) ने उद्दण्डता (सरकशी) अपनायी (होगी)।

وَآثَرَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا (38)

३८. और दुनियावी ज़िन्दगी को वरीयता (तरजीह) दी (होगी)।

فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ (39)

३९. तो (उसका) ठिकाना जहन्नम ही है।

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ (40)

४०. लेकिन जो इंसान अपने रब के सामने खड़े होने से डरता रहा होगा और अपने मन को इच्छाओं से रोका होगा।

فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ (41)

४१. तो उसकी जगह जन्नत ही है।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا (42)

४२. लोग आप से क़यामत (प्रलय) क़ायम होने का समय पूछते हैं।

فِيمَ أَنتَ مِن ذِكْرَاهَا (43)

४३. आप को उस के बयान करने से क्या सम्बन्ध (ताल्लुक़)?

إِلَىٰ رَبِّكَ مُنتَهَاهَا (44)

४४. उस के (इल्म का) अंत तो आप के रब की तरफ़ है।

إِنَّمَا أَنتَ مُنذِرُ مَن يَخْشَاهَا (45)

४५. आप तो केवल उस से डरते रहने वालों को सावधान (आगाह) करने वाले हैं।[1]

كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا (46)

४६. जिस दिन ये उसे देख लेंगे तो ऐसा प्रतीत (महसूस) होगा कि केवल दिन का आख़िरी हिस्सा या पहला हिस्सा ही (संसार में) रहे हैं।

[1] यानी आप का काम केवल إنذار (डराना) है, न कि परोक्ष (ग़ैब) की ख़बरें देना, जिस में क़यामत का इल्म है जो अल्लाह ने किसी को नहीं दिया है। مَن يَخْشَاهَا इसलिए कहा कि तंबीह (चेतावनी) और दीन की तबलीग़ से असली फ़ायेदा उसी को मिलता है जिन के दिलों में अल्लाह का डर होता है, नहीं तो डराने और संदेश पहुँचाने का हुक्म तो हर एक के लिये है।

सूरतु अबस-८०

سُورَةُ عَبَسَ

सूरतु अबस मक्का में नाज़िल हुई और इस में बयालिस आयतें और एक रूकुअ़ है।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

عَبَسَ وَتَوَلّٰىٓ ﴿1﴾

१. उस ने खट्टा मुंह बनाकर मुंह मोड़ लिया।

اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ﴿2﴾

२. (केवल इसलिये) कि उस के पास एक अंधा आया।[1]

وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰىٓ ﴿3﴾

३. तुझे क्या पता शायद वह सुधर जाता।

اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ﴿4﴾

४. या नसीहतें सुनता और उसे नसीहतें फ़ायेदा पहुंचाती।

اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ﴿5﴾

५. (लेकिन) जो लापरवाही करता है।

فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ﴿6﴾

६. उसकी तरफ़ तो तू पूरा ध्यान दे रहा है।

وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ﴿7﴾

७. हालांकि उसके न सुधरने से तेरी कोई हानि (नुक़सान) नहीं।[2]

وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى ﴿8﴾

८. और जो इंसान तेरी तरफ़ दौड़ता हुआ आता है।

---

[1] **सूरतु अबस** : इस के नाज़िल होने के बारे में सभी मुफ़स्सिरों का इत्तेफ़ाक है कि यह अब्दुल्लाह पुत्र उम्मे मक्तूम के बारे में उतरी। एक बार नबी (ﷺ) की ख़िदमत में क़ुरैश के प्रमुख (सरदार) लोग मौजूद बातें कर रहे थे कि अचानक इब्ने उम्मे मक्तूम जो अंधे थे हाज़िर हुए और नबी (ﷺ) से धर्म की बातें पूछने लगे, नबी (ﷺ) ने इसे बुरा माना और कुछ कम ध्यान दिया, इसलिए तंबीह के तौर पर इन आयतों का अवतरण (नुज़ूल) हुआ। (तिर्मिज़ी, सूरतु अबस, अलबानी ने इस हदीस को सहीह कहा है)

[2] आप को ज़्यादा ध्यान दिलाया गया कि मुख़लिसों को छोड़ कर मुख़ालिफ़ लोगों की तरफ़ ध्यान देना सही बात नहीं है।

وَهُوَ يَخْشَىٰ (9)

९. और वह डर (भी) रहा है।

فَأَنتَ عَنْهُ تَلَهَّىٰ (10)

१०. तो तू उस से बेरुख़ी बरतता है।

كَلَّا إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ (11)

११. यह ठीक नहीं[1] (क़ुरआन तो) शिक्षा की (चीज़) है।

فَمَن شَاءَ ذَكَرَهُ (12)

१२. जो चाहे उस से शिक्षा ले।

فِي صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ (13)

१३. यह तो बाइज़्ज़त सहीफ़ों में है।

مَّرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ (14)

१४. जो बुलन्द और पाक और साफ़ है।

بِأَيْدِي سَفَرَةٍ (15)

१५. ऐसे लिखने वालों के हाथों में है।

كِرَامٍ بَرَرَةٍ (16)

१६. जो ऊँचे दर्जे के पवित्र (पाक) हैं।

قُتِلَ الْإِنسَانُ مَا أَكْفَرَهُ (17)

१७. अल्लाह की मार, इंसान भी कितना कृतघ्न (नाशुक्रा) है।[2]

مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ (18)

१८. उसे किस चीज़ से पैदा किया।

مِن نُّطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّرَهُ (19)

१९. एक वीर्य (नुतफ़ा) से पैदा किया,[3] फिर उसको अंदाजा पर रखा।

---

[1] यानी ऐसे लोगों का तो सम्मान बढ़ाने की ज़रूरत है न कि उन से मुँह फेरने की। इस आयत से यह बात मालूम हुई कि आमंत्रण (दावत) और धर्म के प्रचार (तबलीग़) में किसी को विशेष नहीं करना चाहिये। बल्कि अमीर-गरीब, मालिक-नौकर, नर-नारी, छोटे-बड़े को एक तरह समझा जाये और सब को एक साथ सम्बोधित (मुख़ातिब) किया जाये, अल्लाह जिसे चाहेगा अपनी हिक्मत से हिदायत से सम्मानित (सरफ़राज़) करेगा।

[2] इस से वह इंसान मुराद है जो बिना दलील और सुबूत के क़यामत का इंकार करते हैं قُتِلَ का मतलब لُعِنَ और مَا أَكْفَرَهُ ताज्जुब के तौर पर है, कितना नाशुक्रा है, आगे इस नाशुक्रे इंसान को ग़ौर-फ़िक्र करने का आमन्त्रण (दावत) दिया जा रहा है ताकि हो सकता है वह अपने कुफ़्र से रुक जाये।

[3] यानी जिसकी उत्पत्ति (पैदाईश) ऐसी तुच्छ (हक़ीर) पानी की बूँद से हुई है, क्या उसे घमंड शोभा (ज़ीनत) देता है।

ثُمَّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُ ﴿20﴾

२०. फिर उस के लिये रास्ता आसान किया।

ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ﴿21﴾

२१. फिर उसे मौत दी फिर क़ब्र में गाड़ दिया।

ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنْشَرَهُ ﴿22﴾

२२. फिर जब चाहेगा उसे जीवन प्रदान (अता) करेगा।

كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَا أَمَرَهُ ﴿23﴾

२३. कभी नहीं, उस ने अब तक अल्लाह के हुक्म का पालन (पैरवी) नहीं किया।

فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَىٰ طَعَامِهِ ﴿24﴾

२४. इन्सान को चहिए कि अपने आहार (खाने) की तरफ़ देख ले।

أَنَّا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا ﴿25﴾

२५. कि हम ने ख़ूब पानी बरसाया।

ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ﴿26﴾

२६. फिर धरती को अच्छी तरह फाड़ा,

فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ﴿27﴾ وَعِنَبًا وَقَضْبًا ﴿28﴾

२७-२८. फिर उस में अन्न उपजाये और अंगूर और तरकारी

وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ﴿29﴾

२९. और ज़ैतून और खजूर

وَحَدَائِقَ غُلْبًا ﴿30﴾

३०. और घने बाग़

وَفَاكِهَةً وَأَبًّا ﴿31﴾

३१. और सूखे फल और (घास) चारा[1] भी

مَتَاعًا لَكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ﴿32﴾

३२. तुम्हारे प्रयोग (इस्तेमाल) और फ़ायदे के लिये और तुम्हारे चौपाये के लिये

فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَّةُ ﴿33﴾

३३. फिर जब कान बहरे करने वाली (क़यामत)[2] आ जायेगी

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ﴿34﴾

३४. तो आदमी उस दिन भागेगा अपने भाई से

وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ﴿35﴾

३५. अपनी माँ और बाप से

---

[1] أَبًّا वह घास चारा जो ख़ुद उगता है जिसे पशु खाते हैं।

[2] क़यामत (प्रलय) को صَاخَّة बहरा करने वाली इसलिये कहा कि वह एक तेज चीख के साथ घटित (वाक़े) होगी जो कानों को बहरा कर देगी।

وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ﴿36﴾

३६. अपनी पत्नी और संतान (औलाद) से

لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ﴿37﴾

३७. उन में से हर एक को उस दिन एक ऐसी फ़िक्र (ग़म) होगी जो उसे (मशग़ूल रखने को) काफ़ी होगी।[1]

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿38﴾

३८. बहुत से चेहरे उस दिन रौशन होंगे।[2]

ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿39﴾

३९. (जो) हँसते हुए ख़ुश होंगे।

وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿40﴾

४०. और बहुत से चेहरे उस दिन धूल मे अटे होंगे।

تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿41﴾

४१. उन पर कलिमा (स्याही) चढ़ी होगी।

أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿42﴾

४२. वे यही काफ़िर दुराचारी लोग होंगे।

सूरतुत तकवीर-८१

سُورَةُ التَّكْوِيرِ

सूरतुत तकवीर* मक्का में नाज़िल हुई और इस में उन्तीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

[1] या अपने क़रीबी रिश्तेदारों और दोस्तों से बेनियाज और बेपरवाह कर देगा। हदीस में आता है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया : सब लोग हश्र के मैदान में नंगे शरीर नंगे पावों पैदल और बिना ख़तना के होंगे हज़रत आयेशा ने सवाल किया, इस तरह शर्मगाहों पर निगाह नहीं पड़ेगी, आप ने इस के जवाब में यही आयत पढ़ी, यानी (لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ) संक्षिप्त (मुख़्तसर) आयत।

[2] यह ईमान वालों के चेहरे होंगे जिन को उन के कर्मपत्र (आमालनामा) उन के दायें हाथ में मिलेंगे, जिस से उन्हें अपनी आख़िरत की सआदत (सौभाग्य) और कामयाबी का यक़ीन हो जायेगा जिस से उन के चेहरे ख़ुशी से दमक रहे होंगे।

* **सूरतुत तकवीर** : इस सूरह में ख़ास तौर से क़यामत का चित्रण (जिक्र) किया गया है। इसीलिये रसूल अल्लाह (ﷺ) का कथन है कि जो इंसान चाहे कि क़यामत को इस तरह देखे जैसे आँखों से देखा जाता है तो उसे चाहिए कि वह (إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ) और (إِذَا السَّمَاءُ انفَطَرَتْ) ध्यान से पढ़े। (तिर्मिज़ी, तफ़सीर सूरतुत तकवीर, मुसनद अहमद २।२७,३६, १०० ज़करुहुल अलबानी फ़िस सहीह: न॰ १०८१, भाग-३)

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ﴿1﴾

१. जब सूरज लपेट लिया जायेगा ।[1]

وَإِذَا النُّجُومُ انكَدَرَتْ ﴿2﴾

२. और जब सितारे बिना प्रकाश (रौशनी) के हो जायेंगे ।

وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ﴿3﴾

३. और जब पहाड़ चलाये जायेंगे ।

وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ﴿4﴾

४. और जब गर्भवती (हामेला) ऊँटनियाँ छोड़ दी जायेंगी ।[2]

وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ﴿5﴾

५. और जब वन प्राणी (वहशी, दरिंद्र) जमा किये जायेंगे ।

وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ﴿6﴾

६. और जब समुद्र भड़काये जायेंगे ।

وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ﴿7﴾

७. और जब प्राणें (रूहें) मिला दी जायेंगी ।

وَإِذَا الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ﴿8﴾

८. और जब जिन्दा गाड़ी गयी लड़कियों से सवाल किया जायेगा ।

بِأَيِّ ذَنبٍ قُتِلَتْ ﴿9﴾

९. कि किस पाप की वजह से उन को क़त्ल किया गया ।

وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ﴿10﴾

१०. और जब कर्मपत्र (आमालनामा) खोल दिये जायेंगे ।[3]

وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ﴿11﴾

११. और जब आकाश की खाल खींच ली जायेगी ।[4]

---

[1] यानी जिस तरह सिर पर पगड़ी लपेटी जाती है, उसी तरह सूरज को लपेट दिया जायेगा, जिस की वजह से उसकी रौशनी ख़ुद ख़त्म हो जायेगी ।

[2] عِشَار बहुवचन (जमा) है عُشَرَاء का गर्भवती (हामेला) यानी गाभिन ऊँटनियाँ जब उनका गर्भ (हमल) दस महीनों का हो जाता है तो अरबों में यह पसन्दीदा और क़ीमती मानी जाती थीं । जब क़यामत होगी तो ऐसा भयानक दृश्य (मंज़र) होगा कि अगर किसी के पास इस तरह की क़ीमती ऊँटनियाँ होंगी तो उन्हें भी छोड़ देगा और उनकी परवाह नहीं करेगा ।

[3] मौत के वक़्त यह कर्मपत्र (आमालनामा) लपेट दिये जाते हैं, फिर क़यामत के दिन हिसाब के लिये खोल दिये जायेंगे जिन्हें हर इंसान देख लेगा बल्कि हाथों में पकड़वा दिये जायेंगे ।

[4] यानी वह इस तरह उधेड़ दिये जायेंगे जैसे छत उधेड़ दी जाती है ।

وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ (12)

१२. और जब जहन्नम भड़कायी जायेगी।

وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ (13)

१३. और जब जन्नत क़रीब कर दी जायेगी।

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ (14)

१४. तो उस दिन हर इंसान यह जान लेगा, जो कुछ लेकर आया होगा।

فَلَا أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ (15)

१५. मैं क़सम खाता हूँ पीछे हटने वाले।

الْجَوَارِ الْكُنَّسِ (16)

१६. चलने-फिरने वाले छिपने वाले सितारों की।

وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ (17)

१७. और रात की जब जाने लगे।[1]

وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ (18)

१८. और सुबह की जब चमकने लगे।

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ (19)

१९. बेशक यह एक बाइज़्ज़त रसूल का कथन (क़ौल) है।

ذِي قُوَّةٍ عِندَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ (20)

२०. जो ताक़त वाला है, अर्श वाले (अल्लाह) के क़रीब बुलन्द मर्तबा है।

مُّطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ (21)

२१. जिसका वहाँ (आसमानों पर आज्ञा का) पालन किया जाता है (वह) न्यासिक (अमीन) है।

وَمَا صَاحِبُكُم بِمَجْنُونٍ (22)

२२. और तुम्हारा साथी दीवाना नहीं है।[2]

وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِينِ (23)

२३. उस ने उस (फ़रिश्ते) को आकाश के खुले किनारे पर देखा भी है।

---

[1] عَسْعَسَ का दोनों मतलब है आना और जाना, यह इन दोनों ही मायनों में इस्तेमाल होता है, फिर भी यहाँ जाने के मायने में है।

[2] यह ख़िताब मक्का के लोगों को है और साथी से मुराद रसूल अल्लाह (ﷺ) हैं यानी जो तुम सोंचते हो कि तुम्हारा साथी मोहम्मद (ﷺ) نَعُوذُ بِاللهِ दीवाना हैं तो ऐसा नहीं, तनिक क़ुरआन पढ़कर तो देखो क्या कोई पागल ऐसे इल्म और हिक्मत का बयान कर सकता है और पिछली समुदायों (क़ौम) की सही-सही हालत बता सकता है जो इस क़ुरआन में बयान किये गये हैं।

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ﴿24﴾

२४. और यह परोक्ष (ग़ैब) की बातें बताने में कंजूस भी नहीं हैं।[1]

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَٰنٍ رَّجِيمٍ ﴿25﴾

२५. और यह (क़ुरआन) धिक्कृत (मरदूद) शैतान का क़ौल नहीं।

فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ﴿26﴾

२६. फिर तुम कहाँ जा रहे हो।

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَٰلَمِينَ ﴿27﴾

२७. यह तो सारी दुनिया वालों के लिए नसीहत है।

لِمَن شَآءَ مِنكُمْ أَن يَسْتَقِيمَ ﴿28﴾

२८. (ख़ास तौर से उस के लिये) जो तुम में से सीधे रास्ता पर चलना चाहे।

وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّآ أَن يَشَآءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَٰلَمِينَ ﴿29﴾

२९. और तुम बिना सारी दुनिया के रब के चाहे कुछ नहीं चाह सकते।[2]

سُورَةُ الانفِطَارِ

सूरतुल इंफ़ितार-८२

सूरतुल इंफ़ितार मक्का में नाज़िल हुई और इस में उन्नीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

إِذَا السَّمَآءُ انفَطَرَتْ ﴿1﴾

१. जब आकाश फट जायेगा।

وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انتَثَرَتْ ﴿2﴾

२. और जब सितारे झड़ जायेंगे।

---

[1] यह नबी (ﷺ) के बारे में स्पष्ट (वाज़ेह) किया जा रहा है कि आप को जिन बातों की ख़बर दी जाती है, जो आज्ञा (अहकाम) और फ़रायेज़ आप को बतलाये जाते हैं इन में से कोई बात आप अपने पास नही रखते, बल्कि संदेश (पैग़ाम) पहुँचाने के ज़िम्मेदारी का एहसास करते हुए हर बात और हुक्म लोगों को पहुँचा देते हैं।

[2] यानी तुम्हारी चाहत अल्लाह की मेहरबानी पर निर्भर (मुन्हसिर) है जब तक तुम्हारी चाहत के साथ अल्लाह की इच्छा और दया भी शामिल न हो उस समय तक तुम सीधा रास्ता नहीं अपना सकते। यह वही विषय है जो आयत (إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ) वग़ैरह में बयान हुआ है।

وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ﴿3﴾

३. और जब समुद्र बह चलेंगे।

وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ﴿4﴾

४. और जब क़ब्रें (फाड़कर) उखाड़ दी जायेंगी।

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ ﴿5﴾

५. उस समय हर इंसान अपने आगे भेजे हुए और पीछे छोड़े हुए (यानी अगले-पिछले कर्मों को) जान लेगा।

يَا أَيُّهَا الْإِنسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ﴿6﴾

६. हे इंसान! तुझे अपने दयालु रब से किस चीज ने बहकाया।[1]

الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ ﴿7﴾

७. जिस (रब ने) तुझे पैदा किया फिर ठीक-ठाक किया फिर (मुनासिब तरीक़े से) बराबर बनाया।

فِي أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ﴿8﴾

८. जिस रूप में चाहा तुझे बना दिया और तुझे ढाला।[2]

كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُونَ بِالدِّينِ ﴿9﴾

९. कभी नहीं, बल्कि तुम तो सजा और बदले के दिन को झुठलाते हो।

وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ﴿10﴾

१०. बेशक तुम पर रक्षक (निगराँ)

كِرَامًا كَاتِبِينَ ﴿11﴾

११. इज़्ज़त वाले-लिखने वाले निर्धारित (मुक़र्रर) हैं।

يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ﴿12﴾

१२. जो कुछ तुम करते हो वे जानते हैं।

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿13﴾

१३. बेशक नेक लोग (जन्नत के ऐशो आराम और) नेमतों से फ़ायेदा उठाने वाले होंगे।

---

[1] यानी किस चीज ने तुझे धोखे में डाल दिया कि तूने अपने रब के साथ कुफ़्र किया जिस ने तुझे अस्तित्व (वजूद) दिया, तुझे समझ बूझ दी और ज़िन्दगी के सामान तेरे लिए तैयार किये।

[2] इसका एक मतलब तो यह है अल्लाह बच्चे को जिस तरह चाहे कर दे। बाप के, माँ के या माँमू या चचा की तरह। दूसरा मतलब है वह जिस रूप में चाहे ढाल दे यहाँ तक कि बदसूरत जानवर की तरह भी पैदा कर सकता है, लेकिन यह उसका करम और मेहरबानी है कि वह ऐसा नहीं करता और अच्छे इंसानी रूप में ही पैदा करता है।

وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ﴿14﴾

१४. और यकीनी तौर से बुरे लोग जहन्नम में होंगे।

يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿15﴾

१५. बदले वाले दिन उस में जायेंगे।

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ﴿16﴾

१६. वे उस में से कभी गायब न हो पायेंगे।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿17﴾

१७. तुझे कुछ पता भी है कि बदले का दिन क्या है?

ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿18﴾

१८. मैं दोबारा (कहता हूं कि) तुझे क्या पता कि बदले (और सजा) का दिन क्या है।

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا ۖ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ ﴿19﴾

१९. (वह है) जिस दिन कोई इंसान किसी इंसान के लिये किसी चीज का मुख़्तार न होगा, और सभी हुक्म उस दिन अल्लाह के ही होंगे।

सूरतुल मुतफ़्फ़ेफ़ीन-८३

سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ

सूरतुल मुतफ़्फ़ेफ़ीन* मक्का मे नाज़िल हुई और इस में छत्तीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ﴿1﴾

१. बड़ी बुराई है नाप-तौल में कमी करने वालों के लिये।

الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ﴿2﴾

२. कि जब लोगों से नाप कर लेते हैं, तो पूरा-पूरा लेते हैं।

وَإِذَا كَالُوهُمْ أَو وَّزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ﴿3﴾

३. और जब उन्हें नाप कर या तौल कर देते हैं तो कम देते हैं।

* **सूरतुल मुतफ़्फ़ेफ़ीन** : कुछ लोग इसे मक्की और कुछ मदनी क़रार देते हैं, कुछ के ख़्याल से मक्का और मदीना के बीच नाज़िल हुई, इस के अवतरण (नुज़ूल) के बारे में यह रिवायत है कि जब नबी (ﷺ) मदीने में आये तो मदीना के लोग नाप-तौल में बहुत बुरे लोग थे इसलिए अल्लाह ने यह सूरत उतारी, जिस के बाद उन्होंने अपनी नाप-तौल सुधार ली।

٤ أَلَا يَظُنُّ أُولَٰٓئِكَ أَنَّهُم مَّبْعُوثُونَ

४. क्या उन्हें अपने मरने के बाद ज़िन्दा हो उठने का यक़ीन नहीं है।

٥ لِيَوْمٍ عَظِيمٍ

५. उस बड़े भारी दिन के लिए।

٦ يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَٰلَمِينَ

६. जिस दिन सभी लोग सारी दुनिया के रब के सामने खड़े होंगे।

٧ كَلَّآ إِنَّ كِتَٰبَ الْفُجَّارِ لَفِي سِجِّينٍ

७. बेशक बदकारों का कर्मपत्र (आमालनामा) सिज्जीन में है।[1]

٨ وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا سِجِّينٌ

८. तुझे क्या पता कि सिज्जीन क्या है?

٩ كِتَٰبٌ مَّرْقُومٌ

९. (यह तो) लिखी हुई किताब है।

١٠ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ

१०. उस दिन झुठलाने वालों की बड़ी दुर्गति (ख़राबी) है।

١١ الَّذِينَ يُكَذِّبُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ

११. जो बदले और सज़ा के दिन को झुठलाते रहे।

١٢ وَمَا يُكَذِّبُ بِهِۦٓ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ

१२. उसे केवल वही झुठलाता है, जो हद से तजावुज़ कर जाने वाला और पापी होता है।

١٣ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ءَايَٰتُنَا قَالَ أَسَٰطِيرُ الْأَوَّلِينَ

१३. जब उस के पास हमारी आयतों का पाठ (तिलावत) होता है, तो कह देता है कि यह पहले के लोगों की कहानियाँ हैं।

١٤ كَلَّا ۖ بَلْ ۜ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا۟ يَكْسِبُونَ

१४. यह नहीं! बल्कि उन के दिलों पर उन के कर्म (अमल) की वजह से मोरचा (ज़ंग) चढ़ गया है।

[1] سِجِّينٍ सिज्जीन कुछ कहते हैं कि سِجْن (कारागार) से है यानी जेल की तरह एक तंग जगह है। कुछ कहते हैं कि यह पाताल में एक जगह है जहाँ काफ़िरों, बहुदेववादियों (मुशरिकों) और ज़ालिमों की आत्मायें (रूहें) और उन के कर्मपत्र (आमालानामा) जमा और महफ़ूज़ होते हैं, इसलिए आगे उसे लिखी हुई किताब कहा है।

१५. यही नहीं, ये लोग उस दिन अपने रब के दर्शन (ज़ियारत) से भी वंचित (महरूम) रहेंगे ।[1]

१६. फिर ये लोग यक़ीनी तौर से जहन्नम में झोंक दिये जायेंगे ।

१७. फिर कह दिया जायेगा यही है वह जिसे तुम झुठलाते रहे ।

१८. अवश्य अवश्य सदाचारियों का कर्मपत्र (आमालनामा) इल्लीईन में है ।[2]

१९. तुझे क्या पता कि इल्लीईन क्या है?

२०. (वह तो) लिखी हुई किताब है ।

२१. उसके निकट समीपवर्ती (मुक़र्रब) फ़रिश्ते मौजूद होते हैं ।

२२. यक़ीनी तौर से सदाचारी लोग बड़े सुख में होंगे ।

२३. मसहरियों पर (बैठे) देख रहे होंगे ।

२४. तू उन के मुंह से ही सुखों की ताज़गी को पहचान लेगा ।[3]

२५. ये लोग बहुत शुद्ध (मुहरबन्द) शराब पिलाये जायेंगे ।[4]

كَلَّآ إِنَّهُمْ عَن رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوبُونَ ﴿15﴾

ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيمِ ﴿16﴾

ثُمَّ يُقَالُ هَٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿17﴾

كَلَّآ إِنَّ كِتَٰبَ الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ﴿18﴾

وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا عِلِّيُّونَ ﴿19﴾

كِتَٰبٌ مَّرْقُومٌ ﴿20﴾

يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ﴿21﴾

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿22﴾

عَلَى الْأَرَآئِكِ يَنظُرُونَ ﴿23﴾

تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ﴿24﴾

يُسْقَوْنَ مِن رَّحِيقٍ مَّخْتُومٍ ﴿25﴾

---

[1] इस के विपरीत ईमान वाले अल्लाह के दर्शन (ज़ियारत) से सम्मानित (सरफ़राज़) होंगे ।

[2] عِلِّيِّين इल्लीईन عُلُوّ उलू (ऊँचाई) से है । यह सिज्जीन के विपरीत आकाशों में या स्वर्ग या सिद्रतुल मुन्तहा या अर्श (अल्लाह के सिंहासन) के पास जगह है जहाँ नेक लोगों की आत्मायें (रूहें) और उन के कर्मपत्र महफ़ूज़ होते हैं जिस के क़रीब मुक़र्रब फ़रिश्ते मौजूद रहते हैं ।

[3] जिस तरह दुनिया के ख़ुशहाल लोगों के चेहरे पर आम तौर से ताज़गी और हरियाली होती है जो उन के सुख-सुविधाओं का द्योतक (मज़हर) होती है जो उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा से हासिल होती है । इसी तरह जन्नत वालों पर आदर-सम्मान और उपहारों की जो अधिकता होगी उस के असर उन के चेहरों पर भी दिखाई पड़ेंगे और अपनी ख़ूबसूरती, ज़ीनत, रौशनी और नूर से पहचान लिये जायेंगे कि वह स्वर्गीय (जन्नती) हैं ।

[4] رَحِيق रहीक़ पाक या साफ़ शराब को कहते हैं जिस में किसी चीज़ की मिलावट न हो । مَخْتُوم मुहर लगी हुई, इस की सफ़ाई की ज़्यादा स्पष्टीकरण (वज़ाहत) के लिये है ।

خِتَٰمُهُۥ مِسْكٌ ۚ وَفِى ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ ٱلْمُتَنَٰفِسُونَ (26)

२६. जिस में कस्तूरी की मुहर लगी होगी इच्छा (तमन्ना) करने वालों को उसी की ही इच्छा करनी चाहिये।

وَمِزَاجُهُۥ مِن تَسْنِيمٍ (27)

२७. और उस में तस्नीम की मिलावट होगी।[1]

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا ٱلْمُقَرَّبُونَ (28)

२८. यानी वह जल श्रोत (चश्मे) जिसका पानी निकटवर्ती (मुक़र्रब) लोग पीयेंगे।

إِنَّ ٱلَّذِينَ أَجْرَمُوا۟ كَانُوا۟ مِنَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ يَضْحَكُونَ (29)

२९. बेशक पापी लोग ईमान वालों का मज़ाक उड़ाया करते थे।

وَإِذَا مَرُّوا۟ بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ (30)

३०. और उनके क़रीब से गुज़रते हुए कनखियों (और इशारे से) उनकी बेइज़्ज़ती करते थे।[2]

وَإِذَا ٱنقَلَبُوٓا۟ إِلَىٰٓ أَهْلِهِمُ ٱنقَلَبُوا۟ فَكِهِينَ (31)

३१. और जब अपनों की तरफ़ लौटते तो दिल्लगी करते थे।

وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوٓا۟ إِنَّ هَٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّونَ (32)

३२. और जब उन्हें देखते तो कहते कि बेशक ये लोग गुमराह (कुमार्ग) हैं।[3]

وَمَآ أُرْسِلُوا۟ عَلَيْهِمْ حَٰفِظِينَ (33)

३३. ये उन पर रक्षक (निगराँ) बनाकर तो नहीं भेजे गये।

فَٱلْيَوْمَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنَ ٱلْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ (34)

३४. तो आज ईमानवाले उन काफ़िरों पर हँसेंगे।

---

[1] تَسْنِيم का मतलब ऊँचाई है, ऊँट की कोहान जो उस के शरीर से ऊँची होती है उस سِنَام सिनाम कहा जाता है। क़ब्र के ऊँचा करने को भी تَسْنِيمُ القُبُور तसनीमुल क़ुबूर कहा जाता है, मतलब यह है कि उस में तसनीम नाम की शराब की मिलावट होगी, जो स्वर्ग के ऊपरी हिस्सों से एक चश्मा (श्रोत) के ज़रिये आयेगी यह जन्नत की सब से अच्छी और बेहतर शराब होगी।

[2] غَمْز का मतलब होता है पल्कों और भवों से इशारा करना, यानी एक-दूसरे को पल्कों और भवों का इशारा करके उनकी बेइज़्ज़ती और उन के धर्म पर ताना करते थे।

[3] यानी मुसलमान, मुशरिकों की निगाह में और ईमान वाले काफ़िरों की नज़र में गुमराह (कुपथ) होते हैं, यही हालत आज भी है, गुमराह अपने को सच्चा और सच्चे को गुमराह विश्वास (यक़ीन) कराते हैं।

عَلَى الْأَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿35﴾

३५. सिंहासन पर बैठे देख रहे होंगे।

هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿36﴾

३६. कि अब इंकार करने वालों ने जैसा ये किया करते थे पूरा-पूरा बदला पा लिया।[1]

سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاقِ

सूरतुल इंशिक़ाक़-८४

सूरतुल इंशिक़ाक़ मक्का में नाज़िल हुई और इस में पच्चीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ﴿1﴾

१. जब आकाश फट जायेगा।

وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿2﴾

२. और अपने रब के हुक्म को कान लगाकर सुनेगा, और उसी के लायक़ वह है।

وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ﴿3﴾

३. और धरती (खींच कर) फैला दी जायेगी।

وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ﴿4﴾

४. और उस में जो है उगल देगी और ख़ाली हो जायेगी।[2]

وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿5﴾

५. और अपने रब के हुक्म पर कान लगायेगी, और उसी के लायक़ वह है।

يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ﴿6﴾

६. हे इंसान! तू अपने रब से मिलने तक यह कोशिश और सभी काम और मेहनत करके उस से मुलाक़ात करने वाला है।

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ﴿7﴾

७. तो उस समय जिस इंसान के दाहिने हाथ में कर्मपत्र (आमालनामा) दिया जायेगा।

---

[1] ثُوِّبَ का मतलब है اُثِيْبَ बदला दिये गये, यानी क्या काफ़िरों को वह जो कुछ करते थे बदला दिया गया है।

[2] यानी जो मुर्दे ज़मीन में गड़े हैं, सब ज़िन्दा होकर बाहर निकल आयेंगे, जो ख़ज़ाने उस के भीतर मौजूद हैं वह उन्हें ज़ाहिर कर देगी और ख़ुद बिल्कुल ख़ाली हो जायेगी।

فَسَوۡفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيۡرًا ⑧

८. उसका हिसाब तो बड़ी आसानी से लिया जायेगा ।[1]

وَّيَنۡقَلِبُ اِلٰٓى اَهۡلِهٖ مَسۡرُوۡرًا ⑨

९. और वह अपने परिवार वालों की तरफ़ ख़ुश होकर लौट आयेगा ।

وَاَمَّا مَنۡ اُوۡتِىَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهۡرِهٖ ⑩

१०. लेकिन जिस इंसान का कर्मपत्र (आमाल-नामा) उसकी पीठ के पीछे से दिया जायेगा ।

فَسَوۡفَ يَدۡعُوۡا ثُبُوۡرًا ⑪

११. तो वह मौत को बुलाने लगेगा ।

وَّيَصۡلٰى سَعِيۡرًا ⑫

१२. और भड़कती हुई जहन्नम में दाख़िल होगा ।

اِنَّهٗ كَانَ فِىۡۤ اَهۡلِهٖ مَسۡرُوۡرًا ⑬

१३. यह इंसान अपने परिवार में (संसार में) ख़ुश था ।

اِنَّهٗ ظَنَّ اَنۡ لَّنۡ يَّحُوۡرَ ⑭

१४. उसका विचार था कि अल्लाह की तरफ़ लौटकर ही न जायेगा ।

بَلٰٓى ۚ اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ بِهٖ بَصِيۡرًا ⑮

१५. यह कैसे हो सकता है, हालांकि उसका रब उसे अच्छी तरह देख रहा था ।

فَلَاۤ اُقۡسِمُ بِالشَّفَقِ ⑯

१६. मुझे शाम की लाली (सुर्ख़ी) की क़सम ।[2]

---

[1] सरल हिसाब यह है कि मोमिन का आमालनामा पेश किया जायेगा उस के दोष (गुनाह) भी उस के सामने लाये जायेंगे फिर अल्लाह अपनी रहमत और फ़ज़्ल से उसे माफ़ कर देगा । हज़रत आयेशा फ़रमाती हैं कि रसूल अल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया : जिसका हिसाब लिया गया वह बर्बाद हो गया । मैंने कहा हे अल्लाह के रसूल ! अल्लाह मुझे आप पर बलिदान (क़ुर्बान) करे, क्या अल्लाह ने नहीं फ़रमाया कि जिस के दायें हाथ में कर्मपत्र दिया गया उसका हिसाब आसान होगा । (हज़रत आयेशा का मतलब यह था कि इस आयत के मुताबिक़ तो मोमिन का भी हिसाब होगा लेकिन वह तबाही से दोचार नहीं होगा) । आप ने स्पष्ट (वाज़ेह) किया "यह तो पेशी है" यानी मोमिन के साथ हिसाब का मामला नहीं होगा एक सरसरी पेशी होगी। मोमिन अल्लाह के आगे पेश किये जायेंगे जिस से पूछताछ हुई वह मारा गया । (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरतुल इंशिक़ाक़)

[2] शफ़क़ उस लाली को कहते हैं जो सूरज के डूबने के बाद आकाश में प्रकट (ज़ाहिर) होती है और इशा का समय शुरू होने तक रहती है ।

وَالَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ﴿17﴾

१७. और रात की और उसकी जमा चीजों की क़सम।

وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ﴿18﴾

१८. और पूरे चाँद की क़सम।[1]

لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ﴿19﴾

१९. बेशक तुम एक हालत से दूसरी हालत में पहुँचोगे।[2]

فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿20﴾

२०. उन्हें क्या हो गया है कि ईमान (विश्वास) नहीं लाते।

وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ﴿21﴾

२१. और जब उन के पास क़ुरआन पढ़ा जाता है तो सज्दा नहीं करते।[3]

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ ﴿22﴾

२२. बल्कि जिन्होंने कुफ़्र किया वह झुठला रहे हैं।

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ﴿23﴾

२३. और अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है, जो कुछ ये दिलों में रखते हैं।

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿24﴾

२४. तो उन्हें दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दे।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿25﴾

२५. लेकिन ईमानवालों और सदाचारियों (नेक लोगों) को अनगिनत और बेशुमार बदला दिया जायेगा।

---

[1] إِذَا اتَّسَقَ का मतलब है जब वह पूरा हो जाये जैसे वह तेरहवीं की रात से सोलहवीं तारीख़ तक की रात में रहता है।

[2] طَبَق का असल मायने कठिनाई है, यहाँ अभिप्राय (मुराद) वह कठिनाईयाँ हैं जो क़यामत के दिन घटित (वाक़ेअ) होंगी यानी उस दिन एक से बढ़कर एक हालत आयेगी (फ़तहुल बारी, तफ़सीर सूरतुल इंशिक़ाक़) यह क़सम का जवाब है।

[3] हदीसों से यहाँ नबी (ﷺ) और सहाबा का सज्दा करना सिद्ध (साबित) है।

सूरतुल बुरूज-८५

سُورَةُ الْبُرُوجِ

सूरतुल बुरूज मक्का में नाज़िल हुई और इस में बाईस आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ﴿1﴾ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ﴿2﴾ وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ﴿3﴾ قُتِلَ أَصْحٰبُ الْأُخْدُوْدِ ﴿4﴾ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ﴿5﴾ إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ﴿6﴾ وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ﴿7﴾

१. बुर्जों वाले आकाश की क़सम।[1]

२. वादा किये हुए दिन की क़सम।

३. हाज़िर होने वाले और हाज़िर किये गये की क़सम।[2]

४. (कि) खाई वाले मारे गये।

५. वह एक आग थी ईंधन वाली।

६. जबकि वह लोग उस के आसपास बैठे थे।

७. और मुसलमानों के साथ जो कर रहे थे उस को अपने सामने देख रहे थे।

सूरतुल बुरूज : नबी (ﷺ) जोहर और असर में सूरतुत्तारिक और सूरतुल बुरूज पढ़ते थे। (तिर्मिज़ी)

[1] بُرُوج यह بُرْج (भवन का गुंबद) का बहुवचन (जमा) है بُرْج का असल मायेना है ज़ुहूर, यह सितारों की मंज़िलें हैं जिन्हें उन के घर की हैसियत हासिल है ज़ाहिर और रौशन होने के वजह से उन्हें बुरूज कहा जाता है, तफ़सील के लिये देखिये अलफ़ुरक़ान ६१ का हाशिया। कुछ ने बुरूज से मुराद सितारे लिये हैं यानी सितारों वाले आकाश की क़सम। कुछ के ख़्याल में इस से आकाश के दरवाज़े या चाँद की मंज़िल मुराद है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] شَاهِد और مَشْهُود की व्याख्या (तफ़सीर) में बड़ा इख़्तिलाफ़ है। इमाम शौकानी ने हदीसों और रिवायतों की बिना पर कहा है कि शाहिद से मुराद जुमा (शुक्रवार) का दिन है। इस दिन जिस ने जो कर्म (अमल) किया होगा वह क़यामत के दिन उसकी गवाही देगा और मशहूद से अर्फ़ा (९ ज़िलहिज्जा) का दिन है, जहाँ लोग हज के लिये जमा और हाज़िर होते हैं।

وَمَا نَقَمُوا مِنْهُمْ إِلَّا أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ (8)

८. ये लोग उन मुसलमानों से किसी दूसरे पाप का बदला नहीं ले रहे थे, सिवाय इस के कि वे बड़े ग़ालिब तारीफ़ के लायक़ अल्लाह की ताक़त पर ईमान लाये थे।[1]

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ (9)

९. जिस के लिये आकाशों और धरती का राज्य है और अल्लाह (तआला) के सामने है हर वस्तु (चीज़)।

إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيقِ (10)

१०. बेशक जिन लोगों ने मुसलमान मर्दों और औरतों को सताया, फिर माफ़ी भी न माँगी, उन के लिये नरक की यातना (अज़ाब) है और जलने का अज़ाब है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ ۚ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ (11)

११. बेशक ईमान क़ुबूल करने वालों और नेक काम करने वालों के लिए वे बाग़ हैं जिन के नीचे (ठंडे पानी की) नहरें बह रही हैं, यह बड़ी कामयाबी है।

إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ (12)

१२. बेशक तेरे रब की पकड़ बड़ी सख़्त है।

إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ (13)

१३. वही पहली बार पैदा करता है और वही दोबारा ज़िन्दा करेगा।

وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ (14)

१४. वह बड़ा माफ़ करने वाला और बहुत प्रेम करने वाला है।

ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ (15)

१५. अर्श का स्वामी (मालिक) महान है।

فَعَّالٌ لِمَا يُرِيدُ (16)

१६. जो चाहे उसे कर देने वाला है।

هَلْ أَتٰكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ (17)

१७. तुझे सेनाओं की ख़बर भी मिली है।

فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ (18)

१८. यानी फ़िरऔन और समूद की।

1 यानी उन लोगों का अपराध जिनको आग में झोंका जा रहा था यह था कि वह प्रभुत्वशाली (ग़ालिब) अल्लाह पर ईमान लाये थे इस वाक़िआ का बयान सहीह हदीसों में मौजूद है।

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ﴿19﴾

१९. (कुछ नहीं) वल्कि काफ़िर तो झुठलाने में पड़े हुए हैं।

وَاللَّهُ مِن وَرَائِهِم مُّحِيطٌ ﴿20﴾

२०. और अल्लाह (तआला) भी उन्हें हर तरफ़ से घेरे हुए है।

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ ﴿21﴾

२१. वल्कि यह क़ुरआन है बहुत महिमा (तारीफ़) वाला।

فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ ﴿22﴾

२२. सुरक्षित (महफ़ूज़) किताब में लिखा है।

سُورَةُ الطَّارِقِ

सूरतुत्तारिक़-८६

सूरतुत्तारिक़* मक्का उतरी और इस में सतरह आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ﴿1﴾

१. क़सम है आसमान की और अंधेरे में प्रकट (ज़ाहिर) होने वाले की।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ﴿2﴾

२. तुझे मालूम भी है कि वह रात को ज़ाहिर होने वाली चीज़ क्या है।

النَّجْمُ الثَّاقِبُ ﴿3﴾

३. वह रौशनी वाला सितारा है।[1]

إِن كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿4﴾

४. कोई ऐसा नहीं जिस पर रक्षक (फ़रिश्ते) न हों।[2]

---

* **सूरतुत्तारिक़** : हज़रत ख़ालिद उदवानी ने कहा कि मैंने रसूल अल्लाह (ﷺ) को सक़ीफ़ के बाज़ार में धनुष या लाठी के सहारे खड़े देखा, आप उन के पास उन से मदद लेने आये थे, वहां मैंने आप से सूरतुत्तारिक़ सुनी और मैंने उसे याद कर लिया, जब कि मैं अभी मुसलमान नहीं हुआ था फिर मुझे अल्लाह ने इस्लाम से सम्मानित (सरफ़राज़) किया और इस्लाम की हालत में मैंने उसे पढ़ा। (मुसनद अहमद ४\३३५)

[1] तारिक़ से क्या मुराद है, क़ुरआन ने ख़ुद साफ़ कर दिया प्रकाशमान (रौशन) सितारा। طارق बना है طُرُوق से जिसका मतलब खटखटाना है, लेकिन طارق रात के आने वाले के लिए इस्तेमाल होता है, तारों को भी तारिक़ इसी वजह से कहा जाता है कि वह दिन को छुप जाते और रात को निकलते हैं।

[2] यानी हर जान पर अल्लाह की तरफ़ से फ़रिश्ते तैनात हैं जो उसके भले-बुरे सभी कर्म (अमल) लिखते हैं।

فَلْيَنظُرِ الْإِنسَانُ مِمَّ خُلِقَ ﴿5﴾

५. इंसान को देखना चाहिए कि वह किस चीज से बनाया गया है।

خُلِقَ مِن مَّاءٍ دَافِقٍ ﴿6﴾

६. वह एक उछलते पानी से पैदा किया गया है।

يَخْرُجُ مِن بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ﴿7﴾

७. जो पीठ और छाती के बीच से निकलता है।

إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ﴿8﴾

८. बेशक वह उसे फेर लाने पर जरूर सामर्थ्य (क़ुदरत) रखने वाला है।[1]

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ﴿9﴾

९. जिस दिन छिपे भेदों (राज) की जाँच पड़ताल होगी।

فَمَا لَهُ مِن قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ﴿10﴾

१०. तो न कोई जोर चलेगा उसका और न कोई मददगार होगा।

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ﴿11﴾

११. वर्षा वाले आकाश की क़सम।[2]

وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ﴿12﴾

१२. और फटने वाली धरती की क़सम।[3]

إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿13﴾

१३. बेशक यह (क़ुरआन) यक़ीनन दो टूक फ़ैसले करने वाली भाषा (जुबान) है।

وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿14﴾

१४. और यह हँसी की (और बेकार की) बात नहीं।

إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ﴿15﴾

१५. लेकिन वे (काफ़िर) दाँव-घात में हैं।[4]

---

[1] यानी इंसान के मरने के बाद वह उसे दोबारा जिन्दा करने पर सामर्थ्य (क़ादिर) है।

[2] رَجْع का शाब्दिक अर्थ (लफ़्ज़ी मायने) है, लौटना और पलटना, वर्षा भी बार-बार पलट-पलट कर होती है, इसलिए वर्षा को رَجْع के शब्द से व्यंजित (ताबीर) किया गया है। कुछ कहते हैं कि बादल समुद्रों से पानी लेता है फिर वही पानी समुद्र को पलटा देता है, इसलिए वर्षा को رَجْع कहा जाता है।

[3] यानी धरती फटती है तो उस से पौधा बाहर निकलता है, धरती फटती है तो चश्मा (स्रोत) जारी हो जाता है। इसी तरह एक दिन आयेगा कि धरती फटेगी और मुर्दे जिन्दा होकर बाहर निकल आयेंगे इसलिये धरती को फटने वाली कहा गया है।

[4] यानी नबी (ﷺ) जो धर्म लेकर आये हैं उसे नाकाम करने की साजिश रचते हैं, या नबी (ﷺ) को धोखा देते हैं और मुँह पर ऐसी बातें करते हैं कि दिल में उसके ख़िलाफ़ होता है।

وَأَكِيدُ كَيْدًا ﴿16﴾

१६. और मैं भी एक दांव चल रहा हूं।[1]

فَمَهِّلِ الْكَافِرِينَ أَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿17﴾

१७. तू काफ़िरों को मौक़ा दे, उन्हें थोड़े दिनों के लिए छोड़ दे।

सूरतुल आला-८७

سُورَةُ الْأَعْلَىٰ

सूरतुल आला* मक्का में नाज़िल हुई और इसमें उन्नीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى ﴿1﴾

१. अपने बहुत ही बुलन्द रब के नाम की पाकी बयान कर।[2]

الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّىٰ ﴿2﴾

२. जिस ने पैदा किया और सही और स्वस्थ (सेहतमंद) बनाया।

وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَىٰ ﴿3﴾

३. और जिस ने अंदाज़ा लगाकर मुक़र्रर किया फिर रास्ता दिखाया।

وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَىٰ ﴿4﴾

४. और जिस ने ताज़ा घास पैदा की।

فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَىٰ ﴿5﴾

५. फिर उस ने उसको (सुखा कर) काला कूड़ा कर दिया।

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنسَىٰ ﴿6﴾

६. हम तुझे पढ़ायेंगे, फिर तू न भूलेगा।

---

[1] यानी उनकी चालों और षडयंत्रों (साज़िश) से अचेत (ग़ाफ़िल) नहीं हूं, मैं भी उन के ख़िलाफ उपाय कर रहा हूं, या उनकी चालों का तोड़ कर रहा हूं, كَيْد छिपी साज़िश को कहते हैं जो बुरे उद्देश्य (मक़सद) के लिए हो तो बुरी है और मक़सद भला हो तो बुरा नहीं।

* **सूरतुल आला** : रसूल अल्लाह (ﷺ) यह सूरत और सूरतुल गाशिया ईदैन एवं जुमआ में पढ़ते थे। इसी तरह वित्र की पहली रकअत में सूरतुल आला, दूसरी में अलकाफिरून और तीसरी मे सूरतुल इख़लास पढ़ते थे। हज़रत मुआज़ को जिन सूरतों के पढ़ने का हुक्म दिया था उन में एक यह भी थी (सिहाह में यह सभी तफ़सील मौजूद हैं)

[2] यानी ऐसी चीज़ों से अल्लाह की पवित्रता (पाकीज़गी) जो उस के लायक़ नहीं है। हदीस में आता है कि नबी (ﷺ) इस के जवाब में पढ़ा करते थे। سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى (मुसनद अहमद, १\२३२ अबू दाऊद, किताबुस सलात, बाबुद दुआ फ़िस सलाते, अलबानी ने सहीह कहा है)

إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَىٰ ⑦

७. लेकिन जो कुछ अल्लाह चाहे वह खुले और छिपे को जानता है।

وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرَىٰ ⑧

८. हम आप के लिए आसानी पैदा कर देंगे।[1]

فَذَكِّرْ إِن نَّفَعَتِ الذِّكْرَىٰ ⑨

९. तो आप शिक्षा (नसीहत) देते रहें अगर शिक्षा कुछ फ़ायेदा दे।

سَيَذَّكَّرُ مَن يَخْشَىٰ ⑩

१०. डरने वाला तो नसीहत हासिल कर लेगा।[2]

وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ⑪

११. (लेकिन) दुर्भाग्यपूर्ण (बद्नसीब) उस से दूर रह जायेगा।

الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرَىٰ ⑫

१२. जो बड़ी आग में जायेगा।

ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ⑬

१३. जहाँ फिर न वह मर सकेगा न जियेगा[3] (बल्कि जान निकलने की हालत में पड़ा रहेगा)

قَدْ أَفْلَحَ مَن تَزَكَّىٰ ⑭

१४. बेशक उस ने कामयाबी प्राप्त (हासिल) कर ली, जो पाक हो गया।

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّىٰ ⑮

१५. और जिस ने अपने रब का नाम याद रखा और नमाज़ पढ़ता रहा।

---

[1] यह भी मिसाल है, हम आप पर प्रकाशना (वह्यी) आसान कर देंगे ताकि उसे याद करना और उसके मुताबिक़ अमल करना आसान हो जाये, हम आप को वह रास्ता दिखायेंगे जो आसान होगा। हम जन्नत के काम आप के लिये आसान कर देंगे। हम आप के लिये ऐसे अमल और क़ौल आसान कर देंगे जिन में भलाई हो और हम आप के लिये ऐसी शरीअत मुक़र्रर करेंगे जो सरल-सीधी और मुनासिब होगी, जिस में कोई टेढ़ापन, उलझन और तंगी नहीं होगी।

[2] यानी आप की शिक्षा से वह ज़रूर नसीहत हासिल करेंगे, जिन के दिलों में अल्लाह का डर होगा, उन में अल्लाह के डर और अपने सुधार की ख़्वाहिश ज़्यादा शक्तिशाली हो जायेगी।

[3] इस के ख़िलाफ़ जो लोग सिर्फ़ अपने पापों की सज़ा भोगने के लिये सामायिक रूप (वक़्ती तौर) से नरक में रह गये होंगे उन्हें अल्लाह (तआला) ए५. तरह मौत दे देगा, यहाँ तक कि वह आग में जलकर कोयला हो जायेंगे, फिर अल्लाह अम्बिया वग़ैरह की सिफ़ारिश से उनको गरोहों के रूप में नरक से निकालेगा उनको जन्नत की नहर में डाला जायेगा, जन्नती भी उन पर पानी डालेंगे। जिस से वह इस तरह ज़िन्दा हो जायेंगे जैसे बाढ़ के कूड़े पर अन्न उग आता है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान)

بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿16﴾

१६. लेकिन तुम तो सांसारिक जीवन को श्रेष्ठता (फज़ीलत) देते हो ।

وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿17﴾

१७. और परलोक (आख़िरत) बहुत बेहतर और स्थाई (दायमी) है ।

اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُولٰى ﴿18﴾

१८. ये बातें पहले की किताबों में भी हैं ।

صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ﴿19﴾

१९. (यानी) इब्राहीम और मूसा की किताबों में ।

سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ

सूरतुल गाशिया-८८

सूरतुल गाशिया* मक्का में उतरी और इस में छब्बीस आयतें हैं ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ﴿1﴾

१. क्या तुझे भी छिपा लेने वाली [(प्रलय) (क़ियामत)] की ख़बर पहुँची है ।

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ﴿2﴾

२. उस दिन बहुत से मुंह ज़लील होंगे ।

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ﴿3﴾

३. (और) दुखों से पीड़ित कष्टों में होंगे ।

تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ﴿4﴾

४. वे दहकती हुई आग में जायेंगे ।

تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ﴿5﴾

५. और बहुत गर्म (उबलते हुए) स्रोत (चश्मे) का पानी उन को पिलाया जायेगा ।[1]

لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ﴿6﴾

६. उन के लिए मात्र काँटेदार पेड़ों के अलावा कुछ खाना न होगा ।[2]

---

* **सूरतुल गाशिया** : कुछ रिवायत में है कि रसूल अल्लाह (ﷺ) जुमआ की नमाज़ में सूरतुल जुमआ के साथ सूरतुल गाशिया पढ़ते थे ।

[1] यहाँ वह बहुत खौलता पानी अभिप्राय (मुराद) है जिसकी गर्मी चरम सीमा (इन्तिहा) को पहुँची हो । (फ़तहुल क़दीर)

[2] यह एक काँटेदार झाड़ी है जिस के सूखने पर जानवर उसे खाना पसन्द नहीं करते । जो भी हो यह भी ज़क़्क़ूम की तरह एक बहुत कड़ुवा दुर्गंधित (बदबूदार), बेमज़ा अपवित्र (नापाक) खाना होगा जो न शरीर का हिस्सा बनेगा न भूख मिटायेगी ।

لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِن جُوعٍ ⑦

७. जो न शरीर में वृद्धि (इज़ाफ़ा) करेगा और न भूख मिटायेगा।

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ⑧

८. बहुत से मुंह उस दिन ख़ुश और प्रफुल्लित (आसूदा) होंगे।

لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ⑨

९. अपने कर्मों (अमल) की वजह से ख़ुश होंगे।

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ⑩

१०. बुलन्द जन्नत में होंगे।

لَّا تَسْمَعُ فِيهَا لَاغِيَةً ⑪

११. जहां कोई अश्लील (लग्व) बात कान में न पड़ेगी।

فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ⑫

१२. जहां (ठंडे) जल स्रोत (चश्में) बह रहे होंगे।

فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ⑬

१३. (और) उस में ऊंचे-ऊंचे सिंहासन होंगे।

وَأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ⑭

१४. और प्याले रखे हुए (होंगे)।

وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ⑮

१५. और एक पंक्ति में रखे हुए तकिये होंगे।

وَزَرَابِيُّ مَبْثُوثَةٌ ⑯

१६. और कोमल कालीनें बिछी होंगी।

أَفَلَا يَنظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ⑰

१७. क्या ये ऊंटों को नहीं देखते कि वे किस तरह पैदा किये गये हैं।[1]

وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ⑱

१८. और आकाशों को, कि किस तरह ऊंचा किया गया है।

وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ⑲

१९. और पहाड़ों की तरफ़, कि किस तरह गाड़ दिये गये हैं।

---

[1] ऊंट अरब में साधारणत: (आम) थे और इन अरबों की ज़्यादातर सवारी यही थी, इसलिये अल्लाह ने उन्हीं की चर्चा कर के फ़रमाया कि इनकी रचना पर ख़्याल करो। अल्लाह ने उसे कितना बड़ा अस्तित्व (वजूद) दिया है और कितनी शक्ति और बल उस में रखा है इस के बावजूद भी वह तुम्हारे लिये नर्म और ताबे हैं, तुम उस पर जितना चाहो बोझ लादो वह इंकार नहीं करेगा, तुम्हारे ताबे होकर रहेगा, इस के सिवा इस का गोश्त तुम्हारे खाने के और उसका दूध तुम्हारे पीने के और उसका ऊन गर्मी हासिल करने के काम आता है।

وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ⑳

२०. और धरती की तरफ़, कि किस तरह बिछायी गयी है।

فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرٌ ㉑

२१. तो आप नसीहत दे दिया करें (क्योंकि) आप केवल नसीहत देने वाले हैं।

لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ㉒

२२. आप कुछ उन पर दारोगा तो नहीं है।

إِلَّا مَنْ تَوَلَّى وَكَفَرَ ㉓

२३. लेकिन जो व्यक्ति (इंसान) मुंह फेरने वाला हो और कुफ़्र करे।

فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ㉔

२४. उसे अल्लाह (तआला) बड़ी कठोर यातना (अज़ाब) देगा।

إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ㉕

२५. बेशक हमारी तरफ़ उनको लौटाना है।

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ㉖

२६. फिर बेशक उन से हिसाब लेना हमारा काम है।[1]

سُورَةُ الْفَجْرِ

सूरतुल फ़ज्र-८९

सूरतुल फ़ज्र मक्का में उतरी इसमें तीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَالْفَجْرِ ①

१. क़सम है फ़ज्र की।[2]

وَلَيَالٍ عَشْرٍ ②

२. और दस रातों की।[3]

---

[1] मशहूर है कि इस के जवाब में اللَّهُمَّ حَاسِبْنَا حِسَابًا يَسِيرًا पढ़ा जाये यह दुआ तो नबी (ﷺ) से सिद्ध (साबित) है जो आप अपनी कुछ नमाज़ों में पढ़ते थे जैसाकि सूरतुल इंशिक़ाक़ में गुज़रा, लेकिन इस के जवाब में यह पढ़ना आप से सिद्ध नहीं है।

[2] **सूरतुल फ़ज्र** : इस से मुराद साधारण (आम) फ़ज्र है किसी ख़ास दिन की फ़ज्र नहीं।

[3] इस से ज़्यादातर व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) के विचार में "ज़िलहिज्जा" की शुरू की दस रातें मुराद हैं, जिनकी प्रधानता (फ़ज़ीलत) हदीसों में साबित है। नबी (ﷺ) ने फ़रमाया "ज़िल हिज्जा" के दस दिनों में किये गये नेक काम अल्लाह को सब से ज़्यादा प्रिय है यहां तक की अल्लाह के रास्ते में जिहाद भी इतना प्रिय नहीं सिवाय उस जिहाद के जिस में इंसान शहीद (बलिदान) ही हो जाये। (अल बुख़ारी, किताबुल ईदैन)

३. और सम और विषम (ताक़ और जोड़े) की।	وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿3﴾
४. और रात की जब वह चलने लगे।	وَالَّيْلِ إِذَا يَسْرِ ﴿4﴾
५. क्या उन में बुद्धिमानों (अक़्लमंद) के लिए काफी क़सम है?[1]	هَلْ فِي ذَٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِي حِجْرٍ ﴿5﴾
६. क्या आप ने नहीं देखा कि आप के रब ने आदियों के साथ क्या किया?	أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿6﴾
७. स्तम्भों (सुतूनों) वाले इरम के साथ।	إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ﴿7﴾
८. जिन के जैसे लोग (दूसरे किसी नगर और) देशों में पैदा नहीं किये गये।	الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ﴿8﴾
९. और समूदियों के साथ जिन्होंने घाटियों में बड़े-बड़े पत्थर काटे थे।	وَثَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿9﴾
१०. और फ़िरऔन के साथ जो खूँटों वाला था।[2]	وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ﴿10﴾
११. उन सभी ने नगरों में सिर उठा रखा था।	الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ﴿11﴾
१२. और बहुत उपद्रव (फ़साद) मचा रखा था।	فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ﴿12﴾
१३. आख़िर में तेरे रब ने उन सब पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया।	فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ﴿13﴾
१४. बेशक तेरा रब घात में है।	إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ﴿14﴾
१५. इंसान (का यह हाल है) कि जब उसका रब उस की परीक्षा (इम्तेहान) लेता है और	فَأَمَّا الْإِنسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ﴿15﴾

[1] ذَٰلِكَ से जिन चीज़ों की क़सम खाई गई है उनकी तरफ़ इशारा है, यानी क्या इनकी क़सम बुद्धिमानों के लिये काफी नहीं है? حِجْر का मतलब होता है रोकना मना करना, इंसानी बुद्धि (अक़्ल) भी उसे ग़लत कामों से रोकती है, इसलिये अक़्ल को भी حِجْر हिज्र कहा जाता है।

[2] इसका मतलब यह है कि भारी सेनाओं वाला था, जिस के पास ख़ेमों की अधिकता थी जिन्हें खूँटे गाड़ कर खड़ा किया जाता था, या उसकी सख़्ती और ज़ुल्म की तरफ़ इशारा है कि खूँटों के ज़रिये (द्वारा) उन्हें यातनायें (अज़ाब) देता था। (फ़तहुल क़दीर)

मान और इज़्ज़त देता है, तो वह कहने लगता है कि मेरे रब ने मेरा सम्मान (इज़्ज़त) किया।[1]

وَأَمَّآ إِذَا مَا ابْتَلٰهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ أَهَانَنِ ⑯

१६. और जब वह उसकी परीक्षा लेते हुए उसकी जीविका (रोज़ी) को कम कर देता है, तो वह कहने लगता है कि मेरे रब ने मेरा अपमान (बेइज़्ज़ती) किया।[2]

كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ⑰

१७. ऐसा कभी नहीं,[3] बल्कि (बात यह है कि) तुम (ही) लोग अनाथों (यतीमों) की इज़्ज़त नहीं करते।[4]

وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ⑱

१८. और ग़रीबों को खिलाने की एक-दूसरे को प्रेरणा (तरग़ीब) नहीं देते।

وَتَأْكُلُوْنَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَّمًّا ⑲

१९. और (मृतकों का) उत्तराधिकार (मीरास) समेट-समेट कर खाते हो।

وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ⑳

२०. और धन से जी भरकर प्रेम करते हो।

كَلَّآ إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا ㉑

२१. बेशक जिस समय धरती कूट-कूटकर बिल्कुल (समतल) बराबर कर दी जायेगी।

---

[1] यानी जब अल्लाह किसी को आजीविका (रिज़्क) और धन-दौलत देता है तो वह अपने बारे में इस भ्रम (गुमान) में पड़ जाता है कि अल्लाह उस पर बड़ा मेहरबान है जबकि यह वसायल इम्तेहान और परख के लिये होता है।

[2] यानी वह तंगी में डाल देता है और परीक्षा (इम्तेहान) लेता है तो अल्लाह के बारे में ग़लत संदेह (शक) करने लगता है।

[3] यानी बात इस तरह नहीं है जैसे लोग समझते हैं। अल्लाह धन अपने प्यारे बन्दों को भी देता है और नापसंदीदा लोगों को भी, तंगी में भी अपनों और परायों दोनों को ग्रस्त (मुब्तिला) करता है, जब अल्लाह धन दे तो उसका शुक्र दिखाये, ग़रीबी आये तो सब्र करें।

[4] यानी उस के साथ अच्छा सुलूक नहीं करते जिस के वह पात्र (मुस्तहक़) हैं। नबी (ﷺ) का क़ौल है वह घर सब से अच्छा है जिस में अनाथ के साथ अच्छा व्यवहार किया जाये तथा वह घर सबसे बुरा है जिस में अनाथ (यतीम) के साथ बुरा सुलूक किया जाये फिर अपनी उँगली की तरफ़ इशारा कर के फ़रमाया : मैं और अनाथ का पालने वाला जन्नत में इस तरह साथ-साथ होंगे, जैसे यह दो उँगलियाँ साथ मिली हैं। (अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाबुन फ़ी जम्मिल यतीमें)

وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿22﴾

२२. और तेरा रब (ख़ुद) आ जायेगा और फ़रिश्ते सफ़ें बांध कर आ जायेंगे।

وَجِايْٓءَ يَوْمَىِٕذٍۭ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَىِٕذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ﴿23﴾

२३. और जिस दिन नरक भी लाया जायेगा, उस दिन इंसान नसीहत हासिल करेगा, लेकिन आज नसीहत हासिल करने का फ़ायेदा कहाँ?

يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ﴿24﴾

२४. वह कहेगा कि काश, कि मैंने इस जीवन के लिए कुछ (नेकी के काम) पहले से कर रखे होते।

فَيَوْمَىِٕذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهٗٓ اَحَدٌ ﴿25﴾

२५. तो आज (अल्लाह) की यातनाओं जैसी यातना (अज़ाब) किसी की न होगी।

وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗٓ اَحَدٌ ﴿26﴾

२६. न उसके बन्धन के जैसा किसी का बन्धन होगा।[1]

يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَىِٕنَّةُ ﴿27﴾

२७. ऐ सन्तावना (इत्मिनान) वाली आत्मा (रूह)।

ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿28﴾

२८. तू अपने रब की तरफ़ लौट चल, इस तरह कि तू उस से ख़ुश (प्रसन्न) वह तुझ से ख़ुश।

فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ﴿29﴾

२९. तो मेरे विशेष दासों (ग़ुलामों) में शामिल हो जा।

وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ﴿30﴾

३०. और मेरी जन्नत में चली जा।

[1] उस दिन सभी हक़ केवल एक अल्लाह के हाथ में होंगे दूसरे किसी को उस के आगे साँस लेने की हिम्मत न होगी, यहाँ तक कि उसकी आज्ञा (इजाज़त) के बिना कोई किसी की सिफ़ारिश भी नहीं कर सकेगा, ऐसी हालत में काफ़िरों को जो यातना (अज़ाब) होगी और जिस तरह वह अल्लाह के बन्धन में जकड़े होंगे उसे यहाँ सोचा भी नहीं जा सकता, यह तो अपराधियों और ज़ालिमों की हालत होगी, लेकिन ईमानवालों और नेक लोगों की हालत इस से बिल्कुल अलग होगी जैसाकि आगे की आयतों में है।

सूरतुल बलद-९०

سُوْرَةُ الْبَلَدِ

सूरतुल बलद मक्का में नाज़िल हुई और इस में बीस आयते हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. मैं इस नगर की क़सम खाता हूं।[1]

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿1﴾

२. और आप इस नगर में मुक़ीम हैं।[2]

وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿2﴾

३. और क़सम है मानवीय पिता और औलाद की।[3]

وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ﴿3﴾

४. बेशक हम ने इंसान को (बहुत) परिश्रम (मुश्क़्क़त) में पैदा किया है।

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ﴿4﴾

५. क्या यह विचार करता है कि यह किसी के वश में ही नहीं?

اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ﴿5﴾

६. कहता (फिरता) है कि मैंने तो बहुत माल ख़र्च कर डाला।

يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ﴿6﴾

---

[1] **सूरतुल बलद** : इस से मुराद मक्का नगर है जिसमें इस सूरत के अवतरण (नुज़ूल) के समय नबी (ﷺ) का निवास था, आप की पैदाईश की जगह भी यही नगर था, यानी अल्लाह आप की पैदाईश की जगह (जन्मभूमि) और रहने की जगह की क़सम ली है जिस से उसकी प्रतिष्ठा (फ़ज़ीलत) का ज़्यादा स्पष्टीकरण (वज़ाहत) होता है।

[2] यह इशारा है उस वक़्त की तरफ़ जब मक्का विजय (फ़त्ह) हुआ, उस वक़्त इस पाक नगरी में अल्लाह ने लड़ाई को वैध (हलाल) कर दिया था जबकि उस में लड़ाई की इजाज़त नहीं, जैसे हदीस है नबी (ﷺ) ने कहा इस नगर को अल्लाह ने उस वक़्त से हुरमत वाला बनाया है जब से आकाश और धरती बनाई। फिर यह अल्लाह की ठहराई हुरमत की वजह से क़यामत तक हुरमत वाला है, न इसका पेड़ काटा जाये न उसके काँटे उखाड़े जायें, मेरे लिए इसे केवल एक पल के लिए हलाल किया गया था आज उसका आदर फिर उसी तरह लौट आया जैसे कल था ----- अगर यहाँ कोई लड़ाई के लिए दलील के तौर पर मेरी लड़ाई पेश करे तो उस से कहो कि अल्लाह के रसूल को इसकी अनुमति (इजाज़त) अल्लाह ने दी थी, जबकि उस ने तुम को यह इजाज़त नहीं दी। (सहीह अलबुख़ारी, किताबुल इल्म)

[3] कुछ ने इसका मतलब हज़रत आदम और उनकी औलाद लिया है और कुछ के ख़्याल से यह साधारण (आम) है हर बाप और औलाद इस में शामिल है।

أَيَحْسَبُ أَن لَّمْ يَرَهُۥٓ أَحَدٌ (7)

७. क्या (इस तरह) समझता है कि किसी ने उसे देखा (ही) नहीं?

أَلَمْ نَجْعَل لَّهُۥ عَيْنَيْنِ (8)

८. क्या हम ने उसकी दो आंखें नहीं बनायीं?

وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ (9)

९. और एक ज़ुबान और दो होंठ (नहीं बनाये)?

وَهَدَيْنَٰهُ ٱلنَّجْدَيْنِ (10)

१०. और उसको दोनों रास्ता दिखा दिये।

فَلَا ٱقْتَحَمَ ٱلْعَقَبَةَ (11)

११. तो उस से न हो सका की घाटी में दाख़िल होता।

وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا ٱلْعَقَبَةُ (12)

१२. और तू क्या समझा कि घाटी है क्या?

فَكُّ رَقَبَةٍ (13)

१३. किसी गर्दन (दास-दासी) को आज़ाद करना।

أَوْ إِطْعَٰمٌ فِى يَوْمٍ ذِى مَسْغَبَةٍ (14)

१४. या भूख वाले दिन खाना खिलाना।

يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ (15)

१५. किसी क़रीबी यतीम को।

أَوْ مِسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ (16)

१६. या ज़मीन पर पड़े दरिद्र (मिस्कीन) को।

ثُمَّ كَانَ مِنَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَتَوَاصَوْا۟ بِٱلصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا۟ بِٱلْمَرْحَمَةِ (17)

१७. फिर उन लोगों में से हो जाता जो ईमान लाये[1] और एक-दूसरे को सब्र की और दया (रहम) करने की वसीयत करते हैं।[2]

أُو۟لَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلْمَيْمَنَةِ (18)

१८. यही लोग हैं दायें हाथ वाले।

وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا هُمْ أَصْحَٰبُ ٱلْمَشْـَٔمَةِ (19)

१९. और जिन लोगों ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र किया, वही लोग हैं बायें हाथ वाले।

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌۢ (20)

२०. उन्हीं पर आग होगी जो चारों तरफ़ से घेरे हुए होगी।

---

[1] इस से मालूम हुआ कि मज़कूरा अमल उसी वक़्त फ़ायदेमंद और परलौकिक सौभाग्य (उख़रवी सआदत) की वजह होंगे जब उनका करने वाला ईमान रखता होगा।

[2] ईमानवालों की ख़ासियत है कि वह एक-दूसरे को सब्र और दया की हिदायत देते हैं।

सूरतुश शम्स-९१

سُوْرَةُ الشَّمْسِ

सूरतुश शम्स मक्का में उतरी और इसमे पन्द्रह आयते हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. क़सम है सूरज की और उसकी धूप की।[1]

وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ﴿1﴾

२. क़सम है चाँद की जब उस के पीछे आये।

وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰهَا ﴿2﴾

३. क़सम है दिन की जब सूरज को ज़ाहिर करे।

وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰهَا ﴿3﴾

४. क़सम है रात की जब उसे ढाँक ले।

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰهَا ﴿4﴾

५. क़सम है आकाश की और उसके बनाने की।

وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰهَا ﴿5﴾

६. क़सम है धरती की और उसे बराबर करने की।

وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰهَا ﴿6﴾

७. क़सम है आत्मा (रूह) की और उसका सुधार करने की।[2]

وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰهَا ﴿7﴾

८. फिर समझ दी उस ने पाप की और उस से बचने की।[3]

فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰهَا ﴿8﴾

९. जिसने उसे पाक किया वह सफल (कामयाब) हो गया।[4]

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا ﴿9﴾

---

[1] या उस के प्रकाश (रौशनी) की या ضُحٰى से मुराद दिन है यानी सूरज और दिन की क़सम।

[2] या जिस ने उसे सुधारा, सुधारने का मतलब है उसके अंगों को संतुलित (मुनासिब) बनाया, बेढब और बेढंगा नहीं बनाया।

[3] اِلْهَام का मतलब यह है कि उन्हें अच्छी तरह समझा दिया और नबियों और आसमानी किताबों के जरिये भलाई-बुराई से परिचित (आगाह) करा दिया, यानी मतलब यह है कि उनकी प्रकृति (फ़ितरत) और समझ में भलाई-बुराई, नेकी और पाप का बोध (शउर) रख दिया ताकि वह नेकी को अपनायें और पाप से बचें।

[4] शिर्क से पाप से और अख़लाकी ख़राबी से पाक किया, वह आख़िरत की भलाई से और कामयाबी से अलंकृत (मुज़य्यन) होगा।

وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰهَا ⑩

१०. और जिस ने उसे मिट्टी में मिला दिया वह नाकाम हो गया।

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ ⑪

११. समूदियों ने अपनी उद्दण्डता (सरकशी) की वजह से झुठलाया।

اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰىهَا ⑫

१२. जब उनमें का बड़ा दुर्भाग्यशाली (बदबख़्त) उठ खड़ा हुआ।[1]

فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ⑬

१३. उन्हें अल्लाह के रसूल ने कह दिया था कि अल्लाह (तआला) की ऊँटनी और उस के पीने की बारी की (सुरक्षा करो)।

فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۙ فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ⑭

१४. उन लोगों ने अपने रसूलों को झूठा समझ कर उस ऊँटनी को मार डाला[2] तो उन के रब ने उन के पाप की वजह से उन पर विनाश (हलाकत) डाल दिया और फिर विनाश को आम लोगों के लिए कर दिया और उस बस्ती को बराबर कर दिया।

وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ⑮

१५. वह इस प्रकोप (अज़ाब) के नतीजा से बेख़ौफ़ है।

सूरतुल लैल-९२

سُوْرَةُ اللَّيْلِ

सूरतुल लैल मक्का में उतरी और इस में इक्कीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

---

[1] जिस का नाम व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) ने केदार बिन सालिफ़ बताया है उस ने ऐसा बुरा काम किया कि हतभागों (बदबख़्तों) का सरदार बन गया, सब से बड़ा बदबख़्त।

[2] यह बुरा काम एक ही इंसान केदार ने किया था, लेकिन उस के बुरा काम में पूरी क़ौम भी उस के साथ थी इसलिए इन सबको बराबर का दोषी माना गया और झुठलाने और ऊँटनी के मारने को पूरी क़ौम से सम्बन्धित (मुताल्लिक़) किया गया, जिस से यह नियम मालूम हुआ कि एक बुरा काम अगर कोई बुरा इंसान करें लेकिन पूरी क़ौम उस बुरे काम का इंकार न करे बल्कि उसे अच्छा समझे तो पूरी क़ौम इस बुरे काम की दोषी मानी जायेगी और इस गुनाह या बुरे काम में बराबर की साझीदार समझी जायेगी।

وَالَّيۡلِ اِذَا يَغۡشٰى ﴿1﴾

१. क़सम है रात की जब छा जाये।

وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ﴿2﴾

२. और क़सम है दिन की जब रौशन हो जाये।

وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالۡاُنۡثٰٓى ﴿3﴾

३. और क़सम है उस (ताक़त) की जिस ने नर-मादा को पैदा किया।

اِنَّ سَعۡيَكُمۡ لَشَتّٰى ﴿4﴾

४. बेशक तुम्हारा प्रयत्न (कोशिश) कई तरह का है।

فَاَمَّا مَنۡ اَعۡطٰى وَاتَّقٰى ﴿5﴾

५. तो जो इंसान देता रहा और डरता रहा।

وَصَدَّقَ بِالۡحُسۡنٰى ﴿6﴾

६. और अच्छी बातों की पुष्टि (तसदीक़) करता रहा।

فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلۡيُسۡرٰى ﴿7﴾

७. तो हम भी उस के लिये आसानी पैदा कर देंगे।[1]

وَاَمَّا مَنۡۢ بَخِلَ وَاسۡتَغۡنٰى ﴿8﴾

८. लेकिन जिसने कंजूसी की और निश्चिन्तता (बेनियाज़ी) ज़ाहिर किया।

وَكَذَّبَ بِالۡحُسۡنٰى ﴿9﴾

९. और अच्छी बातों को झुठलाया।

فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلۡعُسۡرٰى ﴿10﴾

१०. तो हम भी उस पर तंगी और कठिनाई का साधन उपलब्ध (मुहय्या) करा देंगे।[2]

وَمَا يُغۡنِىۡ عَنۡهُ مَالُهٗۤ اِذَا تَرَدّٰى ﴿11﴾

११. और उसका माल उस के (मुँह के बल) गिरते समय कोई काम न आयेगा।

---

[1] يُسْرَى का मतलब नेकी और الخصلة الحسنى है, यानी हम नेकी और आज्ञापालन (पैरवी) की उसे योग्यता (सलाहियत) देते और उन को उस के लिये सहज कर देते हैं। व्याख्याकार (मुफ़स्सिरीन) कहते हैं कि यह आयत हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ के बारे में उतरी है जिन्होंने छः गुलाम आज़ाद किये, जिन्हें मुसलमान होने के वजह से मक्का के लोग कड़ी सज़ायें देते थे। (फ़तहुल क़दीर)

[2] عُسْرَى (तंगी) से मतलब कुफ़्र, नाफ़रमानी (अवज्ञा) और दुराचार है, यानी हम उस के लिये नाफ़रमानी का रास्ता आसान कर देंगे, जिस से उस के लिये भलाई और सौभाग्य (सआदत) के रास्ते कठिन हो जायेंगे।

१२. बेशक रास्ता दिखा देना हमारा दायित्व (फ़र्ज़) है।	إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَىٰ (12)
१३. और हमारे ही हाथ परलोक (आख़िरत) और यह लोक (दुनिया) है।	وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ (13)
१४. मैंने तो तुम्हें शोले मारती आग से डरा दिया है।	فَأَنذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّىٰ (14)
१५. जिस में केवल वह वदनसीव ही प्रवेश (दाख़िल) करेगा।	لَا يَصْلَاهَا إِلَّا الْأَشْقَى (15)
१६. जिस ने झुठलाया और (उस की पैरवी से) मुख फेर लिया।	الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ (16)
१७. और उस से ऐसा इंसान दूर रखा जायेगा जो सदाचारी (परहेज़गार) होगा।	وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى (17)
१८. जो पाकी हासिल करने के लिए अपना माल देता है।[1]	الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ (18)
१९. किसी का उस पर कोई उपकार (एहसान) नहीं कि जिसका बदला दिया जा रहा हो।	وَمَا لِأَحَدٍ عِندَهُ مِن نِّعْمَةٍ تُجْزَىٰ (19)
२०. बल्कि केवल अपने बुलन्द रव की ख़ुशी हासिल करना होता है।	إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ (20)
२१. बेशक वह (अल्लाह भी) जल्द ही ख़ुश हो जायेगा।[2]	وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ (21)

[1] यानी जो अपना धन अल्लाह की आज्ञानुसार ख़र्च करेगा ताकि उसका मन और धन पाक हो जाये।

[2] या वह ख़ुश हो जायेगा, यानी जो इन ख़ुसूसियत से युक्त (मुजय्यन) होगा। अल्लाह (तआला) उसे जन्नत की अनुकम्पायें (नेमतें) और इज़्ज़त अता करेगा जिस से वह ख़ुश हो जायेगा। ज़्यादातर व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) ने कहा है बल्कि कुछ ने पूरी तरह से सहमति (मर्जी) तक नक़ल किया है कि यह आयतें हजरत अबू बक्र सिद्दीक की शान में उतरी हैं फिर भी मतलब और मायने के विना पर साधारण (आम) है, जो भी इन ऊँची सिफ़ात से मुज़य्यन होगा वह अल्लाह के दरबार में इसका मुस्तहिक होगा।

سُورَةُ الضُّحَىٰ

सूरतुददुहा-९३

सूरतुददुहा* मक्का में उतरी और इस में ग्यारह आयतें हैं।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَالضُّحٰى ⑴

१. क़सम है चाश्त (सूरज के ऊंचे हो जाने) के समय की।[1]

وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ⑵

२. और क़सम है रात की जब छा जाये।

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ⑶

३. न तो तेरे रब ने तुझे छोड़ा है, न बेज़ार हो गया है।

وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ⑷

४. बेशक तेरे लिए आख़िर शुरु से अच्छा है।

وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ⑸

५. तुझे तेरा रब जल्द ही (पुरस्कार) देगा और तू ख़ुश हो जायेगा।[2]

اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ⑹

६. क्या उसने तुझे अनाथ (यतीम) पाकर जगह नहीं दिया?

وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ⑺

७. और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?[3]

---

* **सूरतुददुहा** : एक बार नबी (ﷺ) बीमार हो गये दो-तीन रातें आप ने तहज्जुद की नमाज नहीं पढ़ी। एक औरत आप के पास आई और कहने लगी, हे मोहम्मद (ﷺ) लगता है तेरे शैतान ने तुझे छोड़ दिया है, दो-तीन रातों से देख रही हूं कि वह तेरे पास नहीं आया। जिस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी। (सहीह अल-बुख़ारी, तफ़सीर वददुहा) यह औरत अबूलहब की पत्नी उम्मे जमील थी। (फ़तहुल बारी)

[1] चाश्त (दुहा) उस वक़्त को कहते हैं जब सूरज ऊंचा होता है, यहां मतलब पूरा दिन है।

[2] इस से सांसारिक विजय (फ़त्ह) और परलोक (आख़िरत) की कामयाबी मुराद है, इस में वह सिफ़ारिश का हक़ भी शामिल है जो आप को अपने समूह के पापियों के लिये मिलेगा।

[3] यानी तुझे दीन, शरीअत और ईमान का पता नहीं था, हम ने तुझे हिदायत दी, नबूअत दिया और किताब उतारा, नहीं तो तू इससे पहले तो हिदायत के लिये कोशिश कर रहा था।

وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَأَغْنَىٰ ⑧

८. और तुझे गरीब पाकर अमीर नहीं बना दिया?

فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ⑨

९. तो अनाथ (यतीम) पर तू भी कठोरता न किया कर।

وَأَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ⑩

१०. और माँगने वाले को न डाँट-डपट।

وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ⑪

११. और अपने रब के उपकारों (नेमतों) का बयान करता रह।[1]

سُورَةُ الشَّرْحِ

सूरतु शरह-९४

सूर: शरह मक्का में उतरी इस में आठ आयतें हैं।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ①

१. क्या हम ने तेरे लिए तेरा सीना नहीं खोल दिया।

وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ ②

२. और तुझ पर से तेरा बोझ उतार दिया।[2]

---

[1] यानी अल्लाह ने तुझ पर जो एहसान किये हैं, जैसे हिदायत, रिसालत और नबूअत से सम्मानित (बाइज़्ज़त) किया, अनाथ होने के बावजूद तेरे पालन-पोषण और निगरानी की व्यवस्था (तदबीर) की, तुझे सब्र और माल दिया, उन्हें शुक्रिया और एहसान की भावना के साथ बयान कर। इस से मालूम हुआ कि अल्लाह की अनुकम्पाओं (नेमतों) की चर्चा और उनका इज़हार अल्लाह को प्यारा है, लेकिन घमन्ड और फ़ख़्र के तौर पर नहीं बल्कि अल्लाह की दयालुता और अनुग्रह (नेमत) का एहसानमंद होते हुए उसकी ताक़त और क़ुदरत से डरते हुए कि वह कहीं हम को इन नेमतों से वंचित (महरूम) न कर दे।

[2] यह बोझ चालीस साल नुबूअत से पहले का बोझ है, उस ज़माने में आप को अगर अल्लाह ने पापों से सुरक्षित (महफ़ूज़) रखा, किसी मूर्ति को आप ने सज्दा नहीं किया कभी मदिरा पान नहीं किया और दूसरे पापों से भी अलग रहे, फिर भी अल्लाह की इबादत न आप जानते थे न की, इसलिये इस चालीस साल इबादत और आज्ञापालन (इताअत) न करने का बोझ आप पर था जो हक़ीक़त में तो नहीं था लेकिन आप के एहसास और शउर ने उसे बोझ बना रखा था। अल्लाह ने उसे उतार देने का एलान करके आप पर एहसान किया।

الَّذِىٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ﴿3﴾

३. जिस ने तेरी पीठ तोड़ दी थी।

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ﴿4﴾

४. और हम ने तेरा चर्चा बुलन्द कर दिया।[1]

فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿5﴾

५. तो बेशक कठिनाई के साथ आसानी है।

اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿6﴾

६. बेशक कठिनाई के साथ आसानी है।

فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ﴿7﴾

७. तो जब तू ख़ाली हो तो (इबादत में) मेहनत कर।

وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ﴿8﴾

८. और अपने रब की तरफ़ दिल लगा।

सूरतुत्तीन-९५

سُوْرَةُ التِّيْنِ

सूरतुत्तीन मक्का में उतरी और इस में आठ आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ﴿1﴾

१. क़सम है इंजीर की और ज़ैतून की।

وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ﴿2﴾

२. और सनायी के तूर (पर्वत) की।

وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ﴿3﴾

३. और इस शान्ति (अमन) वाले नगर की।[2]

---

[1] यानी जहाँ अल्लाह का नाम आता है, जैसे नमाज़, अज़ान और दूसरे बहुत सी जगहों पर आप का नाम भी आता है, पुरानी किताबों में आप की चर्चा और सिफ़्तों का बयान है। फ़रिश्तों में आप की शुभ चर्चा है, आप के आज्ञापालन (इताअत) को अल्लाह ने अपना आज्ञापालन कहा है और अपनी इताअत के साथ आप की इताअत का भी हुक्म दिया है, इत्यादि।

[2] इस से अभिप्राय (मुराद) पाक नगर मक्का है जिस में लड़ाई अवैध (हराम) है, इस के सिवा जो इस में दाख़िल हो जाये उसको शान्ति मिल जाती है। कुछ व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) का कहना है कि हक़ीक़त में तीन जगहों की क़सम है, जिन में से हर एक में महान (बड़ा) पैग़म्बर भेजे गये। इंजीर और ज़ैतून से मुराद वह इलाक़ा है जहाँ इसकी उपज है और वह बैतुल मोक़द्दस है जहाँ हज़रत ईसा पैग़म्बर (ईश्दूत) बनकर आये। सिना पहाड़ या सीनीन पर हज़रत मूसा को नुबूअत (दूतत्व) प्रदान की गई और मक्का में पैग़म्बरों के सरदार हज़रत मोहम्मद रसूल अल्लाह (ﷺ) को भेजा गया। (इब्ने कसीर)

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ﴿4﴾

४. बेशक हम ने इंसान को बहुत अच्छे रूप में पैदा किया।

ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ ﴿5﴾

५. फिर उसे नीचों से नीचा कर दिया।[1]

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿6﴾

६. लेकिन जो लोग ईमान लाये और फिर नेकी के काम किये, तो उन के लिए ऐसा बदला है जो कभी ख़त्म न होगा।

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّينِ ﴿7﴾

७. तो तुझे अब बदले के दिन को झुठलाने पर कौन-सी बात उत्साहित (आमादा) करती है।[2]

أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمِ الْحَاكِمِينَ ﴿8﴾

८. क्या अल्लाह (तआला) सभी हाकिमों का हाकिम नहीं है?

सूरतुल अलक़-९६

سُورَةُ الْعَلَقِ

सूरतुल अलक़* मक्का में उतरी और इस में उन्नीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ﴿1﴾

१. अपने रब का नाम लेकर पढ़ जिस ने पैदा किया।

---

[1] यह इशारा इंसान की ख़ूसट उम्र (बहुत ज़्यादा उम्र की तरफ़) जिस में जवानी और यौवन के बाद बुढ़ापा और कमज़ोरी आ जाती है और इंसान की समझ बच्चे की तरह हो जाती है।

[2] यह इंसान से ख़िताब है फटकार के लिए कि अल्लाह ने तुझे अच्छे रूप में बनाया और इसके ख़िलाफ़ वह तुझे अपमान के गड्ढे में भी गिरा सकता है इसका मतलब है कि दोबारा जीवन देना कठिन नहीं इस के बाद भी तू क़यामत और बदले का इंकार करता है।

* **सूरतुल अलक़** : यह सब से पहली प्रकाशना (वह्यी) है जो नबी (ﷺ) पर उस समय आई जब आप हिरा पर्वत की गुफ़ा में उपासना (इबादत) में लीन (मशग़ूल) थे। फ़रिश्ते ने आकर कहा पढ़, आप ने फ़रमाया : मैं तो पढ़ा हुआ नहीं हूँ, फ़रिश्ते ने आप को ज़ोर से भींचा और कहा पढ़, आप ने फिर वही जवाब दिया, इस तरह तीन बार आप को भींचा (तफ़सील के लिये देखिए सहीह अलबुख़ारी, बाब बदउल वह्यी-मुस्लिम अलईमान बाबु बदइल वह्यी) اقرأ जो तेरी तरफ़ वह्यी की जाती है वह पढ़ خلق जिस ने सारी दुनिया को बनाया।

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ﴿2﴾

२. जिस ने इंसान को ख़ून के लोथड़े से पैदा किया।

اِقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ ﴿3﴾

३. तू पढ़ता रह तेरा रब बड़ा करम वाला है।

الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ﴿4﴾

४. जिस ने क़लम के द्वारा (ज्ञान) सिखाया।

عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ﴿5﴾

५. जिस ने इंसान को वह सिखाया जिसे वह नहीं जानता था।

كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَيَطْغَى ﴿6﴾

६. हक़ीक़त में इंसान तो आपे से बाहर हो जाता है।

أَنْ رَآهُ اسْتَغْنَى ﴿7﴾

७. इसलिए कि वह अपने आप को बेफ़िक्र (या धनवान) समझता है।

إِنَّ إِلَى رَبِّكَ الرُّجْعَى ﴿8﴾

८. बेशक लौटना तेरे रब की तरफ़ है।

أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَى ﴿9﴾

९. (भला) उसे भी तूने देखा जो (एक बन्दे को) रोकता है।

عَبْدًا إِذَا صَلَّى ﴿10﴾

१०. जबकि वह बन्दा नमाज़ अदा करता है।

أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَى الْهُدَى ﴿11﴾

११. भला बताओ तो अगर वह सीधे रास्ते पर हो।

أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَى ﴿12﴾

१२. या परहेज़गारी का अनुदेश (हुक्म) देता हो।[1]

أَرَأَيْتَ إِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّى ﴿13﴾

१३. भला देखो तो अगर यह झुठलाता हो और मुँह फेरता हो तो।

أَلَمْ يَعْلَمْ بِأَنَّ اللَّهَ يَرَى ﴿14﴾

१४. क्या यह नहीं जानता कि अल्लाह (तआला) उसे अच्छी तरह देख रहा है।

---

[1] यानी ख़ालिस, तौहीद (एकेश्वरवाद) और नेकी के कामों की शिक्षा, जो नरक की आग से इंसान को बचा सकती है, तो क्या यह चीज़े [नमाज़ पढ़ना और संयम (तक़्वा) की शिक्षा (नसीहत देना] ऐसी बातें हैं कि उनका विरोध (मुख़ालफ़त) किया जाये और उस पर उसे धमकियाँ दी जायें?

كَلَّا لَئِن لَّمْ يَنتَهِ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ (15)

१५. बेशक अगर ये नहीं रूका तो हम उस की पेशानी (ललाट) के बाल पकड़कर घसीटेंगे।

نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ (16)

१६. ऐसी पेशानी जो झूठी और पापी है।[1]

فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ (17)

१७. वह अपने सभा वालों को बुला ले।

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ (18)

१८. हम भी नरक के रक्षकों (निगराँ) को बुला लेंगे।

كَلَّا لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِب (19)

१९. सावधान! उसका कहना कभी न मानना और सज्दा करो और क़रीब हो जाओ।

सूरतुल क़द्र-९७

سُورَةُ القَدْرِ

सूरतुल क़द्र* मक्का में उतरी और इस में पाँच आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ (1)

१. बेशक हम ने उसे क़द्र (बरकत) की रात में नाज़िल किया।[2]

وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ (2)

२. तू क्या समझा कि क़द्र (बरकत) की रात क्या है?

---

[1] पेशानी के इस गुण (सिफ़त) का मतलब है कि वह झूठी है अपनी बात में, पापी है अपने काम में।

* **सूरतुल क़द्र** : इसे सूरत के मक्की और मदनी होनें में मतभेद (इख़्तिलाफ़) है, इसका नाम रखने के कारण में इख़्तिलाफ़ है, क़द्र के मायने एहतेराम के भी है, इसी वजह से क़द्र की रात कहते हैं, इसका अर्थ (मायेना) अंदाज़ा लगाना और फ़ैसला करना भी है, इस में पूरे साल का फ़ैसला किया जाता है, इसीलिये इसे لَيْلَةُ الْحُكْمِ भी कहते हैं।

[2] यानी उतारना शुरू किया और लौहे महफ़ूज़ से बैतुल इज़्ज़त में जो पहले आकाश पर है उतारा, और वहाँ से ज़रूरत के मुताबिक़ नबी (ﷺ) पर उतारता रहा। यहाँ तक कि लगभग २३ साल में पूरा हो गया और लैलतुल क़द्र रमज़ान ही में होती है। जैसाकि क़ुरआन की आयत (شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ) से साफ़ है।

لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ﴿3﴾

३. क़द्र की रात एक हजार महीनों से बेहतर है।

تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ﴿4﴾

४. इस में (हर काम को पूरा करने के लिये) अपने रब के हुक्म से फ़रिश्ते और रूह (जिब्रील) उतरते हैं।[1]

سَلٰمٌ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ﴿5﴾

५. यह रात साक्षात् (सरासर) शान्ति की होती है, और फ़ज्र के निकलने तक (होती है)।

सूरतुल बय्यिन:-९८

سُورَةُ الْبَيِّنَةِ

सूरतुल बय्यिन:* मदीनें में नाज़िल हुई और इस मे आठ आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِينَ مُنفَكِّينَ حَتّٰى تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ﴿1﴾

१. अहले किताब के काफ़िर और मूर्तिपूजक लोग, जब तक कि उन के पास स्पष्ट (वाजेह) निशानी न आ जाये रूकने वाले न थे (वह निशानी यह थी कि)

رَسُولٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ﴿2﴾

२. अल्लाह (तआला) का एक रसूल जो पाक किताब पढ़े।

فِيهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ﴿3﴾

३. जिस में ठीक और सही अहकाम हों।[2]

---

[1] रूह से अभिप्राय (मुराद) हजरत जिब्रील हैं, यानी फ़रिश्ते हजरत जिब्रील सहित इस रात धरती पर उतरते हैं और उन कामों को पूरा करते हैं जिनका फ़ैसला इस साल में अल्लाह (तआला) फ़रमाता है।

* **सूरतुल बय्यिन**: इसका दूसरा नाम सूरत لم يكن है। हदीस में है, नबी (ﷺ) ने हजरत उबय्य बिन काब से फ़रमाया : अल्लाह ने मुझे आज्ञा दी है कि, मैं सूरत (لم يكن الذين كفروا) तुझे पढ़ कर, सुनाऊं। हजरत उबय्य ने पूछा, क्या अल्लाह ने आप के सामने मेरा नाम लिया है, आप ने फ़रमाया हाँ, जिस पर (बहुत खुशी से) उबय्य की आँखों में आंसू आ गये। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरत लम यकुन)

[2] यहाँ كُتُب किताबों से मुराद शरीअत और قَيِّمَة संतुलित (मोतदिल) और सीधे।

وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَٰبَ إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ﴿4﴾

४. अहले किताब अपने पास साफ निशानी आ जाने के बाद ही मतभेद (इख़्तिलाफ़) में पड़कर) बंट गये।

وَمَآ أُمِرُوٓا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَآءَ وَيُقِيمُوا الصَّلَوٰةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَوٰةَ وَذَٰلِكَ دِينُ الْقَيِّمَةِ ﴿5﴾

५. उन्हें इस के सिवाय कोई हुक्म नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की इबादत करें उसी के लिए धर्म को शुद्ध (ख़ालिस) कर रखें। (इब्राहीम) एकेश्वरवादी[1] के धर्म पर, और नमाज को क़ायम रखें और जकात देते रहें, यही धर्म सीधी मिल्लत का है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَٰبِ وَالْمُشْرِكِينَ فِى نَارِ جَهَنَّمَ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أُولَٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ﴿6﴾

६. बेशक जो लोग अहले किताब में से काफ़िर हुए और मूर्तिपूजक, वे नरक की आग (में जायेंगे) जहाँ वे हमेशा रहेंगे, ये लोग बहुत बुरी मख़लूक़ हैं।

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ أُولَٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ﴿7﴾

७. बेशक जो लोग ईमान लाये और नेकी के काम किये, ये लोग बेहतरीन मख़लूक़ हैं।

جَزَآؤُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا رَّضِىَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِىَ رَبَّهُۥ ﴿8﴾

८. उनका बदला उन के रब के पास हमेशा रहने वाले स्वर्ग हैं जिन के नीचे (ठंडे पानी की) नहरें बह रही हैं जिन में वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह (तआला) उन से ख़ुश हुआ और ये उस से। ये है उसके लिये जो अपने रब से डरे।[2]

---

[1] حَنِيف का मतलब है झुकना, एकाग्र (यकसू) होना, حُنَفَاء बहुवचन (जमा) है यानी बहुदेववाद से एकेश्वरवाद की तरफ़ और सभी मतों से कटकर इस्लाम धर्म की तरफ़ झुकते और यकसू होते हुए, जैसे हज़रत इब्राहीम ने किया।

[2] यानी यह बदला और ख़ुशहाली उन लोगों के लिये है जो दुनिया में अल्लाह से डरते रहते हैं और इस डर की वजह से अल्लाह की अवज्ञा (नाफ़रमानी) से बचते हैं। अगर किसी समय इंसानी तक़ाज़ा की वजह से अल्लाह की नाफ़रमानी हो गई तो तुरन्त क्षमायाचना (तौबा) कर ली और भविष्य (मुस्तक़बिल) के लिये अपना सुधार कर लिया यहाँ तक कि उनकी मौत इसी आज्ञापालन (इताअत) पर हुई न कि नाफ़रमानी पर। इसका मतलब यह है कि जो अल्लाह का डर रखता है वह नाफ़रमानी पर दुराग्रह (इसरार) नहीं करता न उस पर बाक़ी रहता और जो ऐसा नहीं करता है हक़ीक़त में उसका दिल अल्लाह के डर से ख़ाली है।

सूरतुज ज़िल्ज़ाल-९९

سُورَةُ الزِّلْزَالِ

सूरतुज ज़िल्ज़ाल* मदीने में नाज़िल हुई और इस में आठ आयतें हैं।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ﴿1﴾

१. जब धरती पूरी तरह से झिंझोड़ दी जायेगी।[1]

وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ﴿2﴾

२. और अपने बोझ बाहर निकाल फेंकेगी।[2]

وَقَالَ الْإِنسَانُ مَا لَهَا ﴿3﴾

३. और इंसान कहने लगेगा कि उसे क्या हो गया?

يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ﴿4﴾

४. उस दिन धरती अपनी सभी सूचनायें (खबरें) बयान कर देगी।[3]

بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ﴿5﴾

५. इसलिए कि तेरे रब ने उसे हुक्म दिया होगा।

يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لِّيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ﴿6﴾

६. उस दिन लोग मुख़तलिफ़ जमाअतों (समूहों) में होकर लौटेंगे ताकि उन्हें उनके कर्म (अमल) दिखा दिये जायें।

---

* **सूरतुज ज़िल्ज़ाल** : इस के मक्की और मदनी होनें में मतभेद (इख़्तिलाफ़) है, इसकी प्रधानता (फ़ज़ीलत) में अनेकों रिवायतें हैं, लेकिन उन में से कोई भी सही नहीं है।

[1] इसका मतलब यह है कि सख़्त भूंचाल (जलजला) से पूरी धरती काँप जायेगी और हर चीज टूट-फूट जायेगी, यह समय होगा जब पहला नफ़ख़ा (फूंक) होगा।

[2] यानी धरती में जितने इंसान गड़े हुए हैं वह धरती का बोझ हैं, जिन्हें धरती क़यामत के दिन निकाल फेंकेगी, यानी अल्लाह के हुक्म से सब जिन्दा होकर बाहर निकल आयेंगे यह दूसरे नफ़ख़े (फूंक) में होगा। इस तरह धरती के ख़जाने भी बाहर निकल आयेंगे।

[3] यह शर्त का जवाब है। हदीस में है कि नबी (ﷺ) ने यह आयत पढ़ी और सवाल किया, जानते हो धरती की सूचनाऐं क्या हैं? सहाबा ने जवाब दिया अल्लाह और उस के रसूल अच्छी तरह जानते हैं। आप ने फ़रमाया : उसकी सूचनायें यह हैं कि जिस बन्दे या बन्दी ने धरती के ऊपर जो कुछ किया होगा उसकी गवाही देगी कहेगी अमुक-अमुक (फ़्लां-फ़्लां) इंसान ने अमुक-अमुक काम अमुक-अमुक दिन किया था। (तिर्मिज़ी, अबवाबु सिफ़ातिल क़ियाम: और तफ़सीर इज़ा ज़ुलज़िलत, मुसनद अहमद २\३७४)

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ⑦

७. तो जिस ने कण (ज़र्रे) के बरावर भी पुण्य (नेकी) किया होगा वह उसे देख लेगा।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ⑧

८. और जिस ने कण (ज़र्रे) के बरावर भी पाप किया होगा, वह उसे देख लेगा।

سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ

सूरतुल आदियात-१००

सूरतुल आदियात मक्का में नाज़िल हुई और इस में ग्यारह आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ①

१. हांपते हुए दौड़ने वाले घोड़ों की क़सम।[1]

فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ②

२. फिर टाप मारकर आग झाड़ने वालों की क़सम।

فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ③

३. फिर सुवह (प्रात:काल) में धावा वोलने वालों की क़सम।

فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ④

४. तो उस समय धूल उड़ाते हैं।

فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ⑤

५. फिर उसी के साथ सेनाओं के बीच घुस जाते हैं।

اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ⑥

६. वेशक इंसान अपने रव का वड़ा नाशुक्रा (कृतघ्न) है।

وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ⑦

७. और यक़ीनी तौर से वह ख़ुद भी उस पर गवाह है।

وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ⑧

८. और ये माल के प्रेम में भी वड़ा कठोर (सख़्त) है।

---

[1] सूरतुल आदियात : عاديات यह عادية का वहुवचन (जमा) है, यह عدو से है जैसे غزو है غازيات की तरह उस के «वाव» को भी या से वदल दिया गया।

أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ (9)

९. क्या उसे वह समय मालूम नहीं, जब क़ब्रों में जो कुछ है निकाल दिये जायेंगे।

وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ (10)

१०. और सीनों में छिपी बातों को ज़ाहिर कर दिया जायेगा।

إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌ (11)

११. बेशक उन का रब उस दिन उन के हाल से पूरी तरह से परिचित (वाक़िफ़) होगा।

सूरतुल क़ारिअ:-१०१

سُورَةُ الْقَارِعَةِ

सूरतुल क़ारिअ: मक्का में नाज़िल हुई और इस में ग्यारह आयतें हैं।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

الْقَارِعَةُ (1)

१. खड़खड़ा देने वाली?[1]

مَا الْقَارِعَةُ (2)

२. क्या है वह खड़खड़ा देने वाली?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ (3)

३. तुझे क्या पता कि वह खड़खड़ा देने वाली क्या है?

يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ (4)

४. जिस दिन इंसान बिखरे हुए पतिंगों की तरह हो जायेंगे।

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنفُوشِ (5)

५. और पहाड़ धुने हुए रंगीन ऊन की तरह हो जायेंगे।[2]

---

[1] **सूरतुल क़ारिअ:** : यह भी क़यामत के नामों में से एक नाम है जैसे इस से पहले इस के कई नाम गुज़र चुके हैं, जैसे الحَاقَّة अलहाक्क़:, الطَّامَّة अत्ताम्म:, الصَّاخَّة अस्साख़्ख़:, الغَاشِيَة अलग़ाशिय:, السَّاعَة अस्साअ:, الوَاقِعَة अलवाक़िअ: आदि (वग़ैरह)। अलक़ारिअ: इसे इसलिये कहते हैं कि यह अपनी भयानकता की वजह से दिलों को डराने और अल्लाह के दुश्मनों को अज़ाब से ख़बर करेगी जैसे दरवाज़ा खटखटाने वाला करता है।

[2] عِهْن उस ऊन को कहते है जो कई रंगों के रंगे हुये हों مَنفُوش धुने हुए। यह पर्वतों की हालत बताई गई है जो क़यामत के दिन उनकी होगी।

فَأَمَّا مَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ﴿6﴾

६. फिर जिस के पलड़े भारी होंगे।

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿7﴾

७. वह तो बड़े सुखदायी जीवन में होगा।

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ﴿8﴾

८. और जिस के पलड़े हल्के होंगे।

فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ﴿9﴾

९. उसका ठिकाना 'हाविया' है।[1]

وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَهْ ﴿10﴾

१०. तुझे क्या पता कि वह क्या है।

نَارٌ حَامِيَةٌ ﴿11﴾

११. वह बहुत तेज भड़कती हुई आग है।[2]

सूरतुत तकासुर-१०२

سُورَةُ التَّكَاثُرِ

सूरतुत तकासुर मक्का में नाज़िल हुई और इस में आठ आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ ﴿1﴾

१. अधिकता (ज़्यादती) के प्रेम ने तुम्हें अचेत (ग़ाफ़िल) कर दिया।

حَتَّىٰ زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ﴿2﴾

२. यहां तक कि तुम क़ब्रिस्तान जा पहुँचे।[3]

كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿3﴾

३. कभी नही तुम जल्द ही मालूम कर लोगे।

---

[1] هَاوِيَة नरक का नाम है, उस को हाविया इस वजह से कहते हैं कि नरकीय उसकी गहराई में गिरेगा और उसे أُمّ (मां) से इसलिये व्यंजित (ताबीर) किया गया कि जिस तरह मां बच्चों के लिए पनाह की जगह होती है इसी तरह नरकियों के पनाह की जगह नरक होगी। कुछ कहते हैं कि أُمّ मायने दिमाग होता है, नरकीय नरक में सिर के बल डाले जायेंगे। (इब्ने कसीर)

[2] जैसे हदीस में है कि इंसान दुनिया में जो आग जलाता है यह नरक की आग का सत्तरवां हिस्सा है, नरक की आग दुनियां की आग से उनहत्तर गुना ज़्यादा है। (सहीह अलबुख़ारी)

[3] इस का मतलब यह है ज़्यादा पाने के लिए मेहनत करते-करते तुम्हें मौत आ गई और तुम समाधि स्थलों (क़ब्रों) में जा पहुँचे।

ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ④

४. फिर कभी नहीं तुम्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा ।

كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ⑤

५. कभी नहीं अगर तुम यक़ीनी तौर से जान लो ।

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ⑥

६. तो बेशक तुम नरक देख लोगे ।

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ⑦

७. तो तुम उसे यक़ीन की आँख से देख लोगे ।

ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ⑧

८. फिर उस दिन तुम से ज़रूर-ज़रूर उपहारों (नेमतों) का सवाल होगा ।[1]

सूरतुल अस्र-१०३

سُورَةُ الْعَصْرِ

सूरतुल अस्र मक्का में नाज़िल हुई और इस में तीन आयतें हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

وَالْعَصْرِ ①

१. ज़माने की क़सम ।[2]

---

[1] यह सवाल उन नेमतों (अनुकम्पाओं) के बारे में होगा जो अल्लाह ने दुनिया में दी है, जैसे आँख, कान, दिल, शान्ति, सेहत, धन, दौलत और संतान (औलाद) आदि कुछ कहते हैं कि सवाल केवल काफ़िरों से होगा । कुछ कहते हैं कि हर एक ही से होगा क्योंकि केवल सवाल ही अज़ाब की वजह नहीं होगा, जिन्होंने नेमतों का इस्तेमाल अल्लाह के हुक्म के आधीन (ताबे) रहकर किया होगा वह सवाल के बावजूद भी यातना (अज़ाब) से महफ़ूज़ रहेंगे और जिन्होंने नाशुक्री की होगी वह धर लिये जायेंगे ।

[2] **सूरतुल अस्र** : युग (ज़माने) से मुराद रात-दिन का यह चक्कर है और उनका अदल-बदल कर आना, रात आती है तो अंधेरा हो जाता है और दिन से हर चीज़ प्रकाशित (रौशन) हो जाती है, इस के सिवा कभी रात लम्बी और दिन छोटा और रात लम्बी हो जाती है अगर दिनों का यही चक्कर ज़माना है जो अल्लाह की पूरी ताक़त और क़ुदरत का इशारा देता है इसलिए पालनहार ने उसकी क़सम ली है । यह पहले बतलाया जा चुका है कि अल्लाह तो अपनी सृष्टि (मख़लूक़) में से जिसकी चाहे क़सम खा सकता है लेकिन इंसान के लिये अल्लाह के सिवाय किसी की क़सम खाना वैध (जायेज़) नहीं है ।

إِنَّ الْإِنسَانَ لَفِي خُسْرٍ ﴿2﴾

२. वास्तव (हक़ीक़त) में सारे इंसान सरासर घाटे में है।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ﴿3﴾

३. उन के सिवाय जो ईमान लाये और नेक काम किये और (जिन्होंने) आपस में सच की वसीयत की और एक-दूसरे को धैर्य (सब्र) करने की नसीहत की।

सूरतुल हुमज:-१०४

سُورَةُ الْهُمَزَةِ

सूरतुल हुमज: मक्का में नाज़िल हुई और इस में नौ आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ﴿1﴾

१. बड़ी ख़राबी है उस इंसान की जो त्रुटियाँ (ऐब) टटोलने वाला चुगली करने वाला हो।[1]

الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ ﴿2﴾

२. जो माल को जमा करता जाये और गिनता जाये।[2]

يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ﴿3﴾

३. वह समझे कि उस का माल उस के पास हमेशा रहेगा।

كَلَّا لَيُنبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ﴿4﴾

४. हरगिज़ नहीं यह तो ज़रूर तोड़-फोड़ देने वाली आग में फेंक दिया जायेगा।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحُطَمَةُ ﴿5﴾

५. और तुझे क्या पता कि ऐसी आग क्या कुछ होगी?

---

[1] **सूरतुल हुमज:** هُمَزَةٍ और لُمَزَةٍ कुछ के ख़्याल में पर्यायवाची (मुतरादिफ़) हैं, कुछ उस में कुछ फ़र्क़ करते हैं। हुमज़ा वह इंसान जो सामने बुराई करे और लुमज़ा जो पीठ-पीछे बुराई करे। कुछ इस से उल्टा मायने करते हैं, कुछ कहते हैं हम्ज आँखों और हाथों के इशारे से बुराई करना और लम्ज ज़बान से।

[2] इस से अभिप्राय (मुराद) यही है जमा करना और गिन-गिन कर रखना, यानी सैंत-सैंत कर रखना और अल्लाह की राह में ख़र्च न करना, नहीं तो धन रखना निषेध (हराम) नहीं यह उसी समय मना है जब ज़कात सदके (दान) और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने का इन्तेज़ाम न हो।

نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ﴿6﴾

६. वह अल्लाह (तआला) की सुलगायी हुई आग होगी।

الَّتِيْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ﴿7﴾

७. जो दिलों पर चढ़ती चली जायेगी।

اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ﴿8﴾

८. हर तरफ़ से बंद की हुई होगी।

فِيْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ﴿9﴾

९. उन पर बड़े-बड़े स्तम्भ (सुतूनों) में।

سُوْرَةُ الْفِيْلِ

सूरतुल फ़ील-१०५

सूरतुल फ़ील मक्का में नाज़िल हुई और इस में पाँच आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ﴿1﴾

१. क्या तूने नहीं देखा कि तेरे रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया।[1]

اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ﴿2﴾

२. क्या उस ने उनकी चाल को बेकार नही कर दिया?

وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ﴿3﴾

३. और उन पर पक्षियों के झुरमुट भेज दिये।[2]

تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿4﴾

४. जो उन्हें मिट्टी और पत्थर की कंकरियाँ मार रहे थे।[3]

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ﴿5﴾

५. तो उन्हें खाये हुए भूसे की तरह कर दिया।

---

[1] **सूरतुल फ़ील :** इस में हाथी वालों का बयान है जो यमन से ख़ाना कआबा को ढाने आये थे اَلَمْ تَرَ का मतलब है اَلَمْ تَعْلَمْ क्या तुझे ज्ञान (इल्म) नहीं? यह सवाल सकारात्मक (मुसबत) है, यानी तू जानता है या वह सब लोग जानते हैं जो तेरे ज़माने में है, यह इसलिये फ़रमाया कि अरब में यह घटना घटे अभी ज़्यादा समय गुज़रा नहीं था। मशहूर क़ौल के मुताबिक़ यह घटना (वाक़ेआ) उस समय घटी जिस साल नबी (ﷺ) का जन्म हुआ था इसलिये अरब में उस की ख़बरें प्रसिद्ध (मशहूर) और लगातार थीं।

[2] اَبَابِيْل यह किसी पक्षी का नाम नहीं इसका मतलब है झुन्ड।

[3] سِجِّيْل मिट्टी को आग में पकाकर बनाये हुए कंकड़। इन छोटे-छोटे कंकड़ों ने तोप के गोलों और बंदूक की गोलियों से ज़्यादा विनाश (हलाकत) का काम किया।

सूरतु क़ुरैश-१०६

سُورَةُ قُرَيْشٍ

सूरतु क़ुरैश मक्का में नाज़िल हुई और इस में चार आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

१. क़ुरैश* को प्रेम दिलाने के लिए।

لِإِيلَافِ قُرَيْشٍ ﴿١﴾

२. (यानी) उन्हें जाड़े और गर्मी की यात्रा (सफ़र) का आदी बनाने के लिए।

إِيلَافِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ﴿٢﴾

३. तो (उस शुक्रिये में) उन्हें चाहिए कि इसी घर के रब की इबादत करते रहें।

فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَٰذَا الْبَيْتِ ﴿٣﴾

४. जिस ने उन्हें भूख में खाना दिया और डर (और भय) में अमन अता किया।[1]

الَّذِي أَطْعَمَهُم مِّن جُوعٍ وَآمَنَهُم مِّنْ خَوْفٍ ﴿٤﴾

सूरतुल माऊन-१०७

سُورَةُ الْمَاعُونِ

सूरतुल माऊन* मक्का में नाज़िल हुई इस में सात आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

१. क्या तूने (उसे भी) देखा जो बदले (के दिन) को झुठलाता है।

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالدِّينِ ﴿١﴾

२. यही वह है जो अनाथ (यतीम) को धक्के देता है।[2]

فَذَٰلِكَ الَّذِي يَدُعُّ الْيَتِيمَ ﴿٢﴾

---

* **सूरतु क़ुरैश** : इसे सूरतुल ईलाफ भी कहते हैं, इस का तआल्लुक भी पहले की सूरत से है।

[1] अरब में क़त्ल (हत्या) और लूटपाट सामान्य (आम) थी लेकिन मक्का के क़ुरैश को हरम की वजह से जो आदर-मान हासिल था उस की वजह से वे भय और डर से महफ़ूज़ थे।

* **सूरतुल माऊन**: इस सूरत को सूरतुद्दीन, सूरत अरऐत, और सूरतुल यतीम भी कहते हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[2] इसलिये कि एक तो कंजूस है, दूसरे क़यामत का इंकारी है, भला ऐसा इंसान यतीम के साथ क्योंकर अच्छा सुलूक कर सकता है? जिस के दिल में धन की जगह मानवीय मूल्यों और अख़लाक़ी उसूलों का महत्व (अहमियत) और प्रेम होगा वही यतीम के साथ अच्छा सुलूक करेगा, दूसरे यह कि उसे इस बात का यक़ीन हो कि उस के बदले मुझे क़यामत के दिन अच्छा बदला मिलेगा।

وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ③

३. और गरीब (भूखे) को खाना खिलाने की प्रेरणा (तरगीब) नहीं देता।

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ ④

४. उन नमाज़ियों के लिए 'वैल' (नरक की एक जगह) है।

الَّذِينَ هُمْ عَن صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ⑤

५. जो अपनी नमाज से अचेत (ग़ाफ़िल) हैं।[1]

الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ⑥

६. जो दिखावे का काम करते हैं।

وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ⑦

७. और प्रयोग (इस्तेमाल) में आने वाली चीजें रोकते हैं।[2]

سُورَةُ الْكَوْثَرِ

सूरतुल कौसर-१०८

सूरतुल कौसर* मक्का में नाज़िल हुई और इस में तीन आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ①

१. बेशक हम ने तुझे कौसर (और बहुत कुछ) दिया है।

---

[1] इस से वह लोग तात्पर्य (मुराद) हैं जो नमाज या तो पढ़ते ही नहीं या पहले पढ़ते रहे फिर आलसी (सुस्त) हो गये, या नमाज उस के नियमित (मुक़र्रर) समय से नहीं पढ़ते या देर से पढ़ने की आदत बना लेते हैं या ख़ुशूअ और ध्यान से नहीं पढ़ते। यह सभी मतलब इस में आ जाते हैं, इसलिए नमाज में सभी ग़फ़लतों से बचना चाहिये। यहाँ इस जगह पर चर्चा करने से यह भी स्पष्ट (वाज़ेह) है कि नमाज यह सुस्ती उन्हीं से होती है जो परलोक (आख़िरत) के प्रतिकार (बदले) और हिसाब, किताब पर यक़ीन नहीं रखते।

[2] مَاعُون थोड़ी चीज को कहते हैं। कुछ इसका मतलब ज़कात (देयदान) लेते हैं, क्योंकि वह भी असल माल के मुक़ाबले बहुत कम होती है। (ढाई प्रतिशत) कुछ ने इससे घरों में इस्तेमाल की चीजें ली हैं जो पड़ोसी एक-दूसरे से मँगनी में माँग लिया करते हैं। मतलब हुआ घरेलू प्रयोग की चीजें मंगनी में दे देना, इस में तंगी न ज़ाहिर करना अच्छे गुण (सिफ़त) हैं और इस के ख़िलाफ़ बख़ीली और कंजूसी बरतना यह क़यामत के मुंकिरों का आचरण (अख़लाक़) है।

* **सूरतुल कौसर** : इसका दूसरा नाम सूरतुन नहर भी है।

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ﴿2﴾

२. तो तू अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ और क़ुर्बानी कर ।[1]

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ﴿3﴾

३. बेशक तेरा दुश्मन ही लावारिस और बेनाम व निशान है ।

سُورَةُ الْكَافِرُونَ

सूरतुल काफ़िरून-१०९

सूरतुल काफ़िरून* मक्का में नाज़िल हुई और इस में छ: आयतें हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ﴿1﴾

१. आप कह दीजिये कि हे काफ़िरो!

لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ﴿2﴾

२. न मैं इबादत करता हूं उसकी जिसकी तुम पूजा करते हो ।

وَلَا أَنْتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ﴿3﴾

३. और न तुम इबादत करने वाले हो उसकी जिसकी मैं इबादत करता हूं ।

وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَا عَبَدْتُمْ ﴿4﴾

४. और न मैं इबादत करने वाला हूं उसकी जिस की तुम ने इबादत की ।

وَلَا أَنْتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ﴿5﴾

५. न तुम उसकी इबादत करोगे जिसकी इबादत मैं कर रहा हूं ।

[1] यानी नमाज़ भी केवल अल्लाह के लिये और क़ुर्बानी भी केवल एक अल्लाह के नाम पर । मुश्रिकों की तरह इस में दूसरों को शामिल न कर । نَحْر का असल मायेना है ऊँट के गले में नीज़ा या छुरी मार कर वध (ज़िब्ह) करना । दूसरे जानवरों को ज़मीन पर लिटाकर उन के गलों पर छुरी फेरी जाती है उसे ज़िब्ह करना कहते हैं लेकिन यहाँ नहर से मुराद आम क़ुर्बानी है, इस के सिवा इस में दान-पुण्य (सदक़ा-ख़ैरात) के रूप में वलि (क़ुर्बानी) देना, हज के मौक़ा पर मिना में ईदुल अज़हा के दिन क़ुर्बानी करना सब शामिल है ।

* **सूरतुल काफ़िरून:** सही हदीसों से साबित है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तवाफ़ की दो रकअतों, और फ़ज्र और मग़रिब की सुन्नतों में (قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ) और सूरतुल इख़्लास पढ़ते थे । इसी तरह आप ने कुछ सहाबा से फ़रमाया कि रात को सोते समय यह सूरत पढ़कर सोओगे तो शिर्क से बरी माने जाओगे । (मुसनद अहमद ५\४५६, तिर्मिज़ी ३४०३, अबूदाऊद न॰ ५०५५)

لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ﴿6﴾

६. तुम्हारे लिये तुम्हारा धर्म (दीन) है और मेरे लिये मेरा धर्म है।

سُورَةُ النَّصْرِ

सूरतुन नस्र-११०

सूरतुन नस्र* मदीने में नाज़िल हुई और इस में तीन आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ﴿1﴾

१. जब अल्लाह की मदद और विजय (फ़त्ह) हासिल हो जाये।

وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ﴿2﴾

२. और तू लोगों को अल्लाह के धर्म की तरफ़ झुंड के झुंड आता देख ले।[1]

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ﴿3﴾

३. तो तू अपने रब की महिमा (तस्बीह) और तारीफ़ करने में लग, और उस से माफ़ी की दुआ कर, बेशक वह माफ़ करने वाला है।

سُورَةُ اللَّهَبِ

सूरतुल लहब -१११

सूरतु लहब* मक्का में नाज़िल हुई और इस में पाँच आयतें हैं।

---

* सूरतुन नस्र : अवतरण (नुज़ूल) के हिसाब से यह आख़िरी सूरत है (सहीह मुस्लिम, किताबुत तफ़सीर) यह सूरत उतरी तो कुछ सहाबा समझ गये कि अब नबी (ﷺ) का अन्तिम समय आ गया है, इसलिये आप को तस्बीह और क्षमायाचना (तौबा) का हुक्म दिया गया है, जैसे हज़रत इब्ने अब्बास और हज़रत उमर का कलाम सहीह बुख़ारी में है। (तफ़सीर सुरतुन नस्र)

[1] अल्लाह की मदद से अभिप्राय (मुराद) है इस्लाम और मुसलमानों का कुफ़्र और काफ़िरों पर ग़ल्बा, और فتح फ़त्ह से मुराद मक्का की फ़त्ह है, मक्का फ़त्ह से लोगों पर यह बात खुल गई कि आप अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर (संदेष्टा) है और इस्लाम धर्म (दीन) सच्चा धर्म है जिस के बिना आख़िरत की नजात मुमकिन नहीं, अल्लाह ने फ़रमाया कि जब ऐसा हो तो।

* सूरतुल लहब : इसे सूरतु तब्बत भी कहते हैं इस के अवतरण (नुज़ूल) के बारे में आता है कि जब नबी (ﷺ) को हुक्म हुआ कि अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डरायें और उपदेश दें, तो आप ने सफ़ा पर्वत पर चढ़कर يَا صَبَاحَاه की आवाज़ लगाई, ऐसी आवाज़ ख़तरे की निशानी मानी जाती थी।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बहुत मेहरबान और रहम करने वाला है।

تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ﴿1﴾

१. अबू लहब के दोनों हाथ टूटे गये और वह (खुद) नाश हो गया।

مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ﴿2﴾

२. न तो उसका माल उसके काम आया और न उसकी कमायी।

سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ﴿3﴾

३. वह मुस्तक़बिल क़रीब में भड़कने वाली आग में जायेगा।

وَامْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ﴿4﴾

४. और उसकी पत्नी भी (जायेगी), जो लकड़ियाँ ढोने वाली है।

فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ ﴿5﴾

५. उसकी गर्दन में खजूर की छाल की बटी हुई रस्सी होगी।[1]

आप (ﷺ) की पुकार पर लोग जमा हो गये। आप ने फ़रमाया : तनिक बताओ, अगर मैं तुम को ख़बर दूं कि इस पहाड़ के पीछे एक घुड़सवार सेना है जो तुम पर हमला करना चाहती है, तो तुम मेरी बात मानोगे? उन्होंने कहा क्यों नहीं। हम ने आप को कभी झूठा नहीं पाया। आप ने फ़रमाया : फिर मैं तुम्हें एक बड़े प्रकोप (अज़ाब) से डराने आया हूँ। (अगर तुम कुफ़्र और शिर्क पर डटे रहे) यह सुनकर अबूलहब ने कहा تَبًّا لَكَ तेरा नाश हो, क्या तूने हमें इस के लिये जमा किया था जिस पर अल्लाह ने यह सूरत उतारी। (सहीह अलबुख़ारी, तफ़सीर सूरतु तब्बत) अबूलहब का वास्तविक नाम अब्दुल उज़्ज़ा था, उसकी ख़ूबसूरती, शोभा (ज़ीनत) और चेहरे की लाली की वजह से उसे अबू लहब कहा जाता था, इस के सिवा अपने अन्त के आधार पर भी उसे नरक का ईंधन बनना था। यह नबी (ﷺ) का सगा चचा था किन्तु आप का कट्टर दुश्मन और उसकी पत्नी उम्मे जमील बिन्ते हर्ब भी दुश्मनी में अपने पति से कम न थी।

[1] جِيدٌ गर्दन مَسَدٌ मजबूत बटी हुई रस्सी, वह मूंज की या खजूर की छाल की, या लोहे के तारों की। जैसाकि कई लोगों ने इसका अनुवाद (तर्जुमा) किया है। कुछ ने कहा कि यह दुनियाँ में डाले रखती थी, जिसका बयान किया गया, लेकिन ज्यादा सहीह बात यह लगती है कि नरक में उस के गले में जो तौक़ होगा वह लोहे के तारों से बटा होगा। مَسَدٌ से उपमा उसकी कड़ाई और मजबूती को स्पष्ट (साफ) करने के लिये दी गई है।

सूरतुल इख़्लास-११२

سُوْرَةُ الْإِخْلَاصِ

सूरतुल इख़्लास* मक्का में नाज़िल हुई और इस में चार आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. (आप) कह दीजिये कि वह अल्लाह एक (ही) है।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ①

२. अल्लाह (तआला) बेनियाज़ है।[1]

اَللّٰهُ الصَّمَدُ ②

३. न उस से कोई पैदा हुआ और न उसे किसी ने पैदा किया।[2]

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ③

४. और न कोई उसका समकक्ष (हमसर) है।[3]

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ④

---

* **सूरतुल इख़्लास** : यह संक्षिप्त (मुख़्तसर) सूरत बड़ी प्रधानता (फ़ज़ीलत) रखती है। इसे नबी (ﷺ) ने एक तिहाई क़ुरआन कहा है और इसे रात को पढ़ने का प्रलोभन (तरग़ीब) दिया है। (सहीह अलबुख़ारी) कुछ सहाबा दूसरी सूरतों के साथ हर रकअत में इसे मिलाकर ज़रूर पढ़ते थे, जिस पर नबी (ﷺ) ने उनसे फ़रमाया: तुम्हारा इस से प्रेम तुम्हें स्वर्ग मे ले जायेगा। (बुख़ारी, किताबुत तौहीद, किताबुल अज़ान, बाबुल जमओ बैनस सूरतैने फिर रकअः मुस्लिम, किताबु सलातिल मुसाफ़िरीन) इस के उतरने की वजह यह बताई गई है कि मुशरिकीन ने आप से कहा कि अपने रब का नसब बताओ। (मुसनद अहमद, ५\१३३,१३४)

[1] यानी सब उस के सामने मुहताज हैं और वह सब से निस्पृह (बेनियाज़) और निरपेक्ष है।

[2] यानी न उस से कोई चीज़ निकली है न वह किसी चीज़ से निकला है।

[3] न उस की ज़ात में न उसकी विशेषताओं में न उस के कर्मों (अमल) में (لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ) (अश शूरा-११) हदीसे क़ुदसी में है कि अल्लाह (तआला) फ़रमाता है कि इंसान मुझ को गाली देता है यानी मेरे लिये संतान सिद्ध (साबित) करता है। जबकि मैं अकेला हूँ, निस्पृह (बेनियाज़) हूँ, मैंने न किसी को जन्म दिया है, न मैं किसी से पैदा हुआ, न कोई मेरे बराबर है। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर क़ुल हुवल्लाहु अहद) इस सूरत में उनका भी खण्डन (तरदीद) हो गया जो अनेक ईश्वर मानते हैं और उनकी भी जो अल्लाह की औलाद मानते हैं और उनकी भी जो दूसरों को उसका साझी कहते हैं और उनकी भी जो अनिश्वरवादी (नास्तिक) हैं।

सूरतुल फलक-११३

سُوْرَةُ الْفَلَقِ

सूरतुल फलक* मक्का में नाज़िल हुई और इस में पाँच आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. आप कह दीजिये कि मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूँ।[1]

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ﴿1﴾

२. हर उस चीज़ की बुराई से जो उस ने पैदा की है।

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ﴿2﴾

३. और अंधेरी रात की बुराई से, जब उसका अँधेरा फैल जाये।

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ﴿3﴾

४. और गाँठ (लगाकर उन) में फूँकने वालियों की बुराई से (भी)

وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ﴿4﴾

५. और द्वेष (हसद) करने वाले की बुराई से भी जब वह द्वेष करे।[2]

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿5﴾

---

* **सूरतुल फलक** : इस के बाद सूरतुन नास है। इन दोनों की शामिल फज़ीलत कई हदीसों में आई है। मिसाल के तौर पर एक हदीस में नबी (ﷺ) ने फरमाया: आज रात मुझ पर कुछ ऐसी आयतें उतरी हैं जिन के समान मैंने कभी नहीं देखी। यह फरमा कर आप ने यह दोनों सूरतें पढ़ी। (सहीह मुस्लिम, किताबु सलातिल मुसाफिरीन) आप (ﷺ) का यह भी नियम था कि रात को सोते समय सूरतुल इख़लास और मुअव्वज़तैन पढ़कर अपने दोनों हथेलियों पर फूँकते फिर उन्हें पूरे शरीर पर मलते, पहले सिर, चेहरे और शरीर के अगले हिस्से पर हाथ फेरते, इस के बाद जहाँ तक आप के हाथ पहुँचते तीन बार आप ऐसा करते। (सहीह अलबुख़ारी, किताबु फज़ायेलिल क़ुरआन, बाबु फज़लिल मुअव्वज़ात)

[1] فلق का सहीह मायना भोर है, सुबह को इसलिये ख़ास किया कि जैसे अल्लाह (तआला) रात का अँधेरा ख़त्म करके दिन की रोशनी ला सकता है वह इसी तरह भय और डर को दूर करके पनाह माँगने वालों को शान्ति भी प्रदान (अता) कर सकता है, या इंसान रात को जिस तरह इस बात के इंतेज़ार में रहता है कि सवेरे उजाला हो जायेगा, इसी तरह डरा हुआ इंसान पनाह के ज़रिये कामयाबी के सूरज के निकलने की उम्मीद रखता है। (फतहुल क़दीर)

[2] ईर्ष्या (हसद) यह है कि हसद करने वाला दूसरे की अच्छी चीज़ों की ख़त्म करने की कामना (तमन्ना) करता है, इसलिए उस से भी पनाह माँगी गई है, क्योंकि हसद भी एक बड़ा अख़लाक़ी रोग है जो नेकी को खा जाता है।

सूरतुन नास-११४

سُوْرَةُ النَّاسِ

सूरतुन नास* मक्का में नाज़िल हुई और इस में छ: आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. आप कह दीजिये कि मैं लोगों के रब की पनाह में आता हूँ।[1]

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ﴿1﴾

२. लोगों के मालिक की। (और)

مَلِكِ النَّاسِ ﴿2﴾

३. लोगों के पूजने लायक़ की (पनाह में)।[2]

اِلٰهِ النَّاسِ ﴿3﴾

४. शंका (शक) डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से।

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ﴿4﴾

५. जो लोगों के सीनों में शंका (वसवसा) डालता है।

الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ﴿5﴾

६. (चाहे) वह जिन्न में से हो या इंसान में से।[3]

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿6﴾

---

* **सूरतुन नास :** इसकी फ़ज़ीलत पहले की सूरत के साथ बयान की जा चुकी है। एक दूसरी हदीस में है कि नबी (ﷺ) को नमाज़ में बिच्छू ने डस लिया नमाज़ के बाद आप ने पानी और नमक मंगवाकर उसके ऊपर मला और साथ-साथ (قُلْ يٰاَيُّهَا الْكَافِرُوْنَ)(قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ)(قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ) पढ़ते रहे। (मज्मउज़ ज़वायेद ५\१११ और हैसमी ने कहा कि इसकी सनद हसन है)

[1] رَبّ (रब) का मतलब है जो (शुरू) ही से जब इंसान अभी माँ के गर्भाशय ही में होता है उस की तदबीर और सुधार करता है यहाँ तक कि वह बालिग़ हो जाता है फिर वह यह तरीक़ा केवल कुछ ख़ास लोगों के लिये नहीं बल्कि सभी मानव जाति के लिये करता है और सभी मानव जाति के लिये ही नहीं अपनी पूरी मख़लूक़ के लिये करता है, यहाँ केवल इंसानों की चर्चा उसकी प्रतिष्ठा (फ़ज़ीलत) और प्रधानता (अज़मत) दिखाने के लिये है जो उन्हें पूरी मख़लूक़ पर हासिल है।

[2] जो सारी दुनिया का पालनहार हो, पूरी सृष्टि (मख़लूक़) उसी के ताबे है। वही सत्ता इस बात के लायक़ है कि उसकी उपासना (इबादत) की जाये और वही सब लोगों का पूज्य (माबूद) हो, इसलिए उसी महान और बुलन्द ज़ात की पनाह प्राप्त (हासिल) करता हूँ।

[3] यह वस्वसा (गुप्त ध्वनि) डालने वाले दो तरह के हैं जिन्नातों के शैतान और मानव जाति के। पहले शैतान को अल्लाह तआला ने इंसान को गुमराह करने की ताक़त दी है, उस के सिवाय हर इंसान के साथ उसका एक शैतान साथी होता है जो उसको गुमराह करता रहता है। हदीस में है कि जब नबी (ﷺ) ने यह बात बताई तो सहाबा ने सवाल किया, हे अल्लाह के नबी क्या वह आप के साथ भी है, आप ने कहा, हाँ। लेकिन अल्लाह ने मेरी मदद की है और वह मेरा आज्ञाकारी (फ़रमांबर्दार) है, मुझे भलाई के सिवाय किसी चीज़ को नहीं कहता। (सहीह मुस्लिम, किताबु सिफ़ातिल क़ियाम:)